सुरगवासी डॉ० कन्हैयालाल सहल

१३ मार्च ७७ नै हिन्दी अर राजस्थांनी रा विद्वान अर मानीता आलोचक डॉ० कन्हैयालाल सहल रो बंबोई रै अस्पताळ में सरगवास व्हैगो। डॉ० साहब घणां दिनां सूं सिर-दरद सूं पीड़ित हा। इण वास्तै आप इलाज सारू बंबोई अस्पताळ में भरती व्हिया। उठै उणां रो ब्रेन-ट्यूमर रो आपरेसन व्हियो। आपरेसन रै पछै फगत अेकर वै आपरी आंख्यां खोली, पछै १३ मार्च ताईं वै बेहोस रह्या। वां रै निधन सूं राजस्थांनी भासा सारू अेक अेड़ी कमी व्हैगी, जिणरी पूरती व्हैणी साव मुस्किल है। वै राजस्थांनी भासा रा हिमायती अर तपस्वी रै रूप में काम करणआळा विद्वान हा।

आपरो जलम २२ नवम्बर १९११ नै झुन्झुनू जिलै रै नवलगढ़ कस्बै मांय व्हियो। आपरा पिता खुद संस्कृत रा विद्वान हा: नवलगढ़ रै मांय आपरी सुरूपोत री पढ़ाई व्हियां पछै महाराजा कॉलेज सूं बी० ए० कर नै मुकुन्दगढ़ में अेक मिडिल स्कूल में हैडमास्टर व्हैगा अर उठैसूं आप प्राइवेट रूप में आगरा विस्वविद्यालय सूं हिन्दी अर संस्कृत में एम० ए० री परीक्सावां प्रथम स्रेणी में पास करी। सन् ३८ रै मांय सूर्यकरण पारीक रो सरगवास व्हैगो अर वां री ठौड़ बिड़ला कॉलेज पिलानी में डॉ० सहल नै हिन्दी अर संस्कृत रा विभागाध्यक्स मुकर करचा। पछै डॉ० सहल १९६४ ताईं बिड़ला आर्ट्स कॉलेज रै मांय वाइस प्रिंसीपल रै रूप में काम करता रह्या। सन् १९५५ में डॉ० सहल 'राजस्थांनी कहावतें—एक अध्ययन' बिसै माथै पी० एच० डी० री उपाधी पाई।

सन् ६४ सूं ६६ ताईं डॉ० सहल प्रोफैसर रै रूप में कांम करचो अर सन् ६६ में बिड़ला एजूकेसन ट्रस्ट रा मन्त्री बण्या। मन्त्री-पद रो भार कुसळता सूं निभाता थकां वै सन् ७४ में औ पद छोड़'र बी० आई० टी० एस० रै मांय विजिटिंग प्रोफैसर बणग्या। नवम्बर ७७ में वै इण पद सूं ईं रिटायर व्हैगा। डॉ० सहल अेक लूंठै व्यक्तित्व रा साहित्यकार हा। वै अेक साथै कवि, चिंतक, अध्यापक, प्रसासक, सम्पादक अर आलोचक हा।

डॉ० साहब लारलै २४ बरसां सूं राजस्थांनी भासा री प्रमुख सोध-पत्रिका 'मरु-भारती' रो सम्पादन करै हा। इण पत्रिका में राजस्थांनी लोकवार्ता, प्राचीन साहित्य, पुरातत्त्व, लोककथा इत्याद बिसयां रा सोधपूर्ण लेख छपता रैवता। राजस्थांनी सोध रै मांय डॉ० साहब रो योगदान राजस्थांनी भासा अर साहित रै इतियास मांय सदा अमर रवैलो। राजस्थांनी कहावतां अर लोक कलावां डॉ० साहब री पसंदगी रा बिसै हा। डॉ० नारायणसिंघ भाटी, डॉ० मनोहर सरमा, डॉ० ओमानंद सारस्वत इत्याद विद्वान डॉ० सहल रै निदेसन में पी० एच० डी० री पदवी पाई। आज ताईं डॉ० साहब ४० सूं ऊपर पोथ्यां अर सैंकड़ूं लेख लिख चुक्या हा। 'जागती जोत' अेड़ा विद्वान री आतमा नै सान्ति पूगावण सारू आपरी सरदांजळी अरपै। —सम्पादक

पूठै रा चितरांम : सुमहेन्द्र

जागती जोत

राजस्थांनी संगम रौ मासिक

•

अप्रेल १९७७

•

संपादक

तेजसिंघ जोधा

•

: १२ रिपिया
ल : सवा रिपियो
: ८ रिपिया

प्रकासक

राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)
बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

प्रकास प्रभाकर : पंजाबी रा नवा कवी। लारला दिनां वायुसेना सूं रिटायर व्हिया। अबार पंजाबी विस्वविद्यालय पटियाला रै एन. एस. एस. विभाग में। छपा-छपी में घणी रुची राखै नीं, सो पंजाबी में ई अजै कम ई छपिया, पण कवितावां रै तालकै ओळखै जैड़ा।

डॉ. नरसिंघ राजपुरोहित : नांमी कथाकार। केई पोथ्यां छप्योड़ी, ज्यां में 'अमर चूनड़ी खास, राजस्थांन साहित अकादमी सूं इनांम पायोड़ी। इण अंक छपियो लेख, वै गयै मार्च म्हीनै जोधपुर विस्वविद्यालय रै 'राजथांनी दिवस समारोह' में बांच्यो। '

भंवरसिंघ सामोर : लोहिया कॉलेज चूरू में हिन्दी रा प्राध्यापक। 'मरणूं-त्यूंहार' नांव सूं राजस्थांनी कवितावां री अेक पोथी संपादित कीधी। इण अंक रो लेख वै पाचवैं राजस्थांनी साहित सम्मेलन सादूळपुर में सन् १९७५ रै वरस पढ़ियो।

चन्द्रप्रकास देवळ : नवा कवी। केमेस्ट्री में अेम अेस. सी.। पैली वळा कवितावां 'दीठ' में छपी। अबार जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कॉलेज अजमेर में नौकरी लागोड़ा।

कन्हैयालाल सेठिया : चावा कवी। सुजांणगढ़ रा रैवासी। लारला दिनां 'लीलटांस' माथै केन्द्रीय साहित अकादमी रो इनांम पायो। राजस्थांनी में 'मींझर' 'रमणियै रा रा सोरठा', 'कूं कूं', 'गळगचिया' अर 'लीलटांस' नांव सूं कवितावां री पोथ्यां छप्योड़ी।

पारस अरोड़ा : नवी कविता रा कवी। 'राजस्थांनी-अेक' रा पांच कवियां में सूं। 'झळ' नांव सूं पैली कविता-पोथी छपी। 'दीठ' दुमाही में तेजसिंघ जोधा सागै सम्पादक ई रह्या। जोधपुर रा वासी।

कल्याणसिंघ राजावत : राजस्थांनी कविता रै मंच रा समरथ कवी। देस-दिसावरां जाणीजै। 'रामतिया मत तोड़' नांव सूं अेक कविता-पोथी छप्योड़ी। कोटवाड़ा जैपर री इसकूल में हिन्दी रा अध्यापक।

बुद्धदेव बोस : सरगवासी बोस बंगाली रा च्यांतीणा साहितकार। कविता, उपन्यास, नाटक अर निबंध, आं सगळी विधावां समचै भारतीय साहित में सिरै ओळखीजै। इण अंक री 'पांन झड़' वांरो चावो नाटक।

पं. महावीर प्रसाद जोसी : राजस्थांनी, हिंदी अर संस्कृत तीनूं ईं भासावां रा लिखारा। केई पोथ्यां छप्योड़ी। राजस्थांनी में 'भिनरा-वन' नांव रो महाकाव्य वेगो ई छपण आळो। आप राजगढ़ में लारला चाळीस वरसां सूं वैदंग रो कांम देखै।

नागीरथसिंघ भाग्य : राजस्थांनी रा नवा गीतकार। हिन्दी में ई लिखै। बगड़ रा वासी। आं दिनां बंबोई री पीरामल मील में काम लाग्योड़ा।

मिरचूमल माटांणी : सांई माटांणी, उत्ता माटांणी नीं, जित्ता नांव सूं लागै। इण अंक में छपी कविता ई वांरी ठावी ओळख।

विजयदांन देथा : राजस्थांनी कथा साहित री चावी नांव। आपरी कथावां रा दस भाग 'वातां री फुलवाड़ी' नांव सूं छप्योड़ा। अेक कथा 'दुविधा' माथै फिलम ई बणी, जिणनै निदेसण समचै फिल्म फेयर क्रिटिक अेवार्ड अर रास्टपति पुरस्कार मिळ्यो।

गोरधनसिंघ सेखावत : नवी कविता रा चावा कवी। झूंझणूं जिलै रै गुढ़ा गांव रा वासिंदा। लिछमणगढ़ री तोदी कॉलेज में हिंदी रा प्राध्यापक।

तेजसिंघ जोधा : कवी। 'ओळूं री ओळयां' नांव री अेक पोथी छप्योड़ी। अबार इण छापै 'जागती-जोत' रा सम्पादक।

वि ग त

स्थंभ

सम्पादकी

'जागती जोत' नै छपतां सवा च्यार वरस व्हैगा। जनवरी १९७३ में इण री पैली अंक छपियौ हौ। उण सेती आज दिन तांई कुल आठ अंक इणरा छपिया। सात तिमाही ढाळै अर अेक छमाही-रूप। न्यारा-न्यारा सम्पादकां इण नै वगत-वगत सांभी। सरूपोत रा दोय अंकां नरोत्तमदास स्वामी, पछै तीन अंकां मनोहर सरमा अर वां पछै अेक-अेक अंक कल्याणसिंघ सेखावत, गोरधनसिंघ सेखावत अर रामेसरदयाल श्रीमाळी। आं छपियोड़ा आठां अंकां में सूं पांच अंक तौ रळै रा, अर तीन न्यारी-न्यारी विधा समचै। न्यारी-न्यारी विधा रै अंकां मनोहर सरमा 'निबंध अंक' अर 'समीक्षा अंक' दियौ अर रामेसरदयाल श्रीमाळी 'कां'णी अंक'। छमाही छापो तौ 'जागती जोत' विचै सीक जातां अेक ई अंक सारू व्हौ, अर उण सवा दो सौ पेज रै जंगी अंक रा सम्पादक हा, कल्याणसिंघ सेखावत।

'जागती जोत' कद तिमाही व्हौ, कद छमाही, कद उणरो कैड़ो अंक किण रै हाथां हो, कद किण रै व्है सकै अैड़ी केई वातां रै बावत आप अंगै ई कोरा रह्या व्हौ। नीं खुद चला'र जांणै जैड़ी जरूत आपनै लागी व्है, नीं अंक दीठ जणै-जणै नै बतावै जैड़ी संगम नै ई। अेक-अेक दो-दो अंकां रै समचै वणियोड़ा संपादक तौ बतावता ई क्यूं? वांनै लाफी सूं मतळब हो के लकालक सूं? अैड़ो मोको वळै आवै न आवै? चमड़ै रा सिक्का चलावण आगै ई ओसांण नीं हो, इण थांदै पळ गमाई क्यूं? जे किणीं लिखारै सूं किणीं अंक सारू रचना मांगीजी व्हैला, तौ उण अंक री जांच तौ उणनै मतैई व्हैगी व्हैला। बाकी स तौ वा, जिण गांव जांवणौ नीं, जिण अंक छपणौ नीं, क्यूं तौ कोई उणरो गेलो पूछै पर क्यूं कोई उण नै बतावै?

अठी, राजस्थांन साहित अकादमी रै निस्चै मुजब 'जागती जोत' मासिक व्हैगी, अर राजस्थांनी भासा साहित संगम री कारज-समीती. उणरा इण टाळै रा पैला छ अंकां री संपादक म्हनै मुकर कियौ, अपरेल ७७ सूं सितम्बर ७७ तांई रो। सम्पादक होयां म्हनै लाजमी लागी के राजस्थांनी रै अेकूंअेक लिखारै तांई अकादमी अर संगम रै निस्चै री समची वेगै सूं वेगी पूगै, जिण सूं वै 'जागती जोत' रै नवै ढव सचेत व्है, अर वांरौ सहयोग छापै नै खुली सोळां मिळै। इण सारू अेक पखवाड़ै तौ म्हैं राजस्थांन रा आठ-दस थावा अखवारां में इण समाचार नै पूगतौ कीधौ अर दूजै पखवाड़ै संगम री मारफत राजस्थांनी रा सगळा लिखारां कनै इणीं समाचार नै जुदा-जुदा भिजायौ। संगम सूं छपियोड़ै 'राजस्थांन साहित्यकार परिचय कोस' में जिका लिखारां रा नांव पता है, वां सगळां कनै संगम रा सहायक सचिव री कागद पूगौ

व्हैला, जिणमें अकादमी री निस्चै, म्हारो पतो अर उण पतै रचनावां भिजावण रो निवेदन हो।

'जागती जोत' रा तिमाही-छमाही ढब रा अंकां बाबत म्हैं आपनै बतायो। उण ढब रा इक्का-दुक्का अंक अजै बकाया, वेगा ई निसरैला। 'जूं झारां री धरती' नांव रो अेक अंक प्रेस में बतावै। जे पैलड़ै ढब रा छपियोड़ा अर नैड़ा ई दिनां छपण आळा बकाया अंका रै बाबत बेसी जांणकारी जोईजै के वै खरीदणा व्है, तो संगम रा सहायक सचिव नै लिखावो। अठी, इण अंक सूं 'जागती जोत' नै मासिक जांणो, अब आ बकायदा मासिक रूप ई छपैला।

राजस्थांनी छापां री मौजूदा गत आपां सूं छांनीं कोनीं। पैली वै बार-तिवार तो छपै हा, पण अठी तो म्हीनां व्हैगा वांरा दरसण व्हियां। नीं 'हरावळ' निसरतो लागै, नीं 'मरुवांणी', नीं 'हेलो,' नीं 'ईसरलाट', नीं 'चामळ'। 'दीठ' तो ७४ में ई अदीठ व्हैगी। 'ओळमें' नै जांणै जुग बीतगा व्है। कदै-कदास कलकत्ता सूं 'नैणसी' नांव रो छापो आवै, पण नीं जैड़ो। उण-वैड़ै सूं धाग ई कांई लागै, सांधो ई कांई सजै? सो अैड़ै वगत 'जागती जोत' रै मासिक व्हियां भली बात व्ही, मोटी गरज पली। आपां रै साहितिक दीठाव में कीं तो चळचळाटी संचरैला ई। पण अब आपांनै इण छापै रै ओळूं-दोळूं सगळी बातां नै खुली आंख्यां ओळखणी व्हैला।

आप सूं कांई लुकांणो? अबार तांई 'जागती जोत' री सरकूलेसन साव नीं रै बरोबर। सवा च्यार बरसां में के तो वा आपरा अंकां रा लिखारां तांई पूगी के संगम री कारज-समीती रा लोगां तांई? आं टाळ जे किणीं संपादक रै कह्यां पांच-दस दूजा हाथां ई कणां-जणां पूगी व्है, तो पूगी व्हो। पण कुल मिला'र अैड़ा तीस-चाळीस हाथां सूं बारै 'जागती जोत' गई नीं। अब मासिक होयां उणरो खरचो ई बधगो अर दूजा दस धांदा ई। सो इण, अैड़ै सरकूलेसन सूं धाको धिकैला नीं। सरकूलेसन रा गेला तो सोधणा ई व्हैला। नींतर क्यूं लिखारा पचै, क्यूं संपादक आगतो व्है, अर क्यूं संगम आप अळूझै? फगत खानापूरत रह्यां छापो काढ़णो न्याऊ नीं। सरकूलेसन रो कांम मूळरूप सूं तो संगम रो, अर वो ई उणनै देखैलो। राज रा सीगां अर दूजा गेलां। पण इत्तो तो राजस्थांनी लिखारां समचै ई कैवण रो मन म्हारो पूरो-पूरो के राजस्थांनी रा छापा जद थांनै मतो मतै अर थांरा हक व्है हाथै आवै, आछो, नींतर मोलाय'र वांचो। मोलायां मैंणी नीं, कुरब-कायदो घटै नीं। नीं वांच्यां अवस मैंणी लागै, कुरब-कायदो घटै। मोलायां तो सांमी वत्तो मजो आवै। छापै रो हरफ-हरफ हियै उघड़ै। कोई पाड़ोसी मोलावतो व्है, तो बूझ लीजो।

जांणै क्यूं आपां राजस्थांनी लिखारां में केई अैब जड़ो जड़ ई भूंडा। काईंठा कीकर इण बात नै हक मांन'र चालां के राजस्थांनी में छपतो अेकूअेक छापो अर पोथी आपां कनै मतोमतै अर फाऊ पूगणा चाहीजै? नीं पूग्यां रीस न्यारी आवै, अर वांरै

नैड़ी कर ई आपां निसरां नीं। आ वात जित्ती राजस्थांनी रा अलांणजी-फलांणजी समचै सांची है, उत्ती ई नवा सूं नवा लोगां समचै। इण धारै कीकर धिकैला ? भलांई कोई सम्पादक व्हौ अर कोई प्रकासक अेकूअेक लिखारै नै तो इण ढाळै छापो पूरीजै कोनीं। अर फेर पूर ई देवै तो जीव कीकर धीजै के आप उणनै बांचता ई व्हौला। फाऊ हाथै आयोड़ा छापा फगत कमरां री कूटळो वधावै, इण सूं वेसी गरज सारै नीं। अंटी सूं नांणो लागै तो छापां री आखर-आखर पढ़ियां सरै।

जाणां के कोरा आपां रै मोलायां छापां री खरचो निसरै नीं, आपां तो हां ई कित्ताक ? पण वात कोरी खरचै री नीं, छापां रै समचै आपां रै गरज री है, जद आपां ई वांनै हत्ती पोचै अर हळकै हाथ लेवां, तो दूजा सूं हर ई कांई रावां ? सो, खुद आपांनै, राजस्थांनी रा लिखारां नै, सज आतां राजस्थांनी छापां समनै नवै अर नकद हेज रै गेलै चालणो व्हैला। फगत फाऊ री उडीक में रह्यां सरैला नीं। आपां चाल्यां दूजा ई चालैला। अर जे छापां में थां म्हांरो थोड़ो पणो ई थैटी नकद सीर सजियो, तो वां री माजनो ई सुधरैला, वां माथै आपां रो हक ई वधैला, अर पछै वांनै जोईजै ई कांई, वै भूखा धाया ई सैठा, वरसां धिकाय लैला।

इण वात री गांठ वांधो, के राज अर सेठां रा हजारां करतां थां-म्हां रा पांच-पचीस घण-मोला। वां तोटै तो छापा वंद नीं व्है, पण थां तोटै व्है जावै।

'जागती जोत' रै सरकूलेसन री अब तांई जैड़ी हवा-मदा रही, वांनै तो जांणो, पण अब संगम नै सासती कोसिस करणी व्हैला के उणरो सरकूलेसन वधै, या वत्ता सूं वत्ता हाथां पूगै अर आपां नै ई मौको आयां सीर घालता सकणो नीं है। म्है कह्यो जीयां सीर घाल्यां आपां री उण माथै हक वधैला। आपांरी कह्यो वात रो अरथ व्हैला। वीयां तो संगम आपरी हदां अर नियम-कायदां आता लिखारां नै टेमोटेम मतोमतै ई छापो पुगावै, पण सगळा तो वा हदां अर नियम-कायदां आवै नीं, सो जिका नीं आवै, वांनै ई चूकणो नीं है।

'जागती जोत' रै मासिक होयां अर उणरो कांम हाथै आयां, म्है तीमिक लिखारां कनै 'जागती जोत' रै तिमाही ढब रो पछैतो अंक नमूनै सारू भिजायो। आं में कीं लिखारा तो वै हा, जिका आपरा कागदां में म्हारै सूं अैड़ी मांग कीधी, अर कीं वै, जिकां नै भिजावणो म्हनै दूजा केई कारणां सूं लाजमी लागो। ओ नवो, मासिक रूप पैलो अंक ई म्हैं वेसी सूं वेसी लिखारां तांई पुगावण नै नपू नो। अैड़ै अेकूअेक लिखारै नै तो अवस भिजावण री कोसिस म्हारी व्हैला, के जिकां री रचना भलांई मं्र र नीं व्हो, पण वै आप धकी सूं रचनावां भिजावण अर सहयोग देवण में पाछ राखी नीं। पण आप जांणो आ वात ई सदा सारू व्हैला नीं, सेवट तो आपरै सभिया ई वात संभैला।

अेक वात लिखारां समचै वळै। केई वळा म्हनै लागै के आपां राजस्थांनी में लिखणै अर छपणै नै हदभांत ई सोरो कांम समभ लियो। दर ई सेंचळ सारू त्यार

नीं। विनां पचियां जैड़ी-कैड़ी रचना दबीदब लिखीज जावै, उणीं सूं धाप ले लेवां। नीं उण नै पाछी जोवण री जोखो आपां झेलां, नीं भासा सीखण-कमावण री भांत-भांतीली सोय आपां राखां। श्रेड़ै-छेड़ै सूं सहजां हाथ आई बोली-चाली री आंट माथै बरसां नेगम गाडो गुड़कावतां रैवां। अर जीव में पतियाया रैवां के राजस्थांनी में तो व्है जैड़ो ई धिकै। अर जे नीं धिकै अर नीं छपै, तो पछै कांई घूड़ खावण नै राजस्थांनी में लिखां?

म्हैं नीं जांणू के आपां किण सारू राजस्थांनी में लिखां, व्है सकै इणीं सारू लिखतां व्हां, पण इत्तो अवस जांणू के लिखणै अर छपणै नै इत्तो ओछो कूंतियां अर सोरो कियां सरैला नीं। आं माजनां ललबायरी रचनावां अर सतवायरा छापा, बरसां ई आपांरो लारो छोडैला नीं। साव बांझड़ी व्है जावैला राजस्थांनी, अगै ई नीं फळैला। अर इणरो पूरो-पूरो वजो आपां रै माथै व्हैला।

सो लिखणै अर छपणै रै कांम नै माजनो देवो, समचै लेवो। उण सीगै वत्ता सावचेत अर जवाबदार व्है ऊभा व्हो। रचनावां सारू पावडै-पांवडै वत्ती आफळ श्रंगेजो। भासा सीखण अर कमावण रा नवा-नवा गेला सोधो, फगत बोली-चाली री आंट सूं धिकैला नीं। थांरै अड़ै-छेड़ै लिखता दूजा राजस्थांनी लिखारां री राजस्थांनी पढ़ो, वां री संगत साधो। राजस्थांनी री जूनी पोथियां वांचो, वां सूं भासा अर सस्कार खांचो। लिखणियां कदै ई वांनै थां सारू ई लिखी ही। लोक साहित री हेमांणी सूं जुड़ो। इण बात नै ओळखो अर जांचो के थां-म्हां सूं पैली केई भला लिखारा भासा कमावण सारू कठै-कठै पूगा? कठै-कठै सूं उणनै अटकळी, आंटी अर कुण-कुण सा ढबां उणनै कीकर गेलै घाली? आं सगळा कामां रै सागै-सागै लाजमी रूप सूं खुद रै सिरजणाऊ सभाव नै सासतो अर ऊंडो ओळखता वैवो। वर-वर ओळखतां वैवो। उणरी ओळख आंख सूं छूटी नीं जोईजै। उणरा कजळीजता खीरां री वांनी झाड़ो, वांनै वर-वर प्रजाळो, भला दिन आपां रै धकै।

आपां नै राजस्थांनी भासा, साहित, संस्कृति, इतिहास अर जीवण सूं गाढमगाढो, अर जड़ो-जड़ श्रेकमेक व्हैणो है। उणरा सगळा सीगां सैलंग चेतणो है। जिण दिन अठा रा मानखा री भाग अर भविस भासा री ऊंडी आंटां भिल'र आपां गुडै फळापणो सरू व्हैला, उण दिन आपां री रचनावां वांचण जोगी व्हैला अर आपां रा छापा सिर-आंख्यां लेवण जोगा। राजस्थांनी लिखारो व्हियां, व्हैगी, खुद री गती अर नीयती नै ओळखो। ओळखो के आपां कठै-कठै तूटगा हां, कठै-कठै छूटगा हां अर इतिहास रो कैड़ो दायित अर बोझ आपां रै माथै।

ओ म्हारै हाथां केवटियोड़ो पैलो अंक आपरै सांमी। संगम म्हनै ठीक ई वगत हेलो दियो, लारला केई दिनां सूं श्रेक छापै री तिळमिळाटी खुद म्हारै मन में ही, अर म्हैं म्हारा मितां अर वेलियां सागै इणीं समचै सोचै हो। जे 'जागती जोत' नीं मिळी व्हैती, तो स्यात आं ई दिनां तांई म्है 'दीठ' सरू करता।

'जागती जोत' संभाळतां इण बात सूं जोव बधियो के संगम आपरो पूरो सहयोग म्हनै दियो। किणीं बात सारू भिदार म्हनै राखियो नीं, म्हारै कह्यां प्रेस बदळी अर दूजी केई छोटी-मोटी मांगां नै ई टेमोटेम पूरी कीधी। संगम सूं इण सहयोग नै सहज करण सारू म्हैं खासतौर सूं अकादमी रा निदेशक राजेन्दरजी अर संगम री कारज समीती रा सदस्य रावतजी रो आभारी।

ओ अंक आपनै कैड़ो कांई लागै, अंक वांच्यां पूरो-पूरो समनो म्हनै दीजो। आपरी सला-सूत आगला अंकां नैं संभाळतां म्हारी मददगार व्हैला। इण अंक री छपाई अर साज-सजावट में अवस केई खांमियां रैगी है अर वांरी गिरगिराटी म्हारै मन में पूरी। पण आगलै अंकां आपनै सिकायत रैवण देवांला नीं। प्रेस सामी नंद भारद्वाज इण अंक री खुद कानीं सूं पूरी सार-संभाळ कीधी अर आगला अंकां ई वांरो स्यारो तो म्हनै रैवैला ई, सो वांरो आभार तो अेकठ ई मानूं ला।

अेक खास भोळावण आपनै आ, के इण अंक में छपियोड़ै डॉ. नरसिंग राजपुरोहित रै लेख नै सावचेती सूं लीजो अर खुद रै मठा री अर सैंधी-सैंधी स्कूलां में राजस्थांनी विसय खुलावण नै हांकरता संभजो। आं कामां सारू ई आपां टाळ दूजा आवैला नीं, अै कांम ई आपांरा, अर आपांरा, आपां रै ई करियो व्हैला।

● तेजसिंघ जोधा



मोतियौ

म्हैं नित निसरूं
वां गेलां-गळकां
जठै, बिरछां रा पपड़ाया पिंडां
पात-बिहूंणी लटकै पीळी लंगरां

दिन-रात सूखै बिरछां री लोई
दिन-रात सघणौ व्है वेलां री जाळ वो ई
मदारी मीत रै अगन कुंड
पळटै, पूठो फलांग
जांकाळां पेट विगसै
मसकांळै साग

दूध री नदी रै मंगरां
ऊगियौ कोई अमलतास
जदै ई सूखै
उणरी पीळी उदासी कुमळाय'र
मोतियौ बण जावै
के जिकौ म्हारी आंख्यां में उतर उतर आवै ।

लोई रा टोपा

लोई रा ऐ लाल लाल टोपा
जिका कटियाळै भाड़कै लटक्योड़ा
औ लोई म्हारी

वै कैवै
इण री जड़ां वाढ़'र
वां मे तेल चोवौ
औ अेक जहरीळो पोधौ

इण नै रूंख नीं बणण दौ

बरजौ, चिड़ियां री वां टूंचां नै
जिकी टूंचै इणरी डाळयां
भखै इण रा फळ
इण सूं पंली के वै
म्हारी जड़ां वाढ़'र वां में तेल चोवै
म्हारा अे रगत-टोपा मरूथळ री हथेळी सूं तिसळचा है
अर जठै ई ढळियो अेक टोपो
उठै ई उगियायो अेक बिरछ
जिण रै रगत-बीज रो मायो

अर काळ कोठरी विचे कैद
अेक सूखती डाळी देखै
के विरछां री औ जंगळ
दिनोदिन सघणो व्हैतो जावै है

लाई पंखेरू

म्हारै मांय अेक कोरो-कट ग्लोब
आधी धरती आधो अकास
धरती भुरभुरी दळदळ
अकास काळी स्याह रूई

म्हैं देखूं
दिस हद लटकतो अेक पंखेरू
जिण रै सतरमुरग री टांगां
जिराफ रो गावड़
हाथी री सूंड
लांबा-लट पांख
मोर री किलंगी

पांखड़ा फड़फड़ावै लाई पंखेरू
हद तड़फड़ावै छुडावण नै आपरी टांगां
टांगां जिकी भुरभुरी दळदळ में पजियोड़ी

हरेक आफळ सागै
अेक विलांत निसरै पंखेरू
अेक विलांत वळै ऊंचो ह्वै अकास
दोय विलांत वधै दळदळ

पोसाळ रा विचियां ! हिसाब ल्याअो
अो लाई पंखेरू कद इण भुरभुरी दळदळ सूं
मुगत होवैलो ?

डुंगराऊ आकड़ो

मांस री गदूमी गूदड़ी विचै
वा लाल ज्यूं चिलकै ही
जद उण री उरवर छाती
अेक डुंगराऊ आकड़ो ऊगो
तद वा मांटी ही

आकड़ै री देही में सूं
आई उणनै चंदण री महकोळ
इण में उण री कीं दोस नीं
दोस तो रुत री हो

कद आंख्यां विचै सिरसूं फूली
कद डुंगराऊ आकड़ो गुलमोयर वणगो
कद नागफणी री रूंख
उण नै कीं चेतो नीं

अब उण री उरवर छाती में
रैवै सासती पीड़
स्यात वो ई नागफणी री रूंख
आपरी कंटियाळी वावां पसारण लागो है
उण री छाती विचौकर

आखे डील

कांचली

बावल रै ग्रांगरौ
चंदरा री ग्रेक विरछ ऊगो
चंदरा विरछ
पळेटो देय'र लपूट्यो वासंग नाग

समाजोग, के ग्राई
ग्रेक संतायी घड़ी सगपी ग्रैड़ी ग्रंवळी
क सांप रै लड़गो चंदरा-रूंख
ग्रर उरा री गैळ में गैगड सांप
मांग्यो नीं छांट ई पांगो
कळप कळप'र
फफक फफक'र मरगो साग्यै ठौड़

हाल ई
विरछ रै उघाड़ै डील
सांप री कांचळी टिरियोड़ी

पड़बिम्ब

डूंगरियां रै खोळै
ग्रेक भील
भील री कैड़ी रंग
म्हैं जांणूं नीं
भील रै बिचै नीलो ग्राकास पड़बिम्बै
भील री रंग नीलो है

भील रै नाकै
ग्रेक बिरछ ऊभो है
बिरछ री पड़छोयां भील बिचाळै पड़ै
म्हैं कदै बिरछ कानीं देखूं
कदै बिरछ रै भील में पड़तै पड़बिम्ब कानीं

इण विचाळै कांई ठा कांई व्है
के भील में ऊठै जबरो तोफांन
भील व्है जावै लहरां री घमसांण
म्हैं देखूं
अेकूअेक लहर रै खूंअे तीखो-तच भालो
जिण नै वा विरछ रै
पड़बिम्ब माथै काटक काटक'र पटकै
विरछ री आखो री आखो पड़बिम्ब
भालां सूं विंधीज्यो पड़ियो है

उठी म्हैं
भील रै नाकै ऊभै विरछ धकी देखूं
विरछ रै डील सूं लोई वंवै
अर आखी री आखी भील लोई सूं भरीजगी है
भील री रंग रातो लागै

आपां सगला

आपां सगळा का'णी रा पात्र हां
का'णी जीवां हां
का'णी मुणां हां
का'णी कैवां हां

आपां कोई वडी आसदी
आप आपरी छाती में सांम्योड़ा
रंगपाटै आवां हां
अगसैंधी भीड़ आगै
सांग खुद री खुद त्यावां हां
हर कोई खुद री का'णी री नायक है
खलनायक नीं

आपां जद का'णी कैवता व्हां
पात्र मर जावै
आपां जद का'णी सुणता व्हां
का'णी मर जावै
आपां जद का'णी जोवता व्हां
पात्र ई मर जावै
अर का'णी ई

उण स्यात
फगत अेक खाली घूमटो में
किणीं गाफल पंखेरू रै पंखा री फड़फड़ावण
सुणीजै अर सुणीजती रैवै
के जिण री पड़छीयां
आतमघात सारू नवी सलीब हेरती वेवै

उल्थो—तेजसिंह जोधा

※ ※ ※

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में राजस्थांनी : समस्यावां अर सुझाव

● डॉ० नरसिंघ राजपुरोहित

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थांन जुलाई ७४ सूं सेकेंडरी स्तर माथै 'राजस्थांनी साहित्य' रै नांव सूं अेक नवो विसय लागू कियो। इण स्तर माथै कक्षा नवीं अर दसवीं में टाबरां नै छः विसय अनिवार्य रूप सूं अर तीन विसय अैछिक रूप सूं पढ़णा पड़ै। बोर्ड राजस्थांनी नै कळा-वर्ग रै हेठै अैछिक विसय रै रूप में मानता दीवी।

बोर्ड आपरी रीत-नीत रै माफक हरेक पठित विसय खातर, पाठ्यक्रम-समीती रो निर्माण करै अर उण पाठ्यक्रम-समीती री देख-रेख में ई पाठ्यक्रम रो निर्धारण व्है। इण वास्तै सन् ७४ रै सरुपोत में ई राजस्थांनी पाठ्यक्रम-समीती रो गठण व्हैग्यो। इण समीती सै सूं पैली पाठ्यक्रम री रूप-रेखा बणाई अर औ तै कियो के सेकेंडरी स्तर माथै ७५-७५ अंकां रा दो प्रश्न-पत्र रहसी। अेक पद्य खातर अर दूजो गद्य खातर। प्रश्न-पत्रां री भासा बाबत आ बात तै व्ही के वा सरल राजस्थांनी रहसी, पण परीक्षार्थियां नै आ छूट रहसी के वै चावै तो सवालां रा पडूत्तर हिंदी में देय सकै अर चावै तो राजस्थांनी री अन्य कोई बोली 'डायलेक्ट' में। नियम निर्धारित कर'र प्रश्न-पत्र रो कीं भाग इसो राख्यो के जिणरा पडूत्तर राजस्थांनी में देवणा अनिवार्य है। उदारण सारू पद्य वाळा प्रश्न-पत्र में निबंध राजस्थांनी में लिखणो अर गद्य वाळा प्रश्न-पत्र में अपठित गद्यांस वाळो सवाल राजस्थांनी में करणो अनिवार्य है।

पाठ्यक्रम खातर समीती च्यार पोथ्यां तै करी। गद्य संकलन, पद्य संकलन, कथा संकलन अर खण्डकाव्य। आं पाठ्य पुस्तकां री निर्माण सन् ७३ रा अंत तांई व्हैग्यो हो अर ७४ रै सरुपोत में ई संपादकां आप-आपरी पांडुलिपियां बोर्ड नै सुपुरद कर दीवी ही।

पोथ्यां साफ सुथरी अर स्तरानुकूल है। इणां में सगळी विधावां रो समावेस कर नै राजस्थानी रा सगळा प्रमुख साहित्यकारां री रचनावां नै स्थान दिरीज्यो है। सगळी पाठ्य पुस्तकां में भूमिका, रचनावां रै सागै लेखक-परिचय, पाठ-संकेत, वस्तुनिष्ठ, लघुत्तरात्मक अर निवंधात्मक प्रश्न, शब्दकोस, लोकोक्ति, मुहावरा-कोस अर जरूरी टिप्पणियां दिरीजी है। इण भांत अै सगळी पोथ्यां कोई भारतीय भासा री पाठ्य पुस्तकां सूं पोची कोनी। गद्य-पद्य अर कथा-संकलन अै तीनूं पोथ्यां तो बोर्ड रा अधिकार हेठै मे० स्टूडेंट्स ब्रदर्स

भरतपुर सूं प्रकासित है अर खण्ड काव्य 'सकुंतळा' जिणरा रचयिता श्री करणीदानजी बारहठ है, वां री खुदरो प्रकासण है ।

जिण विद्यार्थियां जुलाई ७४ में नवीं कक्षा में राजस्थानी विसय लियो वै जुलाई ७६ में ग्यारवीं कक्षा में पूगग्या अर उणां रै वास्तै हायरसेकेंडरी स्तर माथै पाठ्यक्रम निरमाण री जरूरत पड़ी । १६ जून ७६ में इण वास्तै पाठ्यक्रम समीती री बैठक हुई अर औ निरणै लिरीज्यो के इण स्तर माथै पचास-पचास अंकां रा दो प्रस्न पत्र राख्या जावै जिणां में सेकेंडरी परीक्षा रै माफक ई अंकां री बटवाड़ी रैवै । पाठ्य पुस्तकां में गद्य-पद्य संकलनां रै सागै श्री अन्नारामजी सुदामा री उपन्यास 'आंधी अर आस्था' राखीज्यो । गद्य-संकलन रै संपादन रो भार डा. भंवरलालजी जोशी अर श्री शार्दूलसिंहजी कविया नै सूंपीज्यो । उणां घणा आछा ढंग सूं संकलन त्यार कियो, जिको बोर्ड सूं प्रकासित हुय'र आज बाजार में उपलब्ध है । श्री सुदामाजी रै उपन्यास रो विद्यार्थी संस्करण चिन्मय प्रकासन चौड़ा रास्ता जयपुर सूं निकळग्यो है । काव्य संकलन त्यार नीं हुवण सूं फगत इण बरस सारू राजस्थान साहित्य अकादमी सूं प्रकासित काव्य संकलन में सूं ही कवितावां पाठ्यक्रम में राखीजी है । संकलन त्यार हुयां तांई आ अस्थायी व्यवस्था खतम कर दी जासी ।

बोर्ड सूं प्राप्त लिखित सूचना रै आधार मुजब आज दिन तांई प्रदेस रा फगत १८ विद्यालयां में राजस्थानी विसय सुरू करयो है । वां विद्यालयां री विगत इण भांत है—

१. राजकीय माध्यमिक विद्यालय, केकड़ी (अजमेर)
२. ,, ,, ,, छोटी सादड़ी (चित्तौड़गढ़)
३. ,, ,, ,, बसवा (जयपुर)
४. ,, ,, ,, मथानिया (जोधपुर)
५. ,, ,, ,, घमोरा (झुंझनूं)
६. ,, ,, ,, सिवाड़ी (पाली)
७ ,, ,, ,, सांडप (बाड़मेर)
८. ,, ,, ,, नैनवा (बूंदी)
९. ,, ,, ,, गूजासा (बूंदी)
१०. ,, ,, ,, सांगरिया (श्रीगंगानगर)
११. श्री सनातन धर्म उच्च मा. विद्यालय, ब्यावर
१२. राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुरावड़ (उदयपुर)
१३. ,, ,, ,, ,, प्रतापगढ़ (चित्तौड़गढ़)
१४. श्री रामदेव पोद्दार उच्च माध्य. विद्यालय, गांधीनगर जयपुर
१५. राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, महिला बाग, जोधपुर
१६. राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, झुंझनूं
१७. ,, ,, ,, ,, नुंआ (झुंझनूं)
१८. ,, ,, ,, ,, खींवसर (नागौर)

१९. राज. सीटी उच्च माध्य. विद्यालय, बीकानेर
२०. श्री पृथ्वीराज नवलजी उच्च माध्यमिक विद्यालय, रानी (पाली)
२१. राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाड़मेर
२२. " " " " जेजूसर (झुंझनूं)

विद्यालयां री आ सूची वरस भर पैली री है। संभव है साल भर में औरूं कीं विद्यालयां में राजस्थांनी खुलगी व्है। पण, आ बात निश्चित है के वा संख्या च्यार छः सूं वेसी कोनी व्हैला। आं विद्यालयां में सूं जुलाई ७४ में तो फगत च्यार विद्यालयां में राजस्थांनी खुली ही अर बाकी रा सै विद्यालयां नै जुलाई ७५ सूं स्वीकृति मिळी है।

सरूपोत में फगत च्यार विद्यालयां में ई राजस्थानी खुलण सूं अर प्रचार-प्रसार री कमी सूं विद्यार्थियां अर अध्यापकां इण कांनी विसेस ध्यान कोनीं दियो। इण कारण पैलड़ै वरस परीक्षार्थियां री संख्या मामूली ई रही। मार्च अप्रेल ७६ में जद बोर्ड री परीक्षावां हुई तो पैलड़ै 'बैंच' में परीक्षार्थियां री संख्या ४५ रही। इण 'बैंच' में फगत अेक परीक्षार्थी असफळ रह्यो अर बाकी रा ४४ सफळ रह्या अर इण भांत पैलड़ै वरस रो परीक्षाफळ ९७ प्रतिशत रह्यो।

बोर्ड आपरा परीक्षा प्रतिवेदन में इण परीक्षाफळ री प्रसंसा करतां लिख्यो है के टाबरां इण पाठ्यक्रम नै भली भांत हृदयंगम कियो। जिणरो खास कारण औ है के पाठ्य पुस्तकां री भासा रात-दिन प्रयुक्त होवण वाळी वांरी मायड़ भासा है अर उण में वर्णित घटनावां अर पात्र वांरै सैदा-मैदा अर ओळखीता है। वै रात दिन जीवण में जिको भोगै, जिको महसूस करै, उणरी सही तस्वीर पाठ्यक्रम में व्हवण सूं छात्रां औ विसय रुचि सूं पढ़्यो है अर इण कारण ई परीक्षाफळ सर्वोत्तम रह्यो है।

इण वरस बोर्ड सूं आयोजित अप्रेल ७७ री सेकेंडरी स्कूल परीक्षावां में राजस्थांनी रा तीन च्यार सौ नेड़ा विद्यार्थी बैठण री उम्मीद है। राजस्थांनी रा सै सूं घणा विद्यार्थी बाड़मेर जिला में है अर वांरी संख्या डेढ सौ रै करीब है।

कोई विद्यालय में नुंवो ऐच्छिक विसय खोलण खातर विभागीय नियम औ है के बोर्ड सूं निर्धारित प्रपत्र 'ख' माथै इण वास्तै शिक्षा विभाग सूं लिखित अनुमति मांगणी पड़ै। इण वास्तै औ जरूरी है के उण विद्यालय में नुंवो विसय पढ़णिया विद्यार्थियां री संख्यां दस सूं कमती नीं व्है। विभागीय अनुमति मिळयां पछै बोर्ड कांनी सूं ई औपचारिक रूप सूं अनुमति मिळ जाया करै। पण मूळ बात विभागीय अनुमति री है। वा मिळयां विना कोई विद्यालय नुंवो विसय सरू करण री जोखम नीं उठावै। इण काम वास्तै बोर्ड नै फीस सरूप अेक सौ रुपिया ई भेजणा पड़ै पण सरकारी विद्यालयां री फीस तो विभाग भर दिया करै, विद्यालयां कांनी सूं अेक टको ई भेजण री जरूरत कोनीं रैवै।

लारला दो वरसां री अनुभव आ बतावै के विभागीय अनुमति री कांम में मूं अवखो है। मुमकिन है इण मामले में विभाग री ई कीं मजबूरियां व्है सकै पण वै मजबूरियां कीं समझ में नीं आवै। इण कांम खातर न्यूंटा प्रयत्नां री जरूरत है।

७५ रा वरस में राजस्थानी रै मारग में एक ओरूं थोड़ो पैदा व्हियो। राज सरकार प्रदेश में दस जमा दो वाळी नुंई शिक्षा योजना लागू करण रो विचार कियो अर इण खातर बोर्ड नै त्यारी करण रो हुकम दियो। नुंवी शिक्षा योजना रै माफक कक्षा नव अर दस रा पाठ्यक्रम में कोई विसय ऐच्छिक नीं है, जितरा विसय है, वै सगळा अनिवार्य है। मौजूदा पाठ्यक्रम में चूंकि राजस्थानी ऐच्छिक विसय रै रूप में है, इण वास्तै उणनै बोर्ड परीक्षावां सूं हटा देवण री बात तै व्हैगी। जिण सुभ कांम री सरुआत सन् '७४ में हुई ही उणरो अंत अेक वरस में ई. सन् ७५ में आयग्यो। बोर्ड री कार्यकारिणी री मिटिंग हुई अर उपस्थित सगळा सदस्यां में सूं फगत अेक आदमी नै टाळ'र दूजोड़ा सगळां राजस्थानी नै हटाय देवण री तेवड़ ली। उण अेकलै आदमी उण फैसलै रो डट'र विरोध कियो अर सगळां नै विवेक सूं काम लेवण री सलाह दीवी। पण, बहुमत रै आगै अेकला आदमी री बात चाली कोनीं अर राजस्थानी नै बोर्ड रै नुंवै पाठ्यक्रम सूं हटावण री बात तै व्हैगी। राजस्थानी रा वै अेकला पक्षधर पं. विष्णुदत्तजी शर्मा हा।

नुंवै पाठ्यक्रम सूं राजस्थानी हटावण री जांणकारी घणा लोगां नै ही अर ओ नाटक मांय री मांय चालै हो। इणी हालत में राजनैतिक स्तर माथै कोसिस कर'र ई उपाय करणा जरूरी हा।

उणीज मौकै जयपुर में प्रगतिसीळ लेखक संघ री मिटिंग हुई अर उण में राज रा शिक्षामन्त्री श्री खेतसिंहजी राठौड़ रै कानां आ बात घालीजी। शिक्षामन्त्री उठै सार्वजनिक रूप सूं ओ 'कमिट' कर लियो के नुंवै शिक्षा क्रम सूं राजस्थानी नीं हटाई जासी अर हर हालत में कायम राखी जासी।

इण रै पछै इण कांम वास्तै शिक्षा मंत्री कानीं सूं अेक मिटिंग बुलाई जिणरा में शिक्षा विभाग, बोर्ड अर अकादमी रा अधिकारियां रै अलावा कीं साहितकारां नै ई बुलाया। दो अेक वार स्थगित व्हियां पछै सेवट वा मिटिंग १७ सितम्बर ७५ रै दिन शिक्षा मंत्री री अध्यक्षता में जयपुर में व्ही। म्हनै भली-भांत याद है के उण मिटिंग में सांतरी गरमा-गरमी रै विचाळै सेवट आ बात तै व्ही के नुवै पाठ्यक्रम में राजस्थानी तृतीय भासा रै रूप में कायम राखी जावै। बोर्ड री उठै ओ कैवणो हो के नुंवै पाठ्यक्रम में जिकी भासावां तृतीय भासा रै रूप में राष्ट्र-व्यापी स्तर माथै राखीजी है, वै सगळी संवैधानिक मानता प्राप्त है अर राजस्थानी री हाल आ स्थिति कोनीं। पण शिक्षा मंत्री आ कैय'र फैसलो कर दियो के राज सरकार री मंसा है इण वास्तै इणनै कायम राखणी पड़सी।

इण भांत राजस्थांनी नुंवा पाठ्यक्रम में ई कायम रैयगी। बोर्ड री परीक्षावां में राजस्थांनी लागू करण री श्रेय तत्कालीन बोर्ड अध्यक्ष श्री केसरीलालजी बोरदिया नै है तो नुंवै पाठ्यक्रम में राजस्थांनी कायम राखण री श्रेय सर्व श्री पं० विष्णुदत्तजी शर्मा, श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, कैलाशदानजी उज्वळ, मरुधर मृदुल अर शिक्षामंत्री खेतसिंघजी राठौड़ नै है।

फिलहाल दो च्यार वरस राजस्थांनी जूना पाठ्यक्रम में ऐच्छिक विसय रै रूप में चालसी तो नूंवो पाठ्यक्रम लागू ह्वियां तृतीय भासा रै रूप में चालसी। पण इसो लखावै के दोनूं हालतां में विभागीय अनुमति अनिवार्य रहसी।

राजस्थांनी कोई इसो टेकनीकल विसय कोनीं के जिणरै वास्तै सरकार नै विद्यालयां में कीं साधन जुटावणा पड़ै। औ इसो विसय कोनीं के इण खातर विभाग नै न्यारा अध्यापक नियुक्त करणा पड़ै। राजस्थांनी धरती में जायो-जलम्यो कोई ग्रेजुएट के पोस्ट ग्रेजुएट (भासा रो) इण नै आसानी सूं पढ़ाय सकै। इण वास्तै जिण विद्यालयां में कम सूं कम दस टावर राजस्थांनी पढ़णिया त्यार ह्वै अर पढ़ावणिया अध्यापक ई मौजूद ह्वै, उठै औ विसय आसानी सूं खुल सकै। रही वात विभागीय अनुमति री, सो इण वास्तै संगम, अकादमी सम्मेलन अर राजस्थानी रा क्षेत्र में काम करण वाळी दूजी संस्थावां नै औ प्रयत्न करणो चाहिजै के सचिवालय अथवा शिक्षा विभाग सूं अेक इसो स्टैंडिंग आर्डर निकळ जावै के जिणरै अनुसार जिण विद्यालया में पढ़णिया टावर अर पढ़ावणिया अध्यापक मौजूद ह्वै, उठै रो प्रधानाध्यापक चावै तो बिना विभागीय अनुमति रै विसय सरू कर'र बोर्ड अर विभाग नै इतला देय दे। इसो स्टैंडिंग आर्डर निकल जावै तो राजस्थांनी खातर वरदान सरूप सिद्ध ह्वै सकै। आंपां जे करणो तेवड़लां तो संसार में कोई काम अवखो कोनीं अर नीं करणी चावां, तो कीं ह्वै कोनीं। सो म्हारै मत सूं कीं जिम्मेवार अर दमदार आदमियां री अेक कमेटी वणाय'र वांनै औ काम सूंप देवणो चाहिजै।

दो वरस पैली बोर्ड कांनी सूं प्रदेस रा सगळा माध्यमिक अर उच्च माध्यमिक विद्यालयां नै राजस्थांनी विसय बोर्ड री परीक्षावां में लागू हुवण बावत इतला जरूर भेजी ही। पण, म्हारो ख्याल है के आज कीं प्रधानाध्यापकां नै छोड़'र घणखरां नै इण बात री जांणकारी ई कोनीं के बोर्ड री परीक्षावां में राजस्थानी रै पठन-पाठन री व्यवस्था है। जे थोड़ा घणां नै जाणकारी है तो वै बिना प्रेरणा रै अंगेई निष्क्रिय बैठा है।

राजस्थांनी रै उत्थान अर उन्नयन री वात मूळरूप में पठन-पाठन में सरीक ह्वैणी अेक मुद्दा री वात है, जिको अेक चिरप्रतिष्ठित मांग अर लांवा संघर्ष रै नतीजै रो प्रतिफळ है। इण वास्तै इण मामलै में सावचेत अर सक्रिय रैवण री जरूरत है। संगम-सम्मेलन जिसी संस्थावां इण बावत सक्रिय वणै तो घणो लूंठो काम ह्वै। संगम अेक साधन संपन्न संस्था है अर उणरो मूळ उद्देस ई राजस्थांनी रो उत्थान है। इण वास्तै वा अेक इसी योजना वणावै के जिण रै मार्फत प्रदेस रा घणै सूं घणा विद्यालयां में राजस्थांनी खुल सकै, तो आछो रैवै।

इण योजना री प्रारूप इण भांत हुय सकै के री सूं पैली तो अेक प्रतीक छपाय'र प्रदेस रा सगळा माध्यमिक अर उच्च माध्यमिक विद्यालयां में भेजी जावै (अर ना हर बरस मार्च महिना तांई हरेक विद्यालयां में पूगती रैवै) जिणमें इण तथ्य री सांगोपांग जांणकारी देवतां थकां विसय खोलण री प्रेरणा दी जावै। इणरै पछै जिलावार कीं इसा राजस्थांनी प्रेमी अध्यापकां सूं संपर्क साध'र वांनै औ भार सूंप्यो जावै के वै आप-आपरै जिलै में इण खातर लगन सूं काम कर'र घणै सूं घणा विद्यालयां में राजस्थांनी खुलावण री कोसिस करै। इसा लगनसीळ अध्यापकां नै कांम रै अनुपात सूं कीं मानदेय संगम रा बजट सूं दियो जावै तो काम ओरूंई सरल बण सकै।

इण काम खातर बोर्ड सूं प्रपत्र 'ग्र' अेकण सागै मंगाय'र हरेक अध्यापक नै जरूरत मुजब सूंप दिया जावै। म्हारै ख्याल सूं हरेक जिलै में इसा राजस्थांनी प्रेमी अध्यापक आसानी सूं मिळ सकै जिको कांम रै अनुपात सूं मानदेय मिळयां विद्यालयां सूं संपर्क साध'र आवेदन पत्र भरवाय सकै। म्हारो तो यो व्यक्तिगत अनुभव है कै विद्यालयां सूं सीधो संपर्क कियां इण मामला में मोकळी सफळता मिळ सकै।

म्हूं अकादमी अध्यक्ष अर संगम री कार्यकारिणी रा सदस्यां रो ध्यान इण सुझाव कांनी विसेस रूप सूं दिराय'र अरज करणी चावूं के वै इण समस्या रा महत्व नै समझ'र इण बाबत कीं ठोस निरणय लेवै तो राजस्थांनी खातर आ अेक मोटी उपलब्धि साबत हुय सकै। अेक कांनी सगळो गांव अर दूजी कांनी गंगाराम। अेक कांनी संगम री सगळी प्रवृत्तियां अर दूजी कांनी आ अेकली प्रवृत्ति। इण नै जे ईमांनदारी सूं निभाई जावै तो राजस्थांनी खातर वरदांन सरूप बण सकै।

म्हूं तो आ अरज करूंला के फगत संगम-अकादमी इत्याद, इण सूं, पांगां नै कोई इसो गैर-सरकारी संगठण ई ऊभो करणो चाहिजै, जिको इसी प्रवृत्तियां नै पुरजोर ताकत सूं करै। हरेक नेना-मोटा कांम खातर सरकार रो मूंडो देखतो रैवणो ई चोखो कोनी। सरकारी धंधा आपरी रीत सूं चालै। वां रूनै कांम करावणो ई हाथ री बात कोनीं। इण वास्तै राजस्थांनी खातर वो दिन सोना रो ऊगैला जिण दिन कोई इसो गैर सरकारी संगठन पगां माथै ऊभो ह्वैला।

म्हूं अठै आ बात स्पस्ट कर देवणी चावूं के जे आपां इण बाबत की प्रयत्न नीं किया तो ई बोर्ड में तो राजस्थांनी पनपैला ई। आपांणी उपेक्षा सूं या मर तो हरगिज नीं सकै। अेक'र जिको विसय बोर्ड में लागू हुयग्यो वो तो हुय ईग्यो। उण नै हटावणो अबै कोई रै बस री बात कोनीं, पण वखत आपां नै माफ कोनीं करै।

बोर्ड में राजस्थांनी री मसलो अेक और तथ्य सूं गहरो जुड़ियोड़ो। दोन्यूं री आपसरी में अटूट संबध। इण वास्तै आपां नै उण बाबत ई ध्यान देवणो जरूरी।

राजस्थान रा विद्यालयां में उच्च प्राथमिक स्तर माथै कक्षा छट्ठी सूं आठवीं तांई पांच विसय अनिवार्य रूप सूं अर अेक विसय अैच्छिक रूप सूं पढ़ायौ जावै। अैच्छिक विसय तृतीय भासा रै रूप में है। जिण में सिंधी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू अर संस्कृत पांच भासावां है। इणां में सूं कोई अेक भासा हरेक टाबर नै पढ़णी पड़ै। पाठ्यक्रम में औ प्रावधान है के इण सूची में जरूरत माफक औरूं भासावां जोड़ी जाय सकै।

विचार करां तौ आ किसीक विडंबना री बात है के राजस्थान रा टाबरां नै सिंधी, गुजराती, पंजाबी अर उर्दू इत्याद पढण री तौ छूट है पण मायड़ भासा 'राजस्थांनी' पढण री छूट कोनीं।

पण इण में मोटौ दोस आंपणौ खुदरौ ई है। आपां इण बाबत नीं तौ कदेई ध्यांन दियौ अर नीं कोई कोसिस करी। म्हारै ख्याल सूं उच्च स्तर माथै इण बाबत जे कीं ढ़ंगसर प्रयत्न व्हियौ व्हैतौ तौ मामलौ कदरौ ई सुळझ जावतौ।

दो तीन बरसां पैली शिक्षा-अधिकारियां री आबू संगोष्ठी में इण मसला माथै कीं निर्णय व्हियौ हौ अर उणरा स्पष्ट संकेत कीं मिळवा हा। पण उण निर्णय माथै अमल क्यूं नीं व्हियौ इण बाबत कीं जांणकारी कोनीं। मोकळी लिखापढ़ी कियां पछै सचिवालय सूं औ पडूत्तर जरूर आयौ के इण बाबत राष्ट्रीयकृत पुस्तक मण्डळ रा अध्यक्ष ई सही जांणकारी देय सकै। अध्यक्ष सूं ई लिखा पढ़ी हुई तौ औ पडूत्तर आयौ के राज सरकार सूं इण बाबत कोई हुकम ई कोनीं मिळयौ।

कक्षा छट्ठी सूं आठवीं तांई जे राजस्थांनी तृतीय भासा रै रूप में लागू व्है जावै तौ राजस्थांनी खातर अेक लूंठौ काम वणै। इण स्तर माथै नीं तौ विभागीय अनुमति रौ कोई टंटौ है अर नीं औरूं कीं रगड़ो-दगड़ो। टाबर घड़ा-घड़ राजस्थांनी लेय सकै। अर जिकौ टाबर उच्च प्राथमिक स्तर माथै तीन बरस राजस्थांनी पढ़ लेसी वौ सेकेंडरी स्तर माथै ई राजस्थांनी जरूर लेसी। आ अेक सुभाविक बात है। इण भांत सेकेंडरी-हायर सेकेंडरी स्तर अर विश्वविद्यालय स्तर माथै राजस्थांनी रा बिरवा नै पनपावण खातर ठेट उच्च प्राथमिक स्तर री जड़ां में मैणत सूं पाणी सींचणौ पड़सी।

पाठ्यक्रम में अेक मोटी समस्या भासा री अेकरूपता री है। या बात सही है के भासा में अेकरूपता वखत लागां मतैई आवै। कमरा में बैठ'र सगळी बातां अेक दिन में तौ कोनीं व्है सकै। कोई पण विकाससीळ भासा जितरी बोहळी व्यवहार में आवै, वीं में जितरौ बोहळौ साहित सृजन व्है, दिन लाग्यां होळै-होळै उण में मतैई अेकरूपता आय जावै। आ बात सुभाविक अर व्यवहारिक है। छतांपण जठा तांई कोई भासा पठन-पाठन रा क्षेत्र में प्रवेस नीं करै, उणरी अेकरूपता रौ सवाल इतरौ प्रबल कोनीं व्है। पण जद कोई भासा पठन-पाठन रा क्षेत्र में प्रवेस नीं करै, तद उण री अनेकरूपता अखरण लागै, अपरोखी लखावै अर अणखावणी महसूस व्है। आज राजस्थांनी रा मोकळा गद्य लेखक आपरै लेखन में ताळव्य 'श' अर मूर्द्धन्य 'ष' रौ प्रयोग कोनीं करै। वै वांरी ठौड़ दंती 'स' रौ प्रयोग करै। पण केई लेखक ताळव्य, मूर्द्धन्य अर दंती तीनूं आखरां रौ प्रयोग हिंदी रै ज्यूं करै। केई लेखक रेफ रै रूप

स 'र' रो प्रयोग करै अर धर्म, मर्म, कर्म इत्याद सबदां नै ऊपर रेफ लगाय'र लिखै। पण सगळारा संपादक अेक नीं लगाय'र 'र' नैं पूरो मांडै अर धर्म, कर्म, मर्म इत्याद सबदां नै 'धरम', 'करम', 'मरम' रै रूप में लिखै।

राजस्थानी रो विद्यार्थी इण विविधतावां नै देख'र चकरीजै। वो आपरा गुरुजी नै इण बाबत सवाल पूछै पण गुरुजी पढ़ाय'र बैवण री स्थिति में कोनी रैवै अर विद्यार्थी जंजाळ में फस जावै। अेक पाठ में तो 'भासा' सबद में मूर्धन्य 'ष' रो प्रयोग देखै अर दूजै पाठ में दंती 'स' रो प्रयोग देखै तो सशोपश में पड़ जावै। यूं ई राजस्थान रा सीमाड़ा जिलां रा, ष, स, ष, अर ळ रा उच्चारण बाबत अड़चणां है जो या विविधता पनपावणो पैदा करै। वी लोगां नै या फैसला रो मोको देवै कै हिंदी सूं ई पीढ़ै बैठ री हाँ अर कोई-कोई तो राजस्थानी पूरी छोड़ दी।

जिण भांत गुजराती में यो काम सबदां री जोड़णी सूं कर दियो उणीज भांत यो काम हेवट कठैई नै कठैई सूं तो पाणा नै ई करणो पड़सी।

या बात ई मानणी कै पूरी अेकरूपता अेकदम तो कोनी व्है सकै। पण जो मोटी-मोटी बातां तो नै व्है सकै है। या रै नै लियां ई सागो काम बण सकै। सात बरसां पैली राजस्थान भासा प्रचार सभा जयपुर कानी सूं अेकरूपता खातर अेक सम्मेलन सरकार री मदद सूं आयोजित कियो हो अर वी में की फैसला लिया हा, पण उण फैसला रो जितरी सावचेती सूं पालण होणो चाहिजतो, नीं हियो।

इण वास्तै अेक सुझाव है कै कोई संस्था रै माध्यम सूं अेकरूपता खातर अेकर फेरूं कोसिस करी जावै। पांच सात दिनां रो अेक इसो मेळावड़ो व्है, जिण में सूजनसील गद्यकारां, राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां रै संपादकां व्याकरण अर भासा विग्यान रै विद्वानां इत्याद नै बुलाया जावै अर जम'र विचार कियो जावै। वी में जिको निर्णय व्है, वा रो सगळा ईमानदारी सूं पालण करै तो राजस्थानी खातर अेक मोटो काम बणै। यो काम नीं हियां राजस्थानी रै पठण-पाठण रा क्षेत्र में मोकळी अड़चनां आसी।

दाखला सरूप बोर्ड हरेक विषय रै पठण-पाठण में गाईडेंस देवण खातर की अध्यापकां नै 'रिसोर्स परसन' रै रूप में त्यार करै। अै रिसोर्स परसन सगळा प्रदेस में ठोड़-ठोड़ सेमिनारां रै मारफत दूजा अध्यापकां नै गाइड करै। बोर्ड में राजस्थानी नै स्थान मिळ्यो है तो मोड़ो-बेगो ओ काम होसी। इण पैलीज अेकरूपता रा की सर्वसम्मत नियम तै व्है जावै तो रिसोर्स परसन की ठोस बातां कैवण री हालत में आवै।

✿✿✿✿✿✿

राजस्थांनी रै जन-जुड़ाव रौ कांम अर साहितकार

•

भंवरसिंघ सामोर

राजस्थांनी रै मामलै में मनमतियै लोगां री सोचणी अेक तमासौ सो वणगी। अंगरेजी लीक पर चालण रै ओळावै तरक-कुतरक री ध्यांन ई चेतै उतरगौ। हिन्दी आळा लोग ई अंगरेजी ढंग सूं सोचतां-सोचतां जनभासा बनाम पराई भासा री मामलौ जनभासा बनाम हिन्दी री बणा दियौ। अर अंगरेजी आळा तो आइज चावै हा। इण हवालै वस इतरी ई कैणी है के राजस्थांनी री अेकरूपता माथै आंगळी उठावणियां जनभासा विरोधियां सूं जे पूछां के थांरी भासा री अेकरूपता री कांई हाल है, तौ स्यात जमीं कुचरण लाग जावै। किणी प्रांत री भासा री निरणै उठै वसणियां करसा-मजूरां री जबांन सूं हिव्या करै। आंगळ्यां माथै गिणीजणिया सहरी पढ्या-लिख्या सुधारथ्यां रै भरोसै औ फैसलो कोनीं व्है सकै। इण तालकै राजस्थांनी भासा री मानता री सवाल अठै रा करसा-मजूरां री रोजी-रोटी री सवाल वर्णं है अर जिण दिन सांच्याणी रोजी-रोटी सूं औ सवाल जुड़ ज्यासी, उण दिन अै अधवेरड़ा पढ्या-लिख्या राजस्थांनी रा घणी-धोरी वणता कोनीं संकैला। राजस्थांनी रै नांव पर सगळां सूं आगै त्यार लाधैला। इण सूं वेसी और कांई इचरज व्हैला के राजस्थांनी साहित रै नांव पर गरब-गुमांन करतां नीं धाकणिया अैड़ा लोग ई राजस्थांनी भासा रै नांव पर लिलाड़ में ऊभा तीन सळ घालता दर ई कोनीं डरै।

नौकरीपेसै रै वाबुआं री वरग, अठै अंगरेजां रै जमांनै सूं ई अैड़ौ दोगलौ वणगौ, के मामूली लोगां सूं ई खुराक लेय'र अपणै आप नै मामूली लोगां सूं ऊपर समझण लागगौ अर मामूली लोगां ई भूल-भरोसै ऊपर मांन लियौ। अैड़ा लोग जे जनभासा नै पराई भासा अर पराई भासा नै जनभासा मांन लै अर वणालै तौ अचंभौ क्यां री ? जणां ई सिक्सा में गिरावट रै सुधार री वात चालै तौ अंगरेजी चौथी सूं लागू व्हे जावै। राजस्थांनी रै जनतां सूं जुड़ण री वात चालै तो सौळवीं सूं सरू व्हेय'र छठी तांणी उल्टी पूगै।

इण वास्तै म्हारी जांण में राजस्थांनी रै जन-जुड़ाव रै कांम री इत्ती चिंता करण री जरूरत कोनीं, क्यूंके राजस्थांनी तो जनता सूं जुड़योड़ी है जणां ई जींवती है। जन-जुड़ाव रै कांम री चिंता-करणियां रै पांण आ जींवती कोनी है। जे औ किणी नै गुमांन व्है तौ ओजूं

[illegible] दूजी मिसी [illegible] बदळणो पण चावै कोई [illegible] बदळणो नी चावै [illegible] नवक्तो । [illegible] जनता नी मुगत [illegible], पण [illegible] नी मजबी । [illegible] बणाणी ।

[illegible] राजस्थानी [illegible] आ बात ई कैणी है के [illegible] अर जनता री भासा रो ऐड़ो जुड़ाव है के भासा भावां री ई धार [illegible] कोनी [illegible] । [illegible] राजस्थानी अर जनता सूं जुड़णो रो है अर जुड़णो सूं ई [illegible] बात ई समझणी है । जुड़ाव नै तो भासा ईं जुड़ाव ई रो, पण आज इण [illegible] नै माना कोनी । इण बात नै अठै थाप'र आपणो ओ फरज है के भासा भासा मानै री ओळखाण पर ध्यान । [illegible] तो इण नै गुद मानता देवा अर दूजै मैं जिका नी मानै वांनै समझाय'र मनावो । इण बात्रै ऐड़ा सरकारां सोग अमा ईं भागळ्यां पर मिलीजै जितरा ई रो, पण ई दूजी दिस है के [illegible] राजस्थानी में करै अर फेर देगो थाग सईनां पाछै ई बिनगो फरक होवसी । जे भासा पर्ड नैछ्या इतरा लोग मानै मन सूं ओ संकळप लेय'र भावां री भासनी मान मिलाना जसो थोर ई बात मानीसा । म्हारै कैवण रो मतलब है-- भासा गुद नै जनता ई मानां अर जिका गुद नै जनता री गुद्या मानै वांनै सिरजण रै हवालै सूं समझावां के मान-मनुसी होसी । ईंयां सगळां नै सिरजण सूं जोड़ां तो राजस्थानी री पगी सेवा वगा सकै है । ओक इण सवाल नै ई विचारणो है के भासा नै लेय'र राजस्थान री सगळी जनता किण ढाळै सावचेत रहै ?

अठै आताईं साहितकार रो फरज निजरां पड़ै । थै रम्ता साहितकार नै ई सोचणा है के लोगां नै किंयां सावचेत करणो व्हैला । राजस्थांनी में छापा काढ़ो, पत्रिकावां काढ़ो, आकासवांणी नै ई सम्हाळो, पढ़ण-लिखण रा केन्द्र खोलो । जिलेवार गोठां हुवै । कैवण रो मतलब ओ, के साहितकार अेकलो अर सागै मिळ'र राजस्थांनी अर जनता सूं जुड़ै अर छिटपटोड़ा लोगां नै जोड़ण रो निमत बणै । राजस्थान रै जन-जीवण रा फूठरा फोजा निरगम सिरजै । धारसै-मजूर री विपदा भोगणो सीखै । इकांतरै अर सात-सात दिनां सूं जिनावरां नै पांणी पावण री बेबसी नै समझै । खारै-मीठै पांणी नै मिला'र पीवण री अमलेत नै नेड़ै सूं जोवै । राजस्थांनी जीवण सूं रस लेवण-देवण री भूख जगावै । पीढ्यां सूं दिसावरां में रैवता सेठां रा टावरां रा अठै री धरती पर चढ़ता जात-भडूलां रा मरम जांणै । विनायतीपणै रै ठरकै नै छोड़ अठै रै जीवण नै ओळखण री कोसिस करै । साहितकार रो सिरजण लोक साहित बणण री ऊरमां राखै तो कीं बात बणै ।

जद तांई अठै रो साहितकार इत्तो सावचेत नीं व्हैसी, उठै तांई राजस्थानी आगै घाणी मुसकल है । आज री राजस्थांनी रो सिरजण तो जग-जांणीतै जूनै राजस्थांनी साहित नै लाजां ई मारै है । इण वास्तै सिरजण मामलै में साहितकार रो फरज इत्तो बधगो के सिरजण

जे वधको नीं व्हियो तो राजस्थांनी जींवतोई मरयोड़ी समांन गिणीजैली। राजस्थांनी छापां अर पत्रिकावां रो ई ओ ई हाल लाधसी। आकासवांणी रा तो नामां जैड़ा ई कामां। उणानै तो राजस्थांनी वास्तै फुरसत ई कठै ? पढ़ण-लिखण रै केन्द्रां री सगळां सूं ज्यादा जरुरत है। आखै राजस्थांन में कोई अैड़ी जगा कोनीं जठै राजस्थांनी री पोथ्यां देखण-खरीदण नै मिळ सकै। प्रचार-प्रसार री तो बात ई कांई व्है ? ओ काम संगम रो व्है सकै हो, पण उणानै रेवड़यां वांटण सूं ई फुरसत कठै ? घणकरीक संस्थावां जागीर वण री है, जिण में गोधा चौड़े-धाड़ै चरै है। अर कांम करणिया लोगां रो कांम ई लुकग्यो। राजस्थांनी साहित रै सिरजणियां अर सिरजण रो ओ विगड़योड़ो डौळ सुधारण रो फरज साहितकारां रो ई है। साहितकार जनता नै गंवार मानणो छोड़ै। वा सगळां नै पितवाण्यां वैठी है। वा अणपढ़ व्है सकै, अणसमझ कोनीं। इण वास्तै जनता री चिन्ता नीं कर'र साहितकार नै खुद री अर वां लोगां री चिन्ता करणी चाईजै, जिका खुद नै जनता कोनीं मानै।

आखिर में, राजस्थांनी नै अेक मंच री जरूरत है अर वो इण साहित सम्मेलण सूं चोखो ओर कोनीं निगै आवै। इण वास्तै इण रै जरियै राजस्थांन री जनता सूं जुड़णो आसांन व्है सकै। सम्मेलण राजस्थांन रै कस्वै-कस्वै में इणी तरियां करया जावै, जीयां आज ओ अठै व्है रह्यो है। सागै ई इण में सगळा सैयोग देवै। न्यारी-न्यारी पींपाड़यां सूं तो बजाणियां रो ई भलो व्है सकै।

राजस्थांनी रै जन-जुड़ाव रै कांम री अर साहितकारां रै फरज री जिकी बातां आज आप लोगां रै सांमी राखी हूं, वै इंछा-सगती रै वळ सूं ई पार पड़ सकै। इंछा-सगती सूं ई अभ्यास आवै। इण वास्तै साहितकारां रो ओ फरज है के वै मामूली आदमी रै मन रो ओ डर मिटावै के कोई वडो है तो डरावण खातर कोनीं। सगळा ई वडा असल में तो मामूली ई व्हिया करै। जे वै मामूली ई कोनीं, तो वडा क्यां रा ? ईयां ई कोई भासा वडी छोटी कोनीं व्है, भासा तो फकत भासा व्है। काल तांणी री हजार हाथ्यां रै वळआळी राजस्थांनी आज भासा ई कोनीं गिणीजै अर कठै सात समंदरां पार री अंगरेजी भासावां री रांणी गिणीजै। सांच नै पगांथ्यां गेरणो चावो तो आ मिसाल देखो। आं दोनूं बातां में सूं अेक वात तो झूंठी है ई। दोन्यूं ई सांच थोड़ी है। पण, इण सांच झूंठ रै फरक नै समझण री दीठ साहितकार ई दे सकै है अर जे साहितकार ओ फरज पूरो कर दै तो राजस्थांनी में तो वो रो वो हजार हाथ्यांळो वळ निजर आंण लाग जावै।

इण भांत राजस्थानी रै मामलै में तटरस वण्योड़ी जनता री बुझती सगती नै जागणी है। वा किणी अेक संस्था रै बस री बात कोनीं हुया करै है। इण वास्तै इण सम्मेलण नै ई संस्था वणण सूं वंचावणो है। संस्था बण्यां पछै उणमें पूग्योड़ा लोग बुगला भगत अर डौढ हुंस्यार व्है जाया करै। फेर जड़ भरत बणतां के ताळ लागै। इण खातर इण नामरदी सूं बचणो है। मोटामोट बात आ है के राजस्थांनी रै जन-जुड़ाव रो कांम तो आपरी रफ्तार सूं हो रह्यो है, पण इण रफ्तार नै तेज करणी है अर इण नै रोकणियां री पोल खोल'र रस्तो साफ करण रो कांम साहितकारां रो है।

❀❀❀❀❀❀

सांप-सीढ़ी रौ गत्तौ



चन्द्रप्रकास देवळ

म्हारै जवांन हियै रा सपना
आव आपां सांप सीढ़ी रमां
म्हैं निसरणी रा च्यार पगोथ्यां चढूं
जित्तै थूं पेट रै पांण रिगस, भाग
अर आगलै खांनै में लाध, फण कीधां

पूगतां ईं डस अजेज अर पुगाय दे पाछौ
उण गहरै आंबै री छीयां
के जठै म्हारौ मन उणनैं कच्छकड़ौ घाल्यां देख'र
कलांम-डाळी रम्या करतौ
उणरै परस रा कोडाया
तिसळ-तिसळ जावता म्हारा हाथ

वां दिनां रा तारा दूजा हा
वां दिनां री सिंझ्या दूजी ही
वौ कांमण दूजौ हौ
अठा लग, के वा अर म्हैं दूजा हा
वै दिन दूजा हा

म्हारै जवांन हियै रा सपना, आज म्हैं उण नै पाछी देखी
फगत अब हाड-चांम है वा
तावड़ै गळतौ हाड-चांम
अर म्हारै कनै रैयगौ है सांप-सीढ़ी रौ गत्तौ ।

अंतहीण विवाद

कन्हैयालाल सेठिया



कांई काढ़सी
कुरेद'र
जूनै वगत री
अकूरड्यां ?

कठै लाधसी
संबूक रो सिर
अेकलव रो अंगूठो ?

हुया जका
आप रै
जुग-धरम रै
परिपेख में
पुरुषोत्तम
नरोत्तम
कांई हुसी
वांनै कस्यां
आज री
कसौटी पर ?

आगलो काल
फेर झुठा देसी
ईं नुंईं कूंत नै
अर ईयां
कोनी नीवड़ै कदेई
नुंईं अर जूनी
कुंठावां रो
अंतहीण विवाद



अंधारै रा घाव

पारस अरोड़ा

काळो अर काळो
अंधारो घण-काळो ।
हाड-हाड तोड़्यां जावै
　　　　ओ काळो अजगरी कसाव ।

अंधारो / काळस में गम्योड़ो डीठ
अंधारो / अंतस में बळतो पा लाय
अंधारो अेक देह गमतो ई जाय
अंधारो घण-काळो ।

अंधारो　　घर काळो
काळी है भींतां सै
काळो छात, काळो है आंगणो
टूटोड़ी बारी अर
　　　　अध-टूटो दरवाजो जूझै
　　　　पवनमार घूजै

सोधै अठी-उठी
डरप्योड़ी दो आंख्यां
　　　　कीं ई नीं सूझै ।

कळझळतै अंतस में
　　　　पसरै कीं यूं सवाल

लेय उडी बारी नै
वै आंध्यां क्यूं आई,
दरवाजो तोड़ दियो
वो किस्यो वतूळियो,
कर दै इण घर उजास
कठै तपै वो सूरज ?

कैवरण री घर / क्यूं रैवरण ज्यूं कोनी
काईं आ कारा है ?

क्यूं कोनी बरतरणै ज्यूं
दीखत रा लोग अै
काईं अै मिनखां सूं न्यारा है ?

सूखोड़ी रोटी बदळै
क्यूं राखै बोटी री आस
मैरणत रौ मोल क्यूं
पेट रै तोल सूं छोटौ पड़ जावै ?

कांई इत्ती लम्बी रात व्है
पीढ़ी-दर-पीढ़ी यूं पसरचोड़ी
हाड-पिंजर
तोड़ दै दम गुफावां रा जाळ में
अर मारग नीं लाधै ।
जुगां बदळतै इतिहास में
नीं बदळै अेक चैरौ

छोड़ दै आ कंदरा
इरण कारा नै तोड़ दै ।

●

घर बारै
दरवाजै ऊभोड़ै रूंख रौ
पवन पकड़ झंझेड़्यौ डाळौ,
जीवन-मिरतु बिच्चै डोल रैयौ
चिड़ियां री माळौ ।
काळौ अंधारौ घरण-काळौ ।

अंधारौ........
लीर-लीर लीतरा
अंधारौ........
पड़ूं-पड़ूं टापरौ
अंधारौ..........
रिस्ता सै किरच-किरच

अंधारो,
बात-बात किच-किच है, थू-थू है ।

अंधारो। घायल पग सोध रैया रोसणी ।

हाथ
हवा में ऊठै   घूमै
पाछा आ जावै
उरभाणा पग
ठोकर डर री बेड़ियां
खुभै-चुभै कांटा अर कांकरा
रूंख हेटै   देह खोलै
थाकेलै री गांठड़ी
अर बिसाईं खावै,

घड़ी आंख लागै
घड़ी चेत आवै ।

झोका हा नींद रा
जाग रा झरोखा हा
दीठ सूं अदीठ व्हेतो
अर अदीठ / दीठ ।

अगळियां
पंपोळै देण अंधारै री
काळै मारग ऊभ्या
बळता घाव
घाव माथै घाव ।

चिगदग्यो अंधारो म्हारो गांव
नीं रैयो नांव ।

जाणै कुण राजा
किण राजा सूं वैर लियो
वो फौजां अंधारो
गांवड़ियो घेर लियो
राजा सूं राजा री
फंड़ो दुश्मीचारो
देख्यो हो लाल रंग
उण दिन वो अंधारो ।

काई वो हड़प्पा
वो मोग्रन-जो-दरो
इण गत नीं मिळिया रेत में ?

•

दररां सूं—हिमगिर सूं
दक्खणी पठारां लग
अेक देह पसरयोड़ी
मदवै मद डूबोड़ी
तीखा नख/राजस री सगती रा
खुरच-खुरच खाज खिणं
खुद री इज देहो नै
खुद लोही-झांण करै
क्यूं चूकै अैड़ै में
हमलावर अंधारो

अंधारो.... अंधारो।
पसरै ज्यूं जंगळ में लागोड़ी लाय
सूतोड़ा सिंघ यूंई सूता रह जाय।

जद-जद वो आयो यूं
मांडतो रगत पगल्या
टिमटिमता दिवलां री
बुझती गी जोत
तद-तद कूंकूं पगल्या थरपीज्या
पाषाणी देवत नै सीस झुक्या
अंजळियां / आकासां अरपित व्ही
हवन-कुंड
सगती रो आवाह्‌न करता हा।

बिन परख्यां सगती नै
सगती कुण, कद मांनी
सगती संहार रूप परखीजै
सगती मद उपजावै / गैळ चढ़ै
प्रगटै जद सगती हथियार रूप
सस्तर री धार

वार
मार करै भारी
अर कुण भेलै वांनै ?
ग्रै अंधारी बस्ती री देहां

धारण कर सगती नै
वळी वर्ण / अपरवळो
वळी चढ़ै सगती नैं ।
नींव पड़ी, वळो चढ़ी
श्रो पढ़तो खांडो
वो घर खांडो कर दीनो

'धे' करतो टूटोड़ो टापरियो बैठगो ।

यूं आयो अंधारो
यूं पड़ियो घाव ।

पीड़/आंख्यां में पांणी बण ऊकणै
गुस्सो
बंद हथेळियां में पसीनो बण पिघळ्या करै
अक नुकीलो चुभाव
अन्टपोर सीनै माथै तण्योड़ो
मूंडै सूं 'उफ्' नीं आवण दिया करै ।

कोईड़ा/मांडै उणरै मोरां माथै
बंधक व्हेणै रो अैलान नामो
दोय-जूं'ण
अध-पेट रोटी विसयोड़ी मादमो
बेबस
आवणआळी पुस्तां नै/गिरवी धर दिया करै ।

●

ऊग रैयो
ऊग रैयो
ऊगूणै सिंदूरी अगन-पुंज ऊग रैयो
पळक-पळक आकासां
सूरज-धज फरक रैयो
दीठ नीं जमै ।

खड़··खड़····खड़ । खड़ड़····खड़ड़
दौड़ रैयौ
दौड़ रैयौ
पूषणो तुरंगा रथ
वक्र-रेख भोम-खंड नाप रैयौ

अस्वमेध पूजित है
अेक देह पसरीजे

रघुकुळ रौ महाकाव्य
यदुकुळ रौ महाभारत साखी है
कित्ता संबंध अठै
युद्ध-हवन होमीज्या
अेक देह थरपण नै
रगत-धार वार-वार
वार-वार
सगती नै अरपित व्ही
धरम-क्षेत्र, करम क्षेत्र मानीज्यौ ।

टूट रैयौ, तिड़क रैयौ अंधारौ
लीर-लीर अंधारौ
किरच-किरच अंधारौ
घायल कर / घायल है अंधारौ !



दो गीत

कल्याणसिंघ राजावत

बेलड़ी

वागां विच वेलड़ी पसरवा लागी
सौरभ सा'रै वायरै बिखरवा लागी

चेतो राखो हाळी-माळी
आ है सोनै री सूं डाळी
है रे रूपां सूं रूपाळो
डागी गाजै म्हाळा
चढ़गी डोळी-डागळै उतरवा लागी
वागां विच वेलड़ी पसरवा लागी

तांता जाळा सा फैलावै
आता-जातां नै उळझावै
भंवरा गोळा नै भरमावै
स्यांणी सब रै जी सरमावै
काया ताता दूध री उफणवा लागी
वागां विच वेलड़ी पसरवा लागी

उडता पंछी री मन डोलै
झांकै मिट्ठू छांनै-ओलै
कोयल वतळावै सुर तोलै
बोली प्रीत भरी सी बोलै
भंवरां रा ई कानड़ा कतरवा लागी
वागां विच वेलड़ी पसरवा लागी

अळियां-गळियां घूमर घाले
सैनां-सैनां में समझाले
नैणां-नैणां सूं बतळाले
गजबण वेजां ई वहकाले
लाजां मरती आंगणौ कुचरबा लागी
बागां विच बेलड़ी पसरवा लागी

****

दौड़ दड़बड़ां

मन रा अवलख घोड़ तूं दौड़ दड़बड़ां
खुल्ला पड़िया खोड़ तूं दौड़ दड़वड़ां
दड़बड़ां दौड़ दड़बड़ां

पी लै पोखर पाळ मिलै जितौ ई पांणी
तकसी कितरा ताळ अरे थोड़ी जिंदगांणी
पुट्ठां रै परवांण नाप लै नाप अलेखां
पोड़ां-पोड़ उघाड़ धरा में गडी हेमांणी

बंधी लगामां तोड़ तूं दौड दड़वड़ां
दड़वड़ां दौड़ दडवड़ां

खुद री खाल तपाय के खुद रा खेत मिळैला
जुध रौ भाव जताय के हेत समेत मिळैला
नासां सांस हिरोळ जीत रा गीत उगीजै
हांफळ न डफळीज के केई कुमेत मिळैला

मच री होडाहोड तूं दौड़ दड़बड़ां
दड़बड़ां दौड़ दरबड़ां

आखड़ जे मत भूल ढाल री मंजल आगी
भरमा मे मत भूल राव जग पण तूं जागी
ऊंचो भाखर-भोम पथ में भाड़ घणेरा
सूळ मिलै के फूल जाव लग जाजे आगा
घेर-कूंडिया छोड़ तूं दौड़ दड़बड़ा
दड़बड़ां दौड़ दड़बड़ां

पायल री झणकार नाच रा ढोल गुगांना
मद भीणी मनवार मिलण रा कोल गुमाना
जे जासी तूं जीत जगत री अवसी बाजी
घर घर वानरवाळ गीत रा बोल सुणीला
अब नै आगै जोड़ तूं दौड़ दड़बड़ां
दड़बड़ां दौड़ दड़बड़ां

वै जुग रा भूंभार सूरज रै साथ तपीजै
गजमोती गळ हार मांन रा थांन थपीजै
राखीजे करड़ांण समझजे सब नैं निबळा
सबळां री पहचांण मौत सूं राम रमीजै
मारग-मजलां मोड़ तूं दौड़ दड़बड़ां
दड़बड़ां दौड़ दड़बड़ां

::::::

पांन झड़ै

•

बुद्धदेव बोस

कळकत्ता री अेक नवी वस्ती । दोफारी करनै धणी–लुगाई वरसाळी में कुरसियां माथै साव जोड़ै बैठा है । धणी री ऊमर ६५ अर लुगाई री ६० ।

धणी : आज मछळी सिड़चोड़ी ही ।

लुगाई : नीं सिड़चोड़ी कोनीं, कंवळी ही ।

धणी : सिड़चोड़ी ही, हाल खाटी डकारां आवै ।

लुगाई : हाजमो सावळ कोनीं, कागदी नींबू फेर वत्ता खाया करो ।

धणी : हाजमो खराब कोनीं, मछळी खराब ही । अणूंती सिड़चोड़ी मछळी ।

लुगाई : नीं सिड़चोड़ी कोनीं, गिलविली ही । वजार में जद मछळियां ई नीं मिळै तद ताजी री तो सवाल ई कांई ?

धणी : क्यूं, मछळियां क्यूं नीं मिळै । म्हारै हाथी बागान री हाट में थूं जांणै......

लुगाई : रैवण दो थांरा हाथी बागान नै । किण जलम री बात करो ?

धणी : (थोड़ी ताळ दब नै) कित्ता दिन व्हिया कासुंदी नीं खाई ।

लुगाई : अरे, उण दिन तो खाई ही ।

धणी : वा तो दुकांन री ही । घरै वण्योड़ी कासुंदी री तो साव ई न्यारो । आजकालै घरां में कासुंदी वणावण री धारो कम होवण लागो है ।

लुगाई : किण नै इत्ती मोकळ पड़ी ?

धणी : कित्ता दिन व्हिया कूम्हड़ा रै फूल री पकोड़्यां नीं खाई ।

लुगाई : आ कोई अैड़ी ऊंची रसाळ तो है कोनीं ।

धणी : म्हारी मां गोळा री गिरी रळाय चिणां री दाळ में कांई वगार देवती । हाल मूंडा में साव है । अर थें सिरसूं नै मई बांट अैड़ा नांमी भींगा उवाळती के बस......।

लुगाई : थांरै तो आखै दिन खाणा रो इज वळो लाग्योड़ो रैवै । थें विन्दीगढ़ वाळा अणूता ई चटोकड़ा व्हो ।

धणी : अर थें रामगढ़ वाळा कुजरवा रीसट्ट हो ।

लुगाई : जे म्हैं रीसट्ट व्हैती तो थांरी गिरस्ती कदै ई पण्णार जाती ।

धणी : म्हारी मां नै लेग थूं वळ म्हनै सोंपी दियो ।

लुगाई : कद रा देवलोक सिधारया, उण सारू दोगा-सोगा भी कहूं, पण थांरी जीभ ई ठाम भर लांबी ही ।

धणी : पण गूंगी तो थूं ई नीं ही ।

लुगाई : थांरै जैड़ा जमगूंगा मांटी पछै कोई लुगाई कीकर गूंगी रै सकै ।

धणी : म्हैं स्याणो नाळन हो जद इज तो गिरस्ती में लाग नीं लागी । थांरी दाय पड़ै ज्यूं मनमानी करती ।

लुगाई : म्हारी मनमानी ?

धणी : थूं म्हारा भाई नै घर सूं तगड़ नीं दियो ।

लुगाई : म्हारै तगड़यां उण रो तो भलो इज हियो । गांरबार कांई हो—नीं भण्यो नीं गुण्यो । लुगाई लेय बड़ा भाई रै घरै टुकड़ा तोड़तो आज उणरै किनो मोटो बिणज है । दो-दो गाडियां चालै । म्हारै कारणै ई तो थै ठाठ हिया ।

धणी : थारै कारणै ? गरब-गुमान री तो थां माठ ई भोळी नाखीजै । घणा दिन होया विमल नीं आयो ?

लुगाई : उणनै वेळा ई कठै ? घणा ई अड़ंगा में फसोड़ो है ।

धणी : छोटी ऊमर में ई विमल रै धोळा आयग्या ।

लुगाई : ऊमर ई कोई छोटी कोनीं । पचास री तो व्हैगा इज ।

धणी : पचास री कठै पड़यो । काल-परसूं रो टाबर है ।

लुगाई : पचास में कांईं खांमी । घणो करो तो इक्कावन री ई व्है सकै ।

धणी : हरगिज नीं । चावै तो टेलीफून करनै पूछलै ।

लुगाई : म्हनै कांईं पंचायती पड़ी ?

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : घणा दिन व्हिया बुन्नू रो कागद नीं आयो ।

लुगाई : अवार मंगळ नै तो आयो हो ।

धणी : नीं, सोमवार नै ।

लुगाई : म्हनै सावळ याद है, उण दिन सुगिता री बेटी रा फेरा हा ।

धणी : म्हनै ई याद है, म्हैं उण दिन डेंटिस्ट रै उठै गियो हो ।

लुगाई : कागद लाय नै पाछो देख लो ।

धणी : आ माथा फोड़ी म्हारा सूं नीं व्है ।......तो उण बरस बुन्नू इलाद नीं आवैला ?

लुगाई : वांरी मरजी । टबलू रै छव दांत आयगा है । वण्डी वाळी फोटू में कैड़ौ फूठरौ लागै । रांम जाणै कद उणरौ उणियारौ देखूंला ।

धणी : बुलू नै सी-ठारी लागी दीसै ?

लुगाई : अबार नीं, मिनसोटा में आयां पछै सांतरी व्हैगी ।

धणी : थूं भूलगी दीसै । इण वगत वै मिनेसोटा में नीं, वरजीनिया में है ।

लुगाई : फरवरी में तो मिनेसोटा ई हा । उठै ठारी गजब पड़ै ।

धणी : भयंकर ठारी पड़ै । हजार तो भीलां है । अणूतौ रूड़ो-रूपाळौ नगर है । पण सी आगै सेत खोळा व्है ।

लुगाई : रांम जांणै वै कद आवैला ।

धणी : वांरी मरजी व्हैला जद आवैला । अठै आयां हारीत अेक मोटौ डॉग्दर व्है सकै ।

लुगाई : थें विसरग्या । हारीत डॉग्दर नीं, बायलोजिस्ट है ।

धणी : हारीत अठा रौ अेम. बी. है ।

लुगाई : नीं, हारीत बायलोजिस्ट रौ कांम करै । माइक्रोस्कोप संभाळै । पांणी री छांट, दांत रौ मैल, मींडका रौ रगत सै माइक्रोस्कोप सूं परखै । हारीत वातरोग री अेक नांमी सुई इजाद करी । बुलू सगळी वातां सुभट लिखी है । थें तो समचार ई सावळ नीं वांचौ ।

धणी : वरजीनिया में ठारी कम पड़ै । बुलू मोटी व्हैगी है ।

लुगाई : फोटू में कैड़ी फबै । वां ई चौड़ी किनार री कांजीवरम पैरयोड़ी है । घणी तपास करयां म्हैं नींठ उणनै सोधी । मांग में सिन्दूर ई है । साख्यात् लिछमी ज्यूं जचै । वां री रंगीन फोटू कित्ती नांमी है ?

धणी : रमला सिन्दूर नीं लगावै ।

लुगाई : मांग में थोड़ौ सो दस्तूर करै ।

धणी : दीखौ भलांई नीं दीखौ, आजकालै लुगायां सिन्दूर नीं लगावै ।

लुगाई : हरबुल री तरक्की व्ही । वौ असिस्टेण्ट सेक्रेटरी व्हैगौ ।

धणी : थूं वळै भूल करै । अेसिस्टेण्ट सेक्रेटरी तो वौ पैला सूं ई हौ । अब तो डिप्टी सेक्रेटरी व्हियौ । इण पछै जाइण्ट सेक्रेटरी व्हैला । पछै सेक्रेटरी ।

लुगाई : रमला नै ठावकी नौकरी मिळगी । इकॉनोमिक्स पढ़ावै ।

धणी : इकॉनोमिक्स नीं, स्टेटिस्टिक्स । घणौ दोरौ हिसाब-किताब व्है इणरौ । ठा नीं, लड़कियां रै भेजा में अै अबखी वातां कीकर बैठै ?

लुगाई : लुगायां रा वै दिन लदग्या । अैड़ौ किसौ काम जको वै नीं कर सकै ।

धणी : सिन्दूर नीं लगावै । पांन नीं चावै । रूमाल रै कसीदौ काढ़ किणीं नै भेंट नीं करै । फुणा माथै ऊभ गीला गाभा तणी माथै नीं सुखावै । सिझ्या रा छात माथै ऊभ सूखा गाभा नीं सांवटै ।

लुगाई : रैवरण दो। ख्यात है ई कठै ? सगळा पलेट ई पलेट है।

धणी : उण दिन सुरेस री बेटी नै देखी। सलवार कमीज पैरयांड़ी ही।

लुगाई : इण में कांई बेजा बात ?

धणी : साव डज खूटगी। विनोद री बेटो तो धोती पैरणी ई नीं जांणै। हाफ पेंट छोड़ नै फुल पेंट। अर पेंट ई अैड़ी सांकड़ी के बैठतां पांण फाट जावै।

लुगाई : जैड़ी दुनियां री हवा। जैड़ी दुनियां री चलगत।

धणी : पम्पा ई कांई सलवार कमीज पैरे ?

लुगाई : पैरै तो है। दिल्ली में रैवै जिण सूं। अर हाल टाबर ई तो है।

धणी : टाबर जैड़ी कांई बात।

लुगाई : फगत तेरै बरसां री तो है ही।

धणी : चवदै बरसां री।

लुगाई : तेरै उतरनै अबै चवदवों लागो ई है।

धणी : बुलू नै तेरहवों उतरतां ईं साड़ी पैराय दी ही।

लुगाई : जैड़ो बायरो चालै।

धणी : थूं रमला नै लिख दे के .....

लुगाई : म्हैं क्यूं लिखूं ? वै ज्युं ठीक समझै, करै।

धणी : नीं व्है तो पम्पा सारू मोकळी भांत री साड़ियां भेज दे।

लुगाई : तांत री साड़ियां पम्पा रै डील में खुबै, उण नै नायलांन री कोड है।

धणी : म्हनै तो सुणतां ईं सूग आवै।

लुगाई : थांरी पसंद जूंनी पड़गी।

धणी : थांरी उण फिरोजी पोत माथै धोळा कसीदा री वा साड़ी।

लुगाई : किण जलम री बात करो ?

धणी : आजकालै लड़कियां विना किनार री साड़ी पैरै। बाळां में तेल नीं घालै। घणखरी तो सिगरेटां पीवै। साव ऊंचो ब्लाउज ठसावै। लड़का धोतियां पैरणी नीं जांणै। ब्याव करयां पैली न्यारो मकांन हेरै। अंगरेजी गाणा गुणै। कॉलेज रै दिनां ईं दारू पीवणी सीखै।

लुगाई : हाबुल अर रमला दोनूं नित हमेस मिन्या रा यार दोस्तां रै सागै दारू पीवै। दूजी तीजी बातां री तो ठीक, पण दारू........!

धणी : दुनियां री हवा।

लुगाई : घणा पीवण लागग्या तो विरथा खरचो वध जावैला।

धणी : वांरी मरजी।

लुगाई : नित हमेस किता ई तलाक व्है । चित्रा धणी नै छिटकाय आयगी । अबै पृथ्वीस रै साथै रैवै । चार साल साथै रैय अवनीस अर माधवी उण दिन ई व्याव करचो ।

धणी : कांई बेजां वात व्ही ?

लुगाई : किणीं नै कीं अळखावणो नीं लागै । रांम जांणै लोगां रै कांई धवूकार ऊठचो ?

धणी : थांरी निजर बोदी पड़गी । ओ धणियां री उगणीस सौ छप्पन है ।

लुगाई : गळत । उगणीस सौ पैंसठ चालै ।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : वै लोग वेगा आवैला कांई ?

लुगाई : कुण ?

धणी : हावुल इत्याद ।

लुगाई : पूजा रै पैला हावुल नै छुट्टी नीं मिळै ।

धणी : बळै वा ई पूजा ?

लुगाई : पांच वरस सूं वैन अर वीरा री मिलणो नीं व्हियो । हावुल इत्याद हारीत नै देख्यो ई नीं । बुलू तकात अपां रो ओ मकांन नीं जोयो । अेकर सगळा साथै भेळा व्हैता । नीचलो सगळो माळो वां रै सारू खाली छोड़ दूंला । टवलू बगीचा में रमैला । उण सारू दो पिल्ला मोल लेवूंला । अर पम्पा सारू तांनपुरो । आजकालै पम्मा ठुमरी सीखै । कांई मीठो गळो है उणरो ।

धणी : पैला वै आवै तो खरी ।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : तपै करड़ो ।

लुगाई : तपै कठै ? इत्ती तो हवा वाजै ।

धणी : वास में आज काठो सोपो मच्योड़ो ।

लुगाई : ट्राम नीं चालै जिण सूं ।

धणी : वसां री तांतो किसो कम है ?

लुगाई : कदै कदै ई होरन खासा वाजै ।

धणी : विचाळै हवा ई खासी-भली चालै ।

लुगाई : हवा । फागण री हवा । म्हनै आ हवा सांतरी लागै ।

धणी : पांन भड़ै ।

लुगाई : म्हांरै रायगंज में फागण रै महीनै पळास खिलता । नाडी ही । आंम, जामून अर मदार रा रूंख हा ।

धणी : झड़्योड़ो पान हवा में उडै ।

लुगाई : म्हारै रायगंज में नांवो नड़को । बकुल रा फूल । फागण री हवा ।

धणी : गिरिडास री याद है ? मजरा नेपाळां री बेळा ही । गुमसुम । सुनसान । पाड़ खंभोळी नाड़ी रो ठाडो पांणी । थूं अर म्हैं दोनूं भीलण मांय पांणी में उतरग्या हा । थूं तैरणा नागी ही ।

लुगाई : थे संथाळी लुगायां कानी देखण लागा, जकी नागी संपाड़ो करती ही ।

धणी : अर थूं ई तो भीलनती ही । पांणी मांय सूं मछळी ज्यूं ऊभी व्हाई । म्हैं थनै पांणी रै मांय ई झपटनै दबोची ।

लुगाई : तीन संथाळ छोरियां । लाज बायरी । म्हैं वांनै थांन्यां सूं पीवण लागा अर वांनै लाज ढकण री सुध नीं ही । वै हंसती ही ।

धणी : अर थूं तो घणी लजाळू ही । सूनी बेळां साड़ी अर समीज ।

लुगाई : थें तो जवांन रा ई जोधार हा । गरजणो देखो अर बरसणो थोड़ो

धणी : याद है हजारीबाग रो वो डाक बंगलो ? कित्तो गाढ़ो अंधेरो हो ?

लुगाई : बिजळी नीं ही ।

धणी : अलेखूं आगिया हा ।

लुगाई : अर पसवाड़ो फोरतां ई खाट चरमरावती ।

धणी : अचाणचक बिरखा ओसरी । झींणी-झींणी ठारी ही ।

लुगाई : अपां कनै कांवळ ई कठै ही ।

धणी : अपां आखी रात जागता रह्या ।

लुगाई : नी, ढळती रात म्हनै थोड़ी ऊंघ आई ।

धणी : म्हैं ऊठ नै चाय बणाई । पछै थनै जगाई । बारै तावड़ो हो । चंचळो कंवळो घाम । सिणफिण मेह । हवा में यूकलिप्टिस री सोरम ।

लुगाई : फालतू बात मत करो । थें कदेई म्हारै वास्तै चाय नीं बणाई ।

धणी : हजारी बाग में खुद म्हारै हाथां चाय बणाय थनै जगाई ।

लुगाई : साव कूड़ी बात ।

धणी : म्हनै आज ज्यूं याद है ।

लुगाई : थांनै तो कीं याद नीं रैवै ।

धणी : उण बात नै कदेई नीं भूल सकूं ।

लुगाई : क्यूं बिरथा झूंठ बोलो । म्हैं ई तो फूस-फांटो भेळो कर चाय बणाय थांनै पाई । रांची रै मारग जद टैक्सी खोटवाळी व्हैगी ही ।

धणी : म्हैं हजारी बाग स्टोव माथै चाय बणाय पाई ।

लुगाई : सावळ याद करौ हजारीवाग में नीं, देवघर री धरमसाळ में ।

धणी : नीं, हजारीवाग में ।

लुगाई : नीं देवघर में ।

धणी : म्हैं कैवूं, हजारीवाग में ।

लुगाई : म्हैं कैवूं, देवघर में ।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : माखी ।

लुगाई : गिवार माखी ।

धणी : गरमी पड़ै । माखियां वधै ।

लुगाई : कोयल वोलै ।

धणी : धूळ उडै ।

लुगाई : पांन झड़ै ।

धणी : म्हारै हाथीवागान में अेक जंगळी सूवटो हो । वो वोलतो—'वड़ी वहू रीस मत करो। वड़ी वहू रीस मत करो' वड़ी वहू रो मतलव म्हारी मां सूं हो ।

लुगाई : हां तो थारी मां ई रीसटू ही, म्हैं नीं ।

धणी : अर वळै वोलतो 'भावज गोरी । गोरी भावज ।' आ वात म्हैं सिखाई । भौजाई गोरी ही । नांव ई गोरी हो । भौजाई री याद है थांनै ।

लुगाई : भलां याद कीकर नीं व्है । म्हनै भुजवंद दियो हो । दस भर सोना रो । जड़ाऊ । पण अैड़ी खास की गोरी ई नीं ही । पण हां, वांरै कारण ई म्हैं थांरा घर में 'सांवळी' वाजती ।

धणी : भाभी रै केई रंगां रा लेटर पैड हा । असमानी, धोळा, पीला अर गुलावी । मोटी चटाई री भांत मजवूत । अवै वैड़ा पैड देखण नै ई नीं मिळै । पेंट करयोड़ो चाय रो सेट हो । लीला पान । गुलावी फूल । अवै वैड़ा सेट कठैई नीं लाधै । भाभी रै पाखती अमलादास री चूड़ी ही । कनकदास री चूड़ी ही । कांई गाणा हा । आज-कालै कोई रवीन्द्र संगीत नीं गावै ।

लुगाई : रेडियो में नित आवै । थे सुणो ई कठै ?

धणी : पैला वाळो आणंद नीं । लोग तो अवै अंगरेजी गांणा सुणै । रवीन्द्र संगीत वांरै मन नीं भावै । लोग अवै दूजा गांणा में रस लेवै । 'झिक झिक, झूम झूम सन्-सन् । सूगला ।

लुगाई : थे गांणा में नीं समझो । आजकालै रा सुर पैला विचै रूड़ा है ! रवीन्द्र संगीत इक ढाळ चालै ।

धणी : भलां रवीन्द्र संगीत री होड व्है ।

लुगाई : धीमो, ठाडो अर इक वाळै ।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : जोग री वात के अचाणचूक भाभी गुरग सिधाई । नियोनिगो । फगत नो दिनां री मांदगी । अबै नियोनिया सूं कोई नीं मरै ।

लुगाई : टाइफाइड सूं ई नीं । काळाजार सूं ई नीं ।

धणी : अबै देस में काळाजार है ई कठै ?

लुगाई : मलेरिया ई कोनीं ।

धणी : वळै ई लोग मरै । अठी व्याव री निवतो घर अठी मराध रा समंचार । उण दिन व्याव रा घर में जगाजग व्हियोड़ी ही । हग-गय मच्योड़ी ही । गाजा-बाजा । पगवाड़ै मुरदा री सीढ़ी निसरी । थांनै हाल ई डर लागै । 'रांम नांव सत' सुणतां फड़को वढ़ै ।

लुगाई : पण अबै डर कम व्हैगो ।

धणी : याद है हाथीबागान में नित-हमेस रात रा 'रांम नांव सत' री भणकार उठती । थें डर नै काठ ज्यूं व्हे जाता । कित्ती रातां म्हैं रोमणी जळाय जागतां काटी, उण खातर के थें डरो नीं ।

लुगाई : कदै ई नीं । थें म्हारी खातर कदै ई नीं जाग्या ।

धणी : अवस जाग्यो । घणी घणी रातां जाग्यो ।

लुगाई : जे जाग्या ई व्हो तो किण नै सुणावो । सैग ई जाणै । नवादी वात कांई ?

धणी : म्हैं तो यूं ई प्रस्तावू वात करी, थांनै सुणावण खातर नीं कह्यो ।

लुगाई : बिरथा डींग मारण री जरूरत कोनीं । हावुल जद छोटो हो, लगती केई रातां म्हैं जागती बिताई । हावुल रात रा रोवतो घणो । गोळा में लेय रमावती । माथ्रर मारती । उण नै सी-सी करावती । किणीं दिन आंख खोल नै ई देख्यो कांई ? टाबरां रै भवै हाथ ई हिलायो ।

धणी : म्हैं हावुल नै सीपी सूं दूध पावतो । सुवाणतो ।

लुगाई : तद म्हैं बीमार ही ।

धणी : टाबरपणै वुलू अणूंती फूठरी ही घुंघराळा वाळ । हाथां-पगां नीला जगता । कित्ती अचपळी ।

लुगाई : आ इज तो वात है । दुख पावण सारू म्हैं । अर जद टाबर मोटा व्हिया तो पिता लाड करता ।

धणी : टाबरां री मोटी पंपाळ । रोवणो-रींकणो । आज ठारी, कालै धांसी । कदै ई ताव तो कदै ई कीं अड़चल । पोतड़ां री वास ।

लुगाई : दूजा मांचा माथै ई तौ सूय सकता हा।

धणी : मांचा तौ थें ई न्यारा करथा। म्हैं नीं।

लुगाई : तद बुलू लांठी व्हैगी ही।

धणी : बुलू अर हावुल दोनूं मां रै जोड़ै सूय सकता हा। पाखती रा कमरा में सूय सकता हा। म्हैं आ ई तौ बात सुझाई ही।

लुगाई : थें क्यूं नीं सुझावता। मरदां री जात ई अैड़ी व्है। ऊमर ढळयां ईं मन नीं भरै।

धणी : तद म्हैं बूढ़ौ थोड़ौ ई व्हियौ हौ।

लुगाई : मरद वळै कद बूढ़ा व्है। अर व्हियां ईं आप नै बूढ़ा मांनै कोनीं।

धणी : इणमें वेजां बात कांईं ? सावळ ई तौ है।

लुगाई : हां, थांरै वास्तै क्यूं नीं सावळ व्है। नित-हमेस अेक ई कांम। सूग आवै।

धणी : थें म्हारै सागै जाळ गूंथ्यौ।

लुगाई : विरथा वकवास नीं करणी। मूंडा में आवै ज्यूं ईं बोलौ। कांम री वेळा ओजौ ताकौ।

धणी : वैड़ौ मौकौ ई कद मिळचौ ?

लुगाई : मौकौ नीं मिळचौ ? जेब में कागद लाधौ हौ।

धणी : किसौ कागद ?

लुगाई : भूलग्या। जिण नै देख्यां विना मन आकळ-वाकळ व्हैतौ।

धणी : थांरी ई तौ साथण ही। घणी छोड दी ही।

लुगाई : घणी घणी मया ही उण माथै। उणरी खातर दफ्तर री कांम छोड उण रै घरै जावता। दूर री ओळावौ लेय उण रै साथै रातां काढ़ता।

धणी : थें सगळी वातां जांणौ ?

लुगाई : म्हैं उणीं आंट माथै घर छोड़ नै जावती परी। पण हावुल अर बुलू छोटा हा।

धणी : म्हैं तीन दिनां तांईं सपनौ देख्यौ के थें घर छोड दियौ। पण साथ अेक जणौ वळै हौ।

लुगाई : साव निपरगी वात।

धणी : थें दोनूं खूब सुरपुर करता। म्हैं घर में आवतौ तौ अेकदम चुप्प। याद है।

लुगाई : झूठी वात।

धणी : याद है, आपां सगळा ई पुरी गिया हा। रात ढळचां म्हारी नींद तूटी अर थें कमरा में नीं हा।

लुगाई : थें कोई सपनौ देख्यौ व्हौला ?

धणी : खासी ताळ उपरांत थें पाछा आया। वारी रै पाखती ऊभा व्हिया। चांदणी रात ही। म्हैं साव सुभट थांनै ओळख लिया।

लुगाई : मगूं छूटा दोराण दो। पर में थारी गई नी ई थांरी नींद नीं जागै।

धणी : पण उण रात म्हनै पाछी नींद नीं आई।

लुगाई : कदास म्हारी सायण री ओळूं आई व्हैला।

[खासी ताळ तांई चुप्पी]

धणी : कागलो।

लुगाई : गिवार कागलो।

धणी : रेलिंग माथै बैठो है।

लुगाई : हुरस, उड़ जा।

धणी : लो उडग्यो। काग अर डोढ़ री सागळ पिछांण है थांनै।

लुगाई : डोढ़ काग वत्तो काळो व्है। नांठो व्है।

धणी : थें डोढ़ काग कदै ई देख्यो?

लुगाई : कुण नीं देख्यो?

धणी : कदास म्हैं नीं देख्यो। देख्यां ई पिछांण नीं सकूं। योगेस नै पंखियां री गजब पिछांण है।

लुगाई : योगेस कुण?

धणी : म्हारो मित योगेस भद्र। थांनै याद कोनी? म्हारो भेंठो, मातो। मस्त। पंखियां री ओळख जबर ही। गांव-गांव रखड़तो पंखियां रा फोटू पाडतो। किसा पंखी री आळो कैड़ो व्हे? कुण कद ईंडा देवै। मैं बातां जाणतो। बातां रो माग रसियो।

लुगाई : परितोस बाबू नै रूंख-बांटकां रो अणूतो कोड हो।

धणी : योगेस रो कांई व्हियो थांनै ठा है? तड़कै नींद सूं ऊठ गुसळखांना रै बारणैं पड़्यो सो पाछो नीं ऊठ्यो। बस, पड़्यो सो पड़्यो।

लुगाई : परितोस बाबू कांई कैंसर सूं मरया?

धणी : कैंसर कोजी बीमारी। अगाध।

लुगाई : सन्यात रोग री ई की ओखद नीं।

धणी : आम्बोसिस सूं भलां कुण बचै?

लुगाई : माथा री रग फाट जावै।

धणी : अणछक दिल री धड़कन बंद व्है जावै।

लुगाई : खून री उल्टी व्है।

धणी : अबार उण दिन सुकुमार मरग्यो।

लुगाई : अर उण दिन म्हारा जीजाजी मरग्या।

धणी : अणछक सुण्यो के पाळल नीं रह्यो ।

लुगाई : म्हारी लावण्यदी रो ई सुरगवास व्हैगो ।

धणी : अर अपांरा हिमांसु बाबू । कित्ता साळस मिनख हा । भांभरकै दो घड़ी रात थकां ऊठता । निरामिस भोजन । सादो रैवास । चाय तक नीं पीता । वै ई.......... ।

लुगाई : कित्ता लोग मरग्या ।

धणी : हां घणा ई ।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : म्हारी भाभी हाल जीवती रै सकती ही ।

लुगाई : म्हारै छोटै मांमा री ऊमर ही कांई ही ?

धणी : जयंत नै तो हाल खासा जीवणो हो ।

लुगाई : मंजू नै ई अबार नीं मरणो हो ।

धणी : कीं याद नीं रैवै । माडै याद करणो पड़ै । काकी नै मरयां कित्ता बरस बीतग्या । बीस बरस ।

लुगाई : बीस ? कम सूं कम पैंतीस बरस ।

धणी : पैंतीस ? नीं, नीं, पैंतीस तो नीं व्हिया व्हैला ।

लुगाई : कीकर नीं व्हिया । हाबुल तद गोद में हो ।

धणी : पैंतीस बरस ! इत्ता दिन ! लागै के काल री बात व्है ।

लुगाई : काल री बात ! अपां रो ब्याव व्हियां नै चाळीस बरस व्हैगा । आ बात ई तो काल री लखावै । इत्ता दिन ! इत्ता दिन ! चाळीस बरस ?

धणी : चाळीस बरस ? कद ढळग्या ? अेक अेक छिण करतां चाळीस बरस ढळग्या । कीकर ढळ्या ? थांनै कीं याद है ?

लुगाई : क्यूं, याद क्यूं नीं है ?

धणी : कीकर तिसळ्या औ चाळीस बरस ? म्हनै तो कीं याद नीं आवै ।

लुगाई : हाबुल, बुलू, जंवाई, बींदणी, दोहीतो, दोहीती । गिरस्ती । अर औ मकांन ।

धणी : फगत इत्ती बातां ई ?

लुगाई : अर पछै आदमी रै पाखती दूजो व्है ई कांई ?

[खासी ताळ चुप्पी]

धणी : म्हैं तद टाबर हो । अेकर अमरदत्त री अेक्टिग देखी ही । वो अरजण बण्यो हो । ओह !

लुगाई : म्हनै अेकर स्कूल में रिसेटेसन प्राइज मिळ्यो । प्राइज बासंती देवी दियो हो ।

सी. आर. दास री जोड़ायत । म्हांरी स्कूल स्वदेसी ही। म्हैं अेकर सी. आर. दास नै ई देख्या ।

धणी : किसन वाणी ही कुसुम कुमारी ! 'अरजण, थूं मोह-प्रीत में काळियोड़ो है । नींदाळू, है जाग-जाग ।' वाह कांई गळो हो ? डील में रूं गतां री ठोड़ जांणै कांटा ऊभा व्हिया ।

लुगाई : रेसिटेसन 'मेघनाद-वध' सूं ही । 'सांम्ही जुद्ध में जूं झतो जोधार वीर वाहु सिधार्यो जमपुरी............' घणै याद नीं आवै ।

धणी : मनै याद नीं आवैं । याद करणो पड़ै म्हैं अेकर सरोजिनी नायडू री भाखण सुण्यो हो ।

लुगाई : म्हैं अेकर सोच्यो के स्वदेसी संग्राम में भाग लेवूं । जेळ जावूं ।

धणी : म्हैं अेकर सोच्यो के पाळो तिब्बत जावूं ।

लुगाई : थें अर वळै तिब्बत ? चाय नीं मिळयां तड़कै आंख ई नीं खुलै ।

धणी : थोड़ी तिब्बत री भासा ई सीखो हो । अबै भूलग्यो ।

लुगाई : याद नीं रैवै ।

धणी : याद मनै नीं रैवै । याद करणो पड़ै । म्हैं अेकर टेबुल-टेनिस रो चैम्पियन व्हियो हो । म्हांरी फोटू इकवारां में छपी ही ।

लुगाई : अेकर म्हैं अेक भ्रमण-वारता लिखी । जिण बगत पैलोवार जीमा रै सागै दारजिलिंग गी ही । वा भ्रमण-वारता मासिक बांसुरी में छपी ही ।

धणी : मोहन बागान जद पैली वार सील्ड जीती, तद वो खेल म्हैं निजरां देख्यो । स्कूल सूं छिपला खाय गियो । कुड़ती फाटग्यो । जूता गमग्या । पण घरै कुण ई डांट-फटकार नीं बताई ।

लुगाई : अेकर म्हैं रामानुज री सरकस देख्यो हो । उण सूं पैली कदैई जीवतो वाघ नीं देख्यो हो । अर वै छोरियां जको वरत माथै सरणाट चालै, जांणै सुरग री परियां व्है । अवार पांखां फड़फड़ाय उड जावैला । सगळी रात वां छोरियां नै सपना में देखती रही ।

धणी : थें स्टार में 'चिरकुमार सभा' देखी कांई ?

लुगाई : वा तो व्याव रै पछै । थांरै साथै ।

धणी : थांनै याद है । दुरगादास 'वेलून' सब्द रो कैड़ो अजब उच्चार करतो ? 'वेलून देख्यो है वेलून' ?अर नीहार वाला रो गांणो 'नीं नीं हां अो नीं........।'

लुगाई : थें ई गांणो गावो कांई ?

धणी : नीं, नीं, म्हैं तो दूजी ई बात सोचतो । अर सिसिर भादुड़ी रो 'सीता'। थें किती ताळ तांई रोया हा ।

लुगाई : थें ई कम नीं रोया हा ।

धणी : 'सीता'.... ...सीता' जांणै वा चिराळी काळजो चीर नीसर जावैला। 'किण री.... किण री आ चिराळी।'

लुगाई : थें ऐक्टिंग करोला कांई ?

धणी : नीं, म्हैं तो कीं दूजी ई बात सोचतो। थांनै याद है बिन्दीगढ री वा बात ? उण रात कैड़ी विकराळ आंधी आई ही ? जड़ियां समेत रूंख ढहग्या। छप्पर उडग्या। थें कित्ता डरग्या हा ! सगळाई डरग्या हा। फगत म्हैं ऐकलो नीं डरयौ। म्हनै लागतौ हौ के म्हैं जांणै समूळा बिरमाण्ड तांई पसरग्यो व्हूं। थांनै उण आंधी री याद है ?

लुगाई : इण विषाळै बुलू नै ताव चढ़ग्यौ।

धणी : म्हनै वा आंधी अणूंती सुहांणी लागी। जांणै घणकरी बारयां ऐकण सागै खुलगी व्है। घणा घणा बारणा खुलग्या व्है।

लुगाई : म्हैं आखी रात बुलू नै खोळा में लियां बैठी ही। थें ऐकर ई उणनै खोळा में नीं ली।

धणी : म्हैं उण वेळा दूजा ई ध्यांन में डूबोड़ो हौ। कित्ती अनोखी अनुभूति ही वा ? अपां रौ बचण रौ ई म्हनै इचरज व्हियौ ? थें म्हनै उण वेळा कीं दूजा ई निगै आया। जांणै ओळखूं ई नी।

लुगाई : उण दिन बुलू नै माता निकळी ही। थें डाग्दर नै ई नीं बुलायौ।

धणी : थें वळै भूल करौ। म्हैं ई तौ तड़कै केसव डाग्दर नै लायौ।

लुगाई : थें नीं लाया, सुबोध लायौ।

धणी : म्हैं ई तौ गियौ हौ।

लुगाई : नीं, सुबोध गियौ हो।

धणी : म्हैं।

लुगाई : नीं, सुबोध।

धणी : थांनै सावळ याद है ?

लुगाई : थांनै याद है के नीं ?

धणी : थांनै कीं याद कोनीं।

लुगाई : थांनै ई कीं याद नीं रैवै।

[खासी ताळ चुप्पी]

धणी : अबै दिन लांठा होवण लागा।

लुगाई : लांठा तौ व्हैला इज। फागण लाग्यौ।

धणी : बास में कित्तौ सरणाटौ है ?

लुगाई : स्कूल री बस आयगी।

धणी : हरेन बाबू री बेटी बस सूं उतरी।

लुगाई : बस गी परी ।

धणी : हरेन बाबू री बेटी स्कूटर मोलायण वाळी है।

लुगाई : नगेन बाबू री बेटी कनाडा जावै ।

धणी : बोरेन बाबू री बेटी अबकी ई पास नीं व्हियी ।

लुगाई : सुप्रभा रै बळै टॉवर व्हियो ।

धणी : सुप्रभा कुण ?

लुगाई : कुण कांई, थांरी भाणजी ।

धणी : सुप्रभा री सुसरो मांदो बतावै ।

लुगाई : वै तो कद सूं ई मांदा है । ब्लडप्रेशर है ।

धणी : म्हारो ब्लडप्रेशर नीं बध्यो । दिल रो दौरो ई नीं पड्यो । डायबिटीज ई नीं व्ही । आयै महीनै अेकर डाक्टर नै अवस बतावूं । म्हैं साव साजो सूगो हूं ।

लुगाई : बेटी जवाई अमरीका है । वै आवैला । बेटा दिल्ली है । वा ई आवैला । दोहीता-दोहीती ई आवैला । म्हैं वांरै सारू कुलफियां मोलावूंला । दोहीती सारू तानपुरो । दोहीता रा ब्याव में कांई-कांई गैणा-गांठा देवणा ? इण बाबत थी सोच्यो ? म्हैं तो सोच्यां बैठी हूं।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : चुप क्यूं व्ही ?

लुगाई : कांई बोलू ?

धणी : मरजी आवै ज्यूं ।

लुगाई : थे थोड़ा आडा व्है जावो ।

धणी : आखी रात सूतो रैवूं । रात रा सूवण टाळ दूजो काम ई कांई ?

लुगाई : थें मरद लोग ई जबरा व्हो ।

धणी : आजकालै तो सपना ई नीं देखूं । जे सपनां में भाभी दीख जावै । जे गोगेस नै पंछियां सूं अणूतो लगाव हो । भाभी नै गावणो आछो लागतो ।

लुगाई : सोचूं के अेक गाय राख लूं ।

धणी : गाय क्यूं ?

लुगाई : टबलू आवैला तो दूध पीवैला ।

धणी : दूध तो मोल ई मिळै ।

लुगाई : टावर बढ़िया दूध पीवै ।

धणी : गाय सूं सूगलाई वधै । माखी, माछर अर पोठा ।

लुगाई : म्हैं तो अेक गाय पाळूंला।

धणी : म्हारी राय कोनीं। सावल समझो तो मुरगी पाळो।

लुगाई : मुरगी ? छिः दुनिया भर री तूमत। म्हारी सब्जी खाय जावैला।

धणी : ईंडा मिळैला। मांस मिलैला।

लुगाई : गाय राख्यां दूध मिळैला। बढ़िया दूध।



धणी : गाय नीं, मुरगी।

लुगाई : मुरगी, नीं गाय।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

लुगाई : थानै कांई भेरां आवै ?

धणी : नीं तो।

लुगाई : सिगरेट सिलगाय ऊंघ मत जाजो। वळै कुड़तो बाळ न्हाकोला।

धणी : सूतो नीं, सोचतो हो। थें कदेई कमरख खायो ?

लुगाई : घणा ई। म्हारै रायगंज वाळा घर में घणाई निपजता।

धणी : कमरख री सौरम ई कैड़ी व्है ? आजकालै मिलै ई कोनीं।

लुगाई : मिलै तो है पण कम। अर अवै अै चीजां खावै ई कुण है ? अेक गाडी आवै।

धणी : अपां कानीं ?

लुगाई : संतोस बाबू रै बारणै ढबी। संतोस बाबू री साळियां घूमण सारू आई।

धणी : सिझ्या व्हैगी दीसै ?

लुगाई : हाल जेज है। दिन लांठा होवण ढूका।

धणी : लांठा दिन। लांठो वेपार। सिझ्या अबार व्हैला। पछै रात। पछै परभात। दिन अर रात। रात अर दिन। पण अपां मरघा कोनीं।

लुगाई : कैड़ा कावळ बोल काढो।

[थोड़ी ताळ चुप्पी]

धणी : बास में कित्ती सरणाटो है ?

लुगाई : भैड़ो कीं खास सरणाटो कोनीं। बीच-बीच में बस चालै।

धणी : कदेई कदेई टेक्सी।

लुगाई : कदेई कदेई लोरी।

धणी : बीच-बीच में हवा रो सरराटो।

लुगाई : पांनां रो ई खरराटो।

धणी : रूंखां री दरराटी ।

लुगाई : रूंखां माथै चिड़ियां फुदकै ।

धणी : चिड़ियां फुरर करती उड़ जावैला ।

लुगाई : रूंखां माथै पांन फरफरावै ।

धणी : सेवट पांन भड़ैला ।

लुगाई : कागला कांव कांव करै ।

धणी : कुत्ता भुसै ।

लुगाई : बीच-बीच में पगां रा खरड़का सुणीजै ।

धणी : बीच-बीच में टेलीफून री घंटी ।

लुगाई : बीच-बीच में रेडियो रा गाणा ।

धणी : अर वळै बीच-बीच में पूरो सरणाटो ।

लुगाई : लागै के कठैई कीं कोनीं ।

धणी : पगां री खुड़को ई नीं :

लुगाई : हवा ई नीं चालै दीसै ।

धणी : हजारी बाग वाळा परभात री सौरम ई कोनीं ।

लुगाई : हावलू अर बुलू रै डील री बास ई कोनीं ।

धणी : मिहिसास रै पांणी री महक ई कोनीं ।

लुगाई : रायगंज रै पास री गंध ई कोनीं ।

धणी : लागै के अपां कदै ई जीवता नीं रह्या ।

लुगाई : अपां हाल ई जीवता हां ।

उल्थो : विजयदांन देथा

* * *

माणस

●

पं. महावीर प्रसाद जोसी

माणस ! मिनखपणौ मत छोड़
बडकां री कुळ-नीत रीत री
मरजादा मत तोड़
मासण ! मिनखपणौ मत छोड़

वैर-विरोध, कुवांण, बुराई
गरब-गुमांन गाळ गरमाई
बळत विभूती देख पराई
सूं नातौ मत जोड़
माणस ! मिनखपणौ मत छोड़

पीर पराई मीठी वाणी
आहत हीण अनाथ पिरांणी
सीख नई परतीत पुरांणी
सूं मूंडौ मत मोड़
माणस ! मिनखपणौ मत छोड़

ओछी नीत रीत अणचाई
पर निंदरा बेवात बड़ाई
थोथा थूक बिलोण लड़ाई
सूं माथौ मत फोड़
माणस ! मिनखपणौ मत छोड़

৪৪

दो गीत

•

भागीरथ सिंघ भाग्य

•

सन्यासो

नैणां मांय रमायां गंगा, मन री पीड़ा कासी रे
किण जलमां री पाप, अेकलो भोगै ओ सन्यासी रे

सोवण वेळचां जागण करणी
जागण री रुत रोवै है
मिंदर री मूरत रै ओलै
सूरत किण री जोवै है

भजनां रै मिस दरद आपरो, ओर कठा तक गासो रे
किण जलमां री पाप अेकलो भोगै ओ सन्यासी रे

मीत गळी में दरसण सारु
रोज लगाया मेळा रे
हेत समंदर सीप भरोसै
संख करीज्या भेळा रे

प्रीत हियै में इसड़ी बोई, निपजी सत्यानासी रे
किण जलमां री पाप, अेकलो भोगै ओ सन्यासी रे

वै मनभावण बाळ वदळगा
उळझै लांवै केसां में
रंग-विरंगी पोसाकां
रंग लीनो भगवा भेसां में

सांसां थोथा साज, गीत अब कद तक अलग्व जगासी रे
किण जलमां री पाप, अेकलो भोगै ओ सन्यासी रे

जग बांचै काया रा लेखा
मन री वातां कुण जांणै
कितरा दरद जीव रा बैरी
बस भोगणियौ पहचांणै
घट घट रौ है वासी, पण खुदरी मनस्या वनवासी रे
किण जलमां रौ पाप, अेकलो भोगै औ सन्यासी रे

मौत सांसां नै छळगी रे

मौत उडीकै बैठ भरोखै
सांस वगै वगतां नै टोकै
रात-दिवस रे इणीं फिकर में काया गळगी रे
मौत सांसां नै छळगी रे

रहूं जागतो मरणो सूझै
नींदां मांही सपना धूजै
यूं लागै बिन हाथ पगां ई
मिनख जंमारो रण में जूंझै
प्रेम-बिरछ री जड़ म्हारी रग-रग में रळगी रे
मौत सांसां नै छळगी रे

काया सूं अपणेस घणेरौ
पण जद सूं ईं रौ पगफेरौ
पड़ियौ म्हारी यादां मांही
आसा वदळै रोज बसेरौ
आधी ऊमर इणीं अदळ वदळी में ढळगी रे
मौत सांसां नै छळगी रे

म्हारा दो नैणां रै सागै
मणसैंधी उणियारी जागै
बात करूं तो बोलै कोनीं
नीं बतळावूं बातां लागै

आंसू री बरसात दरद री खेती फळगी रे
मीत सांसां नै छळगी रे

झूठो धीरज मन बिलमाणो
भोळी बातां चित उळझाणो
कितरा दिन तक ओनै रै'णो
खुद सूं खुद री भेद छिपाणो

परवत जेड़ी आस बरफ री भांत पिघळगी रे
मीत सांस नै छलगी रे

::::::

म्हैं कवी नीं

मिरचूमल माडांणी

आव फकीरा, आयौ मौकै सूं आज थूं
फेऽऽऽर....! नीं आवै आदत सूं बाज थूं
कवी कह नै मत थूं मन्नै यूं गाळ दै
अेक घर तौ भाया डाकरण ई टाळ दै
समझायौ है पैलाई केई वार यूं
परण थारै भेजा में नीं बैठै वात क्यूं ?
और कीं तौ व्हेय सकूं अर हूं ई, भायला
परण कवो ! बिलकुल नीं—वैरा, चाय ला

कवी बरण रौ नसीब म्हैं लायौ नहीं
क्यूं के म्हैं चारण रौ जायौ नहीं
जे म्हैं वाकैई चारण रौ बेटौ होवतौ
तौ जल्लमतां ई दूहै में रोवतौ
रूं-रूं में कविता रमियोड़ी रैवती
मूंडै सूं डिंगळ रो धारा वैवती
वंसानुक्रम अेड़ौ जोर जतावतौ
पच्छै कोई कविता में सांमी आवतौ

नीं म्हैं किरणीं धाकड़ कवी रौ पूत हूं
नीं जिन्दा बेटा में बाप रौ भूत हूं
जे म्हैं कवी रौ बेटौ बरण जग में जीवतौ
बाळपरणै कविता रौ घासौ पीवतौ
बाप-कमाई माथै म्हैं मौज उडावतौ
नित वा'वाही लूट'र म्हैं घरै आवतौ
प्रतिभा में ई कीं कस्सर नीं रैवती
'रूंख जेहड़ौ टेटौ'—आ दुनिया कैवती

पण म्हारा फादर वै बोदारांमजी
नीं आवै वां नै कीं कविता रै नांम जी
वां नै है सिर्फ कमाई करण सूं कांम जी
सब्जी वेचै मंडी में सुब्बै-सांम जी
ताकड़ली सूं इज वां री अणूंतो प्रेम है
डंडी मारण री तो नित री नेम है
हां, लतीफ रा वैत फगत कुछ याद है
जांणै—कैड़ो व्है अदरक री स्वाद—है

नीं हूं रंवणियो म्हैं कोई गांव री
नीं जांणै क्यूं रुठ्यो है म्हारी सांवरो
गांवां में जलम्यो डा कविता जण सकै
राजस्थांनी लेखक वै इज बण सकै
म्हैं तो सहर में जलम्यो ग्रर मोटो व्हियो
इण कारण इज करम आज भोटो व्हियो
अेक सहरिया नै राजस्थांनी नीं आ सकै
भासा री पक्कड़ वो कीकर पा सकै

कोई सम्पादक रिस्तै में लागै कोय नीं
कोई लेखक ई लारै-आगै होय नीं
जे अैड़ो कोई घण-हेताळू म्हारै होवतो
तो म्हैं ईं लम्बी तांण'र नेगम सोवतो
आंख मीच रचनावां वो सब छापतो
सहनसाह बणियो रैतो म्हैं आप तो
माथै व्हेतो जे कोई लाम्बो हाथ ई
तो फेर भाया बणती कीं बात ई

नीं जांणूं लिटरेरी पोलिटिक्स म्हैं
कीकर व्हूं साहित्य-जगत में फिक्स म्हैं
जे थोड़ी-सीक म्हैं आ जांणतो
झट सूं अेक न्यारो तंवू तांणतो

तीन-पांच करणिया ! करवी करै
तीयै-पांचै सूं ई पण वै डरबी करै
ऊंची राखण नै खुद री टांग नै
रख देती कविता री टांगां भांग नै

दुख सव सूं मोटो तो है इण बात रौ
म्हैं मिरचूमल माडांणी हूं सिन्धी जात रौ
राजस्थांनी म्हारी मायड़ भासा नहीं
इण कारण सूं कोई आसा नहीं
म्हैं तौ वां सगळां रै बिच में गैर हूं
फळ-फूलांळो विन पत्तां री कैर हूं
सुणी है बातां थूं सगळी ध्यान सूं
बोल फकीरा, पछै कीकर म्हैं खुद नै कवी मान लूं !

***

परख

आधुनिक राजस्थानी साहित्य : प्रेरणा-स्रोत और प्रवृत्तियां

ले० डॉ० किरण नाहटा

प्रकाशक : चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर • मूल्य ४० रुपये

•

राजस्थांनी भासा री बढ़ती मानता अर विकास रै मारग में आ बात जरूरी है के आधुनिक साहित माथै ढंग सूं विवेचन व्है अर आ दरसाई जावै के आधुनिक राजस्थांनी सहित मांय सिरजण रो क्रम बरोबर जारी है। डॉ० किरण नाहटा रो ओ सोध-ग्रंथ इण बात री पड़ूतर देवै। इण सोध-ग्रंथ में सन् १६०० रै पछै रूपांळै राजस्थांनी साहित माथै सांगोपांग ढंग सूं विवेचन व्हियो है। आ बात सांची है के अब ताईं आधुनिक राजस्थांनी साहित री जिकी पोथ्यां देखण में आई, वै फगत लेखक अर पोथ्यां री सूचना भर देवै पण इण ग्रंथ में डॉ० नाहटा जठै 'विवेचनात्मक अर समालोचनात्मक दृष्टि' सूं साहित री मोल तोल करयो है, उठै विधावां री प्रव्रति री ई लेखो-जोखो सांमै राख्यो है।

इण ग्रंथ रै पैलै खंड में वां कारणां रो उल्लेख व्हियो है, जिण सूं आधुनिक राजस्थांनी आपरै मध्यकालीन परिवेस नै छोड र अळगी व्ही। इण रो ग्रेक कारण तो परदेसां में रैवण आळै व्योपारी वर्ग रो है, जिको मराठी अर बंगला भासा री स्थिति नै देखतां थकां खुद री मायड़ भासा री स्थिति नै मैसूस करी अर दूजो कारण हो, की विदेसी विद्वानां रो ध्यान पुरांणै राजस्थांनी सहित सारू खिचणो। आगै चालर ग्रै दोनूं स्थिति नुंवै साहित री रचना में आपरी बरोबर भूमिका निभाई। दूजै खंड में सित्तर बरसां री वां राजनैतिक, सामाजिक अर आर्थिक स्थितियां रो उल्लेख व्हियो है, जिकी आधुनिक राजस्थांनी साहित नै प्रभावित करण सारू जिम्मेदार है। तीजो अर चौथो खंड गद्य अर पद्य री मोटी-मोटी विसेसतावां नै सांमी राखै। गद्य खंड में कहानी, नाटक, एकांकी निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण अर गद्य-काव्य जैड़ी विधावां री सामान्य प्रवृतियां माथै विचार व्हियो है। पुरांणै राजस्थांनी गद्य री तुलना में आज रै गद्य री स्थिति संतोसजनक नीं मानी जावै। उपन्यास, नाटक अर कहांणी री स्थिति आदर्शवाद अर समाज सुधारू दृष्टिकोण सूं जुड़योड़ी है, पण लारला च्यार-पांच बरसां में आ स्थिति जरूर यथार्थवाद री तरफ मुड़ी है। राजस्थानी गद्य री स्थिति राजस्थानी रै लिखारां वास्तै ग्रेक चुणौती बण्योड़ी है। आज ग्रेक ठोस गद्य री जरूरत सूं नकार नीं दियो जा सकै।

गद्य री तुलना में पद्य री जात्रा घणी लाम्बी है घणां-घणां पड़ावां रै मांयं। डॉ० किरण नाहटा प्रबन्ध काव्य सूं लेय'र नुवीं कविता ताईं राजस्थानी पद्य साहित री विविध विधावां रो सांतरो विवेचन करयो है। कविता रै मांय लोक-जीवण अर लोक साहित सूं जुड़योड़ी प्रव्रति मुख्य रूप सूं मुक्तक अर गीतां रै रूप में सांमी आई है। पद्य री सगळां सूं

मोटी विसेसता आ है के गद्य री तुलना में आधुनिक कविता आज री जिन्दगी सूं साव जुड्योड़ी है अर आज रो कवि आपरी इमांदारी सूं जुग-बोध अर आज री संवेदना नै प्रगट करै। कथ्य अर सिल्प री दृस्ठि सूं राजस्थांनी री नुंवी कविता किणी भासा री तुलना में आपरी ठावी ठौड़ बणाय सकै है। डॉ० किरण नाहटा आपरै इण ग्रंथ में नुवीं कविता बाबत उण रै केई मुद्दां माथै गंभीर दस्टि सूं मूल्यांकन करयो है। सोध-ग्रंथ रो आखरी खंड 'उपलब्धि अर मूल्यांकन' रो है। इण खंड में राजस्थांनी री मंद गति अर राजस्थांनी भासा सूं जुड्योड़ा दूजा प्रस्नां रो खुलासो करयो है।

सोध ग्रंथ सूं आ लागै के राजस्थांनी साहित में आलोचना जैड़ी विधा रो जलम आज ताईं नीं व्हियो। म्हारै ख्याल सूं स्वतंत्र आलोचना बाबत तो आ बात कही जा सकै, पण आलोचना जैड़ी स्थिति पुस्तकां री भूमिका अर कीं काव्य-क्रतियां री विवेचना रै मांय जरूर लखावै, इण रो उल्लेख जरूर होवणो चायजै हो, लेखक आपरो अेक दस्टिकोण ओ राख्यो है के इण ग्रंथ में अध्यन मोजूदा सोध-परम्परा सूं हट 'र व्हियो है। इण वास्तै खण्डां रै मांय उपसीर्सक नीं राख्या। वीयां सोध री अेक पूरी प्रक्रिया है अर उण पद्धति लारै मूल भाव ओ है के लेखक वैज्ञानिक ढंग सूं विसै सार्थै तटस्थ होय' र आपरा निस्कर्स राखै। 'विवेचनात्मक दस्टि' वास्तै अध्यायां रो व्यवस्थित अर वर्गीकरण होणा जरूरी है, ओ ई कारण है के डॉ० नाहटा रै सोध-प्रबंध रा अै खण्ड अैड़ा लाम्बा लेख सा लागै, जिणमें किणी विधा रै विकास-क्रम रो अेक लेखौ-जोखो प्रस्तुत करयो व्हे।

सन् १९०० रै पछै छप्योड़ै साहित नै आधार बणातां इण बात रो ध्यांन जरूर राख्यो है के सगळी रचनावां रो उल्लेख व्हे अर सगळी विधावां रो विकास-क्रम सांमी राख्यो जावै, पण अठै आ बात जरूर ध्यांन राखणी ही के साहित री विधा रो इतियास अर छप्योड़ै साहित माथै विवेचनात्मक दस्टि सूं विचार करणो— दो अलग-अलग बातां हैं। 'विवेचनात्मक दस्टि' रै मापदंडां माथै जरूरी नीं के अैर-गैर रचनावां नै ई सांमी राखी जावै पण विधा रै इतिहास सारू हरेक लेखक अर रचना रो उल्लेख जरूरी है। म्हारै ख्याल सूं इण अंतर रो निभाव डॉ० नाहटा आपरै ग्रंथ में नीं कर पाया है। आधुनिक साहित रो लेखौ-जोखो प्रस्तुत करतां थकां पत्र-पत्रिकावां री भूमिका किणी ढ़ंग सूं नकारी नीं जावै। सोध-ग्रंथ में राजस्थांनी पत्रिकावां री रीति-नीति री चर्चा करणो लाजमी हो।

वीयां पूरो सोध प्रबंध नीजू दस्टि अर मैनत सूं लिख्यौ ग्यो है। लारला सतर बरसां री सामग्री नै गतगुंअे सूं ढ़ंग सूं पैलपोत इण सोध-ग्रंथ में डॉ० किरण नाहटा गंभीरता सूं लीनी है। निस्चै ई सोध-प्रबंध अेक अभाव री पूर्ती करै उठै आधुनिक साहित माथै न्यारा-न्यारा पखां सूं विचार करण वाळै विद्वान लेखकां सारू अेक दरवाजो खोलै।

• डॉ. गोरधन सिंघ सेखावत



आपरा कागद

घणा मानीता भाई जोधा जी,

राजस्थांनी भाखा साहित संगम आप नै 'जागती जोत' रा सम्पादक बणाया, नुवीं पीढ़ी रै वास्तै घणी हरख-कोड री बात है।

आप आ बात आछी तरै सूं जांणो हो के जद सूं 'जागती जोत' रा अंक छप्या है, म्हारी अेक ई रचना छपण सारू म्हैं कदै ई कोनीं भिजाई। इयैं री कारण ओ रयो के 'कहांणी अंक', 'निवंध अंक' अर 'आलोचना' अंक जिका छप्या है, वां सूं म्हारी राय अलायदा रह्यी। सम्पादकां री सूचना भी कोनीं मिलती।

मोकळी विधावां नैं लियोड़ा साधारण अंक छपै तो सगळा साहितकारां नै मौको मिळै अर संयोग भी, म्हारो ओ हमेसा भरोसो रह्यो है। पैलीवार अकादमी री ओर सूं आपरै संपादक बणनै री सूचना छप्योड़ी मिळी, आ अचंभै री बात ही। कम सूं कम लिखता-पढ़ता लोगां तांई तो संगम नै पत्रिका रै बाबत जांणकारी पूगावणी चाहिजै।

म्हैं आगूंच आपनै बधाई देवूं, इण भरोसै रै सागै के आपरै हाथां जागती जोत रो संपादन आछो होसी।

—सिवराज छंगाणी, बीकानेर

प्रिय तेजजी,

थांरो कागद मिळियो। म्हनै इण बात री घणी खुसी है के थांनै 'जागती जोत' रै सम्पादन रो कांम सूंपीज्यो। थे अेक बात रो खास खयाल राखजो के अंक समै माथै संपादित करनै प्रकासित कराय दो। इण में काफी लगन नै फुरती री जरूरत है, जिकी केई वार थांरै डील सूं गायब हो-जाया करै। दूजी बात हर अंक री सामग्री बेलेन्सड गंभीर नै फतवैबाजी सूं दूर होवै। राजस्थांनी री स्थिति हाल अेक दूजै माथै धूळ उछाळण री के किणीं वाद विसेस री पख टोळण री नीं है। म्हनै उमेद है के थांरै अनुभव पन्नियांण थे यां अंकां नै सारथक सरूप देवोला। आ ई सही मायनै में सेवा होला। थे गीत भिजवांणै री लिखी, सो म्हारो हर सहयोग थांरै साथै है। सगळां सूं ज्यादा चिंता म्हनै थांरै खुद रै सिरजण बाबत है, सो उण क्रम नै बणायो राखजो। कठैई आ नीं हो जावै के असफळ लेखक आलोचक बणण में सफळता रो भरम पाळ लेवै। थां में अेक सफल कवी बणणै रा सांवठा कणूका है, इण समरथाई नै पोखणी जरूरी है, सस्ती वाहवाही रो नतीजो थां सूं छांनो कोनीं। सम्परक बणायो राखजो।

—डॉ० नारायण सिंघ भाटी, जोधपुर

जोधा सा,

संपादन इण भांत करणीजो के गद्य में कीं अेकरूपता आवै अर नुवीं दिसा मिळै। विज्जी री लगातार कुचरणी करनै कीं मौलिक गद्य रचनावां लिखवा सको, तौ अेक उपलब्धि व्है।

—डॉ० नरसिंघ राजपुरोहित, खांडप, जिला-वाड़मेर

भाई जोधाजी,

'जागती जोत' थें थामली, आ फूठरी वात है। थांनै घणी वधाई। वधाई यूं भी के थें युवा हो अर आज रै लेखण री वात नै समझो हो।

—विनोद सोमांणी 'हंस' अजमेर

जोधा जी,

वधाई स्वीकारो के आपनै 'जागती जोत' री लम्बो प्रतीक्षित (Deserved) संपादकत्व यूं मिल्यो जीयां मुरारजी नै Priminister ship। आप तौ राजस्थांनी रै उग्रवादी खेमै रा सिरमोर हो– आसा है के आपरै संपादकत्व में आ पत्रिका आपरै पुरांणै रूढ़िवादी सिड़लै स्वरूप नै त्याग कर सूरज री भांति नयो अर प्रेरणापरक प्रभात ल्याय'र 'जागती जोत' नाम नै सारथक करैगी।

—अम्बू सरमा, कलकत्ता

प्रिय जोधा,

कागद मिल्यो। घणा दिनां पछै समचार मालुम हुआ। नन्द री नौकरी लागण सूं अर म्हनै लारला अप्रेल में हार्ट आटैक आवण सूं 'हरावळ' वंद करणो पड़ियो। अेक दो जणां सूं ओर चलावण री चेस्टा करी, पण जुगत वैठी कोनीं। इलाज करावण नै अर पाणी पळटी करण नै लारलै सितंवर अेक म्हीना तांणी अमरीका जा आयो। उठै भी डागदरां कह्यो के आरांम करो। आरांम मिळै कोनीं।

सो जीवां जितरै भाग रा। अमरीकी जीवण माथै लेख लिख सकूं। उठै म्हैं राजस्थांनी कविता माथै भासण दिया, वै पाछा मांड सकूं। अेकाधी लांवी कविता मौत माथै लिख राखी हूं, जिकी भेज सकूं। पण सगळी कांम नैठाव सूं ईं हो सकै।

धीरै-धीरै अमरीका में वसण री मिसल व्रिठा रह्यौ हूं। स्यात आगली गरमियां तांईं पार पड़ जावै। सो राजस्थांनी रा लिखणा-पढ़णा नै सिलांम। अकादमी थांनै ठीक टाळ्या। ईं मिस कीं कांम कर सकोला।

—सत्य प्रकास जोसी, बंबोई

घणा हेताळू जोधाजी,

'जागती जोत' रै संपादण री कांम अवै जावतां ठीक ठांणै पूगो लागै। इण तरै रा मौका हाथै लाग्यां ईं म्हारै जैड़ा नुवां लिखारा कीं उम्मीद वांधै। कांई छेटी जाय नै परदेसां वास करयो वेटी रा वापां, मिलण रा ई जांदा पड़ग्या।

कम सूं कम कागद तो म्हांनया करो कवितावां केई ठीक-ठीक लिखी है, कम खरसांण माथै चढ़णां पैली इणां रो रूप नीं निखरैला। पर गो काम म्हैं थारै माथै छोड़ूं। म्हनै पुरता भरोसो है थांरै माथै।

—चन्द्र प्रकाश देवल, पारीक

प्रिय भाई,

'जागती जोत' का संपादन कार्य राज. सा. अकादमी ने आपको सौंपा है। खुशी हुई। निश्चय ही युवा हाथों में साहित्य का कल्याण होगा।

पंजाबी कविताएं (नागरी में) हिन्दी अनुवाद सहित और टिप्पणी भी आपके लिए तैयार कर रहा हूं, मासान्त में सामग्री आपके हाथों में होगी। नागरी लिप्यन्तरण व अनुवाद का दोहरा काम समय तो लेगा ही। आप मनतक सामग्री का चयन ही करेंगे, यह तय है, वैसी ही रचनाएं जुटाऊंगा, कुछ जुटाली हैं।

—फूलचंद मानव, भटिंडा (पंजाब)

भाई जोधा,

सबसे पहले जागती जोत' के सम्पादकीय पद के लिए बधाई। आप मैथिली कविताओं के अनुवाद देना चाहते हैं, यह मेरे लिए बहुत ही आनन्ददायक संवाद है। मैं शीघ्र ही मैथिली की अच्छी कविताएं मूल व हिन्दी के शब्दानुवाद के साथ भिजाऊंगा। मेरी कविताएं आपको पसन्द आयी, यह मैं अपने बारे में एक काम्प्लीमेंट समझता हूं। धन्यवाद।

—नचिकेता, (मैथिल कवि) दिल्ली

भाई जोधाजी,

हेत भरिया रामां-सामां। बेळयां सूं ई थान रो पत्रो पढ़ियो के आपनै अप्रैल मास सूं 'जागती जोत' रो सम्पादन करणै रो कांम सूंप्यो गियो। आप जैड़ा ऊंचै दरजै रा विद्वांन सूं ओ छापो दिन दूणी रात चौगणी उन्नति करसी अर नुवां लिखारां नै उत्साह व प्रेरणा मिळसी।

—दीपचंद सुथार, मेड़ता सिटी

भाई तेजजी,

ओ समचार सुण'र के आप आगला छ म्हीना वास्तै 'जागती जोत' रा सम्पादक तय हुआ, अपार खुसी हुई। थीं तो चोखा अक वेगण री उम्मीद वधी।

—आतमाराम, जोधपुर

प्याराजी !

पोथी म्हारै हाथै री घणी मैंग घोर्या है। गुटक्री सूं अळगो पासेड़ियो मानस हूं, कुण बूझै? जीवूं जितै पढ़चो लिखूं। दरजण पूरी पाण्डुलिप्यां लिखी पड़ी है। छप्योड़ी पोथ्यांरी विगत भेजूं। घणखरी जूनी व्हैगी। भलो समचार मिळियो के अप्रेल अक सूं सम्पादण आपरी दिव्य दीट-जोत होसी। कागद री पुरनियो जरूर घालजो।

—नानूराम संस्कर्ता, काळू

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा. मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्या हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंहराज पुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा. ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींद	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं. श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ. मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-५०
राजस्थान साहित्य री समीक्षा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा. जो)	सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निवन्ध माळा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
सरवर सूरज अर सिज्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क—

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।

आगलै अंक बांचौ—

- नारायणसिंघ भाटी रा नवी ढळत रा सौळा गीत
- नन्द भारद्वाज अर संभू मेहडू री टाळवीं कवितावां
- खुद सूं खुद री वातां—गोरधनसिंघ सेखावत री लांबी कविता री पैली खेंप
- सांवर दइया री नवी कथा—गळी जिसी गळी
- मैथिली री दस नवी कवितावां
- सोजती गेट सूं सिवसागर (आसांम) कल्याणसिंघ राजावत सागै दूर—दिसावर री जात्रा
- असागरा रौ सुरग—सरतवाव री कथा
- अर दूजा सगळा स्थंभ

मुद्रण : माहेस्वरी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर सारू साधना प्रेस जोधपुर में छपी।

जागती जोत

राजस्थानी संगम रौ मासिक

सम्पादक
तेज सिंघ जोधा

मई
१९७७



आपरा कागद

मानेता भाई तेजसिंघ सा,

'जागती जोत' इता दिनां फिर-फिर नै बूढा लोगां रै हाथां में रही, अब आप जैड़ा जवांन जोध रै हाथ आई है। बूढा लोग जूंना नै अवार री रचनावां री तालमेळ बैठाय नीं चालिया है।

म्हनै आ संका तो नीं है कै आप किणी गेल-भांत जूंना-नुवां रो भेद करसोला। कारण आप किणी री थोथी पटेलाई नै पोखर नै करै ईंज नीं पतीजो है। कारण बूढा ईंया कै सकै है। तो नुवीं लीगां कै सकै है। दोनूं ई पीढ़ियां में जोगा-पजोगा व्है सकै है। इण वास्तै नुवा-पुराणा रो हेळमेळ ईज हुवै तो आछो लागै।

सोभाग सिंह सेखावत
चौपासनी, जोधपुर

भाई जोधाजी,

'जागती जोत' रो मासिक होवणो अर साथै आपरो सम्पादन दोनूं ई राजस्थांनी सारू सुभ। आप म्हारी बधाई तो स्वीकारो।

करणीदान बारहठ
झुंझनू

प्रिय तेजसिंघजी,

'जागती जोत' मासिक रो अप्रेल अंक बांच'र चित प्रसन्न हुयो। म्हारी हार्दिक बधाई।

मनोहर सरमा
बीकानेर

जोधाजी,

आपरै हाथां में 'जागती जोत' जगमगा'र दीपैली, अैड़ी आसा है। 'जागती जोत' नियमित रैवैली के अबै ई बुझणै रो डर है? राजस्थांनी भासा री अेक ईज पत्रिका है अर वा ई राजनीती रै फादा में कळिपोडी। अेक अंक छपै चार गायब, चार छपै, आठ गायब। लेखकां री रचनावां ई रुळती फिरै, न मंजूरी री खबर, न ना मंजूरी री सूचना। इणनै नियमित करणै रो मोड़ आपरै ई माथै बंधसी इणी आसा रै साथै।

सुरेन्द्र अंचल
भीम, उदयपुर

प्रिय भाई जोधाजी,

'जागती जोत' का अप्रेल, १९७७ का मासिक अंक प्राप्त हुआ। सचमुच अंक की सामग्री और ले आऊट आदि देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस भव्य प्रयास के लिए मैं व्यक्तिशः आपको साधुवाद देता हूं।

डा. राजेन्द्र शर्मा
निदेशक राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर

जागती जोत

राजस्थांनी संगम रौ मासिक

•

मई १९७७

•

संपादक

तेज सिंघ जोधा

•

वरस : ५
अंक : ३
वरस रौ मोल : १२ रिपिया
इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ
रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक
राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)
बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

सत्य प्रकास जोसी : राजस्थांनी रा स्यांतोगां कवी । 'हरावळ' रा सम्पादक । 'दीवा कांपै क्यूं', 'राधा', 'बोल भारमली' इत्याद कविता री पोथ्यां छप्योड़ी । बम्बोई री अेक कॉलेज में हिन्दी पढ़ावै ।

नारायण सिंघ भाटी : सिरै कवी । 'परंपरा' सोध-छापै रा सम्पादक । राजस्थांनी सोध संस्थान चौपासनी रा निदेसक । 'सांझ', 'ओळूं', 'दुर्गादास', 'परमवीर', 'जीवण धन', 'कळप' अर 'मीरां' इत्याद कविता री पोथ्यां छप्योड़ी । फुटकर कवितावां अर गीतां री दो पोथ्यां छपण नै लगैटगै त्यार । आपरो मेघदूत रो अनुवाद ई नामी अनुवादां में जाणीजै ।

नन्द भारद्वाज : नवा कवी । 'अंधार-पख' नांव री पोथी छप्योड़ी । कीं दिनां तेजसिंघ जोधा सागै भाठा भांग्या तो कीं दिनां 'हरावळ' रो कांम सांभ्यो । पक्का मार्क्सवादी । आजकाल आकासवांणी जोधपुर में 'प्रोग्रेम अेग्जीक्यूटिव' ।

संभू मेहडू : बोरूंदै रा वासी । 'दुविधा' फिल्म रा कलाकार । कीं टेलीविजन फिल्मां में ई कांम कीधो । बीयां करसण रो कांम करै । कदै-कदास कवितावां ई लिखै ।

सांवर दइया : नवा कथाकारां में नांमी । 'असवाड़ै-पसवाड़ै' नांव सूं अेक वात-पोथी छपी, जिणनै राजस्थांनी संगम अर बंबोई री ग्रेजुयेट अेसोसिअेसन रो साहीती इनाम हाथै आयो । इणां बीकानेर रा वासी ।

सरतचन्द्र चट्टोपाध्याय : सुरगवासी सरत बाबू बंगाली रा जग-चावा कथाकार । सगळी भासावां में आप रा सांवठा पाठक ।

गोरधन सिंघ सेखावत : नवी कविता रा आगीवाण कवी । 'राजस्थांनी अेक' रा पांच कवियां में सूं । वांरी कविता 'खुद सूं खुद री बातां' आप तीन-च्यार बरसां पैली रची जिकी इण अंक सूं सागासाळी ।

पारस अरोड़ा : 'खुलती गांठां' उपन्यास री गांठां पैली मरुवाणी रै सिरै छापी अर पछै 'हरावळ' में खुलु-खुलु व्ही, पण खुली नीं । इण बिचाळै पारस इण उपन्यास नै नवै सिरै सूं पाछो लिखियो अर अब इण उपन्यास री अेकूं अेक गांठ च्यार-पांच अंकां में खोल देवण रो मन, इण खातै रै सम्पादक रो पूरो । पारस जोधपुर विस्वविद्याळै रै प्रेस में काम करै ।

कल्याण सिंघ राजावत : मंच रा चावा ठावा कवी । गद्य लिखारा ई कम नीं । इण अंक वांरी आसांम-जात्रा ।

नरसिंघ राजपुरोहित : नांमी कथाकार । सांडप, जिला बाड़मेर में अध्यापक । राज्य सरकार सूं टाळका अध्यापक होवण रो इनाम पायोड़ा ।

वि ग त

● पूठै री फोटोग्राफ : जगदीस प्रजापत

कवी री बात

दो घोड़ां री सवारी

सत्य प्रकाश जोशी

म्हैं अर म्हारै ओळूं-दोळूं रा सगळा साहितकार जद लिखण री कवरो सैंतरो सीख्यो, उण वगत हिन्दी गुद गुदाळमां चालती ही। म्हांनै पोसाळां में पढावण वाळा मास्टर यू. पी. सूं आवता, जिकां नै म्हे परदेसी बोलता। म्हांनै पढण नै हिन्दी री पोथ्यां मिलती। राजिया अर चकरिया रा सोरठा कदेई हाथ में आ जावता तो देखतां-देखतां कंठां हो जावता। फाग, भजन अर घरां में मा-बहनां रा गीत म्हांनै अणायास समझ में आ जावता। ना म्हे होमवर्क करता, अर ना म्हे मार खावता, ना मुरगा बणता, तो ई राजस्थांनी री कैड़ी ई कविता व्हो, म्हारै अंगां उतर जावती।

पढ़ण रा इण पगोथियां सूं ऊपर चढतां ई म्हांनै अंगरेजी सूं सायको पड्यो अर ग्यांन रा नवा झरोखा खुलण लागा। अंगरेजी ई क्यूं, बंगाली अर भारत री दूजी प्रांतीय भासावां रा हिन्दी अनुवाद ई, हिन्दी साहित रै पासंग में घणा सैठा लागण लागा। जिका लोग संस्कृत अर प्राकृत रो अध्यन करण लागा वै ई कमोबेस इणीं नतीजै माथै पूगा।

पाठक री हैसियत सूं वध'र जद म्हे लिखण रै धरातळ माथै आया, तो म्हारै सांमी दो विकल्प हा—हिन्दी में लिखणो के राजस्थांनी में। हिन्दी री बकायदा सिक्षा अर च्यारूमेर हिन्दी रो मंच, पोथ्यां अर पत्रिकावां रो वातावरण बीस-तीस बरसां देनी रै हरेक राजस्थांनी नै हिन्दी कानीं तेड़ियो। हिन्दी रो मोह-भंग घणा दिन पछै हियो। कवियां सारू मंच माथै हिन्दी, पोथियां रै रूप में इसकूल, कालेज अर लाइब्रेरी में हिन्दी अर साहित रा हमसाथ्यां बिचै हिन्दी ई हिन्दी रो वातावरण हो।

वातावरण रा इण घेराव सूं जिका लोग हिन्दी में लिखण लागा, उणां मांय सूं कीं जणां हिन्दी में ई नांव कमावण लागा अर कीं लिखण रा धरातळ माथै साव असफळ व्हेगा। असफळ लेखक राजस्थांनी में साथै रो साथै लिखणो चालू कर दियो।

हिन्दी रै मंच माथै राजस्थांनी री कवितावां आदर पावण लागी अर इण सफळता रै पांण हिन्दी में सफळता पायोड़ा लेखक अर कवी ई राजस्थांनी कानीं मुडण लागा।

वातावरण रै इण दबाव री बात अळगी राख'र जे म्हैं रचना-स्तर माथै सोचूं तौ म्हनै लखावै के हिन्दी में अेक बात कैवण में म्हनै जित्ता सबद खरचणा पड़ै, उण सूं काफी कम सबद राजस्थांनी में कांम लियां ई पूरी बात कथीज सकै। अभिव्यजना री आ सैंळाई राजस्थांनी सिवाय दूजी कोई भासा में म्हैं कोनीं अनुभव कर सकूं। राजस्थांन रै जन-जीवन सूं जुड़ण री ई सबळ माध्यम राजस्थांनी भासा ही व्है सकै. आज जद राजस्थांनी री मूवमेंट आपरै पगां ऊभी व्हेगी है अर इणमें वै सगळी सुविधावां सचीज सकै, जिकी हिन्दी में सचीज्योड़ी है तौ राजस्थांनी रै अलावा दूजी भासा में लिखण री कलपना ई कोनीं करी जा सकै। हिन्दी में माच्योड़ी आपाधापी अर खेमां सूं वच'र आपरी सिरजण बचायौ राखण सारू ई औ जरूरी है के आपरै हलकै में राजस्थांनी में लिखणियौ लेखक आपरै वातावरण अर सिरजण रै बीच री अेकता बणाई राखै। आज राजस्थांनी में फगत लिखण री जरुत ई जरुत निगै आवै—खेमां में बंटण री सवाल केई बरसां पछै ऊठैला।

अठै म्हैं वां लेखकां री हालत माथै विचार करूं जिका इतिहास रै इण दबाव सूं छूट्योड़ा है। पढ़ाई-लिखाई तौ वां री ई हाल हिन्दी के अंगरेजी में व्है, पण राजस्थांनी में लिखण री ई आंगणौ वां रै सांमी खुल्लौ पड़चौ है। आज राजस्थांनी जाणण वाळौ लेखक राजस्थानी में लिख'र ई मांयलो संतोस कमाय सकै अर हिन्दी में लिख'र ई आपरी मांयली मनो-भोम नै संतोस पुगाय सकै। इण आधार माथै उणरी दोनूं ई घोड़ां माथै सवारी सावळ है। पण लेखक आ ई सोचै के उणरी दायरौ हिन्दी में लिखण रै कारण घणौ कांकड़ दाब सकै है, उठै उणनै आपरै समाज सूं जुड़ण री थोड़ी चिंता करण री जरुत है। ज्यूं अंगरेजी में लिखण सूं आखा संसार सूं जुड़ण री कलपना करण वाला लेखक अंगरेजी साहित में कठैई कोनीं पूग सक्या अर सेमट वां नै आपरी भासावां पिल्लौ पाछी फेलणी पड़चौ, उणीं भांत हिन्दी में लिखियां ई उठी रा वाद-विवाद, गुट-खेमां सूं कळीज आं लिखारां नै ई सेवट आपरी भासा री धरती सोधणी पड़ैला। आ धरती रचना रै लेवल माथै तौ है ई, आपरै जन-जीवण सूं जुड़ण री धरती ई आ ई है। आपरी प्रांतीय भासा में लिख'र लेखक आखै संसार में ख्यात हासिल कर सकै है, पण पराई भासा में लिख'र वौ ई लेखक आपरै गांव नै ई अगेज सकै, इण में म्हनै पूरी सक है।

राजस्थांन रै हर विचारवांन नै अेक बगत इण नतीजै माथै पूग्यां ई सरैला। इण समझ रै पांण ई उण रै रचना-ससार रौ ई पूरौ विगसाव व्हे सकैला। औ दो घोड़ां री सवारी रौ खतरौ अेक घोड़ै माथै बैठ्यां ई टळ सकै अर राजस्थांन रै लेखक सारू औ घोड़ौ राजस्थांनी भासा ई व्हे सकै।

* * *

तीन कवितावां : सत्यप्रकास जोसी

मि. नाथ

ला म्हारो मुखड़ो दे थोड़ो वारे जाऊं
अंगरेजी रा सबद घाल दे कीं बटवा में
आजकाल घर में तो अै उपड़ै ई कोनी
च्यारूं कांनी बड़लै-बड़लै मोर टहूकै
कुरळावै सरवर रै ईरां-तीरां कुरजां
कोयल रस घोळै लुकियोड़ी अमराई में
अंगरेजी रा सबद घाल दे कीं बटवा में
भासा सांच छिपावण वाळी
मन रा भेद लुकावण वाळी
मारग में मूरख मिलग्या तो
म्हैं वैंमे अग्यांन उगाऊं
ला म्हारो मुखड़ो दे थोड़ो वारे जाऊं

हंसी पड़ी व्है छुपियोड़ी तो जेबां भर दे
नीठ टावरां रै हाथां सूं गोख धरी ऊंचो आळा में
घर में नीं व्हैला तो ई सर जावैला।
वारै पग-पग झरणां नदियां री कळकळ में
संचियोड़ी आ हंसी कांम म्हारै आवैला
हंसी लाग छळ छंद छिपावै
मिनखां में माजनो बचावै
धोळी धोळो दूध मिळै तो
म्हैं उणमें ओ जेर मिलाऊं
ला म्हारो मुखड़ो दे थोड़ो वारे जाऊं

ठाकुरजी वाळा नेतर ला अणचळ म्हारा
लारै आगै नहीं, फगत म्हैं आज देख लूं
वारै घणो तावड़ो जगमग चन्नाणो है
भांत-भांत रै रंगां रा दे नैण म्हनै वारै जाणो है

हाथ-पगां पांसळियां री हाडकियां माथै
चिपियोड़ी चमड़ी तिड़केला जगां-जगां सूं
इण में थोड़ी घास-फूस अर पाणी भर दै
अख खांधा, केहर कटि, लांबा भुज दो कर दै
म्हनै मिनख रो भरम वणा म्हैं वारै जाऊं
ला म्हारो मुखड़ो दै थोड़ो वारै जाऊं

* * *

ओलूं री कामण

•

हाल याद है वालसमद रो जूनो पुळियो
कादा में कुरळातो कोई कायर कुरजां
पचरंगी रेसमी लैरियो
थारी केसरवरणी टांगां

जाणूं हूं अै चीजां झूठी
तो ई दोपारां सूनी गळियां में
जाम हुयोड़ा मोटर रा बजता हॉरन ज्यूं
थारै डूबण री देखी तो झूठ धारणा
म्हारो पिंडो छोडै कोनी

अब तो वो जूनो पुळियो ई कोनी दीसै
कोनी रह्यो फड़कतो पचरंगो रेसमी लैरियो
फगत कठै ई कुरळावै है कायर कुरजां
फगत कठै ई जीवै केसरवरणी टांगां

* * *

मरद-लुगाई

हरी घास रा उण खूंणा में
बाथां बंधिया मरद-लुगाई
नैण-नैण में नैण ढाळता
भूल जीवता जूण पराई
ज्यूं ऊभा हा

सोचूं हूं वै भावै जोग मिल्या हा
अबै बिछड़ग्या व्हैला
छांनै-ओलै प्रीत करी ही
कांकण-डोरै बंधग्या व्हैला
के दोनां रा पूत आंगणै रमता व्हैला
कुण जांणै अब तांईं दोनूं मरग्या व्हैला

पण जद ई आऊं इण बाग फिरण नै
औ कणेर रा फूल्या-फूल्या फूल न दीसै
हरसिंगार री औ झड़ती कळियां थम जावै
हरियाळी मर जावै सगळी

जीवै फगत बात में वै ई
हरी घास रा उण खूणा में
बाथां बंधिया मरद-लुगाई
नैण-नैण में नैण ढाळता
भूल जीवता जूण पराई ।

* * *

सौला गीत

बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघियां

नारायणसिंघ भाटी

१

सुंदर थांनै भूल्यां
कीकर पार पड़ै हो

श्री जीवण घमसांण जुंझाऊ
पग-पग पिसण अड़ै हो
जिण कर जुलफ संवारी थांरी
उण कर पेच पड़ै हो

२

आज नीं सिवीज्यो थांरी अंवळी ओळूं री भार
वा अतीत लता पड़ी पिछोकड़ै
छांनै सी चढ़ आई छात
वरसां पैली री सपणो सपोठो
निकळी जीं सूं फर छिनगारी घात
देखूं तो अटको पड़ी है कोरी कांचळी
जांणं घड़ी पुळां री ही वात

३

थांरो तो थोड़ो सो हिलकणो
नै नागरवेल रो पसरणो
घड़ी-घड़ी आवै म्हांनै याद
गुल कंवळाई री आगूंन रळी में
म्हांरै नैणां रै वासंग वठ
करी जठै आसूदी अळेटणो

४

म्हांरो तो थोड़ो सो देखणो
नै थांरो होळै सै मुळकणो
ओसरतै आड़ंग री अंगड़ाई में
फूंपळियै विरछां-तळ सिवीज वीज
धजे उण वूठोड़ै री सौंधी आवै सांस
वरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघियां

५

कांठळ रा कांमेती किसो फसूंवो ले आया
विन वादळ म्हे नाच्या मोर ज्यूं
थे मोरणी वण आया
म्हांरै नैणां नेह झरयो

थे चुग-चुग मन विलमाया
डीगा डागळा मिळै न पाछा
वै कळाव मन भाया

६

थांरै नींदाळू नैणां री नेह
म्हांरै कोयां री जोगण जोतड़ी
विन वैणां रैणां री उडीक
काजळिया पथरणां में उठ-उठ ओजकै
विलखी पिणघट पोळोड़ै परभात
उमावां रा ठाला घट ऊंचायां नीसरै

७

म्हे कद कह्यो थे आवो सादै नैण
इण भोड़ळ भुरकी रैण में
ओळमै रा ओसर तो है मोकळा
जद लग किरत्यां कपोल
सनमुख टंगी है चंदै री आरसी
खुलो है जरी तारां मितारां री हाट
किरण सिळायां डूबी है काजळ डूंगरां

८

म्हारो तो बैठणो नै थांरो ऊठणो
कांई ऊठ-बैठ री रात
सिरज्यो ज्यांनै ही सुहावणो
चांद भुरै नै किरत्यां झळझळात
थे सौत नींद नै भली पटाई
पण पटणी नीं परभात

९

हमें अबोलो नीं सुहावै ओ सुन्दर
कांई है मन में बिरोळ

बिन बोल्यां थे बोल घणाई
म्हां पर दीन्हा ढोळ
अगाजी जिती ही उकेरणी
आ झिम-झिम झरणी ओस

१०

आज तो सूरज री उगाळी इसी
पीळै पोमचै पै कुग्यो है मोतीनूर
हंसा हाली थांरी रातां री रूड़ी उतार
देखो तो चढ्यो है कुळ री पाज पर
धीरै सै पग दे निरखो नीं गुजांण
नुंवै कंवळ री खिलणो रतन-तळाइयां

११

हां रे इण अंबवा री डाळ पर
कोई दिन लागो हो केरियां
झूलो रे झुलायो झिलती झमरां
चाख्यो सो ही चाख्यो उण फळ री मिठास
म्हांनै तो उण घूंघटियै री महक मंजरी याद
निजरां री झुरणी री जिण सूं झुर-झुर झूरणो

१२

आज जिसो ना दीठो बरसां में थांरी मुळक
जूनी कविता में नुंवै अरथ री झांकणो
अेकर तो इण मुळक सागै दो निजर मिळाय
ज्यूं ऊंडै अरथ नै कोई उपमा सूं अरथावणो
पल-छिण पलटै थांरै अंगां रा उमाव
रस रै रूपक में राची व्यंजना री पसरणो

१३

आज इण उळटियै असमांन री
आड़ंग आई आंखड़ी में

तणीजी है लाल मांझै री डोर
पलक पतंग री खमीरी खिवण में
घण री घणक छिब री
उळट-पुळट नै ओपणी

१४

चमक चमेली ओढ़ै ओढ़णी
कोई किरण किरणियौ तांण
चाली है चंदावदनी चांनणी
सायर सेजां री हियै है हिलोर
इण रजत पीघळी उतावळ में
जुगनु जोवणी कटाछां री लुकमींचणी

१५

जे होतौ नीं थांरौ औ रूप सरूप
सैणां रै नैणां में सुघड़ाई री
आ ओपती ओळख कद आवती
अै झणकारां नै रस-रेलां रा उफांण
घर नै अंबर रा सासता सिंगार
जांणै सूरत–मूरत बिन आरती

१६

जुग रै कड़रवै रा जेठी जोर
(म्हे) कांम रा कंटीला कूंवट छांगिया
हंसियै हियै री हथवाह
इसड़ी कमाई है कूंत—
भरवै भोग नै सिरजण जोग
'छांगण सूखै ज्यूं कूंपळ पांगरै'

* * *

दो कवितावां

पीव बसै परदेस

नंद भारद्वाज

अेक अणचीतै हरख अर उमाव में
थूं उठै कै मेड़ी चढ़ खुलै चोबारै,
सांमी खुलतै मारग माथै
अटक्योड़ी रैवै अबोली दीठ,
पिछांणी पगथळियां री सोरम
सरमै मन रा मरूथळ में,
हेत भरियै हियै उगेरै अमीणा गीत
अणदीठी कुरजां रै नांव
संभळावै भीणां सनेसा !

हथाळ्यां राची मेंहदी
अर गेरूं-वरणै आभै में
चितारै अलूणै उणियारै री ओळ
भीगी पलकां सूं पुचकारै हिलतो पालणो !

आंगणै अधबीच ऊभी निरखै
चिड़कलियां री रळियावणी रम्मत—
माळां वावड़ता पाछा पंखेरू,
छाजां सूं उडावै काळा काग
आथमतै दिन में सोधै सायब री सैनांणी !

च्यारूं कूंटां में गरणावै गाढ़ी मून
काळजै री कोरां में झबकै श्रोळूं री विजळियां
सोपो पड़ियोड़ी बस्ती में थूं जागै ग्राखो रैण
पसवाड़ा फेरै धरती रै पथरणै !

धीजै री धोराऊ पाळां
ऊगता रैवै अेक लीली ग्रास रा सूया
वरसता मेहूड़ा री छांट
मिळ जावै नेह रा रळकता रेलां में !

पण नेह मांगै नीड़
जमीं चाईजै ऊभी रैवण नै
घर में ऊंधा पड़िया है खाली ठांव
भखारचां सूनी बूंकावै खुला करनाळा—

जीवण अवखो ग्रर करडो है भौळा नार
किरची-किरची व्है जावै सपनां रा घर कोल्याः

वा हंसता फूलां री सोवन क्यार
वो अपरणैस गार-माटी री गीली भींतां रो
वा मोत्यां-मूंघी मुळक—हीयै रो उमावो
—जावो बालम परदेसां सिधावो !

थूं उडीकै जीवण री इणी ढाळ
रेत में रळ जावै सगळी उम्मीदां !

जिण ग्रास में काढै ग्राखो वरस
वा ई कूड़ी पड़ जावै सेवट सांपरतां
परदेसां री परकमा रो इत्तो मूंघो मोल—
ग्रादमी री कीमत कूंतीजै खुलै बजारां !

ग्रा सांची है के
परदेसां कमावै थारो पीव
ग्रर ग्राखी ऊमर
जीवै थूं परदेसां परबारै !

आगै अंधारौ

•

किणरा सबदां में सोधूं सांच
किणरी बातां में देवूं हुंकारो
सगळा सरावै म्हारो भाग
सुधारणो चावै आगूंच आपरो आगोतर,
बिलमावणो चावै म्हनै जूनी बिगतां रै फेर
सगळा ई चेतावै—
आगै अंधारो !

म्है पूछूं :
ओ अंधारो कांई है ?
किणरो सुभीतो है ?

कठै है इणरो ठावो मुकांम ?
उण सांम-धणी रो नांव कांई है ?
क्यूं चंदावो तांण्यो उण च्यारूंमेर,
इण ऊंडी चिन्ता रो
कांई मकसद है, म्हनै बिगतावो !

आप कैवो के
म्हारी संकावां बिरथा है,
कमती है म्हनै भासा-सगती रो ग्यांन
खांमी है म्हारा सोचण रा ढाळा में—
म्हारी दीठ री मोजांन कमती है !

म्हैं कोई उजर नीं उठावूं
आप अरथावौ आखी विगत
—आखौ इतिहास
पंगत रै सांमी ऊभौ अर म्हांनै बतळावौ
म्हांरी मीट सूं वांधौ मीट
अर विना हकळायां पाछौ फरमावौ !
जे माफी वगसौ तौ दीखती अरज करूं :
म्हनै आपरी पूठ में ऊभौ दीखै वौई आकार
सायत संजोग सूं मेळ खावै आपरी उणियारौ
आपरी हाली में आवै सागण ओळ—
आपरी छीयां रौ सरूप औ ई अंधारौ !

आप आडी ज्यूं अड़ जावौ सागण ठौड़
अर संकेतां री भासा में म्हनै डकरावौ !
म्हैं सबद-सस्तर-विहूण
आपरै सांमी जोवूं अर विलखौ पड़ जावूं
अंधारै में अदीठ व्है जावै म्हारा हाथ—
आपौ सांभण सूं पैली घिर जावूं !

नीं दरसाऊं कोई दुरभाग
नीं कोई पिछतावौ
म्हारी गत-औगत रौ लेखौ आपनै नीं पूछूं
नीं कोई मैंणौ या देवूं ओळमौ,
क्यूं आगता पड़-पड़ नै आवौ आप
क्यूं म्हारै सपनां री हंसी उडावौ ?
आप सगळा ई समझवांन
विदवांन
ऊंचा इधकारी
आपरै कनै कठै इत्ती औसांण
के म्हनै बतळावौ ?

आप कांई जांणो के
म्हारा आं आईटाणां री कांई कांणी है ?
क्यूं पुरवाई में दुखै म्हारा घाव
क्यूं छीजै ठोयै रै कनै धणियांणी,
टींगर निरणकै कंवळा रै आपै ऊग
गिंडक हिलावै पूंछ सांमी सोधाळै
गळियां में ताकूरै रुळा सांड
बुझती धुंई बिण होळां पाछी सिळगावूं ?

इणरै उपरांत आपरी अगवांणी री नेग-
ओ माईतां री दियोड़ो ईमांन कीकर बिसरावूं !
आप आवो—
म्हांरी छाती माथै पग राख ऊपर सिधावो
पण अेक बात री मांफी चावूं अन्दाता !
म्हनै अबै कूड़ी अर ओछी भासा में मती बिलमावो,
अब म्हारै खातर अबखो अर दोजग है कैवणो सांच
बिरथा है कंवळी बातां में देणी हूंकारो।
सगळा ई सरावै म्हारो भाग
सगळा ई चेतावै—
आगै अंधारो !

* * *

थूं बणियौ कठै समद

संभू मेहडू

अळूंच अळूंच थनै भेळो करियो
थूं वणियो कठै समद
व रूं गरभ धारण भोग रै सारू
लजवन्ती साध पूरीजै कोनीं
कामण वण खळकूं धोरां-धोरां
पीघळूं म्हैं
थूं ढाळ ढाळ म्हनै अेकरी अनेक कर न्हांखै
दयावलो होय पछै क्यूं हेरै म्हनै
लाधूं कठै म्हैं
जठै-जठै थूं कुदरत रा किंवाड़ भचेड़ै
उठै-उठै रैवूं म्हैं धरती सो बिछियोड़ी

आभै सी तणियोड़ी
थारै पगां चालती-चालती थारी मंजिल वण जाऊं
'क'-का-कोडरा री भणत सूं म्हनै वांचणी चावै
वांचणी व्है तो वांच बावळा
म्हारी साथळां रा सिलालेख
थारी म्हारी पिछांण ऊंडो मत ओट अबै
आगलो पग राखैला कठै
आगं फेर पगोथियो कोनीं
थनै तेड़ती डूंगरां-डूंगरां फिरी
समदरां-समदरां तिरी
मिलणो भेंटणो कियां वणै
थारै माथै में सूळांवाळो सेवळो दड़ सोदै हो
सांवण भादरवै आटां-पाटां आयोड़ी म्हैं
जे गेलो चवरियां रो नीं झालती
तो हाथी रा हाड भंवर में भांगती
टूकियां में लुकाय थनै
ढवियाड़ी नदी माथै ढोलियो ढाळती
लै कांघसी सूं हियो सुळझा
आं आखरां सूं अळगो मत जा
के थूं
म्हारी परस सूं निसरै ने म्हां तांई पूगै है
कांन देय सुणै तो सुण
हिंजरता गंडक री अर मुल्लां री बांग
किणी न किणी सळा में अेक व्है जावै
म्हारै रूं-रूं चवीका उठै
क्यूं रैगी रीती गळवाहो ओती
मथ्यी व्हैती तो माखण वण जाती
गेंती झेल लाम्बी भुजा वां तीखा तचेड़ा दे
ढोल रा ढेपा रा ढेपा उखेल

गूंगो हूं
वाच्या दै
बातां फीटी कर
म्हैं आ मांडी बूक
पा, पा इण आडंग नै पांणी पा
तिरसो रूप कंगवाय बणै
तिरसी वेलां कदै फळै
जिण 'सी' रै डर सूं गाभा पैरचा
हेरतौ-हेरतौ आजं थनै मिळ ज्यासी
अपां रा गांव मांय ऊगतै जंगळ में
छातां में इंडा देय म्हैं फिरूंली नागी-तड़ंग
थूं करजै कदीमी जुद्ध टावरां नै पाळण री
म्हैं अठी-उठी कवूड़ा उडावूंली ।

* * *

सम्पादक रो पतो :

तेजसिंघ जोधा
संपादक—जागती जोत (मासिक)
मोहता कॉलेज
सादूळपुर—३३१०२३

•

वात

गळी जिसी गळी

सांवर दइया

•

गळी जिसी गळी । लोगां जिसा लोग । आदतां जिसी आदतां । आगनां पड़ी व्है तो माथै आली घास न्हांखणी । सावळ वळै तो लोगां री जी सोरो व्है पर किणी री जी सोरो आपां सूं देखीजै कोनी । इण खातर धुंवो करणो आपां रो धरम । धुंवै सूं खांसी आवै । आंख्यां में पांणी आवै । बळत लागै । गळै में गागस लगावै । यो इसो जो देख'र आपां नै मजो आवै ।

गांव-गळी में अेकाधो रंडवो तो व्हियां ई करै । इण गळी में ई अेक रंडवो । सातेक दिनां लुगाई मरगी । दो म्हीनां नीठ व्हिया । मुंडागै सीयाळो आवतो देख'र इणरै मन में लुगाई लावण री कोड जाग्यो । मिनख रै मन में जाग्या ई करै । आपां रै अठै फगत लुगाई पाछी नीं परणीज सकै । मिनख नै तो खास हक मिल्योड़ा । वो तो पैली लुगाई रै दाग मांयं ई दूजी लुगाई ला सकै । पण ओ थोड़ो सरमदार । दो म्हीनां गटाव कर लियो ।

इण आदमी रो नांव जगनाथ । गळी वाळा जगूड़ो कैवै । आज-काले नवी लुगाई खातर उण रै लाळां पड़ै । पर पछै लोग ई बात सूं तो कीकर टळै ? क्यूं कै गळी जिसी गळी । लोगां जिसा लोग । आदतां जिसी आदतां । वारती पड़ी व्है, तो आली घास तो न्हांखणी ई पड़ै—

—थें सुण्यो ?

—कांई ?

—जगनाथ नवी लुगाई लावैलो ।

—नीं रे·······?

—नीं रे थारा री····सोळै आना खरी वात ।

—मांनणी में तौ कोनी आवै ?

—क्यूं, कोई नवादी वात है कांईं ?

—नवादी तौ कोनी, पण·····।

—पण पछै क्यां री—··· ?

—सावतरी नै मर्‌यां तौ हाल दो म्हीनां ई कोनी व्हिया ?

—तौ कांईं व्हियौ ?

—वात ओपती कोनी लागै ?

—ओपती वेओपती कुण देखै, आगलै नै लुगाई री जरुत, व्याव तौ करैलौ ई।

—तौ ई कीं तौ मिनखीचारौ ई व्है ? हाल तौ सावतरी री राख ई कोनी ठरी।

—अवै परणीजियां सावळ ठरैला। मुंडागै सीयाळौ। सीयाळौ सावतरी री राख आळी गरमास सूं कोनी कटै।

—अैड़ो पछै कांईं सीयाळौ ? कीं तौ ऊमर कांनी ई देखणौ चाईजै।

—पैंतीस वरसां में जूण पूरी कोनी व्है।

—वीस वरसां रौ सागौ दो ई म्हीनां में गयौ गता मूं ?

—म्हैं ई कैड़ी फालतू वातां में अळूझगौ। खास वात तौ वताई कोनी थूं।

—थूं पूछी ई कद ही ?

—लै, अवै पूछ लूं।

—पूछ, अबार वतावूं।

—व्याव कठै पक्कौ व्हियौ ?

—घूड़जी री पोती सागै।

—गिरधारी री वेटी है नीं भायला·······।

—सन्तूड़ी ?

—हांऽ, वा सन्तूड़ी।

—वापड़ी विनां मां री छोरी।

—हांऽ, वापड़ी विनां मां री छोरी।

—पण भायला, म्हैं सोचूं के उण री मां जींवती व्हैती, तौ ई औ सागी सांग व्हैतौ।

—नीं रे, मां री जीव दूजौ ई व्है।

—वाप कुण सो कसाई व्है ?

—कसाई तौ कोनी व्है पण·······।

—पण पछै कांय री ? ब्याव मां रै व्हियां ई कोनी गर्जे। श्रेड़ो तो पईसां सूं मत्ते लाद्यो।

—अर पइसो आं कनै कोनी।

—इणीं खातर तो कैवूं, मां जींवती व्हैती तो ई श्री सागी मांग व्हैती।

—पण इण जगूड़ै री श्रक्कल गायं कीकर भाठा पड़िया ?

—क्यूं भाठा पड़ण री कांई वात ?

—क्यूं किणी कुंवारी छोरी रो जमारो बिगाड़ै ?

—ब्याय व्हियां श्रागै ई कदै किणीं रो जमारो बिगड्यो व्हैला ?

—वा बापड़ी चवदा वरस री नीठ श्रर श्री पैंतीसां पार।

—मरद री ऊमर कोनी देखीजै।

—श्रवार ना देखो तो ना देखो, पण दस बरसां पछै तो ऊमर श्रा ई निजै श्रावण लागैला, पछै उण वगत.......?

—इण सूं तो चोखो हो किणीं विधवा नैं नातै लियातो।

—हांऽ, थारो कैवणो है तो ठीक पण........।

—विधवा नैं गळै कुण बांधै ?

—जीम्योड़ी थाळी में कुण जीमै ?

—बोदा जूता कुण पैरै ?

– श्रेंठ्योड़ै कोप में कुण पीवै ?

—श्रर वो ई फेरूं मुंडागै श्रेंठ्योड़ो कोप। ठा नी रहै तो की बात कोनी। श्रांख्यां दीखती माखी कीकर गिटीजै ?

—श्रा बात कोनी। श्री गयो हो बात करण नैं। या है नी राघा मास्टरणी....पण उण ना कर दी।

—गैली वळै दीसै रांड।

—श्रीं तो भोगना फोड़णा हा के दोनां सारू ई साबळ रैतो।

—दोनां रा टाबरा पाछा बंध जावता।

—पण म्हारी समझ में कोनी श्राई, वा नटी क्यूं ?

—वा कैयो बतावै के जगूड़ै रै टाबर घणा।

—घणा पछै कुण सा सो-पचास है। पांच तो टाबर है।

—पांच टींगर थोड़ा कोनी व्है।

—तो कुण सा घणा व्है ?

—आज रै जमांनै घणाई है ।

—हांऽ भाईड़ा, आज-कालै दो-तीन सूं वत्ता टींगर कोनी पोसावै ।

—इणीं खातर वा त्यार कोनी हुई व्हैला ?

—म्हैं कुण सो कूड़ बोलूं ?

—अरे, आ तौ वता उण मास्टरणी रै कित्तीक रेजगी है ?

—उण रै रेजगी खिडी ई कोनी ।

—भगवांन भलौ करी ।

—पण उणनै अब रेजगी चाईजै ।

—नीं रे………?

—मां री सौगन, उणनै चाईजै ।

—तौ पछै जगूड़ै नै नटी क्यूं ?

—जगूड़ै रै टावर कोनी हो सकै ।

—हां रे, इण तौ लारलै वरस नस-बन्दी करवा ली ही नीं ।

—सांची कैवै ?

—थूं कुणसै गांव में बसै । सगळै मुलक नै ठा है ।

—जणां तौ ओ सरासर जुलम है ।

—कांई जुलम ?

—जगूड़ै रो सन्तूड़ी लावणी ।

—क्यूं ?

—सन्तूड़ी नै टावर चाईजैला अर ओ नाजोगौ है ।

—आगली रा टावरा नै ई आपरा समझ'र परोट लेसी ।

—हां भायला । टावर है तौ छोटा ई । हिल जासी । वांनै मां मिल जासी अर जगूड़ै नै लाडी ।

—आगली रा भलांई कित्ता ई व्हौ । खुद री कूख रा टावर तौ खुद रा ई व्है ।

—अवै नरक नीं भुगत्यौ सही ।

—नरक कीकर ? लुगाई सारू मा व्हैणौ लाजमी ।

—हांऽ मां व्हैणौ तौ लाजमी ।

—वांझड़ी रा तौ दरसण ई खोटा ।

—दरसण ? अरे बांझड़ी रौ तौ गळी में बासौ ई खोटौ ।

—आपां क्यूं दूवळा व्हां ? आपां नै कांई ?

—गळी में गलत कांम व्है अर आपां बोला रैवां, थी गळा री मिनखाचारी ?

—वात तो थारी ई ठीक है।

—पुलिस में रिपोट करणां सूं ब्याव रुक सकै।

—छोरी नाबालग है……मां-बापरी है।

—छोरी रै मांमै नै कैवां तो ठीक रैवै ?

—हां, वो है तो चालतो-पुरजो। ब्याव ढाब सकै।

—आवो, आपां उण रै मांमै कनै चालां।

•

गळी रा लोग। लोगां रा मूंडा। मूंडां में जीभां। जीभां में जहर। बीनणी रो मांमो। मांमै रा कांन। कांन काचा। जहर भरयोड़ी जीभां। काचा कांन। मुसळधार बातां। वातां में सवाल ई सवाल। सवालां रा उथळा। उथळां पछै फिर सवाल, फेर उथळा। फिर सवाल। अबै सोचां तो आंख्यां आगै अंधारो ई अंधारो।

—म्हैं ओ जुलम नीं होवण दूं—अेक निरळाटो। पगां में बीजळी। होठां में धापो। आंख्यां में लाय। मूंडै में गाळयां रा गोफणियां भाटा।

—सन्तूड़ी……ओ सन्तूड़ी !

—कुण है……कुण………?

—म्हैं थारो मांमो। थूं मांय कांई करै ?

—बैठी हूं।

—थारो बाप कठै ?

—जीसा हेठै है।

—ऊपर हेलो पाड़ उण कमीण नै।

—थे अठै राड़ करण नै आया हो कांई ?

—म्हारै सूं फालतू रा जीभाटा ना कर। हेलो पाड़ उण हरांमी नै।

—जीसा ओ जीसा !

—अरे, थे अबार कियां आया ?

—थां सूं पांनो पड़यो जणां।

—कांई बात है ?

—छोरी रा भाग क्यूं फोड़ो। जाणता थकां ई राडै में क्यूं न्हाखो ?

—हाथ तो पीळा करणा ई पड़ै।

—पण थें तो काळा करण री तेवड़ी हो।

— थें आवळ-कावळ ना बोलो।

—कांई कर लेशी म्हारो ? कीं नव री तेरह करणी व्है तो कर दिखावो।

—म्हैं क्यां री नव री तेरह करूं। नीठ गरीब गुजरांण करूं म्हारो।

—गरीब गुजरांण करो, अर भलाई म्हारै भावै अैस। म्हैं औ व्याव नीं होवण दूं।

—व्याव तो व्हैला।

—म्हारी ल्हास माथै ई व्हैला।

—आ थांरी ज्यादती है।

—म्हैं म्हारी भाणकी रो जीवण नरक नीं देखणो चावूं।

— घर वसण दो कनी, हाथ जोड़ूं थांनै।

—म्हैं थांनै अेक बात कैय दी नीं, औ व्याव कोनी हुवण दूं।

—धीजै सूं सोचो।

—सोच लियो। दूजबर नै कोनी देवणी।

—तो पछै ठीक है। इत्तो ई गुमेज है तो दूजो वर सोध लावो। म्हनै तो इणीं सावै व्याव करणो है। तेल-हळदी चढ़चोड़ी म्हारी छोरी कुंवारी कोनी रैवै, आ बात कांन खोल'र सुणलो। समझ्या।

—इत्ता वरस घर में खटायी तो अबै कुण सी दो-च्यार म्हीनां और कोनी खटावै ?

—नीं, अब च्यार दिन ई कोनी खटावै। काल रै सावै व्याव व्हैला।

—आज म्हारी वहन व्हैती तो·······।

—अेढ़ी बातां सूं कोनी सजै, समझ्या। थांनै भांणजी री इत्ती चिंता व्है, तो काल तांईं दूजो वर सोध लाया। नींतर अै हाथ इणीं सावै पीळा व्हैला। म्हनै दो छोरयां और परणावणी है। आप अठै सूं पधारो।

—जावूं तो हूं, पण याद राख्या, औ व्याव तो म्हैं मरयां ई कोनी होवण दूंला।

•

खोज दाव'र पाछा वावड़िया केई जणां। वां कनै अेकोअेक खबर। आंख-दीठ गवाह। जको कीं नीं व्हियो, उण नै ई जांणै। अै बता सकै के आगै कांईं व्हैला। दूजां री भली ार्वणियां आय पूग्या।

—थांरी साळी थांणै गयी है।

—थां कणां देख्यो ?

—अबार मिल्यो हो म्हनै।

—कांई कैवै हो?

—कैवतो के रिपोट लिखा'र आयो हूं।

—कांई लिखवायो?

—के औ ब्याव जोरांमरदी रो। छोरी अंगै ई त्यार नीं।

—कूड़ां रो ओपूत कठैई रो।

—आ न्यारी लिखवाई, के छोरी बारह बरसां री अर बींद चाळीस रो।

—अैड़ा कोढ़ियां नै रांम ई कोनी मारै।

—म्हैं चालूं। थे थोड़ा सावचेत रैया। अर हां, आपरी बायली नै समझा दिया के कोई पूछताछ सारू आवै तो खुद नै सोळा बरसां री बतावै। कैवै के ब्याव नै राजी हूं, किणी भांत री जोरांमरदी कोनी। समझ्या। यूं तो पुलिस में आपरी सैंध-पिछांण है। जरूत पड़्यां कीं न कीं उपाव करांला ई। पण रांम करै जरूत ई क्यूं पड़ै। थांरी अर अस्पताळ रा तो दरसण ई खोटा।

—थां री कैवणी वाजिब है।

—थे बायली नै सावळ समझा दिया, भलो। आ नीं व्है के आपां तो उण रै भलै नै करां अर वा खुद ई नट परी'र आपां नै टंटै में फसाय देवै।

—आ ई कदै ई व्है?

—वळती बाजै भाई। सावचेती राखण में कांई हरज?

—आ बात तो है ई। म्हैं अबार ई उण नै सावळ समझा देस्यूं।

—ठीक है, म्हैं चालूं सावचेत रैया।

—ठीक है सा, भगवांन भलो करै थांरो।

•

गळी में मांमो। मांमै सागै पुलिस। पुलिस पूगतां ईं घर में रोवा-कूको। गाळ्यां। करमां री रोवणी। भगवांन नै अरदास-परसाद, देवी-देवतावां रा बोलवा।

गळी में खळबळ। केई उणियारा आप आपरा घरां आगै। केई उणियारा डागळा सूं गळी में देखै। केई घरां सूं बारै। केई फुटपाथ माथै। अेक नै देख'र दूजो आवै। दूजै नै देख'र तीजो। तीजै नै देख'र चौथो।

—अबै ठा पड़सी भाई जी नै........।

—कोई चोरी करी कांई आगलै, जिको ठा पड़सी।

—अै फेरा तो राजी-बाजी रा।

—जे छोरी नटगी तो........?

—छोरी नै जीवणी कोनीं कांईं ।

—आ वात तौ वेजां ।

—ओ चाळीस रो छोरी चवदा री........।

—चाळीस री कठै, क्यूं कूड़ बोलै ?

—पैंतीस में तौ गोळ ई कोनीं ।

—रामूड़ै सूं कित्तोक वडो है ?

—अेड़ै-गेढ़ै ई है ।

—रामूड़ो तौ तीस रो है ।

—जणा ओ पैंतीस रो कठै सूं व्हैगौ ?

—तौ ई भायला पांच टाबरां रो बाप तौ है ई ।

—टाबर तौ पांच कांई, सात व्है जावै इण ऊमर तांई । आपणै अठै तौ ऊगतां नै ई परणाय देवै ।

—पण तौ ई छोरी तौ छोटी, आ तौ मांनणी पड़सी ।

—थारो माथो छोटी । अठारा सूं ऊपर बळै ।

—सुणी है, डाग्दरी जांच व्हैला ।

—जांच डाग्दर करै के डाग्दरणी ?

—डाग्दरणी ई करती व्हैला ।

—डाग्दर करै तौ ई आ किसी डरण आळी है ?

—दोलड़ै हाडां री है ।

—पैरचोड़ी-ओढचोड़ी व्है तौ दो टाबरां री मां लागै ।

—लागौ भलांई । मां होवण रा तौ सपना ई लेसी ।

—घणी कोड होसी तौ पाड़ौस्या नै वकार लेसी ।

—हां ऽ, पाड़ौसी किस्या मरगा ?

—हीं हीं हीं

—हें हें हें

—पुन्न री ओ कांम करण नै तौ म्हैं ईं त्यार हूं ।

—म्हारै थकां ईं ?

—थूं म्हारै सूं न्यारो कद रो ? थूं पैली म्हैं पछै ।

—जींवतो रै थूं ।

—अरे, थूं कांईं सुणै ? जा देख'र तौ आ, वां रै घरां कैड़ोक सांगो ?

—अबार जावूं ।

—गिरधारी रो मन कीकर मांनगो दूजवार नै बेटी देवण सारू ?

—आगै-लारै मुवाज्यां मंवै, कांई करै बापड़ो ?

—म्हैं तो सुणी के वो दो हजार रामां लिया ।

—ओ तो बेटी नै बेचणो व्हैगो ।

—ईयां ईं तो धरती रो बोझ बधै । बाप व्है'र बेटी नै बेचै ।

—बाप थयां रो, कसाई है ।

—हाल तो दोय छोरयां बळै बाकी ।

—सुण्यो के बटोड़ी ई पाछी घरां आयगी ?

—सासरै आळां काढ़ दी कांई ?

—छोरै छोड़ दी ।

—छोरी रै टाबर-टींगर है के नीं ?

—अबै कठै ? एक छोरो व्हियो, जिको पाछो व्हैगो ।

—ऊपर आळै री मरजी । मोन मायै मिनख रो कांई जोर ?

—थनै कीं ठा, क्यूं छोडी ?

—छोरी री चाल-चलण कीं.......।

—गिरधारी रा टींगर असड़ा कोनी ।

—अठै कांई, टाळ सही । म्हैं तो सुणी जैड़ी कैवूं ।

—लुगाई री चरित अर मिनख री भाग तो भगवांन ई कोनी जांणै, तूं म्हैं कुणसै खेत री मूळी ?

—किण सूं लाग्योड़ी ही ?

—काकै सूं ।

—लिच्छूड़ै सागै ?

—हांऽऽ ।

—लिच्छूड़ो तो असड़ो ई हळियार । हाकण ई थेक घर टाळै, पण वो नीं ।

— पोत चवड़ै कीकर आया ?

—औ पाप ढक्या कित्ताक दिन रैवै ?

—लो, सन्नूड़ो आयगो ।

—कांई खबर लायो रे ?

—थांणैदार छोरी सूं बात करगो ।

—अच्छा !

—च्यार-पांच दडोड़ चेप्या व्हैला ?

—वो दाकल देय'र ई जीव काढ़ देवै ।

—सन्तूड़ी तो लैंगो भर दियो व्हैला ?

—हीं हीं हीं

—दांत क्यूं काढ़ो ? लैंगो धोवरण नै थांनै ई बुलाया है, परण पैली पूरी बात तो सुरणो ।

—थूं कांई हुंसियारी छांटै । वेगो सोक कैवै वळै नीं ।

—थांरणेदार पूछ्यो–माडांरणी परणीजै के मरजो सूं । सन्तूड़ी कैयो-मरजी सूं, किरणीं री दबैलवारी नीं ।

—आ बात कैयी ?

—हांऽऽ, बिल्कुल आ इज बात कैयी ।

—छोरी क्यां री, दादी है दादी ।

—आज-कालै री छोरयां दादी व्हे'र ई जलमै ।

—छोरी निकळी हीमत वाळी ।

—जगू मास्टर नै फेंफ्यां अरणा देसी ।

—आं लखरणां तो ओ ई लायै ।

—जरणां तो फेरा आज ई होवैला ।

—आज नीं तो काल, लाडो लाडी तो ले जावैलो ई ।

—मांमै फालतू ई माथाकूटो करी ।

—भूंड री ठीकरो आवरणो व्हे जरणा ईयां ई आया करै ।

—अेकर तो विघन घाल ई दियो ।

—अबै उरण रो ई माजनो हळको व्हियो ।

—कोसिस करी आगलै । पार नीं पड़ी तो नीं सरी ।

—नीच है स्साळो ।

—ओर नीं तो कांई ? इत्ती भागा-दोड़ी करी अर ब्याव ई कोनीं ढब्यो ?

—उरण वगत तो इत्ती हैन-तैन करै हो, कांई खांगो कर लियो ?

—छाछ दांई मूंडो लियां कठैई पड़्यो व्हैला ।

—गुटको लेय'र आपरी लुगाई रै घाघरै कनै बैठो रोवतो व्हैला ।

—अबै च्यार दिनां तांई तो घर सूं वारै मूंडो काढ़ै कोनी ।

—म्हनै मिलरण दै, मांजनो भांडूंला ।

—दो धोबा धूड़ म्हारै नांव री ई न्हांगो।

—दो म्हारै नांव री ना भूलो।

—दो म्हारी ई याद राखो।



जगनाथ री घर। घर में सन्नूड़ी। टावर सांपै—सा मिलगा। जगनाथ सोचै—सब सीयाळो सोरो ई निसरैला।

गळी में न्यारा-न्यारा लोग। न्यारा-न्यारा विचार। कोई कैवै—बापड़ै री टापरो बंधगो। कोई कैवै—टींगर बापड़ा नरकवाड़ो भुगतैला। माई-मां टावरां नै कद परोटसी? इतिहास देख लो।

गळी रा लोग। लोगां रै मन में इतिहास जाणण री हूंस। हूंस सूं जाणजोगो हेत। घर हेत रै खेत में जगनाथ रा टावर।

—अरै मनूड़ा।

—कांई?

—अठी आवै कनीं……।

—लै, चोकलेट खा।

—नवी मां थांरो लाड राखै के नीं?

—राखै।

—थांनै फलका सूखा देवै के चोपड़ियोड़ा?

—चोपड़ियोड़ा।

—साची कैवै है नीं?

—म्हैं कूड़ क्यूं बोल सूं?

—थांनै कूटै तो कोनी?

—ऊं हूंऽ।

—बकती तो व्हैला रे?

—नीं तो।

—मनूड़ा!

—कांई

—थूं कठै सोवै रे?

—म्हारै भाई-वैनां कनै ।

—मां कनै कोनी सोवो कांई रे ?

—ऊं हूंऽ ।

—थांरा कपड़ा कुण धोवै ?

—नवी मां ।

—कूड़ क्यूं बोलै रे ! काल म्हैं थनै देख्यो हो डागळै सूं, थूं कपड़ा धोवै हो नीं····?

—मां नै ताव चढ़ियोडो हो ।

—ताव चढ़ियोड़ो हो ?

—हांऽऽ ।

—सुण्यो, सन्तूड़ी नै ताव चढ़ण लागो है ।

—हें-हें-हें

—थूं जा लाडी, रम । आ लै, अेक चोकलेट वळै ।

- देख सन्तूड़ी रा मजा । ताव री मिस कर'र टींगरा कनै सूं कपड़ा धोवावै ।

—थोड़ा दिन वळै ठैर लाडी । रोट्यां करवासी अर भांडा मंजवासी ।

—जगूड़ी सन्तूड़ी रो लाड तो खासो राखै ।

—दिनगै टूंटी माथै पांणी भरै हो ।

—हीं-हीं-हीं ।

सो भाई वांचणियां !

सगळै ई सावतरी अर सगळै ई हीं हीं हीं । कठै जावै अर कांई करै ? बापड़ी जीवै के मरै ? इणनै परणीजै तो धयो, उण नै परणीजै तो धयो, अर नीं परणीजै तो धयो । क्यूं के ठौड़-ठौड़, गळी जिसी गळी, थां-म्हां जिसा लोग अर आदतां जिसी आदतां । वासती पड़ी व्है तो माथै आ‌ळी घास तो न्हाखणी ई पड़ै ।

ओळावण

'जागती जोत' री रचनावां माथै आपरा खुलासा कागद म्हांरो लांठो मदद व्हैला । रचनावां नै पूरी-पूरी वांचो अर वै आपनै कैड़ी काई लागै, अवस संपादक रै पतै कागद लिखावो ।

—संपादक

बंगाली बात

अभागरा रौ सुरग

सरतचन्द्र चट्टोपाध्याय

(१)

ठाकुरदास मुखरजी री जोड़ायत नै सात दिन ताव आयो अर डोकरी परलोक सिधायगी। चावळां रा वैपार में च्यार पइसा कमाय'र डोकरो मुखरजी गांव में मानवर आसांमी वणग्यो हो। इण वास्तै घर में रांमजी राजी हा।

इण रै सागै डोकरा रै च्यार मोट्यार बेटा, तीन सासरवाळी बेटियां अर भाई गिनायतां री वोहळी कुणबो हो। डोकरी रामचरण हियां रा समाचार सुण'र सगळो गांव मसांण जात्रा देखण नै आयो। रोवती कळपती बेटियां मांरै लिलाड़ में सिंदूर अर पग माथै चंदण रो लेप कियो, नवा कपड़ा पैहराया अर पल्ला सूं पगलियां री धूड़ पूंछ'र सिमरण कियो।

घर में फूल माळायां री सुगंध अर हाकाहूवा सूं डोकरी रो मरतांण उच्छव व्है जदू लागै हो। जांणै कोई मोटा घर री लिछमी पोतारी गिरस्ती रा पचास वरस पूरा कर'र फेरूं सासरै जावण री त्यारी में लागोड़ी है।

डोकरो मुखरजी आंस्यां पूंछतां थकां बेटियां अर बहू बारियां नै धायस बंधावण लाग्या। खांधिया राम नांम सत्त है रा हाका सूं आभो गूंजावता मसांण कांनी वहीर व्हिया। यां रै लारै-लारै थोड़ी छेटी सूं अेक लुगाई चालण लागी—कंगाली री मां। वा थोड़ा वेंगण लेय'र वजार में वेचण नै जावै ही के मारग मे मसांण जात्रा सांम्ही धकी। धंधो रा वेंगण धंनो में इज रैयग्या अर वा आंस्यां पूंछती थकी खांधियां रै लारै-लारै ठेट मसांणां में पूगगी।

गांव सूं थोड़ो आंतरै अेकांत में गरुड़ नदी रै कांठै मसांण हो। उठै पैला सूं दज काठ, चदण, घीरत, सैंत, धूप-दीप विगैरै सगळी चीजां त्यार ही। कंगाली री मां अदेव

(नीच जात) होवण सूं नेड़ी जावणी उण रै हाथ नीं ही, इण वास्तै श्रेक धड़ा माथै श्रागी ऊभी दाग क्रिया देखण लागी। लास नै श्ररोगी माथै पोढ़ाई तो उणरा पगां कांनी देख'र उणरी मंसा व्ही के वा दौड़'र चरणां में पोतारी माथो नियायदै श्रर पगां में लाग्योड़ी मेहदी लेय'र थोड़ी पोतारा माथा पै लगाय लै। 'राम नाम सत्त है' री धुन सागै वेटै जद मांनै श्रग्नी दीवी तो उणरी श्रांख्यां में श्रांसू श्रायग्या। वा मन में इज कैवण लागी–भागधारी मां थूं तो सुरगां में जायरी है, पण जावती थकी श्रासीस देती जा के श्रंतकाळ में म्हनै ई कंगाली रै हाथ सूं श्रग्नी मिळै। वेटा रै हाथ सूं श्रग्नी कोई साधारण बात कोनी।

घर धणी, वेटा-वेटियां, कुणवो श्रर सगा गिनग्यतां री भरियो-तरियो संसार, फूलां छाई वाड़ी छोड़'र सुरग लाभ! उणरो हियो भरीजग्यो। इसी मौत तो सुभागणियां नै इज मिळै।

श्रारोगी चेती तो धूंवा रा गोटरा गोट श्राभा कांनी उठण लागा। कंगाली री मां नै उण धूंवा में रथ रो श्राकार सुभट निजर श्रावण लागो। मांय नै नीं जांणै कुण वैठो है, पण माथा री सिंदूर श्रर पगां री मेंहदी साफ दीखै है। ऊपर कांनी देखती कंगाली री मांरी श्रांख्यां में श्रांसूवां री पड़नाळो सो वैवण लागो।

उणीज वखत श्रेक चवदै-पनरै वरस रो टावर उठै श्रायो श्रर उणरो पल्लो खांचतो कैवण लागो–मां थूं श्रठै ऊभी है श्रर म्हनै भूख लागी। रोटी नीं वणावैला श्राज?

मां चमक'र पाछळ फेरी श्रर वोली–पछै वणाय दूंला रे!

श्राभै कांनी श्रांगळी रो इसारो करती कैवण लागी–देख, वेटा देख! वांमणी मां रथ में वैठ'र सुरगां जाय री है!

टावर श्रचूंभा सूं श्राभै कांनी देख्यो श्रर वोल्यो–कठै मां? म्हनै कांई कोनी दीसै। थोडी ताळ ठैर'र कैवण लागो–थूं तो गैली व्हैगी है मां! श्रो तो धूंवो है धूवो! श्रर पछै रीसां वळतां वोल्यो—वहू तो वांमणां री मरी श्रर रोज थनै श्रावै! श्रो क्यूं? दिन दुपैर चढ़ग्यो, हाल थनै भूख कोनी लागी कांई?

कंगाली री मां नै श्रवै चेतो श्रायो। मिनखां रै कारण यूं मसांण में ऊभ'र रोवतां उण नै लाज श्राई। वेटा रै जतनां री बात ही। उण झट श्रांसूड़ां पूंछ्या श्रर हंसण री कोसिस करती वोली—म्हूं रोवूं किण रास्ते रे! रोवै म्हारी वलाराज! श्रो तो श्रांख्यां में धूंवो श्रायग्यो हो।

—हां धूंवो श्रायग्यो हो! म्हनै कांई चिगावै, म्हूं सैंग समझूं, थूं रोवै ही।

मा कीं पड़ूत्तर नीं दियो। वेटा रो हाथ पकड़'र सीधी घाट माथै पूगी। पोतै स्नान कियो, वेटा नै ई करायो श्रर घरां श्रायगी। मसांण री छेली क्रियावां देखण रो श्रवसर उण नै नीं मिळ्यो।

(२)

टाबर जनम्यां मां-बाप टाबर रो नांम देवै। पण मोकळी वार विधाता वां नावां माथै हंसै। फगत हंसै इज कोनी कई वार पडूत्तर ई देवै। इण वास्तै मांग्यां रा आंधा अर नांम नैण सुख माथै दुनिया जीवण भर हंसती रैवै। पण कंगाली री मां रो नांम देवतां इसी भूल कोनी व्ही।

बात यूं बणी के उण रो जनम व्हैतां ई उणरी मां मरगी। इण वास्तै बाप नांव दियो—अभागण! नीमाडती। जिणरो बाप नदी कांठै माछळा पकड़तो फिरतो अर वा झूंपड़ा में पड़ी रैवती। भगवान जांणै वा कियां जीवती रैयगी। मोटी व्हियां उण री ब्याव हुयो। घर-धणी रो नांम हो—रसिक बाघ। बाघ रै अेक दूजी बाघणी भोजूं ही सो वो तो उणनै लेय'र कोई दूजै गांव जाय'र बसग्यो। अभागी पोतारा अभाग अर उण कोडोलिया नै लियां इण गांव में इज पड़ी रही।

दिन लागां कंगाली मोटो व्हियो। आज वो पनरै बरस रो है। अबै बैंतरी बुणाई रो कांम सीखण लागो है। अभागी नै पक्की उम्मेद है के अबै उणरा दुखारा दिनड़ा बीतण वाळा है अर सुखरी घड़ियां आवण वाळी है। दुख कांई चीज है, इण बात नै तो वो इज समझ सकै, जिण उणनै भोगियो व्है।

कंगाली तळाव माथै जाय'र हाथ मूंडो धोय'र पाछो आयो। उण देख्यो के उणरी थाळी में जिको अेंठो-चूंठो बच्यो हो, उणरो मां उणनै अेक तासळी में लेलियो है। उण अचूंभा सूं पूछ्यो—मां थूं नीं खावैला?

मोकळो अबेळो व्हियो बेटा, अबै भूख ई कोनी।

बेटा नै विस्वास नीं व्हियो वो बोल्यो—भूख कियां कोनी? देखूं हांडी कठै है?

कई वार मां इण भांत बेटा नै भूल थाप दीधी ही। इण कारण वो मांन्यो कोनी अर उण हांडी देख'र इज छोड़ी। उण में अेक गिनया खावै जितरा चावळ हा।

कंगाली मां रै खोळा में बैठग्यो। इतरो मोटो टोगड़ो गोळा में बैठो फाबै कोनी, पण कंगाली जनम रोगी होवण सूं आज तांई मांरै खोळा में रम'र इज मोटो व्हियो। घर बारै टाबरां सागै रमवानै तो वो कदै सीक गयो। वो मांरै गळा में बाथ घाल'र मूंडो गैरो लिजावतो बोल्यो—

मां थारो डील ऊंनो लागै। इण तावड़ा में क्यूं तो थूं मसांणां में गई अर क्यूं नदी में स्नांन कियो? थें मुड़दा नै बाळतां कदै ई।

मां बेटा रै मूंडा आडो हाथ देवती बोली— मुड़दा नै बाळणो नीं फबीजै बेटा, वो तो दाग-देवणो बाजै। अर बांमणी मां तो रथ में बैठ'र सीधी सुरग गई है।

बेटो बोल्यो—केहूं बिलळी बातां करै। रथ माथै बैठ'र कदैई कोई सुरग गयो है।

—म्हैं निजरां दीठो है कंगाली ? अर निजरां दीठी परसरांम कवहूं न झूठी होय ! वांमणी मां रथ माथै बैठी ही अर वां रै मेंहदी सूं रचिया चरणां रा म्हैं दरसण किया है।

—सगळांई देख्यौ है।

—हां सगळां ईं देख्यौ है ?

कंगाली मां री छाती माथै माथौ धर'र सोचण लागौ। मां री वातां माथै विसवास करण री उणरौ ठेटूं सुभाव हो। मां पोतै कैवै के सगळा जणां वांमणी मां नै सांप्रत रथ माथै बैठ्यां सुरगां जावती दीठी है, तौ पछै अभरोसा री बात ई कोनी। थोड़ी ताळ ठैर'र धीरै-धीरै उण पूछ्यौ—जद तौ मां थूं ई सुरग में जावैला।

विदू री मां उण दिन राखाल री मौसी नै कैवती ही—कंगाली री मां जिसी सती साध्वी लुगाई आपांणी जात में दूजी कोई कोनी।

कंगाली री मां कोई पड़त्तर नीं दियौ। कगाली धीरै-धीरै कैवण लाग्यौ—म्हारै बाप थनै छोडी, जद कितरा जणा थारै सागै नातौ करण नै त्यार हा ! थैं सगळां नै ई ना दे दियौ। थूं कैवती रही के म्हारौ कंगाली साजौ-ताजौ रहीजौ, म्हारौ सगळौ ई दाळद दूर व्है जावैला। म्हूं क्यूं दूजौ भव कर'र जमारौ विगाडूं। मां, थूं नातौ कर लेती तौ म्हारौ कांई हवाल व्है-तौ। स्यात् म्हूं भूखां मरतौ मर जावतौ।

मां वेटा नै छाती रै चेप लियौ। साचांणी उण वखत उणनै मोकळा जणां नातौ करण री सलाह दीवी ही। उण सगळां नै ई ना दियौ, इण कारण उणनै मोकळी तकलीफां ई उठावणी पड़ी ही। आज सगळी वातां नै याद कर'र उणरी आंख्यां में पांणी आयग्यौ। बेटै पोतारै हाथ सूं मां रा आंसूं पूंछ'र कह्यौ—मा थूं सूवै तौ गूदड़ी बिछाय दूं।

मां चुपचाप बैठी रही। कंगाली चटाई नांख'र माथै गूदड़ी बिछाय दी। खटोलड़ी माथली तकियौ लाय'र लगाय दियौ अर मां नै सहारौ देय'र सोवांण दी।

अभागी बोली—आज थूं कांम मा.थै मत जाईजै वेटा !

इण वात माथै कंगाली घणौ राजी व्हियौ। पण बोल्यौ—कलेवा रा दो पइसा नीं मिळैला मां !

—नीं मिळै तौ नीं सही। थूं अठै म्हारै कनै आय'र बैठ ! म्हूं थनै आज परी वाळी वात सुणावूंला।

—राज कुंवर, कोटवाळ री बेटी अर उडणखटली वाळी बात सुणाव मां !

अभागी वात मांडी। आ वात उण रै दूजां सूं सुण्योड़ी ही। वात कैवतां-कैवतां वा राजकुंवर अर उडण खटली नै भूलगी अर पोता रै मन सूं इज वात कैवण लागी। ताव

ज्यूं-ज्यूं चढ़तो गयो माथा में लोही तेजी सूं दोड़ण लागी। बात कठै री कठैई पूगगी। कंगाली रा रूंगटा उभा व्हैणा मांडिया अर वो मां री छाती रै काठो चैंठग्यो।

सूरज आथमग्यो, अंधारो संसार नै ढाकण लागो, पण अभागी रै घर में दीवा-बत्ती ई नीं व्ही। ताव में उफणती मां रै मूंडा रा बोल बेटा रै कानां में रमरत घोळण लागा। बाळज सागैई मसांण जात्रा री कथा, वो इज रथ, वै इज मेंहदी सूं रचिया पगलिया अर वो इज बांमणी मां री सुरगां कांनी प्रस्थांन। किण भांत दुखी घर-धणी पोता री जोड़ायत नै चरण रज दीवी, किण भांत बेटा मां नै आरोगी माथै पोढ़ाई, किण भांत बेटा रै हाथ सूं मां नै अग्नीं मिळी.....................अर वा अग्नी कोनी बेटा, वो तो भगवांन री प्रसाद है, अर आभै में ऊठता वै धूंवा रा गोट कोनी, वो तो रथ है बेटा, रथ! कंगाली?

—कांई बात है मां?

—थारै हाथ री अग्नी मिळै तो बांमणी मां रै ज्यूं म्हूं ई सुरग जाय सकूं।
कंगाली धीरै सीक बोल्यो—इसी बात मूंडा माथै ई नीं लावणी मां!

पण कंगाली री बात नै अणसुणी कर'र वा ऊंठो निसासा नांखती बोली—नीच जात कैय'र कोई नफरत नीं करैला, दुखियारी समझ'र कोई मूंडो नीं फेरैला, बेटा रै हाथ सूं अग्नी मिळयां रथ नै आवणो पड़ैला झख मार'र आवणो पड़ैला!

बेटो मां रै मूंडा आडो हाथ देवतो बोल्यो—इसी बातां मतकर मां मतकर, म्हनै डर लागै।

पण मां बोलण लागी—देख बेटा, अेकर थारा बाप नै ई पकड़'र लावणो पड़ैला। वो म्हनै चरण रज देय'र छेली-पैली सीख दैला.....................उणीज भांत पगां में मेंहदी अर माथै पर सिंदूर ....पण औ सगळो करैला कुण? थूं कर दैला बेटा? थूं इज म्हारो बेटो है अर थूं इज म्हारी बेटी पण है ....उण कंगाली नै छाती रै काठो चेप लियो।

(३)

अभागी रै जीवण रूपी नाटक री छेली कड़ियां पूरी होवण वाळी ही। घणी लांबी चवड़ी बात कोनी ही। जीवण रा तीसेक बरस बीत्या व्हैला के जीवण दीप होळै-होळै बुझण लागो। कनला गांव में अेक वैद्य रैवतो। कंगाली उण रै कनै पूगो, हाथा जोड़ी कीवी, पगै पोतियो मेलियो, घर में पीतळ रो अेक लोटो हो, वो अडांणो धरियो अर अेक रुपियो रोकड़ो फीस रो निजर कियो। तो ई वैद्यजी महाराज नीं पधारया अर दवा री फगत च्यार गोळियां पकड़ायदी। वां नै सैत, सूंठ रा रस अर तुलसी रा पतां सागै लेवण री विध बताय दी।

घरे गयो तो कंगाली री मां उण माथै रीसां बळती बोली—थें म्हनें बिना पूछयां लं.टो अडांणो क्यूं धर दियो बेटा ?

पछै उण हाथ लांबो करनें दवाई री गोळियां हाथ में लीवी, माथा रै अड़ाय'र चूल्हा में फंक दी । बोली—साजी व्हैणी व्हूंला तो यूं ई व्हे जाऊंला बेटा ! ओछी जात रा मिनख कदै ई दवाई खाय'र साजा व्हिया है ?

दो तीन दिन यूं इज निकळग्या । आड़ोसी-पाड़ोसी सुख पूछण नै गया । पोत पोतारी जांण अर अकल माफक ओखद बतायो, माडांणी-माडांणी खावण री भळांमण दीवी अर पोत-पोता रै मारगै पड़्या ।

मां कंगाली री हाथ पकड़'र कह्यो—इण दवायां सूं कांई गरज नीं सजै बेटा, म्हूं तो मतै ई ठीक व्है जाऊंला । थूं चिंता मत कर ।

कंगाली रोवतो रोवतो बोल्यो—थें वैद्यजी री दवा चूल्हा में नांख दी । बिना ओखद लियां कदैई कोई ठीक व्हियो है ?

—म्हूं ठीक व्है जाऊंला बेटा, थूं थोड़ा चावळ रांध'र खायलै । म्हूं देखूं देखांणी थूं चावळ कियां रांधै है !

कंगाली उमर में आज पैली वार चावळ रांधण नै बैठो । चूल्हा में पांणी ढुळण सूं धूंवो व्हैग्यो । नीं तो चावळ ढंग सर सीझ्या अर नीं वां में सूं ऊसांमणी ई पूरो बारै निकळयो । थाळी में परूसती वखत ई चावळ थोड़ा बारै ढुळग्या । सगळो खाको देख'र मां री आंख्यां में पांणी आयग्यो । उण ऊठण री कोसिस कीवी पण नीची पड़गी । खायां पछै लारलो कांम किण भांत अवेरणो चाहिजै—वा बतावण लागी तो गळो रूंधीजग्यो अर आंख्यां भरीजगी ।

गांव री ईसू नाई नाड़वैद हो । दूजै दिन आयो, अभागी री नाड़ देखी; निसासा नांखी, माथो धूंणियो अर मारगै पड़्यो : अभागी बात नै समझगी पण डरी कोनी । नाई रै गयां पछै उण कंगाली नै कनै बुलायो अर कह्यो—थूं उण नै अेकर बुलाय'र लाय सकै ?

—किणनै मां ?

—उणनै रे जिको कनला गांव में रैवै ।

—किण नै बापू नै ?

अभागी चुप रही । कंगाली बोल्यो—वे आय जावैला मां ?
अभागी नै ई इण वात रो पूरो अभरोसो हो । वा धीरै सीक बोली—उणनै जाय'र कहीजे के म्हारी मां मांदी है अर वा अेकर थांरी चरणरज लेवणी चा.व—

कंगाली बहीर होवण लाग्यो तो उण कह्यो—जरूर लेय'र आईजे बेटा। कहीजे के म्हारो मूंडो देखणो व्है तो ओकर आय जावै।

थोड़ी ताळ ठैर'र वा फेरूं बोली—आवती वगत नायण भाभी सूं मांग'र थोड़ी मेंहदी जरूर लेतो आईजे बेटा, म्हारो नाम लियां वा ना नीं देला।

(४)

दूजोड़े दिन रसिक बाघ आयो उण वखत अभागी अचेत पड़ी ही। उणरो रंग काळो पड़ग्यो हो अर नैणां री जोत मंदी व्हैगी ही। कंगाली रोवतो रोवतो बोल्यो—मां! मां! बापू आया है, थूं उणां री चरण रज लेवै कोनी कांई?

मां कीं सुण्यो, कीं नीं सुण्यो अर ओक हाथ लांबो कर दियो।

रसिक गिरण गैलो व्हियोड़ो ऊभो हो। उण कदेई सुपना में ई आ बात नीं सोची ही के कोई उणरी चरण रज मांगेला। बिंदु री मासी कनै इज ऊभी ही। उण कह्यो—दो भाई दो— बापड़ी नै जावती वखत चरण रज तो देय दो।

रसिक आगै सरक्यो। जिण लुगाई नै उण सगळी उमर अळगी राखी, भूख नै ई कदेई सार संभाळ नीं लीवी, रोटी कपड़ा री ई नीं पूछ्यो, हेत रो ओक आखर ई नीं कह्यो, उणनै चरण रज देवती वखत उणनै पोता नै ई रोज आयग्यो।

राखाल री मां बोली—इण सती साध्वी नै तो कोई बांमण रै घर में जनम लेवणो हो। आ अठै अछेवां रै घर में क्यूं जनमी? अबै इणरी माटी नै गत घाल दीजो भाई। कंगाली रै हाथ सूं अग्नी मिळयां इणरी मुगती व्है जावैला।

दिन बीतां रात आई अर रात ई धीरै-धीरै बीतण लागी। कंगाली री मां पाछो सूरज नीं उगण दियो। रात थकां इज परम धांम सिधायगी। कुण जांणै अछेवां रै खातर रथ आवै के नीं आवै। इण वास्तै पाळो जावणो पड़ै तो अंधारै २ जावणो इज ठीक है।

झूंपड़ी रै आगै आंगणै ओक अधसूखो दरखत ऊभो हो। रसिक ओक कवाड़ियो लेय'र काठ वास्तै उणनै वाढण लागो। दो-च्यार घाव दिया। व्हैला के जागीरदार रो कणवारियो आय पूगो। आवतां ई भड़पी ओक थाप रसिक रा मूंडा माथै।

—क्यूं दरखत थारै बाप रो है रे हरांमी जो कवाड़ियो लेय'र वाढण ढूकगो?

रसिक कनपड़ा माथै हाथ फेरण लागो।

कंगाली रोवतो-रोवतो बोल्यो–दरखत म्हारी मां रै हाथ सूं रोप्योड़ो है। इणनै वाढ़ां तो कुण ना देय सकै? क्यूं थाप मेली थूं म्हारै बापू रै?

कणवारियौ कंगाली नै ई मजौ चखाय देवतौ पण वौ मुड़दा रै भेळौ व्हियोड़ौ हौ, इण कारण बचग्यौ ।

हाकौ-हूबौ सुण'र खासी भीड़ भेळी व्हैगी । पण किणई कणवारिया नै ग्रोहड़ौ नीं दियौ । उल्टी कणवारिया नै हाथा-जोड़ी करण लागा—ग्राप बड़ा हौ ! ग्राप दयाळु हौ ! माफ कर दिरावौ । मरण वाळी री मंसा ही के उणनै बेटा रै हाथ सूं ग्रग्नी मिळै ग्रबै ग्रापरी किरपा व्है तौ ग्रौ कांम पार पड़ सकै ।

पण कणवारियै लगार ई गिनरत नीं करी । बोल्यौ—म्हारै ग्रागै थांरी ग्रै चालाकियां नीं चालैला ।

इण गांव रा जागीरदार कोई दूजै गांव रैवता । वां री तरफ सूं ग्रेक हवलदार ग्रर कणवारियौ इण गांव में हा । लोगां देख्यौ के कणवारिया सूं बात करणी फिजूल है सो कंगाली हवलदार ग्रधरराय कनै पूगौ । उण टाबर नै ग्रौ ध्यान कोनी हौ के कागला सै काळा है, रागा रा भाई परागा है ग्रर सै ग्रेक माळा रा मणिया है ।

दुख में गिरण गैलौ व्हियोड़ौ टाबर हवाला रै पगोथियै चढ़तौ इज हौ के हवलदार ग्रधरराय सांम्ही धकिया । वै पूजा-पाठ निवेड़'र बारै ग्रावै हा । कंगाली नै ग्रखड़ियोड़ौ ग्रावतौ देख'र बोल्या—

—कुण है रे !

—म्हारौ नांव कंगाली है बावसी । म्हारा बाप नै ग्रापरै कणवारियै कूट दियौ है ।

— ठीक कियौ कूटणौ इज चाहिजै, हरांमजादै बिग्रोड़ौ नीं भरी व्हैला ।

—ना सरकार ! म्हारी मां मरगी है ग्रर काठ रै वास्तै म्हारौ बाप ग्रेक दरखत बाढता हा...............वौ रोवण लागग्यौ ।

राजा करण री वेळा प्रभात रा पो'र में ग्रौ खिलकौ देख'र हवलदार रौ मन मोळौ पड़ग्यौ । छोकरौ मुड़दा रै भेळौ होय'र ग्रायौ व्हैला । वौ उणनै धुरकारतौ थकौ बोल्यौ—मां मरगी है तौ नीचौ इज ऊभौ क्यूं नीं रह्यौ ? ग्ररे है रे कोई हाजर ? थोड़ौ गोबर लाय'र ग्रठै लीप दीजो रे । दिनूंगै ई सगळी भिस्टवाड़ौ कर दियौ हरांमखोर !

—कुण जात में है रे छोकरा थूं ?

—म्हैं ग्रछेव हां बावसी ।

—तौ ग्रछेवां रै काठ री कांई जरूरत है ?

—म्हारी मां मरती वखत कैय'र गई है के म्हनै बेटा रै हाथ सूं ग्रग्नी मिळणी चाहिजै...............ग्रर वौ बाकौ फाड़'र रोवण लागौ ।

ग्रधरराय रीसां बळता बोल्या—ग्रठै रोव मत पाजी ! दरखत बाढणौ है तौ कीमत पांच रुपिया व्हैला । बोल दे सकैला ?

—ना सरकार !

—तो पछै दरखत थारै बाप रो है। हरांमी ! पाजी ! गधेड़ा !

कंगाली बोल्यो—दरखत म्हांरो आपरो है बापजी। म्हारी मां पोता रै हाथ सूं आंगणा रै सें बीच रोप्यो हो। उणनै घणो दोरो पांणी पाय पाय'र उछेरयो है।

—अरे है रे कोई हाजर ? इण हरांमी रा पिल्ला नै कांन पकड़'र बारै काढ दो।

अर साचांणी उणरो कांन पकड़, धक्का देय'र हवाला रै बारै काढ दियो। ऊपर सूं इसी वजनी-वजनी गाळां ठरकाई के सुणी व्है तो कानां रा कीड़ा गिरजावै। इसी फूटरी अर ओपती गाळां जागीरदारां रा आदमियां सिवा दूजो कुण काढ़ सकै।

कंगाली ठेट जागीरदार कनै जावण रो मतो कियो।

श्राद्ध पख नेड़ो हो, इण वास्तै जागीरदार मुखरजी रै घर में श्राद्ध री त्यारी चालती ही। डोकरी-डोकरी दोन्यूं कांम में लागोड़ा हा के कंगाली जाय पूगो। बोल्यो—अन्नदाता म्हारी मां मरगी है।

—है कुण थूं ? चावै कांई है ?

—म्हूं कंगाली हूं, बापसी म्हारी मां नै धरती देवणी है।

—तो देवै क्यूं नी। ना कुण देवै है ?

अर मुखरजी नै थोड़ी जेज पैली कानां पूगी बात याद आयगी। ओ कांई दरखत वाढ़णो चावै ....

बोल्या—जा, जा ! भागजा अठा सूं। म्हनै इसी फालतू बातां वास्तै वगत नीं है...............

मुनीम भट्टाचारज बैठो नांमो-लेखो करै हो। बोल्यो—ओछी जात रै मुरदां नै फेर दाग कद देवता रे ! जा मूंडा रै अग्नी अड़ाय'र धरती में गुर दै, जा दोड़ जा !

मुखरजी रो बेटो कठैई बारै जावै हो। बात सुण'र बोल्यो—देखो भट्टाचारजी सगळा ई म्हारा बेटा बांमण बणणो चावै।

कंगाली सीधो घरां पूगो। इण भाग दोड़ सूं वो थाकगो हो। वो उणरी मा री लास रै कनै जाय'र ऊभो व्हैग्यो।

छेवट नदी कांठै खाडो खोद'र लास नै मांय पोढाय दी। रामलाल री मां कंगाली रै हाथ में बळतो पूळो पकड़ायो अर कंगाली लास रै मूंडा रै अग्नी रो परस करायो। पछै सगळांई मिळ'र होळै-होळै खाडा नै माटी सूं पूर दियो। जिण वगत दूजा सगळाई खाडा नै पूरण में लागोड़ा हा, कंगाली बळता पूळा में सूं निकळता धुंवा नै खरी मीट सूं देखै हो।

उल्थो : डॉ. नरसिंघ राजपुरोहित

•

लांबी कविता पैली खेंप

खुद सूं खुद री बातां

गोरधन सिंघ सेखावत

[तेजसिंघ जोधा सारू]

बूढै बड़लै री ढळती छींयां में
सांस लेवतौ फंफीज्योड़ौ मन
मून धारयां, खुद नै मारयां, खुद सूं पूछै
कांई व्हैसी ?

कुण वौ
लांबी उबास्यां सूं ठंडी हुयोड़ी मुठ्यां में
मोरै पुरांणै जुग री बातां । दूजौ खंखारै
कंठां में चिप्योड़ै बासी थूंक नै अर नीं पिछांणै
खुद रै काख रै पसेव री खाटी बदबोय नै
अेक टांग तूटयोड़ी कीड़ी नै च्यारूंमेर सूं घेर

ले ज्यारी केई कीड़्यां अर वो खंखोळ खुद नै
लारला दिनां री सोवणी सुरंगी ओळूं सूं

देख, उणी नै देख
वो रोज भरम री फंफूरी उडावै
रामांयण बांचै । दिनां नै वांचै । गोमै कंठ
सांच रा । अर मुलफा गांजा सूं अलूणी जिनगांनी रा
कोडाया तिवारां री हंसी उडावै

केई दिन व्हैगा
चौबारा री रंग उतरण लाग्यो । उतरसी ।
देवरै माथै चढ़योड़ा सिवाळ
नित सावळ चढ़सी । कैवत गांनी, लागै जद तांणी
उतरै गंडासा री पांण । ओ नागफणी री गेल
आं कोटड़यां रै मांय अेकर वेगो पूगो व्हैमी
जाजमां रा वरणीला घाघरा । पड़दा री
ओढ़नां घूंघी टाबर

जमांना नै सावळ देख'र
म्हैं मांय ई मांय बसूं । म्हारा सूं चोखो है अरवो
पैरो देवै हेली माथै । नीं बोलै अर नीं चालै । नीं
किणीं रै भेळ अर नीं किणीं रै सागै ।
अर म्हैं म्हारै ऊपर हंसूं
ओपदार बातां री पुड़त खोलूं
अर करडो व्हे जावूं भाटो मो । मंगरां में ऊठै
चवका मारतो दरद । हेर लेवै पांसळयां रै अेड़ै-छेड़ै
सुख री सोड़ ओढ़योड़ा बगत रा मरदां नै । बांचवा लागूं
हथेळयां माथै लिख्योड़ा नारा
केई मूंडो बांध्योडी कोथळयां खोलूं
पण किण सूं बोलूं ?

म्हनै ठा है
खून नीं वापरै म्हारा बोदा जुड़योड़ा पगां में

पण हाल ई रगत री वैवै नदी
म्हारी रगां में । इण गट्टै माथै ऊगणौ-छिपणौ
अर देखणौ   गोटा-किनारी वेचता बिसाती नै
चाको रावती, सूई बेचती गिवारण नै
तिरसी पिणहारी नै   चूड़ौ बेचती मणियारी नै
सगळां रै सगळा कांम
बूढ़ौ भजै रांम-रांम

मैड़ो मुंडागै
रात री ठंडी पौर टांग पसार'र
बैठ जावै । अचपळी हंसी रै मीठै हंकारै में
सपनां री काया माथै
भांत-भांत रा रंग रंगीला मांडणा मंडीजै
पण वेगौ ढळ जावै   हिरमिचिया दिनां री गुमेज
आंख फरूकतां
अर पछै उगै बोछरड़ौ दिन
ताव भरयोड़ौ, सै सूं लड़तौ । खावूं-फाड़ूं करतौ
वोलै उल्टौ, सुणै उल्टौ, चालै उल्टौ अर वात-बात साटै
ओभाड़तौ लातां । उडै भाप सो केई उमीदां
केई डांवरै मनभाती सी रातां

कदै-कदै लागै
म्हैं म्हारै सूं साव अलायदौ छिटकायौ सूं हूं
ऊभौ हूं गूगळी माटी मांय
हाथ री रेखावां सागै घिसी नीं
इतिहास री आकळ-वाकळ तसवीरां री पिछांण
नादीदा दिनां री बोखी मुळक
आगोतर रा ऊठता पगां नै देख'र
अेकर सावचेत व्हैगी
औ सावचेत व्हैणौ कित्तौ लाजमी ?

कुण........हैं रे कुण !
सुणं छम-छम मिनखजूण री कड़यां सूं वंध्योड़ा
मनवारां रा घूघरां री । देख....अरे देख !
आपो भूली सी सिञ्या लुक जावै भूंपड़यां रै ओलै
आखो गिगन बोलै । जग मोटी मूमल ह्वाली
नीं पधारो म्हारै देस । गिदोळै अपणेस नैं
सूनो पाळ माथै
हथेळयां री मैल उतारतो बटाऊ । लुश्योड़ो बगत
खेजड़ी रै ओलै दांत तिड़कावै
जं बोलै बाबा रांमदेव री ।

मोटा है वै ?
स्यात मोटा है जिका रमै रात-दिन सतरंज
बतावै प्यादो कद मारै वजीर नै । कद घोड़ै रा
ढाई घर सूं हाथी मरसी । नाक चढ़ावै, आंग फिरावै
सोचै कद दाव पड़ैलो दूजा कांनी
टीवां रै ठंडै काळजै मांय
व्है जावै वेहोस सुरजी । गळी रै मूंडै सूं
उतरै कळकळाट री वुखार । अंधारो आपरी ठोडो
माथै लाठी टेक'र घरां सांमै ऊभ जावै
नेम-धरम रै संकळप री आंख्यां खुलै
रोटी बांटै नेमू दरजी काळा भूरा कुत्तां नै
रासन व्है जावै मूंघो । सरकार री कुटळाई । इण कलजुग
किण रै सांच री समाई ।

स्यात
हर बात री अेक नै मुदा हद व्है
मिनख, मिनख है पण मिनख उपराड़ै ई
की व्हैण री सोचै
अर सोचै क्यूं नीं
उण री सामरथ पसवाड़ा लेवती
हदां सागै ठिसकळी सुरू करै

स्यात हदां लारै मानखै रा सुरजी
आंख्यां मींच्यां रजाई मांय सूता व्हैला
ओ इज चरचरै भरम री सुवाद
हथेळयां मांय खून बण'र पावसै

सगळो इतिहास
आगोतर रै मिनख सारू इण हदबंदी री
नकटाई रो गवा है ।

म्हैं रजाई ओढ़'र
तासपत्ती खेलूं देस रा सपनां साथै
तड़कै ई ऊठ सगळां साथै
भारतमाता री जै बोलूं
छेड़खांनी करणी नीं ठीक

मरघोड़ी ल्हास साथै
सोचूं आ मिंदर री आरती
किण नै सावचेत करै । मिनख सूता है ढप्पाढोळी रा
किंवाड़ जड़ियां । अंधारै री जवांनी
आपरी छाती रा बकसवा हाल ढक्या नीं
पड़दां रा इतर फुलैल
आंगण सूं पग नीं उठाया
मुरगै री जुकांम री इलाज कांई ?
उणरै गळै में बंध्योड़ी घड़ी
नीं व्है कदै खराब । लोग पगां माथै
हेटै सरकती रजाई खांचै । मुरगो
सुरजी रा सात सलांम बांचै । पण
ऊठणो कांई जरूरी ; आ सांच है कै
बोल्यां खुलै पोल पण इणां राज में पोल री
तोल करै कुण ?
पोल सगळां रै होठां चिपगी ।

सोचूं, कांई चावां आपां आं कोटड़्यां सूं
श्रै कोटड़्यां आज सूनी
आं री मरोड़ साव जूनी अर इतिहास री
गूंगी आतमा सागे चींठ्योड़ी
अठै नीम रै लटकायो रैवतो
अेक मरचोड़ो कागलो
टावर निरखता, बंदूक सांभळता
पण अब दोरो घणो कंवर जी
कागला नै मारणो

वार-तिवार
कारू कमीण भेळा व्हैता निछरावळ व्हैतो
रांम-रमी अर मुजरां सूं
कोटड़ो रै अंतस रो हरख
कोटड़ी री बुरजां मायै
अकड़ीज'र बैठतो

आज वगत बुहार दिया
सगळां रै माथां रा साफा
गेलै अर गळो रा पग मुड़गा। जणै-जणै रो
काख में राज री खाज सुरू व्हैगो।
पिरजातंतर री सेवरी घणी सोवणी
पण वरातां बिछड़गी
हाफळां चढ्योड़ा वरात्यां री मोज
इ.णछक उमीदां री रातां में
घुळगी। आज तूट्योड़े मांचे माथै बैठो पिरजातंतर
हाथ में खाली डबरी लियां उबासां लेवै।
कंठ रै मांय जण-गण-मन रा सुर धीमा नी व्हिया।
आंख्यां नै पूंछता थकां
तिरंगे भंडै रो रंग बदरंग व्हैगो।
खून रै बदळै खून कुण मांग्यो ?

लाल किलै रै माथै झंडै री पांख्यां कुण
खोली ? किण रै वास्तै ? इतिहास आजादी नै
अजगर तौ नीं बखांणी

फैसला इतिहास में ई' व्हिया । वादां
री भूरी रेत में आंम रा रूंख कद सरसाया ?
म्हैं खुद भरम री पोळ में
स्यांन सूं वळ खायोड़ी जेवड़ी री अेक-अेक सळी नै चुग'र
खटकतै दरद नै हळकौ करूं । सुस ज्यावै तिरियां मिरियां
भरयोड़ी नाडी ।

म्हारौ मन म्हारै ई
भेंटी लगावै अर पूछै
म्हारै माथै री तोड़ी हेटै
लुक्योड़ी स्यांणी समझ नै
पण नीं बांटी जाय पळिये मांय
मुलायोड़ी हंसी नै
म्हैं जाणूं अै सगळा लोग
म्हारा है
आं रै मन में दोरप नीं, अै नीं बिसरावै
म्हारा फाट्या पुराणां नै अै न्यूतै बार-तिवार
ठींचै-ठमकै करै मनावणौ
अै करै भराव स्याणप सूं
कुबद रै दरड़ां रौ
रीत-नीत रै सारू माथै झेलै बोझ करज-करड़ां रौ
पण नीं हटै वांरौ कूड़ो गुमांन
वै तोर बांध'र बीत्या जुग री
धुंधळो मूरत नै खींचै
अणछक टूट जावै
म्हारी छकड़ी रा खच-खच करता पैड़ा
म्हैं खुद नै झड़काऊं अर ऊभौ व्है ज़ावूं
भोपा-भोपी री नाच देखण सारू

म्हारा मंगरां में थापी मारै
डूंग जी जवार जी री वजर छाती री
लाखीणो विड़द

पण डूंगजो
भोपां रा कंठां में कद तांईं बिराजोला ?
पेट री लाय सांमै
जुग री स्यांन रा रंगीला गीत फीका पड़ैला
अब तो भोपण रै लांबै सुर सूं
गढ़ां रै ओप नीं चढ़ै
भोपो हार खाय'र
खादी भंडार रै मांय रेजो वणवा लाग्यो।

सांची है
पेट नीं भरै हथकार सूं
पाप री पैड़्यां मायै बैठा सौदागर
उफळतै मन री पाळां थांमै। अठाईस बरस सूं
आ ढांणी भेरूंजी रै सवामणी चढ़ावै
भरम री आंधी में सोयोड़ा औ लोग
फूट्योड़ै आंगणै में मांडणा री उडीक करै
कद आं वाड़ां रा काळजा
हरया व्हैला
मेनत रै दीयां री घुटती चानणी
कद ढाण्यां री हरख टंटोळैला। ल्यो आं
फावड़ां अर कुदाळ्यां रै टीका काढ़ो। क्यूं
स्यात थे नीं काढ़णो चावो ?
इण धरती रा होठ रचावो
खेतां रा तिरछा नेणां सूं नैण मिलावो
क्यूं, थे नीं चावो ?
विसवासां री थोर री भरोटां सूं लोई निसरै

पण भोळां !
औ खून थांरो है, इण नैं चाटो
गलाफां में वादा नीं चिबोळो
सांच नैं देखौ ई नीं
इण नैं परोटण सारू कमर कसो
घूघी मत चढ़ो
भबखायां रा कुरळा श्रा ढांगी कद तांई करैली ?

(आगलै अंक आगै)

* * *

लिखारां सूं

- *'जागती जोत' सारू रचनावां कागद रै श्रेक पसवाड़ै हासियौ छोड'र उघड़ता श्राखरां में थ्यावस सूं मांड'र भेजो। उंतावळ के लापरवाही सूं मांडियोड़ी रचनावां भेज'र संपादक रौ जीव मती बाळो ।*
- *लिपी रा कायदां रै सरोधै सारू 'जागती जोत' मासिक रा श्रंकां नैं सावचेती सूं वांचौ श्रर खुद री रचनावां नैं जागती जोत री लिपी रै ढब ढाळ'र भेजो ।*

— संपादक

•

उपन्यास

खुलती गांठां

पारस अरोड़ा

•

मारवाड़ रा धोरां री धरती रो काळजो पिणघट। सवार-सिंझ्यार, दिन में दोय वार जिणरी सिणगार व्है—जद गांव री पिणियारयां सज-धज'र माथै तांबै अर पीतळ रा देगड़ा-चरी उंचायां, हाथ में डोरी-डोयली लियां रिमझिम करती आवै। पिणघट री पाळ माथै बैठ'र अेक-दूजी नै बतळावती देगड़ा-चरी नै घस-मांज'र सूरज री किरणां नै नवो रूप देवै। वातां रा भंवर अर हसी रा हबोळा चालै, उण वगत पिणघट रो सिणगार निरखण जोगो इज व्हिया करै।

जोधपुर सूं अगूणो, साठेक कोसां रै आंतरै आयोड़ो गांव रूपाळू। रूपाळू रो मीठियो कुवो दसूं दिसावां में आपरै इमरत जळ रै कारण तो नावो हो इज, पण सवार सिंझ्यार इण माथै लागणियो पिणघट ई इणरै नावो व्हैणै रो अेक कारण मानीजतो। आवता-जावता थाकोड़ा करसा जद मीठियै रै नैड़ा पूगता तो थांरो आधो थाकेलो उतर जावतो। तिरस नीं व्हियां ई दोय गुटका इमरत पीवण रो मन व्हैतो। मीठिया रै पाखती ऊभो घेर-घुमेर बड़लो, जांणै तपतै तावड़ियै सूं बचाव सारू तणीज्योड़ी कुदरत री छतरी।

आजादी रै पछै गांवां रै विकास सारू जिकी योजनावां बणी, उण में सिमरथ करसा आपरै पइसै, मैणत अर सिरकारू इमदाद रै स्यारै गांवां री 'काया-पलट' करण रो जिको निरणै लियो उणमें वांनै सुधरी काया-पलट व्हैणै रा आसार सफीट दीसता। जिण दिनां देस नै आजादी मिळी, वां दिनां रूपाळू रा दोय जवान सैर में कॉलेज री पढाई पूरी करण में लागोड़ा हा। ठाकर बादरसिंघजी रा कुंवर हिम्मतसिंघजी अर सेठ हीराचंदजी (हीरजी) रो बेटो लाभचंद (लाभूजी)।

दोनूं बी. अे. कर गांव आया। ब्याव दोनां रा ई व्हियोड़ा। वां दिनां ठाकरसा बीमार हा, केई इलाज करवाया पण कोई फरक नीं पड़्यो। अठीनै काळ-बरस माथै आयगो।

किणी साधु महात्मा रै कैयां-कैयां कुंवरसा कुवौ खुदवायौ। गैरी खुदाई व्हियां इमरत कुटौ—जांणै धारणा रै धनुस चढ'र मैणत रा बांण रै पांण धरती सूं गंगा प्रगटी। नांव पड़ियौ मीठियौ। बरसां सूं तरसतै गांव री तिरस बुझी। थोड़ा दिनां पछै ठाकरसा ई सावळ व्हेगा। महात्माजी नीं जांणै कठीनै रमगा, पण लोग कैवै के भगवान आया हा। पाछा इत्ता बरसां में कदैई नीं देखिया। हां, महात्माजी वहीर व्हिया उण बगत कुंवरसा वांरी झोळी में अेक पोटळी धर दी। वो स्यात् गुप्त दान व्हैला। पछै कुंवरसा अर लाभजी री बाळपणै री दोस्ती जवांन व्हैयर गाढ़ी व्ही। गांव रा लोग आं दोनां रौ प्रेम देख थुथको न्हाकता, कैवता के भगवान इण राम-लिछमण री जोड़ी नै अमर राखै। आ दोस्ती धीरै-धीरै रंग लाई।

किणी बगत रूपाळू रा मजूर करसां नै काळ रा दिनां में मजूरी सारू परगांव अर परदेसां जावणौ पड़तौ, पीवण सारू आखती-पाखती रा गांवां रा कुवा देखणा पड़ता। अबै काळ रा दिनां में आखती-पाखती रा गांवां रा लोग रूपाळू री आस राखै। गांव में मसीनां आई, कुवा खुदिया, कुवां माथै मोटरां लागी, पम्प सूं धक्-धक् करतो पांणी निकळ'र जमीं रौ रंग बदळ दियौ। ट्रैक्टर आया। बिजळी आई। सेठां री हवेली अर ठाकरां रै रावळै जांणै लिछमी रौ पड़ाव पड़ियौ। दूजा करसा पांणी रै बदळै आध देवण लागा। ट्रैक्टर किरायै चलण लागा। इक साखियौ गांव अबै दुसाखियौ बणगौ। गांव में अस्पताळ अर मिडल स्कूल खुलगौ। गांव री आबादी ई वधण लागी ही। कीं ई व्हौ, पण आ कैवणी पड़ैला के पीवण रौ पांणी मीठिया जैड़ौ दूजी ठौड़ नीं निकळचौ।



भादवा रौ मईनौ, घुमटघोड़ा वादळा अर सांझ री लारलौ बगत। अंधारौ धरती माथै पसरण लागौ हौ। धीरै-धीरै मीठिया रो जमावड़ो ई बिखरगौ। अेक सोळै-सतरै बरसां री जवान छोरी आपरी घड़ो-चरी भर गरणै नै निचोय'र उणरी इडोणी बणावती अठी-उठी देखण लागी - इत्तेक में अेक वीस-बाईस बरसां रौ जवान बड़लै री आड सूं निकळ'र उणरै सांमी आय ऊभौ। गेवूं वरणौ रंग, जवानी रै पांणी सूं पळकती आंख्यां, मुळकतौ चैरौ, चिलकतौ लीलाड़—बूढा-बडेरा देख'र थुथको न्हाकै जिस्यौ ओपतौ सरीर। ओ हौ लाभजी सेठ रौ लाडेसर वेटौ सूरज। जिणनै गांव रा लोग भगवानजी अर बूढा-बडेरा भगवाना रै नांव सूं बतळावता।

ठीमर स्वभाव अर लुळनाई रै कारण लोग आपरा टाबरां नै सूरज री मिसाल देवता अर कैवता के लाभजी किस्मत वाळा है, जिकांनै अैडो लाखीणौ वेटौ भगवान दियौ है। धायोड़ा सेठजी आपरा अेकाअेक वेटा नै इग्यारै किताबां पढाय'र पढाई छुड़वाय दी। सूरज कदैई इमत्यांन में फैल नीं व्हियौ। हाल ई सूरज गांव री इस्कूल में व्हेणवाळा जळसां में पूरौ भाग लेवै। वालीवॉल रौ पक्को खिलाड़ी। बंसरी इत्ती उम्दा बजावै के मत पूछौ बात। खेती-बाड़ी रै कांम री पूरी जांणकार अर मैणती। सेठजी अबै उणरै ब्याव री ई सोचण लागा हा।

वो इज सूरज इण बगत इण छोरी रै सांमी ऊभो मुळक रैयो हो। आ छोरी गांव रा सिरमाळी पंडित ओमसंकरजी (ओमा म्हाराज) री बेटी तारा ही। पचासां नैड़ी उमर रा ओमा म्हाराज रै तीन टाबर व्हिया। वडो बेटो ब्याव व्हियां पछै लुगाई नै लेय'र सैर में वसगो। उणसूं छोटी तारा, जिणनै ज्यूं-त्यूं करनै दोयेक बरसां पैली परणाई। छोरी चारेक दिन सासरै रैय'र पाछी आई, जिकी पाछी सासरै नीं गई। कारण उणरो धणी अेक ट्रक री लपेट मे आय'र गुजरगो अर सासरावाळा कैवाय दियो के म्हे उण रांड डाकण नै पछै म्हारा घर में नीं आवण दांला। जद सूं बेटी बापरै घरै है। ओमा म्हाराज री तीजी औलाद अेक छोरो दिन सातेक रो व्हेय'र गुजरगो। पिडतायण दुखड़ो नीं झेल सकी अर बेटी रै पाछी आवतां ई खुद वहीर व्हैगी। अबै बाप-बेटी दोय रा दोय। म्हाराज कैवै के म्हूं आगी उमर बेटी नै रोटी घाल सकूं। अर बेटी·······इण बगत डोल'चो सूं पांणी सींनर सूरज री तिरस बुझावती ही।

वा बूक मांडियोड़ा सूरज नै पांणी पावती बोली—'देख्या भगवानजी, किसी मुतलबी है लुगायां! मेह-छांट री बगत ई कोई साथ करणनै नीं रुकी। जांणै म्हनै तो पांणी भरण में बरस लागता व्हेला। बादळा देख'र सैग अणियां ऐड़ी न्हाटी जांणै छांटा पड़तां गळ जावैला।' इत्तो कैय'र वा डोलची खाली कर अेक कांनी धर दी, अर पाछी गरणै री ईडोणी बणावण लागी।

सूरज उणनै भर निजर देखती थको बोल्यो—'हां ऽऽऽ! पण वै लागियां जाणती ही के इण छोरी रो साथ करणियो तो अबै आवैला। अर ऐड़ो ई मौटियो आगो पड़तो व्है, तो हुकम दो, आपरै घरै पुगाय दूं।'

तारा तुणकती थकी आंख्यां में रोस लाय'र बोली—'वा करो, वा! कोरी सैणायां मती फोड़ो! म्हारो साथ कर ई! अरे बेंत भर रो काळजो नईं, बेंत भर रो! म्हारो साथ करणिया रो, समझ्या! थांरो साथ तळाव री पाल तांई। नै फिरनै ई कोई दूजो सांमी आवतो दीसगो, तो कठै भगवान जो? वे जा ऽऽ! थें म्हारो साथ करैला।' इत्तो कैय'र घाघरै रो फटकारो देय वा उठै सूं वहीर व्हैगी। फटकारो जोरदार पड़्यो हो। सूरज अेक वार तो बगनीज'र रैयगो। तारा पाळ रै नीचै उतरगी। सूरज पाछो तळाव कांनी उतर चोळा री जेब सूं बंसरी काढ'र बजावण लागो—'काळी अे कळायण ऊमटी.......' अर पाळ उतरती तारा रा पग धीमा पड़गा। उणी बगत कोई छोरो बात फेंकी बंसरी बाजगी हैं' दूजो बोल्यो— राधा आयगी है!' उणी बगत तड़ातड़ करती छांटां आयगी अर तारा 'रोय वो करी!' कैय'र आगै वधगी।

तारा जद घर री गळी रै नैड़ी पूगी, तो उणनै सांमी उणरा बापू आवता दीसिया। पचासां नैड़ी उमर रा ओमा म्हाराज रो रंग पक्को, दूबळो सरीर, करड़ी मैणत अर दुख चितावा सूं झुकती-सी कमर, चोड़ै लीलाड़ माथै केसर री आगळियां फिरियोड़ी, कानां रो लोल माथै केसर री टीकियां, गळै में रुद्राक्ष री माळा, तुलसी री माळा। धोती माथै बनियान

अर बनियान माथै बंडी पैरयोड़ा छतरी तांण्योड़ा सांमी आयगा हा। बेटी नैं आवती देखी अर पाछा फिरगा। गळी रै नाकै आय'र ऊभगा। तारा गळी में घुस'र घर में पूगी, लारोलार म्हराज आयगा। तारा चरी उतारती बोली—'जी सा, थैं सिध जावता हा ?'

म्हराज कड़क'र बोल्या—'थारै लारै आवती हो ! थनै मेह-छांट रौ ई ध्यान कोनी। अै थारै साथै निकळियोड़ी छोरियां—गोकळ री बींदणी, लिछमी दूजी सैंग आयगी अर थारा पत्ता ई कोनीं। इत्ती जेज कीकर लागगी ?'

तारा घड़ो उतारती बोली—'अै सगळी जणियां घड़ा-चरियां मांज'र गई ही। म्हैं उठै जाय'र मांजिया-भरिया जित्तै अै आयगी।'

हळाहळ झूठ छोरी तो घर दियो पण भईजी रै सांमी नीं चली। म्हराज कमर माथै हाथ धरता बोल्या—'झूट मत बोल छोरी ! दोय ठांव मांजतां नै इत्ती जेज को लागै नीं के सैंग जणियां तो पांणी भरनै आय जावै अर थूं उठै इज रैय जावै।'

तारा हड़बड़ाय'र बोली—'पछै भगवानजी आयगा के तारा अेक डोलची सींच'र थोड़ो पांणी पाय दे। वांनै पाणी पाय'र घड़ो चरी उंचाय सीधी घरै आई हूं।'

आ बात सुण बापरी आंख्यां बेटी रै चैरै माथै जमगी। चौनिजर व्हेता ईं तारा मूंडो घुमाय लियो। सूरज री बात रै साथै आवती लाज म्हराज री निजरां छिपी कोनीं। अनुभव रै आगै चालाकी री नीं चली। बाप सूं बेटी री आख्यां री फड़कण अर हिड़दै री धड़कण ई छिपी कोनीं। म्हराज धीमा अर करड़ां सब्दां में बोल्यां—'देख छोरी, थनै साफ कैदूं हूं के कठैई म्हारौ मूंडो काळो मत करवाइजै ! नींतर म्हनै मरण नै ई जगा नीं लाधैला। म्हूं थारै हाथ जोड़ूं देवी !'

तारा बापू रा हाथ पकड़ती बोली—'कैड़ी गैली-गैली बातां करो जीसा ! म्हैं कोई अैड़ो काम नीं करूं जिणसूं थानै के म्हनै मरणो पड़ै। अैड़ी कोई बात नीं व्है के कोई थारै कांनी आंगळी उंचाय दै।' इत्तो केय'र वा रसोई में वड़गी।

ओमा म्हराज मचली उंचाय'र बारणै आयगा। छांटां बन्द व्हेगी ही। चांतरी माथै मचली बिछाय'र जमगा। चिलम सिळगाय ली अर फूंकां खींचण लागा। चिलम में तमांखू सिळगी, मगज में विचार सिळग्या।

...बेटी बाप रै घरै कठाक् तांई ? गुळ माथै तो माखी आवैला ईज। ओ जोगो पुरोहित आधो को गयो नीं। इणनै इज देखलो आज कोई नै मूंडो देखावतां ई सरम आवै। उण वगत कैड़ो अरड़ाटा पाड़'र रोयो हो।

......जोगा पुरोहित री जवान बेटी रूपा। छोरी लाखीणी; पैर ओढनै निकळती, कुण उणनै कंवारी कन्या कैवतो। जोगो उणनै सतरै-अठारै री बतावतो पण छोरी बीसां ऊपर ही।

दोवड़ा हाड री ही इण वास्तै लुगाई जित्ती लुगाई दीसती । लोग घणी ई कैयो के जोगा बेटी रो ठिकाणो कर ! पण जोगो, राम-राम, बेटी रा पइसा खाटणी चावतो । खाट लिया पइसा ? छोरी गोपी मास्टर रै साथै न्हाटगी । पछै भलाई लाख धमोड़ा लो, कीं नीं व्है । म्हैं जोगा नै ई समझायो के जोगा अबै बेटी सारू कळपणो छोड़ दै । वा गोपी मास्टर रै साथै गई है । गोपी मास्टर थारै-म्हारैऊं छांनो कोनी हो । भणियो-पढ़ियो छोरो है, छोरी दुख नीं पावै । ऐड़ी वात लोगां री ! बकण दै बकै जिकांनै नवी बात नौ दिन ! थोड़ा दिनां में बात जूंनी पड़ जावैला । आज रै जमानै में लोगां कनै इत्तो वगत कठै के वै दूजां री बात लियां बैठा रैवै । लोगा सूं खुद री ई को निवड़ै नीं ।

म्हराज चिलम री छेलो कस लेवतां विचारण लागा—हां, खुद री ई को नीवड़ै नीं । आज तारा म्हारै सांमी सवाल बणियोड़ो है । लोगां रा मूंडा नीं पकड़ीजै । तारा रै सागै भगवाना री नांव लोगां रै मूंडै चढ़ण लागो है । कहूं तो कांई कहूं ? पर इण सवाल रै साथै इज म्हराज भीत रै स्यारै धूणां कानीं चिलम दिगाळ दी ।

•

अंधारो पड़यां सूरज विचारां में डूबोड़ो गांव कांनी पग धरया । गांमी उतरा सामी तेजसिंघ अर गोविंदराम आवता दीस्या । तेजसिंघ ठाकर हिम्मतसिंघजी रो कुंवर हो अर गोविंद अेक नाई री बेटो । तेजसिंघ नेड़ो आय'र बोल्यो—'तूं अंधारै में कठै थैठो है भगवान ? लै आव चायड़ी पीवां ।'

सूरज उणरी हथेळी में हथेळी देय'र आगै वधतां कैयो—'सोनूं, के औ जात-पांत रो झगड़ो कित्तो विकट है ! औ नीं व्हेतो तो....'

तेजू उणरी बात पकड़तो बोल्यो—'तो अै चांद-तारा इत्ता आघा नीं व्हेता । समझ्यो ? थारो तो इण तारकी रै लारै भेजो खराब व्हेगो है । नीं जांणै कांई-कांई ऊंधी-सीधी वातां सोचतो रैवै ।'

सूरज अठी-उठी देखतां तेजसिंघ रो हाथ भींच'र बोल्यो—'धीरै बोल यार ! तारा नै लेय'र पैली सूं इज लोगां रा पेट में मरोड़ा ऊठ रैया है । तारा अर म्हारै बीचली बात थां लोगां सूं छांनी कोनीं । म्हैं अबै उणनै भूल नीं सकूं । अठी जीसा ब्याव री वातां कर रैया है । अैड़ी नीं व्है के काले लोग ओमा म्हराज कांनी आंगळियां ऊंची करै अर छोरी रो घर सूं निकळणो ई मुस्किल व्है जा !'

तेजसिंघ अेक बंद दुकान री चांतरी माथै बैठतो थको सांमो किसना काका नै अवाज दैय'र तीन चाय री कैयो । गोविंद सूरज नै बतळाय'र बोल्यो—'देख भगवान, के ब्याव तो थां दोनां री व्हेणो कोनीं । नै ओमा म्हराज ई दुखी बिरामण है, आ ध्यान राखजे । नै की अैड़ी-वैड़ी बात व्हेगी तो इण डोकरा नै मरणो पड़ैला कांई तेजजी ?'

तेजसिंघ हामळ भरतौ बोल्यौ—'हां, आ बात तौ है इज ! दूजी बात, थारी इत्ती हिम्मत कोनीं के थूं छोरी नै लेय'र कठैई जावै परौ अर व्याव करलै। नै अैड़ौ है कंई इण छोरी में, थूं तौ इणनै आछी तरै सूं संभाळ लिवी ही उण दिन, कीं लाधौ ?' इत्तौ कैय'र वौ मुळकण लागौ।

सूरज खूंणी रौ टल्लौ देवतौ बोल्यौ—'फालतू री बातां नीं करणी। थांनै तौ मजाक सूझ रैयी है।' इत्तै में ई अेक छोरौ चाय लेय'र आयगौ अर तीनूं चाय रा सुळका खींचण लागा। पछै गोविंद आपरी राय देवतां कैवण लागौ के अबकलै छाईस जनवरी माथै इस्कूल री तरफ सूं अेक नाटक करां। जिणमें सूरज री समस्यां नै ध्यांन में राख'र जात-पांत रा भेदभाव री बात खड़ी करां। पछै देखां के ओमा म्हराज अर सूरज रा जीसा उण माथै कंई विचार दरसावै। आ बात चल इज रैयी ही के अेक छोरौ दौड़तौ-दौड़तौ आयौ अर सूरज नै बतळाय'र कैवण लागौ के थांरै घरै कोई बारला पांवणा आया है अर सेठजी थांनै दोय सेर दूध लेय'र बुलाया है। इत्तौ कैय'र वौ आयौ जठी पाछौ दौड़गौ।

सूरज दोनां सूं रवानगी लेय'र दूध सारू ओमा म्हराज रै घरै पूगौ अर वांनै पावणां री बात बताय दूध सारू आवण री बात बताई। ओमा म्हराज घर रै बारै मांचौ ढाळ'र बैठा चिलम पीवता हा। सूरज री बात सुण'र वै बोल्या—'थांरा पावणां जिका म्हारा पावणां भगवान। पण थे जाणौ हौ के म्हारै कनै अबै दूध कठै ? व्हे जिको बंधी में उपड़ जावै। नै थांगो बधी रौ दूध थांरै घरै पुगाय दियौ। देखौ, आसी रै उठै व्हियौ तौ मंगवाय दूं ला।' इत्तौ केय'र वै तारा नै अवाज दी अर सूरज नै मांचै माथै बैठण रौ कैयौ।

तारा बारणै आय'र ऊभी तौ म्हराज बोल्या– 'देख तौ बेटी, आपांणी छोटकी चरी लेय जा, अर आसी रै उठै व्हे तौ दोय सेर दूध भगवानजी नै लाय दै। आंरै कोई बारला पावणां आयोड़ा है।'

तारा रै गयां पछै म्हराज पावणां री बाबत पूछयौ। सूरज कैयौ—'म्हैं तौ हाल घरै गयौ कोनीं। पकायत तौ नीं कैय सकूं के कुण आया है। पण जीसा दोयेक दिनां पैली कैवता हा के जोधपुर सूं सेठ किरपारामजी आवणाळा है। स्यात् वै इज आया व्हेला। किरपारामजी म्हांरी न्यात रा है अर जीसा रा दोस्त ई है। म्हनै जीसा किरपारामजी रै साथै जावण री बात कैवता हा। किरपारामजी रा सैर में केई तरै रा बौपार चलै। मकान है, दुकानां है। जीसा म्हनै आंरै साथै भेज'र सैर में बौपार खोलणौ चावै। पण म्हारौ मन गांव छोडण रौ कोनीं। जद सूं घर में आ चरचा चली है म्हारौ भेजौ कांम नीं करै। करूं तौ कंई करूं ? जी सा नै कीं कैवणौ फिजूल है। कीं कैयां वै अेक इज उत्तर देवै के थारी चिंता म्हनै थारै सूं वत्ती है। अबै थे ई बताओ म्हराज मन री बात किणनै समझाऊं ? मां है कोनीं अर धाजी (दादी) री चलै कोनीं। आज मां व्हेती तौ उणंरा खोळा में माथौ धर जीव तौ हळकौ कर लेवतौ, दोय बात कैय तौ सकतौ। पण अैड़ी किस्मत कठै ?' इत्ती बात कैवतां तौ सूरज री आख्यां जळजळी अर कंठ गळगळौ व्हेगौ।

श्रोमा म्हराज उणनै विलखतो देख'र मोरां मीठी थपकी देवता बोल्या 'मन नै धावस दै भगवान, व्हेगी जिकी वात री पिछतावो करण सूं कंई फायदो। रैयी थारै जोसा री वात, सो लाभजी जमानो देख्यो है। वगत सूं फायदो हरेक नीं उठा सकै। वोपार करण रो ई श्रेक तरीको व्हिया करै वीराजी! इणमें ई तजुरवै री जरूरत है। इण तजुरवै सारू इज लाभजी थांनै सैर में भेजण री तेवड़ी व्हेला। रैयी श्रठै री खेती वाड़ी, जिकी चाल इज रैयी है। सैर में थांनै खेती री चोखी-चोखी कितावां ई पढ़ण नै मिळ सकै। नै जोधपुर किस्यो विलायतां में वसियोड़ो है। श्रो रैयो जोधपुर, वस में वैठां तो तीनेक घंटा रो रस्तो। जचै जदेई श्रावो नै जचै जदेई जावो।'

सूरज नै लखायो के म्हराज ई उणनै सैर भेजण में राजी है। पै ई सोचतो के म्हैं जाऊं परो तो तारा रो लारो छूटै। श्रै वाजी सदाई गांव छोड़'र सैर जावणियै नै टोकता रैवै उणनै गांव में रैय'र खेती-वाड़ी री सल्ला देवै। श्रर श्राज म्हनै.... डोकरो वडो मतलवी है। सूरज म्हराज कांनी देख्यो। वै राम व्हियोड़ो चिलम सूं धुम्रो काढण में लागोड़ा हा। सूरज स्यारी मुळक प्रगटावतो वोल्यो—'श्रवै कस नीं रैयो म्हराज!'

म्हराज नै श्रै वोल जांणै डाम दे ज्यूं लागा। वै किणी पूतळै री सदाई सूनी निजर सूं सूरज नै देखण लागा। सूरज री चोरती निजर वै नीं झेल सकदा श्रर मांनै रै पागे कनै चिलम ऊंधी कर दी। सूरज ऊठ'र वहीर व्हेण लागो, कारण तारा दूध लेय'र श्रायगी ही। सूरज उण सूं चरी लेवतां श्रांगळी दवाय, पांव फटकारतो वहीर व्हेगो। श्रर म्हराज सोचण लागा के सूरज किणरै वारै में कैयो के कस नीं रैयो। हां, चिलम में रैयो व्हो के नीं, पण म्हारै में कस को रैयो नीं। नींतर म्हनै यूं निजर नी झुकावणी पड़ती। छोरो हुंसियार श्रर लुळताऊ है। गांव रा केई लोग खेती रै मामलै में इणसूं सल्ला लेवै, गांव रा छोरा तो इण माथै जीव देवै। ट्रेक्टर, खाद, वीज श्रर हिसाव-किताव रै मामलै में इणनै वेसी जाणकारी है, इस्कूल री लाईव्ररेली (लाइव्रेरी) में केई कामू कितावां श्रो मंगवाय दी। इणरै जावण सूं श्राखै गांव नै घाटो। नै श्रां श्रांख्यां सूं म्हैं वडा-वडा वोपारियां री फड़िया डोली पड़ती देखी हूं। छोरो दया-मया वाळो है, वेळा-कुवेळा गरीव रै श्राडो श्रावै जड़ो। श्रर म्हैं.... हां, श्रोमला! श्रवै थारै में कस नीं रैयो !

दूजै दिन तड़काऊ रा तारा वंधी रो दूध देवण सारू सूरज रै घरै पूगी। दूध लेवतो वगत सूरज उणमणो मन सूं वोल्यो—'श्राज सिझ्या रा जोधपुर जाऊं हूं तारा! जोसा जोधपुर में वोपार करण सारू भेज रैया है। देखो, पाछो कद श्रावणो व्हे।'

तारा रो दूध घालतो हाथ की धूज'र थमगो। उणरी निजर सूरज रै चैरै माथै जमगी। पछै वा मून तोड़ती वोली—'जावणियां नै कुण रोक सकै। इत्ता दिन मूंडो देखती, श्राज पूठ देखण री वगत ई श्रायगो। खैर मायतां री वात नै टाळ कठा तांई टाळ सकै!'

सूरज दिलासो देवतो वोल्यो—'चिंता जड़ी वात कोनीं, पाछो वेगो श्रावूंला। जोधपुर कोई श्राघो कोनीं।'

तारा चुभती मुळक रै साथै बोली—'जावणो थांरै सारै कोनीं, तो आवणो किस्यो सारै व्हैला। नै आप किणी अहिल्या रो उद्धार करणिया राम कोनीं। चालूं, व्है सकै तो समचार भिजवाइजो !' इत्तो केयर तारा उठासूं वहीर व्हेगी। सूरज सोचण लागो हो—तारा उदास जरूर व्हेगी ही, उणरै मन नै ठेस लागी ही। वा लारला कीं दिनां सूं म्हनैं खारी वातां सुणाय-सुणाय नै म्हारो मजाक उडावण लागी ही। म्हैं तारा रो गुनैगार हूं।

सिञ्झ्या रा जद तारा पांणी भरणनै गई तो बस स्टेंड माथै सूरज नै साथियां साथै ऊभो देखियो। वा अेक निजर में देख लियो के उणरो चैरो उतरयोड़ो है। बस हाल आई कोनीं ही। तारा रै मन में ई खळवळी मच्योड़ी ही। चाल धीमी व्हेगी, खाली घड़ो ई भारी लखावै।

मीठियै माथै आय'र ऊभी व्ही, कुवा में देख्यो, लागो आज ऊंडो वत्तो है। अेक हाथ में डोरी रो लारलो छेड़ो पकड़ दूजै हाथ सूं डोलची मांय न्हाकी। डोलची कुवा में गई अर ध्यान जूंनी वातां कांनी....

....अेक दिन इणी मीठियै माथै दोय परगांव रा जवान छोरा आपरी निजर मैली करी ही। अेक जणो पिघळयोड़ी निजर सूं उण कांनी देखतो बोल्यो—'लखजी अठै आयां तो तिरस नीं व्है, उणनै ई लाग जावै।'

दूजोड़ो तारा माथै निजर गडाय'र बोल्यो—'साव साची वात ! पण आ तिरस यूं बुझणी नीं है। आ तो ..'

'जूता खायां बुझैला कांई मोटयार ?' सूरज बड़लै री ओट सूं निकळतो बोल्यो। उण दिन तारा पैली वार चौनिजर व्हेय'र सूरज नै भरपूर निजरां सूं देख्यो। पछै उणनै तणतो देख'र वा बोली—'नीं नीं, भगवानजी ! अेड़ी कीं वात कोनीं, अै लोग तो कैवता के अेक डोलची सूं तिरस बुझण वाळी कोनीं !' वा डोलची लेय'र कुवै री पाळ रै नैड़ी आई। बोली—'लो बूक मांडो !'

अेक जणो आगै आय'र कादै में पड़िया दोय खडां माथै आपरा पग जमाय'र बूक मांडनै झुकगो। सूरज मूंडो फेर'र ऊभगो। बूक मांडणियै री निजर तारा री कांचळी माथै जम्योड़ी ही। तारा दोनूं हाथां सूं डोलची कीं लारै लिवी। दांत भिचीजगा अर 'छपाक्' छापको इत्तै जोर सूं पड़यो के पग जमीं छोड़ दी अर वो कादै में कळीजगो तारा कूकी—'यूं बुझैला थांणी तिरस ! अरै म्हारैऊं बात करण वाळै रो वेंत भर रो काळजो चइजै, वेंत भर रो।' वा पांचूं आंगळिया खोल'र वेंत बतायो। सूरज हंसण लागो, वै दोनूं जणां गुणमुण करता उठा सूं वहीर व्हेगा।

पछै सूरज तारा नै स्यावासी देवतो बोल्यो—'वा, ताराजी वा ! जबरी हिम्मत करी। म्हैं तो अेक वार अचूंबै में पड़गो के................

'अचूंबै जैड़ी कंई वात ! चूड़ियां पैरली तो कंई व्हियो। पांणी तो इणी मीठिया री पीऊं हूं।' अर उण दिन सूरज पैली वार तारा नैं घड़ो उंचवायो हो।

.......अर आज ' ....उणीज वगत सूरज आय पूगो अर बोल्यो—'ला तारा, आज धाप'र पांणी पी लां, नीं जाणै पछै कित्ता दिनां सूं आवणो व्हे।'

तारा बोली—'भगवानजी, मीठियै रै पांणी में पांण व्हियो तो आपैई गुनाग लेवैला।' इत्ती कैय'र वा पांणी पावण लागी। पछै वा सूरज नैं घड़ो उंचावण रो कैयो। घड़ी-चरी माथै घर वहीर व्ही।

सूरज लारै पग धरतो बोल्यो—'तेजसिंघ रै माथै समचार मिळता रैवैला। कीं खास वात व्हे तो चार ओळी रो कागद लिखण री गरज मत राखजै। ठिकांणो तेजू सूं मिळ जावैला।' इत्ती कैय वो पग उठाय'र तारा सूं आगै निकळगो। तारा 'ठीक है।' कैय'र रैयगी। पण वा सूरज री आंख्यां में तिरतो पांणी देख लियो हो। अबै पग उंचावणा ही ऊंचा।

बस स्टेंड माथै सूरज नैं रवानगी देवण सारू उणरा बापू ऊभा हा, माथै ऊभा हा सेठ किरपारामजी। सूरज पाछो आपरा दोस्तां कनै आय ऊभो। ओमा म्हराज ई किसना काका री होटल माथै मोजूद हा। सूरज रै लारोलार तारा नैं आवती देख'र दोगां री डाळी मुळकण लागी, पण लाभजी सेठ रै लीलाड़ माथै सळ पड़गा। यं कीं लारै सिरक ओमा म्हराज कांनी देख्यो, म्हराज घांटी झुकायां ऊभा हा।

बस री भोंपू वाज्यो, मुसाफिर चढ़ण लागा। लोग बस री वारियां कनै आवगा। बस में जगा मिळियां मुजब सेठजी अर सूरज न्यारा-न्यारा बैठा। बस वहीर व्ही अर सूरज नैं आपरी समस्यावां माथै विचार करण रो मोको मिळ्यो।

वो सोचण लागो—लोग कैवै के जमानो बदळगो। साव थोथी वात ! कठै बदळ्यो जमानो ? म्हैं तारा सूं ब्याव नीं कर सकूं। हां जमानै रो रूप बदळ्यो व्हेला, आतमा नीं बदळी। वा हाल मैली री मैली। ऊजळी देही अर ऊजळा गाभां सूं मन उजळो नीं व्हे। जात-पांत ऊंच-नीच अर अमीर-गरीब रो फरक हाल नी मिटियो।

बस दौड़ रैयी ही। उणरै लारै रेत रा गोट ऊठ रैया अर सूरज रै मगज में विचारां रा गोट.......

.......ऐ इज ओमा म्हराज हा जिका उण दिन जोगा पुरोहित नैं समझावता हा के देख जोगा छोरी तो गई जिकी गई परी, अबै पाछी आवणी कोनीं। जमानो बदळ रैयो है जोगा ! जैड़ो वाजै वायरो वैड़ी लीजै ओट ! अबै आपां वाळो वगत कोनी के टाबरां नैं चावां जठी टोळ दां। नवै जमानै री नवी वातां। आज नीं तो काले ऐ वातां सिकारणी पड़ैला।.... अर म्हराज सैरां री कैई वातां गिणाय दी, जिकी गांवां में आयगी ही।

अै इज श्रोमा म्हराज खुद री वेटी री वात माथै खोळियो बदळ लियौ। उण दिन घरै बुलाय'र कैवण लागा—'भगवान जी, थै गांव में भणिया-पढ़िया अर समझदार गिणीजौ ! थारै बारै में जे कोई अैड़ी-वैड़ी वात करै तौ सोरै-सांस पतीजै कोनी। अर लोगां नै तौ मन विलमावण सारू वात चाइजै वात, नीं व्है तौ लोग बात पैदा कर दै। अबै आ इज बात लौ के थै कदै-कदास वेळै-अवेळै तारा नै मीठियै माथै घड़ौ उंचाय दौ के गांव घर री दोय वातां करलौ, तौ इणमें इसी कंई बात ? पण लोगां नै तौ वगत गाळण सारू वात चइजै। म्हनै थां दोनां माथै पूरौ भरोसौ है। अर गांव री छोरी तौ वैन-वेटी रै वरौवर। तौ ई देखौ भगवानजी, मिनख नै लोक-लाज रौ ध्यान तौ राखणौ इज पड़ै।'

वाह वाजी, वाह ! कंई वात नै घुमाई है। पछै कैवण लागा—'अर मांनलौ उमर परवांण जे कीं ऊंची-नीची वात व्है जावै तौ दोस मोटयार रौ नीं गिणीजै। म्हैं आ नीं चावूं के लोग थां दोनां रा नांव लैय'र कान-मूंडा नैड़ा करै। अैड़ौ वगत आयां म्हनै मीठियै रै अलावा दूजौ ठौड़ नीं लाधैला !.........'

अर इण तरै सूं सूरज विचारां में डूबोड़ौ रैयौ के देखौ लोगां रै कैवण अर करण में कित्तौ फरक व्हिया करै। लोग वातां तौ केई लंबी-चवड़ी करैला अर....जमानौ वदळगौ ! हूं ! अरे जमानौ वदळण वाळा लोग दूजा इज व्है।....

[आगै आगलै अंक में]

* * *

लिखारां सारूं

रचनावां रै महनतानै अर जागती जोत री पुग नीं पुग रै समचै संगम रा सहायक सचिव नै सीधौ कागद लिखौ, संपादक नै लिखियां कारी कोनी लागै। —संपादक

दिसावर री जात्रा

सोजती गेट सूं सिव सागर

कल्याणसिंघ राजावत

जे आप सुणो के आपणा देस में अेक इस्यो इलाको है, जठै लुगायां घणी रूपाळी व्है अर जादू टोनां सूं ओपरा मिनख नै जीव-जिनावर री जूण दे देवै, अर आपरै कनै राख लै, तो इचरज करो। पण आ वात जुगां जुगां सूं जवांन रही, लोगां री बंतळ में आज लग है। अर म्हारै बोछरड़ा दिनां में सुण्योड़ा इस्या ई गप्पोड़ा मन री ऊंडी साळ में केई दिनां तांई गूंजता रह्या। रूप अेकलो ई सिस्टी नै चमगूंगी वणा राखी है, जे इण रो साथ जादू नै मिळ जाय तो ल्यो जी भाय। इस्यो ई इलाको है कांमरूप आसाम में, जठै म्हैं गयो।

भटकणो आपो आप ई अेक भांत रो सुख है अर जे भटकण रो कोई मुद्दो व्है तो चाहिजै ई कांई, अेक ई आंटै दोय कारज सरै। भांत भांत रा नगिरां सूं मिलणो आपरा नगिर नै खुदोखुद केई भांत री वणगणो कहीजै, अर इतिहास रै पाछै भूगोल आपरो हक राखै, सूं कैवां के इतिहास री स्याही भूगोल रा कागद माथै ई थिर रह सकै। ईयां ई मरुथळ रा थळियां नै हरिया देस भावै अर बंगाल रा सोनल रैवास्यां नै तांबा सा डूंगर अर डूंगर रै परवांण रेत रा टीवा चोखा लागै। हां, तो आसांम हरियो-भरियो है, उठै जळ में थळ अर थळ में जळ है, जठै म्हैं गयो।

स्यात १९६४ री मई म्हीनो हो। म्हैं जैपुर सूं चितावा म्हारै गांव गयोड़ो हो अर घूमणी आदत मुजव अटैंची उठा'र व्हीर पड़्यो नेतियास, भायल हड़मांन कनै, अर उण रै सागै ई जोधपुर जाय पूगो। सोजती गेट रै आगरा मिस्टान भंडार कनै रैंवतजी (रैवतदांन कल्पित) आपरै तै सुदा टांयचै मिळिया अर आसांम चालण रो न्यूंतो दे दियो। दूजै ई दिन जोधपुर मेळ सूं दोनूं टुरग्या। रतनगढ़ में गजानन वरमा मिल्या तो चुरू में विमलेशजी अर दिल्ली में मिळी तूफांन मेल, छक-छक, छक-छक।

तास रा वावन पता में हजार खेल व्है। जिण में गुलांम बेगम सूं दवै अर बेगम वादसा सूं पण वादसा दवै अेका सूं (संघो शक्ति कलोयुगे) पण अेको ई जद हार मांन लेवै,

तद काट लागै (रावण विभीखण री काट सूं ई मरियौ) तौ इसी गुणवन्ती, जनतंत्री बावन पत्यां में अेक खेल व्है 'रमी' म्हैं पैली वार रमी, रमी अर हार री पीसां सूं बांट'र सगळां 'रम' ली, छक'र तूफांन मेल चालै ही—छक-छक, छक-छक, स्यात कैवै ही—'छक, छक रे भाई छक रे।'

जमना पुळ सूं ताजमैल देख्यौ। संगमरमर मकरांणा रौ अर मकरांणौ म्हारा जिला में। भाटा ई आपणा सा लाग्या, अपणेस तौ अपणेस व्है। पीथळ ई तौ फोगड़ा सूं गळै मिल्या अर कह्यौ ही के 'म्हांनै राजा तेड़िया थूं क्यूं आयौ फोग?' आगरा रा पेठा सूं वेसी मिठास संगमरमर में लखायौ। रेंवतजी ताजमैल बणावण री मनस्या राखै हा, पण मुमताज मैल....? टूंडला, कानपुर, इलाहवाद पाछै छूटता गया अर तूफांन आगै वधती जा री ही—छक-छक, छक-छक।

प्रयाग में रात ही तौ पटना में छाकां व्हैगी ही। न्हाया-धोया अर विमलेसजी हंसाया तौ हंस लिया अर गजाननजी गाया तौ सुण लिया। सै सूं जूनियर म्हैं, ज्यादा खुलणौ ठीक नीं, अर 'सीनियरां' में नीं सा नीं। विमलेसजी कह्यौ—'देखौ भाई म्हारै आज निरजळा ग्यारस है, पांणी नीं ल्यूंगौ, हां 'नीट' ई चालसी।' कलिंग री जीत पछै असोक अहिंसावादी होग्यौ। गाडी री खिड़की सूं वारै झांक्यौ तौ असोक री लाट कोनी दीखी, तीन मूंडां रौ न्हार कोनी दीख्यौ, पण सारली सीट पर बैठ्यौ फौज रौ अेक मैजर आपरा दोन्यूं खुवां पर सिंघां नै पीतळ रा बणा'र उंचायोड़ो हो। महान असोक री न्यूज रील' घूमगी। इंजन रौ धुंवौ आयौ, तौ बीसवीं सदी याद आई—तूफांन फेरूं ई करै ही—छक-छक, छक-छक।

रात रा हावड़ा पूग्या। ८० लाख री आवादी कलकत्ता री, पण उठै रेल रौ टेसण नीं, है नीं अचंभौ? हावड़ा रौ पुळ, हुगली पर अधरवम्ब। भाई ओ भाई अंगरेज थांरी कळा, हेटै जूती अर ऊपर तळा। नीचै नावां, स्टीमर तिरै अर ऊपर ट्रामां, कारां अर माळ्या मोटरां। कीड़ी नगरौ, नीं नीं, मिनख ई मिनख। राम-राम कठै सूं आया है, कठै जासी? टैक्सी रौ ट्रांजिस्टर गावा लाग्यौ—'गंगा आये कहां से गंगा जाये कहां रे?' अर म्हांनै स्यांमजी कनै, रात वासौ लेणौ हो। ठीडै पूग्या जठै तांई ट्रांजिस्टर उगेर मेल्यौ हो—'गंगा जाये कहां रे?'

गांव रा खुला जीवण रौ आपरौ मिठास तौ सैर री भीड़ री आपरी भड़ास। वडा सैर में रैणौ छोटा आदमी रै बूता री वात कोनी। इण वास्तै टटपूंजियौ सैरी ई खुद नै वडो मांनै, सिस्ट (भीस्ट) मांनै ग्यांनी अर विग्यांनी मांनै। मांनौ सा, म्हे तौ गांव रा गांवेड़ी ई भला। फेर राजस्थांनी भासा रा कवि, सो मानता मुजब गांवेड़ी। सो अेक-अेक चीज म्हांनै ईयां वताईजी जांणै 'मैनर' रौ 'मीनू' समझणा व्है। अर दूजै दिन जद 'अम्बर-वार' में गया तौ अेक चुटकलौ सुण्यौ के अेक गांव रौ आदमी चोखा होटल में गयौ अर पूछ्यौ—'अठै कांई कांई खांणौ है?' वैरौ कह्यौ—'मीनू ल्याऊं।' तौ गांवेड़ी कह्यौ—'अेक प्लेट 'मीनू' ई ल्या दै।' खूब हंस्या। बार जवान व्हैगी, तौ म्हैं ई गावा लाग्यौ—'गंगा जाये कहां रे—लहराये पानी पर जैसे धूप-छांव रे—गंगा ऽ ऽ ऽ ..।'

अेक दिन कलकत्तै ढब'र म्हैं अर रेंवतजी गाडी सूं गोहाटी री जात्रा सरू करी। दिन भर चाल्या। खावण नै कटलेट ई मिल्या, खाया। कोई च्यारेक बजे फेर गंगा पार करणी पड़ी। गाडी छोड'र स्टीमर में बैठ्या। नवो-नवो कांम, स्टीमर चारूं कानी पांणी ई पांणी, राम राम ! पण तद ई अेक बात सुणबा में आई। सगळा स्टीमर में बंगाली, आसांमी अर बीजा बीजा जात्री भरया। अेक बंगाली मिनख कह्यो के प्रधांन मंत्री पंडित नेहरू समाग्या। राम-राम औ के होग्यो ? अेक जुग आगलूंगो जमना रै तीरां, जठै तीन दिन पैली म्हे हा अर उठै ई सोयग्यो लांबी नींद धरती रो पूत-सपूत—गंगा पर स्टीमर तिरतो जावै हो। जमना अर गंगा, मरण अर जीवण, दुख अर सुख, राम-राम। मरी जठै ई पण गोद गंगा री ई मिळै स्याबास भागीरथ स्याबास ! गंगा जावै कठै रे...?

इतिहास रो मतलब व्है—ह्यो हो नेहरू रो जवाहर, हर दौर री नेहरू री धार इतिहास बणग्यो। पण म्हांरी अबर आसांम री प्रोग्रेम ? पनरा दिन छुट्टी समझो—सो कवी-सम्मेलन कैंसल। भारी मन सूं आप आपरो भार उठा'र स्टीमर छोडतां ई भाग्या। आगै गाडी में जागा लेणी ही। रेंवतजी कह्यो म्हैं तो रिस्वत नीं देऊं, सो टी. टी. नै थे ई पटावो, अर बर्थ 'रिजर्व' करात्यो, नीं तो राती जगो हो ज्यासी। 'पण गंगजी पल्लै तो उजाड़ में ई चल्लै।' बंगाली टी. टी. तो ज्यादा लालची ई कोनी हो। पांच रिपियां में दो बर्थ मिळगी, सेकण्ड क्लास री। (वां दिनां तीजो दरजो हो।) छोटी लैण री रेल में छोटी ई रैण करी। घड़ी में पांच बज री ही, पण सुरजो भगवांन आंथ ग्या हा -औ कांई ? कदास घड़ी बंद तो नीं व्हैगी, पण संगळी बटाऊ कह्यो—अठै थां सूं आध घंटा पैली ऊगै सुरजी। अर म्हनै याद आई बी. बी. सी. री वांणी—पाकिस्तान में साढ़ी छै, भारत में छै अर बंगलादेस में साढ़ी पांच बजी है। गाडी चाल री ही असम-असम, असम-असम।

जमना किसन भगवांन रा नांव सूं पवित, गंगा सुरग सूं उतरी सो पगां-पगां पवित। पांणी कठै ई ले ज्यावो गंगा रो, कद तांई राखो, पण गंगा जळ में कीड़ा नीं पड़ै। कित्तो पवित अर कांम रो है गंगा जळ. अचार बणाल्यो, तेल परवांण। पण बिरम-पुत्र में आ बात कोनीं। और तो सै नदयां है, पण बिरम-पुत्र है नद। लांबो पुळ, चौळो ई लाबो, अबार ई बण'र त्यार व्हियो। गाडी इण नद री चौड़ी धार पार कर'र गोहाटी टेसण कानीं जावण लागी अर अेक पुरांण कथा याद आयगी। भागीरथ री पुन्न फळ है गंगा, तो परसरांमजी री तपस्या रो फळ है बिरम पुत्र। बिरामण-पुत्र। आगै आगै परसरांम जी अर पाछै छळछळातो आवै हो बिरम-पुत्र। पण औ कांई ? परसरांमजी खासा आगै आयग्या अर पाछै मुड'र देख्यो तो नद नीं। फिकर में पड़'र पाछा बावड़्या तो देख्यो के अेक जागा नद ठहरग्यो। (आजकालै उणनै पवित तीरथ परसरांम कुंड कैवै) भागीरथ व्हैतो तो प्राथना करतो, पण परसाधारी परसरांमजी नै रीस आयगी अर साप दे दियो—'जा थारा पांणी में सात दिन में ई कीड़ा पड़ ज्यासी।' सापित बिरम पुत्र नै गाडी पार की घी अर आगै बिधण लागी—गुहावटी-गुहावटी, गुहावटी-गु-हाऽऽवऽटीऽऽ। हां, आय ई गी गुहावटी-गोहाटी।

गोहाटी में रात बितांणी ही, सो अेक होटल में पूगा। नैपाली दरबांन ठाट सूं कमरा में लेग्यो। मूंघो मामलो, पण होटल रो नांव भूलग्या। बिरम-पुत्र रै तीरां चोखो सो

अंगरेजी नांव, पण रातीजगौ होग्यौ। मछरदांनी व्हेता थकां, डांस हेनी कोप्टर होयोडा हा अर खटमल थळ रा दळ। थळ अर नभ रा दोनूं हमलां सागै, नींद कठी कर आवै ? अठै रा खटमल क्यूं मोटा हा अर माछर क्यूं अत्रपळा।

आसांम में वोपार करौ बरकत ई बरकत। रेंवतजी कह्यौ रे खटमलौ ! माछरौ ! म्हे तौ कवी हां, बगस, म्हांनै सोवणदचौ, म्हांरौ समाजवादी सपनौ है रे सोवादचौ। पण कुण सुणै—म्हनै तौ हाल माछरवाहिनी री रणघोस सुणीजै।

जागतां नै रात लांबी लागै, लागी। जात्रा री तीजौ पांवडौ, गोहाटी सूं डिब्रुगढ़। छोटी लैण, पण मोटा दिखावा। कुदरत री फुटरापौ च्यारूंमेर। गाडी रै सागै हरियाळी हालै। गाडी रै सागै जळ भरचा नाळा-खाळा चालै। फूल ई फूल। अर फूलां नै, कंवळा कंवळा कमल रा फूलां नै नागड़ा छोरा आपरी डोंगी सूं मछली पकड़ण रा जाळ सूं, कांटां सूं हिला हिला देवै। मा बाप आं नागड़ां नै ई फूल कवै। नैणां रा फूल। देखौनीं फूलां रै फूलां री रोजगार।

कवै के हरी चीजां देखण सूं आंख्यां री जोत वधै अर म्हारी धारणा पुख्ता व्हैगी, जद आ देखी आसांम में चस्मा लगावणियां सावई कम च्यारूं कूंट हरियळ रूंख, धरती री उणियारौ ई घास अर दूब सूं हरचौ। ताळ-तळायां री तीरां रा रूंखां री छीयां सूं पांणी हरचौ। हरचौ-हरचौ सैं कीं हरचौ। म्हैं देख्यौ हरचौ व्हैगौ अर रेंवतजी म्हारै सूं ई घणा। गाडी चालै ही तिन तिन सुकिया—तिन तिन सूकिया, तिन सूकिया। डिब डिब डिब्रुगढ़। डिब्रुगढ़। कोई सिंझ्या रा सात वज्यां पूग्या व्हांला उठै। टेसण पर ई मिळगा बरमा, विमलेस। वै चीलगाडी सूं पूग्या हा। उण दिन ई नेहरूजी री भस्मी चील-गाड़ी सूं विखरीजी।

डिब्रुगढ़ में कलेवा में च्यार-च्यार रसगुल्ला खाया। लांबी माछरदांनी में सोया। आर. अे. सी. रा जवांन जिका शेरगढ़ परगना रा हा, वां रा कवडी-पाळा देख्या। अर देख्यौ बिरम पुत्र सूं बचतौ नावां रा बांध सूं सुरखित डिब्रुगढ़, अर पूगग्या सिव सागर। काम-रूप कांमणगारौ, रूपाळी, जादु टोनां री नांमी नांव। सिव सागर में ई ठहरचा डाक बंगला में। अेक झील रै नाकै। कोई दो दीतवार अठै ई विताणा हा। हिंसाब सूं १४-१५ दिन—फेर आगै आगै गोरख जागै।

* * *

परख

अंधार पख

कवि : नंद भारद्वाज

प्रकाशक : जनभासा प्रकासण, जोधपुर • मोल : पांच रिपिया।

•

'अंधार—पख' री कवितावां अेक अैड़ी विचार-स्थिति सूं जुड़ियोड़ी है के जो आगै साथै केई सवाल पैदा करै। नंद भारद्वाज री लेखण अेक जिम्मेदारी रै बोध सूं जुड़ियोड़ी है अर उणां रै अठै 'लेखण स्तर माथै अेक गुणगी वैग्यानिक' 'अप्रोच' 'एटीट्यूड' नै हासिल करण री कोसिस बराबर चालती रैयी। इणी समझ नै लेकर मोटे मार्क्सवाद री की सिस्टमैटिक स्टैडी रो सिलसिलो सरू करयो है। 'सवालां रै सामी' रूप में लिखियोड़ी भूमिका में नंद आं बातां नै कबूल करी है।

इण में कीं संका री बात नीं के मार्क्स इतिहास रै मांय मर नीं सकै। अेक काल खंड री स्थिति विसेस सूं कोई विचार धारा पैदा हुवै अर समै सागै वा बदळती रैवै। ओ ई कारण है के मार्क्स अर लेनिन री विचार धारा आज दूजै रूप में आपणै सामी है पण कीं लोग उणी सीमावां में आपरी अेक अप्रोच बणाय'र चालै जिण रै कारणै प्रगतिवादी चेतना आपरो अेक खास ढांचो बणा लेवै। सोसण, जुलम अर अन्यायां रै खिलाफ बोलणो उण सीमा ताईं प्रगतिसील द्रस्टिकोण व्है सकै जठै तक आपां मार्क्स वर्ग-संघर्ष, किसान, मजदूर अर पिछड़्या वर्ग ताईं खुद नै बांध'र नीं राखां। क्यूं'क समाज में सोसण है, मिनख दुःखी है अर जिंदगी री बुनियादी जरूरतां रै अभाव में है। वो मिनख 'अंधार पख' री ई व्है, आ जरूरी सर्त नीं है वो सैर रो भी व्है सकै है, किसान अर मजदूर री सीवां सूं बारै भी व्है सकै अर दुनियां रै किणी कूणां रो व्है सकै। सवाल ओ है के वो सोसित अर पीड़ित है. अभावां रै मांय जिंदगी गुजार रैयो है। म्हारै ख्याल सूं निम्न अर मध्य वर्ग रै इणी मिनख नै आज आम आदमी कहयो जा रैयो है। इण ढंग सूं 'अंधार पख' रो आदमी भी इण रै मांय सूं अेक है। अब इण री अबखायां सूं मुगती री उपाव कांई? कांई आपां क्रान्ति री डंको देवां? कांई आपां व्यवस्था-बदळाव री वकालत करां? या कांई आपां फगत साम्यवाद नै ई, ई री रामबाण दवा मान लेवां। अठै आपां नै अेक रस्तो ढूंढणू पड़ै अर ओ ई किणी विचार धारा सूं आपां नै जोड़ै।

खाली क्रान्ति, विद्रोह अर साम्यवाद री दुहाई देवणियां लोगां री कवितावां 'प्रोटो टाइप' कवितावां व्है। अेड़ी स्थिति हिन्दी में रीतिकाल री कविता री ही। जद सूं प्रगतिवादी समझ साव सीमित व्हैगी। 'अंधार पख' री कवितावां में भी आत्मघाती आदतां, कुवद भरयोड़ी मनस्यावां अर अनीतियां रै खिलाफ संघर्ष करता रैवण रो संकल्प है—

अेक लूंठी इतिहास
अर मांयली जरूरत पांण
जुड़ जावै ला अै रेत कण
आपू आप
तद ताई जूझती रैवणी है
इणी उजाड़
अंधार पख रा
तमाम मकड़ी जाळा सूं ।

औ संकल्प निस्चै ई क्रान्ति री भावना सूं जुड़योड़ी है । 'अंधार पख' गी मिनख वेइन्साफी रै बरखिलाफ आपरी आवाज अैकठ रूप में उठावणी चावै है । 'सेवट' कविता रै मांय वौ दकाळ देवती एणां नै ललकार रैयो है के छलावा नै वदरित करणिया मिनखां री जद जुलम रै खिलाफ नाड़या तणीजण लागै तौ पूरै चौफेर अमूंजो भर ज्यावै—

दाटीज जावै थांरी बन्दूकां
तोपां री नाळां
खोटौ साबित व्हे जावै सगलौ बारूद
अपूठी फुर जावै थांरी संगीना
लोग थांरै घांटै में
आंगली घाल'र काढ़ लेवै खुद रौ हक !

अठै सवाल औ है के ई संघर्ष, संकळप और क्रान्ति री भावना रौ वैचारिक आधार खाली साम्यवाद ही है या दूजी व्यवस्था भी विकल्प व्हे सकै ? मूळ रूप सूं मिनख नै स्वाधीनता अर लोकतान्त्रिक चेतना री जरूरत है अर आ जरूरत जे किणी व्यवस्था रै मांय मिल सकै तौ म्हारै खयाल सूं उण नै कबूल करणूं साम्यवाद रै पथ सूं डिगणूं नीं है । वरसां अर सदियां सूं माटी री कंवळी पुड़ता मांय कळीज्योड़ा माथां नै मुगती दिरावण री उपाव अेक नुंवी व्यवस्था अर नुंवी विचार पद्धति सूं है । म्हारै खयाल सूं रचनाकार जठै ताईं आ समझ नीं अपडैलौ तद ताईं कवितावां में क्रांति अर खिलाफत रा मोटा-मोटा सबद व्हैला, नारैबाजी व्हैली अर अणूंता जोर अर दमखम सूं तण्योड़ी मूठ्यां व्हैली । जरूरत उण व्यवस्था री है जकी मिनख री अवखायां दूर कर सकै ।

'अंधार-पख' री सगळी कवितावां अेक मनगत री है—गांव रै सामाजिक, आर्थिक अर राजनीतिक सोसण री । इण वास्तै केई वार लागै आ अेक कविता है अर कविता सूं वेसी अेक विचार-स्थिति री लखाण है 'अंधार-पख' री ओट में रैवणियां आंथूणै राजस्थान रै लोगां री अैड़ी सुनसान गाथा री चित्रण है जको दरद अर घुटन सूं भरयोड़ी है । अठै आ वात भी ध्यान में राखण री है के रेगिस्तान रै बासिन्दै मिनख री इण अजूबा हालत री कारण जठै सोसण है, वठै की प्राकृतिक अबखायां भी है दुरभख काळ बिरखा री कमी,

सिवसा अर आर्थिक साधनां रो अभाव । इयांत कवी खुद इण ढंग रा कारणां री तलास में है—आज लूंठी जरूरत है जीवण रै इण परियाण रूप आदमी री मौजूदा हालत, उणरा कारणां अर उण सूं भी अेक पांवडो आगै, खास कर वां कारणां रा भी उद्गम-ठिकाणा नसां री खोज, जिका कारणां रा भी कारण है जिका जीवण रै सहज विकास अर प्रगति रै मारग में चोड़ी खायां अर अवलायां ऊभी कर राखी है ।' इण कथन सूं साफ लागै के सोसण ई प्रधान व्है, अैड़ी बात नीं जद के कविता री गुर सारी सत्ता नै ई सोसण समाज'र गांव रै मिनख सारू हमदरदी दिखावै । आ सत्ता चायै परदेसी हुकमत री रैयी व्है, चायै राजा रजवाड़ा री रैयी व्है अर चायै पिरजातन्त्र रा आगीवाणां री रैयी व्है ।

चालतो रैयो
घणां वरसां लग
रजवाड़ा-रावळां रो राज
परदेसी हुकूमत री छतर छींयां में
वेखटकै चालता रैया
लूंठापै रै कायदा कानून—
मिनख रै हाथ मिनख रै सोसण रा
— जुड़ता रैया अलेगू नूंवा फाळ
अणलिख्यै जर्जर इतिहास में ।

कवी इण जुलम रै इतिहास नै बदलणू चावै, गांव रै चौकै सूमता अलेगू आदमखोरां नै दकालणू चावै अर इण जंग रा जुझारां नै अलेगूं नुंवा सैना ढूंढण सारू त्यार करणूं चावै; क्यूंके कवी रो जलम मुलक री आजादी पछै व्हियो । वो खुद नै निरभाग अर गिरवी सांसां री संतान समझै । उण रै सामै बहियां में मांडयोड़ो करजो अर अणांणी पड्या खेत है—

कैद कर राख्या हा म्हारा माईतां नै
खूंखार जगळी जिनावरां सूं
थे कदेई मैसूस कोनी व्हेण दीयो
वां नै खुद रै बूकियां रो जोर
रखवाय ली वां री जुबांन
अर भासा तकात अडांणगत
थांरा खजानां में ।

आजादी मिलणै रै पछै भी हालात में कीं फेर-बदळ नीं व्हियो । लोकतन्त्र अर समाजवाद जैड़ा सबदां रा अरथ सारथक नीं व्हिया । संसद में पूगण सूं पैली जिका मोटा-मोटा कवल करग्या हा, वां आगीवाणां रो बोलण रो लैंजो बदळग्यो अर औ गांव हाल भी सागण ठौड़ विना किणी दुःख पिछतावै काळीज्यो बठ्यो है—गुम-सुम अेक ठिठकोड़ै

काळ खंड री भांत। कविता रै वास्तै सांच री होवणू घणू लाजमी है इण बात में कीं संका नीं के नंद भारद्वाज री कवितावां में कविता सू वेसी सांच है। सांच रै अलावा कवितावां गांव रै पूरै परिवेस अर वातावरण नै जीवंत रूप में सामी राखै पण अठै गांव री अेक ई दरद है सोसण, जुलम, अर अनीतांयां। अर आं रै हेठै सांस लेवै भासा-विहूण, जीवण रै अरथ सूं अणजाण, निस्संग सींवविहूणी वेथाग वेकळू रै मांय रेवणिया लोग। कवी सेवट ईं संघर्स सारू जूझणियां लोगा नै त्यार करणू चावै।

अर इणी अरथ में
खोज है म्हारी कविता
वां नूं वां विस्वासू-सबद आखरां री।

भुगत्योड़ै अणभव सूं सिरजी अै कवितावां गांव री अजूबी अर विडरूप हालतां नै स्यात पैली वार आर्थिक सोसण रै परिवेस में सामी राखी है। विचार-स्थिति सूं मतभेद होता थकां भी अेक स्थिति ताईं आं री महत्त्व जरूर है।

* * *

भळ

कवि : पारस अरोड़ा

प्रकासक : जुगत प्रकासण, जोधपुर • मोल : पांच रिपिया।

•

नंद भारद्वाज री कवितावां जठै अेक विचार-स्थिति सूं जुड़ोड़ी है, बठै पारस री कवितावां युग-स्थिति रै दीखत रूप नैं सामी राखै। पारस उण नुंवा कवियां रै मांय अेक है जका राजस्थानी री थिरता अर जड़ता नैं तोड़'र कविता नैं नुंवा सन्दरभां सूं जोड़ी। जद राजस्थानी सिणगारू गीतां रै रसझोळ में डूब री ही उण वगत पारस रै दिमाग में अैड़ा सवाल ऊठ्या—'हवा में फरफर भाजतै बोरलै मटकै नैं माथै गेरदार घाघरो अर गज भर री घूंघटो लियां कठा'क ताईं दौड़ैला आ राजस्थानी? कठा ताईं अेक आम आदमी रै मोजूदा दरद नैं भुलावो देवती रैवैला?' ओ 'मोजूदा दरद' पारस री कवितावां रै सिरजण रो प्रेरणा-रूप है। ईं दरद सारू वै अेक साव भूखी अर पग-पग बळती लाय सूं जकी भळ अंगेजी, वा आं सबदां में पसरयोड़ी है।' जिणसूं ईं पारस री कविता नीजू अणभव अर संवेदना री भळ सूं उपज्योड़ी है

'भळ' रै मांय पारस री सन् ६४ सूं ७४ रै बीच लिखयोड़ी कवितावां है इण समचै ई खुद रै वळबूतै पर छापण री हिम्मत भी है। कवितावां व्यंग, प्रतीक अर बिम्बां रै रूप में इण ढंग सूं बिगसयोड़ी है के वै अनुभूती रा नोखा-नोखा रूप प्रगट करै। केई जगां तो कवितावां वस्तु-स्थिति रै साथै आपरी स्यानी प्रतिक्रिया जाहिर करै। कविता रै वास्तै आ बात लाजमी है के वा घणां सूं घणां व्यापक जीवन-सन्दरभां नैं अंवेरै। खाली दीखत रूप रै यथार्थ रो चित्रण कविता री भीतरी ताकत नीं व्है। आ भीतरी ताकत कवी रै मांय उण रै अणभव अर जीवण-दीठ सूं उपजै। वो आपरै असवाड़ै-पसवाड़ै उकळीजतै यथार्थ रा वारा-न्यारा करै अर मोजूदा हालत माथै आपरो अेक दृष्टिकोण राखै। इण दीठ सूं लागै के 'भळ' री कवितावां में भळ रो अणभव नीं व्है। पारस री संवेदना अेक स्थिति सूं जरूर टकरावै पण वा स्थिति आपरै पूरै प्रभाव अर संपूरणता रै साथै कविता में सामी नीं आवै। इण कारण पारस री कवितावां घणी कमजोर अर साव हल्की लागै। अेक खिमतावान कविता सारू जिन्दगी री भळ सूं निकळणूं जरूरी सरत है पण पारस री कवितावां इण भळ सूं बच'र निकळी है अर आ खामी पारस नैं अेक औसत कवी री दरजो देवै। जे अठै 'अंधार-पख' री कवितावां री तुलना करां तो उण रै मांय भळ वेसी है, अेक अैड़ो आवेग अर संघर्स है जको नंद नैं नुंवा कवी रो व्यक्तित्व देवै।

म्हैं भळ री कवितावां नैं प्रतिक्रियावां रो अेक अैड़ो रूप मानूं जको सहज रूप में प्रगट व्है ज्यावै पण नीं वै अेक विवाद रो रूप लेय सकै तो नीं वै स्थिति माथै गैरी चोट

कर सकै। ई वास्तै केई कवितावां नै पढ़'र लागै कविता पूरी बणी कोनी या कवी आपरी संवेदना नै हळकै रूप में प्रगट करी। पारस री कवितावां नै जे कविता री रचना-प्रक्रिया सूं देखां तो कीं खामियां नजर आवै। पण आं सगळी बातां होता थकां भी अै कवितावां कवी रै चिंतन री अेक रूप जरूर सामै राखै। समाज रै मांय अेक तरफ अैड़ौ वर्ग जरूर है जको रात-दिन खटै, मेनत-मजूरी करै अर आपरै खून नै पसीनो बणावै। पण उण रै साथै तद धोखौ व्है जद कोई उण रै पसीनै रै आणंद नै चोर लेवै। अैड़ी स्थिति पैलां निरासा री तो दूजी बार विद्रोह री व्है। 'चोरी' कविता में कवी लिखै—

कद जाणी ही—
रगत पुसप री रगत
जमानौ यूं चूसैला,
परसैवौ म्हारौ यूं चोरी व्है जासी।

कवी रै मन में वां लोगां रै प्रति आक्रोस है जकां रा नांव 'ठंडै जुद्ध' में मरणआळा री सूची में छप्योड़ा है पण अचरज है के वै हाल वस्ती रै मांय जीवै है। मिनखा जूण री सारथकता मोटै कांम सारू आपरी बलिदान करणै में है। पण कीं लोग सगळौ वगत आपस रै भोड़ में खो देवै। वां री चिंतन साव टुच्ची बातां रै टिचकारै में खतम व्है जावै के मरवण रै घाघरै में सळ कित्ता? के फलाणौ कद जलम्यौ? फलाणौ कद मरयौ? अैड़ा लोगां रै वास्तै कवी कैवै—

अै लड़ मरया
मरचोड़ां री बातां सारू
जीवतां री जस गिटकाय'र
कांई अवैई
आं री छैली मिरतु री
घोसणा करणी पड़ैली!

इण सूं लागै जीवण रै दीखत परियाण रूप री पिछाण पारस नै जरूर है पण वै लाम्बा सन्दरभां सारू नीं अड़थड़ै। छोटी-छोटी घटनावां, छोटै-परसंग अर स्थिति विसेस री मनः स्थिति नै पकड़णै री कोसीस करै। वां री घणकरी कवितावां कवी रै मूड री अेक खास अन्दाज आळी कवितावां लागै जठै 'कैवणूं सो कैय दियौ' आळी मिजाज लागै। पारस री कवितावां मूळ रूप में अेक व्यंग्य री स्थिति री रूप लेय'र चालै; क्यूं के कवितावां में यथार्थ री स्थिति री तीखी निजर सूं चीर-फाड़ी नीं व्हेय'र व्यंग्य री अेक अैड़ौ चेपौ है जिण रै थोड़ै सै इसारा सूं कविता खतम व्है जावै—

कोई भाड़ैत सिपाई
गोळी चलाई देसभगत माथै
अर घाव म्हारै काळजै पड़ियौ
कठैई कोई भूख सूं मरियौ
म्हैं अेक जीवण जीवणै रै वास्तै
उण वगत मरियौ।

इणी भांत ताकड़ी रै नेळै में भगवान बिक जावै अर बांवणा [illegible] जावै (आ[illegible]
सेठ रिपिया रो हिसाब लगावै अर निरभागण फड़ वै रो भूख रो [illegible] [illegible] [illegible]
रोटयां रो हिसाब लगावै (हिसाब) दूजां रै बुजबळ रै आसरै जीवणू [illegible] है, वै '[illegible]
गया' केवावणो कबूल करलै पण 'मरग्या' कैवावणो कबूल कोनी (स्वाभी) [illegible]
भाटै नै झुकता सीस उण माथै छेणी री टंकार सुणीजै। वी [illegible] पारस रै कविता
ओळखां नीं उण री कविता रो मूळ कथ है। 'बरस जात्रा' कविता में [illegible] [illegible] अर
मनगत री लेखो-जोखो नुं वै रूप में सामी आयो है। बरस रै [illegible] में [illegible] री मीनार [illegible]
व्है अर बरस खतम होतां रै साथ बिखरण लाग ज्यावै—

नुवीं मीनारां गड़ो फर रैयो हूं
नुं वै बरस रै स्वागत सारू
जूनीं मीनारां री
साळ-संनाळ टूट जाग
म्हारै नांव चढणी है।

इणी भांत सरदी, गरमी अर बरसात री स्थिति रो [illegible] [illegible] है [illegible] रै
आज रो मिनख अेक घुटन मैसूस करै। मजूर रगत बेचं'र मजूरी करै पण [illegible] [illegible]
खाली। तिजोरी भरती जावै, घुसखुरियो हल्लाळ करै अर राजनीती रै [illegible] [illegible]
खून व्है। इण कविता में मिनख री लाचार, बेबसी अर [illegible] स्थिति रो [illegible] [illegible]
व्हियो है। पारस री काव्य-जात्रा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, पण [illegible]
आज री व्यवस्था में घुटतै-पिसतै अर असंगतियां में जीवणू वाळै मिनख [illegible] [illegible] [illegible]
है। स्यात आ ई स्थिति पारस री कवितावां री [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
सवालां रा पडूतर खोजण सारू कविता उपजी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है—'[illegible] [illegible]
रा अरथ रो फैलाव तलासती समझ, जद न्यारा-न्यारा बरगां रो [illegible] [illegible] दियो,
अेक लाम्बी भिड़त री सरूआत व्ही मिनख अर मिनख, मालिक अर मजूर, दुखी अर [illegible]
रै बिचाळै री लड़ाई में खुद नै जोड़णो। सवालां रा पडूतर री खोज, [illegible] [illegible]
लाय रै नेडी पुगाय दियो।' आ ई लाय झळ रै रूप में कविता [illegible]। [illegible] री [illegible]
कविता 'इतिहास-पथ' नुं वी आस्था री कविता है।

खुद री अेक 'सूर्य-मंडल' उंचाया
वो केयां रा 'प्रभा-मण्डल' तोड़तो
आयगो है जवांनां रो जूथ-ओ इतिहास पथ।

पारस री कवितावां में बिम्ब अर प्रतीकां रा भी नुंवा प्रयोग व्हिया है [illegible]
जरूर आज री मनगत नै सांतरै ढंग सूं प्रगट करै पण प्रतीक कीं खंडित है। प[illegible]
उण नै पूरी कविता मे साकार रूप नीं दे सक्यो। कीं खामियां होता थकां भी नुं वी कवि[illegible]
में पारस री अेक निजू स्थान है।

—गोरधन सिंघ सेख[illegible]

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा. मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्या हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंहराज पुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा. ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं. श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ. मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-५०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा. जो)	सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
सरवर सूरज अर सिञ्या।		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क —

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।



आगलै अंक री बानगी—

* जहूर खां मेहर अर सौभागसिंघ सेखावत रा टाळवां लेख ।
* भगवतीलाल व्यास, सत्येन जोसी, नारायणसिंघ भाटी अर कन्हैयालाल सेठिया री कवितावां ।
* 'खुलती गांठां' अर 'खुद सूं खुद री बातां' री दूजी खेंप ।
* अर दूजा सगळा स्थंभ ।



मुद्रण : माहेस्वरी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर सारू साधना प्रेस जोधपुर में छपी ।

जागती जोत

राजस्थानी संगम रौ मासिक

सम्पादक
तेज सिंघ जोधा

जून
१९७७



जागती जोत

राजस्थांनी संगम रौ मासिक

•

जून १९७७

•

संपादक
तेज सिंघ जोधा

•

बरस : ५
अंक : ४
बरस रौ मोल : १२ रिपिया
इण अंक रौ मोल : सवा रिपियो
रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक
राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)
बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

पॉल इल्यू : फ्रेंच कवी। इण अंक री कविता 'द पिंगविन बुक ऑफ सोसलिस्ट वर्स' सूं।

चन्द्रप्रकास देवळ : नवा कवी। अबार जवाहर-लाल नेहरू मेडीकल कॉलेज, अजमेर में नौकरी लागोड़ा।

कन्हैयालाल सेठिया : ठावा समरथ कवी। सुजाणगढ़ रा वासी। वीयां घणकराक कलकत्ता ई विराजै। 'पातळ अर पीथळ' जैड़ी कवितावां रै पांण टाबर-टाबर आपनै ओळखै।

नारायण सिंघ भाटी : नांमी कवी। जोधपुर जिलै रै माळूंगा गांव रा वासी। मई अंक में आपरा सोळा गीत छपिया, इण अंक आपरी पांच टाळवीं कवितावां। लारला दिनां चोपा-सणी जावण रो जोग बैठो तो खुद नारायण जी रै मूंडै निरी सारी कवितावां सुणियां, अै कवितावां सम्पादक नै खास दाय आई।

गोरधन सिंघ सेखावत : कवी। छपियोड़ी पोथ्यां—'किर किर', 'भरत और अरस्तू के नाट्य तत्वों की तुलना', अर अठी हिन्दी री नवी कहांणी माथै आपरी थीसिस प्रेस में। 'राज-स्थांनी-अेक' रा पांच कवियां में सूं।

जहूर खां मेहर : राजस्थांनी रा टाळवां निबंध-लिखारा। आपरी भासा-सैली री रंगत अर ठरको ई न्यारो। 'हरावळ', 'ओळखांण' अर 'जागती जोत' में मेहर साव रा कीं निबंध छपियोड़ा। 'चितरांम' नांव सूं निबधां री अेक पोथी प्रेस-मत्तै। जोधपुर विस्वविद्यालै में इतिहास पढ़ावै। इतिहास री ऊंडी पूग आपरा निबंधां जीव री जड़।

सौभाग सिंघ सेखावत : राजस्थांनी भासा अर साहित सामनै सोध-खोज री हटोटी। अलेगूं पोथ्यां छप्योड़ी। लारला केई बरसां सूं चोपा-सणी सोध-संस्थान में। राजस्थांनी रै परम्पराऊ गद्य माथै आप री जांणी जैड़ो अधकार। इण अंक रो निबंध इण री साख। आप सीकर जिलै रा वासी।

कमला वरमा : कवित्री। खास कर 'हरावळ' में छपिया। बीकानेर रा वासी, पर उठै ई अध्यापक। कम ई लुगायां राजस्थांनी में लिखै अर वां में ई कमला जी, कमला जी।

विनोद कोठारी : मोहता कॉलिज सादूलपुर में टी.डी.सी. रै पैलै बरस पढ़ै। इण साल औ 'सेंट्रल बोर्ड दिल्ली' री हायर सैकण्डरी परीक्षा में पांचवीं पोजीसन पाई अर हिन्दी विसै में पैलो। किणीं छापै रै सामनै कवितावां पैली वळा।

किसन कल्पित : राजस्थांनी अर हिन्दी में कविता अर कथा दोनूं ई लिखै। 'हरावळ' में छपि-योड़ा। बगड़ रा वासी। लारलै बरस तांई झूंझणू कॉलिज में पढै हा।

भगवतीलाल व्यास : उदैपुर बसै। राजस्थांनी अर हिन्दी दोनां में ई लिखै। इण अंक छपी आपरी कविता 'बुध अर तीन सांप' पाथरी आंट में लिखियोड़ी, पण गाढ़ी असराऊ।

सत्येन जोसी : जोधपुर रा वासी। 'कंवळ पूजा' नांव रो उपन्यास छपियोड़ो। लारला ई दिनां सगम सूं 'हंस करै निगरांणी' नांव री कवितावां री पोथी छपी।

(बाकी पेज ६४ माथै)

वि ग त

● पूठै रो फोटोग्राफ : सुमहेन्द्र

फ्रेंच कविता

अदल न्याव

पॉल ऑल्यू

मिनख री सिलगती परगत है आ
के दाखां सूं पाड़ै दारू वो
के काठ सूं चेतावै अगन वो
के वाच्यां सूं सिरजै मिनख वो

मिनख री निरमम परगत है आ
के खुदोखुद नै राखै सावत वो
जुद्ध अर बोखै थकां
मंडियोड़ी मौत थकां

मिनख री साळग परगत है आ
के जळ नै जोत में उथळै
सपनां नै सांच में
वैरयां नै सैण में

आ परगत जूनी अर नवो
आपो आप में आवगी
ठेट टावर रै काळजै सूं लगा'र
अदल सूं अदल न्याव तांई

* * *

उल्थो : तेजसिंघ जोधा

फगत पड़गूंज

चन्द्रप्रकास देवळ

आ दुनिया बोळी व्हैगी
अर म्हैं बोबाड़-बोबाड़'र गूंगो

आ सोच-सोच'र मगसो पड़गो म्हारो मूंडो
के टाबरी रै पढ़ण सारू पाटी कोनी
के लुगाई रै हाथां चूड़ चां कोनी
के बाप रै माथै पागड़ी कोनी
के म्हारी नाड़ां रगत कोनी

म्हारै मांय रो मांय कीं सिळगै
म्हारै मांय रो मांय कीं तूटै
म्हारै मांय रो मांय कीं गिधण लाग

म्हारो अरडावणो छाती मांय आभड़-आभड़'र
कसमसावण लागो है कादै री गळाई
माथा मांय कळवळतो समदर झकझोळीजै
अर म्हारो जमारो
बण'र रैयगो है कोरो झाग
म्हारै रूं-रूं में ठसियोड़ो मनसा
नासूर व्है म्हारै डील सूं फूटण लागो है
जिण रै रादरड़ै रळथळीजै
इण कविता रो अेक-अेक आखर

फगत उडियोड़ो नींद री अणखावणो रातां
है म्हारो संगाती
सुन बापरगी आंगळयां रा पैखां मांय
रगसतां-रगसतां अदीठ मिणियां माथै
अर 'म्हैं हूं, म्हैं हूं'—रो सुमरण
पताळां धसगो है
अर रैयगी है फगत पड़गूंज....पड़गूंज

आ दुनियां बोळी व्हैगो
अर म्हैं बोबाड़-बोबाड़'र गूंगो

* * *

तीन कवितावां : कन्हैया लाल सेठिया

अकथ

•

कथ-कथ'र
हुग्यो
आघतो
कोनो कथीज्यो
अकथ,
खिण में लागै
जांणै
बांध लियो
आभै नै रांम-धनख
पण
फरूकतां ईं आंख
टूट ज्यावै
दीठ रो भरम
बैठो है
अंतस में
अेक अबोलो मरम
कोनी पकड़ै
जको
अकन कुंआरी
म्हारी वेदणा रो हाथ
गीला रै
जकी रै आंसुवां सूं
म्हारा नैण
गळगच है
गीता सूं
म्हारा कंठ ।

रिसायलौ सूरज

•

बैठज्या हेटै खेजड़ी रै
रिसायलौ सूरज के करसी ?
तपसी औ ई घड़ी दो घड़ी
आखिर धाप मतै ई ठरसी !

मत बण बगत रौ रमतियौ
सुख-दुख आप री मोय बगसी,
राख सजळी सत री जोत नै
पत नै आप ई रह्यां सरसी ।

मरैली माटी तिसाई जद
गगण रौ बादळ समद बणसी,
बधण तौ दै कंस रौ कडूमौ
किन नै कोई माय जणसी ।

•

सांच

कोनी बुहारीजै
सगळी धरती रा कांटा
पै'र लै पगरखी
निरथक है
अंधेरै सूं राड़
चास लै दिवळो
कठै है
आभै री सींव ?
पकड़ माटी री मंजळ
काढ़ दै
दीठ में सूं भीड़
मिलसी अेकलै सूं सांच ।

* * *

पांच कवितावां

सोरठ

नारायण सिंघ भाटी

गिरनार रा गोखां री बाजणी बीजळी
गीतां गजरायोड़ी सोरठ सांवळी
कितरी दिखणी सुपारियां रौ सौदागर रंग
थारी पलटवीं प्रीत रो पनौती चढ़ी
अेडियां उतर-उतर लागो

सह रंग खूटां सींचाणै रंग राचणी
सह नेम तूटां अणंत नेम राचणी

खुद मुखत्यार कांम मरजादा री मांनेतरण
मन मरियां ई मुटकरणं मन री
थारै हेत धज धूजरणं रणां में ई
मरवै महकती किलोळरण किलंगी ज्यूं करणकरणी
माणस नेह वीणा रै सातूं सुरां नीचे
आठवें सुर ज्यूं
थूं आज दिन तांई री प्रीत रै गरबीलै सोपै रै
सिरांणै आलापै

हे भोग रै भटकतै भाग री
आखरी भळावरण
थारै लागरणं नैरणां रा पांरणी सूं
समै समंद रो रळकती रतन करणगतो में
रह-रह नवी रळी आवै,
जिरण खातर आकळ रैवै
लैरां रा प्रांण
सिंधू री मरजादरण काया कसमसै
थगिया न के रतनाकर थाग
थारेड़ा मकराळा मेरांरण
कुरण तो थगै ?

* * *

किसणा कुमारी री मौत माथै

•

अतीत रा डूबता डोळां नै
लंरां री डुरकी[1] रा चोभा देवती
डोकर पीछोळै री पाळ
थारै पिछोकड़ै
कितरी अजरायल राजनीती रा हकीमां
समै रा अबोला गरभ गाळिया
मेवाड़ री मरजादा रै पोतै में पळोटियोड़ी
वा जूनै अमल री कसूंबल कांण
कांईं इण दिन खातर ई जैर बणी ही ?

वै मूंछाळा जैपर नै जोधपर
मल्हार री मैफिल री दीवाधरियां
अेक रतनजोत नै बुझावण खातर
इतरी उतावळी होय
समै रा मीर री मटकती मीट माथै
नगारां पांण नागी नाचती आई
वा आपो राख आप ई बुझगी
उण माथै आज लग उण हसम रा हाथियां रा
हाड पसीजै
पण अे डुळियोड़ी राजनीत में
मिनख री नामरद निसरमाई
थूं कदै सरमीजै ?

* * *

१ — करुणाऊ गावण गत

राव जोधै रो खांडो

•

ओ खांडो
आज दोनूं हाथां सूं नीं ऊठै
सो थें अेक कर भाल
कैंकाण ऊरिया आगलो कमाई माथै
खांडो खिड़कियो समै री रींड री सांध में
दोय डळा होय थारो वीखो भागो
जिण बीच रगत रळतळो धरा रसांण आई।

पांच सौ वरस री साख
कालै तांई थारी पीढ़ियां लाटी
अर ओ खांडो अबै इतिहास बणगो।
समै रा निरणाऊ नेम नै
उणी पीढ़ियां रा पिडत ऊभा धूंप सेवै।

वै ही नेजा नोसांण नवा नेजां में फरूकै
पण अबै खेत नीं जनता री आवरू लाटीजै
मिनख री मजबूरी री सींवां बिन खांडै खाटीजै।
कैड़ी है मिनख रै आगै-लार
दोगाचींती सूं दाभोजती जमीन
अेक लाय सूं आफळ'र निकळतै नै
दूजोड़ी लाय लपक लेवै
हाल उणरै पगां हेटै अंगेजवीं धरतो
कोनीं आई।

* * *

किलै काटीजतौ कड़ाव

•

कितरा सोयता रंदिया है
इण कड़ाव री कठमठी कोरां तांई
जोधै री बीस पीढियां नै पाळणियां जोधारां रा
वै ई पांचू पकवांन

अठा सूं लेय अलंघां तांई
कितरी रसत इणमें नदियां पार करी
तिरिया कितरा डूबता प्रांण
नर भखणी नरवदा री छौळां माथै
केता इतियास ढुलरोजिया है
हूंकळता हाथियां री मचकती पीठ माथै

अटक नै पार करी कांई
इण में ई जसवंत री बिखायत राणियां
सत री मीट साध तिरती
भालाळै दुरगै रै भालै सूं
भाग री आगूंच थगती थाग देख।
पण समै कितरौ अकारथ कर देवै है
समै रा साथ नै—
आज औ अेकलौ बैठो अरोगै आपरौ ई काट।

* * *

अेक साख लीलांणी रैगी

•

[ठाकुर भैरूं सिंघ खेजड़ला रो गुणगान]

मोटी उथल पुथल बीच
उथलीजग्या गढ़पती
माथा दे मोलाघोड़ी जमीन
मुग्रावजै रै भाव जनता में जरगी :
राजनीती रै चिरत चढ़िया
जन सेवी, जर सेवी बण
ग्रांकै उघड़िया ।
पासै री पळटवीं ढाळ में
मिनखां री मरजादा वहगी
जूनी परनाळां पड़तो पांणी
नवी नींवां में मरण लागो
तिरण लागी बोळी जाजां
ऊंची पड़ पड़
काळो घन कचोळणी ।
उण बीच ग्रडग ऊभो ग्रेक खेजड़लो
पंथियां नै छाया दी
पण ग्रापांण न दियो
ग्रर
जोजरै जुग-खेतर में
तन पड़ियां पछै ई
वखत वतूळा झेलणो साखां में
थारी ग्रेक साख लीलांणी रैगो ।

* * *

लांबी कविता-दूजी खेंप

खुद सूं खुद री बातां

गोरधन सिंघ सेखावत

गैला
घायचा क्यूं टांक राख्या है ?
पिरजातंतर श्रां पायचां में नीं है
तूं नेताजी री कांईं उडीकै बाट ?
वे तो वोट रै घोड़ै चढ़'र दौड़ लगाग्या
श्रब निकाळ दे जेबां सूं श्रै झंडा
बै तौ थारी भावना रा भूखा है
इण माळा नै फेंक
इण री सौरम उणा तांईं पूगगी
श्रबै फूल री सारथक जिंदगी रै
दाग नीं लगा ।

श्राज उणां सूं कांईं छांनो । वै जाणै
गरीबी सूं कळ कळ करती झूंपड़ियां री तळमछ

उणां नै ठा है अठै मर जावै भूखा-तिसिया
आंतड़ी रा सबदां रो अरथ लगाता
केई मिनख
अरै ! तू काळ सूं अतो डरै
वी तो काळ री मनवारां करै
काळ पड़ै
थारा घर उजड़ै
मौत रै पगां लागती ढाण्यां रा
कानां में बंदूकां छूटै । अर उणां री कोठ्यां निगे
ढाणी रै कंठां सूं मोत्यां री लड़्यां तूटै अर
उणां रा टावर विदेस री भणाई रा सपना लेवै
काळ पड़ै हर साल । वो उणां री हमदरदी है
थारा दरद री पिछांण काळ नीं ।

उणां री कांई कैणो ?
उगां सांमै उजळै
चोज भरयोडो ऊंडो समदर
केई मांछळयां हांफळड़ै, भागै-कूदै नैड़ै आवै
मखमल सी गोरी काया में
केई भरूंट गडै तीखा सा
किण री ओळयूं कदै चंचूणी
वणी लगावै । कदै मरोड़ै उमर रा दारू
पीयोड़ा सपना नै । रोज हाजरी देय'र भागतो
सुरजो जूना दिनां री थरकण सोरै
पण कुण अब तुळमां में
कळसी ढोळै
बूढ़ापै री आतमा रै चीरा लागतो वगत
टावरां री आंख्यां मिच ज्यावै । क्यूंके
बुढापो स्यात उण सारू नीं आवैलो ।
म्हैं क्यूं भाज भाज ज्यावूं

म्हारै घर कूंडयां में । आंख्यां रै सांमै
बीत्या जुग री कोरपांण उतरै   लालटैण रै च्यानण में
गाभा उतारती सी अेक मूरत
            फोटी सी बण अंगड़ाई तोड़ै
गब्दचोड़ै अंधारै नै खूंदता सूना सा उणियारां री
भीड़, दरूजै सांमी आती लागै ।
डांवरचोड़ै बालपणै री मदमाती रातां री
उवास्यां फैल जावै उमर नै नापती । म्हैं
टुग-टुग जोवूं डोल सूं तिसळती रंगोली चमक नै ।
            ओवरा सारै ऊभी पांचूड़ी व्याण रा
डब डब नैणां में लूमै काट लाग्योड़ा
दिनां री डोढ़ी मुळकावण ।

अलगोजां माथै मड़मड़ जुवानी
सतरंगी बण, निजरां में लुक । छींकौ मो
टांग्योड़ो म्हैं घर रै मांय सूता वंदूकां आळा
लोगां री नीत नै परखूं   डर सो लागै
आंख्यां सांमै कंगाली रा कळवळाता कीड़ा : तोपां
रौ बीड । अब मुवाअजा रा दाणां सूं
म्हा'रै हाडां में पुसप नीं विगसै । दांतां सूं
कद तांई पेट रो लाग्योड़ो
गांठ्यां खोलूं
            खुद रैं माथै थूंकणौ
            कुण सा वेद मांय लिख्योड़ो है ।

बारठ जी !
अबै थे ई थांरै घरां पूगौ
वीर सतसई रा दूहां सूं अबै म्हारै
चढ़ै बुखार । वंसावळी रा गुणगांन सूं
कानां रै मांय फुंस्यां हुवण लागगी ।

अबै जावण री ठौड़ां गिणतो री
कांई जावणौ चाईजै म्हनै



जठै बांदरवाळ बंधै अर गेळो रो जुड़ै
सतरज चौपड़ री बाजी लागै । घूंघाड़ी बाजे
अर ढोल उठै । अै सगळा ढूंढै
खुद रै जिंदा रैवण री ठांयनी
            नीतर रामराज री फिलमां सूं
बापड़ो राम राज कठै ? धरम री जै बोलण सूं
धरमराज नीं परगटै । भागोत री कथा सूं
पिंडत जी रै घर री कोठ्यार भरीज सकै
थारै म्हारै पाप नै उतारण रो ठेको
पिंडत जी कद लियो ? हां आं पिंडां-मगरां
रै पाप नै ढकणै रो
जिम्मो आपणो है   साव आपणो

            आंरी आरती उतारो । सोभा जात्रा
री त्यारी करो । घर में रम राखो पण आंनै
माल खुवावो । गैलो ! थोड़ा सावळ पग
म्हेलो । आ पाप सूं पाप री लड़ाई है
दूजां माथै इत्तो पाप नीं चढावो । स्यात थे
रासन रो नीं खाता व्हौला । थांरो भाई दफ्तर
में जेवां भरतो व्हैला ।
थारै बाप री अफसरी
अंगरेजी दारू माथै भूलती व्हैली
थे जुवै अर सट्टै रा सुगन मनाता व्हौला

अै बातां सगळी
म्हारै इज सारू नीं समझो । पण थारै
हीयै रा कीयां फूट्या ?
भूण री तरियां चक्कर खाता मन नै अेडो नीं
बगत री विच्छू डंक मारै । डूबतै नै कुण तारै
जको सांस रा हिसाब सूं पग धरै
            तळमळावै आप सूं

पण करडी बोलै बाप सूं । दिनां नै देख'र
तिबारी रा लेवड़ा झड़ै
खुद नै पूछूं मकांन री नींव कद ढगैली
कुण सामरं बोल्यां दिनां रै इतिहास री लाव नै
क्यूं के टींगावा चोखो नीं
भदर हुयांड़ी ऊमर नै
थे इज बोलो हूण रा पग कुण देख्या
मैं तो आज तक नीं पूछ्यो
टीपणै में लिख्योड़ी जिंदगी रो हिसाब
दरद नै चूसणो ठीक है दरद सारू

आज तो हिम्मत रै पांण
खोलणां पड़सी जुगां सूं लाग्योड़ा दावणां
आफत सूं कांई डरणो
कदै पंथी तो कदै पावणा
थरपणी पड़सी खून पसीनां री मूरत
मिनख रै हाथ सूं भाटै री मून खुलसी

लागै करणगती रै बांध्योड़ै
जलम जलम रै सपनां री बोग्गत
सूंपणी पड़सी
पाळी पोसी आसावां रा नखरां सूं
हरखणो ठीक व्है सकै पण बात री
लाज राखण सारू त्यार व्हेणो जरूरी है ।

कठै तांई सींचू
सूखा करड़ा कूणां नै घाट्यां में
उग्योड़ो सुरजो बांटै नामरदी री सीरणी
मूंडा फेर'र बैठ्या अेक दूजा कानी अेक इज
बास रा लोग लियां आप आपरी चिलम स्यापी
सूखा सा मन सूं न्हांखै खंखारा...

हूं-हूंकारै सूं दूजां री बातां टाळै
बुझती नै फेरूं बाळै अर
गुमांन करै भागतै चानणं री छीयां नै
पिछाणण री । मिनख रै सुभाव री रंगत
तावड़ै सागै छिण मांय बदळै
वो खुद खाडा खोदे, खुद नै बूरै
खुद नै काढै अर फेरूं उथळै बगत री पोथी
रा फाटयोड़ा पानां नै आपरी चतराई सूं
देखतां देखतां छिण में रीता कै
भरयोड़ा तळाव । कद सूं मिनख आपरी आंख नै
निरखै, पिछांणै पण नीं समझ सकै डावै मन
में ऊठता तूफानां रा मनस्यावां नै ।
हाल दूजां रै कंठां रै लून री सुवाद मिनख
भूल्यो नीं । उणरी जबांन माथै है लुगाई रै
डील रा मोवणा मन्तरा री जोड़-तोड़
लुगाई इत्ती सस्ती अर इत्ती जरूरत आछी कै जावैली
इण कळजुग में   इण री रामांयण
भागोत में परसंग नीं आयो
अब तो लुगाई बिनां होटल किस्यो ?

होडै री चक्क-चूं सूं भवग्यो मायो
कैवणियां लोगां नै तो लाज नीं आई पण उणां
री वातां री जुगाळो सरम आळै साव मोत है
कैवत री पूंछ पकड़्यां बगत रा गाडा
नीं नाप सकोला । सदा सुणा
वळट आसूदा व्है ढाळ मे
क्यूं के जमारो तो हंसै हंसतो ई रैवे
मौत री झाळ में पण व्हैलो कांई, इण री
गिणत समझ सागै कवडो रमै ।

म्हैं घर-गुवाड़ सूं
क्यूं आयो इत्तो अळगो आं लोगां बिचै

आज देखली सगळां रै मन री कुटळाई
भूखा-तिसियां रै हाडां माथै
ऊभोड़ा ओबरा अर
घरणा ओबरा लिप्योड़ा पोत्योड़ा
ध्याणा सूं मूंडा सियोड़ा
जिण री छींयां में कोई बैठी रळकावै
कुदरत रा मूंठी दो मूंठी दाणां नै
बस गीत सुणै, रोज बुलावै राणा नै
सोचै
किण री मुळकावण सूं गरम व्है
ठंडा विछावणा
कद अचपळी रातां झांकै झरोखा सूं
पण उणरै गूंगै दरद नै सुणै कुण
उणरा थाकीज्योड़ा दिनां री गांगरत सूं
उळझै कुण ?

नीं करी विचार
कांण-कायदै रै मुरझायोड़ै फूलां नै निरख
सौरम री आपरी जात व्है
पण सौरम री ठैराव साव थोड़ी
खंकारा करै नोम माथै चढ़चोड़ा टींगर
वाड़ै ने सांपड़ती
नुवीं बीनणी खांनी । उठीनै बाप फैंकं
पुरस्योड़ी थाळी
बेटी री छाती में
मां री फाट्योड़ी आंख्यां में
जूनै जुग रा सपना
खुद रै हाथां री हथकड़ी खोलता थकां
आपरौ मूंडौ नीचौ कर लेवै ।

थे हरेक बात री सकळाई सारू
वातां रा पग मत मोड़ौ

इण बात नै मांन'र चालो के
भांग रा दाफड़ां री दवाई
इण नाजोगै मिनख री
जेव में नीं । सोचयूं व्हेता थकां
इण री लुगाई सोरी नीं
भ्रां दरवाजां रा दांत तूटियां वरस व्हेगा
पितरां नै घोकतां
जमारो हीण व्हैगो
भ्रां डाकोतां रा हीया
सलामत कद हा मिनख नै मिनख समझण सारू
नीं पकांयत पतियारो हो इण बात रो के
थूं सगळां साथै गेलो व्हेलो
भ्रै गेला कित्ताक पाधरा व्हेला
सपनां रै मांय नीं पड़ी भ्रोळखांण

भ्रव ई थूं सावचेत व्हे
भांप रेखावां री डोढ़ी निजर
परसादी रा भूखा
थारै मिंदर री पैड्यां ऊभा व्हेला
भ्रै भगत साव चोगड़दै
भ्रापरै पायचै में भगवांन री मूरत
लुकावण ने त्यार है। निसांण है
पगथळयां रै मांय भ्रां रै चकरवरती री
सगळी जगां ठांयचो खेत, वजार
स्टैण्ड, धरमसाळा मिंदर में भ्रां रो
भ्रां रै माथै रा मुळकता तिलक
स्यावासी रो तासपत्ती साथै रमै
थूं भ्रेकर
भ्रां रै नास रै सुर नै तो पिछांण
थोड़ी जांण भ्रां री वांण । भ्रै तो

कैवं राज नै पलटावरण री बात
फगत इसारा सूं

हैं रे ! गई बात री चूंडी
कुण पकड़्यौ
पुरखां रै हाथ सूं लगायोड़ै
वड़लै री जड़ां
पसरगी ऊंडी
डाळा व्हैगा लांबा, सैंठा
पण मिनख विचारै आंधी रै हरडाटै में
डावड़सी जड़ां पड़ैला डाला
औ म्यांनौ है गई बात रौ
टाबर हींडैला
मजा लेवता मोटा डाळां रा
थे कांई सोचौ
नाडी रा नीं सूखैली कूख
नीं लोपैली आंगणा लुगायां माटी सूं
नाडो रित सी। गाथा बणसी
जकी सांतरी सावळ दीसै
जगां विखरसी
फेरूं थारौ अचंभौ नीं नवड़ा सकै
वात रा घोड़ां रै काळजै रौ गैराई
तौ थनै धिक्कार है
कांई बताऊ
किण री काख में दब रयौ है आं रौ इलाज
गोदम, रात दिन गोदम स्यूं
गंगा जी न्हावण रा सपना लेवतौ
काळू गूजर। बांचै करम री पाट माथै
लिख्योड़ा आडा-तिरछा आखर
खिणै समै री पोमायोड़ी मूरत नै
छळ पपाळ अर वैम रा गोठ ऊठै

लात लगावै
आंख्यां सांमै बिखरचोड़ी वाड़ी कंडवारो
पण कियां निभै कारयां सूं
जोड़योड़ी जमारो। खुद दिन भर कुब्द
रचै, उळझावै तार काचा मन रा
पण नीं नावड़ै उणरै ग्रूंज्यां में
अथाग विसवास रा वादां रो गुमांन
ईयां तो चतर भड़भूंजो ई व्है
पण गळी गळी फिरतां थका
चतराई आपरो चेतो खो देवै

समझ रा फाचरा
कद जुड़'र विसवास री बीदड़ी नैं खोलै, आ
हाल समझ नीं आई
रात-दिन उफणतै परेम-भाव री मनवारां
अर मनवारां बातां रा डूंगर
कोटड़्यां रै मांय बैठ'र जीमणा लावणां
सजावणी अतीत री मूरत
कठै रा वासी, कुण जांणै कठै जासी
मुसाफिरखांनै में बाथां घाल्यां
टिगटां माथै लिखी जातरा री
दूरी पढ़ां—कोसां, घणी कोसां।
नैड़ै आवता पग
अेक दूजा री चाल पिछांणवा लाग्या
अळिया-पळिया में पड़गी ठा
आंख्यां री मुळकावण कद हसती सुरजी सूं कम।
पण मिनख री चालां
आपरी समझ अर चतराई रा किंवाड़
वेगा नीं खोलै
सुवारथ आपरी वरस-गांठ रो
उडीक में मधरी-मधरी खंखारणी सरू करै

मांयली मन री भायलाचारी
ऊठतां-बैठतां पजोखै
बिसकासघात री लटांण माथै रैबाली सांप
मूंडो काढै, बारै लपलपावै जीभ आपरी
मनमेळू रै चौगड़दै
घेरा घालै—घर में, बजार में, दफ्तर में ।
ओळावै सूं बात चिणै चिगळै रस भींज्योड़ै
सबदां री मीठी रस नै
सळी करै बगत री सूकी-पाकी
हेत सरीखी बातां नै
उण री चतर समझ सूं अपणेस
रा कांगरा धूजै, उठै उबाकां, लिपै-पुतै सावचेत
राख्योड़ी मन री भींता
तद अळगा मूं बायां रस्ता व्है ।

[आगलै अंक आगै]

* * *

निबंध

बापड़ौ कसाई

जहूर खां मेहर

म्हैं अजूं तांई माच चिन्योक हो, समझ ई सावळ को पांगरी ही नीं। बेळी होयोड़ी बैन सांमी ठा नीं किण सारू हाथ उगरागियो ई हो के माजी री धाकल सुणीजी—'अरे अे कसाई, सवासणी नै कूटी तो थोरियै में हाथ उगैला।" बात हियै उतरगी। जद पछै थोरियै नै देखतां ई लखावै जांणै किणी सवासणी नै कूटणियै कसाई रो हाथ है। पैला-पैला तो म्हूं सवासणी नै ठोकणियै नै ई कसाई समझण लूको। पाड़ौसण रिड़कली रै घर-धणी नै रोजी री लत्त, सो वां रैहरमेस कजियो रैवै। गैळ में कदै कदास रिड़कली नै धमीड़ दै। ढूंढी मांयं सम्पाड़ो करतां अेकर वास री लुगायां री बात सुणी। थेपड़ियां थेप'र आयोड़ी अेक जणी हथाळियां मसळ'र पोठै री बाटां उतारती थकी कह्यो—''अे रांडां! बापड़ी रिड़कली नै मरियो कसाई रातै भळै कूटी।" कूंडे में पड़ी मैल उगळती राली नै धप्पड़-धप्पड़ पगां सूं गूंदती दूजी बोली—"असल कसाई है कमसल, बापड़ी नै अेड़ी कूटै के देखोजै ई कोनी।" इण वेळा तांई म्हनै आ तो अवस ठा पड़गी के (अब कै) कसाई रिड़कली रो भाई तो नीज है। पण कूटण री बात तो आपरी ठौड़ यूं री यूं ही। सो अणूताई करै अर बीजां नै कूटै जिका कसाई व्है। सटकै खंखोळी खाय'र खाली चरी लियां इज झटाझट न्हाटणो पड़ियो। सदाई आळी दाई 'पैला म्हैं चुकलियौ भरूंला अर पैला म्हारी वारी है' नै लेय'र ठीकरा बाजण री वेळा आयगी ही।

केई बरसां कसाई री आ अणूताई अर दूजां नै कूटण आळो गाको मन में रम्योड़ो रह्यो। इण बिचै अेकाधी वेळा कसाई नै देखण रो जोग ई बैठो। पण छुरदै सूं भचाभच हाडका भांगतै नै देख'र उणरी रिप्पो दुगणो ई व्हियो। उण वेळा जे किण नै ई ठा व्हैती तो म्हनै डरावण सारू डाकणियां अर भूतां री जरूत अंगै ई नी ही, कसाई ई घणो हो। दिन सवा हा सो नीं तो किण नै ई म्हारै माथै कसाई रै रिप्पै री ठा पड़ी अर नीं उण रै नांव सूं डरावण री उपजी। आज कदै-कदास विचार आवै बावै, भूतां अर डाकणियां सूं

ावरां नै डरावण आळा माइत टाबरां रै हियै कैड़ा-कैड़ा जाळ-जंजाळ गूथ दै। कठी कद, ोकर अर कित्ता दौरा लाई टाबर इण जंजाल नै तोड़े। केई-केई तो हाफळियां खायबौ रै अर मोटियार व्है जितै अळूझियोड़ा ई रैवै। रात-विरात पसेवै सूं झवाझोल होयोड़ा, र-थर धूजता मिनखां नै आप ई कित्ती ई वळा देखिया व्हौला, जिका घुप्प अंधारै आपौ आप ं डरियोड़ा रैवै।

पोसाळ में कक्कौ-केवड़ौ, खख्खौ खाजूलौ करतौ जद ई अणूताई करणियौ म्हारै सारू साई वणियोड़ौ रह्यौ। आ बात वळै तर-तर पक्कीज व्ही। आप सूं फोरा मिड़कलां माथै ाथावती कर वां नै गळटूंपा देय'र घी पायोड़ी रगावग पेन्सलां खोसणियां नै गुरांसा आप साई कंय'र सड़ासड़ लीली कामड़ियां सूं सुरड़ता। थोड़ी ताळ तौ म्हैं गतागम (अळूझ) ावतौ के गुरांसा कसाई है के कूटीजणियौ छोरौ। गुरांसा आप कसायां उपरला कसाई लागता।

अजै तांई बारखड़ी पूरी कोनीं व्ही, म्हैं लल्ला घोड़ी लातपा अर सूवा वेंगण वास्तै री ोकाई करतौ हौ के अेक नवी आडी आय पजी। नानीसा री किणी साथण मांचौ झाल नयौ। उण रा सुख पूछ पाछा आवतां ईं नानीसा कैवण लागा—"बापड़ी रैमती कसायण । अवै थोड़ा ई दिन काढती दीसै।" म्हैं पैला तौ विचारियौ के आप सूं नानै बैन-भायां नै टण आळी, बीजी लुगायां नै धमीड़ण आळी अर कदास घर रै धणी नै भूंगळीं के चींपीयै के ावणै री थरकांवण आळी लुगायां कसायणियां बाजती व्हैला। नानीसा नै जद तीन वीसी पर चवदै वरस व्हैगा सो आंरी बाळपणै री साथण रैमती नै चवत्तर नीं तौ तीन-वीसी पर दसवों वरस तौ खरौ ई वेंवतौ व्हैला। इण उमर में रैमती वळै अजै तांई बीजां नै कूटै ड़ी कसायण कठै सूं रह्यी व्हैला। नानीसा कसायण सारू इत्तौ विचार में क्यूं? सांमी रख री बात व्हैणी चाहिजै के कसायण रै मरियां तौ कित्ता ई सताइज्योड़ा री गैल छूट ावैला।

खैर घणी मौड़ौ सूंटां-ढंचां तांई धोक लियां जद जावतां सांच सांमी आयौ। साई अेक आखी जात री नांव वाजै। गोस, वकरां, घेटां अर खालां री विणज करै। साळ पछै दसवीं तांईं राज री स्कूल में भणीज कालेज में पूगौ। अलेखं बळा सिनेमावां, छोटी-ाटी कहाणियां अर स्कूली पोथ्यां तांईं में कसाई री वौ चंडाळ आळौ खाकौ कदै-कदास ामी आयबौ करचौ। पोसाळ सूं लेय'र वकै जावती विस्वविद्यालै तांईं में भणीजणियौ साई सांमौ नीं आयौ। सत्ता है जे जुगां सूं का'ळै पोतीजतै छापळ'र आयौ आप नैं किणी ाजै ढापै में ढक लियौ व्हे तौ ठा नीं। आपौ आप नैं चवड़ै-धाड़ै कसाई कैवण आळौ तौ ई दीख्यौ। होळै-होळै कसायां में ई चोखा-भूंडा, गोरा-चिट्ट अर काळा-किट्ट, फूठरा र सूगला, राता-माता अर मुड़दार मिनमिनिया, गळतियौ होयोड़ा मड़कल अर पट्ठ बजावता करकन्द, कड़ाका काढ़ता फायां खावणियां झूख्खड़ अर टिड़वि करता धापोड़ा, झीर-झीर ाथड़ा अर फाटोड़ा लिगतर पैरियोड़ा अर भळाभळ करता गावा अर नवी पगरखियां ायोड़ा सगळी तरै रा कसाई कसायणियां देखण में आया। थोड़ीक नैड़ौ ग्यां वैन-सवासणी अरथ सारू घर फूंकणियां अर मोह माह राखै जैड़ा सवावणा कसाई ई सांमा आया।

कसाई नै घणी चण्डाळ, जुलमी, नाथावती करणियो, बहू-बेटी, माई-भोजाई अर सगलै आपरां नै कूटण अर सतावण आलो समझण री रीत नवी कोनीं । जुगां सूं आपणी कसाई अैड़ो ई गिणीजै । अबै तो कसाई सबद कांन रै पड़दां सूं टकरीजतां ई उण री अेक खास चितरांम आंख्यां सामो आय ऊभै । ओ नितरांम काळै-कटौड़ मोटै पेट आळै, नळियां तांई ऊची चौकड़ी आळी भांत री तैमद अर मिचळी बासती गदरी पैरियोड़ै, करणी गाभां रै गीड सूं लथपथ पण मोटै-डरावे जैड़े डोळां अर डील माथै गाभां मैल जमियोड़ै मिनख री है, जिको लोई सूं रगावग हाथां में छुरी बुगदा पकड़ियां भलै माथै जिण नै ई काटण-बाढण नै त्यार दीसै । बापड़ै रो ओ खाको मिनखां रै हियै चींनड़ी ज्यूं जमगो । हेट सूं ई नवटंकियां आळा नाटकिया, भांत-भांत रा लिखारा अर अबै तो सिनेमा आळां तांई पात्रै निर्मों पात्र नै घणो भूंडो अर राखस बतावण सारू कसाई री उपमावां देवै ।

घणा पैलाई जोगा मिनख तो सांच जाणता हा पण अैड़ा जोगा किताक है, नीं घणकरा तो बापड़ै नै आज आळो दाई गिणता । जोग, नकोर, सावचेत अर घाट-घाट रो पांणी पीयोड़ै मिनख सारू कसाई कांई हो ? घणकरा बिलमीज्योड़ा बापड़ै नै कांई गिणता अर इणां रै पांण उण माथै कैड़ा-कैड़ा बोसा पड़्या । इण रै गुनाह सारू अेक छोटी क बात हाल तांई परम्परावां में रूखाळिज्योड़ी है । बात इतियास रै कांटै तो के ओ खरी उतरैक नीं, पण इण मोके उगेरण जोग परी है ।

अकबर बादसा रै समै अेकर अैड़ो जोग बैठो के उणरी सगळी फौज आसूंणी घोराऊ-लंकाऊ अर राजस्थान में (अळूज्योड़ी) ही । दिल्ली रा मोटा मनसबदार कांम-काज सूं आप आप रै रजवाड़ां गयोड़ा हा । जोग री बात के दिल्ली में कोई सौ-अेक सैना सिपाई उवरियोड़ा रह्या । जद आ घणी चावी बात ही के दिल्ली रो धणी जिको सगळै मुलक रो धणी । कोई मरतां-खपतां दिल्ली दाब लै तो पछै गोली रो ई गटको नीं । उणनै सगळा धणी अंगेज लेवै । हासम खां नांव रो मेवातियां रो सिरदार । उणनै कायको अणूतो । राज-पाट सारू डुळतो देख कोई पिंडत उणनै थथोबो टेक दियो के थूं तो दिल्ली रो धणी बणैला । हासम खां रै लाळां पड़ण ढूकी । हरदम टो रातां । सेवट बख आयो जाण आपरै हजार डौडेक मेवातियां नै लेय'र दिल्ली चढ्यो । अकबर रै भेदियां वावड़ पूगता करिया कै दिनूगै तांई मेवाती दिल्ली आय पूगैला । अकबर गतागम में अळूज्यो । करां तो कांई करां ? घरै धणी नै सिणमिणो देख जोधाबाई पुछावणी सरू करयो के बतावो तो खरी आपरै हियै किसी दोराई है । सेवट अकबर हियै री पीड़ उगळी के दिल्ली में अलेगां मिनखां रो वासो है पण आं रो कांम लड़णो-भिड़णो कोनीं, सो कठैई बाबर रो थपियोड़ो राज ने नीं पड़ै । सत्ता है पाछो तो परो खोसाला पण वंस रै ठबक तो लाग ई जावैला अर म्हैं किण नै मूंडो बतावण जोगो रैवूंला ।

जोधाबाई माथै कसायां रै अगोरीपणै अर चंडाळपणै री धाक । घड़ीक अेकली सावळ विचार'र हलकारो दोड़ायो । रावळै रसोड़ै रै हलीमियै नै ई सागै भेलियो । कसायां रा बीसेक पंचां नै भेळा कराया । ठा पड़ी के दिल्ली में दो-ढाई हजार कसाई तो धरा ई रैवै ।

मोरचा रोपण री वात सुण थोड़ा हड़बड़ीज्या। पण कीं तौ राज री खातर रै लालच अर कीं नटणँ सूं घाणी पिलीजण रै डर सूं हां कर दी। राज रो हाथ माथै रैवैला ई सो अकड़ू अर हेंकड़ीबाज हा जिका साळां री आंतड़ियां-ओजरियां काढ़ न्हांखांला, सूंत दांला, पांसळियां रा भचका बोलाय दांला, तिक्का कर काढ़ांला, कीमो बणाय दांला, भेजकौ भच्च बोलां दांला, फींफरा बिखेर दांला, खालड़ी उतार दांला अर गोडा, खुणियां, पुणछा, हासळियां अर गट्टा तांई उतारण री आरी-बारी हांक दी। सुण-सुण जोधाबाई री छाती गरब सूं फाटै जित्तीं फुलीजण ढूकी। उणां नै त्यार होवण रौ हुकम देय'र झटाभट अकबर कनै पूगी अर भख देती राज री रूखाळ सारू आपरी तजबीज सुणाई। मुळकतौ अकबर कह्यौ—'भली आदमण, मांनी के मेवाती लांठा लड़ाक को व्है नीं, पण बापड़ा कसाई कद जुद्ध लड़्या। दिल्ली री रूखाळ करै जैड़ी माजनौ इणां रौ कठै ? बकरै माथै छुरी घसता धूजै जद तौ हलाली राखै। पण जोधाबाई माथै कसाई नांव रौ सिप्पौ जमियोड़ौ। मरै जिन्ना धर उण तौ हठ ई अपड़ली। गळगळी व्हैगी। सेवट तजबीज पार नीं पड़्यां जीवै जितै राज-कांज में मूंडौ ई नीं खोलण री आखड़ी ले अढ़ाई हजार कसायां नै मेवातियां सांमा पग रोपण सारू सिझ्या रा व्हीर कर ई दिया।

अकबर निसंक सूतां रात काढ़ी। पण जोधाबाई घणी रात गई जितै राज रै रूखाळी सूरमावां रा केई करतब घड़ती अर केई भांगती पसवाड़ा फोरवौ करी। दिन धटाधट ऊग्यौ। चारूंमेर हळाहळ करतौ उजास विखरगौ। जोधाबाई विचारण ढूकी के पैलड़ै हलकारै रै बावड़ां मुजब तौ दिनूंगै तांई मेवाती दिल्ली पूगणा हा। कसाई सूरमावां वां नै खेत राख दिया दीसै। सेवट घणौ दिन चढ्यां डावड़ी कसायां रै आवण रा बावड़ लाई। राजी-राजी भटाभट खुचकै बैंवता महारांणी जी बारै पूगा। देखतां ई अेकर तौ मूंडौ फक देती थाप खायग्यौ। पांच-अेक सौ कसाई मूंडा लटकायोड़ा पसेवै सूं भवाभोळ होयोड़ा दीख्या। घूड़ सूं सगळा लथपथ। घणकरां रै घावां सूं अजै तांई लोई चिकचिकै। पसेवौ घावां सूं रातौ व्है गावां री घूड़ सूं गूगळी व्हैतौ चिळचिळै। केई बूटा होयोड़ा तौ किताक टूंटा। कोई अेक पग माथै ऊभो तौ किण रै ई माथै में घाव। घणकरा खाडा-बांडा अर भागा-टूटा। कोई टसकै, कोई डुसका भरै तौ किता ई सिसक-सिसक रोवै। रांणीजी नै देखतां ई धणकरा कूका कर कर'र डाडण ढूका। जोधाबाई रै माथै में इण कूकारोळ सूं सरणाटौ छायग्यौ। मूंडौ पीळौ पड़ण ढूकौ। डील रौ सगळौ गाढ भेळौ करता बोल्या—'भलै मिनखां अबै टसकणौ छोडौ। लड़ायां में घाव तौ पड़ता ई आया है। अबै बोला रौ, राज थांरी घणी खातर राखसी। थे सगळै मुगली राज माथै किरियावर करियौ। राज री आस-औलाद थांरा गुण गासी। वैद-हकीम सेवा करसी। थां घणौ गरबजोग कारज साजियौ। मरता-खपता मेवातियां नै तौ परा ढाबिया।

दो च्यारेक मर्क आया, जिणां रा मूंडा तो मुरझीजियोड़ा मोतां पर [illegible] मूं कोई चिकै पण घणा मारा घाव नीं लागोड़ा । [illegible] मरतो ईगो मांग मूं [illegible] माणो [illegible] लटकावतो थको बोल्यो—"धणियाणी [illegible] हो आर्गो सोनै [illegible] रे पर लांठां रै मूंडै बंधाय दै । मेवातियां नै लावणी म्हारै मन [illegible] । म्हांनै देखतां ई [illegible] मूंडै [illegible] पड़्या । पछै कुण कै ब्याव भूंजो । [illegible] । [illegible] के अेकाधो नीचै पड़ै तो छाती माथै मोतो पर [illegible] पण कर्मीणा पैड़ा के अेक ई हेटै नीं पड़्यो । [illegible] ताक करां, जितै वै हरांमजादा तो कोई [illegible] पर कोई [illegible], [illegible] दै । सो भिड़ंत होतां ई [illegible] अर माथा [illegible] । [illegible] म्हे तो अैड़ा उफळीजिया के [illegible] ई [illegible] रा तिफा कर काढ़िया । उबरिया जिका [illegible] कमीणाई देखो साळां री, के ठेठ दिनां ई [illegible] नीं छोड़ी । [illegible] । दिल्ली री सींव रै कांकड़ में आयां तोतां रा [illegible] । [illegible] ई नीं जोयो । मरता रापता ठेठ आय पूगा । जिका मेवातियां [illegible] मूं [illegible] में पड़तां-गुड़तां रै गोडा-गुणियां अर मूंडा मूं [illegible] ।"

म्हांराणी सा आ सगळी बीर गाथा सुणी जितो, [illegible] रै [illegible], [illegible] लावता । आदेटै ई अधाळी आण कूकगी ही । हुथाळियां सूं कनपटियां दबाय थोड़ा मैठा रह्या पण सेवट भंवाळी खाय तड़ान देणी रा पड़ीजिया । गैतो आया आन्यां खुली जद राज रो खास हकीम पागती बैठो । बाप अकबर सिराणै बैठो लिलाड़ पंपोळतो । अकबर काळो आप जीव में सोराई राखो । दिन वघ्यै ई हिदाल खां रै हरावळ दस्तै रा हजारेक जूंझार गोविंदसिंघ री अगवांई में आय पूगा हा । च्यारेक तोपां देय'र वां नै मेवातियां सामां छोर कर दिया । दिल्ली री सींव में वड़तां ई वा मेवातियां नै भड़ाभड़ भूंज काढ़िया ।

अेक जोधाबाई माथै कसाई नांव रो अणूतो लिप्पो होवण सूं बापड़ां माथै कांई-कांई नीं बीती । साहितयकारां अर सिनेमा आळां रै पांण आज ई लाई रै जीव में सोराई नीं । काळजी कळपै अर बीखां रा भारा लियां फिरै । जोधाबाई नै तो थोड़ो-घणो भुगतणो ई पड़्यो । के ठा पछै घणी पिछताई व्हेला । पण इणां साहित्यकारां अर नाटकियां नै तो कोई मोसो देवणियो ई कोनी । अै तो मत्तो पड़ै ज्यूं ई मिनखां माथै कसाई रो लिप्पो चैठावताई जावै ।

आ बात म्हनै तरतर तीखी व्हेय'र चुभण ढूकी के आं सिनेमा आळां, नाटकियां अर साहितकारां री बापड़ो कसाई अैड़ो कांई बिगाड़ करयो । अै सगळा इण रो तिरड़ो अपड़

लियो। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इण नै भूंडण री गांगत झाल ली। बाप है के कसाई, भाई है के कसाई अर अठै तांई के मिनखपणै नै लजावण जैड़ौ कोई कांम करदै तौ उण सारू कहीजै मिनख है के कसाई। जांणै कसाई तौ कोई राखस, अघोरी, चंडाळ, डाकी के अैड़ौ कुमाणस है, जिणरौ मिनख जमारै सूं कीं लेण-देण नीं। उणरौ तौ नांव ई गाळ वाजै। बापड़ै रगदोळ-रगदोळ काळो पोत-पोत अैड़ौ वधनो कर दियौ के बीजां री तौ बात छोड़ौ, आपौ-आप उण माथै ई भूंडाई रौ रंग अैड़ौ चढ़चो के पांच मिनखां रै बिचै उण नै आ अंगेजतां ईं लाज आवै के वौ कसाई है। मिनख हंसता-मुळकता राज अर ठकराई छोड़ दी। सेठायां छोडण सारू छापा पड़ण ढूका। सागड़ी धणियां सूं छूटगा। करसा लैणै सूं छूटा पण बापड़ै कसाई रौ भूंडीजणौ अजूं तांई नीं छूटौ। ऊंची-ऊंची जातां रा मिनख राज री खातरी खातर भंगी भील बणण नै त्यार पण बापड़ौ कसाई अजूं तांईं आप नै कसाई कैण सूं डरै। के ठा कद अर कीकर उण री लारौ छूटैला अर जमारौ सुधरैला।

* * *

इतिहास री वात

जैसलमेर रौ जोधार - दुरजणसाल

साँभाग सिंघ शेखावत

भारत भोम री उत्तराध रा रुखाळा, ऊआन्ना, भाटीयां री घणियाप करवाळा, भड़ किवाड़ उत्तरधरा रा विड़दाव सूं विड़दीजै। भाटीयां री भोम माडधरा कहीजै। उत्तराध री काळी-पीळी मुलतानी, मुसलमांनी आंधी रा भूत भय बणा भभूळियां सूं भट-भेड़ी मांनता नै जैसाणो सदा आडो आयो। मिसणां रा प्राणां नै पीवण तांई मांगता जैसाणां री सूरमो पीवणो पिंगळ सो लखाणो चाये जैसाणां री धरती मांय पीवण रा पांणी री टोटो रै, पण टीबां-तालां, मरां भखरां री इण धरती नै उठा रा जोधारां पाणी री ठोड़ सोणित री सरितावां वहाय'र धपाई। आरण रै अगाड़ै असमर री गेन गिनाय मिसणां री चतुरंगी प्रतनां नै चकाचोह दिखायो। जिण समै जूझाऊ बंबागळां माथै डंकां री थिधाई पड़ी, उण वखत जैसळमेरां री जोस में नाच ऊठी नड़ी-नड़ी। कोटां रा कपाट खुलिया। गजां रा धुज लहराया। कळांदुवां कवादी कमैता नै सजाया, जद वै असु अर असवार भामड़ा भूतसा, काळ-विकराळ-सा वैरियां रै नजर आया। काचा जीव रा कापुरसां रा काळजा थरथराया। सूरां वीरां धीरां रा वदन कवच री कड़ियां में नीं समाया। कायरां री अकीरत, कीच-कर्दम में कळीजी अर जोधारां रा मन-मयूर उल्लास री उमंग में उमगाया। ऐड़ा जग जोधारां, सूरा पूरां धीरां, जिणां रा सुख सनूरा इतिहासां ख्यातां-वातां में दरसाया। जिणां रा जस रा प्रवाड़ा कवीसरां आपरी वांणी में गाया। अमरां सुरलोक में आगै बाध'र बधाया। लोक-माणस री निजरां में अमरपद पाया, उणां सीमाड़ा रा सूरमावां में माड धरा री उणी रावळ घड़सी, रावळ मूळराज जिको वज्र री आग, के भवांनी री खाग के अरियां रो अभाग ई सांपरत जाणीजै। इणी जोड़ रतनसी अर दूदो भाटी, जिका संसार में आप रै भुजपांणां जस-कीरत खाटी। नन्याणवै बुरजां सूं बीटियां गरबीला गढ गवरहर में वैठा वातां करै। अर पतसाही प्रतनां नै पैमाळ करण री मन में धक धरै। 'जैसळमेर इतनो बडो ठोड़ नै पीढी पांच-सात आपणी हुई नै साको न हुवो। साका बिगर नाम न रहै सु एक साको कीजै। तरै मूळराज,

रतनसी, नै दूदै साकौ करण री नै पातसाह सूं विरोध बधावण री करै ' पातसाह फिरोजसाह अर रावळ मूळराज रै साका री वातां सुणै । रजवट उजाळवा री जूनी जुगादी ख्यातां भणै । घड़सी नै रावल मूळराज रै साकै री बात याद आई । वही वंचा नै तेड़'र वाका-साका री वही वंचाई । रावल मूळराज रै साही खजानौ लूटण रीं अर सत्तर हजार पातसाही फौज नै पैमाळ करण री घटणा लिखी पाई । रावळ दुरजणसाळ आपरी दाढ़ी में सुपेती आई जांण आळोचियौ अर आपरा साईनां-सयानां उमरावां नै कह्यौ—'रजपूत रै तांई साथरां री मौत लांछण गिणीजै । सो उमरावां भायां अैड़ी मुणीजै जिण सूं रावळ देवराज, रावळ जैसल रावळ मूळराज री कीरत माथै फेर बीजौ कीरत कळस चढ़ीजै । '....जरा तौ नैड़ी आई । यूं ही मर जाईस । किणी क सूल नांम रहै तिकां वात कीजै ।' जद पछै रावळ दुरजणसाळ कांगड़ा बळोच माथै धायौ जिको उण नै लोह छकाय उणरी आछी औद री घोड़ियां खोस ल्यायौ । पातसाह सूं लड़'र साकौ करणै खातर पातसाही पड़गना लाहौर री भैंसिया रौ हरण कियौ । पातसाही अस साळा री 'पाणीपंथी' अस अर अस्वां री कतार लूट'र जैसळमेर ले आयौ । दिल्ली रा दरबार में रावळ दुरजणसाळ रै वाकां री नित नवी डाकां पूगण लागी । सूवेदारां री सिकायतां सूं साही दरबार में कोपानळ जागी । परवाणां में अरज दास्तां पढीजी—

परवांणै पतसाह री लिख मूंकै मेलांण ।
इण गढ़ हिन्दू बंकड़ौ, कर अहियां के बांण ।।

जैसळमेर रौ धणी रावळ दूदौ वडौ दूठ रजपूत । सगळी साही अजादा नै लोप'र मन मत्तै चालै । रात-दिन मरणै-मारणै रै पंथ हालै ।

रावळ दूदा रै झगड़ा-रगड़ा अर लूट-खोस माथै रोसासण पातसाह रै उर उदध में वड़वानळ-सी जागी । साही सेना नै जैसलमेर माथै मोकळण री आग्या हुई । कट्ठठ-कट्ठठ करतौ अरावौ भाटीपा पर चलायौ । घोड़ा, ऊंट अर हाथियां रा अणगिणत ढूलरा टोळा अर हलका वहीर हुवा । घोड़ां टापां सूं रज उडी जिकी ऊपर चढ़'र रविमंडळ में जावती पड़ी । ऊजळौ गयणाग मटमैलौ हुवौ अर गरद सूं सूरज मंडळ गुधळायौ । दिन में रात रौ सो खळकौ देखण में आयौ । चकवा चकवी रात पड़ी जांण अळगा हुवा ।

कासीदां दिल्ली मंडल री फौज रा अस्वान जैसाणै मेलिया । रावळ दूदै सुख पाया । गढ़ जैसाण में उछाव मनाया—

जैसळमेर दुरंग गढ़, दूठज दूदौ राव ।
मेघाडबर छत्र सिर, दीघ निसांणै घाव ॥
नीसांणै घाव बाजिया, गाजै गहरै सद्द ।
आकंपै पतसाह दळ, पहड़ायौ परमद्द ।।

रावळ दुरजणसाळ पातसाह फिरोजसाह री सुण वळै सूर समुदाय सिरोमणी दुरजणसाळ चौंथ्यौ थको नाग के भूखौ बाघ सो साही सेना माथै सजियौ । अरि नारियां रा सुहाग भाग रा पत्र बिणासण नै त्यार हुवौ । भाटीपा री कजाकी फौज त्यार हुई । सूरवीर

सिघणियां केसरियां कसूमल पोसाकां धारी। आप आपरा माथां रै केसर कूंकूं रा तिलक किया। आड़तिया किया। अर विवाह रा उछाव री रीत-भांत सोळह सिगार किया। आभूखणां लूम झूम हुई थकी, मरण मरवणां वणी थकी, कुळ गोरव रा मारग में ऊभी थकी जोहर री अगन ज्वाळा साम्ही थकी। घड़ी पलक पाहुणियां, अंगारां सूं रमणी रमणियां आंख पलक रै झपकतै जळ-बळ'र महारुद्र री आभरण बणगी।

अठी नै रावळ दूदो मरणीक बणियो थको आपरा जोधां नै कह्यो—'तुरकां नूं गढ़ लगाव दो। कांगुरै हाथ घातता तांई कोई तीर गोळी मत चलावो। यु गढ़ रोह्यो थको है। नीसरणियां लागै छै। गढ़ रै ठठरियां री ओट जूंझार जाय लागा छै। हामी दंगा किवाड़ भांगण नूं आगै किया छै।" इण रीत दोयणां रा दळ नै नैड़ै-नैड़ै ढुकण-ढूकण रो परवाण दियो है। पछै कह्यो—"जरै ही भेर व्है तरै सको लोह करज्यो।" सो नगारां री गड़गड़ाट अर नफेरियां री नंह-नहीं धुन रै समचै रावळ दूदा रा जोधार वैरियां री विकट बळ वंदरी वाई-सी माथै अंड़ा झपटिया के आकास रो सिकरो, के गयण तारो, के नोळो छूटियो नाग, के जयवंत काग, के गरुड़ री झपेटो, के दुरजोधन रो मेटो सो देखतां-देखतां फागण री फाग सी आखी रणभोम नै लोही सूं रंग दी। घणा भड़ां रा चाचरा गाजा रा पानरा-सा भांग'र बिखेर दिया। सत्रु-सेना रा सत्तर हजार सिपाही समर-स्थळी में महानींद सोया। असुरां रा मुंड महाकाळ आपरी माळा में पोया। कवि लोगां साख भरी, इण तरै—

सित्तर सहंस निकंदिया, कोट भयंकर काळ
बंधव सेन विछोड़िया, के फूटत कपाळ
केसर मिलक सराजदी, वै मूळूं हस्यांह
जांण कंदोई ऊथळै, साजो मभ कड़ाह

मलिक केसर, सराजुद्दीन, रामसाह जैड़ा यवन सेनाधपतां नै कळह रा कड़ाव में भालां, सांमळां, त्रिसूळां रूपी ताकळा सूं भून न्हांखिया। दूदो रूपी कंदोई इसड़ो आरण रचियो। मूळराज नै वफात-भागीमु सलमानां री लासां देवण तांई कवायो। पण मूळराज पडूतर कवायो—

जड़ घड़ जरखां जंबुकां, मिलक कमाल म मग्ग
पेस करै जे पातसा, केहर जांलिस अग्ग

उणी रीत रावळ दूदो लासां न देण रो कवायो। पछै फेर रावळ दूदा रो वाको दिल्ली पूगो के जैसाणा री गादी बारह किरणांपत ऊगो। पतसाही प्रतनां रा पग छूटा। मरता-जीवता सिपाई अपूठा न्हाटा। जद फेर सेनानायक पातसाह नै लिखियो—

जेती मुंड गोळा वहै, सर घूजै सर वाव
तेती ढूक न सक्क हो, मारै दूदो राव

रावळ दूदा माथै फेर फौज मेलीजी। जैसलमेर रा जीवरखा रै घेरी लगाइजियौ रह्यौ पण तुरकां रो हांम पाव नीं हुवौ—

हिंदू कोट न छांड ही, ना तुरके मेल्हाण
विग्रह थ्यौ बारह बरस, दूदै नै सुरताण

अंत में पातसाही सेना पराजै रा पयोनिधि में गुचळकियां खावती पिछतावा में डूबती थकी जैसळमेर दुरग नैं ऊभौ मेल पाछी धारोळी। पण पंलड़ै ई पड़ाव माथै विसवासघाती भीमदेव आसकरण रौ अंगोभव आपरै ऊजळै कुळ रै काळूंस रौ टींकौ लगावण दौड़ियौ। अर निरासा रा नारालय में आसा रौ दिवळौ जगाय'र पातसाही सेनापत नै पाछौ मोड़ियौ। इण भांत भीमदेव गोत घात कर यवनां सूं नातौ जोड़ियौ। पातसाही फौज कोट रै दौळां आय लागी। जाणै वीरभद्र री नींद जागी के जळमेदा रै जिम्हग ज्याग री आगि, के दुरवासा रौ सराप के मुनि कपिल रौ दाप, के रघुवंसी रांम रौ चाप सो रावळ दुरजणसाळ आपरी खड़ग झाली। पछै रणवास में गयौ अर आपरी भार्या सोढ़ी राणी सूं सैनाणी मागीं। राणी रावळ रौ पग रौ अंगूठौ बगसण री अरजदास्त की अर अंगूठै रै साथ चिता चढ़ अर रावळ नै सैनाणी रौ सबूत दियौ—

रावळ जंग निसंग कर, आवा है केवाण
चलणह काटै आपियौ, नाढ़ पुरख सहनांण

पछै रावळ दूदौ आपरी दुजिमी सर्पिणी-सी लचकती दुलोही तरवार रौ चकावौ दिखातौ थकौ कट-बढ़'र कांम आयौ। जैसलमेर रै दूजै साकै रौ जस पायौ।

अठीनै बारह बरस री छेटी पछै गढ़ फतै कर'र रावळ दुरजणसाळ रौ माथौ लेय'र साही सेना दिल्ली रै मारग पड़ी अर उठी नै खींवसर रा मांगलिया सरदार री बेटी आप रै खांवद रावळ दूदा रौ उतबंग लेय'र सती हुवण नै अड़ी। आप रै दरबारी कविराज सांदू सारवा रा चारण हूंपा नैं रावळ रौ माथौ ल्यावण नै मेलियौ। सैकड़ां मूंडां रौ गाडौ हूंपै आपरी चाग्रता रै बळ रुकवायौ अर रावळ दूदा नै जोसीला दूहा-गीतां में बिड़दायौ। यवन सेना इण कौतग नै दीठौ अर कह्यौ हिन्दुवां री त्रियावां रौ ओ खेलौ तौ देखौ। हूंपा रा सबद सुणतां ईं रावळ दूदा रौ मस्तक डक-डक कर'र हंसियौ—

मौ होता पग हाथ, ऊठ'र साम्हौ आवतौ।
मिळतौ बाथमबाथ, (तनै) हियै लगातौ हूंपड़ा॥

पछै हूंपै चारण रावळ रौ सिर रांणी मांगळियाणी नै दियौ। रांणी अगन संपाड़ौ कियौ। उत्तरधरा रा भड़ किवाड़ री जोड़ायत नेह रौ नातौ अंत वेळा जोड़'र वैकुंठ वसी, सूरग री सुंदरियां सांचौ नेह ओळख'र घणी हंसी। कवीसरां कह्यौ—

सांद हूंपे सेवियो, साहब दुरजण सल्ल।
विड़दातां मुख बोलियो, गीतां दुहां गल्ल॥

इण भांत रावळ दुरजणसाळ री रांणी मांगळियांणी कीरत री कतार गूथी, जिण सूं कितरी ई असती कातर कांमणियां री गुरण री आस छूटी। त्रिकुटाचळ पर सिरनाक जैसळमेर रो किलो रावळ दुरजणसाळ री म्हैठांण। अनेकां अगहा मुसलमानां पठाणां नै परलोक पठाय चंदनांमो कियो—

गरवीलो गढ़ गवरहर, साकां री सिरताज।
भड़ भाटियां बैसणो, ओपै अवनी आज॥
तवियो त्रिकुंटाचळ रतां, दुरजण-दुरजणसाळ।
आहव मो फज मादरै, तिलकियो तव भाळ॥

इण रीत उत्तर दिसा री धरती रो रुखाळ दुरजणसाळ जीवो।

* * *

म्हैं

कमला वरम

अेक अंधार पख
म्हैं लीलगी
अेक अंधार पख
म्हनै

अेक निंदरोई
म्हारै मांय
अेक निंदरोई मांय
म्हैं

खींचातांण री इण आपाचक में
देही म्हारै सारू
के देही सारू म्हैं !

•

ज्यूं कोई

ज्यूं कोई साजिंदौ
ऊठतां-बैठतां
गुणमुणातौ रैवै
अेक लय मांवौमांव
ना उण सारू
ना उण सारू

म्हारौ मन
बुणतौ रैवै अेक किरणजाळ
ना इण सारू
ना इण सारू

* * *

तीन छोटी कवितावां

विनोद कोठारी

(१)

आजादी रै उगण
हरख भर्यै परभात
म्हैं झीलर-झीलर रोवै हो
अर थे
म्हारा ई गाभा सूं
म्हारा आंसू पूंछै हा।

(२)

अेक मिनख री चितरामः
मूंडै पड़ियोड़ो ताळो
पेट में रेकर्ड प्लेयर
अर हाथां में अपड़ायोड़ो
रंग बदळतो पोस्टर।

(३)

भगवांन !
म्हनै सो-क्यूं दीजै
पण आत्मा नीं
आत्मा नीं।

* * *

होयो कीं नीं

किसन कल्पित

दारू पीतै बाप री
सुवालू निजरां
म्हारै माथै गडगी

गोडां मांय माथौ दियां
बैठ्यौ म्हैं
अबोलौ रह्यौ
मून धार लियौ

वो अधजळी बीड़ी-सो
अेकर भभक्यौ
अर बुझग्यौ

होयौ कीं नीं.......
....
तवै माथै रोटी सेकती मां
आपरै आंठणै में
अेक दरद औरूं टांक लियौ

* * *

बुध अर तीन सांच

भगवतीलाल व्यास

वी बुध नीं ही
जद वौ दफ्तर सारू
बस-स्टैण्ड कांनी व्हीर व्हियौ
तौ अेक लंगड़ो-लूलो
मंगतो नै लकड़ो री गाडी में देख्यौ
उण री घणी गाडी खींचै ही
पूरव जलम रा पाप सोचै ही
मगनो रै डील माथै
माख्यां भरणावै ही
अर वा जाचक वणी
सगळो 'जाचकावां' री
मजाक उडावै ही ।
यौ पैलो सांच हो ।

न्हाटतां-भागतां ठठ भरी बस
किणी तरै सूं मिलगी
वो पायदांन माथै लटकगो
चौराया माथै हरी बत्ती
व्हैता थकां ई बस अेक
झटको खाय'र ढबगी
सांमी कोई साठेक बरस रो
बूढ़ो सड़क पार करतां
बस रै हेटै आतो-आतो बचग्यो
उण रै हाथां मांयली स्टोव री पिनां
अर रेजगारी सड़क माथै बिखरगी
उण घड़ी जमा भीड़ बूढ़ा नै
उठावण री वात बिसरगी
अर केई हाथ फुरती सूं
रेजगारी चुगण में लागग्या
यो साठ बरस रो बूढ़ो
स्टोव री पिनां वेच'र
आप री रोटी खुद कमावै हो
अर सगळा 'युवा-संगठनां'
रै नांवै सलाम थमावै हो
यो दूजो सांच हो



थोड़ी आगै बस में
जगां व्ही, वौ बैठग्यौ ।
उण रा कांन में
मीरां रै भजन रा

रसीला कड़ावा पड़्या
मीरां री भजन
अेक सूरदास गावै हो
आपरी रसना सूं
अेकतारता री रस बरसावै हो
ठीक इणीं घड़ी
अेकांनी वैठै अेक मसखरै
सूरदास सूं फिल्मी गीत
री फरमाइस कीधी
इकतारा सूं मीरां उतरगी
अर 'आसा' चढ़गी
फेर मन नीं भरचो
तो 'किसोर' 'रफी'....जांणै
कण-कण चंढ्या अर उतरचा
अंत के तंत अलूमेनी कटोरो
बस में घूमण लागो
कणी पांच तो कणी दस
पइसा रा सिक्का नांख्या
कटोरी फिरतो-फिरतो
जद मसखरां कांनी आयो
तो उण कटोरै मैं
सिगरेट री राख झाड़ दीधी
सूरदास री आंख्यां तो रांम
खोसी ही पण हियै री
आंख्यां टमकारतो वो
छिणेक मुळक्यो अर कटोरो
झोळा में मेल दीधी
यो तीजो सांच हो



यै तीन सांच देख'र
उण नै ई बैराग सूझग्यौ
पण पाछै नीं तौ मैल-माळिया हा
अर नीं सुधोधन जैड़ौ राजपाट
वौ आपरी यसोधरा अर
राहुळ नै किण रै भरोसै छोडतौ ?
व्हियौ यौ के वौ
बैराग नै वस में छोड'र दफ्तर
रा स्टैण्ड माथै उतरग्यौ
म्हैं आपनै पैलां ई अरज कीधी
के वौ बुध नीं हौ ।

* * *

लिखारां सारू

रचनावां रै महनतानै अर जागती जोत री पूग नीं पूग रै समचै संगम रा सहायक-सचिव नै सीधौ कागद लिखौ, संपादक नै लिखियां कारी कोनी लागै ।

—संपादक

गज़ल

सत्येन जोशी

मावै-सावै फिरै कंवारा
देखौ तो यां रा उगियारा

दोनूं बद अेक कमरे में
पण दोनां रा घर है न्यारा

बिगड़्यां पछै अेक कोडी रा
यूं है मिनख लाख रिपियां रा

रोज ओळवा ल्यावै घर में
टाबर व्हिया फाळिया सारा

यां रै गायां-गायां गावां
तो ई चढ़ै थोबड़ा यांरा

* * *

उपन्यास री दूजी खेंप

खुलती गांठां

पारस अरोड़ा

आजादी पैली रै राज मारवाड़ री राजधानी अर अबै पच्छिमी राजस्थान रौ मवसूं वडौ शहर जोधपुर। जोधपुर आवतां मीलां दूर सूं जोधपुर रौ किल्लौ अर छीतर पैलेस (उम्मेद भवन) आवण वाळां री स्वागत करता दीसै। छीतर-भाटै रै रूप में अठै री धरती सोनौ निपजै। नगर री नवी-जूंनी सगळी इमारतां नै देख्यां लागै के आ जमीं आपरी काळजौ चीरनै इण रौ निरमाण कियो है।

खास तौर सूं जोधपुर दोय हिस्सां में वस्योड़ी है—अेक हिस्सौ है नगर-परकोटा रै मांयलौ, मकड़ीजाळ ज्यूं पसरयोड़ी गळियांवाळौ, जिकौ केई तळाव, कुवा-बावड़ियां, मिन्दर, हवेलियां अर किल्लौ संवेट'र अेक इतिहासू रंग री झलकी देवै—अर दूजौ हिस्सौ परकोटा रै वारलौ, जिकौ मनोरंजन रा सगळा साधन सरकारी इमारतां, भाटै री खांनां, कारखानां, वाग-वगीचां अर वंगलां री कतारां रै साथै आधुनिकता रा सगळा साधनां सूं सम्पन्न है

नगर रै इणी आधुनिक हिस्सै में आयोड़ी वंगलां री अेक कतार में वगीचै समेत आपरी निरवाळी स्थांन दरसावतौ अेक वंगलौ सेठ किरपारामजी रौ है। सूरज नै अठै आयां नै आज चौथौ दिन व्हैगौ है। लारला तीन दिनां में वौ सेठजी रै वडोड़ै वेटै रतन रै साथै सेठजी रै वौपार रौ पसारौ देख्यौ। कपड़ां री दुकान, छापाखानौ, कागदां रौ गोदाम, सैर में किराये चढयोड़ा मकान अर दुकानां। रतन रै वतायां मुजब केई दूजा धंधां में ई सेठजी रौ सीर हौ अर अेक वार वै नगरपालिका रा सदस्य ई रैयोड़ा है।

रतन उमर में सूरज रै सांयनौ हौ। सूरज तीन दिनां तांई उणरै साथै पैट्रोल रै पगां चढ'र सेठजी रा वौपार रै साथौसाथ होटलां, सिनेमा अर रतन रा यार-दोस्तां री वैठकां

में घूम-घूम'र मगनीजगो। यूं तो वो पैली ई केई वार जोधपुर आयोड़ो हो, पण सैर-सपाटां रो अैड़ो आणंद उणनै पैली नीं आयो। रतन रै साथै रैय'र वो देख्यो के पड़ैगो पांणी ज्यूं कीकर वैवै।

सेठजी रूपाळू सूं आवतां ई रतन नै समझाय दियो के सूरज आपांरी न्यात रो है अर वांरै अेक दोस्त रो बेटो है। इणरो बाप इणनै कीं धधो-बोपार सिखावण सारू म्हारै साथै भेज्यो है। आपांणै अठै इज रैवैला। हाल दोय-च्यार दिन इणनै की घुमा-फिराय नै सैर देखावण रै सागैसाथ आपांणो धधो-बोपार बतावणो ई थारी जिम्मेवारी है। भलै घर रो अर सीधो छोरो है। इणरो कीकर ई कर पैली तो जीव लागणो चाइजै, पछै दूजी बात।····अर रतन आं तीन दिनां तांई आपरी जिम्मेवारी नै आछी तरै सूं निभाई। ओ इज कारण हो के सूरज तीन दिनां में रतन सूं इत्तो घुळ-मिळगो के आगै बरसां जूनी दोस्ती व्है। आं तीन दिनां में रतन रै साथै वो की इण गत बन्यो के गांव राजी-खुसी रो कागद लिखण री फुरसत ई उणनै नीं मिळी।

आज सूरज बिछावणै सूं ऊठतां ई तेवड़ली के गांव कागद जरूर लिखणो। सिनान-सपाड़ा अर नास्ता-पांणी सूं निवड़्या पछै, वो कागद-लिफाफै सारू रतन रै कमरै में पूगो। उण वगत रतन आपरी बैन निरमळा सूं किणी बाबत झोड़ करतो हो। निरमळा री उमर अठारै बरसां नैड़ी व्हैला। इकेवड़ी देही, तीखा नाक-नगस, गोरो रंग अर फळती उमर री साख भरतो अेकोअेक अंग। पण तो ई आ छोरी दूजी अमीर घरां री छोरयां दाई तंग कपड़ा अर टोपलैस-बोटमलैस रा चक्करां सूं न्यारी ही ढीला अर अंग ढांकता कपड़ा पैरै। सूरज जद रतन नै आपरै आवण रो कारण बताय'र कुरसी माथै बैठगो तो दोनूं भाई-बैनां बिचलै झोड रो कारण पूछ्यो, तद रतन भभकतो थको बोल्यो—'अरै, इण छोरी री तो भेजी खराब है सूरज! आ कोर्स री किताबां तो पढै कोनी, रात-दिन किस्सा-कांणियां री किताबां पढती रैवै। खुद री खोपड़ी तो खराब करै ई करै, समझावां तो धैंसगाजो कर दूजा रो ई भेजो खराब कर दै।'

निरमळा बोली—'सगळी किताबां अेक जैड़ी तो व्है कोनी····'

'हां, म्हैं तो कदैई किताबां देखीज नीं व्हांला। आई है बड़ी समझ री ठेकेदार।'

'इणमें समझ री ठेकेदार री कई बात। थे जिकी किस्सा-कांणियां री किताबां री बात करो, वां में अर लिटरेचर में घणो फरक व्हिया करै।'

'देख्या सूरज, आ यूं खोपड़ी खराब कर दे! अबै बता?' वो सूरज सूं चलताऊ सवाल कियो।

सूरज कीं संकीजतो थको बोल्यो—'अबै म्हैं था भाई-बैन रा मामला में कांई बोलूं?'

रतन उणी वगत सूरज नै झांपतो बोल्यो—'अच्छा 'सनलाइट' (सूरज प्रकाश) अेक बात बता! थनै इण घर में आज चौथो दिन है। है क नईं है?'

'है! जिकी?'

'म्हैं थनै इण निरमळा रै बारै में समझाय दियौ अर तूं म्हनै तारा रै बारै में सगळी बात बताय दी। अबै आ निम्मो जंड़ी म्हारी बंन, वैड़ी थारी बैन ! है क नईं ?'

'है !'

'तौ पछै तूं इणनै कदैई बतळावै क्यूं नीं ? थनै सरम किण वात री आवै ? तूं तौ पूरौ लाज रौ लजवंतौ है यार !'

रतन री आ वात सुण'र निरमळा नै हंसी आयगी अर वा लपक'र कमरै रै बारै निकळती बोली—'लजवंतौ !'

रतन कूक्यौ—'चोऽऽऽप !'

इण सूं पैली के रतन पाछी वात पकड़ै, सूरज सफाई देवतौ बोल्यौ—'अबै इण छोरी सूं करण जंड़ी कोई वात व्है इज नीं, तौ कंई वात करूं ?'

रतन वात खतम करतां कंयौ—'ठीक है, ठीक है ! देख आज अदीतवार है, सोमनाथ ई आयगौ व्हेला। आज मंडोर चालण रौ प्रोग्राम है। तूं घंटा भर में कागद-वागद लिख'र निवड़जा। जित्तै स्यामा ई आ जावैला।'

'अै सोमनाथ अर स्यामा ?' सूरज सवालिया निजर सूं रतन कांनी देख्यौ।

'सोमनाथ म्हारौ खास दोस्त है और····निर्····' की अटक'र आगै बोल्यौ—'अर स्यामा अेक दूर रा रिस्ता में बैन लागै, यूं फ्रैण्ड है।' दोनां रा बारा में बतावतौ वौ ऊठ्यौ अर टेबल री अेक ड्रॉज सूं कागद अर लिफाफौ काढ'र रतन नै झिलावतां कंयौ—'आज मिल लीजै दोनां सूं अर देख लीजै। तूं, म्हैं, निम्मू, स्यामा अर सोम ! पांच जणां व्हांला ! तूं फटाफट····'

'म्हैं भी चालूंला !' छठै सदस्य री घोषणा सुणीजी। आ रतन रा छोटा भाई अजीत री अवाज ही। बारै वरसां रौ औ छोरौ पूरौ सैतान अर बतोकड़ गिणीजै। सूरज रै साथै इणरी गैरी घुटै। सूरज उणनै देखतां ई 'जरूर-जरूर' कैवतौ थकौ उणरौ हाथ पकड़'र बारै आवतां ई उणनै तैयार व्हेण सारू कैय'र भगाय दियौ। आपरै कमरै में आय'र वौ गांव कागद लिखण वैठौ। खूब विचार-विचार नै लिखतां सेवट कागद पूरौ व्हियौ जद जाय'र उणनै सांयत री सांस आई। पछै कलम अेक पासी धर वौ पाछौ कागद वांचण लागौ—

'प्यारा तेजसिंघ !

म्हैं अठै राजी-खुसी पूगगौ हूं। मजै में हूं। चिन्ता री कोई वात कोनीं। अठै आयां पछै नुवां-नुवां लोगां सूं मिलण में अर सैर-सपाटा रा चक्कर में रतन रै साथै अैसौ फसियौ के गाव कागद लिखण री ई फुरसत नीं मिळी। हां, थैं सगळा लोग किणी न किणी वात माथै बराबर याद आवता रैया हौ। लारला तीन दिनां में केई लोगां सूं मिळियौ अर केई बातां देखी हूं।

पैली थनैं सेठ किरपारामजी रा परवार रै बारै में बताऊं। श्रै लोग श्रेक घणै खूबसूरत बंगला में रैवै। मोटर, स्कूटर, नौकर-चाकर वगैरै सगळी चीजां सेठजी रै घणै है। म्हैं ई अठै इज रैवूं हूं। सेठजी रा मांगा, सेठाणीजी अर तीन टाबर। टाबरां में म्हारै सांयनो बडो बेटो रतन, उणसूं चार-पांचेक बरस छोटी सतरै-अठारै बरसां री निरमळा अर बारै बरसां रा लाडका कुंवर अजीत कुमार जी। अठै आयां पछै म्हनै लागी के म्हारै आवण री बात घर रा सगळा लोगां नै पैली सूं मालुम ही। म्हारी पूरी सतकार कियो। सेठजी रतन नै आपरी कार सूंपदी अर म्हनै घुमावण-फिरावण री जिम्मेदारी उणनै दी अर तीन दिन सूं दोनूं घूम रैया हां, आज मडोर जावांला।

रतन श्रेक इज आदमी है। सगळां सूं निराळी दुनियां है उणरी। रतन रै सागै रैया पछै अर उणरा यार-दोस्तां सूं मिळयां पछै म्हनै तो लागी के रतन समाज सूं न्यारो व्हीं है। जिका काम समाज में खोटा मानीजै, वै सगळा श्रो करै। दारू श्रो पीवै, भांग श्रो पी लेवै। नाच, गांणा, जुआ, सिनेमा, सिगरेट आद जित्ती खोटी लतां व्है, वै सगळी उण में है। सेठजी उणनै श्रेक कपड़ा री दुकान लगवाय दी। मुनीम राख दियो। अबार म्हारै सगळा कपड़ा इणी दुकान अर सेठाणी जी रै लाड रा पैरयोड़ा है। रतन घर में रैवण अर खावण-पीवण रा दोय सौ रिपिया मां नैं देवै। मां रा प्यार सूं जुड़'र श्रो घर में खावै-जावै, नौतर इणरा केई ठिकाणां है। कदै-कदास मूंडै खारो भलांई व्है जावो, मन रो मीठो है। पेटै पाप कोनीं। इंटर पास है। गुण-अवगुण रो जब्बर मेळ है।

सेठजी री बेटी निरमळा इण बरस कॉलेज में गई है। सेर मे बाप नै बेटी री चिन्ता कीं मोड़ी व्है। छोरयां नैं पढ़ण-लिखण अर सोचण समझण री वगत मिळै। श्रा छोरी टीमर, हंसमुख अर लजाळू है। उणरी हिवड़ी माथै ई तारा रै मस्सै सूं छोटो एक मस्सो है। इणनै देख'र वा याद आवै इज। दूजी बात, आयो उणी दिन रतन सूं ठा पड़ी के सेठजी निरमळा री ब्याव-संबध म्हारै सूं करण री विचार राखै है। घर मे इण बाबत सुळ-सुळ चल रैयी है। श्रा बात सुण'र म्हनै खयाल आयो के म्हारा जीसा नै ई श्रा बात ठा व्हेणी चाइजै।

म्हैं रतन नै तारा रै बारै में सगळी बात समझाय दी। रतन कैयो के म्हैं कचेड़ी में तारा सूं बेखटकै ब्याव कर सकूं। कोई कीं नीं बिगाड़ सकै। उण बगत निरमळा ई मौजूद ही। बोली के म्हारै सागै उणरै ब्याव री बात आई तो वा खुद इनकार कर देवैला। उणरै वास्तै रतन अर सूरज सरीसा है। वाकंई तेजू! श्रै सैर रा छोरा-छोरी आपांरी यिचौ वींत तेज है।

सेठजी री तीजी संतान कुंवर अजीतकुमार जी बारै बरसां रा है। सातवी में पढ़ै। घर-जरूरत री चीजां रा भाव-ताव रो पूरो ध्यांन राखै, केई फिल्मी गीत पूरा रा पूरा कंठै याद। दिन में दोय-चार छोरां सूं हाथापाई आयां बिनां जाणै चैन नी पड़ै। म्हारी छोटी-मोटी जरूरतां श्रो इज पूरी करै।

सेठाणी जी सरीर सूं दूबळा घणा, पण सभाव देवतां सरीसौ, चाळीस नैड़ी उमर। हमेंस हंसता बोलै। मां रौ लाड-प्यार कंई व्हे, श्रा वात यां सूं मिळ'र ठा पड़ी। मां रै कारण रतन घर सूं वध्योड़ौ। यूं समझ के इण घर री सुख-सांयती सेठाणी जी सूं कायम है।

श्रवै रैया सेठजी रा मां सा, जिकां नै सगळा धाजी कैवै। वां नै भगवत पूजा सूं ई फुरसत नीं मिळै। वै दिन भर भगवान रै भोग लगावता श्रर टिणकोरचौ वजावता रैवै। सवार-सिझ्यार मिंदरां घूमण में ई घंटा लाग जावै। वां री कमरौ श्रस्टपौर मिंदर वण्योड़ौ रैवै।

म्हारै लायक श्रठै कीं काम-काज री वात हाल म्हैं सोची नीं हूं। सेठजी रौ छापा-खानौ देख्यौ। वडौ भीणौ श्रर कारीगरी रौ काम। श्रादमी श्रर मसीन रै मेळ सूं कोरै कागद माथै जिण तरै छपाई व्हे, वा देखण जोग इज व्हे। है पूरौ माथापच्चौ रौ कांम।

सगळा समचार थनै मांड'र लिख दिया हूं। यूं सैर में सौ लफड़ा व्है तूं पाछा गांव रा सगळा समचार खुलासै लिखजै। श्रोमा म्हराज थकी जावै तौ मौकौ देख'र तारा नै ई राजी-खुसी रा समचार दीजै। गोविंद री श्रर थारी घणी याद श्रावै। कीं काम काढ़'र थै दोनूं श्रेकर श्रठै क्यूं नीं श्रा जावौ ?

श्रोमा म्हराज, किसना काका, हेड मास्टर साव, नंदूजी, सोनजी थारा जी सा श्राद सगळां नै म्हारा तसलीम वंचावसी। म्हारा जी सा नै ई पूग री श्रेक पोस्टकार्ड इण कागद सार्थ इज न्हाक रैयौ हूं। कागद री उत्तर फुरती सूं न्हाक दीजै। म्हारौ ठिकांणौ इण कागद श्रर लिफाफा, दोनां माथै लिख्योड़ौ है। पाछा सगळा समचार सावळ विगतवार लिखजै। वाट उडीकूं हूं।

थारौ—
सूरज

कागद लिख-वांच'र निवड़चौ इज ही के उणनै रतन बुलाय लियौ। वौ कागद नै श्रेक किताव में दवाय'र उठीनै गयौ। लारै किणी काम सूं निरमळा उण कमरै में पूगी। उणरी निजर किताव सूं मूंडौ काढता कागत माथै पड़ी श्रर वा कीं विचार कर श्रठी-उठी देखती उण कागद नै काढ़'र वांचण लागी। वांच'र वा पाछौ कागद सागी ठौड़ धरचौ इज ही के सूरज श्रांयगौ। निरमळा झट श्रागै श्राय'र वोली—'श्रा म्हारी किताव ले जा रैयी हूं, सूरज भाई साव !' श्रर इत्तौ कैय कागद समेत किताव लैय'र निकळगी।

श्रेकर तौ सूरज हड़वड़ाय'र किताव लेजावण सारू हांकारौ भर लियौ, पण कागद री याद श्रावतां ई वौ—'निरमळाजी, निरमळाजी !' करतौ लारौलार उणरै कमरै में पूगौ श्रर उणनै किताव में कागद व्हेण री वात कैयी। निरमळा खाली किताव झिलाय दिवी। सूरज खाली किताव देख'र वोल्यौ—'प्लीज ! क्यूं मजाक करौ, कागद में पढै जैड़ौ कीं कोनीं !'

पैली थनै सेठ किरपारामजी रा परवार रै बारै में बताऊं। श्रै लोग श्रेक श्रठै खूबसूरत बंगला में रैवै। मोटर, स्कूटर, नौकर-चाकर वगैरै सगळी चीजां सेठजी रै श्रठै है। म्हैं ई श्रठै इज रैवूं हूं। सेठजी रा मांसा, सेठाणीजी श्रर तीन टाबर। टाबरां में म्हारै सांयनो बडो बेटो रतन, उणसूं चार-पांनिक बरस छोटी सतरै-श्रठारै बरसां री निरमळा श्रर बारै बरसां रा लाडका कुंवर श्रजीत कुमार जी। श्रठै श्रायां पछै म्हनै लाग्यो के म्हारै श्रावण री बात घर रा सगळा लोगां नै पैली सूं मालुम ही। म्हारो पूरो सत्कार व्हियो। सेठजी रतन नै श्रापरी कार सूंपदी श्रर म्हनै घुमावण-फिरावण री जिम्मेदारी उणनै दी श्रर तीन दिन सूं दोनूं घूम रैया हां, श्राज मंडोर जावांला।

रतन श्रेक इज श्रादमी है। सगळां सूं निराळी दुनियां है इणरी। रतन रै साथै रैयां पछै श्रर उणरा यार-दोस्तां सूं मिळयां पछै म्हनै तो लाग्यो के रतन समाज सूं न्यारो कीं है। जिका काम समाज में खोटा मानीजै, वै सगळा श्रो करै। दारू श्रो पीवै, भांग श्रो पी लेवै। नाच, गांणा, जुश्रा, सिनेमा, सिगरेट श्राद जित्ती खोटी लतां व्है, वै सगळी इण में है। सेठजी उणनै श्रेक कपड़ा री दुकान लगवाय दी। मुनीम राख दियो। पण श्रबार म्हारै सगळा कपड़ा इणी दुकान श्रर सेठाणी जी रै लाड रा पैरयोड़ा है। रतन घर में रैवण श्रर खावण-पीवण रा दोय सौ रिपिया मां नै देवै। मां रा प्यार सूं जुड़'र श्रो घर में श्रावै-जावै, नींतर इणरा केई ठिकाणां है। कदै-कदास मूंडै खारो भलांई व्है जावो, मन रो मीठो है। पेटै पाप कोनीं। इंटर पास है। गुण-श्रवगुण रो जब्बर मेळ है।

सेठजी री बेटी निरमळा इण बरस कॉलेज में गई है। सेठ रै बाप नै बेटी री चिन्ता कीं मोड़ी व्है। छोरयां नै पढण-लिखण श्रर सोचण समझण री वगत मिळै। श्रा छोरी ठीमर, हंसमुख श्रर लजाळू है। इणरी हिचकी माथै ई तारा रै मसैं सूं छोटो एक मस्सो है। इणनै देख'र वा याद श्रावै इज। दूजी बात, श्रायो उणी दिन रतन सूं ठा पड़ी के सेठजी निरमळा रो ब्याव-संबंध म्हारै सूं करण रो विचार रा्खै है। घर में इण बाबत सुळ-सुळ चल रैयी है। श्रा बात सुण'र म्हनै ख्याल श्रायो के म्हारा जीसा नै ई श्रा बात ठा व्हेणी चाइजै।

म्हैं रतन नै तारा रै बारै में सगळी बात समझाय दी। रतन कैयो के म्है कचेड़ी में तारा सूं बेखटकै ब्याव कर सकूं। कोई कीं नीं बिगाड़ सकै। उण वगत निरमळा ई मौजूद ही। बोली के म्हारै साथै उणरै ब्याव री बात श्राई तो वा खुद इनकार कर देवैला। इणरै वास्तै रतन श्रर सूरज सरीसा है। वाकंई तेजू! श्रै सैर रा छोरा-छोरी श्रापांणै बिचै वींत तेज है।

सेठजी री तीजी संतान कुंवर श्रजीतकुमार जी बारै बरसां रा है। सातवी में पढ़ै। घर-जरूरत री चीजां रा भाव-ताव रो पूरो ध्यांन राखै, केई फिल्मी गीत पूरा रा पूरा कंठै याद। दिन में दोय-चार छोरां सूं हाथापाई श्रायां बिनां जाणै चैन नी पड़ै। म्हारी छोटी-मोटी जरूरतां श्रो इज पूरी करै।

सेठाणी जी सरीर सूं दूबळा घणा, पण सभाव देवतां सरीसौ, चाळीस नैड़ी उमर। हमेंस हंसता बोलै। मां रौ लाड-प्यार कंई व्है, आ बात यां सूं मिळ'र ठा पड़ी। मां रै कारण रतन घर सूं बध्योड़ौ। यूं समझ के इण घर री सुख-सांयती सेठाणी जी सूं कायम है।

अबै रैया सेठजी रा मां सा, जिकां नै सगळा धाजी कैवै। वां नै भगवत पूजा सूं ई फुरसत नीं मिळै। वै दिन भर भगवान रै भोग लगावता अर टिणकोरचौ बजावता रैवै। सवार-सिझ्यार मिंदरा घूमण में ई घंटा लाग जावै। वां रौ कमरौ अस्टपौर मिंदर बण्योड़ौ रैवै।

म्हारै लायक अठै कीं काम-काज री बात हाल म्हैं सोची नीं हूं। सेठजी रौ छापा-खांनौ देख्यौ। बडौ झीणी अर कारीगरी रौ काम। आदमी अर मसीन रै मेळ सूं कोरै कागद माथै जिण तरै छपाई व्है, वा देखण जोग इज व्है। है पूरौ माथापच्ची रौ कांम।

सगळा समचार थनै मांड'र लिख दिया हूं। यूं सैर में सौ लफड़ा व्है तूं पाछा गांव रा सगळा समचार खुलासै लिखजै। ओमा म्हराज घकी जावै तौ मौकौ देख'र तारा नै ई राजी-खुसी रा समचार दीजै। गोविंद री अर थारी घणी याद आवै। कीं काम काढ़'र थै दोनूं अेकर अठै क्यूं नीं आ जावौ ?

ओमा म्हराज, किसना काका, हेड मास्टर साब, नंदूजी, सोनजी थारा जी सा आद सगळां नै म्हारा तसलीम वंचावसी। म्हारा जी सा नै ई पूग रौ अेक पोस्टकार्ड इण कागद साथै इज न्हाक रैयौ हूं। कागद रौ उत्तर फुरती सूं न्हाक दीजै। म्हारौ ठिकांणौ इण कागद अर लिफाफा, दोनां माथै लिख्योड़ौ है। पाछा सगळा समचार सावळ विगतवार लिखजै। वाट उडीकूं हूं।

थारौ—
सूरज

कागद लिख-वांच'र निवड़्यौ इज हौ के उणनै रतन बुलाय लियौ। वौ कागद नै अेक किताब में दबाय'र उठीनै गयौ। लारै किणी काम सूं निरमळा उण कमरै में पूगी। उणरी निजर किताब सूं मूंडौ काढता कागत माथै पड़ी अर वा कीं विचार कर अठी-उठी देखती उण कागद नै काढ़'र वांचण लागी। वांच'र वा पाछौ कागद सागी ठौड़ धरयौ इज हौ के सूरज आयगौ। निरमळा झट आगै आय'र बोली—'आ म्हारी किताब ले जा रैयी हूं, सूरज भाई साब !' अर इत्तौ कैय कागद समेत किताब लैय'र निकळगी।

अेकर तौ सूरज हड़बड़ाय'र किताब लेजावण सारू हांकारौ भर लियौ, पण कागद री याद आवतां ई वौ–'निरमळाजी, निरमळाजी !' करतौ लारौलार उणरै कमरै में पूगौ अर उणनै किताब में कागद व्हेण री बात कैयी। निरमळा खाली किताब झिलाय दिवी। सूरज खाली किताब देख'र बोल्यौ—'प्लीज ! क्यूं मजाक करौ, कागद में पढै जैड़ौ कीं कोनीं !'

निरमळा मुळकती थकी बोली—'हां; हां ! कीं कोनीं, म्हैं पढ़ चुकी हूं। पण अेक सरत माथै दूं'ला के थैं म्हारा नांव रै आगै 'जी' रो जीकारो नीं लगावोला। रतन भाई साब कीकर बुलावै ? निम्मू नीं तो निरमळा तो कै सको हो, नजवंता जी ! राइट ?'

सूरज हंस'र बोल्यो—'राइट !'

निरमळा अेक दूजी किताब सूं कागद काढ़'र देवती बोली—'लो ! अर अेक मिनट बैठो।'

सूरज कुड़सी माथै बैठतो थको बोल्यो—'अबै कांई है ?'

निरमळा ई अेक दूजी कुड़सी माथै बैठती बोली—'थो नेजतिम कोई तिगरी दोस्त दीखै, जद इत्ती बातां लिखी ही। पण थांनै आयां नै आज चोथो दिन अर थै म्हां लोगां री पचासूं बातां लिख दी। नईं सूरज भाई साब, किणी रै बारै में इत्ती जल्दी कोई राय नीं बणावणी चाइजै।' वा रुक'र सूरज कांनी देखण लागी। सूरज नै नीची मूण करयां मुळतो देख'र आगै बोली—'म्हारी बात सूं नाराज मत व्हेज्यो। घर रा समझ'र कैवूं के आप हाल म्हां लोगां रै बारै में कीं नीं जाणो। आप देखी जिकी सगली ऊपरली अर दिखावटी बातां है। अेक दीखती घरेलू जिदगानी। मांय सूं कुण, कठै अर किण रूप में गुळघोळो हुटोड़ो है, इणरी थांनै रत्ती भर जाणकारी कोनीं। खैर, छोडो यां बातां नै, थै थैड़ो कीं गलत ई नीं लिख्यो। देख्यो जैड़ो लिख दियो। विचार करो जैड़ी बात कोनीं। कागद लाला नै दे दीजो। बो आर. एम. एस. में न्हाक देई। अर थै अबै मंडोर साब फटाफट तैयार व्है जावो।'

निरमळा री बातां सूं सूरज री खोपड़ी घूमगी ही। वो गताणूं'न हुयोड़ो बोल्यो—'निरमळा ! ठीक नीं व्है तो औ कागद फाड़ दूं !'

निरमळा निसांस न्हाक'र बोली—'अरे बाबा, म्हैं तो अेक जनरल बात कैयी ही। कागद ठीक है, अच्छो लिख्यो है। थै बेफिकर व्हैय'र इणनै पोस्ट कर दो। या म्हैं पोस्ट करूं ?'

सूरज हंस'र बोल्यो—'नीं, म्हैं कर दूं'ला !' अर आपरा कमरा में आय'र लिफाफै माथै आवण-जावण रा ठिकाणां टांक'र मंडोर सारू त्यार व्हेण लागो।

स्यामा वगतसर कार लेय'र आयगी। रतन उणरी सूरज सूं ओलख्यांण कराई अर पछै सगळा उठै सूं सोमनाथ कांनी वहीर व्हिया। कार खुद स्यामा चलावती ही अर सूरज उणरै साथै आगै बैठो हो। वो निजर बचाय'र बरोबर स्यामा नै देखतो रैयो। बदन माथै कसीजता कपड़ा, पाउडर-सेंट आद री मोवणी खसबू, सिनेमा, क्लब, पार्टी आद री चटपटी बातां अर सड़क रा झटकां रै कारण बार-बार टकरीजतो स्यामा रो सरीर सूरज नै बगनाय दियो अर उणनै पसीनो उतरण लागो हो। वो सोचण लागो के कित्तो फरक है दोनूं छोरयां में ! अजाण मिनख कनै अड़'र बैठतां अैड़ी छोरियां नै जरा ई संको नीं व्है। फैसन री मार देखो के सरीर री प्रदरसणी करती फिरै। आंरा मां-बाप ई व्हेला। घोड़ियां व्है ज्यूं छोरियां अेकली वन्नाटा मारती फिरै अर जाणे कोई कीं कैवणाळो कोनीं।.........अठी इण स्यामा नै

इज देखली, खरी वीस-बाईस री व्हेला।·······उणी वगत अेक झटकै सूं सूरज अेकाअेक लुळ'र स्यामा सूं जाय चिप्यौ। वा मुळक'र बोली—'इण सैर री गळियां तौ चंद्रमा री धरती नै ई मात करै, नई सूरज बाबू !'

सूरज 'हां' कै'यर रैयगौ। रतन उणरै मुंडागै रुमाल कर बोल्यौ—'थनै तौ पसीना आयगा सूरज, लै पूंछ लै !'

सूरज रुमाल लेवतां रतन सांमी देख्यौ। रतन आंख सूं स्यामा कांनी इसारौ करतां बोल्यौ 'आगै इंजन कनै बैठण सूं गरमी कीं वत्ती लाग्या करै।'

रतन री वात सुण सूरज झटकै सूं मुंडौ घुमायौ। स्यामा रतन नै मुक्कौ बतायौ अर निरमळा धीरै-सीक दच्·····दच् करती बोली—'लाड़ लजवंती।' अर कार में ठहाकौ गूंजगौ।

सूरज रुमाल सूं पसीनौ पूंछ्यौ के अजीत बोल्यौ—'लांवौ भाई साब, रुमाल म्हनै दे दौ, म्हैं निचोय'र दे दूं।' अर फेर अेक ठहाकौ लाग्यौ। सूरज अजीत नै मारण सारू घूम्यौ उणी वगत कार अेक झटकै सूं मोड़ खाय'र अेक चौक रै खूणै में रुकगी। रतन उतर परौ अेक पतळी गळी मे घुमगौ।

स्यामा सांमलै काच में देख'र लिलाड़ माथली लट लारै करती बोली—'औ सोम ई अेक इज आदमी है निम्मौ ! म्हैं केई वार कैयौ के यां गळियां में रैवणौ छोड'र सैर रै बारै आजा ! पण यां लेखक साव री तौ कीं समझ में ई नीं आवै। तूं क्यूं नी समझावै ?'

निरमळा बोली—'वै नीं छोडै। लारला सात-आठ बरसां सूं इणी मोहल्लै में रैवै। अठै रा लोगां सूं इत्ता घुळ-मिळगा है, कै अवै वै औ मोहल्लौ नीं छोड सकै।'

'भलाई कीं व्हौ ?'

'आ तौ कीं व्हियां ठा पड़ैला।' निरमळा रौ जवाब सुण स्यामा उणरी आंख्यां में कीं देखण लागी। अर जांणै दोनूं आंख्यां में इज अेक-दूजी नै समझगी।

पछै स्यामा आपरी सीट माथै कीं पसरती थकी सूरज मांथै निजर गडाय'र पूछ्यौ—'सूरज बाबू, आपरौ सरीर देख'र लागै के आपनै अखाड़ै रौ ई सौक है ?'

इणसूं पैली के सूरज इण अचींती वात रौ जवाब देवै, चुपचाप लारै बैठौ अजीत लपक'र स्यामा रै नैड़ौ मुंडौ लाय'र बोल्यौ—'हां, क्यूं कुस्ती लड़णी है ?' अर अजीत री वात अेकाअेक सगळां नै सुट्ट कर दिया।

निरमळा अजीत रौ कान पकड़'र लारै खींचती बोली—'चुप, बदमास ! अबकी लपकौ लियौ तौ थप्पड़ मार दूंला। बैठ जा चुपचाप !'

पछै स्यामा सूरज नैं सोमनाथ रै बारै में बतावण लागी। उणरै बतायां मुजब सोमनाथ ग्रेक गरीब, मैणती ग्रर पढ्यो-लिख्यो जवान है। राजस्थानी रो कहाणीकार है ग्रर चावो नांव है। एम.ए. री पढ़ाई चल रैयी है। ग्रेक जगै मास्टरी करै। दोनेक ट्यूसन ई पढ़ावै। ग्रर····वो ग्रायगा दोनूं।' सूरज नै गळी मांय सूं रतन रै साथै चोळो-पजामो पैरयां ग्रेक युवक ग्रावतो दीस्यो। सीटां बदळीजी। ड्राइवर री जगै बैठो रतन ग्रर उणरै कनै सोमनाथ। लारै स्यामा, सूरज ग्रर निरमळा। ठसाठसी देख'र ग्रजीत नै सूरज ग्रापरी गोदी में लेय लियो ग्रर पछै मंडोर सारू रवानगी व्ही। रतन कार में इज सूरज ग्रर सोमनाथ री ग्रापस में ग्रोळखांण करवांई। पछै वो सोमनाथ नैं पूछ्यो के वो बम्बई किण कांम सूं गयो? सोम 'यूं ई ग्रेक काम सूं गयो।' कैय'र बात टाळगो। पछै ग्रठी-उठी री बातां चलवो करी ग्रर बातां ई बातां में मंडोर ग्रायगो। कार नै ग्रेक कांनी ऊभी कर सगळा बारै ग्राया जद सूरज ग्राछी तरै सूं सोमनाथ नैं देख्यो। खादी रा कपड़ा, चमड़ै री साधारण चप्पल ग्रर फबतो-सो हळकै रंग रो चस्मो। डोगी-पतळी सरीर, गोरी फूटरी देही, पतळी-सीधी मूंछ्यां, तीखै नाक-नक्स रो कीं लंबूतरो चैरो ग्रर सीधा संवारयोड़ा लंबा केस उण सूं दोनेक बरस बडो, दीसै में तो सबसूं बडो इज व्हेला। सोम चलाय'र सूरज कनै ग्राय उणरो डावो हाथ ग्रापरै जीमणै हाथ में लैय'र बोल्यो—'ग्रावो, सूरज बाबू!' ग्रर पछै घूमतो-फिरतो ग्रा मंडळी बगीचा में ग्रांबा ग्रर द्रोब देख'र डेरा जमाया।

बात सरू व्ही मंडोर रै विकास सूं ग्रर ग्रांय पूगी गांवां रै विकास माथै। धीरै-धीरै सूरज ई खुलण लागो हो। रतन घुमाय'र बात नैं रूपाळू माथै लायो ग्रर बात ग्राई तारा'र सूरज रा संबंधा माथै। सूरज ई इण बाबत सगळी बात खोल दी।

निरमळा कीं सोच'र सूरज नै पूछ्यो—'मानलो सूरज भाई साब के तारा नै उणरा सासरा वाळा लेजावणी विचारलै, या उणरा बापू कोई दूजो डावड़ो देखलै, या वा खुद किणी साथै जावणी तेवड़लै। थांनै इण बात रो पतो लागां, थे कंई करोला?'

सूरज रै सामीं ग्रो ग्रेक ग्रणचींत्यो सवाल ग्रायो। वो मतामूंज में पड़'र ग्रटकतो थको बोल्यो—'म्हैं······म्हैं ग्रबै इणमें कंई कर सकूं! ग्रा तो तारा री इच्छा री बात है।'

स्यामा झट बिच्चै ई दूजो सवाल कियो—'चलो छोडो ग्रा बात! ग्राप तो ग्रा बतावो के तारा थांरै साथै न्हाटण नै ग्रर ब्याव करण नै तैयार व्हे जावै, तो?'

"गुड क्वश्चन!" रतन बोल्यो।

सूरज कीं तणीज'र उत्तर दियो—'पैलो बात तो ग्रा के म्हैं तारा रै साथै किणी चोर री गळाई छानै-मीक गांव छोड दूं, ग्रा नीं व्है। तारा ई इण सारू राजी नीं व्हेला के वा बापरै धोळां में धूड़ घाल दै। लारै लोग म्हाराज रो जीवणो हराम कर दै, ग्रा बात ई म्हारै गळै नीं उतरै।' पछै वो स्यामा माथै निजर गडाम'र बोल्यो—'हाल गांव री छोरियां इत्ती ग्राजाद कोनीं व्ही, देवीजी!'

सूरज री बात सुण'र रतन रै लीलाड़ माथै सळ पड़गा । वौ कीं बोलै इणसूं पैलीज स्यामा तड़की—'वाह, वाह ! कांई वात है ग्राजादी री ! विना सोच्यां-समझ्यां प्रेम-प्यार करै जित्ती ग्राजाद जरूर व्हेगी, पर-पुरुस रै साथै रास रमै जित्ती ग्राजाद जरूर व्हेगी । पण ग्रेक सही बात सोचै जित्ती ग्राजाद कोनीं व्ही, क्यूं ? ग्ररे, मिरच खायां मूंडौ बळैला, ग्रा बात तौ हरेक समझ सकै ।'

सूरज नै सगळां रा चैरा कीं बदळचोड़ा लखाया ग्रर उणनै लागौ के वौ कीं वेजा बात कैयगौ है । वौ चुप व्हेय'र माथौ नीचौ कर लियौ ग्रर चिमटी में पकड़'र द्रोब तोडण लागौ । सोमनाथ उणरै मन रा भाव समझ'र उणरी साथळ माथै हळकै-सीक थाप धरतौ बोल्यौ—'यूं वातां सूं मूड विगाड़ै जैड़ी बात नीं है, भई ! खरा-खोटा सगळी जगै व्हिया करै । निरमळा ग्रर स्यामा रौ मतलब सगळी सैर री छोरियां नीं व्है ग्रर तारा रौ मतलब सगळी गांव री छोरियां नीं व्है । ग्रर पछै म्हां लोग तौ ग्रेक मित्र रै रूप में थांणै सूं इत्ती बात करी, थांनै दाय ग्रावै तौ मांनजौ । नाराजगी लागै तौ जावण दौ, दूजी बात करां !'

सूरज कीं दव्योड़ी ग्रवाज में सूखोड़ी द्रोब री ग्रेक पीळी डाव तोड़तौ बोल्यौ—'नीं, नीं ! नाराजगी री नीं, ग्रा तौ म्हारै सारू खुसी री बात है के ग्राप सगळा जणा मिळ'र म्हारै दुख-दरद रा सीरी वण रैया हौ । गलती म्हारी ही, म्हनै इण तरै सूं नीं बोलणौ हौ, म्हैं माफी चावूं !'

रतन सिगरेट सिळगावतौ बोल्यौ—'ठंडै दिमाग सूं सोच प्यारा सनलाइट ! लोग तारा रा बापू रै लारै इज क्यूं पड़ैला, थारा वापू रै लारै क्यूं नीं पड़ैला, भई ? ग्रक्सर छोरौ इज छोरी नै भगाया करै ।'

ग्रौ ग्रेक नवौ ग्रर वजनी सवाल सूरज रै सांमी ग्रायौ ग्रर रतन री बात उणनै सांव सांची लागी । पण रतन नै पडूत्तर दियौ सोमनाथ—'लड़का-लड़की रौ सवाल खास बात नीं है रतन ! ग्रैड़ी वगत में समाज रा लोग सदाई पैसावाळां री पगस लिया करै । सूरज रा बापू गांव रा मांनीता सेठ ग्रर मातवर ग्रादमी है । वांरै सामीं बोलणवाळै नै चार बार सोचणौ पड़ैला ।'

सूरज नै लखायौ के सोमनाथ बात नै गैराई सूं पकड़ी है । वौ सोमनाथ री बात सूं जुड़'र बोल्यौ—दूजी बात, तारा रा वापू नवा विचारां रा हिमायती व्हेण रै कारण गांव रा कीं लोगां री ग्रांख में खटकै । ग्रैड़ी ग्रंवळी वगत में तौ वां ग्रांटीला लोगां नै ग्रांट काढण रौ मौकौ मिळैला । ग्रैड़ी वगत में म्हैं म्हारै स्वारथ सारू उण विरामण री ग्रावरू गमाय दूं, उणरौ वूढ़ापौ विगाड़ दूं ! ग्रा कीकर व्है सोम भाई !'

सोम किणी विचारां में हौ, वौ कीं कैवै इणसूं पैली स्यामा कैयौ—'तौ भूल जावौ तारा नै, ग्रर कोई दूजौ घर तलासौ ! नीं तौ ग्रेक-दूजा माथै मर मिटौ ग्रर नांव रोसण कर दौ ! हुं ह् ! ग्रा ई कोई बात व्ही, खाऊंला तौ सरी पण उठाऊं कोनीं ! सूरजप्रकासजी,

नाराज मत व्हेइजो। तारा सूं ब्याव करणी है, तो कोई-न-कोई खतरो तो उठावणो ईज पड़ैला। लियावो उणनै अठै ! करायद्यां दोनां रो ब्याव ! देखां, कुण सांमीं आवै ! है हिम्मत !'

सूरज इण लपकूड़ी छोरी रै लपकै सूं कंटालीज'र कीं नीं बोल्यो। वो मूंडो नीचो कर'र तोड़्योड़ी द्रोब देखण लागो। कीं वळथोड़ी द्रोब रै भेळी लीली द्रोब ई टूटगी ही।

सोमनाथ उणनै चुप देख'र बोल्यो—'तूं इण छोटाळ छोरी री बात में मत उळझ यार ! बस, आपरै दिमाग सूं फैसलो कर के थनै उणसूं ब्याव करणो है या नीं करणो ? करणो है, तो उणनै ई साफ समझाय दै के तूं कांई-कीकर करणो चावै। या नीं करणो व्है, तो पैली तूं अठै थारा पग जमा अर कीं काम-धंधो कर। खावै-कमावै जैड़ो बणनै पछै ब्याव री सोचजै। क्यूं निरमळ ? तूं क्यूं नीं बोलै ? थारै विचार सूं कांई व्हेणो चाइजै।

निरमळा कॉफी री थरमस खोलती बोली—'म्हैं कांई बोलूं ? म्हनै तो इण बात माथै इत्तो गंभीर व्हेणो नीं जचै। साची पूछो जणै तो म्हनै आ कांई इत्ती भारी बात नीं लागै।'

सोम धीरै-सीक मुळक'र पूछ्यो—'क्यूं ?'

निरमळा रतन नै कॉफी भिळावती बोली—'पैली बात तो आ, के औ प्रेम-प्यार रो चक्कर भावनावां री अेक वगताऊ उफाण है। वगत रै साथै जिणरै धीमो पड़्यां पछै आदमी नै खोटै-खरै री चेती व्है, आ बात आपां जगै-जगै पढ़ां अर देखां, तो ई इण माथै ध्यान नीं देय'र फकत तात्कालिक अथवा यूं समझो के हळकै स्तर माथै अेक सारीरिक सुख प्राप्ती नै प्रेम रो नांव देय'र फालतू रा सवाल पैदा करां। नींतर कांई कारण है के सूरज भाई साब तारा सूं अेक खास किस्म रै सुख री आस तो करै, पण उणसूं ब्याव करण रै नांव माथै यांनै मुस्किलां ई मुस्किलां निजर आवै। सोचां तो तारा अेक विधवा छोरी है। उणरो दूजो ब्याव व्हेणै री फिलहाल कठैई कोई गुंजाइस कोनी। उणरा बापू ई सूरज भगवान रै कैया मुजब नवा विचारां रा हिमायती है अर वांनै समझाया जा सकै। असल बात तो थांरै तै करण री है। दोनूं म्हारै ख्याल सूं वालिग है, बस हिम्मत व्हेणी चाइजै। बाकी सब म्हारी जांण में फिजूल बातां है।' इत्तो केय'र वा दूजा टाबरां भेळा रमता अजीत नै अवाज दी।

निरमळा रै मूंडै सूं दो-टूक खरी-खरी सुण'र सूरज उणरो मूंडो देखतो रैयगो। सूरज सोचण लागो के आ छोरी बात तो घणी ऊंची कर रैयी है, पण खुद कांई है ? आ कोई सूं प्रेम नीं करै ? उणी वगत रतन नारो लगायो— निम्मो, जिन्दाबाद !'

स्यामा साथ दियो—'सूरज पुराण !'

'बंद करो, बंद करो !' रतन कूक्यो।

इत्तैक में अजीत दौड़तो थको आय'र बोल्यो— नईं जीजी, थरमस बंद मत करजो, म्हैं बाकी हूं। रतन भाई साब पी ली तो हाका करण लागगा—बंद करो, बंद करो !'

अजीत री बात सू सगळा ई हंसण लागा अर इण तरै सूं सूरज री समस्या माथै बहस खतम व्ही।

रतन ऊठतौ थकौ बोल्यौ—'म्हैं तौ जाऊं ऊपर नागादड़ी सिनांन करणनै, तूं चालै सूरज ? अर सूरज नै गलागूंच में देख'र बोल्यौ—'जावण दै, आपां तौ अेकला ई ठीक हां !' इत्तौ कैयर वौ वहीर व्हेगौ।

स्यामा उणनै जावतोड़ा नै देखती थकी धीरै-सीक बोली—'जीनियस !'

सोम झट सूरज नै आंख री इसारौ करतौ बोल्यौ—'इण स्यामा नै जीनियस घणा मिलै।'

स्यामा कीं गुस्सौ दरसावती बोली—'तौ अठै म्हनै 'चलता मंडल' करण री इरादौ है। अरे म्हनै जीनियस मिलै तौ थांनै कठै दुख व्हियौ। म्हनै तौ यूं इज मिलता रैवैला। ज्यूं अै सूरज भगवान मिलगा। आवौ सूरज बाबू, थांनै मंडोर देखाऊं।' इत्तौ कैय वा सूरज री हाथ पकड़ ऊभी व्हेगी। सूरज उण कांनी बड़ी दीन-द्रस्टी सूं देख्यौ—'म्हैंऽऽ.........!' अर पछै सोमनाथ कांनी देखण लागौ।

सोमनाथ अेक मोठी चुटकी लेवतौ बोल्यौ—'हां, हां, थै ! जरूर जावौ ! इणरै साथै बाग-बगीचा देख'र जीनियस व्है जावोला।'

स्यामा ई सोमनाथ नै मूंडौ मचकोळ'र सूरज सूं बोली—'चालौ, चालौ ! क्यूं अबै अठै बैठ'र थांरा सांचा प्रेम री हंसी उडवावौ हौ। अठै दूजां रौ प्रेम अेक फालतू चीज है अर खुद रौ.........हुंह ! चालौ !'

स्यामा री इण बात माथै सूरज निरमळा कांनी देख्यौ। निरमळा लीलाड़ माथै सळ घाल्यां स्यामा नै देखती ही अर स्यामा अटकती सूरज नै। सूरज स्यामा रै मूंडै सूं खुद रै मनचींती सुण'र वहीर व्हेगौ। वौ सोचण लागौ के इण सूं जरूर निरमळा रै बारै में कीं पतौ लागैला के आ निरमळा असल में कांई है ?

मेह-पाणी व्हियां मडौर में रोजीना रौ मेळौ। गोठ-गूगरी री खास जगै। अबै दोफारी ढळण लागी ही। बाडियां बगेचियां में ठैरियोड़ा लोग टाळियां में चकारा लगाय रैया है। दोयेक जगांवां माथै खोळा टांक'र भांग री रगड़ाई चल रैयी ही। पान-सिगरेट री दुकानां, होटलां अर हलवायां री दुकान माथै ई खासी रेळ-पेळ ही। लोगां री आवणौ धीरै-धीरै बधतौ जाय रैयौ हौ। स्यामा रै साथै घूमतौ सूरज क्रीम-पाउडर री गंध, अेक सुहावती गरमाई री नैड़ास, बगीचै री सुन्दरता अर हरियाळी देख'र मगनीजगौ हौ। घूमण-फिरण रै साथौ-साथ स्यामा कैई बातां सूरज नै बताई। उणरै बतायां मुजब सोम अर निरमळा ई अेक दूजै सूं ब्याव री तेवड़ियोड़ा है। रतन ई इण बात सूं वाकिफ है। उणरी निजर में निरमळा वास्तै सोम अेक अच्छौ लड़को है, जोड़ी चोखी रैवैला, अर निरमळा किस्मत वाळी है के उणनै सोम जैड़ा समझदार, गुणी अर सच्चै दिल सूं चावणाळौ आदमी मिळियौ है। सूरज कीं संकोीजतां थकां स्यामा नै पूछ्यौ—'थै ब्याव कद रैया हौ ?'

सूरज रै इण सवाल सूं पैली तो उणरै चैरै माथै हळकी सी लाज पसरी, पछै प्याराग अर पछै उदासी। पण फुरती सूं वा सगळा भावां नै संवेट'र कीं सावचेत व्हेय अेक मुळक फेंकती बोली—'आपांणी तो किस्मत इज खराब है !'

'क्यू ?'

स्यामा खुलासी कियो—'कई बताऊं, कोई ढंग-ढाळै री छोरो इज नीं मिळै। कीं छोरा म्हारी आजादी सूं भड़कगा अर कीं छोरां री आजादी देख'र म्हैं रिजेक्ट कर दिया। जे कोई थांरै जैड़ो मिळियो, तो वो पैली सूं इज किणी तारा रै चक्कर में चढ़योड़ो हो।' इण बात माथै दोनूं अेक-दूजै सांमी देख हंसण लागा।

सूरज बोल्यो—'नाराज नीं व्हो तो अेक बात कैवूं।'

स्यामा चाल धीमी कर सूरज नै देखती बोली—'देखो सूरज बाबू ! गुस्सै अर नाराजगी में थोड़ो फरक व्हिया करै। अर जठै तांई दोस्ती रो सवाल है, उणमें गुस्सो चाल सकै, नाराजगी नीं चलै। अर जे नाराजगी व्है ई जावै, तो उणनै तूटण में घणो वगत नीं लागै। खैर छोडो, म्हनै कीं बकबक री आदत बत्तीज है। हां, थे कई कैवणो चावता ?'

'म्हैं कैवतो के थै कीं आजाद बत्ता इज दीसो।'

वा बोली—'हां, बिना लगाम री घोड़ी कै सको। बाप नै कळकत्तो रै बोपार सूं फुरसत नी मिळै अर मां रो वगत न्यात-जात अर पीयर में आवतां-जावतां इज पूरो व्है। बडो भाई अमरीका में है। अेक विधवा भूवासा घर में विराजै जिकां नै गारू कोनीं। दूजी बात, थै फिलमां, अै रोमेंटिक नोवेल, अर पत्र-पत्रिकावां अर आ भटक्योड़ी कॉलेज लाइफ बाकी री कसर पूरी कर दी। अबै जिणनै थै आजादी कैवो, वा आदत बणगी है। तेईस बरसां री हूं, ब्याव री इंछा तो व्हेला इज। मां-बाप नै मूंडै सूं कैवूं कांई के ब्याव करो ! अर म्हैं......केई बातां है सूरज बाबू, इण आजादी लारै।' इत्तो कैय वा नागादड़ी रा पावड़िया चढण लागी।

स्यामा रै बारै में खुद उणरै मूंडै सूं जिकी बातां सूरज सुणी, वांनै सुण'र उणनै लखायो के इण छोरी रै बारै में वो गलत अंदाजो लगायो हो। इण नयी मित्र-मंडळी रा लोगां नै वो पूरी तरै सूं नीं समझ सक्यो है। कीं नीं कैयो जा सकै के कुण कांई है। पण आ बात पक्की है के अै वै लोग है, जिका जमानै री लीक नै तोड़ण रो हौंसलो राखै। इणी सोच-विचार में वै दोनूं नागादड़ी माथै आयगा। उठै वानै सिनान करतो सूरज मिळगो। उठै ई स्यामा नै घूमती-फिरती कॉलेज री की सहेल्यां निजर आयगी। स्यामा तो वांरै साथै रमगी अर सूरज नागादड़ी में तिरता अर गंठा वीढ़ता लोगां नै देख'र खुदनै नी रोक सक्यो। कपड़ा खोल, रतन नै अवाज देय'र गठो वीढ़ दियो।

रतन रै साथै नागादड़ी सूं पाछा आवती वगत सूरज नै फेर केई बातां रो पतो लागो। रतन उणनै निरमळा तर सोम री बाबत बतावतां कैयो के आं दोनां रै ब्याव में

वाबूजी (सेठजी) रै विरोध री इत्ती चिंता कोनीं पण बाईजी (सेठाणी जी) भारी विरोध करैला।

स्यामां रै बारै में रतन बतायौ के वा एम. ए. कर रैयी है। लखपती बाप री बेटी है। मूंडै जरूर आकरी है, पण मन री साफ है। प्रेम-प्यार रा मांमला में तेज है। चार-पांचेक प्रेमी बदल चुकी है। वां प्रेमियां री लिस्ट में अेक वौ खुद ई है। उण री आ बात सुण'र रतन बोल्यौ—'पण निरमळा तौ कैवती के वा आधी-नैड़ी थारी बैन लागै।'

रतन गरदन झटकतौ बोल्यौ—'कंई ठा किण रिस्तै में कंई-कंई लागै। अर राजा बाबू, म्हैं फालतू री बातां में नीं पड़ूं। वा या म्हैं टाबर तौ हां कोनीं। नवा लोग हां नवा रिस्ता बणा सकां।'

घूड़ नवा रिस्ता बणावौ ! अरे गंदी बात, सेवट गंदी बात इज व्है। धरम-करम ई तौ कोई चीज व्हिया करै !' सूरज कीं नाराजगी दरसावतां कैयौ।

रतन उणरै मोरां हळकी-सीक थाप धरतौ बोल्यौ—'तूं भी तौ तारा नै गंगा घाल दी बेटा ! उण बगत धरम-करम याद नीं आयौ। अेक बात बता, तूं भगवान री तस्बीरां वाळा कैलेण्डर तौ देख्या इज व्हेला।'

'हां, घणाई !'

'केई पत्र–पत्रिकावां में ई भगवान री तस्वीरां छपती रैवै।'

'हां छपै !'

'नवौ वरस आयां, पुराणा कैलेण्डरां री कंई व्है ? पगां में रुळका खावै। बारै मईनां तांईं घर री भगवान-भगत जिण तस्वीर नै माथौ झुकावै, दीया-बत्ती री बगत जिणरौ मुंडौ देखै। साल भर पछै उणी जगै नवी तस्वीर लाग जावै अर पुराणा भगवान सड़क माथै। पत्र-पत्रिकावां री हालत कोई सूं छांनी कोनीं के रद्दी रै भाव विक'र वै किण काम आवै।'

रतन री बात सूं अेकर तौ सूरज नै बोल नीं उकल्या। पछै वौ धीरै-सीक गुण-मुणायौ – 'आप-आपरा विचार है। म्हैं करूं जिकौ चोखौ अर दूजा करै जिकौ खोटौ आ कोई बात नीं व्ही।'

रतन फकत इत्तौ ई बोल्यो—'हां, कोई बात नीं व्ही !' अर सांमी देखण लागौ, जठै सोम, निरमळा अर अजीत बैठा तास रमता हा। आं दोनां नै आवता देख'र वै लोग रमत वद करी। नैड़ै गयां सोम स्यामा रै बारै में पूछ्यौ अर रतन उणनै कॉलेज री सहेल्यां साथै जावण री बात बताई पछै तास री चोकड़ी जमी अेक कांनी सोम अर निरमळा, दूजी जोड़ी सूरज अर रतन। पत्ता बंट्या, खेल सरू व्हियौ। सूरज जाणगौ के खेल सोम अर रतन रा पत्तां माथै चल रैयौ है। उणरा अर निरमळा रा तौ जाणै हाथ इज खाली है। इत्तै में स्यामा आयगी। उणनै देख'र रतन हाथ मांयला पत्ता न्हांकतौ बोल्यौ—लै, छोड़ यार ! स्यामा ई आयगी। अबै कंई प्रोग्राम है ?'

सोम रै कनै बैठो अजीत कीं सोम रै लारै सिरकतो बोल्यो—'पैनल्टी, पैनल्टी ! गाडै साव जद भी हारण लागै, जद पत्ता फैंक देवै ।'

रतन कूक्यो—'अै अज्जू, खोपड़ी खाज करै कांई ?'

अजीत सोम रै मूंडागै आंगळी ऊभी करतो बोल्यो—'सोम दादा ! अेक नित्तर पैनल्टी लीजो !'

सोम हांकारो भरयो—'बिल्कुल पक्की बात ।' पछै रतन रा चैरा माथै निजर गडाय'र कैयो—'ओ इज तो रोवणो है के औ जद-कदैई हारण लागै, पत्ता फैंक देवै ।'

सोम री बात रतन रै कठैई गैरी चुभी ही । वो अेक पल सोम नै आकरी निजर सूं देख'र ऊठग्यो । रतन नै बहीर व्हेतो देख'र सगळा ई ऊठग्या । इण वगत तांई बगीचै में रंग-बिरंगी रोसणी व्हेगी अर फंवारा चल रैया हा । अै लोग बगीचा री ठेली नवकर सगाद उठा सूं वहीर व्हिया । सूरज नै लखायो के आ रोसणी उणरै मांय जगमगाय रैयी है । अै फंवारा उणरै अंतस में छूट रैया है ।

घरै आय'र बिछावणां में पूग्यां पछै ई वो आज री बातां में डूब्योड़ो हो । आज वो घणो हरखीज्योड़ो हो । अबै कित्ता समझदार अर भरोसेमंद लोग उणरै साथै है । भाग री बात है के सैर में उणनै अैड़ा दोस्त मिळग्या । गांव सूं आवतां सैर रो उणनै कित्तो डर हो । कंई ठा कैड़ा लोगां बिच्चै रैवणो पड़ैला ? जीव लागैला के नीं लागैला ? बीना संगी-साथी रै कीकर वो आपरो वगत गुजारैला ? अैड़ो नीं व्है के दोय-च्यार दिनां पछै भाग'र पाछो गांव आवणो पड़ै । अर अबै, अबै तो लागै के अै लोग नीं मिळता तो वो कीं नीं कर सकतो । अबै तो सोम री बात मान'र अठै पग जमावणा है । पण पग जमावणा ई सोरो काम कोनी । अैड़ो कंई काम-धंधो पकड़ूं के पग वेगा जम जावै ? इण बात माथै ई रतन अर सोम सूं राय लेवणी पड़ैला ।

[आगै आगलै अंक में]

* * *

भोळावण

'जागती जोत' री रचनावां माथै आपरा खुलासा कागद म्हांरी लांठी मदद व्हैला । रचनावां नै पूरी-पूरी बांचो अर वै आपनै कैड़ी कांई लागै, अवस संपादक रै पतै कागद लिखावो ।

सम्पादक रो पतो :
तेजसिंघ जोधा
संपादक–जागती जोत (मासिक)
मोहता कॉलेज
सादूळपुर–३३१०२३

परख

राजस्थानी निवंध संग्रह
ले० सौंभाग सिंघ सेखावत
प्रकासक : हिन्दी साहित मिंदर, जोधपुर, • मोल : ३० रिपिया

लारला तीस चाळीस बरसां में राजस्थांनी भासा-साहित अर लेखण रै छेत्र में ग्रौर कोई पुख्ता कांम व्हियौ व्है या नीं व्हियौ व्है, पण कों मैनती अर ईमांनदार लोग आपरी पूरी लगन अर निस्ठा सूं राजस्थांनी रै पुराणै साहित नै उजास में लावण री पूरी कोसिस करता रह्या। राजस्थांनी सोध संस्थान चौपासणी रा मौन साधक सौभाग सिंघ जी सेखावत रौ नांव इण छेत्र में सगळां सूं सिरै है। राजस्थांनी रै पुराणै साहित माथै सोध करणियौ ग्रैड़ौ कोई विरळौ ई विदवांन व्है जिण रौ सौभाग जी सूं संपरक नीं व्हियौ व्है। सौभाग जी जिण लगन अर निस्ठा सूं पुरांणै राजस्थांनी साहित नै उजास में लावण रौ बीड़ौ उठायौ है, 'राजस्थानी निवंध संग्रह' रौ प्रकासण उणी प्रयास री ग्रेक लूंठी कड़ी है।

यूं सौभाग जी रा लेख लारला बीस-तीस बरसां में राजस्थांन सूं निकळण आळी सोध पत्रिकावां में अमूमन छपता रह्या। अठै एक बात रौ खुलासौ कर लेवणौ जरूरी है के सौभाग जी इण संग्रह में छप्योड़ा चंवाळीस लेखां नै निवध रौ दरजौ दियौ है, जद के चार-पांच निवंधां (जिका ई निवंध कम अर आलोचनात्मक लेखां री गिणती में ज्यादा आवै) रै अलावा बाकी सगळा लेख मूळ रचनावां री सोधपरक परिचयात्मक टिप्पणियां रै रूप में छप्या है, जिकां नै प्रस्तुतीकरण टिप्पणियां भी कैय सकां। आं टिप्पणियां नै निवंध रै दरजै में नीं राखण सूं आं री महत किणी अरथ में कम नीं व्है, हां निवंध रै रूप में गिणावण री आग्रह करियां साहित री समझ राखणियै नै ग्रैतराज व्है सकै, म्हनै लागै लेखक अर प्रकासक दोनां ई पोथी रौ नांव राखती बगत इत्ती सावचेती नीं वरती।

पूरी निस्ठा अर ईमांनदारी रै बावजूद सौभाग जी रै लेखण अर वां री साहितिक दीठ री ग्रेक सीमा है, वां रै साहितिक-कर्म रौ दायरौ बौत छोटौ है, इत्तौ छोटौ व्हैतां सातर ई जे वां इण कांम नै ज्यादा सुसंगत अर वैग्यानिक दीठ सूं कियौ व्हैतौ तौ सायत इत्तौ ग्रैतराज नीं व्हैतौ। वां अमूमन ग्रैड़ी ई रचनावां नै उजास में लावण री कोसिस करी है, जिकी ग्रैतिहासिक महत अर साहितिक स्तर दोनूं ई ठौड़ां कूंतीजण में नीं आवै, फगत किणी रचनाकार या रचना रौ पुरांणौ व्हैणौ ई कोई खासियत नीं व्है। दीन-दरवेस, संत-फकीर अर किणीं चारण के राव जात में जलम लियां ई कोई आछौ कवी नीं बण्या करै। आ बात आज नीं उण जमांनै में ई लागू ही। गिणावण नै दो-चार नांव काढ लेवां तौ ई उण सूं कोई बात नीं बणै अर देसी रजवाड़ां रा राजावां अर ठाकरां में ग्रैड़ा लोग फगत गिणती रा दो-च्यार ई व्हैता, जिका कळा-साहित रौ सही अरथां में सम्मान करता, दूजी तरफ राजावां अर ठाकरां रै प्रति आम रव्वयौ औ ई हौ के जिण भांत रणवास अर रंगसाळावां वां रै नीजू मनोरंजन अर मौज मस्ती रा साधन ही, उणीं भांत कारीगर, कळावंत ई वां रा

कूड़ा-सांचा विड़द-बखांण करणै अर वां नै रीझावण में आपरी जीवारी समझता अंगरेजी हुकूमत री गुलामी रा बरसां में रजवाड़ां अर आश्रयदातावां री छत्तरछीयां में जिण साहित री सिरजण व्हियौ उणरो साहितिक स्तर अर चरित्र इण मंगती मनोभावना सूं ऊपर नीं ऊठ सक्यौ। जद के सौभाग जी आप रै इण ग्रंथ में अैड़ा अलेखूं रचनाकारां री रचनावां री जिकर कियौ, अर इण बात री जरूरत दरसाई के इण साहित रो उद्धार व्हैणो चाईजै— म्हैं आं रचनावां नै सांमी लावण रै विरोध में नीं हूं पण आं रै माथै किणी तरै री रियायत बरतणी गैरजरूरी समझूं—आपां नै निर्मम व्हैय'र गुलामी सूं उपजियोड़े इण साहित री हड़ताळ करणी चाहिजै। माथै ई उण साहित नै उजास में लावण री पूरी कोसिस व्हैणी लाजमी है, जिण री सारथकता अर जीवारी ओजूं बरकरार है अर जिको आज रै जीवण नै समझण अर उण नै इतिहास बोध रै समचै कोई सारथक नवो मोड़ देवण में मदद कर सकै। नीं जणा हरेक दौर में सालूं-साल साहित रै नांव माथै इत्तो कीं निपजतो रह्यौ है के जे उण री फगत फेहरिस्त ई बणावण बैठां तो व्है सकै अलेखूं रचनावां रो उलेख व्हैण सूं रैय जावै। अनुसंधानकर्ता री विवेक-बुद्धि री असली परख अठै ई व्हिया करै के वो कुण सी रचना नै उलेखजोगी समझै अर उणरो साहितिक मोल आंकै। साहित रो मूल्यांकन निस्चै ई नीजू राग-द्वेष या जनता री अमूरत आम राय रै आधार माथै नीं व्है सकै, उण रा कीं उसूल व्हिया करै, अठै आ बात ई ध्यान राखण री है के फगत उसूलां रै आधार माथै आछै साहित री उमीद करणी विरथा है।

सौभाग जी आं टिप्पणियां में रचनावां रै साहितिक मोल-महत री जांच करता घणकरा वां ईं सामंती संस्कारां अर काण-कायदां री पैरवी करी, जिका आज अरथहीण व्हैग्या। जूंझार, जौहर अर साकै री गौरवसाली परम्परावां रै लारै जिण मजबूरी अर मानवी करुणा री हाहाकार उपजतो उणनै लेखणी अर कथणी रो विसय बणावतो बगत कवि-लेखकां नै खुद री जीव संकट में निगै आवतो, नतीजन वै ई उण उन्माद नै बिड़दावण में ई सार समझता।

सौभाग जी इण संग्रह में कीं अैड़ा लेख भी सामिल किया है, जिकां री निरथर्कता फगत सीर्षक पढ्यां ई सावित व्है जावै, ज्यूं 'डिंगल के वीरगीतों में भाले का वर्णन', 'डिंगल के कुछ राजपूत कवि', 'राव जाति के कुछ डिंगल गीतकार', 'राजस्थानी रनिवासों के पत्र', 'राजस्थानी साहित्य में प्रेम-पत्र', ठिकाना दांता के कुछ ऐतिहासिक पत्र', 'दीवानों के कुछ पत्र' इत्याद इण रै अलावा राजस्थांनी पहेलियां कहावतां, लोक कथावां, लोक नृत्य, उपाख्यान इत्याद नै लेय'र जिका लेख वां त्यार करया वै इत्ता औसत दरजै रा है के आं री बजाय आ बात ज्यादा ठीक रैवती जे वै आं लेखां नै ग्रंथ में सामिल करण रो मोह छोड़ देवता। ग्रंथ में अेक और लेख है, 'राजस्थान की ख्यातें : सांस्कृतिक जीवन की एक झलक'। सीर्षक सूं आ उमीद बंधी के ख्यात इण लेख में लेखक राजस्थान रै सांस्कृतिक जीवण माथै कीं कायदैसर उजास न्हांखैला, पण लेख में सांस्कृतिक जीवण रो जिको स्थूळ रूप सांमी आयो उण सगळी उमीदां माथै पांणी फेर दियो। इण लेख में वां सांस्कृतिक जीवण री झलक रै रूप में जिकी जाणकारयां लिखी है, वां में जोधपुर रै किलै रो निरमाण, बागां री

सिलाई अर मजूरी, राजावां रै आवास, भोजन अर वस्त्रां री विवरण, न्यारी-न्यारी पोसाकां अर आभूसणां री महमा, राजावां रै दांन-पुन रौ महातम अर दरबारां रै ठाट-बाट रौ वरणन इत्याद प्रमुख है। म्हनै लागै अठै भी स्यात् लेखक सीर्षक लगावण में असावधानी वरतग्या।

कुल मिलाय 'राजस्थानी निबंध संग्रह' नांव सूं छप्योड़ी आ पोथी सौभाग सिंघ सेखावत रा लारला बीस बरसां री मैनत अर लगन री पूरी साख भरै। वां औ प्रस्तुतीकरण टिप्पणियां हिन्दी में लिखी, राजस्थानी में भी लिखता तौ ई कोई खास फरक नीं पड़तौ। राजस्थांनी में गंभीरता सूं अनुसंधान करण वाळा विद्वानां रै वास्तै आ पोथी खासी जाण-कारयां जुटा सकै। साथै ई इण जिम्मैदारी रौ ई बोध करावै के राजस्थांनी रै पुरांणै साहित रै मूल्यांकन रौ कांम कित्तौ अबखौ अर जरूरी है।

• नंद भारद्वाज

* * *

लिखारां सूं

- 'जागती जोत' सारू रचनावां कागद रै अेक पसवाड़ै हासियौ छोड'र आखरां नै ध्यावस सूं मांड'र भेजौ। उंतावळ के लापरवाही सूं मांडियोड़ी रचनावां भेज'र संपादक रौ जीव मतौ बाळौ।
- लिपी रा कायदां रै सरोधै सारू 'जागती जोत' मासिक रा अकां नै सावचेती सूं बांचौ अर खुद री रचनावां नै जागती जोत री लिपी रै ढब ढाळर भेजौ। —संपादक

आपरा कागद

परम प्रिय भाई जोधा,

सादर-सप्रेम नमस्कार। आपका २० अप्रेल, १६७७ का पत्र मुझे यथा-समय मिल गया था और आपको १०१ दिन के बाद इसका उत्तर लिख रहा हूँ, अतः आश्चर्य भी शायद आपको हो। गाहे-बगाहे आपको मेरी याद आती ही रहती है, इससे बढ़कर मेरे लिए सुख की और क्या बात हो सकती है। मुझे भी आपकी याद अक्सर आया करती है। सचमुच ही, आप जाने क्यों मुझे अच्छे लगते हैं और इस प्रकार की बात मैं आपको पहले से ही लिखता रहा हूँ। तब फिर आपके पत्र का उत्तर पूरे १०१ दिन के बाद ? किन्तु घरेलू कार्यों में व्यस्तता भी रही और इस बीच बाहर भी रहना पड़ा। और छोटा सा पत्र लिखने की मेरी आदत नहीं। अतः........

कुछ व्यंग्यात्मक लिखने की विवशता आपके पोस्टकार्ड ने उत्पन्न कर दी है, अतः 'जागती जोत' के सम्पादक बनकर आप मेरा धन्यवाद स्वीकारें तथा इसके अतिरिक्त राजस्थानी के उद्धार के लिए कोई चारा शेष नहीं रह गया है। जी करता है कि उस विकट और महत्व जिम्मेवारी को संभालने के उपलक्ष में आपका शानदार अभिनन्दन करूं। मैं ही करूं और तो कौन है, जो इस महत्ता को समझे ? संगम की कार्यविधि, उद्देश्य तथा अन्य उन बातों में आमूल परिवर्तन चुपचाप हो चुका होगा, तभी तो आपने सम्पादन का बोझ उठाने की 'हां' की होगी ? (उन बातों का अर्थ यहां यह है, जिन बातों का विरोध हमने कभी किया था) अथवा हमें गलतफहमी हुई कि आपके उस समय के विरोध की मांग क्या थी ? 'शायद यही रही हो कि 'जागती जोत' का सम्पादन आपको दे दिया जाये और वह आपकी देख-रेख में ही छपे ? अथवा आपने भी इस सूत्र को धारण कर लिया होगा कि अन्दर घुस के तमाशा देखने का नहीं, तमाशा बनने का नाम ही सुधार है ?

भाई, आप बहुत ही समझदार हैं, मेरी समझ तो बहुत ही छोटी है, जो बात को पकड़ कर बैठ गई। अतः तब कुछ कमजोर पड़ने लगता हूँ तो लगता है कि मैं किसी रूठी हुई माननी की तरह कोई 'मान' कर बैठा हूं और कोई मनाये तो मानें जाऊं। और बाद में तत्काल ही यह सोचने लगता हूँ कि ऐसा सोचना एक राजस्थानी हिमायती के चरित्र को लांछित करने वाला ही है, क्योंकि राजस्थान की उच्च परम्पराओं में ऐसा चरित्र पवित्र नहीं माना गया है। खैर मैं अपने बहुत ऊंचे चरित्र की धाक बता कर आपको प्रभावित नहीं करना चाहता, क्योंकि इससे क्या होगा ? किन्तु मैं आपके चिंतन को झकझोरना अवश्य चाहूंगा कि आखिर स्वाभिमान किसे कहा जाय ? आखिर हम राजस्थानी भाषा को क्यों चाहते हैं ? हमारा इस ओर कोई सतही दृष्टिकोण है अथवा कोई आन्तरिक पीड़ा से अभिभूत हैं हम ?

और भाई, मेरी कविताओं का ऐसा स्तर नहीं है कि उन्हें अकादमी की पत्रिकाओं के लिए भेजूं और वे आप सरीखे स्नेहीजनों के भाव के कारण छप जायं जो अपने स्नेह के वश हों, मुझे इस सब में न घसीटें, दूर ही रहने दें। मुझे अकादमी यदि मेरी कविताएं छापने का गौरव अर्जित किया चाहती है तो फिर अपने को सुधारे।

हां, भई इमरजेन्सी अब आयी-गयी हो गई है और अकादमी संगम की भी यही गति हो सकती है। (होने वाली है तो कैसे कह दूं ?) इमरजेन्सी 'ओळमो' को और जाने क्या कुछ को निगल गयी थी तथा यह अकादमी-सगम भाषा-साहित्य और साहित्यकारों को निगल गयी है। और सुरसा ने भी तो हनुमान को निगला था ?....

अब शायद 'ओळमो' को पुनर्प्रकाशन का आदेश मिल जाए, शीघ्र ही। अभी तक तो मिला नहीं है। आशा हुई है।

पत्रोत्तर दें। लिखे को अच्छे रूप में ले सकें तो लें किन्तु अन्यथा तो मत लें।

❀ किसोर कल्पनाकान्त, रतनगढ़

•

[किशोर भाई रो कागद। वां री अपणास ई अैड़ी के वां नै ओळमा देवण रो पूरो पूरो हक।...संगम रै नेड़ो कर ई नीं निसरूला—अैड़ी आखड़ी तौ म्हैं कदै ई ली कोनी ही, अर सम्पादन सारू छापां री तोटौ म्हनै करणां ई रह्यौ कोनी। जचियां खुद रै बूतै ई सज आया जैड़ा माड़ा-मौळा छापा तेवड़िया ई हूं अर जरुत होयां दूजा लोगां ई अैड़ा औसर म्हनै दिया ई है—आ बात कुण सी किसोर भाई सूं छानी, सो वां नै कांई कैवूं ?...संगम सूं जिकी वातां सारू विरोध हौ, वौ वां बातां सारू ई हौ अर वां वैड़ी बातां सारू तौ हाल ई व्हैला ई, व्हैला

ई कांई, है ई, पण थूं उठी अर म्हैं अठी, अर साव समूदा अठी-उठी जेंड़ी वात नीं पैली ही, नीं आज है अर नीं वा म्हनैं वाजिब ई लागै अर नीं राजस्थांनी रै हक में ई।···साव तोड़'र चालो जेंड़ी गत राजस्थांनी री कोनी। आगै तो राजस्थांनी रै ओळूं-दोळूं साव थोड़ा साधन, अर फेर वां समचै भला अर काविल लोगां रो अंड़ो समूदो रूसणो, ओ तो निकामां रै कळियारै री गुलो खुलो न्यूंतो। आ ई तो वै चावै के आप रूसो अर अंड़ा रूसो के वावड़'र देखो ई नीं, अर वै नेगम मौजां मांणै।

···जागती जोत नै संभाळतां जीव में फगत इतो ई हो के अवार छापां रै तोटै इण रो मासिक होवणो नांमी, अव जे इणनैं सावळ रव-ढव दिरीजै, चोखा-चोखा नवा-जूना लिखारा सागै जुड़ै अर ओ छापो ढवोढव गिड़कै चोढ़ीजै तो राजस्थांनी सारू आछी वात व्है, न्यारू'मेर री सून-मून अेकर सी तो टूटै। सो इण सारू, संगम रै मतोमतै दियां इणनैं साम्भो अर म्हारै कानी सूं पूरो पचूं ई हूं, तीन म्हीनां तो गया, तीन म्हीनां ओजूं। भूंट सगळी म्हारी, जस जेंड़ो कीं कांम व्है जावै तो उण में आप सगळां रो सीर। अंक दीठ खेंनळ रा डेढ़ सो रिपिया देवै, कीकर लागै, घणा तो नीं ई व्हैला। किसोर भाई 'ओळमो' छापै सारू पाछा त्यार, जांण'र जीव वध्यो, वां सूं तो राजस्थांनी नै घणी-घणी उमीदां—सम्पादक]

* * *

(पेज २ री बाकी)

पारस अरोड़ा : टावरपणैं वंवोई। कुटेम रै आंटै-उळांटै झिल'र वावड़ियो तो आगै ही लांबो अर सूनो भविस। अंधारो ई अंधारो। अर उण अंधारै में अेकल टोरती प्रेस री खड़-खच–खड़-खच। कम भाठा नीं भांगिया पारस। आ ई खड़-खच वोरूंदै लेगी तो टेम खायां 'खुलती गांठां' री अतो-पतो देगी।

नंद भारद्वाज : नंद राम सरमा सूं नंद लाल सरमा अर नद लाल सरमा सूं नंद भारद्वाज—केई अंधारा-उजाळा पथां सूं निकळिया नंद। पण सेवट निकळिया अर निकळिया—कविता, कथा, आलोचना अर सम्पादन सगळै ई निकळिया। कठैई कम, तो कठैई वेसी।

* * *



आगलै अंक री बानगी—

- इतिहास रै गोरवै सूं—'राजस्थांन री कळा-साहित'—जहूर खां मेहर री लेख।
- सौभाग सिंघ सेखावत री अणछपी पोथी 'अबोला बोल' री पांच अरथाऊ वातां।
- पूरण सरमा, आतमाराम, रमेस मयंक अर भंवर सिंघ राठोड़ इत्याद साव नवा लिखारां री साव नवी रचनावां।
- 'खुद सूं खुद री वातां' अर 'खुलती गांठां' री तीजी खेंप।
- मैथिली कवितावां रा अनुवाद।
- दूजा सगळा स्थंभ।



मुद्रण : माहेस्वरी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर सारू साधना प्रेस जोधपुर में छपी।

जागती जोत

राजस्थानी संगम रौ मासिक

सम्पादक
तेज सिंघ जोधा

जुलाई
१९७७



सुमहेन्द्र

राजस्थांन रा नवा चितरांमकारां में नांमी। 'जागती जोत' रै अप्रेल अर जून अंक रा पूठां मांयै तौ आं रा चितरांम आप देख्या ई व्हौला, इण अंक भळै। दिल्ली, बंबोई, जैपर, लखनेऊ, ठौड़-ठौड़ सुमहेन्द्र रै चितरांमां रा दिखावा आयै वरस होवै। अै रंग अर रेख दोनां रै आंगै ढाळा राजस्थांनी। आं रा चितरांम भारत सूं बारै तकात पूगोड़ा। कांई कांई तौ नांव वां मुलकां रा फ्रांस, जरमनी, आस्ट्रेलिया, कनाड़ा, अमरीका, ठा नीं कुणसा-कुणसा। सुमहेन्द्र दिल्ली अर जैपर आळी ललित कला अकादमियां रा इनांम ई कांई ठा कित्ती वळा लीधा। जैपर जिलै रा वासी। जैपर में ई 'राजस्थांन स्कूल ऑफ आर्ट्स' में 'स्कलपचर' अर 'मॉडलिंग' रा लेकचरर।

जागती जोत

राजस्थांनी संगम रौ मासिक

•

जुलाई १९७७

•

संपादक

तेज सिंघ जोधा

•

बरस : ५
अंक : ५
बरस रौ मोल : १२ रिपिया
इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ
रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक
राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)
बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

नचिकेता : गूगळी-गूगळी प्यालां वरगी आंख्यां । सांवळी-सांवळी रंग । डील माथै रूंआळी रो कांम ई नीं । कवी टाळ दूजा कीं लागै ई कोनी नचिकेता । नाटक न्यारा मांडै । मैथली रा ठाडा-गाढ़ा नांव । दिल्ली विस्वविद्यालै में रिसर्च रै हलीलै ।

कुलानंद मिसर : मैथली रा जांणै जैड़ा कवी ।

यात्री : कम आप ई नीं ।

गोरधन सिंघ सेखावत : धुगधुगो डील । मूंडै माता रा हळका वण । हंसी री हाक अैड़ी कै डूंगरां मोरिया बोलाय दै जैड़ी । असल भाखर रा भोम्या । बातां में सेखाटी रै पैंताळीसै रा पैंताळीसूं रंग अर कवितावां रो स तो क्यूं पूछो, अजब-गजब ढंग, साव निरवाळो अर नार्क-नार्क । आजकालै अेक लांठी कविता-पोथी रै मनसोबै, जिणमें आं री लारला दस वरसां री कवितावां अेकठ व्हैला ।

जहूर खां मेहर : लो सा लो, इतिहास रा सगळा विदवांन तो 'राजस्थांन हिस्ट्री कान्फ्रेंस' में खुदो-खुद रा लेख वांचैला अंगरेजी में अर आपां रा जहूर भाई राजस्थांनी में । अर वांचैला ई कांई, वांच दीयो नीं लारला वरसां पाली में, हद ई गैलाई अर हद ई आडूपणो । कीं तो स्टैण्डर्ड रा विदवांनां रो ध्यांन राख्यो व्हैतो । सुणां आजकालै तो काठा ई आडूपणै माथै आयोड़ा । राजस्थांनी में लिखा-पढ़ी री अैड़ी कांई हटोटी ?

नरसिंघ राजपुरोहित : धुप्पळ में धोळा व्है नीं तपिया म्हाराज तपिया । च्यार-पांचेक तो टाळकी पोथ्यां-पोथ्यां ई लिख दी व्हैला नरसिंघ सा । दूजा अळूझाड़ कुण सा कम ? कणां इण मिटिंग तो कणां उण मिटिंग । स्कूलां में राज-स्थांनी गुलावण री सगळी भागीगरी जांणै आपरै ई मांथै । अच्छा । अच्छा कोनीं म्हाराज आपां जैड़ा बच्चा । सुणियां कांई कैज्या—देसी रे तुकां रा मेला, आपजी री कैड़ी ओळख देवै तेजजी गैला ।

किरण नाहटा : कदै कोटपुतळी, तो कदै चूरू, तो कदै सरदारसैर । पढ़िया अो पढ़िया किरण जी, नोकरी रो कांम भूंडो । आजकालै सरदार-सैर ई हो नीं ? कॉलेज में हिन्दी पढ़ावो दीसो ? जाणां साथ जाणां, बीयां काळू बीकानेर रा वासी । सिवनाद भरतिया माथै पोथी ये ई लिखी ही नीं ? हां, हां अै ई । आधुनिक राज-स्थांनी साहित माथै थीसिस ? आं री अर आं री । जाणगा साथ जाणगा । कांई जाणगा, कविता न्यारी लिखै । नी अो ? नीं अो कांई, इण अंक पैली वळा ।

भागीरथ सिंघ भाग्य : बंबोई हा नीं ? बावड़ आया व्हैला । कीकर ? कीकर कांई, गया तो हा उठै हरावळ रै हेलै, पण पड़गा मील रै गेलै । कठै गीत-गजल अर कठै मील ? पछै वो धणियां रो बंबोई, गयां मिनख जावै म्हाराज लंबोई । हरमन सूं मिळिया व्हैला ? पूछो नी । गीत तो नांमी मांडै ? इण में कांई गोळ ?

रमेस मयंक : नवा दीसै ? नवा भळै केड़ाक व्है, साव नवा । वासी चित्तौड़ रो ? हां, हां उणी मोड़ रो । हिन्दी में ई लिखै ? कोई नीं लिखिया करै ? केड़ाक लागै ? हाल तो देखो आगै-आगै ।

अरजुन देव चारण : हां साथ चारण, पक्का चारण । पण नवै वगत रा, नवी सगत रा, नवै रगत रा । आपणै रेंवतजी रा बेटा, अरे सा 'चेत

[बाकी पेज ७२ माथै]

वि ग त

● पूठै रौ चितरांम : सुमहेन्द्र

तीन मैथली कवितावां

वा अर उण रौ डील

उदय नारायण सिंघ 'नचिकेता'

आजकालै कविता री तपास सारू बैठां
तौ सबदां रा अरथ बदळ जावै
आ-कार इ-कार पड़ जावै वां रै माथै पर सूं
सबदां री पटभोम घिसकै भीतां ज्यूं

म्हैं जे कैवूं 'प्रेम', तौ उणनै सुणीजै नीं
वा सुणै दूजौ ई कीं
'प' बदळै 'द' में, 'म' व्है जावै 'ह'
अर 'र' गम जावै गेलै में ई अचक
जे, फेरूं ई म्हैं कैवूं डील
वा अकास बिछाय दै
अर म्हैं उंतावळै हाथां
उण रै डील माथै सूं बादळा धोवण लागूं

म्हैं उणनै अठाईस उपमावां दी
उण नै अेक ई दाय लागी नीं
सैंधी किणीं भासा में बतळावणी
उणनै जचै नीं
अर मझ रात में घड़ीजै जंडी भासा
म्हारै कनै व्है नीं

दुनियां नै दिखावण सारू उण रै कनै उण री धणी
उणनै वा रोजीनां काच में देखैं
वो बात करणी चावै तो झालर-टंकोरा झणझणावै वा
वो गिणियां ई दिनां में बोळी व्है जावै

रात ढळियां पैली
म्हैं उण रा बाळ ओछ दूं अर
ऊगतै सुरजी खोल दूं उणरी जूड़ी
सुरजी सांमी देखै उणरी धणी
अर गिणियां ई दिनां में आंधी व्है जावै
उणरै सागै बरसां सहवास
अर अणसैंधी भासा में बतळावण करतां
म्हारी उणियारी बदळ जावै
म्हैं कदै-कदै मर जावूं कांठी
खुद री ल्हास नै उचाइज'र ले जावतां देखूं
जमीं माथै नीं व्है म्हारा पग
म्हैं डर'र पाछी जीवण लागूं

आई वार जीयां पछै कैवण री मन व्है 'प्रेम'
आई वार वा ऊंधी सुण लेवै
धकै कर देवै डोल

* * *

वीयां कैवण नै...

कुलानंद मिसर

वीयां कैवण नै घणो कीं हो म्हारै कनै
जीयां
जंगळी फूलां सूं टपटपती ओस
थारी कांमण-देही
म्हारो किचरीज्योड़ो पोरस
नाडी रै आसै-पासै होळै-होळै पसरतो सांघळ-राग
ढळती रात रै सोच में
वड़ हेटै
डेरा न्हांख्योड़ी बळदा-गाड्यां री पंगत
ईंटां रा चूलां सूं ऊठतो धुंओं
वीयां कैवण नै घणो कीं हो म्हारै कनै
जीयां
म्हारै सूं छिटक्योड़ो म्हारो चेतो
तूटोड़ा सपनां रै ढाळै
आपां री खंडवायो अेकांत
तावड़ै हांफतो गंडक
आम रै दरखत डंडो वावतो टिकू
बूथ कानी लपकती जनतंत्री भीड़
खेत रा किरायादारां री जुद्ध विरोधी जत्थो
अेटमी लिपी में मांडियोड़ो सांयत री राजीनांवो
वीयां कैवण नै घणो कीं हो म्हारै कनै
अमिता री जरुत माथै साव अकारथ म्हारो कविता
हेताळुवां रा डरप्योड़ा समचा
फूलां री टीयरगैसी गंध
स्यारै ई किरणां री डुसकी रो खिचीजतो सुर

मांछळी, अर लहरांळी प्रेम
सांस अर छाती री सागै बंधियो नेम
छूटतै सहर री चौपड़ माथै थारै सूं म्हारी हळफळ भेंट
वीयां कैवण नै घणी कीं हो म्हारै कनै
तन रौ ताप
मन रौ पाप
कित्ता बरसां रै सहवास सूं आगै अणसैंधगी री खाडी
कळी माथै आंसू री दाई झड़ती फळ री कथा-व्यथा
तळाव रै पांणी में डूबतौ घाट
वौ गीत
वा गजल
आदू वासना रै धूजतै सुर में गायोड़ा
वीयां कैवण नै घणो कीं हो म्हारै कनै
बिरखा सूं टीपोटीप भरियोड़ौ टब
छात सूं पड़ती चांदी री धार
सूंडी रै हेटै गडतौ कांटौ
किणीं रौ नांव लेतोड़ौ म्हैं अर डूबतोड़ौ ज़ा'ज
आखै दिन री कमाई—थाकैलौ
आखी रात री मनसा—उसांस
गांव सूं ताजमैल री छैती
कबर में जावण सूं पैली खांडौ उठावण री बेबसी
कांई करूं अर कांई नीं री गतागम में पजियोड़ौ निस्चै
छाती माथै आवतौ हाथी
भाग-भाग जावती संका री लाठी
गळफांस व्हैती आलिंगण
ढुडियोड़ौ घर
तुटोड़ौ चूंतरौ
वीयां कैवण नै घणो कीं हो म्हारै कनै

* * *

सोनल मिरगा

यात्री

वारै श्रा सोनल मिरगा
माडै लुकियो थूं सोनल मिरगा
कोई कीं नीं कैवैला सोनल मिरगा
वारै श्रा सोनल मिरगा

रिहसल में देख्यो थनै
सुण्यो कथावाचक रै मूंडै थारो नांव
पण अजै ई नीं प्रगट्यो थूं
हाल ई थारै डील मायै फेरता व्हैला हाथ
रात रा अंधारा में केई असली रावण
लीलाळी रघुनंदन रांम
कांई कर लेई थारो
नीठ घटती रा पूरै

माडै लुकियो थूं सोनल मिरगा
वारै श्रा सोनल मिरगा

* * *

उल्थो : तेज सिंघ जोधा

[सितम्बर १६७६ में दिल्ली आळी साहित अकादमी रै बुलावै उतरादै भारत री सात भासावां रा कवी-अनुवादक भोपाळ भेळा व्हिया। सात दिनां रो मेळो मंडियो, कविता रा अनुवादां रै ओळू-दोळू राजस्थांनी धको सूं उण मेळै जावण रो जोग बैठो तो दूजी भासावां रा केई कवियां सूं म्हारी सैंध-सैंध व्ही। भाई नचिकेता मैथली रा जाणीता अर उण ई भोपाल रै जोग म्हारै सूं सैंधा व्हिया कवी। मांग कीधी तो मैथली री केई टाळवीं कवितावां भेजी अर सागै ई भेजिया वां रा हिन्दी सबदानुवाद, जिणसूं वां कवितावां नै राजस्थांनी में उल्थावतां म्हनै सहूलियत रैयी। ऊपरली तीनूं कवितावां वां री मेलियोड़ी कवितावां में सूं ई—जोधा]

लांबी कविता—तीजी खेंप

खुद सूं खुद री बातां

गोरधन सिंघ सेखावत

कई बार लागै म्हैं कद तांई
घर कूंडचा बणाय'र खुद नै राजी राखूं
पितळावैली राबड़ी पीतळ रै ठांव में
भरचोड़ी । कीयां खूंटै बांधूं अर राखूं
मरचोड़ी बकरी नै ।

हैं !
कुण कोई किण नै कद तांई सागै राख्या
सगळा अळगा गांव बसायां आप-आपरा
अणसैंधा बण जाजम रै माथै
खूंणा दाब्यां करै मसखरी
स्यात समझ रै माथै में
सळ पड़ सकै ।

अबै खास में नाज कठै। इण राज में
लाज कठै। डूंगो आकास बण्यो गूंगो, सूत्योड़ां री
धोती खोलली धरमसाळा में ठहरयोड़ी बरात में
हींजड़ां रा साज सूं
कामकाज वणै, इण री आस नीं।

वगत रै वारणां री रोजणो
सुणवा नीं व्हैलो अेक ई जणो
अर म्हैलां में सूत्योड़ा नखरा नीं जाणा हा
वगत खुद मूंडो ढकलो
निकळलो धक्को लाग्योड़ो सो, ओ भरम
आज तांई नीं खुल्यो कदै सपनां में
म्हैं देख राख्यो हूं आंख फाड़्यां

हेली रा खंड-खंड होयोड़ा खंभा माथै
चिप्योड़ी दाग लाग्योड़ो मूळकावण नै
कंवळां पर लोय सूं मांड्योड़ा
छावड़ी अर सात्या। तूट्योड़ी पैड़्यां रै माथै
पुरसारथ रै पसीना रा टपका
अब कीं चोखो लागै नीं
नीं पूछूं, नीं सुणूं
नीं बोलूं, नीं निरखूं
कठै जावूं, कठै आवूं
कीं नाड़ी वंद रै पगां पड़ूं? इण घर में
वड़ूं के उण घर में?

म्हैं नीठ दिनां
रा पैरवा गिणूं, घसूं
ओळूं री तीखी अणी नै। खाली नीं
व्है हाथ वाळपणै री वगसीस सूं
कांई है म्हारै कनै
तिवारी रै खूणै में पड़ी

आई साल बैसाख रै म्हीनै में फूटबाळी
नीम री मीठी सौरम सूं भरचोड़ी मीमझर
मीमझर ! हूं, इण री सौरम में डूब्योड़ा
रंग-रंगीला, भांत-भंतीला केई पतंग उडे
आकळ-बाकळ मन उथाग समंदर में
गोता खावै
कीं डर लागै, कीं बात बणातां । हूं, बाळपणै
में घेर-धुमेर गूंदी रै ओलै
डूंगर में बोरां री खातर, छोरचां लारै
अर रात पड़चां आंतीलौ-पातीलौ घर सूं वारै

पण अब सगळा विसवास तूटग्या
सोरचोड़ी तसवीरां में दरद रा सिलोक भरया
काती रौ काचौ तावड़ौ
पीपळ रै पतै माथै बैठ'र मनचीती बातां
री गरद नै उडावै दबक्योड़ौ सो बण
सांस अर सांस रा फासला
कत्ता घणा व्हैगा । अचपळै मन री झाड़ी में
केई कलपनावां रा खिरगोस भूत सूं डरचोड़ै
टाबरां ज्यूं दावल्योड़ै मन री सांसां गिणै
अर गिणता थकां
अेक धड़धड़ात व्है । सोचूं हरख अर उमाव रा
दिन बेगा बीतै । वे सगळा दिन आज
आप-आपरी झूंपड़ी बांध्यां
फासला रा कमरपेटां सूं तण्या
सिरांणै ऊभा है
उणां री बतळावण सांच रौ अेक अजीब दरद
है ।

सगळा चिमत्कार
इण जमानां रा बेटा बण'र सांमै आवैला, आ

म्हारो मन कदै नीं सोचो
कदै मुड़'र
पूठो देखल्यूं तो तूटचा-फूटचा वेढंगा
रेत में सोयोड़ा मकानां री सैंघो चैरो
आंख में उगै ।

भूत सूं बातां करै च्यार जणां
ऊपरलै कोठै में छम-छम व्है दोपारां
चिटकां रा धोबा नांखै, गैलै वगता लोगां
माथै, कीकर में रैवै, कदै बोलै
अर कदै रोवै

स्यात आतमा अमर होती होवैला
सतावणो उणरो कळजुगी धरम वणग्यो व्हैला
के उणां रै माथै हाथ फेर'र
पेट गुजारी रा करतब मिनख री समझ में
आयग्या व्हैला ।
म्हैं सोचूं
सगळो दिन सोचतां गुजरै
कांई सोचतो ई रंवणो है ? स्यात आं पगां सूं
कीं धरती नापणी है
चिलको पड़तो रैवैलो
इतियास री सींवां स्यारै सोयोड़ी वातां रो
अंधारो फाका मारै
जुग री सांसां रो

झिझोड़ै वो खूंआं नै, लगावै हलहलावणी सी
अर र.... अर....र अर....र
करतां लुक जावै । कांई ठा नीं की ठोड़
हूं !........हूं ! ....तूं
ध्यावस लियोड़ा डूंगरां री गोदी में
पसरचोड़ी नाडी में

म्हैं ठोडी रै हाथ लगायां निरखूं हिलतै पांणी में
अर......र .....तूं !

वौ पछै बारै आयौ तिरतौ-तिरतौ
ऊभौ व्हैगौ म्हारै स्यारै
पछै घणा जणां निकळ्या उण रै लारै

औ कांई ?
लाल हथेळ्यां आळां अै मिनख
अेकै समचै नाडी रै मांय अर तूं आं रौ
नेता ?
दुस्ट ! दुसमी ! दोगलां री कायर औलाद
इण लाल खून सूं थारी चामड़ी रै पोख
नीं लागै
कांई व्है रोज मिंदर रै सांमै पेसाब करणै सूं
कठै सोखौ
धरम नै लीलांम करवाळी आ तोतली जबांन
कठै सीख्यौ
छळ अर धोखा री स्याणप सूं दूजां रै
अपणेस री धज्जी उडावणौ
हैं रे !
लोगां रा ताता पसीना नै पीवता थकां
थारा कंठ नीं दाझ्या । नीं निकळी थारै
कोढ़ अर नीं मरयौ थारौ कोई
जवांन बेटौ काची मौत सूं ।

इण गांव री लंगड़ी टांग
रगड़ै पग हेटै थारै नांव नै । थारै वंस नै
गाळ्यां सूं धोकै । थारी भगती री सैनाती
उठै दिन में दस-दस बार
पण ठा नीं तनै ।
मोट्यार ! अै उगींदी आंख्यां खोल

अमानो नीं सोवै श्रेक ई पसवाड़े
नीं रोज-रोज लागै लाय
इण रांडचा गांव में

अर तूं इत्तो जुलमी कद सूं बण्यो
सिलगतो रह्यो ओ गांव थारी आंख्यां सामै
अर तूं झूलतो रह्यो
भगतण रै मुजरा माथै। कद चम्पा-चमेली री
कूख फूटै बंदूक री गोळी में
नीं बंधै नेतागिरी री सांप सांच री दुनियां में
तूं तो साव भोळो है
तूं थारा फरज नै ढूंढ़ै फकीर री झोळी में
पण समझ
गरीबी री आखर बांच
भोग री कुलड़ी सूं
न्याव नै खांच

सबदां री खाज मीठी घणी अर पैना घणा
भासा रा दांत। हाल बुद्धि री साचो
पड़ियो नीं।

घणो बुरो
आसथा री मूरत रै ठोकर मारणो
अरे! तूं बोलै नीं
इतियास री पोथ्यां में थारै चरित्तर
नै ढूंढ़्यो, लांबी-चौड़ी भीड़ रै मांय
थारी पिछांण म्हारी आंख्यां में
घमरोळ मचाती री
अर तूं नीं मिल्यो।
अरे! तूं बिनां बतळायां ई जाय

वो गयो-वो गयो
खेजड़ी स्यारै भैंसो रड़कै। म्हैं ऊभो हूं खुद

रै स्यारै चितबंगौ बरण
डावै हाथ री हथेळी सूं डाढ़ी नै रगड़तौ
उठा ल्याया मोरड़ी रा अडा कुपैड़ी टींगर
अर छेड़खांनी करै टांट्यां सूं
पण कांई होसी ?

म्है सांची कैवूं हूं
म्हैं नीं ठहरणौ चावूं अठै, जठै हीणा
मिनख नीं बतळावै करम अर सांच री
काया रै दरद सारू
फगत घसै बगत रा मांडणा नै दिन-रात
लात सूं भूजांणै खुद रै घरकूंड्या नै
सांची खोटौ घणौ राजनीत री लोई मूंडं
लाग्योड़ौ ।

अब म्है कांई करूं
करणै नै कीं म्हारी अगल-बगल
म्हैं बंवळचां हेटै किरगांठां री लड़ाई निरखूं
अेक दूजै रै दोळयूं फिरतां
लावौ लूटण री धक्का मुक्की में
छुलग्या खुवां । हालता रैयग्या हाथ
ऊंचा रा ऊंचा भीड़ में । मुठ्यां रौ
पसीनौ बेकळू सो झरै गाढै अंधेरै री खाल में
गांव, गुवाड़ अर घर लुक ज्यावै
मसाल रै च्यानणै में
भरमीज्योड़ै मन रै सूंसाड़ै नै देखणौ जरूरी
आफरै सूं नीं लड़यौ जाय
जुग-धरम रौ जुद्ध । भायला ! कीं थोड़ौ
धीरज राख, नीं बदळै बंगौ रंग
बात नै कीं घोख जिकौ कही गांधी बुद्ध
फदक्यां सूं नीं नापी जाय
ऊंडै आकास री गैराई

नीं निकळचौ जाय सोरौ गिरगणै मांय सूं

* * *

इतिहास रै गोरवै सूं

राजस्थांन रौ कळा-साहित

जहूर खां मेहर

[राजस्थांन कोरो भिड़मलां अर जूंझारां री करणी रै पाण ई नीं मगहीजै। ठेट प्रागैतिहासिक काल सूं राजस्थांन कळा-साहित रो घर रह्यो। अेक पासै अठै रीत-पांत री रुखाळ सारू साका अर जोहर मंडता तो बीजै पासै कळा-साहित नै पनपावण रा जतन करीजता अर आगोतर री बातां माथै मनन व्हैता। अठा रै कळा-साहित में अनेकूं सरावण जोग बातां है। भारत री सांस्कृतिक छिब नै गरबीली बणावण में राजस्थान रो हाथ घणो महताऊ है—जहूर खां]

अबार रै राजस्थांन नै मिनख 'राजपूताना', 'रायथांन' अर 'रजवाड़ा' जैड़ा नांवां सूं तो ओळखता ई हा, सागै ई इणरो अेक खुणो 'सपादलक्ष' सूं चावो हो, तो बीजो 'जांगळ' सूं जाणीजतो। मत्स्य, मेदपाट, जवालीपुर, माड, गुर्जरात्रा, विराट, मरु, भिल्ल-मल्ल, शिव अर्बुद अर ठा नीं कित्ताक नांवां सूं इण धरती रा उणा-खुणा चावा हा। केई-केई ठोड़ां रा नांव तो उठै रै भूगोल रै मुजब ई राखीजग्या। माही नदी रै कांठै माथै वस्योड़ै प्रतापगढ़ री सिरोक सींव कांठळ नांव सूं ओळखीजै। गिरवा भोगिसैल अर कांई ठा कित्ता ई नांव भूगोल रै पाण ई पड़िया।

राजस्थांन ३,४२,२७४ किलोमीटर में पसरयोड़ो है। ओ यां ई देसान्तरां रै बिचै वस्योड़ो है, जिकां बिचै घोराऊ अरब, घणकरो मिश्र, साइबेरिया अर अफ्रीका रा कीं भाग है। ठेट सूं ई इण में कठै ई घाटा है, तो कठै ई तालर, रोई, भाखर अर मरुखेतर मांडीज्योड़ा है। आब-हवा, भाखर अर मरुखेतर अठा रै रीत-पांत नै अेक निरवाळै सांचै में ढाळ दिया। अठै रा कळा-साहित अर रीत-पांत सुतंतर रूप सूं निखरिया, वां माथै बीजां रो चिन्योक रंग ई को हो नीं। भारत री संस्कृति री इण पांत में अलेखां गरबजोग बातां है।

जूंझार, भिड़मल, मुळकता माथा देवणिया अर रीत-पांत री रुखाळ सारू झाळां री गोदी बैठणिया तो अठै री मावां इत्ता जिण्या के मुलक नै चूसण खातर आयोड़ा अंगरेज ई इचरज सूं बधना व्हैगा। पैला पैला भारत री इतिहास लिखणिया अंगरेज भारत रा गुण गावण नै राजी को हा नीं। वहियां, ख्यातां, वातां अर लेखां सूं राजस्थांनी जूंझारां री करणी री ओळखांण होयां केई च्यारूं खाना चित आयगा। केई होठां नै लोई झांण करचा व्हैला अर बीजां रा डोळा इचरज सूं फाटोड़ा ई रैयगा व्हैला। जदै ई तो वां नै राजस्थांनी सूरमावां रै जस रा अणचाया गीत गावणा पड़्या।

राजस्थांन रै रजवाड़ां अर राजवंसां री छत्तर छीयां में कळा-साहित नै आसरो मिळियो। राजावां, सिरदारां, पिंडतां अर सेठां. मैल-माळिया, मिंदर, देवळ, थड़ा, छतरियां, हवेलियां, वेरा-बावड़ियां, तळाव बीजा बणवाय इण धरती री सांस्कृतिक मालदारी रै वळै माळी-पांना जड़ दिया। वैदगी, ज्योतीस, काव्य-नाटक, गीत-संगीत तो अठै इत्ता पनपिया के आ धरती धन्न सेठ री काकी कहीज सकै, जिण रै सांस्क्रतिक दड़बै री की छेह है, नीं पार। अठा री रीत-पांत दाईं कळा-साहित ई भारत री संस्क्रति री अेक पांत व्हैता थकां ई आपोआप री कित्ती ई न्यारी-निरवाळी अर अचूकरी चोखायां राखै।

इतिहास-पैला रै जुग में जिको प्रागैतिहासिक जुग कहीजै, बनास, गम्भीरी, बेड़च, बांघा अर चम्बळ नदियां रै कांठां अर घाटां माथै भाटै रै जुग री वेळा रै मिनख आप री रम्मत मांडी। उदैपुर, जैपुर, अजमेर अर जोधाणै री कित्ती ई ठौड़ां भाटै रै जुग रै मानखै री टोह लागै। उदैपुर रै पाखती आहड़ नांव री ठौड़ सूं इण सभ्यता रा घणा महताऊ बावड़ हाथै लागा। गिलूंड अर भगवांनपुरा में लाधोड़ै मळवै सूं ठा पड़ै के आ थेट पुराण री सभ्यता राजस्थांन रै धोराऊ-ऊगूणै सूं लेय'र लंकाऊ-ऊगूणै तांईं पसरयोड़ी ही। जूनियै इतिहास रा लिखारा आपरी जांणकारी रै पांण औ सार काढ़ियो के सरस्वती अर द्रस्टती नदियां रै कांठा माथै ई पैलपरांत आळी सभ्यता पनपी ही। सिन्धु सभ्यता रै नगरां मांय सूं सरस्वती रै कांठै माथै गंगानगर जिलै रै काळीबगा में खुदाई सूं उघड़ियोड़ी नगर घणी ई चाहीजती है। १९४७ में मुळक पांतीजग्यो अर सिंधु सभ्यता रै समै रा मोहनजोदड़ो, हड़प्पा. चेन्होधड़ो, झूकरधड़ो, बीजा नगर भारत सूं फांटीजग्या पण काळीवंगा इण खोगाळ नै भर दी।

महाभारत, रामायण अर पुराण आ साख भरै के उण समै मरू, जांगळ अर साल्व जैड़ा वैदिक 'जन' अठै ई बसियोड़ा हा। जनपदां रै जुग रा मत्स्य, सीवी, राजन्य अर साल्व जैड़ा जनपद जैपुर उदैपुर, अलवर अर भरतपुर जिलां री ठौड़ ई हा। ईसा सूं दो सदियां पैला मालव इण खेतर में आपरी रम्मत मांडी अर जैपुर, अजमेर, टौंक तांईं पूगगा। तीजी सदी में जावतां आं कुसांणां नै पछाड़िया। इणा रै दांईं अलवर, भरतपुर में आर्जुनायन अर धोराऊ राजस्थांन में भिड़मल सुतंतरता खातर भिड़िया अर रीत-पांत नै घणा गरवजोग बणाया। गुप्त वंस रै समै अठै चिन्या-चिन्याक गणराज बस्योड़ा हा, जिकां नै लारै जावतां समुद्रगुप्त पाछा पग दिराया।

हर्सवर्द्धन रै पछै सातवीं इसाई सदी सूं अठै प्रतिहार (पिड़िहार अर परिहार),

चाहुमान, सोलंकी(चोलुक्य), पंवार(परमार), गुहिल अर राष्ट्रकूट जैड़ा मोटा राजवंसां आप आपरा अखाड़ा जमाया। आं रै तूतै ई इण गेतर नै बारला हमलां सूं कोरो राखण खातर माथा देवण री रीत पकायंत सूं जगी। पछै राठौड़, सिसोदिया, भाटी, कछवाहा, चौहांण अर हाडा राजपूत अठारी सेव-मेव करी। १८५७ में राजस्थांनी वीरां री करणी सूं अेकर तो अंगरेज ई धुजगा। बीसवीं सदी में प्रजामण्डल रा जूंझार घणा अबलिया। १९४७ में देस रै सुतंतर होयां अठा रा अठारह रजवाड़ां—जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, जैपुर, भरतपुर, धोलपुर, करोली, बूंदी, कोटा, झालावाड़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदैपुर, सिरोही, किसनगढ़ अर टोंक रै सागै अजमेर मिळा २६ जिलां रो नवो राजस्थांन बणियो।

भूगोल अर सुतंतर रजवाड़ां रै पाण राजस्थांन में अनूठी अर घणी सरावणजोग कळावां पनपी। इण रूप में ओ लंकाऊ भारत रै सांमा पग रोप सकै। सगळै राजस्थांन में बिखरियोड़ा पुराणा मिन्दर, किला, गढ़ा, छतरियां, मैल-माळिया, कोट-कांगरा, हवेलियां झरोखा अर झील-तळाव लारली संस्कृति रो मोल बतावण खातर मनां ई मळका रोप कीकर अर कीकर अजै तांई अड़िया है। आडावळ री मागरियां रा भाटा अठा री बिणगत नै अलेखां वरसां तांई मेह, आंधी, वायरै, तावड़ै अर धूड़-धमासै री भाट झेलण जोग साठाई दीवी।

राजस्थांनी स्थापत्य रा पैलपरांत रा नमूना सिंध-नगर कालीबंगा सूं सांमै आया। नगर नै घणो माथो खपा, सोच-विचार'र बस्यो। ईंटां चुणाई में बरतीजी, चोड़ी सड़का, सैर रै चौफेर सैंठो कोट, नेरा, खाळिया अर चोखा घर उण वेळा ई निरमीजता हा। खुदाई सूं अेक सागैड़ नगर रा ढूंढा सांमा आया। प्रागैतिहासिक स्थापत्य सारू आहड़ में निरळयोड़ा ढूंढ़ा अर बीजी चीजां घणी महताऊ है। भगवांनपुरा अर गिलूंड सूं ई आहड़ सभ्यता रा चितरांम चवड़ै आया है।

राजस्थांन में जनपदां री वेळा रा नमूना बैराटनगर, रैढ़, सांभर अर नगरिया सागर सूं चावा होया है। बैराट रो विहार अर बभू नेस इण री साख भरै के मोर्य स्थापत्य रा कीं नामून राजस्थांन में ई चुणीज्या हा। मोर्यां रै पछै बीजी बीजी जातियां अर जनपदां रै स्थापत्य रा कित्ताक नमूना कांई ठा कठै-कठै ठाईज्या व्हैला। वां में सूं की छुटपुट तो अजै तांई ऊभा मिळै। रैड में चुणीज्योड़ा ईंटां रा कूंडा, बीजक भाग री आछी गोळ-गोळ मिंदर, नगरी री गोळ मटोळ थम्बो इण समै रै स्थापत्य रा ई नामून है। इण समै स्थापत्य माथै धरम री धौंस अणूती ही। आं भंगारां सूं ई सार कढीज्यो के वैदिक धरम अर उण रै पौराणिक रूप री अठै घणी चलण ही। गुप्तां रै समै अठै स्थापत्य वळै घणो निगरियो, मुकुन्दड़ा नगरी रा मिंदर इण री साख सारू अजै तांई ऊभा है। गुप्तां री वेळा ओसियां, अमझेरा, जगत, कल्यांणपुर अर मंडोर में स्थापत्य रै कारीगरां आपरा हुनर दिखाया। गुप्तां रै पछै सिरोही, सांगानेर, किराड़ू, नगड़ा, नीलकण्ठ, दिलवाड़ा, हरसंमाता, चन्द्रावती, भीमगढ़, झसरण-विलास रा मिंदर चुणीज्या। आं मिंदरा में नागर अर द्राविड़ सैलियां रो झपको दीसै। आं नै भेळ री वेसर सैली रा नामून कैय सकां।

८ वीं सूं १२ वीं सदी रै बिचै कित्ता ई सैंठा-सैंठा गढ़ थापीज्या, जिका अजै तांई भंगार व्है ज्यूं ऊभा है। पैलपरांत चित्तोड़गढ़ चुणीज्यो जठै पैला मौर्य अर पछै गुहिल, पंवार अर सोलंकी राजावां चुणाई कराई। अर्बुद, जबालीपुर (जाळौर) अर मंडोर रा गढ इण वेळा ई वणिया। दुरगां रै सागै ई इण समै केई नुंवा नगर ई बस्या। इण समै री चावी करण जोग बात आ रही के इण वेळा पुराणै ढूंढां री जागा नुवां नगर थापण री रीत जोर पकड़ियोड़ी ही। आघाट, विसालपुर, नागदा, जावर, नाडौळ अर आमेर तांई पाछा थापीज्योड़ा नगर गिणीजै।

इण वेळा री अेक खास चोखाई आ है के अेक पासै गढ़ां री चुणायां व्हैती। लड़ण-भिड़ण अर मरण-मारण रा जतन व्हैता तौ बीजै कानी मिंदर चुणीजता अर आगोतर माथै मनन करीजता। विस्णु, सूरज, दुरगा अर सक्ति रै भांत-भांत रै रूपां रा अणगिणत गाढ़ रै भावां सूं भरियोड़ा मिंदर वणिया। किराडू, छोटी सादड़ी, बाडोली, कल्यांणपुर, ओसियां अर जहाजपुर रा मिंदरां री चुणाई इण वेळा ई हुई। किराडू में सिव-मिंदर अर चित्तौड़ रौ सूरज-मिंदर फूटरापै रै पांण जग-चावा है तौ अथुना, ओसियां अर नागदा रै मिंदरां में 'आत्मोन्नति' रा भाव भरियोड़ा है। इण वेळा रा मिंदर घणा मोटा जंगी व्हैता थकां स्थापत्य री सगळी चोखायां सूं टिपाटिप भरियोड़ा दीसै। जैनियां रै सगळै मिंदरां में इग्यारवीं सदी में ठायोड़ो आबू में विमलसा री मिंदर आपरै फूटरापै रै पांण घणौ ई सराहीजै। १३ वीं सदी रो वास्तुपाल रो मिंदर अैड़ो रो अेड़ो है। बारणा, घुमटियां बसाळियां, विचला आंगणा अैड़ी कारीगरी अर सावचेती सूं घड़ीज्या के देखणियां सरावताई को थाकै नीं। भाटै में इत्ती चतराई सूं घड़ाई व्ही अर मांडणा खुदीज्या के नास्तिक सूं नास्तिक नै ई थुथको न्हांखणो पड़ै।

१३ वीं सूं १८ वीं सदी रै विचलै राजस्थांन में पैला करतां मारकाट कम मची। वारलै हमलां री जोखम ई नीं जित्तौ ई ही, पण तौ ई मालदेव, कुम्भा, सांगा, प्रताप, जसवंत सिंघ अर दुरगादास जैड़ा भिड़मल इण समै ई व्हिया। केई नुवा गढ थापीज्या, गढ़ां में नगर रा नगर विणीजण ढूका, मैल-माळिया अर स्थापत्य रा अलेखूं नामून विणीज्या। कुम्भळगढ़, तारागढ़, आमेर, सीवांणा, जोधपुर, बीकानेर अर रणथंभौर जैड़ा जबर गढ़ इण वेळा ई जलमिया। जाळौर, आबू, अर चित्तौड़ दुरगां में केई कोट-कांगरा जुड़िया। बूंदी, आमेर अर जोधपुर नगरां री नींव इण वेळा ई धरीजी। कुम्भा रै पछै स्थापत्य माथै मुगलां रा रंग घणा चढ़ियोड़ा रह्या। वेल-बूंटा, फूल-पांखड़ियां, भांत-भांत री झीणी-झीणी जाळियां री मांडत सारू चेजारा अर घड़ाईदार कांई ठा कित्ती ई पाणत अर खपत करी व्हैला। डेलांण, झरोखा, थंबा, तोडा, खड़पा, पंछेटियां, गोखडा, छाजा, छवणा, तोरण, कंवळियां अर समूदै अगवाड़ै नै भांत-भांत रै मांडणा सूं जड़ण री रीत इण वेळा अणूतौ जोर पकड़ियोड़ी ही। थड़ा, देवळा, अर जंगी छतरियां ई विणीजण ढूकगी। दिलवाड़ा, रणकपुर, अेकलिंगजी, आबू, रिसभदेव, केसरियाजी ,नाथद्वारा अर परसरांम महादेव जैड़ा नांमी मिंदरां री चुणाई इण समै ई व्ही। आं मांय सूं घणकरा भाखरां री ऊंची टेकरियां माथै चुणीज्या। जैनियां रा सगळां सूं घणा तीरथ धांम राजस्थांन में ई है। जैन धरम नै पाळणियां रा तौ टोळा रा टोळा गुजरात अर माळवै जैड़ा पाड़ला मुलकां सूं अठै आय पूगा। इतिहास लिखारा

मोनै के बारलै मुलकां में हमलावरां री दाव वधियो जद जैनी आप री रीत-पांत री रूखाळ सारू अठै रा जूंझारां री छीयां में आय'र लुकिया । पण पैला रै इतिहास सूं जुड़ियोड़ै साधनां री मनन करियां इण बात में घणो गाढ़ को लखावै नीं । इण में पैली खोट तो आ दीसै के अठै घणकरा मरण-मारण खातर माथा बांधियोड़ा छत्री-धरम नै पाळणिया राजा हा जिकां रै अहिंसा गळै उतारणो तो अळगो, वा नेड़ी ई को फटक सकती नीं । पछै ठेट सूं ई राजस्थांन में जैनियां री जोर रह्यो । हमलां सूं पैला ई जैनी राजस्थांन में घणा हा अर वां आप रा केई नामी मिंदर अठै चिणाय लिया हा । जैनी अवखायां सूं घणो लाट राखै । जीव रै दोरापै सारू वै अैड़ी ठोड़ जोवै, जठै लीलै-चैर रूंखां रो नांव ई नीं व्है, पांणी री तंगी, लू रा संगाढ़, वतूळिया अर तावड़ो अणूतो, मोटै सैरां री तोटो, मानखै रा टोळा कम, घणी अवखायां, सांप-विच्छू अर जैरी जीवां रो जोर अर डील नै केई दोरायां रैवै अर अणूतो पचणो पड़ै । पौराणिक धरम पाळणिया ज्यूं हिमालै री तराई नै अमोल गिणता ज्यूं ई राजस्थांन री धरती गुद ई जैनां सारू तीरथ ज्यूं ही । सो दोरायां जोवणियां जैनां नै राजस्थांन मोनै रूदै री लागतो अर अेवड़ रा अेवड़ धरम री सेव खातर अठी उछरता । सैरां, गढ़ां, गांवड़ां नै छाड डांगियां रै कांकड़ सूं कोसां आगा मरुखेतर रै ठेट गरभ में ऊंची टेकरियां माथै अर रोहै में अैड़ा मिंदर चुणीजण री बीजी कीं गरज नीं व्है सकै ।

१३ वीं सूं १८ वीं सदी रा स्थापत्य रा नमूना सूं तो अेक सू अेक टपता, पण 'कीरत-स्थंभ' इणां में सगळां सूं भारी है । नव खंडां रै इण कीरत-स्थंभ रै उपरलै दो गाडां नै छोड बाकी रा सातां माथै देवी-देवतावां री इत्ती मूरतां टांकी-ह्योड़ै सूं जड़ीजी के कळा रा किता ई पारखी तो इणनै मूरतां री आखो म्यूजियम ई गिणै । लारै जावतां निरवाळी रूप रा राज-संमद, उदैसागर अर पिछोळा जैड़ा झील-तळाव गिणीज्या । झील-तळावां रै येन विनै हुवणी री जागा मैल-माळिया चुणीजण री रीत इण वेळा ई पड़ी ।

भांत-भांत री मूरतां ठावण में राजस्थांन ठेट सूं ई धकनी पांत में रह्यो । थेट प्रागैतिहासिक जुग री मूरतां अठै मिळी है । माटी री केई मूरतां काळीवंगा सूं मिळी अर अैड़ी ई आहड़ अर गिलूंड सूं हाथै लागी । पछै तो भांत-भांत रै देव-देवियां री माटी, भाटै अर धातां री कित्ती ई मूरतां राजस्थांन रै नुगै-नुगै नूं मिळगी । मै मूरतां के तो घणकरी जैन धरम री अर के पछै हिन्दू-धरम री है । गुप्ता नूं पैला री नोह में लाधोड़ी साढ़ी तीन गज री यक्ख री मूरत देखण जोग है । रैड, वैराट अर नगर में मिळयोड़ी मूरतां ई गिणावण जैड़ी है । 'महिसासुरमर्दिनी' री मूरत तो देखण वाळां री आंख्यां नै भपको ई को लावण दै नीं । गुप्तां सूं पैला री मूरतां गान्धार अर मथुरा दोनूं ई सैलियां री है । गुप्तां रै समै री मुकन्दड़ा, क्रसण-विलास, भीनमाळ, मंडोर अर पाली सूं केई फूटरी-फूटरी मूरतां मिळी है । कामा री विस्णु, क्रसण अर वलरांम, मंडोर री गोवरधनधारी क्रसण री मूरतां तो अैड़ी जवर है के वां रै जोड़ री वीजी तो अजै तांई सांमी आई कोनी । रंगमहल री सिव-पारवती री मूरत, सांभर अर कल्यांणपुर री सैव धरम अर नळियासर री दुरगा री मूरतां ई घणी सराहीजै । गुप्तां पछै मूरतां घड़ण री हूनर वळै हल्ली तेजी अपड़ी । भरतपुर, करौली, मेनाल, दवोक अर धोलपुर सूं लाधोड़ी मूरतां में भाव अर रस रा गुण थरपीज्या । सिणगार, मोह अर जड़ावट मे किराडू

सूं मिळी मूरतां घणी भांव ताईं ओळखीजै । केई-केई मूरतां में तौ डर, रौद्र अर भूंडापणै रै रसां रा चितरांम घड़ीजिया । घणकरी मूरतां में डील री चोखाई अर न्यारै-न्यारै अंगां रै फूटरापै रै सागै ई आध्यातम रै भावां नै ईं भेळा राखिया है । आबू में दिलवाड़ै रै मिंदर री मूरतां देखणियै नै लखावै जांणै घड़ाईदार रै हाथ में टांकी हथोड़ा कोरा फूटरापै नै चावौ करण सारू ई उछळ-कूद मचाई व्हैला । रणकपुर, जोधपुर, लौद्रवा अर जैसळमेर री मूरतां में भरपूर कळाकारी भाड़ियोड़ी है । राजस्थांन री अै मूरतां जगमग करता वै रतन है, जिकां रै वूतै माथै भारत री संस्क्रति अैड़ा पळका मारै जिण सूं चकरबम्म होय अंधाळी खायोड़ा बारला आं रतनां नै उचकावण सारू काला व्हियोड़ा भटकता भचीड़ खावता फिरै ।

राजस्थांन री चितरांम-कला रा गुण बखाणतां आणंदकुमार स्वामी, परसी ब्राउन, अेन. सी. मेहता बीजा इण नै चावी करण रा जतन करिया । पैला पैला तौ मिनख इण नै सुगायबौ करिया पण अबै तौ सगळां इण री धाक अंगेज ली । अजकालै चितरांम-कळा रा सगळा पारखी मांनै के भारत री सांस्क्रतिक लांठाई में राजस्थांनी चितरांम-कळा रौ ई अणूतौ हाथ है । अैड़ा ई सैंठा खूंटां रै पांण तौ आ संस्क्रति अजै तांईं आप री मरोड़ रै साथै गरबजोग वण्योड़ी है ।

राजस्थानी चितरांम-कळा रा ठेट जूनः नमूना तौ चंबळघाटी री खोवां, काळीबंगा अर आहड़ रै मळवां सूं मिळै । मटकां-माटां, मोहरां अर ठांव-ठीकरां माथै मंडियोड़ा लींगटा आं में भेळा है । चितरांम-कळा रा नमूना बीजी कळावां विचै सोरा अळिया-गळिया व्है, सो घणी जूनी चितरांम-कळा में तौ रिन्द-रोई में नाचणियै मोर आळी व्है । पाणी घणा माथा खपावै कित्ता ई अवखै, पण कठैई वावड़ को लागै नीं । सो घणा जूना चितरांमां री तौ कोई खोज है न खबर ।

तिव्वती लामा तारानाथ आपरी 'वुध-धरम' नांव री पोथी में मरू-खेतर री चितरांम-कळा रौ थोड़ौक इसारौ करचौ है । १३ वीं सदी सूं पैला-पैला पाटण, गुर्जरात्र अर मरूदेस में चितरांम मांडण री रीत ही । जैसळमेर रै जैन ग्रन्थ भंडार में कल्पसूत्र सैली रा हवाला मिळै है । १३ वीं सदी रै राजस्थान अर गुजरात में चितरांम पोथियां री रीत जोरां माथै ही । कालकाचार्यकथा, प्रवचनसरोवदर, व्रतिसार (नेमीचन्द्र री रच्योड़ी), सवज्ञपद कामना सुत्तचूर्णि, कुमुददेव सूर्यभरत, वाहुवळ री रच्योड़ी जैनपटली उत्तराध्ययनसूत्र न्यायतात्पर्यटीका नेमिनाथचरित, नीसितचूर्ण बीजी घणी चोखी जैन-चितरांम पोथियां है । जैन धरम सूं न्यारी वालगोपाल स्तुति, दुर्गासप्तसती जैड़ी चितरांम पोथियां रचीजी । घणकरी इण भांत री पोथियां गुजरात में लाधण सूं जैन-सैली रौ नांव गुजरात सैली पड़ग्यौ । आगै आवतां जद आंथूणै मुलक में केई जागा अै पोथियां लाधगी तौ इण नै पछिम सैली सूं मिनख ओळखण लागा । उण वेळा रौ साहित अपभ्रंस साहित बाजतौ सो चितरांम-कळा री आ सैली कठैई कठैई अपभ्रंस सैली कहीजण ढूकगी ।

पैलपोत मेवाड़ में अजन्ता परम्परा रौ रंग चढ़ियौ अर मेवाड़ी चितरांम-कळा फळण-फूलण ढूकी । मेवाड़ सैली री जोरदार छिब चित्तौड़ रा मैल-माळियां में मंडियोड़ी दीसै ।

१७ वीं सदी पूठै मेवाड़ी चितरांम-कळा माथै मुगली चितरांम सैली री छाप बैठण ढूकगी अर तर-तर आ छाप घणी खुलासै दीसण लागी। इण वेळा मेवाड़ में जैड़ा सांतरा चितरांम मांडीजिया वैड़ा पछै वळै को ठाहीजिया नीं। मेवाड़ में कुरयोड़ा चितरांमां में पळापळ करतै पीळै पट्ट अर रातैचट्ट रंग री जोर घणो ई रह्यो। ठींगणै-आंगै रा मिनख, गोळगट मूंडो, तीखीतच नाक अर मीनाखी आंख्यां रा चितरांम मेवाड़ सैली री ओळखांण जोग बातां है। आं चितरांमां रा गाभा-लत्ता, गैणा-गांठा अर हेटलो चौक ई मुगली चितरांमां दाई मांडीजतो।

मेवाड़ आळी दाई पैला पैला री मारवाड़ी चितरांम कळा माथै अजंता री छाप घणी लखावै। १५ वीं सदी तांई मारवाड़ में ई जैन चितरांम-पोथ्यां रचीजगी ही, जिकां में सूं केई तो अजै तांई जैन-भण्डार में ठावी पड़ी है। मुगलां सूं मारवाड़ रै धणियां रा हेत वधिया जद मुगल चितरांम-कळा री रंग टीप्पं टीप्पं अठैई चढ़ण लागी। अठै उतारीज्योड़ा भागवत रा चितरांमां में क्रसण अर अरजण रा गाभा मुगलां जैड़ा है जद के वां रै मूंडा रा चितरांम में मारवाड़ी आंगो टपकै। गोपियां रा गाभा-लत्ता तो मारवाड़ी है, पण वां नै गैणां मुगली पैहराईजग्या है। अजीतसिंघ रै समै चितरांम तो कांई ठा कितराई कोरीजिया पण खंखोळी खावती कामणियां, होळी रमती लुगायां अर सिकार रा चितरांम फूटरा घणा गिणीजै। विजैसिंघ अर मानसिंघ री वेळा भगती रै सागै ई सिणगार रस रै चितरांमां री जोर रह्यो। मारवाड़ी सैली में गठियोड़ै डील अर मूंडै रै फूटरापै माथै जोर राखीजतो। मिनखां रै गळमुच्छा अर ऊंची पागड़ियां कोरीजती। मारवाड़ी चितेरा पैली रातै अर पीळै रंग नै अर १८ वीं सदी में सोनल रंग नै खास कांम लेता।

मारवाड़ी सैली सूं अेक नुवीं कूंप बीकानेरी सैली रै रूप में फूटी। इण माथै थोड़ोक पंजाबी कलम री रंग ई चढ़ियो। अठै रा धणी मुगलां साथै लंकाऊ दिस में घणा अबगिया सो अठै रै चितरांमां माथै दिखणी असर ई दीसै।

पैलापैला बूंदी रै चितरांमां में मेवाड़ी सैली री लटको आवै। सोळवीं सदी रै लारलै पासै राव सुरजाण रै समै अठैई मुगली असर लखावण ढूकौ। अठा रा चितरांमां में मिनख री डील तो मेवाड़ी पण नदी-नाळा अर रूंखड़ा बूंदी रा कोरीजता। कोटा में बूंदी रै लग्गू-ढग्गू चितरांम ई बणता।

फूटरापै रा रसियां नै किसनगढ़ सैली घणी ई सुहावै। सांमतसिंघ रै समै आ सैली राती-माती व्ही। सांमतसिंघ नागरीदास नांव सूं ई चावो है। नागरीदास माथै वैस्णव धरम री धौंस तो जमियोड़ी ही अर सागै ई वणी-ठणी कहीजण आळी अेक लुगाई री रंग ई अणूतो चढ़ियोड़ो। नागरीदास अर वणी-ठणी राधा-क्रसण रै रंग में रचियोड़ा हा। सो किसनगढ़ रै चितरांमां में कळा, प्रेम अर भगती री भेळ लखावै आं चितरांमां में लांबै आंगै आळा, लंबूतरै मूंडै अर तीखी नाक रा मिनख लारली वेळा रा मुगली गाभा ठठायोड़ा मांडीजता। घणा डाळां अर पत्ता सूं लड़ालूम होयोड़ा रूंख, लारै दीसतो गोदाळो नांव री तळाव, राजदरबार अर मैलमाळियां री रातां रै सागै ई वणी-ठणी अर नागरीदास रा चितरांम

कोरीजता। किसनगढ़ सैली में कोरीजियोड़ा वणी-ठणी रा चितरांम राजस्थांनी चितरांम-कळा रा सांतरा अर फूटरापै में अजोड़ नमूना गिणीजै। आं चितरांमां नै भारत रै वीजै किणी खुणै रै चितरांमां री जोड़ में ऊभावां तौ इक्कीस ई दीसै। नाक में नथ अर मीनाखी आंख्यां कोरीजियोड़ी वणी-ठणी रौ चितरांम अैड़ौ जबर है के उण नै गिणायां विना राजस्थांनी चितरांम-कळा रौ लेखौ आधौ ई रैय जावै। वणी-ठणी रौ औ चितरांम, चितरांम-कळा रा पारखियां नै अैड़ौ सवावणौ लागै के घणकरा तौ उण नै लियोनार्डों डा विन्सी रै जग चावै चितरांम 'मोना-लिसा' री जोड़ रौ चितरांम अंगेजण नै त्यार है। इण समै रा घणकरा चितरांम निहालचंद नांव रै चितरांमकार रा ठायोड़ा है।

जैपर अर अलवर री चितरांम-कळा माथै ई मुगली रंग रौ जोर रह्यौ। नाथद्वारा में मेवाड़ी भांत सूं न्यारा चितरांम कोरीजता।

इत्ती भांत री व्हैतां थकां ईं राजस्थांनी चितरांम-कळा में अेकठपणै रा अलेखूं भाव साव सांमा दीसै। घणकरी भांतां में पळापळ करता रंगां सूं राग-रागणियां, वारामासा, भागवत, रामायण अर गीत-गोविन्द री वातां कोरीजती। राजस्थांनी चितरांम-कळा री सगळी कूंपां अजन्ता सूं फूटोड़ी होवण सूं अै कूंपां भारत री चितरांम-कळा रै सागै जुड़गी। घणकरी राजस्थांनी सैलियां धकै जावतां मुगली गाभा-लत्ता अर गैणा-गांठा अंगेज लिया।

राजस्थांन में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस, डिंगळ, राजस्थांनी, हिन्दी अर वीजी भासावां रै वधापै सारू कित्ता ई जतन होया। भणाई अर साहित रा कांम अठै रै चावै सैरां में ठेट सूं ई व्हैता आया है। सातवीं अर आठवीं सदी में चित्तौड़ अर भीनमाळ नै भणाई-गुणाई री सांतरी ठौड़ां मानीजण रा कित्ता ई सावूत मिळै। चित्तौड़ में जिनभट्ट, हरिभद्र, इलाचार्य, वीरसेन, जिनभद्र सूरी जैड़ा मानीता विद्वांन आपरी पिंडताई सूं मानखै नै जगावण जोग कारज साजिया। भीनमाळ में ब्रह्मगुप्त, माघ, माहुक, धाइल्ल, मण्डन अर माघ री आल-औलाद में ई माधव जैड़ा धुरन्धरां आप री भणाई-गुणाई अर सूझ री धाक जमाई। अजयमेरू, जवालीपुर, त्रिभुवन गिरी, आबू, मेड़ता, चन्द्रावती मालव नगर अर चाटसू जैड़ा नगरां भणाई री परम्परावां नै सागैड़ी जमायां राखी। अठै आघै-आघै सूं भणाई रा भूखा आय'र आप री भूख-तिस भांगता। चौवांणां रै समै तौ विद्वांनां रै वासै सारू न्यारी ब्रह्मपुरी वणायोड़ी ही। राजस्थांन में वेद, धरम, साहित, व्याकरण, गणित, वैदगी, ज्योतिस इत्याद री भणाई जोरां माथै ही। भणाई री चावी पौसाळां नै राज री छीयां मिळयोड़ी रैती। नगर-सेठ अर वीजा महाजन ई आंणै-टांणै आं पोसाळां रै पईसा-टक्कां सूं आडा आवता। मध्यकाळ में जद सगळै देस में परम्परा सूं चालती भणाई कीं मौळी पड़ी तौ राजस्थांन माथै ई इण रौ असर पड़ियौ। तौ ई राजस्थांन में माड़ी-मौळी भणाई री पुरांणकीं रीत पळती करी।

राजस्थांन रा साहितकारां में सातवीं सदी में भीनमाळ रा माघ घणा चांवा है। माघ सिसुपाळ वध नांव री पोथी रची। संस्कृत रा धुरन्धरां री कैणौ है के काळीदास री 'उपमावां' महाकवी भैरवी री 'अरथ गूढ़ता' अर दण्डी रौ 'पद लालित्य' अजोड़ ही। संस्कृत रा सगळा जाणकार आं तीनूं गुणां रौ भेळ माघ रै 'सिसुपाळ वध' में वतावै। सो कहीज सकै के

काळादास, भैरवी अर दण्डी रा सगळा गुण भेळा होय जिण अेक मिनख नै सूंपीज्या उण महाकवी माघ रै साहित सिरजण री जागा राजस्थांन ई ही। धिन है इण माटी नै जिण संस्कृत साहित रै इण सगळा सूं जोगै साहितकार नै पनपण अर इत्ती ऊंचाई तांई पूगण जोग वातावरण निजर कीधो। 'सिसुपालवध' रै नव सरगां में संस्कृत साहित रा सगळा आखर कांम में लिरीज्या। माघ री जाणकारी अर मालदारी नै नीं तो अजै तांई कोई पूग सकियो है अर नीं उण ऊंचाई माथै पूगण जित्तो गाढ़ किण में ई होवण री उडीक है।

भीनमाळ नै ई गणित अर ज्योतिस रै जाणकार ब्रह्मगुप्त नै जलम देण री जस है। ब्रह्मगुप्त नै आर्यभट्ट अर वराहमिहिर री जोड में ऊभाय सकां उण। 'ब्रह्मसिद्धांत', 'खण्डखादय' अर 'ध्यांनग्रह' जैड़ी नांमी पोथियां रची। चित्तोड़ रै हरिभद्रसूरी 'समराइच्छकथा', 'धूर्ताख्यान', 'कथाकोस', 'मुनिपतिचरित', 'यसोधरार्चरित' जैड़ी जबरदस्त पोथियां रची। ८वीं सदी में माघ री आल-औलाद में ई माहुक व्हियो जिण 'हारमेखला' नांव री पोथी लिखी, जिकी लारै जावतां घणी सराहीजी। हरिभद्रसूरी रै चेलै उदद्योतम सूरी ७७८ ई० में जबालीपुर में 'कुवलयमाल कथा' लिखी। इण सूं उण समै रै साहित-संस्कृति री भांन तो व्है ई पण सागै ई प्रतिहारां रै इतिहास रा कित्ता ई अळूझा काढ़ण में ई आ पोथी घणी आछी आवै। घणाकरा इतिहास लिखारा तो इण री साख रै पांण जबालीपुर नै ई प्रतिहारां रै वडेरां री ठौड़ गिणै अर उदद्योतम सूरी नै वत्सराज री दरबारी बतावै। ९६२ ई. में भीनमाळ में ई सिद्धर्सीसूरी आप री पोथी 'उपमितीभवप्रपंचकथा' लिखी। जिनेस्वर सूरी 'लीलावतीकथा' अर 'कथाकोस प्रकरण' जैड़ी पोथियां लिखी। इण जिनेस्वर रै चेलै अभयदेव 'भगवतीसूत्र' री टीका करी। जिनभद्राचार्य 'सुर-सुन्दरी कथा' अर जैन चन्द्र 'संवेग रंगसाला,' जिनवल्लभ आप री 'संघपट्टक' अर 'पिण्डिविसुद्धप्रकरण', जिनदत्त सूरी आप री 'उपदेसनिकायनसार' अर नरमरी नांव री पोथियां लिखी। मेवाड़ रै हरिसेण 'धरम परीक्षा' नांव री पोथी मांड'र नांव कमायो। राजावां में साहित रै मुजब तो कोरै राजस्थांन ई नीं सगळै भारत में महाराणा कुम्भा री ठौड़ निरवाळी ई है। कुम्भा 'संगीत राज', 'संगीत मीमांसा' जैड़ी महताऊ पोथियां लिखी, 'चण्डीसतक' री व्याख्या करी। 'गीत गोविन्द' री 'रसिक प्रिया' नांव री टीका लिखी, जिकी कुम्भा रै ई बूतै री बात ही। मेवाड़ी भासा में ई कुम्भा आप पोथियां रची। कुम्भा रै समै उणरी छत्रच्छीयां में संस्कृत अर प्राकृत भासावां रै सागै ई राजस्थांनी री ई घणी वधापो व्हियो। कुम्भा रै समै रच्योड़ी पोथियां राजस्थांनी री पैलड़ो रूप मानीज सकै। घणाकरा विद्वांन तो पीठवामीसण, मेंहहू खगार अर वाग्हठ हरिसूर नै कुम्भा रा दरबारी ई गिणै। कुम्भा री वेळा रै साहित री अेक वळै खास बात आ है के ऊण वेळा सिल्प कळा जैड़ै तकनीकी विसयां माथै पोथियां रचीजी। मण्डन री नांव आं में सगळां सूं चावो है। मण्डन की लिख्योड़ी 'प्रासाद मण्डन' 'राजवल्लभमण्डन' 'देवतामूर्तिप्रकरण' 'वास्तुसार' 'रूप-मण्डन' अर 'वास्तुमण्डन' जैड़ी पोथियां है। मण्डन रै छोटै भाई नाथा 'वस्तुमंजरी' नांव री पोथी इण वेळा ई रची। 'उद्धारधोरणी', 'कलानिधि' अर 'द्वारदीपिका' नांव री पोथियां री लिखारो मण्डन रो बेटो गोविन्द ई गिणीजै। सो कुम्भा री छत्तरछीयां में संगीत अर सिल्प कला जैड़ा तकनीकी विसयां माथै ई घणो साहित लिखीजियो।

कुम्भा रै पछै मेवाड़ में तो जांणै साहित सिरजण री रीत ई मंडगी। अमरसिंघ री वेळा री संस्कृत री सांतरी पोथियां में 'अमरसार' अर 'अमरभूसण' घणीज चावी है ! राजसिंघ नै अमर करण री कांम रणछोड़ भट्ट 'अमर काव्य' अर 'राजप्रसस्ति' लिख'र करचौ। रणछोड़ भट्ट राणां री करणी रै सागै ई, गाभा-लत्ता, गैणा-गांठा, तुलादान, दिवाळी, जौहर अर धरम री अलेखां रीत-पांत री वखांण कर'र आप री लिखाई री सांस्कृतिक मोल अणूतौ ई वधा लियौ। १७ वीं सदी में ई सदासिव रै २२ सरगां में रच्योड़ै 'राजरत्नाकर' में उण वेळा रै मानखै अर रीत-पांत री वखांण है। मेवाड़ में इतिहास री अलेखां पोथियां लिखीजी, जिकी राजस्थांनी रीत-पांत अर इतिहास सारू तौ अमोल है ई भारत रै इतिहास री कित्तीक लुकियोड़ी वातां आं रै पांण ई उघाड़ीज सकीजी।

मारवाड़ ई साहित सिरजण में मुड़दार को रह्यौ नीं। म्हाराजा गजसिंघ चवदै कविया नै लाख पसाव वखसिया। गजसिंघ रौ आसरौ मिळियां ई हेमकवि 'गुणभासा' अर केसवदास 'गुण रूपक' जैड़ी साहित री पोथियां रचण जोग व्है सकिया। जसवंत सिंघ साहितकारां नै तौ लाड-कोड सूं राखतौ ई आपौ आप सागैड़ौ लिखारौ हौ। 'आणंद विलास' 'सिद्धांतसार' 'अनुभवप्रकास' अर 'सिद्धान्त वोध' आप जसवंत सिंघ रै रचियोड़ी मानीजै। सूरत मिश्र, नरहरिदास जैड़ा मानीता कवी अर नैणसी जैड़ा इतिहास लिखारा जसवंत सिंघ रै समै ई जग-उजास करचौ। अभयसिंघ री वेळा तीन भारी लिखारा व्हिया। अेक जग-जीवण जिण 'अभ्योदय' लिखियौ, वीजौ सूरजप्रकास री 'रचणहार करणीदांन' अर तीजौ वीरमांण जिण राज-रूपक री सिरजण करचौ। मांन सिंघ री वेळा तौ साहित रा भील-तळाव ओटै ई व्हैग्या। 'नाथ चरित', 'क्रसण विलास', 'पंचवली', 'मान विचार' घणी चावी पोथ्यां है। वांकीदास री 'मानजसो मण्डन' अर अैतिहासिक वातां राजस्थांनी इतिहास अर रीत-पांत रा झरणा ई है।

पैली जांगळ नांव सूं चावी वीकानेर ई साहित सिरजण में ओछौ को उतरियौ नीं। राजपूतानै रौ कर्ण कहीजणियौ रायसिंघ आप 'महोत्सव' अर 'ज्योतिस रचनाकर' रच्या। गंगानन्द मैथिल री 'कर्ण भूषण' ई घणौ चावौ है। अनूपसिंघ आप न्यारै-न्यारै विसयां माथै पोथियां रची। 'अनूप विवेक', 'काम प्रवोध', अर गीत गोविन्द री 'वनुपोदय' टीका घणी सराहीजी। मणीराम दीक्षित, भद्रराम, अनन्त भद्र जैड़ा मानीता विद्वांनां कित्ती ई पोथियां लिखी। अनुपसिंघ रै दरवार में साहजहां रै संगीतकार जनार्दन भट्ट रौ वेटौ भावभट्ट हौ, जिण संगीत माथै केई रचनांवां करी। जोरावरसिंघ रै समै 'वैदकसार', 'रसिकप्रिया', अर 'कवि-प्रिया' री टीकावां हुई। गजसिंघ री वेळा गोपीनाथ 'ग्रंथराज' लिखी।

हाड़ौती रा राजा ई साहित री सेवा करण में फोरा को उतरिया नीं। सूरजमल मिसण १८९७ ई. में 'वंस भास्कर' लिख'र वूंदी-कोटा रै सागै ई समूदै राजस्थांन री इतिहास लिखियौ। डूंगरपुर में १६ वीं सदी रा भट्ट सोमदत्त घणा चावा व्हिया। यूं ई वांसवाड़ा में

संमरसिंघ अर कुसालसिंघ री वेळा साहित सिरजण व्हियो। प्रतापगढ़ में पं. जैदेव 'हरिविजय' नाटक रच'र प्रतापगढ़ री नांव उजागर कर्यो। किसनगढ़ रा लिखारां में नागरीदासजी आप ई व्रज भासा रा जोगा कवी मानीजै।

अपरंच साहित सिरजण तो अजी तांई आंख्यां आगै है पण अठै घणकरी भणाई मूंडै रटीजती। चारण-भाटां री कवितावां पीढ़ी-दर-पीढ़ी घोकीजतां-घोकीजतां ठा नीं कद फुर व्है जाती सो अठा रै साहित-सिरजण री थाह तो कठै ई है ई कोनीं। छोटी-मोटी पोथ्यां तो अठै गिणती में ई कोनी आय सकै। अेकलै राणा कुंभा री वेळा कोरै खरतरगच्छ के तपागच्छ आळां री पोथ्यां पढ़ण लागां तो आखी ऊमर ई गळ जावै, तूण्डो आवै ई कोनी।

राजस्थांन री ख्यातां तो खैर निरवाळी है ई। अै राजस्थांन रै सागै ई भारत रा इतिहास रा कित्ता ई मुद्दां नै उजागर करै। संगीत अर सिल्प जेड़ा हुनरां माथै अलेखां पोथियां अठै रचीजण सूं राजस्थांन रो साहित अमोल अर अमर व्हैगो।

भोळावण

'जागती जोत' री रचनावां माथै आपरा खुलासा कागद म्हांरी लांठी मदद व्हैला। रचनावां नै पूरी-पूरी बांचो अर यै आपनै कैड़ी कांई लागै, अवस संपादक रै पतै कागद लिखावो।
—संपादक

ओक जात्रा जबरी

वरखा बहार आई

डॉ० नरसिंघ राजपुरोहित

उण दिन बीकानेर सूं जोधपुर आवणौ हौ। रात री गाडी में स्लिपिंग कोच री बर्थ रिजर्वेशन री कोसिस करी पण बातड़ी बैठी कोनीं। भाई लोग बोल्या—क्यूं फिकर करै यार, कंडक्टर नै पटायां श्रैन वखत माथै ई बातड़ी बैठ जासी। दो-च्यार सीटां हर वखत प्राईवेट में रह्या करै। टुकड़ौ नांख्यौ के बर्थ त्यार। हाथ पोलौ तौ जगत गोलौ। इण में चिंता करै जिसी बात कांई ई? इण वास्तै अबार तौ सीटिंग री रिजर्वेसन करायलां अर पछै सै ठीक व्है जासी।

पण बाई रा भांझर बाजणा अर वीरै री ओर सुभाव। सो टुकड़ौ नांखण वाली बात म्हनै कीं जची कोनीं। छतांपण पैली सीटिंग वालौ जुगाड़ बिठायौ अर टिगट लेय'र जेब रै हवालै कियौ।

म्हनै आछी तरियां याद है, उण दिन मौसम कीं खराब हौ। सियाळै री रुत अर आभै में घटाटोप बादळियां। रैय-रैय'र डांफर चालती अर हाडका धूजण लागता। रैळवा व्हैग्यौ हौ महावटौ होवण वाळौ हौ। इसी बखत में नीं घर बारै निकळण री मन व्है अर नीं घर में ई मन लागै। फेर म्हूं तौ सगां रै अठै मेहमान बण'र आयौड़ो सो आखौ दिन बंद कमरे में पलंग माथै बैठौ-बैठौ बोर व्हैग्यौ। सगां री मूंघी मनवार, अणूंती खातरदारी अर लच्छेदार बातां ई मौसमू उदासी नै नीं तोड़ सकी। सगीजी म्हारा मोस्ट ओबिडियेंट किसम रा हसबैंड है। वै सगीजी नै पूछ्यां बिनां पांवडौ ई नीं भरै। उबासी आवै तौ ई सगीजी नै पूछ'र लेवै। उणां ढळतै दिन री बारै जावण री प्रोग्राम बणायौ पण होम गवर्नमेंट री अनुमति नीं मिळण सूं वौ ई कैंसिल व्हैग्यौ।

रांम-रांम करता रात री आठ बजी। जीम-जूंटर बैठा तौ आळस आवण लाग्यौ। सगीजी री किरपा सूं पेट खासौ बजनी व्हैग्यौ हौ। पण गाडी रौ टेम होवण वाळौ हौ अर

म्हनै जावणी जरूरी ही इण वास्तै आळस कियां पार पड़तो। टेसण जावण खातर दो साईकिलां माथै ऊंठा पर पिलांण कसै ज्यूं सामान कस्यो अर घर सूं रवानै व्हिया। सगीजी पड़दै री ओट सूं कैवायो—फेरूं आया! म्हैं मन में कह्यो—आस्यूं तो खरी सगीजी पण सियाळा में नीं, मतीरा वाली मौसम में आवण री कोसिस करस्यूं।

गली छोड़'र गवर्नमेंट प्रेस रै साम्ही आया तो सफा सूनी पड़ी सड़क माथै खरगाज आपरा पूरा परिवार सागै। मारेथन दौड़ री अभ्यास करता निगै आया। अर वडां अरवड़ां-बरगड़ां-बरगड़ां जे साईकिल रा ब्रेक नीं दावूं तो बाथ घाल'र मिलणी व्हे जाती। खरराज रै फेमिली री पलटण खासी लांबी ही। ओ मस्त जीव फेमिली प्लानिंग रो ध्यान क्यूं राखतो। पलटण रो छैलो सदस्य जद आभै कांनी ऊंचो मूंडो कर'र सप्तम सुर में प्रेम सूं सलामी बजावतो आगै होय'र निकळग्यो तो सगीजी बोल्या—सुगन तो आज सागैड़ा व्हिया। म्हैं मुळक'र पडूत्तर दियो—बीकानेर में इण सुगनां री कांई कमी? निजर नांखां जठी नै ई अै तो गळी-गळी में मोकळाई निगै आवै। वै ही ही कर'र हंसण लाग्या। स्यात म्हारी बात री सत्यता अनुभव रै आधार माथै स्वीकार कर लीवी ही।

बजार री भीड़ सूं जूंझता अर थेई थेई करता घणा कळापां सूं रेल्वे क्रासिंग माथै पूगा तो आगै मारग वन्द। मोटरां, तांगां, स्कूटरां अर साईकिलां री जांणै प्रदर्सणी लाग्योड़ी। भीड़ रो दरियो हिलोळा खावै। च्यारूंमेर कोरा भोटक निगै आवै। सगीजी सवालिया निजर सूं म्हारै कांनी देख्यो—गाड़ी में घणी जेज कोनीं बोलो अबै कांई करणो? म्हैं नाह्यो हारयोड़ी निजरां सूं जवाब दियो—जो कछु होहिं राम रचि राखा! पूरा पच्चीस मिनट री तपसा कियां पछै फाटक खुल्यो अर मीनखां रो रेलो भाखरां री नहर रै ज्यूं अरड़ाट करतो वैवण लाग्यो। ठेट टेसण पूगा-पूगा जितरै म्हनै कोलंबस सागै पूरी सहानुभूति व्हैगी।

ढपला करती सेठाणी रै ज्यूं आभो आंसूड़ा टपकावण लागग्यो हो। प्लेटफार्म माथै पूगा जितरै म्हारी जाड़ी बाजण लागी। म्हनै किसन सुदामा री वा कथा याद आयगी, जिण में वै दोन्यूं जणा गुरु संदीपन खातर लकड़ियां चुगण नै जावै अर उठै मेह अर डांफर में अलूझ'र सुदामा री जाड़ी बाजण लागै। गनीमत आ रही के सगीजी म्हनै किसन रै ज्यूं चणा चावण वाळी बात नीं पूछी अर म्हारै माथै मेहर कर'र गरमा-गरम कॉफी रो झागदार प्यालो लाय'र पेस कियो। म्हैं तन-मन सूं सगीजी रै चूड़ा-चूनड़ी री आसीस दीवी।

स्लीपिंग कोच में करीब करीब सगळा मुसाफर आयग्या हा। म्हैं ई जाय'र म्हारी सीट संभाळी। जिणांरी सीटां रिजर्व ही वै नेहचा सूं पसरयोड़ा बैठां हा। अर जिकां नै सीटां री जरूरत ही, वै कंडक्टर रै च्यारूंमेर माखियां ज्यूं भींगै हा। अेक मोटी तूंद अर ढीली धोती वाळो सेठ वर्थ री फिराक में हो।

उण कंडक्टर नै पटावण खातर आपरा नौकर नै भेज्यो। नौकर छैला किसम रो अेक अवारा छोकरो हो जो आंख्यां में काजळ सारयां वात करतो वखत रुळियार रांड रै ज्यूं मटका करतो। थोड़ीक ताळ में छोगै सिनेमाई हीरो री तर्ज में गोत गुणगुणावतो

पाछो आयो— ....वरखा बहार आई....अंखियां में प्यास लाई....वरखा बहार ! होठां सूं सीटी वजावतां उण सेठां री हथाळी में टिगट इण भांत धरियो जाणे तेनसिंघ ग्रेवरेस्ट विजय कर'र आयो व्है ।

सेठ हें-हें कर'र पीळा-पीळा सूगला दांत काढतो बोल्यो—पांच री ठौड़ दस लागग्या तो जाईजो म्हारा बाप सागे । जाणांला के दुकांन माथै ग्रेक गिराक ग्रोछो ई आयो । रात तो सुख सूं बीतैला । बात सागे उणरै मूंडै सूं बदबू रो ग्रेक भभको सो निकळयो ग्रर म्हैं मूडो दूजै कांनी फेर लियो । गनीमत रही के सेठ ने सीट दूजी कांनी मिळी ही । नीं तो थोड़ीक ताळ में बदबू सूं माथो फाटण लाग जावतो । छोकगे सीटी बजावतो रळियार डांगर रै ज्यूं गेलेरी में ग्रठी-उठी फिरण लाग्यो ।

नेहचा सूं बैठयां पछै म्हैं च्यारूंमेर निजर फेरी. तो म्हारी सीट माथै बारी रै कनै ग्रेक फौजी ग्रफसर बेठो निगे ग्रायो । ग्रपटूडेट पोसाक में धाकड़ किसम रो. ग्रादमी । डीगो पूजतो, मातो मतवाळो ग्रर गोरो निछोर । मोटी मोटी प्याला जिसी ग्रांख्यां ग्रर बिन्छु रै डंक जिसी वट दियोड़ी मूंछां । वो उदास ग्रांख्यां सूं बारली कांनी देखै हो । सांम्हली सीट माथै बाबू किसम रा दो ग्राधकड़ ग्रादमी बैठ्या हा । सूटेड़-बुटेड़ खड़ी खम्म । ग्रेक री खोपड़ी गंजी ही ग्रर बत्ती रा चांदणा में पळापळ चमकै ही । कोई तबलची री निजर पड़ जावै तो संगत करण री हूंस ग्राय जावै । थोड़ीक ताळ में कंडक्टर ई म्हारै कनै ग्राय'र बैठग्यो ।

ग्रधकचरी नगरीय सभ्यता में कोई ग्रसैंधा मिनख सूं एक दम ग्रोळखाण करणी ग्रसभ्यता गिणीजै । पण गांवठी ग्रादमी होवण सूं म्हारी तो ग्रादत है के म्हूं मुसाफिरी में सहजात्रियां सूं वांरो साधारण परिचय पूछ ई लेवूं । इण सूं ग्रेक तो ग्रापसरी बंतळ में जात्रा सुखद बण जावै ग्रर दूजो जांण-पहचांण री दायरो ई वधै । पण जे ग्रल्ट्रा मोडरेट किसम रो कोई प्राणी इण में ग्रंतराज मांनै तो उणरै लारै धूड़ वाळ दूं ।

ग्राज ई इण सज्जनां सूं ग्रोळखांण करी तो जांण पड़ी के फौजी ग्रादमी रो नाम संभूसिंघ परमार है ग्रर वो इंडियन ग्रारमी में कप्तान रै ग्रोहदै माथै कांम करै । गंजी टाट वाळो ग्रादमी के०डी० सरमा है ग्रर बिजळी विभाग में ग्रॉफिस सुपरिटेंडेंट रो कांम करै । तीजो ग्रादमी जिणरै चौकै रा दांत कीं लांबा होवण सूं बारै ग्रायोड़ा हा, ग्रमरनाथ व्यास हो ग्रर वो पी. डब्लू. डी. रा महकमा में हेड क्लर्क हो । कंडक्टर री छाती माथै चमचमाट करतोड़ी पीतळ री नेम प्लेट लाग्योडी ई ही—पी. एल. गुप्ता—सो उणरो नांम ठांम पूछण री जरूरत ई कोनीं पड़ी ।

गाडी टेसण छोड़ण वाळी ई ही के ग्रेक गांवठी ग्रादमी ग्रापरी लुगाई सागै हळफळतो थको कोच में वड़ियो । ग्रादमी ग्रधवूढ सो हो ग्रर लुगाई फालरा व्है जिसी माल-मोटयार । काजल टीकी सूं टंच ग्रर गहणै गांठै कड़ाजूड़ । रंग गजब रो गोरो ग्रर ग्रांखं-नाकै फूटरी । विहारी री नायका जिसी । ग्रादमी दूज वर लागै हो । कंडक्टर वांरा टिगट चेक किया ग्रर बतायो के ऊपरली बर्थ ग्रर नीचली दो सीटां वांरै खातर ही । दोन्यूं प्राणी म्हारै सांम्ही बाबू लोगां रै कनै बैठग्या ।

—किसी गांव थांरो ? म्हैं पूछ्यो। ...

—सांचोर।

—कांई नांम ?

— नांम तो भगवांन रो, म्हारो नांम लाघूरांम।

—अठै ?

—भतीजो नौकरी करै मिळण नै आया।

गाडकी रवांनै व्ही तो थोड़ो नेहचो व्हियो। लाधू साफो सीट माथै राख'र आपरै मोडियै माथै पर प्रेम सूं हाथ फेरण लाग्यो। गाडी री नावा-दौड़ में इण ठंड में ई उणरै लिलाड़ माथै पसीनो चमकण लाग्यो हो : वो मूंडै सूं निस्कारो नाख'र अगोछै सूं माथै रो परसेवो पूंछण लाग्यो तो लुगाई उणरै सांम्ही देख'र मुळकण लागी। लाधू नै उणरी आ हरकत नागवार गुजरी। वो आंख्यां काढ'र बोल्यो—के बात है ?

लुगाई आपरै मूंडै आडो पल्लो राख'र झीणै सुर में धीरै सीक बोली— कठै ? कीं कोनीं। पण उणरी आंख्यां हंसै ही। म्हनै कवी री वा उक्ति याद आयगी जिकी उण लिछमी बाबत कही—पुरुष पुरातन की वधु क्यों न चंचला होय ?

कप्तान लुगाई कांनी खरी मीट सूं देखतो बोल्यो— वेरी प्लीजेंट व्हेदर।

—वट ओनली इन द कोच। म्हारै मूंडै सूं निकळग्यो। अबकै बाबू लोगां अर कंडक्टर रै हंसण री बारी ही। टाटियो बाबू तो इतरो जोर सूं हंस्यो के लाघू चवरीजग्यो। उण सहज बुद्धी सूं अंदाज लगाय लियो के हंसी रो कारण व्हो न व्हो वो अर उणरी लुगाई इज है। कैवत है के कुंभार कुंभारी सूं पार नीं पावै जद गधेड़ी रा कान मरोड़ै। वो लुगाई माथै आखतो होय 'र बोल्यो— के दांतिया तिरड़ावै है फीं-फीं-फीं ! के लाधो है ? जा ऊपर कांवळकी बिछाय 'र सोयजा।

— ऊं.... ऊं.... ऽ ऽ ऽ ! लुगाई नाजुकता सूं कसमसाई।

— ऊं ऽ ऽ ऽ ! लाबू उणरी कूंटियां काढतो बोल्यो— ऊं ऽऽ ! तो ऊपर कुण थारो बाप सोयसी ! रुपिया साढी च्यार रोकड़ा काढ़'र दिया है। पीसा मुफत में कोनीं आवै। नखरा करै है नाजूड़ी। अर उण अेक प्योर वेजिटेरयन गाळ ठरकायदी।

धणी लुगाई री रोचक संवाद सुण'र अवारा छोकरो गळियारै में फिरतो-फिरतो उठै आय'र ऊभग्यो। वो लुगाई कांनी देख'र गावण लाग्यो— बरखा बहार आई.... अखियां में प्यास छाई.... बरखा बहार।........

—के माथै आय'र टिर्र-टिर्र करै है बेटी रा बाप ? आघो क्यूं वळै नी। अठै तो आगै ई धणी देण है। लाघू जूंजळ खाय'र बोल्यो।

—तुम्हारे बाप का क्या लिया, गाता हूँ तो मेरे मुंह से गाता हूँ—छोकरी ई तातौ व्हे'र बोल्यौ—गाडी तुम्हारे बाप की नहीं, सब टिकिट लेकर बैठे हैं। तुम मना करने वाले कौन होते हो ?

—यू ब्लड़ी नोनसेंस, गेट आउट ! फौजी इतरौ जोर सूं धड़ूक्यौ के छोकरौ बुलडोग नै देख'र कूकरियौ नाठै ज्यूं पूंछ पगां में दाव'र छू वण्यौ।

गाडी होळै होळै स्पीड पकड़ लीवी अर कंडक्टर अेक चक्कर लगाय'र ताळा-कूंची कब्जै कर'र पाछौ सागण ठौड़ आग'र बैठग्यौ।

अठीनै धणी लुगाई रौ संवाद चालू हो।

—जा, जा चढ़जा ऊपर ! सीट खाली पड़ी है।

—म्हासूं तौ कोनीं चढ़ीजै इण सूळी माथै। लुगाई आंती आय'र बोली।

—के कोनीं चढ़ीजै भली मिनख। अेक पग इन्नै, अेक पग उन्नै अर पछै हिरण्यौ फदाकै ज्यूं कूद'र चढजा फदाक करतौड़ी।

—अर जे नीची पड़गी तौ ? लुगाई हंसती थकी बोली।

—अरे पड़सी तौ म्हूं ऊंचाय लेसूं। लाधू मुळकण लागौ।

—तौ पछै ऊंचाय'र सुवांण क्यूं नीं दै यार ! दांतल बाबू हंसतौ थकौ बोल्यौ—नाजुक बदन है विचारी।

—यस-यस व्हाई नोट, व्हाई नोट। कप्तान ताईद कीवी। सांम्हली ऊपरली बर्थ वांरी खुदरी ही।

छेवट नतिजौ औ निकळ्यौ के सगळां रै कैवण सूं बापड़ी लुगाई नै ऊपर चढ़णौ पड़्यौ अर कांबलकी ओढ'र सूवणौ पड़्यौ।

नीचै सीटां माथै बातां रा गडिद उडण लाग्या। हाट बजार सूं लगाय'र देस-विदेस तांई री चरचा व्हैगी। छेवट बात जमांनै री नाजुकता माथै आय'र अटकगी। सगळां री आम राय ही के जमांनौ अंगांई माड़ौ आयग्यौ, धाप'र फोरौ। हाथ-हाथ नै खावै जिसौ। मिनख में सूं मिनखपणौ ई जावतौ रह्यौ। ईमांन-धरम सै डूबग्या। खोस खावणा अर नाठ जावणा री टैम आयगी। च्यारूंमेर कूड़-कपट, बेईमानी, जाळसाजी अर धोखैबाजी रौ धूंसौ बाजण लाग्यौ। भ्रष्टाचार री तौ हद ई व्हैगी।

म्हनै यूं लखायौ जांणै म्हूं सतजुग में पूगग्यौ हूं अर म्हारै सांम्ही सत रा पूतळा ई बैठा है। कंडक्टर ई कीं फबती बात कैय'र मंडळी में आपरौ सिक्कौ जमावणौ चावतौ पण कीं बात ध्यान में नीं आवण सूं बोलणवाळां रै मूंडै कांनी देखै हो। म्हनै उणरी मुख-मुद्रा घणी मजेदार लागी।

गाड़ी अबै रवड़क घम-घम ! रवड़क घम-घम री ताळ छोड़'र ताकड़ धिन्ना... ताकड़ धिन्ना री तर्ज माथै नाचण लागगी ही।

बैठक सांतरी जम्योड़ी ही। बहस नै ठेट टूंक तांई पुगावतां अेक जणो बोल्यो--मुलक में कितरो भ्रस्टवाड़ो फैलग्यो। दुकाळ जिसी कुटैम में ई भाई करोड़ां रुपिया डकारग्या। म्हारो वस पूगै तो इसा हरांमखोरां नै फांसी माथै लटकाय दूं।

म्हनै इण वातां में अणूंतो ई रस आयो। इण वास्तै लाधूराम नै गळियारै में दरी विछावतो देख'र ई म्हूं जम'र बैठो रह्यो। इतराक में लुगाई ऊपर सूं बोली—म्हूं ई नीचै आस्यूं।

—क्यूं ऊपर कांटा चुभै है के ? छांनी बोली पड़ी रैवैनी भली मिनख ! सुणै कोनी सा'ब लोग देस काल री किसीक सोवणी वातां करै।

—अजी कोरा सरकारी नोकरां नै ई क्यूं भांडो ? कंटक्टर कणाकलो चुप बैठ्यो-बैठ्यो अमूंजीजग्यो हो। सो वात री तूटोड़ो तार सांधतो बोल्यो—अै बैपारी किसा कम है ! भेळ-सेळ, जमाखोरी अर धोखाधड़ी सूं जनता नै दोन्यूं हाथां सूं लूटै, साधारण मिनख रो तो जीवणो ई कठण कर दियो हरामखोरां।

—लेट देम गो इन दी हेल माई डियर, नाउ वी सैल अेनज्वाय। कप्तान आपरै थैलै में सूं विलायती दारू री बोतल बारै काढतो बोल्यो—आई थिंक यू विल कंपनी मी ?

—व्हाई नोट, व्हाई नोट ! दोन्यूं वावूड़ा अेकण सागै ई उंतावळा व्हे'र वोल्या। —बोतल देख'र वारै लाळां पड़ण लागगी ही।

पूरा कोच में स्यापो छायोड़ो। ठंडक अर छांटा छड़ियो होवण सूं लोगड़ा वारियां वंद कर'र वख पूगो जठैई टांगड़ा लांवा कियां सूयगा। जाग ही तो फगत म्हांवाळी इण दोन्यूं सीटां माथै। जठै वहसवाजी वंद व्हैय'र मेहफल सरू व्हैगी ही।

डग....डग ! ....डग....डग !

गिलास फगत अेक ई हो। कप्तान नै विचार में पड्यो देख'र कंडक्टर बोल्यो—अेक सूं ई चालैला कप्तान साव ! आप क्यूं विचार करो।

—हां....हां....ठीक है, ठीक है। इण में कांई फरक पड़ै। पीवण इकां पछै दुभांत क्यूं ?

गिलास वारी सर फिरण लाग्यो अर फिरतो-फिरतो म्हारै कांनी आयो तो म्हैं हाथ जोड़ दिया।

—क्यूं ? ओ तो देवी रो परसाद, इण में कांई अेतराज ? कंडक्टर बोल्यो।

—म्हूं माफी चावूं ! म्है नरमाई सूं कहचौ।

स्यात म्हनै जागतौ बैठौ देख'र बातां में रस लेतौ देख'र उणां गळत अंदाज लगाय लियौ व्हैला। कारण के वांरी आंख्यां में औ सवाल उपड़तौ निगै आयौ के तौ म्हूं बैठौ क्यूं ?

कप्तान रै थैलै में स्यात् मुफ्त री माल हौ नसै री टेर अेक-अेक कर'र तीन बोतलां औरूं निकाली। होळै-होळै सगळांई घोड़ै माथै असवारी कर ली। कंडक्टर तौ अंगांई फैं व्हैग्यौ। वौ हाथ जोड़'र कप्तान नै कैवण लाग्यौ— एक बोतल औरूं सा'व अेक औरूं। पैसां री आप फिकर मत करजो। सौ-दो सौ म्हूं हरेक ट्रिप में कबाड़ लूं। अर वौ जेब में हाथ घाल'र नोट बारै काढ़ण लाग्यौ।

—लै रैवण दै यार थारा पैसा। कांई वानगी बतावै। म्हां वाळै मेहकमै में रोजिना सौ-पचास तौ साधारण बाबू कबाड़ लेवै। टाटियौ बाबू अटकतौ-अटकतौ बोल्यौ।

—जद तौ थें लाखां रुपिया जोड़ लिया व्हैला।

—अरे जोड़ै फेर कांई जोड़ लिया यार—दांतल बाबू रीसां बळतौ बोल्यौ—बापू नगर में सरमाजी री अेक लाख री तौ मकान ई है।

—अर व्यासजी रौ बंगळौ म्हा सूं ई सवायौ है।

—व्हैला वापसी ! .... कप्तान सा'ब फगत अेक .... प्लीज ! कंडक्टर री फोटू देखण जोग ही।

—यू ब्लडी—अर कप्तान हंसतै थकै अेक बोतल औरूं बारै काढ़ी।

अबकाळै बोतल खतम व्हैतां-व्हैतां मामलौ 'आउट ऑफ कंट्रोल' व्हैग्यौ। दांतल बाबू तौ बाकी फाड़'र उठै ई सीट माथै गुड़कग्यौ अर कंडक्टर'र टाटियौ बाबू आपसरी में फौड़ करण लाग्या—

—पग नीचै राख अे !

—क्यूं गाड़ी थारै बाप री है ?

—फौड़ मत कर कमीण।

—कमीण थूं अर थारौ बाप।

—थारौ बाप स्साळा, झापड़ धरूं ला अबार।

—भड़वा स्साळा !........ अर कंडक्टर बांयां चढ़ावण लाग्यौ। सगळै कोच में जाग व्हैगी अर लोग-बाग गळा काढ़ काढ़'र देखण लाग्या। आवारा छोकरा नै मजौ आयग्यौ। वौ बरखा बहार आई गुणगुणावतौ म्हारै कनै आय'र ऊभौ व्हैग्यौ अर मलजुद्ध री उडीक करण लाग्यौ। लुगावड़ी हाका हूवौ सुण'र कांबलकी ओढ़ली अर चापळ'र सूयगी। गळियारै में सूतै लाबू नै लोगड़ा चींथण लाग्या तौ उणरी आंख खुली अर वौ हाक बाक व्हियौड़ौ देखण लाग्यौ। दोन्यूं जूंझार बाथ्यां आयग्या हा के कप्तान बीच में कूदग्यौ। —यू डेम ब्लडी—अर अेक झटकै सूं कंडक्टर नै सीट माथै नांख दियौ अर धक्कौ देय'र बाबूड़ै नै सीटां रै बिचाळै सूवांण दियौ। थोड़ीक ताळ दोन्यूं जणां बड़-बड़

करता रह्या अर पछै सै कीं सांत व्हैग्यो । नाटक री पटाखेप वेगी ई व्हियो । कप्तान ऊपर जाय'र सूयगो अर म्हैंई गळियारै में दरी विछायली ।

सियाळै री रात अर माथै महावटो । थोड़ी ताळ में पूरै कोच में सोपो पड़ग्यो । गाड़ी ताळ-लय सूं निरत करती दौड़ती री अर ऊंघ-ऊंघ में न जांणै कितरा टेसण लारै छूटग्या । किण नै ई बोलतो सुण'र अंचांणचक म्हारी नींद उड़गी । कोई कैवै हो– बारी बंद कर यार, छांटा आवै ! पण किणीं ध्यांन नीं दियो । डिम लाइट में म्है ध्यान सूं देख्यो तो जांण पड़ी के टाटियो बाबू सीट पर सूता दांतल बाबू नै आ बात बार-बार कैवै हो । दांतल बाबू आंख्यां मींच्यां ई पड़्यै-पड़्यै बारी माथै हाथ फेर'र कह्यो—बारी तो बंद है यार !

—तो पछै इतरा छांटा कठै सूं आवै यार ! म्हारा तो कपड़ा ई आला व्हैग्या ।

—हां छांटा तो म्हारै ई लागै........पण........पण.... बारी तो बंद है ।

—तो पछै कांई छत फूटगी ? अरड़ात करती वा छांट आवै यार ।

दोन्यूं नसा में चूंच व्हियोड़ा, आंख्यां ई नीं ऊघड़ै ही । पण छांटां सूं नेहचो कर'र सूवणो कठण हो । कंडक्टर ई उठनै बैठो व्हैग्यो अर मूंडा माथै हाथ फेरण लाग्यो । स्यात् उणरै ई वा छांट लागी ही । उण ऊठ'र खटाक सी लाइट कर दी । डिब्बै में सैंचन्नण व्हैग्यो । चांनणो व्हेतां ई सै सूं पैली ऊपरली बर्थ पर सूती लुगाई री आवाज सुणीजी....वा जोर सूं कूकी....अे बाई !

म्हारी निजर ऊपरली सीटां कांनी गई तो सरम सूं माथो नीचो व्हैग्यो । कप्तान नसा में धुत्त, सीट सूं टांगड़ा नीचा लटकायां आंख्यां मींच'र नेहचा सूं लघुसंका निवारण करै हो । पछै तो बाबूड़ा अर कंडक्टर मिळ'र वो रोळो मचायो कै कोच में सगळै मुसाफरां नै जगाय दिया । पण जितरै वै कप्तान सा'व आपरो काम निवेड़'र पाछा घोर खांचण लागग्या हा । कंडक्टर रीसां बळतै उणांनै झिंझोड़'र जगावण री कोसिस करी तो हाथ सीधो पिस्तोल माथै पड़्यो— यू ब्लडी........नोनसेंस !

इणरै पछै किणीं चूंकारो ई नीं कियो । वास बेसिन माथै हाथ मूंडा धोय, कपड़ा बदळ'र सगळा ई चुपचाप सोयग्या ।

दिनूंगै गाड़ी जोधपुर पूगी तो सगळाई उतरण सारू खायावळ करण लाग्या । म्है कंडक्टर नै कह्यो— कप्तान सा'व नै जगावो कोनीं ।

—मरण दो यार ! तीनूं आसामियां अेक सागैई बोलो । सेठ वाळो आवारा नोकर डिब्बै सूं उतरतो-उतरतो ई मस्ती सूं गावै हो – बरखा बहार आई .... बरखा !

* * *

अफसरी : अेक लखांण

किरण नाहटा

कुरसी री संजीवण परस पाय'र
तर तर तणतौ जावै
म्हारौ औ डील
अर लगोलग बधतौ जावै—आंतरौ
म्हारै अर म्हारै हेताळवां बिच्चै

काल तांई जिणां रौ आकासी अट्टास
हौ म्हारै ई अंतर रौ उजास
आज वां रौ ई मुळकौ
काळजै करोत-सी बावै

सकाळू मन
भोळा खिरगोसिया उणियारां माथै देखै—
ऊदबिलावी आंख्यां
झाबरिया कांन
अर केहरी दाढ़ां
खुद रौ पड़बिम्ब

लीलै आभै में भंवती सिकरौ मन
जींवत गिटणा चावै
ऊजळी बेकळू माथै किलोळां करता

नान्हा जीव-जिनावर
उरणिया, सुसिया अर कूकरिया

जद जद आंख्यां हेटै फिरतो दीखै
पांगळी जामण खातर
पांवडै-पांवडै खटतो रामदीन
बेटी रै पांगरतै डील सागै
सूकतो
पैंसन-भीरू, वीरू
अर खुद री डिगरियां अर फाईलां रै बोझ
लुळ-लुळ'र पड़तो
नवोड़ो बाबू धीरू
आं सगळां रा लटाफोरी करता चितरांम
मन में अणमावतो मोद भरै
अर म्हारो मन
बंगलां-बंगलां
सैरां-सैरां
लुगायां-लुगायां
प्रमोसनां-प्रमोसनां सरसरातो फिरै
अर जद बावड़ै अर घिरै
तो मुजरा, अरदासां अर जुहारड़ा
वां सगळां नै
जिका म्हारै सूं सिरै

हाकमी अर चाकरी
चाकरी अर हाकमी
अे म्हारा सोल्याळ मन
नीं जांणू
के है थारी गत
थारी मत
थारो सत

* * *

जिन्दगांणी कठै

भागीरथ सिंघ भाग्य

ला जीवूं चैन सूं जिन्दगांणी कठै
डूब मर ज्याऊं ढकणी में पांणी कठै

भागतं भूत री वाळ कांबळ व्हियौ
अब बता सरदियां अै बितांणी कठै

थे कैवौ तौ बळद बण उमर काढ़ दूं
तेल निकळै तिलां में वा घांणी कठै

देवतां नै हियै में रमाऊं कियां
रामजी पीर मिनखां री जाणी कठै

लोग बातां में देखै गजल री कड़ी
और गजलां में पूछै कहांणी कठै

* * *

जस

रमेस मयंक

समदर ज्यूं पसरचोड़ो
आदमी रौ मगज
पांणी में ऊठता
वड़वड़ा री भांत
सोचतौ-विचारतौ रैवै
पण
करै-धरै कीं नीं
—सगळी ई विरथा जासी
आ तौ जमांना री रीत
के कैवा आळा करतां
करवा आळौ ई
सगळां रै मूंडै
सरावण रौ जस पासी

* * *

उण री आंख्यां में

अरजुन देव चारण

उण कद देखियौ
सूरज रौ डूबणौ
अर ऊगणौ चांद रौ

भूख गैळीजियौ वौ
तड़फा तोड़ै
अठी-उठी पचै
अर बावड़-वावड़'र माथौ फोड़ै

खावणी चावै सेवट कुत्ती
आपरा ई जायां नै....

फूलती नसां
खींचण दूकै
रगत कालजै रौ
अर उणरी आंख्यां में
खुद रा टींगर ?
नीं-नीं
उफस-उफस आवती रोस्यां व्है

* * *

तीन कवितावां

आत्माराम

•

१

पड़दै लारै सूं
किणी अणजाण
म्हारा हाथ काट न्हांख्या
अेक रोटी री टुकड़ी फेंक'र

२

आपां सगळा पाडौसी हां
अेक दूजै रा दोसी हां
जिंदगाणी री अरथ आपां कांई जाणां
नख लागतां ई
अेक दूजै री घांटी मोसी हां

३

नींवां में गड जावौ
अेक मजबूत हवेली वणावौ
करण दौ
तारीफ सगळा जग नै
छाजै री

* * *

बीज में बरकत

कल्याण सिंघ राजावत

कळी फूल में रूप बदळगी
भंवरा री सैं बात समझगी
देखौ रुत री अेक अचंभौ—
दोवड़ी दरखत होगी रे
बीज में बरकत होगी रे

नुगरी पवन कुचरणीगारी
हर झौंकै छेड़ै उणियारौ
सांसां रै संग जा सामेळै—
सरबरा सरवत होगी रे
बीज में बरकत होगी रे

तन री तिरस जेठ री धरती
जुगां जुगां सूं रैगो परती
मीत मिळण री वेळ सुबेळा—
उमर ही तरपत होगी रे
बीज में बरकत होगी रे

मूंघौ है पण हंस बतळाणौ
लोगां रै बिच कुबद कमाणौ
देखौ जग री अबखो बांणी—
कांकरी परबत होगी रे
बीज में बरकत होगी रे

* * *

छ परसंग

जूना जुग : जूनी वातां

सौंभाग सिंघ सेखावत

खलल-पलल

म्हाराजा गंगा सिंघ जी कळजुग रा भागीरथ तो हा ई पण राजनीत में ई नारद जी सूं कम नीं हा। बीकानेर में आप जीवतां गांगं रा घणा लांबा हाथ-पग नीं होवण दिया। अंगरेजां रा काठा मुलाकाती होतां थकां ई अंगरेजां रा असर नै बीकानेर री कांकड़-सींव सूं आंतरै ई राखियो। आपरै राज में पैली बीकानेर रा पछै राजस्थांन रा अर पछै भारत रा दीवांण, मुसायब, कामेती इत्याद राज रा कांम में रागता। उमेदवार मिनखां री 'इंटरव्यू' लेवता जद महाजन राजा हरी सिंघ जी इन्टरव्यू में बैठता अर राजस्थानी भासा में सवाल-जवाब पूछता। नौकरी सारू राजस्थांन सूं बारला उमेदवार ई खुद नै राजस्थांन रा बताता। वांनै वै राजस्थांनी रा गद्य अर पद्य बंचावता। घणकरीकवार औ दूहो पढ़ाता—

पळळ पळळ पावस पड़ै, खळळ खळळ नद खाळ।
भळळ भळळ बीजळ भळै, वाह रे वाह बरसाळ॥

राजस्थांन सूं बारला लोग 'खलल-खलल, पलल-पलल' करण लागता क्यूं के वां री जबांन में 'ळ' नांव री चीज ई नीं व्हैती। तद वै मीठौ जवाब देता—"म्हांरै अठै रा लोगबाग तौ राजस्थांनी जांणै। अर अठै रा लोगां सूं ई लेण-देण, कांम-काज राज में बेसी पड़ै। जिकौ मारवाड़ी नीं बोल अर समझ सकै वौ अठै कीकर कांम कर सकै।"

खीचड़ै हाथ

जोधपुर री धणी राव जोधौ प्रतापीक राजा व्हियौ। राव जोधौ राव रिड़मल रौ मोभी बेटौ हो। राव रिड़मल चीतोड़ में धोखा सूं मारियौ गयौ हो। रिड़मल नै मारियां पछै चीतौड़ रा सिसोदियां राठौड़ां रा पाटथांन मंडोर पर आपरौ हांमपाव जमाय मारवाड़ पर

हुकम-हासल कर लियौ। राव जोधै मंडोर नै पाछी जीतण तांई बरसां ताफड़ा तोडिया, पण मंडोर जोधा रै रस नीं आई। मंडोर माथै घणी ई खेड़ करी, घणा ई धावा बोलिया, घणा औसांण लिया पण सिसोदियां रै धकै जोधा रै पराजै ई पल्लै घलती रह्यी। अेक वार राव जोधौ मंडोर माथै हाकौ कर भूख-तिस सूं आकळ-बाकळ होयौ थळी में अेक चौधरी (जाट) री ढांणी में थ्यावस लियौ। चौधरी जोधा अर उण रा साथी-संगळियां नै आव बैस दी। पछै बाजरी री खीच रंधायौ। ऊनौ-ऊनौ खीच राव जोधा अर उण रा मिनखां नै पुरसियौ। मांय मोटौ सारौ खोवौ कर पारियां में ठसियोड़ौ पोळी गायां रौ घ्रत घालियौ। भूख-तिस अर दूर री जात्रा सूं थाकैलौ चढ़ियोड़ौ जोधौ सटकै ई ताता खीच रै बीच में हाथ घालियौ। ताव सूं जोधा रौ हाथ दाझग्यौ। आ देख चौधरी री जोड़ायत जोधा नै कह्यौ—'मोटियार! तूं तौ राव जोधाजी री नांई ठोठ बुध दीसै है।' इण माथै जोधै पूछियौ—'चौधरण! जोधौ ठोठ बुध किण रीत है?' जद चौधरण पडूतर दियौ—'जोधौ जी मंडोर री आखती-पाखती री धरती माथै तौ आपरौ जमावड़ौ जमावै नीं अर वार-वार सीधौ मंडोर नै हाथ घालै। आपरा घोड़ा, ऊंट, वैंता अर मिनखां नै मरवाय'र पाछौ आवै। इण सूं जोधौ कम अकलौ। अर तूं ई असपाड़ै-पसवाड़ै सूं सावळ ठार-ठार'र तौ खीचड़ौ खावै नीं, सीधौ बिचै हाथ घालै, सो हाथ तौ बळै ई।'

चौधरण री बात जोधै रै हियै जमगी। पछै मंडोर रै कांकड़, सींवाड़, अगल-बगल, अड़ौस-पड़ौस रा चौकड़ी, कोसांणा, सोजत गांवां माथै चढ़ायां कर आप रै कब्जै किया। जीवरखां री ठौड़ करी। पछै मंडोर पर गयौ अर मंडोर माथै हांमपाव कियौ। पछै हौळै हौळै आपरौ राज जमायौ। जोधपुर रा किला री रांग दिराई। आपरै नांव सूं जोधपुर नगरी बसाई, सुख भोगियौ।

◊ ◊

अेक पीसै रा लेवाळ

मारवाड़ री नागौर पट्टी में जायल, खींयाळौ अर रौळ-मूंडवौ जाटां रा सखरा गांव कहीजै। लोक साहित में जायल-खींयाळा रा चौधरियां री नेकनांमी अर भलापणां रा आज ई आखा राजस्थान में व्यावां रै मौकै गीत गवीजै है। समै बीत जावै, पण नांवबरी नीं जावै। नांव ई लोक में क्यां जोगौ व्है तौ जीवतौ रैवै, नाजोगा तौ मरता-जळमता ई रैवै है। उणां नै कुण चितारै। सो जोधपुर रा धणी मानसिंघ जी रै समै में रोळ में हरनाथौ चौधरी नामजदीक व्हियौ। घणौ समझणौ—घणौ स्यांणौ। रहणी-कहणी रौ धणी। बास-पळिया रौ वाल्हौ। चौखळा रौ चावौ। राजा-रैयत रौ हेताळू। आपरी खाटी कमाई खावू। पराई कमाई नै सिवजी रै सीस चढ़ियौ उदक मांनणियौ।

मानसिंघ जी घणा ई टणका; अकल उजीरात रा ठाडा, न्याव-लोभी राजा हा। पण अंगरेजां रा अड़ंगां, मरैठा-पिडारां रा टंटा-झगड़ां, जागीरदार-सरदारां रा राड़ा-रगड़ां में पूरी ऊमर उळझियोड़ा ई रह्या। मारवाड़ री न्याव-थपाव, हासल-हुकम, राजकाज अैलकारां-

कारकूनां रै हाथै चालियो। अैलकार करसां कनां सूं मण लेवता तौ राज में कण ई पूगतो। सारा हासल रा हाकम, तैसीलदार, पटवारी, डांणी खाजा-मोजा कर जावता। कोटवाळ-कणवारियां सूं नकसांसियां आई रैयत नै देख'र हरनाथ जोधपुर आयो। मानसिंघ जी कनै हाजर व्हियौ अर वां नै तांवा रो अेक पीसो निजर करतां कह्यो—"धणी रो भाग तौ मोटो है, पण हक इत्तो ई है।" म्हाराजा मानसिंघ जी पूछ्यो—"कीकर ?" जद कह्यो— "मोहर हाकम रै चली जावै। रुपियो तैसीलदार खा जावै। अधेली पटवारी रै पांनै चढ़ जावै। पावली कोटवाळ रै पल्लै वंधै। आंनो कणवारियो खेंच ले जावै। पछै राज में तौ अेक पीसो ई लारै रैवै, सो खजांनै आवै। सो धणी तौ अेक पीसो नजरानां रा लेवाळ हो।"

पछै मानसिंघ जी अैलकार हाकमां रा घणा कांन मरोड़िया अर लूट-खसोट मिटाई।

• •

सिंघी-भंडारी

मारवाड में भंडारी, सिंघी, पंचोळी अर पुस्करणां री धड़ो हो। राजकाज में आं लोगां री घणी चालती। भंडारी अर सिंघी तौ म्हाजनां में हा, पण समांन व्रत्यां रै भेळ नीं व्है। अेक दूजा री कटती चालती ई रैती। भंडारियां अर सिंघवियां रै ई संप नीं हो। आपसरी में खड़वड़ीजवौ ई करता। होडा-होडी घणी चालती। अेक दिन भींवराज सिंघी अर भवांनी रांम भंडारी जोधपुर रा किला में वैठा हा। भींवराज जी सिंघी भवानीरांम जी नै कह्यो—"भवांनीरांम सा, सिंघी अर भंडारी नांव राज-समाज में सागै-सागै वोलीजै है, पण सिंघी-भंडारी जोड़ा में पैली सिंघी अर अछै भंडारी वोलीजै है।"

भंडारी भवांनीरामजी, सिंघी जी री अरथ भांप लियो। आव देख्यो न दाव, झट सूं कह्यो--"सांची वात है भींवराज सा। औ तौ ठेठ परंपरा री ई जोड़ो है। राधा अर किसन, सीता अर रांम, लिछमी अर नारायण सगळा साथै-साथै वोलीजै—राधाकिसन, सीतारांम, लिछमीनारायण पण, पैली राधा, सीता अर लिछमी रा नांव आवै पछै किसन, रांम, नारायण रा नांव वोलीजै है। वीरवानियां री ठेट सूं ई घणी ईजत रह्यी है।

दरीखांना में वैठा सगळा मिनख हंस पड्या।

• •

कळदार रिपियौ

कुचामण ठाकर सेरसिंघ जी अपर वळी हा। उणां रै कुचामण में पहलवानां अर मल्लां रा आठ अखाड़ा हा वै खुद दिन उगतांई घोड़ां ने पेटावा खाग्ड़ा में निकळ जाता। उणां री चिमठी अतरी वळ ही के चूंठी रा रगड़का सूं मूंडीसाही कळदार रिपिया रा आखर मसळ'र मिटा न्हांखता। उणां रै आपांण री चौखळा में वातां चालती। ठाकर सेरसिंघ जी रै अड़ौगड़ी ही उणां रै गांव में भीम वळी गोधो जी प्रजापत हो। वौ मांटी रा वासण घड़वा रो ववौ करतो, जिणां सूं गांव आळा उणनै गोधौ मठेड़ो कहता। गोधौ अेक दिन सालगिरै टांणै सेरसिंघ जी नै नजर करवा गयौ। सेरसिंघ जी गोधा रै आपांण री वातां सुण राखी ही।

गोधौ गढ़ में जाय'र सेरसिंघ जी नै अेक कळदार रिपियौ नजर कियौ। सेरसिंघ जी उणां री हथेळी सूं चिमटी सूं रिपियौ उठा'र जोर सूं मसळ नै गोधा नै कह्यौ—"गोधा रिपिया रा आखर घसियोड़ा लखावै है।" गोधौ ठाकरां री मनसा जाणग्यौ। झट बोल्यौ—"देखां, श्री म्हाराज म्हनै पाछौ दिरावौ, किसोक है?" कह'र रिपियौ पाछौ लियौ अर दोनां हाथां री आंगळियां सूं रिपिया रा दोय ढव्वर करतौ थकौ कह्यौ—"अन्नदाता जी द्रव रौ तौ चोखौ है। चांदी में मिलावट तो कोनी।" दोनूं ई समवळी मुळक'र अेक दूजा कांनी देखण लागा।

◈ ◈

गाभां रौ मोल

सेखावाटी रै सादा रा सायजादा में चौकड़ी सिरायत ठिकांणौ हौ। सादा जी रौ पूरौ नांव ठाकर सादूळ सिंघ जी हौ। सादूळ सिंघ जी झूंझणू रा नबाबी राज नै जीत'र आपरा पांच बेटा में बरोबर बरोबर पांच पांत्यां में बांट दियौ हौ, जिकौ पंचपानां रा नांव सूं आज तांई ओळखीजै है। पचपानां रौ अेकठ अेक संघ हौ। उण रा सिकतरी जद चौकड़ी ठाकरां गोपाळ सिंघ जी नै कागद लिखता जद वै पाछौ उथळौ देता जिणमें सिकतरी जी पूणी पांच पानां लिखता। वै कहता—"म्हैं पंचपानां में नीं हूं। आखी सेखावाटी संघ रै सामलात हूं। अर म्हांरौ पाव पांनौ 'पंच पानां' सूं न्यारौ है।" गोपाळ सिंघ जी बडा जोमराड़ हा। कदैई गोरां सूं अर बडा राजा सूं नीं दव्या। अेक वार चौकड़ी में नौलगढ़ रौ अेक म्हाजन कपड़ां री दुकांन घालण री दवायतौ लेंवण सारू ठाकरां कनै आयौ अर भांत भांत रा धारीदार अंगरखा रा, चौकड़ी भांत कुड़तां-केखळियां रा कपड़ा अर सांतरा बारीक पोत री मलमलां, धोतीजोड़ा, साफा, ठाकरां नै दिखाया। ठाकर कपड़ा देख घणा राजी होया अर साहूकार री बडाई करी। साहूकार आपरी बडाई सुण'र मोद में गाभां रौ मोल बतावण लागौ—"अनदाता! औ मलमल रौ थांन चाळीस रिपियां रौ है। औ धौती जोड़ौ इग्यारै रिपियां रौ है। औ चौखांनौ सवा रिपियै गज है।"

ठाकर कपड़ां री भाव सुण'र नाराज व्हैता थका कह्यौ—"ठगोरा कठा ई रा, औ ई कोई गाभां रौ मोल व्है? धोतीजोड़ौ आछा सूं आछौ रिपिया सवा रिपिया रौ। मलमल रा साफा रा सवा दो, ढ़ाई। औ देख म्हारी धोती रौ जापांनी लट्ठौ है जिकौ बारै आनां रौ है। पागड़ी तीन सौ छिहतर री मलमल री, चाळीस वार री है, जिण नै पांच पावली में खरीदी है। म्हारा करसणी इस्या मूंघा गाभा मुलावसी जद यां रा टावर-टींगर कांई खाय'र पळसी। थारो दुकांन अबार री अवार उठा परी। म्हारै अठै ठगोरा कोनीं चालै।"

साहूकार ठाकरां री डांट सुण'र सूभर सांड री भांत आपरा होठ लटकाय'र घर सांम्हौ व्हीर व्हियौ।

* * *

•

उपन्यास री तीजी खेंप

खुलती गांठां

पारस अरोड़ा

•

सूरज री वस रूपाळू सूं वहीर व्ही, तद ओमा म्हराज री ई कीं जीव हळको व्हियो । वस ऊभी रैयी जित्ते म्हराज ई किसना काका री चिलम लेय'र जमगा । वस ऊभी ही, किसना काका री गिरायकी रो वगत हो, तो ई हाथ खाली व्हियां अेकाध फूंक खींच लेवता ।

म्हराज चिलम पीवता सोचण लागा····सूरज तो जा इज रैयो है । अबै इण तारूड़ी नैं ई सावळ समझावणी पड़ैला ।····व्है सकै, दोनां रा मन मिळगा व्है अर आगै री ई कीं तेवड़ियोड़ी व्है । भगवाना री भरासो नीं—सेठां रो छोरो, आ उकळती उमर अर सांमी जवान छोरी । फूटोड़ा घड़ा रै कारी नीं लागै । छोरी रै भाग में रडापो काढ़णो लिखियो है तो काढणो पड़ैला । करमां रा लेख कुण मेट सकै ।····छोरो तो इण सार्थ मूंडो काळो कर पाछो सतवंती व्हैजा ला । हे भोळानाथ ! अबै तो इण गरीब वामण री लाज थारै हाथ है ! देख ओमला ! कैड़ी बीती है थारै में····

····नवो ज़मानो है । नीं व्है जिको ई चोखो । जे ओ छोरो तारा सूं व्याव री तेवड़लै के घर मे घालणी विचारलै तो कुण रोक सकै । छोरी लाखां में अेक हीरा री कणी व्है ज्यूं । सागैसाग आपरी मां रै उणियारै । वा ई कम नीं ही । वा तो आपरी ही जित्ती उमर काढ़गी पण इणरी तो आखी उमर पड़ी है । आ हाल देख्यो ई कांई है ?····जे दोनूं व्याव री तेवड़ली तो आड नीं दे सकूंला ।····मांनी के न्यात-जात में रैवणो है । पण म्हारै कियो अबै कोई टाणो काढणो है ।····पण हाल तो गांव मे निकळणो मुस्किल व्हैजा ला । जणै जणै नै जवाब देवणो भारी । दो दो कोडी रा मिनखां आगै माथो नीचो करणो पड़ला ।··· लोग मोवन रै बारै में ई कैवै के म्हराज छोरै नै केवट नीं सक्या ! खोटो-खरो हो जैड़ो ई बेटो तो हो ।····अंत सगै में खांद तो देवतो । मांनी के वो आपरी रै लुगाई कैणे में हो, पण आजकाल तो सगळा ई छोरा घावळिया री जूं वणता जेज नी करै । कैवत मे कैवै के पूत कपूत व्है सकै पण मायत कुमायत को व्है नीं छोरा नै गांव छोडियां वरस वीतगा पण म्हे कदै ई सैर जाय'र नीं

मिळियौ फाऊ री ग्रांट तौ फोड़ा इज भुगतावै ।····नै तारा साथै सूरज रौ नांव जुड़ियां पछै ओ सेठ म्हनै कियौ सोरै सांस जीवण देवैला । न्यात में तौ अबै इण छोरी री पाछी कीं व्है नीं सकै ।····हां उण दिन मेड़ता सूं आयोड़ौ श्रीकिसनौ कैवतौ के उणरै पाखती रा गांव में गौरी-संकर नांव रौ कोई है, चाळीस नैड़ी उमर रंडवौ है कोई आगै-लारै कोनीं । वौ छोरी नै राख सकै । पण जीव पतीजै कोनीं ।····इत्ती में बस री भोंपू सुणीज्यौ । म्हराज चेतन व्हेय'र ऊभा व्हेगा ।

बस मोड़ लेय'र वहीर व्हेण लागी । म्हराज दोय पग बस रै नैड़ा धरिया । सूरज सूं चौनिजर व्हिया वौ मूंडौ फेर लियौ, जांणै म्हराज नै देख्या ई नीं व्है । उणी वगत सूरज री अवाज सुणीजी 'चालूं तेजू ! लारै ध्यान राखजै ।'

बस री बारी नैड़ै ऊभौ तेजसिंघ बोल्यौ—'हौ, हौ ! थूं वेफिकर रैईजै । नै पूगतै पांण ई कागद दीजै ।'

म्हराज अेक निजर तेजसिंघ नै देख'र लाभजी सेठ कांनी वळगा । सेठजी वांनै आवता देख'र सांमी पग धरता वोल्या—'आवौ म्हराज ! सूरज नै आज जोधपुर वहीर कर दियौ हूं ।'

म्हराज नै लखायौ के सेठजी कीं उणमणै मन सूं वोल्या है । अर वांरी वात में अेक सवाल है के म्हे तौ छोरा नै भेज दियौ अबै थे कांई कर रैया हौ ? म्हराज अेक चलताऊ सवाल पूछ लियौ—'किणी खास कांम सूं भेजियौ हौ ?'

सेठजी सामलै मिंदर री सूनी चांतरी कांनी वधतां कैयौ—'हां, आवौ चांतरी माथै जमौ ।' अर दोनूं चांतरी रै किनारै पग लटकाय'र वैठगा । सेठजी डावौ पग ऊंचौ लेय'र अेडी अर गिरियै बिच्चै खाज खिणता वोल्या—'खास कांम तौ कंई । छोरा नै थोड़ौ वौपार रै तजुरवै तांई भेज्यौ हूं । सैर में रैवैला तौ चार पैसा कमावणी सीख जाई । गांव में क्यांणौ वौपार, कोई छोटी सीक दुकानड़ी लगायलौ के खेत खड़लौ ।'

'सांची वात !' म्हराज हांमळ भरी ।

'सैरां में लाखां रौ वौपार है । वदळतै वगत साथै वौपार री रंगत वदळै । अर वगत री नवज सैरां में पकड़ीजै ।'

'आतौ है ई !'

दूजी वात ! टावर फाऊ फिरता फिरै तौ कीं न कीं उल-फेल सूझै इज कंई ?' सेठजी सवालिया निजर सूं म्हराज कांनी देख्यौ ।

म्हराज हांकारौ भरता वोल्या—'साव सांची वात ! जावण सूं पैली भगवानौ कालै म्हारै कनै आयौ हौ ।'

'हूं !'

म्हराज पसवाड़ो वदळता बोल्या—'म्हैं तो उणनैं आ इज कैयी के देख भाई थारो बाप वगत रो पारखू है। वो कदैई फोरी वात नीं सोचैला।

सेठजी म्हराज री वात सुण हळका व्हेता बोल्या—'जणैं पछै ! नैं दूजी वात आ है म्हराज के अबै छोरो परणावै जेड़ो व्हेगो। अै सेठ किरपारामजी म्हांरी न्यात रा है। अर म्हारा खास मित्रां में ई है। यांरै अेक जवान बेटी है। अै सूरज सारू ब्याव री वात करी।'

'ठीऽऽक' म्हराज नैं वात में कीं दम निजर आयो।

सेठजी बोल्या—'म्हैं तो वांनैं साफ कै दियो के औ रैयो छोरो। म्हारी ना नीं है। कैवो जदै ई वरात लेय'र आ जावूंला। वै अेक वार छोरो नैं ई छोरो वतावणो चावता। वै कैयो के उठै इज सैर में छोरा नैं कोई काम-धंधो खुलवाय देवैला अर छोरा-छोरी आपस में अेक दूजै सूं मिळ लेवैला।'

म्हराज बोल्या—'पण छोरो जावती वगत कीं उदास हो। उणरो गांव छोडण रो मन नीं हो।'

सेठजी म्हराज रै खंवै हाथ धरता बोल्या—'कैड़ी वात करो म्हराज ! जे आपां यूं टावरां री उदासी अर नाराजगी री गिनरत करण लाग जावां तो टावर साव माठा व्हेय'र निसरमाइ वरतण लाग जावै। अै कालै कीं खरो-खोटो कर लियो तो मां-वाप रो नांव वखांणैला।'

म्हराज पागड़ी उतार माथो कुचरता बोल्या—'हां, आ वात तो है इज।'

सेठजी ऊभा व्हेता पूछ्यो—'दीया बत्ती व्हेगा है, चालूं। आपरै ई मिंदर जावणो व्हेला। मिंदर पछै घर में इज लाधोला ?'

'हां, क्यूं ?'

'यूं इज कीं वातां करणी ही थांसूं।'

'कैवो तो म्हे इज आ जावूं'

सेठजी दोनूं हाथां सूं ना देवता बोल्या— नीं, नीं ! आप कठै अंधारै में फोड़ा भुगतो वापजी ! हूं इज आ जावूंला।' इत्तो कैय'र वै अेक गळी कांनी पग धरिया।

म्हराज ई ऊठ'र सांमी किसना काका री दुकान कांनी पग धरियो। उणी वगत तळाव कांनी सूं आवती अेक पिणियारी छींक करी। म्हराज लारै घिरनैं देखता थका बोल्या— कंई वात है वा, क्यूं छींका-छींकी करै है ?' अर म्हराज री वात सुण वा लुगाई मूंडो फेर लाज करती आगै वधगी अर म्हराज होटल माथै पूगा।

म्हराज नै देख'र किसना काका बोल्या—'आवौ म्हराज, बिराजौ ! कंईं कैवता लाभजी ?'

म्हराज पाखती रै खाली पाटियै माथै बैठता बोल्या—'कैवै कंईं ! कैवता के छोरा नै जोधपुर में वौपार करण सारू भेजियौ हूं। म्हे कैयौ—चोखौ कियौ।' म्हराज ओछी में बात काटी।

किसना काका चिलम में तमाखू भर, सिगड़ी सूं खीरौ काढ माथै धरता बोल्या—'चोखौ कियौ, भेज दियौ। आं दिनां में इण छोरा रौ ई ढाळौ विगड़गौ हौ।' इत्तौ कैय'र चिलम रै साफी लपेट, खीरा नै कीं अगूठै सूं दबाय धीरै-धीरै फूंक खेंचण लागा।

म्हराज कीं चेतन व्हेय'र किसना काका सांमी देखतां पूछयौ—'क्यूं रे, ग्रैड़ी कंईं बात देखी रे किसना ?'

किसना काका अेक लम्बी फूंक खींच'र नाक-मूंडै सूं धूंग्रौ काढ़ता चिलम म्हराज नै पकड़ाई। म्हराज पाछी साफी लपेट'र फूंक खिंचण लागा जद किसना काका बोल्या—'कंईं, कईं बात म्हराज ! म्हैं तौ आखौ दिन दुकान माथै बैठौ देखूं। सवार व्हौ के सिंझ्यार व्हौ, लुगायां रै पांणी आवण री टैम व्ही नीं नै अै छोरा बेटा टोळी री टोळी बणाय'र सामली मिंदर री चांतरी माथै जम जाई। ग्रौ भगवानौ ई ठाकर सा आळा तेजा अर दोयेक दूजा छोरां साथै इण पोस्ट-ऑफिस रै डागळै चढ़, उठीनै तळाव कांनी मूंडौ कर डागळै री बिंडी माथै जम जावै। पछै अै बेटा लुगायां नै आंख्यां फाड़-फाड़'र देखण लाग जावै। जब्बर तूफान मचाय राख्यौ है। कोई किणी नै कांकरौ मार रैयौ है तौ कोई किणी रै लारै जा रैयौ है, तौ कोई किणी नै इसारा कर रैयौ है, तौ कोई बेटौ रागा कसी कर रैयौ है। इण ठाकर सा आळै जोधै नै तौ अबार कीं दिनां पैली लोग सांवता आळी चुकली रै साथै मोतिया आळै खेत में देख्यौ। ग्रौ तौ टाबरां रौ बाप है। पण इणरै बारै में कोई बोलै इत्तौ काळजौ किणरौ। दूजा छोरां माथै इणरौ इज रंग चढियौ है।'

'राम, राम ! देखौ छोरां रा हीया फूटा है।' म्हराज बोल्या अर चिलम किसना काका नै झिलाई।

किसना काका चिलम माथै अंगुठौ दबावता बोल्या—'नै लाभजी आळै भगवाना री आंख अस्टपौर थांरली तारूड़ी माथै रैवै। चोखौ व्हियौ, सैर गयौ परौ ! इणरी ई बुद्धि भ्रिष्ट व्हैगी ही।' इत्तौ कैय'र पाछी फूंक खींचण लागा।

म्हराज तारा रौ नांव सुण झटकौ खायौ। अेकर तौ चैरा री रंगत उतरगी। पण झट सावचेत व्हेय'र बोल्या—'छोरा तौ खरैखर उधम मचाय राख्यौ है किसना ! लाज-सरम तौ घोळ'र पीगा है। ग्रौ भगवानौ तौ लम्बौ व्हियौ। दूजोड़ां रौ ई कीं न कीं करणौ पड़ैला। यूं तौ बैन, बैटियां अर भवां रौ घर सूं निकळगौ मुस्किल व्हेजा ला। अेक दिन चालां कीं ठाकर सा सूं बात करां।'

'ठाकर सा सूं अबै कीं नीं व्है ! जोधसिंघ री करतूतां कुण नीं जाणै । अबै जोधो ठाकर सा नै दांव नीं देवै । म्हनै तो जचै कोनी म्हराज के रावळा में सुणवाई व्हेला । आंखियां आया वत्ताई में व्हीला ।'

'म्हैं खुद इज ठाकर सा सूं वात करूंला । डर किण वात रो····या भई वा····' कैवता ऊठगा अर धीरैं-धीरैं वड़वड़ावता आपरै घर कांनी वहीर व्हेगा । अंधारो पड़ण लागगो हो । तारा-मंडल उघड़ण लागगो हो । दीया वत्ती व्हेगी ही । म्हराज मिंदर व्हेय'र घरै पूगा ।

तारा रसोई-पांणी सूं निवड़गी ही, परीडै कियोड़ी जोत बुझूं-बुझूं ही । भगवान रा आळा में सैलंग जोत जगती ही । आळै सू आरती आंग्यां रै लगाय म्हराज पाछा मुड़िया । तारा बोली—'जो, जीमल्यो !'

म्हाराज बोल्या—'थूं जीमलै बेटी ! हूं की जेज सूं जीमूंला ।'

पछै म्हराज बारली चांतरी माथै मचली जमाय'र जमगा । सोचण लागा के लाभजी ई आवणाळा है । जे वै तारा री वावत कीं बोल्या तो म्है ई खरी-खरी सुणाय दूंला । थूं छोरा नै आधो कर सकै, म्हैं इण विधवा छोरी नै कठै काढूं ? छोटी जात रो तो हूं कोनीं के छोरी री कठैई नातो कर दूं । खुद रा छोरा नै क्यूं नीं बरजै । क्यूं वो म्हारी छोरी री लारो करै । पैली खुदरै छोरा नै तो सुधारलै, पछै दूजां री नांव लीजै ।

यूं विचारतां ! म्हराज चिलम रो इरादो कियो इज हो के गळी में निरक सुणण लागा अर सेठां रै धुरकारै री अवाज सुणीजी । म्हराज ऊठ मांथो जावता बोल्या—कुण, लाभजी ?'

'हां, म्हराज !' सेठजी पडुत्तर दियो । अर म्हराज माथै मचलो माथै आय जम्या । तारा लालटेण लाय'र चांतरी माथै धर दी । सेठजी री संका देख म्हराज कोई अठी-उठी रो कांम बताय'र तारा नै आघी करी ।

तारा रै आघी व्हियां पछै सेठजी बोल्या—'थारी तारा नै देख'र मन भारी व्हेजा म्हराज ! कैसी फूटरी-फरूरी अर हुंसियार छोरी है, नै कैड़ी किस्मत लाई है । थैं हो जित्तै तो गाडो धक जावैला, पछै इण रै कुण है ? कीं न कीं तो सोचणो इज पड़ैला म्हराज ! सासरा आळा नीं राखै तो पूड़ वांनै । जमानो वदळ गयो है । कोई दूजो डावड़ो देखो ।'

म्हराज घाटी हिलावता बोल्या—'ओ दुख तो म्हनै ई घणो सालै लाभजी, पण कांई करूं ? म्हारी दौड़ तो म्हैं सगळी दौड़ली ।'

सेठजी कैयो—फेर कठैई देखो ! सोध्यां काईं नीं लाधै ! हाल आ छोरी देखियो काईं है ? इणरै वास्तै तो सगळा तीज-तिंवार बिरथा व्हेगा । नै हाल आखी उमर पड़ी है ।'

म्हराज सांस खींच'र निसांस म्हाकी चैरो सळां भरीजगो । मचली हेटै सूं तमाखू री डब्बी काढ़'र चिरम भरता बोल्या—'जाणूं हूं लाभजी ! सैंग समझूं थांरी वात नै । केई

ताफड़ा तोड़'र तौ छोरी रा हाथ पीळा किया हा। पण किस्मत री मार लारौ नीं छोडियौ। साढ़ासाती लागोड़ी है। अबै तौ भोळानाथ करैला ज्यूं व्हैला। दूजी बात म्हारी में हाल छोरी रौ दूजौ ब्याव नीं व्है। नै पछै छोरा कठै ? कंवारी छोरी सारू ई छोरौ मिलणौ मुस्किल व्है। म्हांणी में घणकरा करम-कांडी विरती आळा के छोटी-मोटी नौकरी आळा। पण आ देखली के सौ में सूं निन्नाणु नसेवाज लाधैला। भांग गांजा बाळ लेई नै पड़िया रैयी। नीं चालीजै के नीं बोलीजै।' इत्तौ कैय'र चिलम री फूंक खेंचण लागा।

सेठजी म्हराज नै वांता में भटकता देख'र बोल्या—'अै सगळी बातां तो ठीक है म्हराज! पण छोरी दिन कीकर गाळैला। हाल उमर ई कंई है। मोटयार जवान छोरी है, कठैई पग आघौ-पाछौ धरीजगौ तौ थांरै जीव नै गिरै व्हैजा ला।'

म्हराज धूंओ काढ़'र चिलम सेठां नै झिलावता बोल्या—'वा अेक कैवत है लाभजी, के रांड तौ रडापौ काढ़ दै पण रंडवा काढ़ण दै जदै व्है। चोखौ कियौ सूरज नै सैर भेज दियौ। वौ ई अबै मोटयार व्हेगो है थै अबै ब्याव रा सरतण करौ परा। आ उमर इज अैड़ा व्है के पग आघौ पाछौ व्हैतां जेज नीं लागै।'

म्हाराज नै सांमी व्हेता देख'र सेठजी वांनै चिलम झिलावता बोल्या—'वा म्हराज, वा ! आप चोखी कैयी। म्हैं बात करूं तारा री नै थै करौ सूरज री। आ कठै सूं लाया म्हराज ! गांव में फेर ई लोगां री बैन बेटियां रैवै। मगदूर है कोई सूरज रौ नांव लैय लै के वौ वेवाजवी कोई नै बतलाई। लोग थांरी छोरी रौ नांव लेवै। लोग आपरी आंख्यां दोनां नै अंधारै-ओलै अठी-उठी साथै देखिया है। ताळी अेक हाथ सूं नीं बाजै म्हराज !'

पछै दोनूं ई अेक-दूजा माथै आकरा व्हेण लागा। आखती-पाखतो रा लोगां री बोली सुण अर तारा नै सांमी देख सेठजी 'फोड़ा भुगतोला, दुख पावोला' कैवता ऊठ'र वहीर व्हेगा। अेक जणौ सांमी आय'र पूछ्यौ—'कांई बात है लाभजी भाभा?' अर लाभजी 'देण लेण' री बात कैय'र आगै निकळगा। कीं लोग 'कंई व्हियौ—कंई व्हियौ' कैवता इज रैयगा। म्हराज पड़पडाट करता ऊठ'र घर में घुसगा।

तारा डागळै मेड़ी में ऊभी सगळी बात सुणली ही। बात रौ मरम समझ'र काळजै कळझळ मचगी। सूरज रै गयां पछै, मुस्किल सूं अवेर'र बांध्योड़ी पीड़ री पोटली खुलगी। सेठजी नै वहीर व्हेतां देख'र वा परींडै कनै आय ऊभी। बाप री घांटी नीची व्हेती देख'र आंख्यां रौ पांणी रोक्यां नीं रुक्यौ।

म्हराज लालटेन लैय'र मांयनै आयां देख्यौ के छोरी मूंडा में पल्लौ दवायां डुसक्या भर रैयी है। म्हराज ओरा रै बारै देवतावां रा आळा कनै बैठता बोल्या—'तारा !'

तारा दौड़'र बाप रै खोळा में मूंडौ घाल दियौ। म्हराज बेटी रै मोरां हाथ फेरनै थ्यावस देवता बोल्या—'नीं, बेटी नीं ! यूं मन छोटौ नीं करणौ। म्हैं यूं डरणाळौ कोनीं। अैड़ा केई सेठ देख्या हूं। व्हैला आपरै घर में सेठ !' पछै धीरै सीक उणनै आघी करता कैयौ—'पण

बात साव झूठी नीं व्है सकै तारा ! लागै के थारी बुद्धी ई कीं भ्रस्ट व्हेगी है। ग्रागै ई म्हैं थनै वरज चुको हूं। पण तूं म्हारी छाती रा छोडा लेवणा नीं छोडिया। क्यूं म्हारो काळो मूंडो करवावण माथै तुलियोड़ी है। ग्राखिर है कई थारै मन में, ग्रा तो वताय दै।'

तारा रोवती थकी तमक'र वोली—'काळो मूंडो जैड़ी बात नीं तो व्ही ग्रर नीं व्हेला। ग्रा फेर कै दूं के कियो जिको ई म्हारो लारो कियो व्हेला, म्हैं कोई रै लारै नीं गई।'

म्हराज उणनै यूं सांमी व्हेती देख'र गुस्सो नीं रोक सकया ग्रर लप्पड़ जेप दी। छोरी 'मार काढ़ो, व्हेर दे दो !' कैवती डागळै चढ़गी। उणरा दिमाग में ग्रेक इज बात ही के ग्राज तो सूरज गयो है ग्रर ग्राज इज····

•

लाभजी ग्रर ग्रोमा म्हराज बिच्चै टंटो व्हेणै री बात चौफेरी व्हेगी। 'लेण-देण' री बात लोगां नै जमी नीं, पण ग्रटकलां लगावता लोग ग्रसल बात रै नेड़ा पूगगा हा। ग्रागै जैड़ी लोगां नै जंची, वैड़ी वै ग्रागै जमाय दी। दूजै दिन सिझ्यारा लाभजी फेर मिंदर में म्हराज नै वतळाया। इकांत देख'र दोनूं जमगा। इण विचाळै म्हराज ई विचार कर चुका हा के वांनै सेठां माथै यूं नीं उफणणो हो।

लाभजी वांनै समझाया के देखो म्हराज थां-म्हां बीचली जगा-रीस वोलचाल री ग्राज ग्राखै गांव में चरचो व्है रैयो है। म्हैं थांनै गलत बात कई कैयी ? देखो के म्हारै इत्ती चिंता करै जैड़ी बात नीं है। म्हारै तो छोरो है ग्रर छोरा रो कीं नीं बिगड़ैला। जे थां-म्हां ध्यान नीं दियो तो छोरी रै दाग लाग जावैला। म्हराज घांटी हिलाय'र हामळ भरी। छोरी री दूजो व्याव नीं व्है सकै, म्हराज री ग्रा मजबूरी सुण सेठजी कैयो के व्याव नीं कर सको तो कीं नीं पण सावळ समझाय तो सको हो, उण माथै कावू तो राख सको हो। ग्रर म्हराज मनां-ग्यांनां मानगा के सेठजी वांरा हितु है।

घरै ग्रायां पछै म्हराज वेटी नै समझावण लागा के देख काल री लाभजी सूं व्हियोड़ी वोल-चाल ग्राज लोगां रै मूंडै चढ़योड़ी है। ग्रो तो भलो व्हो लाभजी रो के लेण-देण री बात बताय'र बात नै दबाय दी। जे वै नीं दबावता तो ग्राज थारो नांव भगवाना रै साथै जुड़'र ग्राखै गांव में चकचक चल रैयी व्हेती।

समझावतां समझावतां म्हराज री ग्रांख्यां गंगा-जमनो व्हेगी। वै ग्रापरी पाघ हाथ में लैय'र वोल्या – 'ग्रा पाघ थारा पगा में धरूं देवी, मानजा ! खा थारी मरयोड़ी मा री सोगन के भगवाना सूं ग्रवै थारो किणी तरै रो तल्लो-वल्लो नीं रैवैला।'

वेटी सूं वाप री दसा नीं देखीजी। जाणै हेमाळै पिघळग्यो ग्रर नदियां टटोटट वैवण लागी व्है ज्यूं तारा री ग्रांख्यां ग्रोसरी। सेवट वा मां री सोगन खाय वाप रो जीव हळको

कियौ। पछै म्हराज ई बेटी रै माथै हाथ फेर पुचकारता थका आघा व्हेगा। बारै आय आभै कांनी देख्यौ। आभै में धोळी बादळियां उड़ रैयी ही। म्हराज नै लखायौ के वांरै अंतस में जिकी काळी-पीळी बादळियां घुमट्योड़ी ही, वै ई आं आभै री बादळियां दाईं छंटण लागगी है। भादवै रा छैला दिनां री सवावती हवा चल रैयी ही। अर म्हराज सोचण लागा के सिराध माथै आयगा है। अबकली गंगा (तारा री मां) रौ सिराध कीं चोखौ इज करणौ चाइजै। जे इण वगत मोहन (म्हराज रौ बेटौ) घरै व्हेतौ...

म्हराज यूं विचार करता इज हा के तारा री अवाज सुणीजी—'जी अबै तौ जीमलौ! थैं जीमलौ तौ पछै बासण-बरतन मांज'र निवड़ूं ज्यूं।'

म्हराज मचली सूं ऊठता बोल्या—'हां, अबै पुरस दै बेटी!'

•

कीं दिनां पछै इज अेक दिन सवार सांणी ठाकर हिम्मतसिंह जी आपरा बेटा तेजसिंघ रै साथै सेठां नै बुलावौ भेज्यौ। सेठजी पूजा-पाठ सूं निवड़'र दुकान जांणै री त्यारी करता हा। तेजसिंघ कैयौ के ठाकर सा वांनै दुकान जावती वगत पैली रावळै बुलाया है? सेठजी पैली तौ तेजसिंघ नै इज पूछ्यौ के क्यूं बुलाया है? पण वौ नीं बता सक्यौ जद उणरै साथै इज रावळै वहीर व्हैगा। सेठां रै मकान सूं रावळौ पचासेक पावंडां रै आंतरै। कोट रै मांय घुसतां इज पोळ रै डावै पसवाड़ै मुनीम सुंदरलाल वैस्णव रौ कमरौ, अर जीमणै पसवाड़ै गोदाम। आगै हवेली रै सिरै मूंडै डावी कांनी घुड़साळ, जिणमें अेक घोड़ौ, अेक जीप अर अेक ट्रैक्टर ऊभा। जीमणी कांनी बण्योड़ा दोय क्वाटरां में रावळै रा दोय राजपूत चाकरां रौ रैवास।

मुनीमजी अर कीं दूजा लोगां सूं जैरामजी री करता सेठजी चौक में आया तौ ठाकर सा डोढ़ी में सूं मूंडौ काढ़'र बोल्या—'आवौ लाभजी, ऊपर आवौरा!'

डोढ़ी में पूगा ठाकर सा वां नै कुड़सी माथै बैठण रौ इसारौ कियौ। सेठजी कुड़सी खांचता बोल्या—'आपरै अठै आयां इण कुड़सी टेबल नै देख'र आपांणी स्टूडेंट लाइफ याद आ जावै। आं माथै बैठ'र आपां जिकी पढ़ाई करी, वै दिन याद आ जावै।' पछै झट असल बात माथै आवता बोल्या—'फुरमावौ कीकर याद कियौ?'

उणी वगत ठाकर सा रा दोनूं बेटा जोधसिंघ अर तेजसिंघ ई डोढ़ी में आय'र जनान-खानै रै पड़दा आळै कमरै रै दरवाजै कनै मुड्डा जमाय'र बैठगा। ठाकर सा जोधसिंघ नै आंख रै इसारै सूं पूछ्यौ अर जोधसिंघ हामळ भरतौ थकौ पड़दै आळै कमरै कांनी इसारौ कियौ। उणी वगत पणदै लारै सूं हळकी-सीक छम-छम री अवाज रै साथै ई घुस-मुस सुणीजी। ठाकर सा टेबल माथै सूं सिगरेट री पाकिट अर लाइटर उठाय'र आपरै चोळा री जेब में धर लिया। सेठजी समझगा कै पड़दै लारै धा सा (ठाकर सा री मां) ई बिराजिया है।

ठाकर सा री परवार खासी पसरयोड़ी हो । वांरे दो भाई हा अर अेक बैन । खुद रै पांच टाबर–तीन छोरा अर दोय छोरयां । तीस बरसां रा बडा बेटा जोधसिंघ रै दोय टाबर । तेईस बरसां रा दूजा बेटा तेजसिंघ री दोय बरसां पैली ब्याव व्हियो, टाबर व्हेणाळो । उगणीस बरसां रो मेघसिंघ जोधपुर में काका कनै रैवै अर पढ़ाई करै । छाईस बरसां री बडी बेटी उमराव कंवर जैपुर कांनी परणायोड़ी अर लारलै बरस उणरै तीजो टाबर व्हियो । पन्दरै बरसां री गुलाब कंवर बाई नै ठाकर सा आवतै मिगसर में परणाय देवणी चावै ।

सेठजी लुगायां समेत लागतै इण दरबारे-खास नै देख'र समझग्या के जरूर कीं खास बात है । पछै सेठजी सावचेत व्हेय'र मुळकता थकां पूछ्यो—'कंई बात है भई, आज कीकर घरै बुलाय'र सगळा जणां घेरी घाल्यो हो ? भली विचारी हो'क ?'

ठाकर सा गोडा माथै गोडो धर दोनूं हथेळियां गोडा माथै जोड़'र बैठा हा । जीमणै हाथ री आंगळियां डावै हाथ री तरजनी आंगळी में पैरयोड़ी अंगूठी नै घुमावण लागी । ठाकर सा आपरी आंगळियां री हरकत माथै निजर गडाय'र बोल्या—'हाऽऽ ! विचारी तो घणी भली हां लाभजी ! अबै पार पड़ै जणै ठा पड़ै !' इत्तो कैय'र ठाकर सा तेजसिंघ नै चाय लावण रो इसारो कियो अर वो ऊठ'र मांयलै कमरै में घुसगो ।

सेठजी बोल्या—'भली विचारयोड़ी तो पार पड़ैला इज ! मां जगतंबा री किरपा सूं सब पार पड़ैला !'

ठाकर सा कीं नैड़ा व्हेय'र बोल्या—'बात आ है लाभजी, के आवतै मिगसर में गुलाब री ब्याव करण री तैवड़ली हूं । छोरो जैपुर में डाक्टरी पढ़ै । घर-वर दोनूं इक्कीस । म्है ओ छोरो छोडणो नीं चावूं ।'

सेठजी कीं चवड़ा व्हेता बोल्या—'आ तो मिठाई खवावो जेड़ी बात । इण सूं उत्तम बात भळै कंई व्है ।'

ठाकर सा सोफा माथै मोर टिकाय'र सेठां री आंख्यां में मीट जमावता बोल्या—'कर तो घणाई दूं लाभजी, छोरा आळां रै ई उंतावळ है । अबै आगै बात थां माथै आय'र अड़गी है ।'

सेठजी मनोमन बोल्या 'डूबगा !' अर मूंडै सूं अवाज निकळी–'हुकम फरमावो !'

ठाकर सा निजर जमायां इज नैठाव सूं बोल्या—'इण ब्याव में रुपियो खरो बीसेक हजार लागैला, इण सूं कम में घाटो नीं । रुपिया दसेक हजार रो बन्दोबस्त तो म्हैं कर लूंला लाभजी ! दसेक हजार थांनै करणा पड़ैला ।'

सेठजी सीनो कीं लारै खांच'र बोल्या—'दस हजार रो बंदोबस्त तो मुस्किल व्हैला हुकम ! सगळी रकम लोगां में अटक्योड़ी है । अबार हळां माथै पइसो ऊठियो है । आ बात पैली फरमाय देवता तो कीं पइसो रोकतो । बांजरियां काती तांई अंबरीजैला । मिगसर पैली पइसो आवै नीं ।' सेठजी हाथ जोड़'र हाथ झटकता बोल्या ।

ठाकर सा पैली तौ जोधसिंघ कांनी देख्यौ, वीं रै लिलाड़ माथै सळ देख निजर पड़दै कांनी फिराई। पछै सेठजी कांनी देख'र बोल्या—'यूं कंई करौ लाभजी ? म्हैं तौ थांरौ पक्को विस्वास लियां वैवूं के इत्तौ तौ लाभजी ई कर दैला ! ओ कांम तौ थांनै करणौ इज पड़ैला। दस हजार तौ म्हैं कर इज लिया हूं। रैयी बात दस हजार री—सो दो-तीन मईनां सारू नीं व्है तौ दूजी जगै सूं लाय'र अेडजेस्ट करणा पड़ैला।'

सेठजी नै गुचळक्यां खाता देख'र पड़दा लारै सूं अवाज आई—'जोधजी !'

जोधजी पड़दै कांनी लपकतौ बोल्यौ—'आयौ धा सा !' अर पड़दौ अेकांनी कर घांटी मांय घाल दी। अर पछै ठाकर सा नै बतळावतौ बोल्यौ—'धा सा पूछै के यूं नीं व्है तौ रकम माथै तौ प्रबंध व्है सकै है'क ?' आ बात कैवती वगत जोधसिंघ रै चैरै री रंगत बदळगी ही।

सेठजी झट पड़दै कांनी हाथ जोड़'र बोल्या—'अैड़ी कंई बात धा सा ! टाबर हूं आपरौ ! पण पइसा तौ व्हियां काम आवै। आ राजा करण री बगत झूठ नीं बोलूंला। आप सांमी कूड़ बोलूं तौ जीभ झड़जौ ! म्हारै कनै व्हेता सांतर म्हैं कदई ना नीं दियौ। इत्ता ई लारला बाकी व्हेला, पण म्हैं कदैई मूंडै नीं लायौ।' सेठजी मूंडै नीं लायोड़ी बात, मूंडै लाय'र बताई।

पाछौ ठाकर सा कांनी मूंडौ फेर कैवण लागा—'अबै रैयी दूजी जगै सूं करणै री बात ! तौ आप चावौ जदैई अेक जणै नै म्हारै साथै भेज दीजौ। जोधपुर गयां कीं न कीं बन्दोबस्त व्है सकै। अर कोसीस म्हारी पूरी आ रैवैला के बिना रकम कांम बणजा। जे नीं बण्यौ तौ रकम म्हैं म्हारी घर दूंला। आपरी रकम धरीजै जैड़ी वगत सोरै-सांस नीं आवण दूंला। यूं मिगसर में खेती री रकम आवैला इज।' इत्तौ कैय'र वै जोधसिंघ सूं निजर मिळाई।

जोधसिंघ नै सेठजी सूं इण दांव री उम्मीद नीं ही। वौ ठाकर सा कांनी देख्यौ, वांरा चैरा माथै हळकी-सीक मुळक थरप्योड़ी ही। वै सेठजी कांनी देख'र बोल्या—'चाथै चालण री बात झूठी। म्हैं चावूं के इण बात री कोई नै हवा ई नीं लागै। थै सूरज सूं मिळणै रै मिस जाय आईजौ।'

उणी वगत तेजसिंघ अेक छोरा साथै चाय लैय'र आयगौ। पड़दा लारै ई कप-प्लेट बाज्या। पछै चाय रा सुळ्ळकां रै साथै अठी-उठी री बातां सरू व्हेगी।

ठाकर सा पूछ्यौ—'छोरा नै सैर में वौपार करावणौ चावौ ?'

'हां, सोची तौ आ इज है। उठै इज अेक जगै भगवाना सारू छोरी री बात ई चल रैयी है।' सेठजी कीं खुलासौ देवतां कैयौ।

'आ तौ थांरी ई मिठाई खवावौ जैड़ी बात है। बात पक्की व्हेगी ?'

'नीं, हाल पक्की नीं व्ही। छोरा नै इण वास्तै इज भेजियौ हूं के छोरी नै देख लेई अर छोरी आळा छोरै नै देख लेई।'

'म्रो ठीक कियो ।' कैय'र ठाकर सा जोधसिंघ नै इसारै सूं पूछ्यो के पड़दा लारै कुण है ? अर जोधसिंघ इसारो कियो के कोई कोनीं । तद वै जेब सूं सिगरेट रो पाकेट अर लाइटर निकाळ सिगरेट सिळगाई ।

उणी वगत सेठजी कीं संकीजता थका बोल्या—'दूजी आ बात है भाया, कै आं दिनां गांव रा लोग सूरज रै साथै ओमा म्हराज आळी तारा री बात करण लागगा हा । कीं बात तो आप ई सुणी व्होला ?'

ठाकर सा हांमळ भरता बोल्या—'हां, उडती म्हैं ई सुणी ही के भगवानो आं दिनां तारूड़ी रै ओळूं-दोळूं चकारा लगाय रैयो है । बात आ है लाभजी के छोरी नै हाल कोई सागड़ी मिळ्यो कोनीं । अर थांरै आळो छोरी अबै गवरू जवान दीखण लागगी है । यूं छोरी ई गिणगोर व्है ज्यूं है । इण उमर में दोनूं ई पितळ सकै । चोखो कियो छोरा नै सैर भेज दियो । कीं ओमा म्हराज नै ई समझावो !'

सेठजी आखता व्हेय बोल्या—'अरे समझावां कई ! वांरै कीं भेजै में ई नीं बैठै, समझायां वै सांमी सेर व्है के थांरा छोरा नै वरज लो ।'

'नीं समझै तो फोड़ा भुगतैला । छोरां री कंई बिगड़ै, वै तो खुल्ला नरता फिरै । पण छोरी नै, समझो के ढक-ढूम'र इज राखणी पड़ै । आ उमर ई अंग्रेजी व्है । बेटी रै बाप री तो अस्टपौर छाती माथै हाथ व्है ।'

पछै अठी-उठी री बात करता ठाकर सा पूछ्यो—'सुणी के चिमनोजी माळी री तळाव कनैली जमीं लेवण री बात कर रैया हो !'

सेठजी कीं संकीज'र भेळा व्हेता बोल्या—'यूं इज चलताऊ बात व्ही ही । चिमनोजी आठ हजार मांग रैया है उण टुकड़ै रा । म्हैं पांच हजार बताया । अबै धकलै नै देवणी व्हेई तो पांचेक हजार री फांसी फेर कठैई खाय लूंला । वा ई दिवाळी पछै । अबार कठै पइसा ?'

ठाकर सा 'हूं' करनै रैयगा । सेठजी ऊठता थका बोल्या—'अबै हुकम व्है ? दुकांन खोलण री वगत व्हेगी ।' अर सेठजी रवानगी लिवी ।

सेठजी रै गयां पछै ठाकर सा बोल्या—'वडो चंट है लाभजी ! आखर तो वाणिया री बेटो । छोरा नै सैर में वौपार सारू भेजियो, उणरो व्याव ई करणी चावै । चिमनोजी री जमीं री ई सौदो चल रैयो है, अर कैवै के पइसा कोनीं ।'

तेजसिंघ बोल्यो—'तो ई सोरै-सांस पइसो काढै जैड़ा कोनीं । आपरो ब्याज खायगा व्हेला, म्हनै तो हाल ई पतियारो कोनीं । पिरसूं रै दिन छोगो दरजी दोय सौ रिपियां खातर घणा ई सेठजी नै हाथ-पग जोड़्या पण अै नीं पिघळ्या जिका नीं'ज पिघळ्या । सेवट लाई छोगो चार वातां फाऊ री सुणी नै मूंडो उतार गयो परो ।'

जोधसिंघ आपरै सुर में इज बोल्यौ—'अरे म्हैं तौ अेक बात जांणू के जिण मिनख नै जिण चीज रौ गुमान व्हे, उणसूं वा चीज इज खोसली। सगळौ गुमान आपई उतर जा ला।'

जोधसिंघ री बात सुण ठाकर सा उणनै टोकता बोल्या—'गैली बात नीं करणी जोधजी! लाभजी लाई सदां ईं आपांणी अड़ी वगत में काम आया है। आपांरी बणती कोसीस तौ आ व्हेणी चाइजै के आपां ईं वांरै की काम आवां। वै आपांरै कांम आवै तौ आपांनै ई वांरा दुख-दरद री सीरी बणणौ चाइजै।' ठाकर सा जांणता के जोधौ महा औटाळ है। इणरौ कीं भरोसौ नीं। औ लाभजी रै अठै डाकौ पटकवा सकै। जंच जा, तौ खून करवा सकै। इणरै बारै में कंईं नीं सुण्यो? सगळा अैब इणमें वळै। हाथां बारै व्हियोड़ी औलाद है। पछै वै उणनै समझावण लागा के अेकाअेक किणी रै कनै दस हजार रोकड़ा नीं लाधै। नै लाभजी ई कोई लंबी-चवड़ी आसांमी कोनी। आंरै सूं तौ आंरा वड़ा भाई सुगनराजजी अर पंडित जटासंकर कनै वत्तौ पइसौ व्हेला। औ तौ उजड़'र नवौ अर आंख्यां सांमी बण्योड़ौ सेठ है। सुगनराज अर जटासंकर कनै हाल पीढ़ियां रौ पइसौ अर बेटा ई धीरै-धीरै सगळा सैर में दुकानां करै। सुगनराज तौ खुद चलाय'र कैयौ कै गुलाब बाईसा री बगत तंगी पड़ै तौ हुकम दीजौ। यूं तौ हाल ई लोगां रै मनां सूं मांन-सनमांन री भावनावां मिटी नीं है। हाल ई सात गांवां रौ ठाकर बाजूं। जे अबार जीपड़ी लैय'र निकळगौ व्हूं तौ सवार तांईं कै जित्तौ पइसौ भेलौ कर दूं।

यूं समझाय'र ठाकर सा तौ गांव में निकळगा अर जोधसिंघ आपरै कमरै में बोतलड़ी खोल'र जमगौ। जोधसिंघ रौ निवास तौ तळाव लारलै बंगलै में हौ, पण अठै रावळै में ई वौ अेक कमरौ आपरै हाथ वसू राख्यौ हौ। दूजां री नींद चाय पीवण सूं उडती पण जोधसिंघ री नींद तौ देवी रौ परसाद लेय'र इज उडती। ठाकर सा अर सेठजी बिच्चै पक्कौ यारानौ है, आ बात वौ ई जांणतौ। सूरज अर तेजसिंघ री दोस्ती री ई उणनै ठा ही। पण जोधसिंघ नै सेठजी सूं अणूंती चिड़ ही। जोधसिंघ रा चाल-चलण नै लैय'र सेठजी केई वार ठाकर सा नै सिकायतां करी। अेक जणै री जमीं रै लेण-देण में ई सेठजी आडा आया। काळू भांबी री छोरी रा मामला में तौ सेठजी उणरै खिलाफ गवाई देवणनै ई त्यार व्हेगा हा।

सूरज अर तारा नै लैयर कीं बातां उणरै कांनां ई पूगी ही। तारा सूं दोयेक वार वौ खुद ई चौनिजर व्हियौ हौ। उणनै देख'र जोधसिंघ ई ठंडी निसांस न्हाकी ही। जे आ ओमा म्हराज री बेटी नीं व्हेती तौ जोधसिंघ नीं छोडतौ। आज वौ देख्यौ के सेठजी तारा नै लैय'र कीं चिन्ता दरसाई ही। अठी ठाकर सा कैयौ के आपां नै सेठजी री व्है जैड़ी मदद करणी चाईजै सेठजी सूं पाछी बात करणी पड़ैला। वां री चिन्ता मिट सकै।

•

ठाकर सा रै उठै सूं पाछा आय'र दुकान खोल्यां पछै लाभजी सोचण लागा के आज रौ दिन स्यात् फोरौ रैवैला। दस हजार रौ झटकौ तौ सवार-सांणी लागगौ। ना ई कीकर

देवतौ केई खोटा-खरा काम ग्रेक-दूजै सूं मिळ'र किया। ग्रेक-दूजै सूं दोनां री नवज दव्योड़ी। ....पण म्हारै कनै इत्ता रोकड़ा कठै ? व्है तौ ई दूं कीकर ? पाछा देवण री नांव नीं लेवै। ग्रागला ई दसेक हजार बाकी, जिकां नै हाल हेला पाड़ूं हूं, नै दस हजार फेर दे दौ सा।....नै जे सफीट ना दे दियौ तौ जोधौ को छोडै नीं उणरी ग्रांख्यां में ग्रम्टपोर भैरूं नाचै। तळाव लारलै बंगलै में कित्ता कांड व्हिया है, जिकां री गिणती कोनीं।....ग्रौ इणनै कोई दया-मया कोनीं....ग्रौ गोळी मार सकै पक्कौ धाड़ायती व्है ज्यूं।....ग्रा तौ इणरा बाप सूं इत्ती गैरी दोस्ती नीं व्हेती तौ ग्रौ म्हनै कदेई झांप लेवतौ।

....इणरौ बाप म्हारै सारू तौ लाखीणौ....हिम्मतसिंघ री मदद सूं इज ग्राज म्हारै घर में लिछमी रौ वासौ है। गांव में म्हां दोनां री दोस्ती री साख भरीजै।...ग्रर इण कारण इज ग्रौ दस हजार री खारौ गुटको पीयौ हूं। नै ठाकर मां रौ तौ म्हैं बेटौ व्है ज्यूं ! वै म्हारौ कान पकड़'र पइसा धरा सकै। किण नै कीकर ना दूं। दो दिनां पछै ग्रासोज लाग जावैला। काती में बाजरियां ग्रंवरीज जावैला। सो कीं पइसौ तौ उण वगत ग्रा जावैला ग्रर बाकी रौ इंतजाम ई करणौ पड़ैला। इण मिस ई जोधपुर जावणौ व्है जाई।...ग्रठी ग्रोमा म्हराज ई कीं ठिकाणै ग्रायगा है। पण ग्रै छोरी नै बांध सकै ना? म्हारी सूरज, लाखीणी छोरी....नै ग्रा रांड तारकी इणरा मरमट हाल को गळिया नीं। इण ग्रोटाळ री करड़ाण हाल कोई नीं भांगी।...इणरी ...... 'किण विचार में हौ सेठां ?' म्हराज री बोली सुणीजी।

लाभजी देख्यौ कै म्हराज दुकान री चांतरी माथै ग्रेक पग धरियां ऊभा है। जांणै क्यूं लाभजी नै म्हराज रौ ग्रावणौ ग्रर टोकणौ चोखौ नीं लागौ। तौ ई सेठजी कायदौ राखता बोल्या—'पधारौ म्हराज ! ऊपर जाजम माथै ग्रावौरा।'

म्हराज ऊपर चढता बोल्या—'म्हैं ई देख्यौ लाभजी यूं गुमसुम हुयोड़ा कीकर बैठा है ?' ग्रर जाजम माथै जमता बोल्या—'हरि ग्रोम, हरि ग्रोम !'

म्हराज रै बैठां पछै सेठजी जरदा री डव्वी ग्रर चिलम म्हराज सांमी धरता बोल्या—'यूं ई ग्राज दुकान खोली जद भगवान री याद ग्रायगी म्हराज !'

'ग्रावै इज !'

'वौ व्हेतौ जणै म्हनै ग्रागै दुकान खुल्ली लाधती। साफ-सूफ सगळी चीजां ग्राप-ग्रापरी ठौड़ जमायोड़ी। ....नै ग्राज......'

'सांची कौ सेठा ! मोटौ बेटौ भाई बराबर। स्याणौ तौ व्है इज ! नीं व्है तौ ग्रेक वळाकौ जोधपुर करिग्रावौ !'

सेठजी निसांस न्हाकता बोल्या—'हां, म्हैं ई कीं ग्रौ इज विचार करूं हूं म्हराज !'

'हूं' म्हराज हुंकारौ देय'र थोडा रुक्या ग्रर पछै बोल्या—'ग्राज रावळै कनीं कीकर गया ?'

सेठजी म्हराज सांमी देख'र बोल्या—'किणी कांम सूं ठाकर सा बुलायौ।' सेठां री लिलाड़ माथै सळ पड़गा हा।

म्हाराज सेठां मांथै निजर जमाय'र बोल्या—'ठाकर सा गुलाब री ब्याव मांडण आळा है।'

सेठां नै कैवणी पड़्यौ—'हां!'

'म्हनै म्हौरत पूछण सारू बुलायौ हौ कालै।' म्हराज कैयौ अर सेठजी कांनी देखण लाग्या। चौंनिजर व्ही अर सेठजी नै लखायौ के म्हराज री आंख्यां कैय रैयी है 'सेठां, कैसीक रैयी?'

सेठजी निजर फिराय हिसाब री खाता-वही काढ़ पाना पलटता बोल्या—'कद रा सावा निकळया?'

म्हराज उठता थका बोल्या—'मिगसर में सावा ई सावा! भलैई कदांई करौ।'

'यूं कंई ऊठगा म्हराज, चिलम ई नीं पी!'

'नीं, अवार नीं! लारला दोय दिनां सूं धांसी काठा काया कर दिया।' अर इण साथै ई वै 'खर्‌ड़..खर्‌ड़' खांसण लागा। पछै कीं विसांई खाय'र बोल्या—'जोधपुर जावौ तौ अेक वात री भळै ध्यांन राखजौ।'

सेठजी बोल्या—'क्यांरी?'

म्हराज अेक ठडी सांस खींच'र बोल्या—'म्हारलौ ओटाळ कठै ई नींगै आजा, तौ कैइजौ कै इत्ता वरस व्हेगा। अेकर तौ वाप नै सूरत वताय जा नालायक! थारौ बाप कीयौ थारै सूं रुपिया-पैसा मांगै।'

'जरूर, म्हराज जरूर! मिळगौ जणै तौ जरूर कूंला, नै आवतौ वैई तौ साथै लियावूंला।' पछै कीं रुक'र सेठजी बोल्या—'सेवट थांनै ई बेटा री याद आयगी।'

म्हराज कीं जमी कानीं देखता बोल्या—'हां, लाभजी! अबै उणरी कमी खटकण लागी है। जे आज व्हेतौ तौ छोरी रै माथै ई थोड़ौ दबाव रैवतौ।'

सेठजी मतलब री बात देख'र झट थ्यावस देतां कैयौ—'खरी वात म्हराज! म्हैं जरूर पतौ लगवाऊंला। रैवै कठै है?'

'ब्रह्मपुरी के महामिंदर सूं उणरौ अतौ-पतौ लाग सकै। उठीनै म्हांरा घर घणा।'

'करै कंई है?'

'पैली तो खूमचो करतो कोई, अर पछै सुणी के किणी सिरकारू दफतर में चपड़ासी है। किणी इस्कुल-फिस्कुल में। पक्को पतो तो म्हनै ई कोनीं।'

'ठीक-ठीक ! म्हैं पतो लगवाऊंला।'

'जाऊं !'

'जैरामजी री !'

अर सेठजी विचारण लागा के अबै तो ठाकर सा कैवै जित्ती जेज। केई काम भेळा सर जाई। ठाकर सा री काम'''सूरज सूं मिळाप अर किरपारामजी सूं ई बात व्है जाई। छोरी दाय आयी के नीं, अबै तो घर में सगळा ई देख लियो। म्हाराज री छोरी ई कठैई दीसगी तो बात और ई उत्तम। सैर में केई काम व्हैजा ला।·······

•

अठै आगली बात करण सूं पैली कीं लारली बातां जांणणी पड़ैला। सेठजी दो भाई। गांव रा दूजा म्हाजन सुगनराज जी, जिकां नैं लोग सुगनोजी कैय'र बतळावै, लाभजी रा सगा वड़ा भाई। बाप रै मरियां पछै दोनां में वंटवाड़ व्हियो अर वंटवाड़ नै लैय'र जिका संबंध बिगड़्या, वै तर-तर वत्ता इज बिगड़ता गया। वटवाड़ में सेठां नैं सौ-डेढ़ सौ बीघा जमीं अर मकान हाथै आयो।

दिन फिरया, हिम्मतसिंघजी रै ठाकर बण्या पछै दोनां री दोस्ती रंग लाई अर लाभजी ठाकर सा री मदद सूं मौज ई करी अर पइसो ई जोड़ियो। पैमा रो प्रेम सेठां नैं कुवो बतायो अर वै ई ठाकर सा री देखादेख कुवो खुदवाय'र माथै मोटर लगाई। ट्रैक्टर लियो। अेकर तो ठाकर सा नै आ बात कीं अखरी पण साथी समझ हेत पाळ'र रैयगा।

दूजै बरस धाड़ायती आय पूगा अर घर में हो जिको सगळो बोर'र लैयगा। अेकर तो सैठां नैं लागी के वै कंगाल व्हैगा है। लोगां रो कित्तो माल-मत्तो, गैणो-गांठो वांरै कनै अडांणै पड्यो हो। कोई एक दमड़ी नीं छोडै। सांमी दूणा बतावैला। अर आ ई व्ही। सेठजी सगळा मांगणियां नैं ध्यावस दी के विस्वास राखो, थांरो पइसो कुवो-जमीं वेच'र ई चुकाय दूंला। सेठजी ठाकर सा सूं मदद मांगी। ठाकर सा तो पल्ला झाड़ दिया, पण ठाकर मां जरूर पांचेक हजार सूं मदद करी। वाकी रो इन्तजाम लाभजी आपरा जोधपुर रा मित्र किरपारामजी सूं कियो। नीं ट्रैक्टर-कुवो विकया अर नीं जमीं। हां, कांम निवड़्यां पछै वड़ा भाई सुगनोजी कोई नै कैयो के अैड़ी वगत में लाभजी म्हारै कनै आय'र कीं नीं कैयो। कैवतो तो म्हूं कियो नट जावतो। आगलो राखणो ई नीं चावै तो म्हारै अैड़ी कई गरज पड़ी। अर सेठजी किणी तीजै मूंडै आ बात सुण'र चुप धारली।

सेठजी रा वै ई वडा भाई सुगनराजजी आज छोटा भाई रै घरै पूगा। उण वगत सिंझ्या पड़गी ही। सेठजी दुकान डोढ़ी कर घरै आयगा हा। धाजी (सेठजी री मां) आपरा कमरा में दिया वत्ती कर माळा फेरण नै बैठगा हा। उणी वगत अवाज सुणीजी—'लाभजी!'

सेठजी री कलम रुकी अर धाजी री माळा। लाभजी बड़ा भाई री बोली सुण'र झट ऊठ्या अर बारी में सूं मूंडौ काढ़'र बोल्या—आयौ सा!'

सांमी आय'र लाभजी बोल्या—'मांय पधारौ सा!'

सुगनोजी पावड़िया चढ़ता बोल्या—'हां, आज भगवानां री मोह खींच लायौ। थूं तौ बी.ए. है भाई, पछ छोरौ तौ इत्तौ पढ़ियोड़ौ कोनीं के। भगवान हजारी ऊमर करै उणरी। सुणी के थूं उणनै जोधपुर किरपारामजी रै कनै भेज दीयौ है।'

लाभजी नीची धूण कियां इज बोल्या—'हां, अठै फाऊ री फिटोळ व्है ज्यूं फिरतौ। उठै रैवैला तौ कीं धंधौ वाड़ी ई सीखैला।'

सुगनोजी अेकर तौ 'हूं' कर'र रैयगा। पछै लाभजी रै चैरै माथै निजर जमाय'र बोल्या—'अठै थारै किण बात री कमी ही रे भाई, जिकौ छोरा नै आघौ काढ़ियौ। लाखीणौ छोरौ। थूं भूलगौ व्हेला, पण वौ आज तांई म्हारौ कांण-कायदौ राखतौ। रैयी बात फिटोळ व्है ज्यूं फिरण री। हूं तौ कदैई उणनै यूं फिरतौ नीं देख्यौ। हां, कीं लोगां मूंडै उणरै साथै म्हराज आळी तारकी रौ नांव जरूर म्हैं ई सुण्यौ। तौ भई देख कै औ तौ ऊमर रौ उफाण है। इण उमर में आछा-आछा रा पग डगमगायगा, आ बात थूं ई जांणै। इणमें यूं छोरा नै आघौ करै जैड़ी कंई बात! इण सूं उत्तम बात तौ आ इज रैवैला के उणरौ ब्याव कर दै।'

सुगनोजी नै बोलण री आदत कीं वत्तीज ही। इण कारण केई लोग वांनै 'बोबाड़िया सेठ' ई कैवता। लाभजी बात नै टिकांणै पूगती देख'र झट बोल्या—'हां, किरपारामजी रै अेक परणावण जोग छोरी ई है। वां नै तौ छोरौ दाय आयगौ पण वै घर में अर छोरी नै देखावणौ चावता।'

'साव ऊंधी बात! म्हैं क्यूं छोरा नै देखावण सारू भेजां। छोरौ लाखां में अेक है सूरज। सागैसाग सूरज व्है ज्यूं पळकतौ। म्हारा तौ सगळा ई टाबर सैर में। अठै तौ अेक छोरी जिकी काले सासरै जा ई परी। म्हारै मूंडागै तौ औ अेकीज छोरौ हौ। बतळायोड़ौ कांम दौड़'र करतौ।' उणनै ई थूं आघौ कर दियौ।' अर इण बात रै समचै ई वै उदास व्हैय'र चुप व्हैगा।

लाभजी बात नै अठै इज पूरी करता बोल्या—'जीम लौ!'

'नीं।'

'चाय तो चल जा ला ।'

'ऊं''''हूं ।' घांटी हिलाय'र सुगनोजी ना दियो । पछै कीं चेतन व्हेय'र पूछ्यो—'धाजी कठै ?'

'श्रा रैयी वडोड़ां ! मांय श्रावोरा !' पाखती रै कमरै सूं धाजी री बोली गुणीजी ।

सुगनोजी ऊठ'र मांय गया परा श्रर लाभजी श्रेक निसांस नाख'र पाछा खतावणी में लागगा । पण सुगनोजी रै यूं श्रचाणचक श्रावण सूं श्रर वांरी वातां सूं मन रा तार कीं इण गत उळझ्या के खेतावणी में मन लागो नीं श्रर वै वही संवेट'र विचार करण लागा कै कंईं करूं ? सूरज नै पाछो वुलाय लूं''''खुद इज जाय'र क्यूं नीं साथै लियावूं । पण श्रठै फेर वा री वा वात ।''''उणरै कागद में लिखियां मुजब तो उणनै उठै श्रासींगगो है ।''''पण श्रठै वडा माटै श्राज जिण गत''''कंईं करूं ?''''

सुगनोजी रै गयां पछै थोड़ीक वार नै इज जोधसिंघ श्राय पूगो । लाभजी श्रचंभै में के श्राज कांईं वात है जिको श्रणचितारचा लोग घरै श्राय रैया है । जोधसिंघ री इंछा मुजब सेठजी श्राडा दैय'र कमरा में जमगा । दोनां बिच्चै खासी वार तांईं घुम-मुस व्हैबो करी । कमरा रै वारै निकळती वगत सेठजी जरूर कीं गंभीर दीसता पण जोधसिंघ रै मूं डै मुळक पसरयोड़ी ही ।

* * *

लिखारां सूं

- 'जागती जोत' सारू रचनावां कागद रै श्रेक पसवाड़ै हासियो छोड'र श्राखरां नै ध्यावस सूं मांड'र भेजो । उंतावळ के लापरवाही सूं मांडियोड़ी रचनावां भेज'र संपादक री जीव मती वाळो ।
- लिपी रा कायदां रै सरोधै सारू 'जागती जोत' मासिक रा श्रकां नै सावचेती सूं वांचो श्रर खुद री रचनावां नै जागती जोत री लिपी रै ढब ढाळर भेजो ।	—संपादक

परख

मीरां

कवी : नारायणसिंघ भाटी

प्रकासक : गिरधर प्रकासण, जोधपुर * मोल : दस रिपिया ।

•

नारी बाबत अेक सहज मानवी बरताव अर नु वी चेतना री विकास आधुनिक काव्य-चिन्तण री अेक लूंठी खासियत मानीजै । तकरीबन सगळी भारती-भासावां रा नांमी लिखारां इण चेतना रै निरमांण में आपरी पूरी स्सारी दियौ । तौई हाल इण बाबत ठोस अर सांवठी विचार-चिन्तण बौत कमती व्हियौ । अमूमन नारी-मुगती आंदोलण रा घणकरा पैरवीदार इण अबखाई नै उणरा आरथिक-सामाजिक आधारां सूं परवारै या वांनै गौण (चलताऊ) मान'र, खाली मानवी भाव-व्रितियां अर आपसी रिस्तां री असंगतियां रै बिच्चै ई सुळझावण री कोसिस करता रैया, जिणमें घणकरौ जोर इणी बात माथै दिरीज्यौ के मानवी-सभ्यता रै इतिहास में पुरुस वरग नारी वरग माथै अणूतौ अत्याचार कियौ । ऊपरी तौर माथै अबखाई रौ सरूप औ ई दीखै इण वास्तै लुगायां रै ई आ बात खासा हीयै लागती ढूकै । नतीजन इणरी बुनियादी रूप सूं गुनैगार वा सामंती या पूंजीवादी समाज-व्यवस्था साफ बच'र निकळ जावै । इण व्यवस्था रा हिमायती अर पैरवीदार जबांनी तौर माथै लुगायां बाबत खासा चिन्तित अर किरियावर दरसावता दीखै—वै वांरै सांमी आतमा री मुगती री केई मिसालां अर निराकरण पेस करै अर इतिहासू परिपेख में वांरी महानता रौ बिड़द बखांणतां कोई कसर लारै नीं राखै । भारती-भासावां अर खास कर हिन्दी रै साहित्य-चिन्तण नै ध्यान में राखतां जे आपां इण प्रव्रति री पड़ताल करां तौ इणी नतीजै माथै पूगां कै छायावादी रचनाकारां नारी माथै सगळां सूं बेसी ध्यान दियौ, पण वांरै नजरियै में भावुकता अर हवाई हमदरदी रौ असर इत्तौ अणूतौ हौ के वांरौ 'ध्यांन' अर 'चिन्ता' असलियत सूं कोसां अळगी पड़गी । वां उणनै श्रद्धा अर देवी री इत्ती ऊंची पदवियां माथै पुगाई के नु वां कविताकारां नै उणनै पाछी सामान्य नारी रै धरातळ माथै लावण में खासा जोर लगावणौ पड़्यौ । इण बिच्चै नारी-मुगती आन्दोलनां अर अन्तर्राष्ट्रीय महिला वरस रौ ई नु वां रचनाकारां माथै गैरौ असर पड़्यौ । नु वै समाजवादी विचार-चिन्तण इण अबखाई री बुनियाद खोलतां थकां जिकौ वस्तुपरक विस्लेसण पेस कियौ उणसूं संवेदनसील यथार्थवादी रचनाकारां नै अेक नु वी दिसा अर दीठ मिळी । कीं अैड़ा ई रचनाकार है, जिका परम्परा अर आधुनिकता रै बिच्चै ताळमेळ बैठावतां थकां आपरौ मौलिक जीवण-दरसण इजाद करण में ढूक्योड़ा, तौ दूजी कांनी कीं अैड़ा मुगत-

मानववादी रचनाकार ई, जिका इतिहास में चावा चरितां रै जरियै इण अवखाई माथै विचार करण री मिसाल पेस करै। स्यात् रचनाकार सारू आ दूजी रीत ज्यादा माकूल ई व्है कै वो आपरै पाठक सांमी अवखाई नै उणरा इतिहासू संदरभां माथै मूरत-रूप में समझा सकै। राजस्थानी रा लूंठा आधुनिक रचनाकारां में इण दीठ सूं 'मीरां' रा रचयिता डॉ. नारायणसिंघ भाटी खास तौर सूं उल्लेख-जोग जांणीजै।

औ अेक खुलो सांच है के मुलक रा दूजा हलकां री तुलना में केई कुदरती कारणां सूं राजस्थांनी समाज में सामाजिक चेतणा रै विकास री रफ्तार बोत धीमी रैयी। जठै सामंती मांण-मरजादावां, धार्मिक-नैतिक मूल्यां अर रूढ़ परम्परावां री तग पकड़ में अठै री आम जीवण ओजूं लग कळपीजै। आ ई वजै कै जिका इतिहासू चरितां वां रूढ मरजादावां नै चुणौती दीवी, उण वगत रै सासक-वरग अर मठाचारियां री ऊभी करियोड़ी बाधावां रै बावजूद आम जीवण में वै खूब चावा व्हिया अर वांनै पूरो मांण सम्मान ई मिळयो। मध्य जुगी राजस्थांनी समाज में मीरां अेक अैड़ो ई समरथ चरित ही, जिकी कथी नारायणसिंघ भाटी री नुंवी संवेदणसीलता अर आधुनिक भावबोध रै साथै ताळमेळ बैठावती थकी उण इतिहास नै ललकारती कवै—

थे कांई देवो वर वर में
सतियां री साख
थांरी अरधंगी नै सूंपियो
थे सेजां रो नै चिता रो ई आध
जे वै जूंझती जीवण थांरै जोड़
थे जग रो कोई समर नीं हारता,

मीरां वां सामंती नेम-कायदां नै उळांघ जिको मुगती रो मारग धारयो वो मुगती रो सही आदर्स नीं व्हेतां थकां ई. उण वगत री काळगत हालतां में, फगत वो ई मारग उणरै सांमी हो अर वा उण पंथ माथै पूरै आतम विस्वास अर निस्ठा सूं आगै वधी। मीरां रो औ ई करमठ व्यक्तित्व अठै री नारी नै सदा प्रेरणा देवतो रैयो—

वै जीरण परकोटां रा जिरांण
पथरीजग्या है
नवळ राजपथ नयर
जठै मुक्त नारी विचरै है
आपणी चाल,
नित सांझ सहेली संग रम जावै
अंतर चित्रपट में
थारै जोगियै मरम सूं
आपरी पीड़ नै पिछांणती,

आज रै साहित्य में यथार्थ री प्रतिस्ठा अर उणरौ निरवाह जे टाळवीं रचना री लाजमी सरत मानीजै तौ कोई अणूती वात नीं अर आ अेक उलेख जोगी बात, के कवी भाटी इण सरत नै घणी दूर तांई निभाई। ओजूं लग मीरां री क्रिसन-भगती नै लेय'र केई तरै री दंत-कथावां अर अन्तर-कथावां चालती रैयी, जद के डा. भाटी इण काव्य री दूजी किरण में वां सगळा घटणा-परसंगां अर हालतां रौ सार-रूप खुलासौ औ कियौ के वां हालतां में मीरां रै सांमी क्रिसन-भगती ई अेक मात्र मारग रैयग्यौ—

पैला सूनौ होग्यौ सासरौ
हमें सूनौ होग्यौ पीर
धीवड़ी ज्यूं बहू नैं धीरपणौ
रांण सांगौ ही सरग सिधायगौ,

अर तद—

पीड़ झपेट
चौगुणै चेतै परजळी
अंतरजोत
सबळा नै सबळ संगी
दीखियौ—

'मीरां' आधुनिक भाव-बोध, नुंवै रचना-सिल्प अर राजस्थांन रै गुमेजू सांस्क्रतिक चौफेर रै तिखूणै रचना-संघर्स सूं उपज्योड़ी अेक कदीमी अर सांवठी काव्य-क्रति है, जिणमें कवी मीरां रै व्यक्तित्व नै जिकी मांयली मनगतां, झीणी रंग-रेखावां अर मौलिक अणभूतियां रै माध्यम सूं उभारण रौ सिल्प कांम में लियौ, वौ निस्चै ई वांरा रचना-सामरथ री सही साख भरै। परसग रै पेटै इण दावै आ बात ओरूं उलेख जोगी समझूं के इण दीठ सूं कवी नारायणसिंघ भाटी री पैलड़ी काव्य-क्रति 'दुर्गादास' वांरै सिरज्योड़ै साहित में आपरौ सिरै ठांव राखै।

कवी भाटी आपरी कविता-जातरा रै दरम्यांन केई इतिहासू चरितां नै अेक अेड़ौ नुंवौ व्यक्तित्व दियौ जिकौ वांरी जांणी-पिछांणी स्थूळ रूपाकारी सूं साव न्यारी भांत रौ निगै आवै। चरित नै उणरै मांयलै सुभाव अर निगूढ़ मानवी गुणां सूं उभारणौ वांरी निरवाळी रीत रैयी, जठै स्थूळ कथा-विन्यास अर घटणा-परसंग गौण व्है जावै।

औ अेक दिलचस्प तथ्य है के डा. नारायणसिंघ भाटी आधुनिक भाव-बोध सूं बौत नजीकी संपरक राखतां थकां ई आधुनिक जीवण री जटिलतावां नै बड़ी खूबी सूं अेकांनी करतां, किणी इतिहासू-चरित रै व्यक्तित्व-निरमाण में बड़ी संजीदगी सूं उलझ जावै। हालांकि नुंवै जीवण री जटिलतावां रै टकराव सूं उपज्योड़ी थकावट साफ तौर सूं वांरी कथणी में मुखर व्है जावै, जठै वै अनायास ई केवता दीखै—

आज रै अळसाया नैणां में
वो उछाव नीं

इणरै वावजूद उण जूनी परंपरा सूं मांयलै लगाव, ओळ अर कल्पना रै स्सारै वै पूरै नैठाव अर आतम-विस्वास सूं वां इतिहासू संदरभां रै विच्चै पूग जावै। कवी आपरै इण अणभव री बड़ी ई रोचक अर कविताऊ व्योरो पेस कियो, 'जठै वो मध्य-जुगी इतिहास री मैरावां नीचै खुदियोड़ी काळ-वावड़ियां री मांयली पेड़ियां माथै अेक सलूणै ग्यांन रै धीजै सागै उतर नै उण पारदरसी जळ री गैराई में झांकै, जठै ऊंघतै अंधारै रै असळाक हेटै पैली बार उणरी दीठ में वै मरमीला आईठांण सोनजुही ज्यूं चमकण लागै।' अर उण गैराई अर उजास-बोध रै सागै पाछो वरतमांन जुग कांनी पांच सौ बरसां री आंतरो पार कर पूगणो, कवी री कथणी मुजब, वांरै वास्तै अेक अजब अर अनूठो अणभव हो।

'मीरां' री दूजी अर तीजी किरण री रचना-विन्यास जित्तो सीधो अर सपाट है, आगै री सगळी किरणां री उत्ती ई मांवठी अर कविताऊ। खासकर चौथी अर पांचवीं किरण में मीरां अर सांवत-सिरदारां रै विच्चै री कविताऊ वारतालाप घणो रोचक अर महताऊ, जठै मीरां राजमहल छोड नै किसन री क्रीड़ास्थळी वृन्दावन कांनी मंडाण करै अर मेवाड़ रा राणा विक्रम आपरी मांण-मरजादा कायम राखण सारू मीरां नै पाछी मनाय लावण नै आपरा अणभवी सांवत-सिरदारां नै लारै मेलै पण वै मीरां नै पाछी फेर लावण में नाकांमयाव रैवै। मीरां रा अणभव सूं उपज्योड़ै आं बोलां री वै पण कांई पडूत्तर देवता—

मोड़ा आया रे मांनीता सिरदार !
वा वेळा तो कदै वीतगी,
म्हारी सार सुरछा री
कांई बतावो मूंछाळां मोद
मीरां तो मार लिया
जग छळ मीर
अे अमीर भलांई भंवै
किरण री कांई करलै कांवळा।

अर जद वां पीढियां री लाज अर मांण-मरजाद री दुहाई देयनै रोकण री छेली कोसिस कीवी, मीरां री लाजवाब पडूत्तर हो—

लाज तो रैसी नरां !
आतम रै आपांण
ना रहै—
नारी रै नथ घालियां !

संसारी माया-मोह अर ऊपरी मांण-मरजादावां उळांघ नै मीरां जिण निरमळ भगती अर प्रेम रै छेत्र में प्रवेस कियो, उठै ई पाखंड अर ऊपरी दिखावां री कमी नीं ही। जद ई तो वा च्यारूंमेर फैल्योड़ै पाखंड अर उथळै स्वारथ नै धिक्कारती कैवै—

'अरे वंट रा लोभी लैणायतां !
धरां नै धींगाणै बांटी भूपतियां
धन नै लूंत लियौ धनपतियां
धरम नै पंथ में पळोट
थे नर नै नारायण बांटियौ !'

अर इणी उचाट मनगत में मीरां री मन रूपी रथ द्वारका धांम कांनी मुड़ग्यौ। छठी किरण तांई आवतां-आवतां कवी मीरां नै श्रीकिसन सूं सीधै संवाद रै धरातळ माथै पुगाय दी। हालांकि तथ्य रूप में मीरां री आ मनोभावना इकतरफा ई रैयी अर जैड़ी के परंपरा रैयी है, अर इतिहासू परिणति तकात इणी रूप में चावी है, कवी आ कैवतां थकां मीरां रै भौतिक अस्तित्व नै उणरै आराध्य में अेक-मेक कर दियौ—

खंभ-खंभ दोळौ रास री रचाव
सुरज-सुरज दोळौ रसमि रमाव
पळक-पुळक में/आपै री मिळाप
लय में लय लीन
जोत सूं जोत सजोत हुई।

अर इणी दिसा में कवी मीरां रै चरित री विकास करती उणनै विस्णुप्रिया कमला रै संजोड़ पुगा देवै। मीरां री औ चरिताऊ विकास कवी री निजू मौलिक सूझ-बूझ री नतीजौ है अर कोई इचरज नीं के इण कविता रा पाठकां नै औ कीं अरथां में अणूंती अर असुभाविक लागै।

मीरां रै चरित नै उण ऊंचाई माथै पुगायां पछै कवी जद पाछौ आपरै चौफेर में वावड़ै तौ उणनै दीखै के डूबतै उजास में कन्नाणिया छाजां री पलक झुकायां औ मोटा महल अबोला ऊभा भाळै अर दुरभाग दरसावै। अठै आ बात विचारण जोगी व्है सकै के कवी री निजर घूम-फिर नै इणी सीमित चौफेर मे अटक'र रैय जावै, जठै वौ गैरी उदासी अर पिछतावै री मुद्रा में ऊभौ निजर आवै। जठै तांई आधुनिक जुग री नारी रै जीवण-संघर्स री सवाल है वै आज ई उणी प्रेरणा-पुंज कांनी इसारो करता दीखै—

इण विध
जरी रै तारां रा जरद झाड़
अेक इकतारै में संवरियौ
नारी रौ सोल
जिण झणकार—
नारी संसार री सकळ स्वांस
अेक राग अनुरागै
जीवण जुध री रागणी।

निस्चै ई मीरां री वा विद्रोही रूप आज री नारी सारू अेक हद तांई प्रेरणा री रूप फबीज सकै, जठै वा अकारथ थोप्योडी जड मरजादावां नै सीधी चुणोती देवै, पण उणरो आध्यात्मिक अत नीं प्रेरणादायी है अर नीं आज रै जीवण में व्यावहारिक।

जिण अरचना-भाव अर आस्था सूं कवी 'मीरां' री रचना कीवी उणी भाव-धारा री सींवां में रैयां, स्यात् इण काव्य रो सही मोल आंकणो ओखो है अर जे पूरी तरै तटस्थ व्है'र परख करीजै तो व्है सकै के पारखी कठैई आपरो संतुलण गंवा बैठै—आ गत गासा दुविधा-पूरण है, अर म्हारै वास्तै ई किणी अरथ में रैयी जरूर।

रचना-सिल्प री दीठ सूं 'मीरां' निस्चै ई राजस्थांनी री अेक बेजोड़ काव्य-क्रति है। कवी नै जठै उण मध्य जुगी सांस्क्रतिक-परिवेस नै रूपावण वाळी सामरथ सबदावळी है, उठै ई आधुनिक भाव-बोध रै मुताबिक नुंवो रचना-विन्यास अर जीवंत काव्य-भासा री ओपती पैरी जांणकारी ई। आपरी काव्यानुभूति री बुणगट रै दरम्यांन कवी नारायणसिंघ भाटी री मनगत अर चेतना में कठैई आ मांयली इछा जरूर रैयी दीसै के वै 'मीरां' नै अेक 'अेपिक' काव्य रचना री सरूप दे सकै। 'मीरां' री काव्य-संरचना अर कथगी रै मिजाज में इण कामना नै बखूबी पिछांणी जा सकै। आ दूजी बात है के आज रै जमांनै में 'अेपिक' री गुंजायस बोत कमती रैयगी। महाकाव्य री जिकी सास्त्रीय सरतां पैली सूं निरधारित है, उणी आधार माथै जे इण रचना नै परखां तो स्यात् वा खरी नीं ऊतरै, क्यूंके महाकाव्य में किणी देसकाळ-विसेस रै जीवण रै जैड़ै सांवठै चित्रण री उम्मीद राखीजे, अर उण इतिहासू कथा रा खास घटणा-परसंगां अर चरित्ताळ विकास नै जिण नाटकीय धरातळ माथै दरसावण री उम्मीद रैवै, 'मीरां' में उणरो निरवाह बोत थोड़ो व्है सक्यो. अर इण रूप में 'मीरां' री मूळ सुर अेक प्रगीत रचना रो ई रैयो। मीरां रै जीवण रा मुख्य घटणा-परसंगां री अठै फगत सूचना ई मिळै—ओ सिल्प किणी महाकाव्य रो नीं व्हैय'र अेक लंबी कविता रो कैवणो ज्यादा सही है। अेक अैड़ी लंबी कविता जिणमें कवी महाकाव्य रा मांयला गुणां नै बखूबी समेटण री कोसिस कीवी।

काव्य-भासा री दीठ सूं डॉ. नारायणसिंघ भाटी री आधुनिक राजस्थांनी रचनाकारां में आपकी अेक न्यारी इमेज है। राजस्थांनी री नुंवो सिरजण जठै आपरी लारली परम्परा में लोक-मानस अर लोक-भासा सूं जुड़'र विगस्यो, उठै ई डॉ. भाटी री काव्य-भासा में लोक-भासा अर नुंवै मुहावरै रै साथै-साथै पुराणी डिंगल काव्य परम्परा री ई बखूबी निरवाह व्हियो। ज्यूं—

वाहरू ढोलां रै वाजै
अखंड आखड़ी राखण
उजळै दूध रै उफाण ज्यूं
सार मरण सुख उससतां
वाजती बीजूजळ चौकड़ी वाज
रगत होळियां री खेलणो,

सबद नै उणरी मैमूदी सांस्कृतिक गरिमा रै साथै प्रयोग में लावणी वांरै रचना-सिल्प री मोटी खासियत है। भासा फगत विचारां या सवेदू प्रतिक्रियावां री वाहक ई नीं व्है, जीवण री सांस्कृतिक अभिव्यक्ति रो सरूप पण व्है। जिको कवी आपरी जीवंत सामाजिक परम्परावां बाबत जितो जागरूक रैवै उणरो कथणी उत्ती ई सांवठी अर संदरभां सूं जुड़योड़ी व्है। 'मीरां' इण दीठ सूं अेक उल्लेख जोगी कृति है।

अेक दूजी वात जिकी कवी री रचना-प्रक्रिया सूं जुड़योड़ी है—डॉ. नारायणसिंघ भाटी री आ बोत वड़ी खूबी है के वै कविता रै हरेक पद या बंध नै 'कविताऊ' बणावण री भरपूर कोसिस करै। अठै तांई के कथा-वस्तु रा खास घटणा-परसंगां रा विवरण में ई इण कविताऊ कथणी नै परखी जा सकै—

सेवट
गरद री गिरदां में रैग्यो
रोसीलो मेवाड़
जठै डुंद री लाल-पीळी आंधी री
अधोफरै आवटणो।

मीरां खुद आपरै जुग री सगळां सूं सिर कळावंत ही। अैड़ै कळावंत व्यक्तित्व री रंग रेखावां कोरतां जिण झीणी कारीगरी री जरूत व्है, डॉ. नारायणसिंघ भाटी आपरी कविता-जातरा में आ खासियत वखूबी हासल कीवी। आ ई वजै के 'मीरां' री आठूं किरणां री झीणी वुणगट में कविता रा सगळा अंग-प्रत्यंग अर खासियतां आपूं-आप समायगी। कविता री कथणी में विम्ब अर प्रतीकां रो खास हाथ रैवै अर जठै कविता री आन्तरिक जरूत मुजब आंरो उपयोग व्है, रचना निस्चै असरदार वणै। 'मीरां' री हरेक किरण में अैड़ा अमीणा काव्य-बिम्बां री योजना सहज ई पाठक री ध्यान खीचै—अैड़ी ई विम्ब योजना री अनूठी मिसाल रूप देखीजै आ नारी रूपी सांझ री सलूणी सांग-रूपक -

अळसाई
रंग-तळाई न्हाई सांझ
बदलै-गुदलै वेसां रा वणाव
कूं कूं वरण हथाळी संवार
सौरमकड़ रळवया भंवर केस
था गायण गमक ज्यूं वैठी पवन पीढ़ो ढाळ
लागी नितंबां मखतूळां अंवार
अंगूठै अटकाय
सुळझाई आठी रेसम रंग री
नै बिंदली देवण देख्यौ—
उरसां आरसों,

असमांनी सेजां रा सळ काढ़
चंदै पकड़ाई तारक चूंदड़ी ।

अैड़ा रूपक, बिम्ब या प्रतीकां रो फगत प्रयोग करणौ कवी रो मकसद नीं रैयो। कविता री भाव-भोम, मांयलै सरूप अर मीरां री मनगत-चेतना नै ध्यांन में राखतां जे आं काव्य-उपादानां रै उपयोग री जांच करां तो इणी नतीजै माथै पूगां के कविता री मांयली बुणगट रै बारै आंरी कोई वकत नीं अर नीं कवी नारायणसिंघ भाटी कनै ई जांण-बूझ'र या सायास रूप सूं इण काव्य-सिल्प बाबत कोई रुझांण जाहिर कियो ।

रचना-सिल्प री दीठ सूं 'मीरां' निस्चै ई अेक सबळी काव्य-क्रति है पर आधुनिक राजस्थांनी लेखण री अेक लूंठी उपलब्धि ई, जिणनै किणी भारती भासा री टाळवीं काव्य-क्रतियां रै बिच्चै राख परखीज सकै ।

— नन्द भारद्वाज

* * *

लिखारां सारू

रचनावां रै महनतांनै अर जागती जोत री पुग नीं पुग री बाबत संगम रा सहायक सचिव नै सीधो कागद लिखो, संपादक नै लिखियां कारी कोनीं लागै ।

—संपादक

आप रा कागद

जोधाजी,

'जागती जोत' रा अप्रेल-मई अंक पढ्या। नवी पीढ़ी रा लेखकां नै मंच दे'र आप संगम रै कांम नै आगै वढ़ायो। इसा चोखा अंकां रै खातर आपनै वधाई। अम्बू सरमा रा अप्रेल अंक रा कागद में 'सिड़लै' जिसै सवदां रो प्रयोग पत्रिका रै स्तर लायक कोनी। हां, वांरो पूर्वाग्रह जरूर दीखै, जिको तो 'म्हारो देस' में भी हैं। अेक ई लेखक री दो तीन चीजां देणै री वजाय ज्यादा लेखकां नै मौको देवो तो आछो।

श्री लाल मिश्र
सभापति, राजस्थानी संगम बीकानेर

घणां मानीता जोधाजी,

'जागती जोत' रो अप्रेल ७७ अंक तो नीं मिळियो, पण आज इणरो मई ७७ अंक देख'र मन हरखायो। या मासिक वणगी अर आपरै जोसीलै हाथां सूं सम्पादित व्हैय'र निकळै या सरावण जोग बात है। सगळी सामग्री ओपती अर मनभावती है। आस करूं या जीवती रैयसी : 'खुद सूं खुद री बातां' में घणा फूठरा प्रयोग है, आ कविता घणी दाय आई।

डॉ. उदयवीर सरमा
बड़वासी (नवलगढ़)

व्हाला बांधव,

'जागती जोत' रो मई अंक मिळचो। दाय आयो। ओपती सामग्री, फूठरो गेट-अप। भाई सत्यप्रकास जी जोसी, नारायण सिंघ जी भाटी अर सांवर जी दइया री रचनावां चोखी लागी।

डॉ. नरसिंघ राजपुरोहित
खांडप, बाड़मेर

प्रिय श्री जोधा,

'जागती जोत' को इसके शैशवकाल से ही मैं निरखता रहा हूँ। आपने इसको नया मोड़ दिया है, जो प्रशंस्य है।

नागरमल सहल
अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, जोधपुर वि. वि.

जोधा,

मेरी पंजाबी कविताओं के सफल सटीक व सुन्दर राजस्थानी अनुवाद के लिए मेरी हार्दिक बधाई।

प्रकास प्रभाकर
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

इण अंक रा लिखारा

[पेज २ री बाकी]

मांनखा' आळा रेंवत जी । कम कीकर व्हैता, अरजण जैड़ा ई फरजण। पढ़ता व्हेला ? हां, हां ऊमर ई पढ़ै जैड़ी, अठी ? च्यारेक वरसां सूं कवितां रै गेलै।

आत्माराम : कोटा कदै पूगा ? साल-छ म्हीनां व्हैगा व्हैला। जोधपुर हा नीं, हरावळ सूं आया हा आगै ? वै रा वै, भला ओळखिया, सागै न वागै। कियां कांई ? देखो जी नवा-नवा सो व्हाला ई लागै। कोरी कविता ई लिखै ? नीं, दूजी विधावां में ई कणां-जणां दीखै।

कल्याण सिंघ राजावत : देखो जी बाळघां कांई पर कांई ? जा अै गैली, कीं न कांई, ओ तो बाजै मंच अर अै किलजी राजावत। इत्तो ई कोनीं जांणों, कुणसै गांव वसै, राजस्थांन रै खुणै-खुणै चावा, गीत अर गळै दोनां में ई ठावा। याद कोनीं खाती जी खट-खट, फूल-फूल री मोल, अर वां सलांम, सगळा आपरा ई कांम। अठी 'परभाती' अर अेक फुटकर गीत पोयी, दो-दो पोथ्यां सारू सजियोड़ा-संभियोड़ा।

सौभागसिंघ सेखावत : रजवाड़ां सूं भेळवाड़ां तांई भांत-भांत सूं भुगतियोड़ी ऊमर। हांऽऽ अब कीं इत्ती फरक अवस ऊमर रै सागै, के चोपासणी सूं जोधपुर री पैंडो लांबो-चांबो लागै। रोजीनां जावणो मज आवै नीं, पण तेज आ करां कांई, दूजां रा देख्योड़ा 'प्रूफ' दर ई भावै नीं। दो पोथ्यां हाथ में, दो वान में, दो संभाळैला सोभाग जी रात में। आ ऊमर पर इत्तो कांम भाई ओ भाई, रांम ओ रांम।

पारस अरोड़ा : अेक हाथ में कटोरदांन, दूजै में साइकल अर मूंडै में पांन, हेऽऽऽ वै देखो आवै पगां-पगां पारस जी। मोड़ा पूगा नीं, काठो दिन अंथा'र। पण कठै कबूतरां री चोक अर कठै भगत री कोठी। तीसूं तारीख री भाव-जाव खोटी। 'कंई यार, ही जिण में थूं बेगार ओळाय दी, बनियोड़ी टैम थारी आ 'जागती जोत' खायगी। था री ठा व्हैती तो प्रेस रो कांम सीखतो ई नीं।'

नन्द भारद्वाज : भिनतारा। नंद जी परबारा-परबारा। सो थांरी पोळन्न कांई मांडां, कीं तो आवण दो। थैक घर ढारण ई टाळै, तेजजी जावण दो। ज्यूं थांरी मरजी, थे जांणो पाठक तो रचनावां रा मरजी। हां असल ओळख तो ऊंठै ई पासी, नींतर थांरी तुकचाळी सूं कांई हाथै आसी।

सम्पादक रो पतो :
तेजसिंघ जोधा
संपादक–जागती जोत (मासिक)
मोहता कॉलेज
सादूळपुर–३३१०२३

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा. मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्या हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंहराज पुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा. ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं. श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ. मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-५०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा. जो)	सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निवन्ध माळा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
सरवर सूरज अर सिंज्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क—

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।

आगलै अंक री बानगी

- 'जी सा, लंदन आयग्या'—लिछमी कुमारी चूंडावत री विलायत-जात्रा।
- 'तिरी तळायां थनै थाग लूं'—नारायण सिंह भाटी रा पन्नरा गीत।
- 'म्हारी सोंध-सभा'—किरचूपत लाडांणी।
- 'रजाई' नांव री कथा अर 'काळभोटी अर वेद व्यास री मारवाड़' नांव री नामी लेख।
- बी. आर. प्रजापत, कल्याण गौतम, ओमप्रकाश गरग, दीपचंद सुथार अर पूरण सरमा इत्याद री कवितावां।
- डोगरी अर कसमीरी कवितावां रा उल्था।
- 'खुद सूं खुद री बातां' अर 'खुलती गांठां' री बीजी कैप।
- दूजा सगळा स्थंभ।

मुद्रण : माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर अर साधना प्रेस जोधपुर में छपी।

जागती

राजस्थानी संगम रौ मासिक

सम्पादक
तेज सिंघ जोध



अगस्त
१९७७

जागती जोत

राजस्थांनी संगम रौ मासिक

अगस्त १९७७

संपादक

तेज सिंघ जोधा

वरस : ५

अंक : ६

बरस रौ मोल : १२ रिपिया

इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ

रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक

राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)

बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

मोहन निरास : पीळो रंग दूबळी देही, तीखो-लांबो नाक, ऊपरलै होठ रै नपीणै चतराई सूं काटी थकी मूंछां, सिगरेट माथै सिगरेट, पैरियोड़ै कांई, डील माथै नीठ-सी ठैरियोड़ै गरम-बोझल सूट में लागै, कठै न कठै तो भाई निरास व्हैला ई । लारलै वरस भोपाळ में कवितावां रै अनवाद-मेळै मिळिया, तो इण अंक छपी कविता 'देखतां-देखतां' वै आप म्हनै दीवी अर उठै ई इण नै अरथावण में हाथूं-हाथ म्हारी मदद कीवी । कैवै हा—"आज म्हे कसमीर सूं असेंधा व्हैगा, अर कसमीर म्हां सूं । सांच पूछो तो कसमीर री असल कलचर, हिन्दू कलचर ही, जद के आज अेक पूरै वगत सूं (अर डेलीब्रेटली) उठै मीयांपो ई मीयांपो मांय-वारो कर फिरियोड़ी लावै । टोटीड़ां झील-झरणां तकात रा नांव वदळ दिया, म्हांरी तो ओळख ई साव गमगी । वा ई गमियोड़ी ओळख म्हारी इण कविता 'देखतां-देखतां' री पीड़ ।"

कसमीरी कवी मोहन जी तीन-पेंतिस रै विचाळै व्हैला । आकासवांणी श्रीनगर माथै नौकरी लागोड़ा । कविता सुणावै तो लागै जांणै देही री आखी रस-कस वांरी आंखियां आयगी व्है अर मूंडै-हाथां उफस आई व्है लीड़ियां दाई लीली-चैंर नसां । अवाज वांरी सुणियां पछै दिनां याद रैवै ।

मधुकर : डोगरी कवी । पूरो नांव केहरी सिंघ 'मधुकर' । चाळीस सांकड़ी ऊमर । रूगड-मुगड अर मस्त । जम्मू जिलै रा वासी । भोपाळ रै अनवाद-मेळै मिळिया तो खुद री छपियोड़ी कविता-पोथी 'डोला कुन्न ठप्पे आ' म्हनै दी । इण अंक वांरी कविता उणी पोथी में सूं । डोगरी में गीत, गजल अर कवितावां रै सीगै चावो नांव । खेती-वाड़ी रो हलीलो । पिंडां गी नौकरियां में जीव रमै नीं, आ छोडी अर वा छोडी ।

बी. आर. प्रजावत : कविता तो लिखै जिको लिखै ई, फोटोग्राफी अर पेंटिंग रो सौख ई प्रजापतजी नै पूरो । 'अंधार-पख' अर 'बोलै भारमली' इत्याद पोथ्यां रा कवरपेज आं रा ई बणायोड़ा । इण अंक 'जागती जोत' रै कवर री डिजाइन ई आं ई त्यार कीधी । जोधपुर विस्व-विद्यालै में नौकरी । सीधा-स्यांणा अर मिनतारू —आंख में म्हांन्यां ई चुभै नीं ।

पूरण सरमा : राजस्थांनी अर हिन्दी, दोनूं ई भासावां में लिखै, खासकर कविता । राजस्थांनी में पैली वळा छपिया—इणीं अंक में । जैपर जिलै रा वासी ।

मुरलीधर सरमा 'विमल' : कवितावां लिखै । 'जागती जोत' में पैली वळा । मेड़ता सिटी री हायर सैकण्ड्री स्कूल में टाबरां नै पढ़ावै ।

दीपचंद सुथार : इकेवड़ो डील । पैंतीस रै ओळूं-दोळूं ऊमर । मूंडै सूं हळकोक वारै आयोड़ो चोको । अपणास सूं हळाबोळ हंसी । माथै रा घणकरा'क वाळ उडियोड़ा । बात करै तो लागै जांणै पैली सूं ई सेंधा । मेड़ता सिटी में मास्टर । हिन्दी में ई लिखै ।

कल्याण गौतम : बीकानेर रा वासी । नवी कविता री खासी-भली समझ । खासकर भासा समचै भरोसो करां जैड़ा ।

ओमप्रकास गरग : बाड़मेर जिलै री पचपदरा तहसील में कांम लागोड़ा । इण अंक सावण रा दूहा । ओमजी 'जागती जोत' में पैली वळा ।

लिछमीकुमारी चूंडावत : साहित अर राज-नीत में सारीसो नांव । देसां-परदेसां फिरियोड़ा । राजस्थांनी में कथावां री केई पोथ्यां छपी । परदेसी वातां रा उल्था ई आप कीधा । विचारां में वांमपंथी रीझ-रिझाव । आजकालै राज्य सभा रा मेंबर । कांगरेस रा भला दिनां अेकर आप प्रदेस कांगरेस रा अध्यक्ष ई रह्या ।

[रचनावां व्हैता थकां, इण अंक मंडै लिखारां री ओळख टाळ दी, जिकां री ओळख पैली केई वळा 'जागती जोत' रा अंकां में आयोड़ी ही—संपादक]

वि ग त

● पूठै रो चितराम : प्रेमचन्द्र गोस्वामी

कसमीरी कविता

देखतां-देखतां

मोहन निरास

देखतां—देखतां
आंगळियां विचोकर निसरगी वितस्ता[1]
म्हांरी आप री उणियारी
व्हैगी म्हां सूं ई अमेंवी, अर मांगी
जिकी म्हे लाया उधारी-पारी
उधार रा भांडां में ही पैली सूं ई तेड़ां

सेवट तेवड़ी के खुद नै वेच म्हांनां
वपरायलां खुद रै साटै नवो असतित
इणी गतागम में गमगी म्हारी परगत
लीलांम होवण लागो मिनख रो मांस
अर म्हैं आप मोलाई, पीसां साटै
मिनख री सांस

अनांवो नगर सूं चीठगो अेक गधो
ढेंचूं-ढेंचूं —खायगो सगळो कागद
जिण माथै मंडियोड़ो हो म्हारो मूंडो
थारी पूठ
टाबर रा पगल्या

सड़कां गळियां में गेली विसरगी
लोगड़ा वां में, वां में ई चेताचूक वितस्ता

हां ऽऽ उणीं में जजवीजगी आखो वूलर[2]
समद समूदो माटी री थाळी में
अर लला[3] रै नाकै पड़गी अवढ़ी-ऊंडी खाई

---

१. अेक नदी
२. अेक झील
३. अेक दूजी झील

सगळा खुणां सूं पड़गी काच में तेड़ां
अर अेकूअेक तेड़ में साव सूनौ
अर गमियोड़ौ म्हैं— म्हैं ई म्है

सांकळ, जिकी अबारू-अबारू
किणीं गंडक रै गळै सूं खोलीजी
म्हारै गळै घलगी

दरूजा तूटा, बारियां उखलगी
तावड़ौ चांक दी आज म्हांरी हाडकियां

जद किणीं री उणियारौ व्हैगौ
उण खुद सूं असैंधौ (आ ई व्ही)
जिकौ वौ लायौ ऊधारौ-पारौ
उधार रा भांडां में ही पैली सूं ई तेड़ां
आंगळियां बिचौकर निसरगी वितस्ता
देखतां—देखतां

* *

डोगरी कविता

आ किण री पड़छांई ?

मधुकर

कुण दीखै दरपण रै मांई
आ किण री पड़छांई
म्हारी ?
नीं, नीं कदै न म्हारी
म्हैं ग्यांनी, दांनी, पराकमी,
दुनियां रौ सांचौ उपगारी

आ नीं म्हारी पड़छांई
ओ तौ कोई चोर, लफंगो, लुच्चो
डाकू-धाड़ायत सो लागै
साव बुझयोड़ी आंख्यां
मूंडै हद काळस पुतियोड़ी
इण कमरै में पण फगत अेकलो म्हैं हूं
तौ कुण दीखै दरपण मांई
आ किण री पड़छांई
म्हारी ?
नीं, नीं कदै न म्हारी
म्हारी अेक आंख रै सागै
रोज नवा इतिहास लिखीजै
म्हारो हर पग मजल लावै
म्हैं निस्कांम-भगत, मोह-त्यागी
कवी-लिखारी
दुनियां मांनै बूंसो म्हारी
आ नीं म्हारी पड़छांई
ओ तौ धोखेबाज फरेबी
कूड़ो, कमसल, फरजी दीसै
आंख्यां में कितरी कुटळाई
इण कमरै में पण फगत अेकलो म्हैं हूं
तौ कुण दीसै दरपण मांई
आ किणरी पड़छांई ?

उल्थो : तेजसिंघ जोधा

* * *

पनरा गीत

तिरी तळायां थनै थाग लूं

नारायण सिंघ भाटी

१

बादळियै बटाऊ री चढ़ती वेस
थांरै अंगां रौ डूंगरियौ उठाव
भल आपै आई सैंधी सुघड़ाई री
वा घुळती अर पिघळती पिछांण
सांसां सरूपाई रा समंद में
तिरै है हेत हिलोळा बण बेलड़ी।

२

गैरी ई गैरो कांई गाजै रे गिंवार
डंबर ग्रंबर डाका देवती
ग्रागै वधै तौ वध वधाऊं
वांह री नदियां पसार
ऊभरी यादां री घिर घाटियां
तिरी तळायां थनै ग्राग लूं ।

३

वूठोड़ा डूंगरियां राळची है हरियो ढोळ
पवन चढ़ चाल्यौ है प्यारी रै देसड़ै
कणकणी करी है किरण मूरी मोस्र
कवडाळा कोडां रा डहकै डेडरा
लाजाळू हाथां रै गूंथ्यै गोरवंदियै री याद
ग्राज तौ दोनां नै ग्रावै ग्रेकसी ।

४

ग्राज तौ सांवण गलीचै माथै
मूमलिया खोजै है थारा खोज
हरिया होवै हियै रा ग्रेनांण
दांवणियै मनां री दौड़ रा
घड़ी-घड़ी ग्राछटै ग्रोसांण
मोतीड़ा वींधती रसमायल रौळ रा ।

५

कुरजड़ियां कोकाई है काळोड़ै ग्रसमांन
खेजड़ियां गमगेरी है चिड़ियां रै ढूळकां
हरियल खेतां रै हमगीर तेजौ उगेरचौ तीखी राग रौ
तालां तिरै ग्राडी-डौढ़ी ग्राडां ग्राळी डूंड
डगरां तौ डिगै है गज-धोरां धसती डोरियां
सांईणी रा सदका पड़ै है कंचुवै केळीजती डेरियां ।

६

थांरी हिरणी निजरां री निरणी सौक
आज री अंधारी में बीजळियां लड़पड़ी
थांरै झुरणै सूं वांरै झुरणै री होड
पण थांरा डाबरिया नैण तौ सायरां पैली ऊभळै
म्हे पूगा पूगा नद नाळा जाळ उलांघ
थांरी छिळती छौळां नै छाती ढाबवा।

७

सांवण सूरंगै लियौ भादवै रौ भार
आ लागतै आसोजां री कंचन लीलांणी
झुर झुर झुरी किण झोलै री झांप सूं
किसोक बायरियौ आवळ-कावळ बाजियौ
तिलां ईं तिड़कै है दीवाळी नै दसरावै रौ नेह
हाल तौ तीजां नै राखड़ी रौ रूपक रसावियौ।

८

आयौ अे सुंदर थारौ कमाऊ कातीसर बीर
बणीठणी बोरड़ियां नै लाल चूनड़ ओढ़ावतौ
रूपाळी रसाळां लायौ काचर बोर मतीर
थांरै भांत-भांतीलौ दुपटौ बेल-बूंटां री भांत रौ
हाथ दियां ई तिड़कै नेह निजरां निदाणियोड़ी
भात हेत फूटतौ फळियां मुटकणै मूंग री।

९

जुगनू जड़ियौ है गगन रूंखड़ौ
चांद चिरागै है डावी डाळ
जिवणै पासै पवन कनातै
पांख पपीहां हुई बिछात
मन मेळू मिनखां खातर धण
सुरग धरा री आ सौगात।

अगूणी मघवा मेड़ी में रोंछी रमे रे वयार
धरा रै उजळाये चेरे जांणी
झीणी-झीणी मुलमुलियो रुमाल
लुळतां झड़गी मोतीड़ां री माळ
सुहाग सिंदूरे किरणाई टाळ
अलक आसरै ऊभी हुई है
ऊंसा सळवट दुपटी संभाळ ।

११

उण घेर-घुमेर नीमड़लो री
पितळवीं पसम में
छोगा तो छूटा है
हर कर सिंदूरी हुलास रा
पवन झोटै झिळकै उछाव
आंणां रै पावक रा जांणै झेरणा ।

१२

मग माथै ऊभोड़ै सरेस री
झणक उठी है सूखोड़ी फळी
रणक उठी है पायल हिळी पीड़
दपट उठी है सोरमियोड़ी दोठ
रूंआळा फूलां री फुरवीं फुरक में
ऊभा होवै है रूंआळी रा ऊमरा ।

१३

पींपिया फूटा है पींपळकी री डाळ
जांणै सूरज सुभाव रा चावता चूमा
अधर पलव तिसळ ठया अरुणाई रै ठांव
मुळकाई मठारिया है उफणता ऊरवा
अणबोल्यै बोल रा घुळै है उमाव
निसकारां नितरिया है तरुणाई रा तुजरवा ।

चेतै आई चौमासै री चूक
माह रै महीनै में बावड़ी
पीघळिया कुंजां वरणी मिसरी रा टूक
मुधरौ मुधरौ रिसै है सुवाद
तावलियै बखत री ताप में
खारोड़ै घासै रौ घुळतै मिठास ज्यूं ।

१५

इण रे पिलांणी रौ लिपटवों सुभाव
सळ पड़ियां ईं बळ ना नींसरै
डाळां सूं उळझी है डाळ
खेजड़ सूख्यां ईं खुमारी न ऊतरै
सुआं सागै कोचरियां करियौ रैवास
दिन पलट्यां ईं दरम्यांनी न बीसरै ।

* * *

लांबी कविता—चौथी खेंप

खुद सूं खुद री वातां

गोरधन सिंघ सेखावत

मन रै आगळ देय'र
मन कद तांई डाटोला। थूं जांणै है
मुसकिल है भूखी-तिरसी गाय री खूंटै माथै
ढबणो अर नीं तुड़ावणो हरी कचन्न घास सारू
मिनख आपरी जबांन रा सबदां नै
खुद चिगळै, उणां रो अरथ कंठां नीं उतरै
कलपनावां रा कळस उवारयां सूं
वगत रै धक्का मारै। हां, टांकयां सूं टकणां
धड़्यां पार नीं पड़ै।
थनै इत्तो गुमांन के सदा थूं ईं
सरपंच सारू खड़्यो व्हैला, कांईं थूं ईं
बणैलो अेम.अेल.अे.

अरे बदकार नेता !
थारी बोलो नीं सुणीजै थारै ई कानां में
थूं इतर-फुलेल रा फोवा उतार
थूं छींक सूं करवौ चावै भगज
अर चढ़ावौ चावै दकाल सूं समदर रै ताव
पण थोडी त.ळ संभाळ
लोगां रै माथै ऊपर धरचोड़ी दरद री पोटळी
पण मुसकिल, घणी मुसकिल
थारी करतूतां सूं लथपथ होयोड़ी
थारी हथेळयां री लाल रंग निरख। नेम
धरम माथै अतीत थोड़ौ घणौ बांच। याद
कर 'बंदे मातरम्' अर भारतमाता री जैकार
लारै थारा कांई सपना हा
मत बिखेर कुचमाद रा कांटा
जीवण दै कमीण-कारूवां नै
मत डूंगरां माथै नाच
साग री हांडी में उतार इन्द्रपुरी रा सपनां नै
धरती री कोख रै मती लगा दाग
दुनियां सूं जातां– जातां–
क्यूं के फूटसी भैद रा ढोल
सांच नैड़ै आतां-आतां

पण कांई ?
इतिहास नै कतल करणै री थारी आं चालां नै
पूठी सांवट बावळा
राजनीत री दड़ी रा धमीड़ां सूं
इण गांव रै मंगरां में लोई चुवण लागौ
थारी जैकारां में आवण लागी
मरचोड़ै मिनख री ल्हास जैड़ी बदबोय
थूं खुद नै देख सावळ देख भळै
चौक च्यांनणी मनाता

रोई जंगळ में सांस्यां रा डेरा । आज जणो-जणो
लेवो चावै राजनीती सूं फेरा ।
कुण पूछै समाज अर रीत री जागीर रा
पोरादारां नै
क्यूंके पूछणो गुना है अविसवासी, सुवारथी
अर बुगला भगतां री निजर में
जिका राजनीती रो मुगट बांध'र
सगळै दिन पिरजातंतर री दुहाई रै नांव
पिरजा रा कंठ मोसै ।
खज्योड़ी समझ रा तरळा गांव रै मांय
पग पसार फैल ज्यावै ।

कदै कदै
धूजवा लागै ओ गांव जैकारां सूं
पायचा टांग लेवै
न्याव रै सबदां नै पैरवां माथै गिणै
सूंसाड़ां सूं खूंआं उछळवा लागै । हक री बारखड़ी री
म्हारणी लेवै । देखतां-देखतां माथै में
चतर समझ रा सळ पड़ै । सत, धरम अर न्याव री
बातां डोळयां रै काळजै में चिप ज्यावै
तकदीर री लाटरी रा खिलाड़ी
भळै गांव रै गुवाड़ में ऊभ ज्यावै ।
लाल-पीळा परच्या छपवायां, फोटू साथै
ओळखो
म्हनै ओळखो, थारो, हमेस थारो रैवस्यूं
अवै कीयां जीव धापै राजनीती री चापड़ सूं

इण गांव में म्हारो जलम होयो
उछव मनायोग्यो । स्यात म्हारै सूं
कीं आसावां करी व्हैला अठा री धरती
अठा रा खेतरपाळ थपथपाई व्हैला

म्हारी पीठ । जूनी बातां री आंख्यां में
घुळचौ व्हैला फेरूं अेक रंग
चौगिड़दै अेक जसन मनायौ व्हैला
पण क्यूं ? म्हारी सामरथ रा डोरा
नापण री हूक इण गुवाड़ री छाती में
ऊठी व्हैला । पण देखतां देखतां लोगां री
निजर बदळगी । जुगां सूं घुळचोड़ी
गांठां में कीं सुळबुळाट होवण लागौ
लोग भाग'र घरां रै मांय आपरा
मूंडा ढक लिया ।
उण दिन म्हनै लाग्यौ
उछब री अेक पीड़ ई व्है
पीड़ रौ इलाज सोध्यौ । सुवारथ सूं तपतपाया
होठां रा सबद बगत रा भचीड़ा
आं डागळां माथै अेकर
अपणायत रा चैरा अलेखूं चैरा
ओळखाण री नसां मसळता
आपरी गुद्दी कुचरैला
साव बोदा बण
ओ विसवास नीं हौ ।
म्हैं खाली
हथेळचां रै भूगोल में
अपणायत री सांस लेवतौ
छेलौ अेकलौ रैवूंला
फगत अेकलौ
लोग निजरां छिटकाता
अणसैंधा बण ज्यावैला
म्हारै भोग्योड़ै बगत री दुरगत
खुद म्हारै सूं पङूतर चावैली ?

अणचींती तळायां री तरेड़ां में
बीत्योड़ै इतिहास रा संकळप
म्हारै माथै हंसेला
मीठै मोकै री हतायां
खुद अळूझ'र
वणैली अेक टेम री कथा

म्हारा हांफळा
वेहोस होवैला

म्हारी गोद में
म्हैं अेक अणलिख्यै इतिहास रो
नायक वणा दियो जावूंला
आ नीं सोची
पण गोरधन
टेम रै पागड़ां में पग राख
इण खोजां रा निसांण
स्यात कोई पिछांण सी

लोग होठां पर
वातां नै खिलावता वातां रा गढ़ वणा देवै
म्हारै साथै रैय'र
म्हैं उण री वात आज तांई समझी नीं
कांई कैवै, चावै कांई
उण री चावना री भोग
कीं सारू रोग
समझै लोग औ आप आपरो विचार है
पण दूजां सूं कांई होड
वै तांणो वणै जिंदगी रो
मामूली वातां सूं
नीं तमकावै मनसूवा
औ स्यात सुभाव व्है र

अलेखूं भटकै
रोई रूंखां री ठंडी छीयां सारू
परण उण री जांघां में
नित खाज रा इतिहास बणै
उमर रै हियाव री सींवां
आपरी मसळै छाती
अणभेल्यौ कुरळाट
दावतौ खुद नै
मिनखां रै मंगरां चढ़ जावै

म्हें मोचूं वौ क्यूं चावै
सोधबौ सोनौ
चूला री राख में
काख में जलम्योड़ै छोटै री वरसगांठ
मनातां नीं आवै उणनै सरम
गळी, गुवाड़ अर डागळै डांवरचोड़ी निजरां
डील री तांण नै पंपोळै
ढुळ ज्याणै
रूं रूं में
परण आ चावना कठै नीं
म्हारा समझदार मन
देख दफ्तर, कालेज, कारखानै
गांव, सैर, जंगळ
सगळै
क्रांति रौ सुरजो ढोल पीटतौ-पीटतौ
दरवाजै माथै ऊभ ज्यावै
परण वौ छात माथै सूता लोग-लुगायां
रा खिलकटिया निरख'र
करै खुद रै गदगदावड़ी
सूंघै सगळी बातां नै पछ जोड़ै बां सूं
खुद री रातां नै । सोचूं कांई ऊमर व्हैली

इण छोरा री, जिका रै टांगां विचै
समदर उफांणा लेवण लाग्यो । अेक सपनां सूं लड़ै
दूजो असलियत सूं डरै
पण बेवस सगळा
सकळाई री सांकळां
आपोआप पड़ै किण रै माथै
पण सं भागणो चावै रवदै में
वतळावै गुपताळ
योजना री नस तोड़ै खुद नै खुद में ऊळझावै
पण उण री गत तो
साव अळगी
दूजां सूं
अेक छिणकारो सो ऊठै उण रै मन में
वो अणगिण छवकाळी मूरतां मांय
डूव'र खुद री ताकत तोलै
मनस्यावां री रंगत सूं खुद री मोजमस्ती रंगै ।
म्हैं सोचूं उण रै ईसकै सूं
क्यूं फिसळै म्हारा पग ! क्यूं सणसणाट व्है
पूरै डील री नस-नस में । ओ खुद री
समझ रो नमूनो है
स्यात वाड़ रै मांय मूतण सूं
दूब रा कंठ गीला व्है सकै
घमंड री मरोड़ सूं डूंगरां रै दस्त व्है सकै
कुण सा वेद रा मंत्रां नै पाळ राख्या है
वो आपरी जेव में
पण कीं रो कांई दोस
गिणै नीं लोग चमक नै सोनो । तरकीवां री
तीर-कवांण कद तांई अंगड़ाई सूं
मरदानगी पिछांणती रैसी
डील रा नखरा कद तांई
भीड़ रै अंतस में
दूहां-प्हाळी लिखैला ।

[आगलै अंक पछैती चैप]

* * *

निबंध/सोध-खोज

बालमिकी अर वेद व्यास रौ मारवाड़

जहूर खां मेहर

[सोध-खोज रै इण लेख में 'मरुधन्वम्' सबद री जिण नवै ढाळै जोख-पजोख करीजी, वा इण री खास बात । ठेट 'अमरकोस' रै लिखारै सूं लेय'र रेऊजी तांई री बातां री खरी ओळखांण रौ जतन औ लेख । —संपादक]

घणी-घणी भांय तांई पसरयोड़ी जमीन रै पांण मारवाड़ कोरौ राजस्थांन रौ ई नीं हैदराबाद अर कसमीर टाळ आखै भारत रौ सगळां सूं लांठौ रजवाड़ौ हौ ।[1] आंथूणै राजस्थांन रौ औ राज घणौ पैला कित्ता ई भांत रा नांवां सूं ओळखीजतौ माण्डव्यपुर, मण्डोर, मरु, मरुस्थल, मरुस्थली, मरुमेदनी, मरुमडल, मारव, मरुदेस, मरुधन्वम्, अर मरुकान्तर जैड़ा नांव मारवाड़ सारू जूनी पोथियां में मिळै ।[2] आजकालै औ जोधपुर नांव सूं ओळखीजै । जूनी कवितावां में जोधाणौ ई कहीजतौ । मारवाड़ रा न्यारा न्यारा इलाका घणा पैला द्रमकुल्य, माण्डव्यपुर, मण्डोर, मेदान्तक, मेदपाट, भिल्लमल्ल, जांगल, पल्लिका, जबालिपुर, नड्डुल अर भळै कित्ता ई नावां सूं चावा हा ।

मारवाड़ रै मानखै रौ इतिहास अेक सौ हजार बरसां रै लगैटगै जूनौ है । भाठा रा अणघड़ ओजारां[3] रै पांण, जिका लूणी अर चंबळ नदियां रै असवाड़ै-पसवाड़ै मिळिया, औ सार काढ़ीजियौ के मारवाड़ में पैलपोत वसण आळा मानखां रौ इतिहास उत्तौ ई जूनौ है, जित्तौ के बनास, गंभीरी, अर वागां जैड़ी नदियां रा पसवाड़ां माथै रैवणियां मिनखां रौ हौ ।

---

१. रेऊ, ग्लोरीज आफ मारवाड़ अैण्ड ग्लोरियस राठौड़ पे. १

२. (अ) गौ. ही. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास पे. २

(आ) मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग १ सम्पादकीय पे. १

३. रुडले चिप्ड स्टोन इंपलीमेंट्स

अेक सो हजार वरत जूनो।[1] जग चावी अर अणूती जूनी 'सिन्धु सभ्यता' रै समै मारवाड़ रै आंथूरणै खुरणै मिनख रैवता हा। इण समै रा मिनख तो 'सभ्य' गिणीजै। राजस्थान में जिकी दफ्तरी खुदाई[2] हुई उण सूं ठा पड़ै के मोहनजोदड़ो रै समै अठै ई मिनख रैवता हा। सो मारवाड़ रै असवाड़ै-पसवाड़ै तो सिन्धु सभ्यता खरीज ही, पण खुद मंडोर अर जोधपुर री ठौड़ उण समै मिनखां गो वासो हो, आ वात अजै तांई पकावट सूं नीं कथीज सकै। तो ई जूनी सभ्यतावां रा जांणकार मारवाड़ में जूनी सभ्यता अंगेजै।[3]

वैदिक साहित में मारवाड़ रा कित्ता ई वखांण मिळै। ठेट रिगवेद में 'मरु' सबद आयोड़ो है।[4] वेदां में मरुतां री आख्यायिका आयोड़ी है। केई सिमारा तो वैदिक मरुतां रै बसण री जागा होवण सूं ईं इण रो नांव 'मरु' पाड़ीजियोड़ो गिणै।[5] वालमीक रामायण में तो मारवाड़ रो घणो ई वखांण मिळै। रामायण रै जुद्ध कांड में मारवाड़ रै जलम सारू अेक कथा लिखियोड़ी है। भगवांन श्री रांम जद लंका माथै चढ़ाई सारू वानर सेना लें'र व्हीर होया अर समदर रै किनारै पूगा तो समदर गेलो ई को दियो नीं।[6] इण सूं रीस आयोड़ा रामजी ब्रह्मदण्ड नांव रो तीर कवांण में चढ़ाय'र उगरामियो। डरूं-फरूं होयोड़ो समदर हाथ जोड़तो गई करण सारू डाडण ढूको। राम जी बोलिया के औ कोई टावगं रो रमेकड़ो तो है कोय नीं, जिण नै उगरामो तो भलांई पण छूटै नीं।[7] मूं'डो पिलकावतो समदर गिड़-गिड़ायो के 'द्रमकुल्य' नांव रो म्हारो अेक हिस्सो धोराऊ दिस में है। उठै रो पाणी पीय'र मलेछ पाप करै अर म्हनै ई पाप रो भागी वणावै। औ वांण जे उठै ठोकीज जावै तो म्हारा पाप ई भसम परा व्हैं। राम जी नै दया आयगी अर वां द्रमकुल्य कानी वांण म्हाय दियो। इण ब्रह्मदण्ड नांव रै अगनी वांण सूं समूदै द्रमकुल्य रो पांणी तो कळकळीज'र हवा होयगो अर रूखां समेत मलेछ बळ'र भसम व्हेगा। उण ठौड़ विना पांणी री थळी वणगी,[8] जिकी मरु-खेतर वाजै।

---

१. (अ) राजस्थान थ्रू दी अेजेज पे. ३३
(आ) दी स्टोन अेज कल्चर्स आफ राजस्थान
२. Archaeological excavations
३. (अ) हंसमुख लाल धीरजलाल सांखलिया, बीगिनिंग आफ सिवलीजेसन इन राजस्थांन (उदैपुर सेमीनार)
(आ) डॉ. वी. अेन. मिश्रा, प्रोसिडिंग्स आफ राजस्थान हिस्ट्री कांफ्रेंस-१९६७
(इ) डॉ. लेसनिक, इण्डियन आर्कियालाजिकल रिव्यू, १९५६, ५७, ५८ अर ५९
(ई) अे. घोस, द राजस्थांन डेजर्ट, इट्स आर्कियालाजिकल आस्पेक्ट्स
४. रिगवेद, १,३५,६.
५. लिछमी नारायण सास्त्री, राजस्थांन प्रवोध पत्रिका पे. १०
६. देवीप्रसाद, तवारीख मारवाड़ (ह. लि.) पे. ११
७. (अ) विसवेसरनाथ रेऊ, मारवाड़ का इतिहास, पे. २
(आ) देवीप्रसाद, तवारीख मारवाड़ पे. १३
८. वाल्मीकी, रामायण जुद्ध कांड, सर्ग २२

मारवाड़ रै जलम सारू रामांयण रै बखांण नै कोरी कथा मांन'र कोई टाळ दै, तौ ई इत्तौ तौ अगेजणौ ई पड़ै के खुद बालमीकी 'मरुकान्तर' या 'मरुदेस' नै ओळखता तौ हा ई। सांचाणी अपां जे सावळ पड़ताळ करां तौ ठा पड़ै के इण मरुखेतर री ठौड़ कदै ई हबोळा खावतौ समदर हौ। पछै समद रौ पांणी सूखगौ। पांणी री लैरां रेत री लैरां बणगी। जुगां सूं उड उड समद में पड़ती रेत पांणी रै तूंडै जमती रही। पांणी सूखौ जद इण जुगां सूं जमती वेकळू सूं मरुखेतर बणियौ। इण मरुखेतर में मिनख री बसणौ तौ कठैई रह्यौ जे कोई दोरौ-सोरौ पूग जावतौ तौ ई बळती रेत अर लू रै खेंखाडां सूं भुळसीज जावतौ। तड़तड़तै तावड़ै सूं बळती धूड़ मिनख नै बाळ काढ़ती अर सेवट मरणौ पड़तौ। इण सारू ई इण खेतर रौ नांव 'मौत री वाड़ी' (रीजन आफ डेथ) पड़ियौ। ओझा जी लिखियौ 'मरु रौ अरथ मरणौ अर रेगीस्तान है। सो जठै मिनख पांणी बिना मर जावै उण रौ नांव मरुदेस है।'[१] मुगल बादसा हुमायूं माथै बीखा पड़िया जद वौ लुकतौ-लुकावतौ 'मरुखेतर' कानी मूंडौ करियौ हौ। उण में कैड़ीक बीती, मरुखेतर में मिनख रा कैड़ाक हवाल व्है, इण री बखांण किता ई फारसी लिखारा घणौ खारौ करियौ है।[२] समदर-सास्त्र सूं ई आ बात पक्की व्है के मारवाड़ री ठौड़ कदै ई समदर हिलोळा लेवतौ हौ।[३] ढाणियां रै पाखती रेतूड़ रै धोरां माथै रमतै टाबरां नै अजै तांई कदैई गुळगुचिया तौ कदैई सीप अर सख मिळै है। पकायत सूं कैय सकां के इण मरुखेतर री ठौड़ कदैई समदर हौ। मारवाड़ में अजै तांई परम्परावां में आ कैवत चावी है 'वौ पांणी मुलतान गयौ।' सो इत्ती बात तौ पक्की है के इण मरुखेतर री जागा कदैई समदर हौ। बालमीकी रामायण लिखी जद 'मरुदेस' तौ व्हैला, कांई ठा तीर सूं नीं बणियौ व्हैला, पण बालमीकी नै इण बात री ठा तौ खरी ही के अठै पैला समदर हौ। सो रामांयण री साख मुजब इत्ती बात तौ है ई के रामांयण लिखीजी जद मारवाड़ बणियोड़ौ हौ। इण नै मिनख उण वेळा ई अेक देस अगेजता हा। मारवाड़ री ठौड़ घणौ पैला कदै ई पांणी हौ।

मारवाड़ घणौ जूनौ मुलक है, इण बात री अेक भळै साख भागवत पुरांण में मिळै। इण में मारवाड़ नै अेक अैड़ी चोखी जागा बताई है के जठै गुणी मिनखां री वासौ हौ।[४] इण पुरांण रै दसवैं स्कन्ध रै पचासवैं पाठ में अेक वारता है। मगध रौ राजा जरासन्ध आपरै जंवाई मथुरापति कंस सूं वैर लेवण खातर सतरै वार चढ़ाई करी, पण उणरौ कारज नीं सजियौ। थोड़ोक पछै काळयवन मथुरा माथै हमलौ कियौ। इण मौकै श्री किसन जदुवंसियां नै भेळा कर समझाया के जे जरासन्ध पाछौ हमलौ परौ करियौ तौ दोवड़ा हमलां सूं जदुवंसी

---

१. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, जिल्द १ पे. १
२. (अ) गुलबदन बेगम हुमायूंनामा (उल्थौ डा. रिजवी) जि. १, पे. ५४१-५४२
   (आ) बदायूनी, मुन्तखब-उत-तवारीख (उ. रिजवी) जि. २, पे. १५४
   (इ) गुलबदन बेगम हुमायूंनामा (उ. डा. ब्रजलाल सरमा) पे. ६०-६१
   (ई) जौहर, तजकीरात उल वाकयात (रिजवी) १, ६३५
३. इम्पीरियल गजैटियर, जिल्द १, पे. १, ३ अर ७६
४. भागवत पुरांण, स्लोक ३९, अध्याय १०, खण्ड १

सागेड़ा कूटीजैला । किसन मथुरा रै जदुवंसियां नै द्वारकापुरी पूगण सारू त्यार कर लिया। वां नै सुभायो के मथुरा सूं द्वारका पूगण रो सगळां सूं निसंक मारग जठै गोली रो ई खटको नीं, 'मरुधन्वम्' होय'र निकळै । अैड़ो ई भरोसै जोग मारग जे मरुधन्वम् रो मारग हो, तद विणज-वोपार सारू वाळदिया ई श्रो ई गेलो पकड़ता व्हैला। इण सारू ई अजै तांई मारवाड़ नांमी वोपारियां रो घर गिणीजै । भळै पाछी श्रा वात अठै लराईज सकै के भलां ई भागवत पुरांण में जरासन्ध अर काळयवन री वारता कोई इतिहास नीं गिणां, तो ई श्रा तो अंगेजणी पड़ैला के भागवत पुरांण लिखीजियो उण वेळां 'मरुधन्वम्' देस मोजूद हो। इण नै मिनख मारग मतै भरोसै जोग जागा गिणता ।

भागवत रै वखांण रो मरुधन्वम्' मारवाड़ हो, श्रा तो सगळा ई इतिहास लिखारा अंगेजै । पण इण 'मरुधन्वम्' में 'धन्वम्' किसो मुलक हो। वेदव्यास जी 'मरु' देस रै सागै 'धन्वम्' नै कीकर जोड़ दियो। इण वात समचै इतिहास लिखारां रा न्यारा-न्यारा विचार है। मारवाड़ रा घणा चावा इतिहास लिखारा रेऊजी तो आपरी सूझ सूं श्रो सार काढ़ियो के मथुरा अर द्वारकापुरी रै अंन विचै तो मारवाड़ अर उणसूं लंकाऊ दिस में 'धन्वम्' नांव रा दो न्यारा न्यारा मुलक हा।[1] संस्क्रत रा धुरन्धर विद्वांन अमरसिंघ जी रो वखांण रेऊ जी री वात सूं मेळ नीं खावै । अमरसिंघ जी 'अमरकोस' रचो हो । अमरसिंघ जी रै मुजब 'मरु' अर 'धन्वम्' अेक अरथ राखण आळा (सिनोनिम्स) आखर है।[2] दोनूं सबदां रो अेक ई अरथ 'रेगिस्तान' है। सो 'मरुधन्वम्' अेक ठौड़ रो नांव ई है। सो रेऊ जी अर अमरसिंघ जी रै वतायोड़ै 'मरुधन्वम्' रै अरथ में फरक है। श्रां मांय सूं अेक वात खरी व्हे, तो बीजी मतै ई कूड़ व्हे जावै । पण व्हे श्रा ई सकै के दोनूं ई वातां कूड़ व्हे । सावल पड़ताळ करां तो ठा पड़ै के दोनूं वातां में सूं अेक ई खरी नीं है।

पैला आपां रेऊ जी री वात माथै विचार करां तो ठा पड़ै के मारवाड़ रै लकाऊ दिस में 'धन्वम्' नांव री ठौड़ सांचाणी केई है । श्रा वात आप रेऊजी नै ई ठा कोय नीं । मथुरा अर द्वारका रै विचै तो मारवाड़ है ई । आगै मारवाड़ अर द्वारका रै विचै कठै ई 'धन्वम्' व्हैला, यूं विचारतां आगै इण ई दिस में 'धन्वम्' कठै ई है श्रो कैणो तो सोरो ई है। पण इतिहास में इण वात रो पड़ूतर जोइजै के इण गेलै में 'धन्वम्' कठै है । किसै सावन में इणरो हवालो मिळै । 'धन्वम्' जे कदै ई खतम व्हगो तो कद'क व्हियो । अजै तांई ढूंढा कठै ई मिळै के नीं ? जे अेक ई जूनी पोथी, लेख या ढूंढां सूं मारवाड़ सूं लकाऊ दिस में 'धन्वम्' नांव री ठौड़ रा कीं वावड़ नीं लाधै, तो पछै कोरी रेऊ जी रै कह्योड़ी है, इण सूं तो सांच गिणीजै कोय नीं ।

---

१. रेऊ, मारवाड़ का इतिहास, जि. १, पे. ३-४

२. अमरकोस काण्ड २, भूमिवर्ग, स्लोक ५.

संस्कृत रै जाणकारां सूं पड़ताळ करियां ठा पड़ी के संस्कृत व्याकरण रै मुजब 'मरुधन्वम्' सबद अेकवचनी है, बहुवचनी कोय नीं। जे सांचाणी औ सबद बहुवचनी व्हैतौ तौ भारत रा मानीता वेदव्यास जी, जिका महाभारत अर अठारा पुराणां री रचना कीवी, संस्कृत व्याकरण री अैड़ी मामूली भूल कोनी करता। जे सांचाणी 'मरुधन्वम्' 'मारवाड़' अर 'धन्वम्' नांव री दो न्यारी न्यारी ठौड़ां बतावण आळौ अेक सबद व्हैतौ तौ संस्कृत व्याकरण रै कायदै मुजब इण रौ रूप मरुधन्वै व्हैतौ, मरुधन्वम् तौ नीं ईं व्हैतौ। सो रेऊजी री बात तौ ऊठी जठै सूं ईं खोटी।

अबै आपां अमरसिंघ जी री बात माथै विचार करां, जिकां 'मरु' अर 'धन्वम्' नै अेक ई अरथ वाळा दो सबद बताया। 'मरु' रौ अरथ रेतीली जागा है अर औ ई अरथ 'धन्वम्' रौ है। आ मानण में कीकर आय सकै के वेदव्यास जी जैड़ा मुनी अेक ठौड़ रौ नांव दो-दो वळा लिख दियौ। आज ई देखां तौ जोधपुर-जोधपुर के जोधाणौ-जोधपुर या अैड़ा ई अेक जागा रा अेक अरथ आळा दो सबद तौ लिखण में आवै कोय नीं। जे कोई लिख दै तौ व्याकरण मुजब खोटी बात गिणीजै। वेदव्यास जी रै लिखण में व्याकरण री खोट नीं व्है सकै, सो अमरसिंघ जी री बात ई बैठती कोनी लागै।

रेऊ जी अर अमरसिंघ जी दोनां री बात खरी कोनी पछै आ बात सामी आवै के 'मरुधन्वम्' सूं व्यास जी रौ अरथ कांई हौ? आ बात तौ जचै कोनी के महामुनी कोरी कविता नै फूठरी बणावण सारू के छंद री चटक-मटक सारू औ सबद कांम में लियौ। महामुनी री घाल्योड़ी इण अबखी आडी रै पडूतर सारू बालमीकी जी री मारवाड़ रै जलम सारू लिख्योड़ीकी कथा रौ आसरौ लेणौ पड़ै। इण कथा रौ जिकर म्हैं इणी लेख में पैला कियौ हूं। इण 'मरु' रौ जलम धनु सूं ईं होयौ हौ, इण सारू ई वेदव्यास जी, जिका रामांयण री बात जांणता, इण सारू 'मरुधन्वम्' नांव लिखियौ। सो बात खुलासै व्हैगी के 'मरुधन्वम्' रौ अरथ वो मरु हौ, जिकौ धनु सूं जलमियौ। बात री सार औ के 'मरु' नांव रेतीलै देस रौ है अर 'धन्वम्' कोरौ विसेसण (अेडजेक्टिव) है, जिणमें उण देस री उत्पत्ति छिपियोड़ी है। 'मरुधन्वम्' सबद इतिहासिक सबद है क्यूं के इण में मारवाड़ रै जलम रौ इतिहास छिपियोड़ी है। सो इण ढाळै 'मरुधन्वम्' अेक ई जागा रौ नांव व्हैता थकां 'मरु' अर 'धन्वम्' दो न्यारै न्यारै अरथां रै सबदां सूं बणियोड़ौ है। इण में अेक तौ मुलक रौ नांव है अर दूजौ उण मुलक री ओळखांण करावण आळौ सबद है।

इतिहास लिखारा रामांयण अर भागवत में मारवाड़ रै जलम सारू आयोड़ी बात नै अंगेजण में भलांई कित्ती ई टाळमटोळ करलै! उण नै कोरी साहित री बात कैय'र टाळ दै। दूजा साबूतां विनां इण साख रौ मोल दावै जित्तौ घटाय दै। पण आ तौ अंगेजणौ ई पड़ै के मारवाड़ ठेट बालमीकी अर वेदव्यास रै समै रौ देस है। रामांयण अर भागवत लिखीजी जद मारवाड़ नै मिनख ओळखता हा। अेक खास मुद्दै री बात आ है के बालमीकी अर वेदव्यास बिचै हजारां बरसां रौ फरक है। पण भागवत में उणी ठौड़ नै 'मरुधन्वम्' लिखीजी है, जिण नै रामांयण में 'मरु' बताई है। मारवाड़ आज ई मथुरा अर द्वारका रै अैन बिचै है।

साहित री वात में भूगोल री साख इण वात रै ठाठीकपणै री सबूत है, के मारवाड़ घणो जूनो ठेट पौराणिक देस है, भलांई उण वेळा रै मारवाड़ रै इतिहास रा खावड़ मिळै या नीं मिळै। सो साहित अर भूगोल रै साबूतां रै पांण मारवाड़ री महाकाव्य काल तक री प्राचीनता तो पक्कीज है।

मारवाड़ रै पुरांणपण री अेक भळै साबूत व्यास जी रै ई रचियोड़ै महाभारत में मिळै। मथुरा अर द्वारका रै बिचलै खेतर नै महाभारत में 'जांगळ देस' लिखियो है। जोधपुर में बिजोळाई रा भाखरां रै बिचै बणियोड़ी अेक खो (गुफा) अजै तांई भीम भड़क नांव सूं चावी है। कित्ता ई डोकरा-डोकरियां इण खो नै पाण्डू भीम रै बणायोड़ी गिणै।

परम्परावां में आ वात ई अजै तांई तो रुखाळीजियोड़ी है के मारवाड़ री जूनी राजधांनी मंडोर ही। अठै मांडू रिसी रो वासो हो। इण सारू इण रो नांव मांडव्यपुर अर पछै मंडोर पड़ियो। नैणसी री ख्यात अर परंपरावां सूं आ ई ठा पड़ै के मंडोर री राजकंवरी मंदोदरी लंकापति रावण नै परणायोड़ी ही।[1] आ ई कहीजै के अयोध्या रै कंवर श्री राम रा कुळ गुरु वसिस्ठ मुनी हा, जिका आबू री टेकरी माथै रैवता हा।[2]

इणां सगळा सबूतां सूं ओ सार काढ़ीजै के रामायण अर महाभारत री वेळा मारवाड़ हो तो पूरो ई। ओ मारवाड़ रो इतिहास साहित रै पांण बालमीकी अर वेदव्यास रै समै जित्तो जूनो अर दफ्तरी खुदाई रै पांण सिन्धु सभ्यता जित्तो जूनो अर अणघड़ घड़ियोड़ा भाटां रै राछां रै पांण अेक सो हजार वरस बूढ़ो है।

* * *

---

१. (अ) रायबहादुर हीरालाल जी रै लिखियोड़ै 'अवधी हिन्दी प्रांत में राम-रावण युद्ध' नांव रै लेख री काट करता थकां रेऊ जी सुधा पे. ४७३ माथै इण परम्परा रो हवालो दियो है।
(आ) मारवाड़ रा रावणियां अर रावणियाणा जैड़ा गांवां रा नांव उण परम्परा री जड़ है।

२. गहलोत जगदीश सिंघ, राजपुताना का इतिहास, २ पे. १९।

व्यंग

म्हारी सोक-सभा

मिरचूमल माडांणी

[फरजीमल फल्लांणी म्हारौ घणा हेताळू मित ई नीं, बैल-बोटमियौ यार ई है। म्हारी कविता सबसूं पैला वौ ई सुणै। हूटिंग जैड़ै आडै वगत आडौ आवै। उणारी कैवणी हौ के म्हारै मरियां पछै सोक सभावां करण रौ ठेकौ वौ ई लेवैला। नीं जांणै उणारौ अैमांन उतारण वास्तै म्हनै कित्ता जलम लेवणा पड़ैला? म्हारी सोकसभा में पढ़ण वास्ते भासण म्हैं खुद ई त्यार कर'र देवूं हूं, जिण सूं अैन वगत माथै उण नै आ तकलीफ नीं उठावणी पड़ै।]

सन् १९८७

"भायां अर बहनां!

भौत ई दुख री बात है के मिरचूमल माडांणी, राजस्थांनी रा लूंठा कवी, आज आपां रै बिचै नीं रह्या। इण सूं बध'र आपां रौ इण दुनियां में कोई दुरभाग नीं हो सकै। सांच मांनां तौ किणी नै इण री अजोगती कलपना तकात नीं ही। सिरफ पैंतीस बरस री ऊमर में वै अकाळ मौत मरगा अर आपां सगळां नै अनाथ करगा।

आज जद के सोक-सभा रै वास्तै आपां सब अेकठ व्हिया हां, म्हैं वां रै बारै में भौत कीं कैवणी चावूं। म्हैं वां रै सब सूं ज्यादा नजीक ई नीं हौ, वां रौ बैल-बोटमियौ यार ई हौ। इण कारण वां रै जीवण री छोटी सूं छोटी बात ई म्हैं आछी तरै जांणूं। म्हारी पत्रकारां, सोध-करणियां अर लिखारा सूं हाथ जोड़'र विणती है के इण फरजीमल फल्लांणी री बातां ध्यांन सूं सुण'र सुरगवासी माडांणी जी रै बारै में लिखै-छापै। लोगां नै गलतफैमियां नीं रैय जावै, इण खातर म्हैं वै सब बातां मांड'र बतावूं हूं, जिकी के किणी कवी री मिरतू माथै नीं बतावणी चाहीजै।

दुनियां में आ मसूर है के कविता जलमजात प्रतिभा व्है, भगवांन री वरदांन व्है। पण माडांणी जी रै वास्तै कविता नीं तौ जलमजात प्रतिभा ई ही अर नीं भगवांन रौ वरदांन ई। वै अक्सर आ ई कैवता के वां री जिंदगाणी रौ सब सूं खराब दिन वौ हौ, जिण दिन के

कविता लिखण री फितूर वां रै दिमाग में जलम लियो । वै इण दुर्घटना नै यूनानी ट्रैजेडी सूं कम नीं मांनता । वै कदै कदै ई आ ई कैवता के वै अबस लारला जलम में कोई मोटो पाप कियो हो, जिण री फळ कवी बण'र वांनै इण जलम में भुगतणो पड़ियो वै खुद नै कवी किणी वरदांन सूं नीं, सराप सूं वणियोड़ो मांनता । वांनै और किणी बात रो गम नीं हो, सिवाय कवी बणण रै । कविता लिखणो वां रै वास्तै यातना ही, सजा ही । वै कदै-कदै ई कैवता के वै और कीं ई बण जावता तो ठीक हो, पण कवी बणग्या—इण बात रो गम भोत ई ज्यादा हो । अर आखिर वो गम वां नै खा ई ग्यो ।

लोग आ ई समझता रह्या के वै 'स्वान्तः सुखाय' लिखै । कोई आ नीं सोचतो के वां रै घर में ई परात-हांडी है । रचनावां भेजती वगत वै हमेस मन में थ्यावस देता के फिकर मत कर, आं कवितावां रै महनतानै सूं हफ्तो-दस दिन सोरा निसरैला, पण महनतानै री ठोड मिलती वा'वाही जिण नै के वै लूंत लगाय'र ई नीं चाट सकता हा । आप लोगां नै इण बात रो इचरज नीं व्हैणो चाहीजै, जे वै गुपत नांव सूं जासूसी उपन्यास लिख्या व्है । आखिर सूनो छांणा तो मांगै ई मांगै ।

पढ़ण री इत्तो सोक हो के वां रो वस पूगतो तो वै दुनियां री सगळी कितावां आपरा ढूंढ़ा में अेकठ कर न्हांखता । पण लिछमी री दया कदैई वां रै माथै नीं रही । तो ई फाका मार-मार'र हजार डेढ़ हजार कितावां भेळी करी, जिकी के म्हनै दियै अबै कबाड़ी रै अठै जावैला ।

वां री सोसियल लाइफ रै बारै में अबै आप नै कांई बताबूं, अठीनै तो वै कवी बणिया अर उठी नै लोगां री निजरां सूं पड़िया । अर औ निजरां सू पड़ण री सिलसिलो अैड़ो चालू होयो के पड़ाक-पड़ाक लोगां री निजरां सूं पड़ियां ई गया । बाप कैवतो—छोरो विगड़ग्यो । मां कैवती—औ तो हाथ सूं गयो । भाई-बैन कैवता—घर अर घर आळां रो सोच ई कोय नीं । अर घर आळी कैवती—किणीं दूजा रै लारै जावती तो सुख पावती । टाबर कांई कैवता ? छोटी-छोटी चीजां रै वास्तै तरसता रैवता ।

साईना निकमो कैवता तो बूढ़ा-बडेरा ढोली घोड़ा रो खिताब देवता । सामला नै जद मालम व्हैतो के वै कवी है तो अैड़ी अजब मीट सूं देखतो के वै अपणै आप नै अपराधी लखावण लागता । वां री निजरां जमीं में गड जावती । वै धरती माता सूं मन ई मन अरदास करता के वा फाटै अर वै मांय समाय जावै । पण डम्बर री अै सरकारी सड़कां, जिकी के बरसात नै लांबा-लांबा मूंडा फाड़ दै, अेक कवी री लाज बचावण खातर नीं फाट सकै ।

कवी वण'र वै दीन-दुनियां सूं तो गया ई गया, केई लोग परपूठ कैवता—भोड़ो रो और कीं नीं बण सकतो हो ? अरे डाग्दर बणतो, इंजीनियर बणतो, थाणेदार बणतो, बैंक रो बाबू बणतो, और कीं नीं तो भंगियां रो जमादार ई बणतो । पण कवी बणियो । कीं लूण -लक्खण नीं । आछी रामत परवारी । बापड़ा बोदोजी नै डुबोय दिया ।

नौकरी वास्तै इन्टरव्यू देवण नै जावता तौ आगलौ कैवतौ—कवी व्हैय'र नौकरी ? कवी नै आजाद रैवणौ चाहीजै । उण नै किणीं रै आंकस में नीं रैवणौ चाहीजै । नौकरी गुलांमी है, बधण है । —कोई आ नीं जाणतौ के बंधण में ई आजादी व्हिया करै । अर औ पेट भासण सूं नीं भरीजै, रोटी मांगै ।

कदै-कदै ई तौ वै खुद नै ना कुछ समझण लागता । क्यूं के अवसर ऊमर में बड़ा कैवता—अरै वौ मिरचियौ ! म्हारै सांमी नागौ फिरतौ हौ । नेकर पैरण तक री तौ होस नीं ही । आज कविता करै । साथी-साईना कैवता—मिरचू म्हारै साथै ई पढ़तौ हौ । आज मोटौ कवी बणग्यौ । पानवाळौ कैवतौ—कवीराज तौ म्हारी दुकांन छोड'र कठैई पांन नीं खावै । तौ चायवाळौ कैवतौ—वै तौ म्हारै अठै ई चाय पीवै । आं लोगां री बातां सूं वां नै लखांण व्हैतौ के वै अपणै आप में कीं नीं है । है जिकौ आं सब लोगां री वदौलत ई है। अर अेक स्थिति अैड़ी ई आई के वै मैसूसण लाग्या के वै दुनियां में किणीं कांम रा नीं है । किणीं लायक नीं है ।

भायां अर वहना ! केई वार तौ द्रिढ़ निस्चै करता के आज सूं वै कविता हरगिज नीं लिखैला । पण उण दिन वां रै दिमाग में कविता रा धाकड़ आइडिया अवेस नै आवता । अर सेवट वां नै कविता लिखणी ई पड़ती ।

वै भौत चायौ के वां री किताव निकळ जावै । पण कोई प्रकासक वां रौ कविता संग्रै छापण नै त्यार नीं व्हियौ । भारत री जनता कविता सुण'र वा'वाही कर सकै, कविता री किताव नीं खरीद सकै । किताव नीं छपणै सूं वां रौ जीव भौत अमूझतौ रैवतौ । सेवट अेक दिन अठी-उठी सूं मांग-तांग'र कीं उधार राख'र अेक संग्रै छपायौ—'म्हैं भी कवी हूं' । मुसकिल सूं अेकाध कापी विकी व्है, तौ विकी व्है, घणकरी तौ फ्री-फंड में ई गई । तौ ई आधी सूं ज्यादा कितावां वां रै मरतां तक छाती माथै मूंग दळती रह्यी ।

ज्यूं ज्यूं वां री नांव च्यारूंमेर वधती गयौ, वां री दुख ई साथै साथै वधतौ गयौ । अर वै अेक अैड़ी स्टेज माथै पूगग्या के अपणै आप नै 'म्रियमाण' समझण लाग्या । घर सूं बारै निकळतां ई आंगळियां ऊठण लागती—वै देखौ, कवीराज जी जा रह्या है । नतीजौ औ व्हियौ के अंत में वै खुद आपरी निजरां सूं पड़ाक व्हैगा । अर घर सूं बारै निकळणौ बंद कर दियौ । अैड़ौ सदमौ बैठौ के मांचौ पकड़ लियौ । आखिर 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' नै सांच मान'र वां री आतमा इण असार संसार नै छोड'र परलोक सिधारगी ।

भायां अर बहनां ! जिकी अकादमी जीवतै वां नै अेक कोडी री मदद देवणी मुनासिव नीं समझी, वां रै मरतां ई इण सोक सभा रौ आयोजन करियौ है । वां रौ जीवण-चरित छापण री घोसणा करी है। अर वां रै परिवार नै हजार रिपिया देवण रौ कह्यौ है । अकादमी

वधाई री हकदार है। ख्यांतीगा राजनेता नेता ढींकड़ जी संदेश भिजवायो है के ॳ इण सैंर में अेक 'माडांणी रोड़' निकाळैला ताके लोग वां रै रस्तै माथै चाल सकै।

भाई लोगां ! म्हारो कंठ गळगळो व्हैण लाग्यो है। आंख्यां जळजळी होगी है। बस अब आगै म्हैं कीं नीं बोल सकूं। आप साहित रा पारखियां सूं अरज है के पांच मिनट रो मून धारण कर वां री आतमा री सांयती वास्तै भगवांन सूं प्राथना करां। अर प्राथना करां के वां नै चौरासी लाख योनियां में सूं जळ, थळ, नभ कठै रो ई जीव बणाय दै। कीड़ै-मकोड़ै री जूंण दे दै। पण भगवांन रै वास्तै, भगवांन वां नै फेर कदैई कवी री जूण में नीं भेजै। कवी री जूण सूं वां नै सदा रै वास्तै मुगती मिळ जावै—इणी अरदास रै सागै पांच मिनट रो मून। ओम् सान्ती, सान्ती, सान्ती।

* * *

लिखारां सूं

- 'जागती जोत' सारू रचनावां कागद रै अेक पसवाड़ै हासियो छोड'र आखरां नै ध्यावस सूं मांड'र भेजो। उंतावळ के लापरवाही सूं मांडियोड़ी रचनावां भेज'र संपादक रो जीव मती बाळो।
- लिपी रा कायदां रै सरोधै सारू 'जागती जोत' मासिक रा अकां नै सावचेती सूं वांचो अर खुद री रचनावां नै जागती जोत री लिपी रै ढब ढाळर भेजो। —संपादक

बात

रजाई

नरसिंघ राजपुरोहित

ठाड जोर ही। भूडा-ठाडा कैवै के इसी ठाड लारला पचास बरसां में ई नीं देखी। दिन आथमतांई ठाड जांणै आभै सूं झरण लागै। परड़ो इज पड़ै। डांफर इसी चालै के हाडक धूजण लागै। ताजा खीरा ई राख री पड़त चढ'र कजळीज जावै।

पण अेकली ठाड नै ई क्यूं दोस देवां। इण साल जिसौ भयंकर दुकाल ई कद पड़्यौ! काचौ-करवरो व्है तौ थोड़ी घणी तौ वरखा व्है। पण अबकाळै तौ आभै सूं छांट ई नीं पड़ी। पीवण रै पांणी रा ई सांसा पड़ग्या।

पेट रौ खाडो भरण नै दांणा नीं अर सरीर माथै साबत कपड़ो नीं। इण उपरांत कोढ़ में खाज रै ज्यूं काळजो धुजावै जिसी आ अणूंती ठाड। सियाळू वायरौ तीर री गळाई चालै। पिंड में घुस'र हाडकां नै हिलाय न्हांखै। गूदड़ां में सूतां-सूतां ई बत्तीसी बाजै।

रावतसिंघ झूंपड़ा रै आगै बारली ग्वाड़ी रा टपरिया में सूतो। तूटोड़ो ढुलियो, फाटोड़ा गूदड़ा अर सरणाट करतोड़ो सियाळू वायरो। रैय-रैय'र धूजणी छूटै। गोडा छाती रै चेप'र जळेवी बणण री कौसिस करै तौ थोड़ोक ताळ निवास वापरै पण छिनेक में पाछी धूजणी छुट जावै। सूतौ-सूतौ विचार करै-मिनखाजूण में आय'र ई झख मारी। उमर आधी विताय दी पण नीं तौ रैवण नै कोई ढंग रो टापरो वणाय सक्यौ अर नीं ओढ़ण-विछावण नै सावजोग राली-गूदड़ा ई जोड़ सक्यौ। ढोलिया-सीरख अर रजाई-पथरणा तौ आगड़ा गया पण जिन्दगी में सियाळो काढै जिसा ई गूदड़ा वणाय सक्यौ व्हैतौ तौ जीव नै संतोख व्हैतौ।

............वो मन में हंसण लाग्यो—मां रौ तौ पतौ ई कोनीं अर मासी नै रोवै। पेट रो खाडो तौ भरीजै ई कोनीं अर सीरख पथरणा री बातां सोचै। तीन-तीन दुकाळ अेक सागै

इज पड़ग्या । अनाज रो दाणो ई कोनीं पाको । घर में नैंना-मोटा आठ गिनग । नाडी री खुदाई अर सड़क री कांम चालू व्हैग्यो, नीं तो भूखां-मरण री पाळी आयोड़ी ही । आ तो सांवरिया री मेहरबानी समझणी चाहिजै, नीं तो ओ जुगाड़ ई कियां बैठतो ?

खैर, जीवैला नर तो बसावैला घर । सांस खोळिये में रह्यो तो ढंग रो टापरो ई बणावैला अर सीरख-पथरणा ई जोड़ैला । अबार तो चिखारा दिन है सो कियां ई काढणा है । बादळ वाळा ढीरा माथै व्है'र निकळ जावैला ।

पगांथिया कांनी सूं राली री गूदड़ो फाटोड़ो हो सो बगारा में हाथ'र जांगां टाढ री रेलो आयो । वो डील रै राली काठी बिटोळ'र मांचा माथै बैठो व्हैग्यो । आभै कांनी देख'र अदाज करण लाग्यो—रात कितरीक बाकी व्हैला ? उगमणी दिस निजर न्हांखी तो परभातियो तारो निजर आयो । रात घड़ी तीनेक बाकी । इतरी रात तो बैठ'र ई बिताय सकां इण सोच रै गूदड़ी काठी लपेट लियो अर गांठड़ी बण'र बैठग्यो । थोड़ीक ताळ में बैठा-बैठा नै झेरां आवण लागी..........सुपना रा आळ जंजाळ..........मोटोड़ी बेटी सुगणां रो ब्याव मंड्यो.... दायजो दिरीजण लाग्यो अर वो अेक-अेक कर'र दायजै रो सामांन बारै लाय'र जमावण लाग्यो । सै सूं पछै ढोलियो अर रजाई-पथरणो बारै आया । रंगीन सूतर री सांमनाई सूं बण्योड़ो मांगो-पांग ढोलियो, रंगीन ई पाया, माथै दांत री फूलड़ियां जड़योड़ी सांवठा बड़ांग जिकी खांच'र तणकी तूंनाड़ कियोड़ी । टणकी वाणियो, ओपता नकिया अर रेसमी रजाई री तो पछै पूछणी ई कांई । मोवणी रंगाई-छपाई, पूजती लंबाई अर गेहरी रूई री भराई । तळ-योड़ी पुड़ी रै उनमांन उपस्योड़ी । दायजो देख'र जानी सगळा ई बखांण करण लाग्या तो उणरी छाती फूलीजगी । पण थोड़ीक जेज में आंख खुलतां ई सै रामत बिगड़गी अर फूलीज्योड़ी छाती पिचर व्हियोड़ा ट्यूब रै ज्यूं बैठगी ।

.......वो आंगळियां माथै गिणण लाग्यो—सतरै....अठारै....उगणीस....बीस ! सुगणां पूरी बीस बरस री व्हैगी । गई साल पीळा हाथ करावणा हा पण ऊपरा-ऊपरी दुकाळ पड़ जावण सूं बातड़ी बैठी कोनीं सांवरियै री मेहर व्ही तो आगली साल जरूर ब्याव करणो है । टावर मोटो व्हियो, हाथ पीळा व्है जावै तो छाती माथै सूं भार उतरै ।

भखावटी होवण वाळी ही । विचार कियो घरटी बेळा व्हैगी सो लुगावड़ी नै जगाय दूं । पण याद आयो के नाज तो कालै इज खूटगो, ऊठ'र पीसैला कांई ? मजूरी रो हफ्तो ई आज चुकैला अर पइसा मिळयां इज घर में जवार आवैला । पण टावरां नै भूखा तो कियां राखीजै । भाई सेंण रै अठै सूं उधारो-ऊसीनो लाय'र इणां नै तो दांणो-दुणो देवणो ई पड़ैला । विखा में टावर अेक टक ई भूखा रैयग्या तो गजब व्है जासी । दिन बीत जासी अर बातां रैय जासी ।

•

दिन उगां रावतसिंघ डुखलियो छोड'र तावड़ियै आयग्यो । उण री लुगाई जवार उधार लावण री तजवीज में पाडोस मे गई अर टाबरिया बारै रमवा नै निकळग्या । थोड़ीक

ताळ में गांव रै गोरवै मोटर री आवाज सुणीजी अर गळियां में मिनख अठी-उठी आवता जावता निगै आया। इतराक में रावत सिंग रौ बेटौ नारायण दौड़्यौ-दौड़्यौ घरां आयौ अर हळफळतौ थकौ बोल्यौ—

—जीसा····जीसा ! चांवटै पधारौ।

—क्यूं बेटा इसी कांई बात है ?

—चांवटै सेठां री अेक मोटर आई है अर रजाईयां-कांवळां बांटै है·········छोरौ हुड़ी कर'र दड़ीछंट दौड़्यौ आयौ हौ सो सांस भरीजगौ—थोड़ौ दम मार'र बोल्यौ—जीसा मिनख तौ अड़वड़ै है !·······चांवटै मावै ई कोनी·······झट-पट चालौ नीं तौ पछै हाथ ई नीं आवैला···रंग-रंग री रजाईयां नुंवी अटंग !····· भांत-भांत री कांवळां·······किसनियै रै काकै नै कांवळ मिळी अर किसनियै रजाई कवाड़ली·······चालौ फुरती करौ।

—चालां रै भांई चालां अर ठाकर रावतींग गोडां रै हाथ टेक'र ऊभा व्हिया अर टाबरां नै पूछण लाग्या—कितरीक रजाईयां लाया है रै ?

—मोटर भर'र लाया है जीसा। फूटरी-फुटरी अर भांत भांत री डिजाइनवाळी आपणै पटवारी जी ओढै जिसी। टाबरां री आंख्यां में उमंग-उछाव रौ दरियौ हबोळा खावै हौ।

ठाकर टाबर नै आंगळी पकड़ायां बारली ग्वाड़ी में आया के पल्ला में जवार लियां वांरी लुगाई साम्हीं धकी। वा बोली—एक टंक रा सीधा खातर जवार तौ म्हूं पेमजी बा रै अठै सूं उधार लेय आई, थे सिध जावौ हौ ?

—नारायण कैवै के चांवटै मोटरड़ी आई है अर रजाईयां-कांवल बांटै है, म्हूं ईं देख'र आऊं देखांणी। रावतींग लचकांणौ पड़'र बोल्यौ।

—कांई देखणी है उठै जाय'र ?

—देखूं किसीक रजाईयां है।

—क्यूं अेकाध लावण रौ विचार है कांईं ?

—लावां तौ हरज कांईं है ?

—हरज ? धरमादै री रजाई लावण में थांनै कीं हरज नीं लागै ? सरम आवणी चाहिजै।

—इण में लाज-सरम री कांई बात ? सगळौ गांव लेवै है तौ आपां इसा कांईं टणकचंद जी हां !

--गांव री बात छोडो। म्हूं थांनै पूछूं, थे धरमादा रा पूर ओढ'र सियाळो काढ़ीला ?

—आपतकाळे मरजादा नास्ति।

--आ आपत पैलड़ी वार फगत थांरै माथै इज आई है के किणी बीजै कोई रै माथै आई व्हैला।...मारवाड़ री धरती माथै काळ-दुकाळ परंपरा सूं पड़ता आया। सात-सात दुकाळ साथै पड़चा पर मानखै छेह को दियो नीं। मैंणत-मजूरी करली, नीं मिळी तो भूखां मरणो कबूल कियो पण कोई रै आगै हाथ को मांडचो नीं।

—पण रजाईयां तो......!

—फेर वाइज वात, तो म्हूं पूछूं थे मैंणत-मजूरी क्यूं करो ? क्यूं दिन भर सड़क माथै धूड़ न्हांखो म्हांनै हाथां में ढीवड़ा पकड़ाय दो। पेट तो यूं ई भरीज जावैला।

—थूं म्हारी वात नै समझी कोनीं।

—कांई समझूं थांरी वात नै। सूरज रा प्रकास ज्यूं वात सुभट अर साफ है—कोई सेठ आपरै पाप री कमाई में सूं धरमादो बांटै है अर थे लेवण नै वहीर व्हिया हो। धिरगार है थांनै, इण पांत तो मूंडो बांध'र मरणो चोखो।

—तो थूं कैवै तो म्हूं नीं जाऊं।

—म्हूं कांई कैवूं ? थांनै सूझै कोनीं कांई ? विणी मांनखा रै माथै ई आया करै। असली मिनख वो ई जिको विखो पड़चां ई पोता री मरजादा नै कायम राखै। मैंणत-मजदूरी में कोई लाज मैंणी कोनीं, पण भीख मांगण पांत तो मरणो चोखो। आपां नै रजाई वणावणी है तो दो-च्यार हफ्तां में थोड़ा-थोड़ा पइसा बचाय'र जरूर वणावांला वा आंपणै पसीनै री कमाई व्हैला।

रावतींग चौकी माथै चढ'र तावड़ियै वैठग्यो।

•

सियाळा रा दिन बीतता ग्या अर रावतींग फाटोड़ा गूदड़ां में सूतो ठाड सूं जूंझतो रह्यो। हर हफ्तै थोड़ी-थोड़ी बचत करण सूं पांचवें हफ्तै इतरा पइसा भेळा व्हैग्या के जिण सूं रजाई वण सकै। पइसा धणी रै हाथ में देवतां लुगाई बोली—फेमिन केंप री मोटर में वैठ'र अेक दिन सहर जावो अर अेक सागैड़ी रजाई मोल लेय आवो।

उण च्यार छः दुकानां माथै फिर'र रजाईयां देखी। पण अेक ई दाय नीं आई। कठै ई माल वोदो तो कठै ई कीमत आकरी। वातड़ी कीं जची कोनीं। छेवट पोता री पसंद री

कपड़ौ अर रुई मोल लेय'र रजाई त्यार कराई। चीज तबीयत सूं बणवाई सो सांगो-पांग बणी। नुंवी डिजाइन री चटकदार छींट, लंबाई-चौड़ाई में पूजती, रुई सूं उपस्योड़ी।

घरै लायां रजाई नै देखी जिणैं ई बखांणी। दिन भर टाबरिया उण कंवळी-कंवळी रजाई माथै लोटता रह्या अर पोता रा गाल रगड़ता रह्या। संझ्या पड़्यां रजाई रावतींग रै डुखलियै माथै पूगी तौ उण आपरी लुगाई नै बुलाय'र कह्यौ--रजाई तौ मांयनै ले जावौ, इणनै थूं अर टाबरिया ओढ़जौ। म्हारै तौ ओढण नै गूदड़ सैंठा है। सियाळौ आधौ ऊपर तौ बीतगौ। अबै घणौ जोर तौ महीनौ मास ठंड फेर पड़ैला। कैवत है--आधै माह तौ खांधै कांवळ!

लुगाई थोड़ी ताळ ठैर'र विचार करती बोली--रजाई थे नीं ओढौ तौ पछै टाबरिया ई कोनीं ओढ़ै। इणनै तौ अंवेर'र मांयनै धर दांला। आगली साल सुगणां रै दायजा में कांम आय जावैला।

रावतींग खुसी में उछळतौ थकौ बोल्यौ--बात तौ थे लाख रुपियां री कही। रजाई दायजै में देवण जोग ई है। कोई नुंवा तापड़िया में लपेट'र इणनै कोठा रै मांयनै धर दौ--अर वौ फाटोड़ी गूदड़ी ओढ़'र सूयग्यौ।

* * *

लिखारां सारू

रचनावां रै महनतानै अर जागती जोत री पुग नीं पुग री बाबत संगम रा सहायक सचिव नै सीधौ कागद लिखौ, संपादक नै लिखियां कारी कोनीं लागै।

—संपादक

घींसू कुंवार

बी. आर. प्रजापत

घींसू कुंवार
फाटोड़ी धोती लपेटयां
उघाड़ै डील माटी खूंदै
उणरी लुगाई 'दुखिया'
झीर-झीर ओढ़णी, फाटोड़ी कांचली पैरयां
दांतली सूं काटै कांदो
ढवरै सूं मिरचां सोव'र बांटै चटणी
अर ठीकरै में घरचोड़ा
बासी सोगरै रा टुकड़ा गिणै घड़ी-घड़ी

उणरो छोरो 'घूळियो' निरणै पेट ई
मटका पींचावण गयो है
लिखमीचंद सेठ रै अठै
भाखर रांम सिरपंच रै अठै
छोटी छोरी 'माखूड़ी'
नाक माथै भिणकती माख्यां उडावै
अर झोळी में 'छोटयो'
दूध सारू बिचळ-बिचळ जावै

आज कीं राजी दीसै घींसू
भेळा करै
न्यावड़ै माथै छाणा, फूस अर भूरो
न्याव पाकैला कालै
पण 'दुखिया' जांणै
लिखमी चंद रै कनै मोटो खातो
ब्याज री छेह ई कोनी दीसै आतो
टेक्टर रा भाड़ा री किस्त

ले जावैला भाखर रांम
साता पूछण रै मिस आतौ-जातौ

उदास व्है जावै घींसू
लोगड़ा कैवै—फेर मैणत कर घींसू
मैणत जीवण रौ सार घींसू
फेर मटका घड़ घींसू
मटका थारौ सिणगार घींसू

* * *

गुलाब रोपां

पूरण सरमा

आवौ
गुलाब रोपां
आपांरै आंगणै में
जठै उगियाई थोर

हवाडोळ नदी में
कीकर छोडीजै नाव
अर कीकर फिरीजै उणरी पाळां

देखौ
नदी कितरी आसूदी वैवै
कितरौ नांमी व्हैला वौ टेम
जद आपां छोड़ांला इणमें नाव
फिरांला इणरी पाळां-पाळां

नदी रौ पांणी कितरौ साफ
माछळयां सागै-सागै तिरै—बिना छळ-छळाव
आवौ, गुलाब रोपां
जठै उगियाई थोर

* * *

वै अर म्हैं

मुरलीधर सरमा 'विमल'

म्हैं सिकुड़वौ चायो
वांनै जाग्या देवण सारू
वै पसरवौ चायो
म्हनै ढक लेवण सारू

वै इत्ता पसरगा
म्हैं इत्तौ सिकुड़गौ
के सेवट वां रै मूंडे
ऊंट आळो जीरो होय रैगो ।

* * *

कीकर कह दूं

दीपचंद सुथार

हिवड़ै रै दरद सूं
निकळ-निकळ आवती
आखर री ओळयां नं कविता कह दूं !
कीकर कह दूं ?

..... रूठ जावैला
मचळ जावैळा
पिघळ-पिघळ जावैला—
मन री वीणा रा तार

पेट रै पाटी बांध'र
वगत री पगडांडी माथै चालतां-चालतां
मुसीवतां रा आडा-डोढ़ा भाखर
भांगतां-भांगतां
कठैई तो छेह आवैला
कांई उण दिन म्हारी अै ओळयां
कविता नीं व्है जावैला ?

व्है जावैला, व्है जावैला
पण अवार आंनै कविता कह दूं !
कीकर कह दूं ?

* * *

पैंडौ तौ छेकड़

कल्याण गौतम

मझ दोफारी
अेकांनी अेक डीगौ धोरौ
वारै सूं वळतौ
मांय सूं उकळतौ

पसवाड़ै
खेजड़ै माथै, आंख्यां में जीव लीयां
बैठी, च्यार चिड़ियां

दीठ रै पसारै तांई रेत ई रेत
ताती तच
पांणी में पड़ियोड़ी लैरयां दाई–
बर-बर निजरां सूं छूट-छूट जाती

—ऊठता बगूळा
अठी-उठी चिळकता लोगां रा खोज
गमियोड़ा गेला
दिसावां हेरता सून्याड़ रा हेला

भाईड़ा !
कद तांई मनसोबौ करैलौ
पैंडौ तौ छेकड़
पार करियां ई पार व्हैलौ

* * *

सावण रा दूहा

ओम प्रकास गरग

सांवण आंगण आवियो, अम्बर गाज्यो मेह
बूंदां अगन जगावियो, दाझण लागी देह

घण गरजै काया कंपै, खिवै गगण में बीज
परदेसी पिव आवजो, घरां उडिकै तीज

कांठळ आभै ऊमड़ी, हियै उपड़ियो नेह
के म्हांनै पिव तेड़ल्यो, के आप पधारो गेह

नेह नीर अंबर झरै, चातक प्यास बुझाय
म्हैं प्यासी वाटां तकूं, परदेसी कद आय

काळा घण क्यूं आवियो, पीव न ल्यायो संग
इमरत बूंदां जहर बण, पळ पळ जारै अंग

ज्यों ज्यों वरसै वादळी, त्यों त्यों तरसै नैण
म्हैं जांणूं पिव आविया, जद जद पळकै नैण

आवण थो आयो नहीं, सावण सूखो जाय
रो रो थाकी वादळी, साजन आयो नाय

* * *

विलायत जात्रा

दोय चूंथरा न्यारा-न्यारा

लिछमी कुमारी चूंडावत

•

लो सा लंदन आयग्यो। मन मांय घणी हूंस ही इण नगरी नै देखवा री। काईं ठा क्यूं जीव में आवती के विलायत इतरी दांण आया-गिया, पण लंदन नीं देखियो, जितरै काईं देखियो, यौरप देख्यो ई अणदेख्यो। सवाल ई घणी दांण मन में ऊठियो के ओ अैड़ो कोड लंदन सारू ई क्यूं लाग्यो संसकार। अै अैड़ा संसकार म्हारै में ईं नी, भारत रा घणकरा लोगां में जाग्योड़ा।

भाग-जोग सूं सुरजी आपरी किरणां सूं लंदन माथै झांकै हा अर हवाई जा'ज अेक लांबो-चौड़ो आंटी खावतो हेटै उतरियो। घिरौळा खावतै पखेरू री दीठ सूं लंदन देखण रो मौको मिळियो। काईं ठा क्यूं म्हनै उड़दू री वो नामी 'सेर' चेतै आयग्यो, जिणमें कहीज्यो के जिण दिल रो घणो हाको-हल्लो सुणियो, चीरियो तो अेक लोई रो टोपो निकळियो।

घणकरा ईंटोड़ियां रा माळिया, माथै (टाइल) कैलूड़ा। जागा-जागा काळा अर मगसा पड़ियोड़ा, ज्यूं आजकालै आपां रा रजवाड़ां रा म्हैलां माथै काळस जमियोड़ी।

लंदन देखणो तो हो ई। मिस्र रा राजा तुतनाखामून रा खजांना री नुमाइस लाग्योड़ी। पचास बरसां पैली वो खजांनो दो अंगरेजां नै लाधियो। खजांनो घणो जूनो, तवारीख घणी जूनी। तीन हजार बरसां पैलां री सोनो मंढ़ियोड़ी अैड़ी-अैड़ी कलाक्रतियां के देखतां-देखतां बावळा व्है जावां। मानखो उल्टै वां नै अेक निजर देखवा सारू। टिगट रो काट्यो अेक पूरो पाउंड। 'क्यू' में ऊभां-ऊभां पग तरणायग्या।

इण नगरी में अजायबघर अर पोथीखांना सांवठा। अेक नीं, अनेक। लांबा-चौडा, थळाथळ भरिया। अेक सूं अेक सिरै सामग्री। अेसिया अर अफरीका रा देसां री जूनी, तवारखू, घणमोली, अजब-गजब भांत री वसत। सात समदरां पार सूं सूंत-सूंत अंगरेजां री भेळी करियोड़ी। यां री कदर पूरी-पूरी जांणी अंगरेज, औ तौ गुण हौ म्हांटां में।

जूना किला देखवा री म्हारी वांग्। वठा रा राजा रो किलो अर म्हैल तो देखणा ई हा। बंकिंघम म्हैल सीरसा तो आपणै अठै ई घणा म्हैल-माळिया। राजा रो जूनो किलो देखवा गी। टेम्स नदी रा तट माथै च्यारूमेर खायां अर ऊंची-ऊंची गर्कोलां रा होवै जेड़ो। चम-चम करती रंगीली वरदियां पैरयोड़ा पोरायत, रांणी रा 'बॉडीगारड' ठोड़-ठोड़ ऊभा। अेक पोरायत म्हारै सागै आय, घड़ी-अधघड़ी तांई वठा री तवारीख ठोड़-ठोड़ ले जाय ऊभा राख सुणावतो रह्यो।

पचियासी टका तवारीख ही — लोगां नै, घर आळां नै, मरजीदाना नै, फांसी माथै टांगवा री, सूळी रै सूया माथै चढ़ावा री, माथा कटावा री। डोकरा-डोकरियां नखात रा माथा उडावा री। बेटै माथै नाराजगी। हाथै आयो नीं, तो उणरी मां नै पकड़, सित्तर बरसां री डोकरी रौ माथौ कलम। किलै माय नै अेक चूंथरौ बणियो थको। उण माथै ऊभा राख माथा वाढ़ण सारू। अेक दरवाजो नदी माथै खुलै। नांव दियोड़ो 'गुनैगारां री पोळ'।

घड़ी-अधघड़ी तांई तवारीख सुणती री। हिड़दा री आंखियां में भूतावळी दीसवा लागी सुणतां-सुणतां। किला म्हारै घणा ई देखियोड़ा अर तवारीखां ई घणी सुणियोड़ी, पण अैड़ी भूतावळी पैला कदै ई जागी नी। बावड़ा तो मन में जुग ई जुग हो। विचारां में गळबळी माच्योड़ी। म्हैं फिरती-फांदती 'ड्रेसडन' आयगी। ड्रेसडन, डयूंगी जरमनी री नांमी नगरी। कळा, ग्यांन-विग्यांन अर संगीत-निरत रो घर जांणीजै। वठा री 'आर्ट गैलेरी' नामी। कोई अेक जुग हो, जिण में इतालवी चितेरा आखै योरप में पूजीजता। देस देस रा देसोत वां नै बुलायां अंजस करता। घर आळा चितेरां री पूछ कोनी ही वां दिनां उठै। 'घर रा जोगी जोगड़ा बार गांवला सिद्ध' वाळी बात ही।

वठा रै तकनीकी विस्वविद्यालै गया। ओ भवन हिटलरी जुग री अेक खास कैद ही। राजनीत रा बंदियां नै अठै ई बंद राखता। अबार विस्वविद्यालै ऊपरला खंड में चालै। हेटलै खंड नै यूं री यूं कैद खांनो हो ज्यूं री ज्यूं राख छोडियो। काळा भाटा रो। देखतां भी भरवा लागै। काळ कोठड़ियां सांकड़ी-सांकड़ी। देसभगतां नै यां मे घाल फोड़ा घालता। जरमन देस रा नांमी-नांमी देसभगत यां में सड़िया, आपरा हाड फोड़ाया अर मरिया। वां कोठड़ियां में वां जूंझारां माथै जोत जगरी। मांयला चोक में अेक चूंथरो बणियो थको। ओ चूंथरो ई मौत रो हो। इण चूंथरा माथै हिटलरी राज में हजारां नै फांसी माथै चढ़ा दिया। इण चूंथरा माथै मोटी-मोटी फूलां री निरी सारी थेई लागोड़ी। जूंझारां रा चूंथरां री पूजा होय री। आवा वाळा माथो नमन कर रह्या। वठा रा वायरा री रंगत ई दूजी। डील में लोही रो संचार वधगो। जुलिस फुचिक री पोथी 'सूळी रा सूया माथै' रा पानां रा पानां म्हारी दीठ मैं आय ढ़विया। चेकोस्लोवाकिया री राजधांनी प्राग में अेक अैड़ा ई कैदखांना मे उण जूंझार रा हाड फूटा, चामड़ी चीरीजी पछै वो सूळी माथै टांगीजियो। उण जूंझार आप री आपवीती उण पोथी में मांडी। ठा पड़ै के कीकर देस रा दीवाना जूंझार आजादी सारू आपरो टोपो-टोपो लोई दियो।

उण पोथी में बांचियोड़ी बातां चितरांम बण म्हारै आगै आय ऊभी। अैड़ा ई जूंझार अठै रगत री जोत जळाई, जदै ई तौ उणां रा चूंथरा पूजीजै। खलक-मुलक आय धोक देवै। माथौ झुकाय फिरी तौ मनड़ा में मजबूती सी लागी। खवां माथै माथौ आधौक आंगळ ऊंचौ-ऊचौ लागौ।

अेक सवाल आपौआप जागियौ। लंदन रा टावर में फांसी आळै चूंथरा माथै मन में सूग क्यूं उपजी अर क्यूं ड्रेसडन रा इण फांसी रा चूथरा माथै मन मे सगती जागी? विचारां री अेक नान्हौ-मोटौ वतूळियौ माथा में भवण लागी। औ क्यूं? मरवा-मरवा में ईं कांई आंतरौ? मन री देवता वोलियौ—मरवा-मरवा में घणौ आंतरौ। वां नै लंदन रा टावर आळां नै मरणौ पड़ियौ आपग सुवारथ सारू। वै हा राज म्हैलां रा सड़यतां में सरीगत। धरती रा घणी वणावा घूंकळ रचता। सत्ता री सगती अर सुख री लालसा वाळां सागै रळियोड़ा-मिळियोड़ा। मौजां माणवा रा मुतलवी। अै मारवा आळा अर मरवा आळा दोनूं ईं अेक जैडा, माथा तांईं मुतलव रा कादा में पजियोड़ा। आपसरी में सुवारथां सारू लड़ता-मरता। पण ड्रेसडन वाळा मरिया जुलमां री जड़ां उखेलवा। निवळां नै सवळा करवा। अै जूंझिया जजीरां में जकड़ियोड़ां रा वंध काटवा। यां माथा वढ़ाया पराई पीड़ मेटवा। यां लोई वैवायो भूला तिसियां री रिछपाळ सारू। यां रा सींचियोड़ा राता लोई सूं आज राता-राता गुलाव रा फूल झोला खावै।

अै मर नै ईं अमर। अपणै आप माथौ निंव जावै यां रा चूंथरा आगै। क्यूं के चूंथरा चूंथरा में निरौ फरक। मरवा-मरवा में निरौ फरक। अेक ठौड़ मन में सूग आवै तौ दूजी ठौड़ गरव, गुमांन अर अंजस सूं छाती भरीज जावै।

* * *

नवा सम्पादक

अक्टूम्बर १९७७ सूं 'जागती जोत' रौ संपादन दीनदयाल ओझा करैला। वां रौ पतौ— **दीनदयाल ओझा**

सम्पादक जागती जोत (मासिक)
मारफत-राजस्थांनी भासा साहित संगम
कोटगेट, वीकानेर

उपन्यास री चौथी खेंप

खुलती गांठां

पारस अरोड़ा

जोधपुर में नवा लोगां री सगत रै साथोसाथ सूरज माथै नवी रंगत । रतन रै साथै रैय'र वो रईसी रो ठाठ-बाट देख्यो । अणूंतो पईसो व्हियां अणूंती चीजां री गरज । कपड़ो-लत्तो व्हो के गैणो-गांठो, मकांन-दुकांन री साज-सजावट व्हो के दांन-पुन्न, पईसा वाळा नै हरेक बात में आपरी रईसी दरसावणी जांणै लाजमी व्है । दूजी कांनी सोमनाथ जैड़ा लोग है, जिका पढ़्या-लिख्या अर गुणी व्हेतां सांतर ई हरेक चीज सारू तापड़ा तोड़ता दीसै । जिका आज मुसीवतां सूं वाथेड़ो लेवै अर काल नै कांई व्हैला, नीं जाणै । अै दोय अमीर घर री छोरियां—निरमळा अर स्यामा, दोनां में रात दिन रो फरक । अेक किणी कुवै दांई गैरी अर अंतस में इमरत लियां, गंभीर, निरछळ अर खुल्लै विचारां री । तो दूजी आजाद खयालां री व्हैती थकी ई किणी समदर ज्यूं उछाळा खावती, जिणरै सांमी अवै फगत आपरी इंछावां रो परवत ऊभो है अर इछावां री पूरती सारू खरै-खोटै री ओळख मिटगी है । लागै के आं सगळा छोरा-छोरियां री आपरी न्यारी दुनियां है. मां-बाप बूढ़ा-वडेरां सूं न्यारी । पण सोम आं सगळां में न्यारो इज है । स्यात अमीरी री जकड़ सूं आघो व्हेणै रै कारण इज वो मिनखीचारै री खरी समझ राखै । आं सगळी वातां में वंध'र सूरज नै सैर में आसीणगो अर वो मनोमन तै कियो के अवै देखणो है के इण गत आप-आप री समस्यावां में अळूझ्योड़ा अै लोग इण उळझाव नै किण गत सुळझावै ।

जठै तांई काम-धंधै रो सवाल हो वो आपरी रुची परवांण सेठ किरपारामजी रा छापाखाना में वैठ'र प्रेस रो धंधो सीखण लागो । रोजीना चार-पांच घंटा तांई प्रेस मे रैय'र वो छपाई, कपोज, जिल्दसाजी अर कागद आद रै वारै में जांणकारी लेवतो । सेठजी कदै-कदांस उणसूं प्रुफ रीडिंग ई करावता । छपाई रै काम री बावत सेठजी उणनै समझायो के छपाई अेक धंधो इज नी, अेक कळा ई है । किण काम सारू कैड़ो कागद, कैड़ो टाइप (आखर), कैड़ी स्याही अर कैड़ी वाइंडिग व्है, इण वात री जांणकारी प्रेस रा मालिक अथवा मैनेजर नै

व्हेणी जरूरी है। इण बात री पूरी ग्यांन नीं व्हियां उणरी छाप्योड़ी चीज फकत धोळा माथै काळी बण'र रैय जावै। चोखी कपड़ी ज्यूं आदमी री मांन वधावै, उणी गत चोखी छपाई छपणियै अर छपावणियै, दोनां री समझदारी गी सबूत व्हिया करै। अर औ इज कारण हो के वै दूजी प्रेसां सूं सवाया दाम लेवता अर लोग राजी-राजी देवता। सूरज ई इण काम में पूरी रूची लेवण लागी। ढळती दोफार चारेक वजियां रतन प्रेस आ जावती अर पछै दोनूं जणा घूमण-फिरण नै निकळ जावता।

सिझ्यारा सातेक वजियां रै नैड़ी सोमनाथ सोजती गेट माथै लाधती अर पछै चाय-पांन कर रतन तौ आपरा दूजा दोस्तां कांनी निकल जावती अर सूरज उठै सूं इज सोमनाथ रै साथै व्है जावती। धीरै-धीरै सोमनाथ कांनी सूरज री खिचाव वध रैयौ हौ। यूं तौ इण खिचाव रा केई कारण हा, पण खास कारण ही अलमारयां में बंद कहाणियां अर उपन्यास री सोमनाथ री किताबां। किताव बांच'र पाछी देवतां सोमनाथ री औ पूछणौ के किताब कैड़ी लागी ? चोखी लागी तौ क्यूं अर भूंडी लागी तौ क्यूं ? पछै उण किताब माथै सोम आपरी राय देवती अर केई खास-खास मुद्दै री बातां समझावती। अर केई वार सूरज नै लखावती के वौ इण निजर सूं तौ इण किताब नै पढ़ीज कोनीं। सूरज नै ई औ किताबां पढ़ण री चस्की लागती देख'र रतन कैवती के उणनै ई निरमळा आळी विमारी लागगी है।

सूरज इत्ता दिनां में सोमनाथ रै वारै में खासी बातां जांणगी हौ। सोमनाथ अेक प्राइवेट मिडल स्कूल में मास्टर हौ, पण उणनै इण नौकरी सूं संतोस नीं हौ। चार सौ माथै दस्तखत कर ढाई सौ लेवणा, मन नै मांनै जैड़ी बात कोनीं, पण आ ई अेक मजबूरी ही। साहित्य में उणरी पूरी दखल। लोग कैवै के पक्कौ मार्क्सवादी है। आपरै मेळू स्वभाव रै कारण वौ सगळा लोगां में चावौ हौ। लिखारां, पत्रकारां, प्राध्यापकां रै विच्चै उणरौ नित रौ ऊठणौ-वैठणौ। औ इज कारण हौ के सूरज उणसूं प्रभावित हौ। गैरा व्हैता संवधां सूं वतळावण वदळीजी अर अवै दोनूं अेक दूजा नै 'सोम' अर 'सूरज' कैय'र वतळावै।

सोमनाथ री निजर में सूरज अेक धायै-धापियै घर री अेकली लाडेसर है। मुसीवतां सूं सांमनौ हाल नीं व्हियौ। पण साफ मन री कीं भोळौ गांवटी। इण उमर में सैर रा अमीर जादां में जिका अैव व्हिया करै, वै उण में नीं हा। इणनै जै अठै गलत संगत मिळगी तौ विगड़तां जेज नीं लागैला। अैड़ी नीं व्है के औ रतन री रंगत चढ़जा। सूरज री कसरती गठीज्योड़ी वदन देख सोम घणौ राजी व्हैतौ।

जद पैलम-पैल सूरज अेकलौ सोम रै घरै गयौ, उण वगत सिझ्या री पांचेक वजी व्हैला। गळियां री गंदगी, हाकाहूक अर सांकड़वाड़ौ देख'र अेकर तौ उणरौ जीव घवरीजगौ। सूरज जद सोम आळी बंद गळी रै नाकै पूगौ उण वगत तीन-चारेक भाटा रा कोयलां री सिघड़ियां सिळगण सारू पड़ी ही, जिका रौ धूंओ आखी गळी में घुमट्योड़ौ हौ। वौ आंखियां मसळतौ थकौ सोम रै दरवाजै पूगौ। वौ सोम नै आवाज लगावतौ उणसूं पैलीज अेक रब्बड़ री दड़ी 'थच्च' करती कनैलै खाळियै में आय पड़ी अर सूरज री पैंट माथै कादा रा छापका

लागगा । वी आपरी पैंट री सुआयनी करतो इज हो के कठी सूं अेक पांचेक वरसां रो छोरो दौड़तो थको दड़ी लेवण नै आयो के उणी वगत सूरज जोर सूं बोल्यो—'अे ऽऽ !' अर छोरो सूरज री पैंट देख, आपरी पड़ती नेकरियो संभाळ'र पाछो सांमला घर में घुसगो।

दरवाजै रै साव सांमीसांम कमरै में बैठो सोम बारी मांय सूं सूरज नै देख लियो हो। वो सांमी आय'र बोल्यो—'आव सूरज ! थारै इज कीकर हैरगो ?'

सूरज खाळिया में पड़ी गैंद कांनी इसारो कर हकीकत बताई। इतै में सांमलै घर रा दरवाजा बारै उणनै वो छोरो दीसगो, जिण कांनी आंगळी उचाय'र सूरज बतायो—'वो रैयो !'

सोम उठै सूं इज छोरै नै धाकल दियो—'गाभिया, ठैर थोड़ा बदमास ! अबार आवूं हूं म्हैं !'

स्यात् वेटा रो नांव सुण'र उणरी मां बारै आई अर पूछ्यो के काई हियो ? पण सीं बतावण सूं पैलीज वा सगळी बात समझगी अर छोरै री बाहुड़ी पकड़'र दे 'धमीड़' ! पछै वा छोरै री पूजा करती उणनै घीस'र मांय लेयगी।

सूरज नै सूंडो हेरियां ऊभो देख'र सोम बोल्यो—'अे भाई ! पाछो आ जा। अठी इण गुसळखानै मे पैंट साफ कर लै, आव !'

सूरज पैंट साफ कर सोम रै कमरै में आयगो। सोम माचा माथै बिखरयोड़ी किताबां आघी लेय'र उणनै बैठण रो इसारो कर 'अेक मिनट मे आवूं।' कैय'र पाछो निकळगो। सूरज माचा माथै पसरतो सोम रा कमरा नै गौर सू देखण लागो। दोय भाटा री अलमारयां में ढंग सूं सजायोड़ी किताबां अर पछीत माथै पत्र-पत्रिकावां रा ढिगला लागोड़ा हा। दोय कुड़स्यां अर अेक टेबल। टेबल रै ऊपर भींत माथै लेनिन अर मार्क्स री दोय तस्वीरां, अेक दूजी भींत माथै फूटरी धोळी फ्रेम में चदण री माळा पैरायोड़ी किणी आदमी री तस्वीर। सिकल सोम सूं मिळती, स्यात् उणरा पिताजी री व्हैला। पछीत माथै इज अेक छोटो-सोक ट्रांजिस्टर। टेबल माथै अेक स्टील रै फ्रेम में खुद सोम री अेक प्यारी-सीक फोटू, कीं किताबां, कॉपियां, पेन-पेंसिल आद अठी-उठी बेतरतीबी सूं पड़िया हा। पछै सूरज उठ'र बारी कनै आयगो अर इण मकान री बणगट देखण लागो। बारी रै सांमीसांम इण मकान रो दरवाजो। दरवाजै रै अेक कांनी टट्टी-गुसळ अर दूजी कांनी अेक बड कमरो हो। आगै अेक चाळिसेक फुट रो चोरस चोक जिणमें डावी कांनी भींत रै अड़ीअड़ तीन साइकिलां अर जीमणी कांनी दोय कमरां में कोई रैवास हो। पछै औ दरवाजै रै सामीसांम सूरज रो कमरो। जिणरै डावी कांनी ऊपर रैवतै मकान मालिक तांई पूगण री नाळ अर जीमणी कांनी अेक दूजो कमरो। हवा में गोबर अर तारत, खाळियां आद री बदबू रै साथै ई माछरां री 'भिणण-भिणण' कांन कनै इज सुणीज रैयी ही। सिघड़ियां रो धूंओ जरूर कीं कम पड़गो हो। वो इण सांकड़वाड़ै अर गदगी नै देख'र

बारी सूं आघी व्हेय'र माचा माथै पसरतौ सोचण लागौ के लोग कीकर अठै रैवता व्हैला। म्हैं रैवतौ व्हूं तौ अेक दिन में बिमार पड़ जावूं।

सूरज यूं विचार करतौ इज हौ कै सोम आयगौ। उणरै लारै इज अेक दूबळी-सीक चाली-पैंताळी बरसां नैड़ी उमर री लुगाई मांय आई। सूरज देखता ई समझगौ के आ सोम री मां व्हेला सोम उणी बगत ड्राज सूं अेक रिपियै रौ नोट काढ'र उण लुगाई नै देवतां सूरज सूं बोल्यौ—'सूरज, अै म्हारा मां सा है।' आ सुण'र सूरज तसलीम करी। वा हेत सूं सूरज रै माथै हाथ फेर'र आसीस दी। सूरज इण परस सूं न्याल व्हैगौ।

मां रै गयां पछै सोम अेक कुड़सी माथै बैठ'र माचा माथै टांगां पसारतौ बोल्यौ—'थारै प्रेस में भंवरजी कंपोजिटर है नीं सूरज ?'

'हां, है ! क्यूं ?' वौ इण बगत भंवरजी रौ नांव सुण'र कीं चकरीजगौ हौ।

सोमनाथ बोल्यौ—'वौ बारै जिकौ छोरौ थारी पैंट खराब करी, वौ भवरजी रौ दूजौ छोरौ, इण सूं छोटा दो टाबर फेर। चार टाबरां रा बाप है थांरा भंवरजी।'

'चार ! यार म्हनै तौ पांचवां री तैयारी दीसै।'

'कांई ठा ?'

उणी बगत सोम री मां चाय लैय'र आयगी। कप मेज माथै धर सूरज कांनी देख'र मुळकती थकी बोली—'वा भई, सूरज भगवान ! सोम थांरी घणी तारीफ करै। निजर तेज है थांरी। चौथौ मईनौ चल रैयौ है भंवर री भऊ नै।'

सोम री मां रै मूंडै यूं आपरी तारीफ सुण अेकर तौ सूरज लजायगौ। पछै वौ चाय मैल'र जावती सोम री मां नै देखतौ रैयौ। उणनै आपरी मां याद आयगी। मां जित्तौ हेत कुण राखै ? भागसाळी है सोम के उणनै अैड़ी देवी रूपी मां मिळी है। 'किण विचारां में रमगा भाईजी ?' सोम बतळायौ।

सूरज चेतन व्हेय'र बोल्यौ—'यूं इज थारा मां सा रा बारा में सोचतौ हौ। हद इज थाकोड़ा है यार !'

सोमनाथ निसांस न्हाख'र बोल्यौ—'हां, कीं तौ सरू सूं इज दूबळा अर पछै फोड़ा ई कम नीं भुगत्या है आ।' इत्ती कैय'र वौ पेसी मांय सूं जरदौ-चूनौ काढ़'र मसळण लागौ। उणरै चैरै सूं लखावतौ के मगज में कीं विचार ई रगड़का खाय रैया है। पछै वौ होठ नीचै जरदौ दवाय'र बोल्यौ—'देख के थनै थोड़ा में इज सगळी बात समझावूं। थूं आप ई समझ जावैला के आ इत्ती दूबली कीकर है !'

सोम कैवरण लागी—'म्हारा मां सा रै बतायां मुजब म्हारा जीसा रै दोय भाई फेर हा। जी सा सबसूं छोटा। दादोसा गुजरिया उण वगत वै पन्द्रै-सोळै बरसां रा व्हैला। मेड़ता री बात है। थारा गांव रै नैड़ीज।'

'हां, बस ऊं डोढेक घंटा रो रस्तो है।' सूरज हांपळ भरी।

'म्हारा दादोसा अर नानोसा आपस में बाळ-गोटिया व्है ज्यूं हा। नानोसा अठै जोधपुर में रैवता उण वगत, जद दादोसा गुजरिया। दादोसा गुजरण सूं पैलीज नानोसा सूं ब्याव री बात पक्की करगा। चारेक बरसां पछै जी सा रो ब्याव कर भाई वां नै न्यारा कर दिया। बटवाड़ में कीं बरतण-बासण अर कीं कपड़ा-लत्ता इज जी सा रै पांती आया। हां, नानोसा रै बीच में पड़ण सूं नानोसा रै घर रो गैणो-गांठो भायां नै देवणो पड़ियो।'

सूरज हुंकारो भरतो बोल्यो—'हूं! जद इज कैवै के भायां सरीसा सैण नीं अर भायां सरीसा दुसमीं नीं!'

'हां! आ इज बात है' कैय'र सोम बात नै आगै बधाई—'आ देख नै के दोयेक बरस तो वै गांव में इज मुसीबत अर मुफलिसी रा दिन काढ़िया। पण बाई (सोम री मां) तद सूं इज मैणत-मजूरी करण लागगी ही। सेवट नानोसा वांनै जोधपुर लेय'र आयगा। नानोसा नै वां दिनां नासूर री भयंकर बिमारी ही। कोई सालेक भर व्हियो व्हैला जी सा नै अठै आयां नै के नानोसा गुजरगा। पछै को दिन ज्यूं-त्यूं अठै गुजार आपरा ऐक दोस्त रै साथै अैमदाबाद गया परा। उठै वांनै अेक मिल में नौकरी मिलगी। अैमदाबाद में इज म्हारो जलम व्हियो। म्हैं छै-सातेक बरसां रो ही जद कांई व्हियो के मिल में हड़ताळ व्हैगी। हड़ताळ रै बिच्चै इज कांई ठा किण बात नै लेय'र मजूरां मे फट पड़गी। सुणी के जी सा हड़ताळ रै पगस में हा। अेक गुजराती मुसलमान डोकरो जी सा रो पक्को हिमायती हो। हड़ताळ रै बिचाळै ठा नीं कई बात व्ही के हिन्दू-मुसलमानां में झगड़ो व्हैगो। अर अेक रात रा वो मुसलमान डोकरो रमजान चाचा जी सा नै अेक तांगा में घाल'र अस्पताल में लेगो अर भरती करवाया। कीं मजूर घरै आय'र खबर दी के जी सा नै कोई चक्कू मार दियो। रमजान चाचा ई घायल व्हैगा है। बाई म्हनै लेय'र अस्पताल पूगी। उठै गया ठा पड़ी के जी सा रै तीन जगै चक्कू लागा है अर रमजान चाचा री हथेळी चीरीजगी है। जी सा बेहोस हा। पेट, कमर अर खवा माथै घाव आया हा। रमजान चाचा हथेली में पाटो बांध्यां बाई नै ध्यावस देवता हा। इत्तै क में अेक मजूर दौड़तो थको आयो अर कैवण लागो के अब्दुल अर रजाक मिळ'र सेरखां रो माथो फाड़ दियो है अर दोनूं ठा नीं कठीनै न्हाटगा है। अब्दुल अर रजाक दोनूं रमजान चाचा रा जोध-जवान बेटा हा अर म्हारा जी सा रो घणो मान राखता। वां नै ठा पड़गी के मोती भाई (जी सा) नै सेरखां चक्कू मारिया है अर रमजान चाचा रै ई हाथ में चक्कू लागो है। पछै वै चुकणिया नीं हा।'

सूरज निसास न्हाखतो बोल्यो—'देखो, कठै तो हिन्दू-मुसलमान रो झगड़ो अर कठै रमजान चाचा अर वां रा बेटां रो अेक हिन्दू परवार सूं हेत।'

'हां, सूरज ! पण देख के दंगौ तौ कोई करावै अर भेंट कोई चढ़ै । जी सा तीन दिनां तांई अस्पताल में मौत सूं लड़ता रैया । रमजान चाचा अर मिल रा दूजा मजूर आपरी दौड़ पूरा दौड़िया, पण चौथै दिन'' सै कीं खतम व्हैगौ सूरज, मौत जीतगी''''।' कैवतां-कैवतां तौ सोम री कंठ भरीजगौ अर मांयलै कमरै सूं ई डुसकी सुणीजी। सोम ऊठ'र मांयनै गयौ ।

सोम री इण घर बीती नैं सुण सूरज रौ मन ई भारी व्हैगौ हौ। वौ देख्यौ के चाय रा दोनूं कपां मांय सूं अेक-दो गुटका मुस्किल सूं पीवीज्या व्हैला । इत्तैक में सोम पाछौ आयगौ। सोम री मां आय'र चाय रा कप लेयगी। सोम सूरज रै कनै इज माचा माथै बैठ'र जरदौ मसळण लागौ । सूरज धीमै-सीक बोल्यौ—'बाकेई थारा मां सा जब्बर दुख उठाया है।'

सोम जरदौ दबाय'र बोल्यौ—'कईं बताऊं सूरज । वै दिन भुलायां नीं भुलीजै। जी सा रै गुजरयां पछै साल भर फेर अेमदाबाद मे इज बीतौ । बाई नै मिल में रमजान चाचा आद री मदद सूं प्याऊ माथै नौकरी मिळगी ही । पण आदमी री नीचता रौ कीं ठिकाणौ कोनी । अर अेक दिन ' ''''इत्तैक में सोम री निजर मांयलै बारणै ऊभी मां माथै पड़ी । उणरी निजर सोम माथै थिर ही, लिलाड़ माथै सळ अर चैरै माथै परेसानी रा भाव हा । मां-बेटा चौनिजर व्हिया अर सोम घांटी हिलावतौ माथौ नीचौ कर बोल्यौ—'अर पछै अेक दिन अेमदावाद छोड़ दियौ ।'

सोम री मां हाथ मांयलौ पांणी रौ लोटौ टेबल माथै धर पाछी गई परी । सूरज नैं लखायौ के कोई बात सोम कैवतौ-कैवतौ छोड दी है। सूरज लोटौ लेय'र पांणी सोम नैं थाम्यौ । सोम रै इसारा सूं ना दियां पछै खुद पांणी पीय'र लोटौ पाछौ धर दियौ ।

पछै सोम पाछी बात सरू करतां कैवण लागौ —'अठै आया पछै आ तौ थां-म्हां रौ पीसणौ-पोवणौ करती अर म्हैं छोटी-मोटी नौकरी करतौ। प्रेस में लागौ अर केई वरसां तांई कपोजिग रौ काम कियौ ' म्हनै याद है सूरज म्हैं प्रेस जावतौ जद म्हारै साथै अचार अर दोय लूकी रोटियां दोफारी सारू लै जावतौ। म्हैं अेक वार बाई नै कैयौ—बाई ! तूं साव लूकी रोटियां अर रोजीना अचार घाल दै म्हनै : बता, म्हैं दूजा मजूरां रै साथै बैठ'र कीकर रोटी खाऊं ? —इत्तौ सुणतांई तौ सूरज आ म्हनै छाती सूं चेप'र धार-धार रोवण लागी । अेक आखर नीं बोल सकी ।''''''''कीं रुक'र सोम आगै बोल्यौ—इणी तरै सूं अेक वार म्हाणै प्रेस रा सगळा जणां री अेक ग्रप फोटू खिचीजणी हौ । म्हारै कनै पैरणनै ढंग रा कपड़ा नीं हा । म्हैं इणनै कैयौ के बाई काले म्हांणौ फोटू खिचीजैला । म्हारै कनै कपड़ा तौ है ई कोनीं । नैकर रै तौ कारियां लागोड़ी है । आ बोली—लाव, है जिका ई धोय'र सींव दूंला । इस्तरी करायनै पैर लीजै वेटा ! अबकी तिनखा माथै थारै नवा कपड़ा बणवाय दूंला ।'' अर जद आ म्हारौ फाटोड़ी नैकरियौ सींवण लागी सूरज, तौ थनै कंई कैवूं, वस आ समझलै के टांका डोरा सूं नीं, आंसुवां सूं इज लागा ।' इत्तौ कैय'र सोम ऊठ'र बारी कनै जाय'र जरदौ थूकियौ । पछै मांयलै कमरै में घुसगौ ।

कुल्ला कर पाछो आयो जद उणरै हाथ में दोय कप चाय रा हा। अेक कप सूरज नै झिलावतां कैयो—'लै यार, पैलकी ई ठंडी व्हैगी।' अर कमरा में चाय रा गुळूळका गुंजीजण लागा। पछै सोम बतायो के प्रेस री नोकरी करतां-करतां इज वो प्राइवेट मैट्रिक अर इंटर करी। इंटर करयां पछै वो प्रेस रो काम छोड़ दियो। ट्यूसन आद कर बी. ए. करी अर अेक प्राइवेट स्कूल में मास्टर बणगो। अबै वो बाई नै काम धयो छुडवाय दियो है अर एम. ए. कर रैयो है। वात नै खतम करतां बोल्यो—'म्हैं तो अेक बात जांणू सूरज के आदमी नै आपरो अेक लक्ष तै करणो चाईजै अर तेवड़ लेवणो चाइजै के मनां ई कीं व्हो, म्हैं म्हारा लक्ष नै हांसिल करूंला। ज्यूं के थनै तै करणो है। थनै पैली आ तो तै करणो इज पड़ैला के थूं करणी कांईं चावै? बणणो कई चावै?'

इण तरै उण दिन सोमनाथ जिको सवाल सूरज रै सांमी राखियो वो उण रो पक्को उत्तर हाल तांईं नीं सोध सक्यो है। हां, पण उण दिन सूं सूरज बरोबर बिना नागा प्रेस जावणो सरू कर दियो हो।

•

सनीवार रो दिन। काले अदीतवार नै प्रेस री छुट्टी है, इण कारण आज कीं प्रेस करमचारियां नै रुकणो पड़ैला। काम घणो चढ़योड़ो व्हैणै सूं कीं आदमी काले ई बुलावणा है। तै व्ही के डेली वेजेज अथवा घंटा माथै कामकरण आळां रै अलावा ठेकेदार अर उणरा आदमी आज रुकैला अर काले ई आवैला। परमानेंट स्टाफ री छुट्टी रैवैला। इण व्यवस्था रै कारण परमानेंट स्टाफ रा लोगां में कीं मायूसी अर रोस रो रंग हो तो डेली वेजज अर ठेकेदार रा आदमियां में कीं खुसी ही। दोफार री दोयेक वजी व्हैला। किरपारामजी सूरज नै ई कै दियो के आज उणनै सिझ्यारा छै-सात वजियां तांईं रुकणो पड़ैला। सूरज रो आज सोम रै साथै छै वजियां आळै सिनेमा में जावणो तै हो। उणनै कीं सकपकावतो अर चुप देख'र सेठजी पूछ्यो—'क्यूं, थांरै कठैई जावणो तो कोनीं?'

वो धीमै-सीक बोल्यो—'हां, अेक जगै जावणो है, टाइम ई दियोड़ो है।'

'ठीक! तो थै यूं करजो के जावती बगत तैयार व्है तो शानवी जी रै अठै प्रूफ देता जाईजो!'

उणी बगत डाक आयगी अर सेठजी डाक देखता बोल्या—'सूरज बाबू, थांरा 'फादर साव' री चिट्ठी आई है।' अर वै लिफाफो खोल बांचण लागा।

इण खबर नै सुणतां ई सूरज रै चैरा री रंगत उतरगी। अेक पत्रिका रै दिवाळी अंक रो प्रूफ सांमी पड़ियो हो। प्रूफ में लागोड़ै दीपक री जोत सूं सूरज नै आपरी आंगळियां बळती लखाई। वो उण पेज माथै सूं आपरो हाथ आघो कर लियो। सेठजी सूरज सांमी देख'र बोल्या—'वै लिखी के वांनै थांरी घणी याद आवै। दसरावा माथै जोधपुर

आवरण री विचार है। गांव में सगळा जणा थांनै खूब याद किया है।' इत्तौ कैय'र वै टेवल माथै सूं अखबार आद कागदिया संवेटता बोल्या—'यूं करौ, थै थोड़ा कॉफी हाउस तांई म्हारै साथै चालौ, पछै पाछा आ जाईजौ . थांरै सूं अेक जरूरी बात करणी है।'

सेठजी री बात सुण'र सूरज री पगां हेटली जमीं सिरकगी। वौ सेठजी रै साथै प्रेस सूं वहीर व्हियौ। रस्तै भर सेठजी अठी-उठी री बातां करता रैया। कॉफी हाउस में बैठ'र कॉफी रौ ऑर्डर दियां पछै सेठजी असल बात माथै आवता बोल्या—'हां, तौ सूरज बाबू! बात आ है के थांरा फादर तौ अेक तरै सूं एग्री है अर वै अठै निरमळा नै देख'र गया हा। अवै थांनै फैमलौ करणौ है। थांरौ निरमळा रै बारै में कंई विचार है। लाभजी तौ निरमळा नै आपरी वहू बणावणी चावै। अवै थै बोलौ। इत्तौ कैय'र वै सूरज सांमी देखण लागा।

सूरज गुचळक्यां खावतौ बोल्यौ—'म्हैंऽऽ अवै म्हैं कंई बोलूं। म्हैं तौ इण बारै में कदै ई विचार इज नीं कियौ। अर नीं अवार अैड़ौ कोई इरादौ है।'

'क्यूं?' सेठजी री लिलाड़ माथै सळ पड़गा।

'म्हैं इण विचार सूं जोधपुर नीं आयौ सा। म्हैं तौ आयौ के अठै आपरै कनै रैय'र कीं काम-धंधौ सीखूं ला। दूजी बात, नीं म्हैं निरमळा जी जित्तौ पढ़्यौ-लिख्यौ हूं। वांरै सारू तौ आप कम सूं कम कोई ग्रेजुएट लड़कौ देखौ सा। म्हैं तौ आ समझूं के म्हैं वांरै लायक कोनीं। और तौ म्हैं अवै आपनै कंई कै सकूं?'

'हूं!' सेठजी धांटी हिलाई। उणी वगत कॉफी आयगी। सेठजी कॉफी री चुस्की लैय'र बोल्या—'लायक-वायक री बात तौ आप छोड़ौ। आ देखणौ के कुण कित्तौ लायक है, म्हारौ अर थांरा जी सा रौ कांम! अर म्हनै'ज तौ थै घणा ई लायक दीसौ। नालायक जिसी तौ कोई बात म्हनै थां में नीं लागी। के है?' सेठजी इत्तौ कैय'र मुळकण लागा।

सूरज इण मुळक रौ म्यांनौ समझ'र खुद ई मुळकतौ थकौ बोल्यौ—'अवै म्हैं कंई बोलूं सा!' अर नीची धूण कर कॉफी पीवण लागौ।

सेठजी ई मनौमन समझगा के हाल बात कीं जमी नीं। स्यात् औ इण बारै में कीं सोचियौ ई नीं व्है। के कोई दूजौ कारण ई व्है सकै। आज-काल रा छोरां रौ कीं भरोसौ नीं, कोई दूजी छोरी ई व्है सकै। पण छोरौ अैड़ौ नीं दीसै।··· इत्तेक में ई कोई सेठजी रा जांण-पिछांण आळा आयगा। सेठजी वां सूं बातां में लागगा। सूरज विचार करण लागौ के आज तौ कोजा फसिया। अवै आ व्याव री मुसीबत माथै आई के आई। जीसा ई दसरावा माथै आवणाळा है। सोम सूं मिळणौ पड़ैला। रतन सूं ई बात करणी पड़ैला। अर जे रतन री मां इण बात नै लैय'र बात करी तौ कांई जवाव देवूंला।···उणी वगत सेठजी ऊठता थका बोल्या—'लौ, चालौ सूरज बाबू!'

कॉफी हाउस सूं वारै आय'र सेठजी वहीर व्हैता बोल्या—'ठीक सा ! म्हैं तो कागद री दुकान अर दोयेक दूजी जगै जाय'र पछै प्रेस आवूंला। थें याद राख'र थानवी जी रा प्रूफ लेता जाईजो। अर म्हारी वात माथै फेर नेठाव सूं विचार करजो। जठै तांई लायक-नालायक री वात है, वडा-वडा पढ़िया-लिखिया नालायक निवड़ सकै अर अेक अणपढ़ वत्तो लायक व्है सकै। सोचजो ! अैड़ी कीं जल्दी कोनीं।' इत्तो कैय'र सेठजी अेक 'थ्री व्हिलर' नै रुकण री इसारो कियो।

सेठजी रै गयां पछै सूरज नै न्हैचो आयो अर वो उठै सूं प्रेस पूगो। प्रेस में आय'र वो सीधो मोवनजी कंपोजिटर कनै पूगो। वै प्रेस रा फोरमेन हा। थानवी जी रा प्रूफ री बाबत पूछ्यो, तो मोवन जी वोल्या—'हाल घंटो भर लागैला। दोयेक पट्टियां री करेक्सन-मेकप वाकी है सा। वारै पेजां रा प्रूफ तो तैयार है। चार पेज वाकी है। वावूजी (सेठजी) पाछा कित्तीक वार नै आवैला ?'

'पाछा आवण री तो म्हनै कीं कैयो कोनी। तो ई अंदाजन दोयेक घंटा पैली तो कंई आवै। क्यूं ? कोई खास वात ?'

'हां, भंवरा नै आज कीं रिपिया देवणा हा। वोत जरूरी है। सिराध ई चल रैया है अर छोरो ई विमार है। दवा-दारू ई पइसो तो लागै इज।'

'कित्ता रिपिया मांगिया ?'

'पचास !'

'म्हैं देदूं ?'

'दे दो सा ! कालै वावूजी सूं पाछा दिराय दूंला।'

सूरज भंवरा नै रिपिया देय'र अठी-उठी री वात करण लागो। वातां में ई वो भंवरा सूं वोल्यो के भंवरजी अवै तो थांरै टावरां रो ठाट व्हैगो। चार मोजूद अर पांचवो होवणाळो है। अवै थें ऑपरेसन करवाय लो। भंवरसिंघ छेड़ियां पछै चुप रैवणियो नी। पैली तो वो इण वात सूं नाराजगी दरसाई अर टावरां नै भगवान री देण वतायां पछै सिरकार नै गाळियां टेकी के परिवार नियोजन रै नांव माथै पूरा देस रा मरदां नै सरकार हीजड़ा करण में लागोड़ी है। पण पछै भंवर आपरी आदत रै परवांण मानगो के वात ठीक है। अवकी म्हारो ई आपरेसन करावण रो इरादो है। सोम वावू ई कैई वार कैय चुका है। अर सोम रै वारै में वात चालगी।

प्रेस रा लोगां रै वतायां मुजब सोम ई तीनेक वरसां पैली प्रेस में कंपोजिटर रो कांम करतो हो। सोम री वगत प्रेस मजदूरां रो संगठण ई खासो मजवूत हो। अेकाध हड़ताळ ई व्ही उण वगत में। उण वगत मजदूरां में जित्तो अेको हो अवै नीं रैयो। अवै देखो दिवाळी माथै आयां सगळी प्रेसां में कांम ई कांम। अठी अै गोरमेंट प्रेस, रेल्वे, युनिवर्सिटी

प्रेस आद में काम करणिया छुट्टियां लै'र सैर री प्रेसां में रेट तोड़'र साळा टिकियोड़ा है। आं लोगां री कीं न कीं बन्दोबस्त करणी पड़ैला। इत्तेक में छोटजी मसीनमेन हाथ में मसीन रौ रोलर लियां नैड़ा आय'र बोल्या—'अरे, आपां लोगां में इज दम कोनीं! नीं तौ मजाल है सिरकारू नौकर प्राइवेट प्रेसां में कांम कर लै। माथौ भांग दौ अेकाद रौ! पछै देखौ बेटा मत्तौ ई बंद व्है जाई।'

दूजौ बोल्यौ—'म्हैं तौ कैवूं के फैक्ट्री इंस्पेक्टर नै लाय'र हाथौ-हाथ पकड़वाय दौ दो-चार जणां नै। सैंग आवणा छूट जावैला!'

भंवरसिंघ बोल्यौ—'अबै आप ई बताओ सूरज बाबू! आं गोरमेंट सरवेंट लोगां नै म्हां लोगां सूं डोढ़ी-दूणी तिनखा मिळै। तौ ई आं रै जमाना भर री भूख। म्हां लोग दस-दस, बारै-बारै घंटा मर-पच'र कांम करां तौ ई मईनौ मुस्किल सूं निकळै। यूं समझलौ के ओवर-टेम कियां बिना जीवारी नीं। पण यां कमीणां नै आ बात क्यूं नीं समझ में आवै? आ भूख कद मिटैला। दीखै सेवट कायौ व्हेय'र कोई न कोई किणी न किणी रा हाडका भांग देवैला।'

मोवनजी बोल्या—'नै ठेकेदारां नै की खाड में बूरैला भाया?'

सूरज बोल्यौ—'हां ठेकेदारां री बात ई सोचणी पड़ैला। सोम कैवतौ के आ ठेकेदारी प्रथा आखै देस में मजूरां सारू अेक स्राप बणगी है।'

मोवनजी हांमळ भरी—'साची कैवौ सा! अठै प्रेसां में इज देखलौ। खांच'र तौ प्रेस मालिक ठेकेदार नै पैसा देवै। ठेकेदार उणमें सूं ई तोड़'र मजूरां नै देवै। तद आप यूं समझ लौ के मजूर नै पूरी हाडकां री घिसाई नीं मिळै घिसाई।'

छोटजी मसीनमेन साफ कियोड़ै रोलर नै अेक खूणै में धरता बोल्या—'अरे म्हैं तौ कैवूं के आधौ-अधूरौ पइसौ मिलै जिकौ तौ मिलै इज, पण वौ ई बगतसर कठै! चार चाइजै तौ दोय अवार ले लौ, दोय कालै। आदमी नै फोड़ी रा नै आपरा पइसा सारू ई तरसणौ पड़ै। गधी री····अेड़ी नौकरी। पण कंई करां बाबूजी! मजबूरी में सब करणौ पड़ै।

भंवरसिंघ आपरी राय देवतां मोवनजी नै बतळाया—'म्हैं तौ कैवूं बा, के सोम बाबू सूं मिळनै सल्ला लैय'र कीं न कीं तीयौ-पांचौ करणौ पड़ैला। म्हारै तौ वै साव सांमीसाम रैवै। म्हैं आज इज पूछूंला।'

सूरज कैयौ—'आज तौ रात रा दस बजियां सूं पैली थांनै सोम बाबू नीं मिळै। आज म्हां लोगां रौ पिक्चर में जावण रौ प्रोग्राम है।'

'तौ आप इज वांनै सगळी बात समझाय'र बात कर लीजौ।'

'अच्छी बात है। अबै आप थानवी जी रा प्रूफ म्हनै देवौ तौ म्है जावूं।' सूरज मोवनजी नै कैयो।

'प्रूफ में कित्तीक जेज लागैला रै रफीक ?'

'बस चपियो प्रूफ लेवै है सा !'

सूरज आफिस में आय'र बैठगो। मोवन काम करै जी भंवर नै कैवण लागा के लै थारो तो कांम बणगो। पचास मांगिया नै पचास मिळगा। पण सूरज मनोमन बोल्यो के म्हारो तो काम बिगड़गो। यूं इज व्है, कोई रो काम बणै तौ कोई रो कांम बिगड़ै। इणी बगत प्रूफ आयगा अर सूरज प्रूफ लेय'र उठै सूं बहीर व्हियो।

◆

सोम सूं सूरज री आपरा जी सा रै दसगावा माथै आवण री, सेठजी रै निरमळा री बाबत पूछण री अर प्रेस करमचारियां री मुलाबतां नै लेय'र सगळी बात दूजै दिन खुलासा व्ही। आ सगळी बात रतन अर निरमळा री मौजूदगी में नेहरु पार्क में बैठ'र व्ही। निरमळा री बात रै बारै में तै व्ही के सूरज निरमळा सूं कम पढ़ीयोड़ी व्हैणै री बात ठीक घरी है। आगै बात चालै तो सूरज नै कैवणो है के वो निरमळा नै आपरी बैन समझै है, इण कारण ब्याव री तौ वो सोच ई नी सकै। अर जे सूरज रा जी सा नै पैसां रो लोभ व्हियो तौ स्यामा नै बताय देवांला के आ देखो लखपती बाप री लाडली बेटी। सूरज री इण सूं मेळ-मिळाप बध रैयो है। आप चिन्ता मत करो।

पण जद सोम सूं रतन पूछ्यो के अबै तूं बता, तूं ब्याव री कद लेवड़ रैयो है तौ सोम अबोलो व्हेय'र अेक पत्तियां झरियोड़ै गुलाब रै फूल कांनी देखण लागो। रतन उणरी चुप्पी देख'र भिमरतो थको बोल्यो—'बस, आ इज खराबी है थारै में। खुद री बात आवतां ईं मून धार लेई। आखिर है कंईं थारै मन में. आ तो बता ? निरमळा में कोई कमी है ? के कोई दूजी बात है ? के कोई दूजी छोरी दाय आयगी व्है तो वा बताय दै। मा'रांणी थारै गळै तो कोई पड़ै कोनीं। पछै........'

'रतन ! फालतू री बकबक मत कर ! म्हैं पैली ई कैयो अर आज फेर कैवूं के ब्याव म्हैं निरमळा सूं इज करूंला। पण कीं समै तांईं ठैरणो पड़ैला। म्हारो अेक कांम बाकी है, वो व्हैतां ईं म्हैं ब्याव री तैयारी करूंला।' कैवतां-कैवतां तो सोम पाछो नीचो माथो कर लियो।

निरमळा सोम रै चैरै माथै निजर गडाय'र बोली—'आपरो अेड़ो कंईं कांम बाकी है के आप म्हनै ई नीं बता सको ?'

'हां नीं बता सकूं !'

'पण क्यूं ? आपनै म्हारै माथै विस्वास कोनीं ? जे म्हैं वादो करूं के म्हैं कोई नै नीं कैवूं, तौ ई नीं बता सको ?' इत्तौ कैवतां तौ निरमळा रौ गळौ भरीजगौ।

सोम पडुत्तर दियौ—'नीं बता सकूं !' अर माथौ ऊंचौ कर निरमळा कांनी देख्यौ—उण वगत उणरी आंख्यां में ई पांणी तिरतौ हौ।

सोम अर निरमळा, दोनां री सजळ आंख्यां देख'र रतन उठै सूं ऊठतौ थकौ बोल्यौ—'व्हाट नॉनसेंस ! यार म्हैं तौ जावूं। थैं दोनूं बैठा-बैठा रोयबौ करौ अर मनायबौ करौ। चाल सूरज !'

उणी वगत सोम उणरौ हाथ पकड़'र नीचै खांचतां कैयौ—'अरे, बैठ-बैठ ! तमासौ मत कर !' अर रतन रै बैठां पछै वौ बोल्यौ—'रतन ! अेक बात बता।'

'बोल !

'मांनलै के म्हैं निरमळा सूं कालै व्याव कर लूं।.....'

'मांनलै कंई व्है ? औ मांनलै.....'

'पैली पूरी बात सुणलै !'

'ठीक ! बोल !'

'व्याव करियां पछै जे म्हनै कीं बरसां वास्तै अेकलौ आघौ जावणौ पड़जा तौ थैं लोग म्हनै दोस नीं देवौला।'

'आघौ कठै फॉरेन जावणौ है ?'

कठै ई जावणौ पड़ै !'

'अर बाई ?'

'बाई थांरै भरोसै रैवैला। उणरी किस्मत में हाल दुख भुगतणौ बाकी है।'

सोम री बात सुण'र अेक चुप्पी वापरगी। निरमळा अेक पछै अेक रतन, सूरज अर सोम रा मूंडां सांमी देख्यौ। कोईनै बोलतां नीं देख'र वा बोली—'ठीक है ! जे दुख इज देखणौ है तौ अबै बाई अेकली नीं देखैला !'

'निम्मो !' सोम रै मूंडै सूं अेक इज सबद निकळ्यौ अर उणरी आंख्यां निरमळा रै चैरा माथै जमगी।

सूरज स्याबासी देवतां बोल्यौ—'स्याबास निरमळा ! क्या लाखीणौ जवाब दियौ है।' अर पछै वौ सोम नै बतळाय'र बोल्यौ—'सोम ! जे व्याव पछै थनै कठैई जावणौ पड़ियौ तौ आ मत समझजै के बाई अर निम्मो अेकली रैवैला। लारै बाई कनै म्हैं रैवूंला,

रतन री घर छोड़'र। नै पछै रतन तो है इज ! दोय बेटां बिच्चै कोई मां अर दोय भायां बिच्चै कोई बैन अेकली नीं रैय सकै !' कैय'र सूरज अेक हाथ सोम रै हाथ में अर दूजोड़ो निरमळा रै मोरां माथै धर दियो।

पछै तो जांणो चारूं अेकाकार व्हैगा। चारां री आंख्यां में हेत री इमरत हिबोळा खावण लागो। तै व्हियो के सोम वेगो सूं वेगो निरमळा सूं कोरट में ब्याव कर लेवैला। हां, इणसूं पैली वो अेक बार बम्बई जाय'र पाछो आवैला। पाछो आवतां ई ब्याव कर लेवैला। अर दिवाळी माथै उणरो जावणो तै व्हियो।

उठा सूं वै सगळा पैदल इज घर कांनीं वहीर व्हिया। सूरज मारग में सोम नै प्रेस करमचारियां री समस्या बताई अर कैयो के इण बाबत भंवरजी थारै सूं मिळैला। रस्ता में सोम सूरज नै कैयो के आज सेठजी सूं थारी जिकी बात व्ही उणनै सुण'र लागै के अवै इण बाबत वै फिलहाल थारै सूं कीं बात नीं करैला। हां, थारा जी सा आवणाळा है, वै जरूर नाराज व्है सकै। दूजी बात आ ई व्है सकै के रतन री मां अर दादी आद रै बरताव में कीं फरक आ सकै। पण आज री बात सेठजी घर में बताई, तो आ बात व्है सकै। सेठांणी जी ई इण बारै में थारै सूं बात कर सकै। बस थनै मजबूती राखणी है। थारै सम पढ़योड़ो व्हैणै री बात इण बगत थारै हक में है। पण इणसूं इज काम नीं चालै कीं दूजा कारण ई तलास करणा पड़ैला।

सूरज ई बिस्वास दिरायो के अवै उणनै किणी बात रो डर नीं है। व्हैई जिकी देखी लागैला। जद अेक बात सारू ना देवणी तेवड़ली, तो ना इज रैवैला। पछै वै लोग जाळोगे गेट माथै सोम नै छोड'र अेक ओटो रिक्सा में बैठ घरै पूगा।

दूजै दिन अदीतवार नै सूरज प्रेस नीं गयो। सेठजी उणनै छुट्टी मनावण री कै चुका हा। दिनूंगा चाय-नास्ता री बगत वो देख्यो के सगळां बिच्चै अेक चुप्पी छायोड़ी है। सेठांणी जी बार-बार उडती निजर सूं उणनै देखता अर पछै वांरी निजर उणरै कनै इज बैठी निरमळा माथै जम जावती। वांरो चैरो ई कीं उतरयोड़ो हो। नास्ता सूं निपट'र सूरज आपरै कमरै में पूगो। सेठजी रै बारै निकळयां पछै रतन अर निरमळा ई सूरज रै कमरै में आय जम्या।

सूरज वांनै देख'र बोल्यो—'रतन ! लागै के सेठजी म्हारै बारै में घर में बात कर चुका है।'

निरमळा बोली—'हां, म्हनै ई कीं अैड़ो इज लागो। बाईजी री निजर आज घड़ी-घड़ी म्हारै अर सूरज भाई साब माथै जम जावती। नास्ता री बगत सब चुप-चुप हा।'

रतन टेबल माथै पड़ी अेक किताब नै हाथ में लैय'र उणरा पाना फड़फड़ावतो बोल्यो—'म्हनै तो हाल सोम री बात समझ में नीं आ रैयी है। रात रा ई म्हैं सोचतो रैयो पण म्हारी समझ में कीं नीं आयो। आ कीं बरस तांई आघो व्हैणै री बात कंई है ? वो बार-बार बंबोई अर अेमदावाद रा चक्कर क्यूं लगावै ? थनै कदेई कीं बतांयो निम्भो ?'

निरमळा तुरत कीं पड़ुत्तर नीं दियौ। वा किणी विचार मे डूबोड़ी ही। कीं रुक'र वा बोली—'म्हनै तौ लागै के वै किणी री तलास में है। अेक दार जद कीं मईनां पैली अैमदाबाद सूं आया तद वातौबात में बोल्या के अैमदाबाद जावणौ ई वेकार गयौ। लागै के उणनै बवोई में तलास करणौ पड़ैला। म्है पूछ्यौ ई हौ के किणनै तलास करणौ पड़ैला? तौ वै इत्तौ इज कैयौ के है अेक नीच आदमी। इण सूं वत्तौ वै कदैई कीं नीं बतायौ।'

पछै अठी-उठी री दूजी वातां व्हेण लागी अर कीं वार पछै इज आ तिकड़ी बिखरगी। निरमळा आपरी अेक सहेली कनै जावण री तैयारी में लागी अर रतन अेक अंग्रेजी फिल्म देखणी चावतौ। कालै फिल्म मे नीं जा सक्या इण कारण सूरज री ई फिल्म देखण री इच्छा ही पण वो सोम रो साथ करणी चावतो। इण तरै अेक रै लारै अेक तीनूं बारै निकळगा।

सूरज जद सोमनाथ रै घरै पूगौ तद वौ बैठौ कोई चिट्ठी लिख रैयौ हौ। सूरज रै जावतां ई वौ लिखणौ बंद कर बोल्यौ—'यार अेक मिनट! औ कागद पूरौ कर लूं। गोरमेंट प्रेस रा सुपरिन्टेंडेंट नै लिख रैयौ हूं। अबार कीं प्रेस करमचारी अठै सूं गया इज है।' इत्तौ कैय'र वौ पाछौ कागद लिखण लागौ अर सूरज आज रौ लोकल पेपर देखण लागौ।

कागद लिख्यां पछै सोमनाथ सूरज नै बतायौ के वौ गोरमेंट प्रेस, रेल्वे कारखाना रा मैनेजर, युनिर्वसिटी प्रेस रा मैनेजर आद नै कागद लिख दिया है के वारां आदमी सीटी रा प्रेसां में भाव-तोड़'र काम कर रैया है। जे किणी सूं वांरा आदमियां री मारपीट व्ही अथवा फैक्ट्री इंस्पेक्टर वांनै पकड़ लिया तौ पछै यूनियन री अथवा किणी करमचारी रौ दोस नीं व्हैला। इण वास्तै आप आपरा इण-इण नांव रा आदमियां नै वरज लीजो। प्रतिलिपि लेबर डिपार्टमेंट, लेबर मिनिस्टर आद नै भेजी जा रैयी है।

इण काम सूं निवड़'र वौ आपरी मां नै चाय री कैयौ। अर खुद 'अबार आवूं!' कैय'र बारै निकळगौ। सूरज ऊठ'र सोम री कितावां देखण लागौ। अेक अलमारी में फूटरी चमचमावती जिल्दां आळी रूसी साहित्य जम्योड़ौ हौ। गोर्की, चेखव पुस्किन, तोल्सताय आद रै साथै ई मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टलिन, माओ आद री कितावां करीनै सूं सजियोड़ी। दूजी अलमारी में हिन्दी साहित्य अर अेक लकड़ी की छोटी अलमारी में राजस्थानी अर गुजराती री कितावां रै साथै ई तीन-चारेक प्लास्टिक कवर री डायरियां। एक डायरी काढ'र वौ उणनै खोली। पैला पांना माथै इज लिख्योड़ौ के आ निजू डायरी बिना इजाजत कोई नीं बांचै। वौ बारी सूं देख्यौ पण सोम नै कठैई नीं देख'र वौ डायड़ा रा पाना पलटण लागौ। अेक पांना माथै उणरी मीट जमगी। लिख्योड़ौ हो—दीनू पटेल—इण सैतान नै नीं छोडूंला। भलांई जेळ जावणौ पड़ै, दीनानाथ नै उणरी करणी रौ फल जरूर चखाऊंला।' अर उणी बगत सांमलै दरवाजै में सोम री चप्पलां सुणीजी अर वौ झट डायरी ही जठै ई धर दी। सोम मांय आय'र अेक पल तौ सूरज नै देखतौ रैयौ पछै उणरी निजर उण डायरी माथै पड़ी। वौ अलमारी रै नैड़ौ जाय'र डायरी नै गौर सूं देखण लागौ। पछै वौ सूरज नै वतळाय'र पूछ्यौ—'सूरज! तूं इण अलमारी सूं आ डायरी काढ़ी?'

सूरज रै चैरै री रंगत उडगी। वो धीरै-सीक बोल्यो—'हां काढ़ी तो ही !'

'जद इज रेत री परत माथै डायरी काढण रा ताजा निसांण है। कांई पढ़यो ?'

सूरज झूठ रो स्यारो लियो। बोल्यो—'कीं नीं ! पैला पांना माथै इज डायरी पढ़ण री मनाई लिख्योड़ी देख'र पाछी धर दी !'

'हूं !' कैय'र सोम आपरी आंख्यां सूरज री आंख्यां में अटकाय दी। सूरज नै लखायो के अै आंख्यां उणरै अंतस में गैराई सूं उतर सांच सोध रैयी है। अर सूरज मूंडो फेर माचा माथै आय बैठो। उणरी निजर जद पाछी सोम सूं मिळी, वो देख्यो के सोम उणनै देख'र मुळक रैयो है। जांणै वो सूरज रो झूठ पकड़ लियो व्है ज्यूं।

सूरज पूछ्यो—'आज तो छुट्टी रो दिन है। कांई प्रोग्राम है ?'

सोम पडूत्तर दियो—'कीं खास नीं। तूं बता ?'

'आज टैम व्है तो पिक्चर में चालां ?'

'अरे हां, काले ई नीं चाल सक्या। आज जरूर चालांला। तीन वाळा में चालांला। क्यूं के सिञ्झ्यारा सात वजियां अेक मीटिंग में ई जावणो है।'

'अच्छी बात है।'

•

ज्यूं-ज्यूं दिन बीतता गया, त्यूं-त्यूं सूरज री बेचैनी बधती गई। दसरावो नैड़ो आयगो। सिराध खतम व्हेय'र नोड़ता सरू व्हैगा। सूरज रोजीना मनोमन रटतो के जी सा आयगा अर निरमळा सूं व्याव री बात चलाई तो वो कांई उत्तर देवैला। खुद सूं सवाल करतो अर खुद इज उत्तर देवतो।

इण बाबत वो अेक दिन सोम सूं ई बात करी। सोम उणरी बात सुण'र पैलां तो चुप रैयो अर अेक टक सूरज नै देखतो रैयो। जद बोल्यो तो उणरै चैरै माथै अेक तणाव हो। वो बोल्यो—'सूरज ! इण मुस्किल सूं इत्तो मत घबरीज के चोरी-भली सूरत माथै मांदगी निजर आवण लागै। थनै जद निरमळा सूं व्याव करणो इज कोनी तो किस्सो खतम ! थारा जी सा नैं साफ ना दे दीजै। नाड़ तो माडैला कोनी थारी। नाराज व्हेय'र गाळ्यां काढ सकै। वत्तो सूं वत्तो गुस्सै में अेकाध हाथ ई धर दै तो छो धरता। थूं तो बस थारी 'ना' माथै कायम रैईजै। कई ?'

सूरज हांमळ भरी—'हां ! खैर, आ तो है इज !'

सोम कैयो—'बस ! चिन्ता नीं करणी ! चिन्ता करण नै फेर केई बातां है। थूं तो गांव रो रैवणियो। गांव री गरीबी ई देखी व्हैला। मजूर-करसां री पड़तल दसा थारै सूं

छांनी कोनी । आं सारू जिकी सरकारी इमदाद व्है, वा आं लोगां तांई पूगै इज कोनी । ठाकरां, पंचां अर सेठ साहूकारां बिच्चै इज हजम व्है जावै । थूं तौ खुद अेक सेठ रौ बेटौ है । अै सगळी खरी-खोटी बातां थारै सूं छिपियोड़ी कोनी । के छिपियोड़ी है, बोल ?'

सूरज मरियोडी अवाज में बोल्यौ—'हां जांणू हूं, अर आंख्यां देखी हूं के गरीब करसां री जमीनां अर जिंदगांणी किण गत उधार माथै टिक्योड़ी है ।'

सोम राजी व्हेय'र बोल्यौ—'स्याबास सूरज ! के थारै में कड़वै सांच नै मांनणै री हिम्मत है । तौ केवण रौ मतलब औ के चिन्ता करणी है तौ वां लोगां री कर, जिका इण हालात में पिस रैया है । इण सरकारी भ्रस्ट व्यवस्था में कीं नीं व्हैणौ है । केई चोखा कामां री घोसणा कर सरकार वां सारू जिका लाखां-करोड़ां रिपिया खरच करै, पाछौ आ ई नीं देखै के वौ पईसौ सही जगै पूगौ के नीं पूगौ ।'

सूरज अेक निसांस न्हाख'र बोल्यौ—'साव साची बात भई थारी ।'

सोम हथेळी माथै जरदो-चूनौ रगड़तौ बोल्यौ—'म्हैं तौ अेक बात जांणू सूरज के आदमी नै बगत सूं जुड़'र उणरै साथै दौड़ लगावणी है । आपणी खिमता नै ओळखणी है । जिण जगै, जिण क्षेत्र में कांम करां, उणमें इण लगन सूं कांम करां के लोग बरसां नीं भुलाय सकै अर बगत रै माथै आपांरौ नांव अंकित व्है जा । दूजी बात, मां-बाप, कुटम-परवार, गांव-गळी रा लोग अर यार-दोस्तां रै बिचाळै रैय'र आपां खुद रौ जिकौ चरित्र खड़ौ करां, उणमें घणां लोगां री देण जुण्योड़ी व्है । तद आपां रौ फरज बणै के किणी'र किणी रूप में वांरै कांम आय'र इण देण रौ चुकारौ करां । पूरी दूनियां रौ ग्यान-विग्यांन आपां रै विकास में जुड़्योड़ौ अर आपां पूरी दुनियां रा देणदार । तद आपांनै चाईजै के आपां इण संसार सारू पाछौ कंईं कर रैया हां ? इण बात नै गैराई सूं सोचणी पड़ैला ।....'

अर इण गत सोम अेक पछै अेक जिकी बातां सुणाई, वांनै सुण'र सूरज नै लखायौ के वौ फालतू अेक छोटी-सीक बात नै लेय'र इत्तौ परेसान है । लोग तौ वड़ी-वड़ी मुस्किलां सूं लड़ता थकां ई इत्ता परेसान नीं व्है । अबै तौ काले आवता जी सा भलांई आज आवौ ।

उणी दिन स्यामा मिळगी अर कैवण लागी के कलकत्तै सूं बावू सा (पिताजी) रौ कागद आयौ है । दिवाळी माथै म्हैं कळकत्तै जावूंला । बाईजी भुवासा नै कैवता के बावू सा उठै म्हारै वास्तै लड़कौ देख्यौ है । इण सारू इज म्हनै बुलाई है ।

सूरज बोल्यौ—'म्हारा जी सा ई दसरावा माथै अठै आवणाळा है । इण बाबत म्हैं थां सूं अेक बात करणी चावतौ ।'

स्यामा अेक उमावै सूं बोली—'हां, हां ! बोलौ कंईं बात है ?'

सूरज कीं संकीजतां कैयौ—'म्हारा जीं सा कीं लोभी जीव है । स्यात् निरमळा सूं म्हारौ ब्याव इणी कारण करणी चावता व्है के किरपाराम जी पैसा वाळा है अर ब्याव में

लेण-देण चोखी करैला । पण म्हैं जद इण ब्याव सारू ना दूंला तो वै भींगर सकै । उण वगत वांनै कैयो जा सकै के अेक दूजी करोड़पती बाप री बेटी स्यामा सूरज में 'इंटरेस्टेड' है अर वांनै थां सूं अेक हळकी-सीक मुलाकात करवायां थांनै कोई अैतराज तो नीं व्है ?'

स्यामा हंस'र बोली—'वाह ! क्या प्लान है ! म्हनै तो थै सांनांणी म्हारै सूं ब्याव करणो चावो जो ई अैतराज कोनीं । थांरै वास्तै तो म्हैं सारी दुनियां रा लड़का रिजेक्ट कर सकूं ।' पछै सूरज नै खुद री बात सूं कीं परेसान व्हैतो देख'र वा बोली—'पण घबरावो जैड़ी बात कोनीं । म्हैं जबरदस्ती कोई रै गळै नीं पड़ूंला । म्हनै थै थांरा जी सा सूं मिळवाय दीजो । अरे, वो मामलो फिट करूंला के थै ई याद करोला अर थांरा जी सा राजी-राजी पाछा गांव जावैला परा । बस !'

'बस !'

अबै सूरज निसंक व्हैगो । पण स्यामा रो प्रस्ताव उणरै दिमाग में थेक हळकी-सीक खट-खट पैदा कर दी ही । वो तारा अर स्यामा री तुलना करण लागो । केई बातां में तारा रो जवाब नी हो, तो केई बातां में स्यामा ई कम नीं ही । तारा सूं ब्याव करणो दोरो कोनीं पण स्यामा सूं करणो व्है तो कीं दुड़को ई कोनी । हां, सूं तो दोनूं ई काबील है, पण तारा''''पण स्यामा''''तारा''''स्यामा''''अर इण तरै सूरज आखातूक निरणो नीं कर सक्यो के आ दोनां में कुण उणरै लायक है ।

सूरज जद रात रा बिछावणा में पूगो जद उणरै मगज में केई सवाल चक्करावो हा । तारा अर स्यामा में सूं कुण ? निरमळा नूं ब्याव रो ना दियां, जी सा री नाराजगी रो कांई रूप व्है सकै ? अै जोधजी जी सा रै साथै कीकर आ रैया है ? सोम, हां सोम री डायरी अेक निजर देखतां जिण दीनूं पटेल री बाबत लिख्योड़ो हो, उणसूं सोम री कांई दुस्मणी है ? सोम कीं बरसां तांई आधो व्हैणं री जिकी बात कैवै, वा दीनूं सूं जुड़योड़ी तो नीं है ? वो इण मामला में कांई कर सकै ?—इण गत सूरज रै सांमी अेक रै पछै अेक केई सवाल दिमाग में उछाळा खावण लागा ।

किरपारांम जी उणनै आज औ ई बतायो के उणरा जी सा कालै दिनूंगां ई अठै पूग रैया है । कालै होमास्टमी है, सो आवतां ई सिनांन-संपाड़ा कर जोधसिंघ जी रै साथै किल्लै देवी रा दरसणां सारू जावैला ।

सूरज रै सांमी सबसूं पैलो सवाल तो कालै पूछ आवैला । वो आज तांई कदेई आपरा जी सा नै किणी बात सारू ना नीं दियो । आग्याकारी बेटा रै रूप में आखै गांव में उणरी साख है । पण अबै ? अबै पैलो बार उणनै आपरा जी सा सूं मूंडै-मूंड मुकाबलो करणो पड़ैला । अै सगळी बातां सूतां-सूतां सोचतो थको वो केई देवी-देवतावां नै याद कर लिया । अर नींद री देवी कद उणनै आपरी गोदी में खींच लियो, आ उणनै ठा नीं पड़ी ।

•

दूजै दिन किरपारांम जी सूरज नै साथै लैयर कार में स्टेडियम कनांलै मोटर स्टेंड माथै पूगा। लाभजी जद जोधसिंघ नै आपरै साथै चालण री कैयी तौ पैली तौ जोधसिंघ नां देय'र आपरा काकोसा रै उठै जावण री बात कैयी, पण जद किरपारांम जी ई साथै चालण सारू खांत करण लागा तौ सगळा जणा सेठजी री 'शेवरलेट' में बैठ'र वहीर व्हिया। रस्ता में अठी-उठी री बातां व्हैती रैयी। घरै आयां दोनां नै सूरज रै कमरै में ठैराया।

जोधसिंघ सेठ किरपारामजी री ठरकौ देख'र मांनगौ के लाभजी छोरा सारू घर तौ टाळ'र देख्यौ है। साथोसाथ उणनै औ ई विस्वास व्हेगौ के वौ जिण कांम सूं आयौ है, वौ जरूर पूरौ व्हैला, इणमें मीन-मेख नीं। पछै वौ सिनांन-संपाड़ै सूं निवड़'र लाभजी रै साथै किल्लै जावण सारू त्यार व्हैगौ। सेठजी रतन रै साथै कार में जावण री बात कैयी पण लाभजी ना दे दियौ अर सूरज नै साथै लैय'र पाळा इज जावणौ तै कियौ। किल्लै जावण सारू वहीर व्हेती वगत किणी काम सारू निरमळा आपरै कमरै सूं बारै आई। लाभजी अर जोधसिंघ नै नमस्कार कर बारै वरांडा में पड़ी आपरी साइकिल लैय'र बारै निकळगी। निरमळा नै जावती देख'र लाभजी फुसफुसाय'र जोधसिंघ सूं बोल्या के आ इज छोरी है। जोधसिंघ ई घांटी हिलाय'र हांमळ भरी। उणी वगत सूरज साथै चालण सारू तैयार व्हेय'र आयगौ। किरपारांम जी अर जोधसिंघ अेक'र तौ सूरज नै देखता इज रैयगा। बस स्टेंड माथै सूरज चोळौ-पजामौ अर चप्पल पैरचां आयौ हौ अर अबै पैंट-बुसट अर कस्मा आळा बूंट पैरचां पक्कौ सैर रौ रैवणियौ अर कॉलेज रौ स्टूडेंट व्है ज्यूं लागतौ। उणनै देख'र जोधसिंघ बोल्यौ—'वाह, भई वाह ! क्या बातां है भगवान थांरी। अेकदम बाबू साव बणग्या थै तौ !'

सूरज संकोजतौ थकौ कीं नीं बोल्यौ। अर तीनूं उठै सूं वहीर व्हिया। रस्ता में लाभजी बेटा नै अठै रै कांम धंधै आद रै बारै पूछ्यौ अर सूरज बतायौ के वौ प्रेस रौ काम सीख रैयौ है। लाभजी आपरै आवण रौ कारण नीं बतायौ।

किल्लै सूं पाछा आयां पछै जीम-चूंट'र वै सेठजी रै प्रेस पूगा। सूरज तौ प्रेस में इज रैयगौ अर किरपारांमजी चाय पीवण री कैय'र लाभजी अर जोधसिंघ साथै बारै निकळगा। सूरज समझगौ के अै अबै कॉफी हाउस में बैठ'र सगळी बातां करैला। जीतै वै पाछा नीं आया, जितै सूरज रौ जीव आकळ-बाकळ इज रैयौ के कांई ठा कांई बात व्हैला ? आधै-पूंण घंटै सूं वै पाछा आया। जोधसिंघ साथै नीं हौ। पूछ्यां ठा पड़ी के वौ आपरै रिस्तेदारां सूं मिळण नै गयौ है।

पाछा आय'र लाभजी सूरज नै आपरै साथै चालण री कैयौ। उण वगत बांरै चैरै माथै अेक तणाव हौ, लिलाड़ माथै कीं सळ हा अर बोली ई कीं बदळयोड़ी ही। सूरज मनोमन भगवान नै याद करतौ थकौ ऊठ'र लाभजी रै साथै पाछौ वहीर व्हियौ। रस्तै में लाभजी आपरै आवण रौ खास कारण बतायौ—'ठाकर सा आवतै मिगसर में गुलाब बाईसा रौ ब्याव करणौ चावै। इण सारू कीं रकम रौ बंदोबस्त करणौ हौ। म्हारै कनै इत्ती रकम ही

कोनीं । म्हैं सोचियो के किरपारांम जी सूं रकम री बात करां तो बैठ सकै । उण मिस थारै सूं ई मिळणो व्हैगो ।'

सूरज पूछ्यो—'सेठजी रकम सारू हांकारो भर लियो ?'

लाभजी बोल्या—'हां ! भर तो लियो पण हांकारो कीं कटमटाट करनां उण भरियो । वो ई उण वगत, जद म्हैं आंनै कैयो के ओ म्हारै घर रो कांम है अर नीं व्है तो म्हैं गिरवी धरण सारू रकम साथै लायो हूं ।'

'कित्ता रिपियां री बात है ?'

'दस हजार, खरा !'

'हूं !' कैय'र सूरज चुप व्हैगो उणरै मन में अेक इज बात पटापोळी के ब्याव रै बारै में अबै पूछैला, अबै पूछैला । पण लाभजी रस्तै में कीं नीं पूछ्यो ।

घरै आय'र लाभजी पिलंग माथै आडा व्हैगा सूरज नै कुरसी माथै बैठण रो इसारो कियो । सूरज रै बैठां पछै खुद पाछा ऊठ'र कुरतै री जेब सूं बीड़ी रो बंडल काढ'र बीड़ी सिळगाई । असल बात माथै आवता लाभजी ई संकोज रैया हा के आंगा नै सीधा पूछूं । जे इणरी मां व्हेती तो····खैर । वै बोल्या—'हूं ! भळै कोई खास बात व्ही थारी किरपारामजी सूं ?'

'खास बात ?'

'हां !'

'खास बात तो आ इज के अै म्हनै आपरो जंवाई बणावणो चावै ।'

'हूं ! तू कंई जवाब दियो ?'

'म्हैं तो ना कर दी'

'क्यूं, ना क्यूं कर दी ?'

'नीं तर कंई करूं ! म्हैं उण छोरी सूं ब्याव नीं कर सकूं ।'

'कई खराबी है छोरी में ?'

'म्हारै लायक वा—यूं समझो के म्हां दोनूं अेक दूजा रै लायक कोनीं ।' सूरज आपरो फैसलो सुणाय दियो ।

'लायक कीकर कोनीं रे भई ?' लाभजी नै सूरज सूं धड़ाधड़ उत्तर री उम्मीद नीं ही ।

'पैली बात तो आ जी सा, के बी. ए. पास छोरी रै वास्तै छोरो ई बी. ए., एम. ए. व्हेणो चाईजै, नीं तो छोरा नै जगै-जगै, जणा-जणा सांमी नीचो देखणो पड़ै ।'

'हूं !' लाभजी री निजर बेटा माथै थिर ही।

सूरज सोम सूं मांग'र लायोड़ी अेक किताब माथै मीट जमायां इज आगै बोल्यौ—'दूजी बात, निरमळा नै आप देखीज व्हौला। साव दूबळी-पतळी अर कांम-धांम सूं कोरी है। अैड़ी छोरियां गांवां में जावण कोनी व्है। तीजी बात के म्हैं अठै आवतां ईं उणनै म्हारी बैंन बणाय ली।'

लाभजी की नाराजगी दरसावतां कैयौ—'बोत बढ़िया कांम कियौ आप !' अर पछै आज-काल रा छोरां रा गुण-दोसां रौ वखांण करण लागा अठी-उठी री कैई बातां सुणायां पछै बोल्या—'सुणलै ! अै लायक-वायक री तौ सगळी बातां छोड़ ! अैड़ौ रिस्तौ किस्मतवाळां नै मिळै गैलसप्फा ! लाखां रौ आसांमी है किरपारांम ! अैड़ौ व्याव...........

उणी बगत फटाक देणी दरवाजौ खोल'र स्यामा मांय आवती बोली—'हेलो सूरज!' अर लाभजी नै देख'र 'सॉरी' केयर पाछी मुड़ती ही के सूरज बोल्यौ—'स्यामा जी ! आवौ अै म्हारा जी सा है।'

स्यामा लाभजी नै नमस्कार कर सूरज सूं बोली—'म्हैं प्रेस फोन कियौ तो पतौ लागौ के आप घरै हौ। म्हनै शॉपिंग करणी ही, आप साथै रैवता तौ चूज' करण में सुविधा रैवती। खैर, म्हैं निम्मौ नै लैय जावूंला !' इत्तौ कैय'र वा नमस्कार करती बारै निकळगी।

लाभजी पूछ्यौ—'आ कुण है ?'

सोम कैयौ—'न्यात री इज है। सेठजी रै रिस्तै में कीं लागै। कलकत्ता वाला उमराव चंद सा री बेटी है। आ ई किरोड़पती बाप री बेटी है।'

'हूं' कैय'र लाभजी सूरज रौ मूंडौ देखण लागा। वांरी आंख्यां में अेक सवाल हौ। सूरज जमीं कांनी देखतौ कीं मुळकण लागौ। उणरी मुळक में अेक जवाब हौ। पछै जांणै बाप-बेटा दोनूं समझगा। कोई कीं नीं बोल्यौ।

दूजै दिन सूरज अर रतन मिळ'र लाभजी नै स्यामा रै घरै घुमाय लाया। लाभजी नै ई पक्कौ विस्वास व्हैगौ के बेटौ लाखां में नीं, करोड़ा में हाथ घाल्यौ है। वां नै अबै सूरज सूं कोई सिकायत नीं ही। वै मनोमन उणरी सरावना करण लागा हा। अर सेवट दसरावौ कर, ठाकर सा रौ कांम निवेड़'र वै पाछा राजी-राजी रूपाळू वहीर व्हैगा।

(आगलै अंक पछेती खेंप)

* * *

आपरा कागद

भाई जोधाजी,

'जागती जोत' रा तीन अंक देख्या, घणा दाय आया। संपादन सावचेती अर चतराई सूं कियो गयो है, इण सारू आपनै मोकळी बधाई। संपादन रै भार हेटै आपरो कवी अर लेखक दब नीं जावै, औ डर है।

जून रै अंक में भाई किसोर कल्पनाकान्त री हिन्दी में कागद पढ़'र घणो दुख होयो। आपरो दरद अर जळन वै राजस्थांनी में क्यूं नीं प्रगटी ? आप भी उण हिन्दी रै कागद नै 'जागती जोत' में छाप'र कोई बडमाणसी रो कांम कोनी कियो।

'जागती जोत' रो सपादन जे लगोलग साल-दो साल तांई अेक ई कलम होवती रैथै, तो भासा री अेकरूपता अर सैली आद री फूठरी अर ओपती मंडाण मंडतो—बात कीं सावळ वैठती। संगम इण सारू भळै निरणै लेवै तो बात ठगसर वैठै।

वैजनाथ पंवार
चूरू

भाई तेजसा,

'जागती जोत' नै सांच्यांणी जगा दी। गैलड़ा रद्दी अंकां नै देख'र इण नांव नू ई कियां ई होवण लागी ही, पण अब आ नागी लागी के नांव में कांई पड़्यो है? असली बात तो कांम है। आप राजस्थांनी री आ 'जागती जोत' जगा रया हो, औ राजस्थांन अर राजस्थांनी वास्तै सुभ-लक्षण। बडा आदम्यां कैवण नै तो जगां करी के राजस्थांनी में ई अेक ढंग रो मासिक निकळै। म्हारै सारू सेवा लिखज्यो।

भंवरसिंह सामौर
चूरू

भाई तेज जी,

इण में कोई दोय राय नीं के 'जागती जोत' रो भी अर रूप आप सुधारियो, पण छै म्हीनां पछै वै ढाक रा तीन पात दीखै। कांई वणैला आं छै महीनां री मैनत अर मगजपच्ची री। राजस्थांनी हाल इण गत सूं छूटतां बरस लागैला। आप 'दीठ' नै पाछी चेतावो तो कीं बात वणै। म्हे कित्ता कांई मददगार व्है सकां इण बाबत आगूंच आप सूं कांई दावो करां, थोड़ो आळस ओरूं उडावणो पड़ैला, आ तो दीखती बात है ई।

नन्द भारद्वाज
जोधपुर

भाई जोधाजी,

थां रै हाथ सूं छूटयां पछै 'जागती जोत' री डौळ फेरूं बिगड़ैलौ। म्हारै विचार सूं थांरा अै छै अंक इण री जिकी साख वणासी, पछै आ आगै संभळयोड़ी रैवणी मुसकिल है। पण खैर……दीठ काढ़ण रौ तौ विचार सौ टका पक्कौ ई है नीं ?

सांवर दइया
पूना

मानीता तेजसिंघजी,

'जागती जोत' रा अंक बांच'र जीव सोरौ होयौ। हरावळ रै खळ-विखळ होयां पछै महावारी राजस्थांनी छापै री कमी अणंई घणी खठकती। 'जागती जोत' इण खोगाळ नै सावळ भर दी। इणनै महावारी छापै रै रूप में जमावण रौ जस आपनै। महीनै रौ महीनौ धड़ाधड़ सांतरौ अंक निकळतौ देख'र 'हरावळ' बंद होयां पछै कुन्द पड़ियोड़ौ मन पाछौ नवा लेख लिखण सारू हुरकण ढूकौ।

जहूर खां मेहर
जोधपुर

घणा मानीता भाई जोधा,

राजस्थांनी साहित-साधकां नै दिसा-बोध देवण आळा लेखकां, चिंतकां, विचारकां अर संपादकां में आपरौ नांव सदा सिरै रह्यौ। आपरी गैहरी दीठ, मिळन-भावना, सांतरी सूझ-बूझ रै पांण 'जागती जोत' रा अप्रेल अंक सूं आज तांई जित्ता अंक देखण में आया, वां री सगळी ठौड़ सरावणा व्ही। जीवण में सगळां नै राजी तौ कोई नहीं राख सकै।

आपनै इण बात रौ पत्तौ है ई के अक्टूम्बर '७७ सूं मार्च '७८ तांईं 'जागती जोत' रौ संपादन म्हनै करणौ है। म्हैं चावूं आपरी रचनावां नै छापण रौ मौकौ म्हनै मिळै अर वै 'जागती जोत' रौ आधार वणै।

आप घणा सुळझियोड़ा सम्पादक हौ। किरपा कर कंई दिसा दिखावण आळी, सावधांनी बरतण आळी, आगळै अंकां में किण तरै री सामग्री आवणी चाईजै—आदि-आदि बातां लिख'र भिजावौ, तौ घणी किरपा होसी। म्हैं आपरा सुझावां री उडीक में रैवूं ला।

दीनदयाल ओझा
सम्पादक 'जागती जोत' बीकानेर

* * *



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़े रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा. मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्या हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंहराज पुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा. व्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं. श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ. मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-५०
हूंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-५०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा. जो)	सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८ ५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
सरवर सूरज अर सिञ्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क—

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।



आगलै अंक री बानगी

- मनवा थारी आदत नै—अन्नाराम सुदामा री टाळवीं लेख ।
- अरे ! इत्तो दुख—सांवर दइया री नवी कथा ।
- सत्यप्रकास जोसी, सिवराज छंगाणी, क्रसण गोपाल सरमा, चन्द्र प्रकास देवळ, भूरसिंघ राठौड़ अर नारायण सिंघ भाटी इत्याद री नवी अबोट रचनावां ।
- 'खुद सूं खुद री बातां' अर 'खुलती गांठां' री पछेती खेंप ।
- जागती जोत सूं निवड़तां—सम्पादक री वात ।
- दूजा सगळा स्थंभ ।

मुद्रण : माहेस्वरी प्रिंटिग प्रेस बीकानेर सारू साधना प्रेस जोधपुर में छपी ।

जाणती जोत

राजस्थानी संगम री मासिक

सम्पादक
तेज सिंह जो

सितम्बर
१९७७



प्रेमचन्द्र गोस्वामी

वीयां तो वीकानेर रा, पण वरसां सूं जैपुर ई वसै । राजस्थांन रा चितरांमकारां में नांमी । राजस्थांन ललित-कला अकादमी सूं इनांम पायोड़ा । ललित-कला अकादमी रै छापै 'आकृति' रा सम्पादक ई रह्या । राजस्थान रा हिन्दी कथाकारां में ई गोस्वामी जी रो नांव खासो भलो । केई पोथ्यां छप्योड़ी । इण छापै रै सम्पादक तेजसिंघ जोधा री पैली पोथी 'ओळू री ओळ्यां' मुंडागै लावण में ई गोस्वामी जी रो पूरो-पूरो हाथ हो ।

जागती जोत

राजस्थांनी संगम री मासिक

सितम्बर १९७७

संपादक

तेज सिंघ जोधा

बरस : ५

अंक : ७

बरस री मोल : १२ रिपिया

इण अंक री मोल : सवा रिपियो

रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक

राजस्थांनी भासा साहित संगम (अकादमी)

बीकानेर [राजस्थांन]

इण अंक रा लिखारा

अन्नाराम सुदामा : मूंडोमूंड तो कदै मिळिया नीं, पण म्हांरै विच्चै कागदां री खींचतांण जूनी। 'जागती जोत' संभाळी तो सुदामा जी नै रचना सारू लिखियो। 'अवार ओसांण नीं, लड़कां रा इमतांन चालै।' अबै ? 'हारी-बीमारी फोड़ा घालै।' अबै ? 'मूड की गड़बड़-सड़बड़, आज नीं कालै ?' अबै ? 'अरै ओ सम्पादक जबरो, हिलै न हालै।' छः म्हीनां लार अपड़ी तो वां रा ई सबदां में लिखवा ली मेवट— 'मनवा थारी आदत नै !'

खरी, खांटी अर ठेळबंद राजस्थांनी लिखवाळा दो च्यारेक लोगां में अन्नाराम जी सुदामा रो नांव। भासा कांई सूंसावती लीली कामड़ी, आड-टोड री तो बख ई अणूती, सुरडै तो ई जीव सोरो। जांणै पींज ई न्हांखै तो चोखो।

राजस्थांनी में आपरी केई पोथ्यां छप्योड़ी। 'मैकती काया मुळकती धरती,' 'पिरोळ में कुत्ती ब्याई', 'आंधै नै आंख्यां' अर दोयेक बरसां पैली सूंपी 'दूर दिसावर'। आप बरसां सूं उदयरामसर (बीकानेर) में मास्टर। अेक वळा राजस्थांन साहित अकादमी रो इनांम ई लीधो।

सिवराज छंगाणी : दोवड़ै हाडां। कद-काठी सूं पूरा। सभाव सूं धीमा, मधरा अर मिलताऊ। साहित री सगळी विधावां में लिखा-पढी रो चरमो। राजस्थानी में 'उणियारा' नांव री अेक पोथी छप्योड़ी। भासा छंगाणी जी री संवळी, सांची अर स्वआं-तव्वां। बीकानेर रा वासी। उठै ई अेक हायर सैकण्ड्री स्कूल मे हैडमास्टर।

सुरेस पारीक 'ससिकर' : भीलवाड़ो जिलो। खेजड़ी गांव। राजस्थांनी कविता में नवादू पण भरोसैदार। 'जागती जोत' में पैली वळा।

स्वामी खुसालनाथ : स्वामी जी बाड़मेर रा वासिंदा। नवी कविता रै गेलै नवा नवा। 'जागती जोत' में इणीं अंक पैली वार छपिया।

नन्दकिसोर चतुर्वेदी : जिलो चित्तौड़गढ़। गांव पाछूंदो। वांयां डबोक (उदैपुर) री बी. अेड. कॉलेज में। पढै र पढावै इणरी जांच नीं। कविता रो चरसो।

ओमप्रकाश थानवी : बीकानेर वासी। हिन्दी अर राजस्थांनी दोनूं भासावां में लिखै। राजस्थांनी में अलबत नवा। 'इतवारी पत्रिका' में केई वळा छपै। पत्रकारिता री सोक ई पिंडा नै पूरो। कागद पत्थांण आजकालै नेरुदा री कवितावां रा उल्था मे लागोड़ा।

कोमल कोठारी : धोळा-काळा बाळ। पाको-पाको रंग। पचास रै नगैटगै ऊमर। डील माथै घणी पड़ै जिको ई पतळो अर चोळो। कालर दबियो, तो दबियोड़ो ई। वैरी रात जांणै न दिन। ग्रेंबनरल स्टेटो, ड्वाल्पड पैटर्न लेवीस्ट्रास, मिथ, फोक वेट ऑफ मांउन्ड, साटको फ्रैनेलेसेस, ओरल ट्रैडीसन, पांन माथै चालती कार्य-चूनै रै डांडी वेसिपस तो समझणा ई व्हैला, अळगै-अळगै तांई मन-मगज में लोक साहित अर लोक कळावां री विगेरो।

कदै रिकॉडिंग कदै सूटिंग, कदै अकादमियां री अठी- उठी मिटिंग। आजकालै परदेसां री भागदोड़ ई बधगी। रूपायन रा नित हमेस रा कांम अर अळूझाड़ ई कम नीं। नेहरू फैलोसिप रो मागीगरो ओरूं गांधै। राजस्थांनी में लिखता-पढ़ता लोग ई सार-संभाळ नै उडीकै। परदेसी विदवांनां री आवजाव ई खासा। सेवट कित्तो कांई संभाळै कोमल दादा। मिनख री सामरथ री हद, कठै न कठै तो व्हैतो ई व्हैला।

अमरसिंघ : सादवूधा मिनख। राजस्थांन री हद माथै ई हरियांणै में गांव। राजस्थानी में लिखा-पढ़ी रो पूरो-पूरो कोड। सादूळपुर में कांमकाज लागोड़ा।

विगत

● पूठै रौ चितरांम : प्रेमचन्द गोस्वामी

मोडियौ मील

थारै हाथां सेकियोड़ा मूळां रा बखांण
केई गीतां, ख्यातां अर वातां में
चाळागारी छाक री छकियोड़ी जीभां
घणै चाव सूं चाखिया
पण आज दिन थूं भूखो रो भूखो,
समै रो हिरण फाळोफाळ
अतीत सूं वरतमांन होय
चिड़ियाघर री चीज बणगो
उण अगछाळ माथै सूं
जूनां जोगियां रा आसण ऊठ
दिल्ली रै पारकां में बिछगा
थूं आज दिन दौड़ै उण रै खोजां खातर,
भूख री कस्तूरी री सौरंम
कितरी कीमती व्है है
सगळा सासण आसण अर
मिरगानैणियां रा सिणगार सूं ?

निसकार मत पाकोड़ा पारधी
ओटमवम्ब वीत्यां ई थारी तीर वरकरार है
इण दौलतियै महाभारथ रा
अवतारां नै उथापण खातर

* * *

मिसफिट

०

म्हैं इण दुनियां में
क्यूं मिसफिट मैसूसतौ रह्यौ
वौ अरथ आज उखलियौ
जद चपड़ासी उथलौ दियौ—
'आठ आना स्टेसनरी रै बिल में
वेसी लिखाय लायौ हूं, साइकल रौ पिंचर कढ़ायौ।'
म्हनै आतमग्यांन रै अेक झटकै में लखायौ
के आ साइकल आज ई पिंचर कोनीं व्ही
इण जीवण री खोड़ीली सड़क माथै
समझ आयां पछै होवती ई री
अर म्हारा साथी म्हारा सूं
औ अैडजेस्टमेंट आप खातर चावता ई रह्या
जिण नै म्हैं कदेई सावळ समझण री
सावचेती नीं बरती
अर वै म्हनै
कदैई मूरख, कदैई स्वारथी, कदैई सामंती
कदैई छंटेल अर कदैई चालबाज
कैय'र भूंडता रह्या, साथ छोडता गया
पण वांरी बिटळियोड़ी निजरां हाल म्हनै बींधै
देखतां-देखतां केई साइकलां मोटर-साइकल
अर सेवट मोटर बणगी
अर वा सड़क दिल्ली तांई पूगतां ई
अैयर पैसेज
आज म्हनै अैड़ा मिनखां री फैसन परेड
उड़ सड़क माथै घणी बीफरियोड़ी दीसै
इण खातर म्हैं केई वार डरतौ सड़क छोड़ दूं
पण कांई इण जुग री जात्रा रौ
औ ई अंजाम ?

* * *

समाध

जद सूं थारै लारै आई पीहर छूट्यो
मां बावल वीरा रा मुखड़ा मगसा पड़ग्या
साथणियां री हेत, आंगणा, पिणघट
बाड़ा रा चितरांम आंसुवां घुळग्या

बंवतां थारी भुजा, नैण मुंद जावै म्हारा
मेड़ी री च्यारूं भींता रा धुड़ै लेवड़ा
पिलंग पथरणा तकिया चादर तिरता लागै
जुपती दीवो म्हारै नैणां सूं अदीठ व्है जावै

भारी-भारी थारा दो भुज, भार अग री
थारो मुखड़ो, नैण, होठ, बोजळ ज्यूं पळकै
अंग-अंग में हरख पीड़ री रास रमीजै
म्हैं अलोप व्है जाऊं, बस थूं ई थूं दीसै

अब तो थूं ई कोनीं है, म्हैं ई कोनीं हूं
देस काळ सूं ऊपर कोई जोत वधै है
अणहद नाद सुणीजै, आंणद लीला राचै
जूंण-मरण, सवदां परवारी लोक सधै है

कांटां माथै हूं के हूं धरती रै माथै
चुभै कांकरा हाय पूठ आखी छुलगी है
म्हारा गाभा कठै ? कठै है म्हारी सुध-बुध
मोर ढेलड़ी टुग टुग निरखै ओळूं-दोळूं
छतरी वणगी है, सोनल पांखां तणगी है

* * *

भरम

०

आज चांद नै देखूं हूं तौ
सांमै समदर लंरावै है
काळौ केस कठा सूं उडतौ
म्हारै खांधै पड़ जावै है

आज चांद नै देखूं हूं तौ
धीरै-धीरै कांनां में कोई कीं बोलै
गीत सुणावै, खिल खिल हंस
इमरत रस घौळै

आज चांद नै देखूं हूं तौ
कोई सपनौ म्हनै जगावै
इण वेळा नै मेटै कोई
बीत्या पळ में म्हनै पुगावै
आज चांद नै देखूं हूं तौ

८८

* * *

नारी

टावर रा मूंडा में हांचळ
जांघ उघाड़ी
काळ पराई, वगत बायरी

आज समझग्यो
सकळ स्रस्टि रा बीज कठै बीज्या बिरमा जी
सूंटी सूं निकळणवाळो वो कंवळ किसो है
थूं लांघै इतिहास, मुळकती जुद्ध करावै
जुग-जुग सींचै रगत सूरमा
जद थारै गालां पर थोड़ी लाली आवै

औ साटणिया रूप, रेसमी कमर
देह री सौरम ओळ्यां
कांमण रा सतदळ रै नीचै थूं सोई है
सीस दियां ई पूग सकै बिरळो कोई है

आ फागणियां सांझ, हवा में सीयाळो है
झड़ै पांनड़ा लीला-पीळा, नवा न ऊगै
सगळो खेत कटण वाळो है

टावर रा मूंडा में हांचळ
जांघ उघाड़ी
काळ पराई, वगत बायरी

* * *

लांबी कविता—पछेती खेंप

खुद सूं खुद री बातां

गोरधन सिंघ सेखावत

म्हैं सोचूं
कदै बात कित्ती बदरंग ढंग सूं
लोगां रै सांमै उतरै
इमांनदारी री नीं मोहर
अखबारां रा मूंडा माथै

सगळा पिचकावै मूंडौ
राजनीत रा चटपटा संवाद सूं
भूखां रा गवाळ
खूद रै भजन में मस्त व्हैगा
जगां-जगां खुलगी
रासन री दुकांन
बिलबिलातै पेट री लड़ाई रौ
सैंठौ मंच

ग्रावण ग्राळी पीढ़्यां करैली याद
वां रा पुरखा मूठी-मूठो नाज सारू
तावड़ै में लैण लगा'र वोटां री जै बोलता
ग्रतीत रै कूंची लगाता गट्टै पर बैठ्या
गोडां पर हाथ वरचां कंवत री गांठ्यां सुलभाता
सांतरा पड़ूतरां रा नाटक देखता
जै बोलती बगत दारू-दड़वै री वातां करता

म्हैं कद तांईं हरेक बात नै
ठीक कैवूंला । थारो चावना म्हारै सूं ग्रोलै
म्हारै साथै छळ करै । क्यूं नीं खुलै थारै ग्रंतस
रा किवाड़ म्हारै सामै । म्हारै साथै रैय'र थै
कांईं सीख्यो ?

थारै सुवारथां री पड़ताळ
करता थकां म्हैं ग्राज लग म्हारै ग्रापै सूं बगो
लड़्यो । मन नै समभायो । कीकर ग्रपणायत ग्राभै
री घूंवर ज्यूं वंगी बिखरै । उण दिन थारो
ग्रोछोपण म्हारै सूं डीगो वधतो गयो । ग्रांगळ्यां
विच्चै मीठी-मीठी खाज सरु व्हैगी । डील रै
मांय चिरमिराट री भणभणाट लागी ।

थारै कनै ग्रावती वेळ्यां
हमेस थारै मन नै समभण रो धीरज धारचो
पण म्हारी समभ म्हारी ही

म्हारै मन में बणता ग्रै चितरांम
कठै लग सही व्हैला ? ग्रा पैल्यां कदै सोची नीं
वो रोज सुवांरै ऊठै ग्रंगड़ायोड़ो, ऊठतो ई पूछै
न्यूती ग्रर सूंघै कंठल्यां में वांध्योड़ा
तार्वाजां नै । हरखै हाथ पर खिणायोड़ै
नांव माथै । छाती फूलै नकली टांग्योड़ा बिल्लां सूं
वो बिसरावै सगळां नै ग्रर कूंट कढावै
सगळां री

ठालौ बैठ्यौ दूजां सूं पंज्यौ लड़ावै
पण दोस किणरौ ? अैड़ा है अलेखूं
म्हारै सांमै
जिका नित-नेम री फरीं बांधै
राली सूं जगावै भूखां री गोद में सोयोड़ै
भगवांन री छीयां नै । खंखार री तरियां
उपदेस सूं सगळां नै भांडै
पण खुद नीं गुणै
बस मिंदर में ऊंघै अर कथा सुणै

अैड़ी हालत में लागै
म्हैं कठै फसग्यौ ? म्हैं उतारबौ चावूं
खुद माथै चढ़योड़ी संस्क्रति री गरद नै
पण औ कांई ? अंधारै रै मांय टपटैळा मारता
लोगां रै हाथां में भाला, बरछी अर किरपांण
स्यात अै म्हारा सूं लड़सी
क्यूं के म्हैं तुळछां नै ठोकर
मारणौ नीं चावूं। मिंदर रै सांमै पेसाब करणौ
नीं चावूं । पण अै कीं नीं धारै । आं रै हाथां में
धतूरै अर सत्यानासी रा फूल । बदळाव रौ नारौ
तिजाब ज्यूं उफणै आं रै कंठां में
पण किण री कांई विसवास ?

भरम, संका अर तरक री जेवड़चां सूं म्हारै
कंठां री छुलगी नसां
म्हारै फेंफरै में फेंक दी धोबौ क लटां
अब तौ नीं चावूं अफंड अर ढोंग सूं
लिप्योड़ा चैरां री लमचेड़ू जबांन रा मीठा
सबदां री चाकू सी धार नै ।
खुद नै हेरतौ आं सड़कां घणौ घूम्यौ

कीं देख्यो, कीं सुण्यो । आंख्यां रै पट्टी
अर पगां रै पाटा बांध'र सोयग्या हाकिम
कचेड़्यां मांय कागलै अर चिड़ी रै ब्याव
माथै ताळी पीटै वकील अर अफसर
पंचायत रै दफ्तर में
चिरभर खेलै कुचमादी टींगर
पण कांई ?
बाप बाण्यो अर अर मां गुसांई
दगाबाजां रा चूंटक्यां सूं जुवांन पिरजातंत्र री
चामड़ी में पड़ग्या घाव । सगळी टेम आंख्यां में
उबळती रह्यी अंरीटा लाग्योड़ी चरमराट
कद तांई मिनख लेवैलो गुचळकी
आं अगणसैंधापणां री हदां लारै
खून सूं रंग्योड़ी सभ्यता री डकार साथै
जन गण मन बोलै ऊंचो ऊठ ओ मिनख
खुद नागो बण'र खुद नै तोलै
इतियास री ओळियां हेटै राख'र
कीं बोलै खूंबै पर मेल्योड़ी री मसीन
पण आ मिनख री संकळाई नीं
कुण पिछांणी
भाड़ में भुनतै चणां री भासा
कुण उधार रा सबदां री
ओप में खुद नै लुकायी
घणी जेज
अबै इमांन रा गुलदस्ता कमरै री सोभा सारू
पण फेरूं कांई होसी ?
कीं होसी रै···

आ चोखी के थोड़ी ताळ पछै उण रै पगां रा मंसूबा
पिछांण लिया हाटां रै मांय बैठ्या लोग ।
आग रा गोळा खावाळो मूंडो कूड़ी बातां सूं डर

हेली री झाँकी में चादर ओढ'र लुकग्यी
जीत वीं री जिकौ अड़ै मौका पर
अर लड़ै धमकावण्यां सूं । तिरै पसीना रा
समदर में ।

सांचो है तातै खून री धार सूं
हंसै होठ खेतां रा
पण चापळूसी री नौबत रौ मजौ अलैदा
कूवत छिपै नीं भरया बजार में
कालबेलियौ गळी गळी घूमै
बाळद रै ठांणां में उळझ्योड़ौ मन
जोवै नवा ठांण
कदै डूंगर साथै
कदै धोरां ओलै
म्हारी मनगत रा खूंटां कदै कठै रुपै
कदै उपड़ै
बगत रा वांयटां रौ दरद, कांई रैवैलौ
आखी ऊमर ? कांई बातां रा जवांन पळका
नीं ओळखैला खुद नै । स्यात व्हैली अेक
टेम आंख्यां री वळत नै । मुठयां में दाब्यां
मुठयां रौ सळबळाट पकड़ैलौ कांन
माथै री सळां में
क्रान्ति रा दूहा जलमैला

सोचूं कुण है अेड़ै-छेड़ै
मुक्की बांध्यां । कदै कलैण्डर री तारीख बदळणै
रौ कोड हो. रोज सूरजी साथै
आज नीं रह्यौ वौ उछाव
मंगरां रै मांय दोय मुट्ठी बरफ री ठंड
नित सालरती रैवै । चालता रैवै पड़ूतरां
रा खळा ।

* * *

निबंध

मनवा थारी आदत नै

अन्नाराम सुदामा

•

धरती पर अगळां सूं स्यांणो आदमी ई व्है, आ कान में पड़ी सांमी निकळै, पण घणी ई जाग्यां सगळां सूं घणो उकोळ अर नेतानूक ई वो होवै, इसो के उण जिसो कोई दूजो सोध्यो ई को लाधै नीं—न जिनावर अर न जिंद । बात बुद्धि री को है नीं, बात है आदत री । इसी-इसी रोगली अर गोवती आदतां री अळगींडो, देख्यां-सुण्यां फरफरी छूटै, इसी-इसी मळे वण आपरै देव-दुर्लभ खोळियै में भरलै, जिण सूं उण री आप री मायण जिंदगाणी में तो खैर गोळ ई कांई, केई दफा जे उणरी वेगो सो इलाज नीं व्है, तो आगै-लारै री ई कांई, खासी अळगै तांई री धरती रै सांस में वा अमूजणी पैदा कर दै । कुटेवां रै गादड़ां नीचै किचरीजतै अर डाडतै आदमी रै मिंघ नै देख, कदैई अचंभो व्है अर कदैई उणरी लाचारी माथै दया आवै । घणी दफै उण माथै झाळ ऊठै तो इसी ऊठै, के जांणै उण रै भीभरै री लाड होवै ढुळी सूं, इसो सांचो अर संतोख के उणरै माथै री सगळी पांवली रोळी बारै आय'र उणरो लिलाड़ रंग दै । उथप्योड़ो आदमी छेकड़ कांई करै ? ज्यां नहीं करै तो कुटेवां री कोथळियी कांई ठा कांई करती कांई कर बैठै ? निरदोस चेतणा री कांई ठा कित्तो मोटो उजाड़ वी करदै । उण रै कदै गोळी ई मारणी पड़ै तो पड़ै अर चाये उणनै उमर कैद करणी पड़ै तो पड़ै । चोर-जार, डाकू अर हित्यारा कुटेवां रा घणा ऊंडा दरड़ा में बेमौत मरता-पकड़ीजता देखां अर सुणां । कोई को चावै नी के धरती रो कोई अमोलक बेटो, हिड़कियै कुत्ते आळी दांईं गोळी का फांसी रो सिकार व्है । मिनख जिसो मूंघो जमारो खोटी आदतां रै वसीभूत कोढ़ सूं ई हीणी जूणी जीवै, इण सूं हळकी बात धरती पर और कांई व्है ? नहीं मनै तो आगै वधो और देखो आंख्यां रा डोळा ऊंचा कर-कर—

“वावू, अधपाव डोडा दिरावो आज तो, जै होवै थांरो । जिंदगी रो नाथ कमाई मोकळी दै थांनै, डील पड़ै पांवडो ई को सिरकीजै नीं”—गळै में तुळछी री माळा साव मैली, चनण रो टीको, वुझती आंख्यां अर वां रै खुणां में भेळो होयोड़ो गीद, झरती नास्यां, जरदै सूं पीळा अर चूनै सूं कटता, हालता अधपळ दांत, चीटो सो दगलो, जाग्यां-जाग्यां सूई

सांमी चिलके, अर वैड़ी ई ऊजळी धोतियौ, पगां में दो भांत रा जूता, अेक खुस्योड़ी स्वेटर, दूजौ कपड़ै रौ उण में अंगूठौ निकळयोड़ौ अर आं सगळां सूं ऊपर उणरै संवार वध्योड़ै चैरै सूं छिण-छिण घणी व्हैती अेक गैरी उदासी, रह-रह दम दोरौ लेवतौ अधेड़ सो अेक बामण अेक भलै मिनख नै बोल्यौ—

"वेटी रा बापां, डोडा पीवौ थे अर वैं ई दिन में तीन-तीन दफै, चूलौ अर तपेली ठंडा ई को होवण दौ नीं ? अबार रासन रै इण जुग में आदमी नै दिन में तीन दफै दळियौ ई को पोसावै नी अर थे डोडा, पाव पक्का रोज खांड नीं तौ रस-कढ़िड़ै गुड़ सागै ई, अर उण सागै नहीं नहीं करतां धोवौ नैंड़ी चाय, बळीतौ कित्तौ लागै थे ई जांणौ। अेकांनै थांरौ ओ काढ़ौ अर दूजै कानै अधनागा टावर सी में ठांठरै, भूख काढ़ै गडकां जित्ती, घर आळी बापड़ी चरूड़ी ले'र कियां खुणच-खुणच चून भेळौ करै, वा ई जांणती व्हैसी। थे जणौ-जणौ आगै हाथ पसारौ, लिलड़ी काढ़ौ, छोरी वैठी है दो-तीन घोरियै चढ़ण नै अर थांनै कीं विचार ई को आवै नीं। आगै ई थांनै दो-तीन दफै दिराया दा डोडा म्हैं। राजी व्हो चायै वेराजी, ईयां हूं ई को पोसावूं नीं"—उण भलै आदमी कह्यौ।

"जांणू को मांगूं नीं बाबू, मांगणौ मरणौ सूं वेसी है, पण कंठां में आ फसै जद ? आदत पड़गी, अबै छूटणी किसी हाथ री बात है, ठा है के घणी ई माड़ी है वा, छोड दूं, पण रूं रूं में इसी रची है वा के किसै ई सोढ़ै सूं साफ को होवै नीं। पनरै बरस व्हैगा पीवतां, अबै तौ मोड़ौ-वैगौ डील ई कदैई भलांई छूटौ, आ को छूटै नीं।

"छूट ज्यासी, अेक कांम करौ थे, आदत आगै हाथ जोड़'र वाकौ फाड़-फाड़'र जोर-जोर सूं डाडौ, पेट दूखतै डांगरै आळी दांई के कियां ई छूट जा अे, छोड दै म्हारौ लारौ, गाय हूं थारी, परसाद चढ़ास्यूं थारै।"

"छोड्या ओ बाबू छोड्या, थे तौ ठट्टा करण लागग्या दीसौ, इयां ई कोई छूट्या करै, आ आदत है, आपरै नांव सूं ओळखीजै, गाय गिणै न बामण, राजा गिणै न जोगी, पड़गी उण नै लेय'र जासी। ठाकुर जी करै किणीं नै पड़ै ई नीं कोई खोटी आदत।"

"इयां ई नीं मांनै तौ कूटौ रंडार नै, लड़ौ सांमी छाती उण सूं, किसी अेटमबम्ब चलासी थांरै माथै वा ?"

"लड़िया जी लड़िया, इस सूं लड़्यौ पूरवै आदमी ?"—कैय'र कीं रुकग्यौ, दम दोरौ आवण लागग्यौ, चेतना कीं आसावांन हुई का भळै बोल्यौ—"लौ अबै करौ कीं मैर देखां; डील पड़ै अबै"—रोवण आळौ व्हैगो अर सिर गोडां बिचाळै देय'र सांस दोरौ लेवण लागग्यां। देख्यां दया आवै अर उण पर सौच्यां जी में आवै जांणै इसा कुमाणस तौ मरया ई भला। दिनूगै सिझ्या गोरवौ ई बिगाड़ै, धांन अर धरती रा वैरी है अै।

"बाबू भौत गई थोड़ी रही, च्यार-छ म्हीनां धिक्या नीं धिक्या सही"—कह'र

भळै वो उण आदमी रै जीवणै हाथ कांनी देखण लागग्यो के कद वो जेब में जावै अर कीं लेय'र बारै आवै।

"पण अेक बात तो बतावो गुरु, आदत थांनै पैदा किया का थे आदत नै।—आदमी भळै पूछ्यो।

"करी तो म्हैं ई बाबू।"

"तो आप कमाया करमड़ा किण नै दीजै दोस। तो मनास्यो के नडग्यो किणी नाळै जी सूं, जड़ तो थे आप ई वळो। लड़णो थांनै थांरै सागै ई है, लड़ो क्यूं नीं, किसा सस्तर-पाती सांभणा है थांनै ?"

"सांभणा तो कीं नीं बाबू, पण बळ बिना बुद्धि बापड़ी है, थांनै कह दियो नीं के आं हालां ढील भलांई छूटो, आ को छूटै नीं।"—अर भळै बो सागी डाळै पर आय बैठो, अबै कोई जाण्यां छुडावै तो कियां छुडावै ? आ तो इयां हुई, जियां कोई आदमी आपरै मिणियै नै आप रै हाथ सूं आपै ई दूंपो देय'र आरड़ै, अरै म्हनै छुडावो रे। इसै समझदार नै बोलो, कोई कियां छुडावै ? अबार छुडावो, अधपड़ो नै यो तो भळै गळै ई हाथ दीयां ई आरड़तो। छोडै तो आप ई जद पार पड़ै। इसै नै निपियो देणो मोसो, समझांणो दोरो।

सोचो, अबै डोडा, चाय अर गुड़ रो काढ़ो पीणो दिन में तीन-तीन दफै अर गाफिलता आ के घर में नहीं अखत री बांज, बेटो गेलै आग्यातीज। घर में मरता कंदरा गळी करै, पण उपाव कांई आदत पड़गी ऊंधी। आ किमीक न आप सोचै अर न दूजै री सुणै। आं नै आरसी पकड़ांणी ई फानतू है। हथियार ई न्हांख दिया उण तो अर कुटेव नै इसा सस्ता सिकार ई चाहीजै—पड़तल अर पाको बोरटो नीचै भूंग मरण आळा। आतमबल नांवी बोरटी ई तो है—ऊनरै बोरियां सूं लड़ालूम, उण सूं बडाग रै दुना रो कांई ठिकाणो, तो ई खूबी देखो इसी मरी मास्यां री, आप तो इयां खोटा भुगतै अर लोगां खातर अरदास पोथां में सिफारिस करै ठाकुर जी नै—'लिछमी रो नाथ कमाई मोकळो दे,' इयां रो कैयो मन्नो री गडकड़ी ई को करै नीं, तो ठाकुर जी क्यों करसी अर करसी तो ई इसै कुटेवी अर कुमारगसां नै डोडा अर भांग दिरावण री सीध तो वां की हालत में ई को करै नीं। जिको आपरो ढील ई कां सांभै नीं, ठाकुर जी उण नै देवाळ ई कांई है ? God helps those who help themselves. हिम्मत मरदां, मदद खुदा। जिकां रै आतमबल पर कुटेव रो घोरो फिरग्यो, बै ऊंचा कीकर ऊठै। मजो देखो थे के इसै पुरसारथ रै भाग्यां नै ई कोई देखण आवै अर आपरी छोरी सूंप'र जावै, न जीवता अर न मरया, अै ई भळै दायजो मांगै। सांमी गोर नै भाठो मारै, वां रै पल्लै अै भागी पड़ै, ताती अर राती क्यां नै देखलै आं इसां रै राज में कोई बापड़ी।

आ तो हुई अेक अणपढ़ री बात समझो। बापड़ै नै ग्यांन कम हो, संग रो रंग लागग्यो कठै ई। भिलग्यो आदत रै सिकंजे में। अबै न घर कैयो करै अर नीं निकळणो ताबै

आवै । हिप्पयां नै देखो. मा-बाप, घरबार, पढ़ाई-लिखाई, सुख-संपत. अर प्यारी जलमभोम नै पूठ देय'र आदत रा गुलाम होयोड़ा गांजै अर सुलफै रै धुवें लारै भुंवीजता फिरै । बनती धरती छोड'र सून में (सुन्न समाधि) विचरणी चावै अर फिरै खख खावता सड़कां पर। आदत झाली है गांजै-सुलफै री ऊंधी । आकड़ो उगा'र आंखी. सावळ चूंस्या, होठ जरू राख्या, ढीला छोड दिया तो टोपा धूड़ में पड़ैला । माधू मोडां तांई पूगै तो कीं नीं सुहागण लागी दुहागण रै पांय, म्हैं जिसी करै मोरी मांय,' मोडा तो इत्तै नै ई उडीकै के कोई फसं भुंवाळी खावतो । नागी कांई धोवै अर कांई निचोवै । किसो दफ्तर री कांम है आं कनै अर किसी फाईलां निवटाणी है आं नै । जट अर राख चींपियो अर चिलम, जोखम आ है, कुण काकोजी हाथ घालै अठी नैं । सिद्धि आ है के सुल्फो तोळो ह'वै चावै पांच तोळा, अेक ई सरड़कै में कांकरी काढ़ देसी चिलम री । आ सिद्धि कम है, पांच तोळा में ऊठ रा पग ऊंचा'र व्है जावै । सुल्फो होवो चावै सखियो अै थोड़ा ई पीवै आदत पीवै अर आदत आं पाळ राखी है, अवै गेवी जणीतां के आं रो सागो झालै वां नै ।

'आ अे बांडी आगै घालां, ओ पूछ आरै में ई गमायो ।' आं कुमाणसां तो आपरी ऊमर आदत पक्की करण में ई काढ़ दी । वास्तै में पकायोड़ी आदत री ईंट वां रै माथै में दियां ई वो फूटै नीं । पण आं सुलखणै संतां रीं चिंता ई किण नै है, बासती में बळो चायै उजाड़ में, मोटी चिन्ता तो आ है के आं हिप्पियां री आदत इण धरती री स्कूलां-कालेजां तांई लांठी होय'र वां में पळतै उजास नै आंधो करण लागगी । छोरां में ई नी. छोरयां रै गळै मे ई हाथ घालण लागगी । बाई बावा होय बैठी तो फेर मौज किया । बमग्या घर, खेल लिया टाबर अर चाल लियो राज 'बम-बम' धुंवें रा गोठ उठसो, खुडको ई को व्है नीं अर मैदांन साफ, नसबदी रो फोड़ो ई मत देख्या सरकार। जद आदमी रो इजण गांजै सूं चालसी, तो गिरस्त री गाड़ी रा चक्का जांम है फेर । आदत री इसी ईंटां पर जठै महल चिणीज सी, बां में आगै जाय'र कबूतर बोलसी । जिमी आदत, वौपार बिसो ई । मणां बद गांजो आयै दिन चोरी-दावै अठी सूं उठी होवै । किरोडूं रिपियां री तस्करी ठेट अमरीका तांई । कूटीजो, पकड़ीजो, चावै कीं व्हो, आदत पड़गी, कियां छूटै । अेक कुटेव नै रोकण खातर कित्ता पुलिस रा जवांन, कित्ता आयकर इधकारी, कित्ता जकात पर लाग्योड़ा जवांन देस रो खरचो खावै । रात-दिन अठी-उठी आंख्यां फाड़ै । देस री प्रतिभा खपणी चाहिजै कठै ई अर खपै कठै ई ।

हिप्पियां रै मां-बापां नै पूछो के इण खातर ई जलम्या है आं राजकंवरां नै—वै धुंवें खातर टींवता फिरै । कनै कैमरा है फोटू खेंचै दुनिया रा, आपो ई संभाळचो होसी कदै ई, के किसीक है फोटू घर आळो । इसां री मावां टाबर थोड़ा ई जाम्या है—कुटेव अर कुव्यसनां री कोथळचां जांमी है—काढ़-काढ़ बारै फेंक दी दुनिया नै सोरी कोनी सोवण देणी वांनै । इण सूं आछो हो कोई रबड़ री बबुवो गोदी में राख'र रळी काढ़ती रमा'र बेटै नै, को मूत धोणो पड़तो अर न पूंछणी पड़ती टट्टी ।

जुवै री आदत पड़गी । गैणो-गांठो गमायो । घर गयो । इज्जत तो खैर ही ई कठै । पालणै में पग दिया उण दिन ई बिदा व्हैगी वा तो । लुगाई री तीब रै तो तूळी लागगी, डील

पर पूरा पूर ई को छोड़ै नीं। कांई करै वापड़ी, भरतार ई इसो पल्लै पड़गो न छोटगां में तावै आवै अर न सागै ई निभाव होवै। इण सूं तो तास री वेगम ई आछी, पण इसी लुगाई री वात करणी फालतू सी है : लुगाई इसी चाहीजै, जिकी इसै मोकै अेक ई वात राखै के—"मुणो हो नी, गैरा जी फूल गुलाव रा, का तो आ आदत रैसी थारै सागै अर का म्हैं। म्हनै राखी चावो तो आदत छोड़ दो, आदत राखी चावो तो म्हैं जाऊं।"

"को छूटै नीं आदत तो।"

"तो वा अर थे दोन्यूं जावो वाळ्योड़ै तिलां में म्हारै कांनी मूंडो कियो तो थे थांरी जांणो।" इसी आदत रै गुलामां री आ ई दसा व्हैणी चाहीजै पण असली मा री वेट्यां इसी लुगायां वैगी सी कठै ?

ठा है चोखी तरै सूं—दारू पियोड़ो है। रूप री दीदारू पळ्योड़ो कम नीं, अेम. अे, वो ई भळै इकोनोमिक्स में, अेक रेलवाई दफतर में वावू नांव घणो ई आछो अमरसिंघ। ईयां तो हर आदमी अमरसिंघ ई व्है, पण हीयां कांई व्है ? नाळी कनै ई पड़यो, वेहोस है। कुतियो वो ई भाग सूं पांवलो, कुत्ता खायग्या उण नै केई जाग्या सूं, कान भरै, मिनकतो पड़यो है कादै में, ऊळ्यो कोई वीठ में मूंडो देवण नै—आंनड़ा तो मांगै ई। रस्तै में किणी उल्टी कर दी दीसै। कीं जमीं चूसगी अर कीं उण चाटलो। कनै ई अमरसिंघजी पड्या है आपो विसरयोड़ा। सिरांणै कनै दो-च्यार अेंठा कागद पड़्या है—टींगरां रा चाट्योड़ा। कुतियै री नुगता उठी नै गई परी। पैलां उण कागदां रै चरकास नै चाट्यो फेर होळै होळै अमरसिंघजी री मूंडो अर फेर कुण जांणै रीसां वळतो के राजी-खुसी टांग ऊंची कर, वां रै मूंडै माथै धार दी। की टांग मूंडै में कीं वारै। धार ताती लागी जद थोड़ी आंख्या खुली के वोल्या अमरसिंघजी—"भच्चो...हराम, ऊठण दो सा.. साळै री टांगां.. टांगां नीं तोड़ न्हांखूं तो, अर फेर आंख्यां मीचलो। फेर कुण जांणै उण पांवळियै रै देखादेख कित्ता गिडकिया आया होसी अर छांटो घान-घान वां रै मूंडै नै आलो अर ऊजळो करग्या होसी। इसै मदकमाऊ वादस्यावां नै कुण जगावै, किण नै दोगाई भच्चो है मुलक काठो आं सूं। अवार लारलै वरस इंदोर में सो सूं घणा अमरसिंघजी जैरीलो दारू पी-पीय'र पूरा होगा। ईयां ई तमिलनाड कांनी अेक नीं पचासूं अेकै सागै दारू री जाग्या वारनीस पीय'र। कांई वाप री नांव निकळै हो, पण आदत रै हाथां मे गळो दे दियो ले वैठो वा। कित्ता ई अवोध टावर विलखै अर कित्ता ई जीवण-धन उडोकती जवांन आंख्या ढुळ-ढुळ वुक्कै अर घर ऊजड़ै। पापण आदत रै फन्दै मे पड़्या रो घोर कांई व्है ? चीन अर पाकिस्तान री लड़ाई में ई घड़ी दो-घड़ी में इत्ता आदमी को मरया नी। वै किसा आदत रा विगाड़्योड़ा थोड़ा ई हा, अेक नै ई हाथ घाल्यां तांण आवै। जे अै मेकडू आदमी देस खातर कठै ई वळिदान होवता तो इतिहास मे नुंवा अध्याय किसा को जुड़ता नीं। पण इतिहास री चिंता आदत रा गुलांम कांई समझै ?

घरै टावर उघाड़ा है, चूल्हो कदैई चेतो करै अर कदैई वासनी नै उडीक ई वो करै। छोरां नै पूंगी उल्टी, लोरैठांण दस्त, दवाई कठै, लुगाई लूं कारियै में वेठी आटै नै उडीकै पण वादस्या किण रा आटा ढोवै अर किण रै गाभै-गूदड़ै री चिंता करै, सूता है अेठ सूं ऊपजी

नाळी किनारै । आ नाळी बधती वधती कदैई गंगा तांई पूगगी तो 'सुरसरि नाम पग्यौ'। बादस्या नै कदैई नींद आयगी लांबी तो मोक्ष खातर पांवडो ई फोडो को पड़ नीं बिना मैंनत ई जोत में जोत । प्रभु रै इसै लाडलां खातर, घर आळा रोवा-कूका करै तो वां री मरजी है, वाह आदत, नरनारायण री देह री कांई दुग्गत करै तूं । 'औगुण अपार गुण अेक नीं दारू में' कवणियो तो बापडो कह ई सकै और कांई डांग मारै किणीं रै ?

गांधी री भोम गुजरात होवो, चायै परमहंस री बंगाल, अजोध्या-मथुरा होवो चायै कासी-केदार, आदत रा आंधा जद इत्ता सस्ता अर माख्यां री मौत मरै तो कीं विचार आवै । यौरप अर अमरीका मे मरै तो कोई खास बात नीं, वां री जलमघूंटी ई दारू है, पण इंडिया किण सूं कम, उण नै ई तो अेडवांस्ड होवणो है। होवो-होवो, करो नफो ।

नुंदो-नकोर कमीज है टैरालीण री, विसो ई कोट । चिलम भरी का डिब्बै री भीड़ में बीड़ी सिळगाई , नीं नीं करतां अेकाधी वार नींद री झौंकडी आयगी, चूंचकी लागगी बांव रै पेंसल मावो जितो कोचरो निकळग्यो, चामडी कनै कीं गरमास लाग्यो जद अचांणचकी ई जीभ उथळी जी 'अरे ओ वांई होयो ?' डोवा थोजूं खुल्या को दीसै नीं । कपड़ां री होळी होयां बिनां चेतो थोडो ई होवै, आदत रै इसै डफोळां नै । इंयां बाळदेसी बाप रो नांव काढण नै, पण किणीं गरीब नै लीरी को परखावै नीं ।

अधघडी पछै ई भळै चिलम भरी दो-च्यार भायलां, कच्ची नीं पक्की । हाथ में लेवतां ई आवाज करी 'चिलम चट्टा, पियै मरद पट्टा ।' मरदां री मूंडो तो देखो । नीं पियै वै तो आं री निजर में हींजडा ई समझो, समझ है सा । भाई जी थोड़ो बासतै है तो देवो नीं, पूछो उण नै, थनै धूप खणी है ठाकुरजी रै, के फलका सेकणा है, बता तो सरी क्यां खातर चाहीजै बासतै ? 'थोड़ी तुळचां री पेटी है कांई ?'—'हां है, ई पण थारी बीडी सिळगावण सारू थ‌ोड़ी ई खरीदी ?' अर फेर मूंढो नारेळी सो कर आगी नै, भळै कीं कनै सूं बीयां ई मांगणो, अर ऊपर सूं 'पियै मरद पट्टा', आ और । डौळियो इसो ई होवै मरद पट्टां रो ? वेमाता बावळी ई समझो ममालो खराब कियो, पळोथण अर पसीनो घर रा लगाया अर जस मिल्यो ओ, मरद अै पैदा व्हिया । आदत पडगी, दस पइसां री ठीकरी को छूटै नीं ये तमाखू मूंडै में नीं, तो नास्यां में ई सई । इयां करतां-करतां बुढ़ापै में तार ढीला पडयां की कानां मे अर कीं धरतै । नीं देसी जद कूकसी बाकी फाड फाड़'र, लोग कैमी देखो बापड़ै री बुढ़ापै में चाकरी को होवै नीं । आदत नै कांन झिलायोड़ा इस्या भागी, घर आळां नै कुजस दिरावण नै ई घड़ीज्योड़ा है । आं बैठां जस पाड़ौस में ई को ठैरै नी ।

बिस्तरबंद का थेलै में धोती-कुड़तो घालणा भूळ सकै, गीता रामायण अर कुरांन बाइबल री पोथियो बिसरग्यो उंतावळ मे तो बिसरग्यो पण चिलम अर तमाखू री डब्बी नै टुरण सूं पैलां च्यार दफै संभाळ सी - आदत है । बैठमी जठै बातां ग्यांन री इसी झमकसी जांणै ठाकुर जी सूं अै अबार ई मिल'र आया है अर सऊर ओ है के नास्यां में ई तमाखू अर वाकै में ई तमाखू ।

सिगरेट पर लिख्योड़ो है—Injurious to health सरीर नै नुकसांण करै,

लिख ई सकै आगलो कोई पैकट में इसो कागदी बम तो घालण सूं रह्यो के डब्बो खोलतां ई धमीड़ उपड़ै। कांई डाग्दर, कांई वकील, कांई विद्यार्थी अर कांई प्रोफेसर, बांचै सै ई, पण बोबो सिगरेट रो ई लेसी, दूध नीं तो धुंवों ई सई पढ्योड़ो अणपढ़ सूं ई माड़ो—आदत कर दियो। जरदो अर चूनो खावण री चीज है, न सावळ खाईजै अर न पूरो चिगळीजै, रह-रह थूंकबो करसी पचर-पचर बिगाड़ दी जाग्या अर जिनस। आदत री भाठो आरै ई ले लियो सिर पर, ढोबो अबै, कुण उतरावै। चूनो ईंट चेजण रै कांम आवै, का कोई पाटा पोळी करण रै, ठोकण लागग्या, घर चिणाणो चावै बो कूको भलांई सस्तो ई को होवण दै नीं।

छोरी है बरस बारै-तेरै री। पढै है चौथी-पांचवीं में। गोरी अर फूटरी, पण चामड़ी पीलरी पड़'र हाडां रै चिपगी। आंख्यां में सांम, निव्बर बध्योड़ी, पेट तूमड़ी सो ऊंचो आयोड़ो अर ऊपर मूंगी नाड़ां चिळकै, आंख्यां धोळी खून रो वासतो ई नीं होठ राखिया अर बां पर पापड़ी कोडी जम्योड़ा दांत, न सावळ जियै ही अर न झट देसी मरै ई, आदत पड़गी माटी खावण री, ऊजळी-मैली रो कोई कारण नीं, हाथ आणी चाहीजै भागण रै।

मा-बाप ढाण फिरै सगाई खातर। अबै बतावो इण चीनणा मा नै गुणती-गुणती किसो भरतार हाथ घालै। इयां करतां ई किणी भागी रै गळै बधगी तो कुंवारपणो तो गैर ऊतरग्यो ई समझो, पण परोटण री रळी तो अगलै में, इण जमारै में मायत ई मावै। चंवरी में तो ठा ई कांई पड़ै कूरणो तो घरै जाय'र पड़ै। भरतार होयो कोई भूंडो तो दायजो लेसी राख अर मैंदी सांवळी पड़्यां मूं पैला ई इण जोखम नै घर मूं विदा कर देसी। मोरै सांस नीं गई कांई तो किरासणी तो फेर दांवै ई है, पछै निदा होयां भलां ई मुकदमैबाजी, दुख ई दुख है, पण कुटेव को छोडै नीं लोग।

सो, आदतां री लेखो कठै तांई लेवां, मिनख में भांत-भांत री नूगली सूं नूगली आदतां। चोरी-जारी, कूड़-कपट, ईसको, रीस, चुगली, चापळूसी, मिनख री आदतां में नांई कांई नी? बात-बात मे गाळ गाळ पैली अर बात पछै, भलांई बैन बैठी व्हो, भलांई बेटो अर भलां ई मां, आदत पड़गी लालै री। घरै लुगाई घणी ई फूटरी पण बारै धूड़ खाणी करियां बिनां सरै नीं। कांई व्है घरां मोट्यारां जैड़ो मोटयार पण मेळां-मेळां पराये मिनखां रा चूंटियां री चसको पड़गो, सवाद ई न्यारो, लाग्यां छूटै नीं। किणी कनपटीमार चाचै नै पूछ्यो—'क्यों संतां थांई हाथ आवै थांनै इयां आदमी मारयां?'

'अेक-दो आदमी जद ताईं नीं मारू, म्हनै सावळ नींद ई को आवै नीं, अर न म्हारै जीव में सोराई वापरै।' अबै बोलो इसै भागी रो कांई करै? नमवदो रा कैम्पां री रागचां अर फौड़ो दोनूं ई जैमाताजी री। इण तपसी नै किणी भागण नो जायो ई होसी, थाळी ई बजाई होसी किणीं तो। सन्धा मारू की बधाई ई बांटीजी व्हैला। किणी बामण देवता नांव ई कढ्यो होसी। थोक तो सै ई होया होसी, सेवट वेटै री माटी है नी, कनपटीमार नांव तो खासो मोड़ो पड़्यो, मिनख मारणी आदत पड़ियां पछै।

डाग्दर होवो चायै रोगी, आदत रै लेखै दोनूं सारीसा। नखां में किसो सैत व्है के नख काट्यां किसी दांतां री कसरत व्है, पण आदत। इयां ई बात-बात में आंख टिमकारै केई,

जूता लागां ई छूटै नीं, आदत रैगी। आवळ-कावळ ठौड़ां मिनखां बैठां खाज, कोई अपूठौ व्है तौ आगलौ ई व्हौ, उण तौ सरम बेच खाई। केयां में आपरी बडाई ठोकण री आदत अणूती, न दूजै री सुणै अर न आपरी बंद करै। खुद अन्नपूरणा आपरै हाथां बत्तीस भोजन अर तेतीस तरकारी त्यार कर'र पुरस दै तौ ई खोड़ीला तौ मांनै कोनी, खोड़ काढ्यां ई लारौ छोडै।

आदत रौ सरूप जितौ ई महीन होसी वौ उत्तौ ई छूटणौ दोरौ। खांणै-पीणै अर सिनेमा देखण री आदत सूं वांणी पर कावू करणौ दोरौ अर वांणी सूं ई चोरी, चुगली, कूड, क्रोध अर घमंड सागै उळझी आदतां छोडणी और ई दोरी। बूढ़ापै में हिल-थक'र काया जद आपरौ खोटवौ ई सावळ को काढ़ सकै नीं, वीं वेळा जुगां सूं पाळी कुटेवां सागै जूझणौ तावै ई को आवै नीं। 'कात्यौ नहीं दिन कातण आळै अब कांई कातै गयै सियाळै ?' जवांनी में तौ भळै ई की बात है—

जोबन तणा जतन घणा, काया पड़ी बुढ़ाण।
सूखी लकड़ी लालदास, कीकर निकळै कांण॥

नवा दिनां जे कोई छोडै कुटेव तौ छोडतां टेम ई कम लागै अर सोरी इसी छूटै जीयां सनलाइट सूं गाभै रौ मैल। कुटेवां रौ गुलांम कोई मरती वेळा जे वां में ई लीण जीव छोडै तौ वां साग्यै ई कुटेवां रा सैंस्कार ले'र कठैई नवौ खोळियौ धारै। फेर वां जलमजात खोड़ीलै सैंस्कारां सूं लारौ छुडावणौ और ई दोरौ।

सगळां सूं मोटी बात आ है के खोटी आदत छोडणी चावै वीं आदमी नै आतमबळ रौ लूंठो संकळप साधणौ पड़ै। शरीरं पातयामि वा कार्यं साधयामि। इण ढग रौ बळ जगायां बिना पांवडौ ई आगी नै को वधीजै नीं। मन में जे राई जिती कमजोरी ई वापरगी तौ समझलौ आदत ऊपर चढ़गी। छोडण रौ निरणै लेवौ, सावळ सोच-समझ'र अेकर नी सौ बार, पण लिया पछै आंगल ई सिरकै वै और। नैपोलियन आळै दांई फेर रस्तै में चायै आलप्स आवै अर चायै पिरैनीज, झुकसी वै ई। इण खातर ई तौ गायौ है किणीं—

मनुवा थारी आदत नै, पळटैला हरिजन कोई सूर।
कांई पळटैला चोर, जुवारी, माया रा मजूर॥

पळटसी किरकौ राखणियौं ई। Certainly great is he who changes the habits by thought and life.

'नीम न मीठी होय, सींचौ गुड़ घीव सूं' हैं सा आदत पड़गी, आ तौ मरयां ई छूटसी; वां री माख्यां को उडै नीं, खावण दो वां नै इण भाग रा ई है वै। दुख इत्तौ ई है के वै देस रौ दळियौ विगाड़ै। Coward's die before death. कुटेव छोडण री दवाई खुद आप कनै ई, खाली विसवास होणौ चाहीजै। आदत नै लूंठी अर आप नै कमजोर मान्यां आदत को छूटै नीं। 'हूं सरव सगतीवांन हूं।' वौ कुत्ता लिकणौ आदतां रौ दास, आ कियां ? 'हूं पूरण कांम हूं।' तौ कुवासनां री अकूरडी पर ऊभूं—सफा गळत, औ सोच'र निस्चै करै वौ पावै। कूड़ी सांग रचै वौ कादै में तर-तर और ऊंडौ। आदतां सागै सूनी लड़ाई मत लड़ौ। सगती को वधै नीं, घट ई सी, वां नै मोड़ौ नवै रस्तै कांनी, फेर देखौ मजौ, पण मोड़ वौ ई सकै जिकौ सूरवीर व्है संकळप रौ।

* * *

बात

अरे ! इत्तौ दुख

सांवर दइया

—लाल जी मरग्या !

आ सुणतां ई वां सैंगां रो जीव आकळ-बाकळ व्हैग्यो । अेकर तो वां रै मांनणी में ई कोनी आई । आज दिनूगै ई तो वां रो भाई छुट्टी वधावण खातर अरजी देयग्यो हो । पण संजोग री बात, अवार खवर लावणियो पण वो ई ।

लाल जी लारलै केई वरसां सूं मांदा चालै हा । सरू में तो वस इत्तो ई हो के वगत-वेवगत माथो दूखण लाग जाया करतो हो । उण वगत-वेवगत रै दरद री परवाह वां कदैई कोनी करी । पण ओ सिलसिलो जद केई म्हीनां तांई चालतो रह्यो तो सेवट वां नै हार'र पी. वी. एम. अस्पताळ जाय'र डाग्दर नै दिखावणो ई पड़्यो । डाग्दर कह्यो के 'ब्रेन ट्यूमर' है । वां नै अस्पताळ में भरती होवण री सलाह दीवी । पण आ बात वां रै घरआळां रै जची कोनी । अस्पताळ अर कचेड़ी सूं रांम बचावै । वै खुद आ ई मानता । डाग्दर रै कह्यै रो कीं असर नीं व्हियो । भरती होवण री बात टाळ दी । पण अवै दो तीन म्हीना जातां नीं जातां तकलीफ घणी वधगी । अवै दावै जणां ई दरद होवण लागतो । दरद केई दफै तो इत्तो व्हैतो के वै वोवाड़ा सा करण लागता । या पछै कणाई-कणाई माथो पकड़'र सूना सा व्हैय'र मांचै माथै पड़ जावता । इणीं विचाळै वै झाड़ा-जंतर करवाय'र हारग्या । टूणै-टोटकां सूं रत्ती भर ई फायदो कोनी व्हियो ।

लाल जी नै अस्पताळ में भरती होवणो पड़्यो । जांच-पड़ताळ पछै इलाज सरू व्हियो । वै अढ़ाई-तीन म्हीनां तांई भरती रह्या । इणीं विच्चै वां नै खुद नै कीं फायदो लखायो । रोग कटतो देख'र डाग्दरां नै खुसी ही, पण अजै तांई 'टयूमर' जड़ांमूळ सूं कटी कोनी । डाग्दर सलाह दीवी के वां नै दिल्ली जाय'र अप्रेसन करवांणो पड़सी । विना अप्रेसन बचण री गुंजाइस दर ई कोनी ।

लाल जी रै घर आळां सामै बेजां अन्नखाई आयगी। अबै करै तो कांई करै? दिल्ली जावण री सरदा कोनी अर इलाज नीं करवायां सांसां री ठिकांणो कोनी। किणी बगत सांस री पखेरू देही रै पिंजरा मांय सूं उड़ सकै—फुर्रर! अर आ होणी-अणहोणी व्हियां घर उजड़ै। टाबर-टींगर रुळै। रांमजी री दया सूं घर भरचौ-पूरौ। तीन छोरचां चार छोरा। अेक छोरी परणायोड़ी, दो क्वांरी परणावण साणै। बडोड़ौ छोरौ परण्योड़ौ, घर सूं बेटी सासरै गई तौ बेटै री बहू घरां आयगी। बावौ मरचौ अर गीगली जाई, रह्या तीन रा तीन। छोरौ कांम रै नांवै सड़कां माथै जूतां रा तळा घसतौ फिरतौ। बाकी तीनूं छोरा हाल तांई पढ़ै हा।

डाग्दरां लाल जी नै अस्पताळ सूं छुट्टी देय दी। वां री राय मुजब दिल्ली जावणौ जरूरी हौ, पण घर री हालत देखतां आ पार पड़ती निगै आई कोनी। सेवट घर में ईं मांचौ झाल लियौ। अबै साथै कांम करणियां लोगां कनै अै समचार आवण लाग्या कै लाल जी नै चेतौ कीं कमती ई रैवै। के चेतौ आवै तौ वीं न वीं वड़बड़ावता रैवै। के वांरौ खाणौ-पीणौ दिनौदिन कमती व्हियां जावै। के वांनै खायौ पीयौ जरै ई कोनी। के अठै डील में सून सी वापरण लागी है। के घर आळा चमचौ सूं दूध-दळियौ देवै। फेर दिनौदिन हालत बिगड़ण रा समचार मिळता रह्या। साथी-वेली ऊठतां-बैठतां केई दफै वां बाबत बात कर लिया करता। सैंग इणी कोसिस में रैवता के दफ्तर संबंधी वां री कोई कांम नहीं अटकै। भाग-दौड़ कर'र वां रौ कांम पैली कराय देवता। पण अठै नीं तौ दौड़णौ रह्यौ अर नीं इण री जरूरत। स्सौ खेल ई खतम व्हैग्यौ। अवार-अवार वां रौ भाई कैयग्यौ—लालजी चालता रह्या।

०

सैंग जणां स्टाफ रूम में पूग्या। इंचार्ज साब नै ई इण बात री खबर मिळगी।

—अठै कांई करचौ जावै, हैड माड़ साब तौ हाल आया कोनीं?

—अै हैड मास्टर री बच्चौ कदेई वगतसर आवै वळै कोनी।

—क्यों आवै, लारै खूंटी है—रसूल घोचौ करण लाग्यौ—थां-म्हां दाईं चोदू-मोदू थोड़ी है।

—कानून-कायदा सगळां खातर बरोबर...! इंचार्ज सांमै देख'र सूरजमल कह्यौ। बात आगै गाळचां री गळी में बड़ै, इण सूं पैली ई चपड़ासी नत्थू आय'र खबर दीवी—हैड माड़ साव आयग्या।

—ख्याल करचा।—मोहन बोल्यौ।

—आवौ आपां ई दरसण करलां—आ कैय'र नरेन्द्र स्टाफ रूम सूं वारै आयग्यौ। बाकी लोग ई सागै।

हैडमास्टर नै ई लाल जी रै रामसरणै होवण रा समचार मिळग्या । सैंगां रै भेळा व्हैतां ई कह्यी—छोरां नै मैदांन में भेळा कर'र सोग-सभा कर'र वांनै तो छोड दो, पछै आपां नारै चालसां ।

सोग-सभा कर'र छोरां नै छोडयां पछै मास्टर लोग बाग में जाय'र ऊभग्या ।

— नारायण जी ! हैडमास्टर हेलो पाड्यो । नारायण वां कानी जावण लाग्यो इत्ती में वै खुद ई बाग कांनी आयग्या । पूछ्यो—दाग कित्तीक वजी तांई व्हैला...?

—बारह-अेक तो वज ई जासी....

—वां रै भाई सूं पूछ्यो कांई ?

—अंदाज सूं ई कैवूं । आं कांमां में सगा-परसंगी भेळा व्है इत्ती कीं देर तो लागै ई । फेर सामांन-सूमून न्यारो लावणो व्है ।

—किणी नै भेज'र मालम करवावां कांई ?

—जीयां ठीक समझो ।

—हां, देख'र आवूं ?

—और कुण जांणै ?

—नत्थू नै भेज दो ।

हैडमास्टर कमरै मांय गयो । पछै घंटी वाजी । नत्थू मांय गयो । बारै आयो । साइ-कल लेय'र रवांना व्हैतो दीस्यो ।

नारायण बाग कांनी आयो तो गणेस पूछ्यो—कांई कैवै हो फद्दूमल ?

—नारै चालण री बात करै हो ।

—इण तुरकड़ै री उठै कांई कांम ! भगवांन आपरी जनेऊ संभाळतां कह्यो ।

—म्हारै तो आपरै कम जचै । गिरधारी री अवाज ।

—कट्टा-फट्टा रसै ई नारै चालसी कांई ? मोहन कैवण लाग्यो—वामणां रै नारै में आं वकरा खावणियां री कांई जरूत ? अर इणीं विचाळै उणनै हाजत व्हैगी । कांन रै जनेऊ री आंटो देय'र पाखांनै कांनी गयो परो ।

—पण म्हैं कैवूं हरज कांई है ? कैलास बोल्यो—आपां सागै कांम करणियो भाई नरचो है, अै वातां साव ओछी लागै ।

—और नहीं तो कांई, आदमी-आदमी सब बराबर। कट्टा या बामण री कांई बात ?

—आपोआप रा संस्कार—कैय'र नारायण बात बदळण री कोसिस करी। वो जाणतो के जे बहस छिड़गी तो पछै गई घंटा भर री। फालतू री खपत। कांई आंणो न जांणो। आखिर में व्है—तूं-तूं म्हैं-म्हैं।

—चाय पी'र आवां, आवो नारायण जी।

—हां ऽऽऽ। वै ट्रग्या।

साढ़ी दस पूणी इग्यारा व्हैगी।

सैंग आपो आप री साइकिलां संभाळण लाग्या। केई जणां आपरी साइकिल लेय'र बारै फुटपाथ कनै ऊभग्या। च्यार-पांच जणां हैडमास्टर रै कमरै मांय हा। वै वांनै उडीकण लाग्या।

—गाडी में हवा कम दीखै।—सम्पत आपरी साइकिल री लारली टायर अंगूठै सूं दबाय'र देखतां कह्यो।

—हवा तो म्हनै ई भरणी है, दिनूगै आयो जणां ई कम वळती ही।—कैय'र सोहन वींरै सागै सांमली दुकांन कांनी ट्रग्यो।

—सब नै चालणो जरूरी है कांई ?—किसन पूछ'र आपरी गुद्दी कुचरण लाग्यो। वीं रै सांमै ऊभा मास्टर वारी-वारी सूं वीं नै देखण लाग्या।

—गोरमेंट रो इसो कोई नियम कोनी के जावणो जरूरी व्है—नारायण थप्पड़ मारू उथळो दियो।

घड़ी खांड सारू उठै मून रा तीखा खीला खिण्डग्या। कोई सांमली भींत माथै चेप्योड़ा फिल्मी पोस्टर देखण लाग्यो तो कोई आभै कांनी। अेक-दो जणां उबासी खायी अर अेक जणो खंखार'र थूक्यो।

गिरधारी अर गणेस उठै सूं खिसक'र अेकांनी गया। गिरधारी पूछ्यो फिलम किसी लागी है ?

गणेस फिलम रो नांव बतायो। नांव सुणतां ई गिरधारी नै जांणै खजांनो लाध्यो। होळै सीक पूछ्यो—चालसी ?

—आज ?—वीं री आंख्यां कीं चवड़ी व्ही।

—और नीं तो कांई आगलै जलम में।—रीसां बळ'र थूकतां कह्यो।

—जावक ई भूंडा लागसां, कीं तो सोच ?

—आपां कुण सा ढोल बजा'र जावां हां, चुपचाप रस्तै मांय सूं खिसक जासां ।

—ठीक है—उण होळै-सीक हां भरी । दोनूं पाछा आय'र सेंगां में रळग्या-मिळग्या ।

नत्थू चाय लेवण नै जावतो दीस्यो । नारायण हेलो पाड्यो—अरे नत्थू ! वै लोग मांय सूं निकळसी के नीं ? कांई करण लागग्या ?

—जिणणियां नै धोवा देवै ।—गिरधारी बोल्यो । वीं नै झाळ आवै ही । टुरतां ई आगै रस्ता मांय सूं खिसकण री सोचै ही ?

—हैड माड साब कीं कांम भोळाय राख्यो है । पूरो कर'र पांच मिट में आवै ।

—इण फद्दूमल नै रसै कांम अवार ई सूझैला ।

—लालजी संबंधी कांम व्हैला ।

—वां रो चार्ज कुण लेसी ?

—चार्ज लेवण में कांई है, कोई लेय लेसी ।

—कमती-वेसी कुण भरसी ?

— वां रै चार्ज में कोई रौळो कोनी । वै आदमी कांई हीरा हा—सम्पत बोल्यो ।

—हां ऽ ऽ, लालजी आदमी कांई हीरा ई हा ।

—म्हैं तो लारलै दस वरसां सूं वां रै सागै हूं, पण मजाल के वीं आदमी किणी नै दो ओछा लफज कह्या व्है ।

—धीजो अर नैठाव ई गजब रो । सौ तकलीफां थकां ई किणी आगै कदैई रोवणो कोनी रोवता ।

—हारी-मारी में दूजां रै आडा न्यारा आवता ।

—लेण-देण रा इत्ता साफ के ना पूछो बात । कोई पांच-पचीस वां रा भलाई खायग्यो व्है, वां किणी री फूटी कोडी ई राखण री कोनी सोची ।

—पण कैयी है नीं के भला आदम्यां नै दुनियां में ठोड़ कठै ? वां नै तो भगवांन ई पैली बुलावै ।

—आदमी लाखीणो हो ।

गिरधारी री झाळ मांय री मांय बध्यां जावै ही।

बाकी मास्टरां रै आवतां ईं सँग टुरग्या। रस्तै में गिरधारी अर गणेस चुपचाप खिसकग्या। नारायण कनै जाय'र रघुनाथ होळै-सीक बोल्यो—थारी म्हनै लुगाई नै स्कूल छोड र आवणी है, म्हैं चालसूं—अर वो टुरग्यो।

रस्तै में अेकर फेर खुसर-फुसर व्ही—औ तुरक उठै कांईं करसी।—पण कांईं करसी, कांईं करसी करतां-करतां ई लाल जी रै घरां पूगग्या।

अरथी हाल तांईं ऊठी कोनी।

लोग भेळा होयोड़ा हा। मांय-बारै रोवणो-कूकणो चालू हो। गळी-गुवाड़ रा टींगर अठी-उठी उछल-कूद करै हा। बूढ़ा-वडेरा अर समझवांन लोग टींगरां नै अेकांनी भेजै हा।

सांमलै घर रै डागळै माथै तीन जोध-जवान छोरयां ऊभी ही। ऊमर री ऊठतो उफांण। दो-च्यार मास्टर गैरी मीट सूं उठी नै देखण लाग्या। गळी रा छोरा पैली सूं वां नै ई देखै हा, वातां करै हा।

—विचली धाकड़ है।

—अेड़ली-छेड़ली पण माड़ी नीं।

—लाल साड़ी आळी चालू दीखै।

कनै ऊभै आदमी खखारो करयो। गुणका न्हांखणिया नै खखारो खारो लाग्यो। वातां रा परसग बदळग्या।

—कांईं देरी है ?—अेक आदमी नै धोळै केसां आळै खुणै कानी ले जावतां पूछयो।

—बस, पनरै-बीस मिंट में ईं रवांना होवण आळा हां।

—औ स्सो इंतजांम कियां ?

—अबार तो म्हैं ईं।

—भौजाई कनै सूं मांग्या कोनी कांईं ?

—वठै कांईं पड़यो है ?

—पूछणो तो हो।

—पूछयो जणां कह्यो के बीमारी में लागग्यो। अबै कनै फूटी कौडी ई कोनी।

—गैणां-गांठा तो व्हैला ?

—आधा-पड़धा बीमारी में वेच खाया। थोड़ा घणा व्हैला।

—ईयां पछै कांईं बारूं मास भुवाजी सूं वाथेड़ा करतो हो कांईं ? पांच-छव सौ नैड़ी तो तिनखा ई ही।

—तीन साल सूं बीमारी में खरचो व्हैतो रह्यो। वो पछै आभै सूं थोड़ी बरस्यो—औ तीजो आदमी अबार-अबार उठै आय'र ऊभ्यो।

—धूड़ म्हांखो लारै व्हियै माथै, अवार तो कांम सजग्यो, आगै कांई करैला ?

—म्हारो तो मगज कांम कोनी करै। लुगाई कनै सूं गैणो-गांठो मांगूं तो वा सीधी चट्टै पड़ै अर भोजाई कनै सूं अवार मांगूं तो भूंडो लागूं।

—भूंडो लागण री कोई वात कोनी लाडी। दुनियां में पईसै रो कांम तो पईसै सूं ई सजै।

—म्हारै तो च्यारूं कानी मौत है। करूं तो म्हैं पींचीजूं, नीं करयां न्यात-जात रा वटका भरसी के बरोवर री भाई लारै हो तो ई धूड़ उडी। हाल तो सै कांम बाकी पड़्या है—तीसरो, क्रिया, वारियो—अर वो डुसका भरतो-भरतो घर में गयो परो।

—थोड़ी ताळ पछै अरथी ऊठी।

—रोवा-कूकी अर हेला हवा में भरीजग्या—रे जीसा ओ ऽऽ हाय रे म्हारा भाई तनै आ कांई सूझी।

—रांम नांम सत है···सत वोल्यां गत है। चालो चित कासी बैकूंठवासी···जहां वहती गंगा···वहां मुगती पासी।

रस्तै में फूल्यां अर पईसां री उछाळ।

लाल जी नै मरयां तीन दिन व्हैगा।

वांरै चार्ज री लेवा-देवी व्हैगी। हैडमास्टर स्टाफ री राय लेय'र लाल जी रै परिवार री पइसा-टकां सूं मदद री योजना वणाई। तय व्हियो के हरेक मास्टर कम सूं कम पांच रिपिया तो देवै ई। हरेक क्लास में छोरै दीठ रिपियो-रिपियो मंगावां। इयां सात-आठ सो रिपियां नैड़ा भेळा होवण री उमीद बंधी। कीं रकम 'टीचर्स वेलफेयर फण्ड' मांय सूं मिल जासी। कानून मुजब राज अर जीवन-बीमै सूं जिको कीं मिलणो व्हैसी, मिलैला ई।

अवार मास्टर बाग में ऊभा हा।

—भायला, पांच रिपिया देवण आळी आ स्कीम ? —ठीक है या गळत, आ वात गिटचोड़ी राखी।

—क्यों थारै जचै कोनी कांई ?

मूंडै आगै सवाल आय पड़्यो जणा वगलां कानी देखतो वोल्यो—है तो ठीक पण···

—ठीक है जणा पछै पण क्यां री ?

—आपणै वी मुड़दा-फण्ड बण्योड़ी है नीं ?

'टीचर्स वेलफेयर फण्ड' आपसी बतळ में 'मुदड़ा-फण्ड' नांव सूं नांमी। जद कदैई इण फण्ड खातर कीं देवणो पड़ै तौ चाय पीवण नै भेळा व्है वीं बगत आ बात चालै ई— आज तौ मुड़दा-फण्ड में पांच रिपिया न्हांख्या है, कदाच घरम व्है तौ।

—वीं फण्ड सूं तौ मिळसीज....वीं रै अलावा आंपां कीं और कर लेवां तौ कांई हरज है ?

च्यार-पांच मास्टर और भेळा व्हैग्या।

—पांच रिपियां खातर धरती क्यूं व्है ?

—अरे ओ चम्पालाल, दो फिलमां ना देख्यै।

—हां ऽ....और कांई ?

—तूं कदैई तौ चामड़पणौ छोड्या कर।

—म्हारो मतलब ओ कोनी। थे लोग बात नै कदैई सई ढंग सूं समझौ ई कोनी। म्हैं आ कैवणी चावूं के 'मुड़दा फण्ड' ई गळत है। अेक तौ किणी रै घर सूं आदमी जावै अर आपां उठै सेफांबाई-सो मूंडो कर'र पांच-सात सौ रिपिया देवण नै जावां। वीं री मौत रौ मोल। म्हैं पूछूं वीं री जिंदगी भर री सेवावां रौ मोल इत्तौ ई.. खाली इत्तौ ई ?

—तौ पांच-सात हजार रौ इंतजांम करल्यौ। पांच तौ दिरीजै कोनी। पचीस-पचास देवण री बात करै वेटा।

—अरे ओ फिलोस्फर, तूं चुप रह लाडी।

—इण बात माथै गौर कर्यौ जावै।

—मगजमारी तौ करौ ना, जिण नै नहीं देवणा, मती दौ।

बातां रा ववंडर चालता रह्या। अठाई जणा मांय सूं दो जणा साव नटग्या। वां री निजरां औ फण्ड ई फालतू हौ।

तीनेक दिनां में सात सौ रिपिया भेळा व्हैगा। रिपिया कद देवणा इण बाबत मीटिंग ही। लाल जी रा बीमै रा कागजात त्यार करावण खातर सोहन ऑफिस गयोड़ौ हौ। वो आयौ जणा वीं रै हाथ में फाइलां ही। कमरै में आय'र बैठतां ई उण कह्यौ—भायां, लाल जी आदमी हा भागी।

—लागै थनै दौरौ पड़सी वेटा !

—देखौ, काल ई सरकारी आदेस होया के सरकारी सेवा-काळ में रामसरण होवणियें नै सरकारी बीमैं री दूणी रकम मिळसी। औ आदेस लारलै म्हीनैसूं लागू व्हैला। लाल जी रा भाग तेज, वां नै ई दूणी रकम मिळसी।

सरकार औ कांम तौ आछौ ई करचो। पण इत्तो आछौ तौ कांयत ई कोनी हो के दूणी रकम लेवण खातर ई लोग मरणौ सरू कर देवै।

सैंग जणां अेक-दूजै रो मूंडो देखण लाग्या। पछै खबर सुणायणियै नै देखण लाग्या।

सैंगा री निजरां खुद माथै टिक्योड़ी देख'र वो बगलां जोवण लाग्यो। कमरै मांय थोड़ी ताळ खातर गिंधावतौ मून पसरग्यो।

भोळावण

'जागती जोत' री रचनावां मांयं आपरा खुलासा सागर म्हांरी सांठी मदव व्हैला। रचनावां नै पूरी-पूरी बांचो अर ये आपनै कड़ो कांई लागै, अवस संपादक रै पतै कागद लिखावो। —संपादक

ओळूं

ईसरलाट

सिवराज छंगांणी

संसोळाव तळाव बीकानेर रो घणो नांमी । कासी विस्वनाथ जी रो मकरांणे रो मिंदर अर वीं रै लारलै कानी नागा बाबा री समाधी । दरसण करण आळा दोनूं जगां माथै जावै, मिंदर री लारली फेरी मांय सूं पिछम कांनी दरवाजो । वठै सूं तळाव री सोभा निरवाळी दीसै ।

सावण रै म्हीनै में अठै उच्छब होवै । सोमवार नै सिवजी रो पूजन होवै । फेरूं भगत लोग आरती गावै—जय सिव ओंकारः भज सिव ओंकारः····

नगारा, झालर अर छमछमा री अवाज रै सागै-सागै सैंकड़ूं लोग-लुगायां आरती गावती रैवै । जद भीड़ होळै-होळै खिडणी सरू व्है जावै, उण वगत हाथ में डांग लियोड़ा आवै है ईसरलाट । वां नै देखतां पांण हरेक आवाज लगावै—लाट साब··· । उथळो मिळतो—जै हो बाबू साव, खुसी रैवो कंवर साब ।

ईसरलाट नै सै लोग जांणै-पिछांणै । डील-डौळ में लांबा-चौड़ा । रंग गऊं वरणो । आंख्यां प्यालै ज्यूं दीखती । वां रै डोळां सूं भला-भला डर जावता । जात रा बामण हा । पण आंख्यां रो खाको खांटी रजपूत ज्यूं हो । गंजी अर धोती धारचोड़ा खांधै माथै गमछो अर हाथ में डांग लियोड़ा घूम्या करता । तळाव में तिरणो आछो जाणता । पांणी मांय गुचळका खावतां नै अर डूबतां नै झट सूं बारै काढ़ लेता । चौमासै रै दिनां वांरी ड्यूटी तळाव री रुखाळी रैवती । म्हीनो सेठ-साऊकारां सूं मिळतो । जद कदै ई वां नै कोई कैवतो के लाट साब, म्हारै छोरै नै तिरणो सिखाणो है, तो उण ई वगत हुंकारो भर लेवता । सिंझ्या सूं पैला-पैला छोरां नै तिरण री अभ्यास करावता अर पांच-छ दिनां में त्यार कर देवता । बौत सा लोग वां कनै सूं तिरा-तिरी री कळा सीखता ।

लाट साव नै कबूतरां री सौख। कबूतर पाळता, रुखाळता अर उडावता। कैया करता के कबूतरवाजां री दीठ तेज व्है। वां री दीठ अकास में उडता कबूतरां नै ओळखती। कबूतरां नै दोनूं टेम दांणो न्हांखता। खुद भलांई भूखा रैय जावता, पण कबूतरां नै जवार-बाजरी चुगावता ई। भायला पूछता—लाट साव आजकाल किसा किसा कबूतर थांरै कनै है ? उथळो मिलतो—थांनै किसा चाईजै ? म्हारै अठै सब्जो, भवरो, पाठो अर करेलो, दो-दो जाड़ां वडी फूटरी है। लाट साव कबूतरां नै वेचता कोनी। चावै कितो ई लोभ मिळ जावतो। वां नै तो सौख ई पूरो करणो व्हैतो। कमाई तो इक्कै-घोडै सूं करता। आं नै तांगो चोखो कोनी लागतो। मेळै-ठवोळै लाट साव रो इक्को देचीकुंड सागर, सिववाड़ी अर कोडमदेसर तांईं जावतो। आछा घुड़सवार हा। आछा-आछा सेठ-मऊकार लाट साव रो इक्को-घोड़ो भाड़ै करता। वां नै पईसा मोकळा देवता। लाट साव भजन मंडळी रा मुखिया हा। जुम्मे-जागरण में नराण म्हाराज री मंडळी सागै जावता। सबद बाणयां गावतां-गावतां आखी रात काढ देता। ढोलक अर चंग बजावण रो खुद नै सौख रैवतो।

होळी रै दिनां में रम्मतां पड़ती जद ढोलक बजंदरियां में लाट साव आगै रैवता। गवरचां रा गीत, हेड़ाऊ-मेरी री रम्मत रा ख्याल अर सीतला माता रा गीत तीगी अर सुवावणी राग सूं गाया करता। कदेई-कदेई अेकला बैठा व्हैता जद गीत उगेरता—'माना अे म्हांरै टाबरियां नै ठंड रा झोला देयी अे—नोखा री अे राय-म्हांरै....' गीत गावण रै सागै-सागै हाथ में रेजमाल लियोड़ा बोरटी री लकड़ी नै सवळी करता रैवता। लाट साव नै नोगी अर मजबूत डांग राखण रो सौख हो।

गळी-गुवाड़ आळा लोग तो रात-बिरात आनै तकलीफ देवता, जद- कदेई मोहल्लै में सांप अर परड़-वांडी निसरती, लाट साव री जरूरत रैवती। लाट साव सांप अर वांडी नै तुरत पकड़ लावता। चायै कळंदर व्हो, चायै भंवरो। चायै पदम सरप व्हो, चायै पैणो, सगळा लाट साव रै कब्जै व्है जावता। जांणै आं रै कनै कोई मतर सिध होयोड़ो होयै। दूर-दूर सूं सरप पकड़ावण नै लोग लाट साव नै बुलावो भिजाता। सरप री पकड़ वास्तै तो लाट साव पूंगी वाळा गोड़िया हा। सनेसो मिलता ईं रवांना व्है जाता अर थोड़ी दार पछै गळै में सरप लटकायोड़ा चौक में आय'र बैठ जावता। आवण-जावण आळां री भीड़ व्है जाती। लाट साव रै बस्ती व्है जाती। फेरूं सरपां माथै बातां चालू होवती। लाट साव पैसठ-सतर बरस री ऊमर लेय'र सैंकड़ूं सरप, परड़्यां अर वांड्यां पकड़'र जगळ मांय छोड्या है। लाट साव परायी पीड़ा में पड़ण वाळा मिनख हा। नीयत रा खरा, बात रा पक्का। हिरदै में दया राखण वाळा सतवादी मिनख हा।

गळी-गुवाड़वाळा लाट साव री धाक सूं डरता पण वां री मरदानगी नै सरावता। कुतियै (दवारकै) री दुकांन रा भुजिया अर रगा ठाकुर रा पांन नित हमेस लाट साव नै खवाईजता। आवतो जावतो लाट साव नै बैठा देख'र अवाज लगावतो—लाट साव...। उथळो मिलतो—जय हो बाबू साव, खुस रैवो कंवर साव।

वगत बीत जावै, पण बातां रैय जावै। गळी-गुवाड़ में जद कदै सरप वांड्यां निसरै वीं वखत लाट साव री ओळूं आ ई जावै।

* * *

थूं भीतर नै झांक

किसन कल्पित

मन में कमरौ
कमरै में कमरौ
कमरै में खाली राख
लाख टकां री बात है भाई
थूं भीतर नै झांक

पड़छांईं तौ फिरै बांटती
काळस री परसाद
पांती आयौ लेणौ पड़सी
मतो करौ थे वाद

मन में हेत उगायौ हौ म्हे
पण उगियायौ आक
थूं भीतर नै झांक

अठी-उठी नै खोज काढ़तां
पगल्या घिसग्या म्हांरा
म्हे तौ जठै-जठै ई देख्या
हा थाक्या उणियारा

दूर थकां लग धूड़-धूड़ है
धोबा भर-भर फांक
थूं भीतर नै झांक

* * *

अेक मिनख रौ दिन

सुरेस पारीक 'ससिकर'

हाकाहूक री हाट माथै वैठ
नित सुरजी नै वेच आपरी नींद
आखो-आखी रात जागै मिनख

सोवण रौ सांग करै
घड़ी में कूंची भरयां पछै
पाड़ौसी नै जगावण री कैवै

ऊगै दिन
चाय उवास्यां पसवाड़ा
छेवट हड़वड़ा'र फेंकै पछेवड़ौ
फाटी-फाटी आंख्यां सूं निरखै
सांप री छतरयां दांई
छाती ऊगी टावरां री टोळी नै

काच में मूंडौ
सवाल-जवाव अपणै आप सूं
हाथ-मूंडा तौ धोया हा काले
ठंड में नित न्हांणौ ठीक नीं
वीयां ई जुखांम होयोड़ौ

तौ ई आफिस जावण में
आध घंटै रौ मौड़ौ
कांई व्है
साव तौ खुद ई लेट आवै भोड़ौ

* * *

ओौ ई निवेड़

स्वामी खुसाल नाथ

बूढ़ा ठाडा डोकरा
गुडाळ में बैठा
होको गुडगुड़ावै
चिलम फूंकै
बातां रा बतूळिया उडावै

मैल भरियोड़ा गाभा
अमल-तम्बाखू सूं बासता मूंडा
डील माथै जमियोड़ी ओडी-ओडी मैल
नैणां में अंत विहूण सूनेड़
गुडाळ सूं बारै चिळकै तावड़ो
अर तेड़

इण जमारै
जूण री ओौ ई निवेड़

* * *

म्हैं ई म्हैं

किसोर चतुर्वेदी

म्हूं ओलै बैठ'र
छांनै-छांनै आखी उजाळौ पीयगौ
पीयगौ कांई जीयगौ
अबै हौ घुप अंधारौ ई अंधारौ
अर हौ म्हैं ई म्हैं
गळै बंधियोड़ौ हो ढोल
अर सांमी दीखै ई पोल ई पोल
'लोगां म्हैं थांरौ नवौ नेता
उजास रौ सगळौ कोटौ म्हारै कनै
सुरजी दबियोड़ौ म्हारी अंटी में
उजाळौ फगत वांनै ई हाथै आवैला
जिका म्हनै दियोड़ै वोट रौ रासन-काड लावैला
म्हारी जै गावैला

सवै हौ घुप अंधारौ
अर हौ म्हैं ई म्हैं............

* * *

आ धोबौक पीढ़ी

ओम प्रकास थानवी

मिनख री जिंदगांणी
अेक लांठो मरुथळ
अर
मिनखपणौ
फगत पांणी री टोपौ
फेरूं ई
आंख्यां ऊठचोड़ी
आसावां बणियोड़ी

निनाण

महावीर प्रसाद जोसी

तळै बिछ री हरियाळी दूब
बादळो ऊपर करयो मंडाण
खेत में लेकर कसियो हाथ
मिरगा नैण्यां करै निनाण

पाय कर मनचायो सो मेह
बाजरी खड़ी हरी कचनार
सोवणा बीच बीच में बूंट
घाल राख्या हा मोठ-गुंवार

रमीला हाथां रो कसियो
भरै रस पत्ता पत्ता मांय
पसेवो टपकै सारै डील
फिकर क्यूं अन-पांणी री नांय

गावणै लागी दूहा-गीत
बोल पर चढ़णै लाग्या बोल
आगलै दिन में के होसी
न इण रो कोई नै ईं तोल

बीच में बाकी रह्यो निनाण
सूखणै लाग्या सारा खेत
चूंसणै लागी सारो सार
तावड़ा सूं तप-तप नै रेत

मुरझगो खेतां सारो नाज
सूख नं पीळा पड़गा पांन
घास बिन मरगा ढांढ़ा-ढोर
टेक पण राखी ना भगवांन

जा पड़्या कसिया हाथां छूट
नैण जोवण लाग्या आकास
न दीख्यौ पण बादळयौ अेक
तूटगो बस सारी ई आस

लावणी बणगौ फेर निनाण
न निकळै मूंडै में सूं वैण
भरचोड़ी बदळी ना वरसी
बरसण लाग्या सूखा नैण

* * *

आजादी सूं अब तांई

राजस्थांनी साहित रौ लेखौ-जोखौ

कोमल कोठारी

[साहित अकादमी दिल्ली १९७४ में पोथी छापी —' इंडियन लिटरेचर सिंस इंडिपें-डेंस' । उण पोथी सारू राजस्थांनी साहित समचै लेख कोमल कोठारी लिखियो । इण लेख में आजादी अर आजादी सूं पछै रै राजस्थांनी साहित अर राजस्थांनी भासा री भांत-भांत री आफल रो मोटो लेखो-जोखो । अेक ई लेख में ३० - ४० बरसां री सगळी ऊथल-पुथल नै बिगताय देवणो सोरो कांम नीं पण कोमल जी री कलम हद ई [illegible] मायनेत अर तुलवां । कुण सी बात कित्ती कथीजणी चाहिजै, इण नै भली भांत जांणै । लिखियोड़ो सार घटै न तिल वधै । मूळ लेख अंगरेजी में हो, अठै उण रो राजस्थांनी उल्थो— सम्पादक]

भारत री आजादी राजस्थांन सारू दोवड़ो नफो लाई । अेक तो सामंती-व्यवस्था रो पापो कटियो अर दूजो भांत-भांत रै विकास रा अैड़ा कांम-धांम सरू हुया अर अैड़ा मारग खुलिया के जिकां री राजस्थांन में इण सूं पैला सपनैम ई नीं ही । आजादी सूं पैली रा बरस जागीरदारां रै हाथां आंईकट लूटमार रा बरस हा । वां रो राज नीं कोई सामाजिक विकास होवण देतो, नीं आरथिक, अर नीं पढाई-लिखाई नै ई आगै वधण देतो । वांरै जीव जमियोड़ी बात ही के अां सेना रै सुखियां लोग धारैजा नीं । पछै राज अर कानून तो वांरै हाथ में ई हा, सो समाज री भलाई रा कांम, भणाई-गुणाई अर विकास री दूजी सगळी बातां नै वै जड़ मूं ई टाळ'र चाल्या । आज इण बात नै गिनारां तो भरोसो नीं व्है के राजस्थांन रै दो करोड़ मानखै में सो दोठ सो गोठ पढियोड़ा लाधता । अव्वल तो पढाई री सुविधावां रजवाड़ां री रजधानियां में ई ही अर उठै ई कोरी वां सारू ई जिका समाज रै ऊंचलै तबकै रा जाणीजता ।

गयै वगत नै रोवता राजावां आपरै राज-काज नै ब्रिटिश भारत रै ढब-ढाळै ई कीधो

नीं, जिकी वां रै साव पाड़ौस में चालै हो । ब्रिटिस भारत में तौ फेरूं ईं करतां नीं करतां गिणी-चुणी कोसिसां भांत-भांत रा उद्योगां अर भणाई-गुणाई री संस्थावां थरपण सारू व्ही, जद के अठै रा राजावां तौ अैड़ी कोसिसां तकात नै साव अदेखी कर दी । उल्टौ वां रौ रुख तौ हौ जैड़ो ई हौ । अर क्यूं के सगळो भांत रा इधकार अर साधन वां रै हाथै हा, सो वै राजस्थांन नै खुद कानी सूं पींदै बैठावण में पाछ कोनी राखी । राजस्थांन ब्रिटिस भारत करतां घणौ लारै रैगौ ।

आजादी सूं पैलड़ै राजस्थांन रै साहितिक दीठाव में घणी गुंजायस कोनी लागै । साहित नै करतां नीं करतां सांवठै चौफेरी दबाव समचै आपोआप में अेक विद्रोही अवाज अगेजणी अर विगसावणी पड़ी । उण अवाज में कोरी आजादी रै मोल-महत री बात ई नीं ही, जागीरदारां अर सामंतां री लूटखसोट री गाढ़ी मुखालफत ई ही । सगळै देस रै जोड़ाजोड़ राजस्थांन में ईं छिड़ियोड़ो रास्ट्रीय आंदोलन वां दिनां री गांवां अर सहरां री साहितिक हड़चलां रौ आगीवांण रह्यौ ।

आजादी सूं पैली रौ राजस्थांन रो साहितिक दीठाव तीन ढबां ढलियोड़ो दीसै । अेक ढब में अैड़ा लिखारा लागै, जिकां नै भूतकाळ हद ई व्हालौ लागतौ अर वै मध्यजुगी परम्परावां माथै रीझता । वां लोगां री प्रतिभा पुरांणी पांडुलिपियां रै सम्पादन में अर इतिहासू बातां नै मध्यजुगी मान-मोलां माथै खासतौर सूं जोर देवता थकां विगतावण में सांमी आई ।

दूजै ढब रा लिखारा आं करतां ज्यादा वगतवळू हा । वै उण वगत रै आरथिक सामाजिक ढांचै अर सामंती व्यवस्था माथै सीधी चोट कीधी । औ ई वो वगत हौ जद गणेसीलाल व्यास उस्ताद नांव रो नांमी कवी, सामंती मारूवां माथै आपरा ऊंडा-आकरा व्यंगां सेती सीधो अर समझदार हमलौ कीधौ । आजादी री मनसा सागै सांवठा लोगां नै जोड़ण सारू जयनारायण व्यास, माणकलाल वरमा अर हीरालाल सास्त्री जैड़ा राजनेतावां ईं कीं कवितावां रची अर न्यारा-न्यारा रजवाड़ां में आजादी रौ चाळो चेतावतां वां नै मौकै-मौकै गाई ।

इणीं वगत तीजी भांत रा लिखारा ई आपरै ढाळै लिखा-पढ़ी में लागोड़ा हा । इण ढाळै रा लिखारां री लाग-लगाव राजस्थांन रै लोक साहित खुद सूं हौ । लोक गाथावां सूं गीतां सूं अर बातां सूं । लिखा-पढ़ा री आं प्रव्रतियां रै जोडै-जोड़ै भासा-रूप राजस्थांनी भासा री भणाई रो कांम ई हौळै-हौळै विगसै हा । रामकरण आसोपा अर बीकानेर अर जैपुर रा रसवाड़ां सूं कीं दूजा विदवांन ई राजस्थांनी रै व्याकरण, सबदकोस अर भासा-रूप भणाई रा दूजा छोटा-मोटा कांमां नै अगेजै हा । राजस्थांनी हिन्दी सबदकोस समचै सीताराम लालस निकेवळो, अर आगीवांण नांव जाणीजै । इण कांम नै वै उगणीस सौ इगतीस रै लगैटगै सरू कीधौ वां अेकलां अेकलै हाथ ई इण लांठै जस-जोगै कांम नै पार घाल्यौ । भारत सरकार अर राजस्थांन सरकार री आरथिक इमदाद सूं छ लांठी जिल्दां तौ इण सबदकोस री छप'र सांमी आयगी । कासी री नागरी प्रचारणी सभा ई राजस्थांनी साहित रो मध्यजुगी अर प्राचीन

पांडुलिपियां नै मुंडागै लावण रौ कांम कीधौ। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' अर 'राजरूपक' अैड़ा महताऊ कांमां में सूं है जिका सभा री मारफत सांमी आया। सभा लोकगीतां अर लोक कथावां री किताबां ई काढ़ी।

अेक जिकी महताऊ बात साहित री आं सगली प्रव्रतियां री पूठ में दीसै—वा है हिन्दी भासा री निभायोड़ी भूमिका। हिन्दी आजादी री लड़ाई रै दिनां रास्ट्रीय आकांखावां री प्रतीक व्हैगी ही। राजस्थांन रौ हरेक सावचेत मिनख इण बात नै जांणै हौ के आजादी री लड़ाई में उण री हिस्सेदारी हिन्दी सीख्यां ई पार पड़ सकै। पण सामंती लोगां नै तौ पढ़ाई-लिखाई रौ नांव ई नीं सुहावतौ। सो पढ़ाई रै कांम नै के तौ हेटौ देखणौ पड़्यौ के उण रै गेलै में भांत-भांत री अड़चलां अवेस कर न्हांखीजी। नतीजन भणाई री जरियौ होवण रै वजै सूं हिन्दी नै ई कम भुगतणौ कोनी पड़ियौ। इण बात रौ डर हौ के पढ़ाई-लिखाई खिलाफत अर रुळियारै रौ कारण व्है जावैली। फकत ई राजावां अर अभिजात लोगां रौ अेक वरग हौ, जिकौ चावतौ के सिक्षा राज-काज में आपरी भूमिका निभावै। पण वै ई आपरी कोसिसां टाळवां अर खास सुविधावां हासिल कियोड़ा लोगां नै पढ़ावण तक ई ढाबियोड़ी राखी। केई राजवियां रौ मन हौ के वां रौ ख्यातीलो भूतकाळ मुंडागै लाईजै सो वै विदवांनां री पूठ इण दिसा में कांम सारू थेपड़ी। कर्नल जेम्स टॉड इण सारू खासी मनी इतिहासू अर दंतकथावां री सामग्री दे ई दी ही, जिण रै आधार माथै राजनमां रै माळी पांनां लगाइज सकता।

राजस्थांन रौ साहितिक दीठाव अेक जबर धाळ-मथोळ में हौ। आजाद होवण री मनसा, रास्ट्रीय प्रेरणांवा अर समाजिक अन्याव रै खिलाफ, मुखालफत रफत पकड़ै ही। साहित इण सगळी हालत नै चितरावै हो, पण हिन्दी अर राजस्थांनी री दोगाचींती उण रै सांमी ही। लक्ष तौ सांप्रत हौ पण भासा रै चुणाव री अबखाई गेलै में ही। साहित दोनूं ई भासावां नै वरती। हिन्दी रास्ट्रीय भावनावां नै अर समाज रा पढ़िया-लिखिया मिनखां नै सबोधै ही, तौ राजस्थांनी सादवूधा लोगां सूं सीधी वतळावण में लागोड़ी ही। राजस्थांनी अर हिन्दी रै विच्चै उळझाव के टकराव री कोई बात ई नीं ही। हरेक राजस्थांनी विदवांन इण बात नै जांणै हौ के दोनूं ई भासावां नै राजस्थांन में आपरी भूमिका निभावणी है। राजस्थांनी रौ हरेक कांम हिन्दी अरथां अर टीपां सागै सम्पादित व्हैतौ। राजस्थानी साहित हिन्दी री मारफत आपरौ गेलौ देखै हो। हिन्दी साहित में ठोड़-ठोड़ छूटियोड़ी छेनी नै राजस्थांन रा अेसंधा पण महताऊ कवियां। लिखारां रा कांमां नै मुंडागै लाय'र भरा-भरी री कोसिसां होवै ही।

औ ई वौ वीचलौ वगत अर हालतां ही, जद भारत आपरी आजादी हासिल कीधी अर नवौ संविधान वणियौ। संविधान चवदा भासावां नै मानता दीवी अर राजस्थांनी वां में नीं ही। संविधान इण बात नै खासतौर सूं जाहिर कीधो के चवदा भासावां री मांनता रौ मतलब औ नीं है के भविस में विगसण आली भासावा नै मांनता नीं मिळैला। वीयां उण वगत राजस्थांनी भासा नै टाळ देवणौ राजस्थांनी लिखारां माथै घणूंतौ असर न्हांख्यौ।

ओचक १९५० में राजस्थानी लिखारां नै जांत व्ही के जिण भासा री मारफत वै लिखा-पढ़ी में लागोड़ा है, उण रै पांतीं किणीं भांत री सामाजिक के साहितिक दायित छोडीजियो ई नीं। राजस्थानी री पोथ्यां छापतां प्रकासक झेंपण लागा सार्वजनिक अर सैक्षणिक पुस्तकालय राजस्थानी पोथ्यां सूं परहेज राखणो सरू कर दियो अर इण आजाद संविधान रै असर में आय'र राज अर समाज री दूजी संस्थावां ई सगळी भांत रै राजस्थानी लेखण सूं आंतरो काटण लागी। कवियां अर लिखारां इण हालत में खुद नै साव अधर-पधर अनुभव कीधा। पण फेरूं ई वै इण हालत सूं छाती रै पांण जूंभिया अर खुदोखुद आपरी पोथ्यां प्रकासित करणी सरू कीधी अर नीजू आधार माथै वांरी बिक्री री सराजाम कियो।

अैड़ी अवळी गत में राजस्थानी साहित अेकै साग अवखाई री वेई तर-तळां जूंभियो। राजस्थानी में लिखण सूं लगा'र भासा रै मानक-रूप त्यार करणै तांई उण नै सांवठो सोच करणो पड़ियो। व्याकरण, सबदकोस अर आपरी समूदी जात-न्यात अर जमावड़ै सेती खुद री न्यारी निरवाळी ओळखांण सारू राजस्थानी साहित आफळियो। १९४९ सूं ५३ तांई रा बरस हद ई धाळमथोळ रा हा अर दीठाव में कोई चितरांम साफ-साफ निगै कोनी आवै हो। पण फेरूं ई आ बात तो साव सांची के राजस्थानी रो कांम आपरै ढाळै चालै हो अर देस रा दूजा छेत्रां सूं किणीं तराजै घाट नीं हो।

भासा रै ओळू-दोळू भांत-भांत री अवखायां अर सवालां नै हीमत रै पांण भुलाईज्या। सिरजण री प्रेरणावां सगळी भांत रा धक्कां अर व्यवहारू जोखमां नै कवजै कर लिया। राजस्थानी लेखण राजीमनां ऊजळै अर आसा भरयै भविस रा गीत गावणा सरू राख्या। हमेसा सारू सामती व्यवस्था रा पैंखळा ढीला पड़गा। गणेसी लाल व्यास उस्ताद, रेवतदांन, मेघराज मुकुल, गजानन वरमा, कन्हैयालाल सेठिया अर कीं दूजा ई सांतरै अर सोवणै भविस री आसावां-लालसावां आपरी रचनांवां में जाहिर कीधी।

समाजू हालत में बदळाव विसै-सामग्री में ई बदळाव रो कारण होयो। हरख-उछाव रा वां भावां सारू अभिव्यक्ति रा पुराणा रूप समरथ कोनी हा। परम्पराऊ काव्यरूप नवी कलपनांवां समचै पूरा कोनी पड़ता के वां आयांमां नै केवट कोनीं सकता, जिका नवी हालतां में सूं जलमै हा। आजादी सूं पैली अर पछै रै वगत में कविता ई साहित में सिरै अर सांवठी ही, जद के राजस्थानी रो गद्य गुडाळयां चालै हो। कविता कवी-सम्मेलनां री मारफत मुंडागै आवंती, जठै कवी आपरी कवितावां पढ़ता। हजारां लोग अैड़ा कवी-सम्मेलनां में भेळा व्हैता अर कवियां री वाहवाही व्हैती। पण आं सांवठी भेळपां रा आपरा धांदा हा। कविता री झीणी बणगट अर फूटरापो तो अेकांनी छूट जातो अर सुणावण रो असरदार ढंग बाजी मार लेतो। तो ई ओ राजस्थानी रो लेखण आपरा सरूपोत रा दिनां सुणावण रै ढग अर कविता री वाचिक आंट लियां खुद रै पगां हो। मुकुल, रेवतदांन, सत्यप्रकास जोसी, गजानन वरमा इत्याद हजारां लोगां नै अचळ बांध्यां राखण में समरथ हा।

अै हालतां, जठै के राजस्थानी रो कोई प्रकासण फगत सपनो व्हैतो, सेवट निवड़ी अर निवड़ी ई हाकां धाकां। केई कवियां खुद री पोथ्यां खुद प्रकासित कीधो के वां सारू

आपरा दोस्तां री मदद लीधी। जोधपुर, जैपुर अर बीकानेर अैड़ा महताऊ सहर व्हैगा जठै सूं राजस्थांनी साहित नै मुंडागै लावण री सांतरी अर सांवठी कोसिसां होवण लागी।

राजस्थांनी—जिकी आपरी उपयोगिता नै कविता अर कवी सम्मेलनां री मारफत मरू में सांप्रती—हौळै-हौळै सावचेत चितकां, विदवांनां अर लिखारां नै आप धकी खींचण लागी—भासा रै समचै जिम्मेदार होवण सारू अर देस री दूजी छेत्रीय भासावां रै सेंतोल राजस्थांनी नै आगै वधावण सारू। अै लोग साहित रा भांत-भांत रा रूपां में रुची ली—राजस्थांनी रैगद्य नै खास तौर सूं सुधारण अर विगसावण री बात नै निजर में राखतां थकां। समसामयिक जीवण वांरी खास चुणौती ही।

आ बात तौ पैली कथीजी के आजादी सूं पैली राजस्थानी भासा मध्यजुगी साहित रै सम्पादन सूं बंधियोड़ी ही। प्रगतिसील कवितावां अर लोक साहित रो अध्ययन हिन्दी री मारफत ओळखाइजता। आजादी सूं पछै रै वगत रो ई आपरै अेकदम लारै छूटै भूतकाल नूं तो अंदरूणी अर अवयवी तालुक होवणो ई हो, सो वो पैली रा छेड़ियोड़ा कामां नै ज्यादा अग्याऊ अर सांवठा कीधा। राजस्थान रो प्राचीन अर मध्यजुगी साहित इण मनसा सागै मुंडागै लाइजणी सरू व्हियो के देस रा लोगां नै राजस्थान रै साहित री समरथ ओट-पोध अर परंपरावां री जांच व्है। आ बात सहजां ईं चितारीजी के राजस्थांनी में साहित सिरजण रो धारो घणो जूनो अर सासतो। राजस्थांनी साहित रो। इतिहास आपोनै ठेट आठवीं सताब्दी तांई लारै ले जावै अर तेरवीं सताब्दी अर उणसूं आगै कविता अर गद्य सगळा छेत्रां में सिरजण रो धारो बरोबर लावै। कवितावां, कथावां, लक्षण ग्रंथ, टीकावां, वात-वरणाव, संस्मरण, विगतां, जीवनियां अर इतिहासू किस्सा। राजस्थांनी कविता आपरी क्लासिकल बुनियाद डिंगळ कविता रै पांण ऊभी कीधी। डिंगळ राजस्थांनी क्लासिकल कविता रो जरियो ही जिकी नै खासतौर सूं राजस्थान रा चारणां बरती। इतिहासू दंतकथावां अर भक्ति-परक विसय डिंगळ कवितां री मारफत वंध्या-वधागा काव्य रूपां ढळिया। आ कथीज सकै के डिंगळ कनै आपरा 'अमरकोस' जैड़ा सबदकोस हा जिका 'अेकाक्षरी' के पर्यायवाची कोसां माथै टिकियोड़ा हा। चारण आं सबदकोसां री सामग्री नै याद राख्या करता अर तै सबदां नै आपरी अभिव्यक्ति में कांम लेता। डिंगळ कविता रो आपरो छंद सास्त्र हो। १९ वीं सताब्दी रै अंत तांई आपां नै १०५ रै लगैटगै गीत के काव्य रूप डिंगळ कविता में दीसै जिका के संस्कृत अर व्रज रा छंदां सूं अंगै न्यारा है। आं रै वाचन री ई आपरी न्यारी-निरवाळी आंट ही। आ अेक नवी जाणकारी व्हैला के अै गीत संगीत रै सागै ई गावीज सकता। पण चारणी गीतां रो रूप, वाचन अर आपरा बोलां अर वांरै लयगत आंटै तक ई सीमित रह्यो। डिंगळ गीतांरा पद अेक दूजो ई अवखाई सांमी लावै। अेक पद आपोआप में पूरो नीं रहै च्यार पद मिळ'र अेक छंद नै पूरो वणावै। अेक हद तांई डिंगळ गीत रो रूप अंगरेजी रै सॉनेट जैड़ो व्है। आजादी सूं पछै रै वगत में राजस्थांनी साहित में मोजूद सगळी भांत रा जूना काव्य-रूपां माथै ध्यांन दिरीज्यो। पण आ बात सिरजणाऊ लिखारां रै तो मनांग्यानां जाण्योड़ी ई ही के कविता रा जूना रूप नवी अभिव्यक्ति सारू कोनी वरतीज सकै। पण पेलां ईं खासी भली तादाद कविता रा जूना रूपां सूं वंधियोड़ी रही। 'दूहो' आधुनिक कवियां रो

महताऊ छंद हौ। अँडा कवी परम्परागत काव्यरूपां रूपां सूं बंधियोड़ा रह्या, खुद नै दंतकथावां अर कूडा सांचा इतिहासू विसयां रै ओळू-दोळू ढाब्योड़ा राख्या। वै इण वात माथै ई दुख दरसायौ के कैड़ी नांमी अर भली सांमंती व्यवस्था खतम व्हैगी। वां नै अेक नवै समाज रै जलम अर उणरी आसावां उमीदां री लखाव ई नीं व्हियौ।

कवियां री औ ग्रुप भूतकाळ नैं भाळै हौ अर मध्यजुगी साहित री पढ़ाई सूं बंधियोडौ हौ। रिसर्च रै कांम में उणरी खास रुची ही— भलां ईं वौ मध्यजुगी साहित रो व्हौ अर भलां ईं दूजौ। केई वळा अै कवि अर विदवांन समसामयिक अवखायां नै परम्पराऊ काव्य-रूपां सूं केवटण री कोसिस कीधी, पण वां रा बिम्ब, प्रेरणावां अर विसै सामग्री री सीमित असर घणा पाठक परोटण में समरथ कोनी होयौ। नाथूदान महियारिया, हिंगळाज दांन कविया, मुकन्दसिंघ इत्याद अँड़ा कवियां में सूं जाणीजै जिका कविता रै परम्पराऊ रूपां अर विसै-वस्तुवां सूं बंधियोड़ा रह्या।

सोध रा विदवांनां में ईं राजस्थांन रै ठाटदार भूतकाळ नै रोवण री कुवांण विगसी। कनरल टाड री इतिहासू कांम माळी पांना लगा-लगा'र विगतायोडौ राजस्थांन री भूतकाळ, साहित में पुनरुत्थान रै आंदोलन सारू माडी-मौळी उछाव केयां नै दीधौ। ठावा-ठावा इतिहासू चरित नवी कलपनावां रै पांण रास्ट्रीय हीरोज रै रूप में सांमी लाईज्या। बंगाली पुनर्जागरण अर नायक पूजा साहितिक विसयां री तादाद नै बधाई अर अँड़ी प्रव्रति नै ई स्यारौ दियौ, जिणनै आवण आळा दिनां ईं थोड़ौ-घणौ तौ चालणौ ई हौ। सोध विदवांनां री अेक दूजौ सावचेत ग्रुप ई होळै-होळै दीठाव में उभरै हौ, जिण री अप्रोच ज्यादा वाजिब अर वैग्यानिक ही। अगरचन्द नाहटा, नरोत्तम दास स्वामी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, कन्हैयालाल सहल, सीताराम लाळस, झाबरमल सरमा इत्याद री तालुक सोध विदवांनां रै पुरांणै ग्रुप सूं हौ। आं लोगां री राजस्थांनी साहित री पाछी जाग में सांवठौ योगदांन रह्यौ, पण आं री सगळौ कांम हिन्दी भासा में ईं आपरौ गेलौ सोध्यौ। सोध विदवांनां री अेक नवौ अर ज्यादा जवांन ग्रुप सांमी आवै हौ, जीयां सौभागसिंघ सेखावत, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डा. हीरालाल महेस्वरी, डॉ. बी. अेम. जावळिया अर डॉ. मनोहर सरमा इत्याद। पण अै सोध विदवांन ई फिर-घिर'र जीवण रै परम्पराऊ ढब ढाळै अर मोह सूं बंधियोड़ा दीसै। अै जिका मांन मोलां में विसवास राखै, वै नीं कोई नवौ धरातळ लावै, नीं आं नै मध्यजुगी जीवन रै हेज-गुमेज सूं आगा ले जावै।

राजस्थांनी लिखारां री अेक दूजी खेंप राजस्थांन रै भूतकाळ में जोवण रौ नवौ गेलौ अपड़्यौ। औ गेलौ वांनै राजस्थांन रै लोकसाहित, लोक संस्क्रति अर वाचिक परम्परावां तांईं लेगौ अर इण छेत्र में खासौ भलौ कांम होयौ। लोक साहित थकी जोवण री मनसा वां लोगां वास्तै गाढ़ौ अरथ राखै ही, जिका लेखण रै कांम सारू बोलचाल री भासा नै पूरसल परोटणौ चावै हा। राजस्थांन री लिखत परम्परा वीयां तौ लिखारां नै आपरी स्टाइल अर भासा बणावण में मदद करै ही, पण वां नै समसामयिक समाज रै नैड़ै लावण में उत्तौ समरथ नीं ही। पुराणा सबद अर वां सबदां रा बिम्ब अर अरथ आपरौ समाजू संप्रेसण अर गाढ गमाय दी ही। राज में सिक्षा री जिकी नवी पॉलिसी बणी, उणमें राजस्थांनी रै पांती किणी भांत री भूमिका आई नीं, सो आ सांचमांच में कवियां अर लिखारां सारू आफत व्हैगी के वै कीकर आपरी सबद-

सगती वधावै, सबद-ग्यांन सांवठो करै अर कीकर भासा री समूदी कळ-विद्या वांरै हाथैं आवै। फेर समाज ई भासा सिखावण-पढावण धकी ध्यांन दियो नीं। नीं कोई सावचेत कोसिसां ई इण सारू कीधी। सो कवियां अर लिखारां कनै भासा सीखण अर उणनैं भीणा अरथां ताई ले जावण सारू मौखिक परम्परा ई सो क्यूं ही। इण टाळ दूजो विकळप ई नीं हो। अेक मायड़ भासा जिकी कोरी दैनिक कामां रै सीगै ई बरतीजै, कीकर साहितिक भासा री माठ-मरजाद नै केवटै। पण अैड़ी माठ-मरजाद आळी भासा अर साहितिक रूप लोक साहित में पैली सूं ई मौजूद हा, सो राजस्थांन रा सिरजणाऊ मन मगज लोकगीतां, लोक कथावां अर मौखिक परम्परा रा दूजा केई रूपां सूं आपरी सगती संची।

अैड़ा कवी अर लिखारा जिका राजस्थांन रै लोकसाहित कानी मूंडो कीधो, राजस्थांनी भासा अर साहित रै आंदोलन में ठावो अर असरदार फरक लाया। रांणी लिछमी-कुमारी चूंडावत आपरा विसै लोक दत कथावां, गाथावां अर लोक मे ई चावा इतिहासू परसंगां सूं लीधा। वां रै गद्य में सांतरी पांतरी रफत ही अर वै साहित में आपरी ठावी छाप छोडी। डॉ मनोहर सरमा साहित नै खूब सारी लोक कथावां दी अर लोक विसयां माथै लांठी कवितावां ई लिखी। भंवर लाल नाहटा, गोविन्द अग्रवाल अर कीं दूजा ई लोक कथावां चावी करवा रो कांम कीधो। पण इण समचै सगळां सूं ज्यादा अरथाऊ अर ठावो कांम है विजय दांन देथा रो। वै हजार रै लगैटगै लोक कथावां लिखी जिकी दस मोटी-मोटी जिल्दां में छपी। वां री पूरी योजना बीस जिल्दां री है सो वै आगै ई इणी कांम में लागोड़ा है। विजय दांन देथा री लोक कथावां राजस्थांनी गद्य मंनी अर लोक कथा रै आधुनिक अरथ नै नवा आयांम दिया। विजय दांन देथा री लोक कथावां वांच्यां आधुनिक संदरभां में लोक कथावां री सगती अर संदेस रो खरो अदाज व्है। देथा री कथावां मुणियोड़ी कथावां री है जैड़ी ई पाछी कथाव नीं होय, अेक सिरजणाऊ लिखारै री पूरी ई आपरी आंट सूं लिखयोड़ी कथावां व्हैगी। वै आधुनिक संदरभां में आं परम्परागत कथावां रा ऊडा गडियोड़ा अरथ अर सगती नै चोड़ै लावण में समरथ है। वां री भासा राजस्थांन रै गद्य नै पुख्ता नींव देवै। वै आपरी कथावां राजस्थांन रै अेक छोटै क गांव सूं लेवै अर वां री भासा धरती री सोरम सूं हळाबोळ लागै। वै राजस्थांनी भासा री सबदावळी रै समचै हद ई खरा अर सांचा दीसै। वां री अभिव्यक्ति री फूठरापो अर प्रवाह वां नै न्यारा ई ओळखावै, जठै वां री जोड़ रो दूजो कोई कोनी लागै।

लारला पचीस बरसां में राजस्थानी साहित खुद री अवखायां अर नवा विगै सोधण सारू आफळियो। वो परम्परावां सूं आपरी कथावस्तु ली अर नवी जमीन तोड़ण सारू पसरो। नवा प्रयोग, नवा कलपनावां अर विसयां सूं नवा-नवा बरतावां री मनसा राजस्थांन री सिरजणाऊ प्रतिभावां नै उतसाहित कीवा।

सुरगवासी गणेसीलाल उस्ताद जनकवी हा। वां उण जोगै बीगै अर आफळ नै सबद दिया, जिकी लोगां जागीरदारां हेटै भुगती। आजादी पछै वै कवितावां में हरख अर आसा जाहिर कीधी। हौळै हौळै वांरी कविता भरोसो खोवण लागी अर वां नै वां आसावां माथै

सक होवण लागो, जिकी रै पैली भविस सारू कीधी ही। कांई इणी आजादी सारू वै कवितावां रची, जिकी लोगां री उमीदां अर मनस्यावां नै साव ई पगां हेटै कुचळै ही, फगत राजनीति में लागा लोगां रा नीजू स्वारथां सारू। वै आपरा ऊंडा आकरा व्यंगां सेती अं नवा, सत्ता रा भूखा, जोड़-तोड़ करवाळा लोगां माथै काटकिया। उस्ताद रौ लोगां री साधारण जबान माथै असाधारण इकार हौ अर ठीकोठीक अर खरौ-खरौ कैवणौ वां री खास गुण। वां री जबांन में खुसामद जैड़ी चीज रौ लवलेस ई नीं हौ। वां री कवितावां में नीं सरलीकरण लाधै, नीं कोई दूजी गैर जिम्मैदारी। उस्ताद गणेसीलाल राजस्थांन री प्रतिबद्ध कविता सारू हमेंसा आगीवांण जाणीजैला।

मेघराज मुकुल आपरी कविता सैनांणी जिकी के अेक मध्यजुगी इतिहासू घटणा माथै टिकियोड़ी ही—लेय'र सांमी आया। घटना मुजब नायिका इण सारू आपरौ सीस उतार'र सैनाणी रूप देय देवै क्यूंके उण रौ घणी लड़ाई में जावतां मन काठौ-काठौ करै। मुकुल अेक सांगोपांग वाचक है अर हजारां लोगां नै अचळ बांध्यां राखण री खिमता वां में पूरी। वां कनै सांतरी आवाज अर सुणावण री सगती दोनूं मिळ जुळ'र अैड़ी के भला-भला कवियां नै अेकानी बैठाय देवै। आगै चाल'र वै कवितावां नै छोड़ी अर गीत ई गीत मांड्या।

आजादी री लड़ाई रै दिनां रेवतदांन करसां री स्थगित छोडियोड़ी क्रान्ति नै कविता रौ विसै कियौ अर जागिरदारां रै खिलाफ वां रै विद्रोह रा आगीवांण होया। वां री कविता असमानता रै खिलाफ हाको कीधो। वै पूरी रीस अर ताकत रै सागै समाज री अैड़ी अेकू अेक चीज माथै काटकिया, जिकी ल्हौड़-बडाई री हिसाबदारी बणायौ राखण में मदद करै ही। वै किसांन-क्रांति रा गीत गाया अर करसां नै जागिरदारां सू आखरी लड़ाई सारू चेताया। वै करसां रै जीवण रा कवळा छिणां, रात-दिन रा कळापां अर वां री मनस्यावां नै ई आपरा गीतां रौ विसै बणायौ। वीयां वां री सबदावळी साव सीधी पण फेरूं ई उण सबदावळी में आपरै ई किसम री तीख-तेज ही।

सत्य प्रकास जोसी राजस्थानी कविता रै छेत्र में थोड़ा क मोड़ा पूगा, पैली वै हिन्दी में लिखता, पण ज्यूं ई वै राजस्थानी में लिखणौ सरू किधो, वां नै मानता ई मिळी अर लागो के कवी रूप वां कनै चोखो-भलो भविस। वै कविता री 'थीम्ज, समचै खूब बोल्ड हा अर नवा नवा छंदां अर मुक्त छंदां रा केई प्रयोग वै राजस्थानी कविता में किया। वां कनै अैड़ौ बिम्ब विधान हो जिको राजस्थांनी कविता सारू नवो हो। वां री काव्य 'राधा' राजस्थांनी कविता में 'माइल स्टोन' जाणीजै। वै नवी संवेदना रा कवी हा जिका राजस्थांनी सबदां नै मोड़ दियौ अर वां नै विसयां री नाजुक अपड़ तांई लेगा। वै आपरी प्रेरणावां लोक कविता सूं हासिल कीधी। वां नै कविता सुणावण री ई सांतरी आंट ही। वै अैड़ा पैला कवियां में सूं हा जिका अेक 'इन्डीजवल' रै जीवण री अंदरूणी हालतां नै उजागर कीधी अर भावुक छिणां नै अभिव्यक्ति दी अर आं सारू कविता रै माध्यम नै गंभीरता सूं लियौ। वां री कवितावां में अेक मनोवैग्यानिक गहराई लाधै।

कन्हैयालाल सेठिया फेर अेक अैड़ा कवी जिकां री कवितावां में गाढ़ अर गहराई लाधै। वां री कवितावां री आपरी नीजू खासियत। चटकी, हाजिर जवाबी अर भासा री फूठरापो याद राखै जैड़ो। वां रा लम्बा अर दमदार रूपक कलपना रा परस्पर विरोधी रंगां री मारफत आगै वधै अर आ वां री अैड़ी खासियत, जिकी वां नै राजस्थांनी कविता में न्यारो निरवाळी ठोड़ देवै।

गजानन वरमा आपरी प्रेरणावां लोकधुनां सूं हासिल कीधी। वै राजस्थांन रै पारिवारिक जीवन नै पद्यबद्ध कियो, जिको लोक कविता में आपरी ई किसम सूं आवै अर उण री खासियत जाणीजै। गजानन राजस्थांन रा लोकप्रिय कवी है। विस्वनाथ विमलेस अर बुद्धिप्रकास हास्य-व्यंग री कवितावां लिखी। नानूराम संस्कर्ता ग्रामीण जीवण रा कवी है। राजस्थानी कहावतां अर मुहावरां माथै पूरमल इधकार री वजै सूं वै न्यारी ई भांत रा कवी लागै। कल्यांण सिंघ राजावत अर रघुराज सिंघ हाडा प्रेम गीत गाया अर अवसाद रा छिणां नै अभिव्यक्ति दी।

ऊपर गिणायोड़ा सगळा कवियां री राजस्थांनी कविता री खास-खास प्रवृतियां नै बणावण अर विगसावण में महताऊ भूमिका रह्यी। पण सन् ६० रै पछै अेक खास ढाळै री चुप्पी अर सूनमून राजस्थांनी कविता में पग पसारतो लाग्यो। अैड़ो लागतो के आ चुप्पी अेक नवै मूवमेंट री उडीक में ही। अर सेवट कवियां रो अेक साव नवो ग्रुप दीठाव में सांप्रत आयो। ओ ग्रुप पैली आळा कवियां नै अवमूल्यित किया। वांरा कविताऊ आधारां नै काचा अर कूड़ा बताया। अै कवि छंद अर छंद विधान री बंधिसां नै अळगी करवा री कोसिसां ई कीधी। वां रो विसवास नीं कवी-सम्मेलन में है, नीं कविता रा अैड़ा मांवठा समूही वाचना में। फिलहाल लागै के कवियां रो ओ नवो ग्रुप राजस्थांनी कविता नै नवो जीवण अर नवो आधार दे सकै। मणिमधुकर, तेजसिंघ जोधा, गोरधनसिंघ सेखावत अर पारस अरोड़ा इण नवै मूवमेंट रा आगीवांण है।

आ बात कोनी के राजस्थांनी साहित कोरो कविता रै छेत्र में ई विकास पायो व्है, वो गद्य रै छेत्र में ई पूरी ताकत सूं आगै वधियो। निवंध, कथा, उपन्यास, नाटक अर रिपोर्ताज सगळै छेत्रां में साहित नवी नवी माठ-मरजाद तांई पूगो अर स्तर हासिल कियो।

मुरलीधर व्यास आजादी पैला सूं ई कथावां लिखवा में लाग्योड़ा हा अर वै आपरा संस्मरणां, रेखा चित्रां अर कथावां री मारफत अब तांई अेक सांतरी सामाजिक जागरूकता पैदा कर दी। वां रो कहांवता अर मुहावरां माथै सांतरो इधकार है, जिण सूं वां री अभिव्यक्ति रो फूठरापो वधै अर वै आपरा चरितां नै खूब ढग सूं खोलै। वां रा चरित वीयां तो मरुरी व्है पण आपरी मनोवैज्ञानिक समस्यावां रीव जै सूं यूनिवर्सल व्है जावै। नरसिंघ राजपुरोहित, डॉ. मनोहर सरमा, मूळचन्द प्राणेस, वैजनाथ पंवार, नांनूराम संस्कर्ता अर दूजा ई कई होळै-होळै कथावां रै छेत्र में आया। छेत्रीय, ग्रामीण अर पारिवारिक समस्यावां आं री लिखावट रो खास विसै रह्यी।

राजस्थांनी अजै अेक पनपती भासा है अर इण में उपन्यास लिखवा री ई केई पैलापैल आळी सी कोसिसां व्ही है। जे आपां वां री विसै-सामग्री अर स्टाइल नैं दूजी विकसित भासावां रै जोड़ाजोड़ देखां तो लागै राजस्थांनी नैं इण छैत्र में हाल आपरो कांम करणो है। हाल तो फगत सरुआत ई है। श्रीलाल नथमल जोसी, अन्नाराम सुदामा अर यादवेन्द्र सरमा चन्द्र इण धकी आपरी कोसिसां कीधी है। पण कथा-लेखण री असली ताकत अजै ई लोक-कथा लिखारां रै हाथ में है। लोक कथावां री मारफत सामाजिक जीवण नैं चितरावण री विजयदांन देथा री प्रतिभा-साळी कोसिसां री आपरी कथा है जिकी पूरो बखांण मांगै। वै लोक कथावां अर वां री कड़ियां नैं छोटा उपन्यास के उपन्यास सारू बरतै। 'टीडो राव'हा 'इस्टू खां' अर 'आठ राजकंवर' राजस्थांन रै कथा-साहित रै इतिहास में हमेसां नांमी जाणीजती रैवैला। वां री ६०० पेज मोटो 'मां रो बदळो' उपन्यास जिको' के दो जिल्दां में है, सामंती व्यवस्था माथै व्यंग करै अर उण रा हिया-दिया बापरा मांन मोलां नैं उघाड़ै अर पोछड़ी मिनखपणै री लांठाई नैं थरपै। औ उपन्यास अेक लांबी लोककथा माथै आधारित है, पण इण रो विकास, विस्तार अर कथावस्तु, चरित अर घटनावां परोटण री सैलीगत आंट साव आधुनिक उपन्यास जैड़ी है। औ उपन्यास राजस्थांन री जीवण सगती नैं लोककथा री मारफत सामी लावण री विजयदांन देथा री बातां-ख्यातां विगतावै जैड़ी कोसिस जाणीजैलो। सामाजिक अन्याव, बुराई अर पाप री धारणा उण बगत रै राफट-रोळियै अर पीसै री खोटी भूमिका इत्याद नैं इण उपन्यास में हद ई नांमी अभिव्यक्ति मिळी। रांणी लिछमी कुमारी चूंडावत, मूळचन्द प्राणेस अर डॉ. मनोहर सरमा ई लोक अर दंतकथावां री थीम्ज नैं आधुनिक संदरभां में कथा लेखण रो विसै बणायो।

आ लागै के राजस्थान रो लेखक आपरी सांस्कृतिक ओळख री तलास में है, जिकी के ग्रांत रै लोकसाहित में पैंजी सूं ई त्यार पड़ी दीसै। इण री मारफत राजस्थान रै मिनख नैं उणरी आपरी मनोवैग्यानिक बुणगट में समझीज सकै।

राजस्थानी साहित री लारला पचीस बरसां री कथा अधूरी रह जावैला जै आपां वां कोसिसां नैं याद नीं करां, जिकी के राजस्थानी नैं भासा रूप थरपण सारू व्ही। जीयां के पैली कह्यो सीताराम लालस अेकलै हाथ अेक लांठो राजस्थानी-हिन्दी सबदकोस त्यार करबा में लाग्योड़ा है। औ आठ मोटी जिल्दां में ४ लाख रै अेड़े-छेड़ै सबदां नैं परोटैलो। 'ब' वर्ण तांई री जिल्दां तो छपगी है। सीताराम राजस्थानी व्याकरण माथै ई अेक पोथी लिखी अर इण काम नैं नरोत्तमदास स्वामी अेक दूजी महताऊ पोथी लिख'र आगै बधायो। अबार ई सिकागो विस्वविद्यालै रा प्रो. कालीचरण बहल राजस्थांनी व्याकरण माथै अेक नवी किसम री अर नांमी कोसिस कीधी। प्राचीन अर मध्य-जुगी राजस्थांनी कवियां रा काव्य अर टीकावां प्रकासित करवा रो कांम ई होयो है। प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, जिण नैं के राजस्थांन सरकार थरपियो, केई महताऊ कांम सांमी लायो। 'मुहता नैणसी री ख्यात', 'बांकीदास री ख्यात', 'वीरमायण', 'रघुवरजसप्रकास', इत्याद कीं अेड़ा कांमां रा नांव है जिका इण संस्था री मारफत सांमी आया। बदरी प्रसाद साकरिया 'नैणसी री ख्यात' माथै महताऊ कांम कियो। नैणसी रो गद्य आधुनिक लिखारां सारू देखाभाळी रो विसै व्है सकै। दूजी ई केई संस्थावां

है जिकी राजस्थांन री प्राचीन पांडुलिपियां रै प्रकासण अर सोध रै कांम में लाग्योड़ी है। राजस्थांन विद्यापीठ उदैपुर, राजस्थांनी सोध संस्थान जोधपुर, सादूळ रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर, रूपायन संस्थान बोरूंदा, राजस्थांन संस्कृति परिसद जैपुर, राजस्थांनी सोध समिति बिसाऊ अर पिलांणी सोध संस्थान पिलाणी, राजस्थांनी साहित अर भासा सारू ठावौ कांम करवा में लाग्योड़ी है।

अै सगळा ई संस्थान तिमाही के माही छापा काढै। सोध पत्रिका (उदैपुर), परम्परा (जोधपुर), वरदा (बिसाऊ), मरुभारती (पिलांणी) अर लोक संस्कृति (बोरूंदा) राजस्थांनी साहित अर संस्कृति रा नांमी छापा है।

साहित रो छेत्र साव सूनो व्है जावै जे किणी भासा में छापा नीं छपै। अबार री घड़ी तीन महताऊ छापा—'मरुवांणी' (जैपुर), 'ओळमो' (चूरू) अर 'जलमभोम' (बीकानेर), राजस्थांनी रै आधुनिक लेखण नै मुंडागै लावण में लागोडा है। बीयां तिमाही के माही छापा काढवा री केई कोसिसां होई व्हैला, पण वै सफळ नीं व्ही। लारला पचीस बरसा में १० रै लगैटगै पत्रिकावां मुंडागै आई, पण बंद व्हैगी—पीसां रै तोटै के राज-समाज रै गिनार नीं करणै सूं।

असल में संविधान री मानता रो तोटो राजस्थांनी भासा रै विकास अर समाविक वधापै सारू लांठी खांमी व्हैगी बीयां सविधान किणी भेदभाव सारू कोनी कह्यो पण सांचमांच में कवियां अर लिखारां नै सरकारी जरिदां री मारफत आपरी पोथ्यां छपावण सारू घणो पनणो पड़ियो। सरकारी खरीद आपांरै अठै पोथ्यां सारू लांठो स्यागो व्है। राज्य सरकार री सामान्य सिक्षा नीती राजस्थानी भासा री समस्या नै अदेखी कर' र चाली। आ फगत केन्द्रीय साहित अकादमी री मानता मिळियां ई तोजी बैठी के राजस्थांनी साहित थको थोड़ो-घणो नायळ थांन दिरीजणो सरू व्हियो। आ अकादमी री मानता राजस्थांनी साहित सारू मोटी बात व्ही। अर वो देस रा साहित पारखियां रो घणो आभारी है के वै राजस्थांन री संस्कृति अर उणरी भावाऊ मनसा री कदर कीवी अर उण रै सांच नै सिकारचो। बीयां राजस्थांन सरकार ई राजस्थांन साहित अकादमी री थरपना कीवी है अर उणरो मुख्यालै उदैपुर में है। आ अकादमी हिन्दी, राजस्थांनी, उरदू अर संस्कृत च्यारूं भासावां रा कांम देखै। अबार १९७२ मे आ अकादमी आपरी अेक न्यारी स्वायत साखा राजस्थांनी साहित सारू बीकानेर में थरपी। राजस्थांन साहित अकादमी कविता, कथा, निबंध इत्याद रा सांव०ा संकलन ई काढ्या है अर केई लिखारां री न्यारी न्यारी पोथ्यां नै ई प्रकासित कीधी।

आ बात ई मन वधावै के राजस्थान रा विस्वविद्यालयां राजस्थांनी भासा अर साहित में रुची दिखावणी सरू कर दी। आं ई दिना (१९७०-७१) राजस्थान विश्वविद्यालै जैपुर अर जोधपुर विश्वविद्यालै जोधपुर, राजस्थानी भासा रा च्यार परचा आपरी स्नातकोत्तर कक्षावां में सरू किया है। आ उमीद ई है के उदैपुर विस्वविद्यालै ई आं रै सागै व्है जावैला। हायर सैकण्ड्री बोर्ड ई राजस्थानी नै १९७२ सूं अेक अैच्छिक विसै-रूप लागू करवा में लाग्योड़ो है। हरेक भासा री आ बुनियादी जरूरत व्है के वा भणाई रै किणी न किणी स्तर माथै पढ़ाईजै। देस री

आजादी अर लोगां रै दिमाग री जनतांत्रिक संवेदना ई छेत्रीय संस्कृति अर साहित रै विकास री गारण्टी है। राजस्थानी साहित अब होळै-होळै समाज में आपरै हक री जागा पावण में लागोड़ी है। बेगौ ई अेक बदळाव उणरी भूमिका अर स्तर में आवैलो। लारला पचीस बरसां में अेक पुख्ता नींव दिरीजगी है, जिण माथै वो आपरो सभाविक विकास कर सकै।

आ सांच है के देस रा सगळी भांत रा साहितिक आंदोलनां री पड़गूंज राजस्थान रै साहित में होई। परम्परावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, प्रतीकवादी, बिम्बवादी, प्रतिबद्ध अर अप्रतिबद्ध सगळो ई भांत रा कवी अर लिखारा राजस्थानी लिखारां में लाधै। मुक्त छंद अब राजस्थानी में मानीजतो सांच है। अब नवा प्रयोगां अर विसयां सूं लोग कोनी बिदकै। राजा राणियां अर रोमेंटिक नायक-नायिकावां अर के उच्च मध्य वरग रा लोग के टाळवां बौद्धिक लोग अब साहित रो विसै कोनी रह्या। साधारण आदमी आपरी आयै दिन री आफळ साग साहित री सिरै विसै व्हैगी। मिनख राजस्थानी साहित मे पैली वळां अेक मनोवैग्यानिक-सामाजिक ईकाई रै रूप में सांमी आयो है, बिना किणी ताकत, धन के जात री ऊंचाई री मोद-मिजाज लियां।

१९४७ सूं १९७२ ताईं राजस्थानी भासा खुद नै प्रांत सारू कांमयाब साबित कीधी। राजस्थान रा साहितिक विदवांनां लंबै वगत ताईं लिखापढी रा सगळा गेलां अणूती आपच कीधी। वां नै राजस्थान रै इतिहास अर राजस्थानी साहित री परम्परावां माथै कांम करणो हो। राजस्थानी भासा में खुद री रुची जगायोड़ी राखणीं ही। नवी पीढी सारू लिखणो हो। भासा रो मानक-रूप अर भासा अर लिपी री अेकरूपता रो कांम देखणो हो। कोरो खुद री कोसिस सूं भासा सीखणो हो। छेत्रीय संस्कृति रो अध्ययन अर अनुवाद करणो हो। संसार री दूजी भासावां क्लासिक्स री पढ़ाई करणी ही। इत्तो कीं करियां वै राजस्थान रै साहित रो विकास करवा में समरथ व्है सकता। अेकू-अेक चीज राजस्थान सारू नवी ही। आ फगत आजादी री देण ई ही के राजस्थान रा मिनख आपरी सांस्कृतिक ओळख हासिल कीधी अर उण ओळख नै जग-जाहिर करवा रो कांम कीधो।

(उल्थौ—अमर सिंघ)

* * *

नवा संपादक

अक्टूम्बर १९७७ सूं 'जागती जोत रो' संपादन दीनदयाल ओझा-करैला। वां रो

पतो— दीनदयाल ओझा

संपादक जागती जोत (मासिक)

मारफत-राजस्थानी भासा साहित संगम

कोटगेट, बीकानेर।

उपन्यास री पछेती खेंप

खुलती गांठां

पारस अरोड़ा

लाभजी जोधपुर आया। ब्याव री बात माथै राता-पीळा ई व्हिया अर पाछा राजी-राजी गया ई परा। सूरज नैं इत्ती उम्मीद नीं ही के सगळी बातां यूं सैज रूप सूं निवड जावैला। लाभजी रै गयां पछै वो निरभै व्हैगो। अबै उणरै भेजै में आ बात जमगी के हिम्मत राख'र, नैठाव सूं सोच-विचार कर, योजना बणाय'र कियां, सै कीं व्है सकै। हिम्मत रै हिवोळै चढ़'र अबै उणनैं लखावतो के तारा सूं ब्याव करणो ई, मैड़ो कीं मुस्किल काम कोनीं।

लाभजी जावण सूं पैली उण नै कीं दूजी बातां ई बतायगा। ज्यूं के ठाकर सा रा काम सारू वां नै खुदरी रकम किरपारामजी कनै धरणी पडी है।....के आमा म्हाराज नैं आं दिनां आपरा बेटा मोवन री घणी ओळूं आवै, कठैई देखै तो ध्यांन राखजै। के वै किरपारामजी नै कैय दियो है के ब्याव छोरा नै करणो है अर छोरो थारै कनै है, गांनै तो मनाय लो। लारै जावतां वै आ ई कैयगा के व्है सकै इण उत्तर सूं के किणी दूजै कारण सूं सेठजी रै के वांरा घरवाळा रा बरताव में फरक आयजा, या रिपिया-पैसां री तंगी पड़जा तो म्हनै लिख दीजे। हां, उमरावचद सा आली छोरी स्यामा रो ई ध्यांन राखजे। रिस्तो वो ई फोरो नीं है, म्हैं पतो लगवाय लियो हूं।

लाभजी रै गयां पछै किरपारामजी रै घर री वातावरण बदळण लागो इज। घर में सगळां नै ठा पड़गी के ओ छोरो निरमळा सूं ब्याव री ना कर दी है। सेठाणी जी रो हेत फीको पड़गो। धा सा रै कमरै सूं ठाकुरजी रो परसाद आवणो बंद व्हैगो। घर रा वड़ा-बुजरगां रै चैरा माथै थोथी मुळक व्हेती के लिलाड़ माथै सळ। सेठजी ई कै दियो के प्रेस रो काम सीखणो इज व्है तो तीन-चार घंटा बैठण सूं काम नीं चलैला, आठ घंटा तो कम-सूं-कम भरीजणा इज चाइजै। अर कालै जद वो रात रा इग्यारै वजियां घरै जाय'र

घंटी बजाई, उण बगत मांय सूं खतरा री घंटी बाजगी। सैठांणीजी नौकर नैं कैवता सुणीज्या—'सूरजप्रकासजी नैं कै दीजै रे पन्ना कै नउ बजियां तांई घर में आ जाया करौ। चौईसूं घंटा आडा खुल्ला नीं राख सकां। जमानौ खराब है। अेड़ीज सहूलियत चइजै तौ सैर मांयली हवेली में तिपड़ै माथलौ कमरौ खाली है।' इत्तौ केय'र बड़बड़ाट करता गया परा—'ओ कंई आवणौ! घर है के धरमसाळ है, वा भई वा! आ हाजरी चोखी।······ अर जद चवदै बरसां री नौकर छोरौ पन्नौ दरवाजौ खोलियौ, तौ उणरैं कीं कैवण सूं पैलीज सूरज उणनै इसारा सूं समझाय दियौ के वौ सैंग सुण चुकौ है।

दूजै ई दिन रतन अर निरमळा पैली तौ मां सूं अटकिया अर पछै बाप सूं। खासी गरमा-गरम बातां व्ही। सूरज उणी बगत बंगलौ छोडणौ तेवड़ली। रतन उणी बगत स्कूटर लेय'र वहीर व्हियौ जिकौ सूरज सूं मिळ-मिळाय'र दोय घंटा रै मांय-मांय उणनै जाळोरी गेट रै मांय अेक कमरौ किरायै दिराय दियौ। थोड़ोक आगै इज कबूतरां रा चौक कांनी सोम री मकान। रतन जद मकान मालिक सूं किरायै आद री बात करतौ, तद सूरज बारै आय'र सोचण लागौ के आ कैड़ी बात—अेक मुसीबत खतम व्है तौ दूजी पैदा व्हेजा। पैली जी सा रौ डर हौ, वौ खतम व्हियौ तौ रैवण री समस्या आयगी, आ खतम व्ही तौ अबै प्रेस री चिन्ता है के उठै सेठजी रौ कांई बरताव रैवैला?

कमरा री बात निंवेड़'र दोनूं अेक होटल में आय जम्या। सूरज जद रतन नैं प्रेस जावण री बात कैयी तद रतन बोल्यौ—'देख के आज तौ अबै प्रेस जाइजै मत। अबार तौ खाणौ-वाणौ खाय'र बारै बजियां वाळी पिक्चर में घुस जावांला। पछै बंगलै सूं थारौ समान लिआंवाला। कीं जरूरत री चीजां खरीद लेवांला। सिंझ्यारा म्हैं फेर बाबूजी सूं बात कर लूंला। सूरज रतन री बात हांकरतौ थकौ सोचण लागौ कैसी बीती है आज। आज रौ सूरज तौ म्हारै वास्तै खोटी इज ऊगियौ। दिन ऊगतां ई घर छोड़णौ पड़ियौ। जद कैवै के जिणरा जित्ता अंजळ जठै लिखियोड़ा व्है, उत्ता इज भोग सकै। कित्तौ हेत हो बाईजी (सेठांणीजी) रौ म्हारै माथै। सगळौ जांणै कपूर व्है ज्यूं उडगौ।···इणनै कैवै जिंदगानी री लड़ाई भगवाना! आदमी जद खुदरै आपै ऊभौ होवण री कोसीस करै तद उणनै ठा पड़ै के कित्तौ जोर चाइजै टांगां में ऊभौ होवण सारू। हाल तौ बाप-कमाई माथै बरस बिताया है कवर सा! आप-कमाई सूं दिन तोड़णा पड़ैला जद ठा पड़ैला थनै!···

•

झांझरकै री बगत। हाल गांव में पूरी जाग नीं व्ही ही। तळाव रै पसवाड़ै अर गांव रै किनारै आयोड़ा भांबियां रा कीं ढूंडा। छैलौ झूंपड़ौ काळू भांबी रौ। झूंपड़ा रै आखती-पाखती दो हाथ जमीं छोड़'र कांटां री बाड़। बाड़ में इज अेक छीण रै टुकड़ै माथै मूतण सारू वैठौ भैरां लेवतौ काळू की खुड़कौ सुण'र चेतन व्हियौ। झूंपड़ै रै पन्दरै-बीस पांवडां लारै अेक नीम कनै किणी री ऊंट झेकावण री अवाज सुणीजी। नीमड़ै लारै कोई ऊभौ हो। ऊणी बगत तळाव कांनी सूं दोय जणा आवता दीस्या। अेक जणै रै कांधै कोई

भारी पोट ही। काळू मीट जमाय'र देखण लागो। आवणाळा मांय सूं अेक पोट नै ऊंट माथै राखी अर दूजोड़ो माथै बैठ'र पोट नै सभाळतां ऊंट उभो कियो, उणी वगत नीमड़ै लारलो मिनख आगो आय'र ऊंट आळै नै रवानगी दी। काळू रवानगी देवणियै नै ओळख लियो। अर उणरै काळजो कळजळ मचगी। आखै सरीर में अेक तणाव बापरगो। वो मनोमन विचारण लागो के औ दुस्टी आज किणरै काळजे हाथ घालियो ? पछै वो जावतोड़ ऊंट कांनी मीट गडाई। ऊंट आंथूणी जैकिसना रा खेतां कांनी जावतो हो। काळू झट वारै आय आंथूणे अेक डूवै माथै आय ऊभो। हाल पूरो उजास नीं व्हियो हो तो ई अेक काळो आकार ऊंट रो दीसतो हो। ऊंट ढांणी आळी डांडी मांयं मुड़ियां पछै दीखणो बंद व्हैगो।

काळू उण नीम कनै आय'र ऊभगो, जठै पैली वै लोग भेळा व्हिया हा। वो सोचण लागो के व्हो-न-व्हो वो ऊंट माथै सैताना री ढांणी आळो सेतो व्हैणो चाइजे। नै उण जोधसिंघ नै दुस्टी नै तो म्हैं अंधारै में पड़छांवळी देख'र ओळख सकूं। दोय वरसां पैली औ म्हारै काळजै ई हाथ घाल चुको है। अर वो चितरांम काळू री आंख्यां पसरगो। "पूना रै खेत में वो आपरी वेहोस चंपली री गांठ न्हाक'र जावतां सांप्रत देख्यो हो। छोरी दोय दिनां तक गायव रैयी। तीजे दिन झांझरकै वो जोधसिंघ नै गांठ पटक'कर जावतां देख्यो, जंगळ फिराक सारू आयोड़ा लाभजी ई देख्यो। पण कीं नीं व्हियो। लाभजी उणनै लेय'र ठाकर सा कनै पूगा। ठाकर सा सगळी वात सुन'र कैयो के जोधो नीं व्है सकै। अधारै में थां लोगां नै सावळ दीख्यो नीं व्हैला। सेवट बिलखतै काळू नै ठाकर सा पांच सौ रिपिया देय'र वेटी री वेगो व्याव करण री ताकीद कर वहीर कियो।.... उण वगत उणरी कीं नीं चली। करै तो करै कांई अर कैवै तो कैवै किणनै ? रैवणो तो गांव में इज है।" पण वो जद कदैई जोधा नै देखतो, उणरो खून उछाळा खावण लागतो, सरीर में अेक तणाव खिंच जावतो। अर आज,...आज फेर किणी रै काळजै खाडो पड़्यो व्हैला। पण किणरै ? अबार ठा पड़जा ला। अर वो अेक बीड़ी सिळगाय'र तळाव कांनी पग धरिया।

ज्यूं-ज्यूं दिवाळी नैड़ी आ रैयी है, त्यूं-त्यूं सैर री रौनक वधती जा रैयी है। अबै दिवाळी आडो एक हफ्तो। दुकानां रंग-रोगन व्हैय'र सजगी है। घरां में हाल सफाई-पुताई चल रैयी है। लोगां नै पुताई करणिया कारीगर नीं मिळ रैया है। आमजी-थामजी ई पन्द्रै-पन्द्रै रिपिया दैनगी मांगै। सूरज ई आपरै कमरै री पुताई करावणी चावतो। कारीगर सारू सोम नै कैयोड़ो।

कमरो लियां पछै सेठजी सूं रतन री मारफत बात तै व्ही के सूरज रोजीना आठ घंटा विना नागा भरैला। सेठजी हाथ-खरचै सारू डेढ़ सौ रिपिया देवैला। सोम इण वावत राय दिवी के हाल-फिलहाल ठीक है, वम्वई सूं म्हैं पाछो आय जावूं, पछै कीं दूजो वात

सोचांला । अर सूरज बिना नागा प्रेस जा रैयो है। प्रेस में वो दिन भर प्रेस रो कच्चो खरच-खातो लिखै अर सगला बिल, रसीद, वाउचर आद केवट'र राखै अर सिझ्यारा 'पार्ट टाइम'में आवणिया मुनीम जी नै संभलाय दै। हिन्दी री प्रूफ-रीडिंग देख लेवै । कांम पड़ियां उगाई माथै के वैंक आद रै दूजा काम सूं ई अठी-उठी जाय आवै। सेठजी प्रेस में नीं व्है तद करमचारियां सूं गप-सप कर लेवै ।

पण इण सगलै कांम विच्चै वो आ जरूर देखी के सेठजी कीं भारी मनां उणसूं बात करै । कम बतळावै । बतळायां हां-हूं कर टाळ दै। पैली हरेक बात में ज्यूं राय लेवता—देवता वा बात अवै नीं रैयी। वो देख्यो के निरमळा री चिन्ता अवै वां नै पाछी सतावण लागी है। अेक बार तो वै निरमळा नै ई कै दियो के अबै वै साल-छै मईनां सूं वत्ती जेज नीं करैला अर नीं किणी री ना सुणैला। दोयेक दिनां रैली तो सूरज सेठजी री बात सुण मूंडो इज देखतो रैगो। सेठजी प्रेस में वैठा आपरै एक दोस्त सूं बात करता हा। निरमळा री बात चली। बातोबात में दोस्त बोल्या के कठैई छोरी तो खुद छोरो नीं देख लियो ? सेठजी उत्तर दियो—'अरे भई, वो ई कीं कैवै तो सरो ! कीं ठा तो पड़ै ! म्हांरी एक चिन्ता तो मिटै के छोरो देखणो है। पछै ओ इज देखणो रैवै के कुण है, कई करै, कई नीं करै ? पण खुद ई कीं मूंडा सूं तो कैवै जद !' अर आ बात कैयां पछै वां रो मूंडो सळां भरीजगो अर कीं बिगड़गो हो जांणै कोई खारी चीज गळै हेटै उतारी व्है।

सेठजी री ओ रुख देख'र सूरज नै लखायो के अवै निरमळा अर सोमनाथ नै ई जेज नीं करणी चाइजै । निरमळा तो तैयार इज है पण सोमनाथ माथै बात अटक्योड़ी है। वो एक निजू काम सूं बम्बई रो चक्कर लगाय'र आयां पछै इज व्याव रै बारै में निरणै लेवैला। अर बम्बई रो ओ चक्कर…कोई भारी चक्कर है। उणरो मन कैवै के इण मामला में जरूर वो सोम री डायरी मांयलो दीनू पटेल जुड़योड़ो है। ओ आपरा बम्बई चक्कर रै बारै में कोई नै नीं बतावै। पैली ई ओ बम्बई जावतो-आवतो रैयो है। मडोर गोठ में चाल्या जद ई ओ बम्बई सूं आयो हो। निरमळा ई कैयो के इणनै किणी री तलास है। किणरी ? स्यात् दीनू पटेल री !

आज म्हैं ई कीं खोद'र पूछ लूं, देखां कीं बतावै तो ! पुताई करणियै री ई पूछ लेवूंला । आ सोच'र सूरज सिझ्यारा प्रेस सूं निवड़ सोम रै घर कांनी वहीर व्हियो। सोजती गेट आय'र आंख्यां तांणी। पांन रै ठेलै माथै अर दोयेक दूजा जांण-पिछांण रा लोगां नै पूछ्यां पतो लागो के सोम घटे भर पैली अठीनै आयो हो, घरै जावण री कैवतो । सूरज अेक पान खुद खायो, अेक सोम रै वास्तै वधवायो अर उणरै घर कांनी पग धरिया। सोम रै घरै पूग्यां देख्यो के वो जीम'र ऊठ्यो इज है। वो उणनै पान री पुड़ीकी झिलाई । सोम पान देख'र राजी व्हैतो उणरै साथै कमरा में आय जम्यो। टेबल माथै ओस्त्रोवस्की रो उपन्यास 'अग्नि दीक्षा' पड़यो हो। सूरज अठी-उठी री बात करतां उपन्यास नै उलट-पलट'र देख्यो अर पाछो धर दियो।

सोमनाथ कुड़सी माथै इज कीं पसरतो बोल्यो—'रतन आयो हो अध-घंटे पैली ।'

'कंई कैवतो ?'

'ओ इज, के किरपारामजी बेटी रै वास्तै छोरो देखण सारू दिवाळी पछै अजमेर जावैला ! अेक जगै बात करी है ।'

सूरज बोल्यो—'हां, वै तो जावैला इज ! म्है सकै बात पक्की व्हैजा । अवै थनै ई कीं 'डिसीजन' लेवणो चइजै ।'

सोम घांटी हिलावतो बोल्यो—'म्हैं बंबोई सूं आयां पैली कीं नीं कै सकूं । बस, रामा-सामा रै दूजै दिन जा इज रैयो हूं ।'

सूरज कीं संकीजता थकां ई पूछ लियो—'ओ थारै बम्बोई रो कंई चक्कर है यार ?'

सोम अेक निसांस न्हाक'र उण उपन्यास रा पाना फड़फड़ावतो बोल्यो—'है अेक चक्कर । अेक'''अेक आदमी सूं हिसाब बरावर करणो है ।'

'हिसाब ?'

'हां, हिसाब ! अेक बरसां पुरांणो हिसाब ।' अर सोम रै चैरै माथै अेक तणाव वापरगो हो । वो मूक्की बांध'र धीरै-धीरै किताब माथै ठपकारण लागो हो ।

'अैड़ो कंई हिसाब है ?' सूरज पूछ्यो ।

सोम उणरी आंख्यां में देखतो थको बोल्यो—'है अेक हिसाब ! थूं म्हारै सूं पक्को वादो करै तो बतावूं ।'

सूरज झट सोम रै गळै हाथ धरतो बोल्यो—'थारी सोगन, कोई नै नीं कैवूंला । बोल, कंई वादो करावणो चावै ?'

सोम बोल्यो—'पैली बात तो आ इज के म्हैं कैवूं जिको कोई नै नीं बतावैला । अर दूजी बात, म्हारी बात सुण्यां पछै म्हनै बम्बोई जावण सूं रोकण री कोसीस नीं करैला ।'

अर सूरज वादो कियो । । पछै सोम उणरै सांमी आपरी मन री गांठ खोली । वो बतायो के खिण बगत अेमदाबाद में उणरै पिता रै सरगवासी व्हियां पछै उणरी मां प्याऊ माथै मिल में नौकरी करती, उण बगत री बात है । उण बगत वो आठेक बरसां रो रैयो व्हेला । मिल री अेक मुनीम-दीनानाथ पटेल, जिणनै सगळा दीनू पटेल रै नांव सूं ओळखता । वो मिल मालिक रो आधो-नैड़ो रिस्तैदार ई हो केई वार वो आडी-अंवळी बगत सोम रा पिता मोतीभाई री पैसा-टका सूं मदद करी । पछै वो सोम री मां नै नौकरी दिरावण में रुची

लिवी । अेक दिन वो सोम री मां सारदा नैं छुट्टी व्हियां पछै अेक जरूरी काम बताय'र रोक लिवी । अर पछै……मिल रै गेस्ट रूम में वो कीं बदमासां रै साथै मिल'र सारदा रै साथै आपरो मूंडो काळो कर लियो ।

सारदा इण हादसै पछै केई दिनां तांई अधगावळी ज्यूं रैयी। कोई सूं बात नीं करती अर रोवती रैवती। दीनू दूजै दिन सूं इज फरार हो। मिल रा मजूरां आद में ई सारदा अर दीनू नै लेय'र चरेचा ही। सारदा केई लोगां सारू तमासो अर बातां करण री मुद्दो बणगी ही। सेवट रमजान चाचा री मदद सूं सारदा अेमदाबाद रै उण अमूझ रै वातावरण नै छोड'र जोधपुर आयगी ।

सोम बात नै पूरी करतो बोल्यो—'म्हैं उण बगत घणो छोटो हो सूरज ! पण वै दिन भूलाया नीं भूलीजै अर जीवूं जित्तै नीं भूल सकूं । जोग री बात के तीन बरसां पैलो कॉलेज स्टूडेंट्स रै अेक फंकसन में भाग लेवण सारू म्हैं बम्बोई गयो अर उठै दीनू पटेल रो पतो लागगो। वो उठै कपड़ां रो बौपारी है। म्हनै हर हालत में उणसूं बदलो लेवणो है । पचासां नेड़ी उमर लियां पछै ई उण आदमी रा अैब नीं मिट्या है। अेक अैयास री जिंदगी है उणरी। उणरै सतायोड़ी अेक छोरी ई म्हनै बम्बोई में मिळी। जित्तै गुनैगार नै सजा नीं मिलै, सूरज, वित्तै उणरा हौंसला बधता रैवै। अर म्हैं धारली हूं के म्हैं उणनै सजा जरूर दूंला। भलांई म्हनै जेळ जावणो पड़ै । कीं ई व्हो, म्हैं तो उणसूं बदळो लेवूंला इज। व्है सकै लोग म्हनै गेलो कैवै, इणनै म्हारी बेवकूफी, म्हारी नासमझी मांनै । छो मांनता ! म्हैं……' अर सूरज देख्यो के सोम धीरै-धीरै आपो खोय रैयो है ।

सूरज सोचण लागो के देखो, आदमी रै अंतस में किण गत दुख-दरद री पोटल्यां छिप्योड़ी व्है ? कोई नीं जांणे । म्हनै तो खैर थोड़ा दिन इज व्हिया है इण आदमी रै सपरक में आयां नै पण रतन अर निरमळा आद तो बरसां सूं इणनै जांणे, वां लोगां नै ई इण बात री पतो नीं। किण गत औ इण आग नै अंतस में दबायोड़ी राखी है। दीनू जेड़ै नीच नै तो सबक सिखावणो इज चाइजे। म्हैं सोम सूं सहमत हूं।

सोम आपरी बात कैय'र चुप व्हेगो अर सूरज उणरी बात सुण'र चुप। कमरा में अेक गरमीज्योड़ी सांयत पसरयोड़ी ही। उणी वगत सोम री मां कमरा में पग धरती बोली—'भाई काले बिलाड़ जायावो । काले उठावणो है । अेक रात रुक जाइजो नै पिरसूं दिनूंगा पाछा वहीर व्है जाइजो।'

सारदा रै कमरा में आयां पछै कमरै मांय पसरयोड़ो अमूझो धीरै धीरै तूटगो हो । सोम सावचेत व्हियो। उणरै चैरै सूं लखायो के बिलाड़ जावणो उणनै कीं रुचियो नीं है । वो बोल्यो—'थैं कैवो तो जाऊंला परो, पण म्हारी इछा नीं है।'

सारदा बोली—'नीं भई ! जीमण-चूंटण में तो नीं जावां तो ई सरजा, पण मौत-मरगत में तो जावणो इज पड़ै । कंई भगवांनजी ?' भगवांनजी कीं बोलै इणसूं पैलीज वा बोली—'नीं गयो तो ध्यांन राखजै, काले थारी मां मरगी तो कोई नीं आवैला, हो !' इत्तो कैय'र वा लिलाड़ माथै सळ घाल्यां पाछी मांयलै कमरै में गई परी ।

उणरै जावतां ई सूरज ई ऊभो व्हेगो। सोम उण सांमी सवालिया निजर सूं देख्यो। सूरज बोल्यो—'अवै चालूंला। थारी वात सुण'र तो भेजो घूमगो है सोम! थारै अंतस री पीड़ जरूर भारी है। दीनू जैड़ा आदमियां नै जरूर सजा मिलणी चाईजै। पण तूं सजा देवण री ओ कांम किण तरै सूं पूरो करैला, आ तो तूं इज जांणै। जरूर इत्तो कंवूंला के इण कांम में खुद नै बचाय'र राखणो जरूरी है। जोस में होस नीं गमावणा पड़ै।

सोम मुळक'र बोल्यो—'तूं बेफिकर रै। इण मामलै में कीं बम्बई रा लोग ई म्हारै साथै है। जदै इज तो इत्ता दिन लागा है, नीं तर जोस में आय'र तो ओ कांम म्हैं कदै ई कर देवतो।' इत्तो कंय'र वो सूरज नै रवानगी देवण सारू ऊठ्यो।

सूरज उठै सूं वहीर व्हेय'र मिनर्वा सिनेमा पूगो। रतन री वात उणरै दिमाग में ही के जद कदेई भेजो खराब व्है जावै के अणूंतो परेसानी व्है, उण वगत पिक्चर में घुस जावणो। गई तीन घंटा री। आज गांव सूं उणरो मनिआर्डर ई आयो हो। अेक होटल में खाणो खाय'र वो मिनर्वा आयो, उण वगत फिल्म छूटगी ही। भीड़ निकल रैयी ही। उणी वगत सूरज री निजर सांमी आवती भीड़ मांयनै अेक चैरै माथै जमगी। अेक पल रुक'र वो अवाज लगाई—'मोहन!'

इण अवाज रै समचै सांमी सूं आवती भीड़ मांय सूं अेक जणै रा पग थमगा। उणरै लारै आवती अेक लुगाई ई रुक'र सूरज नै देखण लागी। ओ ओमा म्हराज री बेटो मोहन हो, आपरी लुगाई साथै। मोहन सूरज नै ओळख'र हंसतो थको सांमी आवतो बोल्यो—'अरे वा भगवांनजी, वा! थे जबरा मिळिया!' कंय'र वो सूरज रो हाथ पकड़'र अेकांनी सिरकतो बोल्यो—'भीड़ है, अठीनै आवोरा।'

•

दूजै दिन दिनूंगा इज सूरज चाय-पांणी सूं निवड़'र सोम रै घरै पूगो। सोम री वात में अळूझ'र कालै वो पुताई आळै री बाबत पूछणी भूलगो। मोहन सूं मिळणै री खबर ई देवणी चावतो। घर रै बारै इज साग लेवण नै आवती सोम री मां मिळगी। सूरज नै देखतां इज बोली—थे ठीक आयगा सूरज भगवांन! थांरै सूं अेक कांम हो'।

'बोलो बाई, कंई कांम है?' सूरज पूछ्यो।

सारदा दरवाजै सूं अेकांनी व्हेय'र धीमै सीक बोलण लागी—'देखो के सोम तो अवार इग्यारै री बस सूं बिलाड़ै जावैला परो। थे सिञ्झ्यारा प्रेस सूं छूटियां पछै अेक वार अठी आ जाइजो, नै व्है सकै तो रतन नै ई लेता आइजो।'

'ठीक, सिञ्झ्यारा सातेक वजियां तांई म्हैं रतन रै साथै आ जावूंला।' सूरज हांकारो भरतो बोल्यो।

'वा जणै।' कंय'र सारदा तो साग लेवण सारू वहीर व्हेगी अर सूरज मांयनै पग धरयो। सोम अेक अटैची में साथै लेजावण जोग कपड़ा आद धरतो हो। सूरज जावतां ई पुताई आळै री बाबत पूछ्यो। सोम पाखती रैवणियै अेक छोरै नै बुलाय'र उण सूं वात

करवाय दी। पछै वो सोम नै मोहन रै मिळणै री बात बताई। सोम उण नै कैयो के श्रा तो घणी चोखी बात है। म्हांरै सूं उणनै मिळवाइजै। बाप सूं रूठोड़ो बेटो पाछो बाप सूं मिळजा तो डोकरो थारा गुण गावैला। मोहन थारै श्रर तारा बीचलै सबंधां में ई फयादेमंद व्है सकै। तूं उणसूं मेळ-मुलाकात करतो रैईजै। पछै वो कैयो के म्हैं बिलाड़ै जा रैयो हूं। कालै सिंझ्या तांई पाछो श्रावूंला। जित्तै तूं श्रेक चकारो श्रठी रो ई लगाय लीजै। बाई रै कोई छोटो-मोटो कांम व्है तो....'

'तूं बेफिकर रै यार! म्हैं किस्यो श्रागो रैवूं। सूबै-सांम श्रावूंला इज!' कैय'र वो उठै सूं बहीर व्हेगो। रस्तै में वो श्रेक इज बात सोच रैयो हो के सिंझ्यारा सोम री मां उणनै रतन समेत किण काम सारू बुलायो है?

दोफार री दो बज्यां री डाक सूं सूरज नै तेजसिंघ रो कागद मिळयो। सूरज लिफाफो फांड़'र कागद काढ़ बांचण लागो। ज्यूं-ज्यूं बांचतो गयो त्यूं-त्यूं उणरा होस उडता रैया। कागद पूरो पढ़्यां पछै ई वो उणनै ज्यूं रो त्यूं हाथ में लियां बैठो हो। वो ऊठ'र चुप-चाप प्रेस रै लारलै बारणै सूं निकळगो। श्रेक सिंधी री छोटी-सी चाय री होटल माथै जाय, चाय रो श्रोडर दैय'र पाछो कागद पढ़ण सारू काढ़ियो। खोल'र बांचण लागो—

'सूरज!

थारै जी सा सूं थारै राजी-खुसी रा समचार मिलगा हा। श्रां दिनां श्रठै श्रेक श्रैडी घटना घटी है के थनै कागद लिखणो जरूरी व्हेगो। थनै कांई लिखूं, समझ में नीं श्रावै। तीनेक दिनां पैली तारा तड़काऊ रा निपटण सारू गी, जिकी पाछी श्राई कोनीं। श्राखो दिन म्हराज गळी-गळी गाळियां काढ़ता फिरिया। रवळै सवार रा ई पूगगा हा, म्हैं म्हराज रै सांमीज तारा नै सोधण सारू निवळगो। काळू भांबी सूं कीं पतो लागो। काळू री बात सुण'र म्हारी हालत खराब व्हैगी, जांणै कोई म्हारो खून निचोय लियो। काळू कैयो के तारा नै गायब करण में म्हारा बडा भाई जोधजी रो हाथ है श्रर तारा सैताना री ढांणी में लाध सकै, खेतो लेगो व्हेला। उण बगत खासो श्रंधारो हो। काळू री बात सुण म्हैं ठाकर सा कनै पूगो। ठाकर सा सुण'र चित्रांम व्हेगा। पछै बोल्या के तूं पुलिस लैय'र ढांणी पूग, म्हैं जोवा नै देखूंला।

म्हैं पुलिस री मारफत तारा नै हांसिल करली सूरज, पण उण बगत उणरी हालत खराब ही। साफ दीखतो के इणरै साथै निरसंस तरीकै सूं बलात्कार व्हियो है। तारा री हालत देख'र म्हारी श्रांख्यां में पांणी श्रायगो श्रर म्हैं सोच्यो के म्हराज री कांई हालत व्हैला। खेता रै हथकड़ियां पड़गी। सिंझ्या तांई म्हैं श्रस्पताळ श्रर थांणै सूं निवड़ तारा नै लैय'र गांव पूगो। ठा पड़ी के ठाकर सा जोधसिंघ माथै गोळी चलाय दी। गोळी पूठ में खवै माथै लागी, तो ई जोधजी न्हाटगा है।

पुलिस जोधजी री तलास में है। ठाकर सा उदास व्हेय'र श्रापरै कमरै में बंद व्हेगा है। वां रो कैवणो है के जोधसिंघ गांव री इज बामण री बेटी माथै हाथ घाल'र ठिकांणै री नाक कटवाय दी। गांव में मूंडो देखावण जोगा नीं राखिया। म्हनै तो जोधजी

मांयं अणू तो इज क्रोध आ रैयो है। म्हैं थनै कांई जवाब दूं, बता? जोधजी नै सजा मिलणी इज चईजै।

दो दिन म्हारा इण परेसानी में कटगा के थनै कांई लिखूं? कीकर लिखूं? सेवट आज हिम्मत कर सगळी बात लिख दी हूं। गांव री वातावरण खराब है। अबार थनै अठै आवण री नीं लिखूंला। थूं पाछी ठंडै दिमाग सूं सोच समझ'र कागद जरूर लिखजै। व्हैगी जिणनै नकारीजै कोनी। अबै कांई व्है सकै, इण मांयं विचार करजै।

म्हैं थारै कागद री वाट उडीकूं हूं।

थारो
तेजसिंघ'

दूजी वार कागद वाच्यां पछै ई उणरो जीव ठिकाणै नीं हो। वो प्रेस आय'र मोवन जी फोरमेन नै कैयो के वो जा रैयो है। वावूजी पूछै तो कै दीजो के अेक जरूरी काम हो; इण वास्तै सूरज वावू गया परा। अबै आज पाछा नीं आवैला। अर वो अेक किरायै री साइकिल लेय'र निकळगो।

पछै प्रेस सूं वो रतन री कपड़ा री दुकान मांयं पूगो अर उणनै सगळी वात बताई। रतन कैयो के अबार तो नैठाव राखण रै अलावा कोई रस्तो नी है। गांव जावणो ठीक नीं रैवैला। दूजी वात तारा रै बारै में थनै नैठाव सूं सोचणो चाइजै। बात तो कावळ इज व्ही है। पण व्हैगी जिणरो कांई कियो जा सकै। उणी वगत सूरज रतन नै कैयो के सिंझ्यारा सोम रै घरै चालणो है, बाई बुलायो है।

रतन सूं मिळ्यां पछै ई सूरजै आ तै नीं कर सक्यो के अबै वो कांई करै? सोम अठै है कोनी। अर उणनै स्यामा री ध्यान आयो। उठै सूं वो साइकिल मांयं स्यामा रै घर कांनी वहीर व्हियो।

वो स्यामा रै घरै पूगो उण वगत वा कठैई जावण री तैयारी करती ही। सूरज नै देखतां ई वा उणनै बैठण री कैयर आवण री कारण पूछ्यो। सूरज गांव री बात सुणावण लागो अर स्यामा आपरी चोटी गूंथती सुणती रैयी। इणी बिचाळै नोकरांणी आय'र कैयगी के वेगा निवड़ो, वाईजी वाट जोवै है। सूरज री पूरी वात सुण'र स्यामा बोली—'आ तो भूंडी व्ही सूरज वावू! म्हरांज नै ओ सदमो झेलणो भारी पड़ैला। तारा ई इण सदमै नै राम जांणै कीकर वरदास करैला। म्हारी समझ में तो थांनै अेक वार गांव री चक्कर लगाय लैवणो चाईजै। फेर सोम आंद री राय लै लीजो।'

अठै आय'र वात पाछी उलझगी ही। रतन कैयो के गांव जावणो ठीक नीं रैवैला अर आ कैवै के म्हनै गांव जावणो चाइजै। अबै तो सोम री राय लेवणी वाकी है। इण विचाळै उणरी निजर बरावर स्यामा माथै जम्योड़ी ही। स्यामा सजण-सवरण में लागोड़ी ही। जांणै किण कारण सूरज बैठो-बैठो मनोमन तारा अर स्यामा री तुलना करण लागगो। स्यामा थोड़ी दूवळी अर सांवली जरूर है, पण की फैसन मे वत्ती आंटीज्योड़ी है। नाक नक्स चोखा इज है। तारा की खूबसूरत वत्ती है, उणनै टेखियां जिको नसो चढ़ै, या बात

ईणमें कोनीं । पण हिसाब सूं आ उणसूं इक्कीस है । कंवारी है, न्यात री है अर पैसावाळी है । जी सा ई देख लिवी अर वांरै दाय आयोड़ी है । कीं खुड़को ई कोनीं····'किण विचार में हो बाबू साब ?' स्यामा रो सवाल सुण सूरज चेतन व्हियो ।

उणरै मूंडै सूं निकळचो—'हैं ?'

स्यामा हंस'र बोली—'हैं क्यांणी ! म्हनै बाईजी रै साथै जावणो है ।' केय'र सैंडल पैरती बोली—'किण विचारां में हो ?'

सूरज सोफा माथै सूं ऊठतो बोल्यो—'अेक अजीब बात दिमाग में आयगी ही ।'

स्यामा काच में देख'र रुमाल सूं चैरा रो पाउडर हळको करती बोली—'वा कंईं बात ?'

सूरज बारी कांनी मूंडो फेर अटकतो बोल्यो—'म्हैं....म्हे थांरी अर तारा री तुलना करण लागो हो ।'

स्यामा उण कांनी मूंडो घुमाय'र बोली—'के दोनां मांय सूं ठीक की रैवैला, यूं ?'

सूरज झट स्यामा कांनी घूमतो बोल्यो—'हां, कीं अेड़ीज बात ।' पण स्यामा री लिलाड़ माथै सळ अर तीखी टंटोळती निजर देख'र सकपकायगो ।

स्यामा अेक झीणी मुळक साथै 'हूं' केय'र माथो हिलावती अर दरवाजै कांनी पग धरती बोली—'फेर आछी तरै सूं तुलना कर लीजो । पछै नैठाव सूं बात करांला । अबार तो जल्दी में हूं ।'

सूरज स्यामा री उंतावळ देख'र वहीर व्हैतो बोल्यो—'ठीक जणै, चालूं म्हैं ।' इत्तो कैय'र बारै आयगो ।

उठै सूं साइकिल लेय'र वहीर व्हियां पछै वो सोचण लागो के अबै कांई करूं ? कठी जावूं ? अर पछै वो प्रेस कांनी रवानै व्हियो । छुट्टी रो वगत व्हैवण आयो है, पण अेक चक्कर लगाय लेवणो चाईजै । हां, स्यामा अर तारा नै लेय'र बात पाछी सोचणी पड़ैला । पण अै सोम अर रतन आद कंईं सोचैला ? खैर, देखो कांईं व्है ? गांठ तो अेक माथै अेक लागती जा रैयी है ।

सिझ्यारा वगती वगत सूरज, रतन अर निरमळा सोम रै घरै भेळा व्हिया । रतन कीं महताऊ वात समझ'र निरमळा नै साथै लायो । निरमळा नै देख'र सारदा बोली—'औ चोखो व्हियो, निरमळा वेटी आयगी ।'

सगळां री सोम वाळै कमरै में बैठक जमी । रतन अर सूरज मुढ्ढां माथै जमगा । सारदा अर निरमळा माचा माथै । सगळां रै बैठतां ईं रतन बोल्यो—'हां, वाई ! बोलो कीकर बुलाया ?'

सारदा पग माचा माथै लेय'र भींत री स्यारो लेवतां बोली—'बुलाया यूं नई, के म्हैं थां लोगां रा टाबरपणां सूं दुखी व्हैगी हूं ।'

'क्यूं, अैड़ी की टाबरपणा वाळी वात ? ' रतन पूछ्यो इज ।

सारदा बोली—'अेक व्है तो वताऊं । सोम न्यात-जात छोड'र निरमळा सूं व्याव री तेवड़ी है । सूरज वावू री सुणी, तो आं रै वोई सोम जैड़ो चक्कर । थांरी तारीफ ईं खूब सुणी हूं । अरे थै लोग कदै सुधरोला ? सीधा चालतां चालतां थै लोग रस्तो बदळ दो ।'

सारदा री वात सुण'र तीनां रा चैरा 'फक' व्हैगा हा । आ उम्मीद नीं ही के यूं भड़ती लिरीज जावैला । निरमळा ई सारदा रै नैड़ी भींत री स्यारो लेय'र धीरे सीक बोली—'आ चालता-चालता रस्तो वदळण वाळी किसी वात वाई ?'

सारदा उणी वगत निरमळा माथै हाथ फेर'र बोली—'यूं जीव छोटो मत करै जैड़ी वात कोनी वेटी । म्हैं थारै अर सोम रै व्याव करणं री वात सूं नाराज नी हूं । थूं तो व्याव सूं पैलीज म्हारै काळजै री कोर है । पण सोम री गैलाई सूं परेसान हूं' ।

'गैलाई ?' निरमळा कीं सवालिया निजर सूं सारदा कानी देख्यो । उणनै अचरज व्है रैयो हो के हमेंस वेटा री तारीफां करणाळी आज यूं कीकर वोल रैयी है ?

सारदा अेक निसांस न्हाक'र बोली—'थांनै ठा इज है, सोम लारला दो-तीन वरसां में बम्बोई रा तीनेक वार चकारा लगाय लिया, पण कोई नै आ नीं वताई के क्यूं गयो ? अवै दिवाळी पछै फेर जावैला, अर कोई नीं जांणै के क्यूं जावैला ?'

रतन कैयो—'म्हां लोग पूछण में कीं कसर नीं राखी वाई ! आप भलांई निरमळा नै पूछलो । अवै वो कीं वतावै इज नीं, जिणरो तो कंई इलाज ?'

'हूं' कर उठती थकी सारदा बोली—'यूं करूं, म्हैं चाय वणाय'र लाऊं जित्तै सूरज वावू थांनै वताय दैला के सोम री वम्बोइ में की हेमांणी गडियोड़ी है ।' अर सूरज कानी देख'र मुळकण लागी ।

सूरज नै लखायो के वो जब्बर फसगो है । उणरै मूंडै सूं वोल नीं निकळ्या अर

'म्हैं-म्हैं' करण लागौ । सारदा मांयलै कमरै मैं पग धरती रुक'र बोली—'हां, थै । थांनै तौ वौ सब कुछ बताय चुकौ है ।' कैय'र गई परी ।

रतन अर निरमळा पैली तौ अेक-दूजै री मूंडौ देख्यौ अर पछै सूरज कांनी देखण लागा । वांरै चैरै माथै अचरज रा भाव जरूर हा के सूरज नै कीकर ठा पडी अर औ म्हांनै असल बात क्यूं नीं बताई ? पछै सूरज सगळी बात सोम सूं सुणी जिकी बताय दी । दीनू पटेल सूं बदळै री बात सुण'र दोनूं भाई-बैन काठ रा व्हैगा । निरमळा सोचण लागी कै सोम कित्ती पीड़ छिपाई है । ब्याव री असली रुकावट तौ आईज है । अर उणनै ब्याव री बाबत सोम री कठमठाट अर बम्बोई सू आया पछै री बात समझ में आयगी । पण आ बदळै री भावनां तौ अनिष्ठकारी है । रतन सोच्यौ कै उणनै कंईं करणी चाईजै ? आ तौ खतरनाक बात व्हैगी । सोम बम्बई जैड़ै सैर में दीनू जैड़ै ऊंचै दरजै रै बदमास सूं हरगिज नीं निपट सकै । चाहे छांनै जावूं या चवड़ै, म्हनै सोम रै साथै जावणौ चईजै । उणी वगत सारदा चाय लेय'र आयगी । कमरै री चुप्पी देख'र समझगी के बात खुलगी है । वा टेबल माथै ट्रे धरती बोली 'सुण ली ?'

रतन अेक लांबी उसांस खोंच'र बोल्यौ—'हां, सुणली ।'

सारदा अेक-अेक कर चाय झिलावती बोली—अबै बताऔ, औ है के नीं गैलपणौ । इण बदळै सूं कंईं हांसिल व्हैणौ है । बदळौ भगवान लेवैला ? थांरी कंईं हस्ती है ? आगै ई म्हारौ काळजौ बाळ'र तीन-तीन बार बम्बोई जा चुकौ है । पण सोम अर दीनू बिच्चै लुक-मीचणी रौ खेल चल रैयौ है । मालिक री मरजी बिना पत्तौ नीं हिलै । पण थै लोग भगवान नै मांनौ कठै ? नै म्हारी बात आज सुण लीजौ । वौ तीन लोक रौ धणी सैंग देख रैयौ है । जिणनै जिको सजा देवणी व्हैला, वौ खुद देवैला । अर जे उण पापी नै सोम रै हाथ सूं सजा मिलणी व्हैला, तो वा व्हैला । केयर वा माचा माथै बैठ चाय पीवण लागी ।

सूरज बरोबर सारदा माथै निजर जमायां हौ । उणनै लागौ के बाई जांणै इण बात सूं खुद नै अेक थोथी थ्यावस देवण री कोसीस कर रैयी है । मांवौ मांय जांणै आ सिळग रैयी है । वौ कीं सोच'र बोल्यौ—'बाई ! आप बतावौ के देखती आंख्यां माखी गिट जावणी चईजै कंईं ।'

सारदा उणरी आंख्यां में आंख्यां गडाय'र बोली—'कर कंईं सकां ?'

रतन झट बोल्यौ—'म्हैं सोम रै साथै बम्बई जावण री सोची हूं । वौ साथै नीं लेजाई तौ म्हैं छांनै जावूंला । पण जावूंला जरूर ।'

सारदा कप माचा नीचै सिरकावती बोली—'म्हैं थनै इण वास्तै इज बुलायौ हौ । पछै साड़ी रै पल्लै सूं कीं सुपारी रा किरचा काढ'र टाबरां में बांट्या । अेक खुद रै मूंडै में

न्हावयी अर वच्योड़ी फेर निरमळा नै देवती बोली—'अव्वल तौ इत्ती नौवत इज नीं आवैला के कोई नै वम्बोई जावणी पड़ै। अर जे भगवांन री आ इज इंछा व्ही तो थनै सोम सूं अेक दिन पैली वम्बोई पूगणी पड़ैला रतन!' नै पछै वा रतन नै आपरी वात समझावण लागी।

सारदा री वातां सुण'र सूरज नै लखायी के आ डोकरी घणी तेज है। सगळी वात नै किण तरीकै सूं परोट रैयी है, आ तारीफ री वात है। वेटौ अेक भारी खतरै सूं झूझण री तैयारी कर रैयौ है अर आ···हद है! आखी उमर मुसीवतां सूं वायेड़ी नेवती रैयी, जदै इज इण वगत इत्तै धीजै सूं वगत सार्थं मुकावलै री तैयारी कर रैयी है। अर म्हैं अैड़ी अंवळी वगत में आं लोगां रै कीं काम नीं आ सकूं। अठै नौ खुद री कुत्तो ई काटा में फस्योड़ी है। निरमळा रै दिमाग में सारदा री अेक इज वात वार-वार ऊठती के 'अव्वल तौ कोई रै वम्बोई जावण री नौवत इज नीं आवैला।' इण वात री कांई मतलव है?

वातचीत खतम व्हियां पछै रतन अर निरमळा तौ वहीर व्हैगा, पण सूरज नै सारदा आ कैय'र रोक लियौ के सोम है कोनीं, म्हैं अेकली व्है जाऊला। वौ अठै इज जीम'र सोय सकै। अर सूरज रुकगौ।

दूजै दिन सोम पाछौ आयगौ। सूरज उणनै तेजसिंघ आळौ कागद पढ़वाय दियौ। सोम उणनै राय दी के वौ पाछौ तेजसिंघ नै कागद दै अर समचार मंगवावै के अवै म्हाराज अर तारा री कैड़ी मनस्थिति है? उणरै जावण सूं कीं फरक नीं पड़ैला। हां, इण वगत जे म्हाराज आळै मोहन नै गांव भेज सकां तौ ठीक रैवैला। मोहन नै म्हारै सूं मिळवाइजै।

दिवाळी आडा फगत दोय दिन। इण विचाळै सूरज अर सोम सावळ समझाय'र मोहन नै बाप कनै भेज दियो हो। उणनै समझाय दियो के व्है सकै जठै तांई म्हराज नै अठै लेतो आइजै। अठै आयां पछै वांनै कोई दुकानड़ी के नौकरी लगवाय देवांळा। तारा ई मैणत-मजूरी कर सकै। आज दोफार री डाक सूं सोम नै अेक रजिस्टर्ड लिफाफो बम्बई सूं आयोड़ो मिळियो। सोम उणी बगत स्कूल सूं आयो इज हो। वो कागद वांच'र अचंभै में पड़गो। उणनै विस्वास नीं हो के कागद में लिख्योड़ी वात सांची व्है सकै। पछै वो कीं पल सोच'र सारदा नै आवाज दी—'बाई!'

सारदा कमरै में आय'र बोली—'कई कंवो भई?'

सोम उणनै बैठण री इसारो कियो अर वा माचै माथै बैठगी। उणरै बैठां पछै सोम हाथ मांयलो कागद बतावतो बोल्यो—बम्बई सूं यसवंत रो कागद आयो है। थे जीतगा। थांरी भगवान दीनू नै सजा दे दी है। अेक अेक्सीडेंट में उणरा दोनूं पग बेकार व्हैगा।'

सारदा कीं राजी व्हेय'र बोली—'पापो कटियो! म्है थनै कंई कैयो, म्हारो सांवरियो सब देख रैयो है। देखलै पापी नै उणरै पाप री सजा मिलगी। थारै बम्बोई जावण रो रगड़ो मिटियो। निरमळा आद नै समाचार दे दीजे। सगळा पूछै के बम्बोई सोम घड़ी-घड़ी क्यूं जावै? म्हैं कांई जवाब दूं?'

सोम हांकाग भर उठै सूं बहीर व्हेगो अर सिंझ्या तांई सगळां नै इण बात री खबर पड़गी। सिंझ्यारा सगळा सोम रै घरै भेळा व्हिया—रतन, सूरज, निरमळा अर स्यामा। सोम सगळां नै बम्बई रा समचार सुणाया। सगळां नै अेक इज सिकायत ही के सोम इत्ती बड़ी बात क्यूं छिपाई? अर सारदा रो कैवणो हो के भगवान माथै विस्वास राखणो चाइजै। निरमळा सोचती ही के इण बात में जरूर सोम री मां कीं खास बात छिपा रैयी है। कागद तो बम्बई सूं अबै आयो है। आ पैली'ज कैवती के कोई नै बम्बई जावण री नौबत नीं आवैला। कीं ई व्हो, हाल दिवाळी रो त्यूंवार तो राजी-खुसी मनीजैला। इण समचार सूं सगळा ई प्रसन्न हा। अठी-उठी सूं सुणीजती पटाखां री आवाज मन में उमावो उपजावती।

इण सगळी बात पछै सारदा बेटा नै कैयो के अबै उणनै निरमळा सूं ब्याव रै बारै में फुरती बरतणी चाइजै। इण बात नै सगळा ई अेकमत व्हेय'र स्वीकारी। पछै कीकर, कांई अर कद व्हेणो चाइजै इण माथै सगळा आप-आप री राय देवण लागा।

धन-तेरस रै दिन सूरज नै गांव सूं मोहन री चिट्ठी मिळी के वो दोनूं बाप-बेटो नै लेय'र दूजै दिन जोधपुर पूग रैयो है। सूरज इण समचार सूं घणो राजी व्हियो अर सोम, रतन आद सगळां नै आ खबर सुणावतो फिरियो के कालै ओमा म्हराज आ रैया है। सोम उणनै समझायो के म्हराज सूं मिलणै री इत्ती उंतावळ मत करजै। वांरी मनगत आछी तरै समझ'र वांरै सांमी जाइजै।

दिवाळी पछै, रांमा-स्यांमा रै दिन सूरज, सोम, निरमळा, रतन अर स्यामा सगळा जणा मोहन रै साथै उणरै घरै पूगा। अेक छोटा-साक कमरा में म्हराज बैठा चिलम पीवता

हा, पाखती इज बैठी तारा साग विघारती ही। भाई रै साथै दूजा लोगां री बोली सुण वा बारै आई अर सूरज माथै निजर पड़तां इज अेकर तौ वा उणनै देखती इज रैगी। पछै झट दौड़'र मांयनै गई परी। मोहन जद सगळां रै साथै कमरा में पूगौ, उण वगत तांई तारा दरी बिछाय'र रसोई में घुमगी। सगळा जणा म्हराज सूं जैराम जी री करी। म्हराज अेक-अेक री सूरत देखण लागा अर जद सूरज नै देख्यौ तौ डोकरा झट राजी व्हैय'र खुद दरी माथै बैठता बोल्या—'अरे वा भगवान जी वा! भगवान थांनै हजारी उमर दै। म्हनै मोवन कैयौ हौ के उणनै गांव रा सगळा समचार थां सूं इज मिळिया। देख बेटा जी, थारै अठै आयां पछै म्हां बाप-बेटी माथै कैड़ा जुलम व्हिया है। कोई नै मुंडौ देखावण जोगा नीं रैया। स्यात म्हैं थारै आडौ आयौ इण वास्तै इज भोळानाथ म्हनै औ दुख दियौ।' इत्तौ कैय'र म्हराज कांधै पड़ियै अंगोछै सूं आंख्यां पूंछण लागा।

पछै म्हराज गांव री आपरी सगळी वातां वां लोगां नै विगतवार सुणाई सूरज आपरै साथै आयोड़ा लोगां सूं ओळखांण करवाई। म्हराज वां सगळा सूं मिळ'र घणा राजी व्हिया। आखीर में वै सूरज नै कैयौ—'अबै तौ म्हैं थारै कनै आयगौ हूं। अबै म्है थांरी इछा रै आडौ नीं आवूंला। थां लोगां नै ठीक दीखै ज्यूं करौ।'

•

अेक दिन सूरज प्रेस में बैठौ अेक फोन री इंतजार करतौ हौ। इग्यारै बजियां फोन आयौ। फोन रतन रौ हौ। रतन बोल्यौ–'हल्लौ! सूरज?'

'हां, भाई!'

'निरमळा रौ कचेड़ी में ब्याव व्हैगौ है। अठै खासा लोग माळावां लियां आयगा है, बधाई देवण नै!'

'म्हैं ई आजावूं?'

'हां, पण फोन बाबूजी नै दे दै अर कीं रुकजै। स्यात् वै ई कचेड़ी आवणौ चावै।'

'ठीक! म्है फोन बाबूजी नै दै रैयौ हूं। इत्तौ कय'र वो किरपाराम जी नै फोन देवतौ बोल्यौ–'लौ सा रतन रौ फोन है।'

सेठजी फोन लेय'र बोल्या—हेलो?' अर फोन सुण'र जोर सूं बोल्या—'कंई बकै है? होस में तौ है?'

सूरज देख्यौ के सेठजी रौ चैरौ तमतमायगौ है अर वै फोन सुणता-सुणता इज राती-चोल आंख्यां सूं सूरज कांनी देखण लागा? पछै फोन नै जोर सूं पाछौ धरता कूकया-'सेटाप!' अर सूरज कांनी देख'र पूछ्यौ—'थानै सगळी वात मालुम ही?'

सूरज घांटी हिलाय'र हांकारौ भरचौ। पछै धीरे सीक बोल्यौ—'म्हैं जाऊं ?'

सेठजी बोल्या— ठीक है पधारौ ! पण सुणौ, पाछौ अठै आवण री जरूरत नीं है। कोई म्हारै सूं नीं मिळैला। सब आप आपरी मरजी सूं कांम काज कर रैया है। म्हनै थै सब लोग मिळ'र धोकौ दियौ हौ। आउट !' सेठजी इत्ता जोर सूं बोल्या के प्रेस रा केई करमचारी ऑफिस में आयगा। सूरज उणी वगत बारै निकळगौ।

इण ब्याव री खबर हवा व्हैं ज्यूं आखै सैर में पसरगी ही। सूरज प्रेस सूं नीचै उतर कचेड़ी कांनी मूंडौ घुमायौ। वौ स्टेडियम ग्राउंड नैड़ौ पूगौ के ऊणी वगत स्यामा री फूलां सूं सज्योड़ी कार आवती दीसी। सूरज हाथ ऊंचौ कियौ अर कार नैड़ी आय'र रुकगी। कार में बींद-बींदणी रै अलावा रतन, स्यामा मोहन अर तारा ई बैठा हा। सूरज भींचा-भींच में तारा रै कनै इज बैठगौ। कार आगै वधी। प्रेस रै नीचै इज सेठजी ऊभा हा। कार वां रै कनै जाय'र रुकी। सोम अर निरमळा बारै आय'र सेठजी कनै पूगा। ऊपर बारी मांय सूं कीं प्रेस करमचारी मूंडा काढ्यां देख रैया हा। सोम अर निरमळा तसलीम करी।

सेठजी दोनां रै मोरां माथै हाथ धर नाराजगी सूं बोल्या—'बस बस ! सड़क माथै नाटक नईं। घरै आज अबार मत जाईजो। पछै म्हैं कैवूं जद जाईजो। पण थै औ चोखौ कांम नीं कियौ सोम बाबू !' ईत्तौ कैय'र खुद री आगळी सूं हीरा री अंगूठी काढ'र सोम री आंगळी में पैराय दी। जेब सूं कीं रिपिया काढ़'र बेटी नै दिया अर उठै सूं चुपचाप वहीर व्हैगा। कीं आगै गयां पछै सेठजी रुमाल काढ़'र आंख्यां पूछी।

ऊणी वगत कार में ड्राइवर री सीट माथै बैठी स्यामा सूरज नै छेड़चौ—'हां सूरज बाबू ! अबै तौ म्हां दोनूं आपरै सांमी हां, तुलना कर लीजौ !'

सूरज चोर निजर सूं मोहन कानी देख'र तारा री हाथ आपरै हाथ में लैय'र बोल्यौ—'कर ली तुलना !'

स्यामा चट बोली—'स्यावास !'

उणी वगत सोम अर निरमळा कार में आय बैठा अर कार आगै वधगी।

●



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा. मनोहर शर्मा	५-३५
हांस्या हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंहराज पुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा. व्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं. श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ. मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-५०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा. जो)	सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८ ५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा. जो)	सं. डा. मनोहर शर्मा	८-००
सरवर सूरज अर सिञ्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क—

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।

आपरा कागद

तेज जी,

'जागती जोत' रो जुलाई अंक देख्यो, ठीक लागो, पण लेखकां रा परिचय देवण री लकब बिलकुल दाय नीं आई। ओ तरीको घणो हळको, परिचय हमेसां ईं तथ्यात्मक होवणो चाहीजै। अैड़ी नाटकीयता भी कांई कांम री, जिकी भांडाई ज्यूं लागै। थांनै कीं बरसां पछै आ बात मैसूस होवैला, बुरो मत मानजो।

डॉ० नारायण सिंघ भाटी, जोधपुर

भाई जोधा जी,

जुलाई अंक पढ़ीजण में आयो। आछो लाग्यो। इण अंक रा 'लिखारां' पढ़ण सारू मन हुयो। परिचै री नवी दीठ सांगोपांग। कलम बधती रैवै। नरसिंघ राजपुरोहित री बरखा बहार आई' अर नंद भारद्वाज री 'परख' आछी लागी।

—सिवराज छंगाणी, बीकानेर

जोधा,

'जागती जोत' रा अंकां नै मासिक होयां पछै बरोबर बांच्या हूं। पारस अरोड़ा रो उपन्यास 'खुलती गांठां' बढ़िया लागै। कथा रा तागा पारस जी खूब सावचेती सूं फैलावै अर संवेटै। म्हनै तो वै कवी करतां ईं उपन्यासकार ज्यादा सफळ लागै। गोरधन सिंघ सेखावत री 'खुद सूं खुद री बातां' भी जोरदार है, पण कठैई कठैई कविता रो कसाव थोड़ो ढीलो पड़ियोड़ो लागै, स्यात कविता लांबी होवण री वजह सूं आ बात हुवै।

—रमेस कुमार, जयपुर

भाई,

'जागती जोत' रा अंक मिल्यां अर पूठै रा चितरामां रो महनतांनो भी। इचरज हुयो के महनतांनो भी देवो, पण अच्छो लाग्यो। सम्पादन बढ़िया रह्यो, म्हारी बधाई।

—सुमहेन्द्र, जयपुर

संकल्प

आपां नै राजस्थानी भासा, साहित, इतिहास अर जीवन सूं गाढ़मगाढ़ौ अर जड़ोजड़ अेकमेक व्हैणौ है। उणरा मगला सीगां सैलंग देखणौ है। जिण दिन अठा रा मानखा री भाग अर भविस भासा री ऊंडी आंटां भिल'र आपां गुई फळापणौ सह व्हैला, उण दिन आपां री रचनांवां बांचण जोगी व्हैला अर आपां रा छापा सिर-आंख्यां लेवण जोगा। राजस्थांनी लिखारां व्हियां, व्हैगी, खुद री गती अर नीयती नै ओळखौ। ओळखौ के आपां कठै-कठै तूटगा हां, कठै-कठै छूटगा हां, अर इतिहास रौ कैंडौ दायित्व अर बोझ आपां रै माथै : —बोध

['जाणती जोत' अप्रैल १९७५ रा सम्पादकीय सूं]

मुद्रण : माहेस्वरी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर सारू साधना प्रेस जोधपुर में छपी।

जागती जोत

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम री मासिक

सम्पादक
डॉ० कन्हैयालाल शर्मा



अप्रैल
१९७८

अंक २

जागती जोत

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम रौ मासिक

*

अप्रैल १९७८

*

सम्पादक

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

*

बरस : ६

अंक : २

बरस रौ मोल : १२ रिपिया

इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ

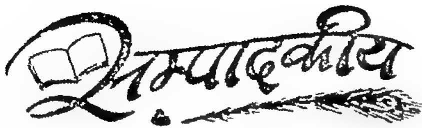
रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकासक

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, (अकादमी)

बीकानेर [राजस्थान]

ठिकाणो



कसी भी भासा की महत्ता ईंमैं कोईनै क वा घणी पुराणी छै अर ईंमैं भी कोईनै क अतीत मैं ऊंमैं घणू सारो साहित्य लख्यो ग्यो छै; ऊंकी सांची महत्ता तो ईंमैं छै क आज का फैलता ग्यान-विग्यान का विषयां मैं ऊंमैं कतनी चरचा अर सरजण होवै छै अर कतनी समरथताई अर सुगढ़ताई सूं वा वांईं परगट करै छै। ऊंका शब्द-भडार पर नजर जाता ईं या बात आसानी सूं तोल पड़ जावै छै क ऊंमैं कतना नुया-पुराणा विषयां पै लिख्यो ग्यो छै अर समय कै लारां चालबा अर बदलबा की क्षमता ऊंमैं कतनी छै।

राजस्थानी देस की वां भाषां की कतार मैं रखी जावै छै ज्यांको अतीत शानदार छै अर ज्यांमैं सरजण आज ताईं बराबर होतो रयो छै। रोजीना काम आवा हाळी चीजां सूं लेर ठेठ आध्यात्मिक विषयां का शब्द राजस्थानी मैं मल जावैंगा; राज-दरबार, लड़ाई, बोपार, साहित्य-शास्त्र आदि विषयां का शब्दां की तो ऊंमैं असी भरमार छै क देखतां ईं बणै छै अर धरम, संस्कार-जस्या विषयां पै भी घणांसारा शब्द मलैगा।

पण आज की दुनियां ऊ दुनियां सूं तेजी सूं दूर होती जा री छै ज्या राजस्थानी साहित्य मैं मलै छै। ईंसूं दुनियां की समरथ-सूं-समरथ भाषा भी आपणां पांगळापण को अनुभव करवा लागी छै। आज का सचार-साधना सूं दुनियां छोटी होती जा री छै अर बड़ा-सा समाज को रूप लेती जा री छै—अस्या समाज को रूप लेती जारी छै जीमैं अनेकरूपता छै। अब कोई भी भाषा आपणां गण्यां-गूंठ्या शब्दां सूं आज का आम आदमी को जरूरतां तक नै पूरी न कर सकै तो खास आदमी की तो बात ईं न्याळी छै। आम आदमी का मन कै ताईं अतना नुया-नुया विषय घेर्‌यां ऊबा छै जे फैली का आम आदमी कै सामै कदीं न आया छा; खास आदमी को विचार-जगत तो कतई बदल ग्यो।

असी घड़ी हिन्दी कै सामैं भी आई छी । ऊनैं तो घणी जागरूकता सूं काम लेर ईं समस्या को हल हेर ल्यो । एक आडी तो ऊनैं संसार की भाषां का शब्दां वेई आपणां दरवाजा खोल द्या अर दूजी आडी संस्कृत-जसी लोठी अर विकसित भाषा सूं जुड़ गी । आपणां घर मैं ऊंको मान अस्यां करवा लाग गी जाणैं या घर-धण्याणी होवैं, बूढी दादी न । ईं सू आपणां घर मैं अर बारैं हिन्दी को महत्त्व घट्यो कोईनै; बध्यो ई छे । हिन्दी मैं संस्कृत को मान सम्मान यूं होयो क जद देस मैं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना जागी छी ऊं समय हिन्दी का लेखकां नै संस्कृत शब्दां को प्रयोग तेजी सूं सरू कर द्यो अर वै ऊकी चिन्ता-धारां सू जुड ग्या । संस्कृत-जसी वैज्ञानिक भाषा का मलवा सू घणासारा साहित्य, संगीत, ग्यान-विज्ञान का शब्द तो मल ई ग्या, ऊंकी व्याकरण की व्यवस्था सूं नुया शब्द वणावा की कुंजी भी हाथ आ गी ।

जीं समय देस मैं सांस्कृतिक पुनरुत्थान हो रयो छो ऊं समय राजस्थानी मैं साहित्य-सरजणा घणी-थोड़ी होरी छी अर वा भी उसी ई, जसी फैली सूं चाली आ री छी । देस की वा जाग्रति अर चेतना ऊं समय की राजस्थानी लेखकां नं थोड़ोसीक ई प्रभावित कर पाई, जादातर तो वै पुराणी लीक पं ई चालता र्‌या । ईंसूं राजस्थानी मैं सस्कृत को प्रभाव न पड पायो ।

या वात सही छै क वर्तमान मैं जे कवि-लेखक राजस्थानी मैं लख र्‌या छै वांमैं सूं अधिकांश फैली हिन्दी मैं रचना करै छा । राजस्थानी का प्राचीन साहित्य सूं वांको घणूं थोड़ो लगाव र्‌यो या र्‌यो ई कोईनं । अस्या लेखक हिन्दी सू जद राजस्थानी की आडी मुड़्या तो हिन्दी की शैली अर मुहावरो तो वै साथ लाया, पण हिन्दी मैं ज्या भाषा-क्रांति होई छी ऊंका विचार नैं लेर न आया । अस्या भावाकांक्षा लेखकां की ऊं समय की मन की दसा कांईं भी री होवै, पण राजस्थानी मैं आ'र वानैं या उदार अर देशव्यापी द्रिष्टि न अपणाई जींको आसा वां सूं छी । यो नेवो निराधार कोईनैं क अस्या लेखक आपणी ठोर वणावा की उतावळी मैं छा अर आपणैं तांई धरपवो चावैं छा । ईंसूं वानैं भाषा कै वारा मैं गैराई सूं न सोची, यै तो आपणी आपणी मात-भासा वोली मैं लखवा की सुविधा कै साथ आगैं वध ग्या अर ठेठ वोलचाल का शब्द प्रयोग मैं लावा लाग ग्या । एक भाषा की वोलियां मैं समानता भी होवै छै अर भिन्नता भी । जठां समानता छे व्हां तो वै सगा-सो मेळ-मलाप पैदा करै छे, पण ज्यां भिन्नता छै व्हां फसाद अर तणाव लावै छै ।

अगर राजस्थानी भी संस्कृत शब्दां नै अपणावा मैं उसी उदारता दखावै जसी हिन्दी नैं दखाई छै तो ऊसैं राजस्थान का लोग आपस मैं जुड़ैगा अर देस का दूजा प्रांत का लोगां कै नेड़ै आवैगा । देस की घणीसारी भाषां संस्कृत शब्दां को उदारता सूं उपयोग करी री छै । संस्कृत शब्दां का प्रयोग सूं हिन्दी दक्खण मैं आदर पा सकी छै । व्हां का लोगां नै प्रसाद प्रेमचन्द की तुलना मैं वेगा समझ मैं आवै छै, जींको कारण प्रसाद को सस्कृत-प्रेम छै ।

कसी भी भाषा की मूल प्रकृति ऊंका तद्भव शब्दां सूं बणै छै। जे ठेठ राजस्थानी का हिमायती छै वांको वो तर्क यो हो सकै छै क जद आपणी मात भासा (बोली) मैं शब्द मौजूद छै तो क्यूं संस्कृत या दूजी भाषा कै मूंडा आडी ताकां ? ई बात मैं बल छै, पण साथ ई या आसंक्या भी छै क बोलियां सै अस्या-अस्या शब्द खोज-खोज'र लाबा को चालो न लाग जावै ज्यो बोली विशेष मैं ईं बोल्या जावै छै अर राजस्थानी की दूसरी बोलियां मैं न मलै। ईंसूं तो राजस्थानी की कठणाई सुळझैगी कोईनै, वधैगी ई। एक ओर तो आपण आपणां सूं ई दूर होता जावैगां अर दूजी ओर बीजा प्रान्तां का लोगां बेई तो पयाळी बणता जावैगां गूंगा-बैरा हाळो न्याव हो जावैगो।

आधुनिक राजस्थानी मैं न जाणै क्यूं संस्कृत अर हिन्दी शब्दां बेई उतनो आदर-भाव कोईनै जतनूं होणी चाइजे। यां दोनी भाषां का शब्दां नै लेबा को मतलब छै राजस्थानी की सीमा नै देश अर काल मैं फैलाबो—ऊ ई देस का दूजा भागां सूं जोड़बो अर भूत अर भविष्यत् सूं मेळ-मलाप कराबो। यां भाषां का शब्दां कै लारै जे अरथ जुड़या छै वै समय कै साथ भी आया छै, अर वांको इतिहास भी छै। अस्या शब्दां नै अपणा'र राजस्थानी आपणूं मान-सम्मान वधावैगी अर ईंका प्रयोग करबाहाळा की उन्नति कर सकैगी। राजस्थानियां नै देस का दूसरा आदम्यां सूं भी जोड़बा मैं सोमैंट को काम करैगी।

एक बार असी द्रिष्टि बण-जावा पै राजस्थानी का लेखक आपणी बोलियां सूं वेंई शब्द लैगां जे साहित्य मैं अर सभ्य समाज मैं प्रयोग मैं आवै छै। ज्यां शब्दां नै आज तांईं साहित्य मैं आदर न मल्यो अर जे घरू बोलचाल मैं ई प्रयोग आवै छै वांई खेंच-खेंच'र साहित्य मैं प्रयोग करबो पाठकां बेई कठणाई पैदा करबो छै अर साहित्य भाषा का गौरव नै कम करबो छै। राजस्थानी बोलियां मैं घणासारा अस्या भी शब्द मल जावैगा ज्यांको अनुवाद संस्कृत मैं न हो सकै छै अर न ज्यां बेई हिन्दी में कोई सटीक शब्द चलण मैं छै। अस्या शब्दां सूं राजस्थानी आपणी फचाण बणावै छै। अस्या शब्दां नै भुला'र तो कस्यां चाल्यो जा सकै छै।

देश-भाषावां मैं जतनूं सुगढ़ व्याकरण संस्कृत को छै उतनूं दूसरी कसी भी भाषा को कोईनै। संस्कृत मैं शब्द का ठेठ धातु-रूप तांईं जा'र प्रत्यय आदि को विश्लेषण कर'र जतनी बारीकी सूं ऊंको परिचय ई भाषा मैं करायो ग्यो छै उतनूं दूजी भाषा मैं न मलै। ईंसूं तत्सम शब्द तो बारीकी सूं समझ्या ई ग्या छै; नुआ-नुया शब्द बणाबा को गेलो भी साफ-साफ दीख्यायो छै। ईंसूं संसार की कसी भी भाषा का शब्द को अनुवाद करबा मैं कठणाई न आवै। जद संस्कृत देस की दूसरी भाषा मैं शब्द-रूप मैं प्रवेश पा-गी तो ऊं भाषा की शब्द-रचना को विकास रुकग्यो, ऊकी संधियां भी विकसित न हो पाई अर न समस्त शब्द बण पाया अर वा भाषा नुया शब्द बणाबा की क्षमता खो-बैठी, क्यूंकै संस्कृत यां कामां बेई सोळा आनी भाषा छी। यो असर हिन्दी

पै भी होयो अर राजस्थानी पै भी होवैगो । पण ईं सूं डरपबा की जरूरत कोईनै, परसन्न होवा की तो बात जरूर छै।

एक भाषा की प्रकृति ऊंका तद्भव शब्दां अर यांमैं मलवा हाळो ध्वनियां अर प्रत्यय-विभक्ति सूं जाणी जावै छै। जद तांईं भाषा-विशेष की ध्वनियां आपणी छै अर व्याकरणिक कोटियां भी आपणां ई प्रत्ययां सूं बणे छै तद तांईं शब्द कशी भी भाषा का आवै ऊंई खीचड़ी न मानी जा सकै। खीचड़ी तो भाषा तद बणे छै जद दूजी भाषा का प्रत्यय लिंग, वचन, कारक आदि वणाबा मैं काम मैं आवा लाग जावै छै। संस्कृत या हिन्दी या कोई दूजी भाषा का शब्द आबा पै भी राजस्थानी राजस्थानी रैवैगी। अर संस्कृत तो राजस्थानी कुळ की ई छे– पड़दादी छै, जींकी ईं टावड़ी नैं बदलता समय कै मुताबिक थोड़ीसीक ध्वनियां छोड़ दी, थोड़ीसीक नुई बणा ली। रूपां मैं भी थोड़ो-सीक बदलाव आयो अर वांईं परगट करबा हाळा प्रत्यय भी पड़दादी का प्रत्ययां सूं ई विकसित होया छै। अस्यां संस्कृत शब्दां को प्रयोग कर'र तो राजस्थानी का लेखक ऊंको भलो ही चीतैंगा अर करैगा। वांई तो दूसरी भाषा का शब्दां बेई भी उदार द्रिष्टि सूं काम लेणी चाइजे।

ईं विषय पै आपका विचार सादर आमन्त्रित छै।

× × ×

अर 'जागती जोत' का ईं अंक मैं राजस्थान अर बारै का राजस्थानी साहित्यकारां की रचनावां पाठकां तांईं पौंचाता घणो हरख को अनुभव होयो छै। प्रयास यो र्‌यो छै क प्राप्त सामग्री मैं सूं असी-असी रचनावां ली जावै जे स्याळो तो होवै ई, प्रान्त का सैंदी आडी का लेखक भी पत्रिका मैं स्थान पा जावै। निबंधां मैं मौलिकता अर एक द्रिष्टि छै, कहानियां मैं संवेदना की हलकी कपोट छै, हास्य-व्यंग्यां मैं तीखोपण अर चुटीलोपण छै अर एकांकी मैं कला की ढीली पकड़ नैं सत की गूंज संभाळ्यां छै। कविता मैं आशा–निराशा, प्रेम, सृजन-ध्वंस, उल्लास आदि का स्वर छै; जे छोटा अर मोटा दोनी तरै का कवियां सूं आया छै।

यो अंक आपका हाथां मैं छै, अर सम्पादक आपका सुझावां की बाट न्हाळै छै।



कन्हैयालाल शर्मा
सम्पादक—

सरबनास रो निरत

मूळ अंग्रेजी : सुब्रह्मण्य भारतो
राजस्थानी अनुवाद : रावत सारस्वत

(१)

गरजता गिगन विकट रागां अरड़ाट करै
लाखां नभ गगा लपलपै लाल जीभी
नौबतां गूंजै छन्दां रुधिराळां
नाच ए नाच काळी चामुंडा कंकाळी ।
थारो क्रोधाळ नाच, हे मातेसरी
जाचं मैं, द्रवूं जिण, बणूं घण रगत रंग

(२)

पांचूं तत्व सिस्टी रा कोपै अर गरजै
संघारक सिस्टी रा भूखां सब मारै
टूक-टूक बुद्धी रा करै घोर महारव
नाचै अणथाक अर ऊछाळै अगन भ्ळ
थारो अणथाक निरत, हे मातेसरो
जाचूं मैं, द्रवूं जिण, बणूं घण रगत रंग

(३)

सवेगा आंतरा धूजै अर लड़खड़ै
पीढयां राजवंसां री पड़ै, अवसाण हुवै
डाको डगां पीड़क पगां घूमै सरबनास
भौ भीतां संसारां नाचै सरबनास

थारो श्रोधाळ नाच, हे मातेसरी
जाचूं मैं, द्रवूं जिण वणूं घण रगत रंग

(४)

कोप परचंड ग्रहमंडळां विधूंसतो
ढोल सरबनास रो घणरव घुरावतो
विकराळां नैणां झळां श्रूपाड़ती
जुगां श्रर कळपां रा भसम कर श्रणत काळ
थारो श्रोधाळ नाच, हे मातेसरी
जाचूं मैं, द्रवूं जिण वणूं घण रगत रंग

(५)

धूंस हुयी सिस्टी, खण्ड खण्ड भो श्रणंत काळ
मद ज्योत सिव धरघा ताक निर्वाण री
थारै उन्मत्त कोप प्राजळती श्रगन में
उछळै श्रर लिपटै तूं उण सूं जो संग्याहीण
थारो श्रोधाळ नाच, हे मातेसरी
जाचूं मैं, द्रवूं जिण वणूं घण रगत रंग



हेजला आखर

चन्द्रप्रकाश देवल

अडोळै ठूंठ री खोखालां
वा मूंडौ काढती मौत
अर जड़ां रै मिस पांघरता
जलम बिचाळै
म्हैं इकलापी, अेकल छड़ौ
थारो मेड़ी पूगण सारू
उलांघूं, अलेखूं डूंगर
छीजते जोबनिया री छेहली केळ
म्हारी मरवण !

औ रूड़ौ रूपाळौ थारौ हेज
ढळता सूरज रै उबड़-खाबड़ मारगां
म्हनै निपट दिहावळौ कर न्हाकै
ठौड़ ठौड़ अळूझाड़ री भीड़ौ
म्हारी मूमल !
म्हारौ कीं बस नी पूगै ।

आ सून्याड़ निंदरोही
चारूंमेर रात रै धणियां री घूंघाट,
कळपती कोचरियां री कुरळाट
पावंडे पावंडे जोखम री पांथ

नीं म्हारी सुध ठांणै
नीं म्हारी बुध ठांणै
म्हारी गजबण ।
कठै ई कों पसवाड़ौ नीं फिरै ।

औ काळौ-बोळौ अंधियारी,
पग-पग छळ-छंदां री सूळां,
म्हारी रग-रग बींधोजं
अै झाड़ बांटका आंधा
सूरज नै रातिदौ
तारा री आंख्यां जाळौ
किण सांम्हो आंसूड़ा ढळकाऊं;
दरद म्हारै हिवड़ा रौ दरसाऊं
म्हारी कांमेतण !
म्हारै पूरवला जलम री साथण,
बता कठै चढ़ाऊं
थारा हेजळा आखर ?
आंनै देवळ उपासरा री सूग आवै,
गंगा-जमना सूखी लखावै ।
अै पांगळा आखर
आंरौ भार कद झलै
बता-बता म्हारो मरवण ?



बायोकेमेस्ट्री विभाग
जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कालेज
अजमेर

हवा रै सागै

चन्द्रकांता सरमा

आवो
आकास नै
गिरण सूं बचाल्यां
आपरां दोन्यू हाथ उठा'र ।

थोड़ो आपरो
माथो उठा'र देखो—
आकास आपरै
माथां ऊपरां लटक आयो है ।

इण टैम
थे बौना हो—
आकास छूनो पा रेया हो ।
थोड़ाक दिनाँ तांई
थे और
लाम्बा होवण री कसरत करो

आपरै हाथां नै
ऊंचा उठा'र

थे हंसो नी–ग्रो हंसी
ग्राकास री नीं होसी–वल्कि
ग्रापरै वीनापरण नै
प्रकट करसी ।

देखो ग्राजकाल
पून भी ग्रापरं सागै है
ग्रर च्यारूं दिसावां में
वंरण हाळी भी ।

ग्रापरी नावां नै
वेगो वगी
नदी रो पाळां खन्या ग्रावरण द्यो
के पतो—
ग्रागला किरणी भी छिरण में
ग्रांधी ग्रर तूफान उठ ग्रावै

ग्रवै देखो !
ग्राकास खुलग्यो है
ग्रर गिररण सूं वचग्यो है
फेर भी
थे चोकस रंवो
ग्राकास कदै भी गिरजाव



सिकन्दरा–३०३३२६
जयपुर–(राज०)

अेक च्यूंठी तावड़ी

रामस्वरूप 'परेश'

कुण बखेरी—
तासळी-सा आंगणां में
अेक च्यूंठी तावड़ी ।

जिनग्यानी बांदै अठे बूंदी ।
सै जेज री जूती करै सूंदी ।
कूळै चिपरी उजळी किरण,
आसुवां सूं पांगरै अंधारी डावड़ी ।
अेक च्यूंठी तावड़ी ।।

नित नुवां गाभा बदल ले अपणेस
माणखो दे घणेंरा प्रीत रा उपदेस
अेवड़-छेवड़ मिनख मोकळा
पण मिनख रै बोच लाखों आवड़ो
अेक च्यूंठी तावड़ी ।।

छिपकल्यां रौ डर घणेरो, खैर ।
इजगरां रो खोळियो ले पै'र ।
बायरा रै सागै सागै चाल—
हिया री सै गळ्यां कर सांकड़ी ।
अेक च्यूंठी तावड़ी ।।

वारणां पर मंडरया उड़ता मोर ।
आगणां में लुखरया डाकू-चोर ।
आखरां रा बदलग्या सै अरथ—
आदमी नैं तोल बदल ताकड़ी ।
अेक च्यूंठी तावड़ी ॥



बी० एस० सैकण्डरी स्कूल
डा०—बगड़ ३३३०२३
जिला—झुंझुनूं (राज०)

राजस्थानी गजल

प्रेमजी प्रेम

आंगण में उग आया थापाथूर, बचता रीज्यो ।
बचता रीज्यो, हां-हां रोज हजूर, बचता रीज्यो ।
आज हथेळी मैं'र क्हाल की आस कसी ?
ब्वार भायलां को छै खुलो कपूर, बचता रीज्यो ।
जतना मोठा होट, कड़ी उतनी बातां,
बरसां सूं यो को यो हो दस्तूर, बचता रीज्यो ।
दुख सासां का सरणाटां सूं भी नोड़ा,
सुख, नजरयां न पूगै जतनो दूर, बचता रीज्यो ।



भंवर भवन,
कारवला, कोटा

चालतोई चाल

वासु आचार्य

चाल तोई चाल !
खींचतोई चाल !
गाडो अर गाड़ै रै असवार नै ।
चालतोई चाल, चालतोई चाल ।

झुकियोड़ी नसड़ो
अर झरतै नैणां सूं
डिचकारी रै सारै—
या खारै बैणां सूं चालीस;
तो भी तनै ही चालणो पड़सी ।

अर नसड़ी उठायोड़ो,
बिना हड़बड़ायोड़ो,
भार री मार नै पी'र
मुळकतो चालीस;
तो भी चालणों तनै ही पड़सी

फेर, क्यूं तो
बळै रीस्यां,

अर क्यूं खावै किड़किड़ी—
असवार माथै
कै थारी जूण ऊपर ।

जे नीं भी मिलै—
कदै हरी भरी सैंवण
तो रूखा-सूका
डांखळा अर डोका—
चवावंतोई चाल ।
चालतोई चाल-चालतोई चाल !

चालतोई चाल—
एक नूंवै जोस सूं ।

चीरतो ई चाल
वाळू रा धोरा,
घूड़ री घेंसळ
अर छर्रै रा रस्ता;

इण सवरै माथै
माण्डतोई चाल—
थारै पगां रो सैनाण
अर बणावतोई चाल-एक नूवीं पगडंडी
चालतोई चाल—चालतोई चाल...



बाहेतो चौक, बीकानेर

अलगै ऊँचै भाखरियै

कल्याण गौतम

सरणाटो ।
   च्यारूं-मेर
      स्यांऽ…स्यांऽऽ…
         सरणाटो ।
चौतरफी अंधारो/ऊपर सूं
जाणै के ?/उतरचो हो
            होळैसी ।
            चौफेरी
बो कांई पसरघो हो ?
लावो-सो
चौतरफी/स्यांऽ…स्यांऽऽ…
            सरणाटो ।
मांय नै धुक-धुकी
रुंवाळी कांपै ही
कानड़ा खड़्या दोऊं
आंख्यां कीं जोवै ही ।
         अळगै ऊंचै भाखरियै
         रचना कांई हुवै ही ?
   जाणै कुण ?
   अंधारो/च्यांरू-मेर

सरणाटो !

न्हाटग्यो/एक दिन
अचाणचक/अंधारो
पूंछ लूका/गाळा में जाय लुक्यो
सरणाटो,
अंधारो।
हरख सूं
नाच उठ्या,
पंछी सेंग—
डाळ्यां पै,
चिड़कल्यां गावै हो
ऊंची बैठ आळा में।
हरख रा/हबोळा
लागै हा चौफेरो
राजी हो रोम-रोम
पण हुयो ओ कांई ?
रोटी !
ऊंचै आभै में/दोड़ती क्यूं जावै है ?
भूख रा सा बादळिया
घुरताई आवै है।
जोकां सेंग जुटग्यी
ठा नीं/के हुयो ?
जेव रो छेकलो
वधताई जा रैयो,
आंतड़ियां रोवै है
अळगै ऊचै भाखरियै
नित नवो कीं हुवै है।

卐

डिंगळ साहित्य सदन,
३२/४६८ चौतीना कुग्रा रै नैड़ै—बीकानेर

गीत

कृष्ण कल्पित

नैणां में सूनोपण जमियोड़ो पाळं-सो,
भरियोड़ी देही पर आंच रो लिबास,
 एड़ो बुत अबै-अबै नैणां सूं गुजरयो है।
फुटपाथो नाळयां में
पसरयोड़ो मिनख पणो,
रोजीना किरळावै
होटां पर मंडियोड़ी
भूख रो नदी नै
आंतड़ियां भरमावै;
जीवण रै मरूथळ में उखडयोड़ी सांसां,
सुपनां रै मिन्दर री डूबती उजास।
 अेड़ै-छेड़ै अबै-अबै स्थापो सो पसरयो है
भरम री जमीं पै
बांझड़ियै वादां रो
डोळी कुण चिण रैयो ?
टूटयोड़ै दरपण में
टूटयोड़ै चैरै रा
टुकड़ा कुण गिण रैयो ?
खुद नै हो ढूंढण नै, खुद नै हो पीवण नै,
घूम रैयो सड़कां पर जोवन्ती ल्हास.
 सांसां साथै मन में कोई तो उतरयो है।



झोटवाड़ा रोड, जयपुर

'छानै-छानै'

मोर पांख

कळी कळी घूंघट सूं झांकी,
वहक गई कोयल काळी ।
आडो ऊंळो, अज मतवाळो,
नाच्यो वाव दियां ताळी ।।
गोरी-गोरी, कंवळी-कंवळी, कळियां में कुण मुळकै है ।
गोरी गावे, जन-मन थिरकै,
महकी सरसूं री क्यारी ।
ठूंठ सरसग्या, फूल वरसग्या,
जोवन री छिंव है न्यारी ।।
हौळै हौळै, हरवळ हरवळ, कुण अमराई महकावे है ।
हियै गिलगिली, भोळी भंवरी
वहकै गुण मुण गावै है ।
चटक-मटक अर चहक चुल वुली
तिरलोकी नै भावै है ।
छानै छानै, छम्मक छम्मक, घूघर कुण घमकावै है ।



आसजी की हवेली, मोलंकी दरवाजा
देवगढ़ (उदयपुर)

सांस बदलै

बस्तीमल सोलंकी

सूरज ऊगै,
अर आंथवै
लोगड़ा सोवै। जागै'र उठै,
आप आपरै काम धन्धै में लागै,
सिझ्यां तक थाकै, बैठै
पण कदै कदै—
आस—बदळै।
घण हेताळू री वातांई वातां में,
हियै रो ठाह पड़ै
हियै री होठां पै आवै,
पण कदै कदै—
विश्वास बदळै।
हरिया पानड़ा
पीळा पड़ खिर जावै—
झड़जावै,
जलम हूवै तुंबी कूंपळांरो,
ओ क्रम चालतो रैवै,
रातांई रातां में कदै कदै
इतिहास बदळै।

इण जागा मुरगो नै सरमाणे वाळा—
महल र बंगला
बणियां'र चूणियां,
ऊंचै आभे सूं करतां नित मुजरो
पण आज वगत री वार सूं—
उजड़ ग्या,
मुसकल रै वगत
मोटा मोटा भूपाळां रा
कदं कदै
सांस वदळै

सचिव
राजस्थान साहित्य चिन्तन परिषद
भीम (जिला–उदयपुर)

पाठका सारू—

- जागती जोत री रचनावां आपनै किसी लागी ?
- जागती जोत में आप किसी रचनावां चावो ?
- जागती जोत आपरै विचारां में किसी हुवणी चाईजै ।

सम्पादक जागती जोत नै जरूर लिखाओ । —सम्पादक

प्रकृति री दो शक्तियां

नरोत्तमदास स्वामी

आपणी पृथ्वी सूरज री परकमा करती रैवै, सूरज कै वारै कर पृथ्वी री अेक परकमा जित्तै वखत में पूरी हुवै उण नै अेक बरस कैवै। अेक बरस में कोई ३६५ दिन हुवै—असल में ३६५ दिन, ५ घंटा और ४८ मिनट। पृथ्वी री परकमा रो मारग वृत्ताकार अर्थात् गोळ है (दीर्घ-वृत्ताकार कैवणो ज्यादा ठीक हुसी) और उण रो विस्तार कोई ५८ करोड़ मील (कोई ९० करोड़ कीलो मीटर) है। इण हिसाब सूं पृथ्वी अेक घंटै में कोई ६७ हजार मील (कोई १ लाख कीलोमीटर) और अेक सेकड में कोई १८½ मील (कोई २९ कीलोमीटर) चालै-थे 'कीलोमीटर' शब्द बोल सो इत्तै में ही पृथ्वी २९ कीलो मीटर आगै बध ज्यासी।

पृथ्वी री इण परकमा में प्रकृति री दो शक्तियां घणै महत्त्व रो काम करै। उणां रा नांव है—केन्द्राभिसारी Centripetal शक्ति और केन्द्रापसारी Centrifugal शक्ति, केन्द्राभिसारी शक्ति चीजां नै केन्द्र कानी खेंचै और केन्द्रापसारी शक्ति चीजां नै केन्द्र सूं दूर ले जावै, उणां नै केन्द्र कानी नहीं जावण दै।

पृथ्वी रा सगळा पदार्थां में आकर्षण-शक्ति हुवै। आकर्षण-शक्ति केन्द्राभिसारी शक्ति रो ही अेक प्रकार है। आकर्षण-शक्ति रै कारण प्रकृति री हरेक चीज दूजी हरेक चीज नै आपरै कानी खेंचै और आपणै सूं आघी नहीं जावण दै। सूरज पृथ्वी नै आप रै केन्द्र कानी खेंचै और पृथ्वी आपां नै—पृथ्वी माथली हरेक चीज नै आप रै केन्द्र कानी खेंचै। पृथ्वी री अै चीजां भी पृथ्वी नै आपरै कानी खेंचै पण अै पृथ्वी सूं घणी छोटी हुवै इण वास्तै इणां री खेंचण री तागत भी पृथ्वी री तागत सूं घणी कम हुवै—इत्ती कम कै उणां रो खेंचाव आपणी नजर में नहीं आवै। पृथ्वी भी सूरज नै आप रै कानी खेंचै पण सूरज सूं घणी छोटी हुवण रै कारण उण री खेंचण री तागत सूरज री तागत सूं घणी कम है, इण वास्तै सूरज पृथ्वी कानी नहीं खेंचीजै, पृथ्वी ही सूरज कानी खेंचीजै।

कोई चीज चालती हुवै अर उण नै घर्षण वगैरा कोई तरै री बाधा नहीं मिलै तो वा चीज बरावर अेक रेखा में—नाक री सीध में—चालती जासी, जे सूरज री आकर्षण-शक्ति पृथ्वी नै नहीं खैंचै तो पृथ्वी निरन्तर अेक सीधी रेखा में चालती जावै। पण सूरज री आकर्षण-शक्ति उण नै सीधी रेखा में नहीं जावण देवै। केन्द्रापसारी शक्ति पृथ्वी नै सीधी रेखा में, सूरज सूं दूर, ले जावै पण ज्यों-ज्यों केन्द्रापसारी शक्ति उणनै सूरज कानी मोड़ती जावै जिणसूं पृथ्वी रो मारग वृत्ताकार अर्थात गोळ हुतो जावै।

इण भांत केन्द्रापसारी शक्ति पृथ्वी नै सूरज सूं आघी खैंचै अर केन्द्राभिसारी शक्ति उणनै सूरज कानी खैंचती रैवै। दोनां में जबरदस्त रस्सा कस्सी (खींच-ताण) हुवै, आपणा भाग चोखा है कै दोनां रो जोर सदा बरावर रैवै। जद खैंचीजती थकी पृथ्वी सूरज रै कनै आवण लागै अर केन्द्राभिसारी शक्ति रो जोर वधण लागै तो केन्द्रापसारी शक्ति रो जोर भी उत्तो ही वध जावै अर पृथ्वी नै सूरज सूं आघी खैंचण रो काम और जोर सूं करण लाग ज्यावै। इण भांत दोनां रो अनुपात पाछो बराबर हु ज्यावै।

कदास दोनां शक्तियां मांय सूं अेक रो भी जोर वेसी हु ज्यावै तो कांई हुवै? केन्द्राभिसारी शक्ति रो जोर वेसी हु ज्यावै तो वा पृथ्वी नै खैंच अर सीधी सूरज में लाय पटकै जठै रो ताप-मान करोड़ूं डिगरियां रो है; पृथ्वी मांय पड़तां पाण, खण भर में, भैस बण'र उड ज्यावै, फेर उणरो कठै पत्तो ही नहीं लागै।

अर जे कदास केन्द्रापसारी शक्ति रो जोर वध ज्यावै तो वा पृथ्वी नै खैंच अर इण अनन्त आकाश में, नाक री सीध में, कुण जाणै कठै ले ज्यावै? फेर उण रो पत्तो ही नहीं लागै। पृथ्वी आपरै प्रचंड वेग सूं टूट नहीं जावै तो का तो कोई आकाशीय पिंड सूं (तारै वगैरै सूं) टकरा'र खंड-खंड हु ज्यावै, का कोई तारै रै मांय जा'र पड़ै जिण सूं उण रो नांव-निसाण भी बाकी नहीं रैवै।

सृष्टिकर्ता नै धन्यवाद देवो कै दोनां शक्तियां रो अनुपात सदा बराबर बण्यो रैवै है।

×

बापू रै सपनां रा गांव

अर्जुनसिंह शेखावत

आपणै देस में एक मोहन हुयो पीताम्बर आळो, मुरलीआळो, चक्कर आळो, दूजो मोहन हुयो है खादी आळो, डांग आळो, चरखा आळो। एक पांच पांडवां रै बल सूं कौरवां री अक्षोहिणी सेना नै हराय दीनी तो दूजै भी सत्याग्रह रै बळ सूं अर अहिंसा रै जोर सूं अंगरेजां नै मुलक सूं बा'रै काढ दीना। एक मोहन कंस नै मार नै, उठां रो राज उगरसैन नै सोप्यो, खुद नी लीनो, इणी भांत दूजो मोहन भी देश नै राज खुद नी भोग्यो राष्ट्रपति नी बण्या अर राज जनता नै सूंप दीनो, जद उणानै राष्ट्र रा बापू (पिता) मान लीना। दोनों मोहनां में कित्तो त्याग, कित्तो बळिदान, कित्तो सेवा भाव है। एक रो चरित मोर पांख अर पीताम्बर में भांत-भांत रै रगां में झलकै-पलकै तो दूजां रो चरित रो रुतबो भी इन्दर धनक (चरखा) रै सतरंगा बिच धवली—धट्ट सफेद-झक्क खादी में निरमल (निष्कलक) ऊजळी उजास करै सुरज ज्यूं चमकै ।

बापू रै जिन्दगाणी री जरुरत मामूली सी थी दो लंगोटी, दो चांदरा, एक चश्मो, एक गीता, एक डांग, एक जेब घड़ो, एक बकरी, एक झूपड़ी अर एक खडाऊं री जोड़ी। उणां रो सांगो-पांग चितराम आज भी आंख्यां आगै आ जावै । इण थोड़ा सा साधनां सूं वै घणा पण घनी हा जिण सूं ससार में गजब काम कर ग्यो वो डकरेल डोकरियो—लांबो, पातळो थकियोड़ो, एक हाडकी-पांसली रो आदमी आंपणै आतम-बल सूं इस्या-इस्या काम दुनियां में कर ग्यो जो दिग्विजयी लोग बांकड़ जंगी फौजां रै बल सूं भी नी कर सकिया।

बापूजी रो विचार हुतो कै आपणो भारत देस गांवां रो देस है; छैल छबीलां रंग-बिरगा, इणिया-गिणियां सैरां सूं आपणै देसड़लां रो तोल-मोल नी व्है सकै। भारत तो साढा-सात लाख गांवां में बिखरियोड़ो पड़ियो है । आपणै देसड़लां री आतमां तो गांवडियां में, ढाणियां में, झूपां मे अर दरिद-नारायण में वसियोड़ो है । भारत-मावड़ तो गांवां री वासिन्दी है। इण खातर बापूजी रो ख्याल थो कै जे भारत रो रुतबो अर

संस्कृति नैं निरखणी-परखणी है तो गांवां में जावो, वठै देखो, सोचो, समझो । ऐरां सूं भारत रै गैणां-गांठां, कपड़ा लत्ता रै ऊपरलां नैं बारलां गमका रा दरसण व्है सकै है, उणरै अन्तस रै मन री छाणबीण नी व्है सकैला । जूनां जुगां रो लाडेसर देस भारत जिणरी छतर छांया में मिनखपणा नै पाळ पोष'र मोटो कीनो है, उणरा दरसण गांवां में इज व्है सकै है । सै'र तो परदेसी लोगां रै ज्यूं नकली–बनावटी बादरिया रै ज्यूं है। जिण दिन बादरियो (मुखोटा) उतर जासी नकली कलाई उघड़ जासी, उण दिन गांवां रै सरणां आसी । गामड़ा रै नास सूं तो सगलां मुळक रो सत्यानास व्है जावैला, अर गावां रै विकास सूं सगलां देस रो विकास होसी । इण वास्तै गांव स्वराज रै बाबत बापूजी रा विचार नीचै मुजब है —

"म्हारै सुपनां रा स्वराज में जात-पात, भेद-भाव अर धरम-करम रा फरक नैं कोई पण ठौड़ नी व्है सकैली । वो स्वराज सगलां रै भला खातर होसी । करसां रै अलावा लूला-पांगलां, आंधा-काणा, भूखा-तिरसा लाखां करोड़ां लोग उणरी भलाई खातर भेळा रैसी स्वराज रो अरथ सगलां रो राज, न्याव रो राज होसी अर खास कर गरीब रो राज रैसी । इण स्वराज रै एक छेड़ा पर नैतिकता अर सामाजिकता रैसी तो दूजा छेड़ा पर धरम–करम रैसी । आपांरी सभ्यता रै मूळ में नीति नै खास ठौड़ दीनी है । नीत रो घाटो नी आवणो चाइजै ।

बापूजी रै सुपनां रै गांव स्वराज री कल्पना ही कै ओ अेक ऐड़ो पूरो प्रजा-तंत्र व्हैलो जिको आपरी जरूरतां रै वास्तै पाड़ोसी रै मातहत नी रैसी, थोड़ी घणी जरूरतां पूरी करण सारू दूजां सूं मदद वाजब समझै तो ले सकै ।

हरेक गांव रो सेंग पैलो काम ओ व्हैला कै आपरी जरूरत मुजब जितो अनाज अर कपड़ा सारू कपास चाइजे उतरो पैदा कर लै । इण सूं खाणो खुराक अर कपड़ा लत्ता री मांग अर जरूरत पूरी व्है सकैला । इणरै बाद हरेक गांव मनै सीमाड़ा इतरी ढाबीयोणी गोचर री भोम व्हैणी चाइजै कै ढोर चर सकै, ओरण इत्याद में फालतू जमीन गर'जे व्है तो टाबर-टोली रै रमण सारू पार्क ओर मैदान भी बणावणा चाइजै । करसां नैं करसण री कमांण में गांजो, भांग, अमल, तम्बाकू वगैरह नशा पता री चीजां नी व्हैणी चाइजै । बापूजी रै ख्याल सूं हर गांव में आपणी खुद री एक नाटक शाला, पाठशाला, सभा-मंडप, हताई; पंचायत, डाक घर, अस्पताल मिनखां खातर नैं अस्पताल जनावरां सारू होवणो जरूरी है । इणरै सागै इज जल-योजना अर बिजळी योजना भी होवणी चाइजै जिण सूं करसण अर उद्योग में मदद मिलै ।

पचायत रै पांण गांवां रो स्वायत शासन चलावण री कल्पना बापूजी री ही कै — गांवां रो शासन चलावा सारू सब गांवां में एक पंचायत होसी । इणरै वास्तै खास काबिल मिनखां नैं आगै आणो पड़सी । उण पंचायती नै सब तरह रो जरूरी सत्ता अर हक मिल जासी, पण इण गावां रा राज में सजा कै दण्ड रो कोई पण रिवाज नी

रैसी । इण वास्ते पंचायत आपणे काम री म्याद में खुद ही धारा सभा, न्याव सभा और कार्यकारिणी सभा रो सगलो काम सामल रूप सूं करेला इण में मौजूदा सरकार भी ज्यादा दखलदाजी नहीं करैला क्यूंकै राज सरकार रो मोटो काम माल गुजारी (बीघोड़ी-लेवी वसूली) रो है : इण तरै रा गांव त्यार करण सारू केई मिनख आपणी पूरी जिन्दगी खपासी जद होसी । गांव-गांव में मशाल ले'र अलख जगाणो पड़सी, ज्ञान री जोत जगाणी पड़सी, नवां जागरण रो शंख बजाणो पड़सी, जद काम पूरो होसी, एड़ा त्यागी तपसी लोगां नें गांव रै विकास सारू गांधीजी रै ज्यां एक साथ करसां, हरिजन, चौकी-दार, वैद्य, मास्टर, कवि साहितकार, समाज सेवी अर नेता रो काम करणो पड़सी । गैर'जे गांव रो एक भी आदमी उणा गनै नी फटकै तो पण उणनै धीरज, सतोष, शांति अर पूरीं लगन सूं काम करता ही रेवणो चाइजै । घर-घर अर गांव-गांव में गांधी पैदा करणां पड़सी । गांधी-गीता रा गीत उघेरणा पड़सी । कविता री नीचली आकड़ियां देखबा लायक है—

गोरां री गोरी कहे घर आया घन आज
चरखां रै चरणां धरो, मशीन गजा लव आज
द्रोण-चक्र व्यूह रचता ऐ कढ़ जाता सैंज
चरखा रा चक्रव्यूह मूं, कढ़ न सकियां अंगरेज

देहातां में कळा अर कारीगरी रो भी वदापो होवणो जरूरी हैं, देहातां री बुद्धि नें आत्मा री सनण करबाआली कळा री भी कमी नी रैसी गांव-गांव में कवि, चितरकार, भासा पंडत, सोध करवा आळा पंडत इत्याद मिळैला मुतलब थोडा में घणो अरथ ओ है'कै जिन्दगाणी री कोई पण चीज नी व्हैला जिको आपा नै गांवां में नी मिल सकैला । आज आपणां गांव ऊजणियोड़ा खेड़ा अर बगदां नैं उकरल्यां रा ढेर है । काल वै इज फूटरा फरा बाग-बगीचा व्हैला—ओ बापूजी रो सुपनो हो जिणनै सांचो करणो आपरो फरज है । सै'र आज गांवां री मोल्यां मूंगी पूंजो माथै धाड़ा पाड़ै है, जलौका ज्यूं चूसै है पण आ बात अबै घणां दिन नी चाल सकैला ।

एक आदर्श भारत रा गांव में ऊपर लिख्योड़ी सगळी सुख-सुविधावां मिलसी सफाई रो इन्तजाम होसी, घरां में खुला चौक होसी, झूंपडियां में हवा अर उजालै री व्यवस्था होसी खुला चौक में साग-सब्जियां, फल-फूल पैदा कर सकैला अर मवेशी भी बांध सकैला । एक मोटो सभा—मंडप होसी, गोचर भूमि री मोकळात होसी, जात-पांत, धरम-करम अर ऊच नीच रो भेद-भाव नी होसी । लुगायां अर मिनखां नैं बरोबर हक होसी कोई, किणी तरै रो नसो पतो नी करसी । गांव स्वावलम्बी अर आपणैं आप में पूरा पूजता होसी । एक कवि रा सब्दां में गांधीजी रो महत्व कितरो जबर है—

गांधी री चादर नै जे अरजुण लेता ओढ ।
तो भारत हथनापुरी कौरव जाता छोड़ ।।

कद देखांला मंदरां कद जोड़ांला हस्त ।
राम–किशन रै बीच में गांधी री मूरत ॥

ग्राम राज रा रामराज में एक मोटी बात बापूजी ग्रामोद्योग रै वास्तै भी कही ही उणारो ख्याल हो कै रोजीना रा काम काज री चीज-वस्त अर जरूरतां गांवां में इज बणी चीजां सूं ई पूरी होवणी चाइजै । करसण मजूरी ,अर उद्योग–धन्धो तो गांवां रा प्राण हैं । अगर इणारो विकास नीं व्हीयो अर इण खातर लापरवाही वापरी तो भारत जेड़ा जंगी देश नैं हृदय रोग व्है जावैला, क्यूंकै भारत रो हृदय तो गांवा में बसियोड़ो है ।

आयूणी विचार धारां आळा लोग कैवै है कै हवा, तेल, अर बिजली रो ज्यां भरपूर उपयोग आयूणा देसां में व्है रियो है, इणी भांत आपणे भी इण चीजां नैं काम में लेवणी चाइजे उणां रो कैणो है कै गुप्त कुदरत री ताकतां मांयै कब्जो कर लेवां सूं हरेक अमरीका रा बासिन्दा ३३ गुलामां जितरी वेट-वेगार ले रया है । गांधी इणारा पडूत्तर में कयो कै इण गेला (मारग) मायै भारत नै ले जाऊं तो मैं बेधड़क कै सकूं हूं कै हरेख मिनख ने ३३ गुलाम मिलण री ठौड़ दरेक मिनख री गुलामी ३३ गुणी बढ़ जासी । कल कारखानों एवं मशीनों ने घणी मात्रा में काम में उण हालत में ही लेणी चाइजै कै जद घणो सारो काम पूरो करण सारू मानूदा मोट्यारां री मोकलात नी व्है, अर चूंकी भारत में आ बात कोनी, काम काज सारू जित्ता आदमी चाइजे उण सूं कठेई घणेरा बेकार खाली ठाला बैठा है । इण हालत में यंत्रो करण सूं बेकारी अर गरीबी घटसी कै बढसी ? इण सूं तो बेकारी में बदोतर इज होसी । सिलाई री मशीन जेड़ा छोटा यंत्र अर मशीनां रो विरोध बापूजी नी कीनो । हजारां लोगां री रोटी गेओ हड़पे जेड़ी मोटी मशीन रो विरोध कियो थो आज भी आ बात सही जचे है गर'जे हजारां मजूरां रो धधो खोस'र उणा नैं बेकार बणाय दीना छै तो सस्तो सूं सस्तो यो कपड़ो गांवां में वणियोड़ी खादी सूं भी घणो मूंगो है । इस सूं एक पाडै तो मीला रो वणियोड़ो कपड़ो हजारां गरीब गुरबां नैं बेकार बणाय रयो है तो दूजे पाडै आटा पीसण री चक्किया, चावल पर पालिस करण री मशीनां पोरतां नैं बेकार इज नी बणावै बल्कि जनता री तन्दुरस्ती भी खराब करै ।

आपणै राजस्थान रा गांवां नैं जगावण सारू बापूजी घणीं भी दाय बजायो हो जिणरा केई पण दृष्टांत अर दाखला है —मेवाड़ रियासत में बिजोलिया गांव रो सत्याग्रह, भील आंदोलन, वेगार विरोधी अदोलन, सिरोही रो संघर्ष, मारवाड़ लोक परिषद् री थरपणा, जोधपुर, रेलवे रा संडास री सफाई वगैरा इणरा साखी है, जिको राजस्थान रा इतिहास रा पानां पर इण अमोलक कामां सारू बापूजो रा जित्ता वखाण करां उत्ता थोड़ा है । राजस्थान में केई आदर्श गांव वणग्या है। खोरूदा (जिला जोधपुर) अर तखतगढ़ (जिला पाली) भी उण मांयसूं दो है । गांधीजी रै सुपनां रा गांव री

जिकी कल्पनां ही उणरै मुजब काफी हद तक उण गांवां रो रूप रंग ढलतो जाय र्‌यो है, काया पळटती जाय रई है। वो सपना रो सूरज कद ऊगसी जद जनता रा लाडेसर नेता बापूजी रै मन मुत्ताबक गांव–सिसार रो मडाण होसी, कल्पना साकार होसी रामराज ज्यूं ग्रामराज में सगळी रैत (प्रजा) सुखी रैसी अर बापूजी री आत्मा सरग रै झरोखै सूं झांकती, निरखती, मुळकती शांति नै सतोष री कालजे ठाडोल महसूस करसी। पण गर'जै आपां इण तरफ ध्यान नीं दीनो अर तन-मन-धन सूं कोसिस नी कीदी तो सपनो सपनो इज रै जावैलो।



प्रधानाध्यापक रा.उ. प्रा. वि. खिमेल
पो०– खिमेल वाया–रानी
जिला–पाली (राजस्थान)

प्रकाशकां सारू—

- जागती जोत में आपरै प्रकाशन संस्थान सूं प्रकाशित पोथ्यां री दोय प्रतियां समीक्षा सारू जरूर भिजावौ।
- जागती जोत रै जिण अक में आपरी पोथ्यां री समीक्षा छपसी वो अक आपनै जरूर भेज्यो जासी। —सम्पादक

राजस्थानी जीवण अर गणगौर

डा० प्रतापसिंह राठोड़

मानव जीवन में त्युंहारां री सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक अर मनोवैज्ञानिक द्रिष्टि सूं घणो मानता अर महत्व है। जातीय जोवन रो सांचो चितराम या मूर्त्तरूप त्युंहारां में ई मिलै। जिको जाती जित्तो सभ्य अर सुसंस्कृत हुवै बीं रै तीज त्युंहारां में सजीवता अर उत्कृष्टता मिलै। त्युंहारां सूं राष्ट्रीय जीवन नै घणी प्रेरणा मिलै। सामाजिक भाईचारो, एकता, समानता, सरसता, मधुरता री स्थापना में यां रो महताऊ योगदान नीं भुला सकां। जीवन री निरासा अर नीरसता नैं भुला'र त्युंहार आसा, सरसता अर उल्लास रो संचार करै। आपसी कटुता वैर-विरोध, दुख अर तगी नै भुला'र लोग ईं दिन हरपीज उठै। आखै भारत में रक्षा बंधन, दसहरो, दीवाळी अर होळी राष्ट्रीय पर्व रूप में मनाया जावै है। आं पर्वां रो उल्लास उत्साह, रीत-नीत अर रगत दरसन जोग हुवै। भारत में होळी री हुड़दंग तो न्यारी ई है अब रा होळी तो सारै भारत में विख्यात है। राजस्थानी होळी अर तीज-गणगोर री रगत पर रंगीनता बी न्यारी ई लखावै। फागण रो फाग मांझ में बाजती झांझ, धमाळां अर चग या डफ री गूंज लोगां नै मोहले। रंगीलै चग रा सुर लोगां रै जोस-होस नै कीं ओर ई कर नाखै।

गणगोर या गोरी-पूजन बी भारत रो प्रमुख त्युंहार है जियां शैव सम्प्रदाय में शिव री, शाक्त सप्रदाय मे शक्ति री पूजा-उपासना हुवै, वियांई गणगोर पर्व पर गण समेत गोरी री यानी शिव (ईसरजी) अर गोरी (गवरल) री पूजा हुवै। सोवणी-मोवणी लुगाई नैं बी गोरड़ी, गणगोर कैवै। शिव-पार्वती रै विवाह री कथा रै आधार पर ई गोर को मेळो लागै। ब्याव रै पछै विदाई को काम ई गोर-पूजन है। गोरी या सती दक्ष प्रजापती अर वीरिणी री बेटी ही, शिव री परिणीता। एकबार दक्षयज्ञ कर्‌यो पण शिव–सती नैं नीं बुलाया। नारद मुनि सूं खबर पा'र सती बी गई परी पण बा बा देख र आग बबूला व्हैगी कै शकर जी रो छोड़'र सै देवां रो यज्ञ भाग है। यज्ञ-कुंड में कूद नैं सती प्राण दे दिया। मालम पड़ता ईज शिव आप क्रुद्ध हो'र वीरभद्र गण पैदा कर्‌यो अर वींनै यज्ञ विधवंस री कही। देवां री विनती पर शिव बकरै रो माथो लगा'र दक्ष नैं जिवायो। सती जलम-जलम में शिवजी नैं ई वर रूप में पा'ण री अरज करी।

मैना अर हिमालय पुत्री पारवती फेरूं शंकरजी नैं वर रूप में पायो । किसना आढ़ा री पोथी 'महादेव पार्वती री वेलि' में बी अै सारी घटनावां है । भारतीय लोक साहित में औढ़र दानी शिव री उदारता अर पारवती री दया-करुणा रो जगां-जगां वरणन है । भक्तां पर भीड़ पड़तां ई याद करतांई बै जा पूगै । लोककथावां में मरेड़ै नायक-नायिकावां नैं इमरत जळ छिड़क'र बै जिवादै है ।

शिव-पारवती री पूजा भारतीय संस्कृति रो विशिष्ट अंग है । राजस्थान में जगां-जगां गोर का मेळा भरीजै, सवारी निकळै । गोर को ठाठ-बाट अर लवाजमो देखण जोग है । साथेई केसरिया कसूमळ पोसाकां पैर्यां नाचती-गावती औरतां अर डावड़्यां चालै । जयपुर-जोधपुर-बीकानेर अर शेखावाटी में गणगोर का मेळा भरै जका सरावण जोग है । राजस्थान में चैत बदी प्रतिपदा सूं चैत सुदी तीज ताणी अठारा दिन गोरी-पूजा रो कामकाज हुवै । होळी रै दूजै दिन छारंडी या धुलडी नैं दिन ऊगतांई राख री पींडयां बणा'र गोरी रूप में बां'री पूजा सरू हुवै । कुंवारी लड़क्यां रूड़ै वर खातर सुहागिणां बेटां खातर अर अमर सुहाग ताणी, धन-दौलत खातर शिव-पारवती नै पूजै । आठवैं दिन सीतलाष्टमी नैं कुम्हार कै घरांऊ चीकणी माटी नै भावली ल्या'र ईसरजी; गोर, ढोली-ढोलण, माळी-मालण, कानूड़ा की मूरत्यां बणावै फेर रोजीनां पूजा करै । चैत सुदी तीज नैं राजस्थानी पोसाकां में ईसर-गणगोर री सवारी निकळै । चोखै बार नैं आं मूरत्यां नैं कुवै या ताळाब में पधरायी जावै । इण सूं पैली दूब, फूल अर जळ सूं गोर की पूजा हुवै । घरां में रोज गोर की बनोरी नीकळै । गोर; गवरल, गवरजा, गणगोर नावां ऊं गीत गवीजै ।

राजस्थानी रमणियां गोर पूजती टेम घणी उल्लास अर उमग सूं झूमती रैवै । नारी-हिरदय री आकांक्षा अर उल्लास रो एक अनूठो चितराम देखणजोग है—

खेलण द्यो गणगोर, भंवर म्हानै पूजण द्यो गणगोर ।
ओजी म्हारी सखियां जोवै बाट, बिलाला म्हानै खेलण द्यो गणगोर ।।

पति बी पुत्र-प्राप्ति री इच्छा परगट कर'र हरख रै साथ गोर पूजण री सलाह दे देवै है—

भल खेलो गणगोर सुन्दर गोरी, भल पूजो गणगोर ।
ओ जी थांनै देवै लाडन पूत, अलबेली भल खेलो गणगोर ।

लड़कियां टोळी या झुण्ड बणा'र दूब ल्याण नैं जावै (आ'ई दूब 'गोर को दायजो' कहीजै, जको आखिरी दिन गोर कै साथ कूवे या तलाब में पधरायी जावै) उण टेम घणां मीठा नैं सांतरा गीत उगेरै—

बाड़ी हाळा बाड़ी खोल, म्हे आई छां दूब नै
कुण्यां जी री बेटी छो, अर कुण्यां जी री पोती

× × ×

वाड़ी वाड़ी वाड़ल्या म्हारा भंवरया रे
वाड़ी में वसेलो कुण।
वसै ईसर पातळ, ल्याय झोळी भर फूल
आधा गेरू ग्रळ्यां गळयां, आधा गोरां बाई री सेज
सेज विछतां यूं कैवै अगड़ घड़ाऊं म्हारी वैनां नै
नौसरहार घड़ाऊं म्हारी गोरल नै
इतरी कैतां रूस गई दौड़या पीवर जाय
कानूड़ो मनावण नै नौसरयो
थारी मनाई ना मनूं म्हारा देवर रे
वड़ोड़ा वीरो सा नै भेज, मावज पाछा आय
ईसरजी मनावण नै नीसर्या, कांधै भंवर बंदूक
कांकड़ तोड़ी कामड़ी म्हारा भंवर्यां रे
सरड़ सरड़ सुळझ्यां जाय
कदै न रूसूं म्हारा सायव थो
कदै न जाऊं म्हारै पीर
भलभल रूसूं रूसणा म्हारा सायव रे
भलभल जाऊं म्हारै पीर

दूब लेर आंवती टेम सारो भूलरो वड़ै उल्लास सूं यो गीत गावे —

"गोर ए गणगोर माता खोल ए किवाड़ी
वाहर ऊभी थारी पूजणवाळी
पूजो ए पूजार्यो वायो कांई-कांई मांगो
अन मांगां धन मांगां लाछ अर लिछमी
गोडा सूधो राज मांगा खूण्यां सूधो सुहाग
जळवळ जामी वावल मांगा रातादेई माय
कान्ह कंवर सो वीरो मांगा राईसी भोजाई
सांवळियो वनेई मांगा सिज्यावाळो भैण
फूस उडावण फूंको मांगा हाडा घोवण भूवा
पीळी मुरक्यां मामो मांगा विणजारी सी मामी
इतरा वर देयो म्हारी गोरज्याए म्हे थारी पूजणयाळ
वर देई वाई केसरिया ए सारां में सिरदार
मेड़ी वैठयो वाई मद पीवै ए जांगड़ गावै गास
घोड़ै चढ़ै अंग मरोड़ै चालै निरखतो चाल
श्रो वर देई म्हारी गोरज्या ए म्हे थारी पूजणयाळ"

प्रस्तुत गीत में ढोला-मरवण (पति-पत्नी) रो संवाद देखण जोग है जी' में घण रो आग्रह है के आप गणगौर घर री मनावो पण घणी फौजी साथ्यां री दरबार में हाजिर होण री बतार जावण री ताकीद करै है—

म्हारै माथै नै मैंमद ल्याव, म्हारा हंजा मारू यां ही रैवो जी
यां ही रैवो जी बरसता बादळ, यां ही रैवो जी
थांनै रस्तै में होसी गणगौर, म्हारा हंजा मारू यांही रैवोजी
थांनें कोटा बूंदी में होसी गणगौर, भवरं कोई यांही रैवो जी

× × ×

जाबा द्यो छिणगारी नार जावा द्यो ना जी
थांनै आय पुजावां गणगौर
म्हारी मिरगानैणी जावा द्यो ना ए

गणगौर त्योहार सम्बंधी राजस्थानी लोकगीतां में कोमल शब्दावली, भाव-मधुरता, कलात्मकता रै साथ उल्लास री गूंज है। वसन्तकालीन मादक वातावरण में अै गीत अखूट रस रा भंडार लागै। गांव-गळी अर झूंपड़ा में ऊंचै सुर रा अै गीत इमरत री खान लागै। कर्नल टाड बी उदैपर री गौर कै मेळै को सांतरो वरणन कर्‌यो है। राजस्थान में हजारां की सख्या में काठ री गणगौरां है। जैसलमेर में हाथी रै दांत री नै जोधपुर में चांदी री गणगौर बी है। गढ़ां सूं ऊतरी हाथ कंवळ सिर फूल हाळी गौर रै सामै घूमर घालती औरतां रो तो मजमो ई न्यारो। आं गीतां में नारी-मानस री सहज अभिव्यक्ति मिलै। लूवर या घूमर गीत रै मिस एक बालिका सहज भोळापन रै साथ आपकै काळजिये री बात परगट करदे है गीत की कड़यां देखो—

म्हारी घूमर है नखराळी ए माय, घूमर रमबा म्हे जास्यां।
म्हांनै रमती नै काजल टीकी लादो मोरी माय,
घूमर रमबा म्हे जास्यां।
म्हांनै रमती नै लाड्डा दीजे मोरी माय, घूमर रमबा...
मनै राठौड़ां री बोली प्यारी लागै मोरी माय, घूमर रमबा...
मनै राठौड़ां रै घर परणाज्ये मोरी माय, घूमर रमबा...

घूंघट में झांकती नारी जद औ गीत नृत्य रै साथ गावै तो समो बध ज्यावै। गीत अर नाच री एकरसता, तान, हाव-भाव अर बोल लोगां नै भाव विभोर कर दे। महिला-जगत रै सहज भावां रो निश्छल प्रकासन इस्यै अवसरां पर ई देख्यो जा सकै। मनोविज्ञान अर समाज शास्त्र रा पारखी आं गीतां अर घूमरां ऊं घणी बातां सीख सकै है।

राजस्थानी कहावतां में गणगोर—राजस्थान री कहावतां में अठै रै भूगोल, इतियास, संस्कृति, प्रकृति अर जीवन री घणी वातां छिपी है। गणगोर सम्बन्धी कहावतां बी मिलै है जां में अै वातां देखी जा सकै—

१. तीज त्युहारां बावड़ी ले डूबी गणगोर—सावण मास री तीज रो त्योहार आखै राजस्थान रो प्रसिद्ध नै प्रिय त्युहार है। चेत सुदी तीज नै गणगोर आवै, ई बीच तीज ताणी त्युंहार न आण सूं आ कहावत चाल पड़ी कै तीज त्युंहारां में सै सूं पैली बावड़ी अर गोर वां नै ले डूबी। गणगोर कुवै या तलाव में ई डबोई जावै है।

२. गणगोरयां नैं ई घोड़ा नीं दौड़गा तो कद दौड़सी—आ बी राजस्थान री प्रसिद्ध कहावत है। गणगोर रै मेळै में घुड़दोड़ नै ऊंटां री दौड़ हुवै। जद कोई मंहगी या न मिलण हाली चीज ले आवै जको बींरी आर्थिक दसा रै अनुकूल न हुवै तो बो गणगोर री घुड़दोड़ री तरियां बीं को महत्व बतावै अर ई कहावत रो प्रयोग करै। तीज-तिवार नै ई गरीब चोखो खा पी सकै या पैर सकै।

३. हाड़ो ले डूब्यो गणगोर—बूंदी आंचळ सूं सम्बन्धित आ कहावत है। पैली बूंदी में बी राजस्थानी रजवाड़ां की तरियां गोर रो तिवार ठाठ-बाट सूं मनायो जातो। पण राव बुधसिंह हाडा रा छोटा भाई जोधसिंह आपरी राणी सरूपकंवर साथे जैत सागर में गणगोर री प्रतिमा समेत डूबग्या जद सूं बद हुगी। नाव में विहार करतां थकां ई दो मदमाता मैंगळ लड़ पड़्या अर नाव नै उलट दी। ई दुखान्त घटना सूं राव राजा गणगोर मनावण री मनाई कर दी। आ घटना सम्वत १७६३ वि० में घटी ही। हाड़ोती रो यो वातालार्थ ई रो ई संकेत करै है—

मैंमता गज आमल्या, खंच की लांबी डोर।
जैता सागर मांहिनें, हाडो ले डूब्यो गणगोर॥

गणगोर रै गीतां मे राजस्थानी जन-मानस री सांचो अभिव्यक्ति देखी जा सकै है। खासकर'र नारी-हिरदय री भावनावां, आसा-आकांक्षावां खुल'र परगट हुवै। सैंकड़ां वरसां रै प्राचीन ई तिवार रो महत्व हर द्रष्टि सूं है। रंगीली राजस्थानी संस्कृति री रूड़ो रूप ईं तिवार सूं जुड़योड़ो है। बदळीज्योड़ै जुग-परिवेस, मानता, मानव-मूल्य अर सांस्कृतिक आदरसां रै बावजूद बी गणगोर तिवार-उत्साह-उल्लास रै सणगार नै मनोरंजन री द्रष्टि सूं आज बी घणो महत्व राखै। सामाजिक अर सांस्कृतिक जीवन रो प्रतीक ओ तिवार इयां ईज जोस खुसी रै साथ मनाईजतो रैसी।



हिन्दी विभाग,
शारदा सदन कालेज
मुकुन्दगढ़ (राज०)

राजस्थानी ख्यातां

कृष्ण मोहनोत

मिनख रो सभाव इ निराळो व्है । एका कानी तो वो है जठेऊं भी घणो ऊंचो नें आगे बढण सारू रात-दिन जोड़-तोड़ करै नें एका कानी आपरै लारलै इतिहास नें जाणनै भी घणो उतावळो रेवै । इण इतिहास न जाणणरा भी घणा साधन है । वात, ख्यात, पीढियां वंशावलियां रै साथै सिलालेख तांबा पत्तर 'र रुक्का बीजा भी इतिहास रा खास स्रोत है । राजस्थान में तो ख्यात सबद रो अरथ इतिहास इज मानीजै है । यूं तो ख्यात सबद रो मतलब घणो नामी के कीरतमान के पछै लोक में मानीताऊं व्है, पण उत्तर मध्यकाल रै मायनै राजस्थान रा इतिहास लिखणिया इणरो अरथ और बढाय नै इणनै इतिहास रो दर्जो दे दियो ।

राजस्थान रै मायनै ख्यातां लिखण रो चलण मुसलमान पातसाह अकबर रै वखतऊं मानीजै है । इणऊ पेली वात पीढियां वंशावलियां रुक्का नै विगतां बीजी लिखिजतीज ही । वात मैं एक मिनख खास रो थोड़ो हवालो व्है । पीढियां मांय कोरो नाम नै सम्वत रो इन्द्राज व्है नै ऐड़ रूप रुक्का ने विगतां रा व्है । ख्यात लिखण री सीख मुगल दरबार ऊं मिली, एड़ी वात इतिहास रा पिंडत मानै है । अकबर जद आंइने अकबरी लिखावणो सरू करायो ने आपरै राज में इतिहास रो एक नेरो मेहकमो थिरपियो, इण वात ऊं राजपूतानां रा राजा रईस भी सीख लेय नै आपरा राज मैं ख्यात या जिणने इतिहास इज के सका हां लिखावणो सरू करियो । अकबर रै समैऊ लेय ने आज ताई राजस्थान मैं घणी ख्यातां रचीजी । खास तौरऊ अै ख्यातां दो तरै री हुवती । राज रा कर्मचारी राज रै खास हुक्म ऊं उणारै राज रो ने बडेरा रो पूरो हवालो विगत वार लिखता । इण मायनै राठौड़ां री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उदयपुर री ख्यात, बीकानेर री ख्यात नै मारवाड़ री ख्यात बीजी आवै । दुजोड़ी ख्यातां मैं ई व्है तो इतिहास रो इज आलेख पण उणने लिखणिया आपरे मर्जी ऊं ने इतिहास रे चाव रै कारण ख्यातां री रचना करै । जिणमें नैणसी री ख्यात, बांकीदास री ख्यात, दयालदास री ख्यात, गुरां नारायणदास री ख्यात, जोधपुर रै किले री ख्यात बीजी आवै ।

सेंगाऊं पुराणी नें भरोसेदार ख्यात "राठौड़ा री वंशावली राव सीहै जी सूं कल्याणमल जी ताईं" री मानीजै। इणमें राव सीहा जी ऊं लगाय नें राव कल्याण मल जी रै राज काल ताईं री खास-खास घटनावां री विगत है। 'गुरां नारायणदास री ख्यात' मायनैं बीकानेर नै जोधपुर रै राठौड़ सासकां वेणा भाई बेटां री पीढियां रो इन्द्राज है। सागै इ इण ख्यात री खासियत आ है कै राणियां, ठकुराणियां री भी जातियां नैं वेणी साखावां रो संकेत है। जुद्ध में काम आया वे वीरां रो तिथि सम्वत सागै नांव है। ठौड़ ठौड़ साख रा गीत दूहा नै कवित्त पण दियोड़ा है। राव रिड़मल रै राजकाल ऊं सरु व्हे है। वीं एक नमूनो देखावो—

"राव जांघाजी रे पुत्र जोगोगी हुवा। टीकायत था पिण टीको न हुवो। सनान करायो, उमरावां तेड़ियो, कह्यो पधारो किणहीक चाकर खवास कह्यो मायो गूके छैं, इसा वचन सकुन्यां सुण्या तद टीको न हुवो।"

"जोगावत खगारोत छैं, खगार जोगावत बडो दातार हूवो। घणा घोड़ा दीया अवसांण सिद्ध जैतवार हुवो।

"खंगार जी काम आया जैसा वरसिंघोत सूं वित लियो रवारियां सूं तद"

अैड़ी सैंग बाताऊं आ ख्यात 'मूता नैणसी री ख्यात रै सगै री ईज लागै है। मूता नैणसी री ख्यात राजस्थानी में लिखियोड़ी सै ख्याताऊं वजनदार ख्यात है। क्यूंक इणमैं इतिहास जाणना सारा साधन वात वंशावलियां पीढियां कक्का, गीत दूहा ने कवित समायोड़ा है। जठै दूजी ख्यातां एक राज खास रो हाल बताय सकै उठै नैणसी री ख्यात ऊं केई राजावां रै राज रो हाल मालम व्हे। राजस्थान इज नीं पण गुजरात कठियावाड़ नैं कच्छ री हकीकत भी इण में मिलै १३ वां सईका ऊ लगा ने नैणसी रै समय ताईं रै राजपूताना रै इतिहास सारु मुसलमाना रे लिखियोड़ी तवारीखा ऊं घण-करी नै भरोसै बन्द नैणसी रीं ख्यात है। राजपूताना रै इतिहास जाणन सारु बद इतिहास री दूजी खोज सामग्री हाथ झटकाय ले वठै भी नैणसी री ख्यात इज अंधारा री सोन किरण वणै। राजपूत राजावां रे अलावा वेणे भाई बन्द, री साखावां सारु तो नैणसी री ख्यात इज साची जाणकार है।

कोरो राज रो इतिहास इज क्यूं भासा नै समाज रै इतिहास रै मायने भी नैणसी री ख्यात वेजोड़ कड़ी है। राजस्थानी भाषा रै इतिहास में नैणसी री ख्यात रो ऊंचो आसन है। राजस्थानी ख्यातां री सिरमौर इण ख्यात री मेहमां इतिहास रा मोटा मोटा पिंडत मानी है। इतिहास रा जाणेता विद्वान स्वर्गीय दसरथ शर्माजी तो इण ख्यात री घणी मेहमां वताई है।

नैणसी री ख्यात रै पछै 'दयालदास री ख्यात' ऊं भी इतिहास ने साहित समाज री जाणकारी मिलै। इण माय ने बीकानेर राज रो पेलो विगतवार हवालो है।

राव बीकाजी ऊं लेय ने महाराजा सरदारसिंह जी तांई रो सही हाल इण मायने दरज है। इणरै अलावा दयालदास 'आर्याख्यान कल्पद्रुम' री रचना पण कीवी जिणमें सगले हिन्दुस्तान रो इतिहास लिखण री कोसिस कीवी। बीकानेर रै इतिहास रो नमूनो-"पछै कमर बांधीज रावत जी व्हीर हुवा। सू राजासर आया। अरु रावजी श्री जैतसी जी काम आया। तिण समै सिरदार सारा आपरां ठिकाणां गया परा था सु किता एक नूं किसनदास जी लिखावट करी। तिण माथै लोक हजार छव भेलो हुवो।"

दयालदास रै समै रा इज कविराजा बांकीदास जी भी एक ख्यात री रचना कीवी। इण ख्यात मायने समै समै माथे जेड़ी बातां मिली ने हुई उणरो आलेख है। इणमें कोई विगतवार नै मोटी बात नीं है पण छोटी-छोटी याददास्त सारू लिखियोड़ी बातां है। जिकी उण ओखोण नै याद अणावे के सुई रो काम तरवार नी सार सके। सोलंकिया रै सास री विगत पढण सूं आ बात सोले आना सई निजर आवे है। 'सोलंकियां रै भारद्वाज गोत्र, खेमज चामुंडा दोय देवी, महिपाल पितर, परवर तीन खिड़ियो चारण, बांगड़ियो भाट, कडारिया ढोली सोलंकिया रै कुल देवी कटेस्वरी, बड़ी चरादेवी अरथ कुक्कुट वहणी लोक वहचरा कहै।"

इतरो इज नहीं पण ख्यात में ठौड़-ठौड़ नीति री बातां, नांमी कवि नै लेखकां रो आलेख है। नांमी राजा, मंत्री, गढ़, गीत ने हाथी घोड़ा रो भी इन्द्राज इण माय है। आ ख्यात तो एक महासागर है उण माय मूंगा; मोतियां रै सागे सीपी घोंघा भी मिले है।

यूं खास तौर ऊं अै ख्यातां राजपूताना रे इतिहास रो इज रूप है। बात, वंशावलियां ने पीढियां ऊं भी ख्यात रो मान घणो है। इण माय उण टैम रो राज रो, लोक रो, धर्म रो ने अर्थ रो सारो इ चित्राम व्हे है। इयां भी इतिहास, समाज नै साहित्य एक बीजे रा पूरक मानीजे। राज रै इतिहास लिखण रो ख्यात रो पेलो काम हैं इज पण इण रै साथै इ मन्दिर नै गढ बणाया, जिणमें किण मैं कित्तो खरच व्हियो नै लोक में कांई रीति-रिवाज हा उणरो आलेख भी आप ई आप आयग्यो है। मतलब के एक राज रो इतिहास इज नईं पण ख्याता ऊं भासा, साहित्य नै लोक जातियां रो भी इतिहास मिलै। ज्यूंक मोणोत जाति रै उदय रो इतिहास "राठौड़ा री ख्यात" में मोहन जी रा बेटा रो ब्योरो लिखता टेम आयो है। "मोवण जी रे बेटा दोय। १ भीयोजी रे वंश रा मोवणिया राठौड़ मसूर है। २ सुभसेण जो रे वंश रा मोणोत ओसवाल हुवा तिणरी हकीकत ईणतरे है के रायपाल जी मांगा भाटी ने चारण री बेटी परणाय चारण कर दियो हो जिण वेर में मोवण जी नै जैसलमेर रा रावल पकड़नै ले जाय नै आपरा कामदार श्रीमाल महाजन रै परणाय दिया तिण रै बेटा सुभसेण जी हुवा तिण रै वंश रा मोणाहृत कहलाया।"

यां ख्यातां में तो ऐड़ा हुवाला मिलै जिका आज तांई धावा नी विया ने इतिहास री ऐड़ी केई कड़िया ऐ ख्याता बिना विखरियोड़ीज रै जावै। 'सूरज प्रकास' नै राज रूपक जेड़ा महाकाव्यां मांय जोधपुर रा राव चन्द्रसेण रो कीं हवालो नी मिलै, पण जूनी ख्यातां में नै मोणोतां री ख्यात में ऐणो जिको हवालो मिलै उणसूं आ ठा पड़े क ओ राणा प्रताप रै जोड़ रा जुझार हा जके आपरी आन नें मान सारू भाखर-भाखर भटकिया नै रोही रा रैवास किया।

इनै सागै एक बात तो मानणीज पड़ै के ख्यातां में कठेई सन-संवत् कूड़ा दियोड़ा तो कठेई राजा खास रो ब्योरो उणरै समय रू एण सईका पेली पड़ै है। पण ओ तो इतिहास रा पिंडता रो काम है क चालणी ज्यूं छाण, बीण कर नै सार नै लोक रै सामै रखे।

इतिहास री आज री कोई पोथी ऐड़ी नीं है, जिणमें ख्यातां रै प्रमाण बिना इतिहासकार आपरी कीं बात कै सक्या है। ठौड़ ठौड़ नैणसी, दयालदास, बांकीदास नै नारायणदास री ख्याता रे सागेई राठौड़ा री बीकानेर री, नै घणाइ महाराजा री ख्याता रो हुवालो दियो। इतिहास रा मोटा विद्वान नै पिंडत डा० दसरथ सर्मा, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने विश्वेश्वर नाथ रेऊ बीजा तो अ ख्यातां री महिमा माने इज है, पण परदेस रै इतिहास रा जाणकार भी राजस्थानी ख्यातां रै प्रमाण बिना इतिहास नै अधूरो इज मानै।



प्रा० जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर

गूंगली

चेतन स्वामी

जेठ रो तपतो महिणों अर ऊपर सूं चालती फुलखारी लू । आलकतरें री सड़कां लुहार री भट्टी सी तपै; पण गूंगळी नैं किण बात री फिकर । उणरैं भवां (भले) लूवां क्या लूवां रो बाप चालो नीं चावै, सड़कां भट्टी क्या रेल रै इंजन ज्यां तपोनी चावै । बा तो आखो दिन बींया ई उभराणी तपड़का मारै । अेक जाग्यां बैठी तो उणनैं स्यात ही कैण देखी हुवैला ।

सियाळो, उनाळो, चौमासो किसी ही रुत हुवो । गूंगळी रो अेक पहरावो हुवै फाट्योड़ो मेलो कुचेलो सो स्याड़ियो, (घाघरो) टुकीआळी कांचळी, अर अेक फाट्योड़ो सो ललूरियो (ओढणो) माथै ऊपर नांख्योड़ो । कितरो ई कड़कड़ावंतो पाळो पड़ो । गूंगळी रै शरीर माथै बीजो गाबो नीं दीसै । साधो–बुधो मिनख पाळै सूं जकड़ीजग्या पण कै मजाल गूंगळी नै तेज तावड़ो चढै । कैवत साची ई कैयी है कै 'भोळां री भगवान राखै टेक'''।

आपरो दीन धर्म विचार'र जै कोई बासी-कुसी गूंगळी नै देय देवै, गूंगळी पोता री कायानैं भाड़ो दे देवै अर फेरूं मस्त, पण गूंगळी भी अजब तरीकै री सिटकणी (चिड़ोकली), उभराणी फिरती नैं देख'र जद कोई फाटी पुराणी चपलां देय देवै, तो गूंगळी चपलां नै पाछी देवण आळै रै सिर माथै मारै, अर रोळा करै गळियां में भूंवती वेळां कदेई नीं बकती दीसै, पण जे समझदार मोटो मिनख लुगाई छेड़ लेवै तो रांडा-बूडां री गाळ्यां काढ्यां बिना नीं रेवै । छतांपण गूंगळी में अेक अनोखी बात फेरूं ही नान्हां टाबरां नै कंई नीं कैवती । नान्हां टाबरां नै देखता ही भाज'र साम्ही आंवती अर टाबर नैं बांथ्यां में उठा'र छाती सूं काठो चेंप लेंवती, मुंडै माथै सैकड़ूं वाल्हा(प्यारिया) जबरदस्ती लेंवता थका बड़बड़ावती "'''म्हारा नैनकिया'''म्हारै काळजियै री कोर''' म्हारा नैनकिया इतरा दिन तूं कठै रमग्यो हो'''।"

अचाण चकै री गिरफत में आयोड़ो टाबर गरळांवतो ।

"अे मां अे'''गूंगळी खा अे'''मां म्हनै गूंगळी खा'''SSS'''"

टाबर रो रोवणो सुण'र टाबर री मां भाज'र वेगी वेगी आंवती अर गूंगळी रै हाथां सूं टाबर नै छुड़ा ले जांवती, जाती जाती पांच सात गाळ्यां री बगसीस गूंगळी ने बनाय जांवती।

"निसरमी रंडार नै ढोई ई को हुवै नीं"'डाकण गळी गळी हांडती फिर बोकरसी, टाबरां नै सुख सूं को खेलण दै नीं"।"

टाबर रो बांवळियो भाल'र आगीनै करती टाबर री मां पाछल फुर'र ओजू चेतावणी देंवती थकी कैंवती 'अबकाळै जे टींगरा नै अघाई तो वखोरो सो; भाग नासूली'

गूंगळी अेकटक जोवती रैवती, जोवतां जोवतां ही उणरै ठीमर (धीरज) फूट ज्यांवतो। नैण सावण भादव री झड़ी लगाय देवंता। अेक भरजोर नेहरो निसकारो नांख गूंगळी आगली गळी में रम जांवती।

× × ×

आज जद म्हैं नानाणै सूं भण पढ़ीज'र दस बरसां सूं पाछो गांव आयो हो लारली बालपणै री सैंग वातां मुंडै आगै सनीमां रै पड़दै माथै चितराम आवै ज्यां आवण लागी। जूनीयै पींपळ तळै हाडा लकड़ी रमता हा अर बीं टैम ही घूमती घामती आ ज्यांवती गूंगळी। सैंग रमणआळा टाबर चिड़ावणो सरू कर देवता—"गूंगळी थारै माथै ऊपर भाठो"'गूंगळी थारै माथै ऊपर भाठो।"

टाबरां सूं गूंगळी कदे ही नीं चिड़ती टाबर चाहै जचै ज्यां केयो करतां पण टाबर डरता भागण लाग जांवता। गूंगळी भाज'र म्हनै पकड़ लेंवती अर म्हैं गरळावतो म्हारो गरळांवणो सुण'र मां आयर छुड़ा ले जांवती। फेर गूंगळी केयी जेज तांई आंसूड़ा ढळकावती।

आज जद अे वातां मुंडै आगै आवण लागी तो मां सू पूछ बैठ्यो।

—'मां गूगळी तो को दीसै नीं आसै-पासै"'कांई हुयो उणरो?"

मां रो आकरो सुभाव सदा सूं है पण म्हारी अचाचूक री आ वात सुण'र तो मुंडै माथै मुळक आ ही गी। फेर नेहपळ बोली—"हुवै कायी हो मरगी, पण तनै या अचाचूक री वात पूछण री कांई सुझी। दस वरस हुयग्या पण गळी को भूल्योनी?"

भूलूं कियां"'फेर थोड़ी जेज रुक'र बोल्यो—"मां गूंगळी जळम सूं ई पागल ही कांई"'उणनै टाबरां सूं अणूतो कोड कींकर हो?"

मां फेरू हंसी—

"बावळा! थनै कांई लेवणो है आं वातां सूं हणै तो नानाणै सूं आयो है-उठै री वातां बता अे तो फेरूं ही होंवती रैसी।"

'नहीं मां म्हनै गूंगळी रै बारै में सगळी वातां बता—नानाणै रा कायी समचार है। सब राजी खुशी है।"

घणो अथायो जणै जा'र मां गूंगळी रो इतिहास बतावणो सरू करियो।

"ओ"जको आपां रै आथूणै छेड़ै उपासरो है वो कदेई गूंगळी रो हुया करतो। गूंगळी रो मोटियार, गूंगळी अर उवैंरो नैनो छोरो तीनां तीन ई रैवता। गूंगळी रो मोटियार मास्टर हो। सगळां रै मुंहडै लागतो आदमी हो। इयै उपासरै में टाबरां नै भणावंतो। टाबर भणावणै रै अवेज में उणनै मोयलाळा जरूरत री चीजां देय देंवता। मास्टर री जिन्नड़ी पोतारी सुख सूं हालती ही। मास्टर आपरै रस्तै सर चालतो इण कारण सूं सैंग मोयलाळां रो प्यारो हुयग्यो। कोई नै पण शिकायत रो मौको नीं देवतो। पोता री ईमानदारी अर मेणत सूं टाबरां नै पढावंतो।

मास्टर सदा सूं रिगली गारो हो। लोगां नै रोजीना सांसरा उपासरै में भेळा कर लेंवतो अर उवांनै आपरी घड़ियोडी का'ण्यां सुणांवतो। उण री का'ण्यां कोई राजा-राणीयां री नीं ही। भोगता जमींदारां री काट करणवाळी होंवती उवां रा जुलमां माथै मास्टर खार खायां बैठो हो।-कोई भोगते नै उवैंरी लिखियोड़ी का'णी पोंचगी। दूजैई दिन लोगां मास्टर अर उवै रै नैंने टाबर री लाश दीठी। कोई दोखी मास्टर अर उणरै नान्हे छोरै री कतल करदी ही।

दिनूगै उठतै ही मास्टरनी (गूंगळी) जद मोट्यार अर आपरै अकलड़ै छोरै री लाश दीठी तो तड़ाछ खाय'र पड़गी। च्यार दीना पाछै मास्टरनी न चेतो बापर्‌यो तो अबै वा मास्टरनी नीं ही। गूंगळी रो रुतबो मिळ चुक्यो हो।

गूंगळी नैं आपरै अेकलपै छोरै सूं भोत वती मोह हो। इण वास्तै वा सदा गळियां में खेलता टाबरां में आपरै छोरेनै जोंवती रैवती।' मां इतरो कैयनै चुप हुयगी। म्हैं ख्यालां रै डूगै सागर में गोता लगांवतो थको मां सूं प्रश्न कर्‌यो—"पण मां वा इत्ता छोरां रै होवंता थकां म्हनै क्यां बांथ्यां में भर लेंवती अर म्हनै ई क्यां वाल्हा देंवती ?"

मां बतायो।

"जिण दिन गूंगळी रै मोटियार अर छोरै री हत्या हुयी ही उणी दिन थारो जलम हुयो हो पण गूंगळी नै इण बात रो पतो नीं हो वा तो थनै इण वास्ते ज्यादा वाल्हा देवती कैं'थारी अर उवैंरै छोरै री सूरत अेक ही जैड़ी ही, उवैंनै स्यात थारै चे'रे में आपरो फरजन्द लखांवतो।"

मां तो कैवणो बन्द कर दीयो हो पण म्हारो सोचणो जारी हो। मां रै मुहडै सूं पूरी बात सुण'र तो म्हनै इयां लागण लाग्यो कै जाणै गूंगळी म्हारी मां ही अर वा थवै इण नृश्वर संसार में नीं है। आंख्यां री कोरां में हाथ लगायो तो बठै नमी ही। बैठ्यो बैठ्यो ही भर जोर निसकारो नांख्यो—'हे गूंगळी मां तूं जठै कठैई हुवै थारो आतमां नै श्यांती मिळै।



प्रबन्ध सम्पादक राजस्थली
श्री डूंगरगढ़ (चूरू) राज०

साबली अर लूगड़ो

विक्रमसिंह सोलंकी

धूळ सूं खेलती-खेलती, सारी की सारी धूळ में लोट-पोट हो जावै छी म्हूं । दन-रात उगवा सूं आथतां ताईं यो ही एक काम छो । रोटी तो दूरी, पण फाणी नै भी भूल जावै छी । जद ताणर तस लागती होठां पै फेफरी आ जाती जद ही भागी-भागी जार मां सूं कहती—"मां फाणी पीऊंगी री'

"चाल थंई फाणी की तो याद आई ।"—मां रीस रार देती ।

अर म्हूं गटां-गटां फाणी की घूंट नै उतार पाछो-को-पाछो धूळ में घर-गूल्या जा वणाती ।

वै दन भी वीतता ग्या, अर हरण-घूघरो, छींया-पत्ती, लाटी-फूल्या खेलती री-खेलती री, अर नागतणी रैहती-रैहती छोटी-सी घाघरी पहरबा लागगी । कोई झुनकू कहतो, कोई भवरी, कोई तूपाली अर कोई चडी अर म्हूं छोटी-सी छोटा-छोटा मूंडा सूं वातां करबू करती । कदीं दादी की गोदी में तो कदीं बाबा का कांधा पै, अर कदीं मां कांख में लटकाती ।

"थाकै तो घणी ही लाडली भाई कोराणी । ईं छणीक ताईं नीचै ही न उतारो ।" म्हारी काकी कहती ।

"ईं का अस्या लक्खण वगड्या छै क ईं सूं नीचै ही न चाल्यो जावै । सारा गांव कै चक्कर लगावैगी, घर-घर नापैगी पण म्हूं दीखी क ईंका दैवता सोळास जावै छै ।" म्हारी मां कहती ।

असी मनमान वांता पाछै छूटतो गी अर म्हूं वड़ी होवा लागगी । घाघरी-लूगड़ी सूं अब घाघरो अर लूगडो खैंचा लाग गी । मां भी ज्यादा खेलवा न दै छी । म्हांका गांव मैं पांचवीं ताईं कोई मंदरसो छो, ऊमैं पांचवी कर्‌ली । अब एक ही काम छो, ऊ भी घर को बुवारो—वरतण, सीवणूं-टोपणूं, कदीं-कदीं कसीदा भी काढ़तो । दोनी टैम रोटी-स्याग तो म्हारै ही पांती छो, 'मां और काम करै छो ।

या तो म्हईं याद पड़ ही गी-छी घणां दन फैली ही क म्हूं एक दन पांखड़ा लगार उड़ जाऊंगी, 'म्हूं परायो धन छूं। एक दन ई घर सूं जाणी ही पड़ैगो। गांव में म्हारै सामनै नरी ज्यान्यां-बरात्यां आई छी। सुगना तो म्हूं छोटी छी जद ही परण गी-छी। राधा भी परणी परणाई छी। पारबती कै ई साल ही गूणूं देबा की सुरसरी छी अर म्हारी भी चरचा घर में म्हसूं छानी कोई नै छी। कदीं ऊं लड़का की बातां तो कदीं ईं लड़का सूं सगपण की। कोई दो हजार मांगै छो तो कोई ईं सूं ऊपर।

बड़ी अजब लागै छी ये सब बातां क बेटी की तो बेटी द्यो अर फेर ऊपर सूं पीसा द्यो, डायजो सजोवो, गहणूं बणावो, कपड़ा लत्ता को सूत बांधो, बरतण-थाळी बसावो-अतरी जद चीजां होवै जद जार एक बेटी का पीळा हाथ होवै। गजब छै, यै दुनियां हाळा भी ज्यांई कांई समझ न आवै। यां ई समझावै भी कुण, फेर समझै भी कुण छै? अक्कल खुद कै गोडै अर धन दूसरा कै गोडै दीखै छै।

तरै-तरै की बातां सोचबा में आबा लागी, भलांई बेटी बोलै न। अर यां भी सुणबा में आवै छै क बळद अर बेटी तो 'जठी डौर उठी' ही जावै छै। बड़ी ताज्जब छै ईं बात मैं भी क ई मनख्यां की दुनियां मैं बळद सूं भी गी-बीती छै या बेटी की ज्यात। बळद तो फेरूं भी तुड़ार भाग जावै, पण बेटी जींसूं बाधै ऊसै बधी ही रै जावै छै, मारै या ताड़ै, पण स्याणी की स्याणी एक ही ठाम पै बधी रैवैगी। या ऊंचा-नीचा बच्यारां में एक दन अस्यो भी आग्यो क म्हारी सगाई भी होगी, अर लाड्यां गाबा को बलावो लागग्यो। म्हईं आज समझ में आगी छी क बेटी जनावर सूं भी सस्ती छै जींया भी याद कोई नै क कुण तो ऊ छै, ऊकी कसी नक्ल-सक्ल छै, कस्यो रूपाळो छै, कस्यो सभाव छै-यै सैंदी बातां म्हारा दिमाग मैं फरती-फरती ठंडी होगी, कोई-नै कांई रवी, कोई नै कांईं। सब बातां सुणतो री अर मन का लाडू बणातो री-अस्यो होवैगो, अस्यो होवैगो अर फेर घर हाळा भी तो म्हारा ही छै यांनै जै भी करी होवैगी, आछी ही करी होवैगी।

गांव की लुगायां बातां भी करै छी अर लाड्यां भी गावै छी।

"चालो घणी आछी होई भाई, बेटी तो पैलां की करणी ही पड़ै छै।"

"करै न तो कांई करै? यो तो धन ही परायो छै।"

"बाबा-दादी की भी मशा पूरी होगी। वै भी घणां दना सूं करै-छा क ब्याव म्हां कै मूंडा आगै ही हो जावै तो घणूं रूपाळो लागै।"

कोई नै रवी, "बोझ हळको होग्यो।" अस्यां जतना मूंडा उतनी ही बातां होती गी।

अंदाई घणी मोड़ी नींद आई। सोचती री क आज सूं आपणा अंजळ-दाणा ईं घर सूं उठग्या। अब मीनां दो मीनां में जाणूं ही पड़ैगो।

दनाई कढ़तां देर न लागी। फतना ही आमण-टामण होवा लागग्या। बन्याक बैठग्या, सीगसा लागव। लाग्या, अर हल्दी सूं सारा कपड़ा पीळा होवा लागग्या। लाड़ी-बन्यार्का को नूतो आतो। जस्यां ओर लाड्यां देखी उस्यां ही म्हई भी बणणी पड्यो। उस्यां ही लाज आती, उस्यां ही माथो नीचो को नीचो रंतो, बोल्यां सूं बोल न म्हतो। न तो रोटी बारै ही आवै छी, न भीतर ही जावै छी। अतनूं भी फकर कोई नं छी क परणावो एक फांसी छै अर या भी खुणी कोई नं छी क परणवो आछी चीज छै। या बात जरूर याद छी क बेटी नं परणानू ही पड़ै छै। तेल बैठग्या। रोज फाक्यां-माम्यां तेल छोड़ती अर तेल गाती। कदीं-कदीं तो मन-ही-मन हांसी आती क तेल भी गाया जावै छे कांई?

अस्या करता ग्या पांच दन तांई, बांसणा के दूसरै दन मैंडो, ऊंई दन फेरा छा। मैंडा कै दन अतना भी हूम-डाम होया क जीव रहग्यो, यो करो ऊ करो। स्याम पड़तां-पड़तां कोई नं आर रवी क जान को नाई आग्यो—जान आगी, फांकड़ पै बैठ बाग्यो क काळज्या मैं डोळी-सो पडग्यो, क अब तो…।

फेरा की टैम पै फेरा पड्या अर वसंदर छानी-मूनी भांकती री। स्याण-स्याण लाडी फूठल्या मारा नैणां कै आगै फरता रया आज छीतरा का लाडा-साडो मैं जीव आग्यो छो।

अब म्हूं बेटी सूं बूं बणगी। फतनूं ही नयो अचरज म्हारा मनस-जमारा मैं आ जुड़ग्यो।

बावळ की छाती अर मायड़ का काळज्या सूं बदा ली अर सासरा का गेला पै गाड़ी गुड़कवा लागी। गुड़कतां-गुड़कतां ऊ घर भी आग्यो ज्यां नई जन्दगाणी, नई दुनियां, मनख नया, घर—आंगणा नया अर पेला को पूत, जं परमेसर-पो घरप ल्यो ऊ का मंदर मैं पांव धर्‌यो। सारा घर में फावणां को मेळो-सो भर्‌यो छो। सभी म्हारा मूंडा आडी भांक र्‌या छा, पण लांबा-सा घूंघटा मैं म्हूं लाडी छी अर सभी की आंख्या एक टक सूं म्हई घूरती री। एक-एक कर सभी नं म्हारो मूंडो देख्यो।

"लाडी तो कूंळा-गांड़ी मूरत छै।"

"चन्दरमा का टूकड़ो आयो छै जाणं घर में।"

"ओ…आया, अस्यो गोरो रंग भी कांई काम को, कदीं भी नजर लाग सकै छै।"

"खा-खार जा र्‌यो छै घोळा खालड़ा पै यो पड़ळो।"

कोई नं कांई रवी, कोई नं कांई, अर अब म्हूं नो दन की लाडी बव पलटवा लागी।

दन बीतता ग्या । कदीं सासूजी का मन में न समाती, तो कदीं नणद बाईसा का बोल काळज्या सूं पार हो जाता । बड़ा नणद तो ब्याव क पाछै ही वा'कै सासरै चल्या ग्या छा । बांका आठ दन का हाव-भाव भी गजब छा । जस्यां-तस्यां वै पधार ग्या छा, पण छोटी नणद छोटी-छोटी बातां नै सासूजी सूं चपोती, थोड़ी-सी भी मोड़ी उठती तो रसोई का बतरण बाज उठता, एक धरता अर एक मेलता सासूजी । वांकै सराणै नै म्हूं कदीं खड जाती तो खैता—

"मच्च-मच्च कांई चालै छै, थोड़ा पांव तो धीरां धरवू कर ।"

असी-बातां सूं जीव काळो-पीळो हो जावै छो । वै भी या ही खैता—"थारो बगड़े कांई छै, जस्यां मां खैवै अस्यां ही कर लेवू कर ।"

आज कै पैली या यूं खै द्यूं क जद कुंवांरी छी जद सुणबू करै छी क सासरो घणूं कठण होवै छै, आछो-आछो का होस डोल जावै छै, घणां हाथ्यां को मद गळ जावै छै । ऊंठी सासूजी की कुणस, उठी नणदां न भावै अर छोटा-छोटा दैवर भी रोस गांठे । पाज नूण कम, आज मरच्यां जादा । या साची ही बात छै क जै जादा डरफे छै ऊई भूत दीख भी आवे छै । कतरों भी सवल'र काम करती, पण कोई ठौर तो कसर रै ही जावै छी । एक दम बांकी स्याण में जाणै कठी सूं बाळ खड आयो तो थाळी असी फांकी कै स्याण सूं म्हारा पग दाजग्या । नठां जार बांको गुस्सो ठंडो कर्यो बचपण का सारा का सारा खेल-तमासा भी घणी दूरै दीखै छा । कतनी भी कोशीश करूं पण घणां घणी दूरा रैग्या छा । धूळ का घर—खूणा मटग्या छा अर ये सांच्याई का घर खूणयां की भणकार म्हारा पावां में गूंजती री । लाम्बो सो घूंघटो खाड र घाणी को सो बळद बणी फरती, कदीं-कदीं तो घूंघटा में ठोकरां भी खाती तो या ही आवाज आती— "आंधी छै कंई ? दैखर तो चाल ।" हांसी भी आती, तो रोवणूं भी । हांसी यूं क यै सब आख्यां होता भी आवा छै अर रोवणूं यो क मरबा की, न जीबा की । कंई बार तो रोटी कंठ में चुभती अर आंसू टळक दैणी सूं टपक पड़ता । हाय र सासरो, हाय र मनखांजमारो । बाबळ नै तो घर ही दैख्यो, जीमैं दोन्यूं टैम को दाळ-रोटी छी. बर भी छोको, पण घर हाळां को सभाव करमां दीखै ।

रोज कांई-न-कांई बहानूं अर ऊं को रोस म्हारा माथा पै आतो । सारो-को-सारो बाळपण घणीसी दैर में ही खडग्यो । "अटळी-पटळी गांठ गठेली ... थारै नाई द्यो जो, द्यो जो सूना की पाळ पसार दै ।" सूना की पाळ तो कांई आख्यां की पाळ रोज फूटती अर फाणी-ही-फाणी हो जातो, मोरड़ी का-सा आंसूं टपकवू करता । सारा लाड खोतळचां घलग्या, सांची खैवै छी मारी काकी—"दैखो कौराणी ई-लाडां सू लोड्यां मत नंगळाबू करो, एक दन सारा लाड खड जावैगा । सांची बात छै बाळपण में जादा ईतरावो, गाबो, रुसबो अर यो खाऊं, ऊ खाऊ सारा ही एक-एक कर खड आया । सासरो अन्त्याम-सो लागर्यो छो ज्यां रोजीना नया-नया पाठ फडणै पड़ै छा । कांई-कांई याद रखाणती ?—यो कर, अस्यां कर, अस्यां बैठ, यूं न यूं चाल, पल्लो कुड़ैस, लूगड़ा

ही साम'र चाल। जीव रैग्यो यै सब नखरा सहतां-सहतां। बस कै बारै छै सब काम। फेर जस्यां-तस्यां दन बीतता र्‌या, घर-धण्यां सूं भी कंई बार की, पण वानैं भी यो ही जवाब द्‌यो, 'म्हूं कांई करूं। थू खैवे जै करूं। कस्यां समझाऊं? मां जाणै अर थू जाणै। "कंई बार तो अस्यो कस'र गुस्सो आतो मन ही मन में अर सी उठती कस्यो लोग छै एक ही बात न मानैं। औरां का लोग तो लुगायां कै आगै नाचै छै, फरक्या-फरक्या फरै छै।"

कुण नैं भी चत न धर्‌यो, सब आपणा-आपणा की ही मीठ बोलता। सब आपणी-आपणी आतमा का मगा होवै छै। म्हूं तो छी भी पैलां की जाई, कुण कै दरद हो तो।

जोनैं जस्यां रवी, उस्यां ही करतो री। मां की समझाई या बातां गूं चालती "बेटी, सासूजी थारी धरम की मां छै अर ससरा जी धरम का बाप। देख, थारा घरका मैं गाल्यां मत खडाजे सबको क्यो मान जै।

जीव कै तांई दुख द्‌यो, पण सबकी सैण मानती री। घणूं क म्हारो सभाव छो क कोई को खरवार्‌यो न सै सकै छी, पण सब पराणी बातां का बच्यार, बच्यार ही रै ग्या।

रवैणूं करतां-करतां कोई को थूक्यो, न उसांग्यो; पण एक दन परबत टूटण छो, जे टूट्‌यो ही सरी। म्हारो तो सांझ पड़तां बयारो खाट'र आवो छो क थोड़ो-सी चोटी पाछै सूं उगड़ी रैगी। उई घड़ी ससरा जी को आवो होग्यो। वानैं घूं भी न करी, पण सासूजी नैं अस्यो वहानूं पकड्यो क साग का सारा म्हारा पीहर का फूलै। बला ल्या। एक धरै अर एक खाट, हाथ उठावा तांई की नोबत आगी। ससरा जी या ही खै'र बारै चली ग्या, 'ई खालं एक दन, जै थारा घर को भी टंटो मट जावे। जद देखै जद आपड़ी नैं खाती रैवैगी।' पण सासूजी कै तो एक भी न लागी। रात पड़गी, तो नठा-नठां दन ऊग्यो। ज्यूं ही दन ऊग्यो, रामायण चालू होगी—

"चोटी दीखी अर क्यूं दीखी," या ही एक धुन छी।

म्हूं सुणती री अर काम करती री अर सासूजी तो गुस्सा सूं ठस सूं मस न होया अर बड़बड़ाता र्‌या।

"मां, हे मां, बड़ी जीजी बाई को कागद आयो छै।' छोटी नणद या रोती दौड़ती आई।

"देखां कांई समंचार आया, पड़तो।"

छोटी नणद कागद पड़वा लागी—

"...मां, ईं का होत की तो थू म्हारै तांई नदी में धकोल देती। एक दन

माथो उगडयो कांई रंग्यो क सारा घर में जंजाळ छारयो छै। जै भी आवै छै सब कुणसै छै, कोई को भी सुख कोई नै। सासू भी वैरण छै जै सळगी लाखड़यां सूं भी म्हंई…। अरी म्हारी मां, म्हारो गळो मसकर कळूंट ले लेती री। अरी म्हूं मरबा को, न जीवा की री। भायो खंदा'र म्हईं मंगा लै री।

सारा घर का ही रोबा लाग्या, म्हूं छानी-मूनी खड़ी री।

सासूजी उठ्या, फाणां प्यो अर म्हसूं खैबा लाग्या–'बेटा, म्हई माफ करजै म्हसूं गलती होगी।'

अब राजा राज छै अर प्रजा चैन छै।



द्वारा हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान
कोटा जक्शन, कोटा

सम्पादक रो पतो—

डा० कन्हैयालाल शर्मा
४/२ सिविल लाईन्स,
बीकानेर

अैक्यौड़ा पगल्या

डा० मनमोहन स्वरूप माथुर

अमिट नै देख'र म्हारो जीव उदास हुवै जावै। नी जाणै क्यूं ? ऊंची भर्‌योड़ी झांग रंग काया। चोडा माथा पै घूंघराळा केस। पण म्हनै वीको रूपाळो पण कोनी भावै। सांझ लान माथै बैठ्योड़ो म्हूं याई सांमळ री ही कै अमिट वठै आ पूग्यो। सांगानेरी छपाई रा वेल-बाटम ऊपरै टोदार बूट पैर्‌योड़ो वो घणो रूपाळो लाग रूयो हो आतांई वो म्हारी लारली कुर्सी माथै बैठग्यो। हाथ सूं लिफाफो काढ'र म्हारा आगै बढायो। "वेना घणी काण्या लिखै है। या ले म्हारी भी एक का'णी।" म्हूं दाका सूं ऊंरी उणरी कांनी देखूं। यो लिफाफो ? ईमैं कंई है ? "सुणता ही ज अमिट रो हास ठा'का मैं बदळ ग्यो।

"याई तो कठ हूं वेनां। ईमैं है म्हारी का'णी। ले वाचै नी।" यो कह्यो।

म्हूं लिफाफा नै खोलूं जतरै वो बोल पड़ै वेनां, यो एक छोरी रो कागद है। म्हनै घणी चावै। अरे, खोलैनी।"

"पराई छोरी रो कागद म्हूं क्यूं बांचू ?" म्हूं कयो।

तूं भी भोळी है वेना ! वांच'ण देख तो, कपू लिख्योड़ो है ? कागद खोलता ही किस्यौं-किस्यो लाग्यो। 'म्हारा सिरजणहार' पढतां ई तो हंसी फूटगी। लिख्यो हो "थां हर हफता आओ हो तो सांच कैऊं सूणी जिदगांणी मैं गीतां री गूंज छा जावै अर थांरै जावण रै पाछै म्हारो जीव फाट्यो जावै। थारै सागैऊ उण दिन जो रोल नै देखी ही आज भी नी बीसरी हूं। लागै वा परदा री नी म्हारा जलम री रोल ही। सायद काकोसा नै ठा पड़गी। पण म्हूं करूं भी तो कंई ? अमिट ! म्हारा हिवड़ा सूं प्यारा अमिट। म्हूँ तो थांकी रेख हूं--अमिट रेख। जो कदी मिट नी सकै अर थां भी ईनै मिटावण री जतन मती करजो। थां वी अदरग वाड़ी मैं मिळज्यो जठै आपांरै मिलण सूं पुसप मुळकावै, भमरा गुणगुणावै अर थांको प्यार…" आगै री लाइणा वांची नी जावै। म्हारी आंख्यां रे सामै वीं भोळी भाळी वसुधा रो चेरो उभर आवै। म्हूं सोचवा लागी

"अमिट सात फेरा फिर'र उणरो अगनी देवता रै सामै हाथ पकड़्यो। जिणरी लार साथ देबां सारू। पण कठै मल्यो बीनैं भरतार रो सारो।"

कितरा बरसां सूं अमिट नैं जोवती आ'री हूं। मावीत्र रो घणो भरोसो है ऊपै। छं बेनां ऊं मोटो है वो। मावीत्र सरबस निछावर कर सकै ऊपै। ईं खातर हीज तो छोर्‌यां नै फसावणो ऊको डांवां हाथ रो काम बणग्यो है। गाबां अर करीम पोडर रो रौब डाल'ण वो आपरा खास मुखोटा नैं छिपाई ले। लोग सोचै घणा मोटा घर सूं है यो। पण या कल्पणा री उड़ान पछै कितरी फीकी लागै–ईनैं अमिट पिछाणनो हीज नी चावै। रिटायर्ड़ बाप रा अरमानां नैं पूरो करबा सारू वो लारला चार सालां सूं बी० ए० पास करबा रो जतन कर र्‌यो है। पण आज तलक तो वो पास नी हो सक्यो! जलम रा ईं चटकीला रुख सूं तो अस्यो लागै कै ऊंका जळम रो सगळो अस्तित्व हीज खतम हो जावेलो। छ छोर्‌यां री उमर रो बोझ अर अमिट रो दुख ऊंका मावीत्र री जोत नैं सदा बदळै जा र्‌यो है।

बेटो! अमिट थनैं घणो मानै है। ऊनैं कै क जळम रा आखरी दणां मैं तो म्हूं बीनैं खबर सूं देखलूं। ऊनैं बी० ए० तो कर हीज ले'णो चइजै। ईं साल वो चित लगा'र भण ले। ठाळोपण छाती रो बोझ बणतो जार्‌यो है। बो ईं बोझ ने हीज हळको करदे। यूं पचास-साठ री नौकरी पाबा री कौशिश तो म्हूं भी कर र्‌यो हूं।

बांकी भर्‌योड़ी आंख्यां म्हांरा सूं सही नी जा सकै। "ईं बैस मैं भी वीं नौकरी री सोचै? मतळब वी खुद अबै भी अमिट ने शान शौकतऊं राखणो चाई र्‌या है?" अबै बांका मन री ऊमस म्हनें सदा बैचेन करबा लागी है।

आज फेर अमिट म्हारा मन रो बोझ बढ़ा दैवै। गरीवणी बी० ए० मैं भागवाळो छोरी जी अमिट रै सागै अमिट-रेख बणवो चावै! जदी अमिट हर शनिश्चर ने ऊं से मिळबां सारूं ऊं कै कनै जावै। बाप सोचै क अमिट बाप रो बोझ बंटावण खातिर नौकरी री टोह मैं ग्यो हैं। पण बेटा जी वठै पै'ल्या बूझ र्‌या है।

आज मी'ना रो आखरी दन है। वो आज आपरी गोरड़ी सूं मलबां नी जा सकै। बो सांभळै विचारी रा प्राण कंठ तांई पूग्या ह्वैगा। जदी बीनैं एक तरकीब सूझै। बो तुरन्त वेना कनै जा'र कैवै "वेना! बस दस रिपया दैदे। पेली सूं 'पार्टाइम' नौकरी करूंला।"

जाणैं म्हनें क्यूं लागै कै अमिट भ्हेक र्‌यो है। बींका भ्हेकतां पगल्या नैं ठामणो चइजै। 'जीं दन रेखा सुणेला कै तूं परण्योड़ो है. ऊंदाण ऊं प्रेम री कई गत होवैली?" मैं ऊनैं कयो।

"वाह वेना! ऊनैं कदी ठा नी पड़ेला। तू हीज बतळा इतरी छोटी बेस मैं कींरो ब्याव ह्वै है? फेर म्हारो हीज क्यूं कीधो? जद ब्याव कर दीधो तद म्हूं बीनैं

क्यू ढोऊ ? मावोय ने वू मळगी घणी सेवा करावै वो ।"

"तू वीसूं ब्याव करेला ? है अतरी हिम्मत ?" पैंतनयाफता बाप रो छोरो जींकी भणाई भी पूरी नी ही हूं वो कीं धरती पै पग मेलणो चाह र्‌यो है ? "सांच तू भी ऊसैं प्यार करै है अमिट ?"

"ब्याव करवा नी करवा री वात छोड़ देना । पण प्यार री जड़ घणी गैरी हुवै है । म्हारा प्रेम री एक होज परिभाषा है नरो मारी नीं ।" म्हारो अंतर पिघळ जावै । सोचूं 'वो इतरो भावुक क्यूं हुतो जा र्‌यो है ? कद तक वो आपरा इण म्है-क्योड़ा पगां सू चालेगा ? पेलां तो वो कुंवारो हो । पण अब तो वो बाप बणग्योड़ो है।' वसुधा ! कुटंब री जिम्मेदार्‌यां सूं दब्योड़ी कुचळ्योड़ी वसुधा री उदास आंख्यां चुपचप चे'रो वीसरपा पै नीं वीसरै । अमिट वींकी वातां सूं घबरावै वस ऐना बस ऊं नूर्‌हैस री नाम मत ले म्हारै सामै । ऊठतां होज मूंडो देखलो तो सांझ तलक रोटूयां नी मळै । नी रहवो आवे नी वातां रो शकर म्हूं तो कीनै केऊ भी कोनी कै म्हारो ब्याव होग्यो । मौका पै केइदूं आ म्हारी रिश्तेदार है ।'

एक दण वातांइ वातां मैं आपरा ब्याव री सगळी काणी वो कीयो हो । भणवा मैं वो सदाईं कमजोर हो । किलास री छोर्‌यां सागै दोस्ती गांठवां मैं वो सदाईं अव्वल र्‌यो अर वांका कुटुम्ब री भरोसो पा'न ऊं को फायदो नेतो र्‌यो । वीनै छोरयां लारै देख'र दूजा भायला घणां बळता नै छोर्‌यां वींको मायो वावा खातर व्याकुल रेवती अस्या मौजमजा रै कारण होज वो आजतलक 'फर्स्टईयर' रो इम्तहाण भी पास कोनी कर सक्यो है । एक दन बाप रा कानां मैं ए सगळी वातां पड़ी अर वो आपरा तजुरवाऊं वीनै ब्याव रा फंदाऊं बांध दीधो । पण ईमैं वो घणी उतावळ कराग्या ।

गाम रा एक धनी परवार री छोरीऊं अमिट रो रिश्तो पक्को कर दीधो । अमिट नै जद समचो पड़्यो तद वो घणो रोयो । घर सूं भागवा री जोर जबर भी कीधो । पण ए सगळी वातां फाळतू री ही । खुदकशी रो निसचो करण वैठ्याळा वाप रै सामै ऊनै चुप रैणों पड़्यो । नै पछै, ब्याव घणी धूमधामऊं मंड्यो । गाम री एक घणी स्याणी, ठावसदार अर सांवळां रग री रूपाळी वसुधा अबै अमिट री वू बण'न ऊंका घर मैं आपूगी । अमिट री गिरसती ऊंईं तांईं शरू व्ही ज्याण अधारा मैं जुलम्या रा खोटा मनसूवा ।

आज काल अमिट रात रो पावणो वणन हो घरां आवै । ठीक धरमसाळा मैं रहवाळा नाईं ।' नै ऊंकी वू ? एक चोखी कुळ वधू वणन सगळा दिवस रा काम काजा मैं मगन । अबै ऊंकी नी कोई जरूरत है अर नी हो कोई मुरजो । पेलो भरोसो हो कै भरतार भणन नौकरी करेला तद ऊंको साथ वीनै मलेळा । अबार वीका मारग मैं विघन क्यूं डाले ? पण इतरी वार रात सूं घणी रो घरै पूगवो वीनै रास नी आवै । ऊंको

धीरज टूट जावै अर वा एक दन आपरा भरतार नै टेम पै आवां री अरज कीधी जद अमिट रा कड़वा बोल ऊंको मून्डो सोम दैवता "कमीनी हुकम चळावा लागी । जळदी घरै आण थारी मूंडो निरखूं ? म्हनै बांध'र राखवो चावै । म्हनै करणो है, करूंला । जदी घरै पूगणो है पूगूं गा । जीनो लागै ••• "

"बंधाई अमिट थनै बेटा रा जळम पै । "म्हूं मुळकती थकी कऊ ऊनै । अमिट झेंप्योड़ो कैवा लाग्यो "परी वाळो वेना अगलूत री वातां ।"

अवै तो थारी गिरसती शरू व्हैगी है अमिट ! देख, वसुधा नै अवै मत छिजावै । याई इसी भोली छोरी है जो थारी सगळी बातां नै सैली । नी तो आज री कुण छोरी है जो थारी भूंडा सुभाव नै सै लेगा ? एक लुगाई री जूण सूं भी तो भाल अमिट वा कतरी कंवळी व्है है ?

ईसूं घणो अमिट नी सै सकै । वसुधा री नाऊं ही ज्याण वो नी सुणवो चावै घणो कड़वाटऊं बोल्यो "वा बेना ज्यान गाड़ी चाळ री है चालबा दै । ऊनै कीं री कमी है ? कई चावै वा म्हारा सूं ?

"वोई अमिट•••जी थारी रेखा थारां सूं चावै ।"

'नै वोई ऊनै नी मल सकै । ऊरै खातर ही ज म्हारो जळम आवो रैग्यो । अबै याई भ्हैक्योड़ा पगल्याऊं म्हारी जिणगी नै ठावस मळैगा वेना । ई सगळी म्हारा जीवण री पैल्यां है ज्यानै म्हूं सदा बूझतो रूंगो ।"



प्राध्यापक-हिन्दी
जनता महाविद्यालय (कुरुक्षेत्र वि.वि.)
बावल (हरियाणा)

ऋभुगण

प्रो० भूपतिराम साकरिया

(वेदा री इण कथा सूं आ वात प्रगट हुवै है कै मिनख आपरै करमां सूं देवता वण सकै। कर्म वडो है, जात-नात नहीं नै इणीईज भांत मिनख जलम सूं ऊंच-नीच नहीं हुय'र कर्म सूं ऊंच-नीच हुवै है। इण कथा में इण सिद्धान्त रो प्रतिपादन कियोड़ो हैं। जो आपां वेदां में श्रद्धा राखतां हुवां तो आजरी वर्ण व्यवस्था रो बोदापणो साफ निजर आवै।)

अंगिरस रा बेटा सुधन्वन, सुधन्वन रै तीन बेटा—ऋभुगण, विभ्वन नै वाज। अे तीन ई त्वष्टा रा शिष्य, जिकै मोटा शिल्पकार हा। त्वष्टा आपरी सगळी विद्या इण तीना नै सिखाय दीनी। पछै तो अे तीनई आपरै सीधे सभाव, प्रेमाळ हियै नै सत्यनिष्ठा सूं घणा आगै वधिया, उणारी कला निर्माण में ईज वाधेलो नीं रह्यो। उणा तो धेनु वणाई नै आपरै बूढा मां-बाप नै आपरी कला सूं पाछा जवान वणा दिया। गुरु करतां चेला सवाया वण गया। उणा माथै सूरजो राजी हुआ नै यांनै अमर वणाय दीना। मरण-वरमा हुतां थकां, वे देवतां रै वव में रहवण नै पूजीजण लागा।

अेक दिन देवतां रा दूत हुय नै अग्नि उणारा आश्रम में पधारया नै तीनूं भाइयां री घणी तारीफ कीवी। अग्नि वोलिया, "म्हूं देवतां रै अेक काम सूं आपरै कनै आयो हूं।"

"हुकम फुरमावो," भाइयां कह्यो।

"थांणा गुरु त्वष्टा अेक चमस (सोमरस पीवण रो प्यालो) वणायो है।"

"म्हांनै खवर है।"

"थे इणरा च्यार वणाय दो।"

तीनूं भाई विचार में पड़ग्या। पछै अेक जण पूछियो कै इणसूं म्हानै कांई लाभ ?

अग्नि ऊथळो दीनो कै देवता ज्युं थे भी यज्ञ-भाग रा अधिकारी वणोला नै ज्युं ही अग्नि कह्यो कै थाणा गुरु त्वष्टा इण योजना नै मंजूरी दे दीनी है। तीनूं भाई पण

राजी हुआ नै चार चमस बणाय नै दिया ।

उणा अग्नि नै पूछियो कै म्हारां वास्ते फेर कांई हुकम ?

अग्नि कह्यो कै थे हस्तकळा में तो घणा उमदा कारीगर हो, पिण हमैं अमरत्व प्राप्ति रै मारग माथै आगै वधो । इतरो कहनै अग्नि तो उठै सूं अंतर्ध्यान हुय गया ।

अबै तो सैंग ठोड़ उणांरी वाह वाह हुवण लागी । उणां अश्विनीकुमारां वास्तै तीन आसणां रो अेक दिव्य रथ बणायो इन्द्र रै वास्तै बे घोड़ां रो तेज चालणियो रथ बणायो । देवतां वास्तै अभेद्य कवच बणाया । गायां नै घोड़ा वणाया, आभा नै धरती सूं जुदो कियो । इंद्र उणांनै वरदान दियो । वे सैंगा सूं पेला सोम पान करण रा अधिकारी हुआ । उण तीनां रा संबंध क्रमशः इंद्र, वरुण नै बीजा देवतां सूं हुआ । वे इंद्र रा सखाया बणिया इन्द्र, अरुण; मरूदगणां नै देवांगनावां साथै सोमपान करण लागा । मरण धरमा हुता थकां भी वे उपासनीय देवतां में मिळ गया ।

अश्विनीकुमारां रै कहेवणां सूं उणां तीन पईड़ा रो अेक अैड़ो श्रेष्ठ रथ बणायो, जिको विना घोड़ा अंतरिक्ष में यात्रा करतो । रथ नै उणां गऊ रै चांमड़े सूं मडियो । ओ रथ उणांरै देवत्व रो गवाह है । वांनै देवतां में अविनाशी पद मिळियो ।

पछै तो वे देवतावां रै श्रेष्ठ यज्ञां में आवण लागा । उणां रो पहेला सवन में अनुष्ठान हुवण लागो । उणा सैंग देवतां वास्तै रथ नै हथियार बणाया ।

आपरी कर्तव्य निष्ठा सूं देवता बणिया । उणा मिनख रै वास्तै देवत्व मेळवण रो मारग मोकळो करयो । मिनख देवता बण सकै है; अैड़ी आशा उणा मिनख में पैदा कीनी । इयूं आदमी देवतावां री पूजा करै है, पिण आपरै करमां सूं खुद पुजीज सकै ।



आर्ट्स कालेज
वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)

टूटतो जुड़तो टापरो

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

रामचन्द्र	—	सरकारी दफतर रो चपरासी
राणी	—	रामचन्द्र री लुगाई
मोहन	—	रामचन्द्र रो अेकलो टाबर
डागडर	—	सरकारी सफाखाना रो डागडर

[स्टेज माथे उजाळा रो अेक गोळो पड़ता ही मंझला वरग रो घर दीखै। एक खाटला पे राणी सूती थकी है, तीपाई पै दो च्यार दवाईयां री सीस्यां पड़ी है। राणी रो रूपाळो मूण्डो बीमारी सूं पीळो पड़्यो तको है। राणी रै-रै'र टैका करै, व्हींरो ठसकणो सुण'र व्ही रो धणी ऊंना पाणी री बाटली लेर आवै।]

रामचन्द्र—तकलीफ घणी है कांई ? लै म्हूं पेट री सिकाई करदूं, आराम मळेला।

राणी—(निसांस नाखती) अबै आराम कठै मोहन रा बापू, अब तो आराम थारे कांधे चढ्यांऊज मलेला।

रामचन्द्र—यू कई बोलै मोहन री मां ? अस्यो भूण्डो बोल मूण्डा सूं नी काडणो। म्हूं अबार डागड्र नै बुला लास्यूं।

राणी - (हाथ लाम्बो कर'र) नो···। ना मोहन रा बापू ! का खोटा पईसा बिगाड़ो ! थांनै म्हारी सोगन, यो डागड्र रो काम कोनी, ये तो डाकण्यां रा छाळा है। डागड्र आवण सूं तो थांका घरत मोर्‌यू बढ जासी।

रामचन्द्र—(ऊभो व्हे'र) देख म्हूं चार दिनां सूं कै रियो हूं, पण थू हर बगत सोगन देर म्हारा पग तोड़ दे। पण म्हूं आज मानूं कोनी म्हूं डागड्र ने लेर आऊं (जोर सूं बूक पाड़तो तको जावै) अरे मोहना अठै थारी मां कनै बैठ, म्हूं बारै जारियो हूं।

(अेक ८–९ वरस रो टाबर आवै)

रामचन्द्र—(भोळावरण देर) देख म्हूं पाछो आऊं ज्यां ताई थू अठे ही रहीजे ।
(टाबर हामळ भरवा सारू नाड़ हलावै)

राणी—(लाम्बी सांस ले'र) म्हारी मानो भूण्डा पइसा मत बिगाडो, भोपाजी सू वेळ बणाई है । दो चार दिनां मैं ठीक हो जाऊंला ।

रामचन्द्र—देख मोहन री मां अबै म्हासूं थारी आ दशा देखी नी जावै अबै डागड्र ने लावा दे, पछे भोपा ने भी बुला लूं ला ।

(वो बारे निसरग्यो)

राणी—(अेकली ही खुदाखुद) हाय राम; अबै काई व्हेला, डागड्र के आवतां सगळो पोप खुल जासी, अब ईं टाबरां रो काई व्हेसी, बापड़ा नै कई ठा के म्हापै कईं वीती है, ईं राज रो खोज जावै; जो जबरी सूं म्हीरी नसबन्दीं करदो, अर म्हारी सुख शांता सू चालती गिरस्ती के पळीतो मेल्यो । अबै जीवण मां कईं सार, बदनामी, ठोर-ठोर थूं थूकारा माल-जादी की गाळयां रे लार जात न्यात रा मिनख म्हारै कुळ रे धूळो बांधेला, भगवान म्हारां भोळा धणी री पार लगाजे । म्हने जेर (जहर) खा लेणू चायजे ।

[वा ऊठ'र अलमारी सूं जहर री पूडी लेर पाणी लारे निगळगी आंगणां में खेलता टाबर ने नेड़ो लेर, बार-बार बोसा ले, आख्यां सूं आसू डां झरै ।]

राणी—(रोवती) म्हारा लाल थारा बाप रो केणो मानजे बेटा, भणजे अर मोटो आदमी बणजे पूत ! अब थारा बाप रो…थू…ही…आसरो है । …वां ने कदे ही दुःखी करे मती… ।

[राणी टाबर ने छाती पै सुवाणर धीरे-धीरे व्हीरे माथे हाथ फेरै अर रोती जावै । नानो टाबर व्हीं रा मूण्डा कानीं टुकर-टुकर देखै ।]

टाबर—(रोवतो थको) मा रोवै मती, थू घणी झट आछी हो जावेला ।

राणी—(व्ही ही सुर में) बेटां…म्हारा मोहन… म्हारा लाल, थू रोवै मती ! म्हूं नी मरू रे, म्हूं झट ठीक हो जासू. (घर री छान पर देखती) भगवान कूण पाप करै, अर सजा कुण भगते ईं बाळक सामें तो देख, व्ही कपटी के कीड़ा पड़जो रामजी ।

[डागड्र रे लार रामचन्द्र रो आवणो । डागड्र: हाथ आख्यां जीभ पेट छाती रीं धड़कन री जांच करै ।]

रामचन्द्र—[अरदास करतो] डागदर सा० लारला चार दिना सूं पेट-पेट कुरलावै नी खावै, नी पीवै, बस रोवती रै'वै है। आपनै बुलावण री कहूं तो ना करै।

डागड्र—[हामी सारू नाड़ हिलावै] पछै कई निरखेपै पूगण सारू थोड़ो विचार करै] यह तुमने क्या किया राणी! जाओ रामचन्द्र ये दवाईयां लेकर जल्दी से जल्दी आजाओ अगर देर की तो तुम्हारी पत्नी नहीं बचेगी।

(पर्चो पै दवायां रा नाम लिखे)

रामचन्द्र—(अरदासरा सुर में) भगवान! डागदरसा म्हारै तो थेई रामजी हो ईनै बचालो, नी तो म्हारो कई व्हेला। वो रोवण लागो। म्हांने रोतो देख राणी अर टावर दोन्यू भी डूसक्या भरण लागा।)

डागड्र—(डांटतो तको) तुम लोग रोने लगे तो फिर जिन्दगी भर रोते रहना, जल्दी करो दवाईयां लाओ।

(रामचन्द्र भाग'र दवाई लेवा जावै)

डागड्र—(राणी सूं) तुमने यह क्या किया? जहर खाने की क्या आवश्यकता थी।

राणी—डागड्र सा अबै जोवती रै कई घूघकारा खाऊ धणी सूं कुमानेती व्हे रेऊ। ईसू तो मरजाणू ई चोखो डागदर सा० मर जाणोई चोखो है! म्हनै मरवा द्यो डागदर सा०! म्हे पाप कीदो है"'पाप"' म्हे म्हारा भोळा मिनख लारै दगो कीदो। म्हारै तीन महिना चढ़े है डागदर सा, अर यांरो आपरेशन हुआ छः महिना सू वत्ता होग्या बोलो, म्हूं यानै कस्यां विसवास दिलाऊ"'। दवाईयां रा सा'र हारगी पण मो पड़ं नी कोनी।

(लाम्बो निसास)

डागड्र—(दिलासो देवतो) इसमें विश्वास अविश्वास री कश बात है। आपरेशन तो इन्सान ने ही किया है। भगवान ने नहीं, कोई गलती हो सकती है।

राणी—(निस्वास सूं) अठै ही तो रोवणो है डागदर सा० याने पूरो भरोसो है क आपरेशन गलत कोनी फेर व्हे व्होरो दूबारा जांच व्हे भेम नी धरे। फेर सांची बात या है के म्हूं ही खोटा गेला गी। यांरो कांणियो अफसर म्हने रै-रै. घरै बुलावतो भांत भांत री चीजां टावर सारू लावतो। म्हनै कई ठा के ई' की नीत खोटी है। पछै घरे बुलातो मारे साथे मूंडो काळो करतो' वो पाप ही आज छाती चढ्यो है। डागदर सा, अबै व्ही पाप री भुगती आग सू ही व्हेला।

डागड्र—तुम मर कर भी आराम नही पाओगी राणी, जब इन्हे पता चलेगा कि तुमने जहर खाकर आत्म-हत्या की है तो ये तुम्हे कभी माफ नहीं करेंगे फिर; इस नन्हे बच्चे को किस जुल्म की सजा दे रही हो। आत्म-हत्या महान पाप है। ईश्वर यह जिन्दगी जिन्दा रहने को दी है।

[रामचन्द्र री दवाईया लेर आवणो]

रामचन्द्र—[डागड्र सामे दवाईयां कर] डागड्र सा इने बचालो म्हारो ठापरो भी नीलामी पै चढ जावै तो भी कई हरज कोनी पण म्हारी राणी बचणी चाईजे। ईने कस्यां भी बचावो डागड्र इने बचावो [रोवण लागै]

डागड्र—(आस बन्धावतां) भगवान तुम्हारी प्रार्थना अवश्य सुनेगा।
[डागड्र इंजेक्शन लगावै है राणी हायरे हायरे ठंका करै]
लो अब ईस दवा को पीलो अभी ठीक हो जावोगी (रामचन्द्र सूं) राम चन्द्र चिन्ता की कोई बात नहीं है। हां एक खुश खबरी की बात है तुम्हारी पत्नी फिर मां बनने वाली है।

रामचन्द्र (अचरज सू) पण डागड्र सा म्हे तो... ।

डागड्र—भई हम भी तो इंसान है, भगवान नहीं, हमसे भी भूल हो सकती है। रानी के ठीक होने के बाद तुम अस्पताल आना, तुम्हारी जांच कर लेंगे कुछ गड़बड़ हुई तो भी ठीक हो जावेगी।

रामचद्र—[टूकर टूकर दोन्यू जणा कामूण्डा देखे पण कई नी भाखे]

डागड्र—रामचन्द्र इसमें शंका की कोई बात नहीं है म्है सच कह रहा हूं। तुम्हारी पत्नी का इसमें कोई दोष नहीं। अच्छा अब मैं चलता हूं। हां, चार दिन बाद अस्पताल अवश्य आना, कई वहम-वहम में दोनों अपनी गिरस्ती न बिगाड़ बैठो।

[रामचन्द्र हूंकारा सारू माथा हलावे डागड्र जावै]

रामचन्द्र—(राणी कनै जा'र) राणी म्हारी राणी...(बाथ में) (बाहो में) भर लेवे पण, अणाचेत को कई बिचार लार पाछो हट जावे।

ना कई ठा...चार दिन पछै।

(धीरे धीरे पड़दो पड़ै)



पो० पोछून्दा
जिला—चित्तौडगढ़ (राज०)

संकर म्हाराज

मनोहरसिंह राठोड़

संकर म्हाराज नैं इण धरती रा माणस नीं मान नैं आपां भगवान रो रूप मानल्यां जणां बात घणी जचै। आपरै मन में आ आवगी हुवैली, आ किण संकर भगवान री बात है ? कैलास रा वासी, पारवती देवी रा पति संकर भगवान री। नैठाव राखो सगळी बात इण आतमा रै बाबत म्हनै ठा है जको आप नै बताऊंला।

संकर म्हाराज रो जलम म्हारा गांव रा एक गरीब बामण रै घरां एक बाबाजी री किरपा सूं हुयो। बाबाजी बचन सिध हा। बाबाजी नेतायनी देयनै गिया हा—भाई टाबर नैं ५ बरसां को हुयां पछै म्हारै धूणै माथै आय नै छोड़ दीज्यो।

पूरा नौ महिनां पछै टाबर रा पग इण धरती माथै टिक्या। जनम री वेल्या ही एक आंख रा धणी हा। केई जणा कैवै—पांच दिनां पछै मा रै मन में आवगी के मैं इण टाबर नैं बाबाजी रा धूणां माथै कोनी चढाऊं, जणां माता निकळगी जिण में म्हाराज एक आंख री भेंट दे बैठा।

पूत रा पग पालणा में ही दीख ज्यावै नै बाबाजी का पग कीं बडा हा जको आंतराऊ ही दीख ज्याता। ४-५ बरसां का हुवतां हुवतां ही वीं नैं पटरशो बीं-नै रुवाण्यो—ओ धन्धो सरू कर दियो।

बीड़ी-चिलम रा धूंवा में आणंद आंवण लागग्यो इण कारण नांव संकर म्हाराज लोगां राख दियो। जलम रै नाव रो कोई नैं ही ठा कोनी। पढाई-लिखाई रै हिसाब में अतो कियो जा सकै है—इस्कूल रा फनो फर ही कोनी निकल्या। मिंदर में रोजीना दोनूं बगत आरती व्हैवाऊ पैली जायनै टिकोरा पर कानू कर लेवता। पछै परसाद लेंवती वेल्या टिकोरो परै न्हांकता। असली इस्कूल इण नैं समझना।

दिन गुड़ता गिया नै संकर म्हाराज लोगां रा टाबरां नैं गुड़ाता गिया। कदे ओळमो आवतो-कदेई कोनी आंवतो। थोड़ा हुस्यार हुया जणां सगाई री वातां चालण लागी। सगाई री बात करवा आवै जकां नै संकर म्हाराज आप रै साथै ले ज्याय नै

तळाव री पाळ माथै बाल्टी भर-भर ल्याय नें सिनान करवावै। गांव में कूवां रो साधन कोनी इण कारण तलाव मैं न्हावणो मना है। इण वास्तै बारै बाल्टी भर-भर न्हावणो पड़ै। आवण वाळो बनड़ा री पूछै जद म्हाराज खुद ही मुळकता कैवे-लड़को में ही हूं सा। चोइस री उमर रा हा पण तीसी ढल्योड़ा दीखता नैं रंग इस्यो फूटरो जको ञ जणां में ऊभा न्यारा भौरा व्है ज्यूं पळकता। कद में मां पर गया हा जको मधरो रैयग्यो नैं सरीर दीवळ लाग्योड़ा ठूंठ व्है ज्यू हो। उपरऊ एक आंख रा धणी। आं सगळी बातां को मिलाण एक जगां देख नैं आवाळा कै मन में आवै--कै दूजा गांव जावा की ढील करणी ठीक कोनी।

लोग आवता गिया नैं संकर म्हाराज न्हुवावता गया। नतीजो क्यू ही कोनी निकल्यो। सगाई रो नांव सुणताई संकर म्हाराज पैली राजी हुंवता नैं अब चिमकवा लागग्या।

सगाई री तान पींवती लागी कोनी जणां संकर भगवान रा मिंदर में भक्ति माथै जोर देवणो सरू कर्यो। 'हारे को हरि नाम' री सन्त बाणी असर करगी। भगवान सकर री सेवा-आरती जोराऊ सरू करी जणां भगवान रो काळजो हालवा लागग्यो भगत नैं आपरी चाकरी में लेवा सारू भगवान वूढा पूजारी जी नैं इण संसारऊ उठायनैं सुरग लोक भेज दिया।

अब संकर म्हाराज भगत नैंतो भगवान भोळै सकर। भांग घुटवा लागगी। भगत भगवान दोनूं पीवै नैं मजा करै। संकर म्हाराज सेवा सांभळी इण रै थोड़ा दिनां पछै चमत्कार दिखीजणां सरू व्हैग्या। कोई नैं गम्योड़ी जिनस बतावै नैं कैयां रा 'फंटैड़ा' सावळ करै। कीं भगवान की किरपाऊ कीं आवाळां की किसमतऊ काम दनादन चालवा लागग्यो।

आं चमत्कार रा दिनां में घणां जणां दूजा गांवां रा लोग-लुगायां आंरा चेला-चेलक्यां बणग्या। अब थोड़ी-थोड़ी किताब पढणी सीख लीनी। संकर म्हाराज सगलै दिन नैं आखी रात मिंदर में रैवै इण वास्तै में म्हारा मु डाऊ काळू स लागै जियां की बात कोनी कंय सकूं पण लोग कैवे--'म्हाराज बैस्यावाड़ो खोल राख्यो है, मिंदर रा सब अफड करै है।' दिन पसवाड़ो फैरता गिया नैं म्हाराज लोगां री नैं संकर भगवान री सेवा करता गिया।

सकर भगवान उतावळा घणा हा इण वास्तै जुंकनी कद आई नैं कद पल्लो फेरगी ठा कोनी पड्यो पण बुढापा का नजरा सांमै दीखवा लागग्या। चिलम नैं भांग रा डळां रै कारण कफ रो भण्डार भरीजग्यो। आधी-आधी घण्टा बरोबर खांसी आवो करै पण सकर भगवान रा पुजारी हूंण कारण भांग-चिलम बिना सेवा आधी समझै।

थोड़ा दिनां पछै परलोक रो रस्तो सुधारवा की धुन आयगी। सगळै दिन किताबां में माथो राखै नैं भगवान रा दरसण करबा रा तरीका पढै। लुगायां रै सिवाय दूजाऊ राजी मनऊ बात ई कोनी करै है, दूजा गांव की है, भगवान री आ सेवा ही असली है।

एक दिन किताब में पढ लीनो कि आकड़ा का रूंख में रोजीना पाणी देवाऊ भगवान रा दरसण हू सकै है। वी दिनऊ ही जगळ जाती टेम चट्टोड़ो लोटो पाणी रो भर नै लेज्यावणो सरू कर दियो। जगळ जाती वेल्यां आकड़ा रै एकदम कनै ओट लेयनै बैठता। बरोबर दो महिनां आकडा में पाणी देवतां ही घुलग्या जणां मन में आसा लागगी आज भगवान, मिले, काल मिलै। एक दिन मझ दोफारां रो वगत नै म्हाराज लोटो लेय नै जगळ पधार्या। उठती वेल्यां बचायोड़ो आधो लोटो पाणी आकड़ा में मसकाय दियो। ऊबा होय नै एक लांग धोती री टांकी अता में धरती मांयनऊ जोरको सूंसाड़ मार्यो, इण रै साथे धूल उड़ी। सकर म्हाराज थूक मूट्यां में म्हाठा। जूत्यां लारै नै बाबाजी आगै। लारै धोती लटकती छट्यां में उलगती-उळझती फाटती जावगी। एकै सांस ठेठ गुवाड़ी में जाता ढ्या। सांसरा सूंसाड़ा मानरया। धोती रा लीरां में छट्यां लटकै। जटा बिखर्योड़ी नै आंख्यां राती लाल गांम तमदोरां री धापू चोधरण मिलगी। आ मसकर्यां करती थापरै जेठऊ कोनी चूकै। अता में ५-७ जणा आयनै म्हाराज नै सावल बैठाण्या अब हाल-चाल पूछवा लाग्या। केई ताळ पछै सगळो बात मूंडाउ काडी।

लोग बोल्या आ नीं हो सकै। धापू बोली—बावजी भूत आयनै थांकै कनै करै कांई? थे खुद भूत हो। २-३ जणां जायनै आकड़ा नै देख्यो। आकड़ा रै नीचै थोथी धरती ही दोफारी में तातो ल्यारी हूयोड़ी ही जको पाणी जातां ही भड़ाट उठणो ही हो। जूती नै लोटो लाय नै म्हाराज नै दीना।

उण दिन पछै आकड़ा रो डर लागवा लागग्यो। इण सूं पैली किया करता 'डर कुछ नहीं होता है, मन में कर्योड़ा वैम है।' अब भगवान रा दरसणां रो मन में कोनी आवै पण सेवा बराबर करै।

महिना रा तीस दिनां में आदी बार सकर म्हाराज कोर्ट रा हुता मे ल्हादै पूछ्याउ ठा पड़ै कोई रो ३० मील आंतरो फोजदारी मामलां ही गीरा गुवाह बण्या है। कोई रै ही कोर्ट रो काम हुवो भलांई म्हाराज नै एकर टोक्यां पछै त्यार ल्हादै। लोग कैवै पइसा खाय-खाय झूठी गुवायां देवै पण म्हाराज रो कैवणो है दूजां रै काम आवणो इंसान रो धरम है।

आप लागां रै आं बावजीऊ मिलवा री मन मे आयगी हूवैला पण माफ कराज्यो लारली साल घणी बेमारी मांचा में पाढ नै सकर म्हाराज सुरग लोक वासी हो चुक्या है। माचा में पड्या पछै भी लोग लारो कोनी छोड्यो। गांव रा लोग छानै-छानै वातां करता—म्हाराज चढावो खावै जको तो खावै वीं रै साथै मांढ वास्तै नै कबूतरां रै चुगै वास्तै दियोड़ा पइसा खायग्या जणां बेमारी भुगतर्या है।

केई लोग भूंडा बतायनै याद करै नै केई वांरा गुण गावै। साफ बात आ है कि आतमा वा ऊंची ही। भगवान रो लो भगवान में मिलगो दोरो।

जी-५१ सीरी कालोनी
पिलानी (राज०)

म्हे भी बड़ा आदमी हां जी !

उमाचरण महमिया

डील-डौल'र कद-काठी सूं छोटा हां जरूर, पण म्हे बड़ा आदमी हां जी। आखो मोहलो केवै, बजार केवै, गुवाड़ मांय भारी-झाड़ी करणै वाळी जमादारणी तो यो ई केवै—थे बड़ा (जाणै बा 'बेंड़ा' कवै या बेड़ा 'पण म्हानै तो 'बड़ा' ही सुणै) आदमी हो जी, म्हारै सूं हांसी-मजाक मती कर्‌या करो जी।' दूध वाळो गुवाळो भी खासो-मोटो 'भूधराकार सरीरा' है। बो हर पैली तारीख नै म्हानै 'बड़ो' बणा जावै। 'पैली तारीख नै थारै जिसा 'बड़ा आदमी' पैसा चूकता कर देवै तो म्हारै स्यारसा छुटकणा री गाडी चालती रवै जी।'

ज्यादा नईं तो, हफ्ते में दो बार तो म्हे कूंजड़ै सूं 'ऋतुफल' खरीद ई ल्यावां। जाड़ो हुवै तो मूळी कै गाजर, अर गरमी में खरबूजा। पीसै नै हाथ रो मेल बतावणियां जूना रिसी-मुनी नुंअै विज्ञान नै के समझै? आखिर 'विटामिन' बी कोई चीज हुवै! सातवीं जमात री परीक्षा में सिर्फ तीन साल बैठ'र तीसरी स्रेणी हथिया लेणै रो करतब दिखाणै वाळै म्हारै सा'ब जादै सूं 'ज्ञात' हुयोड़ा विटामिन—ए, बी, सी, डी ई एफ जी एच आई जे के'''एक्स वाइ जेड मूळी, गाजर अर खरबूजे में मोकळा मौजूद हुवै। यो ज्ञान जद म्हे 'योगीराज' बण'र कूंजड़ै रूपी 'पार्थ' रै सामै बखाण करां जणां वीं रै हाथां सूं तखड़ियो 'गाण्डीव' री ज्यूं छुटज्या अर सूखती जीभ सूं—

सीदन्ति मम गात्राणि
मुख च परिशुष्यति।
वे पथुश्च शरीरे मे
रोम हर्षश्च जायते॥

"उच्चारित' करणै री बजाय वो म्हानै याद दिरावै कै 'तेरा पीसा री तो हुई दो सौ ग्राम गाजर अर तेरा पीसा री आधा किलो मूळी। चालो, थे कुलजमा पच्चीस ई दे द्‌यो—ब्रेक चुअन्नी। 'बेटामिन-फेटामिन' थारै जिसड़ा 'बड़ा आदमी' ई समझ सकै—बूणी रै बखत म्हानै तो बखसो।

खैर कूजड़ै ने छोड़ो, धोबी नैं ल्यो। वो बी म्हानैं कई मंगळवारां नैं 'बड़ै आदमी' री पदवी सूं विभूसित कर्‌यो है। कींयां ? ईयां जो कै वो धोयोड़ा गाभा सोमवार नैं ल्याया करै है। पण भाईजी, इन्सान सूं गलती भी हो ई ज्यावै। बड़ा-बड़ा फिलोसोफर, जींयां, अफलातू, अरस्तू, कपिल अर चार्वाक आदि को कैगो यो कै 'आदमी गळतियां रो पुतलो' है। ईं रो सांपरत प्रयोग म्हारलो धोबी कई मंगळवारां नैं कर चुक्यो। अबें चूंकि म्हे म्हारै दिवगत ताऊजी सूं ईकोनोमिक्स रा कई अध्याय उधारा ले चुक्या सो किफायतसारी नैं मिनखां जूणी रो लूण-मिरच मान'र दोई सूट काफी समझां। तो, अेक सूट तो हफ्ते रै आखिरी दिन तांणी म्हारै सरीर री सोभा वधावै। अर दूजो धोबी री भट्ठी री। जों सोमवार नैं धोबो म्हारा गाभा ल्यार्ण री नागा करज्या वीं सोमवार नैं भी 'कपाळ-पीड़ा' रो ला-इलाज बहानो बणा'र दफ्तर री नागा लाजमी कर्‌णी सरै . और मंगलवार नैं आ'र वो म्हारी चांदर घुड़क्यां रै अेवज में याद दिरावै : थारै जिसा 'वड़ा आदमियां' रो काम इण दो लत्ता-लीरां रै आसरै थोड़ी रुक्यो रवै बावूजी ! वींया भी ओ सूट आगलो धुलाई लायक तो रियो कोनी ! गरीब नैं बखस द्यो —थारै जिसा बड़ा आदमियां री किरपा सूं ई तन ढक्या हां। म्हे भी म्हारी जीभ सूं बड़पण में कोई कसर राखां नहीं : 'थानै फाट्या-पुराणा गाभा थोड़ी द्यां गा। थारी तीन पुस्तां सूं म्हारी तीन पुस्तां रा कपड़ा धुपता आर्‌या है—ईं होळी पर नूवो सूट बणा'र पैरावांगा।' पण आपतो जाणो ई हो कै म्हारै स्यारसा 'बड़ा आदमियां' री होळी-दिवाळी भी बड़ै इन्तजार रै बाद ई आवैली।

कूजड़ै अर धोबी दोन्यां नैं छोड़ो। कायदै पर आवणै नैं ल्यो। 'क्षतिपूर्ति' रै सिद्धान्त री तो ईजाद ई छोटै कद-काठी वाळा आदमियां नैं बड़ा बणाणै खातर हुई। यो सिद्धांत है—'ईं किस्म री कमीं नैं वीं किस्म सूं पूरी कर लेणो।' छोटै कद रा अभिमन्यू गरभ में ई ईं मुहावरै नैं रट लेवै —अक्कल बड़ी कै भैंस ? जो, अक्कल ! नेपोलियन नाटो जरूर हो पर वीं कनै अकल रो घाटो नीं हो।

अबै थे तो जाणो ई हो कै बड़ा आदमियां रा पगल्या तो पालणै में ई दिख ज्यावै। बचपन में क्रोकरी, जुआनी में छोकरी अर बुढापै में नोकरी रै गैल दोन्यूं हाथ धो'र पड़णै री मिसाल देणै में म्हे कोई कसर छोडी नहीं। सो बचपन में म्हारी तुलना न्यूटन अर एडीसन सूं, जुआनी में मजनूं अर फरहाद सूं अबै बुढापै में रूजवेल्ट'र चर्चिल सूं कोई करै तो कीं रो के लेवै ?

सगळै महान मिनखां री ज्यूं, सांपरत बड़ा आदमियां री ज्यूं सारा ऊंचा-ऊंचा लोगां री ज्यूं म्हारै में भी न तो मूं मियां मिठ्ठू बणणै री बाण है अर न म्हे म्हारे 'बड़ै कारनामां' रो ईं लेख में एडवरटाइजमेंट करणो चावां। क्यूं कै

बड़े बड़ाई ना करें, बड़ो न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरो मोल ॥

बस इतनो और बताद्यां के जद म्हारा भायला, ज्यां सूं म्हानैं लेणो-देणो [लेणो ७०%, देणो ३०%] करणो पड़ै अथवा वै दूकानदार ज्यां सूं म्हारी घरधिराणी सामान उधार ल्यावै – म्हीनै रै पैलै हफतै में मिलता ई पैलो जुमलो यो ई कवै—

"अबै तो नत्थूसिह जी थे तो 'बड़ा आदमी' होग्या जी। जद सूं थे उधार लिया, दरसण ई दुरलभ ......।"

इसड़ा मोका कद-कद हाथ आवै ? म्हे भी इण बेळा बड़ा आदमियां ज्यूं बत्तीसी दिखा'र बड़ी ऊंची नसल रै घोड़े री ज्यूं हिणहिणा द्यां—हैं...हैं...हैं...



९ एफ, ओल्ड कोलोनी
पिलानी (राजस्थान)

कागद चोराया री राणी रो सड़क रै सहजादे रै नांव !

त्रिलोक गोयल

म्हारे आंसुआं रा प्लाटिन ! म्हारे हिवड़े रा किंग !!

प्यारा प्यारा 'तू तू'। तू तू इण वास्ते लिखरी हूं क परैमी जगत रा आजतीं रा सगला सम्बोधन मनैं थारै ताईं ऊंठचा जूंठचा पर मोगा लागण पड़ग्या। म्हारै रूंग रूंग में तू है, म्हारी सांस सांस में तू है, म्हारै कजरारा नैणां में, नैणां रा मीठा मीठा सुपनां में हैंग तू ही तू है। डिक्शनेरी रा घणा पाना पलट लिया पण तू तू सूं पॉवर फुल, पूठरो फर्रो अर मौलिक सब्द मनैं खोजो को लाध्यो नीं। विराणी साम्यवा रो मत है क दुनिया बणी जदां सूं ही स्याणा समझणा लोग तू तू तू तू हुता मारर आपां ने घणै घणै मान सूं नूतता आया है। यूं आपां दोन्यां में भी घणी दफा तू तू मैं मैं हुया करती ही पण ऊंरो कारण भोड भपाट मन मुटाव नीं साढ प्यार होग हो। पाइंट ऑफ डेट विध्यां मुर्गां रे लाख कूकवा पै भी राम मार्‌या मिनखां री 'मैं, मैं' आज तीं नीं छूटी, जे वै आपां सूं 'तू, तू' रो पाठ पढ़ लेवता तो उणरी आ दुर्गत न होती।

तो म्हारा वॉल डांस रा, साथी तू तू। फूल चितरया गुलाबी लिफाफा में, सोहणी सरूप हरी स्याही सूं मॅंडयो, अतर सूं मह्यो, रोमांटिक लिखे संवाद अर मैरी सायरी सूं भर्‌यो थको थारो वालो वालो कागद मिल्यो। बांच-बांचर बांच्यो, आंखने यू-यू होवा लागी, डील में कीड्यां-सी चाली, असयो सुख-आनन्द मिल्यो क लिख न सकूं, पण अठै म्हार कालजो कोयला ज्यूं बलर राख होगो क आजकाल तूं इम्पाला कार में, कोई भारतीय 'मेम साब' री गोदी में पड़्यो मुरगां रा सातूं सुख मंदड़ भोग रियो है। थारै सागै बितायोड़ी चानणी रातां, मदभरी बातां आज भी हिवड़ै में हूक सी उठावे है जद हूं चोराया री राणी अर तू सड़क रो सहजादो हिप्पां रै जियां सट्‌या-सट्‌या आवारा गर्दी करता डोलता हा। गलियारे-गलियारे गोल्डन नाइट अर पारक होटलां में लंच-डिनर हुया करता हा। जीवण रो ओहीज एक मोटो उसूल हो क मस्त रहवो मस्ती में-लाय लागे वस्ती में।

जद तूं सहरी कॉलिज में भर्ती होबा सारू जारयो हो हूं तने घणो ही बरजो नारें मना जा, अठेई कोई साक्षरता केन्द्र में, खै बूढल्यां रै लारै कोई प्रोढ सिक्षण केन्द्र में दो आखर सीखले, नगर री अर बा भी फेर कॉलिज हॉस्टल री हवा आज काल घणीं ख़राब हैं, कोई-न-कोई चक्कर में फँस जासी, पण तू न मानी, अब ले ! पडग्यो न गला में देवी जी रो पट्टो ? लागग्यो न सुतन्त्रता पै इमरजेंसी रो बट्टो ? देख डीयर। कीती ताही बिसार आगे री सुध ले, अब भी हूँ तने सचेत करूं हूँ क जे तूं आपरो भलो चावे तो सिक्षित अर सहरी मिनख सूं अलगो रै ।

छापा वांचवा रो ऐब थारे में सरू सू ही हो । ऊंके बिना राष्ट्रीय पेय चाय रो चुलो गले न उतरतो, जी सूं तने आ पूरी तरां ठा पडगी होली क इण दिनां ई क्षेत्र में म्हारी तूती बोल री है । हूँ आपरी जमात कानी सूं बराबर ओ संघर्ष करतो रहो हूँ क सिड्यूल्ड कास्ट रो जींयां ही म्हाकी बिरादरी रै तांई भी चुनावां में, नोकर्यां में सीटां रो फिक्स-कोटो रिजर्व रहणो चावै । म्हाको समाज घणा दिनां ताणी पीडित अर पददलित रह चुक्यो है, जद म्हे आपरा अपणा घर में ही सेर न होस्यां तो ओजू कठे होस्यां ? यूं रंग-रूप, आकार-प्रकार, केश-वेश में, म्हामें चिण्यो घणो ऊपरी भेद भले ही हो पण अटक सूं कटक अर कश्मीर सूं कन्याकुमारी तीं आपणी एक होज भाषा है 'भों भौं' हूँ ई ने वैधानिक मानता दिरार मानुलो । एक ही वेश है 'दिगम्बर' एकही भोजन, एक ही रुचि, एक ही सूभाव हैं, अश्यी भावात्मक एकता आदर्शों रा थोथा ढोल बजावणियां यां मिनखां रो समाज में हेरयां ही न लाधे । आपणो एक टाबर भी भूके तो सगला सदस्य एक सुर में ऊंरो बराबर साथ देवे, अर आदमी र आदमी एकलो ही घंटां माइक पै बार घालतो रै कोई सोधी ही नले ।

हूँ आपरा चुनाव घोषणा पत्र में कीं अणछुई मोटी-मोटी समस्यावां सुलझावा रो आश्वासन दियो है जियां—घण करा लोग बात-बात में आपणा नांव रो मिसयूज करै है–बाबू अफसरां ने, ठेकेदार इंजिनियरां ने, मतदाता मन्त्र्यां नै, भणवाली छोर्यां सागै पढणिया छोरां ने, नागरिक पुलिस हाला ने, बात-बात में नाक मूंडा चढ़ार आपणो विशेषण लगा देवे हैं "साला कुत्ता" ठानी अै अयां कहर ब्यानें सम्मानित करे है क आपांने अपमानित, ओ सो क्यूं न होणो चावै । आपणां गांव रो एक कूतरो दूजा कूतरा ने 'नेता' कहर गाली काढी–सो गाल्यां री एक गाल सुणर वापडा रा दिल पै अस्यो ठेस लागी क लाई रो हारटफेल होगो—ई सहीद री विधवा ने एक सिलाई री मसीन मिलणी चावै ।

रहिमन ओछे नरन तें, तजो वैर और प्रीत ।
काटे चाटे स्वान के, दो हुं भांति विपरीत ।।

ई तरां री ऊट-पटांग, वेतुकी कविता लिखांरो री कुत्ता घसीटी करर ब्यानै पाठ्यक्रम सूं सदा-सदा रै तांई निकाल देवणो चावै । अस्यी बातां भणबा सुं कवला-कंवला बालकां रै काचै काळजे पै के असर होसी ? अै ट्रक ड्राइवर कुत्तां रा काल है।

यां रा लाइसेन्स जब्त कराया जावै। निपूता विना पींयां चालैई नीं। हलवायां नैं आदेश कर्या जावै क वै सियाला में आपरी भट्यां नैं कूतरां ताई निव-नियाई राखै हर गिराक ताई आ कम्पलसरी करदै क वो खुद दूना, सकोरा न चाटै ओ शुभ काम कूतरा ही करैला। पांव खा, खजियारा, अर हाइड्रोफाबिया हाला कुत्ता-कुत्यां ताई मां, बेटा रा नांव सूं नगर-नगर में जनरलहास्पिटल खोल्या जावैं, अर आ ध्यान राख्यो जावै क कोई डाकदर व्यांकी दवायां न खा जावै। गांधी, बुद्ध अर महावीर रैं मुलक रा लोग यां रोगलां जीवां पैं दवा करवो तो अलगो रह्यो, घिरणा करै है, भाटा मारै है अर्दया नास पीट्यां नैं विनैं मुकदमें वद कर देणो चावै।

टांग उठार मूतवा रो मुनेरी विरगां अगरेजां सूं म्हामैं आई क म्हासूं अगरेजां में ई पर सरकार नैं शोध करावणी चावै, जद इतरो हीज व्है सकै तो अै साहित्य अकादम्यां किणकामरी? बांदर नैं सीखदै तो घर बंगा रा जाग जो सू कहणो तो न चावै पण थारै सूं अपसोस होवा सूं मन न मानैं सुण्यो है क आजकाल नूं आन्डो वान्डी भी सरू करदी है, ईनैं कैवैं है सावत रो असर मोटां री संगत बैठसी तो मोटा ही लक्खण आसी। डालिंग नशाखोरी हरामखोरी, रिश्वतखोरी, शराब बाजी, जूआ-बाजी जह्यो खोरी अर बाजी री कुख्यात लतां आपणा सभ्य समाज में ठेठ सूं ही व्रजित है, आपां तो कदेई-कदेई नाली में पड़्या मराणी नैं होश कराबा सारू कं रैं मूंडै पैं छिड़काव हीन करां हां।

थारै कागद सूं मालम पडी क आजकाल सहरां रा आदमी आपणा घण करा गुण अपणा लिया है—व्यां रा मन आपणी पूंछ रैं जियां टेढा है, आपरा भाई बन्ध नै देखता ही भूंकै गुर्रावै है, मातहतां नैं काटै—ऊपर हाळां रा पगघा वणर पगथली चाटै, हड्डी हड्डी रैं ताई अपस में लड़ झगडर कुत्तां री मौत मरै है। पोड़ो कुतियां जलेब्यां री रूखाळी, कुकर बामण वाणियां जात देख गुर्राय, घेला री हांडी गी कुत्ता री जात पिछाणी, हाथी रै पाछ कुत्ता भूंकवा, आंधो पीसै गंडक खाय; कुत्ता रो गू मैं सगळो कहणगतां यां ही खोडला मिनखां पैं फिट होवै है आपणो नांव तो मानख्यां ही बदनाम कर मेल्यो है।

टिकट री मांग करता हूं स्पष्ट कर्यो है क जनता सूं म्हाको सीधो सम्पर्क है, वफादारी म्हाका लोही में है, मुलक चोकसी म्हासूं वेसी कुण कर सकै है, न म्है तोड फोड हडतालां करां न मेंहगाई भत्ता री मांग, कोई डिपार्टमेंट कोई गली कूचो म्हा सूं छानो नी है—म्हे सेंट परसेंट दुत्कार-फटकार प्रूफ हां जो एक चुनाव लडणियां रै खातर घणो जरूरी है। तीस तीस वरसां सूं कुर्स्यां पैं सोवणियां कुम्भ करणां सूं म्हे छुट्को सुणता ही जागणियां हजार गुणा चोखा हां, कुण री मां दूध पायो है जो म्हां घाट घाट रा पाणी पीणियां रैं सामैं घडी भर भी टिक सकै। अपणा पराया री पिछाण यां भाई भतीजावादयां सूं म्हामें वैसी ही है। म्हारी ईं बात नैं नूयो मानैलो क आपां जतरो

लोक प्रिय आज नीं तो कोई हुयो नीं आगें री रामजाणै। दाना लोग कहग्या है, हीडक्या कुत्ता रा काट्यां री तो सूई है पण हीडक्या मिनखां रै काट्या री कोई दवा दारू कोनीं

आपणी सभ्यता-सस्कृति भूतपूर्व नीं अभूत पूर्व है। भूतनाथ भैंरू रो वाहन, परमपूज्य दत्तात्रेय जी रो गरू, धरमराज युधिष्ठिर रा आखरी बखत रो साथी, हिज मास्टर्स वाइस रो मन भावन मानो ग्राम, चन्द्र लोक में पग धरहालो पहलो जीव धारी, कुक्कुर मुत्ता पोथी रो नायक, मसाण में प्रेत-पिसाचारै बीच निर्भय रमणियो एकमात्र कुत्ता नीं तो और कुण है ? है कोई आपा जतरो सफाई पसन्द ? है कोई में कूकर जश्यों सूघबा री सक्ति ? अपराध्यां री हेरा सोधी में पुलिस, सी. आई. डी, अर सी. बी. आई सूं भीं ऊचो आपणा दर्जो है। कोठा सूं कोठी नीं, वेटिंग रूम सूं डाक बंगला नीं, इण्डिया गेट सू लाल किला तो सगली ठोड़ आपां बिना रोक टोक कैं आ जा सकां हां। जो म्हानै धुर्रे ! धुर्रे !! करै है म्हे ब्यां नै हुर्रे ! हुर्रे करां हां।

आ तो सो क्यू ठीक है क कीं समाज-सेवा री नकाब लगायोड़ा लोग गऊ साला, धरमसाला, पाठसालां रै जिया हो कुत्ता साला भी गांव-गांव में खोलदी हैं पण यां आश्रमा रो नांव कुत्ता साला नीं कुतवाली होणो चावै, अै नरक पालिका हाला जियां अमानुषिक ढंग सूं आपणो पकड़ धकड करै हैं, फेर अै परिवार नियोजण हाला बठै कुत्ता कुत्यां नै न्यारा न्यारा रहवा नै मजबूर करै भला ओभी कोई मिनख पणो है ? इतिहास साक्षी है जूना जमाना में कुत्तां नै मडक्यो न्हाकबो हर सद्गृहस्थ रो नेम हो। वो टैक्स आपणो जलम सिद्ध अधिकार है टैक्स प्रिय सरकार नै ई पर पूरो ध्यान देणो चायजे। म्हे नुगरा नीं हां जो टुकड़ो खार पूंछ नीं हिलावां, जो हांडी में खावै ऊपें ही छेद करै आ किरत हनता मिनखां री हीज बाण है।

यू लिखबा री तो और भी मोकली बातां ही पण मनै पार्टी मीटिंग में जाणो है, गयोडी कुडसी हथियाणो है जो सूं अबार टेम नीं है। आ सोलाणा सांच है क राजनीति आजकाल घणी सूगली अर ओछी होगी है लोग बात-बात में दल बदलै, न्यारा-न्यारा सिद्धान्ता हाळा दल स्वारथ सारू पहला तो भेळा व्है पाछै सीर री हांडी चोराया पें फोड़े, पण ई आला दलदल सूं हूं पुरी तरां चाक चोबद हूं, लाख चाहर भी कोई म्हारो बाल बांको न कर सकै आखिर हूं कश्या बाप रो बेटो। आ जाणूं हूं क "जहां डांग तहं गाड है, जहां गाड तह डांग" आपणी जात में यूं ऊंधो सूंदो तो चालतो ही रहै छ।

बिस्वास है तूं चिट्ठी नै तार समझर बेगो बावड़सो।

आपरा दोन्यू पिल्ला मजा में है, नाना जी रा माल खा रिया है गुर्रा रिया हैं, ऐलसिएशर्न कुत्यां सूं इश्क लड़ा रिया है, ब्यां री पजा जोडर परणाम स्वीकार जो ! हां आ बात जरूर दुःख री हुई क थ्यारां मामाजी नै हण्डकफ करर पुलिस हाला सरकारी सासरै लेगा।



अग्रसेन नगर अजमेर

हंस करै निगराणी

डा० ईश्वरानन्द शर्मा

संग्रह री क्रियासील कवितावां समय-समय पर लिख्योड़ी है। संग्रह रा अनेक कवितावां में भाग री तुलना में श्रम, अर लगन नै ऊंचो स्थान दियो गयो है, उत्साह री सरावना करी है। कवि रो विसवास है कि मिनख री सांची लगन अर ताकत अकास रा तारा तोड़ सकै है। हार–जीत री परवा नहीं करणी चाहीजै। अै तो जोड़ा है। दो लड़सी वां में एक पड़सी। लगन रैसी तो बाजी पाणणी रैसी। मिनख वोई है जको हिमत कदेई नहीं हारै। मिनख चावै तो इण धरती पर सुरग ला सकै है। सांचो माणस कुमाणस री नस तोड़ सकै है। 'आगीवाण' कविता वीर रस सूं ओत-प्रोत है। कवि री भावना है कि त्याग, बळिदान अर पर उपगार रा दीवाना 'आगीवाण' जुगान जुगताईं गीता में गाईजता रैसी। ईसा माणसां रो जलम जगत री भलाई खातर हुवै है। वांरी वाणी दवा रो फायदो करै है। कवि अंग्रेजां री नीत 'फूटड़ालो अर राज करो' री तरफ भी इसारो कर्यो है। 'राजस्थान' कविता में वीर-भगत, सती, बलिदानी राजस्थान रो मनभांतो घण चोखो वर्णन है। कवि रो विसवास मिनखपणै अर अर रळमळ रैवणै में है। वींरो कैवणो है कि पुराणी वैर बधावणी बातां नै कुचरणै स्यूं कोई लाभ कोनी। मिनख वोई है जिको कांटा बिछावणियै नै भी फूल बिछावै। कवि री व्यंग्यात्मकता देखतां ही बणै है। 'आवो आपां प्यार करां' कविता ई दृष्टि सूं वडी आछी है। कवि री उमग आज ई वास्ते घायल है कि अफसर थाहेती बणग्या है अर सुवारथ रो जोर है। कवितावां री कई पंगत्यां संस्कृत श्लोकां रो भावानुवाद न होतां थकां भी पुल मिलती सी भोत सुन्दर लागै है—

हंस करै निगराणी, १९७७, सत्येन जोशी

प्रकाशक—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

पृ० स०–९९, मूल्य ७.५० रु०

जद जद थांरी चाली बात-कुण जाणै कद खूटीरात
अविदित गत यामा रात्रिरेव करसीत् (उत्तर राम चरित)

मिनख नै मात नहीं लागै—

नहि मानुसात् श्रेष्ठतरं हि किंचार (महा भारत)

'जीवतां रो ! जूवां रै भागरो' कविता में व्यंग्य बहुत ऊंचो है। मैं मरियो नहीं, मारियो गयो हूं ईं वास्तै हाल जीवतो हूं' रो भाव सद् विचार पर कुविचार री हार जीत रो-संघर्ष रो उजागर इतिहास बतावै है। कई गीत श्रृंगार रस रा भी है।

भाषा रा लाक्षणिक प्रयोग बहुत आछा है। लोकोक्ति-मुहावरा सूं भासा घणी असरदार बणगी है। 'बळती मैं नाखे पूळा' 'सांपों री कैड़ी मासी' 'कद डाकण पुत जणै। जीसा प्रयोग आछा अर मनभाता है।

वाइग्रे कविता री मूल सवेदना ओछै स्तर री मालम पड़ै है। कवि परिवार नियोजन अभियान रो प्रचारक लागै है। 'गीत' कविता में फागण रै सुहावणै दिनूगै रो वर्णन है। होळी रो वातावरण है जो भोत सुन्दर है, पण एक लाइन मैं 'खाटा काचर बोर' बताया है। फागण मैं काचर बोरिया खाटा हुवै है कई ईं तरै ही 'घूमर घालै-गोरड़यां' में घूमर नै दिनूगै घालती बतायी है। प्रायः घूमर रो टेम रातरो हूया करै है।

सार रूप स्यूं कयो जा सकै है कि 'हंस करै निगरांणी' पुस्तक भाव, भाषा और कल्पना री दृष्टि स्यूं उच्च कोटि री रचना है। कविवर जोशी इण वास्ते वधाई रा पात्र है।



प्रवक्ता— डूंगर कालेज, बीकानेर

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५-५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा० मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्यां हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंह राजपुरोहित	७.५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा० ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी-दो बींद	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं० श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ० मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हूंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-४०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा.जो.)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा.जो.)	सं० रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा.जो.)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थान के कवि भाग २		सं० रावत सारस्वत	१५-००
राजस्थानी साहित्य संपदा		श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	१८-००
सरवर सूरज अर संझ्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क :

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर ।

मुद्रक—माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस, स्टेशन रोड, बीकानेर ।

जागती जोत

राजस्थानी भाषा री त्रैमासिक पत्रिका



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राज०)

जागती जोत

(समीक्षा-अंक)



सम्पादक

डा० मनोहर शर्मा



प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक

धनंजय वर्मा, सहायक सचिव

राजस्थान भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

भाग ३ : अंक ३

अक्टूबर-दिसम्बर १९७५

वरस रो मोल १०-००

इण अंक रो मोल ३-००

मुद्रक

माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस,

बीकानेर (राजस्थान)

सम्पादकीय

साहित्य री श्रीवृद्धि में समीक्षा रो असाधारण योगदान रैवै । समीक्षा सूं साहित्य रो संस्कार हुवै अर कवि-लेखकां नैं मार्ग-दर्शन मिळै । समीक्षा रै अभाव में रचनाकार आपरी असलियत नैं समझ नीं पावै अर मन-माने मारग पर चालतो रैवै । पण साथै हो ई समीक्षक रो काम करड़ो भी घणो है । उण रो अध्ययन विस्तृत, नजर पैनी अर निर्णय निष्पक्ष हुवणो जरूरी है ।

लारलै तीस चाळीस बरसां में राजस्थानी भाषा में घणो नहीं, तो कम भी नीं लिख्यो गयो है अर यो लेखन-कार्य सतत गति सूं चालू है पण राजस्थानी री जितरी भी साहित्य-सामग्री प्रकाशित हुई है, उण री हाल-तांई समुचित समीक्षा नीं हो पाई है । ई अभाव री किणी अंश में पूर्ति करण-सारू 'जागती-जोत' रो वर्तमान समीक्षा-अंक प्रकाशित कर्‌यो गयो है अर ईं खातर साहित्य रै प्रमुख अंगां पर अधिकारी विद्वानां सूं विशेष लेख त्यार करवाया गया है ।

म्हानै हरख है कै प्रस्तुत विशेषांक रा विद्वान लेखक आपरै दायित्व नै भली-भांत समझर आपरा लेख त्यार कर्‌या है ।

लेखकां द्वारा आपरै लेखां में जो भी विचार प्रगट कर्‌या गया वै ठोस है प्रस्तुत विशेषांक रै प्रकाशन में विद्वानां नैं अर साथै ई संगम-कार्यालय नैं भी धन्यवाद देवणो संपादक रै नातै मैं म्हारो फर्ज मानूं हूं, जिणां रै सहयोग सूं यो प्रकाशन व्यवस्थित अर जल्दी सूं जल्दी हुय सक्यो ।

—मनोहर शर्मा

टीप

राजस्थानी उपन्यास

डा० मूलचन्द सेठिया

समाज में जद-कदै कीं नूंवी सगती रो उदै हुवै तो बीं री उठाव करणै रै निमित्त साहित्य में कोई नूंवी विधा परगट हुवै । राजावां री सामन्तवादी सत्ता रो माहातम महाकाव्यां रै माध्यम सूं वरणीज्यो तो मसीन जुग रै मध्यवरगी मानखै रै जीवण री धूप-छांव रो चितराम लेय नै उपन्यास रो आविर्भाव हुयो । उपन्यास नै मध्य वरग रो महाकाव्य कहवै जका ठीक ही कहवै । उत्पादन में मशीनां रो परवेस होणै सूं समाज रो नक्शो ईज बदळ गियो । राजा-रजवाड़ां रै हाथां में जिकी सत्ता अर महत्ता ही, वा नूंवै पूंजीपती वरग रै हाथां में खिसकण लागगी । सेठ-साहूकारां नै आपरै विणज ब्योपार री बेरोकटोक वढ़ोतरी रै मारग में राजा-रजवाड़ा रोड़ा ज्यूं रड़कण लागग्या अर वै आपरो अंडो गाडण रै वास्तै जनतंत्र रो नारो बुलन्द कर्यो । मशीनी-जुग में पैदा होयेड़ो मध्यम-वरग ईं नारै नै सजोरा कंठां सूं गुंजाय नै आखै आभै नै गरणा दियो । पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था रै सागै जनतंत्र रो गै'रो सम्बन्ध है अर मध्यम-वरग रो अस्तित्व भी सामन्तवाद री समाधि पर पूंजीवाद रो दीयो जळनै रै बाद ही सामणै आयो है । उपन्यास रो तिकोण पूंजीवाद, जनतंत्र अर मध्यम वरग रै तीन बिन्दुवां सूं मिलर बण्यो है । जे औद्योगिक क्रांति नईं होती तो शायद उपन्यास रो जलम भी नईं हुतो । छापै री मशीन रो आविष्कार अर गद्य रो विकास भी उपन्यास रो जोर वधाणै में आपरो पूरो जोग दियो है ।

साहित्य री विविध विधावां में उपन्यास री विधा सब सूं नूंवी विधा मानीजै । मानखै रै जीवण रो जिसो जीवतो-जागतो चितराम उपन्यास रै माध्यम सूं सामणै आवै, बिसो और कोई विधा सूं नईं । ईं रो कारण ओ ईज है कै उपन्यास जीवण अर जगत री सच्चायां सूं मुंडो लुकोवणै री अर सुपनां रै सम्मोहण सूं भरमाणै री चेष्टा नईं करै । कवि जीवण रै चुभता कांटां नै रेशमी-रूमाळ सूं लपेट नै पेश करै अर दर्द नै भी दवा बतावै । वो आभै रा गैलो चूक्या बादळां सूं मैल-माळिया बणावतो थकै

ई कोनी । पण, उपन्यास री पैं'ली वफादारी जमानै री सच्चायां साम्है होवै अर वो जीवण रै यथार्थ नै दरपण ज्यूं दिखाणै री चेष्टा करै । उपन्यास सपनां रो सौदागर नहीं होय नै जमानै री जळती बळती अर उळझी पुळझी सच्चायां रो सन्देश वाहक होणो चावै ।

कविता रो इतिहास घणो पुराणो है । आदमी रै पैंला पांगू अर वीं रै पैंली मळक कविता रै दरपण में ईज आपरी परछाई देखी । कहाणी री परम्परा भी नानी री नानी री नानी सूं चालती आवै । पण, उपन्यास तो काल दिनां रो टाबर है । पच्छमी देसां में भी उपन्यास री जिनगाणी लारला दो-ढाई सौ बरसां में [illegible] है । हिन्दी रै उपन्यास तो एक शताब्दी ही पूरी करी है । प्रो० नरोत्तमदास स्वामी रै कथनै परवाणै राजस्थानी रो पैलो उपन्यास शिवचन्द्र भरतिया रो लिख्योड़ो 'कनक सुन्दर' है, जिको सम्वत १९६० में छप्यो हो । डा० मनोहर शर्मा सम्पादित 'कुंवरसी सांखलो' अर 'राहिव साहिव' सारिखी रचनावां उपन्यास री सीव सूं दूर होणै पर भी [illegible] है, जिका पुराणी कथावां सूं नूंवै उपन्यास री तरफ होण-वाळी यात्रा रै बीचला पड़ावां रो परिचय देवै । डा० किरण नाहटा आपरै शोध-प्रबन्ध में 'कनक सुन्दर' रै बाद श्री-नारायण अग्रवाल रै 'चम्पा' उपन्यास रो उल्लेख कर्यो है । 'कनक सुन्दर' अर 'चम्पा' रा कथानक आप रै जुग री सुधारवादी भावनावां रै ताणै बाणै सूं गुंथीजियोड़ा है । हिन्दी रै आदि उपन्यास 'परीक्षा गुरु' अर बंगला रै आदि उपन्यास [illegible] रै कथानकां रै सागै 'कनक सुन्दर' रै कथानक री घणी समानता लखावै । आं तीनां उपन्यासां रो कथानक सामाजिक स्यूं ज्यादा पारिवारिक है । अशिक्षा, [illegible] अर दूसरी बुरायां रै कारण पैंली परवार रो सागो सत्यानासो-सो [illegible] अर बाद में शिक्षा अर सदाचार रै समचै सांतरो जम जावै । राजस्थानी अर हिन्दी ही नहीं, सगळी भारतीय भाषावां में वो जुग आदर्शवाद अर सुधारवाद रो जुग हो अर आ बात घणी सुभाविक है कै वीं युग रा राजस्थानी उपन्यासां रो मूळ आदर्शवाद सूं अनुप्राणित है । अचरज री बात तो आ है कै राजस्थानी रो सब सूं नूंवो उपन्यास [illegible] (अन्नाराम 'सुदामा') भी ओ ईं नाणी वीं पुराणी गैल नै नहीं छोडी है ।

'कनक सुन्दर' अर 'चम्पा' रै प्रकासण रै घणां बरसां बाद श्रीलाल नथमल जोशी रो 'आभै पटकी' उपन्यास प्रकाशित हुयो अर इण उपन्यास रै बाद ही राजस्थानी में उपन्यास री अखण्ड परम्परा रो आरम्भ हुयो । जोशीजी रो एक और उपन्यास 'धोरां रो धोरी' राजस्थानी साहित्य और संस्कृति रै जाण्या-माण्या विद्वान अर [illegible] इटली रा डा० टैस्सीटोरी रै जीवण माथै लिखीजियो है । राजस्थानी रो ओ दूसरो

जीवणी परक उपन्यास है। अन्नाराम 'सुदामा' रा दो उपन्यास 'मैकती काया' अर मुळकती धरती' अर 'आंधी अर आस्था' प्रकाशित होया है। हिन्दी रा आगीवाण उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' भी आपरी मायड़ भाषा में एक उपन्यास लिख्यो है- 'हूं गोरी किण पीव री'। विजयदान देथा 'टीडोराव' में एक लोककथा नै उपन्यास रो रूप दियो है। राजस्थानी भाषा रै मांय पैलो ऐतिहासिक उपन्यास लिखणै रो श्रेय सत्येन जोशी नै है, जिका 'कंवळ पूजा' में जैसलमैर रै इतिहास री एक कथा आपरी कल्पना रो पळेथण लगाय नै पेश करी है। कवि छत्रपतिसिंह रो 'तिरसंकू' राजस्थानी रो पैलो प्रगतिवादी उपन्यास है, जिकै में वर्ग-संघर्ष री समस्या नै रोमान्स रै ताणै-वाणै में गूंथी है। आज री मिती तांणीं राजस्थानी भाषा में इत्ता ही उपन्यास प्रकाशित होया है।

राजस्थानी उपन्यासां री विषय-वस्तु रो चुणाव समाज री सीमित परिधि सूं ई हुयो है। आभै पटकी', 'मैकती काया' अर 'मुळकती धरती' अर 'हूं गोरी किण पीव री'- आं तीनां उपन्यासां री धुरि तो जुग-जुग सूं सताईज्योड़ी अर पुरुषां रै पगां नीचै रगदोळीज्योड़ी नारी रो जीवण है। आं उपन्यासां में नारी री अखूट वेदना रो अपार सागर लहरा रैयो है। 'आभै पटकी' अर 'हूं गोरी किण पीव री' में नारी रो विधवा-रूप सामणै आयो है। समाज रै पगां में किचरीजती'र चौंथीजती विधवा आपरै परिवार में 'देवराणी, जेठ-जेठाणी अर सासू-सुसरै सगळां रै पगां री जूती, कुळ में कुलखणी अर खुरड़पगी गिणीजै।' बीं रो पूरो जीवण ही विधाता रो एक व्यंग्य-सो घणो दोरो अर अणखावणो लागै। आं दोनूं उपन्यासां में विधवा रै जीवण री कहाणी आंसुआं सूं गीली कलम सूं लिखीजी है।

'आभै पटकी' री किसनी अलवर है मानीजतै सेठ री वहू है अर 'हूं गोरी किण पीव री' किसनड़ी एक कुंभार री लुगाई। दोन्यां रै स्तबै में घणो ई फरक है, पण दोन्यां रा करम एक सारीसा फूटयोड़ा है। विधवा चावै रंक री होवै अर चावै राव री, पण बीं री आ हालत होवै कै 'आभै पटकी अर धरती झाली कोयनी'। बा चावै कित्ता ई फूंक-फूंक'र कदम क्यूं नईं राखै, बीं री इज्जत नै च्यारूं तरफ सूं खतरो-ई-खतरो होवै। 'हूं गोरी किण पीव री' में किसनड़ी कैवै, बिना धणी री लुगाई री इज्जत सफेद कपड़ै जिसी हुवै है, हाथ लागणै सूं मैली हुय जावै। बिना धणी री गाय री कुण रूखाळी करै।' 'आभै पटकी' में भी विधवा री ई विडम्बणा रो घणो आकरो रूप सामणै आवै "सुहागण छोरयां किसी कुमारग में को पड़ जावै नी, पण बांरै ऊपर धणी ढाल हुवै जिण सूं सब ढकीज जावै। विधवा निछतरी हुवै। एक पांवडो ऊक-चूक धरतै ई समाज सड़ासड़ साटका सूं सूंतण लाग जावै।'

श्रीलाल नथमल जोशी अर यादवेन्द्र शर्मा आपरै उपन्यासां में विधवा रै जीवण री साळामेली रो मार्मिक वर्णन ही नीं कर्‌यो है अर न समस्या रो निराळ रूप सामणै राखनै आपरी कलम नै अळगी नाख'दी है। प्रेमचन्द जुग रै हिन्दी उपन्यासां में विधवा-सारू आंसू तो बहोत ढंवाया है, मपणायत रो दिखावो भी घणो कर्‌यो है, पण वांरै त्याग अर तप री प्रसंसा रा पुळ भी मोकळा बांध्या है, पण जठै विवाह रै ब्याव रो सवाल आयो है, वठै वै आपरी निजरां चुरावण लागग्या है। प्रतापनारायण श्रीवास्तव अर विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' सारीखा मोटा उपन्यासकार विधवा नै नारी रो तप-रूप मानता थकां वीं री आरती उतारणै में कोई कसर कोनी राखीनी, पण परम्परा नै अळगी नाख'र वां रो ब्याव रचाणै रो मोको आयो, जद वै सगळा आंकस लागग्या अर वांरा पग पाछा पड़ग्या। ई समस्या रै मूंडामूंड देखणै री हिम्मत वां में को ही नी। श्री०न० जोशी अर 'चन्द्रजी' आपरै उपन्यासां में विधवावां नै [illegible] रै जळबळतै कढ़ाव में तळतळीजण खातर कोनी छोडी। दोनूं आपरै उपन्यासां में समाज री जूनी परम्परावां नै तोड़'र वांरा ब्याव रचाणै री हिमायत दिखायी है। समाज सूं विधवावां सारू सहानुभूति री भीख मांगणै सूं आगै बढ'र ऐ उपन्यासकार समस्या रो एक सांगोपांग समाधान पेश कर्‌यो है।

'हूं गोरी किण पीव री' री नायिका किसनड़ी जाट री कुंआर है। वींरै समाज में नातै री प्रथा जुग-जुग सूं चालती आई है, पण वींरो देवर माधो आपरी भोजाई सूं ब्याव करणै में भोत पळसा-मळसी करतो दीसै। ई रै विपरीत 'आभै पटकी' में किसनी रो देवर 'मोवन' आपरी भोजाई सूं ब्याव करणै में कोई मन रो अटकाव मैसूस नईं करै। ईं रो कारण सामाजिक नईं होय नै मनोवैज्ञानिक है। माधो रो भाई जद फर्ज रै डर सूं भागग्यो तो किसनड़ी वी री गिरस्ताळ सारी माथै बण गी। वा आप कमठाणै मजदूरी करण नै गई पण माधो री पढ़ाई कोनी छूटण दी। किसनड़ी रो भाई आपरी बैण नै एक जुआरी अर लम्पट रै हाथां बेचणै रो षड्यन्त्र कर्‌यो अर माधै रो भलो चावणिया वीं नै आपरी भोजाई नै ईं जाळ सूं छुड़ावण वास्तै वीं सूं नातो करणै री सलाह दी। माधो घणै धरम-संकट मांय पड़ग्यो अर बोल्यो—"वो उण नै देवळी मान उण री पूजा करी है, आव-आदर कर्‌या है, सरधा सूं उण रै पगलिया पासी जोयो है, पण कदैई पापरी नजर सूं उण नै नईं जोई।" जका नै मा रो दरजो थाप राखी ही उण नै वो आपरी लुगाई किया बणावै? माधो रै मन री ईं अटक रो विश्लेषण करणै में 'चन्द्र' ने आछी सफलता मिली है। भोजाई नै जाळ-जंजाळ सूं बचावण वास्तै माधो उण सूं ब्याव तो रचावै पण वीं रो मन आगो-पाछो होवतो ई रैवै।

अन्नाराम 'सुदामा' री 'भैकती काया' अर 'मुळकती धरती' एक घणो भाव-भीनो उपन्यास है। ईं री नायिका सुथारी नानी है, जकी आपरै मनमानीतं दोहीतं रै आगै आपरी जीवण कथा रो बखाण करै। ई उपन्यास ईं नारी रै दुखां री जड़ में नारी रो ईज अत्याचार है। नानी विधवा को ही नी, पण विधवा सूं भी गई बीती ही। नानी री कांटकटीली नणद बींनै आपरै बीन खनियां धोळो उढवार घर सूं कढवा दी। सासरै सूं काढीजेड़ी नै पीरै कीयां झालै ? इण वास्तै नानी आपतै भगवान री मरजी पर छोड़ दी ही। नानी रै मन में कोई आस्था रो बीज कठै सूं आय नै पड़ग्यो हो, बींनै वा आपरै आंसुवां सूं सींच-सींच'र एक बेल रो रूप दे दियो। कई झक झोरा खाणै रै बाद नानी रो मन एक विस्वास रै लंगर माथै टिकग्यो हो। बा कैवै, डांई पड़ै जींनै तो काढणी ही पड़ै, हंस हंस'र काढो भावै रोयर' नानी तो आपरी डांई हंस हस'र ही काढती दीसै। बीं री आंख्यां में दुख रो सूरमो सारणै सूं एक गहरी दीठ आ जावै, जकै सूं बा ऐड़ी बांता कैवै, जकी आज रै जुग री कसौटी पर भी बावन तोळा पाव रत्ती खरी उतरै। सुथारी नानी रो भारत री धरती सूं इत्तो अपणापो है कै बा आपरै एक जनम में सौ नारकी भोगणै रै बाद भी ईं धरती पर जलम लेणो चावै। नानी कैवै, "औ रजवाड़ा, औ ठाकर-ठरडा के ठा रैसी न रैसी, पण आ धरती आपां री कठै ई को जावै नी। आपणो नेह तो ईं धरती सागै है। देख तूं आ धरती कित्ती पवित्तर है, जिकै पर गंगा अर जमना जिमी नद्यां, हरियाळी अर अन्न धन्न बांटती-बिखेरती कित्ती खा'ती चालै, जाणां खेत-खेत में आंनै टेम सूं पूगणो है। भूखै तिस्सै मानखै री जाणै मा' चिन्ता आ नै ही है।

ईं उपन्यास में 'सुदामा' जी राजस्थान री ही नईं, आखै देस री धरती रै भांत भांत रै रूपरंग अर फुटरापै रो घणो रळियावणो वरणन कर्‌यो है। उपन्यास री कथा रै समचै बीं री कित्तीक सार्थकता है, औ सवाल दूजो है। पण, आ बात मानणी पड़सी कै उपन्यासकार रै मन में देस री धरती-सारू घणो हेत अर अपणायत है। इण उपन्यास में राजस्थान रै जन-जीवण रो सांचो सरूप अंकित हुयो है अर केई स्थल पढणै में तो गद्यकाव्य सारीखो रस अनुभव हुवै।

विजयदान देथा रो "टीडोराव" एक लोक-कथा रो उपन्यासीकरण है। पण, इण उपन्यास रो सांकेतिक अरथ आज रै जुग-सन्दर्भ में घणो तीखो अर आछो मालूम देवै। तीडो पडिहार वेजो वणतो अर भजन भाव रो घणो चाव राखतो। एकरसी बीं रै हाथ सूं एक उडती माखी रो निसाणो लागग्यो तो आ वात टीडै रै हाडोहाड लूकगी कै बो एक लूंठो मिनख वणेलो। आ सोच'र बो घर सूं नीसरग्यो तो बीं रै भाग

रा टोटका लागता गया अर आ गलती कणी जकी ई बात उणरी सावळ पकड़ती गई । चोरी गएड़ै नवलखै हार रो मरो ई पतो पकड़्यो, जीवतै गिग नै गगेड़ा ज्यूं कान पकड़ नै नींवड़ा रै बांध दियो, चोरी गएड़ो धन पाछो पग लियो अर मूंठी मोजां सूं बिना लड़्यां ही हार मनवा ली ।

'टीडोराव' रो ओ पतिरा कोरो भाग-संजोग रो परणो ई नई है, इण सूं ओ भी संकेत मिलै है कै टीडोराव बण्या फिरै, इसा मिनखां रै भाग जोग ही जोग होवै । जिका होवै पोचा चिणा, वै ही बाजै घणा । मिनख पणै रो मोल दुनियादारी सफलतावां सूं कोनी आंकयो जा सकै । आज रै जुग में 'टीडोराव' रो प्रकाशन घणो सार्थक लखावै ।

✓ छत्रपतिसिंह रै "तिरसंकू" री बाबत प्रकाशक री ओर सूं ओ दावो कर्‌यो गयो है कै 'ओ प्रगतिवादी विचारां री सुरूआत करणियो पैलड़ो राजस्थानी उपन्यास है।' ओ दावो भोत दमदार नईं लागै, क्यूं कै 'आभै पटकी' अर 'ह लोरी जिण जीव री' समाज री कूड़ी मानतावां अर जूनी मरयादा पर चोट करणै री दीठ सूं प्रगति-शील ही कैया जा सकै है । अन्नाराम 'सुदामा' 'मैकती काया' अर 'मुळकती धरती' में देस री धरती अर धरती रै जायां रो पण घणो मजोरो लियो है । इण कारण 'सुदामा' रै उपन्यास नै भी प्रगतिशीलता रै श्रेय सूं वंचित नईं कर्‌यो जा सकै । 'तिरसंकू' री खासियत आ है कै आज री राजनीति नै परतख रूप सूं उपन्यास रै आडै सामनै राखी है । राजस्थान सामन्तवाद रो गढ रैयो है, पण लोकराज रो संकमण सामन्ती परवारां नै भी अछूता नईं छोड्या है । पवन अर वी रै 'बापा' रै विचारां में रात-दिन रो फरक पड़्यो लखावै । उपन्यास रै पूर्वार्द्ध में पवन री मनगत रै मांय सामन्त पणै रो टकराव कई रूपां में सामणै आवै, पण समाज रै सुनाखो रंग रै मांय क्रान्ति री लाली फीकी पड़ती लागै । लीना रै "डील री पहाड़ियां अर घाटयां" मांय भिरमी-जवती पवन री निजर नारी सूं हट नै 'धरती पर पड़ै अर धरती सूं हट नै नारी पर पड़ ज्यावै । नारी (लीना) रै 'अंग अंग मांय मनगाळ जोबन री रसाळ नाच रयो हो । म्हारै डील में भी उण रै छूणै सूं गरमी लोड़गी ।' नारी रै मोवणै रूप सूं लोभेड़ी पवन री निजर प्रकृति रै मोवणै रूप पर पड़ै तो वो देखै—"सगपर टिगो ना सामरी टिमटिमाता तारां नै आप रै पल्लै मांय बांध्यां लहरा रयो हो ।" नारी अर प्रकृति रै दोहरे आकर्षण में बंध्योड़ो पवन आपरै आप सूं विमाळ होय नै गांव छोड़'र दिल्ली चल्यो जावै । अठै सूं उपन्यास रो उत्तरार्द्ध सरू होवै । दिल्ली में लीना नामरी-एक क्रांतिकारी लड़की री प्रेरणा सूं क्रांतिकारी आन्दोलन कानी आकर्षित हुवै, पण क्रान्ति-कारी दळ में भी स्वारथां री उठाव-पटक सूं ऊब'र पाछो गांव कानी मुड़ जावै । वो आपरा

सगळा खेत अर बाग–बगीचा काम करणियां करसां मांय बांट'र वां री सहकारी समिति बणाय नै आप वीं रो अध्यक्ष बण जावै पण गांव रा छळछन्दी लोग बीं नै अध्यक्ष पद सूं भी हटा देवै। गांव सूं दिल्ली अर दिल्ली सूं गांव रै विचाळै भटकतै पवन नै इयां लागै है 'म्है इण दुनिया मांय भतूळिये मांय कागज रै टुकड़ै ज्यूं अर नंदी मांय गुड़कतै पत्थर ज्यूं वेमतलब जिन्दगी बिता रयो हूं। अब म्हनै लखावै है कै दिल्ली अर नन्दीगाम मांय कोई फरक कोनी।' शैल नन्दीग्राम आय पवन री सुधारवादी योजना–सारू उण नै फटकारै अर कैवै, आ क्रान्ति छत माथै खड़्या होय'र सुहाणै सरवर ने देख्यां सूं कोनी आवैली पवन! आव नीचै चालां।

पवन ईज तिरसंकू है, जिको दिल्ली अर नन्दीग्राम क्रांति अर सुधारवाद रै बीच भटकतो फिरै। इण उपन्यास में क्रान्ति रै सागै रोमान्स रो इत्तो धाळमेल हो रैयो है कै क्रान्ति रो सरूप रोमान्स रै पड़दै लारै लुक्यो–छिप्यो रह जावै। कृशनचन्दर अर यशपाल रै प्रभाव सूं छत्रपतिसिंह नै ऊपर उठणो पड़ैला। उपन्यास रै माथै गुन्नार मिरडल रै उद्धरणां री चिपक्यां भी घणी लगाई है, पण जनक्रान्ति रो रूप लीना अर शैल रै मदमातै रूप में ही दवेडो रह जावै। लीना कैवै भी है, 'सगळी वीरता अर बहादुरी री कहाण्यां लारै गोरड्यां रो मोह-जाळ है पवन!' पवन भी हुंकारो भरतो थको कैवै—सगळी वीरगाथावां सुन्दर नार रै घेरै सूं बारै कोनी। छत्रपतिसिंह रै 'तिरसंकू' रो नायक पवन एक खानी लीना अर शैल सारीखी गोरड्यां रै घेरै में घिरयोड़ो है तो दूजी खानी प्रकृति री सुन्दरता रै मोह-जाळ में बंध्योडो है। क्रान्ति तो बापड़ी 'तिरसकू' री तरियां नारी अर प्रकृति रै बीच अधर में लटकती ही रहगी है।

अन्नाराम 'सुदामा' रो दूसरो उपन्यास 'आंधी अर आस्था' है, जिकै में 'सुदामा' राजस्थान रै गांवां रो यथार्थ चित्रण कर्‌यो है। राजस्थान रो गांव गरीबी रो ईज दूसरो नांव है अर अकाळ री काळी छाया रै हेटै दम तोड़ता गांव तो नरक रै ओड़ै–जोड़ै रा ई कह्या जा सकै है। जगनाथ एक चरित्रवान ब्राह्मण है, पण वो गरीबी रो ई सतायेड़ो को है नी, गांव रै सिरैपंच री कुठारगी रो शिकार भी है। वो एक कूड़ै मुकदमै में फंसा'र जगनाथ नै जेळ करा देवै। जगनाथ री मां, लुगाई अर टाबरां पर घणी दोरी बीतै अर वै गांव छोड़'र बीकानेर चल्या जावै। भाग री मार, गरीबी री मार अर गांव रै मोथां री मार खातां–थकां भी ओ परवार आपरी आस्था नै नईं छोडै अर एक दिन आपरै पगां माथै खड़्यो होय जावै। उपन्यास रो सुर 'कुर्सी-खानी मूंडो अर देस खानी पूठ देवणियां सारू घणो आकरो है। मंगळ शास्त्री कैवै 'उठती अर अमूजती पीढी बीं सगळी जात नै कदैई दरड़ में नाख'र धरती बराबर कर देसी।' उपन्यास रै अन्त में नई क्रांति रो सूरज उगतो दिखायो है—"अमूणी धरती रो जड़ां में काळै भूजां

नैं चीरती धरती नैं नयो जीवण वांटती क्रान्ती-री नई किरणां निकळै हा।'' पण, उपन्यास रो पाठक क्रान्ति री किरणां सूं इत्तो प्रभावित को हुवै नीं, जित्तो हालात रै थपेड़ां रै बीच आपरी आस्था री लौ नैं जळती राखणै-वाळै गरीब परवार री मरदा-नगी सूं। 'सुदामा' जी भो चित्रण करणै में भी सफल होया है कै आपां रा गांव रूढ़ियां रै दळ दळ में कित्ता गहरा फंसियोड़ा है।

✓'कंवळ पूजा' राजस्थानी रो पैलो ऐतिहासिक उपन्यास है। सांचित अर्थ में इण नैं राजस्थानी रो पैलो 'आंचळिक उपन्यास' भी कह्यो जा सकै है। जैसलमेर रै सोरम री धरती री हवा अर पाणी में जाणै कांई जादू हो कै म्हारो मन उठै रमग्यो। जैसलमेर म्हारी रग-रग में अजूं रमै, अर ता-उमर म्हारै रूं-रूं में जैसलमेर री सोरम आवती रवैली। इण उपन्यास मांय सूं भी जैसलमेर री मनचाही-मनचाही सोरम आवै। धूड़ रै समुन्दर में बसियोड़ै जैसलमेर रा गांव, गढ़-किल्ला अर मेळा-मगरिया रो वरणन ईं उपन्यास नैं एक आंचळिक रूप देवै। पण, सत्येन जोशी री दीठ रो केन्द्र 'अंचळ' नईं, 'इतिहास' ईज है। तन्नोट रै राव विजयराज साथै रावळी रै सुलतान मैमूद हमलो कर्‌यो। वाराह अर लंगा विजयराज सूं खोट करनै रै कारण मैमूद री मदद करी। इतिहासकारां रो यो मानणो है कै ईं लड़ाई में जीत मैमूद री हुई। पण, मुणोत नैणसी री ख्यात में राव विजयराज री जीत रो हवालो मिलियो है। सत्येन जोशी ख्यात रो आधार लेय नै आ बात लिखी है कै 'सुलतान री फौजां खतम व्हैगी। पण कीं अफसरां अर सिपायां सागै सुलतान जीवतो भागण में कामयाब व्हैगो।' इण उपन्यास री आलोचना करता थकां पं० रघुनन्दन शर्मा लिख्यो है—'कंवळ पूजा' राजस्थानी शूर-वीरता रै सागै आपसी फूट रो दस्तावेज है, जठै रै भीतर प्रेम री, त्याग री, वासना री उफणती धारा जुद्ध रै रगत सूं रंगीजोड़ी कथा में लगातार वैती रैवे। उपन्यास रो मूळ सुर जुद्ध रै खिलाफ बोलतो अर शांति रो सन्देसो है। उपन्यास में एकै-खानी वीरता रो बिरूद बखाण्यो है, प्रेम री रक्षा रै जरूरत रै पौरस नैं ललकारयो है अर दूजै-खानी शान्तिवाद रो प्रचार भी बीच-बीच में चालू राख्यो है। राव विजयराज जद देवी तन्ना रै सामनै 'कंवळ पूजा' करण नै त्यार हुवै तो यशोधरा वींनै बरजती-थकी कैवे, "आप आपरी ताकत बधावो, फकत राजनीत सूं सैंग पाड़ोसियां सूं भाइपो करो अर जुद्ध रो हमेश-हमेश सारू काळो मूंडो करो।"

पण, साची बात आ है कै जुद्ध रै जुझारू बाजां रै सागै शांति रै ईं सुर रो मेळ नईं सध सक्यो है अर वीरता रै उफणतै वातावरण में यो शांति रो सन्देस उपन्यास रै मांय सूं निसरनो नईं, ऊपर सूं थोपाण्ड़ो सो लागै। एक बात और भी

असंगत सी लागै। मैमूद रै बारै में एक जग्यां लिख्यो है कै बो पाखण्ड रा पाटिया ऊंधा मार दिया। सोचणै जोग सवाल ओ है कै मैमूद हिन्दुस्तान माथै आपरी साम्राज्यवादी भूख रै कारण हमलो कर्‌यो कै पाखण्ड रा पाटिया उलटा करणै रै वास्ते ? इतिहास रै बारै में दीठ रै ईं उलट फेर रै कारण उपन्यास री मूळ परिकल्पना ही कीं अस्तव्यस्त हो जावै तो अचरज कांई ? 'कंवळ पुजा' आपरै आंचळिक चित्रण अर ऐतिहासिक वातावरण रै कारण राजस्थानी उपन्यासां में आपरी एक न्यारी-निरवाळी जग्यां राखै। एक नई सरूआत रै रूप में ईं रै महत्त्व नै कोई नकार सकै नईं।

कथा वस्तु रो घणो चुस्त बंधाण आज रै उपन्यास रो गुण नईं मानीजै। उपन्यास जीवण रो सांचो प्रतिबिम्ब बणणै रै फेर मैं जीवण री तरियां ही अुखड़्यो-पुखड़्यो होयग्यो है। जेम्स ज्वायस रै 'युलिसीज' रो नांव तो दूर री गूंज कही जा सकै पण 'अज्ञय' रो 'शेखर एक जीवनी' सारीखा उपन्यासां में भी कथा री शृंखला जाण-बूझ'र तोड़ेड़ी सी लागै। जाणै माळा रा केई मिणिया आगै रा पाछै अर पाछै रा आगै कर दिया होवै। राजस्थानी उपन्यासां में कथा रो बंधाण परम्परागत रूप में इज कर्‌यो गयो है। जीवण रै व्यापक विस्तार नै समेटणै री खिमता नईं होणै रै कारण उपन्यासां रो आकार भी घणो बत्तो को है नी। श्रीलाल नथमल जोशी रै उपन्यासां में कथा रो कोरो वरणन है। घटनावां जियां-जियां घटती गई है, वांरो बियां-बियां वरणन करता गया है। 'चन्द्र' जी कथा रा कुशळ शिल्पी है। बै आपरै उपन्यास में कथा रै धागां नै जतन सूं एक दूसरै रै सागै गूंथ्या है, पण 'टेकनीक' वांरी भी पुराणी ही है। "मैकती काया अर मुळकती धरती" में कथा रो बन्ध कीं ढीलो-ढालो है। नानी री मौत रै सागै कहाणी यक बार दम तोड़'र बैठ जावै पण कीमे मामै री कहाणी में वींनै पूंछ मरोड़र फेर खड़ी करी जावै। 'तिरसंकू' में भी लीना अर शैल री अळगी अळगी कहाण्यां में कोई गैरो सम्बन्ध नईं मालूम देवै। बै खाली पवन रै धागै सूं हळकी-सी जुड़ेड़ी है। टेकनीक रो नयो प्रयोग करणै री हूंस अोजूं ताणी राजस्थानी रो कोई भी उपन्यासकार कोनी दिखाई।

श्रीलाल नथमल जोशी अर 'चन्द्र' जी रै उपन्यासां में संजोग-तत्व रो भी पूरो उपयोग कर्‌यो गयो है। नूंवा उपन्यासां में इण रो महत्व भोत कम होग्यो है, पण इण रो उपयोग करणै वास्तै जोशी जी अर 'चन्द्र' जी नै घणो ओळमो नईं दे सकां। रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'गोरा' अर 'नौकाडूबी' में तथा जयशङ्कर 'प्रसाद' आपरै 'कंकाल' में संजोग-तत्व रो धाप'र उपयोग कर्‌यो है। जीवण में संजोग रो भी आपरो एक स्थान होबै है, वींनै फूंक मार'र उडायो कोनी जा सकै।

राजस्थानी उपन्यासां में छोटा कस्बां रै निचलै मध्यम-वर्ग रै जीवण रो चित्रण इधकाई सूं कर्यो गयो है। उपन्यास रो मूळ सम्बन्ध मध्यम-वर्ग सूं ईज है, जियां सामन्ती समाज रो महाकाव्यां सूं। अन्नाराम 'सुदामा' रै 'आंधी अर आस्था' में गांवां में रैवणिया सर्वहारा परवार रो चितरण है अर छत्रपतिसिंह रै 'तिरसकू' में सामन्ती परवार रो। बाकी राजस्थानी रा सगळा उपन्यासां रो आधार मध्यम वर्ग ईज है। मध्यम वर्ग रै मानखै रा सपना भी वीं री औकात-सारू छोटा-छोटा ई होवै। भानै कुभार री मां रो ओ सपनो हो कै वीं रो बेटो दसवीं क्लास तांणी भणीज'र दफ्तर रो बाबू बण जावै। पण, सपनां में ओ बड़ो खोट है कै वै सांचा होतां ई फीका लागण लाग जावै। 'वो जिकै हरख अर सपनां री आसावां सूं दफ्तर रो बाबू बण्यो हो, अबै उण में कोई वेसी भदरक लागी कोनी। वरस में रुपिया थोड़ा अर नाणां घणा।" मध्यम-वर्ग री मोटी समस्या नाणां रै टोटै री है, पण ईं रै कारण मानखै रै मन मांय और भी घणी गांठ्यां पड़ जावै अर वो आमण-दूमणो रैण लाग जावै। चोट पर चोट खातां-थकां वीं रै मन में हिंसा रै तोड़ फोड़ री प्रवृतियां भी पनपण लाग जावै। राजस्थानी रा उपन्यासकार ओजूं तांणी मध्यम-वर्ग री मोटामोट समस्यावां रो चित्रण ही करयो है. मध्यम वर्गी मानखै री झीणी अर ऊंडी मनगतां तांणी पूगण री चेष्टा करीजी नईं है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' 'आंधी अर आस्था' री भूमिका में लिख्यो है, 'ईं में मनोविश्लेषण थोड़ो है अर कांणी फर्राटे सूं चालै है। फेर एक आदर्शवादी दीठ। वीं दिठाव में नाया सूं आ साफ़ लागै है कै उपन्यास में प्रेमचन्द रै जुग री दीठ है। सायत राजस्थानी भाषा रो पांवडो हाल तांई वीं ई जुग वोग मांय सूं निसर रयो है।

'चन्द्र' जी री आ बात राजस्थानी रै घणकरा उपन्यासां पर लागू होवै। पण, विश्व उपन्यास री बात आगी नाखां, तो हिन्दी रा उपन्यास भी प्रेमचन्द जुग सूं घणा अळगा हट आया है। अर उपन्यास री कहण जोग (तथ्य) और कहणगत (शैली) में घणो हेर फेर होयग्यो है। राजस्थानी अब साहित्य अकादमी री मानीजती भाषावां मां सूं एक है अर वरसो वरस ईं भाषा री रचनावां माथै पुरस्कार भी दियो जावै है। अब आपां आपणै पिछड़ पणै रो हवालो देय नै महर री मांग करता रैवा तो उचित नी है। राजस्थानी उपन्यास दूसरी भाषावां सूं ओजूंताणी भोत लारै है। ईं सांच नै आपां आपणां मनां म्यानां मंजूर कर लेवांला, जद ही आगै बढणै रो उपाय हाथ आवैलो।

✓ राजस्थानी उपन्यासां री भाषा में सैंजता री कमी खटकण आळी है। भाषा में सैंजता प्रयोग अर प्रचलण सूं आवै। हिन्दी में हजारां उपन्यास लिख्या जाणै रै

बाद भी केई लोग खड़ी बोली नै कोरी किताबी जबान कहता नईं सकै । राजस्थानी रा आठ दस उपन्यासां में भाषा रो प्रवाही रूप निखरणो तो भोत मुस्कल है, पण आं उपन्यासां नै पढ'र कोई आ कोनी कह सकै कै ऐ बिल्कुल पैलड़ा उपन्यास है । अन्नाराम 'सुदामा' रै उपन्यासां में भाषा रो प्रवाह बड़ो खातो अर ओपतो है । 'मैकती काया' अर 'मुळकती धरती' रा केई केई स्थल तो गद्यकाव्य री होड़ करै । 'आंधी अर आस्था' में कहावतां पर कहावतां अर मुहावरां पर मुहावरां री ऐड़ी झड़ी लगाई है कै वां नै आ कहणै री मन में आवै कै आप आपरी मुहावरादानी पर कीं कन्ट्रोल राखो ।

श्रीलाल नथमल जोशी री भाषा बोल चाल री साधारण भाषा है, न घणी अलंकारां सूं जड़ योड़ी, न मुहावरां सूं मंडयोड़ी । हां, 'हूं गोरी किण पीव री' नै पढर आ जरूर लागै के ओ उपन्यास हिन्दी में लिखीजतां-लिखीजतां राजस्थानी में लिखीजग्यो । छत्रपतिसिंह री कविता री भाषा है, राजस्थानी मांथै वांरो सैंज अधिकार है, पण कविता जद उपन्यास रै सिर पर चढ नै बोलण लाग जावै तो उपन्यास रै हक में घणो सिरैकार को होवैनी । सत्येन जोशी री 'कंवळ पूजा' रै बारै में कोमल कोठारी लिख्यो है— 'कंवळ पूजा' री भाषा राजस्थानी भाषा का वह रूप है जो सरल एवं ग्राह्य है ।' मासिक 'हरावल' री दीठ सूं 'कंवळ पूजा' में राजस्थानी रै उण सरूप री खोज की जा सकै, जिका नै आपां स्टैण्डर्ड राजस्थानी री कल्पना रै रूप में देख रैया हां ।' सत्येन जोशी री भाषा में भावां रै प्रकटीकरण री लूंठी खिमता है, बै शब्दां रा जादूगर है है जका रै हाथां मे आय नै एक एक शब्द एक-एक चितराम रो रूप धारण कर लेवै । पण, वां री भाषा राजस्थानी रो स्टैण्डर्ड रूप मान्यो जा सकै, इण में सन्देह है । पश्चिमी राजस्थानी रै बारै भाषा रो ओ सरूप सहज-ग्राह्य नईं है । राजस्थानी भाषा रो स्टैण्डर्ड रूप विजयदान देथा रै उपन्यास 'टीडोराव अर वां री 'बातां री फुलवाड़ी' में देख्यो जा सकै ।

राजस्थानी उपन्यास हिन्दी रा उपन्यासां सूं भोत कुछ सीख सकै है, पण जे बै वांरी 'कॉर्बन कॉपी बणग्या तो आ भोत माड़ी बात होवैली । हिन्दी उपन्यास आज कुण्ठा, संत्रास, अजनबीपणै, अर अणमणपणै रै दौर सूं गुजर रैया है । आं मां सूं घणाकरी बातां आज रै भारतीय जण-जीवण रो सांच नईं होय नै पच्छिम री कूड़ी नकल है । राजस्थानी उपन्यास नै आ जूठण खावणै री कोई जरूरत को है नी । जे राजस्थानी उपन्यासकारां नै आपरो रचनावां नै राजस्थानी रै जीवन–जथारथ रो दरपण बणावणो है तो वां नै ईं धरती रै पूतां री आंख्यां सूं आंख्यां मिलाय नै देखणो

पड़सी । राजस्थान रो असली रूप वीं रै लाखां गांवां अर ढाण्यां में ईज देख्यो जा सकै है, जठै करसो आपरै जीवण रो जुद्ध लड़ रैयो है । ओ जुद्ध खाली ऊपरी ई नईं है, इणरा केई आसापासा है । समाज री केई परतां है अर मानखै रै अस्तित्व रो ओ संग्राम समाज री परतां दर परतां व्यापैड़ो है । राजस्थानी उपन्यासकारां नै ऊंनी मानतावां अर कूड़ी मरजादां नै भांग'र जीवण रै मुगत-रूप नै आपरी बांथ्यां मांय भरणै खातर बांथ्यां फैलाएड़ै मानखै रा सपनां अर संघर्षां रो ईमान को जीवो-जागतो चितराम पेश करणो है कै वां री गाथा राजस्थान री जीवण-गाथा होतां-थकां सारै मानखै री जीवण-गाथा रो ईज एक भाग बण जावै ।

राजस्थानी उपन्यास खाली राजस्थानी भाषा में लिखीजेड़ा ई नईं होणा चाहीजे । जद ताणी राजस्थानी उपन्यासां में राजस्थान रै काळजै री धड़कण नईं सुणीजैली; धोराळी धरती री गन्ध, मतीरां रो मीठो सुवाद, निंबोळ्यां री सूं सूं, नीम अर सिरस री सौरम अर रिमझिम करती बिरखा रै सरगम रो वासो नईं हुवैलो, अर सब सूं आगै बढर राजस्थान रै तप-त्याग अर आपरी आण बाण पर मर मिटणै री बलिदानी भावना रो घोष नईं गूंजैलो, राजस्थानी उपन्यास राजस्थान रै हियै रा हार नईं बणैला ।

—बी ७, मानवीय मार्ग
'सी' स्कीम, जयपुर
(राजस्थान)



राजस्थानी कहाणी

श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाली

'एक चिड़ो हो । एक चिड़ी ही ।'

रोवता–विसूरता टाबरां रो मन विलमावण वास्तै, कै भोळां नैं भरमावण वास्तै बालपणां सूं ई, कहाणी कैवणी सरू करां अर मरां जितरैं ई कहाणी में मन रमतो रेवै । मनोविग्यानी इण बात नैं मंजूर करैं कै कहाणी म्हांनै आवण वाळो जीवण जीवण–सारू अर जीवण री कड़वास सूं जूझण सारू पैला सूं ई त्यार करै अर इण वास्तै जीवण नै सहज वणावण-सारू, अहम् जगायर जीवण नै सफल बणावण-सारू मिनखादेही नैं कहाणी री सै सूं वत्ती दरकार है ।

ससार रै सगळै कथा-साहित्य सांमी झांकां, जद लागै, जाणो मिनख मात्र रो सगळो ग्यान-विग्यान, चोखो विष्ठो, भूंडो-भलो, रूढ़ै रूप सूं सम्पूरण आस-निरास रै सागै कथा–नदी में वह रैयो है अर समूचै मिनख समाज सूं एक इसी संवेदना सूं जुड़ रैयो है, कै लागै जे ऐ कहाणियां नीं होवती तो मिनख इतरो गहरो कोनी होवतो, जितरो आज है ।

कहाणी किणीं ई देस-काल, जात-कुजात, रूप–रंग कै ऊंच-नीच सूं को बंधो नीं । आ फकत् मिनख रै आदम सुभाव नै निरख-परख अर कैवै । इण वास्तै, भळै किणी ई देस री कहाणी होवो, जगै अर मिनखां रै नामां नै बदळ देवां, तो वा म्हारै पोता–रै (खुद रै) देस री कहाणी बण जावै । इण बांत नै मैं कीं जोर देय र कैवणी चाऊं, कै कहाणी नै देस, काळ अथवा भासा रै टुकड़ां में बांटणी इसी'ज अणूंताई है ज्यूं कै धरती नै, कै ग्यान नै, कै विग्यान नै किणीं देस रै टुकड़ां में बांटणो अणहूंतो है । पण आ अणूंताई रुकै कोनी ।

म्है कैयो कै कहाणी नै काळ रै टुकड़ां में बांटीजै कोनी । अठै म्हारै कैवण री फकत इतरो ईज अरथ है कै ग्यान कै विग्यान रै बधतां, हवा रै वदळतां, मन रै

ठीमर होवतां फकत म्हारै कहणै रो ढंग बदळै है, भासा री गत बदळै है, सबदां री बाजीगरी वधै है, मूळ सत्त तो है, जठै रो जठै थर-थापन है। कहाणी री असल माटी तो वो मूळ सत्य है। नवो करीजण नै फकत् इतरो है कै सचा बदळग्या है। अठै मैं जिणनै 'मूळ सत्य' कैवूं हूं, वो जोगियां रो कै दारसनिकां रो कोई अरमावण वाळो तत्त्व कोनी। मनोविग्यानिकां मिनख नै लगतो चेतण रागाण रा जका पगदै कारण मानिया है, जिण कारणां में जीवण री इच्छा, लुगाई री इच्छा, भूख, किरोध, मेळो करणै री इच्छा, भलो करणै री इच्छा आदि खास तौर सूं है। ज्यूं जीवण रै लारै ऐ मूळ सत्य है, ज्यूं रा ज्यूं कहाणी रै लारै ऐ ईज मूळ सत्य है। भोळा में साफ, सीधी बात कहीजै, पण ज्यूं-ज्यूं मिनख पक्को होवै, उणरै बात करणै रो ढंग घुमावदार होवतो रैवै। ज्यूं-ज्यूं ऐ बात करणै रा ढंग बदळता रैवै, म्हांनै लागै कै कहाणी आगै बध रैई है, जद कै साची बात तो फकत इतरी है कै कहाणी रो रूप बदळतो रैवै, वस्तु को बदळै नीं। सबूत सांमी हाजर है। पंचतंत्र, कै हितोपदेस, कै किणी ई लोककथा नै लेवो, अर आज, अवार री लिखियोड़ी कहाणी री वस्तु नै लेय परखो, अठै फरक निजर आवै।

राजस्थानी कहाणी रो जलम इण भासा रै जलम रै सागै ई होयो है, पण ज्यूं ज्यूं भासा वधती रैई, कहाणी भी वधती रैई है। पण आज जै जिण चीज नै कहाणी कैवां, वा कहाणी सुतन्त्रता रै पछै राजस्थानी आन्दोलन सूं जुड़ियोड़ी है अर इण कारण इण कहाणी नै सै सूं वेसी प्रेरणा हिन्दी अर हिन्दी रै मारफत आयोड़ी दूसरी भासा री कहाणियां सूं मिळी है। हिन्दी में भी राजस्थानी कहाणियां रै 'मिट गयेस' में प्रेमचन्द री कहाणियां सै सूं वत्तो रंग नांखियो। इण रूप में नृसिंह राज-पुरोहित री कहाणी 'पुन्न रो काम' (१९५३) कदास मैं सूं पैलां छपी दीसै। इण कहाणी सूं पैलां ई कहाणियां निकळी होसी, पण विसै-वस्तु, चरित्र, बातां आदि कहाणी रै गुण-धरम नै पूरै रूप सूं निभावती कहाणी आईज लागै। 'पुन्न रो काम' एक इसी कहाणी है, जिणमें मौसर करणियै करसै, व्याज रो जाळ गूंथणियै वांणियै अर करसै सूं मजूर वणा'र गांव री खुली हवा सूं सै'र रै सांकड़-भीड़ में पीलीज विद्रोह करतै मिनख री मजबूरियां री झलकियां राजस्थानी लोक जीवन रै सागैई रंग साथै सांमी आई है। नृसिंह जी पोतैई करसा है, गांव में रैवणिया अर गांव री जिन्दगी सूं पूरा वाकफ है। इण वास्तै गांव रै आम आदमी री पसनो गंध, माटी री सागैई गन्ध वां री कहाणियां में पूरी मधुरता सूं वसै। इणीज दिनां रै लगोलग लिखीजियोड़ी मुरलीधर जी व्यास री कहाणियां, जकी पछै 'बरसगांठ' (१९५६) नांम सूं नीकळी, पर ई प्रेमचन्द रो सीधो प्रभाव है। 'बरसगांठ' री कहाणियां विसै, भाव, चरित, कथण, री दीठ सूं प्रेमचन्द सूं इतरी प्रभावित लागै कै उण'री नकल होवण रो वैम होवै।

असल में आज रै राजस्थानी साहित्य रै कैंवणो चइजे के राजस्थानी गद्य रै विकास री असली कहाणी राजस्थानी मासिक 'मरुवाणी' (१६६०) रै जलम सूं मानीजणी चइजे। 'मरुवाणी' रै समर्पित सम्पादक रावत सारस्वत री प्रेरणा, थपकी अर आग्रह सूं राजस्थानी रा अलेखां लेखक खड़ा होया। 'मरुवाणी' में नवैं लेखकां रै निर्माण री अनोखी खमता ही। इणमें एकणकानी हिन्दी रै छाप री कहाणियां छपण ढूकी तो दूजी कानी जूनी बातां राजस्थानी री आपरी पिछाण लै'र परकासित होवण लागी। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में रावत सारस्वत री विसी ईज मान अर गारबैसंती सेवा मानीजणी चइजै, जिसी हिन्दी साहित्य रै इतिहास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी री है।

आज री राजस्थानी रा ७५ टका लेखक 'मरुवाणी' रै मारफत लिखणो सरू कियो है। आ घणी अजोगी बात है कै आपा-धापी रै इण जुग में इण बात री साची परख सूं सै ई किन्नी काट रैया है। राजस्थानी कहाणी में घणी जस पावणिया कहाणीकार—राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, नृसिंह राजपुरोहित, किशोर कल्पनाकान्त, मणि मधुकर, वैजनाथ पंवार, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी अर इसाई घणां सारा लेखक मरुवाणी रै मारफ़त ई राजस्थानी में लिखणो सरू कियो।

मरुवाणी रै जळम रै कीं बरस केड़ै ई 'ओळमो' निकळणो सरू होयो। 'ओळमो' रै लारै राजस्थानी भासा री सेवा तांणी किशोर कल्पनाकान्त री जूंझारू लगन ही। राजस्थानी कहाणी रै विगास में ओळमों री भूमिका भी सरावण-जोग है।

'मरुवाणी' अर 'ओळमो' रै जलम रै सागै ई राजस्थान रै निरै ई हफ्तै-सर निकळणियै छापां में भी राजस्थानी री कहाणियां निकळणी सरू हुई। इण भांत राजस्थानी कहाणी रो सिलसिलैवार बधेपो सरू हुयो। इण अखबारां में निकळियोड़ी कहाणियां निरखां तो वस्तु री दीठ सूं ऐ कहाणियां सीधी-सीधी दो दिसावां में चालती दीसै। वै कथाकार, जिका गांवां में रैवै है, अर गांवां रै संस्कारां माथै रूढ़ है, बडेरां रै मूंडां सूं सुणियोड़ी लोककथावां अर बातां मांड'र आपरी जाण राजस्थानी कथा भारती रो भण्डार भर रैया है। इण कथाकारां में राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा नृसिंह राजपुरोहित, नानूराम संस्कर्ता, दामोदरप्रसाद शर्मा, डाक्टर मनोहर शर्मा आदि मुख्य हैं। आज री समस्यावां में अर आज रै सन्दर्भां में जूनै इतिहास री ऐ सोनैरी बातां कीं ई खास साख को राखै नीं, पण राजस्थानी कहाणी नै लोक-मुहावरै री ओढी-पैरी भासा अर सबदां रै गहणां-गाभां रो फूटरो सिणगार इण लेखकां रै पाण ईज मिळियो है, इणमें फेर कोनी।

दूजी भांत रा वै लेखक है, जिका सहरां में रैवता हा अर सहरां रा संस्कार सुमार जिणां रै माथै हावी हा। इणां री कहाणियां में वस्तु री दीठ सूं आज रा संदर्भ अर समस्यावां है, पण राजस्थानी री माटी री असली गन्ध-सोनी नासा धां कनै कोनी। धां री कहाणियां री समस्यावां पण राजस्थान रै निनाणू टका जनता री समस्या कोनी। ऐ सन्दर्भ ई असली कोनी, ओढियोड़ा अर उधार लियोड़ा है। डा० नारायणदत्त श्रीमाळी, पारस अरोड़ा, हरमन चोहान, मूलचन्द प्राणेश, सांवर दइया, करणीदान बारहठ, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' आदि री गिणती इण दूजी भांत रा लेखकां में आवै। भली ई कैवो, इण दोनूं ई धारावां रै कथाकारां राजस्थानी कहाणी-साम सांतरो मारग बणायो अर आज री राजस्थानी कहाणी जठै है, वा पोंच सावण में धां रा गुण को भूलीजै नीं।

आगै जाय'र इण दोनुं ई भांत रै कथा-लेखकां मांय सूं ईज राजस्थानी रै सिद्ध कथा-लेखकां जळम लियो। इण सिद्धि लग पूगण सांई राजस्थानी कहाणी रो रूप विधान ई खासो बदळियो। हिन्दी अर विदेसी कहाणी रो सीधो असर राजस्थानी रै रूप पर पड़ियो। रूप रै सागै वस्तु अर विधान रै मांयं ई की फरक पड़ियो। इण कारण सूं राजस्थानी रै कहाणीकार उण बातां नै कैवण री हिम्मत करी, जिकी लोक-कथावां रै घेरै में बन्द होयर स्यात २०-३० बरसां तक ई को कैवती नीं। आज री कहाणी रो लेखक गठीलै घटनाक्रम, असरदार हालत अर सरल-सीधै चरित्र रो कोई खास आग्रह को राखै नीं। जीवण री कोई एक फटकारै सानती झांकी, सुभाव, चरित्र, मन, कै चाणचक पळपळाट करतो कोई छिण आज री कहाणी-साम बणो। आ बात कैयां विनां ई कोरी सानियां सूं समझावणी आज री कहाणी री मैं सूं इधकी खासियत है। इण लिहाज सूं म्हारै मतै १९६५ रै पछै ईज आज री कहाणी रो सिरजणहार मानणो चइजै, कारण कै १९६५ रै पछै रो राजस्थानी कहाणीकार ईज आज री हकीकतां अर हालतां रो चस्मदीद गवाह बणियो है। इण पछै ईज उणरो पीड़ाळो मन समाज री अदालत में हलफनामो दैय'र गवाही देवण-साम ऊभो रैवण री हिम्मत राखै। १९६५ रै पछै री राजस्थानी कहाणी जिन्दगी नै सीधो सपाट अर बिना लिहाज देखै अर लागवायरी बात कैवै। आज दस बरसां रै दरम्यांन राजस्थानी कहाणी आपरी असीं पिछांणी है अर आज उण ठिकाणै पौंचगी है, जठै भारत री आपरी दूजी प्रान्तीय भासावां री कहाणी ऊभी है।

आज रो कहाणीकार जिण दो बातां सूं सै सूं बेसी प्रभावित होवो है, उणमें पैली बात है साम्यवादी जीवन-दरसण अर दूजी बात फ्रायड रै काम-वासना रै तत्वां रो

मनोविश्लेषण । ऐ दोनूं ई बातां समाज री परम्परा नैं तोड़ण नैं एक बीजी सूं सै सूं नेड़ी है तो आदमी नैं, आदमी रैं वैवार-पिछाणण में एक बीजी सूं वितरीज आघी। साम्यवादी जीवण दरसण रैं कारण राजसत्ता अर धनपतियां रो खुलो विरोध, पोंगापंथ अर पण्डतां री मसखरियां उडावणी, उण सगळै ई मतां अर कल्पनावां रो विरोध करणो जिणसूं भरमीज'र मिनख वेट-वेगार करै, खरी कमाई रा टक्का ठग-विद्या करणियां नैं लूटण देवै, आज रैं कहाणीकार रो पै'लो फरज गिणीजै। ईस्वर, धरम, अन्ध विस्वास अर ईणां सूं जुडियोड़ा पण्डित, जोतख, जात पांत, भूत-प्रेत, वाबा झाड़ागर जिसै भोळी जनता नैं भरमार लूटणियै मिनखां रा साचा लक्खण उघाड़णा आज रो धरम कहाणीकार आपरो मानै । उणरैं सिवाय वासना रैं वादीलै बळ सूं राखसी कामुकता चितराम, नैं धन अर भोग रैं बीच टुकड़ा-टुकड़ा वैती थकी मरजादावां रा टुकड़ा खण्डीजतै जीवण रा चितराम नैं लोप होवतै आदरसां रो नमूनो ई आज री कहाणी में बोळास सूं दीसै । कळवळतै जीवण नैं पूरै कड़वास सूं दरसावणो लुगाई रैं अंगां सूं भींटीजतै सगपणां नै खुलर उघाडणा अर 'संभोग' रैं असवाड़ै-पसवाड़ै टूटतै परिवार अर घायल मनां रा बखिया उधेड़णो ई आज रैं कहाणीकार नैं सुहावै। इण भांत आज रो कथाकार बो'ळी सवळाई सूं लिख रैयो है ।

जूनो अर नूंवी दोनूं ई भांतां रो दरेक लेखक कमो-वेस इण दोनूं वातां सूं प्रभावित लागै अर कोरै सिद्धान्त सूं ई नीं, वैवार में भी असवाड़ै-पसवाड़ै रो लोक आंख्यां खोल'र देखण में विस्वास करै। इण वात री मिसालां मौजूद है। आ वात न्यारी है कै मुरलीधरजी व्यास रो नवो कहाणी संग्रह उजास में को आयो नीं, पण वांरी बरसगांठ रैं पछै लिखीजियोड़ी कहाणियां रा पात्र नक्की ई, जूनै आदरसां री जकड़ सूं पड़ भागा है, अर खरोखरी कैवां तो अवै आं रा पात्र आं रैं आपरै गळी-गवाड़ में रैवणिया है, ज्यां रो दुख-दरद आं पोतै ई जोयो-भोगवियो है। ऊमर री आंट अर वामणी संस्कारां रैं चस्मै सूं देखणवाळी दार्सनिकता रो पुट होवतां-थकां भी इणा रा पात्र जीवती संवेदना री धरती माथै वसै। लारलै दिनां मरुवाणी में छपी इण री कहाणी 'कोट' खासी सबळी रचना है ।

नृसिंह राजपुरोहित ठेठूई प्रगति रा कथाकार है। आं रैं कहाणी-संग्रहां मैं लोककथा पर खोळ चढायोड़ी खासी भली कहाणियां है, तो ई 'पुन्न रो काम' रैं पछै 'रातवासो' (१९६२) संग्रह में छपियोड़ी आं री कहाणी 'ऊतर भीखा म्हारी वारी' अर 'अमर चूनड़ी' (१९६९) में प्रकासित 'उडीक' अर 'भारत भाग्य विधाता' राजस्थानी कथा साहित्य में बडी बात (उपलब्धि) गिणीजणी चइजै । इण कहाणियां में समाज

रै हालातां अर हकीकतां रा खरोखर चितराम मंडाणा है। इसा चितराम आज री कहाणी-कळा रा असल गुण मानीजै। जुगोजुग सूं भुगततै अन्याय, बेइज्जती, प्रण-विसवास, लूट अर धोखे सूं भिड़ती जूझती जनता नृसिंहजी री कथावां रै पात्रां रै मारफत बोली है। प्रगतिवादी जीवण-दरसण री ऐ कहाणियां दुनिया रै किणी ई भासा री चोखी कहाणियां रै सैजोड़ राखी जा सकै। आ बात न्यारी है कै आरम्भ सात-आठ बरसां सूं नृसिंहजी इण कहाणियां सूं आगै बधणो तो आगो रैयो, उल्टा लारै खिसक रैया है।

राजस्थानी कहाणी साहित्य में डाक्टर मनोहर शर्मा रो नाम आपरी निरवाळी जगै राखै। साहित्य री सगळी विधावां में संख्या अर गमता दोनूं ई दीठां सूं मनोहरजी आगै है। सेखावाटी अंचळ रै ठौड़-ठौड़ रै भाखा रहण-सहण, रीत-बैवार, बोल-चाल अर घर-गिरस्ती रै इकरंगै चितरामां सूं मंडी इणां री कहाणियां पाठकां नै सहज प्रभावित करै। 'कन्यादान' (१९७१) री कहाणियां तक मनोहरजी आदर्स, त्याग अर नीति री बातां लिखता हा, जकी मनरंज भलां पण आज री कहाणी सूं खासी अळगी लागै, पण 'करड़ी आंच' (१९७३) नूं नाखै कै जुग रै सागै बैवणियां डाक्टर शर्मा जूनां मोलां नै सहेज'र राखण री मजबूरी सूं छूट'र जिन्दगी रै ठोस जथारथ नै सीधै सहज अर सांचै हाड-मांस रै मिनख रै सामाजिक हालातां नै आंकण-परखण लाग्या है।

साचांणी आ हरख री बात है कै राजस्थानी री आज री कहाणी-लेखक जूनै आदरसां रै बावत घणो मोह को राखै नीं। अबै तो नयोनयो जीवणो चावै, हकीकत कैवणी चावै। परम्परावां सूं सीधो विरोध करण री राजस्थानी रै कथाकारां में सामरथ आयगो है, जको इण सदी रै सातवें दसक रै पैलां राजस्थानी रै कथाकार में को दीसतो ही नीं। पण सातवें दसक रै पछै रो कहाणीकार आंदगी रै मरियोड़ै टाबर ज्यूं परम्परावां नै छाती सूं चेपर को राख सकै नीं। अबै तो परवान कै परपूठ, खुल नै कै छानै, एक खुलै विद्रोह रो सनेसो देणो चावै। इण मुजलक श्रीलाल नथमल जोसी री कहाणी 'पागोथिया' एक दीयो है, जिण रै चानणै में राजस्थानी कहाणी रै 'वस्तु' अर 'सिल्प' रो बदळीजतो रूप-रूप देख सकां। इण सबळी अर खिमता वाळी कहाणी रा पात्र—कळैगारो छोकरो, उण रो जवान भाओजी, उण दोवां रो एकोएक वाक्य, एकोएक छिन मिनख रै रिस्तां अर बैवार नै निभावण में उणरै अंतर्विरोधां नै गहरी ऊंडाई सूं ऊजळा करै।

रामेश्वरदयाल श्रीमाली री कहाणियां समाज रै अर नीति रै मूल्यां री झड़प सूं सांकड़ भीड़ै पड़्यै मिनख रै बिखै री कहाणियां है। अभाव अर अन्याय सूं

दळीजियोड़-दाझ्योड़ै मिनख री जूझण-भिड़ण री भावनावां वां री कहाणियां में साफ-साफ दीसै । 'सिल्प' री खासियत सूं आं रा भोळा-भला दीसणिया पात्र समाज रै विडरूप नै नागौ कर सांमी राखै । 'जसोदा', 'सळवटां', 'बडो बाबू', 'कांचळी', 'भड्डरा', 'लाल बत्ती' अर 'ओ घर म्हारो कोनी' कहाणियां लगोलग इधकी ममताहीणी होयर सगळी लोकां री सगळी ई कुव्यवस्थावां नै तोड़ण वास्तै एक तीखै हथियार रो, एक बगावत रो काम आदरियो है । समाज रै जागरण अर उण जागरण नै जथारथ री दीठ सूं देखणवाळी ऐ रचनावां गांव अर समाज री सजड़ जड़योड़ी कंचन-छिब नै तोड़'र पाठकां नै एक झटकै सूं सपनलोक सूं धरतियै पटकै । बेबसी सूं पग-पग माथै पोता नै छळणियै मिनख री टीस आखरां में रीस सूं भळै उजागर मती करौ, पाठकां रै मन में तो रगां नै चीरणवाळी टीस उपजावै ।

तो ई हाल निरा ई इसा रचनाकार है, जिण नै प्रेमचन्दी प्रभाव सूं मुक्ति को मिळी नी । अन्नाराम 'सुदामा' रै कहाणी संग्रह 'आंधै नै आंख्यां' (१९७१) इणरी सखरी मिसाल है । सुदामाजी भासा रा कारीगर है पण उणां रै कवि री उपमावां रै रुझान कहाणी नै ठीक गति नीं पकडण दीनी । वां री कहाणियां में पात्रां रो आदर्स, म्होटो कलेवर अर आखरां रो असंजम सानी सूं समझावण वाळी बात री ई व्याख्या सी करतो दीसै । ओ ई हाल मूलचन्द 'प्राणेश' रै कहाणी संग्रह 'ऊकळता आंतरा, सीळा सांस' रो है । मूळचन्दजी रा पात्र नीचै री हीणी जिन्दगी सूं आया है, पण उणां री कहाणियां रै पात्रां री सांसां हकीकत में सीळी हो'र रैगी है । नीचलै वरग रै आंतरां री साची उकाळ साची दाझ कठै दीसी ई कोनी ।

सामाजिक कहाणियां रै असवाड़ै-पसवाड़ै रूप अर कारीगरी री निजर सूं कविता जिसी कूंळी भासा अर कूंळै भाव-भरी सैली री कहाणियां, जिण री चावना सामाजिक हकीकतां नै उजाकरणो नीं होय'र भाव-सत्य नै बींद बणाय दांतै आंगळी देरावै जिसो अचम्भो उपणाय पाठकां रो मन विलमावणो है, पण राजस्थानी में लिखीज रैयी है । घटना रै वादेयै नै कूंळी कल्पना रै कवि-वांणी जिसै सबदां सूं गूंथ दार्सनिक ओट लियां इसी कहाणिया रो आज रै सामाजिक सन्दर्भां में भळै कोई मोल नीं हुवौ, पण तणाव-भरी आज री जिन्दगी नै एक अमोलक आणन्द तो देवै ईज है । किसोर कल्पनाकान्त री कहाणी 'गीतां रो वावळियो' राजस्थानी कहाणी नै इण दीठ सूं एक नवो मोड़ दीनो है । संजीदा विवरणां सूं भरियोड़ी चितबंगो करणवाळी आ प्रेम कथा एक लम्बी सुघड़ कविता जिसी लागै, जिण में हैताळ आंख्यां में गुमान रो तीखो सो काजळियो घालियां भोळी-मुधरी मुळकती नारी रै 'गा, गा, गा' रै तेड़ै माथै कथा रो

नायक कवि चमगूंगो होयोड़ो उळझतो, भटकतो दौड़तो फिजर आवै। संकेताळी झीणी कथणी, व्यंजना पूरी कथानक, ठेठलग बण्यो रैवण वाळो अचम्भो अर जिग्यासा सैंती इण कहाणी कल्पना अर ऊमर रै न्यारै-न्यारै पावड़ियां में नारी अर गीत नै लोक-पीड़ रै रूप में मांड'र राजस्थानी कहाणी नै व्यंजना रै सम्पूरण रूप रा गानी अतृप्त कामवासना री मनोविग्यानी भूमिका दीनी है।

चेतन मन पर हावी अचेतन मन री गुपत क्रिया नै गहराई सूं निझाण मिनख रै अन्तस रै सत्य नै पकड़ण री गहरी सूझ ई आज री राजस्थानी कहाणी में दीसै। डा० ब्रजमोहन जावळिया री कहाणी 'आळ-जंजाळ' रै मारफत इण प्रकास रै सत्य नै उजागर करता इतिहास रै आदर्श पात्रां रा मन भगा अर मानवी आगू'र सांमै आया है।

जठै मार्क्स रै 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' रै दरसण समाज अर पात्रां रै काम अर चरित नै नगदनाणै रै आधार माथै जोखणो सरू कियो, बठै ई फ्रायड अर जुंग रै मनोविग्यान ऐं कामवासना नै जीवण री धुरी मानी अर इण सूं प्रभावित कथाकारां मर्द-लुगायां रै आपसी गोपन रिस्तां नै लेर कहाणियां लिखणो सरू करी। इण सूं नैतिक जोख ताक में रातीजगा अर चमत्कार प्रधानता री भीड़ सूं कहाणी कठैई-कठैई सूगली तक होयगी। आज स्त्री-पुरसां रै वासना मूळ रिस्तां नै लेर कहाणी एक इसी लीक माथै गुड़गी है, जिण नूं मार्ग पै कहाणी रो विकास रुकग्यो होवै। इण भांत स्त्री-पुरस सगपणां रा कथानक इतरा बासी होयग्या है कै पाठकां री रुचि वणी रैवगी कठण होयगी। लक्ष्मीनारायण रंगा, मामन शर्मा, विनोद सोमानी 'हंस', सीताराम 'महर्षि', हरमन चौहान अर उमा पणी ई लेखकां री कहाणियां रा थोथी करुणा अर निपगी भावुकता भर्‍यै कथानकां रा पीला पनाम-माल जग्ग सारै पड़िया है।. आं कथा-रूढियां पर, जिण में सेठां रै हाथ री मार खाय'र भरनिया छोरा, जोरामांदी (बलात्कार) होयां पछै आपघात करणवाळी लुगायां, नाजर धनी री सतवन्ती रूपाळियां है, आज रै पाठक रो मन को विलमै नीं।

असल में फकत् बौद्धिक विलास रै कारण लिखीजियोड़ी कहाणियां, जठै लेखक रो पोता रो खरो अनुभव अर मार खाय'र फुफकारतो मन नीं बोलतो हुवै, वै कहाणियां आपरो रंग को जमा सकै नीं, ज्यूं नन्द भारद्वाज री कहाणी 'अकाल मौत' इण कहाणी रो मूळ विसै गांव री गरीबी अर अग्यान सूं दबियोड़ी लुगाई रो वेदराज रै चपरासी सूं इलाज लेयर मरण री हकीकत है। पण कथाकार इण दरद रो समो को बांध सकै नीं। चौफेरै रै चितरामां नै ऊंचाई सूं उजागर नीं कर सकण रै कारण,

सांच कैवां तो मौलिक दीठ अर खरै अणभव रै अभाव रै कारण आ कहाणी आरथिक विसंगति नै को उभार सकै नीं अर फकत् "भाभी री मौत होयगी अर म्हनै वेरो ई को पड़ियोनीं" कहाणी रो मूळ दरद बण'र रै जावै, जकी संवेदनात्मक चुभन री कमी रै कारण पाठकां पर कोई असर को छोड़ सकै नीं। दूजै कानी खरै अणभव सूं रची-पची होवण रै कारण सांवर दइया री साधारण सी कहाणी 'हालत' (असवाड़ै-पसवाड़ै : १९७५) पाठकां नै घणो साधारण ढंग सूं प्रभावित करै।

कैवण रो मतलब ओ कोनीं कै कथाकार नै कोई पंडत कै मोलवी होवणो चईजै जको पाप नै पाप कै'र छूट जावै पण निस्चैई उण रो इतरो फरज तो होवै, कै जीवण में जिको बारै-बारै दुनिया रो नाटकी रूप दीसै, उण नै भेद'र पात्रां रै मरम तक पूग, उण लूणिया नै मथ'र काढै, जिको नीं दीसतां थकां ई सगळी जगै जगमगाट करै। उण री फरज जीवण में जको कीं है, उण नै अणभव रै राख'र जीवण री आड़ियां नै खूबसूरती सूं राखणो होवै। जिण कथाकारां में जिन्दगी रो आ दीठ कोनी, उणा रा पात्र जड़भरत ई नीं, मुरदा है। कहाणी रो उद्देस फकत् मन विलमावणो को होवै नीं। घुटण, पीड़ा, प्रभाव, निरासा, अत्याचार, अनाचार, जिको कीं ई है, उण सूं धाप'र आपघात करणै रो सनेसो देवणो कलाकार रो धरम कोनी। कला मिनख अर समाज री असली समस्यावां री ओळखाण देवण वास्तै होवै। जीवण रो सनेसो देवणो, अर जीवण-सारू लड़णो सिखावणो कलाकार रो धरम होवै। जीवण नै बण्यो राखण सारू, इण नै चोखो सुधरो घड़ण-सारू जिकी कला प्रेरणा नीं देवै, समाज री कुव्यवस्थावां नै तोड़ण सारू जिकी कला एक तीखो हथियार नीं बणै, वा कला, कला कोनी। वा कहाणी, कहाणी कोनी। आज रै राजस्थानी कहाणीकार नै खासो खरो अर ममताहीण होय'र जीवण री रूमानियत अर कोफा आदर्स रागां नै तोड़ण री हिम्मत री दरकार है, आपरी फ़रज पिछाणण री दरकार है।

आज राजस्थानी कहाणी आपरै ढाळै वै'वै है अर मायड़ भासा रा सैंकड़ों सपूत राजस्थानी कहाणी रै रिध-सिध नै भरपूर बणावण वास्तै कलम चलावै है। आ गारबा री वात है अर इण वात रा सुकन ई है कै राजस्थानी री कहाणी भारत अर संसार री दूजी भासावां री कहाणियां रै मुकाबलै लारै को रैवै नी।

—डाकघर सायला
(जालोर)



राजस्थानी रेखाचित्र अर संस्मरण

श्रीयुत श्रीलाल नथमलजी जोशी

साहित्य में रेखाचित्रां रो आपरो न्यारो-निरवाळो स्थान है। इण रो उद्देश्य उपन्यास अथवा का'णी ज्यूं घणै पात्रां रो निरमाण नहीं हुयर फगत एक ई पात्र रो खाको खड़ो करणो हुवै। रेखाकार रो ध्यान उपन्यासकार अथवा का'णीकार ज्यूं बंट्योड़ो नहीं, एक ई पात्र माथै केन्द्रित रैवै, इण कारण उण री विशेषतावां सूं जिको चित्राम उभर नै सामणै आवै, वो अपणै आप में इत्तो सम्पूरण हुवै के पाठकां नै उण में किणी रकम री न्यूनता नजर नहीं आवै। दूजै विधावां रा पात्र घणी मेनत रै उपरान्त भी इत्ता प्रभावसाली नहीं बणै, जित्ता प्रभावसाली रेखाकार थोड़ै सा'रै सूं आपरी कृतियां नै बणा देवै।

जद रेखाकार किणी पात्र विशेष रो सांगोपांग अध्ययन कर लेवै तो उण नै कलम रै जरियै कागद माथै उतारणो चावै। इण रै मायनै गुंजाइश या सम्भावना जिसी कोई चीज नहीं रैवै। पैली जिको चित्राम रेखाकार रै हिरदै मायं उपजै, वो ई कागद माथै सामणै आवै। वठीनै उपन्यासकार या का'णीकार आगै कई पात्र तो स्पष्ट हुवै अर बाकी रा गौण पात्र ज्यूं-ज्यूं कथा री रचना हुवै, आगै ई रचीजता अर घड़ीजता जावै। इण कारण जिका प्रमुख पात्र हुवै, वै तो कथाकार रै विशेष अध्ययन रा फळ हुवै अर असरदार हुवै, पण जिकां री रचना रचतै-रचतां करी है वै असरदार रै असर कदम काळ ई पावै।

रेखाचित्रां (अर संस्मरणां) रै जादा प्रभावकारी हुवण रो खास कारण ओ भी है कै वै साच रै जावक नेड़ा हुवै, वां में कल्पना री ठोड़ नहीं रै बरोबर हुवै। वठीनै उपन्यास अर का'णी, अनुभव माथै टिक्योड़ा हुवण रै बावजूद भी कल्पना प्रधान हुवै। इण कारण वै असर में रेखाचित्रां री बराबरी में लारै रैय जावै।

रेखाचित्रां अर संस्मरणां रो भाईचारो भी दो आंक मांगै । एक पात्र जिण रो अध्ययन रेखाकार अबार-अबार ई करचो है, अर उण नै कागद रै हवालै कर दियो, बो संस्मरण री सींव में नईं आवै, पण पैली रो अध्ययन करचोड़ो पात्र, जिण नै स्मरण रै आधार माथै कोरचो जावै, बो संस्मरण तो है ई, पण उण में जे रेखाकार पात्र रो हुलियो अर सुभाव बखाणन-सारू चतराई सूं आडी-अंवळी ओळयां रो इस्तमाल करचो है तो बो सागै-सागै रेखाचित्र भी है । हरेक संस्मरण रेखाचित्र हुवणो जरूरी कोनी अर हरेक रेखाचित्र संस्मरण हुवणो जरूरी कोनी ।

आधुनिक राजस्थानी रो गद्य-साहित्य जदपी घणै प्रचुर मात्रा में रचीज्यो पण फेर भी जित्तो लिजीज्यो है, उण हिसाब सूं रेखाचित्रां रो अनुपात दूजी कई भासावां बिच्चै राजस्थानी में निस्चय ई वेसी है, जिको इण बात रो सबूत है कै राजस्थानी साहित्यकार खाली कळपना रै घोड़ां माथै उडणो ई नईं, मिनखां अर चीजां नै निरखणो-परखणो अर आंकणो भी जाणै अर खासा जाणै ।

जूनी राजस्थानी रै सौभाग्य सूं उण नै स्व० सूर्यकरण पारीक, श्री रामसिंह तंवर तथा डा० टैसीटोरी आद जिसा समरथ समीक्षक मिल्या जिकां आपरै हाथ में उठायोड़ी पोथी रो सांगोपांग मूल्यांकन करचो पण दुरभाग सूं आधुनिक राजस्थानी-साहित्य खातर हाल कोई इसो साहित्यकार आगै कायो कोनी जिको साहित्य नै सावळ समझ नै उण री समीक्षा करै । हूं खाली रेखाचित्रां-संस्मरणां रै सन्दर्भ में ई बात कर सूं ।

राजस्थानी से रेखाचित्रां रो श्रीगणेश करण रो श्रेय श्री मुरलीधर व्यास नै है । सम्भवतः आज सूं ४० बरसां सूं भी पैली व्यासजी रेखाचित्र मान्डणा सरू कर दिया हा । हिन्दी साहित्य हाल भी इण विधा में घणो समृद्ध कोनी अर आज सूं लगभग आधी सताब्दी पैली तो हिन्दी में रेखाचित्रां रो प्रारम्भिक काळ ई हो, इण कारण व्यासजी नै कोई मारग-दरसण तो उपलब्ध हो कोनी, जिकी भी रचनावां करी, बै सगळी आपरी उकत सूं ई करी । जिकी सैली है, बा व्यासजी री आपरी सैली है । व्यासजी २९ रेखाचित्र 'जूना जींवता चितराम' नांव री पोथी में छप्या है, पण रेखा-चित्रां री सर्वप्रथम पोथी हुवण रो श्रेय 'सबड़का' नै है । सन दोनां माथै १९६० छप्योड़ो है, तो भी 'जूना जींवता चितराम' पोथी काफी लेट बारै आई ।

'जूना जींवता चितराम' में व्यासजी रै सागै श्री मोहनलाल पुरोहित रो नांव भी सह-लिखार री हैसियत सूं छप्योड़ो है । पण आ भांति आगै नईं चालणी

चाईजे । पुरोहितजी रो नांव खाली दोनूं लेखकां रै आपसी समझौतै रै कारण इण किताब में छप्योड़ो है, वास्तव में सगळा-रा-सगळा गुलतीमूं रेखाचित्र व्यासजी रा लिख्योड़ा है, यां मांय सूं पुरोहितजी रो एक ई कोनी ।

श्री भूपतिराम साकरिया व्यासजी रै इण संग्रह नैं कथा-साहित्य (का'णी) रै अन्तर्गत गिणायो है अर इणां रीं रचनावां नैं स्कैच भी गिणी है । जठै 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य' पोथी रै लिखार नैं सावधानी बरतणी चाईजती ही, पण साकरियोजी कैय सकै—हूं तो राजस्थान सूं अळगो, गुजरात में निवास कारण किणी सूचना री न्यूनता तो नगण्य मानी जा सकै, पण रेखाचित्र नैं का'णी मानणो क्षम्य नईं लागै ।

डा० नरेन्द्र भानावत 'राजस्थानी साहित्य : कुछ प्रवृत्तियां' रै पृष्ठ १२८ में लिखै--'श्री मुरलीधर व्यास ने भी कई व्यंग्यपूर्ण रेखाचित्र लिखे हैं ।'

पैली बात तो बात तो आ कै डा० भानावत व्यासजी रै संग्रह सूं परिचित लागै कोनी । दूजी बात आ कै व्यासजी रै रेखाचित्रां में व्यंग्यपूर्ण चित्राम एक ई कोनी । डा० भानावत जिसै विद्वानां सूं कीं वेसी आस करी जा सकै ।

डा० किरण नाहटा आपरी थीसिस में व्यासजी रै रेखाचित्रां बाबत लिख्यो है—"संवेदनात्मक रेखाचित्रों की दृष्टि से श्री मुरलीधर व्यास एवं श्री मोहनलाल पुरोहित का स्थान सर्वोपरि है । लेखक-द्वय अपने जीवन की लम्बी यात्रा में अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आये, जिनमें कुछ पात्रों की सरलता, विवशता एवं दयनीयता ने इनकी हृत्तन्त्री को झंकृत किया ।" (पृष्ठ ११७) "सामान्यतः समाज के उपेक्षित पात्रों की जीवनचर्या का एक हल्का सा स्कैच' खींचकर उनके प्रति पाठकों की सहानुभूति बटोरने का प्रयास तो किया है पर वे स्वयं अपने ऊंचे आसन से नीचे उतरकर उनसे गले मिलने को उत्सुक नजर नहीं आते । फलतः वहां उपेक्षितों के प्रति करुणा का भाव प्रमुख हो उठा है । महादेवी वर्मा के समान अपने पात्रों के साथ एकरस होने का भाव वहां परिलक्षित नहीं होता ।" (पृष्ठ ११८)

व्यासजी रा चित्राम वास्तव में पेसागीरां रा रेखाचित्र है, जिकां में वांरै पेसै सम्बन्धी बातां रो ई खास जिक्र है । उदाहरण खातर—भीलो घड़ा नारायणियो, हुसैनो गूजर, सुखो वारीदार, सुगनो वहीभाट, भीखोभ टियारो, रामलो भंगी, रघो खल्ला गांठणियो, सिरदार रंगारो, गनी ठंठारो, मघो फेरीवाळो, भीलियो खवास,

हरदास दहीवाळो, भोळियो डाकोत, सीतकी मालण, जेसियो तंबोळी, वींजो खाती, ऊमो दरजी आद ।

आलोचक नै आ रेखाचित्रां में आ चीज खटक सकै कै लिखार आपरै पात्रां री अन्दरूणी परचो लेवण री कोसीस करी कोनी, खाली बारो ऊपरी खाको खैंच दियो । इसेनै गूजर री जागा जे करीमो गूजर, सुगनै वहीभाट री जगा बदरी वहीभाट, भोळियै खवास री जगा जे रतियो खवास करदियो जावै तो कोई फरक पड़ै कोनी कारण गूजरां रा, वहीभाटां रा या खवासां रा, सगळां में लाधण आळा सामान्य गुण ई व्यासजी री कलम सूं सामणै आया है । जनता सूं सम्पर्क रै अलावा वांरै घरेलू जीवण बाबत जाणकारी करण री लिखार चेस्टा करी कोनी, इण कारण चित्राम घणा प्रभावकारी लखावै कोनी ।

व्यासजी रै अधिकांश चित्रां बाबत ओ आक्षेप साचो मालम पड़ै पण जठै लिखार थोड़ो गैरो जावण री कोसीस करी है, वठै रेखाचित्र री छटा सांगोड़ी खिलगी । उदाहरण खातर 'कावली नसीरूदोन' में एक हिन्दू लुगाई सूं कावली रै भाईचारै रो उल्लेख आ बतावै कै लिखार आपरै पात्रां में रस लेवै । इणी तरै 'मनजी मचकांवाळो' अर 'तेजो सोनार' में लिखार आपरै पात्रां रै घरेलू जीवण में पूग्यो है अर इण बात रो प्रमाण दियो है कै बो जठै सम्भव हुयो है, पात्रां रै नेड़ो भी पूग्यो है ।

दर असल 'जूनां जींवता चितराम' रो उद्देश्य तो ओ लागै है कै जिका मिनख, रीत-रवाज, आद एक जमानै में तो समाज माथै छायोड़ा हा, पण अबै उठग्या या उठ रैया हा, वांरै पासी अबार री अर आवण वाळी पीढ़ी रो ध्यान खैंचणो । आज घर-घर में अर गळी-गळी में पाणी रो नळ हुवण रै कारण आज रा टाबर आ कळपना भी कर सकै कोनी कै किणी जमानै में कूवा वळधां सूं जोतीजता हा अर पाणी रा घड़ा न्हांखर भी लोग आपरो पेट पाळता हा । इणी तरै आज तो भाट अपणै आपनै भाट अर डाकोत अपणै आपनै डाकोत कैवण में सरमावण लागग्या, पण वांरा वडेरा तो डंकै री चोट अपणै आपनै भाट-डाकोत कैवता अर वां धन्धां सूं आपरो पेट साचळ पाळता हा ।

बदळती वगत में ऐ पीसै आळा भी आपरा रंग बदळै—उदाहरण सारू जिका भठियारा पैली 'ठूलियां सूं धान नापर चबीणो देवता, बै अबै पईसा लेयर ताकड़ी सूं तोल'र चबीणो देवण लागग्या । इणी तरै रामलै भंगी रो छोरो जे दूजे टाबरां सूं अळगो खड़ो रैवतो, तो ई गळी रै छोरां रै फ़ालतू हाकै नै सुणर वो आपरै छोरै नै ई

फटकारतो कै कठै ई पल्लो नईं लाग जावै। आगै आवण वाळै जमानै में सायद इण माथै टावर भरोसो भी नईं करसी, इणी तरै 'पंखैवाळो' एक इसो पात्र है, जिको आज कोनी पण एक जमानो हो जद वो हकीगत में हो।

आ बात तो ठीक है कै आगलै जमानै में जेठ-मंग्यां सूं छुपाछूत घणी राखता, पण इण रो अरथ ओ कोनी कै वांरो माण नईं राखता। घर री बीनण्यां सुसरै जेठ आगै ज्यूं पगरखी खोलनै हाथ में लेवती, उणी तरै आं काम-कमीणां री भी काण राखती। आज बदळयोड़ी टैम में सुसरै-जेठ आगै पगरखां पैरयां फिरणो तो अळगो रैयो, माथा-चोटी उघाड़र वांसूं बोलणो भी सरू कर दियो। म्हारो मतळब ओ कोनी कै ओ कोई हळको काम है, पण व्यासजी रा रेखाचित्र एक तरै रो इतिहास है, जिको जूनै पेसंआळां अर रीत-भांत रो चिताई है, अर इण तरै इण रो घणकथ महत्व है।

'बानगी' में श्री भंवरलाल नाहटा री रचनावां रेखाचित्रां-संस्मरणां रै अन्तर्गत छप्योड़ी है, पण उणां में 'रावतियो नाई' अर 'लाभू बाबो' आं दो रचनावां सिवाय दूजी रचनावां इत्ती छोटी अर इत्तै साधारण ढंग सूं लिखयोड़ी है कै वै फकत 'जाणकारी' कैईज सकै। उणां में साहित्यकार री कृति जिसी कोई चीज कोनी। एक असाहित्यकार, साधारण अध्यापक भी इसी रचना कर सकै। हां, ऊपर गिणायोड़ी दोनूं रचनावां इण विधा री श्रेष्ठ रचनावां है। लिखार री आं रै बाबत पूरी जाणकारी है अर इण कारण वांरो चित्रण सांगोपांग हुयो है।

श्री नाहटाजी भी श्री मुरलीधर व्यास री लैण माथै कलम चलाई है। लारै जावतां आपरै पात्रां रो स्मरण करतां कैयो है कै वै घणा आछा हा। दूजी बात आ, कै व्यासजी रै पात्रां ज्यूं नाहटाजी रा पात्र भी दिवगत है। जीवित पात्रां नै वां आपरी कलम रै दायरै में लिया कोनी। तीजी बात आ, कै समाज रा जिका विकृत पात्र है, वै नाहटाजी री लेखणी रा विषय बण्या कोनी। आपरी रचनावां सूं अमुक-अमुक व्यक्तियां बाबत उड़ती सी जाणकारी मात्र मिलै, इण सूं आं रचनावां में रोचकता जिसी कोई चीज कोनी। घणो आछो हुवतो जे रावतियै नाई अर लाभू बावै ज्यूं नाहटाजी दूजै पात्रां रो भी अनेक भांत अध्ययन करता अर फेर आपरी लेखणी में उतारता।

श्री० न० जोशी रो रेखाचित्र-संग्रह 'सवड़का' काफी चर्चित रैयो है। 'सवड़का' री प्रस्तावना में विद्वान लिखारां लिख्यो है कै 'सवड़का' रा रेखाचित्र हिन्दी

रेखाचित्रां सूं घणा आगै है। इण माथै आलोचना करतां एक साप्ताहिक हिन्दी पत्र रै सम्पादक लिख्यो कै 'सवड़का' रा रेखाचित्र हिन्दी-रेखाचित्रां रै समंग बरावर ई कोनी। इण सम्पादक री राय विचारण जोग है।

हिन्दी में उत्कृष्ट रेखाचित्र-संस्मरणकारां में महादेवी वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि नै गिणाया जा सकै। महादेवी रै रेखाचित्रां में जिको गांभीर्य अर कवित्व है, वो 'सवड़का' में लाधै कोनी। 'सवड़का' नांव रै बावजूद इण में गांभीर्य री खोज करणो कठै तांई उचित है, आ पढार सोच सकै है।

'सवड़का' प्रधानतः हास्य रस रो संग्रह है अर 'मघजी', 'मा सा', 'इन्द्रा', 'पट्टी माथली' आद थोड़ा सा रेखाचित्र इसा है, जिका हास्यरस सूं सम्बन्ध राखै कोनी। लिखार रो थो निजो अनुभव है कै हास्यरस री जिकी भी रचनावां किणी समूह में सुंणाईजी, वांरै माथै श्रोतावां री घणी सराहना मिली।

हिन्दी लेखक राजस्थानी में पग राख्यां पैली ई 'सवड़का' री आलोचना करी ही अर लिख्यो कै 'सवड़का' रा रेखाचित्र तो किणी गुजराती किताब रा अनुवाद मात्र है। इण आक्षेप नै तो 'सवड़का' री वड़ाई समझीज सकै। गुजराती किताब रो अनुवाद इण बात रो संकेत देवै कै गुजराती रो कोई अनुवाद करणै लायक लिखार है या हो, जिणरी रचनावां 'सवड़का' नांव सूं छपाई।

अठै सवड़का-लिखार निवेदन करणो चावै कै जिका भी इकतीस रेखाचित्र इण पोथी में कोरीज्या है, बै सगळा लिखार आपरी आंख्यां सूं देख्या-परख्या है। उणां मांय सूं लगभग आधा तो हाल भी जीवै है। दो-तीन जणा तो लिखार सूं बाथेड़ो करण खातर उण रै घरै पूगग्या अर एक दो जणा रीसाणा भी हुयग्या। इण सूं पढार समझ सकै कै 'सवड़का' में अनुवाद करयोड़ी कोई रचना कोनी। हां, 'सवड़का' री एक रचना 'लिखमीनाथजी' दिल्ली रै एक हिन्दी साप्ताहिक 'चांदनी' में अनूदित हुयर छपी। 'धोबण भाभी' आद दूजी रचनावां रो बंगला में भी अनुवाद हुयोड़ो है।

रेखाचित्रां री चौथी सामनै आयोड़ी पोथी है—'अणियारा'। लिखार है—श्री शिवराज छंगाणी। छंगाणीजी रै सामनै 'जीवता जूना चितराम' अर 'सवड़का' अै दो पोथ्यां आधार-सरूप ही अर दोनां रो प्रभाव उणां री रचना माथै पड़्यो है। व्यासजी ज्यूं छंगाणीजी भी लारलै पैरै में आपरै पात्रां नै याद करनै निसास न्हांखी है, पण वां इण रो पाळण अक्षरशः नईं कर्‌यो है। इण रै सिवाय व्यासजी इक्को-दुक्को छोडर प्रायः सगळा पात्र आदर्शोन्मुख बणाया है। इण बात रो भी छंगाणीजी पाळण कर्‌यो

कोनी। सबड़का–लिखार ज्यूं छंगाणीजी भी अनेक विकृत पात्रां रा उणियारा देखाळ्या है, अर इण कारण किताब में रोचकता आई है। हां, लिखार री ऊमर पोथी लिखती वगत घणी नईं ही (हाल भी घणी कोनी), इण कारण कोई जूना चित्राम आंकती वगत इयां मालूम पड़ै कै अठै व्यक्तिगत अनुभव री बजाय सुणी-सुणाई सामग्री सूं काम लियो है अर इण कारण रचना री स्वाभाविकता में फरक पड़ै।

'उणियारा' रा कई पात्र विकृत है अर लिखार उणां री विकृति मेटणी चावै, पण इण प्रयास में वो लिखार री बजाय उपदेशक या सुधारक हुवै, ज्यूं लागण लाग जावै।

रेखाचित्र-संस्मरण साहित्य रै अभाव नै दूर करण सारू छंगाणीजी रो प्रयास घणो सरावण जोग है।

सन १९७३ में राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर डा० ब्रजनारायण पुरोहित रै संस्मरणात्मक रेखाचित्रां रो संग्रह–अटारवां नांव सूं प्रकासित करयो, जिण में इक्कीस रचनावां है–गुसांई जी, काकूजी, दूनजी, पहलवान साहब, मारजा, सुगनजी, हांकम साहब, सेठाणी, जीमाकियो, मुनीमजी, फुटड़ी कनकं, बाबू साहब, घाड़ेती पिंडतजी, वकील साहब, सनजो, मास्टरजी, योगानन्दजी सेठ, न्यायमूर्ति अर ठाकर साहब।

डा० पुरोहित रै संस्मरणां बाबत लोगां री जबानी म्हारै कानां में आछी प्रतिक्रिया आई कोनी, पण 'अटारवां' रो अध्ययन इण बात नै स्पष्ट करै कै लिखार नै आपरै पात्रां री आछी तरै जाणकारी है अर इण कारण रचनावां रोचक अर प्रभावकारी है।

राजस्थानी रा दूजा मोकळा लिखारा भी रेखाचित्रां अर संस्मरणां सारू कलम चलाई है, पण वै पोथी रूप में उपलब्ध कोनी, इण कारण वां री जाणकारी भी प्रायः कम लोगां नै है।

आज सूं घणा बरस पैली दाऊदयाल जोशी रो रेखाचित्र 'काणै कमायो बीरा' मरुवाणी' (मासिक) में छप्यो हो। इण में बीकानेर रै एक नसैबाज रो सांगोपांग चित्राम आंक्योड़ो है। अर बीकानेर ई क्यूं, नसैबाजां रो परवार सगळी जागा सरीसो हुवणो चाईजै, इण कारण इण नै भंगेड़ी रो प्रतिनिधि रेखाचित्र कैयो जा सकै है।

डा० मनोहर शर्मा भी रेखाचित्र-संस्मरण री विधा में जदपी कई रचनावां लिखी है, फेर भी पुस्तकाकार में उपलब्ध नईं हुवण रै कारण आपरी रचनावां घणी

चर्चित हुई कोनी। वैजो छैल (मरुवाणी, जुलाई १९६७), पनजी भगत (मधुमती, सितम्बर-अक्टूबर '६७) अर वडा माजी (संघ शक्ति १०/४) आपरी इसी रचनावा है जिकी इण विधा में आपरो न्यारो स्थान राखै।

डा० नेमनारायण जोशी रो नांव भी इण क्षेत्र में काफी पुराणो है, अर सम्भवतः 'कूदण बाबो' आपरो पैलो रेखाचित्र है। जदपी 'कुत्तां रो राजा' 'कूदण बाबो' सूं पैली री रचना है, पण सिर्फ आकाशवाणी माथै प्रसार पावण कारण आ रचना 'कूदण बाबो' जित्तो स्थायित्व नईं पा सकी। 'सुरजो नायक' अर 'गोगाजी रा घोड़ा' रचनावां क्रम सूं मरुवाणी (बरस १२, अक ७) अर हरावळ (अक्टूबर-नवम्बर १९७३) में प्रकास पायो। डा० जोशी री रचनावां आपरै विषय रै गम्भीर अध्ययन माथै आधारित है अर इण कारण उणां रो महत्व स्थायी है।

रेखाचित्रकारां में श्री ओंकार पारीक रो नांव भी गिणावण जोग है। आपरी कई रचनावां 'हरावळ' अर 'मरुवाणी' में छपी है, पण रतनगढ़ सूं प्रकासित 'राष्ट्रपूजा' में छप्योड़ो संस्मरण 'हेमी' विशेष प्रभावकारी है।

श्री मोहनलाल पुरोहित रै नांव री चरचा पैली आई है। पुरोहितजी रो संस्मरण— "दौलू भा" घणी प्रसिद्धि पाई। राजस्थानी रै सिवाय आ रचना हिन्दी पत्रिका में भी छप चुकी है।

रेखाचित्र विधा में श्री दीनानाथ खत्री री रचना 'पारो' में जिको सांगोपांग वर्णन हुयो है, वो पढण लायक है, अर उच्चकोटि रै किणी रेखाचित्र सूं टक्कर लेवण लायक ई नईं, उण नै छेड़ै बैठावण लायक भी है।

श्री भगवानदत्त गोस्वामी रो 'अन्दाता नै अरज करूं' भी एक संस्मरण है अर इण में लिखार आपरै विषय सूं पूरै सम्पर्क रो प्रमाण दियो है।

मिनख समाज नै टाळर प्रायः राजस्थानी में रेखाचित्र लिखीज्या कोनी, जद कै हिन्दी में इसी रचनावां हुई है। श्री० न० जोशी री रचना 'वड़ रो पेड़' ही इण रो अपवाद मात्र लागै है।

ऊपरली ओळ्यां में इण विषय री पांच पोथ्यां री संक्षिप्त चरचा रै अलावा थोडा सा दूजा लिखारां री चरचा करी, पण लिखारां री संख्या इत्ती ई कोनी, एक-एक जणो पोथी/पोथ्यां लिखण री खिमता राखै, पण प्रकासण रै अभाव में लिखार आपरी खिमता रो पूरो उपयोग कर कोनी पावै।

राजस्थानी रै प्रचार-प्रसार सारू श्रो घणो जरूरी है कै पाठकां में श्रापरी मातभासा सारू श्रनुराग ऊपजै श्रर वै खरीदर पोथी वांचण री श्रादत घालै । सरकार तो श्रापरै नियमां मुजब काम करै । उण रै सामो जोवण री जरूरत कोनी । उण रै भरोसै पाठकां नै निसक्रिय हुवण री जरूरत कोनी । पाठकां री संख्या में बधोतरी हुसी तो साहित्यकार घणा दत्तचित्त हुयनै इण काम में लागसी श्रर पुष्कळ मात्रा में रचनावां त्यार करसी—श्रनेक विधावां में । जद सगळी विधावां पनपसी तो रेखाचित्र-संस्मरण भी बराबर श्रागै चालसी श्रर इण तरै साहित्य रै इण श्रंग री भी पूर्ति बराबर हुसी ।

सोनगिरी कूवै रै नेड़ै
बीकानेर (राजस्थान)



परम्परागत राजस्थानी कविता

डॉ० मदनगोपाल शर्मा

राजस्थानी रा परम्परागत काव्य रो मूळ रूप डिंगळ कविता में दीख पड़ै। 'डिंगळ' सबद 'राजस्थानी' सूं बेसी जूनो कह्यो जा सकै। महाकवि सूर्यमल्ल 'डिंगळ' अर 'मरुवाणी' नै एक ही भासा मानता हुया ईं में वीररस रो पुट अर अपभ्रंस भासा रो मेळ बेसी मान्यो—

डिंगळ उपनाम कहुंक, मरुवानीहु विधेय।
अपभ्रंस जामें अधिक, सदा वीररस श्रेय।।

(वंशभास्कर, १,१४७)

'प्रायो मरुदेशीया प्राकृति मिश्रित भाषा' कह नै कविराजा ईं में प्राकृत भासा को मेळ भी बतायो। साची तो आ कै हिन्दी परिवार री मोटी विभासावां में अपभ्रंस रो उणियारो सबसूं बेसी जूनी राजस्थानी अर डिंगल में ही ओपतो लखावै। ईं प्रभाव नै देख'र ही श्री० मधुसूदन चिमनलाल मोदी जिस्या गुजराती रा विद्वानां कह्यो कै 'चारणी भासा अवहट्ट को ही विकृत रूप छै।'[1] रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा जी री भी इसी ही राय है।[2] काव्य मीमांसाकार राजशेखर रो भी ओ ही मत है कै मरुभू, टक्क अर भादानक प्रदेसां में अपभ्रंस रा मेळ री भासा ही बोली जावै छै— 'सापभ्रंश प्रयोगा: सकल मरु भुवष्टक्क भादानकाश्च।'[3] ओ ही कारण है कै शौरसेनी प्राकृत सूं विगस्योड़ी गुर्जरी अपभ्रंस सूं निकळी जूनी गुजराती या राजस्थानी[4] री परम्परागत कविता ऊपर कथणी अर मंडणी दोन्यूं ही द्रिस्टियां सूं अपभ्रंस रो पूरो अर गैरो असर दीखै है। वर्ण्य विषय, काव्य में वक्ता अर श्रोता री योजना, बहुभाषायी छंदां री रचना, षट् भाषा मिश्रित काव्य-पिंडताई रो ठसको, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली री विधावां रो प्रयोग, काव्य-रूढ़ियां अर काव्य-परिपाटियां री दोहरावट, काव्य रचना रै प्रारंभ में इस्ट स्तुति अर विनम्र आत्मदैन्य रा भावां रो लेखो अर काव्य रै अन्त में मंगळकामना रूप सुफळ कथन, कथानक-रूढ़ियां अर कविसमयां री समरूपता,

वस्तु-व्यापार-वर्णन री एकसारखी रूढ़ियां-आदि कई द्रिस्टियां सूं राजस्थानी काव्य परम्परा पर प्राकृत अर अपभ्रंस काव्य रो प्रभाव साफ अर चोड़ै दीख पड़ै।

ईं तरियां ही ध्वन्यात्मक अथवा अनुरणनात्मक सब्दावली रो मोह राजस्थानी रा कवियां नै भी उतरो ही रैयो जितरो कै अपभ्रंस रा कवियां नै। बाजितरां (वाद्ययंत्रां) रै बजणै री धुनां रो वर्णन करनां अपभ्रंस अर राजस्थानी रा कवि घणो उत्साह दिखायो है।

दूहा छंदां में तो राजस्थानी कविता लारली अपभ्रंस परम्परा सूं आपै मूंडा में सूं ही बोल झपट लिया अर वां नै घणी चोखी मनगत दै दीनी—

अपभ्रंस —

वायसु उड्डावन्तिए पिउ दिट्ठउ सहसत्ति।
अद्धा वलया महिहि गय, अद्धा फुट्ट तडत्ति॥

राजस्थानी—

काग उड़ावण धण खड़ी, आयो पीव भड़क्क।
आधी चूड़ी काग गळ, आधी गई तड़क्क॥

अपभ्रंस—

पुत्ते जाए कवणु गुण, अवगुण कवणु मुएन।
जा बप्पी की भूंहड़ी, चंपिज्जइ अवरेण॥

राजस्थानी—

बेटा जाया कवण गुण, अवगुण कवण धिएण।
जो ऊभां घर आपणी, गंजीजै अवरेण॥

अपभ्रंस—

एउ जम्मु नग्गहं गिउं, भड सिर खग्गु न भग्गु।
तिक्खा तुरिय न माणिया, गवरी गले न लग्गु॥

राजस्थानी—

तीखा तुरी न माणिया, भड़सिर खग्ग न भग्ग।
जलम अकारथ ही गयो, गोरी गळे न लग्ग॥

परम्परागत राजस्थानी काव्य रो लेखो-जोखो लेतां घणखरा नामी-गिरामी विद्वान, जिणां में 'राजस्थानी भाषा अर साहित्य' रा लेखक डा० हीरालाल माहेस्वरी भी सामळ है, इण काव्य री चार मोटी सैल्यां मानै है— (१) जैन सैली (२) चारण सैली (३) संत सैली अर (४) लौकिक सैली।

अनेक सी छाणवीण सूं ही आ बात चौड़ै है कै ओ सगळो वर्गीकरण कथ्य भासा-सैली अर जात धर्म रै रळे-मिळे आधार ऊपर टिक्योड़ो है, जीं में साहित्य रा उणियारा री मोटी ओळखाण तो पाई जा सकै पण उण रै विकास री सही पकड़ नीं लाधै। ईं वास्ते जरूरी है कै जात-पांत धर्म या भाषा-शैली री सामळ रळगत रै बजाय वर्ण्य वस्तु री रंगत कै पांण ही विकास-क्रम री सही तलास करी जावै। ईं द्रिस्टि सूं सफा बेदाग तो नहीं, पण थोड़ो ठीड़ै पूगतो-सो वर्गीकरण इण भांत कियो जा सकै है—

(१) अध्यात्म धारा— (अ) निर्गुण या संतमार्गी धारा
(आ) सगुण या भक्तिमार्गी धारा
(i) वैष्णव (ii) शैव (iii) शाक्त
(iv) जैन (v) लोकदेवता परक
(२) नीति काव्य-धारा–
(३) शौर्य या वीर काव्य-धारा
(४) प्रणय अर शृंगार काव्य-धारा
(५) प्रकृति-प्रेम काव्य-धारा
(६) हास्य-व्यंग्य काव्य-धारा
(७) लोक-काव्य-धारा— (अ) संस्कार परक (आ) पर्वोत्सव परक (इ) व्यावहारिक अनुभव परक (जन, भूमि, जीविका अर कारोबार सम्बन्धी अनुभव इत्यादि) (ई) लोकरंजन-धारा जियां-आडी, फाळी, पड़ूत्तर, कहमुकरणी वगेरा।

कथ्य रै आधार पांण जियां ऊपर वर्गीकरण कर्‌यो गयो है, वियां ही विधा, भाषा, शैली आदि बीजा आधारां पांण न्यारा-निरवाळा वर्गीकरण कर नै सांगोपांग अध्ययन कर्‌यो जा सकै है। जिनगाणी री जियां ही साहित्य भी एक जटिल रूप सूं गुंथियोड़ी–उळझियोड़ी रचणा है, जिण रा कीलकांटां कांट-छांट सूं विखर जावै अर सरूप ही लोप हो जावै। फेर भी अध्ययन री सुविधा-सारू वर्गीकरण री उपयोगिता नकारी नीं जा सकै।

जोणै जोग बात आ है कै राजस्थानी काव्य री सगळी धारावां में विकास रै सागै परंपरा री चलगत भी लखावै। अध्यात्म-धारा में सद सूं जूना कवियां में स्वयंभू, पुष्पदन्त, योगींदु, आचार्य हरिभद्र सूरि अर हेमचंद्र सूरि जिस्या लूंठा कवियां

रा नांव गिणाया जा सकै है, जिका अपभ्रंस भासा में इतरी ओपती रचनावां करी, जिकी आगै राजस्थानी अध्यात्म-काव्य-धारा री भासा अर कथणी रै रूप ऊपर गहरी छाप गेरी ।

राजस्थानी अध्यात्म काव्य-धारा री सरूआत जैन साधकां अर यतियां सूं हुई । वैष्णव, शैव अर शाक्त धारावां में भी काव्य रचना जरूर हुयी हुवैली पण वै काळ री भेंट चढगी जद कै जैनी श्रावक आपरा मिंदरां में आपरा कवियां अर शास्त्रकारां री रचनावां नै घणी अंगेजर राखी । जैन अध्यात्म काव्य-धारा रा अध्ययन सूं आ बात उजागर हुवै कै काल-क्रम सूं भाषा रो विकास हुयो तो सागै ही जूनै भाषा रूप में काव्य-रचना रो मोह भी बण्यो रह्यो । पण जैन भक्ति-काव्य रा वर्ण्य विषय, इष्ट-स्तवन धार्मिक आख्यान, इष्ट-चरित आदि बातां में पूरी रूढ़ि परकता दीखै । अभिव्यंजना रा रूपां अर कथायोजनावां में भी घणी दोहरावट पायी जावै । कुछेक अपवादां नै छोड़ जैन अध्यात्म-धारा में सजग प्रतिभा अर मौलिकता रा घणो सरोसरो री गिणत बेसी नीं है । एक खास बात आ भी है कै जैन-अध्यात्म-धारा रा पाछला बेळा रा कवि लोक धुनां अर चालू रागन्यां नै घणी अपणाई, जीसूं जैन समाज में धार्मिक रचनावां आपरी लोकप्रियता बणाई राखी । आज दिन तांई भी आ प्रवृति सगूं ज्यादा ही जोर पर है ।

वैष्णव सगुण भक्तिमार्गी कवियां में मीरांबाई भक्तकवि ईसरदास जी, महाराजा पृथ्वीराज राठौड़, सायां जी मूला, रामनाथ जी कविया महाराज चतरसिंह जी आदि नांव गिणाया जा सकै । निर्गुणमार्गी अध्यात्म-धारा में दादू, रज्जब, सुन्दरदास, लालदास, संत मानजी, चरणदास, जसनाथ, जांभोजी आदि ओपता नांव है, जिणां में घणखरां रा चलायेड़ा पंथ अर संप्रदाय आज तांई भी चालै है । यां दोनूं धारावां री भासा अर सिळप दोनुआं में ही परम्परा रो अटूट प्रभाव साफ दीख पड़ै है ।

राजस्थानी काव्य री प्रणय शृंगार-धारा री सरूआत बीसलदेरास, ढोला-मारू रा दूहा, जेठवा अर ऊजळी रा दूहा जिसी कृतियां सूं मानी जा सकै है । आगै चाल'र ईं धारा में पचासूं आछा कवि हुया । पण सरूपोत सूं लगार आज तांई सगळी शृंगारीक रचना आपरी परम्परागत अनुभूत्यां अर बिम्बां रो आसरो लेती नई गैल चाली है । मनोहर शर्मा, रावत सारस्वत चन्द्रसिंह, नारायणसिंह भाटी, मदनगोपाल शर्मा, मनोहर प्रभाकर, सत्यप्रकाश जोशी इत्यादि कवियां री शृंगारीक रचनावां में परंपरागत शास्त्रीय काव्य रो प्रभाव तो दीखै ही पण लोकगीतां अर हिन्दी री छायावादी काव्य शैली रो भी पूरो असर दीख पड़ै । बाळपणै री पैलपोत री प्रीत तांई कवि चिड़कोली रो

प्रतीक चुण नै उणरै 'माथै किलंगी पगल्यां मैंहदी' मांड उणरी 'हिंगळूवर्णी चांच' अर 'पंखसिंदूरी रूप सुरंगो' निरख र हरखै तो उण नै भा बात भी घणी साळै कै आर्थिक बिषमता री खाई ही प्रीत रै आडी आवै—

कै जाम्रो कोई बड़भागी रै
जो मिजमान्यो, जोग
सोना रो मिंदर चांदी रो पिंजर
मूंगा-मोती भोग
राखै पळकां री ओट संभाळजी
उड़ती आ बैठी चिड़कोली

मदनगोपाल शर्मा (गोखै ऊभी गोरड़ी)

राजस्थानी कवि री बिरहण आज भी सामंती बणाव-सिंगार अर हिवड़ो लियां पिव री बाट न्हाळै जद 'सेहरां-सेहरां बीज झिलोमिल पळ-पळ पळको मारै' तो 'नार नवेली महल अकेली किण विध धीरज धारै ?' प्रकृति भी इण मौकै उद्दीपन री विभावनां करै। विरहण री पीड़ बढावण नै 'माभै में घन काजळ-काळो मधरो मधरो गाजै' अर उठीनै 'सीळो सोरमपूर वायरो धीमो-धीमो वाजै।' उण नै दूधकी कळपावण नै 'नीम भमीर भूमै, मोर टहूकै, कोयल कूकै, चातक भी ओसर नीं चूकै, तीखा तीर मारै। बिरहण री गैल ही संजोगण चालै। जद 'बीजळस्यार लोयणां काजळ सार, सुरंगो सूवटो दिखणी चीर ओढ 'किसी तणी री काळी कांचळी पैर' नीलमनथ अर पन्नग नागफणी सूं रूप नै सिणगार बासकबेणी डुलाती आज भी कवि-प्रिया चालै तो काव्य शास्त्र री परंपरागत निशाभिसारिका नायिका रो रूप उणरै आगै पाणी भरै—

वा ओढ्यो दिखणी चीर सुरंगो सूवटो,
वा पहरी किसी तणी री काळी कांचळी
नीलमनथ पहरी पहरी पन्नग नागफणी
वा चली डुलाती बासक बेणी सांचली

(गोखै ऊभी गोरड़ी)

नारायणसिंह भाटी री 'ओळूं' में भी विरहण, नार रो पारंपरिक रूप ही झळका मारै—

हाल्यां डाळी रूंख री
चिड़कलियां उड़ जाय
हिवड़ो हिल-हिल रह गयो
म्हांसूं उड़ियो न जाय।

लह झूंबो लूंबो हुई
बेलां तरवर डाळ
चूड़लियै री लूंब कद
झूंबै पिव गळ-डाळ

—नारायणसिंह भाटी (ओळूं)

राजस्थानी शृंगार-काव्य रो एक रूप वो भी दीसै, जीं में नाटकीकता अर छंद-विधान री नुई चलगत लखावै पण उण में भी महाकवि जयशंकरप्रसाद री 'आंसू' छाप छायावादी बिम्बयोजना, ध्वनिमयता अर शब्द-संगठणा री परम्परा रो गहरो असर है—

ज्यूं मोर खुजाळै पांखां
हळवो हेवरा नै नाळै
आ बिरी तराजै ओळूं
ओळघां कागदियै टांकै
कोचरड़्यां मांभळ रातां
कुरळावै टाली-चूली
तपतै पसवाड़ै बळती
मनस्यावां ह्वै गैली
अम्बरज ज्यूं पसरयो पड़ियो
असळाकां ज्यूं आंग्योड़ो
हूं बळूं ईसको ह्वै ज्यूं
दिन पोचां गो टांच्योड़ो

—तेजसिंह जोधा (आंकूं री आंटूसा)

श्री सत्यप्रकाश जोशी रै 'राधा' नांव रै खंडकाव्य में प्रेम तत्व रो नयो पसारो अर लीक सूं टळियोड़ो आंपतो चीकटो चिलकारो होतां थकां भी राजस्थानी संस्कृती अर जन भावनावां रो जुगजुगानुसारी रूप ही हिलोरा लेवै। काव्य री राधा आज भी श्रो ही फिकर करै कै उण रो गरीब गुवाळो बाप नंदमहर जिस्या नूंठा जमाई सगा खातर दायजो कठा सूं लासी, वा धाप ऊचा घरां रा सासरा नै कियां केवटसी। उणरै मन में आज भी श्रो ही ईसको बळै कै देस-देसांतरां री राजकवार्‌यां किसन रा चितराम कोरती अर कामरा करती होसी। राधा रै मनड़ै री इण बुणगट सूं आ बात परगट है कै सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा' रो बाहरी रूप भला ही धर्मवीर भारती री कनुप्रिया छाप अतुकान्त हिन्दी खंडकाव्य-शैली रा छंद-बंधन में बधियोड़ो हुवै पण उणरो मन

पूरी तरियां सामंती अर पूंजीवादी संस्किती रा रंगों में ही रंगियोड़ो है—

थारो म्हारो व्याव कोनी हो सकै
म्है विरज री अेक गूजरी
थारी जान री किण विध खातरी करस्यूं
दायजो कठा सूं लास्यूं ?
सासरा नै कियां केवटस्यूं ?
दूर देसां रा राजम्हैलां में
कोई राजकंवारी
थारा चितराम कोर-कोर
दूतियां नै दिखाती होसी
कांमण करती होसी

—सत्यप्रकाश जोशी (राधा)

राजस्थानी श्रृंगार-काव्य में परम्परा री जो धारा दीख पड़ै वा ही धारा वीर रस री राजस्थानी कविता में और भी मोटा रूप में गैरी मौळिक रंगत देखाळै। राजस्थानी वीर-काव्य रो वीर रस मूळ तत्व में वो हीज है। उणरी बाहरी चलगत अर ऊपरी रंगरूप में जमानै-गैल घणो फरक आयो पण मांयलो मनड़ो आज भी वै ही सुर छेड़ै। जुद्ध रा हथियार अर लड़ाई रा ढंग पळटग्या पण हिवड़ै में आज भी वीरता री जुगां जूनी हिलोरां वियां ही उठै। सास्त्र री भाषा में बात करां तो 'विभाव' आमूळ बदळग्या पण 'भाव' अर 'अनुभाव' आज भी वै ही है। तीर-तलवार-तोप री जगां स्टेनगनां ग्रेनेटां अर वम्मां ले ली। हळदीघाट री जगां टीथवाळ या चुसूळ आ गया पण छंद, भाषां री चाल, भाषां रो चाव अर चोज आज भी सागै वो ही है। आज भी कवि हवलदार पीरूसिंह री शौर्यगाथा वचनिका, दूहा अर नीसांणी जिस्या छंदा में गातां-थकां जुगांजूळी भावधारा सूं अपणै आपनै जुड़ियो पावै—

कासमीर सूं दिखणादी कूंट, टीथवाळ री टींच।
नद नाळां रो वेर, अबीठा भांखरां री वींट॥

× × ×

आव चढावण उमंगिया, आगा उजवाळा।
गनां ग्रनैटां गोळियां, किरचां किरमाळां॥
बैनटधारी बांकड़ा, बांका बिड़दाळा।
जोसीला जमदुत सा, रोसीला रवताळा॥

× × ×

कंपकंपी धरा कसमीर री, हळहळियो हिंदवाण हद ।
कमठ जेम पीठ कमठ, भार झिल्यो वढ कार निहद ॥

—सोभाग्यसिंह सेखावत (पीठप्रकास) पृ० ३३

आज भी लड़ाई चाहे कसमीर में हुवो, चाहे नेफा में, जोधां रो जोस जगावण-सारूं कवि जुगां-जूनै इतिहास री गौरव गाथा नै ही रटेरै—

जैसलमेरा,
थांरी खागां कदे कावुलनद झकोळी
थांरी जीत रा नगारा गजनी तक गाज्या
मुरधरिया !
आज थारी वेकळू नै हेम रो हेलो पायो
जुगां जुगां थारा केसरिया रंगिया
जिकी रंगरेजण क्यारियां आज मोल मांगै !

—रावत सारस्वत (मरुगंगा द्वार पृ० ७३)

'संतान सुजस' में परमवीरचक्र विजेता संतानसिंह री गौरवगाथा आज भी डिंगळ री जूनी गीत-विधा रा सांणोर, पखाळो, हंसावळो, सुपंखरो जिस्या गीतां में अर दूहा वेलियो, नीसाणी जिस्या छंदां में सुकनसिंह आछी तरियां गायी है ।

वीररस रा वखाण में राजस्थानी काव्य परम्परा हर जुग में उण जुग रा धम्म धणी अनवी वीरां अर जन नायकां नै आपरा आराध्य बणाया । 'जागती जोत' में गिरिधारीसिंह पड़िहार पुरु, पातळ, अकबर, मानसिंह अर गुरु गोविन्दसिंह जिस्या इतिहासपुरसां सागै पाबूजी जिस्या लोकनायकां नै डूंगजी जवार जी जिस्या मनस्वी विद्रोही नरनाहरां नै महात्मा गांधी जिस्या विस्व वंद्य राष्ट्रपुरसां नै समान भाव सूं आपरी श्रद्धांजळी समरपी ।

राजस्थानी री परम्परागत काव्य धारा नै इतिहास चेतना रो सदा ध्यान रह्यो । वा जुग रा संदर्भां सूं कदे कटी अर अळगी नी हुई । आज रो कवि गांधी नै भी विस्णुरूप में देखर अतीत अर वर्तमान में एक ही तत्व रो संधान करै—

ओ चार भुजा रो विस्णु है
ओ किसन बांसरी वाळो है
सिवजी तिरसूळ लियां ऊभो
है, नाग गळै में काळो है
गांधी तो तेज तपस्वी रो

ओ मिटै नहीं हथियारां सूं
है रोम-रोम में रामरूप
ओ मरै नहीं हित्यारां सूं

—गिरधारीसिंह पड़िहार (जागती जोत)

वीर अर श्रृंगार-धारा री कविता री इण ओळखाण सूं आ बात चौड़ै है कै राजस्थानी कविता आपरी परम्परा सूं अटूट रूप सूं जुड़ियोड़ी है। उण में लहरां नई उठै, उणरो वहाव पळटै पण मांयली रंगत अर छवि लारली उमर सूं उणियारो लेवै।

वीर अर श्रृंगार कविता रै बाबत जिकी सचाई दीखै, वाही 'स्थालीपुलाक' न्याव सूं बीजा रसां अर भावां री कविता रै बाबत भी कैयी जा सकै है।

सांची तो या है कै नुई सूं नुई क्रांतिशील अर प्रगतिकामी चेतना भी अतीत सूं ही प्रेरणा लेवै। जनकवि उस्ताद आपरी चेतना में अपणै वखत रा राजस्थानी कवियां में सबसूं बेसी तीखा अर तेज वामपंथी चेतना अर रुझान रा कवि कैया जा सकै है पण वै भी आपरा सिळप अर सैली में परम्परा सूं छुटकारो नीं पा सक्या। जुगांजूनी धरती अर जाण्यो-पिछाण्यो आवास ही हर देस-काळ में नुई सूं नुई रचणा रो आधार रैतो आयो है। लोग लुगायां नै गैणा वेचर ट्रैक्टर खरीदवा री प्रेरणा देतां अर करसाणां नै खेती में क्रान्ति रो उद्‌बोधन देतां जनकवि उस्ताद भाषा री जोड़णी, छंद-योजना अर संबोधन-सैली में परम्परा सूं अटूट रूप सूं जुड़ियोड़ो दीख पड़ै—

हालो ए साथणियो, आपा लूहर रमवा हालां ए
जिणरी घायल उण धरती पर घूमर घालां ए
हिवड़ै रा नवसरहार, गुण री वात सुणो
सुगणां सिर रा सिणगार, गुण री वात सुणो

—जनकवि उस्ताद

प्रगतिपंथ रो दावेदार अर करसां-कमतरां रो चितेरो कवि रेवतदान चारण 'कल्पित' नुओ जुग-निर्माण अर इंकिलाव री आंधी री अगवाणी करतो आज भी जूनी डिंगळ गीत विधा अर आखरां री संघटणा में ही उछाळो देवै—

सज्जो ओक संघट्टण, पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढ़ो
मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांधै खांवण मेल कढ़ो
ढ़ांणी रै ढांणी अखंडी ह्वै उच्छव, गाळ कसूंबो रै ढोल ढमंकै
डंके री चोट त्र्यंबाळ धमंक्कै, धरती रा किरसांण धमंकै

—रेवतदान चारण (चेत मांनखा)

राजस्थानी कविता री इण संक्षिप्त ओळखाण सूं आ बात उजागर हुवै कै राजस्थानी कविता जुग री पळट रै सागै आपरो रंगरूप अर चाल-ढाल पळटती चाली आवै पण उणरी सांसां में अतीत री धड़कन आज भी गूंजती सुणाई देवै। तुर्रे अर धुनै री आ सगपत ही राजस्थानी कविता री सप्राणता कैयी जा सकै है।

हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर



संदर्भ—

१. अपभ्रंश पाठावली, उपो० पृ० २१
२. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० १३७
३. काव्यमीमांसा
४. क० मा० मुंशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तेतीसवें (उदयपुर) अधिवेशन की रिपोर्ट

राजस्थानी नूंवी कविता

डा० किरण नाहटा

राजस्थानी नूंवी कविता री पूठ में कठै हिंदी नूंवी कविता रैयी है अर हिन्दी नूंवी कविता री पुठ में कठै पिच्छम रा काव्यान्दोलन रैया है, आ बात राजस्थानी नूंवी कविता री चरचा करती वगत चेतै राखण जोग है। हिन्दी रै जोड़ में ही राजस्थानी में ईं काव्यान्दोलन वेई 'नूंवी कविता' नाम सिकारीज्यो है अर आ बात भी दोनां रै नजदीकी नातै कानी इसारो करै है, पण अठै आ बात भी चेतै राखण-जोग है कै दोनां री पृष्ठभूमि रै मांय फरक भी मोकळो रैयो है।

हिन्दी में छायावादी अर प्रगतिवादी काव्यान्दोलनां री एक सैंजोरी परम्परा रैयी है अर हिन्दी नूंवी कविता री पृष्ठभूमि में आं रो कीं खास मसलां माथै विरोध एक मोटी बात रैयी है। छायावाद अर प्रगतिवाद दोनां सूं आपरी न्यारी ओळखाण थापण वेई हिन्दी नूंवी कविता नै प्रयोगवाद रै अटपटै गैलै सूं निसरणो पड़्यो है अर हिन्दी जगत में खुद रै अस्तित्व रो अहसास करावण वेई वींनै केई कोतक अर सांग भरणा पड़्या है।

ईं दीठ सूं राजस्थानी नूंवी कविता री स्थिति दूजी ही रैयी है, क्यूंकै राजस्थानी में छायावाद रा पग तो कदै जम्या ही कोनी हा। अठै तो बायल-कोयल कोई कोडायतो कवि ही छायावाद सूं वंतळ करी है, बाकी तो राजस्थानी में छायावाद रा खुड़-खोज अैंड़ै-छैड़ै को लाधैनी। अब रैयी बात प्रगतिवाद री। ईं बाबत इत्तो तो मानणो ही पड़सी कै अठै छायावाद करतां प्रगतिवाद कवियां नै चावो रैयो है। पण राजस्थानी प्रगतिवादी कवियां री आ भी खूबी रैयी है कै वांरी घणकरी प्रगतिवादी रचनावां जुग री मांग रो पडूतर ही खास करनै रैयी है। वै कदै साम्यवाद रो घोषणा-पत्र बण'र सांमै कोनी आयी। इण भांत राजस्थानी नूंवी कविता नै हिन्दी नूंवी कविता री भांत किणी थरपीज्योड़ी काव्यधारा रै खिलाफ लोगां नै बिदकावण री दरकार कोनी पड़ी। साची पूछो तो अठे रा चेतनाशील लोगां नै तो नूंवी कविता रै आवण री उडीक ही अर वै अठै एक तरै सूं नूंवी कविता रो स्वागत ही कर्‌यो।

अठै सैसूं पैलां नूंवी कविता नै लेयर जको थोड़ो-घणो विरोधी-सुर सुणीज्यो वो भाई तेजसिंह जोधा द्वारा सम्पादित 'राजस्थानी-अेक' रै प्रकाशण रै बाद ही। ईं विरोध रो कारण भी ईं पत्रिका री नूंवी कवितावां नीं रैयी, विरोध तो हुयो 'राजस्थानी-अेक' री आकरी सम्पादकी रो। 'राजस्थानी-अेक' री सम्पादकी, वींरी नीयत अर वीं रो नतीजो-औ न्यारो निरवाळो विषय बण सकै है। नूंवी कविता री चरचा करती वगत अबार ईं माथै विस्तार सूं विचार करण री गुंजाइस कोनी। राजस्थानी नूंवी कविता री चरचा करती वगत तो इत्तो ही कैय सकां हां कै अठै रा नूंवां लिखारां नै इसी कोई अबखाई कोनी झेलणी पड़ी, जिसी कै हिन्दी रै नूंवै कवियां नै छायावाद अथवा प्रगतिवाद रै मसलै नै लेय'र झेलणी पड़ी, पण ईं सूं औ नतीजो नीं निकाळ लेवणो चाहिजै कै राजस्थानी रै नूंवै कवि नै किणी भी अबखाई रो सामनो नीं करणो पड़यो।

एक निजर सूं देखां तो राजस्थानी नूंवी कविता रो सफर हिन्दी कविता-करतां भी सैंठो रैयो है। जकी वगत राजस्थानी में नूंवी कविता रो जलम होयो, वीं वगत राजस्थानी में सांतरी साहित्यिक कवितावां लिखणियां लिखारा रा सुर मोळा पड़ग्या हा। श्री नारायणसिंह भाटी अर श्री कन्हैयालाल सेठिया जिसा गिणती-रा कवि न्यारा-निरवाळा बैठ्या आपरी साहित्यिकता री अणगिणी मोळमाण बणी रैवै, इण वास्तै खपै हा; बाकी तो कविता री दुनियां में गळैबाज मंचीय कवियां रो बोलबालो हो। अै मंचीय कवि जनता री वाहवाही लूंटण खातर अर लोकगीतां री ढैंगी सूं मिटायण नै उतावळा होय रैया हा। आं लोगां री मैरबानी सूं सस्ता सिणगारू गीतां री अथवा हळकी हंसी-मसखरी री कवितावां रो ही बजार गरम हो पर इसा कवियां री किरपा सूं राजस्थानी सूं बारली दुनियां रा साहित्यकार तो आ समझण लागग्या हा कै राजस्थानी में वा समझ हाल बरसां-लग कोनी वापर सकै जकी कै जुग-चेतना सूं जुड़योड़ी हुया करै है। इस्यै वगत में कविता नै जुग-चेतना सूं जोड़णो अर वींनै आपरै सही धरातल माथै ल्यायनै ऊभी करणो-अै दोनूं ही खासा अबखा काम हा, पण राजस्थानी रो नूंवो कवि आं दोनूं लूंठी चुनौतियां रो जम'र मुकाबलो करयो अर मंचीय-कवितावां रै अळसीड़ै मांय सूं घणै जतन सूं कविता नै अळगी कर आगै राखी।

वात जद हिन्दी अर राजस्थानी नूंवी कविता री पृष्ठभूमि नै ले'र चाल रैयी है तो अठै लगतै-हाथां एक वात री चरचा भळै करल्यां। वा आ कै हिन्दी अर राजस्थानी कविता रै बिचाळै एक जबरो फरक पारम्परिकता रो रैयो है। आज री हिन्दी कविता (खड़ीबोली) रो ओ मोटो दुरभाग रैयो है कै आदिकाल रै चन्दबरदाई

सूं लेय'र रीतिकाल रा पद्माकर तक रा कवियां नैं खुद री जमात में भेळा कर'र भी खड़ी बोली रो कवि वां सूं बो तादात्म्य कोनी थाप सक्यो है, जको कै राजस्थानी रा कवियां रो आपरै जूनां कवियां सूं रैयो है ।

ओ एक कड़वो सांच है कै खड़ी बोली हिन्दी री सावळसर हीयै ढूकणआळी परम्परा नीठ सौ साल जूनी रैयी है, जद कै राजस्थानी कविता री परम्परा सईकड़ां साल जूनी रैयी है अर ईं रो पूरो-पूगो फायदो भी आज रै राजस्थानी कवि नैं मिलै है । ईं भेळै एक वात भळै जाणणजोग है कै राजस्थानी लोकभासा रै रूप में जिती सैंठी अर सबळी रैयी है अर बींरो लोकसाहित्य जितो लूंठो है, बींरी तुलना में खड़ी बोली दोनूं ही बातां में पोची पड़ै है । लोकभासा रै ईं सैंठेपण रो पूरमपूर लाभ राजस्थानी रा कवि उठावै है । ईं दीठ सूं श्री मणि-मधुकर री कवितावां खास करनै उल्लेख जोग है जिणां में जनभासा री जीवंतता कवि रै कलात्मक सौष्ठव रो परस पायर घणी निखरी है।

अठै लग तो आपां हिन्दी अर राजस्थानी नूंवी कविता री पृष्ठभूमि रै फरक नैं ही सावळ-सर समझण नैं खसै हा, अब थोड़ो ईं वात माथै भी विचार करल्यां कै राजस्थानी नूंवी कविता अर बीं सूं पैलां री राजस्थानी कविता में कई पुखता अन्तर रैयो है अर वै एड़ी कुणसी वातां है, जिण रै कारण जूनी कविता-करतां राजस्थानी री नूंवी कविता आपरी न्यारी ओळखाण वणाय सकी है ।

ईं दीठ सूं विचार करां, जणै पैली वात आ ध्यान में आवै कै राजस्थानी री नूंवी कविता मोटा-मोटी आजादी रै अैड़ै-गैड़ै अथवा आजादी रै वाद जलम्योड़ा वां मोट्यारां री कविता रैयी है, जकां नैं कदै 'खम्मा अन्नदाता' रै दरबार में जाय'र मुजरो करणै री दरकार कोनी पड़ी अर जकां री चेतना सामंतवादी मान्यतावां रा सप्पीड़ा खाय खायर भोथरी कोनी पड़ी ही । ईं खातर ही अन्याय रै खिलाफ ईं पीढ़ी रा सुर सदा ही तीखा रैया है । खास करनै आम आदमी साथै जुगां-जुगां सूं चालती धरम, समाज अर राजनीति री मसखरी नैं वरदास्त करण वेई ओ नौजवान कदै त्यार नीं हुय सक्यो है । ईं खातर बो वां सगळी बातां रो जमर विरोध करचौ है अर कर रैयो है जकी नैं उणरी चेतना नकारी है । बींरो ओ विरोधी सुर 'जवानो शहीद हुय ज्यावो' री तरज में कोनी उगेरीज्यौ, क्यूंकै आ तरज तो वै ही धारै, जका ईं वैम में जीवै । कवि अर साहित्यकार हुवण रै नातै वां रो एक खास रुतबो है अर समाज रै मानखै नैं गैलै ल्यावण रो जुम्मो वां रो ही है ।

नूंवो कवि तो जकी स्थितियां सूं खुद नीसरचो है अर जकी पीड़ावां नैं बो खुद भोगी है, वां नैं ही आपरी रचनावां में प्रगासी है । ईं में बो कठै संकोच अर लिहाज

कोनी वरत्यो, चाहे ईं खातर वींनैं नाता-रिस्तां रो पोस्टमार्टम करणो पड़्यो हुवै अर चाहे ईं खातर जुगां-जुगां री मान्यतावां अर आस्थावां नैं ही चोड़ै-धाड़ै वकारणी पड़ी हुवै।

इण दीठ सूं उल्लेख जोग रचनावां तो कई है, पण वां में भी आकरी पड़ै है श्री तेजसिंह जोधा री 'म्हारा बाप' अर श्री चन्द्रप्रकाश देवळ री 'कोडयां वाळा नेत' म्है अर वकरियो। श्री जोधा री रचना 'म्हारा बाप' आपरी खरी अर बेलाग अभिव्यक्ति रैं पाण मोड़ै ताईं याद राखीजी। ईं कविता रो बाप आजादी मिलती बगत जोध जवान हो। आजाद भारत नैं लेयर वो मोकळा सुपना संजोया, पण वीं न तो आपरै सुपनां नैं साचा करण वेई कोई ठावो अर इधको काम ही पोळायो अर न ही आजादी रो लावो लूंटणियां घिगाणियां लोगां सूं मोरचो ही लेय सक्यो। नतीजो औ हुयो कै वीरैं देखतां-देखतां सौ कीं गतरस हुयग्यो अर वो ईं दुर्घटना रो गूंगा-गवाह वण्यो ऊभो रैयो। 'म्हारा बाप' रै बाप री आ नाजोगी विवशता एक समूळी पीढी री विवशता री साखी भरै। आज रो जुवान ईं पीढी रैं नाजोगैपण नैं वकारै तो किया वकारै ?

श्री देवळ री कविता दूजो मोरचो सम्भाळ्यो है। ईं कविता में धरम रैं नांव माथै चालतीं पाशविक क्रूरता रो आकरो विरोध हुयो है। कवि जुगां-जुगां सूं चालती अणूंती हिंसा री ईं भूण्डी चाल रो जन नैं विरोध करयो है। ईं अंधविश्वास भरी प्रथा नैं सदां सदां वेई मेटण रो आत्मविश्वास भर्‌यो आह्वान ईं कविता में हुयो है–

जे मोटो व्हैणो है तो
व्है मोटो मोटो व्है वळै मोटो व्है
म्हारी तलवार री धूग सूं मोटो व्है
मेल छुरी अंदाता रै माथा-माथै
अर काढ म्हाक
अमरिया अंदाता रै कानां री कुड़कली
तीखा सींगा सूं खोद म्हाक
इण नीमड़ै री जड़ां
अर मूत सूं धोय म्हाक
सिंदूरी पुड़तां
अंदाता वाजतै इण भाटै नैं नागो करदै
अंकदम नागो
अर
फावरकी पारड़ी लारै बोवाड़ो करतो.

दुरजा पाछो
टोळा विचाळै ।

दूजै रूप में ओ 'बलि रो बकरो' आम-आदमी रो ही प्रतीक है, जकै रो जुगां-जुगां ताईं टणका-टणका सिद्धान्तां री आड़ में मनचायो शोषण हुवतो रैयो है। शोषण रै खिलाफ इत्ती आकरी प्रतिक्रिया ईं सूं पैलां कदै भी साहित्य में देखणै में कोनी आवै। जित्ता भी नूंवा कवि रैया हैं, वां में आ बात खास करनै देखण नै मिलै है कै वां में मिनख रै सुतन्त्र अस्तित्व री हिमायत करण री ठाडी हूंस हैं। आज रै नूंवै कवि नै सैंसूं ज्यादा बोई बात नागवार गुजरै तो आ ही कै हाल भी थोड़ासाक मिसख ईं बात वास्तै खसै है कै जियां जुगां-लग आम आदमी रो शोषण हुवतो रैयो हैं अर बीं री इच्छावां अर भावनावां रो गळो टूंपीजतो रैयो है, बींया ही अब भी हुंवतो रैवै। ईं खातर शाश्वत सत्य सूं लेयर प्रजातन्त्र ताईं रो कोई सो भी मुखौटो लगावण में वां नै दर भी हिचक कोनी। पण नूंवो कवि बांरै आं सोवणा मुखौटां लारै लुक्योड़ै असली दानवी चैरे नै ओळखै अर ईं खातर वो भांत-भांत सूं वां रो विरोध करै।

कवि पारस अरोड़ा री 'म्हांरी मुळक, बांरी बेचैनी' अर 'म्हां अपमानित,' श्री प्रकास 'परिमल' री 'आ, अेकरसी तो आ, म्हारा सागोतर,' श्री देवळ री सपना रो वौपारी, म्है अर पाळेकड़ अंधारो' अर श्री तेजसिंह जोधा री 'पीवणो सांप' जैड़ी कवितावां में न्यारै-न्यारै ढंग सूं ठाडा मायावी सिद्धान्तां री आड़ में लुक्योड़ा लोगां री असलियत सूं आम आदमी नै वाकिफ करावण रो सखरो प्रयास हुयो है।

आम आदमी सूं नजदीकी रो नातो अर साधारण मिनख रै अस्तित्व वेई जूझण री गाढी हूंस—आ खासियतां रै अलावा, नूंवी कविता री तीजी जकी बात सहज ही ध्यान खींचै, वा है लिखारै अर पाठक रै बिचै तर-तर कम हुंवती छेती री बात। नूंवी कविता रो पाठक कवि रै साथै पग-सूं-पग मिलायर चालै, आ सह-अनुभूति री बात नई कविता नै एक न्यारो तेवर देवै।

ईं सूं पैलां कविता रै साथै आ बात कदै कोनी रैयी। जूनी कविता रा लिखारा कविता कथण नै परमेसर री खास मैरबानी सूं जोड़ता रैया है अर आ कैवता रैया है कै कविता करीजै कोनी वा तो एक खास छण में मतै उपजै है। ओ एक इसो तर्क रैयो है जिण रै आगै सजग बुद्धि री पूछ कोनी रैवै। पण नूंवो कवि शुरू सूं ही ईं बात नै नकारै। वो कविता नै बुद्धि या बौद्धिकता सूं अळगी राखणी ठीक कोनी समझै अर इत्तो ही नीं, वो तो रोमाण्टिक नजरियै अर कोरी भावुकता सूं तो नूंवी कविता नै जतन रै साथै अळगी ल्यायो है। भावुकता अर रोमाण्टिकता नै लेयर वो कदै जथारथ

सूं मूंडो कोनी मोड़्यो अर न ही कदै अणूंतो पोमाइजो अथवा अणूतो गळगळो हुयो है। बौद्धिकता अर भावुकता रै प्रति वींरै बदळयोड़ै नजरियै रै कारण ही उणरी नूंवी कवितावां में जूनां कवियां री कवितावां—करतां मोकळो बदळाव आयो है।

नूंवी कविता में आयोड़ी बदळाव री आ बात इत्ती मैंठी है कै कविता रो बारलो रूप रंग बदळयो सो तो बदळयो ही, उणरी मांयली दुनियां में भी मोकळी उथळ पुथळ माची है। बारलै बदळावां में छन्दां रै बंधे-बंधाये ढाळै सूं मुगति, तुक री अनिवार्यता रो अभाव, रूढ उपमावां अर एक खास ढाळै ढळियोड़ी भावनावां सूं लारो छूटणो उल्लेख-जोग बातां रैयी है। मांयला बदळावां में फूटरापो-लखाण (सौन्दर्य-बोध) रो बदळतो नजरियो, लखाण रै सांच री बात (अनुभूति री प्रामाणिकता री बात) अर रस नैं ही सर्वोपरि नीं मानण री बात उल्लेख जोग रैयी है। आं बदळावां रो एक मोटो नतीजो तो ओ निकळ्यो कै आं बातां सूं कविता रै भाव जगत रो मोकळो विस्तार हुयो अर अब दुनिया रो कोई भी क्षेत्र कविता वास्तै वर्जित कोनी रैयो।

बदळावां री ईं चरचा में ध्यान दो बातां कानी भी जावै, जकी नूंवी कविता रै सांमै चुनौती-रूप आयी। आं बातां में पैली विचारणा-जोग बात ही कविता अर गद्य रै फरक री, क्यूं कै नूंवी कविता में इसा कई उदाहरण सामै आया, जठै कविता अर गद्य में कोई फरक ही कोनी रैयो। कवितायां रै नांव पर छप्योड़ी वां लांबी-ओछी ओळयां नैं जे सीधै रूप में छाप दे तो वै गद्य रो अहसास ही करावै।

ओ एक इसो मसलो हो, जिण माथै गैराई सूं विचार करण री जरूरत ही अर इण बात रो कोई पुखता जवाब देवणो भी लाजमी हो। ईं खातर कविता अर गद्य री 'वस्तु' रै अन्तर री बात कैयीजी अर सागै-सागै अर्थ-लय री बात भी उठाईजी। मोकळी चरचावां रै बाद नूंवै कवि भी आ बात मैसूसी कै कविता रो अर लय रो गैरो सम्बन्ध है अर एक तरह सूं वो भी लय री अनिवार्यता नै मान ली। राजस्थानी नूंवी कविता रो ओ सौभाग्य रैयो है कै वा हिन्दी नूंवी कविता रै अनुभवां रो फायदो उठायो अर ओ ही कारण है कै राजस्थानी नूंवी कविता में इसा उदाहरण वायल-कोयल ही सांमै आया है, जठै कविता अर गद्य रो फरक ही मिटतो दीसै—

म्हैं अहसानमन्द हूं
मिनखपणै रा वां मोभी पूतां रो
जिकां री खांतीली मेधा
अर अणथक जतन

अमानवी-यातनावां सूं गुजरतां-थकां
भेळा कर पाया है कीं
भरोसैमन्द आखर।

गद्य री सींव नेड़ै खड़्यो ओ उदाहरण अथवा ईं रै जिस्या उदाहरण वस्तुतः उण मनगत री उपज कैया जा सकै, जठै अनुभूति नै पसवाड़ै राखर फकत बुद्धि रै सहारै कविता बणावण री कोसिस हुवै।

लय अर कविता रै सम्बन्धां नै लेयर जीयां राजस्थानी रो नूंवो कवि हिन्दी नूंवी कविता रै अनुभवां सूं फायदो उठायो है, बीयां ही रूढ़ उपमावां अर एक खास ढाळै ढळियोड़ी शब्दावली रै बहिष्कार रै मसलै पर भी राजस्थानी रै नूंवै कवि नैं हिन्दी रा अनुभव आडा आया है। वीं नै 'चान्दनी चन्दन सदृश हम क्यों लिखें ?' जैड़ा वक्तव्य देवण री दरकार कोनी पड़ी अर न हीं बीं नै नूंबा शब्द-प्रयोग अर नूंवी उपमावां रै मसलै नै लेय'र ईन्नै-विन्नै घणां भचीड़ा ही खावणां पड़्या है। ईं दृष्टि सूं लोक भासा रै रूप में राजस्थानी रो सैंठोपण बींरै घणो काम आयो है। वीं नै तो फगत अनुभूति रै अनुकूल सबदां नै अपड़णै री हुंस्यारी दिखावणै री जरूरत ही घणी रैयी है, नूंवा सबद घड़णै री माथा-पच्ची वीं नै नीं रै बरोबर करणी पड़ी है। ईं खातर जिकै कवि री लोक भासा री अपड़ जित्ती सैंठी रैयी है, वीं री कवितावां ईं दीठ सूं वित्ती ही सबळ वणगी है। ईं दृष्टि सूं मणि मधुकर री कवितावां चरचा जोग है। मणि सबदां रो चतर कारीगर है। वीं री कवितावां में प्रसंगानुकूल सबदां रा ओपता प्रयोग मोकळा मिलै—

ओ भूंडो वगत
दिन-रात म्हारै पसवाड़ै में
रसोळी ज्यूं कुळै
'पिरथी' नै विरथा
'भोभर' नै गोबर केवै
गेलै बगतो
पूंणचो पकड़ै मोसा मारै
ठाडो सांगी
कदै पलीत

कदै जमदूत रो भेस धारै
चिगताणो भार
खोळै बैठ
स्यांन रो पाणी उतारै।

अठै-लग आपां कविता रै बारला बदळावां री मोटामोटी परचा करी, अब थोड़ी मांयला बदळावां री बात भी करल्यां। कविता में बारला बदळावां-करता मांयला बदळावां री अपड़ साचै एक अवखो काम है। मांयला बदळावां री दीठ सूं नूंवी कविता में सैंठो बदळाव भाव-क्षेत्र रै विस्तार अर सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियां रै प्रगासण नै लेय नै आयो है। आज री मानवीय संवेदनावां इत्ती उळझ्योड़ी है कै वां रो अर्थपूर्ण अंकन नूंवै कवि रै सामै ठाडी चुनौती रै रूप में आयो है। ईं खातर जूनै जुगां रा सगळा प्रचलित मुहावरा वीं नै साव अधूरा लखावण लाग्या अर वीं नै नूंवै संश्लिष्ट बिम्ब-विधान, सटीक प्रतीक-योजना अर कलात्मक सौष्ठव री दृष्टि सूं पूरमपूर सावचेती वरतणी पड़ी है। इत्तो ही नीं, फूटरापै लखाण रै क्षेत्र में आयो बदळाव कवि अर पाठक दोनां सूं पूरी जागरूकता री अपेक्षा राखै। मध्य-जुग रै कवि अर भावक री ढरैं ढळियोड़ी जिंदगानी वीं रै नसीब में कोनी अर न ही वो ईं री आंकशा ही करै। वीं री प्रबुद्धता यथार्थ सूं वीं नै गाढो सम्पर्क राखै अर आ यथार्थ चेतना कोरी भावुकता में कोनी बैठण दे अर न ही स्वप्निल कल्पनावां में रमण दे। ईं जथारथ-चेतना रै आगै फूटरापै लखाण रा सगळा जूनां प्रतिमान गड्ड-मड्ड हुयग्या। वर्तमान रो जीवन ही जद इत्ती कुरूपतावां सूं भरयोड़ो है, तो वायवी सुन्दरता नै लेय'र मन विलमांवण नै फुरसत कठै? ईं रो सीधो असर ओ पड़्यो कै जकी बातां नै लेय'र पुराणा कवि कदै मोदीजता रैया है, वांगें ही नूंवै कवि नै दूजो सांग नजर आवण लाग्यो है। ईं बदळाव रो सैं सूं सैंठो असर प्रकृति रै प्रति बदळी नजरियै में देख्यो जा सकै है—

रात धनस डोर ज्यूं तरणाव
रीस में भरियोड़ी
धोरां वूजै मेंदीवरणी रेत
रूंख रुखाळी विनां तड़फा तोड़ै
गिगन मांदगी रै दोवड़ै में लुक तो
कळेस रा आखर चुगतो
ऊंडी लाम्बी निसास छोडै।

कामणगारी रात, ऊजळी बेकळू रा निरमळ धोरिया अर विराट लीलो आभो कवि नै सुपनां री रंगीली दुनियां में नीं लेज्यावै वरन् मन री ऊब, खीझ अर बेबसी में दूजै ही रूप में निजर आवै। नूंवां कवियां री घणकरी कवितावां में मन री अनेकानेक मनगतां नै मांडण-वेई ही प्रकृति रो सारो लिरीज्यो है। प्रकृति एक सुतन्त्र विषय रै रूप में बोत कम उकेरीजी है।

प्रकृति रै प्रति ईं बदळतै नजरियै री बात फुटरापै लखाण री बदळती मनगत नै लेय'र उठी ही। अठै ईं फुटरापै लखाण नै लेयर आयोड़ा बदळावां बाबत थोड़ै विस्तार सूं विचार करल्यां। वै कुणसी बातां अथवा कुणसा कारण रैया है, जिणां नै लेयर, फुटरापै लखाण री दीठ में सैंठो बदळाव आयो है।

जद ईं बात-माथै विचार करां तो कई बातां कांनी ध्यान जावै, जिकां में खास है जीवण रै प्रति बदळतो नजरियो, मानवीय चेतना रो विस्तार, औद्योगिक अर वैज्ञानिक प्रगति रै कारण मिनख पर बधतो दबाव अर आं सै सूं भी सैंठो रैयो है मिनख रै अस्तित्व रो संकट। दो महायुद्धां री विभीषिका मिनख री सगळी आस्थावां अर मान्यतावां नै हिलायर राखदी। विराट अर उदात्त री बातां उणरै खातर आपरो अर्थ खोय चुकी है अर वो मिनख रै ल्होड़पणे में ही जीवण री सार्थकता खोजण नै विवस हुयो है, फळ-सरूप ल्होड़ियै मिनख (लघु मानव) अर वींरी क्षण-क्षण री लखाण री बात प्रमुख हुय चुकी है।

हिन्दी नूंवी कविता में तो ईं ल्होड़ियै–मिनख अर वींरी क्षणिक-अनुभूतियां री पर्याप्त चरचावां हुई है, पण राजस्थानी री स्थिति थोड़ी भिन्न रैयी है। राजस्थान में महानगरां रो अभाव अर अपेक्षाकृत औद्योगीकरण री धीमी चाल रै कारण अठै रै मानखै रै आगै अस्तित्व रो संकट हाल उण रूप में उभर नै सामै नीं आयो है, जिणरो अहसास पिच्छम रै मिनख री नींद हराम कर राखी है अर जिण रो खासो असर भारत रै महानगरां रै मिनखां माथै देख्यो जा सकै है। फळसरूप राजस्थानी में ल्होड़ियै मिनख री बात अर उण री क्षणिक अनुभूतियां री बात हिन्दी करतां कम उठाईजी है। ईं मसलै नैं लेयर राजस्थानी में जका कवि खास सक्रिय रैया है, वां में मणिमधुकर, ओंकार पारीक अर डा० गोरधनसिंह शेखावत रा नाम उल्लेख जोग है। डा० शेखावत रो तो 'किरकिर' नांव रो कविता-संकलन पूरी तरियां क्षणिकावां रो ही संकलन रैयो है, जिणमें नई भांत री क्षणिक अनुभूतियां नै काव्यात्मक रूप में मांडण रो प्रयास हुयो है—

अतीत—
परदेसी रै मन में
जलमतो गांव, घर
थर गुवाड़ रै सामै
रम्योड़ी सून क्यार।

× × ×

धोळ्यूं—
थारी धोळ्यूं
धीमैं-धीमैं
हालतै पाणी में
लाम्बी पतळी तिरती
सांवळी छींया।

डा० शेखावत री अै अथवा ऐं जिसी ही कै दो-च्यार क्षणिकावां जकी कै लखाण रै गरमास रो परस पाय नै मांडीजी है, वो तो जरूर कठै मन नै छूवै पन जठै खाली चमत्कार सिरजण री मनस्या ही सैंठी रैयी है, वठै क्षणिक चमत्कृति रो सुख ही ऊपनै, वेसी कीं नीं। लगभग आ ही स्थिति श्री ओंकार पारीक री रैयी है। लखाण रै गरमास सूं जुड़योड़ी वांरी क्षणिकावां भी पाठक नै दाय आवै—

रगत ले
पसीनो
अै आंसूं — म्हारो जीवण
वाणी नीं—वाणी नीं—वाणी नीं
म्हारा लोकराज !

ऊपरला दोनां कवियां री तुलना में स्होड़ियै-मिनख री वेबसी रो अहसास मणि मधुकर री कवितावां में घणो ऊण्डो रैयो है। मणि आपरी 'काळो घोड़ो' अर 'नरकवाड़ो' जैड़ी कवितावां में उणरी पीड़ नै उकेरण में सफळ हुयो है—

वतूळियै रो फूल
अवेरता फिरां
छाजलै में मिनखापण रो
छाणस रळकावां
आपो खोय

सपणायत रै बाथीड़ा भरो
भेळा हुवां सगळा
ज्यूं बोदा वांस
अेक पळ खड़ खड़
दूजे छिण भड़ भड़
नरकवाड़ो भुगतां
गुमेज में गाल वजावां
ईसकै रो बैर-वादखाई रो
छूधो खेलां
अेड़ै मेळ री सला करां
छेड़ै घू-दोफरै लाय लगावां

ई' कवितास में बीसवें सईकै रै मिनख री विवशता रो चोखो अंकण हुयो है।

जूनी कविता-करतां नूंवी कविता री खूबियां री चरचा रै ई' क्रम में छेकड़ में एक बात री चरचा भळै करल्यां। अर बा है—व्यंग्यात्मकता री। जूनी कवितावां-करतां नूंवी कविता नें व्यंग्य रो सुर घणो सैंठो रैयो है अर ई' रो कारण भी साफ़ रैयो है कै आज रै मिनख नै जित्ती विडम्बनापूर्ण जिन्दगाणी जीवणी पड़ रैयी है अथवा आज रै मिनख नै जिती विसंगतियां रै बीच सूं नीसरणो पड़ रैयो है विसो आज सूं पैलां कदे नीं हो। जीवण में फैल्योड़ी अै अनेक विसंगतियां, मिनख रो निजोरोपण अर मिनख री खुद रै व्यक्तित्व रै बाबत जलम्योड़ी सजगता मिल-जुल नै उणरै मांय जिण भाव नै जलम देवै उणने खीझ अथवा झाळ कैय सकां हा, अर झाळां हीं व्यंग्य रै रूप में प्रकट हुवै। ई' दृष्टि सूं श्री तेजसिंह जोधा री कवितावां बौत ही आकरी पड़ै। वांरी कविता में व्यंग्य रो सुर इतो तीखो है कै वीं ने वांच्यां बाद चोखा-चोखां री आंतड़ियां में लाय लाग सकै है—

ई' गांव में कठेई कीं व्हेगो है
थमो
थमो
एकर ओऊं सोघां
काल कांई' ठा कुण कैवतो
क ओ गांव जाणगो
सिपाई नै आणंदार कैवण री बोली

चोखो है
चोखो है नुवीं वोली जाणबो
अर टेम री नस पिछाणवो
वीयां भी देस भगती है
सिरकार री सोराई सारू
नसवंदी पैलां हींजड़ो कैवाइजणो

ई कवितांश में जलमतै स्याणंपण पर चोखी चोट हुई है अर इसी ही सांतरी चोट बदळता सामाजिक रिस्तां नै लेयर करी है—

लोगड़ा कैवै
क ईं गांव में अेक जेठू विया करतो
जिको, किण रै ई भाई
किण रै ई भतीजो
किण रै ई काको
अर किण रै ई मामों तो किण रै ई मासो लाग्या करतो
पण जाणै क्यूं
वो जद सूं कनरल वियो
ओ गांव मांय ईं मांय समझगो
क वो अब सगळां रै करनल ही लागण लाग्यो है
स्यात आपरी अणभणी लुगाई रै भी।

अठै ताईं करयोड़ी जूनी कविता अर नूंयी कविता में आयोड़ा बदळावां री ईं चरचा रै वाद अब एक पख ही खास कर नै बिचारण जोग रैय जावै है अर वो है हिन्दी अर राजस्थानी नूवी कविता रै फरक रो। आ चरचा तो आपां सुरुपोत में ही करी ही कै दोनां री पृष्ठभूमि में काफी समानतावां हुंवता—थकां भी उल्लेख जोग असमानतावां रैयी है अर पृष्ठभूमि रो ओ अन्तर ही दोनूं भासावां री नूंयी कवितावां रै वर्तमान रूप में भी साफ झलकै। हिन्दी नूंवी कविता रै विपरीत राजस्थानी नूंयी कविता री जकी वात आपां रो ध्यान खींचै, वा है ग्रामीण-जीवण रै प्रति राजस्थानी कवियां रो सुलझयोड़ो नजरियो। श्री तेजसिंह जोधा री 'कठेई कीं व्हेगो है'। श्री नद भारद्वाज री 'म्हैं अर म्हारो गांव', सैंतीस घरां री गांव', अर 'अघार-पख', डाक्टर गोरधनसिंह शेखावत री 'गांव' आद कवितावां में गांवां में आय रैयै बदळावां नै जिण बारीकी सूं लखीज्या है अर जिण ईमानदारी सूं बांरो अंकण हुयो है—बिसो वर्णन

हिन्दी में ढूंढ्यां ही नीठ लाधै । ईं बाबत घणा उदाहरण नीं लेयर तेजसिंह जोधा री 'कठेई कीं व्हैगो है' रो एक उदाहरण लेवां—

ईं गांव में कठेई कीं व्हैगो है व्हैगो है
हाल बा छोरी नीं दीसी
जिकी किणी रै गांव छोड़'र जावतां
रोय दिया करती
अर बा, बा छोरी भी नीं
जिकी गांव रै जोबन नैं
कांकड़ रै सून्याड़ में
मियां-मियां सबदां सूं नीं
बां सबदां रै लारैं लुक्योड़ी
मेक उतावळी हांफ सूं अरथ दिया करती ।

मठै घणी चतराई सूं गांवां सूं होळै-होळै खतम हुवती अपणायत अर दिन दिन मिटती यौवन री अल्हड़ता रो अंकण हुयो है । इसा एक नहीं, दसूं बदळावां नै राजस्थानी रा अैं नूंवा कवि आपरी कवितावां में घणै जतन सूं मांड्या है ।

हिन्दी नूंवी कवितां करतां राजस्थानी नूंवी कविता री दूजी जकी बात आप कानी ध्यान खींचै है, बा है-अपणायत री । राजस्थानी रो नूंवो कवि कठै आंख मींच'र हिन्दी रै नूवां कवियां रै माफिक आपरी समूळी जूनी परम्परावां अर हस्तियां रो विरोध नीं करयो है, इण रै विपरीत बो तो खुद कैवै-'म्हारी इच्छा है'कै राजस्थानी रो नूंवो-नकोर कवी 'आपै' री खोज में अणमणो चायै रैवै पण आपरी 'हवा' अर 'हरणी' रै बिचाळै अणसैंधो नीं बणै । मरुधर री रेत-रमतां में अपणायत जाडी है ।"(मणि मधुकर, राजस्थानी अंक)

मणि मधुकर री ईं बात नैं राजस्थानी नूंवी कविता रा दूजा समरथ कवि तेजसिंह जोधा दूजै ढब यूं मांडै'कै "राजस्थानी कविता नै जे नुंवै-बोध रै साथ सालरणो है तो उण नै कथण रै ढाळै अर सबदां नैं टाळण में राजस्थानी माटी री सौरभ सांभ'र रैवणो पड़सी ।" आपरी धरती री ओ गाढो हेत पक्कांई राजस्थानी नूवीं कवियां री हैसियत वधावै ।

सेवट में इत्तो ही कैवणो है कै हिन्दी-फरती राजस्थानी री नूंवी कविता तो पक्कांई लारै है, खास करनै 'वस्तु' अर भाव-क्षेत्र रै विस्तार री दीठ सूं ओज्यूं राजस्थानी नूंवी कविता नैं कई मंजलां पार करणी है, पण अठै संतोष इत्तो ही है कै श्री कन्हैयालाल सेठियां, डा० नारायणसिंह भाटी अर श्री सत्यप्रकाश जोशी जिस्या जूनी पीढी रा समरथ लिखारा भी नूंवी कविता रै मोड़-मिजाज नैं समझण नैं प्रयत्नशील है अर नूंवी अर जूनी पीढ्यां रै कवियां रो सांचो प्रयास ही आज री कविता नैं गैंठी बणासी।

राजकीय महाविद्यालय
कोट पूतली (राजस्थान)



राजस्थानी री साहित्यिक पत्रकारिता

श्री रावत सारस्वत

समाज सुधार री लहर रै साथै प्रवासी राजस्थानी लेखकां वृद्ध-विवाह, दहेज, जीमण आद रै बारै में जिकी रचनावां करी, बै बखत–बखत पर उण समै रा छापां में छपती रैयी। 'वैश्योपकारक' में छपी शिवचन्द्र भरतिया री रचनावां भी वां में सूं ही।

साहित्यिक पत्रकारिता रो दूजो दौर राजस्थानी रै पुनर्जागरण में लाग्योड़ा वां विद्वानां रो सरू करयोड़ो है, जिका स्कूल कालेज री पत्रिकावां अर सोध–खोज री तिमाही–छमाही पत्रिकावां में राजस्थानी रचनावां छपवाई। बिड़ला कालेज री पत्रिका में सूर्यकरणजी पारीक अर दूजा लोगां री राजस्थानी रचनावां छपी। कलकत्तै री राजस्थान रिसर्च सोसायटी सूं, निकळणवाळै 'राजस्थान'पत्र में अर बाद में 'राजस्थानी' में भी नई–पुराणी राजस्थानी रचनावां छपी।

इण नई चाल में राजस्थान रा साप्ताहिक अर दूजा पत्रां में तो राजस्थानी रचनावां छपण लाग ई गई ही, पण 'हंस' अर 'विशाल भारत' जिसा पत्रां में भी राजस्थानी नैं जगां मिलणी सरू होगी ही। 'हंस' में तो राजस्थानी खातर न्यारा परामर्शदाता सम्पादक भी हा।

यूं फुटकर रूपसूं राजस्थानी साहित्य रै प्रकासण रो काम हिन्दी पत्रां में चालू हुगयो हो पण राजस्थानी भासा अर साहित्य री न्यारी पत्रिकावां रो सिलसिलो सायद १९५३ में 'मरुवाणी' रै साथै ई सरू हुयो। इण पत्रिका में राजस्थानी री नई-पुराणी रचनावां रै साथै–साथै सोध–खोज अर दूजा विसयां पर भी राजस्थानी में रचनावां छपणी सरू हुई। पत्रिका रा लारला १६–१७ बरसां में एकसौ सूं भी बेसी नया लेखकां-कवियां नैं प्रकासण मिल्यो अर राजस्थानी लेखकां री जमात में बढ़ोतरी हुई।

आजादी रै पछै राजस्थानी खातर काम करणिया लोगां में एक नयो जोस आयो अर कई सोध संस्थानां री थापना हुई, ज्यांरा मुखपत्रां में भी नई–पुराणी

राजस्थानी रचनावां छपण लागी । विसाऊ री 'वरदा', पिलाणी री 'मरुभारती' चोपासणी री 'परंपरा', बोरूंदा री 'वाणी' अर फेर 'लोक संस्कृति', उदयपुर री 'सोधपत्रिका', बीकानेर री 'राजस्थान भारती', बीकानेर री ही 'वैचारिकी' अर 'विश्वम्भरा', डूंगरपुर री 'वाग्वर', कोटा री 'हाड़ोती पत्रिका' अर फेर 'चिदम्बरा' आद पत्रिकावां में राजस्थानी रचनावां भी छपण लागी । स्कूलां-कालेजां री पत्रिकावां में 'राजस्थानी विभाग' सरू हुया अर वां में भी अनेक उपयोगी रचनावां छपी । इसी पत्रिकावां री सूची घणी लांबी है अर हाल इणरी पूरी छाण-बीण होणी बाकी है ।

'मरुवाणी' री सैली पर राजस्थानी रा न्यारा न्यारा छापा काढण में दूजी पहल करी रतनगढ रा किसोर कल्पनाकांत, जिका 'ओळमों' निकाळयो अर वठै रा ही अब्दुल वाहदी, जिका 'कुरजां' नांवरो छापो निकाळयो । 'कुरजां' तो एकाध अंक पछै ही बंद हुग्यो पण 'ओळमों' कदे मासिक, कदे पाक्षिक चाल्यां जावै है । 'ओळमों' रै मारफत किसोरजी राजस्थानी री जिकी जोत जगाई है, वा घणा बरसां तांई दूर-दूर ताई परगास बिखेरती रहसी । 'ओळमों' रै मारफत काव्य, कहाणी अर अनुवादां री अनेक ऊंचै दरजै री रचनावां सामी आई है । ओळमों अर किसोरजी री प्रेरणा सूं बीसां-तीसां नंया लेखक अर अनेक ग्रंथ राजस्थानी में जुड़्या है ।

बीकानेर राजस्थानी रो घर रैयो है अर अबार भी राजस्थानी रो जितो बेसी काम बीकानेर टाळ दूजी कोई जगां सायद ई होतो हुवै । इण कारण ई बीकानेर में राजस्थानी भाषा साहित्य संगम री थापना करी गई, जिको एक ठीक कदम हो । बीकानेर री सोध पत्रिकावां नैं छोड़र कई मासिक अर तिमाही पत्रिकावां भी राजस्थानी रै प्रचार-प्रसार सारू सामी आई । मूळचन्दजी 'प्राणेश' री 'जलमभोम' कई चोखा अंक निकाळ्या । काव्य, कथा, हास्य आद री कई संग्रहजोग कृतियां 'जलमभोम' री देण है । माणक तिवाड़ी बन्धु री 'मूमल' भी कई अंकां तांई आपरै ढग सूं आज रै राजस्थानी साहित्य री सेवा करती रैयी । अबार डा० मेघराज रो 'हेलो' ऊंचै दरजै री राजस्थानी रचनावां छापै है ।

जोधपुर सूं डाक्टर कल्याणसिंह सेखावत रो राजस्थानी प्रेम 'मोळखाण' नांव सूं प्रगट हुयो अर कुछ अंक देखण में आया । पारस अरोड़ा रो 'जाणकारी' भी आज रै ढंग री नुंवी कोसीस ही । 'जलते दीप' नांव सूं सामाहिक भी ठेठ राजस्थानी में समूचो निकळयो । 'ललकार' आद साप्ताहिक पत्र राजस्थानी गद्य-पद्य री रचनावां अर समीक्षावां छापता ई रैवै है ।

अभी जयपुर सूं बुद्धिप्रकाश पारीक 'ईसरलाट' नांव सूं ढूंढाड़ी-प्रधान राजस्थानी रो एक छापो निकाळ रैया है, जिणरा ५-६ अंक देखण में आया है । जयपुर

सूं 'राजस्थानी एक' अंक पछै 'राजस्थानी दो' नांव सूं एक धारावाहिक प्रकासण, जिणनैं पत्र भी कैयो जा सकै, तेजसिंह जोधा निकाळ्यो हो। तीसरो अंक निकळ नीं पायो। यां सब कोसीसां में सिरै काम है सत्यप्रकाश जोसी रो, जिका बंबई में बैठ्या 'हरावळ' नांव रो छापो निकाळ्यो अर अबार भी निकाळता जा रया है। इणनैं नंद भारद्वाज रो सहयोग भी मिल्यो अर छपाई भी जोधपुर सूं चालू हुई। छपाई-सफाई, रचनावां, विग्यापन अर आवरण आद रो नजर सूं ओ छापो सरावां जिसो है।

बंबई सूं भी पैलां कलकत्ते सूं रतनसाह अर वांरा साथी अंबू शर्मा राजस्थानी प्रचारिणी सभा रै मुखपत्र रै रूप में 'लाडेसर' निकाळ्यो, जिण री धूम राजथानी रै लूंठै हिमायती रै रूप में रैयी। कलकत्तो राजस्थानी बोलण वाला लोगां रो सबसूं बड़ो सहर मान्यो जावै। इण कारण 'लाडेसर' रो प्रकासण विसेस महत्व राखै।

'लाडेसर' स्थगित हुयां पछै अंबू शर्मा 'सरवर', 'म्हारो देस' अर 'नैणसी' नांव सूं तीन पत्र निकळवाया, जिका में सूं 'नैणसी' हाल में ई चालू हुयो है। अंबू शर्मा री कोसीसां इण बात री साख भरै कै वांरै मन में राजस्थानी खातर कीं करण री कित्ती लगन है।

राजस्थान साहित्य अकादमी रै मुख पत्र 'मधुमती' में राजस्थानी री फुटकर रचनावां छपती आई ही पण राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम री थापना रै पछै 'जागती-जोत' नांव सूं एक न्यारो तिमाही छापो अबार चालू होग्यो है, जिण रा कुछेक अंक छप्या है। कई बरसां पैलां जयपुर सूं इणी नांव रो एक दैनिक पत्र भी राजस्थानी भासा में छपतो हो।

एक और कैवण-सुणण जोग कोसीस हाड़ोती सूं प्रेमजी 'प्रेम' करी जिका चोमळ नांव सूं हाड़ोती प्रधान राजस्थानी री पत्रिका निकाळी।

राजस्थानी साहित्य नैं छापणियां इण पत्र-पत्रिकावां री मोटी जाणकारी करयां पछै असल में आ बात देखणै री जरूरत है कै राजस्थानी रो काम इण पत्रां रै मारफत कित्तो आगै बढ्यो है अर आजरी राजस्थानी नैं किण ढंग री पत्रकारिता री जरूरत है।

ओ विचार करतां वखत आपां वां पत्रां नैं तो टाळर चाल सकां, जिका पुराणै साहित्य नैं छापै या आपरी तिमाही पत्रिकावां में छड़ी-बिछड़ी आपरी या आपरा मित्रां री नई रचनावां भी छाप देवै। हिन्दी पत्रां में छपण वाली फुटकर रचनावां सूं भी आपणै विसैरो खास सम्बन्ध कोनी। विसुद्ध राजस्थानी भासा में राजस्थानी रचनावां छापण वाळा पत्रां री चरचा करणी ठीक रहसी। इण भांतरा पत्रां में मरुवाणी,

हथवळ, ओळमो, हेलो, ईसरलाट, जागतीजोत, चामळ अर नैणसी है, जिका आजरै दिन चालू है।

छापाखानां अर छापां रा काम इसा धंधा वणग्या, ज्यांरै खातर कोई खास पढ़ाई-लिखाई या कामकाजी ग्यान री जरूरत कोनी समझी गई। गळी-गळी में खुलण वाळा छापाखाना अर राजनीत रै वेग रै साथै वाढरी ज्यूं छपाई में आवण वाळा छापा इण वात रो सबूत है। आ ठीक है या बरसाती पीव ज्यूं लागै, ज्यूं ही खतम भी हुवै पण इण सूं पत्रकारिता रै धंधै में स्तर री गिरावट अर धंधै खातर लोगां री निगै में गिरावट तो आई ही है।

इण व्यवस्था रो दोस किणनैं दियो जा सकै ? या तो जुग री देण है। राजनीत री देखा-देखी जिंदगी रै हर क्षेत्र में आगै वधणै री धुन में गगळी भांतरा लोग भागादौड़ करै तो साहित्य भी अछूतो कियां रैवै। साहित्यिक पत्रकारिता रै गिरतै स्तर री जड़ में भी यो ही कारण है।

पत्र संपादक नैं जिण विसयां री चोखी जाणकारी होणी चाईजे, वांरी गिणत उतारी जावै तो सायद ही एकाध सम्पादक उण कसौटी पर खरा ऊतरै। इसी हालत में राजस्थानी री साहित्यिक पत्रकारिता रै स्तर री वात करी ही कियां जा सकै ? संपादक नैं आजरै पत्र रै उद्देश्य मुजब अर छपण वाळै अंक रो कोई खास मकसद हुवै तो उण रै मुजब भी रचनावां न केवल छांटणी चाईजै पण चला'र लिखवाणी भी चाईजै। अंक री समूची रूपरेखा वणा'र काफी पैला सूं विसय रा मानीता लोगां नै लिख'र रचनावां लिखवाणी, वांनैं जांचणी अर जरूरत हुवै तो लेखकां सूं सुधरवाणी या खुद सुधारणी तथा जरूरत मुजब फुटनोट, उद्धरण, स्केच आद सूं संपादित करणी चाईजै।

इण भांत संपादक नैं बस परतो आजरै छापै में छपणवाळी हर रचना अर उण रै विसय री मोटीमोटी जाणकारी होणी जरूरी है। संपादक रो बहुपठित अर बहु-श्रुत होणो इण वास्तै ही जरूरी है। जिका संपादक मात्र कवि, कहाणीकार या किणी विसेस सूं वांध्योड़ा अर आग्रहपूर्ण है, वै एकांगी पत्र ही निकाळ सकै, समग्र राजस्थानी नैं समेटणिया नीं वण सकै। देखण में आई है कै छंदबद्ध कवितावां में भी गति, तुक, लय आद री अनेक गळतियां छपै, जिकी न तो कवि खातर अर न संपादक खातर ही सोभा री वात कैयी जा सकै।

संपादन रो मतलब कविता, कहाणी, लेखां नैं आगै-पीछै देयर छाप देणो ही कोनी। पाठक री दिलचस्पी अर पत्र री रोचकता वणाई राखणी जरूरी है। अठै तांई भी ध्यान राखणै री जरूरत है कै क्रम सूं पढण वाळै पाठक रै मन पर एक रै पछै एक

रचना री कांई असर पड़सी । इत्ती गहराई में डूब'र संपादन करणो सूं ही पत्र आरसै खुद संपादक री ममता जाग सकै, पाठकां री बात तो बाद में हुवै ।

पत्र री रीत-नीत सूं मेळ नीं खावण वाळी रचनावां या तो छापी ही नीं जावै अर जे छापी भी जावै तो संपादकीय नजर सूं टीका-टीपणी भी सॉंड दी जाणी चाईजे, जिण सूं पाठक भ्रम में नीं रैवै ।

विसय वस्तु री बातां तो घणी है अर वां में घणी गहराई सूं जावण री जरूरत भी है, पण छपाई-सफाई अर भासा री गळतियां बाबत ध्यान देणो तो पै'लो काम है । सायद थोड़ा ही संपादक छापाखानै री कळा जाणै । कागजां रै आकार अर गुण अर छपाई री कळा री बारीकियां जाण्यां बिना संपादक चोखी छपाई किंयां करवा सकै ? सायद ही कोई संपादक ले आउट, डिजाइन अर दूजी सजावटां कानी ध्यान देतो हुवै । इसी लियाकत भी कम ही मिलै । 'ओळमों' रा संपादक किसोर कल्पनाकांत इण रा अपवाद कैया जा सकै ।

प्राय: संपादक तो सायद प्रेस में सामग्री सूंप'र निचंत हो जावै अर प्रूफ रै नांव पर जी राजी कर पत्र नैं छपवा लेवै । प्रूफ पढ़णो अपणै आप में एक कळा है अर इण कमी सूं आपणा अखबार गळतियां सूं भरया रैवै । प्राचीन साहित्य रा उदाहरण अर संस्कृत रा उद्धरण जादातर गळत छपै । इणरा खास कारण संपादकां रो खुदरो अग्यान, प्रूफ री कळा जाणण री कमी अर साथै ही लापरवाही भी है ।

ऊपरलै पानै री सजावट अर मांय भी जरूरत मुजब स्केच, चित्र आद देवण में राजस्थानी पत्रां री ओकात खास कारण है । कलेंडरां री सस्ती लाल-पीळी तस्वीरां छापणै सूं आजरै साहित्य रा पाठकां रो मन नीं रीझै । इण री बजाय तो आप क्यूं भी नीं देवो तो ठीक है । इसा ही वै पत्र भी है जिका एक ही तस्वीर नैं हर अंक में पीट्यां जावै अर इण भांत पाठकां खातर अरुचि पैदा करै । साहित्यिक पत्रां री साज-सजावट में सुरुचि होणी चाईजै अर सस्ती बजारू तस्वीरां नैं नीं छापणो ही ठीक है ।

सब सूं मोटी बात राजस्थानी पत्रां री न्यारी-न्यारी भासावां अर वांरी न्यारी-न्यारी वर्त्तनियां है । आ ठीक है कै भासा रो सरबमानीतो रूप ढळण में हाल थोड़ी ओर देर लागसी पण इण रो यो मतलब तो कोनी कै आप मन में आवै ज्यूं ही क्षेत्रीयता रै नांव पर आप-आप री बोलियां नैं राजस्थानी रै नांव पर मांडता जावो । इण होड़ अर दौड़ रो अन्त तो कदे आसी ही कोनी । आज रै जमानै में जद संचार अर संवाद रा इत्ता सारा साधन है तो क्यूं नीं मिल बैठ'र कुछेक मूळभूत फैसला कर लिया जावै, जिकां नैं सगळा पत्रां में मान्या जावै । जे या बात नीं पार पड़ी तो ढूढाड़ी, हाड़ोती, मारवाड़ी आद

री क्षेत्रीय बोलियां रा पत्रां रा दायरा आज-आपरी सीमां में ही रैसी अर समूचै राजस्थानी क्षेत्र नैं वै कदे भी कोनी पकड़ सकै ।

साहित्यिक पत्रां रा दो पहलू और भी है—एक तो वांरो आर्थिक स्वावलंबी पणो अर दूजो ठीक वखत पर निकळणो । पीसै-टकै कानी सूं किणी रै मूंडै कानी नीं देखणो पड़ै, इण वास्तै तो अखबार रा नियमित अर मोटी संख्या में ग्राहक ही होणा जरूरी कोनी पण उणरै विकास सारू विग्यापनां या और कोई भांत री मदद भी घणी जरूरी है । पत्र भलां ही साहित्यिक हो या और कोई ढंग रो, उणरो व्यावसायिक पक्ष सबळो होणो ही चायै । या कमजोरी पत्र नैं ले बैठै अर काम करणियां नैं परेसान अर निरास कर देवै ।

पत्र री नियमितता में भी पीसै-टकै री गिरती हालत कारण बणै पण पीसां होतां हुयां भी सामग्री री कमी, प्रेस री दिक्कत अर काम करणियां री हीन रै कारण नियमितता में खलल पड़ती देखी है । प्राय: पत्रां रो संपादन सेवा भाव सूं कियो जावै या फेर संपादक-संचालक उणनैं धंधो बणायो रावै । हर काम खातर न्यारो अर विसय रो जाणकार आदमी जरूरी है अर वो भी आर्थिक सबन्ध रै आधार पर आज रै जमानै में कोई भी साथी सूं लगातार सेवा री उम्मीद करणी या मामूली मानदेय पर काम लेणो ठीक कोनी । ठीक-ठाक महनतानो मिल्यां ही काम में दिलचस्पी बणी रैवै । इणि सूं पहलां आदमी री निजी जरुरतां कानी ध्यान देणो पड़ै । ठीक मेहनतानै पर इणि सान्न संपादक या व्यवस्थापक मिलणो जित्तो सरल है वो मामूली मानदेय पर संभव कोनी । संपादक एकलो ही प्रूफ रीडर, पत्राचार करणियो, हिसाब-किताब मिलाणियो, डिस्पेच करणियो अर 'पीर-बवरची-भिस्ती-खर' बणै, या बात बेसी दिन निभै कोनी । विग्यापन खातर भी अनुभवी सहायक री जरूरत है ।

इण रो मतलब यो कै पत्र-प्रकासण नैं बाकायदा धन्धै रै रूप में चलाणो पड़ै अर इण खातर पूंजी चायै । साल भर रा अगाऊ दाम अर काम करणिया लोगां विना जिका छापा सरू कर्‌या जावै, वे अकाळ मौत मरै तो कोई अचरज री बात कोनी । अखबार रो पै'लड़ो अंक जिसो छपै, उण सूं इधका अंक लगो-लग नगत-सिर निकळता जावै, जद ही लोगां रो विसवास जम सकै अर विसवास सूं ही आगै री नींव बणै ।

साहित्य रै नांव पर जठै तांई गरिष्ट सामग्री दी जाती रहसी अर साधारण साहित्य प्रेमी रै मनोरंजन री चीजां कम रहसी तो छापो जादा दिन कोनी चालै । साधारण साहित्य प्रेमी जिण में रस ले सकै, उण ढंग रै साहित्यिक पत्रां रो ही भविस्य है, बाकी तो कुछेक लोगां रै मन बहलाव री चीज ही बण्या रह सकै ।

म्हारो अनुभव या बतावे कै डिमाई अठपेजी रा अड़तालीस पानां रो अखबार नेम सूं निकाळणै खातर भी छपाई, कागज, ब्लाक, जिल्द, डिस्पैच पर कुल मिला'र एक हजार प्रतियां रा एक हजार रुपिया बैठें। अर जे लेखकां नैं थोड़ो-घणो भी देवो तो कम सूं कम २५०) और जोड़ लेवो। इण रै पछै संपादक, लिपिक, मकान किरायो, डाकखर्च, स्टेशनरी, टाइपखर्च आदरो मासिक खर्च कम सूं कम ५००) महीनो और लगावो। यूं आपनें १७५०) मासिक रै हिसाब सूं साल रा २१०००) रुपिया तो पहलां चाईजै ही। कागज री एडवांस खरीद, प्रेस नैं पेसगी, विसेसांकां खातर न्यारो खरच आद अनेक बातां पर ध्यान देणो पड़ै। आज कुणसो इसो पत्र है, जिण रै कनैं इसा साधन है। हां, अकादमी री बात टाळ देवो।

जद या व्यवस्था नीं है तो फेर जियां-कियां काम धिकाणो पड़ै अर फेर सगळी सिकायतां फिजूल है। इसी हालत में तो अखबार चालता रैवै या ही अचरज री बात है। सरकारी एक मुश्त खरीद री सभावना हर बरस संभावना वणी रैवै अर विग्यापनां रो भी कोई पक्को ठोड़-ठिकाणो कोनी। आज विग्यापन भी साहित्यिक पत्रां सारू तो महरबानी री चीज़ ही है। वां कनैं न तो कोई भांत रो दबाव है अर न इसी मन बहलाव री सामग्री, जिण सूं विग्यापन देवण-वाळा आपरो फायदो देखै। असल में साहित्यिक पत्रां रो भविस्य चोखो कोनी कैयो जा सकै। अमरीका जिसा संपन्न देसां में भी साहित्यिक पत्र बन्द हुवता रैवै। इण वास्तै पत्रां नैं निरा साहित्यिक नीं राख'र मिल्या-जुल्या वणाणा चाईजै, जिण सूं परिवार रा सगळा सदस्य उण नैं रुचि सूं पढ सकै। जिण पत्र री उडीक पाठका नें नीं लागी रैवै, वांरै चालता रहणै में संका ही समझो।

दूजी बात साहित्यिक पत्रां रै उद्देश्य री है। प्राय पत्र जो भी सामग्री भेळी हुवै, उण नें एक अंक में छापण नैं ही संपादन समझै। वांरी कोई आपरी नीति कोनी। ज्यादा सूं ज्यादा नयै-पुराणै ढंग रै साहित्य रा दो खेमा वण्या दीखै। उणां में भी नये खेमै रा संपादक बस-पड़तां पुराणै खेमै रा लोगां री रचनावां कमती छापणी चावै। इण सूं बेसी कोई नीति वां कनै कोनी। वै कुछेक लोगां नैं या आपरी मित्र मंडळी रा लोगां री रचनावां नैं छापणै में ही सफळता मानै।

आज रै राजस्थानी साहित्य नैं जनरुचि नैं पकड़ण री जरूरत है। जे राजस्थानी बोलणियो आम आदमी आज रै साहित्य नैं नीं समझ सकै अर उण में रस नीं ले सकें तो उण साहित्य सूं कांई फायदो? फेर वांरै भावै साहित्य जिसो राजस्थानी में है, बिसो ही हिन्दी में। राजस्थानी भासा रै प्रचार-प्रसार रै मूळ में या घणी बड़ी बात है कै उण नैं राजस्थान रै आम आदमी री भासा बणनो है। जे इण भावना री

रखवाळी नीं करी गई तो सगळो कातयो-पीन्यो कपास हो समझो । फुटकर लोगां री साहित्यिक-नांवधारी पोथ्यां छापणै अर वांनै स्कूलां-कालेजां, वाचनालयां री आलमारयां में धूळ री परतां ओढ'र पटकी रैवण देणै रो ही काम हो तो राजस्थानी खातर इसा रोळा करणा बेकार हा । जिकी वात पोथ्यां पर लागू हुवै वा ही पत्रां पर । पत्रां नै भी इसी रचनावां सूं वचणो चाईजै । साहित्य जे जनता सूं दूर सरकतो जासी तो जनता आजरा 'गुलसननंदा' ढूंढ लेसी । इण में जनता रो कोई दोस नीं ।

या वात पत्र-पत्रिकावां रै उद्देश्य बावत चरचा करतां कहणी पड़ी । भासा रै साथ ही विसय री वात भी है । रचनावां रा विसय भी जनता रा मन भाया पर रात-दिन री समस्यावां रा हुवै, जद ही लोग वांनै चावसूं पढै । घणकरा लेखक आपरी रचनावां में आम आदमी रो दरद दिखाणै री वात तो करै पण वो दरद वांरी भासा अर भावां नै प्रकट करणै री सैली में दब-चिप'र घुट'र मर जावै, पाठकां तांई पूग ही कोनी सकै । इण सूं एक वात साफ है कै जनता रो साहित्य अर साहित्यकारां रो साहित्य-दो न्यारी-न्यारी चीजां है । जनरुचि नै मांजणी अर ऊंची उठाणी जे साहित्यकारां रै वणती में नीं आई तो घोर घणा ही दूजा रस्ता है, जिणांसूं नीचै दरजै री हळकी चीजां वां कनै पूग जासी । राजस्थानी रा पत्रां नै इण वात कानी खास ध्यान देणो है ।

सवसूं वड़ो सवाल है—भासा री ओकरूपता । कोई भी क्षेत्रीय बोली नै दावणो या दूजै क्षेत्र री वोली नैं उण पर लादणो तो ठीक नीं है, पण संपादक नै भविस्य कानी निजर राख'र इसै तरीकै सूं न्यारा-न्यारा क्षेत्रां रा लेखकां री बोलियां नै धीरै-धीरै मोड़ देणो है, जिण सूं वै जी दोरो करयां विना ही राजस्थानी रै ओकरूप में मिल जावै ।

यो काम घणो नाजुक अर घणी ध्यावस रो है । भासा नै सुधारणी अर उण रो रूप संवारणो कोई मामूली काम कोनी । जिको संपादक यो काम कर सकसी, वो ही राजस्थानी नै वणाणै रो सेवरो वांधसी । दुरभाग सूं बहोत थोड़ा राजस्थानी लेखक भासा रै आपरै आग्रह नै छोड़ सकै । वै समझै वै लिख देसी, जिको ही स्टैण्डर्ड भासा वण जासी । यो सायद वांरो भरम ही है । यो काम तो संपादक करसी, जिको राजस्थानी रो कोई रोजीना रो छापो काढसी, मासिक या साप्ताहिक पत्र सायद यो काम कोनी कर सकै ।

राजस्थानी लोकसाहित्य रो संग्रह: संपादन अर विवेचन

श्री दीनदयाल ओझा

राजस्थानी लोक-साहित्य रै संग्रह, संपादन अर विवेचन रो काम तो उण दिन सूं सुरु हुयो हो, जिण दिन सूं राजस्थान रै वैवासी भाई-बैहणां अर मातावां इण गीतां नै चुण-चुण याद करणा सुरु किया, आछै-आछै गीतां री चरचा कर ब्याव-मेळा, देवी-देवताओं आदि रा गीत न्यारा-न्यारा किया। पण इण सगळै काम रो ओपतो अर विधिवत् काम कद सुरु हुयो, इण काम रै लारै किण री प्रेरणा ही, सुरु में किण-किण साधकां इणनै आगै बधायो आदि-आदि सवाल, लोक-साहित्य रै संग्रह, संपादन अर विवेचन री चर्चा करती वेळा सहज भाव सूं पैदा हुवै।

इण सवालां रै उथळै में जद लारलै बरसां में करियोड़ो काम देख्यो जावै तो इसी मालूम पड़ै कै लोक-साहित्य माथै काम करण री प्रेरणा भारत रै विद्वानां नै अंग्रेजी विद्वानां सूं मिळी। अंग्रेजां रै सासन में भारत में ऊंचै-ऊंचै पदां पर जिका अंग्रेज अफसर अर ईसाई-पादरी समय-समय माथै आया, वां लोक-साहित्य पर काम कियो। इणरै बाद अंग्रेजी विद्वानां रै सागै-सागै केई भारतीय विद्वानां पण लोक साहित्य माथै सरावण जोग काम कियो। पण ओ सगळो काम अंग्रेज़ी भाषा में हुयो अर इणरो पढणो-समझणो पढे-लिखे लोगां-तांई सीमित रैयो।

हिन्दी में सुरंगै ढंग सूं लोक साहित्य नै राखण रो पुखता अर सवळो काम श्री रामनरेश त्रिपाठी 'कविता-कौमुदी' रै पांचवें भाग (सन् १९२६) में कियो। इण दिसा में राजस्थानी लोक-साहित्य री दीठ सूं 'मारवाड़ी गीत संग्रह' राजस्थान रै रैवा-सियां अर प्रवासियां-सारू घणा प्रेरणादायी रैया। कलकत्ते में श्री रामदेव चोखाणी, श्री रघुनाथप्रसाद सिंघाणिया अर श्री भगवतीप्रसाद रै प्रयत्न सूं "राजस्थान रिसर्च सोसाइटी" री थरपना हुई। इण सोसाइटी सूं "राजस्थान" नाम री शोध-पत्रिका रो

प्रकाशन हुयां, जिण में लोक-साहित्य नै विधिवत् स्थान मिलण लागो। सर्व श्री नरोत्तमदास स्वामी, मुरलीधर व्यास, स्व० ठाकुर रामसिंह, स्व० सूर्यकरण पारीक, अगरचन्द नाहटा आदि-आदि लोक-साहित्य रै मोकळै हेताळुआं इण पत्रिका रै मारफत अनेक राजस्थानी लोकगीत, लोककथावां, लोकोक्तियां अर मुहावरा छपवाया ।

इण रै बाद ज्यूं-ज्यूं भारत रै दूजै प्रान्तां में लोक-साहित्य रो पुख्तो काम हुवण लागो, त्यूं-त्यूं राजस्थान में भी चारूं दिशावां में लोक-साहित्य रो काम चालू हुयो।

इण सगळै काम नै आलोचना री दीठ सूं तीन वर्गां में बांट्यो जाय सकै है:—

१. व्यक्तिगत रूप में—जिण लोगां अन्तः प्रेरणा सूं बिना किणी संस्था री सहायता रै लोक-साहित्य रै संग्रह, संपादन अर प्रकाशन रो काम कियो, वां रो काम इण प्रयास रै अन्तर्गत राख्यो जाय सकै ।

२. संस्थागत रूप में—राजस्थान रै साहित्यानुरागियां राजस्थानी लोक-साहित्य री दिसा में काम करण-सारू कई संस्थावां री थरपना करी अर उण संस्थावां रै माध्यम सूं लोक-साहित्य रो संग्रह, संपादन अर प्रकासन हुयो ।

३. शोध रूप में —जद सूं लोक-साहित्य नै विश्वविद्यालयां में भी स्थान मिलण लागो, मोकळै विद्वानां आपरै शोध प्रबंधां अर लघु-शोध-प्रबंधां रो विषय लोक-साहित्य लियो अर उण माथै 'डाक्टर' री उपाधी प्राप्त करी ।

व्यक्तिगत प्रयास रै रूप में अनेक साहित्य-प्रेमियां काम कियो । वां मे सर्व श्री खेताराम माळी,[1] मदनलाल वैश्य,[2] निहालचन्द वर्मा,[3] तारानन्द ओझा,[4] जगदीशसिंह गहलोत,[5] सागरमल गोपा,[6] आदि-आदि रा नाम खास तौर सूं उल्लेख-जोग है । इणरै बाद सर्वश्री नरोत्तमदास स्वामी, ठा. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, मुरली-धर व्यास, विद्याधर शास्त्री, डा० मनोहर शर्मा, रावत सारस्वत, अगरचन्द नाहटा, डा० कन्हैयालाल सहल, रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, गणपति स्वामी, गोवर्धन शर्मा, श्रीलाल मिश्र, दीनदयाल ओझा, मोहनलाल पुरोहित, कोमल कोठारी, विजयदान देथा, डा० पुरुषोत्तम मेनारिया, डा० महेन्द्र भानावत, गोविन्द अग्रवाल आदि-आदि मोकळा लोक साहित्य मर्मज्ञ आगै आया अर इण विद्वानां लोक-साहित्य री विविध विधावां माथै सरावण-जोग काम कियो पण समीक्षात्मक दृष्टि सूं देख्यो जावै तो घणकरै विद्वानां रो ध्यान लोक-साहित्य री वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति कानी कम रैयो अर परिचयात्मक दृष्टि सूं ई घणो काम हुयो ।

जिण संस्थाआं रै सबळै सायरै लोक-साहित्य री मोकळी सामग्री प्रकाश में आई, उण संस्थावां में राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता, बिड़ला ऐज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलाणी सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर, साहित्य संस्थान उदयपुर, भारतीय कला मण्डल उदयपुर, राजस्थान भाषा प्रचार सभा जयपुर, राजस्थान साहित्य समिति बिसाऊ, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर हिन्दी विश्वभारती, बीकानेर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) उदयपुर, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर, रूपायन संस्थान बोरूंदा (जोधपुर), राजस्थान संस्कृति परिषद् जयपुर आदि-आदि रा नाम उल्लेख-जोग है ।

इण संस्थाआं रै सगळै प्रकाशित साहित्य रो मोल-तोल समीक्षा री दीठ सूं कियो जावै तो आ बात कैई जाय सकै कै घणकरी संस्थाआं लोक-साहित्य रो संकलन, संपादन अर प्रकाशन रो कार्य तो जरूर कियो, पण उणरी आत्मा रो परिचय करावण वाळो काम केई संस्थाआं आप-आपरै प्रकाशित पत्रां रै विशेषांकां रै सायरै कियो। उदा-हरण-स्वरूप मरुभारती, परम्परा, वरदा, मरुवाणी, रंगायन, राजस्थान भारती, वाणी अर संस्कृति आदि-आदि रा विशेषांक इण दीठ सूं उल्लेख जोग है । इण विशेषांकां में राजस्थानी लोक साहित्य री समीक्षा राजस्थान री संस्कृति अर आत्मा रै परिप्रेक्ष्य में हुई है । राजस्थान रा ई नहीं, भारत रै दूजै प्रान्तां वाळां भी इण विशेषांकां री मोकळी सरावणा करी है । जरूरत है इण तरै रै विशेषांकां नै और आछै रूप में अर विविध विधावां माथै निकाळण री ।

'डाक्टर' री उपाधि अर एम० ए० री परीक्षा में आछा अंक प्राप्त करण-सारू लोक साहित्य रै विविध विषयां माथै मोकळै शोधार्थियां शोध-प्रबन्ध अर लघु-शोध-प्रबन्ध लिख्या । इण दिशा में डा० कन्हैयालाल सहल डा० महेन्द्र भानावत, डा० राम-गोपाल गोयल, डा० भगवतीलाल शर्मा, डा० कन्हैयालाल शर्मा आदि-आदि रा नाम गिणाया जाय सकै है । इण विद्वानां कहावतां, रम्मतां, लोकगीतां, प्रेमाख्यानां अर लोक साहित्य री दूजी मोकळी विधाआं माथै ऊंचे स्तर रो काम कियो ।

समीक्षात्मक व्याख्या री दीठ सूं मरुभारती, शोध पत्रिका, राजस्थान भारती परम्परा, वरदा, विश्वंभरा, वैचारिकी रै अलावा समय-समय माथै मरुवाणी, ओळमों, रंगायन आदि-आदि पत्रां में भी आछा लेख लोक साहित्य रै विविध विषयां माथै प्रका-शित हुया । इण पत्र पत्रिकावां रै अलावा भारत री महत्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिकावां-सम्मेलन पत्रिका. नागरीप्रचारिणी पत्रिका, आजकल, परिषद् पत्रिका, हिन्दुस्तानी आदि-आदि में भी राजस्थानी लोक-साहित्य री मोकळी सामग्री प्रकाश में आई । प्रकाशित

ग्रन्थां री तुलना में पत्र-पत्रिकावां में छपण वाळी सामग्री खास तौर सूं सरायण जोग अर रसमग्न करण वाळी रैई ।

आज इण सगळी जाणकारी रै संदर्भ में जद राजस्थान रै विद्वानां द्वारा हूवण वाळै लोक-साहित्य रै संग्रह, सम्पादन अर प्रकाशन पख माथै विचार कियो जावै तो आ वात मालम पड़ै कै लोक-साहित्य रो विषय घणकरै लेखकां द्वारा घणो महत्व रो नहीं समझ्यो जाय रैयो है ।

आ वात खास तौर सूं ध्यान राखण जोग है कै लोक-साहित्य रो विषय घणो गहरो है अर इण माथै काम करण वाळै रो अध्ययन भी घणो गहरो हुवणो चाईजै । साथै ई राजस्थान री संस्कृति अर उणरी आतमा रो सवळो परिचय हुवणो भी जरूरी है। जिका विद्वान इण दिशा-कानी ध्यान राख काम कर रैया है वां रो काम घणो आछो सामनै आय रैयो है। जे लोक साहित्य रो विषय गुजरात अर बंगाल प्रान्तां री तरै विश्वविद्यालयां में राख्यो जावै तो इण रो अध्ययन आछी तरै हुय सकै अर इण माथै वैज्ञानिक पद्धति सूं भी काम उजागर हुवै । विश्वविद्यालयां में लोक साहित्य रो पठन-पाठन नहीं हुवण सूं जिका पुख्ता विद्वान इण माथै सामनै आवणा चाईजै, विसा आय नहीं रैया है ।

इण दिशा में 'फील्ड वर्क' हुवणो जरूरी है । शोध-प्रबंधां री तरै लघु शोध प्रबंध लिखण वाळा नै भी 'फील्ड वर्क' करणो जरूरी हुवणो चाईजै, जिण सूं ग्राम जीवण में बिखर्योड़ो लोक साहित्य सबंधी मोकळी सामग्री चोड़ै आय सकै अर प्रकाशित सामग्री री पुनरावृत्ति समाप्त हुय सकै ।

आज जरूरत इण वात री है कै लोकसाहित्य री तलस्पर्शी जाणकारी वैज्ञानिक तरीकै सूं सगळां रै सामनै आवै। आ तद ई सम्भव हुय सकै, जद कै विश्वविद्यालयां में इणरो पठन पाठण हुवै अर इण विधा माथै काम करणिया विद्वान खूब अध्ययन कर नित नूंवीं सामग्री गांव-गांव घूम प्रकाश में लावण खातर निरन्तर रात-दिन मेहनत, करता रेवै ।

किणी भी प्रान्त रो लोक साहित्य उण प्रान्त री आतमा हुवै । जिण तरै अेक साधक आतमा रो साक्षात्कार घणी सवळी साधना रै पछै कर सकै ठीक उणी तरै एक विद्वान लोक-साहित्य रो ग्यांन घणै अध्ययन रै पछै पावै । लोक-साहित्य रै लेखक नै इतिहास, संस्कृति, भूगोल, अर उण प्रान्त रै रीति-रिवाजां रो गहरो ग्यान हुवणो चाइजै । इणरै अभाव में कोई भी लेखक लोक-साहित्य रो सरायण जोग काम नहीं कर सकै ।

लोक-साहित्य रै लेखक-सारू आ बात भी ध्यान में राखणी जरूरी है कै मैं कोई इसी जाणकारी तो नहीं देय रैयो हूं, जिण री जाणकारी म्हारै सूं पैली-आळा लेखक अथवा लोक-साहित्य साधक दे चुक्या है। नूंवी सूं नूंवी जाणकारी साहित्य क्षेत्र में नहीं आवै, तद तांई कोई खास बात नहीं बणै। इण—सारू लोकजीवण सूं गहरो संबध, उण रै रीति-रिवाज, आस्था-विश्वास, ओढण-बिछावण, खान-पान, बोल-चाल आदि-आदि रो ग्यान जरूरी है ।

जे राजस्थान में लोकसाहित्य री चर्चा करी जावै तो चारूं कांनी सूं अेक आवाज आवै कै राजस्थान रै चारूं खूंट लोक-साहित्य रो संग्रह कार्य हुय रैयो है। सगळी संस्थावां आप-आप री दीठ में लोक-साहित्य रो काम कियो है अर कर रैयी है। पण लारलै दस वरस रै काम रो लेखो संभाळचो जावै तो निराशा ही हाथ आवै जद कै आज सूं वीस वरस पैली जिकी सामग्री लोक-साहित्य रै रूप में सामणै आई, उणमें नवीनता ही। गुणी विद्वानां लोकजीवण सूं उण सामग्री नै भेळी कर साहित्य मंच माथै राखी। पण आज सही रूप में देख्यो जावै तो राजस्थान में संस्थावां तो मोकळी है पण गांव गांव घूम-घूम लोक साहित्य नै साहित्यिक-मंच माथै राखण वाळी थोड़ी इज है। संग्रह कार्य में स्थान-परिवर्तन तो आज जरूर हुय रैयो है पण नित नूंवी सामग्री सूं भंडार नही भरीज रैयो है ।

इण बात नै स्पष्ट आखरां में यूं भी क्यो जाय सकै कै जिका विद्वान अर जिकी संस्थावां लोक-साहित्य रै संग्रह रो काम कर रैया है, वां रै लेखकां रो गांव—गांव सूं न तो गहरो नातो है अर न जण-जीवण सूं रागात्मक संबंध ही। लोक-साहित्य रो संग्रह करणवाळा घणकरा विद्वान नगरां रा रैवासी है। गांवां में जावणो वां रै बस री बात नहीं। इण खातर ओ संग्रह-कार्य ऊपरी तोर सूं चर्चा रो विषय भलै ई बण जावै पण भंडार भरीजतो नहीं लाग रैयो है।

असल में लोक-साहित्य रो काम करण वाळी संस्थावां री आर्थिक स्थिति भी इसी नहीं है कै उण रा कार्यकर्ता गांव-गांव जायर लोक साहित्य री नित नूंवी सामग्री भेळी कर लावै। संग्रह-कार्य करावण सारू आज जिण रूप में सरकारी अनुदान इण संस्थावां नै मिलणो चाईजै, उणरी कमी है। विद्वानां री आ क्षमता दिन प्रति दिन घटती जाय रैयी है कै वै गांव-गांव घूमर लोक साहित्य री नित नूंवी जाणकारी प्राप्त करै। इण दिशा में जन-जीवण रो सवळो, सखरो अर जीवन्त अध्ययन करावण-सारू नये संदर्भां में सरकार अर संस्थावां रो परस्पर सहयोग जरूरी है। लोक साहित्य रो संरक्षण भी राष्ट्रीय नीति री तरै हुवणो चाईजै। जिण भांत पुराणा खंडहर अर सिलालेख

इतिहास री साख भरै, उणीज भांत लोक-जीवण रै हियड़ै री धड़कन नै सुणावणवाळा अे लोक गीत अर लोक कथावां ईज है। राष्ट्र री इण निधि रो संरक्षण आज रै प्रजातंत्र में हुवणो जरूरी है।

जे इण बातां कानी ध्यान दियो जावै तो लोक-साहित्य रो संग्रह कार्य आछो ओपतो अर नित नूंवो हुय सकै। अठै आ बात भी बतावणी जरूरी है कै लोक-साहित्य रो संग्रह किण पद्धति सूं कियो जावै, इण पद्धति रो ग्यान हुवणो भी जरूरी है। आज इण विषय रो किणी भी विश्वविद्यालय में पठण पाठण, पाठ्यक्रम नहीं हुवण सूं लोक-साहित्य में जिकी वैज्ञानिकता आवणी चाईजै, वा नहीं आय रैयी है। गुजरात आदि प्रान्तां में जठै लोक साहित्य रो विश्वविद्यालयां में विषय है, वठै लोक-साहित्य रो आछो काम हुय रैयो है। आज जे राजस्थान रै विश्वविद्यालयां में इण विषय रो ग्यान कराणो प्रारंभ कियो जावै तो अठै भी आछो कार्य हुय सकै।

लोक-साहित्य रो प्रकासण आज दो रूपां में सामनै आवै— (१) स्वतंत्र पुस्तकां रै रूप में अर (२) पत्र-पत्रिकावां में लेखां रै रूप में। लोक-साहित्य री जिकी प्रकाशित पुस्तकां सांमनै आय रैई है, वां पुस्तकां में पचासां गीत गेड़ै है, जिका पैली घण-करी लोकगीतां री पोथ्यां में प्रकाशित है। इसै गीतां रो नूंवै प्रकासणां में पढ़णा प्राप्त करणै री दीठ सूं तो आछो काम हुय सकै पण लोक साहित्य रो प्रकासण नूंवी सामग्री रै सागै हुवणो चाईजै-इण बात री पूर्ती में नहीं कर सकै। जे पुराणै गीतां रो ईज प्रका-सण करणो है तो उण गीत संग्रह रो दूजो संस्करण निकाळयो जाय सकै। नूंवै लोक गीत लोक कथा संग्रह रै प्रकासण में नूंवा गीत, नूंवी कथावां हुवणी चाईजै।

जठै तांई पत्र-पत्रिकावां में लोक साहित्य संबंधी सामग्री रै छपण रो सवाल है, मोकळी रचनावां अर लेख पत्र-पत्रिकावां में छपै, नित नूंवा लेखक भी सामनै आवै पण जद लेखां नै पढ्या जावै तो गीत सागी रा सागी मिळै, फगत पांच-दस ओळयां लेखक आपरी नूंवी जोड़ देवै। आ प्रवृति भी सरावण-जोग नहीं कैई जाय सकै। लेखक कोई नूंवो गीत, नूंवीं लोक कथा, नूंवी कहावतां ले उणांनै पत्र पत्रिकावां में छपावै अर उणांरी पूरी समीक्षा करै जणै तो कोई लेख अथवा रचना री सार्थकता है, नहीं तो इण लेखां री कंई जरूरत ?

हरख री बात है कै अनेक विद्वान पी-एच० डी० री उपाधि-सारू लोक साहित्य संबंधी विषय लेवै अर शोध-प्रवन्ध प्रस्तुत कर डाक्टर बण जावै, पण देखणो ओ है कै वांरा शोध-प्रवन्ध लोक साहित्य री नूंवी जाणकारी भी देवै है या छाप्योड़ी सामग्री नै अठीनै-वठीनै सूं अेक ठौड़ जोड़र राख देवै है ? साच तो आ है कै घणकरा विद्वान

जिका शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करै, छपी-छपाई सामग्री रो ईज घणोसोक उपयोग कर आपरो शोध-प्रबन्ध पूरो कर लेवै। शोध-प्रबन्ध लोक-साहित्य री जिण विधा माथै है, उण विषय नै घणासाक निर्देशक अर परीक्षक भी न जाणै अर न समझै। वै खाली भाषा शैली भलै ई देख लेवै पण दूजी बातां तो नहीं देख सकै। इणरो परिणाम ओ हुवै कै लोक-साहित्य री सामग्री रो शोध प्रबंधां में भी पिष्टपेषण ईज हुवै। नूंवी सामग्री तो थोड़ी ही सामनै आवै। पण इणरो ओ मतलब नीं है कै सगळा ही शोध प्रबंध एक सरसा ईज है।

राजस्थान लोक-साहित्य री दीठ सूं घणो समृद्ध है। मात्रा अर गुण रै विचार सूं राजस्थानी लोक साहित्य उच्चकोटि रो है। जैसलमेर, उदयपुर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, जालोर आदि-आदि घणकरा इसा क्षेत्र है, जठै रै लोक-साहित्य रो अध्ययन नहीं ज्यूं हुयो है। आज जे राजस्थान सरकार, केन्द्रीय सरकार अर विश्वविद्यालय आप-आप रै स्तर माथै संस्थावां अर विद्यार्थियां नै सुविधावां जुटावै तो इण क्षेत्रां री घणी आछी सामग्री साहित्य जगत रै सामनै आय सकै। लोक साहित्य रै न्यारै-न्यारै विषयां माथै शोध करणियां गुणी विद्वान भी अर्थाभाव रै कारण गांव गांव जाय लोक साहित्य री सामग्री एकत्रित नहीं कर पाय रैया है। जे लोक साहित्य रो प्रान्तीय स्तर माथै मंच स्थापित हुवै, इणरो प्रतिवर्ष अेक जलसो हुवै तो इण दिशा माथै हुयोड़ी अथवा हुवणवाळी प्रगति रो लेखो-जोखो हुय सकै। आज इसे मंच री थरपणा हुवणी चाईजै, जिण माथै लोक-साहित्य रै विविध विषयां री चर्चावां, पत्रवाचन, आगै रै काम री रूपरेखा अर न्यारी न्यारी संस्थावां जिकी लोक साहित्य माथै काम कर रैयी है, उणांरी उचित परख भी हुय सकै।

अन्त में आ ही बात कैई जाय सकै कै लोक साहित्य रो विषय हळको-फुळको न समझ्यो जावै अर इण रै संग्रह, अध्ययन अर सपादन रै सागै-सागै प्रकाशन रो काम भी वैज्ञानिक पद्धति सूं कियो जावै, जणै ही इणरो साचो मोल सामनै आय सकै है।

बिन्नाणियां रो चौक
बीकानेर (राजस्थान)

संदर्भ

१. मारवाड़ी गीत संग्रह। २. मारवाड़ी गीत माला। ३. मारवाड़ी गीत।
४. मारवाड़ी स्त्री गीत संग्रह। ५. मारवाड़ के ग्रामगीत। ६. राजस्थानी संगीत।

राजस्थानी मांय अनूदित साहित्य

पं० श्रीलालजी मिश्र

कोई भाषा कितरी समृद्ध है, ईं रो ग्यान वीं री मौलिक रचनावां सूं तो होवै ई है पण संसार रा मानीता ग्रन्थां रो अनुवाद भी वीं भाषा रै भण्डार नै बधावै है। ईं वात नै ध्यान में राखर अनुवादक आपरी भाषा में ईं अभाव री पूर्ति करै।

अनुवादक रो काम करड़ो घणो है। वींरो दोनूं भाषावां रो पूरो ग्यान तो होणो ई चाईजै, सागै ई अनुवाद करण री कळा रो भी वींनैं पूरो ग्यान होणो जरूरी है। अनुवाद अनुवाद ई होवै, न ज्यादा न कम। स्वतन्त्र अनुवाद मूळ नै विगाड़ दे अर सवद री जगां खाली सवद भरण रो ई ध्यान रैवै तो वो सरस कोनी होवै। मूळ भाव तो हर तरां कायम रैणो ई चाईजै। अनुवाद करतां मूळ भाषा रै सवदां री ध्वनि आप री भाषा में न उतार सकै तो भी मुसकल अर जे भाषा नै मेवर अनुवाद करै अर मूळ सवदां री परवा नीं करै तो भी मुसकल। यो तो पूरै बन्धन में है। फेर पद्य रो अनुवाद पद्य में करणो तो और भी कठन है।

खुसी री वात है कै ईं सारी कठिनाइयां नै ध्यान में राखतां-थकां राजस्थानी रा सेवक अर विद्वान आपरो फर्ज समझर मायड़-भाषा रै भण्डार नै बधावण री पाछलै बीस-पच्चीस वरसां में पूरी चेष्टा करी है अर अनेक महत्वपूर्ण अनुवाद आगै आया है। आगै भांत-भांत रै ग्रन्थां रै राजस्थानी अनुवादां री जाणगी रागर उणां पर विचार कर्‌यो जावै है।

काव्य

मेघदूत—पैलां-पैल मेघदूत रो अनुवाद जोधपुर रा श्री नारायणसिंह भाटी रो 'प्रेरणा' मासिक पत्रिका रै 'मेघदूत अंक' में प्रकाशित हुयो (संख्या जुलाई-अगस्त १९५३), जिको वाद में सुतन्तर पुस्तक रै रूप में निकळ्यो। ईं रै बाद मरुवाणी दो अनुवाद श्री मनोहर शर्मा अर श्री मनोहर प्रभाकर रा आपरै विशेषांक में काढ्या।

भावानुवाद री दीठ सूं तीनूं ही अनुवाद चोखा हुया है। भाटीजी आपरै छोटै सै छन्द में मन्दाक्रान्ता जिसै वडै छन्द नै नथड़ावण री सफल कोसिस करी है, जीसूं थांरी काव्य-सगती जाहिर होवै है तो कठै-कठै पाठकां नै समझण खातर रुकणो भी पड़ै है। थांरी भाषा ठेठ आपरै छेत्र जोधपुर री होणै सूं दूसरा इलाकां रै पाठकां नै कोई-कोई सबद कठन मालम देवै। पण ईं सूं राजस्थानी री अभिव्यंजना सगती साफ परगट होवै है।

शर्माजी री भासा सेखावाटी री बोलचाल री है, जीनै समझण में कीनै भी कठिनाई नीं हुवै। प्रसाद गुण ईं में प्रधान है। मूळ रा भाव पूरा उतर्‌या है अर मूळ रै सबदां री पकड़ कठै भी कोनी छूटी। ईं सूं आं रो संस्कृत रो गैरो ग्यांन साफ झलकै है।

प्रभाकरजी री भासा साहित्यिक राजस्थानी है अर भाण्डारेज (जयपुर) रा होवणै पर भी झाड़साही री कठै झळक ही है, बा पूरी कोनी छाई। आंरी सैली में सरलता रै साथै माधुर्य भी मिलसी। पैलै ई सिलोक रा तीनूं अनुवादां रो नमूनो अठै दियो जावै है, जीसूं पाठक आं रै छंद, भासा अर भाव प्रकासन री सैली री जाणकारी कर सकै।

(१) पड़ी चाकरी चूक धणी जद घणो रिसायो।
झुरती कामण छोड रामगिरि यक्ष सिधायो।।
जनकसुता रै स्नान जेथरो निरमळ पाणी।
गहरी बिरछां छांह जाय त कदे बखाणी।। —श्री भाटी

(२) कामण कै रस चूक चाकरी मान बडाई खो सारी।
एक बरस को ले देसूंटो कोई यक्ष त्याग नारी।।
बिरछां की सीळी कुंजां में रामगिरी आ वास कर्‌यो।
सीता माता कै न्हावण सैं जांकै जळ में पुन्न भर्‌यो।। — श्री शर्मा

(३) एक यक्ष अलकापुर करतो धनपत री सेवा सारी।
पण प्यारी री सुध में खोयो करी भूल कोई भारी।।
देश निकाळो मिल्यो दण्ड जद रामगिरी सरणै आयो।
जठै सघन तरु-छांह, पुण्य जळ-जनक लाडली रो न्हायो।।
—श्री प्रभाकर

'अस्तगमित महिमा वर्पभोग्येन' रो मूळ रो भाव शर्माजी नै छोडर कोई सैं भी अनुवाद में कोनी आयो। जनकतनया खातर शर्माजी री सरधालू कलम 'सीता माता' लिख्यो तो प्रभाकरजी 'जनकलाडली' लिखर ईं में ठेठ राजस्थानी रो मिठास भर दियो। भाटीजी रै 'कुरती कामण' में कितणो लाक्षणिक प्रयोग हुयो है। आं अनुवादां सूं राजस्थानी री अभिव्यजना सगती अर जीवन्तता पाठकां रै सामनै साफ-साफ जाहिर हुवै है।

एक अनुवाद श्री मांगीलाल चतुर्वेदी (मुकुन्दगढ़) भी कर्‌यो है पण वै आपरी तरफ सूं मन चायो विस्तार कर्‌यो है। ईं खातर वीं पर चर्चा करणो ठीक समझो नहीं। फेर भी (१) 'वीं सं आगै भोज भूप री पुरी उजीणी', (२) 'मीरां कै हिरदै ज्यूं आ बैठ्यो सांवरियो', (३) 'रण आंगण भांसी की सिद्धणी सी गाजेगी' आदि में वांरी मनमानी रो नमूनो देख्यो जा सकै है। श्री कन्हैयालाल सेठिया भी एक साथी रै सीर में अनुवाद करयो बतावै है। पण श्री चन्द्रसिंह राठोड़ रो अनुवाद खास तौर सूं ध्यान में राखण जोग है। आपरो अनुवाद अनुकान्त मन्दाक्रान्ता छन्द में है। एक नमूनो देखो—

मानीजे तूं, सकल जग में, जीव रो तापहारी,
कोप्यो स्वामी, विलग घण सूं, एक मेरो सनेसो।
पूगा दे तूं, वसति अलका, नाम री यक्षवासै,
बारै वां रा महल धुळिया, चांदणी ईस रूदो ॥[1]

दिलीप —'बादळी' अर 'लू' रा कवि श्री चन्द्रसिंहजी कालिदास रै रघुवंश रै तीन सर्गां रो अनुवाद दिलीप नाम सूं कर्‌यो है। ईं अनुवाद सूं पैलां ही आप सरल अर सुभाविक सैली रै कारण काफी नाम कमा चुक्या है। वा ही सैली ईं अनुवाद में है। एक नमूनो—

खड़ी देख, हो खड़्यो छांय ज्यूं, चाल पड्यां निप चालै।
बैठी देख धीर मन बैठे, उण पीयां पी ह्लालै ॥ (२-६)

काळीदास रै पूरै सिलोक रो छोटै सै छन्द में देखण लायक पूरो भाव आयो है।

---

१. देखो 'विश्वम्भरा में प्रकाशित' लेख—'कवि श्री चन्द्रसिंह राठोड़ द्वारा अनूदित काव्य' (डा० मनोहर शर्मा)

रुतसंहार — काळीदास रै ऋतु संहार रो पूरो अनुवाद श्री किशोर कल्पनाकांत 'ओळमो' रै १९६७ रै अक्टूबर-नवम्बर रा दो अंकां में छाप्यो है। किशोरजी प्रतिभावान रससिद्ध कवि तो है ई, वै कल्पना-लोक में कल्पनाकान्त भी है। आपरी कवितावां में भासा रो मिठास अर भावां री मौलिकता मिलै है। एक पूरै छन्द रो भाव गीत रै एक पूरै छन्द में ल्यायो गयो है। अनुवादक कवि सुं एकाकार होयगो है। मालूम देवै जाणै या मौलिक रचना हुवै। यो अनुवाद राजस्थानी भासा री खिमता नै ओळखावै है, इण री सामरथ री साख भरै है। किशोरजी 'कुमार-सम्भव' रो भी अनुवाद कर्यो बतावै पण अब तक देखण में नीं आयो।

ई अनुवाद रो एक नमूनो देखो; जींमें गरमी रा मार्या सै जीव कुदरती बैर भूल बैठ्या है—

अगनी सूं घबराईज्योड़ा, भुळसीज्योड़ा जीव घणा।
हाथी बळद र सिंघ सैंग ई, आज बण्या मन-मीत घणा॥
सागै भेळा हो जंगळ सूं एकण साथ पयाण करै।
नन्दी रै कांठै बाळू पर सगळा मिल बिसराम करै।
पीढ्यां तणी वैरता भूल्या, सगळा घुळमिल जावै ए।
पण आभै रो चांद सुहावण, निसभर इमरत प्यावै ए।
आई रुत ग्रीखम अलबेली,
मरवण इण रुत री बातां न्यारी
रातां में लागै घण प्यारी (ग्रीखम, छन्द २७)

पावस रुत में बादळां रा अनेक रूप मूळ अर अनुवाद में देखण लायक है—

कठैक लील, कंवळ री कूंळी पांखड़ल्यां रो पोत
कठैक दुळगी, काजळ डबली, कठैक सखरा घोत
कठैक भूरा, कठैक ऊदा, कठैक है अणमीत
कठैक गरभण रा उरजां ज्यूं पिलरीज्योड़ा पीत
च्यारूं कूंटां गिगन मण्डळ में बादळ छाया ए
रावजी चढ़िया गजमतवाळ पावणा वण भल आया ए

मेवला ढोल घुरावै है,
कै बादल जळ वरसावै है,
मगेजण पावस आ पूग्यो

रुतसंहार रै वसन्त सर्ग रो अनुवाद श्री चन्द्रसिंहजी भी कर्‌यो बतावै पण म्हारै देखण में नीं आयो।

भरथरी सतक—१. नीति, २. सिणगार और ३. वैराग, ये तीनूं सतक मरुवाणी रै वर्ष ८, अंक ४-५-६ में क्रम सूं प्रकासित हुया है। भर्तृहरि री इण अमर रचनावां नै श्री मनोहर 'प्रभाकर' राजस्थानी में प्रस्तुत करी है। अनुवाद री भासा सर्वथा सरल अर सुबोध है। हरेक संस्कृत छन्द रो पूरो भाव राजस्थानी छन्द में आयो है। नमूना इण भांत देखणं जोग है—

(नीति सतक)

मद सूं लाज, पढ्यां विन बामण, नारी गेली विना गम्भाळ।
ओछी सगत सील नसै है दुर्जग मन्त्री नसै भुगाळ॥
मीत अप्रीत, अनय सूं सम्पत, कुळ कपूत सूं, नेह विदेस।
आंधो होकै खरचण सूं धन, पूत नसै पा लाड विसेस॥४२॥

(सिणगार सतक)

मुखड़ो पूरण चांद लजावै, नैन करै कंवळां रो हास।
काया सूं कंचन सरमावै, केसां सूं भंवरां रो नास॥
निरादरै कुच गज-गण्डस्थल, भारी नितम्ब वैग रसधार।
कोमल कामणियां रा ऐ ही होवै, सहज सुभग सिणगार॥१॥

(वैराग सतक)

धरती जळ थळ रास वणै अर मेरो-मेरो मेह जठै।
सुस जावै समदर रो जळ भी, काया री के बात वठै॥१००॥

अन्योक्ति सतक—पण्डितराज जगन्नाथ रै प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भामिनी विलास' रै प्रथम उल्लास रो 'अन्योक्ति शतक' नाम सूं श्री मनोहर शर्मा अनुवाद कर्‌यो है। यो अनुवाद लेखक द्वारा सम्पादित साधना (डूंडलोद) रै दूसरै अंक में प्रकासित हुयो है। भासा एकदम सरल है अर संस्कृत रै मूळ भावां री पूरी रक्षा करी गई है। उदाहरण देखो—

नहीं आज वो सिंघ जगत में, सूनी पड़ी गुफा गम्भीर।
मोती रुळै वारणै, बोलै, हाय गादड़ा बांका वीर॥३०॥
तंतू खाया, जळ पियो, रम्यो पोयण्यां मांय।
कर्‌यो हंस, उपकार के, सरवर रो सरसाय॥४५॥

मूढ सजायो मोद में, बांदर कै गळ हार ।
चाट, सूंघ अर तोड़ कर, चढगो ऊंची डाळ ।।६४।।

करुणा लहरी—पण्डितराज जगन्नाथ रो यो अनुवाद श्री गिरधरलाल शास्त्री कर्‌यो है अर 'ओळमो' रै मई १९६७ रै अंक में छप्यो है । ईं में २० छन्द है । अनुवाद री सरल-सुगम भासा रो नमूनो देखो—

मारवाड़ री बिछी रेत ज्यूं, फैल रयो सिसार विसाळ ।
देह गेह री ममता उण में, म्रिग-तिसणा रो जळ जंजाळ ।।
छोड-छाड मनड़ो म्रिग म्हारो, करुणा रा सागर में जाय ।
बार-बार गोता लगाय नै खोवै खेद'र सांयत पाय ।।३।।

गीता—श्रीमद् भगवद्गीता रा राजस्थानी में कई अनुवाद हुय चुक्या है । श्री रामकरणजी आसोपा रो अनुवाद उल्लेख जोग है । श्री चतुरसिंहजी अनेक संस्कृत पुस्तकां रो राजस्थानी अनुवाद कर्‌यो, जिणां मांय योगसूत्र, सांख्यकारिका, महिम्नस्तोत्र अर गीता मुख्य है । श्री गुलाबचन्द नागोरी 'गीता भासा' नाम सूं गद्यानुवाद प्रस्तुत कर्‌यो । डा० मनोहर शर्मा रो संक्षिप्त अनुवाद 'श्री कृष्ण गीता' नाम सूं 'जिणवाणी' (कलकत्ती) में घणां बरसां पैली छप्यो । श्री विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश' रो अनुवाद खूब ख्याति प्राप्त करी । ईं री भासा भोत ई सरल अर सुबोध है । एक नमूनो देखो—

फळ की ईछ्या करे बिना ही, जाण करम को ही अधिकार ।
इयां करम तूं करतो ही जा, बिनां फळां को कर्‌यां विचार ।।

श्री शक्तिदान कविया 'दुर्गा सप्तशती' रो अनुवाद कर्‌यो । श्री चतुरसिंहजी इणी ग्रन्थ रो गद्य अनुवाद प्रस्तुत कर्‌यो । श्री रावत सारस्वत 'विल्हण-पंचासिका' रो सुन्दर अनुवाद कर्‌यो । इणी भांत 'पंचतन्त्र' रो अनुवाद भी हुयो है ।

ऊपर जितरै भी अनुवादां री चर्चा करी गई है, वां में सबसूं बडी खूबी भासा री सरलता री है । अनुवादकां मूळ भावां रो भी पूरो ध्यान राख्यो है । ईं कारण ये अनुवाद घणै सोवणै रूप में सामनै आया है ।

आगै प्राकृत-ग्रन्थां रै राजस्थानी अनुवादां री चर्चा करी जावै है—

काळजै री कोर—ईं में हाल री 'गाथा सप्तशती' सूं छांट्योड़ी १८९ गाथावां रो राजस्थानी अनुवाद श्री चन्द्रसिंह राठौड़ आपरै सिद्ध छन्द दूहै में कर्‌यो है । एक दूहै में एक गाथा रो पूरो भाव परगट हुयो है अर रचना मौलिक सी लागै

है। अनुवादक न्यारा न्यारा दस शीर्षक इण भांत दिया है—१. वंदणा, २. प्रकृति, ३. रूप सिणगार, ४. प्रेम, ५. विरह, ६. भीड़ पति, ७. स्वकीया, ८. परकीया, ९ नीति अर १०. अन्योक्ति। नमूनो देखणं जोग है—

आंधी फूस उडाविगो, विरखा जळ तर भींत।
देय हथेळी अंक अवधि, सायधण रही नचीत ॥४६॥
जिण अंग प्रीतम नैण जा, मैं ढाकूं वो अंग।
साथै चाहूं देख ले, राखूं इणड़ो ढग ॥७६॥

वीतराग री वाणी—ईं में डा० मनोहर शर्मा द्वारा 'राजस्थानी महावीर वाणी' अर 'राजस्थानी बुद्ध वाणी' दूहां में प्रस्तुत करी गई है। भाषा सरल है। अनुवादक 'प्राकृत' तथा 'पाली' गाथावां नै छांटर उचित शीर्षकां सागै राजस्थानी में दी है। नमूनो देखो—

महावीर वाणी

अंग अठारा धरम रा, प्रथम अहिंसा जाण।
भूत-दया, संजम सदा, सरब सुखां री खांण ॥ (अहिंसा)
लड़ तूं आपो आप सूं, और न वैरी कोय।
साध लई जे आतमा, सरब सुखी सो होय ॥ (आतमा)

बुद्ध वाणी

वैर न जावै वैर सूं, नियम सनातन एक।
वैर मिटावण प्रेम री, निस दिन पाळो टेक ॥ (यमक)
राग बराबर आग नां, मळ नां वैर प्रमाण।
भोग बराबर रोग नां, सुख ना सीळ समान ॥ (सुख)

आगै बंगला सूं राजस्थानी में हुयोड़ै अनुवाद री चरचा करी जावै है। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ री 'गीताञ्जली' रा राजस्थानी में कई अनुवाद हुया है। डा० नारायणदत्त श्रीमाली ईं रो पद्यानुवाद प्रस्तुत करयो अर श्री रामनाथ व्यास 'परिकर' गद्यानुवाद प्रकासित करायो। डा० मनोहर शर्मा रवि बाबू री १५ चुण्योड़ी कवितावां 'राजस्थानी रवीन्द्र वाणी' नाम सूं पुस्तक रूप में प्रस्तुत करी। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ री भाव भरी रचनावां नैं अनुवादकां स्वभाविक अर सरल राजस्थानी में ढाळी है, जीं री बणगट देखण जोग है। 'राजस्थानी रवीन्द्रवाणी' रो नमूनो देखो—

१. 'दयाधाम आप कुण मुनिवर, पूछी बात, दियो जद उत्तर,
'अब आयो वो मोको सुन्दर, मैं आयो, वासवदत्ता।"

२. पांख फड़फड़ा दोनूं गावै, 'आ प्यारा तूं नेड़ो आव'।
एक डरै पिंजरै सैं, दूजो, पांख-थकां अणपंखो भाव ।।
(दो पंछी सूं)

राजस्थानी में फारसी रै कई नामी ग्रन्थां रा अनुवाद भी पाछलै बरसां में प्रस्तुत करया गया है। ये अनुवाद मुख्य रूप सूं अंग्रेजी अथवा हिन्दी रै सहारै सूं सांमनै आया है, इसी बात लागै है। फेर भी अनुवाद भोत सुन्दर हुया है। आगै इणां पर उदाहरण साथै विचार करयो जावै है—

उमर खैयाम री रुबाइयां—उमर खैयाम रा दो अनुवाद 'मरुवाणी' (जयपुर) आपरै दूसरै वर्ष रै दूसरै अंक में प्रकासित करया। एक अनुवाद डा० मनोहर शर्मा (बिसाऊ) रो है अर दूसरो श्री अमर देपावत (देशनोक) रो है। डा० मनोहर शर्मा री भासा शेखावाटी री बोली सूं प्रभावित है अर प्रसाद गुण तो आं री भासा-शैली रो एक गुण ही बण चुक्यो है। ईं में आप ९० रुबाइयां रो अनुवाद प्रस्तुत कर्‌यो है। छन्दां रै क्रम में थोड़ी स्वतन्त्रता भी बरती है पण भावां रै साथै सदा बंध्या रैया है। छन्द रुबाई है, जिण में पैलै दूजै अर चौथै चरणां री तुक मिलै है। फारसी नावां रो भी भारतीयकरण हुयो है। राजस्थानी मुहावरां रो प्रयोग भी सुन्दर है। श्री अमर देपावत ७५ छन्दां रो अनुवाद करयो है। छन्द आपरो भी 'रुबाई' ही है पण तुक पैलै-दूसरै तथा तीसरै-चौथै चरणां री मिलै हैं। भाषा प्रौढ अर व्यंजनायुक्त हैं। प्रसाद गुण साथै बीकानेरी बोली रो मिठास भी है। छन्दां रो क्रम प्रायः फिट्‌जराल्ड रै मुताबिक है। आगै दोनूं अनुवादां रा नमूना दिया जावै है—

१. सूनै बन में बिरछ तळै, जे रोटी को टुकड़ो हो एक।
मादक रस को घड़ो भरयो हो, और काव्य की चर्चा नेक।
सनमुख बैठी रूपमयी तूं, गाती हो ऊंची रस राग,
तो मैं पाऊं दूर वीड़ में, नन्दन बन कै सुख की टेक ।।
(श्री शर्मा)

२. दोय कवा मिल जाती रोटी, इणी रूंख रै नीचै आज।
दाव दोय मिल जाती दारू, होतो सारंगड़ी रो साज ।।
बादीलो गा देती, मूमल, (तो) गरणा उठतो सांवण मास।
म्हारै खातर सुख वैकुंठ रो, बण जातो जंगळ रो वास ।।
(श्री देपावत)

श्री देपावत 'ए बुक आफ वरसेज' री जगां 'सारंगड़ी रो साज' प्रस्तुत करयो है, जिको विचारणीय है।

श्री गिरधारीलालजी शास्त्री भी उमर खैयाम री रुबाइयां राजस्थानी में प्रस्तुत करी है परण वैं अनेक जगां पूरी स्वतन्त्रता सूं काम लियो है।

विजय पत्र—गुरु गोविन्दसिंघजी री फारसी रचना 'जफर-नामा' रो अनुवाद श्री चन्द्रसिंघ जी राठौड़ 'विजय-पत्र' नांव सूं प्रकाशित करयो है। यो अनुवाद राजस्थानी भाषा री प्रकृति रै सर्वथा अनुकूल होवण सूं मौलिक रचना सी लागै है। नमूनो देखो—

सिमरूं ईस इणां रो, सिरजणहार।
वाण, ढाल, बरछी, मन. तेग कटार ॥१॥
नमूं ईस रण-सूरमा, मन पितामा।
ताजी हवा-चाल रा, जिण निपाया ॥२॥

ईं अनुवाद रो छन्द-विधान भी ध्यान देवण जोग है। सम्पूर्ण रचना में विजळी सी सरणावैं है। अनुवाद भोत ही सुन्दर हुयो है।

इणीज क्रम में अंग्रेजी आदि विदेसी भाषावां री कवितावां रै अनुवाद री चर्चा करणी भी उचित है। राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां में अनेक अंग्रेजी कवितावां रा अनुवाद छपता रैया है। ईं खातर 'मरुवाणी', 'हरावळ', 'जागतीजोत' आदि रा अंक देखणै जोग है। 'परम्परा' रै हेमाणी-अंक मांय तो एक सागै ई अनेक विदेसी कवियां री कवितावां रो राजस्थानी अनुवाद प्रस्तुत कर्‌यो गयो है। फुटकर अंग्रेजी कवितावां रो राजस्थानी-रूपान्तर करणै में सर्व श्री रामनाथ व्यास 'परिकर', तेजसिंह जोधा, नन्द भारद्वाज, ओंकार पारीक, डा० नागरमल सहल आदि रा नाम उल्लेखनीय है। अंग्रेज कवि ग्रे री एलेजी 'रिटन इन ए कंट्री चर्च-याडं' अति प्रसिद्ध कविता है। श्री किशनसिंघ चौहान ईं री राजस्थानी अनुवाद 'साधना' (अंक १) में 'शोकगीत' नांव सूं प्रस्तुउ कर्‌यो है। नमूनै रै रूप में पैलो छंद अठै दियो जावै है—

शोक सलामी दे र्‌यो बाजो, दिन हुव्यो आथूणी पार।
डार वखेर्‌यां रांभै चूणो, चर मुड़ियो हरिया मैदान॥
रैळघो-रैळघो हारयो हाळी, चाल्यो आरयो घर कै द्वार
सारै जग पर ईं संज्या नें, अन्धकार री चादर तांण॥

'मरुवाणी' रै दसवें वर्ष रै २, ३, ४, अंकों में श्री रामनाथ व्यास 'लेनिन काव्य कुसुमांजली' नांव सूं रूसी कवितावां रो अनुवाद प्रस्तुत करयो। ईं संग्रह में

नया-पुराणा १२ कवियां री छोटी-बड़ी २५ नेड़ी कवितावां रो राजस्थानी-रूपान्तर है । ये सारी यथार्थ री धरती पर क्रांतिकारी कवितावां है । अनुवाद मूल रूसी छंदा री पद्धति अर शैली में हुयो है । भाषा सरल राजस्थानी है । एक उदाहरण—

म्हे जाणां म्हारो भाग अधर में है
अर म्हे इतिहास रा सिरजणहार
हीमत री वखत आयगी आखर
अर हीमत म्हानैं कदे नईं छोडै ।

'मरुवाणी' में ही ईं रो दूजो खण्ड वर्ष १२ अंक ३ में निकळयो, जिण में २० रूसी कवियां री २१ कवितावां है ।

कहाणी-उपन्यास

राजस्थानी में अनुवाद रो घणो काम कविता अर कहाणी री विधावां में हुयो है । कहाणियां रा संग्रह तो गिणती रा ही है पण फुटकर अनुवाद पत्र-पत्रिकावां में बराबर छपता रैवे है । 'मरुवाणी', 'ओळमों', 'हरावळ', 'जागती जोत' आदि रै माध्यम सूं ईं दिशा में मोकळो काम हुयो है । सब सूं पैली अनूदित कहाणी-संग्रहां री बानगी देखो—

रवी ठाकर री बातां— ईं पुस्तक में राणी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत रवीन्द्रनाथ ठाकुर री २१ कहाणियां रो अनुवाद प्रस्तुत कर्‌यो है । आपरी गद्य शैली घणी महत्वपूर्ण है । नमूनो देखो—

"वा गजबण पदमा, हेमंत रुत री बांबी में पड़ी नागण ज्यूं मांड़ी दुबली ह्वियोड़ी नींद में सूती अळेंटा खाय री ही । उतराध तट माथै रेतरड़ो ई रेतरड़ो पड़ियो हो । नीं तो तिणकलियो ई ऊभो दीखतो हो, नी मिनख रो जायो । दिखणाद रा तट पै नान्हा-नान्हा गामां रा आंवां रा बाग बीं डाकण पदमा रै मूंडागे हाथ जोड़्यां थर-थर धूज रिया हा । (पृ० १०)

संसार री नामी कहाणियां—यो कहाणी-संग्रह भी राणी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत रो ही है । ईं में संसार भर रै नामी लेखकां री टाळवां, ११ कहाणियां रो अनुवाद है । भाषा रो फूटरापो तो ईं अनुवाद में भी वो हीज है ।

देस-देसांतर री बातां— ईं पोथी में रानी लक्ष्मीकुमारीजी री सुपुत्री राज्यश्री राठौड़ देस-विदेस री लोककथावां रो राजस्थानी रूपान्तर पेश कर्‌यो है । यो संग्रह बालकां खातर घणो उपयोगी है अर अंग्रेजी रै

माध्यम सूं हुयो है । भाषा सरल अर सुबोध है । एक नमूनो देखो--

'इण तरै रो सौदो तो वीं आज गुणियो, बूढळिगै घणा ही नी'रा नाख्या, पोत्यो पगां में मेलियो, आंख्यां ढबढब करवा लागगी, पण काम नीसरा । (पृ० ३२)

राजस्थानी में फुटकर रूप सूं विदेशी अर भारतीय भाषावां री अनेक कहाणियां रा अनुवाद प्रकाशित हुया है । ईं दिशा में श्री किशोर कल्पनाकांत, श्री नृसिंह राजपुरोहित, श्री ओंकार पारीक श्री रामनाथ व्यास, श्री पारस अरोड़ा, डा० सत्यनारायण स्वामी आदि रा नांव उल्लेख जोग है ।

नष्ट-नीड़— राजस्थानी में उपन्यासां री कमी है । ईं दिशा में अनुवाद भी नीं हुयो । श्री किशोर कल्पनाकान्त, रवीन्द्रनाथ ठाकुर रै नष्ट-नीड़ रो राजस्थानी रूपान्तर करयो है । आपरी कविता री भाषा में जिसी फूटरापो है, उसी भांत गद्य री भाषा में भी है । भाषा सैली देखो —

"अबार तकात तो वै दोनूं आभै रा फूल तोड़न मांय लागियोड़ा हा, पण अबै काव्य कुसुमां री खेती सरू होवगी, तो दोनू जणा दूजो गो नीं विसारग्या । पृ० १६

नाटक

राजस्थानी में नाटकां री भी कमी है । ईं दिशा में अनुवाद भी कम ही हुया है । खास तौर सूं संस्कृत अर बंगला री कुछेक रचनावां राजस्थानी मांय प्रस्तुत करी गयी है ।

शकुन्तला— यो महाकवि कालीदास रै 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' रो राजस्थानी अनुवाद है । अनुवादक है श्री गिरधरलाल जी व्यास (उदयपुर) आंरी भाषा पर मेवाड़ी रो प्रभाव है । एक नामी श्लोक रै अनुवाद रो नमूनो देखो —

अण सूंघ्यो यो फूल कमल रो, कूंळी कूंपळ अणचूंटी ।
अणवींध्यो यो रतन अमोलक, मधरी अमृत अणभूंठी ॥
अणचाख्यो यो परम पुण्य रो, फळ है रूप नहीं भूंठो ।
कुण भोगे, जो भाग्यवान, भगवान कणी नै दे तूठो ॥

मालविकाग्निमित्र—ईं कालीदास रै नाटक रो अनुवाद भी श्री व्यास जी रो ही कर्‌योड़ो है । ईं री भाषा भी मेवाड़ी ईं है ।

सपनो— यो महाकवि भास रै प्रसिद्ध 'स्वप्नवासवदत्ता' नाटक रो राजस्थानी अनुवाद है । ईं रा अनुवादक आचार्य देवदत्त नाग (जालोर) है, जो संस्कृत रा अभि-

कारी विद्वान है । अनुवाद ईं वास्तै ओतसरस अर सफल हुयो है । गद्य अर पद्य दो परम्परा रा नमूना देखो --

राजा-- कोरी चेरै-मोरै सिरखी'ज कोनी । हूँ तो जाणू के बै इज है ।

हायपीड़--वरणज एहड़ो फूटरो, विपदा कियां पड़ीह ।
वाळी किग्ंा ज वासदे, इसड़ी रूपाळीह ॥

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ रै कई बंगला नाटकां रो राजस्थानी रूपान्तर भी हुयो है । ईं संबन्ध में आगै चर्चा करी जावै है--

बंसरी-- रवीन्द्रनाथ रै नाटक 'बंसरी' रो अनुवाद श्री रावत सारस्वत रो करयोड़ो है । ईं नाटक में प्यार अर प्रेम रो फरक दिखायो है । पुरंदर, सोमसंकर, बंसरी अर सुसमा रै जटिल चरित्रां रो वर्णन है । अनुवादक आपरी भासा में रवीन्द्रनाथ रै भावां रै प्रकासन में कठै भी कमी नीं आण दी । कवि रा भाव अर अनुवादक री भाषा रा दो-एक नमूना देखो--

पुरन्दर--पुरस करम करै, लुगाई सगती देवै । सगती रो अरथ है करम, अर मुगती री सवारी है, सगती ।

प्राण नै नारी पूर्णता देवै अर इणी वास्तै नारी मौत नैं भी महान बणा सकै ।

बंसरी-- ब्रह्मा जे गूंगा होता तो अणरची दुनियां री विथा सूं महाकास री छाती फाट जाती ।

चित्रांगदा--धो रवीन्द्रनाथ ठाकुर रो गीत नाट्य है । ईं रो पूरो अनुवाद श्री चन्द्रसिंह जी करयो है । ईं में ठाकुर चित्रांगदा री अन्तर्वेदना परगट करी है, जिकी नैं अनुवादक आपरी भाषा में जीं सुघराई सूं पाठकां रै सामनै राखी है, वींरो रूप देखो--

चित्रा-- अर्जुन एकदम सुन्न गात,
फूल्या सै पग हाथ,
मूरत सी रही खड़ी,
भूली प्रणाम तक ।

चित्रा-- वो ओ हिड़दो नारी रो
मिल्या अठै हरस अर वेदना सह एकठा
आकांक्षा, आसका अर लाज सब
एक धूळ री बेटी रा,
निपजै जठै सूं प्रेम,

करतो संघर्ष वो,
पावण अमर जीवण ।

राजाराणी— यो भी रवीन्द्रनाथ रै 'राजा ओ रानी' नाटक रो राजस्थानी अनुवाद है । ईं रा अनुवादक है डा० व्रजमोहन जावळिया । अनुवाद घणो पाछ्यो हुयो है । ईं में थोड़ी वां रै इलाकै री भाषा री भी पुट है । गीतां में स्थानीय प्रभाव आयो है । अनुवाद री भाषा रो नमूनो देखो —

नारी रै हिवड़ै रा रहस नै कुण जाणै ? वो विघाता रा नेम ज्यूं अणजाण रैवा जोगो है । इण वास्ते ईं जे विघाता रै नेम में या नारी रै प्रेम में अविस्वास होग्या तो फेर आसरो कठै ? पूण किस्यान वागै, नंदियां किसान बैवै । इण नै कुण जाणै ? या वैवती नन्दी देस रो कल्याण करै है, पूण जाणै जीवां रो जीवण है ।

इणां रै अलावा अनेक एकांकी, निबंध, संस्मरण आदि भी अनूदित रूप में पत्र-पत्रिकावां में छपता रैया है पण वां री संख्या घणी कोनी ।

लारलै तीस-चाळीस बरसां में राजस्थानी में जिको अनुवाद-कार्य हुयो है, उण पर अठै सोदाहरण चर्चा करी गई है । अब तांई रै काम पर विचार करां तो निम्न बिन्दु खास तौर सूं सामनै आवै —

१. अब तांई राजस्थानी में जिको अनुवाद-कार्य हुयो है, वो मोत थोड़ो है अर घणै काम री जरूरत है ।

२. प्रायः छोटै आकार री रचनावां राजस्थान में रूपान्तरित करी गई है अर बडो काम हाथ में नीं लियो गयो है ।

३. अनूदित रचनावां रै प्रकाशन में राजस्थानी री पत्रिकावां रो योगदान विसेस रूप सूं रैयो है ।

४. प्रायः अनुवादकां सरल अर सुबोध राजस्थानी रो प्रयोग कर्यो है । या प्रवृति सराहना-जोग है ।

५. कुछेक अनुवादक मूळ भावां री सीमा लांघर आगै भी बध्या है पण या प्रवृति चोखी कोनी ।

६. अनुवाद-कार्य प्रायः कविता अर कहाणी री विधावां में हुयो है अर दूजी अनेक महत्वपूर्ण विधावां अछूती ही है ।

७ राजस्थान री साहित्यिक-संस्थावां नै ईं दिशा में योजनाबद्ध काम करणो चाहीजै, जिण सूं मातृभाषा राजस्थानी रै भंडार में कोई कमी नीं रैवै ।

— श्रीसदन बिसाऊ (राजस्थान)

राजस्थानी शोध-कार्य

डा० उदयवीर शर्मा

राजस्थान रो इतिहास संसार भर में शौर्य, शक्ति अर त्याग-बलिदान रै विचार सूं विख्यात है। पण ईं इतिहास रै पात्रां नें प्रेरणा तो ईं प्रदेश रै भाषा-साहित्य सूं ई मिली, जिण सूं वै आश्चर्यजनक काम कर दिखाया अर आप री कीर्ति-कथा संसार में अजर-अमर राखी। ईं कीर्तिकथा नें स्थायी रूप देवण में अठै रै कवि कोविदां रो भी पूरो योगदान है। ध्यान राखणो चाहीजै कै पुराणै राजस्थानी-साहित्य रो मूळ स्वर भी आ ईज भावना रैयी है।

राजस्थानी (अथवा मरुवाणी) में भोत घणी साहित्य-सामग्री है। अबार तांई उण रो पूरो लेखो-जोखो भी नीं हो पायो है अर उण रो एक अंश मात्र ईज प्रकाश में आयो है। पण जितरो भी अंश प्रकाश में आयो है, उण सूं साहित्य-पारखी प्रभावित हुयर मुक्तकंठ सूं उण री तारीफ करी है। राजस्थानी रै प्राचीन साहित्य रो प्रकाशन ईज मुख्य कारण है कै आज भारत री सुप्रतिष्ठित साहित्यिक भाषावां में राजस्थानी रो आदरपूर्ण स्थान है अर उण में नये-सिरै सूं साहित्य-रचना रो काम सतत गति सूं चाल रैयो है।

राजस्थानी रै पुराणै साहित्य नैं प्रकाश में ल्यावण-सारू श्री हरप्रसाद शास्त्री, डा० तेस्सीतोरी, श्री रामकरण असोपा, श्री रामनारायण दूगड़ आदि विद्वानां रो काम उल्लेख-जोग है। ईं विद्वानां सूं अनेक शोधकर्तावां नै प्रेरणा मिली अर बै साहित्य-संशोधन रै काम नै गति-प्रगति देयर घणो सराहना-जोग काम करयो।

आज राजस्थानी साहित्य में जिण गति सूं शोधखोज रो काम हुय रैयो है, शायद उण गति सूं भारत रै दूजै किणी भी प्रदेश में नीं हुय रैयो है। पण साथै ईं ध्यान राखणो चाहीजै कै राजस्थान में साहित्यिक शोधखोज री जितरी गुंजाइश है, वा दूजै प्रांतां में शायद है भी कोनी। राजस्थानी री अणगिणत पुराणी हस्तप्रतियां अठै राज-

कीय पुस्तकालयां, जैन भंडारां, व्यक्तिगत संग्रहालयां आदि में भरी पड़ी है अर प्रकाश में आवण री उडीक में है । चारण-घरानां में भी पुराणी साहित्य-सामग्री बड़ी मात्रा में विद्यमान है अर बिना सार-संभाळ वा दिनूं दिन लुप्त हुवती जाय रैयी है ।

आज राजस्थान में जिको शोधकार्य हुय रैयो है, उण नै दोय वर्गां में बांट्यो जा सकै है — (१) उपाधि सापेक्ष शोध (२) उपाधि निरपेक्ष शोध ।

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर अर पिलाणी रै विश्वविद्यालयां में उपाधि-सापेक्ष अनुसंधान कार्य तीव्र गति सूं चालू है । ईं विश्वविद्यालयां में एम० ए० खातर लघु शोध प्रबंध अर पी०-एच० डी० तथा डी० लिट् उपाधियां खातर शोध प्रबंध प्रस्तुत करया जावै है । हर्ष रो विषय है कै मात्रा रै विचार सूं यो काम कम नीं है अर हर साल नया नया विशाल ग्रंथ त्यार हुय रैया है । आज तांईं जिका शोध-प्रबन्ध त्यार हुया है, वां रै विषय-चयन पर ध्यान दियो जावै तो घणखरा ग्रन्थ विशिष्ट साहित्यकार, विशिष्ट रचना, साहित्यिक इतिहास, लोक साहित्य भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, संप्रदाय-साहित्य, कथात्मक साहित्य, पद्यात्मक विधा आदि सूं सम्बन्धित है ।

मात्रा रै विचार सूं तो यो अनुसंधान कार्य ठीक है पण गुण री दृष्टि सूं निश्चय ही संतोषजनक कोनी । प्रायः शोध-छात्र कठिन विषय सूं बचै अर इसा विषय लेवै, जिण-सारू श्रम कम करणो पड़ै अर आसानी सूं उपाधि प्राप्त हुय जावै । कई वर तो अठै तांईं देख्यो जावै है कै राजस्थानी में साहित्यिक शोध कार्य-सारू निर्देशक (गाइड) रै रूप में इसो विद्वान भी मंजूर कर लियो जावै है जिणरी खुद री राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी जाणकारी भोत ई साधारण हुवै । यो ही कारण है कै विश्वविद्यालयां सूं मात्र उपाधि लेवण खातर जिको अनुसंधान-कार्य हुय रैयो है, उण सूं कोई विशेष लाभ नीं है । पण साथै ही ध्यान राखणो चाहीजै कै सगळा ही शोध-छात्र अथवा शोध प्रबन्ध एक सारीखा कोनी अर वां में अनेक महत्वपूर्ण भी है ।

एक बड़ी कमी या भी है कै लगभग एक ही विषय पर अनेक विश्वविद्यालयां में शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिया जावै अर जिण विषयां पर अनुसंधान री खास जरूरत है, वै अछूता ई पड़्या रैवै । ईं सम्बन्ध में विशेष ध्यान देवण री जरूरत है कै शोध प्रबंधां री संख्या न वधायर उणां रै गुणात्मक महत्व पर खास ध्यान दियो जावै ।

राजस्थान सूं बारै भी अनेक विश्वविद्यालयां में राजस्थानी-साहित्य पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत करया जावै है । उण विश्वविद्यालयां रै अधिकारीवर्ग नें भी ईं दिशा में सावचेत रहणै री आवश्यकता है, कारण वठै तो राजस्थानी रो वातावरण ही प्रायः कोनी ।

राजस्थान में उपाधि-निरपेक्ष शोध-कार्य भी बड़ी मात्रा में हुय रैयो है। अठै अनेक इसी साहित्यिक संस्थावां है, जिणां रो प्रधान उद्देश्य ईज अनुसंधान कार्य है । इण संस्थावां मांय सूं कई नैं आंशिक रूप सूं सरकारी अनुदान भी मिलै है अर बठै विविध पदां पर विद्वान नियुक्त है ।

राजस्थान में शोध-संस्थावां री संख्या तो बड़ी है पण वां में इण संस्थावां री विशेष ख्याति है :—

१. सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर
२ साहित्य संस्थान, उदयपुर
३. राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
४ राजस्थान भाषा प्रचार सभा जयपुर
५. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
६ भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
७. हिन्दी विश्वभारती, बीकानेर
८, राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ
९. लोक संस्कृति शोध संस्थान, चूरू
१० श्री अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर
११. भारतेन्दु समिति, कोटा
१२. बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलानी

कई संस्थावां री तरफ सूं मुखपत्रिका (त्रैमासिक) भी प्रकाशित हुवै है । वां में राजस्थान भारती, शोध पत्रिका, परम्परा, वैचारिकी, विश्वंभरा, वरदा, मरुश्री, मरुभारती आदि उल्लेख जोग है । इणां रै अलावा राजस्थानी मासिक पत्रिका 'मरुवाणी' भी शोध-लेखां पर यथोचित ध्यान बराबर राखै है ।

खास बात या है कै राजस्थानी साहित्य सूं सम्बन्धित जितरो भी उपाधि-सापेक्ष अथवा उपाधि-निरपेक्ष अनुसंधान कार्य हुयो है अथवा हुय रैयो है, वो सगळो ई हिन्दी रै माध्यम सूं है । ईं सूं नई जाणकारी रो प्रचार विस्तृत-क्षेत्र में हुयो है अर राजस्थानी रै गौरव में वृद्धि भी हुई है पण मूळ राजस्थानी में भी यो काम हुवणो जरूरी है, जिण सूं भाषा-साहित्य री चौमुखी श्रीवृद्धि हुवै ।

लारलै कुछेक बरसां सूं इसो अनुभव भी हुय रैयो है कै राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी शोधलेखां रो स्तर उत्तरोत्तर ऊंचो न उठर नीचो उतर रैयो है । शोध-कर्म

करड़ो घणो है । शोध-सारू विशेष श्रम री भी जरूरत है । अर उण सूं आत्मसंतोष रै अलावा कोई आर्थिक लाभ भी नीं मिलै । इसी स्थिति में शोध-लेखकां री कमी स्वाभाविक है पण फेर भी कई पुराणा साहित्य-साधक ईं क्षेत्र में सक्रिय है अर वां री कृपा सूं शोध पत्रिकावां नैं हाल तांई आछी सामग्री मिल रैयी है ।

राजस्थान री शोध संस्थावां सूं विविध ग्रंथ भी छप्या है अर यो काम अब भी चालू है आज अनेक गद्य-पद्यात्मक पुराणा राजस्थानी ग्रंथ मुद्रित रूप में सुलभ है । निश्चय ही शोध-संस्थावां रो यो काम सरावण-जोग है । ईं सूं राजस्थानी रै गौरव में वृद्धि हुई है अर साहित्यिक अध्ययन तथा विवेचन रो मारग किणी रूप में खुल्यो है । पण साथै ही ध्यान राखणो चाहीजै कै इण संस्थावां री तरफ सूं प्रकाशित पुराणी पोथियां यथोचित रूप सूं सम्पादित न हुयर प्रायः मूळ रूप में ईज छपी है । ईं कारण वे सुलभ तो जरूर हुयगी पण सुबोध नीं हुय पाई ।

आज ईं चीज री सब सूं बडी जरूरत है कै राजस्थानी रो पुराणो साहित्य सुलभ हुवणै रै साथै ही सुबोध जरूर हुवै । जे मूळ रूप में ही पुराणी पोथियां प्रकाशित हुसी तो वै थोड़ै सै गिणती रै लोगां रै काम री ही हुसी अर जन-साधारण वां सूं किणी रूप में भी रस-ग्रहण नीं कर सकै । यो ईज कारण है कै आज राजस्थानी रा अनेक पुराणा ग्रंथ प्रकाशित हुय चुकणै पर भी वां री नवी साहित्य-संसार में कम ई सुणी जावै है अर वै पुस्तकालयां री शोभा मात्र ईज हुया बैठ्या है ।

इतरी बात जरूर है कै कई शोध संस्थावां पुराणी हस्तप्रतियां नै भेळीकर आपरै संग्रहालयां में सुरक्षित कर मेली है अर ईं प्रक्रिया सूं वां नै नष्ट हुवणै सूं बंचाय लीनी । शोधछात्र ईं संग्रहालयां सूं लाभ लेवता रैवै है अर वां री जाणकारी साहित्य प्रेमियां नैं मिलै है ।

कई संस्थावां मात्र लोकसाहित्य रै क्षेत्र में ईज काम करै है पण वां रो प्रधान काम संग्रह करणो मात्र है अर वैज्ञानिक विवेचन नी है, जिणरी खास जरूरत है ।

राजस्थान री शोध संस्थावां री तरफ सूं प्रकाशन रो काम जिण मात्रा में हुवणो चाहीजै, उण मात्रा में नीं हुय रैयो है । ईं विषय में कमी रो मुख्य कारण संस्थावां री आर्थिक कमजोरी है । सरकारी-सहायता सूं संस्थावां विद्वानां नै नियुक्त तो कर लेवै पण विद्वानां रै काम नै प्रकाशित करणै खातर वां रै हाथ में समुचित साधन कोनी । यो ईज कारण है कै राजस्थान में इतरी घणी शोध संस्थावां हुवतां-थकां भी

वां रो काम नियमित रूप सूं चौड़ै नीं आय रैयो है अर वां री मुखपत्रिकावां ई देखण नैं मिलै है ।

राजस्थान में इसै विद्वानां री भी लम्बी सूची है, जिका किणी संस्था रै मार्फत अथवा स्वतन्त्र रूप सूं अनुसंधान रै क्षेत्र में खूब काम करयो है अर आज भी आपरी शक्ति रै अनुसार यो काम कर रैया है । पुराणी पीढी में सर्व श्री नरोत्तमदास स्वामी, डा० दशरथ शर्मा, बदरीप्रसाद साकरिया, अगरचन्द नाहटा, सीताराम लालस, डा० मोतीलाल मेनारिया आदि रा नाम उल्लेख-जोग है । इणां रै साथै ही सर्व श्री कन्है-यालाल सहल, रावत सारस्वत, डा० मनोहर शर्मा, सौभाग्यसिंह शेखावत, भूपतिराम साकरिया, मूलचन्द प्राणेश, डा० नारायणसिंह भाटी, डा० ब्रजमोहन जावलिया, डा० हीरालाल माहेश्वरी, डा० शंभुसिंह मनोहर, डा० नरेन्द्र भानावत आदि री सेवा भी ई क्षेत्र में सराहना-जोग है । ये विद्वान स्वयं तो मोकळो अनुसंधान कार्य करयो ई है पण साथै ई शोध-छात्रां नैं भी बराबर प्रेरणा, प्रोत्साहन देयर वां रो मार्गदर्शन करता रैया है ।

राजस्थानी साहित्य अति विशाल है अर वो अधिकांश रूप में हाल-तांई अप्रकाशित है । इसी स्थिति में ई दिशा में घणै सूं घणै अनुसंधान री आवश्यकता है । आगै कुछेक संकेत दिया जावै है, जिणां नैं ध्यान में राखर काम करणै सूं ई विषय में लाभदायक फळ प्राप्त हुय सकै है :—

१. राजस्थान रा सगळा विश्वविद्यालय पारस्परिक सम्पर्क साधर इसा विषय निश्चित करै, जिणां पर अनुसंधान करणै री खास जरूरत है अर शोध-छात्रां सूं उणी ज विषयां पर काम करायो जावै ।

२. हळका विषय उपाधि-सापेक्ष-शोध खातर स्वीकार नीं करया जावै अर न साधारण शोध-प्रबन्ध पर उपाधि देयी ही जावै ।

३. पूर्ण रूप सूं अधिकारी विद्वान ही शोध-छात्रां रा निर्देशक (गाइड) बणाया जावै ।

४. शोध-संस्थावां री तरफ सूं जितरा भी प्राचीन ग्रंथ प्रकाशित कर्‌या जावै, वै भली-भांत सुसम्पादित रूप में ही प्रकाशित हुवै अर खास तौर सूं वां रै पाठानुसंधान पर पूरो ध्यान दियो जावै ।

५. शोध-संस्थावां आपसी सम्पर्क साधर निश्चित योजना सूं काम करै अर साल भर में जितरो भी काम कर्‌यो जावै, उण रो प्रतिवेदन प्रगट कर्‌यो जावै ।

६. शोध पत्रिकावां जितरा भी शोध-लेख प्रकाशित करणे-सारू स्वीकार करै, उणां पर आपरै परामर्श-मण्डल रै अधिकारी विद्वान री सहमति लेवण रो पूरो ध्यान राखै ।

७ साहित्यिक-अनुसंधान में रुचि राखणिये विद्वानां रो साल भर में कम सूं कम एक सम्मेलन किणी शोध-संस्थान रै तत्वावधान में जरूर आयोजित करयो जावै, जिण सूं पारस्परिक सहयोग री भावना नैं बळ मिलै अर विचार-विमर्श खातर एक मंच बणै ।

—राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गणेशी (सीकर)

लेखकां सूं निवेदन

१. 'जागती जोत' में छापण-सारू अप्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय रचना ही भेजी जावै ।

२. रचना कागद रै अेक कानी हासियो छोड'र साफ-साफ आखरां में लिखियोड़ी अथवा साफ टंकित हुवणी चाइजै ।

३. छापण-सारू स्वीकृत रचना री सूचना लेखक नै रचना-प्राप्ति सूं अेक महीनै रै भीतर दे वी जासी ।

४. अस्वीकृत रचना पाछी मंगवाणी हुवै तो उचित डाक-टिकट लगायोड़ो लिफाफो रचना रै साथै आवणो चाइजै ।

५. स्वीकृत रचना कद और किसै अंक में छपसी, ओ बतावणो सम्भव नीं हुसी । इण विषय में आयोड़ा पत्रां रो उत्तर नीं दियो जासी । स्वीकृत रचना रे प्रकाशन खातर ताकीद न करी जावै ।

६. पत्रिका में छपियोड़ी हरेक रचना माथै पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था हैं । रचना रै प्रकाशित हुयां पछै अेक महीनै रै भीतर पारिश्रमिक री राशि लेखक नै भेज दी जासी ।

७. छपण नै दी जावण वाळी रचना में संशोधन करण रो अधिकार संपादक-मंडल नै हुसी ।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर (राजस्थान)

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्रकाशन

प्रेतात्मा री प्रीत	श्री दामोदरप्रसाद शर्मा	५.५०
रोहिड़ै रा फूल	डा० मनोहर शर्मा	५.७५
हांस्यां हरि मिले	श्री नृसिंह राजपुरोहित	७.५०
जोग संजोग	श्री नागेन्द्र शर्मा 'नाद'	७.२५
अठारवां	डा० ब्रजनारायण पुरोहित	५.७५
आदमी रो सींग	श्री करणीदान बारहठ	६.००
अेक बीनणी दो बीन	श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी	८.३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोश	स० श्री मूलचंद प्राणेश	७.७५
सरवर सूरज अर संझा	श्री प्रेम जी 'प्रेम' प्रकाश्य	

सम्पर्क—

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
नागरी भंडार, बीकानेर।

जागती जोत

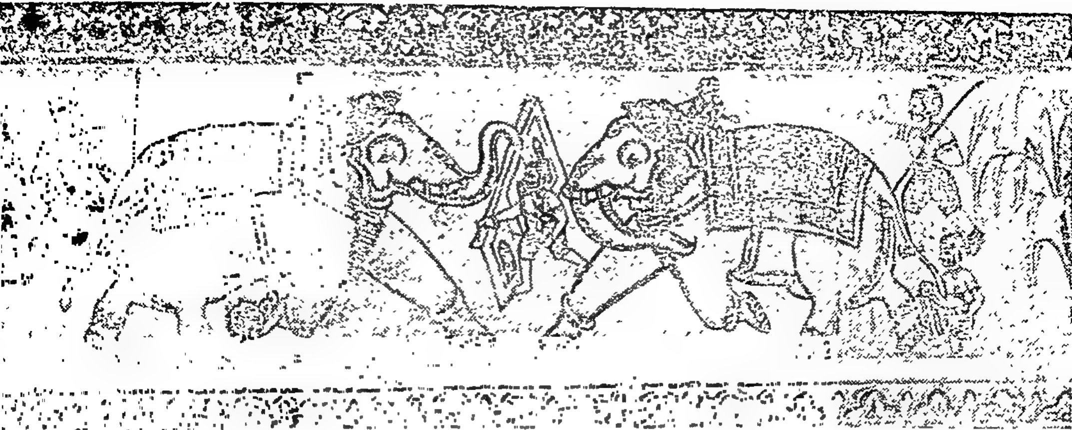
राजस्थानी भासा साहित्य संगम री मासिक

सम्पादक
दीनदयाल ओझा

अकटुम्बर
१९७७



बरस ४ अंक ८



जागती जोत

राजस्थानी भासा साहित्य संगम रौ मासिक

*

अक्टुम्बर १९७७

*

संपादक

दीनदयाल ओझा

*

वरस : ५
अंक : ८
बरस रौ मोल : १२ रिपिया
इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ
रियायती मोल : ८ रिपिया

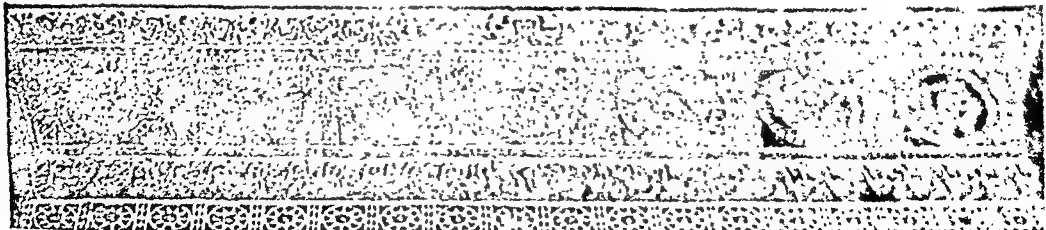
प्रकासक

राजस्थानी भासा साहित संगम (अकादमी)
[बीकानेर राजस्थान]

विगत



कवर पृष्ठां रा चितराम:—
मूमल प्रकाशन जैसलमेर सूं साभार।



सम्पादकीय

राजस्थानी भाषा आपांरी मायड़ भासा है। इण भासा रो हवळै-हवळै आगे बढणो, इण भासा में भांत-भांत रै विसयां री सरस, भाव भरी पोथ्यां रो छपणो, तिमाही, मासिक, पखवाड़िया छापां रो प्रकासित हुवणो–सगळै भासा सनेवियांरे लिखारां सारू घणै हरख री बात हुवै। छोटी-छोटी पोसाळां सैकन्डरी, हायर सैकन्डरी स्कूलां, कालेजां'र विस्वविद्यालयां में इण भासा रो पढायो जावणो इण प्रान्त री संस्कृति इतियास'र साहित री नींव नै घणी सबळ'र सांतरी बणावण कांनी सरावण जोग प्रयास है। सिक्षा रै क्षेत्र में मायड़ भासा नै पढ़णवाळां'र न्यारी न्यारी कक्षावां में पढाई जावणवाळी पोथ्यां रै लेखकां, संपादकां'र प्रकासकां री पण जिती सरावणा की जावै विती थोड़ी है। अै सगळा सरावण जोग प्रयास आगै सारू भी घणै सरावण जोग ढंग सूं चालता रयसी–इसी आसा बंधै।

हरैक प्रान्त आप आपरी प्रान्तीय भासा रै विकास'र उण रै साहित नै आगै बधावण सारू जिका आछा ओपता उपाय करै, वां में अकादमी री थरपना भी अेक ठावो थिर रैवणवाळो'र वरणन जोग उपाय हुवे। राजस्थान में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर'र उणरी साखा राजस्थानी भासा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर इण प्रांत रै हिन्दी, राजस्थानी'र संस्कृत भासा साहित रै विकास, उणरै लेखकां नै आगै लावण वां री पोथ्यां नै छपावण, छप्योड़ी पोथ्यां माथै प्रकासन सहायता देवण'र लिख्योड़ै साहित नै छापण सारू मासिक पत्र-पत्रिकावां रै प्रकासन री आछी विध बिठाय घणो सरावण जोग काम कियो है। इणी तरै रै सद् प्रयासां में राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर सूं प्रकासित हुवणवाळो मासिक पत्र 'जागती-जोत' है।

जागती जोत रा लारला अंक भाई श्री तेजसिंघ जोधा सूं संपादित हुयोड़ा आपरै हाथां पूग्या। अबै आगै रै छव अंकां (अक्टूबर ७७ सूं मार्च ७८) रो संपादन म्हनै करणो है। संपादक रो दायित्व घणो ओखो, करड़ो र कांटांवाळो है। इण दायित्व नै उठावणवाळो भावै कितोई गुणी विद्वान क्युं नहीं हुवै, उणरी घणीसीक सफळता उण भासा साहित रै सिरजण धरमी लिखारां माथै टिक्योड़ी रेवै। जे गुणी विद्वान, नामीगरा लेखक, आछा चिंतक विचारक आप-आप री सरस, भाव भरी'र पाठकां रै चित चाई रचनावां भेजै जणै इज संपादक नै पत्रिका में छापण रो मोको मिळै। इण सारू म्है राजस्थानी भासा साहित रै सगळै सिरजण धरमी लिखारां नै घणो मान मरदास करणो चावूं कै सगळा आप-आप री सरस, भाव भरी, आछी ओपती ऊजळी आगरी मांडयोड़ी रचनावां 'जागती-जोत' में छापण सारू अवस भेजै। रचनावां सूं रचनाकार री सगास सुगणी संतान री तरै हुवै। वो वेनै जलम देवै, पाळै आगरी गे ओळमां रै आगार ऊभी कर संपादक नै भेजै। उणरी समै माथै पूग देणी उणनै आछी तरै छापणो संपादक रो नैतिक दायित्व है। म्है सगळै लेखकां नै भरोसो दिलाणो चावूं कै सगळां री रचनावां म्हनैं जिण दिन पूगसी उणरै सात दिनां में वांनै रचनावां री पूग जरूर मिळसी। म्हारै मन में सगळै लेखकां री सिरजण धरमिता रै तांणु घणो आदर है। आछा लिखारा जिणां में आपरी बात कैवण री कळा है, प्रतिभा है, वांरो मायतो भाव आदर मान सगळी ठौड़ है। फैरूं भी सिरजण री सांतरी, सबळी, सांग थिर रास्तु सारूं, जीवण नै असाधारण दीठ सूं निरख परख'र उणरी आछी बुरी गतिविधियां नै साहित री मरजाद'र उणरै काण-कायदै रै ढणियारै ओळयां में उतारणी घणी जरूरी है। म्है घणै गरव रै सागै आ बात कय सकूं कै राजस्थानी भासा साहित रो लेखक जीवण रै बदळाव नै अंतस में अवेर, जुग धरम रै सागै सागै चाल चीत्योड़ै'र आवणवाळै समै नै आंख्यां आगै ऊभो देख साहित सिरजण करै। उणरै सिरजण री साख आज घणी ऊंची सूं ऊंची पूग रयी है। उण रै चिंतन री नींव घणी गैहरी है। उणरी सिरजण कळा घणी सरस, भाव भरी, रूपाळी'र हिवड़ै माथै छाप छोड़णवाळी है। वां सगळां री प्रतिभा'र सिरजण धरमिता नै आगै लावण में 'जागती जोत' सदा सेवा सारूं हाजिर है, हाजिर रयसी।

म्है इण बात नै भी आछी तरै निरखी परखी है कै कैई लिखारा सगम सूं रूठयोड़ा है। पण इण बात रो भी घणो अचरज है कै वांरै रूठण रा कारण घणा काचा, निवळा'र अणूता है। जे आंमै सांमै बैठ बात रो निवेड़ो कियो जावै तो ओ अळगाव सदा सारूं अळघो जाय, मिलण री भावना'र अेक जुट हुय काम करण रो उछाव जाग सकै। जिता लिखारा है, सगळां रो अेक ई लक्ष्य है कै राजस्थानी भासा साहित रो आछो, ओपतो'र आदर जोग विकास हुवै। सगळै लिखारां नै विना किणी भेद भाव रै आव-आदर, ठावी ठोड़ मिळै। सगम री गति-विधियां री समै-समै माथै पूरी जाणकारी मिळती रेवै। जिकी रचनावां जागती जोत सारूं भेजी जावै, उणरी पूग समै माथै

मिळै । जिकी रीति-नीति राजस्थानी भासा साहित रै विकास सारू बणै, उणमें थोड़ैक चुणियोड़ै साहितकारां रो नहीं, सगळां रो सहयोग हुवै । म्हे भी इण'र इणी तरै रै दूजै मुद्दां रो सदा सूं हिमायती रयो हूं'र आज भी हूं । पण इणरो अरथ ओ नहीं हैं कै छोटी छोटी बातां माथै लड़ साहित रो सिरजण छोड़ देवो । पत्र पत्रिकावां नै रचनावां भेजणी बद कर देवी । भासा-साहित रो जठै सम्मेलन हुवै बठै नहीं पूगो । विरोध रा अै तोर-तरीका घणा निबळा'र बे ओपता है ।

म्हे आपनै पूरो भरोसो दिलाणो चावूं कै जागती जोत रो संपादन जद तांई म्हारै कनै है तद तांई सगळां री आछी, ओपती सरस भाव भरी विविध विधावां री रचनावां 'जागती जोत' में घणै आदर सागै छपसी । इण सारू सगळै लेखकां नै अरदास है कै राजस्थानी भासा साहित रै विकास री इण संक्रांति बेळा में सगळै छोटै-मोटै भेद भावां नै भूल, आप आपरी आछी सूं आछी रचनावां 'जागती जोत' नै सरस, सुरंगी, रूपाळी बणावण सारू जरूर भिजावो । संपादक म्हैं रैवूं, भावै म्हारो कोई दूजो भाई, पण जागती जोत नै अखंड राखणी घणी जरूरी है । इणरै स्तर में कमी नहीं आवणी चाईजे । इण में छपण वाळी रचनावां दूजै प्रान्तां री भासावां रै लेखकां सूं घणी ऊंचै स्तर री हुवै जणै कोई सरावण जोग बात बणै । राजस्थानी रै लेखकां में इसी लेखण शक्ति निस्चै रूप सूं है । जरूरत है उण नै प्रकट करण री प्रेरणा देवण री आगै लावण री ।

साहित, संस्कृति'र कळा री दीठ सूं राजस्थान सदा सिरै नांव रयो है । हिन्दी साहित रै आदिकाळ, भक्तिकाळ, रीतिकाळ'र आधुनिक काळ रै विकास में इण प्रांत रै साहितकारां रो सदा सूं कीरत जोग सहयोग रयो है । आज भी जे इण प्रान्त रा सगळा चिंतक, विचारक गुणी विद्वान न्यारै न्यारै विसयां माथै आपरी मायड़ भासा राजस्थानी में लिखै तो साहित री घणकरी विधावां री कमी घणै सरावण जोग ढंग सूं पूरी हुय सकै । अठै आ बात लिखणी घणी जरूरी है कै कैई अंग्रेजी, हिन्दी, इतियास'र विग्यान रा प्राध्यापक'र अध्यापक राजस्थानी भासा में घणै ऊंचै स्तर री रचनावां लिखरया है । आछा-ओपता अनुवाद कर रया है । ओ लगाव घणो आदर जोग है । स्कूलां; कालेजां'र विस्वविद्यालयां रै छात्र छात्रावां नै राजस्थानी में लिखण सारू प्रोत्सा-हन देवण री तजवीज पण चालू है । आसावादी हुवण रै नातै म्हनै इसी लागै कै लारलै बरसां री तुलना में आवणवाळै बरसां में राजस्थानी भासा साहित रा घणा आछा लिखारा मिळसी । घणकरी विधावां में साहित लिख्यो जासी ।

हरेक प्रान्त रै इतियास, संस्कृति'र कळा री कैई सरावण जोग सिरै नांव वाळी निजू खास-खास बातां हुवै । उण प्रान्त रै लोक साहित'र पुराणै साहित में उणरै रैवासियां रो घणो ऊंचो ग्यान, अनुभव, त्याग, तपस्या'र जीवण रा जीवता जागता प्रेरणा देवण वाळा प्रसंग मिळै । अेक आछो रचनाकार लारलै सगळै संदर्भां नै दीठ में,

राख आज नै परतख निरख-परख आवण वाळै समै री उळझणां नै मुळझावणरा सोवणा सवळा सरस सांतरा संकेत दे आपरी रचनावां री रचना करै । अंतस रै भावां नै कागज री ओळ-ओळ उतार सगळां तक पोंचावण री चेस्टा करै, विच विठावै । इण तरै अेक रचनाकार री रचना में तीनूं काळ परतख दीखै । उणरै लेखण में उण प्रान्त रै जीवण रा जीवता-जागता चितराम वणै । इण ऊजळी'र लाखीणी परम्परा नै निभावण सारू पुराणै र नूवै साहित रो पढणो घणो जरूरी है । पुराणै सिरजण रो पढण जे पूठ मजवूत करै नींव नै सवळी वणावै, तो नूंवै सिरजण रो सैंठो लगाव, नियम सूं पढण रो चाव नूवै सिरजण रो चोगुणो चाव जगावै । सांच तो आ है कै नूवै सिरजण रो पढण नूवै सिरजण री सवळी भूमिका है । इण दिसा में पत्र-पत्रिकावां घणो सरावण जोग काम करै । नूंवी पोढी नै आपरै ऊजळै इतियास'र साहित रो पतो लागणो, उणरो सरावण जोग ग्यांन हुवणो घणो जरूरी है । इण खातर 'जागती जोत' राजस्थान री सगळी सैकन्डरी, हायर सैकन्डरी स्कूलां कालेजां'र विस्वविद्यालयां में पूगणो घणो जरूरी है । धनी-मानी'र साहित में रुचि राखणवाळां नै भी इण पत्रिका रो ग्राहक वण राजस्थानी भासा रै लेखकां रो उछाव वधावणो घणो ओपतो काम होसी । दूजै प्रान्तां री मायड़ भासा में घणकरी पत्र-पत्रिकावां निकळै, वां रा सगणा पाठक आपरी मायड़ भासा रा छापा पत्र-पत्रिकावां पढै साहित खरीदै, मोकै-मोकै माथै सरावण जोग सहयोग देवै । इण तरै रै भावां रो विकास वोड़ वाड़ तो हुयो है, पण इण दिसा में ओजूं भी रुचि जगावणी आज रै समै घणी जरूरी है । क्यूंकै "दीसै वांरा देस, ज्यांरा साहित जगमगै" ।

अकादमी'र संगम रै मांनीजतै साथियां रो सवळो सहयोग, सगळै मुगणै लेखकां रो सरस सनेव; हेताळुवां रा सोवणा सुझाव, प्रेस री चतराई-जिसी घणकरी वातां म्हनै मिळी है उणरो सुफळ है कै जागती जोत रो अक्टूम्बर ७७ रो अंक आपरै हाथां समै माथै पूग रयो है । सगळा लेखक आपरै सुजस नै अडग कीरत नै थिर राखण सारू आपरी रचनावां जागती जोत सारू भेजता रयसी इसो पूरो भरोसो राखूं । इणमें किणी वात री कमी जे रय गई है तो वै सगळी कमियां म्हारी है-अच्छाइयां आपरी लेखकां री ।

आपनै अंक किसो लाग्यो, आप जागती जोत नै किण तरै री देखणी चावो, आपरा सुझाव घणै मान भिजावो । म्है ओळभै सावासी री उडीक राखूंला ।

दीनदयाल ओझा

विन्नाणियां रो चौक
वीकानेर

बन्द तैखानां

रामदेव आचार्य

आ दुनिया बन्द तैखानां रो
एक असपताळ बणती जावै ।
बन्द तैखानां रो रूप एक-जिसो ।
हुजूम एक-जिसो । अर मरज एक-जिसो ।

बन्द तैखानां या तो बन्दइ'ज रैवै,
या फेर लुकै-छिपै, कदै-कदास
इण तरह खुलै
के बां रै भेद री
भणकारइ'ज नीं पड़ै ।

बन्द तैखानां री एक भेद-भरी दुनिया है—
सड़ान्ध-भरी । अदावत-भरी । कुचमाद-भरी ।
खुलणै सूं भीतर री गरमी अर गन्दगी री
सच्चाई रै खुलणै रो खतरो रैवे,
इण खातर
बन्द तैखानां हमेसा बन्द ही'ज रैवै ।

बन्द तैखानां रा बारला दरवाजा
आपस में घणी भेद-भरी बातयां करै,
बसंत अर मौसम रै बारै में

घणी ओपमा-लायक भासण वाजी करै,
पण वां रै अंतस री गन्दी नाळयां
भीतर-ही-भीतर सड़ांध फैलाती जावे ।

वन्द तैखानां दो भासावां जाणै—
एक विकास री अर एक विनास री ।
वन्द तैखानां दो परम्परावां मानें—
एक सुनीत री अर एक अनीत री ।

वन्द तैखानां रो एक ही'ज नेम
के हर खुलै दरवाजै नै
वन्द तैखानो वणावणो ।
भीतर री दुनिया नै
वाहर री दुनिया सूं अळगावणो ।

वन्द तैखानां डरै कै कठैई खुला दरवाजा
उणरी चाभी रो भेद नी जाणलै,
जिण सूं वन्द तैखानां री
सच्चाई री पोल खुल जावै ।

इण खातर सारा वन्द तैखानां
एक भुण्ड वणा'र भुण्ड रो गीत गावै,
खुलै दरवाजां नै हेठा वतावै,
उणनै साहित अर कळा री गाळयां देवै,
अर वन्द तैखानां री आपा-धापी करै,
अर एक-दूसरै री
सरव ओपमा-लायक वडाई करै ।



जैल रै कुए रै पास,
बीकानेर

म्हारै मांयनै भी एक आभौ है

भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

आभै रै आंतरै नै
आखरां स्यूं नापणिया
धरती रै गरभ नै
सूगलै बिचारां रै जापै स्यूं बिगाड़णियां
आ क्यूं भूल जावै ?
कै म्हारै मांयनै भी एक आभौ है—
ऊंचौ; गै'रो अर अदीठ
बीजळी बीं में भी चमकै
पण बीजळी रौ पळकौ
अर मून रौ निवास
आखर कितो'क ।

काळा दिराक बादळ जद
सूरज नै च्यारूं मेर घेरलै
तौ मांय रौ अमूजौ
मांय'र मांय घुटतौ रेवै
बिसीजती बगत कदै कदास
एक झपकौ पड़ भी जावै
तौ सिंझ्या रा रुखवाळा

वीं नै काळ कोटड़ी में गेर'र
नैचे स्यूं सूय जावै ।।

म्हारै मांयनै भी एक धरती है—
मैली, बदरंगी अर गोळ मटोळ ।
वींरी माळा रौ एक ही है फेर
कै रोटी खातर घूमती रैवै च्यांरू मेर ।
नाठी-नाठी सूरज कानी जाणी चावै
तो गिरण रौ सामेळो ले'र
पूठी आय जावै ।

म्हारै मांयनै भी एक चंदरमा है ।
पण रूपरुपाळै नै जद लोग कैवे'क
औ माल तो दागी है
तौ आभै री छाती में छेकळा पड़ जावै ।
फीकै थूक चंदरमा नै ले'र
धरती मांय री मांय धमीड़ा खावै ।

पण फेर भी फाटै टूटै आभै नै
पाळ रयो हूं ।
आ सोच'र
कै कदास औ दुड़क जासी
तो सूगलो ही सही
पण म्हारो सोनलियो सूरज
दागी ही सही
पण म्हारो रूपाळो चंदरमा
घर-घर रो हुय जासी ।
कैरै खातर जीवैला म्हारी धरती ?

कैरै खातर घूमैला म्हारो चांद ?
गिरण कींनै अडीकैला ?
बादळ कीं नै लुकावैला ?
वीजळी कीं नै बिलमावैला ।
इण खातर
लांबे रोग ज्यूं इयानै पाळ रयो हूं
अधगावळौ ही सही
म्हारी चाल म्हारै मुजब चाल रयौ हूं ।



सुथारां री बडी गुवाड़,
बीकानेर

लिखारां सारूं—

- 'जागती-जोत' सारूं आपरी रचनावां आछै ऊजळै आखरां में मांड'र भेजौ।
- लिपी रो ध्यांन राखणौ घणौ जरूरी है ।
- रचना पाछी मंगावण सारूं टिकट लाग्योड़ौ लिफाफौ जरूर भिजावण री किरपा करावौ ।
- 'जागती जोत' रे अंकां'र उणमें छप्योड़ी रचनावां रै बाबत आपरा विचार सम्पादक, जागती जोत नै जरूर लिखावौ ।

— सम्पादक

आंच

मोहम्मद सदीक

सो-झूठ-
पण-
स्क सांच है ।
मिनख री देह में
आंच ही आंच है ।
इण आंच री सांच नै
संजोणिया--
खेत बीजता किरसान
सड़क कूटता मजूर
जूती गांठता मोची
गळी बुहारती मेतराणियां
और लो-कूटता लुवार ।
पेलड़ै मिनख ऊं लेर
आजरै मिनख तांई रो इतियास
ओटीज्योड़ी आंच रो
मूंडै बोलतो गवा है ।
उकेरता जावौ । देखता जावौ
उकेरता जावौ । देखता जावौ
जद-कद-जठै-कठै
हवा रो फटकारो लाग्यो-र

आंच आपरो काम कर्यो है ।
फ्रान्स में—
रूस में
चीन में
वियतनाम में ।
ईं-आंच रो इंधण
न-लकड़ी है
न-कोयलो
न-तेल है
न-पेट्रोल
इण आंच नै जीवती राखण
चाईजे
मिनख री जीवती देह
वीं में भभकती आंच नै
घणी संजोरी करणिया
तपते भावां रा भन्डार
भतूळियां ज्यूं भंवती हवा रा फटकारा,
मिनख री देही में
दबी चिणगारी नै
चौगुणी कर बिखेर दे ।
उतराद-दिखणाद
अगूण-आथूण
ऊपर-नीचै-आसै पासै
काचा-न्यावड़ां में
पशव आवै-नईं आवै
तूफान रा फटकारा
भिड़ा-भिड़ा भान्डा नै
ठीकरी ठीकरी कर नाखै
रै' जावे कुम्हार रै हाथां में

फूटा–घिरघना ।
इण भान्त
आ–आंच
तपा–सांच
सरीसा कर नाखै
फेर उगावै इणी धरती माथै
एक सरीसा विस्वास
एक सरीसा मिनख
एक सरीसो समाज ॥



रानी बाजार
बीकानेर

पाठकां सारू—

* 'जागती जोत' री रचनावां आपनै किसी लागी ।
* 'जागती जोत' में आप किसी रचनावां चावो ।
* 'जागती जोत' आपरै विचारां में किसी हुवणी चाइजे सम्पादक 'जागती जोत' नै जरूर लिखावो ।

—सम्पादक

अनाम अर अमर शहीदां रै नांव

श्री भगवानदत्त गोस्वामी

उणांरै वास्ते
कांयरी रोवणी
जिकां यातनावां सैई;
वै तो गगन मंडळ में
चमकण आळा तारा है
जिका ध्रुव तारै री तरियां'ई
इतिहास–नभ में
आपरो पक्की जाग्यां बणायली है ।।

किण किण रौ नांव गिणासूं
गिणती में आंवणियां सहीदां रा पगलिया —
अर देवळी नै हूं
हजार हजार वार पूजसूं —
पूजतौ'ई रैसूं —
पण हूं तौ उणां नै
घणौ बडौ मानूं
जिका बिना नांव कियां थकां
नींव रै भाटे दई
बेनाम—
राष्ट्र भवन रै निर्माण नीचे गडग्या है ।

प्रजातन्तर री गंगा नै
धरती ऊपर पूठी लावरण सारू
थू मरग्यौ,
खपग्यौ,
थारी मां री कूंख सूनी होयगी
थारै बाप री छाती फाटगी,
थारा टाबरिया रुळग्या,
थारी लिछमी रो सुहाग पुंछग्यो
थारी वैनां री ग्रस्मत लुटगी
पण थूं ग्रडिग रैयौ
हूं तन्नै निमस्कार करूं ।।

धरती रा लाडेसर
थारी यातनावां री गवाई
जे जेलखानां बोलै तौ
ग्रवश्य देवेला;
पुलिस थाणा री-भींतां
जे जबान खोलै
तो वे'ई रोय रोय कैवैला;
ग्रस्पताळां में
धीमै धीमै ग्रसर
करण ग्राळा इजेक्मनां री टूटियोड़ी सूयां
जे बोल पड़ै
तौ थारी गाथा
कूक कूक'र कैवेला ।।

बरफ री सिलावां
पिघळती नईं होवंती तौ
वे'ई ग्रापरौ ब्यान
किरणी जांच कमीसन ग्रथवा कोरट में
देवरण सारू ग्रवश्य ग्रागै ग्रावती

अर केवती
कित्ताई अनाम नौजवानां नै
सीतकाळ री काळी रातां में
म्हारी ठण्डी सपाट छाती माथै
सुवाया गया हा ।।

सूरज रौ तीखौ तावड़ौ,
सर्च लाइट रो माथौ-दुखावरण वाळो, पळकौ
नींद सूं बिचकाय'र उठाय देवण आळी यातनावां,
सुई री चुभरण
रात रात, आखी रात
सिकंजां मांय कस्योड़ौ थूं
अर थारै दुखदरद रा छिन
कोड़ां सूं कूटीज्योड़ी थारी पीठ
झंभूरा अर संडासी—
जिकां सूं थारी आंगळयां रा नख
बारै काढ लिया—
वै हाकौ कर कर'र कैवैला
थारै ऊपर ढायोड़ा जुलमां री कां'णी ।।

थन्नै पागल कियौ;
सड़क री छाती माथै चालरण आळा रोलर
थारी उघाड़ी पीठ उपर चलाय दिया;
हंटर, लाठी, डण्डा, लात, घूंसां री मार सूं
थारी देही दरदीजगी,
थारी चामड़ी उधड़गी,
थारै राछां माथै
मारियोड़ी मार
थारै ड़ील नै सूंधौ नो होवरण दियौ ।।

नास्यां मांय सूं
नीसरण आळै खून रा नीसाण
चावै कित्ताई पाणी सूं
सावळ धोय काढ्या होवै
पण उणां रा दाग तो
इतियास रै पानड़ां ऊपर
चांद अर सितारां ज्यूं
चम चम चमकण लागग्या है,
वै अवै कियां धुपै।
तैं अमरता री एक औरूं इतियास वणायो
भारत री गौरवगाथा में नुवां पानड़ा जोड़िया,
नुवीं पीढ़ी रा अमर माणवी!
हूं तन्नै
सत् सत् निमस्कार करूं ।।

सून्य में विलीण होवण वाळै
आतम तत्व री
इयां तो कोई दीखण आळी
अस्तित्व नीं है,
पण इण विराट विस्व री सृस्टी करणवाळा
इण तत्वां री एक एक इकाई री अस्तित्व है,
उणी तरियां
समग्र रास्ट्र जीवण रै इतियास नै वणावण आळा
ओ अज्ञात शहीद!
नीलै आकास,
भूरी धरती,
हवा री महकती सोरम
नेड़ै अर दूर

अकास रै एक एक नीलै कण में
रळियोड़ी मिळियोड़ी
थारी गौरव गाथा
माणवी इतियास रै विकास रै सागै सागै
थारै करतब री छाप छोडती जासी ।।

बेद कैवै
सबद नित्य है
इणी तरियां
थारै करतब री गाथा
पानड़ां माथै नी लिखीजै
तो, कोई बात नीं
पण धरती री छाती ऊपर
थारै त्याग, तपस्या अर बलिदान
रा गै'रा बण—
सदा बण्या रैसी ।।

थांरै सूं आंवण वाळी पीढ़ी
प्रेरणा लेसी
नुवों इतियास
थारी ई यादगार में लिख्यौ जासी ।
आजाद देसां री खुली हवा मैं
थारै खून अर पसीनै री सोवणी सोरम होसी ।।

अबै आगै सारू
अ जुलम कदेई नीं होय सकै
इण री चौकसी,
थारी वातां री फुलवाड़ी सूं होसी ।।

ओ शहीदी इतियास रा निर्माता !
नुवीं पीढ़ी रा अनाम, ऊजळा आखर
अर अमर माणवी !
हूं तन्नै
सत सत निमस्कार करूं ।।

गोस्वामी चौक,
बीकानेर

प्रकासकां सारूं—

* 'जागती जोत' में आपरै प्रकासन संस्थान सूं प्रकासित पोथ्यां री दोय प्रतियां समीक्षा सारूं जरूर भिजावो ।
* 'जागती जोत' रै जिण अंक में आपरी पोथ्यां री समीक्षा छपसी वो अंक आपनै जरूर मिलसी ।

—सम्पादक

सम्पादक रो पतो—

* दीनदयाल ओझा
  बिन्नाणियां री चौक
  बीकानेर

परैसी छायां भागै रे

द्वारकाप्रसाद वर्मा

हर्‌या रूंखड़ा तळै आज तावड़ियो लागै रे
परैसी छायां भागै रे
सरम भूलग्या आपो खोयो
मिनखां यी री जरूरत में
बेजां मुळक्या उड्या पून में
मेळां खेळां री रुत में
मेळो खिडगो पग मेलां इब किण रै सागै रे
परैसी छाया भागै रे
भाफण मां'री निगै पड़ी
कै कसर रह्यी जद मरणै में
गयी औसता मिनख जूण रो
रीतो पेटो भरणै में
म्हे लारां बिस्वास चालर्‌यो आगै आगै रे
परैसी छाया भागै रे
डाट मती अब सांस
किवाड़ां रै भूठां भुड़कापर तूं
खड़्या करै क्यूं कान बावळा
पैड़्यां रै खुड़का पर तूं
लोरी रा छिण सुणै भरम सुत्योड़ा जागै रे
हर्‌या रूंखड़ां तळै आज तावड़ियो लागै रे
परैसी छायां भागै रे।



६५-बी, पंचवटी, उदयपुर

तीन छोटी कवितावां

सुरगवासी

त्रिलोक गोयल

अेक देस भगत बोल्यो
जीजा-आपणो मुलक सुरग है सुरग
हूं बोल्यो-बेटा
जदी तो आपां सुरगवासी हां ।



अचम्भो

म्हे तो लोगां रा खाली तार ही काट्या हा
लोग ट्यूब लाइट ही फोड़दी
उखाड़ दियो बीजळी रो खम्भो को खम्भो ।
जनता में इतरो करेन्ट कठा सूं आग्यो
ओही कर रया है मां बेटा अचम्भो ।।



प्रशन अर उत्तर

परीक्षा में बूझ्यौ गयो हो सुवाल
संक्षेप में लिखौ राम रो हाल
परीक्षार्थी लिख्यौ उत्तर
ई मुलक में
हर जुग में राम अवतरित होता रह्या है
सत जुग में परशुराम
त्रेता में रघुवंशीराम
द्वापर में बलराम
अर कळजुग में जगजीवन राम
आप यां चारयां में सूं
किण रो हाल जाणनौ चावो हो
किरपा कर'र स्पस्ट करो ।
पहलां आपरा प्रस्न नै
ठीक करबा रो कस्ट करो ।।



अग्रसेन नगर,
अजमेर

जमारो

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

वीं री आंख्यां रै अगाड़ी तितल्यां सी उडण लागगी । आंमूड़ा री तितलियां
वीं आपरो मूंडो हथेल्यां मांय लुका लियो । वा डागळै माथै गयी परी क्यूंकै आंगणै
सरनाटो वीं नै सतावण लाग्यो हो ।

आज दिनूगै सूं ही वा उफतगी ही । आपरै परिवेस अर सांच सूं । स
सांच सूं जिणरी लखाव वीं नै आज पैली दफै हुयो कै वा आपरै धणी री लुगाई कोन
साथण कोनी, वा तो खाली अेक भोगण री चीजवस्त है । इयै वात वीं नै घणो
दियो । उण रै काळजै में आ वात घड़ी-घड़ी बांवळियै रै तीखै कांटे ज्यूं चुभण लागगी

वीं नै आज पैली दफै इण वात रो भी लखाव हुयो कै कुदरत मिनख
वगावत करै है चाये वा वगावत घूड़ रै ढिगले ज्यूं भले ई मिट जावै पण वा हुवै पका
है । कदैई कदैई एड़ा भी पुळ जलम लेवै है जिकै रो लखाव कैनेई कोनी हुवै ।

आज ऐड़ा ई पलछिन वीं रै अर वींरै घरवाळां रै बीच जलमग्या ह
अचाणचक अर अनायास । उण वगत वा जूंझारू वणगी ही अर सगळी मान मरजाद
लांपो लगायनै चिरळाय पड़ी ही 'थां मांय अेक भी मिनख कोनी । सगळा जणा का
हो । थै मन्नै कळपाय कळपाय मारनो चावो पण अवै म्हैं सूं थांरा धमीड़ा कोनी सै
मन्नै थांरै बीच रैवणोई कोनी । वीं रीस में आपरी सासू नै डाकण अर घरवाळां नै ड
कै दियो ।

तद वीं रै धणी वींनै कूट न्हाखी । वा फूंफाय परी अेकान्त में बैसगी ।

× × ×

सिझा ढळनै लागगी ही । राख जेड़ो धुंधळो अंधारो धीमे-धीमे ल
जिस्यो हुयग्यो हो । गांव रै काचा-पाका घरां रै डागळै माथै चानणै रा आसरी टु
नटखट टाबरां री तरियां नाठण लाग्या हा ।

वा उण सगळां नै जोवती रयी। कद अंधारो घणो गैरो हुयो अर कद दीयां चिमन्यां अर लालटेणां रै चानणां री टीकियां चमकण लागी, बींनैं मालम ही नईं। वा तो ओळ री खुभण सूं वांवळी ही। उण में डूबोड़ी ही।

बीं नै याद आयो कै दसवीं रो इमतान देवणै सूं पैलाई बीं नै आ ठा लागगी ही के बीं रो ब्याव तय हुयग्यो है। वा अचंभै में मरगी अर बीं मांय री मांय वैगै ब्याव रो विरोध भी कियो कै बा जदताँई दसवीं पास नीं करलै तद ताईं ब्याव नईं करैली। इण बात सूं घर मांय तूफांण मचग्यो अर बीं रै मां-बाप सोचियो कै आ भी आपरी बडी बैन ज्यूं किणी बेजातिये सूं कचेड़ी में जायनै ब्याव कर लेसी।

आ बात सौ टका सांची ही के बीं री बैन आपरै भायलै सागै नाठगी ही। इण रो कारण बीं री बैन रो भावुक मनड़ो हो अर बीं री बैन नै आ ठा लागगी ही कै उणरो ब्याव ठेठ गांव रै अेक छोरे सूं हुय रयो है जिको अंगूठा छाप है। परचूण री दुकान में पुड़ियां बांधै। ऐड़ी स्थिति में वा आपरै सुपनां नै कियां रोस सकै? बा महा नगरां में जलमी, बडी हुई अर पढी।...

बीं री बैन जद आपरै बाप नै आपरै मन री बात बताई तो बाप धरती आभै नै अेक करतो हुयो बोल्यो 'थारो माथो खराब है। हूं बाभण रो जायो म्हांरी बेटी नै अेक धोबीड़े नै परणावूंला?

बीं री बैन बतायो, 'मिनख केवल मिनख हुवै। बीं नै जाति-धरम सूं नईं; गुणां सूं पैचाणनो चाइजै। बो आखिर प्रोफेसर है। हूं बीं रै सागै सोरी सुखी रैवूंली।

पण बाप नीं मानियो। तद बड़ी बैन अपणै आप ब्याव कर लियो।

अर वा?

इण सवाल सूं ई वा डिब सी गयी। के वा आपरी बैन रै पगलियां माथै नीं चाल सकै? पण उणरा माइत घणा सावचेत हुयग्या। अर बीं रो ब्याव कलकत्तै सूं आयनै बीकानेर मांय झटाफट कर काढियो।

वा सगळै कामण-टामण में अेक मूरती री तरियां रयी। अेक निरपेक्ष अवस्था ही उणरी।

ब्याव रै पछै बा नापासर गांव आयगी। धोरां रै बिचाळी वस्योड़ो बो गांव। बीं नै मांडाणै ई घाघरो, ओढ़णो अर कांचळी, कुड़तो पैरणी पड़ती। टीके री रात ही बीं री भावुकता मरगी जद बीं रै धणी आवतो ई बीं रै डील री लूटखसोट चावण लागग्यो।

बीं नै ठा लागगी के वा अेक जिन्स है जिकै नै बीं रो धणी भोगै। धणी ही क्यों, सैंग रा सैंग घरवाळा भोगै। सासू...सुसरो, देवर, जेठ, जेठाणी...! तद बीं नै

लागतो कै वीं रो कोई आपरो कोनी । वा अकेली है···वा आपरै लोगां में अनपैचाणी है ।

सांचैली वा आपणां में अजनबी हुयगी । कदैई-कदैई वीं नै लागतो कै वा आपरी लास नै कांधां माथै खुद उठायनै ढोवै है । आ स्थिति वीं रै वास्तै वडी कोजी ही । अेक मिनख खुद आपरी लास नै उठाणै रै लखाव में पचियै ज्यूं कुळतो जावै । फेर अेक रै पछै अेक टाबरां रै जलम सूं वीं रो तो सत ई निसरग्यो । जद कदैई वीं रै मूंडै सूं खीरां जेड़ा वळवळता बोल निसर जावता तो सगळै घर में रोळारप्पो मच जावतो अर उण री वैन री तरियां वीं माथै भी घर सूं नाठ जावण रो भूंडो आरोप लगा दियो जावतो । वीं रै पीरैवाळां नै कोजी कोजी अर अणूती वातां कयी जावती । वा आपरै काळजै नै आपरी मांयली वासती सूं बाळती रैवती ! अगीठी ज्यूं धुखती रैवती । पण वा न तो नाठती अर न वीं रो धणी वीं री भावनावां नै सैलावतो । सायद वा अबै मां वणगी ही अर वीं रो आपरै नाना-नाना चार टींगरां सूं जुड़ाव हुयग्यो हो । वा सोचती—"मायड़ थारी कित्ती मजबूरयां हुवै ?"

घणो गैरो अंधारो पसरग्यो हो । तारा दूखणियां ज्यूं लाग रया हा । विचारां में डूब्योड़ी नै वगत री सुध भी नईं रयी ।

किणी टींगर रो कूंकणो सुणायी पड़ियो । वा हड़वड़ाय'र उठी । सोचण लागी—'म्हारो छोटोड़ो लाडकंवर कूक रयो है । वा कमजोर होवण लागी । मांय सूं गळन लागी । जुड़ाव री पांख्यां पसरण लागी ।···वा जावती-जावती थमगी अर खुद नै फिटकारां देवती बोली, जद परणीज्योड़ो सुख देवै कोनी तद जायोड़ा कै सुख देसी ?"

तदी वीं रै धणी हेलो पाड़ियो, 'सुणै है, छोटोड़ो मुनो रोव है । अब रोस नै थूक'र घरै चली आव ।'

वीं रै धणी रै अेक हाथ मांय लालटैण हो अर दूजै हाथ में छोटोड़ो मुन्नो । वो वाड़ै रै मांय खिंडियोड़ी घास माथै पग राखतो वीं रै कन्नै आयो । वीं रै दारू पियोड़ी ही । वीं री आंख्यां मांय कनैई लील जावण री वासती ही । वो कित्ती देर ताई वीं सूं हाथाजोड़ी करतो रयो फेर धिंगाणै वी नै अपड़नै घर ले आयो । वीं रै गोदी में छोटेड़ै मुन्नै नै दे दियो···टावर रोवतो रोवतो चुप हुयग्यो ।

वीं नै आपरी स्थिति अर अेक लुगाई री नियती माथै रोवणो आयग्यो । वा वसर-वसर रोवती रयी अर सोचती रयी के लुगाई रो जमारो विरथा है !

वीं रा सगळा टावर आयनै वीं रो घेराव कर लियो ।



सालै री छोली,
बीकानेर

तिस

विनोद सोमाणी 'हंस'

वो रेल रा डिब्बा में घुस्यो अर आखरी सीट माथै जाय जम्यो। आपरो सैमान जमाय नै वो निरवाळो हुयनै बैठग्यो। वांरी अेक खास आदत है कि वो बिना बतळायां किणसूं भी बात नीं करै। फेरूं जद किणी सूं बात हुवणै लागै तो वेरै ग्यान रो पार कोनी। पण, हां वो कुल मिळाय नै कमती बोलै– मतलब रो बोलै। इण कारण वींनै लोग भोळो भी समझै। पण, वींरी घरवाळी सदीव ही इण बात नै काटचा करै अर कैवै–"थे कांई जाणो आंरी आदतां नै। आ तो म्हूं हीज हूं जो आंनै भुगत रैयी हूं।" वो खुद भी इण बात नै समझै है, पण, लाचार है। फालतू बोलनै मूंडो दुखावणो वींनै पसन्द कोनी।

डिब्बा में वींरी सीट खिड़की कनै हैं। सामै गैलरी है। वींरी सामली छोटी सीट माथै अेक वाटरवर्क्स में काम करणियो अकाउन्टेन्ट है, वांरै पास में अेक जुवाण सरदारजी है अर फेरूं वांरी फूठरी जोड़ायत है। वींरी सीट पै वो है, फेरूं एक संस्कृत रो मास्टर है, अेक रीजनल कालेज रो प्रोफेसर है अर ठीक सरदारणी रै सामै पी० एण्ड टी० रो अफसर बैठ्यो है।

वो खुद खिड़की सूं बारै झांकै हो। सून्याड़ कांकड़ में ऊभा खेजड़ा, खाखरा अर झाड़क्यां रा ठूंठ दीसै हा। कठै-कठै धान रा खेत भी दीख जावता। कांधा पै लाठी लियां छोरा छाळयां-टेटां नै चरावता भी कदै-कदास दीख जावता हा। वो प्रकृति री लीला नै निरखै हो। संस्कृत रो मास्टर बाणभट्ट री जीवणी पढै हो। अकाउन्टेन्ट खाली बैठ्यो सगळां रा ही मूंडा जोवै हो। मास्टर सूं इणरी जाण-पिछाण ही अर वे बीच-बीच में बात भी कर लेवता हा।

सरदारणी फूठरी ही– भणी-गुणी लागै ही। वा आपरै खाविन्द सामै झांक-झांक नै मुळकै ही जियां कोई प्रेमिका व्है। सरदार अेक गिलास में पाणी लियां हो, काच गोदी में हो अर आपरी डाढ़ी में पाणी रो गीलो हाथ फिरावै। वार्ता भी करतो

जावै। कदै-कदै माथां रा केसां में कांगसी घालै अर काच में एक्टिग करतो मूंडा नै देखै। सगळा ही अपरिचित भाव सूं बैठ्या हा।

पैली बात सरू करी पी० एण्ड टी० रै अफसर सरदारजी रै साथै। कठा सूं आया हो, कठै जावणो है अर फेरूं हिळ मिळ'र ठहाकै रै साथै बातां। प्रोफेसर भी वांरै नजीक हुवणै सूं बातां में लागग्यो। सरदार अर सरदारणी री बातां सूं बैरो पड़्यो कि दिल्ली में वांरी भारी दुकान है। धंधो खूब चालै हैं। वे अेक-दूजां सूं लव-मैरिज करी है। सरदारणी अेक वारी बोली–"म्हांनै सगळो सुख है। कोई बात री कमी नीं है अर म्हैं सैल-सपाटै रै खातर जाय रिया हां।" सरदारजी काच में मूंडो देखे हो।

वो इण बात सूं घणो प्रभावित हुयो क्यूंकै इसी सोवणी जोड़ी अर वा भी सगळो सुख भोग री है। ब्याव रै छह बरस पाछै भी आंगे सनेव फूठरो हो। बातां रा ठवकारा चालै हा। अठी नै अकाउन्टेन्ट अर मास्टर भी बातां करणै लागा तो वो मास्टर रा हाथां सूं पोथी मांगी–"म्हैं देख सकूं।"

"जरूर दिखावो" मास्टर पोथी हाथ में थमाय दी। सायत् वो भी पोथी सूं छुट्टी लेवणो चावै हो। पोथी नै उलट-पलट नै वो बोल्यो–"आप तो स्टेण्डर्ड री पोथी पढो हो नींतर लोग-बाग रेल में तो फिल्मी पत्रिकावां अर जासूसी उपन्यास पढै है। आपरो टेस्ट फूठरो है।"

ईं बात सूं मास्टर घणो राजी हुयो। खुद री तारीफ सुणी तो वांरै ताण झुकाव भी वढ़्यो।

"आप कांईं करो हो ?" मास्टर पूछ्यो।

"म्हूं तो साहित्य रो अेक सेवक हूं।" गळो साफ करतो वो बोल्यो।

साहित्य सबद सूं मास्टर अर अकाउन्टेन्ट दोनूं ही प्रभावित हुया। फेरूं बातां में अे तीनूं ही सामळ हुयग्या। साहित्य री बातां चालण लागी।

मास्टर कैयो–"म्हूं सास्त्री हूं। ज्योतिस म्हारो विषय रैयो है। म्हूं खुद साहित्य नै चाव सूं पढू हूं। आप उण कवि नै जाणता होवोला। वो म्हारो भायलो है।"

'हां, वो म्हारो भी भायलो है। आये दिन कवि-सम्मेलनां में भेंट हुवै है। आज ही मिल्यो हो। पण, आं लोगां अेक गुट बणाय राख्यो है।"

"तीन-च्यार दिनां पाछै अेक कवि-सम्मेलन कर रैयो है।" अकाउन्टेन्ट बोल्यो।

"आपरो सिक्को जमाय राख्यो है वो।" मास्टर भी हां में हां मिलाई।

"देखो सा, मंच रा कवियां रो अेक गुट हुयग्यो है। मंच पै चालै कोरो हास्य।

हास्य नै भी अे थोड़ाक कवि भूण्डो अर हळको बणाय राख्यो है। अबै आप बतावो कि आदर्स रूप कवि कतरो हळको उतर आयो है। साहित्य नै पाछै छोड़ नै अै लोग दाम कमावणै में लागग्या।" वो आपरा अनुभव सुणावै हो।

"हां सा, आ बात तो सही है। आंरी कवितावां कोरी तुकबन्दी हुवै है– कोई तन्त नीं है। हंसावणो आंरो मकसद व्हैग्यो है। प्रेरणा देवण वाळी रचनावां नीं व्है।" मास्टर बोल्यो।

"पण, मनोरंजन रै खातर हीज अै लोग आवै है।" अकाउंटेन्ट जोर दियो।

"ओ टेस्ट जनता रो आं कवि लोगां ही तो बिगाड़्यो है। आछी कविता करणियो मंच पै जम ही नीं सकै।"

अबै सरदारणी कदै-कदास आंरी बातां भी सुणै ही क्यूं कै अफसर अर प्रोफैसर बात कमती करै हा– वींनै घूरै बैसी हा।

"म्हूं आपरो हाथ देखणो चावूं।" मास्टर वींसूं कैयो।

'कांई देखोला आप। भगवान जो करसी वो ही होसी।" वो बोल्यो। पण, वींनै खुद नै ही लाग्यो कि वो साफ भूंठ बोल रैयो है। खुद रो भविष्य कुणनीं जाणणो चावै।

"फेरूं भी...।" उण हाथ में हथेळी ठाम ली। मास्टर हथेळी री रेखावां देखै हो। वो भी मून हुयनै हाथ कानी देखै हो। सरदारणी रो ध्यान अबै अठीनै बैसी हो। अेक-अेक रेखा नै जांची। आंगळियां रा पोर देख्या। हाथ नै ऊंचो-नीचो करयो। परबत देख्या अर फेरूं बोल्यो–"आपरी ख्यात ४० वें (चाळीसवें) वरस में घणी हुवैली। लोग आपरा काम नै सरावैला। इण बगत आपरा हिरदा में उथळ-पुथळ है कै आप जो मैणत करो हो वांरो फळ नीं मिलै। आपरी भाग्य रेखा फूठरी है। आपरो साहित्य में नाम हुवैलो।" वो गंभीर हुयनै कैवे हो।

वो ओरूं कांई पूछतो। सगळा ही सुणै हा। ईं सूं ओरूं कांई भी पूछणो नीं चावै हो। सरदार-सरदारणी भी आं बातां में मगन हुवता सा दीस्या।

बातां रो सिलसिलो भविष्य अर ज्योतिस माथै चालग्यो। अबै सगळा ही अेक-दूजै सूं बोलै हा। सरदारजी आप बीती सुणावै हा। हस्तरेखां री बातां सांची हुवै है। वे इण बात नै पक्की बतावै हा। अफसर कैवै हो कि ओ सगळो अन्दाजो है। म्हे कदै-कदै केवूं वो ही सही हुय जावै। सगळी बातां फालतू है। प्रोफैसर भी ज्योतिस नै सांचो मानै हो। अठीनै वो मून आंरी बातां सुणै हो।

वीं सरदारणी भी मन में अेक अकुलाहट अनुभव करी कि वा भी कुछ जाणणो चावै है। अतरी ताळ वा मुख रो आवरण ओढ्यां ही पण, ज्योतिस नै हाथ देखता बारी मांयली तिस जागगी अर आवरण उघड़ग्यो।

खैर, कोई बात पर सरदारजी बोल ही पड़्या– "मास्तरजी, ईंरो भी हाथ देखो।"

सरदारणी रो गोरो-गट्ट हाथ मास्टर रै हाथां में आय फस्यो। सावळ चारूं कानी सूं देखनै कैई बातां बताई। राम जाणै सांची ही या झूंठी। कुछेक नोकरी रै बाबत भी बातां बताई। सरदारजी केई बार हां भरै हा। हाथ देखती वेळ्यां सरदारणी रो अेक बारी भी चेतो फालतू बातां में नीं हो। वा सायत् आपरा मन री कोई बात जाणणो चावै हो।

वो इण स्थिति नै देखै हो। अेक मनोवैज्ञानिक री तरै वो बोल्यो–'मास्टरजी थे आ बतावो कि सरदारजी रै कतरी सन्तानां है?"

सायत् ओ हीज वा पूछणो चावै ही। वींरो आंख्यां हिवड़ा री बात सुणनै लुळगी ही। वींरो मांयलो दरद वींनें पीड़ सूं भर दी। गरब सूं मुळकणो कोसां छेटी न्हाटग्यो। मास्टर लाईट कम हुवणै रै मिस हाथ नै छोड़ दियो। बात हंसी-ठट्ठा में आई-गई हुयगी।

वो सोचै हो तिस भावै किणी तरै री हुवै कितरी सबळ हुवै। आ किणनै भी नी छोडै। बारै झांक्यो तो वींरो टेसण आयग्यो हो।

४२-४३ मानसरोवर
जीवन विहार
आनासागर सरक्यूलर रोड
अजमेर ३०५ ००१ (राज.)



उद्योग

राम कहे सुगरीव नै, लंका केती दूर।
आळसियां अळघी घणी, उद्दम हाथ हजूर ॥
उदैराज उद्यम कियां, सब कुछ होवै त्यार।
गाय भैंस कुळ में नहीं, दूध पिवै मंजार ॥

शाही कारीगर

नरोत्तम दास स्वामी

दृश्य १

[पड़दो उठै है]

[हालैंड रो अेक बंदरगाह सारडम में जहाज रो कारखानो। जहाज रै कारखानै रा दो कारीगर वातां करै है]

पहलो कारीगर– कांई कैयो ? तू देस जावण रो विचार करै है ?

दूजो कारीगर– हां ! अबै म्हारै अठै सू जावण रो वखत आयग्यो।

पहलो– तो तूं इत्तो वेगो जासो परो ?

दूजो– वेगो कियां है ? मनै अठै आयां अेक वरस सूं ऊपर अरसो हुग्यो है।

पहलो– अेक वरस ! काल री सी वात लागै है जणां तूं अठै आयो हो।

दूजो– वखत जावतां कांई वार लागै ?

पहलो– कण सोची ही कै आपां इत्ता वेगा विछड़ जासां ? अठै थारो काम पूरो हुग्यो ?

दूजो– हां ! हूं जहाज वणावण री विदया सीखण आयो हो और बा मैं सीख ली।

पहलो– हां ! मास्टर थारै सूं घणो राजी है। बो थारी घणी तारीफ करै हो। कैंवतो हो कारखानै में जित्ता आदमी काम करै है उण सारां में पीटर री बरावरी करणवाळो दूजो कोई नहीं है। पीटर घणो महनती, समझदार और हुसियार है। थां सगळां नै पीटर आळै दाई काम करणो चाहीजै।

पीटर– हां ! माइकेल ! मैं अठै म्हारो काम घणी महनत और ईमानदारी सूं

करयो है । मास्टर री म्हारै माथै महरबानी है । थां सारां री म्हारै प्रति सद्भावना है । मनै प्रसन्नता है कै हूं लारै चोखो नांव छोडनै जाऊं हूं ।

माइकेल– थारै जावणै सू सगळां नै दुख हुसी । तो तूं साची ही जासी परो ?

पीटर– हां माइकेल ! मनै जाणो ही पड़सी ।

माइकेल– म्हारै तो थारो रात दिन रो सागो रह्यो है । सागै उठणो, सागै बैठणो, सागै काम करणो । तूं जासी परो तो थारै बिना म्हारो मन कियां लागसी ? मनै कियां आवड़सी ? म्हारा दिन कियां बीतसी ? तनै छोडण नै म्हारो मन ज़ाबक ही को करै नी ।

पीटर– मन तो म्हारो भी को करै नी । हां ! म्हारळै दाई तूं भी तो रूस रो ही वासी है । तूं म्हारै साथै क्यों नी चालै ? चाल, आपां सागै ही देस चालां ।

माइकेल– पण हूं चाल कोनी सकूं । कोनी चाल सकूं पीटर ! नहीं तो जरूर चालतो ।

पीटर– क्यों ? कांई देस में तनै याद करणवाळो कोई कोनी ? इसो कोई आदमी कोनी जको थारी उडीक मे बैठो हुवै ?

माइकेल– है पीटर ! है म्हारी बूढी मा है, मनै दिन रात याद करती हुसी और है अेक और जणी– कतरीना, बरसां सूं म्हारी उडीक में बैठी है । कमाई ठीकसर हुवण लाग तो दोनां नै अठै ला'र राखूं । पण पीटर ! तूं क्यों जावै है ? अठै तनै काम रो किसो घाटो है ?

पीटर– माइकेल ! देस मनै बुलावै है, देस रै प्रति भी तो म्हारो कीं फरज है । आदमी नै फरज रो ध्यान सबसूं पैली राखणो चाहीजै ।

माइकेल– हां ! गांव मे पुजारीजी भी आ ही बात कह्या करता हा ।

पीटर– तो तूं म्हारै सागै क्यो चालै नी ? मा सूं मिलण री मन में नहीं आवै ? और कतरीना...

माइकेल– (ध्यान भूल्योड़ोसो) चालसूं पीटर ! जरूर चालसूं ।

पीटर– मनै घणी खुसी हुसी ।

माइकेल– (अेकाअेक होश में आयो हुवै ज्यूं) नहीं पीटर ! नहीं, म्हारो चालणो नहीं वणै ।

पीटर– पण क्यों नहीं वणै ?

माइकेल– कांई बताऊ ? ओ भेद हाल तांई कैनै ही नहीं बतायो ।

पीटर– वात वतावण जिसी हुवै तो जरूर वता ।

माइकेल– वताऊं ? तनै नहीं वतासूं तो कैनै वतासू ? लं सुण– घणा दिन हुग्या । अेक दिन हूं म्हारी मा रै झूंपड़ै रै आगै बैठो हो । इत्तै में अेक फौज री टुकड़ी मार्च करती थकी उठी कर निकली । टुकड़ी रै साथै अेक अफसर हो, अफसर री आंख म्हारै माथै पड़ी, मनै देख'र अफसर ऊभो रैग्यो । कई ताळ म्हारै सामै देखतो रह्यो । फेर बोल्यो-जवान ! उठ, सम्राट नै थारी सेवा री घणी जरूरत है । हूं ऊभो हुग्यो पण वात म्हारै कीं समझ में को आई नीं । हूं जवाब में कीं कहूं उण सूं पहली ही अफसर अेक बंदूकड़ी लेर म्हारै कांधै माथै थमा दी और मनै मार्च करण रो हुकम दे दियो । सगळा उठै सूं चाल पड्या ।

पीटर– अर्थात् तूं सम्राट री फौज में भर्ती हुग्यो ।

माइकेल– कांई हुयो, कियां हुयो म्हारै तो कीं समझ में कोनी आयो ।

पीटर– पण फौज में भर्ती हुयोड़ो तूं अठै कियां आयग्यो ?

माइकेल– आ ही तो समस्या है । सम्राट मनै फौज में भर्ती कर'र मोटी भूल करी । फौज रो काम मनै जावक ही पसन्द कोनी । भगवान मनै फौज रै लायक वणायो ही कोनी । फौज में भरती हुवण री म्हारी बिलकुल ही इंछया कोनी ही । हूं कीं समझूं अर कीं जवाब देऊं जकै सूं पैली ही अफसर मनै मार्च करण रो हुकम दे दियो । मा छूटी, घरबार छूट्यो और कतरीना भी छूटी । फौज रो काम मनै बिलकुल ही रास को आयो नी । आज अठै, कालै उठै कुण जाणै कित्ती जाग्यां भटकणो पड्यो । ना खावण रो आराम, ना पीवण रो । ऊपर सूं रात दिन गाळ्यां न्यारी । हूं तो वापअर तग आयग्यो नाक ताईं ।

पीटर– (बीच में ही)– पण अठै कियां आ पूगो ?

माइकेल– वा ही तो वताऊं हूं दोस्त ! अेक वार दिसंबर रो महीनो हो । रात रो वखत हो । भयंकर पाळो पड़ै हो । रात रा तीन वजी मनै हुकम मिल्यो कै किलै माथै जार पहरो देऊं । हूं किलै कनै पूगो और पहरो देवण लागो । खुलो आकास । वरफ वरस रही ही । म्हारै सूं ऊभो को रहीज्यो नी । कीं गर्मी मिलै इण खातर चक्कर मारणा सरू कर्‌या । अर चक्कर लगांवतो-लगांवतो चाल्यो तो इसो चाल्यो कै चालतो ही गयो । तनै विसवास को हुसी नी कै हूं होश में आयो जद वठै सूं पांच कोस आगै निकळ आयो हो ।

पीटर– मतलब ओ कै तूं फौज सूं भागिआयो और फौज रो भगोड़ो वणग्यो ।

माइकेल– मनैं मालम नहीं हो कै भगोड़ो कांई हुवै पण इसीसी कीं वात म्हारै मन में जरूर आयी ।

पीटर– अरे भला मिनख ! थारो पत्तो लाग ज्यावै तो थारो कांई हाल हुवै ? कीं मालम है तनै ?

माइकेल– कांई ?

पीटर– तनैं तुरंत गोळी मार दी जासी ।

माइकेल– मनैं भी इसो ही कीं डर लाग्यो । गो मैं तो फेर लारोनै फिरर ही कोनी देख्यो । पग आगै ही वधायां राख्या । आखर इण री सींव आ ही पूगी । पछै उठै सूं अठै आ पूग्यो अर इण कारखानै में भरती हुग्यो ।

पीटर ! ओ है म्हारो भेद, आ है म्हारी समस्या । तूं जाणै है कै म्हारो जीवणो खतरै में है । मनैं विसवास है कै तूं देस जासी जद म्हारो ओ भेद किणी नैं नहीं वतासी । कठैई सम्राट रै आदमियां नैं म्हारो पत्तो लागग्यो तो थारै इण दोस्त रै वास्तै घणी बुरी बात हुसी ।

पीटर– तूं नहचो राख । सम्राट नैं जित्ती वात अबार मालम है उणसूं वेसी जरा भी मालम नहीं हुसी । पण ओ कित्तो निर्दय कानून है कै आदमी नैं फौज रै लायक साबित नहीं हुणै पर गोळो मार दी जावै । सम्राट इसो कानून वणायो ही क्यों ? घणो निर्दयी है सम्राट, नहीं ?

माइकेल– ना दोस्त ! सम्राट नैं तूं कीं मत कै' सम्राट नैं सै लोग प्यार करै हैं । फौज री नोकरी करण री मनैं इच्छा नहीं पण सम्राट री सेवा और कैई तरीकै सूं कर सकूं तो करण री घणी इच्छा है सम्राट री सेवा कर अर मनैं घणी प्रसन्नता हुसी ।

पीटर– भगवान थारी मनस्या वेगी ही पूरी करै !

माईकेल– देख पीटर ! म्हारो भेद मैं अेक तनैं हो वतायो है ।

पीटर– म्हारो विसवास राख माइकेल । इसो वखत जरूर आसी जद तनैं विसवास हुज्यासी कै हूं थारो साचो दोस्त हूं. हां दोस्त ! हूं काल ही अठै सूं रवानै हुज्यासूं ।

[पड़दो पड़ै है]

दृश्य २

[पड़दो उठै है]

[रूस में मास्को री बारली बस्ती रो अेक घर। माइकेल और उणरी मा वातां करै है]

माइकेल– मा ! अबै काल हूं पाछो जासू ।

मा– इत्तो वेगो बेटा !

माइकेल– वेगो कठै मा! मनै आयां नै पूरो अेक महीनो हुग्यो ।

मा– अेक महीनो !

माइकेल– हां मां ! अेक महीनो । अठै और रैवण में घणो जोखम है मा ! मा! तनै याद है हूं अठै सूं किंयां गयो हो । और फेर अठै घणो रैसूं तो म्हारी उठै री नौकरी जासी परी ! और हूं घणा दिनां सूं जका सपना देखूं हूं अधूरा ही विलाय जासी । साची पूछो तो मनै अठै आवणो ही नहीं चाहीजतो हो पण तनै और कतरीना नै देखण री इच्छा नै हूं रोक नहीं सक्यो । जी तो नहीं करै पूठो जावण रो पण जावणो ही पड़सी । नौकरी मायं ही सगळो आधार है । कीं रकम भेळी हुज्याय तो तनै और कतरीना नै उठै ही ले जाऊं । वठै हूं घणो ही सुख सूं हूं मा ! कमी है तो बस थारी और कतरीना री । अबकै आसूं तो तनै और कतरीना नै लेर ही जासूं ।

मा– हां बेटा ! कतरीना नै जरूर ले ज्याये ! किता बरसां सूं थारै वास्तै बैठी है, तनै उडीक रही है ।

माइकेल– और मां तनै भी चालणो पड़सी !

मा– हूं बूढी हुगी बेटा ! बुढ़ापै में परदेस में कठै जासूं ? बस अेक ही इच्छा मन में है, थारो घर बस ज्याय । पछै भगवान मनै भलां ही उठा लेवै !

[दरवाजै माथै थाप पड़ै है, माइकेल चमकै है]

माइकेल– ठैर मा ! ठैर, मनै पैली अठै सूं निकळ जावण दै पछै किंवाड़ खोल्ये । [दूजै कमरै में परो जावै है]

[मा किंवाड़ खोलै है; पीटर कमरै मांय आवै है]

पीटर– अरे दोस्त ! कठीनै गयो परो ! अबार तो अठै ऊभो हो, बारी मांय सूं मैं साफ देखियो हो ।

[माइकेल पीटर री बोली ओळख अर पाछो कमरै में आवै है]

माइकेल– पीटर ! अरे पीटर ! तूं है ? साचेई ! वाह दोस्त ! कठै सूं आ पूग्यो ? अठैई कांई कोई जहाज रो काम चालै है ? पण पाणी सूं सईकड़ां कोसां दूर अठै जहाज रो कांई काम ?

पीटर– ना माइकेल ! अठै नहीं ! सेंटपीटर्सबर्ग में जहाज रो मोटो कारखानो खुल्यो है । सेंटपीटर्सबर्ग, तूं जाणतो हुसी समुद्र रै तट माथै सम्राट नूवो शहर बसायो है, उठै ।

माइकेल– हां ! सुणन में आयी है कै सम्राट उठै अेक नूंवो शहर बसायो है । लोग कैवै है कै आजकाल सम्राट मास्को में ही है ।

पीटर– हां ! आज दिनूंगै ही सम्राट री सवारी थारै घर आगै सूं नीकळी ही ।

माइकेल– हां ! सुणी तो ही पण देखी कोनी । हूं उण वगत घरै कोनी हो । पण पीटर ! तैं म्हारै घर रो पत्तो कियां लगा लियो ? शहर सूं इत्ती दूर पतो लगावण में तनै घणी सिरफोड़ी करणी पड़ी हुसी ।

पीटर– ना ! दिनूगै हूं अठीकर नीकळ्यो जद दरवाजै माथै श्रीमती स्तानी मित्स रो सैनबोर्ड लाग्योड़ो देख्यो । जद मनै थारो नांव याद आयो और विचार आयो कै श्रीमती स्तानीमित्स का तो थारी मा है, का कोई मासी । बस निश्चय करचो कै महल सूं पूठो आ'र थारै बारै में पूछताछ करसूं...

माइकेल– महल ? किसो महल ?

पीटर–हूं रैऊं जकी जगां नै हूं महल ही कहया करूं हूं । आ म्हारी अेक सनक समझ लै ।

माइकेल– अजीब सनक है थारी !

पीटर– तो महल में जार भेस बदळयो और थारो पत्तो लगावण नै अठै आ पूग्यो ।

माइकेल– भेस बदळयो ? हां ! अरे तैं तो मोटै सरदार जिसा कपड़ा पैर राख्या है, इत्ता बढ़िया कपड़ा कठै सूं लायो तूं ।

पीटर– अरे माइकेल ! याद आवै है तनै कै आपां पेड़ां रा कित्ता मोटा-मोटा लक्कड़ कारखानै में चीरया करता हा ।

माइकेल– याद क्यूं कोनी आवै ? हूं तो हाल तांई चीरूं ही हूं पण थारो सायो अबै कोय नी ।

चाल, आपां पाछा ही उठै सारडम रै कारखानै में चालां ।

पीटर– पण म्हारो काम तो अठै सेंटपीटर्सवर्ग में है।

माइकेल– उण दिसम्बर री रात री बा घटना नहीं हुयी हुती तो हूंई थारै साथै सेंटपीटर्सबर्ग चालतो।

पीटर– उण घटना पछै थारी अठै आवण री हिम्मत कियां हुई ?

माइकेल– हिम्मत तो माडाणी ही हुयी। मा मनै घणो याद करती ही। अेक वार कियां ई करर आवण खातर लिख्यो और हूं अठै आयग्यो।
(दरवाजै माथै जोर सूं थाप पड़ै है। माइकेल बारी मांय सूं भांकै है)

माइकेल– सिपाही और साथै अफसर ! वात कांई है पीटर ! मा ! तूं ठहर। वारणो मती खोल्ये। मनै तो लुक्यां सरसी दोस्त !

पीटर– माइकेल ! ना, तनै लुकण री जरूरत कोनी। अै थारै खातर को आया नी। अै म्हारै खातर आया है। अै म्हारा दोस्त है !

माइकेल– तूं कैवै है तो ठीक है पण... पण इणां में अेक आदमी म्हारलै उण अफसर दाई दीसै है।

[माइकेल री मा दरवाजो खोलै है, अफसर मांय आवै है और फौजी सलामी करै है]

अफसर– अन्नदाता ! सेंटपीटर्सवर्ग सूं अै घणा जरूरी कागजात आया है।
(पीटर कागजात लेर वांचण लागै है)

माइकेल री मा– अन्नदाता !

माइकेल– अन्नदाता ! पीटर ! इणरो कांई मतलब है ?

अफसर– अरे मूरख ! अन्नदाता रै आगै इयां कियां ऊभो है ? धरती माथै गोडा टेक गोडा !

माइकेल री मां– (गोडा टेकै है) अन्नदाता ! खमा; घणी खमा ! म्हारो माइकेल निरपराध है।

माइकेल– मा ! तूं कांई वावळापणो करै है ? ओ तो पीटर रो अेक मजाक है। खूब पीटर ! खूब !

अफसर– नालायक ! सम्राट रो नांव लेर बोलै है...पण...पण...ठहर तो... मनै थोड़ो ध्यान सूं तो देखण दे। पैली मिलियोड़ो दीसै है भाया ! हां ! याद आयो। सिपाह्यां ! पकड़लो अेनै। ओ फौज सूं भागियोड़ो है, भगोड़ो है।

माइकेल– (निराशा रै भाव सूं) खेल खतम हुयो ! जिण दिन सूं डरतो हो वो दिन आखर आ ही गयो !

माइकेल री मा– अफसर साब ! म्हारो बेटो निरपराध है। माइकेल माथै दया करो।

अफसर– सिपाहृयां ले जावो कैदी नै, इणनै फौजी अदालत रै सामणे पेश कियो जावै। इणनै तुरत गोळी मार दी जाणी चाहीजे।

[पीटर अचाणचक कागदां पर सूं आंख उठावै है और अफसर कानी देखै है]

पीटर– अफसर ! मनै थारै कैदी री सेवावां री जरूरत है। इणनै छोड़ दै।

अफसर– जो हुकम अन्नदाता रो !

माइकेल– फेर अन्नदाता ! बात कांई है ? हां ! कीं याद आवै है। सारडम सूं आती वखत आ अफवा कानां में पड़ी ही कै रूस रो सम्राट हालैंड में जहाज रै कैई कारखानै में काम करतो हो। तो कांई म्हारो दोस्त पीटर ही रूस रो महान् सम्राट है ? (अचकातो थको) पीटर ! पीटर ! कांई...

पीटर– माइकेल ! अबै तनै म्हारो भेद मालम हुग्यो।

माइकेल– और तूं रूस रो सम्राट है।

पीटर– हां !

(माइकेल जमी माथै गोडा टेक अर सलामी करै है)

पीटर– उठ दोस्त ! उठ बूढी मा ! डर मत, थारै बेटै सरदार माइकेल नै कोई खतरो कोनी।

माइकेल री मा– सरदार माइकेल ?

पीटर– हां मा ! सेंटपीटर्सवर्ग में जहाज रै कारखानै नै संभाळन वास्तै मनै थारै बेटै री जरूरत है। थे दोनूं सेंटपीटर्सवर्ग चालण री त्यारी करो। माइकेल ! थारी कतरीना नै काल सरदारणी कतरीना बणाय लियै। और उणनै भी साथै ही लेतो आयै। मनै तो घणै जरूरी काम सूं आज ही सेंटपीटर्सवर्ग जावणो पड़सी इण वास्तै ब्यांव में तो हूं सम्मिलित नहीं हो सकसूं। काल दिनूंगै म्हारो सचिव सगळा हुकम लेर थारै कनै आ जासी। लै आ थैली थारै मनै राख।

माइकेल– (चमगूंगो सो) हूं जागूं हूं क नींद में हूं ? ओ सपनो देख रह्यो हूं क परतख है ? कीं समझ में को आवैनी ?

पीटर– तो विदा सरदार माइकेल ! थारी कतरीना नैं म्हारो अभिवादन कंयैं ।

[हाथ मिलावै है अर जावै है]

माइकेल– (वियां ही चमगूंगो सो) तो अफसर ! फोजी अदालत रैं आगै मनैं कद पेश करीजसी ?

अफसर– सरदार साहब ! हूं आप यूं विदा लेऊं हूं । कदैई मौको हुवै तो सम्राट रै आगै दो शब्द म्हारै वास्तै भी कैवण री महरबानी करावसो ।

[अफसर फौजी सलाम करैं है अर जावै है]

[माइकेल और माइकेल री मा चमगूंगा सा ऊभा रैवै है ।]

[पड़दो पड़ै है]



साहित में खिंचाव री सक्ति

आप जिको कई लिखो उणमें सावधानी र कलात्मकता सूं भावां रै उद्रेक 'र हिवडै नै खेंचण रो ध्यांन राखो ।

'बुअलो'

कवितावां री रूपाळी हुवणो ई पूरणता नहीं है, उणमें खिंचाव भी हुवणो चाइजे । उणमें इसो बळ हुवणो चाइजै कै सुणणवाळै रै मन नै जठीनै चावै वठीनै खींच लेवै ।

'होरेस'

ईसरा परमेसरा

डॉ० नरेन्द्र भानावत

राजस्थान री रत्नगर्भा माटी मांय हर जुग में जलम भोम रे खातर आतम बळिदान करणिया वीर, भगवान रै चरणां मांय जीवन समर्पण करण आळा भगत अर रूं-रूं में प्राण फूंकणिया कवि, जनमता रया है। इणीज कटी में डिंगळ रा नामी कवि अर पहुँच्योड़ा भगत बारहठ ईसरदास हुया। वै आपरी अगाध भक्ति, निश्छळ समर्पण भाव अर चमत्कारी सिद्धियां रै कारण परमेसर रा अवतार मान्या जावै। दन्तकथावां रै रूप में प्रसिद्ध है कै ईसरदास वेणु नदी में डूबण सूं मरणियै सांगा नै पाछो जीवित कियो, खारी जमीं में मीठा पाणी रो कुओ खुदवायो अर कंडा रा खोपरा, नै खोपरा रा कंडा वणाया। 'ईसरा परमेसरा', आ लोक उक्ति इण बात री साख भरै। राजस्थान रा घणखरा भगत कवियां, ईसरदास नै ईश्वर रूप अर साचा भगत मान वांरी स्तुति की है। ईसरदास रा समकालीन, डिंगळ रा नामी कवि गाडण केसोदास कह्यो—संसार नै पाप री दावाग्नि में झुळसतो देख'र ईसरदास 'हरिरस' रूपी समन्दर री रचना करी—

जग प्राजळतो जाण, अघ दावानळ ऊपरां।
रचियो रोहड़ राण समंद हरिरस सूरवत॥

ईसरदास रो जनम संवत-१५९५ में चेत सुदी नवमी नै जोधपुर राज्य रै भादरेस नामक गांव में एक चारण परिवार में हुयो। वांरै पिता रो नाम सूजो जी अर माता रो नाम अमरा बाई हो। टाबरपणां में इज वांरा मां-बाप देवलोक हुयग्या। काका आसानन्द जी री देखरेख में वांरी शिक्षा-दीक्षा हुयी। आसानन्द जी डिंगळ रा प्रौढ़ कवि हा। १४ वरस री उमर में ईसरदास रो ब्याह देवलबाई रै सागै हुयो। देवळ बाई पतिव्रता, सेवाभावी अर धरमश्रद्धालु स्त्री ही। ओछी ऊमर में इज वा परलोक सिधारगी। ईसूं ईसरदास नै घणी ठेस पोंहची अर सांसारिक सुखां सूं वी विरक्त हुयग्या।

एकर ईसरदास आपरै काका आसानन्द जी रै सागै द्वारका री जात्रा गया। मारग में जामनगर रे रावळ जाम सूं भेंट हुई। रावळ जाम ईसरदास री कविता चातुरी पर रीझग्या अर वांनै करोड़पसाव रो सन्मान दे'र आपरा पोतपाळ बणाया—

क्रोड़पसाव ईसर कियो, दियो सचाणो गाम।
दाता सिरोमणि देखियो, जगसर रावळ जाम॥

चालीस बरस तांई ईसरदास जामनगर में रया। जिनगाणी रै लारला बरसां में बी आपरी जलमभोम भादरेस पाच्छा आयग्या, अर लूणी नदी रै किनारै कुटिया बणा'र भजन भाव करण लागा। सम्वत १६७५ में अस्सी बरस री उमर में वै देवलोक हुआ।

जद वै जामनगर में हा, बठारै राज पण्डित पीताम्बरदास भट्ट रै सम्पर्क में आया। पीताम्बरदास संस्कृत रा जबरा विद्वान अर धर्मशास्त्र रा प्रकाण्ड पण्डित हा बांरी किरपा सूं ईसरदास भागवत आदि धर्म शास्त्रां रो ज्ञान प्राप्त करयो।

लागूं हूं पहली लुळै, पीताम्बर गुर पाय।
भेद महारस भागवत, पागूं जास पसाय॥

ईसरदास री कविता रा मुख्य दो पक्ष है—वीररस री कविता अर भक्ति भाव री कविता। वीररस री कविता रो प्रतिनिधि ग्रन्थ है-'हालां झाला रा कुण्डळिया।' इमें हलवद नरेश झाला रायसिंह अर ध्रोल राज्य रै ठाकुर हाला जसा रै युद्ध रो वर्णन है। वीरभाव री व्यंजना में ओ ग्रंथ बेजोड़ है। वीर रै स्वभाव रो एक दोहो प्रस्तुत है—

सादूळो आपै समो, बीजो कवण गिणंत।
हाक बिडाणी किम सहै, घण गाजियै मरंत॥

सिंघ आपरै मुकाबले में और कीं'नै गिणै ? वो बीजारी हाक नै क्यूंकर सहण करे ? वो तो बादळां नै गाजतां सुण'र इज झपटो मारै।

पीताम्बरदास रै सम्पर्क सूं पैली ईसरदास री कविता रो नायक लौकिक पुरुष हो अर कविता रो उद्देश्य हो वींरै शौर्य रो वरणन करणो पण अबै कवि री दीठ बदळगी, बींरो जीवनदरसण बदळग्यो। वींरा नायक बणग्या अवतारी पुरुष, बींरो लक्ष्य बणग्यो परब्रह्म रै साक्षात्कार री अनुभूति रो वरणन।

ईसरदास ने भक्त कवि रै रूप में जो आदर अर प्रसिद्धि मिली वा बीजा किणी कवि नै नीं मिली। 'हरिरस' आंरो श्रेष्ठ भक्ति काव्य है। राजस्थान अर गुजरात में रामायण अर गीता री नांई ईंरो घर-घर पाठ हुवै। ईंरै तीन सौ साठ छन्दां में कर्म योग, भक्तियोग अर ज्ञानयोग री त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। जो ईंरो नित हमेस पाठ करै बो आपरै पापां सूं मुक्त हुई जावै—

कवि ईसर हरिरस कियो, छंद तीन सौ साठ ।
महादुस्ट पामै मुगत, पो उठ कीजै पाठ ॥

'हरिरस' री रचना भक्ति भाव रै धरातळ पर हुई है । ईं रो उद्देश्य है—जनम-मरण रै पार उतरणो, सांसारिक करमां रै बंधण सूं छूटणो—

भगतवछल । मो दे भगति, भांज परा सह भ्रम्म ।
मूझ तणा क्रम मेटवा; कथां तुहाला क्रम्म ॥

'हरिरस' में ईश्वर रै जिण रूप रो कीरतन हुयो है वो में सगुण रूप री प्रधानता है । ईसरदास रो ईश्वर लोकरक्षक है, दीनदयाल है, भगतवत्सल है । कृष्ण रूप में ईश्वर री वन्दना करतां कवि कवै—

नमो कन्ह रूप निकंदन कंस
नमो व्रजराज नमो जदुवंस ।
नमो प्रभ संत गऊ प्रतपाल
नमो दुसंटादल दीन्दयाल ॥

सगुण रूप में ईश्वर री स्तुति करतां थकां भी कवि मानै कै मूळ रूप में ईश्वर निराकार, निर्गुण अर निर्लेप इज है । भगतां रै कारण इज वो विविध अवतार धारण करै—

निराकार निरलेप, अगम जांणै स्रूति सिव अज ।
अनतवार अवतार करै भूधर भगतां कज ॥

सगुण अर निर्गुण भक्ति भावना रो समन्वय ईसरदास रै 'हरिरस' री खासियत है ।

ईश्वर री लीला अर महिमा अपरम्पार है । वो सर्व शक्तिमान है । वो सब कुछ कर सकै । राई नै परवत वणाय सकै अर परवत नै राई—

सांई सूं सगळी हुवै, नरधारी कोई नांय ।
राई कूं परवत करै, परवत राई समाय ॥

ईसरदास रो ईश्वर विराट अर व्यापक है । सगळी धरती वींरो सिंघासण है, पवन आपरै हाथां सूं पंखो करै । अढार भार वनस्पति भांत-भांत रा फूलां सूं वींरी पूजा करै; वादळ छत्र रै रूप में छाया रैवै, खुद भगवान शंकर वांरो कीरतन करै अर सूरज नै चांद रातदिन वांरी आरती उतारै—

सिंघासण धर सोह, करत वींजण समीर कर ।
पूहप भार अढार, पूज, चढ़वै विधि विधि पर ।
छांह धरत घन छत्र, करै संकर कीरत्ती ।
अवतारंत निस-अहर, अरक ससिहर आरती ।

ईसरदास ईश्वर री विराटता अर महानता पर इत्ता रीझग्या है कै से प्रकृति नै पुजापा रै रूप में वांरां चरणां में निछावर कर दी। इण विन्दु सूं ईज ईश्वर रो रहस्यात्मक रूप उभरै। बीरैं रूं-रूं में अनन्त ब्रह्माण्ड जगमगाट करै। बीरै तेज नै कोई पार नी पाय सकै——

पमें कुण पार तोरा परचंड।
वसैं प्रति रोम बिसैं ब्रह्मंड॥

ज्यूं-ज्यूं ईसरदास भगति भावना में गेरा उतरै त्यूं-त्यूं वांरी नरमाई प्रगट व्है। आतम निवेदन रै रूप में वै कैवै——

सांई! तुज्झ बडो धणी, थां सूं बडो न कोय।
तू जैंना सिर हत्थ दे, सो जग में वड होय॥
अवगुण म्हारा बापजी। बगस गरीब नवाज।
जो कुळ पूत कपूत व्है, तोहि पिता कुळ लाज॥
आळम माहर अवगुणा, साहब! तूझ गुणांह।
वूंद-अखा अर रेण-कण, थांघ न लाधैं तांह॥

भगवान रै गुणांरी कोई सीमा नीं। वांरो चरित अबूझ अर अनूठो है। जै सगळी पृथ्वी नै पाटी बणा'र, खुद गणेशजी प्रभुरा चरित लिखै, तो पण पार नीं पाय सके——

पीठ-धरण धर पाटली, हर-उत लेखण हार।
तऊ तोरा चरितां तणा, परम न लब्भे पार॥

जद गणेश जी री आ स्थिति है तद कवि ईसरदास री कांई विसात? कवि कैवै सुवर्णमय सुमेरू पर्वत रा उंचा-उंचा शिखर ज्यांरा महल बण्योड़ा है, वांरै खातर हूं किसा मिन्दर बणवांऊ? ज्यांरै गुणांरो बखान देवता करै; हूं बांरा गुण किण भांत गाऊं? लछमी जी ज्यारै चरणां में विराजै, वांरै चरणां में हूं कोई नजर करूं? ज्यांरै चरणां रा नख गंगाजी धोवै, बांरा चरण हूं किण भांत धोऊं? हे राजाधिराज। आपरै तो घर में ईज कल्प वृक्ष है, हूं किसा फूलां सूं आपरी पूजा करूं? आपरी सेवा तो ब्रह्मा अर शंकर करै, हूं किण भांत सेवा कर आपने रिझांऊ:——

कसा करब हो महल, महल गिरिमेर कहावै.
कसा गाव हों गुणव, गुणब ज्यां तुम्मर गावै।
मैंल्हां की धन माल, सिरीजी चरणां आगै.
कसा पखांड़ां पांव; पवित्र नख गंगा लागै,
की पुहप चढ़ावां सिर परै, पारिजात ब्रख तुझ घरै।
राजाधिराज। की रीझवां, कवि संकर सेवा करै॥

कवि ईसरदास आतम सुद्धि नैं ईज प्रभु री सच्ची सेवा मानै । मानव जीवन री सार्थकता अर काया रै सगळै अंगां री उपयोगिता प्रभु री पूजा रै खातर काम आणै में ईज है—

रसणा रटै तो राम रट, वयणां रांम विचार ।
स्रवण रांम गुण सुण सदा, नयणां रांम निहार ।।

ईसरदास री निश्छल, निर्मल, प्रभावक अर रसपूर्ण भक्ति सूं भरयोड़ै 'हरिरस' रै मुकाबले कोई रसायन नीं । जै औ रसायन घट रै भीतर एक घड़ी भी रै जावै तो सै घट कंचन हुय जावै, आनन्द रूप हुय जावै—

सरब रसायण में सरस हरिरस समो न कोय ।
हेक घड़ी घट में रहै, सह घट कंचन होय ।।



—सी-२३५-ए, तिलक नगर
जयपुर—४

बानगी करुण रस री—

टोळी सूं टळतांह, हिरणा मन माठा हुवै ।
वाल्हा वीछड़तांह जीवै किण विध जेठवा ।।
आसी सावण मास, वरसा रुत आसी वळै ।
सांईनां रो साथ, वळै न आसी वींझरा ।।
लाख लडाया लाड, सुख सो तो सपना भया ।
भाभा दुख रा भाड़, फळवा लागा फारवस ।।
कुरजड़ियां करळा रही, देख विरगा ताल ।
जिणरी जोड़ी वीछड़ी, उणरा कोण हवाल ।।

राजस्थानी काव्य में राम-वर्णन

डा० मदनराज डी० मेहता

ग्यानी लोग सरदा भगती माथे ऊण्डो विचार करता रह्या है। बात आ है के सरदा'र भगती में जठै मात्रा रो भेद व्है उठै भगती रो रूप हीज बदळ जावै। ईस्वर'र जगत नै लेयने जठै भावना जोर पकड़ै, उठै सरदा नै बळ मिळै। इण सरदा सूं हीज भगत'र कवि आखरा भावां री लड़ियां गूंथै, उण में आखरां रै डोरा में भावां रा मोती घणा सुवावणा लागै। भगवान राम नै तो आपांणी संस्क्रिती रै सीळ नै सोभा रै प्रतीक रै साथै-साथै लोक रा रक्षकां रा सिरोमणि गिणीजता आया। लोगां रै हियै में वांरी छवि री प्रतिष्ठा ऐड़ी हुई के लोग वांरै सीळ'र सुभाव सूं रीझ गया। बालमीक सूं आज तांई—सैंकड़ां भक्तां'र कवियां रामजी रा गुण गाया, वां रा बिड़द सुणाया'र वांरी कीरत रा कीरतन सूं इण धरती नै गुंजाय दी। इण बारे में आ बात भी जाणण री है कै संसार सागर में तारण वाळा तो दो हीज है। एक तो 'संत' नै दूजा राम। संत तो माथा माथै विराजे'र 'राम' हियै में। अै हियै में विराजिया 'राम' में मन अैड़ो रमै के जद कदेई भी वै के संका, आतमा नै दोस सूं अळगी करण सारू 'राम' रो समरण भक्त'र कवि दोयी करै! तो बालमीक जद 'राम' रा गुणगान गाया तो वां नारदजी रै मुख सूं केवायो के राम तो भगवान विस्णु ज्यूं हीज वीर्यवान है, भुजबळी है, चौड़ी छातीवाळा धीर, वीर, उदार'र गभीर है। रामजी तो राक्ससां रा नास करणिया'र प्रजा रा पालक है। रामजी री सबसूं बत्ती बढ़ाई आ है के वे बिखा'र, अवखाई ने कीं नी गिणै। रामजी रै इण रूप रो ठप्पो धकली पीढ़ियां रा भगतां'र कवीसरां माथै घणो पड़ियो। राजस्थान में जका जूना पोथी—पाना मिळिया वां में जैसलमेर रा कुशललाभ रा वरणीया 'पिंगल सिरोमणी' में रामजी रो वर्णन घणी आछी तरै सूं हुयो। राम रै जनम रै साथे राम री महिमा कैड़ी जोरदार वरणीजै है:—

अर्क वंस अकास अवधि वित्तीय अरणोदय।
कौसल्या प्राची सु राम रवि प्रगट जगत जय॥

समय निसाचर तिमर किति दिग किरण प्रकासिय ।
दुष्ट कुमुद संकुरीय सत्रु नाखत्र विनासिय ।।
अवधि सिसिर अवसान जनम आगम जग जाणिय ।
अमर व्रंद आनद निखिल वन पुहप विघोनिय ।।
कटक भय भर टळिय सीत दाहक नहीं सज्जै ।
सत कमल विकसंत कित्ति कवि कोकिल किज्जै ।।
भख निसांण धुर गरज आस घण घटा वंधि उर ।
मिले मनोरथ जळद संत चातक रट आतुर ।।
सुर सिखंड मन मुदित ज्योति विद्युत आभासिय ।
कित्ति सरित विथ्थरिय विदुख मुख सिंधु विलासिय ।।

अवतारी पुरसां में ज्यूं ओळीखजता ईसरदास जी राम रो वर्णन करता कयो के ज्यूं भगत रे हिये में राम विराजै ज्यूं हीज राम रे हिये में पण भगत आपरो ठोड़ ठिकाणो वणावै । राम रो नाम तो जीव रो आसरो है । ईसरदास जी कयो--

ज्यां जागै त्यां राम जप सूंता राम संभार ।
ऊठत वैठत आतमा चालंताह् चितार ।।
रहे जुंभ्यो राम रस अनरस गणै अलप्प ।
अेह् महाध्रम आतमा अे तीरथ अे तप्प ।।

राम जी री मुजादा नै सीताजी रै सीळ सूं जैन कविसर घणा रीझीया । दिगम्बर जैनी ब्रह्मजिनदास राम-चरित्र लिखियो । राम-चरित्र संवत १५०८ विक्रमी में लिखीजियो । १६०४ में विनय समुद्रजी पदम चरित लिखियो । आपरो ग्रंथ पूरो करता थकां वां लिखी--

कीधी कथा अे सीता तणी ।
सील तणी महिमा जस घणी ।।

राम कथा लिखणिया जैन कवियां में समयध्वज, हेमरतन सूरि, नग ऋषि, जिनराज सूरि, अमरचन्द वगैरा मुख हैं पण यां सवसूं वतो लेखीजे जेड़ी पोथी तो समयसुन्दर री सीताराम चौपई है । आ चौपई नव खण्डा में है । कवि समयसुन्दर इण चौपई में नवां रसां रो एड़ो फूटरो वर्णन कियो के आज केई सैंकड़ा वरस वीतियां रे पछै भी इण चौपाई रो सरूप अखण्ड है । समयसुन्दर री रचनावां इतो ज्यादा हो के आ वात केवीजण लागी के समयसुन्दर रा गीतड़ा नै कुंभै राणै रा भींतड़ा । समयसुन्दर राम री कथा जैन-धर्म री मानताओं रै मुताविक जोड़ी । वां री रचना में सगळा रसां रो एड़ो समागम है के भणण-सुणण वाळां नै घणो मोद हुवै ।

एहवइ केसरि रथ चढ़्या रामचद रणसूर ।
गरुड़ रथइं लखमण चढ़िया वाजंते रणतूर ।।

राजस्थानी राम काव्य रो सबसूं नामी ग्रंथ तो दधवाड़िया माधोदास जी रो राम रासो है। राम रासो आपाणी भाषा रो बेजोड़ ग्रंथ है जिणमें रस'र अलंकार री छटा ऐड़ी फूटरी है कै उणरी छाप हियै माथै लागिया बिना रेवे नीं। वीर रस रो ओ महाकाव्य राजस्थानी साहित रो गौरव ग्रन्थ है। लखमणजी रै जद सगति लाग जावै तद रामजी जुद्ध करै उण री विगत माधोदास जी यूं राखी—

धूजी धरा सेस धड़हड़ियो,
पड़ती संध्या लखमण पड़ियो।
बड़ी धाक अेक उरि बाहे
वोहड़ि धणूं लखमण सां बाहे।
हूं आयो पग मांडि चोर हव
देखिवी कर म्हारा कर दाणव।
रामण बाण राम छेदे रण
राघव बाहे छेदे रामण।

इण सूं बत्तो ओज नै जोश राम रासा में उण वगत देखोजे जिण वगत रामजी रावण सूं लड़ै। राम-रावण री इण लड़ाई रो हाल राम रासो में कवीसर यूं कयो है—

मिले सेन सूरिवां रींछ वानर राकसां
मिले बाण गुण मूंठि मिले पंखणि ग्रिध मंसां
मिले मोद अमरां मिले निसचरां अमंगळ
मिले काल दहकंद मिले साइक नभ मंडल।
सय रथ मिळे देवां सुरां वीर मिळे वीरां वरण।
संमिले ताम त्रिहु लोक सुख, मिले राम रामण मरण॥

आगे केवै—

बिन्हे सूर सारिख बिन्हे चौरंगि अविचल।
बिन्हे जांण जुध बाह बिन्है बाणपति महाबल॥
बिन्हे पुंज पोरिस बिन्हे ओरिस न बोले।
वेरोले रण बाण बिन्हे घर आम उतोले॥

इयां दिनां में, खोज में म्हनै राम चरित री अेक नूंवी पोथी मिळी है। जन सारंग नांव रा कवि री आ रचना भाव, भासा'र लिखण री रीत रै कारण आपांणी राजस्थानी रै राम काव्य में ऊंची ठौड़ राखै। विक्रम संवत १७५८ रै पैला री इण पोथी री प्रत सूं ओ साबित हुवै कै ओ चरित १७५८ सूं तो पेला रो होज है। हाल तांई इण रचना रै कवि रै बारै में खुलासो पूरो नी मिलियो पण इण काव्य सूं आपां ओ अन्दाज तो लगाय सकां कै ओ राम-चरित लूंठो है।

लंका माथे रामजी रै सैना री वार रो वर्णन करता कवि सारंग केवै—

लागा चुचाय लपेटी लंका लेखन पार लंगूरां ।
छाई है छाई कलि कहवा लागि कूदे: कपी कंगूरा ।
घुम वटै घड़ तूटे धारा मारो मार साती ।
कुंभ पड्यो अर कामणी कुटि छाजे ऊभी छाती ।
विर किल कै जोगणि वकै निगस डफै नाता ।
भूखी रूकि भरै भरि रोहे खपर राता ।
रावण मारि दसेसिर तोड़्या वूढ़ि दिया करि ढूहो,
तोड़ कीयो घरटेक न चुको मो वरजंती डावो ।

जोधपुर रा मंसाराम सेवग मंछ कवि रघुनाथ रूपक नांव रो एक छन्द रो ग्रंथ लिखियो पण इण ग्रन्थ में राम चरित डिंगळ गीतां में सागेड़ी सांतरी भासा में अैड़ो जोड़ीजे है कै उण रै बराबरी रो बीजो काव्य हाळ तांई देखण में नी आयो। रामजी री सोभा वर्णन करतां कवि आपरी वेवारिक जाणकारी रो पूरो उपयोग करता थकां छोटी-छोटी कड़ियां में जिका गीत लिखियां है वो वरण जदा रो एक आदर्स नमूनो है—

पावड़िवां सहत नरम पद पंकज
नूपुर हाटक परम पुनीत
छक कड़वंध सुचंगा छाजे
पट अंगा राजै पुण पीत
पुणचा जड़त जड़ाऊ पुणची
काळ आजान भुजा केयूर
वैजंती वळ भुगत विसाला
प्रगट हियै माळा भरपूर ।
कंडसरी ग्रीवा श्रुति कुंडळ
चंदण निले तिलक दुतचंद
सिर सिरपेच सुघट हीरा सद
क्रीट मुगट सोभै सुखकंद
जळधर वरण भव भंजण
सीता मन रंजण सज साथ
मो मन आंण सुजांण सिरामण
नित इण वांण वसो रघुनाथ ।

भगतां रै भौ नै मिटावण वाळा श्रेष्ट पुरसां रै माथा रा मोड़, मेघवर्णी हे रामजी हिया में हुलास जगावण वाळी माता सीता जी रै संग म्हारे हिया में सदा विराजो । मंछ कवि री आ विणंती भारतीय भासावां रै किणी काव्य सूं किणी तरै

हल्की नी है।

नामी कवि जग्गा खिड़िया रा रामजी री भगती रा कई छंद देखण में श्राया है। वीर रस में भक्ति भाव री रचना रचण में जग्गाजी माहिर है। कठैई कठैई श्रलंकारां री बोळायत सूं भाव दब गया है पण राम-भगती रो वां रो स्वर तो बुलन्द हीज है।

किसना जी श्राढ़ा रो रघुवर जस प्रकास मूळ तो छंद रो हीज ग्रंथ है पण किसना जी छंदा रा रूप बतावता रामजी रो जस गायो। रामजी री स्तुती करतां किसना जी श्रा श्रोळियां में श्रापरी बात कितरै सांतरै ढग सूं कही है।

जै जै श्रवध नरेस संत सुखद श्रीराम नारायणं।
सीतानाथ सुनाथ दास करणं संसार सारायणं।
देवाधीस रिखीस ईस अजय ते सेव पारायण।
पाय कंज किसन्न रखि सरण श्रणंदकारायणं।

राम वर्णन रो सिलसिलो राजस्थानी काव्य में श्राज सूं ६०-७० साळ तांई बराबर चालतो श्रायो। जोधपुर रा श्रमृतलाल जी माथुर 'गीत रामायण' लिख मारवाड़ी लोक गीतां री ढाळां माथै श्रेड़ा रळियामणा गीत लिखिया कै वे हाल तांई घर-घर में गाइजै।

सगुण सत्पुरुस रांमजी रै श्रलावा राजस्थानी काव्य में राम नाम रो महातम भी घणो गाइज्यो। कठैई-कठैई तो राम राज बतावण सारू राम रो नांव श्रायो तो कठैई परमपिता परमेसर रै श्रज; श्रलख; श्रजाणा रूप री भी बोळी चर्चा हुई। सम्वत १६५० में बारहट संकर श्रापरै दाता सूर संवाद में रामजी री सूर बीरता री श्रोळखाण करावतां 'लंका रांवण रामचंद खट मास खटाए' री उक्ति दी। पृथ्वीराज जी राठौड़ पण दसरथ देवउत छाप रा दूहा केह नै श्रापरी राम भगती रो परचो दियो। वां रो रचियो श्रेक दूहो है—

राम ज रोळवियाह, रूठे दळ रांवण तणा।
सरगे सांभळियाह, देवे दसरथ देवउत।

कमंण कवि री श्रेक छोटी पोथी सीताहरण में राम रो वर्णन हुयो है। दादूजी महाराज राम रै निरगुण नै निरंजन मानने श्रापरी बात कही—

ज्यूं जळ पेसै दूध में
ज्यूं पांणी में लूण।
ऐसे श्रातम राम सूं
मन हठ साधे कूण

दादू सब जग नीधना
धनवंता नी कोई
सो धनवता जाणिये
(जाके) राम पदारथ होई ॥

दादूजी ज्यूं हीज बखनाजी, रज्जबजी'र वाजिदजी जिकां रै बारै में कहीजै कै वे जनम सूं मुसलमान हा राम-नाम समरण करता रया । वाजिदजी इण बात री साख प्रगट की--

छांडि के पठाण कुळ राम नाम कीन्हो पाठ
भजन प्रताप सूं वाजिद वाजी जीत्यो है ।

अठै अेक बात रो हवालो जरूरी लखावे । रामानन्दजी सीताराम री उपासना रो मारग बतायो'र ॐ रामायनमः तथा रामनाम रो मंतर थापियो । इयां रा चेला रैदासजी पीपा नै, घणाई निरगुणिया हुया । राम री भगती में दास भाव'र वच्छळ भाव री हीज तुष्टि हुई । रामजी रै सीळ'र सगती रो घणो असर पड़ियो । इण सूं राम भगतां रै घणा नेड़ा आया पण वां री ऊंचाई इतरी है कै भगतां रो मायो वां रै चरणां में झुक जावै । बस सरदा अर भगती रै सिवाय दूजो कोई भाव मन में नी रमैं ।

रामजी रो रामपणो रावण रै मारण में, सबरी, अहल्या, गणका'र गिद्ध रै तारण में; सुग्रीव, विभीखण, हनुमान रै नेह नै नमण में है । राम जी रा गुण आपणैं काव्य में घणा गाइजिया, घणां गाईजे'र जठै ताईं अजाद सीळर सतमार्ग रै वास्तै हियो हर करी रामजी ने याद कियां विना काम नी सरै ।



३८१/४ सरदारपुरा,
जोधपुर ३४२-००३

मो सम कौन कुटिल खल कामी

डॉ० मनोहर शर्मा

आजाद सभा रा मन्त्रीजी पूजापाठ री टेम टाळर पूज्य पण्डितजी री सेवा में पूगया अर १५ अगस्त री मीटिंग री अध्यक्षता करण खातर अरज करी। पण्डितजी मुळक्या अर मन्त्री रै मूंडै कांनी भाव-भरी नजर सूं देख्यो। वै पहली भी एक-आध बर ईं आजाद सभा री अध्यक्षता कर चुक्या हा, जठै नियमानुसार श्रोता एकदम आजाद हा पण सभापति सर्वथा पराधीन।

सभा में एक ही भाषण हुवतो अर वो भी अध्यक्ष महोदय री गादी सूं। भाषण-विषय रो पैली सूं कोई निर्णय नीं रैवतो, प्रत्येक सदस्य आपरी मरजी-मुताबिक विषय रो नाम लिखर पेटी में एक पर्ची नाखतो अर उणां मांय सूं आंख मींचर एक पर्ची काढी जावती। पर्ची पर जिण विषय रो संकेत हुवतो, उणीज विषय पर अध्यक्षजी भाषण देवता।

आजाद सभा रो नियम तो मान्य हो पण पण्डितजी रो आपरो भी एक विशेष नियम हो। वै किणी काम नै करणै अथवा न करणै रो निर्णय भी माता सरस्वती री आज्ञा सूं हीज लेवता। समय पायर यो नियम आप रो स्वभाव बण चुक्यो हो।

पण्डितजी एक पर्ची पर 'हां' अर दूजी पर्ची पर 'नां' लिखर दोनूं पर्चियां मोड़र मिलाई अर माता रो ध्यान कर्यो। पछै आप रो हाथ मन्त्रीजी रै आगै कर्यो कै वै हथेळी पर राख्योड़ी दोनूं पर्चियां मांय सूं कोई सी एक पर्ची उठावै। मन्त्रीजी गम्भीर हुयर एक पर्ची उठाई अर खोलर बांची तो उण पर लिख्यो पड़्यो हो—'हां'।

यो तो माता शारदा रो आदेश हो; जिण रो पालण पण्डितजी खातर सबसूं ज्यादा जरूरी हो। मन्त्रीजी आप रो कारज सध्यो जाणर राजी हुया अर पूज्य पण्डितजी सूं विदा लीनी।

आजाद सभा री बैठक सायंकाल हुवती। सभा जुड़ी अर पूज्य पण्डितजी सभापति री गादी पर विराज्या। नियमानुसार चिट्ठी काढण रो दस्तूर हुयो। पण्डितजी

पेटी मांय सूं पर्ची उठाई अर भापण विषय रो नाम बांच्यो—"मो सम कौन कुटिल खल कामी।"

सभापतिजी चकित हुयगा– यो कांई विषय ! यो तो किणी सिर फिरयोड़ै छोरै रो काम है। टींगर इज्जत लेवण रो चक्कर चला दियो।

भय अर क्रोध रै पाछै पण्डितजी रै मन में कई धीरज भी भ्रायो। वै तो माता री आज्ञा सूं ही ईं सकट नै हाथ में लियो हो। अब ईं आफत सूं उबारण री चिन्ता भी उणीज पर ही।

पण्डितजी माता रो स्तुति-पूर्वक ध्यान करयो तो वां रै हिरदै में एक नयो उजास दीप्यो अर वै मगन हुयर इण भांत बोलणो चालू कर दियो -

धन्य है, आजाद सभा अर इण रा सदस्य, जिका सभाविधान में संसार सूं न्यारी एक नई धारा जोड़ राखी है। जिको सदस्य आज ओ विषय छांट्यो है, उण रो दिमाग भी कम कोनी। मूळ रूप में यो विषय सन्त वाणी सूं सम्बन्धित है, पण बात अठै तांई ही सीमित नीं है। आज १५ अगस्त रै महापर्व नै देखां तो भी यो विषय अवसर रै सर्वथा अनुकूल है। ईं सम्बन्ध में म्हारो एक अनुभव सुणो—

एक बर एक महान् वयोवृद्ध मन्त्रीजी बीमार हुया अर बीमारी दिन-दिन बधती ही गई। कोई इलाज कारगर नीं हुयो। मन्त्रीजी रो 'महाभिनिष्क्रमण' नेड़ो जरूर हो पण प्राण काया नै छोड नीं रैया हा। लांबी बीमारी सूं मन्त्रीजी रै घर-वाळा तो सगळा तंग आय ही चुक्या हा, पण खुद मन्त्रीजी भी ईं सैया-शयन सूं कम दुखी नीं हा।

अचाणचक एक दिन म्हारै घरे मन्त्रीजी रो तेड़ो आयो कै वै मनै याद करै है अर बुरी तरां याद करै है।

मन्त्रीजी म्हारा बाळ-गोठिया हा पण मन्त्री री कुर्सी पर विराजमान हुयां पाछै कदे ही आपरै बाल-साथी नै याद नीं करयो अर न मैं ही मन्त्री–भगवान री सेवा में कदे सुदामा रूप में हाजिर हुयो। फेर भी पुराणी स्मृतियां जाग उठी अर मैं बीमारी री हालत में मिजाज पूछणो जरूरी समझर उणां री कोठी पर जा पूग्यो।

मन्त्रीजी नै अपार काया-कष्ट हो पण होस-हवास दुरुस्त हा। मनै देखतां ही वै हाथ जोड़्या अर नेड़ै सी बिठायो। पछै करुणापूर्ण कातर वाणी में बोल्या— "म्हाराज, के बताऊं, अब ईं संसार में रैवण री जरा सी भी इच्छा कोनी पण मेरै कांनीं सूं तो जमराज जाणै गैलो ही भूलगो।"

मन्त्रीजी री शारीरिक हालत एकदम गिर चुकी ही। मैं घणो ही धीरज दियो पण वां रै चित्त नै चैन आयो ही कोनी। वे बोल्या–"महाराज, आप सूण-सरोधै रा ज्ञाता हो, ज्योतिष शास्त्र रा पूरा पंडत हो। म्हारा गिरह-गोचर देखो अर बतावो

कै संसार सूं म्हारो पिण्ड कद छुटसी ? अब ईं काया री माया में तो कठै भी सार कोनी। जैनां में तो इसी हालत में संथारो लेवण री प्रथा है पण आपणै तो या चीज कोनी।"

मन्त्रीजी री पीड़ा शारीरिक साथै मानसिक भी कम कोनी ही। मैं जवाब दियो—"धीरज राखो। आपणै भी इसा मन्त्र है, जिणां री जाप हर प्रकार रो कष्ट काटै है। जठै ओखद काम नीं करै, वठै मन्त्र पूरो काम करै है।"

मन्त्रीजी बोल्या—"पण मनै शरीर सुधारणो नीं है, मनै तो शरीर छोडणो है। अब कोई इसो मन्त्र बतावो, जिण सूं ये प्राण काया नै छोडर आप रो गेलो पकड़ै।"

मैं उत्तर दियो—"इसो मन्त्र भी है, जिण सूं काया अर प्राण रो बिजोग हुवै। संसारी जाळ सदाकाळ खातर छुटै। पण ईं मन्त्र रो रहस्य एकान्त में बतायो जा सकै है। आप घर-वाळां नै दूजै कमरै में भेजो अर पछै ईं महामन्त्र री सगती देखो।"

मेरी बात सुणतां ही मन्त्रीजी रै घर-वाळा सगळा आपै ही कमरै सूं नीसरगा, जाणै वै भी इसै अवसर री उडीक में हा। अब कमरे री कुर्सी पर मैं हो अर पलंग पर महारोगी जीर्णशीर्ण मन्त्रीजी।

मैं बोल्यो—"आप धाड़वी जाड़ेचै अर तोळांदे रो प्रसंग सुण्यो हुसी। धाड़वी गुरु महाराज सूं महासती तोळांदे नै मांग लीनी अर उण नै साथै लेयर नदी पार करण-सारू न्याव में बैठ्यो। न्याव मझधार में पूगी तो अचाणचक इसो तूफान उठ्यो कै न्याव डगमगावण लागी। मौत नै नेड़ै आई देखर महा-साहसिक धाड़वी बुरी तरां घबरायो पण तोळांदे एकदम शान्ति सूं सारी लीला देखती रैई। आखर तोळांदे बोली—"पाप थारा परकास जाड़ेचा, थारी बेडळी नै डूबवा नीं देवूं।

ईं इमरत-वाणी सूं भयभीत धाड़वी नै किणी अंश में धीरज आयो अर वौ एक-एक कर आपरी जिन्दगी में करयोड़ा सारा कुकर्म खोलर आगै मेल दिया। पछै कांई हो ? तूफान एकदम शान्त हुयगो अर धाड़वी नै जांणै नई जूण मिली। इणी भांत आप भी सारा पाप कबूल करो अर भगवान री सरणो लेवो। आपनै नयो परकास मिलसी अर संसारी-माया सूं पिण्ड छुटसी। ईं परिस्थिति में बस यो हीज महामन्त्र है।"

म्हारी बात सुणी तो मन्त्रीजी नै किणी रूप में धीरज आयो अर वै मुक्ति लाभ करणै खातर इण भांत आप रो बयान दियो।

"म्हाराज, मैं राजनीति में जण-कल्याण री भावना सूं प्रवेश नीं करयो, मैं तो राजनीति नै मेरो धन्धो बणायो अर नाना प्रकार रै छळ-छिद्रां सूं मन्त्रीपद प्रापत

कर्‌यो । ई' रो लेखो-जोखो भोत लांमो है, जिण री पूरी चिट्‌ठो खोलणं री अब काया में हिम्मत नीं है ।

"यो बगीचो अर या कोठी, जठै आपां बैठ्यां हां, मेरै पसीनै री कमाई रा नीं है। या सगळी ही हराम री कमाई है । ई' रै अलावा मेरी दूजी भी सगळी ही चल-अचल सम्पत्ति रो भी यो हीज हाल है ।

'मैं मेरी हस्ती बणाई राखण सारू गुप्त रूप सूं चमचां री फोज खड़ी करी अर जगां-जगां वां रा थाणा थरप्या । ई' इलाकै में जितरी भी भांत-भांतीली संस्थावां सरकारी सहायता सूं चालै है, वै सगळी मेरै चमचां रै भरण-पोषण खातर चालू करी गई है, लोक-कल्याण तो वठै एकदम दिखावो है ।

'मैं जठै-कठै भी चुनाव में खड़्यो हुयो तो सगळै कानून-कायदां अर आचार-संहिता नै ताक मे मेलर येन-केन प्रकारेण मात्र विजय री ही ध्यान राख्यो । विजयश्री रै वरण-सारू मैं धन भी खुलै हाथां खरच्यो, पण खा बाणिया गुड़ तेरो । पांच खरच्या तो पचास कमाया अर पचास खरच्या तो पांच सौ रो लाभ लियो ।

"मैं सदा ही मेरै विरोधियां खातर 'विषकुंभ पयोमुख' रैयो । भलां ही कोई विरोधी मेरी पारटी रो हुवो पण उण री आंख फिरी देखर मैं उण सूं मन फेरर ही सन्तोष नीं कर्‌यो, उण री जड़ काटर ही दम लियो ।

मैं किणी भी शिष्ट-मण्डल नै आश्वासन रै अलावा कंई नीं दियो । किणी रो कोई काम कर्‌यो तो कै तो मेरी कमाई खातर अर कै मेरै चमचै रै लाभ सारू । अर या चीज आप जाणो ही हो कै जिण भांत भगत अर भगवान में कोई भेद नीं है, उणी भांत साब अर चमचै में भी कोई आंतरो कोनी ।

मैं काळो धन कमावण में व्यापारियां रो साझीदार बण्यो अर ई' आमदणी सूं दळ-बदळू ही नीं, अनेक गुट-बदळू भी खरीद्या अर मेरो जोवणो तथा डावो, दोनूं हाथ मजबूत कर्‌या ।

मेरै परवार रा अर दूर-दराज रै रिस्तै रा सगळा आदमी सरकारी ओहदां पर विराजमान है । वै आपरै गुण सूं कोई पद प्राप्त नीं कर्‌यो. वै तो मान मन्त्री री माया सूं आगै-आगै बधता रैया ।

मैं सरकारी खरचै पर समूचै देस री यात्रा रो ही सम्मान पूर्ण आनन्द नीं लियो पण अनेक विदेसां में सांस्कृतिक यात्रावां भी करी, जठै संस्कृति सूं दूर रो रिस्तो भी नीं राखर मात्र मनोरंजन नै ही मेरो मूळ उद्‌देश्य बणायो ।

मैं खुद री करामात सूं अणगिणत अभिनन्दन पत्र लिया, अणगिणत उद्‌घाटन कर्‌या अर बदळै में अणगिणत ही भाषण दिया । जनता सूं जुड़्यो रैवण रा जितरा भी उपाय हुय सकै हैं, मेरै चमचां री मदद सूं मैं सगळा करया, पण मन सूं

कदे भी जनता साथै नीं जुड़्यो । जनता नै मैं सदा मेरी रियाया मानी अर उण रै दोहन-कर्म में कदे ही नीं चुक्यो ।

मैं धरम सूं सर्वथा दूर रैयर भी कई धरम-सभावां री अध्यक्षता करी, साहित्य-ज्ञान सूं एकदम कोरो होतां-थकां भी कई साहित्य-सम्मेलनां में मुख्य अतिथि बण्यो, विद्यार्थी मात्र नै 'खतरनाक' मानर भी सभावां में वां री गुण-गरिमा बखाणी, दलितां सूं मात्र मौखिक सहानुभूति राखर ही वां रो 'उद्धारक' बण्यो ।

लोग मेरी महानता रा अनेक रूपां में गुण गाया है, पण सार-रूप में मेरो खरो आत्मनिवेदन बस इतरो ही है—"मो सम कौन कुटिल खल कामी ।"

"मन्त्रीजी इतरो बयान देयर चुप हुया अर वां री आंख्यां सूं आंसू बह चाल्या । पण खास बात या है कै वै चुप हुया तो पछै चुप ही रैया अर एक दो दिनां मौन-मन्त्र साधर मोक्ष नै प्राप्त हुयगा ।"

इतरो भाषण देयर सभापति ी चुप हुयगा । आजाद सभा में भी एकदम चुप्पी छायगी, जाणै मन्त्रीजी रै देहावसान पर शोक सभा आयोजित करी गई अर अध्यक्षीय भाषण साथै ही वा समाप्त हुयगी ।

इतरी चीज जरूर है कै राष्ट्रीय-दिवस पर दियोड़ै ईं भाषण नै 'आजाद सभा' रो एक भी सदस्य शोक-सन्देश नीं मान्यो ।



रानी बाजार
बीकानेर

सजण सिधाया हे सखी—

सजण सिधाया हे सखी, बाज्या विरह निसाण ।
हाथां चूड़ी सिख पड़ी, ढीला हुवा संधाण ।।
सजण सिधाया हे सखी, आडा दिया पहाड़ ।
नव कोटी नगरी बसै, म्हारै भाव उजाड़ ।।
सजण सिधाया हे सखी, झीणी ऊडै खेह ।
हियड़ो बादळ छाइयो, नैण टबूकै मेह ।।
ढोलो चाल्यो हे सखी, वड़ री डाहळ मोड़ ।
हियो, कळजो, काळजो, तीनूं लै गयो तोड़ ।।

आपरा कागद

भाई ओझा जी;

आप 'जागती जोत' रा सम्पादक बण्या; म्हारी बधाई मानो ।

भगवानदत्त गोस्वामी
बीकानेर

भाई श्री ओझा जी,

आप 'जागती जोत' रा सम्पादक हुया, जाण घणी खुशी हुई । आपरै टैम जागती जोत नूंवी जोत जगासी ।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
बीकानेर

प्रिय भाई ओझा जी,

'जागती जोत' रै सम्पादकत्व वास्तै बधाई स्वीकारो । 'जागती जोत' री सेवा में म्हारी सेवावां पैल्यां भी अर्पित ही अर आगे भी रयसी ।

रामनिरंजन शर्मा
'ठिमाऊ' पिलानी

भाई दीनदयाल जी,

आ जाण नै घणो हरख हुयो के अबै 'जागती जोत' रो संपादन आप संभाळ रया हो । मनै पूरो भरोसो है के आपरी सूझ नै समझ सूं 'जागती जोत' दिन दुगणी नै रात चौगणी तरक्की करेला ।

डा० मदनराज मेहता
जोधपुर

प्रिय श्री ओझा जी,

मनै उम्मेद है, थारी लगन पत्रिका नै टेम पर चोखै मैटर रै साथ निकाळसी ।

श्रीलाल मिश्र
बिसाऊ

मान जोग ओझा जी,

'जागती जोत' रो सपादन आप अक्टुम्बर सूं संभाळ रह्या हो, घणी खुसी हुई ।

रायचंद जैन
श्री गंगानगर

घणौ मान ओझा जी,

'जागती जोत' रो संपादन आपरा अनुभवी हाथां में आयो है आ खुसी री बात है।

म्हारी घणी शुभ कामनावां आपरै साथै है।

विनोद सोमानी 'हंस'
अजमेर

घणा आदरणीय श्री दीनदयाल जी,

आ जाण नै घणी खुशी हुई के आप जेड़ै मानीजते विद्वान, साहितकार रै हाथां में जागती जोत रो संपादन सूंपीज्यो है। म्हनै भरोसो है कै आपरी सधियोड़ी कलम अनुभव'र ओळखाण सूं जागती जोत सगळै राजस्थान में मायड़ भाषा री जोत जगावण रो सुभ कारज पुर जोरा सूं करसी। आपनै वधाई।

नन्दकिशोर शर्मा
जैसलमेर

भाई दीनदयाल जी,

बड़ी खुशी हुई कि आप 'जागती जोत' के संपादक बनाये गये। आप जैसे मनस्वी, लेखक को तो यह दायित्व सौंपा जाना ही चाहिए था। मुझे आशा है आपके कुशल संपादन में पत्रिका नया स्वरूप प्रदान करेगी।

रामदेव आचार्य
बीकानेर

मानेता ओझाजी,

ढूंढाड़ रा लिखारां नै आप याद करया इण सारू घणा-घणा वधावणा। उम्मीद है के आप 'जागती जोत' नै गुटबाजी सूं मुगत करण में सफल होवोला।

सवाईसिंह धमोरा
जयपुर

माननीय ओझा जी,

खुसी री बात है कै अक्टु० ७७ सूं मार्च ७८ तक जागती जोत रो संपादन आपरै हाथां में रैसी।

कमला वर्मा
बीकानेर

भाई दीनदयाल जी,

आपकी नियुक्ति पर प्रथम तो आपको बधाई अर्पित करता हूं। आपके सम्पादकत्व में जागती जोत निश्चय ही राजस्थानी कुंभकर्णी नींद को झकझोरेगी।

भूपतिराम साकरिया
वल्लभ विद्यानगर

आदरणीय ओझा जी,

'जागती जोत' रो सम्पादन आप संभाळणो है, घणै सूं घणै हरख री बात है। आपनै हर भांत सहयोग सारूं। आपरै समरथ सम्पादन में 'जागती जोत' री जोत ओर भी ज्यादा ओपसी। इणी मगळ कामना सेती।

दामोदर प्रसाद
सीकर

घणा आदर जोग ओझा जी

आपनै विस्वास दिलावां कै 'जागती जोत' नै राजस्थान री पत्रिकावां में सिरमोड़ बणाणै सारूं की कसर ना छोडांगा। आप जिसड़ा लिखारां रै हाथ रचनावां संपादन हो'र ई पत्रिका रो रुतवो वधैलो।

उमाचरण महमिया
पिलानी

प्रिय भाई ओझा जी,

आ घणै हरख री बात है के अैस छः मईना 'जागती जोत' रो संपादन आप कर रह्या हो।

रामेश्वरदयाल श्रीमाली
सायना, जालोर

मानीता ओझा जी,

'जागती जोत' रो काम आपरै खान्दै आयगो, आ घणी हरख री बात। आप जैड़ा अनुभवी अर गुणी मिनखां नै ई ओ काम ओपै।

जहूरखां मेहर
जोधपुर

प्रिय श्री ओझा जी,

आ जाण'र खुसी हुई के 'जागती जोत' रो संपादन कार्य आपरै समरथ हाथां में आयो है।

म्हनैं पूरी आसा है कै आपरै सम्पादन काल में जागती जोत' रो परकास व्यापक होसी'र राजस्थानी भासा रो माणक सरव सम्मत सरूप इण में निखरसी।

विष्णुदत्त शर्मा
जयपुर

आदरणीय श्री ओझा जी,

यह प्रसन्नता का विषय है कि जागती जोत' का सम्पादन अब आप करेंगे, सफलता के लिये मेरी शुभ कामनाएं स्वीकारें।

त्रिलोक गोयल
अजमेर

गद्य री अेकरूपता रा निर्णय

१८-२० मार्च १९६६ नै जयपुर में राजस्थान भासा प्रचार सभा आधुनिक राजस्थानी गद्य रै सर्वमान्य रूप निर्धारण री समस्या पर विचार करणै अर निर्णय लेवण सारू राजस्थानी रा जाण्या-मान्या विद्वानां री अेक गोष्ठी बुलाई। इण गोष्ठी में राजस्थान रैं चारूं खूंटा रा पचास रै अेड़ै-गेड़ै साहित्यकार भैळा हुया'र जिका सर्व-सम्मत सूं निर्णय लिया हा वां नै आपरी जाणकारी सारूं अठै दिया जाय रया है। इसी आसा की जावै के राजस्थानी रा सगळा हेताळू लिखारा विद्वानां इण निर्णय रो आदर करतां थकां आपरै लेखण में इण रो सावधानी सूं उपयोग करेला जिण सूं भासा री अेकरूपता री लूंठी नींव पड़ैला।

लिपि

१. ए-ऐ री जगां अे-अै लिखणा। उ-ऊ री जगां अु-अू। हो सकै तो बारखड़ी री सगळी मात्रावां 'अ' रे भी लगाई जावै, जियां—अि—अी। २. मूर्धन्य 'ल' नै 'ळ' लिख्यो जावै। ३. चंद्रबिन्दु अर बिन्दु—दोनां री जगां ० लगायो जावै। ४. 'व्' अर्धस्वर रो प्रयोग नईं कर्‌यो जावै। ५. सानुनासिक ध्वनियां रै पैलड़ा आखरां पर बिंदी नी लगाई जावै; जिवां—रांम, राजस्थान—नी लिख'र—राम, राजस्थान—ई लिख्यो जावै। ६. 'ऑ' री जगां 'ओ' लिख्यो जावै, जियां—गयॉ घोड़ॉ, सीधॉ, ऑखद, मॉड़ॉ—री जगां गयो, घोड़ो, सीधो, ओखद, मोड़ो—लिखणो चाईजै। ७. अनुप्राणित उच्चारण रा सब्दां में ऽळ प्रयोग रो निसान नी लगायो जावै, जियां—सारो—सा'रो—दोनां नै सारो ई लिखणो। प्रसंग सूं अरथ साफ हो जासी। ८. जिकां तत्सम सब्द देसी रूप में नी ढळया है वां नै सुद्ध रूप में ई लिखणा, जियां—श्रम, विशिष्ट, समाविष्ट आदि। इसा सब्दां नै फालतू तोड़णै री चेष्टा नी करणी, जियां सरम, समाविस्ट आदि। पण जिकां रा देसी रूप ढळग्या है वां नै देसी रूप में ई लिखणा, जियां आश्चर्य री जगां अचरज, दर्शन री जगां दरसण, कृष्ण री जगां क्रिसण आदि। ९. कृ री जगां क्रि रो प्रयोग करणो। इयां ई दूजी जगावां में भी करणो। १०. आधा सानुनासिक सब्दां नै बिंदी सूं दरसणा, जियां रङ्क, रञ्च, कण्ठ, पन्त, कम्प नै रंक, रंच, कंठ, पंत अर कंप लिखणो।

उच्चारण री कुछेक दूजी समस्यावां

हिन्दी		राजस्थानी
तू, तुमको, आपको	:	तूं, तनै, थांनै, आपनै
सिंह, क्या, अरे	:	सिंघ, कांई, अरै
कन्हैया, ही	:	कनइयो, ई
उठाकर	:	उठा'र
तरह, कि, नहीं	:	तरै, क कै, नई, नी,
थोड़ा सा रुपया, मुझे	:	थोड़ा सा, थोड़ासाक, रुपिया, मनै
आइ, आया, जाने वाला	:	आई, आया, जावणाळा, जावण आळा
सब्द भेद (राजस्थानी)		
छोरी, पोथी	:	छोर्‌यां, पोथ्यां,
विभक्ति (राजस्थानी)		
राजा रा घोड़ा पर	:	राजा रै घोड़ै पर
किला रा माथा पर	:	किलै रै माथै पर
रावळा में	:	रावळै में
सर्वनाम हिन्दी		**राजस्थानी**
मैं, मैंने, मेरे से	:	हूं, म्है, म्हारै सूं, म्हां सूं
मेरा, मेरे में,	:	म्हारो, म्हां में, म्हारै में
तू, तुझे, तेरे से	:	तू, तनै; थानै, तैसूं, थारै सूं
तूने, तुझ में	:	तूं, तैंमें, थारै में
आपका, आप में, आपको	:	आपरो, थांरो, आप में, आपनैं, थांनै
यह, ये, इस, इसने	:	ओ, आ, अै, ई, इण
इसको उस, उसने	:	इणनै, उण, वीं
इनमें इन्होंने	:	इणां में, इणां
कौन, किसको, कई	:	कुण किणनै, कई, केई
जो जिस, उस	:	जो, जिको, जिण, तिण
क्रिया विशेषण हिन्दी		**राजस्थानी**
यहां, वहां जहां, कहां	:	अठै, वठै, जठै, कठै
इधर, उधर, जिधर	:	अठी, वठी, जठी
अब, कब, जब	:	अबार, अर, अबै, कद अर कणै जद अर जदै
किस समय	:	कणै'ई
जिस समय, अभी	;	जणै'ई, हणै'ई
आगे, पीछे, बाद में	:	आगै अर अगाड़ी, पछै
सामने, बाहर, परसो	:	सामनै, बारै, परसूं

हिन्दी		राजस्थानी
फिर, परले दिन	:	फेर, परलै दिन
ऐसे, वैसे, कैसे	:	अियां, बियां, कियां
जैसे, तैसे, ज्यों-त्यों	:	जियां, तियां, ज्यूं त्यूं
क्रिया		
आना, जाना, कहना	:	आवणो, जावणो, कैवणो
आता	:	आवतो
करना, रहूँगा, जाऊंगा	:	करजो,रहसूं, अर रहूँला,जासूं अर जाऊंला
होगा, हुआ, था, थी	:	हुसी, हुयो, हो, थी
रहा, रहता हूं, किया है	:	रैयो, रैवूं हूं, करयो है
विसेसण—		
अधिक, ज्यादा, बहुत, सब	:	अधिक, जादा, बोत, अर सै, सगळा
ऐसा, वैसा, कैसा, जैसा	:	इसो, बिसो, किसो, जिसो
जितना, उतना	:	जित्ता, बित्ता,
संयोजक—		
और, या, पर	:	अर, और या नै या, पण
विविध—		
देदो, लेलो, मोहर	:	दे दो, ले लो, मो'र,
कहाणी, महल	:	कांणी, मैल
क्या जाने, दूहना, चाय	:	कांई ह्या, दूवणो, चाय
पत्थर, सूखा	:	पत्थर. सूका

कई सब्द गळत लिख्या जावै जिणां नै नीचै मुजब सही लिखणा—
गळत सब्द कोठै में मांडया है—कनै (खनै) आघो(आगो) खाथो(खातो)ऊंतावळ (उतावळ) चोखो (छोको-चोको) माफ़ल (मांफळ) पीथल (पीथळ) पातल (पातळ) बगत (बख्त) किनारो (कनारो) निजर (नजर) आणंद (आनंद) नवी (नई) जे (जो) पड़नो (पड़णो) ऊचै (जंचै) नदी (नंदी) नदी (नद्दी) सारू (सारूं) आवतो (आंवतो) कीं (कुछ) सवाल (सुवाल) काल (कालै) मसखरी (मसकरी) सूंघे (सूंगै) साच (सांच) बो, बा (वो, वा) सूं (स्यूं) बिरछ (वरछ) भाजे (भागै) अुमर (अूमर) पकड़ (पकड़, कपड़) मस्त (मसत) रैया (रिया) मणिया (मिणिया)

ऊपर लिख्या प्रयोगां रो सैद्धांतिक विवेचन करयो गयो अर कुछेक निर्णय लिया गया। और भी अनेक इसी समस्यावां है जिणां पर विचार कियो जाणो जरूरी मालूम पड़ै : पण जे राजस्थानी लेखक इण निर्णयां नै आपरी रचनावां में उतारणै री कोसीस करसी तो आगै री एकरूपता रा प्रयत्नां नै बळ मिलसी। इण निर्णयां री प्रतियां चाईजे तो सचिव राजस्थान भासा प्रचार सभा, डी २८२, मीरां मार्ग सूं लिखर मंगवाई जा सकै।

विज्ञप्ति

राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस-भाग २

राजस्थानी साहित्यकारां रो परिचय सगळं विद्वानां नै मिळ सकै, इण सारू सगम कानी सूं परिचय कोस रो दूजो भाग छपणवाळो है। क्यूं कै पैलो भाग छप्यां पछै घणा नया लेखक चौड़ै आया है। कोस रै पैलड़ै भाग में भी केई पुराणा नांव भी छूटग्या हा। इण काम में सगळं लेखकां री मदद री जरूरत है। जिण साहित्यकारां री जाणकारी कोस रै पैलड़ै भाग में नहीं छपी है, र दूजै भाग सारू जाणकारी अजूं तांई नहीं भेजी है, वां सूं घणै मान अरदास है कै वै इण भांत जाणकारी नीचै लिखे ठिकाणै पर भेजणै री किपा करै—नांव, सिक्षा, (उपाधियां भी) जनम तिथि मोजूदा काम धंधो, छप्योड़ी रचनावां; (प्रकासण रो बरस, प्रकासक, विसय, मोल) पत्र-पत्रिकावां में छप्योड़ी रचनावां अर छपी पोथ्यां, दूजी सूचनावां (साहित्यिक, संस्थावां सूं सम्बन्ध, प्राप्त पुरस्कार आद बातां) सदीव रो ठिकाणो, मोजूदा ठिकाणो, दसखत।

रावत सारस्वत

सम्पादक मरुवाणी

मीरां मार्ग, बनी पार्क, जयपुर

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर
रा
प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५ ५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा० मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्यां हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंह राजपुरोहित	७-५०
जोग सजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा० ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं० श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ० मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हूंस करै निगराणी	(काव्य संग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-४०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा.जो)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा.जो)	सं० रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा जो)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थान के कवि भाग २		स० रावत सारस्वत	१५-००
सरवर सूरज अर सिंझ्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।

※ **मधुमती**

(हिन्दी मासिक)

आकार २०×२६×८

अेक प्रति रो मोल—१.५० रु०

बरस रो मोल —१५ रु०

※ **स्वर मंगला**

(संस्कृत त्रैमासिक)

आकार २०×२६×८

अेक प्रति रो मोल—३ रु०

बरस रो मोल —१० रु०

※ **जागती जोत**

(राजस्थानी मासिक)

आकार २०×२६×८

अेक प्रति रो मोल – १.२५ रु०

बरस रो मोल — १२ रु०



विज्ञापन री दर

कवर पानौ चौथौ	— २५० रु०
कवर रौ दूजौ र तीसरौ पानौ	— २०० रु०
पूरौ अेक पानौ	— १०० रु०
आधौ पानौ	— ५० रु०
चौथाई पानौ	— २५ रु०



मुद्रक—माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस, स्टेशन रोड, बीकानेर में मुद्रित ।

जागती जोत

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम री मासिक

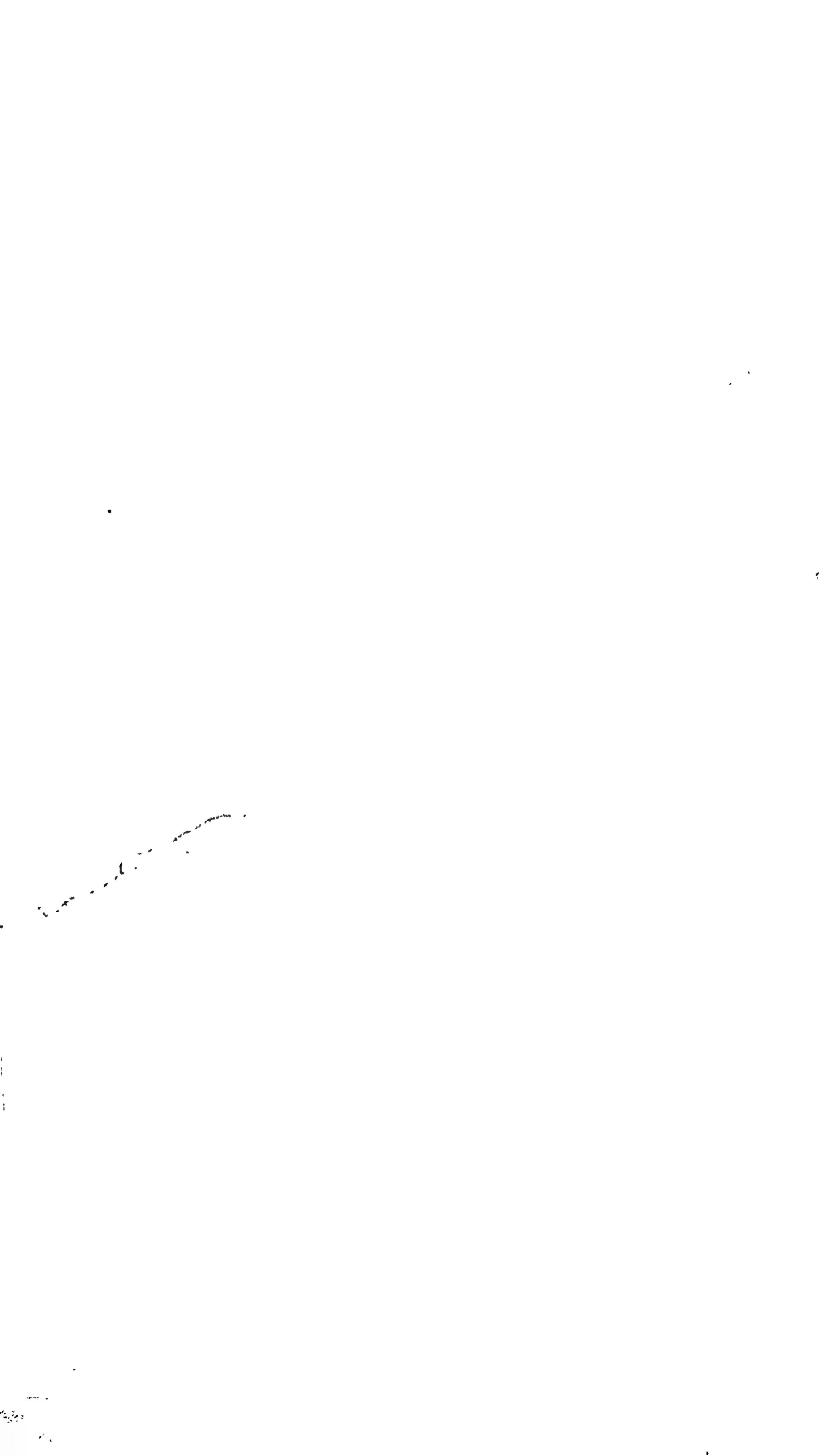
सम्पादक
डॉ० कन्हैयालाल शर्मा



जुलाई
१९७८



रस ६ अंक ५



जागती जोत

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम रौ मासिक

*

जुलाई, १९७८

*

सम्पादक
डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

*

वरस : ६
अंक : ५
वरस रौ मौल : १२ रिपिया
इण अंक रौ मोल : सवा रिपियौ
रियायती मोल : ८ रिपिया

प्रकाशक
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),
बीकानेर [राजस्थान]



जद तांई कोई भाषा बणावटी न होवै तद तांई ऊमैं अनेकरूपता रैगी ई। बणावटी भाषा मैं ई असी बात देखबा मैं आवै छै क ऊमैं लिंग, वचन, कारक, वाच्य, काल, पुरुष आदि नैं दरसावा वेई कोई प्रत्यय मान ल्या जावै छै अर फेर वांका जोड़ सूं प्रातिपदिकां अर धातुवां नैं ईं लायक बणा दी जावै छै क वै वाक्य मैं प्रयोग हो सकै। अर अभिव्यक्ति कर सकै। असी भाषावां मैं तो शब्द का पुल्लिंग रूपां नै ई मुख्य मान्या जावै छै अर स्त्रीलिंग सदा ईं प्रत्यय की सायता सूं बरणाया जावै छै। असी भाषावां को व्याकरण घणू सरल होवै—अतनूं सरल क ईं पत्रिका का एक पाना मैं ऊ छप सकै छै अर अतनूं निरपवाद क ऊंकै बारै जा'र कसी भी रूप नैं समझबा की जरूरत न होवैगी। असी भाषावां मैं एक भाषा जमेनहाफ द्वारा बणाई एसपेरैन्तो छै, जोमैं नरी सारी पोथ्यां भी छपी छै, पण ज्या घणां प्रचार-प्रसार कै बाद भी चलण मैं न आई, पुस्तकालय की पोथ्यां अर दो-च्यार मनख्यां की कार नैं न उलांग सकी। ईं मैं संदेह कोईनै क एस-पेरैन्तो संसार की सब सूं वैज्ञानिक भाषा छै अर सब सूं सरल भी।

संस्कृत वेई भी या खी जावै छै क वा भी संसार की वैज्ञानिक भाषावां मैं सूं एक छै, पण सरल कोई नें। ईं की वैज्ञानिकता एसपेरैन्तो की वैज्ञानिकता सूं न्याळी छै। एसपेरैन्तो जस्यां आपणां दस-पांच नियमां मैं बंध'र निरपवाद छै वस्यां ई संस्कृत भी आपणां सैकड़ां-हजारां नियमां मैं बंध'र निरपवाद छै। एक नैं पूरी तरै समझबा वेई पूरी अष्टाध्यायी की जाणकारी जरूरी छै तो दूजी नैं समझबा वेई एक पानां-भर भी नियमां की जाणकारी घणी छै। ईंसूं ई संस्कृत जटिल छै अर एसपेरैन्तो सरल।

भाषा को विकास जटिलता सूं सरलता की आडी होवै छै। जद कोई भाषा बणै छै तद ऊमैं एक सम्बन्ध नै दरावा वेई घणी सारी युक्तियां चाल खडै छे अर वांको जंगळ-सोक खड़ो हो जावै छै। आदमी ऊ सारा जंगळ को बोझो न ढो सकै। ईं सूं समय कै साथ-साथ वांमैं सूं कम चलण का रूपां नैं छोड़तो जावै छै अर वांकी जगां दूसरा रूपां सूं काम लेबा लाग जावै छै। अस्यां रूप घटै छै अर भाषा अनेकरूपता सूं एक रूपता की आडी जावै छै। संस्कृत मैं अनेकरूपता छी; ज्या घट'र पाली, प्राकृत, अपभ्रंश अर हिंदी या राजस्थानी मैं घणी थोड़ी रैगी। यूं देखो क अकेला 'राम' का रूप संस्कृत मैं १९ छा, 'पांच रूप दो-दो जगां काम आवै छे'; जे घटतां-घटतां हिन्दी या राजस्थानी मैं तीन रैग्या। अर 'राम' सूं न्याळा घणां सारा शब्द छा; ज्यांका रूप भी 'राम' सूं न्याळा छै। अब हिन्दी, राजस्थानी का शब्दां कै तीन प्रत्यय लगाकर सगळा शब्दां नें वाक्यां मैं

प्रयोग करया जा सकै छै। हां, परसर्ग वांकी सायता जरूर करै छै, जे सगळा रूपां कै साथ समान रूप सूं प्रयोग में आवै छै।

ईं अनेकरूपता सूं एकरूपता की भाषा-यात्रा में बिघन तद पैदा होवै छै जद दूजी भाषा या बोली का रूप ऊमैं घुस-पैठ कर जावै छै। तद फेर रूपां का झाड़-झखाड़ ऊंका सूदा गेला में रुप जावै छै। ऊं बगत असी लागबा लागै छै क आगै आपण पाछा बावड़ग्या होवां। पण यो बावड़बो कोईनै, आगै चालबो ई छै। न ईं सूं घबड़ाबा की जरूरत छै, न ज्यादा सोचबा-बच्यारबा की। समय कै साथ जस्यां वै दन चली ग्या, अस्या ये दन भी चल्या जावैगा। रूपां का जगळ में सूं फेर आग को सरूप बण जावैगो, आपूं-आप कटाई-छंटाई हो जावैगी। अर प्राकृतिक नियम कै अनुसार योग्य म रूप बच जावैगा।

राजस्थानी की अनेकरूपता को कारण दूजो छै। जीं राजस्थानी में अपार सृजन अतीत में होयो अर काल ताईं होतो रयो ऊमैं अनेक कारणां सूं ऊ सृजन बीच में जमां-जमां बंद-सो होग्यो। या दसा दस-बीस साल चाली। अर जद फेर प्रान्तीय भाषावां में लिखबा को माहौल देस में बण्यो तद राजस्थानी का परपरागत सरूप सूं न जुड़'र आपणी-आपणी बोलियां में लिखबा को चालो यहां सरु होग्यो। ईं सूं राजस्थानी बोलियां में रूप-रचना की जे प्रक्रियावां चाल री छै वै लेखन में आ गी। राजस्थानी कै नाम पै ज्यो लेखन आजकाल हो रयो छै ऊंकी अनेकरूपता को यो ई कारण छै।

सवाल पैदा होवै छै क राजस्थानी की या अनेकरूपता एकरूपता लैगी कांई? भाषा-विकास को नियम तो यो ई छै क समय कै साथ कम चलणहाळा रूप खुद ई मट जावैगा अर ज्यादा चलण हाळा रूप रै' जावैगा। पण यो काम दस-पांच बरसां को कोईनै अर न पांच-पचासबरसां को। यो तो सो-पचास बरसां में ई आपूं-आप हो जावैगो। ईं बीचं जे समरथ लेखक आवैगा वांकी भाषा दूजा लेखकां नै आकर्षित करैगी अर छोटा-मोटा लेखक वांका गेला पै चालबा लाग जावैगा।

पण आज को आदमी सगळी बातां प्रकृति पै न छोड़बो चावै; ऊ तो नियामक बण'र ऊपै काबू करबो चावै छै। अस्यां ईं भाषा की ईं अनेकरूपता नै एकरूपता की आडी ले जावा वेई गुजराती की नैईं राजस्थानी में भी गांधी जी की जरूरत छै। राजस्थानी में कोई गांधी जनमैं अर वांका संकेत पै वर्तनी, रूप आदि में मानकता थरप दी जावै।

एक दूजी युक्ति या हो सकै छै क राजस्थानी का लेखक अतीत का गद्य-पद्य की रूप-प्रक्रिया सूं जुड़ै, अर ऊंई आदर्श मान'र लिखै। अतीत की राजस्थानी में ज्या रूपता छी ऊनैं स्वीकारबा में कोई नै आपत्ति न होवैगी। हां, ई बगत जे लिख रया छै वांनै प्राचीन साहित्य पढ़णू जरूर पड़ैगो अर ऊसै जुड़बा को श्रम झेलणो पड़ैगो।

—कन्हैयालाल शर्मा

गीत

श्री प्रेम जी प्रेम

ये ओरां हाळा फोड़ा,
भगतै कद तांई यो मन !

(१)

यो घर छै जंतर-मंतर—
गेला गेला मैं ऊंळ,
सूरज कै ओळ्यूं-दोळ्यूं,
बदबा लाग्या बम्बूळ ।
आतां अर आतां-जातां—
कटग्या दन कटगी रातां,
यूं गरणगटेरा खातां—
धरतो नै आवे भूंळ ।
ये बना गांठ गरजोड़ा,
बांध्यां राख कतना दन !

(२)

आंगण मैं रोपी तुळसां
उग आया थापाथूर,
मनसा उफणी तो अतनी
जे खडी करचाड़ां पूर ।
दुख सूं दुख को ई सांटो,
कतनो ई काटो-छांटो,
अब कळी-कळी मैं कांटो,
यां बागां को दस्तूर ।
दै डाळ-डाळ कठफोड़ा,
पसवा पै चांच दनादन ।

कुण सुणै ?

श्री दीनदयाल ओझा

चारूमेर चेतो भूल्योड़े,
अवखाई री आंधी रै
चक्कर चढ़िये,
मृग तृष्णा रै लारै दौड़ते,
तिरसै हिरण री
अबोली जीभ री अरदास—
कुण सुणै ?

भूख रै ऊंचै भूतोळियै
गरणाटा खावतै,
पग-पग पछाड़ खाय
गिरतै पड़तै माणस रै
उकळतै आंतरै री
दो धापाऊ वात—
कुण सुणै ?

मैंगाई री मार सूं करळावतै,
मिलावट री मूढ
धाराळी सूं
टूक-टूक हुयोड़ै

हाडकां रै
अन्तस री खड़खड़ाट नै—
कुण सुणै ?

तिरसा, भूखा, दुखिया
सगळा आस लगायोड़ी
दिन रै सूरज'र
रात र चंदरमा ने
निरखै-परखै,
पण तिरस भूख'र दुख
आगा नी सरकै !
धोरां, तालरां'र मगरां सूं
टकरावती—
चारूमेर अेक ई आवाज—
कुण सुणै ?
कुण सुणै ?



लछमण रेख

श्री भंवरलाल सुथार 'भ्रमर'

बुखार कांई आयो, डील रसो तोड़ न्हाख्यो। सीला, इण दिनां जी-जान सूं म्हारी चाकरी करी जिको नै म्हैं कदेई भूल कोनी सकूं। कोई चीज री कमी कोनी आवण दी। रोजीनै २०–२५ रु० चाईजता, पाई री ई फोड़ो कोनी पड़ण दियो। दवाई पाणी रै अलावा दिन भर दूध रो इतजाम। मिलणनै आवणियै वीसूं लोगां खातर चाय-पाणी। धिन थारी छाती नै! लुगाई हुवै तो इसी! कित्ता दिन हुयग्या घरै सूतां नै! कियां खरचो चलायो हुवैला? सीला री सेवा भावना सूं प्रभावित इणी विचारां में डूब्योड़ो म्हैं सोचूं के सीला तो गुणां री खाण है। पड्यां-पड्यां हाड पामळी रसो जरू हुयग्या, ना दिन कटै ना रात। म्हैं पसवाड़ो बदळ लियो।

रसोई सूं चाय रै प्यालां री खणखणाट म्हारो ध्यान आप कानी खींच लियो। जी में आई कै आज री रात तो कटी। चाय री अडीक में म्हैं बैठो हुयग्यो।

सीला चाय ले'र आयगी। मुळक'र चाय रो कप झलावती बोली, अबै तो कीं जी सोरो हुवैला।......फेर ठैरगी। कीं कैवणो चावतां थकां ई वा आगे बोल कोनी सकी। थोड़ी ताळ नै हीमत भेळी कर'र बोली-अबै तो डिपटी माथै जावणरी सरधा हुयगी हुवैला!

हां ठीक ई लखावै। रैस्ट घणाई दिन करयो, पण अबै तो जायां ई सरसी। छुट्टियां ई रसो खतम हुयगी। कप हेठै मेलतां म्हैं कैयो।

आज तो अदीतवार है, काल री काल सोच्या। कप लेयर रसोई में जावती बोली।

खासी ताळ तांई म्हैं दूध नै अडीक वो करयो, पण आज दूध कोनी आयो। छेकड़ म्हैं दूध सारू हेलो पाड़्यो। सीला आई, पण दूध रो गिलास ले'र नईं! वा लाई लारलै पन्दरै दिनां रै खरच रै हैं साब रो कच्चो चिट्ठो! म्हारै सांमे न्हांखतो बोली-थेई बताओ, अबै लावूं कठै सूं? रुपिया साढ़ी तीन सौ खरच दिया थांरी बेमारी माथै!

आखिर म्हैं थारै लारै आयोड़ी हूं; लुगाई हूं। खरचो तो थारै चलायां ईज चालसी। दूध आळै बन्नी जदेई छोड़दी। बीरा लारलै मईणै रा ई ६० रु० देइज्या कोनी। दूध मनै नगदी पईसा दे'र दुकान सूं मंगवावणो पड़ै। हुंवतां थकां म्हैं कदेई नाक में सळ ई घाल्यो हुवै तो कैवो। रुपिया २००) रु० आडै बखत सारू सांभ'र राखोड़ा हा बै तो खरच हुयाईज, रुपिया डेढ़ सो माथै और कर लिया। ओ तो म्हैं पडोसण सूं बणा'र राखूं जद वीं अड़ी टैम फट काढ'र दे दिया। नईं तो कुण देवे है आजकाल। थारै भरोसै तो घर में कीं हुवो'र भलाई ना हुयो। थांनै तो टैमोटेम हरेक चीज मिळ जावती जणां कांई ठा पड़ै ?

म्हैं बीनै चुप करतां थकां टोक्यो—भोगती चुप रे। अबै तूं घणी मत बोल। म्हारो जी सोरो कोनी, तूं जा।

बा गई परी। बीरैं गयां पछै म्हारै जी में आई के म्हैं सीला नै कैय दूं कै हाल तांईं म्हारी तबीयत ठीक को'नी। तूं जाणै, थारो काम जाणै। मनै कीं मत कय, कीं मत पूछ। थारी मरजी आवै जियां कर, आछो लागै जिको कर, पण मनै ना छेड़।

सीला नै बुलावूं जिकै सूं पैला ई बा पाछी आयगी। अबकाळै बीरै हाथ हथगोळो हो। म्हारै कानी फैंकती बोली—ओ बीजळी अर पाणी आळा तो खायग्या बटक्यां सूं। सांस ई को लेवण देनीं। लारलै मईणै रो बीजळी रो बिल तो हाल तांईं भरीज्यो-ई कोनी और काल नूंवो भळै आयग्यो। पाणी आळो'स दस दिनां सूं रूळै ई है। थांनै कैवूं जद तो थे सुणाई करो कोनी। जे पैलाई टैमसर भर दो क्यों पनेळटी लागै। पण म्हारी कोई सुणै जणां !......फेर बोली जे म्हारो मानो तो थे अे दोनूं बिल आज-काल में ई भरदो।

ठीक है भर देसूं। कैवतां तनै कांई जोर आयो ? कैय दियो, आजकाल में ई भरदो। म्हारै कनै कीं दीखै है तनै। म्हारो तो जान मती खाया करो। हर दम सान लेवो करै। म्हैं रीसां बळतां बोल्यो।

बा बोली अच्छया तो अबै कदेई कैवूं कोनी। थे जाणो'र थारो काम जाणै। एक तो थारै भलै वास्तै कैवो ऊपरनूं गाळां और सुणो। इसो म्हारो कांई अणसरियो पड्यो है।

बींरो पारो कीं गरम देख'र म्हैं ठण्डो मीठो हुंवतो बोल्यो—इसी कांई ऊतावळ है ! म्हारो कैवण रो मुतलब कोनी समझी। तू म्हारो कैवण रो मुतलब है हा'लतांई तो आखरी तारीख अळगी है। करसां कठैई जुगाड़ ! तूं सोच अे मईणै रा लारला दिन। मांगा तोई कैरै कनै सूं ? तिणखारी'स कदेई मूरसी बटगी। जा दूध लिया !

थांनै हणै तो कैयो हो कठै सूं लावूं ? किसी गायां दूजै है, घर में ? लावो काढो आंटी मांय सूं रुपियो मंगवा दूं। बा उफणती सी बोली।

रुपियै रो नांव सुणतां म्हारा देवता कूच करग्या । असल में म्हैं थोड़ी ताळ पैंला आळी बात साव:ई भूलग्यो हो ।

अेक बात और सुणलो, कान खोल'र । स्टोव में तेल रो छांटो ई को है नीं ! जे दूध मंगवा ई लेसो तो गरम कांय सूं करोला । दुनुगै ही म्हैं चाय निठां बणाई ही । का तो किरासणी तेल लायदो अर का ला'दो लकड़ियां । थांनै कंवूं जणै तो लागै दोरो । पैंलाई वेसी ला'र राखो तो क्यां मो अेन टैम दौड़नो पड़ै ?

लकडियां उठा'र लावण री तो हाल तांई म्हांरी पोच कोनी । ला पींपो भला दै, तेल ईज ला दूं । म्हैं कंयो ।

लो ! वा पींपलियो भला'र छेहै हुयगी ।

पईसा ? म्हैं पूछ्यो ।

जे पईसा ई हुंवता तो थानै क्यों फोड़ा घालती ? मनै कांई भार लागै हो । चौक में घणोई मिलै है । वीं सफाई दी ।

भाळ तो घणी ई आयी पण चुपचाप ले पींपलियो'र टुरग्यो ।

रोटी थांरै आयां ईज बणैला भलो । वी लारै सू भोळावण दी ।

अबै म्हारै सांमै पईसां री समस्या ही । सोच्यो, कबाड़ सूं कोई मायलै कनै सूं । और कांई तो ?....भेर जी में आई कै मायलै इयां कैसूं कै म्हारै घरां आज चूल्हो को जग्यो नीं । पांच सात रुपियां तो दे, मिटिया तेल लावणो है । छि: किती मोछी लागसी आ वात !!...कैरे कनै सूं मांग सूं ? अर देसी ई कुण ? मायला तो रसै नोकरी पेशे आळा है । जिकै में अै मईणै रा लारला दिन ! सवाल कोनी उठै देवण रो । आपो आपरा रोवणा रो देसो'र हुम्रा ।

जी मैं आई कै पारीक रै कठै सूं तेल ईज ओधार ले लूं । पण भळै सोच्यो कै ई रा लारला पईसड़ा ई बाकी पड़्या है । ओ तेल देंवतो दोरो हुयसी । मानलो दे देसी । पण नटई जावै तो म्हारो कांई माजनो रैवै ! साईकिल मफ्तण रै घर कानो मोड़ली । वीं मे २५ रु० नीकळै है म्हारा ! सोच्यो, सगळां नीं तो कीं न कीं तो देसी ई । देसी जिका ई चोखा, आजरो काम तो निकळै ! पण मफ्तण रा पग पताई लाध्या नीं । फेर सोच्यो, चालो आज लिछमण नै ईज वकारां । आसामी है । हुय सकै कीं वेसी ई दे दै तो आपां रो सगळो ई काम निसर जावै । दूध आळै रा चुका परो'र बिजळी–पाणी रा बिल ई भर न्हाखूं । १०० रु० घणाई हुसी ।

लिछमण घरां ई हो । मनै देख'र राजी हुवतो खासी अपणायत सूं बोल्यो आव-आव, हमकाळै तो घणै दिनां सूं दीख्यो । थारा तो दरसण ई ओखा हुयगा ।

कठै रैवै है आजकाळ ! भेर आपरै कप कानी इसारो करतो बोल्यो—यार ! एक मिनट मोड़ो आयो ! चाय तो म्हे अंठवी । तूं कवै तो अेक कप थारै वास्तै बणवा दूं ?

रैवण दे यार ! आपस परी में कांय री औपचारिकता ? बस हुणैईज पीर आया हूं । कंवण में म्हैं कंय दियो । पण जी में सखासी इच्छया ही कै अेक कप चावड़ी मिल जावै तो कीं सरधा बाप रै । कमजोरी तो ही ईज, खासो थकग्यो हो । पण कांईं हुवै, म्हैं कीं बोलु जिकै सूं पैला ई बीं आपरी वात साजली । पावणो हुंवती जणै पूछतो । घर में आडर फेंकतो ।...जिकां कनै ई पइसा हुव । ईं तोबा करी, बिना मन रा पावणा ! घी घालूं 'क तेल ?

केई ताळ प्रेम सूं इनै-बीनै री बातां बगार'र म्हैं म्हारै मुतलब री वात टोरी, वेमार कांईं पड़्यो; म्हारी तो रड़क सो निकळगी । कनै फूटी कोडी ई कोनी अर पईसो'स पग-पग माथै चाईजै । थारै कनै कीं हुवै तो साजै नीं यार ! पैली तारीख तांईं पूठा कर देसूं ।

म्हैं किता मांगू 'र किता नईं', बीं सूं पैलाई चतर खेलाड़ी किनो काटतो बोल्यो—तूं ई सोच भाई, अवै मईणै रै लारलै दिनां पईसा कठै ? दो-अेक दिन पैला मांगतो तो कीं करतो ई । अब तो म्हारै सारै री वात को'नी । भायलो भायलै रै काम आया ई करै है । "म्हैं इण मौकै थारी हेल्प कोनी कर सक्यो, मनै बौत फील हुय रैयो है, हमकै काम पड़ै तो जरूर आये, म्हैं कीं न कीं करसूं ई"।

बींनै ऊपरा-ऊपरी टाळतां देख'र हंसो'र रीस दोनूं सागै ई आया ; मांय रा मांय दांत पीसतां थकां म्हैं ऊपर सूं मुळक'र आभार दरसावतो बोल्यो—नईं यार ! सोच री कांई बात है ।आदमी कनै कणांई हुवै अर कणंई को ई हुवै नीं । हाथ बसु हुंवता तो तूं नटतो थोड़ोई ! अै तो म्हारा ई दिन माड़ा है जिकै सूं तनै नटणो पड़्यो । ऊभो हुंवतो म्हैं कैयो, अबै चालूं भाई ।

बैठै नीं यार ! कदईसीक तो आवै'र ऊंतावळ और करै ! आज तो अदीत-वार है, जावणो ई कठै है ? लिछमण म्हारो हाथ झालतो अपणायत'र हेत सूं बोल्यो ।

म्हैं बैठ तो गेयो । पण जी में बाकी कीं को रैई नीं । अबै बींनै आ कींकर समझावूं कै तूं तो घर-सिगरी जीम-जूठ'र बैठो है, पण म्हारै टाबरां नै बळीतो नईं हुवण रै कारणै थकां दाणां अेकत करणो पड़ रैयो है । टाबरां री याद आंवतां ई मनै लखायो कै सीला टाबरां माथै झुंझळावती अर अणचो'ती गाळां देरैई है ! खालो मनै सगळा भेळा हुयर । चूल्हे में कांईं हाथ देवूं ? थारो बाप बळीतो लासो जणै ! दुनुगै गेया हा हालतांई तो पाछा बावड़ै ई है । थांनै रोटी भावै है ! फेर सोच्यो गाळां तो काढ़ ई को सकै नीं । उळटी बा तो मनै भोळा'र पछतावती हुवैला कै ई कमजोरी री

हालत में कठै गोता खा रैया हुवैला। कांई है, इत्ता माथै कठ्या जठै दो-चार और हुय जांवता। वांनै तो फोड़ा कोनी पड़ता!

इत्तै में भायलै रै घरां अेक लुगाई आई, जिकी नैं देखतां पाण लिछमण उठ परो'र झट बरसाली में गयो परो। जांवतो कमरै में ई बारणै आळो पड़दो न्हांखणो को भूल्यो नीं। वीं सूं बात कर'र लिछमण मांय सूं अेक लोटो पाणी रो भर लायो। अर म्हैं देख्यो कै वो कोई चीज धुवा रैयो है। पैला तो सोच्यो मन रो वैम है, कांई गूं पग भरीज्योड़ो हुवैला। धुवावतो हुसी। पण साफ़ळ देख्यां ठा पड़ी कै रमझोळ धुवाईज रैई ही जिकी नैं पन्डराज नैं अडाणैं राखणी ही। वियां पार ठ्यान बड़ै रै लेण देण पर छुआछूत नैं बोत ई ओछी बात बतावै। इण विषय माथै लिख्यै अेक उपन्यास माथै आपनैं अकादमी सूं ईनाम भी मिळ चुक्यो है। पण कांई करै? जठै ताईं छुआछूत रो सवाल है, बामणां रै बास में रैयर पंडतराज नैं कीं लोक देखाऊ छुआ-छूत तो राखणी ई पड़ै! वे फालतू रो विरोध कुण मोल लेवै? दूजै बास में रैयता तो की सोनताई। रैयो लेण-देण रो सवाल, जिको'स आप परमारथ रो मान'र चालै। ई वास्तै छूट किया? ठीक ई कंई है पर आदेश कुशल वहुतेरै! म्हैं तो सदाई वोनैं दकियानूसी ईज समझ्यो, पण लारलै साल आंरो उपन्यास पढ्यो जणां पोल खुली। कै आप व्यास जी बैंगण खावै दूजां नै परमोद बतावै! रमझोळ मांयनैं धर'र बाई नैं रुपिया सावळ गिणा दिया। रुपिया गिणावतां देख'र मनै अचूंभो हुयो हुवै आ बात कोनीं। म्हैं आंरी आदतां सूं चोखी तरै वाक़फ हूं।

वो कमरै आर म्हं रै कनै बैठग्यो। बोल्यो कीं कोनीं। वीरै मन में चोर हो। म्हैं वीं री आत्मा नैं दोरी करणो कोनी चांवतो ई वास्तै वो कनैं सूं छुट्टी मांगली अर सीधो चांद रै घरां पूग्यो। पण चांद घरै को होनी। भाभी जो बतायो घरै पांड़ोस में ई है, हणैं आयजासी। फेर बोल्या—थे कमरै में बैठो थोड़ी ताळ. म्हैं चाय बणावूं।

नईं चाय तो म्हैं पाछो आयर ईंज पीसूं। जित्तै चांद आय जासी। म्हैं कैयो।

भाभी म्हारी तबीयत रै बारै में पूछतां थकां बोल्या—थांरी तबीयत कीकर है? कीं जी सोरो हुयो?

म्हैं बोल्यो—हां, कवै तो ठीक हूं। दिनुगै सूं तिस्सो हूं गरम पानी हुवै तो अेक गिलास भर लावो, म्हैं हालताईं कच्चो पाणी कोनी पीवूं। वै पाणी लावण नै गया परा। म्हैं आ सोच'र बोत राजी हुयो कै कोई तो म्हारो सोच करै है, ख्याल राखै है, नईं जठै इत्ती देर लिछमण कनै वठै ई होनीं। पूछ्यो तो कोनी तबीयत रो। कूड़ी अपणायत!

बै गिलास भर लाया। पाणी पींवतां ई चैरै माथै अेकरसीक रौनक आयगी। जाणै दूध री गिलास चेपी ही। वठै सूं निसर'र बिना कामई ईनै-बीनै गोता खावो करयो। अेक दो भायला' मिळ्या, बां सूं गपशप करी पण बांरै आगै पईसां री बात को चलाई नीं। चोखी तरै जाणै हो कै मन री बात कैयर गमावणी ईज है। देवाळ कोई कोनीं।

आध पूण घण्टा घूम'र पाछो चांद रै घरां जा पुग्यो। घरै ई हो चांद। मनै देखतां ई मुळकतां थकां पूछ्यो,—तबीयत ठीक हुयगी दीसै है ? अबै।

हां, अबै तो ठीक ई हूं। थांरो मनस्या कांई बैमार राखण री ईज है कांई ? म्हैं अपणायत सूं बोल्यो।

नईं-नईं इसी बात कोनी। बुरी चींतण नै म्हैं ई लाध्यो ?

थोड़ी ताळ इनै-बिनै री बातां करी। जितै भाभीजी थाळी पुरस लाया। चांद रै अेक-दो नोरां सूं ई म्हैं जीमण नै बैठग्यो। आ कोई नूईं बात कोनी ही, घणी ई दफै जीम लिया करूं हूं। पण आज री बात दूजी ही। मन में पाप हो। दिनूगै सूं पेट सफा खाली हो, दूध ई को न्हाख्यो होनीं। चावड़ी माथै ई चाल रैयो हो। अेक बजगी ही भूखो कांय सूं रैईं जं ? सोच्यो दो चार कवा लेईं लूं।

कवो लियो'र का लखायो कै घांटै सूं हेठै नीं ढळ रैयो है। ध्यान टाबरां का'नीं गयो परो। बै किराणी तेल नै अडीक रैया हुवैला अर म्हैं अठै मजे सूं जीम रैयो हूं। सोचूं कै म्है कित्तो वेहया हूं। पण कांईं हुवै ? लाचारी है। स्सारै री बात कोनी। जीमतां-जीमतां सोचूं कै अबै चांद नै म्हारी कैय दूं। चांद आज तांईं नट्यो कोनी। तोई मूंडै रै जाणै टांका आयग्या हा। दो-तीन दफै मांगण री कोसीस करी पण बात मूंडै तांई आ'र रैयगी।

जीम-जूठ'र चळू कर लियो। थोड़ी ताळ नै भोजाईजी चाय बणा लाया। म्हैं बोल्यो— चाय री कांईं दरकार ही ? अबार तो जीम्या हां।

आधो-आधो कप तो है ईज, चालसी ! चांद कैयो।

चाय पींवती टैम जी में आई कै अेक दस रो लोट मांग लूं, काम चल जासी। पण बोल को निकळ्यो नीं।

इत्तै में चांद नै बुलावो आयग्यो। बींनै आवूं हूं कैयर मनै पूछ्यो—यार अेक काम करसी ?

कांई ? म्हैं पूछ्यो।

ड्राईक्लीन में कपड़ा दियोड़ा है, आज लावणा हा। म्हैं कोई काम सूं गांव जा रैयो हूं। आ कैवतां थकां बो म्हारै हाथ में रसीद रै साथै दस रो लोट धर दियो।

म्हैं राजी हुयो। मन री मुराद पूरी हुयी। चोखो हुयो बिना मांगयांई दस रुपिया मिळग्या। म्हारो आज रो काम तो निसर जासी। पछै सगळो बात चांद नै समझा देसूं 'र हुग्रा। म्हैं बोल्यो—ठीक है। ला देसू।

बठै सूं सीधो बजार गयो। चार लीटर तेल भरायो'र कीं साग-सब्जी लेर घरै पूग्यो। अबै म्हारै पर लागग्या हा। सोच्यो, सीला मनै देखतां ई राजो हुसी'र पछतावती थकी कैसी कै म्हैं थांनै इण हालत में मेल'र भूल करी।

इण खुसी में डूब्योड़ै म्हैं जियां ई पगोथिये माथै पग धरियो, मांयनै सूं सीला री बड़बड़ाट सुणीजी—जावै जिका आगड़ा ईज जावै ! दिनुगै निकळया हा, हालतांई तेल ले'र आवै है। कठै ईराक, ईराण सूं लावण नै गया है। बांरै भरोसै तो टाबर भूखां ईं मरो भलाईं।

टाबरां माथै झुंझळावतां नै देख'र म्हारो तो सरधा रूपो टूटगो। तोई जी वड़ो कर'र मांय वड़्यो। देख्यो, वा रोट्यां बणा रैई ही। टाबरिया जोमै हा! म्हैं बीरै आगै तेल रो पीपो धरियो'र का वा रफणती सो बोली—अबै कांई करूं तेल रो? बळूं कांईं? म्हारै माथै छिड़क दो जूको गैल टूट जावै। सगळा रा काळजा ठण्डा हुय जासी। थांनै ई फिकर हो तो पेलाई लांवता नीं? मनै अै थेपड़ियां रा पड़्या तो माथै कोनी करणा पड़ता! कांईं करूं टाबर तो मनै खावै।

थक्योड़ो तो हो ईज। सीला कानी अेक रो लोट फैंकतो बोल्यो—जा दे दै थेपड़ियां आळी नै। अर म्हैं बिना बीरै सांमो जोयां मांयनै जा'र कमर पाधरी करण सारू पिलग माथै आडो हुयग्यो।



प्रकाशकां सारू—

- जागती जोत में आपरै प्रकाशन संस्थान सूं प्रकाशित पोथ्यां री दोय प्रतियां समीक्षा सारू जरूर भिजावो।
- जागती जोत रै जिण अंक में आपरी पोथ्यां री समीक्षा छपसी वो अंक आपनै जरूर भेज्यो जासी।

—सम्पादक

पारस्यां

कु० शकुन्तला कुमारी "रेणु"

हरयां लिपाया, चोक पुराया, चांवर-लापसी का जीमण जिमाया। लाड़ला जवांई सा कै तई सासूजी नै घणां-घणां वारणा सुं बधाया।

आज म्हारै घर ज्वांईजी पधारया। चालो री पारस्यां सै यां नै बधावां।

सांज पड़ी, दन आंथ्यो, रात आई। जीम-छूंट मोयला की सबरी लुगायां भेरी होई।

ज्वांईजी बैठ्या है। लुगायां गीत गा'गा'र पारस्यां पूछ री है। ऊ को जुवाब देवै जद तो ठीक, नी तो सारी लुगायां वां की घणी मसकर्यां कर-कर'र दांत खाडै।

जीं हिन्दी मैं "पहेलियां" केवै ऊं नै म्हठीं गांवड़ा गांव मैं 'पारस्यां'क पयार्'थां केवै। ये पारस्यां गांवड़ा-गांवड़ा मैं बखरी पड़ी है। जीं मैं एक दूसरा की अक्कल परखता लोग सेज आणन्द हांसी मसकरी का मसरा रारता रेवै। अस्यां आपका मन की हौंस पूरी करै।

सांज की जीम छूट एक दन म्हूं म्हारा पालक्या पै बैठी थी क म्हारा सामला पडोसी गिरधारीजी गूजर की वू' दोड़ी-दोड़ी आई। हात जोड़'र कैबा लागी, "चालो पधारोजी बाईसा आपकी सुगनी का ज्वांईजी आया। गीतां को बुलावो है आपकै। वेगा पधारज्यो।

"म्हारी सुगन का ज्वांईजी कांई मांडो झांकबा आयाक सुगनी नै लेवा आया? हां, आऊंगी जी गिरधारीजी की वू' ! जरूर आऊंगी हो !"

जीव म्हारो आछ्यो नी थो तो भी म्हूं, म्हारी भाभी, म्हारी बायां पड़ोसण कै घर गीतां में गिया।

भींत को सायरो ले'र एक आडी बैठी म्हूं सुणती री। डील म्हारो भीतर-ई-भीतर टसकतो रियो, पण मन म्हारो पारस्यां मैं रमग्यो।

हँसता–सरमाता जुवांई जी गदेला पै बैठ्या । वांके आसपास घर का बड़ा-बूड़ा छोटा मोटा, साळा-सुसरा बैठ्या । सतरंग पर बैठी लुगायां ने गीतां का फटकारा उडाया—

"सरग सीताफर लागियोजी ज्वांई सा,
म्हारा वत तोड़यो ई न जाय, श्रो राज !
समजो तो ज्ञानी, ज्ञानी म्हाराज !
चत्तर होय तो केयगा जी ज्वांई सा !
मूरख मसरे हाथ श्रो राज !
समजो तो ज्ञानी, ज्ञानी म्हाराज !

× × ×

दांत खाड़ता ज्वांई जी बोल्या–ये तो 'तारा' होया सा । अर लुगायां ने दूसरी पारसी गाई ।

"मोती वखेरूं चनण चोक में जी ज्वांई सा;
म्हारा वत सोरयो ई न जाय, श्रो राज !
समजो तो ज्ञानी, ज्ञानी म्हाराज !
चत्तर हो तो केय दो जी ज्वांई सा,
मूरख मसरै हात श्रो राज ! समजो तो ···

अर लाड़ला जुवांई मूंडा सै जाणै फूलां की झड़्यां वसरी—"यो कांई मांडणो नी होयो सा ?

घणघेर लुगायां फेर गरजी, जाणै घेर-घमेर वादरा घरांवाया अर हांस्यां की बीजळी चमकी । आपस में चतर-चतर बोली अरी वा गावो री, दारमा वाः—

लवार्‌यां की डावड़ी जी ज्वांई सा,
बैठी खूट्यां मांय, श्रो राज !
सामूं सैं मुजरा करै जी ज्वांई सा,
झेलो राजकंवार श्रो राज !
चत्तर होय तो केयगा जी ज्वांई सा,
मूरख मसरैगा हात, श्रो राज !

× + +

अर सांची अब के तो जुवांई जी हात मसरवा लाग्या; ऊपर नीचै ताकै भापड़ा ! अठी-उठी बगलां झांकै बच्यारा । सासू सपूती तो कांई नी बोली, पण दूसरी जण्यां बीजर्‌यां चमकाती बोली—हार्‌या थांकी मा ये लाड़ला ! या "वन्दूक" होई, समज्या !

अब फेर वांकी राग तो झरमर बरस बड़ी:—

पैली तो म्हारो म्हूं होयो जी ज्वांई सा;
    जणी पाछै म्हारो बाप, ओ राज !

धामाधूमी सूं म्हारो भाई हुयो जी ज्वांई सा.
    जणी पाछै म्हारी बैण, ओ राज !

चत्तर होय तो केय दो जी ज्वांई सा,
    मूरख मसरै हात, ओ राज ! समजो तो…

× × ×

बालक ज्वांई जी बोल्या,—"म्हें हार्‌ग, आप जीत्या सा। म्हांनै तो आ पयारी गुणेसजी कै छोडी। अब आप ईं को अरथ बतावो।"

जुवांई जी के पास बैठ्या सारा अर सुसराजी नीची नाड़ कर दांत खाडबा लाग्या। पास बैठ्या दूसरा जणा भी दांत खाड़ मसकरी करता रिया। गीतां की झडी में फेर लुगायां दांत खाड़ बोली—भापड़ा कांई जाण री ये! बता दो दारी चालो! बालक जुवांई है आपणा। यां की मां नैं कांई नी सखायो बच्यारा नैं! सुणो सा! ईं को मायनो दूद-दई—लूग्यो अर छाछ होयो। समज्या क नी?

फेर लुगायां नै भींतर्‌यां बखेरी:—

"दरजी को तो घोड़ो मरग्यो, लाद सूं घर भरग्यो
पांच रप्या को चारो चरग्यो ऊंची टांगां करग्यो।
चत्तर म्हांकी पयारी को फर कें दो जी।
ज्वांई सा म्हांनै कं'र सुणा दीज्यो जी।

× × ×

"कतरण तो घणी वखरती फरै सा।" जुवांई जी को जवाब आयो अर बायां नै फेर गाया:—

बिन खुडछो, बिन खुड़छल्यो जी जवांई सा,
बिन छूलै, बिन आग,
सुन्दर नैं सीरो कर्‌यो जी जवांई सा,
होयो बड़ो सवाद।
क अन्तर कपटी छो जी,

जनम का झूठा छो जी,

जुंवाई सा बोलो अमरत बोल।

× × ×

घड़ीक मैं गाती, घड़ीक मैं अरथाती लुगायां कै तई जवांजी मापड़ा नैं फेर भायनो बतायो। म्हां ई 'संत' म्हाछ्यो मीठो लागै। आप आरोगो तो आप कै बेई लावां। बालक जवांई का जुवाब देवा की या रीत सांची घणी आछी लागी।

लुगायां फेर गावा लागी!—

बारा आया पावणा, रोटी पोई जो एक।

ज्यू आया ज्यूं ई जीमग्या, रोटी रैगी जो एक।

म्होनो ज्वांई सा म्हांकी पारसी, नीतर हारो थांकी माय मांय छायों पूरो नई पड़ै, रोटी पोवेगा कूण।

× × ×

कतराई मनख आवो सा, 'तुवा' पै रोटी तो एक-एक कर कै ई सकैगी अर सबी पावणा जीमेगा।

अस्यां वातां ई वातां मैं, गीतां का फटकारा मैं, हांसी मसकरी मैं, ममरा मैंणा मीठा-मीठा छूंगट्यां म्हारी सुगन का जवांईजी झेलबो कग्या।

कोई बी व्याई सगा कै जवांई भाई आवे। जद वांको मन रालवा, खातो बगत मैं मोज मजा करवा, घर आया पावणा की मान-मनवारयां करबा, अर आपका मन की उमंगां खाढवा को म्हां का गांव मैं पारस्यां गावा को चलण घणो जूनो है। आज-कल की फड़ी-लखी वाई-वावड़यां सैरां मैं यो रवाज भूलनो जा री है। पण गांवड़ा की वायां आज भी जीं वखत भांत भांत की राग भांत मैं गावा बैठे' क वसत हांसी मसकर्‍यां अर आणन्द की असी रैलपैल मचैंक सुणतां ई बणै।

व्याई-सगा नै, जुवांई भाई नै हरा'र अखीर मैं ई गीत सै लुगायां पारस्यां खतम करै—

हारयां को फेरो साड़ी घाघरो,

जीत्यां की पचरंग पाग।

ये कांई कैगा री मापड़ा;

म्हारी ग र्यां का गवार—

भूरी भैंस्या का गवार ।

कंवर कैंगा री आपणा

बांद कसूमल पाग ।

म्हांकी पाटण कै गोयरै

लागे दो वड गोठ;

गोठ गोठीड़ा जीमग्या

ज्वांई सा कूटेगा पेट ।

कहो नी ज्वांई सा म्हांकी पारसी,

नीतर हारो थांकी मांय

चत्तर होय तो केय दो

मूरख मसरैगा हात ।

× × ×

लुगायां की पारस्यां पूरी होई । म्हैं सब पतासा ले'र म्हां का घर नै पाछा बावड़्या । आया तो देख्या कै फेर रात की बारा पै एक बाज री थी ।

× × ×



नकारात्मक शक्ति

(डा० नागरमल सहल)

अगरेज कवि कीट्स निखालिस कवि हा, क्योंकै राजनीतिक, धार्मिक; सामाजिक, या सैद्धान्तिक कोई भी भांत रा उणारा पूर्वाग्रह कोनी हो। अविकल सौन्दर्यो पासकां मैं उणरो अव्वल स्थान हो। येट्स (W. B. yeats) लिख्यो है कै कीट्स अयां का टाबर रै समान हो जिणरो मूंडो कन्दोई री हाट री बारी सूं जाणै सट्योड़ो हुवै पण वीं री सौन्दर्योपासना हळकी फुळकी कोरी ऐन्द्रिकता मात्र नी ही। जद कदैई पलायण री इंछा राखता हुवा भी वै कदै ई जीवन सूं अणमुन कोनी हुया। प्रकृति री रमणीयता मैं वै मनख रा करुण क्रंदन नैं भुला कोनी सक्या।

कीट्स मुख्य रूप सूं कवि है, पण आपरी चिट्ठयां पत्रां मैं कठै-कठैई उणां सूत्र रूप मैं साहित्य रो तलस्पर्शी आलोड़न-विलोड़न भी कर्‌यो है। नकारात्मक शक्ति (Negative Capability) उणरो प्रथित सिद्धांत है, जिणरो अरथ है कै कवि आत्मविस्मृत हो'र काव्य रो प्रणयन करै है। ऊ आपरा निजू हरख उछाव या दुख दरद री बात कोनीं करै। भूल चूक'र चोखो कवि कदे करै भी है तो इण भांत कै ऊ सगळां रै हरख रो कारण बण ज्यावै है। साधारण भाव भूमि रै बिना साधारणी-करण संभव कोनी हुवै। श्रेष्ठ कवि सापूंचो अप्रतिबद्ध हुवै है। ऊ न तो किणी वाद नै पनपावै अर न किणी वाद रै आसरै खुद चालबारो उपक्रम करै है। जेन आस्टेन रा उपन्यासां मैं जयां बारली दुनिया रो रत्ती भर भी संकेत कोनी, वयां ही कीट्स री कवितावां मैं मनख पणैं री पुकार है, मानखां री कोनी। फांसीसी राजक्रान्ति जसी बड़ी ऐतिहासिक घटना री उणरी रचनावां मैं कठैई कोई पड़घुन कोनी। ठीक उण रै विपरीत वर्ड्सवर्थ, शैली, बायरन आदि रा काव्यां मैं उणांरी डकारी चोट सी घोषणा है। ई वास्तै श्रे कवि कीट्स जसा बेलाग कोनी हा।

खुद नै नकारणो कवि री सैं सूं वड़ो सगती है। कीट्स कयो है कै शेक्सपीयर मैं या भोत बड़ी मात्रा मैं ही। शेक्सपीयर रा नाटकां नै पढ़'र कोई या नहीं कैय सकै कै शेक्सपीयर अस्यो मिनख रियो हुवै लो, क्यों कै उणरा हर चरित्र मैं भावै ऊ शायलाॅ होवै या इयागो, पोर्शिया, आइमोजन मतलब कोई भी होवै, पाठक नै सदा याही लागै जयाँ ऊ सैं आप आप रै मन री वात कैता होव। मतलब यो कै कठै भी आपां या नहीं कह सकां हां कै पात्र रै बहानै नाटककार खुद ही बोलर्यो है। शेक्सपीयर री ई सगती रो नांव समानुभूति (Empathy) है। जठै आपां या कह सकां कै नाटक रां फलां पात्र रै मूं डै नाटककार खुद बोल रियो है, उठै ही नाटक रो अपकर्ष हुयोड़ो समझो। नाटक सैं सू बेसी वस्तु-परक होवो करै है, व्यक्ति परक-रजेक भी नीं। या सगती नकारात्मक सगती रो जयां काव्य मैं दूसरो नांव है। सिद्ध कवि ऊ है जो नकारात्मक सगती रो धणी हैं। कोलरिज मैं कीट्स नै इण सगती री कमी दीखी, क्यो कै वै हर बात रो सगळो ज्ञान प्राप्त करणो चावै हा। अधूरा ज्ञान सूं वै कदै ई सन्तुष्ट कोनीं हो सकै हा. पण नकारात्मक सगती रो अरथ है अणनै चापणो (अनिश्चितता), रहस्यमयता, सन्देह री अवस्था जिण मैं तथ्यां या तरकां तांई पूगवा री उतावळ न हुवै। कवि रो कोई आत्म या स्वयंभाव कोनी रैवै। वीं नै देव-दाना, नायक खलनायक–सगळां री चितणा मैं एक सी खुशी होवै है। चरम प्राण दार्शनिक नै जिण बात सू धक्को सो लागतो हुवै, किरगांठ्यां री भांत बहुरंगी कवि नै उण सूं ही हरख मिलणो संभव है। जोगा कवि इण अणपार सृष्टि मैं सैं सूं कम कवि जैड़ो लागै है क्योंकैं उणरी आपरी कोई पछाण कोनी। ऊ तो सतत परायी कायावां मैं प्रवेस करतो रैवे है। वीं री आपरो क'ई कोनीं। पराया ही वींरा सब-कुछ है, क्यों कै परायां नै अपणावणरी साम्रथ वीं मैं है। ज्ञान अर दरसण रा आळ जंजाळ मैं कवित्व रो ह्रास हुवै है। कीट्स नै विचारां री सघनता सूं संवेदन, मनोयोग या गाढ़ अनुभूति घणी प्यारी ही (O for a life of sensations rather than of thoughts !') रूड़ो रूपाळी वस्तु सूं सदा आनन्द वण्यो रैवै है ('A thing of beauty is a joy for ever') पण पछै भी सत्त अर सौंदर्य मैं कीट्स रै बल्लै कोई नाथ (विभाजक रेखा) कोनी ही। कल्पना जिणनैं वै रूड़ी रूपाळी समझ'र आदरै, वा नहचै ही सत्त है। कीट्स री मानता है।

सौन्दर्य सत्य है, सत्य सौन्दर्य–यो ही इण धरती माथै जाणो हो थे अर थो हो है बस थांनै जाणणो। दार्शनिक री सन्तुष्टि हुवै है सत्य रा दरसरां सूं अर कवि री हुवै है सौन्दर्य रा साक्षात्कार सूं। सत्य अर सौंदर्य छेड़ै जातां एक है, निसर्गत: ऊ शिव भी है।

उद्देश्य रै सागै काव्य रचना करणो भूंडो परचार रो साधन भले ही हुवे

पण वा कीट्स री नजर में कविता कोनी। पेड़ में जयां पत्यां आवै है, वयां ही काव्य जे स्वतः स्फूर्त कोनी हुवै तो अस्या काव्य रो अणसिरज्यो रहणो ही चोखो है। काव्य सूं आपां नै विस्मय हुवै है उणरी हृद्यता सूं, उणरी असाधारणता या वैचित्र्य सूं नहीं। पाठक नें अस्यो मालूम होवणो चावै कै जाणै कवि वीं री ही उन्नततम चितवणां नै सबद दे रियो है। कीट्स री मानता है कै कविता स्मृति सी लागणी चावै। इणारो सौन्दर्य स्पर्श अधकचरो नहीं होणो चायै क्यों कै वीं सूं पाठक स्तब्ध या स्तब्ध भलै ही हो जावै पण वीं सूं ऊ संतुष्ट या तिरपत कोनी हुवै। बिंबोदय, बिंब विकास अर बिंब परपणा सुरज री भांत स्वाभाविक रूप सूं प्रकाशित होवणी चावै। कीट्स रो यो सिद्धान्त एलियट अर पेट्स रा विचारां सूं घणो मेळ खावै है। या सगती निर्वैयक्तिकता (impersonality) ही तो है। सिरजण रा पळां में कवि री मनः स्थिति असी होवणी चाहिजे कै विभिन्न प्रभावां नें ऊ ग्रहण करतो चालै। आदर्श ग्रहणशीलता री इण स्थिति में कवि खुद नें कठै याद राख सकै है। ऊ न कोई सूं बंध्योड़ो है; ऊ न कदई आदरै अर न कदई अनादरै। वो तो बस लेतो जावै है ज्यो उणरो भागधेय है।

कीट्स लिख्यो है कै मनख़ाजूण आतमा रा निरमाण री घाटी है। विचारो घणां रै समान है जिणां सूं बुद्धि आपरा अभिज्ञान रो पान करै है। मैंना नो कीट्स नै घोज दिरावै है यो गाय'र कै ज्यो खुद नै सूत्योड़ो मानै है ऊ ही सै सूं वेगो जाग्योड़ो है। ज्ञान रा गोरख धंधा में ऊळझवा सूं वध'र कोई पाप कोनीं। बायरन कदो है कै ज्ञान दुःख है। कीट्स रो कैणो है–दुःख ही बुद्धिमत्ता है, पण सागै ही "बुद्धिमत्ता मूर्खता है।" नकारात्मक सगती रो कदै-कदै यो अरथ लगा लियो जावै है कै कवि रो चितवणां सूं कोई सरोकार नीं होवणो चाहिजे। दूजा सबदां में साहित्यिक नें बौद्धिक सत्य री कोई अपेक्षा कोनीं हुवै, पण सांच बात या है कि नकारात्मक सगती शुद्ध बौद्धिक सगती रो ही तत्व (सार) है। बुद्धि नै सशक्त करण रो यो एक मात्र साधन है। चोखो कवि किणी भी विषय रै बाबत आपणो मत थिर नहीं करै है। मस्तिष्क में सब तरां सूं विचारां रा प्रवेश सारू राजपथ जसी छूट होणी चाहिजे। कवि नै विशिष्ट दल वादी न होवणो चावै। प्रतिबद्धता कसै है, कचोटै भी है। कवि रै वास्तै तो उन्मुक्त वातावरण अपेक्षित है। ऊ जठै चावै विचरै (जहां न जाय रवि, वहां जाय कवि); कविता रो खाद्य जीवन में चुभण हाळा कांटा नीं बोवणो चावै। कांटा तो है अर रैसी भी, पण सौन्दर्य प्रेमी रै वास्तै सूळां भर्‌यो पथ भी कुसुमां ज्यूं कोमळ हो ज्यावै है। सौन्दर्य में सगती है कष्ट देवण हाळा विचारां नें भगावण री। सुकवि रा अभीष्ट अर्द्ध ज्ञान रो अरथ है–विरोधी ज्ञान रा अंगोपांगां सूं भी खीझ नीं, रीझ ही भली। कवि–सम्मत यो अर्द्ध ज्ञान सांचै ही दोहरो ज्ञान है–एक आपरी आतमां रो अर दूजो जगत रा अमंगळ, अनिष्ट, दुष्कर्म अर पाप रो।

सक्षेप मैं नकारात्मक सगती 'स्व' नै बिसरा'र परानुभूति नै स्वानुभूति वणाणो है। अहं नै नकारणो है जिण रो प्रयत्न दार्शनिक करै जरूर है पर वै सफल कोनीं हुवै। सुकवि स्वनिर्मित सुन्दर वन मैं अतरो आनन्दित रेवै कै देह बोध रो आत्यंतिक अभाव सैंजां ई हो जावै है। । वीं वगत ऊ कोनै है पर ईश्वर री चराचर सृष्टि है। कवि तो साधन है जिण पर अनहद नाद बजै। यो ही ब्रह्मानन्द है, यो ही रस है। यो सभव है अहं रै विगलित होवण सूं, देहाध्यास रै अवसित होवण सूं। सुकवि मैं या तागत सहज हुवै है। ऊ खुद इण सूं सशक्त होवण रै नातै पाठक तक ऊ ही संवित् प्रेषित करवां मैं मनोकाम हुवै है।

सूरज की किताब

डॉ० प्रेमचन्द्र गोस्वामी

आज री भोर
म्हैं पढ़ी—
सूरज री किताब।
म्हारै पोर-पोर में
सौ-सौ सूरज रो उजाळो—
घर करण लाग्यो है।
पैलां तो म्हैं डर्‌यो हो,
पण अब मन रस्ते मैं
आग्यो है;
चौकड़ी भरते हिरण ज्यूं
मन दौड़न लाग्यो है;
घर मैं गूंज रह्यो है—
बच्चां री किलकार्‌यां रो
सुहाणो संगीत…।
सांची कैं ऊं—
सूरज री किताब
पढ़ण रै बाद
म्हैं लगातार
जाग रयो हूं……
लगातार……!

पोथी री बातां

डा० उदयवीर शर्मा

पोथी पढ़ण री सोख मन्नै छुटपण सूं ई हो। पुस्तकालय सूं एक पोथी ल्यावणी अर दो तीन दिन में पढर पाछी जमा करा देवणी, मेरी एक बाण हुयगी। ई बाण सूं मैं एक पोथी प्रेमी वाजण लाग्यो।

एक दिन मैं पुस्तकालय में गयो। पुस्तकालय रै अध्यक्ष सूं चाव्यां रो झूमको लेर एक आलमारी खोली। आलमारी खुलतां ईं एक घणी बड़ी पोथी पर मेरी निजर पड़ी। पोथी निकाळ र देखी तो वीं रो सिर गरदै सूं भर्‌यो पड़्यो। कमर पिचकी पड़ी। मूंडो जाणं बंद होई। दोनूं आजू-बाजू सूं पोथी और पोथ्यां रै दबाव सूं भेळी-भेळी हो री। पोथी नै झाड़ पूंछ र देखी। पोथी रो नाम हो 'कविता-कुंज' पाछी धरदी। पोथी नै पाछी राखतां ई वीं मांय सूं लहैरां सी निकळी। या लहैरां मांय सूं आवाज आई "अरै वीरा, तू पोथी प्रेमी लाग्यो, तू मन्नै पांच बरस सूं वारै तो काढी कं। मैं आई जद सूं अठै कैद हूं। कोई खोल र देखणियों ई कोनी आयो। या मेरी पड़ोसण है, पांच बरस में साठ बार बारै जा र दुनिया देखाई अर एक मैं अठै कैद भोगू।"

मैं डरतो सो बीच में बात काटतो बोल्यो "मैं थारली बातां समझूं हूं पण ईं में म्हैं कांई करू?"

पोथी बोली "जियां मिनखां गैं दुनियां में ऊपरला, बीचला अर नीचला मिनखां रा तीन भेद होरया है, बियांई पोथ्यां री दुनियां में भी तीन भेद बणग्या है। नामधारी पोथ्यां म्हारो सोमण करै है। म्हानै बांरै जाण ई को देवै नीं। सदा आप ई जाणै तांई मूंढो काढबो करै अर म्है देखती रइज्यावां। बीचली श्रेणी री पोथ्यां वांरै जाण ई को देवै नीं। सदा आप ई जाणै तांई मूंढो काढबो करै अर म्है देखती रइज्यावां। बीचली श्रेणी री पोथ्यां वां रै साथै-साथै कदै कदास बारै जाइ आवै पण म्हारो कांई हो? एक जमानो हो जगा म्हे राजदरबार में पूजी जाती पण "जां रा मरगा

आदस्या एळता फिरै वजीर।" इब म्हातैं कुण पूछै। म्हारै तन अर मन है, बळ भी म्हारै मैं है पण वाणी कोनी। जै एक बूंद बाणी रस मिलज्या, तो म्हे म्हारै पोथ्यां रै समाज में "एकै" री थरपणा करां अर पुराणै नेम "पाठक रै गैल पोथी हो" नै बदल र "पोथी रै गैल पाठक" बणावां। सै पोथ्यां बारी बारी, सूं बारै आणी चाहिजै। नाम धारी बड़ी पोथ्यां री या इकलहट्टी इब नई चाल सकैली।"

मैं पूछ्यो "तो या चलसी कइयां। पाठक तो आपरै मन माफक ई तो पढैगो के ?"

पोथी बोली, 'क्यूं ! थारै समाज में आज "आम आदमी" री बातां करी जावै तो पोथ्यां रै समाज में आम पोथी रो ध्यान क्यूं नीं राख्यो जावै ? जे यो ध्यान नीं राख्यो गयो तो म्हारली श्रेणी रै समाज की कदर घटती जासी अर म्हे सदा ई दबीजती जावैला।"

मैं पडूत्तर दियो "यो तेरै मन रो भैम है। साहित्यिक पोथ्यां रै समाज रो संख्या बळ तो थांसूं ई बढै है।"

पोथी बोली "संख्या बळ सूं म्हानै कांई लाभ ? इण रो लाभ भी बडो-ड़ाई उठावै" वा आगै बोली "काल ई म्हारली आलमारी में एक पोथी समाजवाद री आई है। वा म्हारै उत्थान ताणी घणी-घणी वातां बतावै ही। म्हे सुण तो ली पण म्हारै कन्नै वाणी कोनी। मूक हां। तू पोथी-प्रेमी है जणा तन्नै म्हारलै मन री बात बताई है। तू एक पोथी री पीड़ा नै समझ अर म्हारै उद्धार ताणी क्यूं कर गणांई तेरो पोथी प्रेमी बाजणो सार्थक हुयसी।"

पोथी री बातां सुण-सुण'र मेरो तो माथो चकरावै लागो। आजकाल सैं रै मन में कुण्ठा अर दरद भर्‌यो पड़्यो है। यो कइयां निकळै ? इण विचारां में खोयोड़ी म्हे तो बिना पोथी लिया ई पाछो घरघां कानी बावड़गो।

एक आदमी एक दुकान पर आ र बोल्यो "सेठजी, क्यूं ईमानदारी वेचण ल्यायो हूं ओर तो पंली-पंली सस्तै भाव में वेचंली।' इब थोड़ी सी बची है जिकी नै भी वेवणो चाऊं हूं। पड़ी दुख दैवै है। मोल करल्यो।"

सेठजी बोल्या "भाया म्हारै तो लेवाळी कोनी और कठैई वेच। म्हे ई म्हारी ईमानदारी नै गैणै मेल र दुकान खोली है। म्हे लेर कांई करां। आजकाल ईमानदारी रा कोई गाहक कोनी आवै।

वो आदमी बोल्यो, "जणां तो आपां दोनूं एकई विचार धारा रा मिनख हां। थारो मत सो म्हारो मत। आपां एक ई पंथ रा पथिक हां।"

सेठजी पूछ्यो "भाया थारो कांई नाम है। "चोर" पडूत्तर आयो। थारो कांई नाम है सेठजी। "साहूकार" सेठजी बोल्या।

पुजारी संझ्या री आरती कर र भगवान रै आगै हाथ जोडर अरदास करी

"भगवान् मन्नै सेवा पूजा करतां बरस बीतगा। नित नेम सूं चार टेम आरती करू; टेम पर भोग रो ध्यान राखूं। आयोड़ा भगतां नै तेरै नाम पर चरणा मत दयूं। फेर भी तू मेरो संकट कोनी काटै। मेरै जीवन रो उद्धार कोनी करै। तू मेरी रिछ-पाळ कर, मेरी भूख भगा।"

भगवान री मूरत मांय सूं आवाज आई, "तू तो तेरो कार करै है। मेरी भगती कद करी। मेरी सेवा पूजा रै बदलै में तन्नै चढ़ावो—पुजापो मिळै अर मन्दिर रै 'बाढ़' नै तू ई भोगै। भगती रै तो तू नेड़ै ई को गया नीं। तू तो भोग पावै अर मोज उडावै। भगती री बात घणी उंडी है।"

भगवान री वाणी सुणर पुजारी रो भरम दूर हुयगो, आंख्यां खुलगी।

वासना मन सूं बतळावतीं कह्यो "अरै मनड़ा तू क्यूं तलछ-मळछ करै क्यूं पूजा पाठ में आप री टेम खोवै। मैं तन्नै छोड़र कोनो जावण की अर नी तू मन्नै निकाळ सकै। आपा तो एक साथै ही रहस्यां।"

मन बोल्यो "तेरै आयां पछै मैं तो चकरी होयरयो हूं। एक घड़ी रो चैन कोनी। तेरै आया पैली मैं मोद में मलार करतो। लोग लाड प्यार सूं देखता, लेवता अर खिलावता। सै नै लाडलो लागतो। मन्नै 'बाल भगवान' कै र बतळावता। तू आ'र मन्नै सै सूं खारो कर दियो। मेरो जमारो बिगाड़ दियो।"

वासना नै इतणी करड़ी बात सुणर रीस आयगी। वा झाळा मरती बोली "तन्नै जद कुण गिणै हो, सै टाबर कै'र छोड़ देवता। मेरै आया पछै तूं ऊंचो बडो बण्यो है। ससार रो सुख भोगणो तन्नै मैं सिखायो। लोगां रै अटगी लगार आगै आवणो तन्नै मैं सिखायो। तन्नै कांई-कांई गिणाऊं, तेरै जीवण नै एक चमकतो सितारो मैं बणायो। फेर भी तू ओळमो देवै। मेरै सू मेळ राखणै में ही सार है।"

ये बातां सुणर मन राजी कोनी हुयो। बो बोल्यो "तेरै ग्यान री मन्नै दरकार कोनी। मैं तो तेरै साथै भागतो भागतो आखतो हुयगो। इब तू मन्नै छोडर जा देली। मेरी अरदास मान।"

इब वासणा घणी झुंझळाई। मुखड़ो लाल हुयगो। नास फूलयाई, आंख्यां चस्याई, घणो डरावणो रूप हुयगो। आपरो आपो बखेरती वासना बोली "जै तू मन्नै बीच मैं छोडैगो तो मैं तन्नै श्राप दयूं कै तन्नै घर बार छोड़णो पडैलो, जगळां में भटकणो पड़ैलो, जै घर बार नीं छूटयो तो घर में तेरी कदर घट ज्यावैली। लोगां में मान सनमान नई रैवैलो। तू गूंगो हुयो पड्यो रैवैलो। रस हीणो जीवन तन्नै जीवणो पड़ैगो।"

इतणो कै र वासना चुप हुयगी। मन वासना रो कोप को झेल सक्यो नीं। बेहोसी आयगी। मन नै चेतो हुयो तो वासना नाच रो ही।



चेतना री खतावरणी

श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

पौ फाटी रो उजास
भौर रै सुपनां नै चचेड़ै,
बींरो गोदी मैं बैठो सूरज टाबर/चिड़कल्यां रै मूढ़ै बोलै—
सुख भर नींद पौढ़रिणयां !
अंधारै री खतावरणी छोड़'र/आगे आवो
अर थांरा नुंवा खाता खोल'र
दिन री वही मैं दो आंक बधावो ।

जूनो वहियां रा/पिण्ड सरावरण स्यूं—
यादां रा गुटका पीवरण स्यूं—
ऊगन्तै सूरज रै घोड़ां रो रासां/किया थमसी ?
सिंझ्या रै विखरियोड़ै सिन्दूर सूं
भोर रो मुट्ठी भर उजास किया मिलसी ?
सूरज रो अणदेखी करियां
तावड़ै रो जाजम नीं सांटीजै !
गरुड़-पुराण बांचणियां स्यूं
जलम रा नारेळ नीं वांटीजै,

नुंवी पीढ़ो रै होठां माथै/टांकीजियोड़ा आखर नुंवा अरथ चितेरै ।
पीढोयां रै आंतरै स्यूं/भासा री खंख झाड़
अर बींनै गैरो दिस्टो री/रगड़ स्यूं चिलकावै ।
कदास बुस बुसिजियोड़ा आखर/मूंढ़ो खोल नै कीं बोलै
तो जुगां रै गूंगे दरद री

कीं पिछाण तो हुवै ?
पोली धरती माथे नाठियोड़ा/गीतां रा निसांण तो हुवै ।

वखत री व्याकरण रा/अरथ बदलग्या ।
जूना पड़ियौड़ा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया/थाक'र सूयग्या ।
मानखे री चालख आंख नै/गेरा अरथ सूझै,
आभै रे आंतरै स्यूं/गेरा गोतो लगावै ।
वखत रै पाणी मैं तिरतो इतिहास
गाता खोर ज्यूं चिव्वो लगाय'र मांयलो वात काढ़ लावै ।
अर बींनै बंवतै पाणी मै गलाय'र/आपरा गाभा पैराय देवै ।

पण मसाणां/रो पाड़ोसी—/अध गावळो वखत,
हालतांई/नुवी जिन्दगी रा पगलियां/मांडणां चावै ।
अर बूढ़ो अंगरख्यां/झंगला-टोपी मैं समाणी चावै ।
वानै कैदा—
थांरै टांकी-टोकणा रीं घड़ाई पूरी हुई
अबै वखत रै टांचा क्यूं लगावो ?
थड़ो करतो चेतणा नै/पगलिया लेवण द्यो ।
गैलै बंवतै बदळाव रै/हुड़ी क्यूं लगावो ?
थांरी वांचीजियोड़ी पोथा नै/उथळता रीं
नुंवा आखरां रो पीड़ी क्यूं पकड़ो ?
जीवत सराध करणा व्है ता करज्यो ।
बना-घोड़ो रा गात अबै कठै ?
रळी रा गुटका पियां/वा सागी मिठास कठै ?

चेतणा मैं पोढ्यां रो आंतरो है,
अबे इनै कुण पाटै ?
सुरग विसाई लेवण हाळो व्यौपारो
जिन्दगी रा नुंवा थान किया सांटै ?
विखरतै मेळै माथे क्यूं फिगरावो ?
खिडतै खेल मैं क्यूं विलमावो ?
वखत रो एक ठोकर खाय'र
आ बोदी चौपाल ढे जासी ।
बोखी काण्या'र ढळता किस्सा रै जासी ।

आइतां

श्री करणीदान बारहठ

ओ म्हारा दादो-सा !
थानै बेरो है मन्नै/थारी धोळी दाड़ो स्यूं चिबखाण है ।
मन्नै ओ ठाव है क—
थानै थारो अगरखी पर गुमान है ।
पण, थानै आ जाणकारी होसी क/थे टूटेड़ै गातां री निसरणी हो,
अर म्हे उगतै सूरज री क्यारियां ।
पण थे चालता ही थारली फटकार म्हानै सुणाज्याओ हो ।
अर म्हे चुप्पी स्यूं थानै आदरां ।
ओ म्हारा बाप-सा !
थानै पतो कोनी पर म्हे जाणा हां—
क थारै माथै मैं घणकरा/सिद्धान्त सूख'र धोळा होग्या है !
अर थानै म्हारली काची कूंपळां/जहर-सी खारी लागै है;
थे लड़ो तो म्हारै के है ?
म्हे नीचो धूंड घाल लेस्यां,
पण साच तो दिन ऊंचो आंवतां ही/ऊभी हो जोसी ।
ओ म्हारी मां !
थानै तो म्हूं समझा लेस्यूं/गारगौर कर न साची बता देस्यूं ।
कीं आं बाच तूं स्याणी है ।
क्यूंके तूं तेरली घणी कोनी चलावै/तूं मेरी मां है ।

मनै बेरो है, तूं जद लड़े है
एक छोटी-सो कोथळी मै प्यार भी राखे है ।
पण देखलै, तेरै सामै आगली पीढी आवण आळो है ।
बा आंवतां ही कह देसी—
"घूंघटो उघाड़ न काच मैं देख/तू अबै बोदी होगी है ।"
पण म्हे तो तेरं कान मै कऊं हूं—
नई पोढ़ो र सूणापं नै आदरो,
फेर मौज करा । बेठो खाई/पोतो-पोतां ने खिलाई ।



बेच्योड़ो बुढ़ापो

कृष्ण कल्पित

इब थनै अचम्भो होता हूलो
आं कांटाळी छड़्यां जिस्सा हाथां मांय म्हैं थन पाळ्यो हो !

हिप्पीयाई सांझ में/आंगळी मांय सिगरेट दबायां
जद थूं किणी भायेलै सूं—
गर्ल फ्रेण्ड री चरचा करतो हुवे
अर म्हैं बीच में हो/म्हारै सूकेड़ै खेजड़े-जियालकै तन ने
धांसी री खीं-खीं सूं हिलातो हुयो,
थनै बेटो कैय बतळावूं ! " थू सोच—
म्हैं इणरो गळो घोटदूं !
इणरी चेरी नोंच दूं/म्हारा बढ़ायोड़ा नूवां सूं !
पण जद म्हैं बुढ़ापै नं/चार रिपियां मैं गिरवां राख

ढळतै सूरज रै साथै पाछी घरां बावड़ूं
तो थूं अपूठौ फिरतो/किणी मांग्योड़ै मूंडै सूं
म्हनैं बाप कैय'र बतळावै,
अर म्हैं बिना कीं म्यांनौ लीयां
थारो खुली हथाळी माथै राख देवूं/म्हारै बुढ़ापै री कीमत,
इनकार कोनी पावूं !
अर अकथ उदासी मैं
कठेई डूबतो तिरतो/मेसूस तो रवूं एक दरद !
पग रै अगूठै सूं/उतरता लेवड़ा नै
बीती जुंवानी री रातां समझ—
अणमणा सो घणो ताळ—
अबालो आंगणो कुचरतौ रवूं !!...



पीढी पीढी रो फरक

(डा० मनोहर शर्मा)

पुराणी पीढी आज भी है
अर पैली भी ही ।
नई पीढी पैली भी ही
अर आज भी है।
पैली/पीढी-पीढी रो आंतरो
शरीर में जरूर हो,/पण मन में नीं हो ।
आज यो आंतरो/शरीर साथै/मन पर भी पड़तो लागै है ।
पैली नई पीढी सोचती—

पुराणो पीढी/जितरै दिनां बैठी है; रैवै/उतरो ही लाभ है—
सिर पर भार नीं पड़ै/अर टावरपणो कायम रैवै ।
आज नई पीढी सोचै है--
पुराणी पीढी/वेगो सो अधिकार छोडै
तो आपां/गादी पर बैठां, मालक बणां ।
आज पुराणी पीढी सोचै है—
कदे छोरा/बण्यो-बणायो खेल नीं बिगाड़ देवै
पछै ये भी दुख पासी अर आपां भी दुख पास्यां ।
आज नई पीढी रै मन में/तेजी है
पुराणी पीढी रै मन में/शंका है ।
संसार रो यो सनातन नियम है—
समय पायर/पुराणी पीढी गादी छोड़ती रैवै
अर नई पीढी/उण पर बैठती रैवै ।
इणीज क्रम में नई पीढी
सदा सूं/पुराणी पीढी बणती रैवै है
अर समय रो चक्कर चालतो आवै है ।
फेर भी/इतरी बात नक्की है क
जितरी जल्दी नई पीढी/पुराणी पीढी रो गादी लेसी
उतरी ही बेगी/वा पुराणी पीढी में भरती हुसी ।
इसी हालत में
के आज री नई पीढी नें/या चीज मन्जूर है के
वा वेगो ही/बूढै--बाळकां री मंडळी में ।
भरती हुवै ?



काळी चतरी

श्री गिरधारीलाल मालव

एक साथ कांगारोळो होयो पैला पाड़ा मैं। एकाद जणा सूं पूछी तो तोल पड़घोक काकी चतरी कोई नै। हाथ को काम छोड़'र भाग्यो। काकी चतरी की झूंपड़ी पै पूग्यो; जद तांई तो सनेसो उठगो छो "राम नाम सत्त छै" की हांक दूरां सूं कोई बार सुणवा मैं आवै छी, दो-च्यार जणां का रोवा का फतूर मैं डूब जावै छी। वायरां तो ओर भी छी, पण छूला सळकावा का बळीतां सूं लेर गारा गोबर की अर कुए की ज्वार की सास गांव मैं चोखी छै फुण की कोराणी चालती वगत गांव का गरघाळा मैं जूत्यां न खोलै" की वातां मैं मगन छी। साळ मैं सूं दो छाणा अर पछचोकड़ा सूं एक लाफड़ी लेर मसाणा की आडो सूघो होग्यो।

रत्थी सळगा'र लोग झाळ कै उरै दूरा जा बैठ्या।

"लारै; देखां, थारै गोडे को भरां नं।"

काका रामा सूं दाजी गोपाल जी नै खी।

"भरूं छूं; काल ईं तो कापण सूं लायो छो।"

मालवी तम्बाकू भक मारै छै"—

ईं कै आगै। काको रामो फूल'र मंडको होग्यो।

चलम भरी अर दो-च्यार जणा ओर भी आण बैठ्या घूंघाड़ो सूंघ'र।

"चट्टाक"

सबको ध्यान रत्थी की आडी होग्यो। लाल लपटां मैं तणग्या उछट्या। एक मोटी लाकड़ी टूटी छी बीचा मैं सूं बळती-बळती। आग को रूप बकराळ होग्यो छो।

"हाई री चतरी। आज तू भी गी। गोपाल जी की खाडां मैं घसी आंख्यां नतरवा लाग गी।

'हूं" पैदा होवै जोनं मरणो ई पड़ै छै, दादा; अर उस्यां भी ऊमर पाक गी छी।" चलम को कस खांच'र काको रामो शास्त्रार्थ करतो-सो बोल्यो। तम्बाकू का धूंधाड़ा को असर भेजा पै होतो जारयो छो। "ऊमर कांई पाक गी छी रै रामा; दुख मनख्यां न खा जावै छै। झक्कर में कळ्या जस्यां फूल वा कै पहली ई सूख'र टाळ पैसूं नीचै खर जावै छै अस्यां ई मनख भी च्यारूं आडी को दुख भगततां-भगततां ज्वानी की बेळ सूं उतर भी न पावै क मौत का काळा अन्धेरा में गम जावै छै। जदी तो मरतलोक कहै छै ई ससार सूं।

"कांई ऊमर छी चतरी की? जाणै अबार दो दन पैली ई तो परण'र लायो छो बन्यो। घूंघटा की बादली में सूं पून्यूं को चन्दरमा बारै भी न झांक्यो छो नजर भर'र; "म्हारा राम जी", "म्हारा राम जी" करती कुररी का कुरळाटां नै सुणवा हाळां को काळज्यो कंपाद्यो। आंख्यां की गगा-जमना उफण'र एकमेक होवा लागी तो जेठ को बूढ़ो काळज्यो पोपल्यां मूंडा में न समायो। बोल्यो-घबरावै मत बावली, ज्यूंगो ज्यां ताईं कमा'र ख्वाऊंगो। दो रोटी दे दीजे जीमें ई सबर छै। खूटी थवांड़ी तो रैइगो झूंपड़ी की।"

आज सूं या झूंपड़ी थारी छै। म्हूं तो खेत, खलाण अर थारा म्हारा छपरां में राता काट ल्यूंगो।"

गोपाल जी नै सांस खायो अर रथी की आड़ी झांक'र देवा सूं की—
"दो च्यार लाकड़्यां ओर लगाण देवा।"
देवो सुणताई उठ्यो, ऊचो मूंडो कर'र दन देख्यो।
"तीसरो फोर आग्यो। स्याळा को दन कतनो वेगो भागै छै?
कणावत सांची ई छै आगण अर हांडी को आळण।"
गोपाल जी कहता जारया छा—

जेठ वूं लोगां का प्यारा अर लुगायां की सभा की खास चरचा। जटी कढ जाता हलबळो सो मांच जातो। भैरयो जोर सूं कहतो आघा गांव नै सुणार'र-" वेगी बलजे चतरीSSS! मूर्खा मत मार दीजे काल की नाई।" अर कांधा पै नाड़ा-जता-वळ धरतो बैलां नै टचकार देतो।

ल्याऊगोSSS, का खा रयो छो फूतळां नै।" इतनी ई जोर अर लाड सूं कोयल की कूक लोगां कै कानां पड़ती।

श्रद्धा अर प्रेम लोक-लाज का पड़दा न हटा दै छै। जेठ-वूं की मुरजाद बाप-बेटी का रूप में बदलगी। न बोलता तो काम भी कस्यां चालतो?

अचूंपं ई भैरूजी भी एक दन रोती डकराती चतरी नै छोड़'र ऊंई गेलं लाग्यो जीं सूं आज ताईं कोई भी पाछो न बावड़्यो। जेठ वूं'की की पांच बीघा जमीन

पै देवर नै सा खैर कब्जो श्राण जमायो क म्हा रै गोडै रै' अर बैठी-बैठी खा। झूंपड़ी एक बार फैरूं सूनी होगी।

पूण मीना का अछूता की पातल्यां रेवड़ी पै हाल तो ज्यूं की ज्यूं ई पड़ी छी क चतरी फाट्या छींतरा मैं लपटी एक छोटी सी पोटली बगल में दबायां झूंपड़ी मैं आण धसी अर कोई को गोबर, कोई को पाणी—परांडो करती, गाळा-गाळा की मज्यूरी करती प.पी पेट मैं भरती री, फूटा भाग नै झीकती री, गोरा-गदरया डील नै छी जाती री।

"देखतो मोड्या कांई देर छै, देखां ? दन आंथबा चाल्यो।" काको रामो चलम मैं कांकरो जमातो बोल्यो। मोड्यो बातां मैं रस ले रियो छो, पण उठणी पड़्यो।

"लोगां नै बदनाम न करयो दादा—जेठ बू' को ? एक घर मैं कस्यां रहता होगा।?" रामा नै मन मैं घणी देर सू घुमड़ती बात तम्बाकू का धूंवाड़ा मैं भकेल'र उगल दी।

"सतजुग का लोग छा रै भाया; आज तो कलजुग को बरतारो बरतरयो छै। आज कस्या जेठ-बू' अर कस्या ससरा-बू।" उड़ाबा लागता तो कांई तोप तरवार छी क वांक गोडै जीं सूं मारता कैबा हाळां ई ? एक राम का बांध्या लोग छा; जीं सूं पुजग्या, पुज।" गोपाल जी का गला की नसां केहतां-केहतां फूलगी।

"ल्यो।" काका रामा नै चलम आगै कर दी।

"ला पील्यां।"

"पण अब चालबा मैं ई तंत छै।" गोपाल जी दन की आडी झांक्या।

कोई नै छाणा को टूकड़ो अर कोई नै लकड़ी को छोडो रत्थी मैं उलाळ्यो अर गांव की गेली लागग्या। सूरज सारा दन को हारयो थाक्यो राती करणां सूं संसार पै करणां बरसातो मां की झोल्यां मैं बसराम लेबा जारयो छो। काकी चतरी भी उमर भर चालतां-चासतां थाक'र झाळां की राती पालकी मैं बैठी सरगां मैं बसराम करबा जारी छी। सूरज तो तड़कै फेरूं दुख का काला अन्धेरा ई चीर'र सूनां का रथ पै आवैगो, पण काकी चतरी कदी नै आवै; ऊं की याद आवैगी।



नंदी पुराण रौ एक प्रकरण

श्री जानकीप्रसाद पुरोहित

हिमाळै पर आज सदा सिवजी घणा चिन्ता-मग्न बैठ्या हा। नंदी नै भांग घोटणै खातर एक भलेरी सी लोढो ल्यावण सारु कासीजी भेज्यो हो, पण दसां दिन नेड़ा हुवण मैं आया, नंदी पाछो नीं बावड़्यो।

घणी बेचेनी सूं महादेवजी हिमाळै री ऊंची चोट्यां पर चढ़-चढ़ दूर-दूर तांणी निजर गेरै हा अर नंदी रो मारग देखै हा। सदा सिवजी रै मन मैं अनेक प्रकार री आसंकावां उठै ही—'भारत मैं जगां-जगां चुनाव हुय रैया हा। सायद वो भी ई चुनाव-संग्राम मैं जुट पड़्यो हुवै। सदा सूं कासीजी मैं रैवण रै कारण उठै री सीट रै किणी उम्मीदवार रो नंदी चुनाव-एजेण्ट भी बण सकै है। इसी हाळत मैं तो उण रो पाछो आवणो वेगो ही नीं बण सकै।

आखर पशुपतिनाथ आपरै आसण पै आया तो देख्यो कै बठै नंदी खुब उदास मुद्रा मैं बैठ्यो है। भोळानाथ बावा वेगासा नंदी रै नेड़ै आया अर उण री पीठ पै हाथ फेर्‌यो, पण नंदी न तो सदा री भांत खड़्यो हुयो अर न मूंडै सूं ई कीं बोल्यो।

कैलासपति सोच्यो क नदी शीत लहर रो सतायोड़ो हुय सकै है। ईं कारण आप धूणै मैं घणी सारी लकड़ियां गेरी अर धक्कड़ बोभ कर्‌यो। पछै आप बोल्या—"अरै नंदी, तूं इतरा दिन कठै रैयो ? तूं मारग भूल गयो क कोई तनै बांध लियो ?"

नंदी नाड़ हलाई पण चुप रैयो। सदासिव सोच्यो क नंदी नें कई दिनां सूं भांग पीवण नै नीं मिली हुवैली, ईं कारण ईं री इसी हालत है। आप फरमायो "नंदी ! खड़्यो हो अर भलेरी सी भांग घोट।"

नंदी देख्यो क अबै भी जे वो चुप रैयो तो के ठाह बावाजी समाधि लगायर

बैठ जावैला अर पछै तो बस पछै ई है। नदी बोल्यो—म्हाराज ! म्हे तो घणी ही भांग पी चुक्यो" बाबा जी बोल्या—"अरे कठै ?" नंदी उत्तर दियो—"बाबा जी ! आज एक कासीजी री ही बात नीं है, सगळै मुलक मैं चुनाव रो नसो बुरी तरियां छायोड़ो है। लोग खावणो-पीवणो भूलर रात-दिन चुनाव रै नसै मैं भरम्या फिरै है। अब कासीजी मैं आपरै मन्दर मैं एक भी भगत नजर नीं आवै। अब तो नई किस्म रा मन्दर बणग्या, जिणां पर नाना प्रकार रा रंग-बिरंगा झंडा लाग्योड़ा है। कासी जी रो ओ हाल देख'र पैली तो मनैं घणी प्रसन्नता हुई क ईं पुन्न धाम रो प्रत्येक मकान बाबाजी रो मन्दर बण चुक्यो है, पण ईं मन्दरां रै मांय गयां असली भेद खुल्यो। जीव पैं बीती सो जीव ही जाणै है। आज आपरा सगळा मन्दर सूना पड़्या है। आप इतरै दिनां कासी मैं बिराज्या, पण सो-पचास ई बोट हाथ मैं नीं कर सक्या। आज तो भगतां नैं बस बोट ही चाहिजै। और तो और, आपरै खुद रै परिवार रै लोगां रा नांव भी कासीजी री वोटर लिस्ट मैं आप नीं लिखवाया ! अब पुराणो जमानो नीं है क आप कठै भी बिराजो अर भगत लोग दूर बैठ्या आपरी आराधना करता रैवै। आप आये दिन धूणो बदळता रैवो हो। इसी हालत में किणी भी एक क्षेत्र मैं आपरो पूरो प्रभाव नीं जम पावै।

सदा सिवजी नदी री बातां सुण-सुण'र मन मैं मुळकै हा। नंदी कैंवतो रैयो—बाबाजी, अब आपरी पुराणी कासी एक दम बदळगी है। अब बठै 'बम-बम री जगां 'बोट-बोट' री धुन गूंजै है। संख री ठौड़ लाउडस्पीकर गूंजै है। अब देवतावां री सवारी न निकळर कासीजी मैं नेतावां रा जुलूस निकळै है। पैली गंगाजी रै तट पर लोग त्रिकाल सन्ध्या मैं लीन रैंवता। अबै बठै चुनाव सभावां री भीड़ लागी रैवै है। अब लोग गंगाजी रै पवित्र जळ नै छोडर चांदी री गंगा मैं डूबणै री मनस्या राखै है।"

नंदी आगै भी बोलणो चावै हो, पण सदा सिव उण नैं बीच मैं टोक'र बोल्या—"ई सारी स्थिति पर कदे फुरसत सूं विचार करस्यां। अब तो तूं खड़्यो हो अर विजया री त्यारी कर।"



राजस्थानी व्रत कथा अर लोक-जीवन

डा० लक्ष्मी कमल

लोक-साहित्य लोक री अभिव्यक्ति रो सदा सूं माध्यम रयो है। लोक-साहित्य नैं आपां अेक आदर्श री संज्ञा दे सकां हां, जिण में लोक मानस रो असली रूप प्रति बिंबित हो'र आपणै सामैं आवै। उण में समाज री स्वतन्त्र अभिव्यक्ति री आत्म-प्रभा आलोकित रैवै। इण पर किणी रो बंधण या आंगस नहीं रैवै। इण सूं जनजीवन रो इतिहास इणमैं सर्वथा सीधो, स्पष्ट निर्विकार अर विशुद्ध बण्यो रैवै। लोक-साहित्य रूपी सहज अर सुगम पंथ सूं जात्रा करता आपां प्राचीन समाज तक पूग'र परम्परागत संस्कृति अर सभ्यता रो ज्ञान सहजां ही प्राप्त कर सकां। धार्मिक अर सांस्कृतिक इतिहास नैं खुद मैं अखूट बणायां राखण आळो लोक-साहित्य समाज री अणमोल धरोहर है। ओ लोक जीवण सूं उद्भूत है, अर लोक जीवन सूं सदा आपरो अटूट अर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध बणायां राखै। जद सूं मिनख आपरी अनुभूतियां सूं अभिव्यक्ति करण री कळा रो ज्ञान अर्जित करयो, सृष्टि रा आरम्भ रा उण अैतिया-सिक अणजाण क्षण सूं ओ सम्बन्ध लगातार चाल्यो आरयो है, अर उणी पुळ री प्रेरणा सूं समाज आज री इण चरम विकास तांई पूग्यो है।

किणी भी जाति रो उत्कर्ष अर अपकर्ष उण रा सामाजिक जीवन माथै निर्भर है। भावा सूं भरयोड़ी जिन्दादिली सूं जीवण आळी जाति ही सदा उत्कर्ष नैं प्राप्त करै। जाति री उन्नति या अवनति रो पतो उण रा पर्व, उच्छव अर तिवा-रां सूं, आनुष्ठानिक अर धार्मिक कर्मां अर उणां सूं सम्बन्धित लोक प्रचलित साहित्य सूं लगायो जा सकै है। भारत सदा सूं ही धर्म-प्राण देश रियो है। जद-जद भी धर्म पर आफत आई राजस्थान रा वासी वीर अर अठा री वीराङ्गणावां धरम री रक्षा खातर आपरी बलि देवण मैं संकोच कोनी करयो। यो ही कारण है कै अठारा लोक साहित्य रो अणु अणु धार्मिक जीवन रा रंग मैं रंग्याड़ो है। लोक गाथा, लोक कथा, लोक गीत, कहावतां, मुहावरा, पहेलियां आदि लोक साहित्य री विविध विधावां मैं धर्म री

छाप लाग्योड़ी दिखाई देवै है। ओ ही कारण है कै अठारा लोक साहित्य रो कण-कण धार्मिक जीवन रा रंग मैं रग्योड़ो है। व्रत कथावां रो लोक-साहित्य मैं घणो ऊंचो स्थान है। इण मैं जीवन री धार्मिक, नैतिक अर पारिवारिक मान्यतावां रा उजळा चितराम मिळै। परम्परा सूं चालतो आयोड़ो कथावां रो यो रूप लोक-जीवन सूं निसर'र वीं नै सदा सूं ही प्रभावित करतो आयो है।

व्रत कथावां रै सरक्षण, संवर्द्धन रो सगळो श्रेय अठा रा नारी समाज नै है। व्रत कथा रो वाङ्मय अक्षरानुबन्ध सूं मुक्त अर महिलावां रा हृदय मैं फळतो-फूलतो उणां रा कोमळ कठां सूं प्रवाहित होतो रैवै है। आपरा हिवड़ा मैं कोरयोड़ा, परम्परागत संस्कारां सू परस्योड़ा इण वाङ्मय सूं जुगां-जुगां सूं ग्रहणी, घरधराणी या घर री लछमी कहलावण हाळी भारतीय घरेलू जीवन री आत्मा नारी आपरी वेदना हरख, विषाद, आनन्द, उद्वेग, उछाह, संजोग विजोग, प्रताड़ना, घृणा आदि सूं गुंथ्योड़ा भावां नै वाचिक अभिगान रै आसरै जन-जन तक पुगाती रेवै है। सहन शक्ति, स्नेह, सेवा, नियम अर तप री मूरत नारी धरम अर धरम कथावां सूं प्राप्त संबल रै माध्यम सूं ही विश्व री क्लान्ति अर हलचल सूं हार्‌योड़ा अर थाक्योड़ा प्राणियां नै स्वस्नेह री सीतल छाया मैं विश्राम देवै है।

व्रत कथावां नै परम्परा सूं सुणती सुणाती नारी आत्म संयम अर साधना सू आत्म शोधन करती आपरा ऊपर बतायोड़ा गुणां नै सुरक्षित राखतां आपणी पारिवारिक कड़ियां नैं ज्यों री त्यों बणायां राखवा मैं समर्थ हो री है। व्रत वीं री साधना रा देवळ है अर व्रत कथावां है वांरा पंगथिया। व्रत कथावां सैंग संसार री मंगळ कामनावां सूं भर्‌योड़ा मंगळ मंत्र है जिणांरै आसरै वा आपरी, आपरा धणी, भाई-भतीजा, सासू, सुसरा, दधोराणी, नणद, पडोसण अर सैंग संसार रा कल्याण री कामनावां करती, खुद उणां रा कल्याण कार्य मैं प्रवृत्त हो'र एक आदर्श उपस्थित करै है। टाबरियां नैं शुरू सूं ई व्रत राखवा, व्रत री कथावां सुणावां अर उणां मैं निहित आदर्शां नैं आपरा जीवन मैं उतारवा री शिक्षा दी जावै है। आज जद कै सैंग जगत आपसी ईर्षा द्वेष, री झाळां मैं झुळसतो जारियो है, विश्व-कल्याण री भरी पूरी यां कथावां रो महत्त्व स्पष्ट हो जावै है। व्रत रो सकल्प करणहाळी हर नारी यां नै आपरा जीवन रो परम उद्देश्य मान'र ग्रहण करै अर पाळै है। व्यष्टि ही समष्टि री निर्माण करण हाळी है—इणसूं ही निजू रूप सूं हर नारी द्वारा ग्रहण करीगी भावनावां सूं सैंग समाज री मनोवृत्ति पर प्रभाव पड़णो जरूरी है।

व्रत कथावां रो पसारो लोक निर्मात्री नारी समाज रै आंतरिक अर बारळा जीवन पर अतरो अधिक है कै सैंग क्रियाकलाप वां कथावां रै आसरै प्रेरणात्मक शक्ति रो लाभ करै है।

इण लोक कथावां री लोकमानव पर धनात्मक प्रभाव पड़ै है। कथावां किणी भी वस्तु रा महत्व अर गुण नें स्पष्ट रूप सूं समझावण रो सुगम अर सरल माध्यम है, इण वास्तै धार्मिक लोक कथावां, लोक-जीवन रा धार्मिक पक्ष नें घणो सबल बणा देवै है, व्रत नियमां में उणां री आस्था नें और भी गाढी कर देवै है। लोक मानव धर्म-भीरू हुवै है, जद ऊ कथावां में व्रत, थुंवार अर अनुष्ठानां रा दोई रूप साफ देखै है। नियमित रूप सूं वांरो पालन करणहाळा मनख अन्त में शुभ-फळ रा अधिकारी हुवै है, अर उणांरै प्रति अनास्था राखण हाळा या वीं में प्रमाद करण हाळा दुःख रा भागी हुवै है, तो लोक-मानव कं'णी रै मासरै सैंग बातां नें समझ'र संकट मोल कोनें लेणो चावै। ऊ वां ही बातां नें करै है—जिणरै कारण बी नै कष्ट उठाणो पड़ै।

व्रत कथावां धरम री प्रबल समर्थक री है। सरधा, भगती अर पूजा री विराट भावना अठै सुरक्षित है। धरम-प्राण जन—मानस नें आपणी कानी आकर्षित करण में धार्मिक भावनावां सूं अनुप्राणित होवण रै कारण समाज में व्रतां नें अपणायो जावै है व्रत री पूर्ति सारू व्रत कथावां रो सुणणो अर कैणो आवश्यक अंग है। इण वास्तै सहज रूप सूं ही यां कथावां रो लोक मानस सूं गहरो सम्बन्ध स्थापित हो जावै है। व्रत री पूर्ति यां कथावां नें सुणवा रै साथ जुड़ी थकी है। धार्मिक अनुष्ठानां सूं सम्बद्ध थै कथावां जन-जीवन में धार्मिकता री भावना उंदावै है। जप, तप, पूजा, व्रत, दान अर नेम आदि इणां में मुख्य हैं। अै कथावां लोक-मानव रै सागै दीगां स्वजनां री सुरक्षा रा मंत्र रै रूप में आवै है। इण व्रतकथावां में किणी नें किणी अनुष्ठान री योजना भी होवै है। यां अनुष्ठानां रो रूप घरेलू अर लोक-प्रचलित हुवै है।

व्रतकथावां धार्मिक होवण सूं आध्यात्मिक सिखावण सूं भरयोड़ी हुवै है। यां कथावां में भगवान नें सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक बतायो गियो है। वै आपणां हर काम पर आपरी नजर राखै है. ई सूं यो भय आपांनें सदा बुराइयां सूं बचातो रैवै है। कथावां में वर्णित कर्म-फळ रा विश्वास नें लोक-मानस में दृढ बणावण हाळी कथावां आपणी संस्कृति री आधार भूत शिला है। अलौकिक शक्ति रो अभिज्ञान जठै एक कांनी भय नें जनम देवै है, उठैई श्रद्धा रो आरम्भ भी वीं सूं ई होवै है। श्रद्धा री या भावना पूजा, विनय, आत्मनिवेदन अर दैन्य रा रूप में लोक कथावां में व्यक्त हुई है। विनम्र आतिथ्य, समर्पण, मनोती, बली, आदि देवतावां नें दी जावण हाळी रिश्वत रै रूप में सदा मानव री भावना परगट होती रैवै है।

भगवन्नाम रा जाप री महिमा रो मानव-जीवन में विशेष स्थान है। इणरै आधार पर मनख नें भगवान रो संरक्षण मिल जावै है। मनख इण कथावां रै माध्यम सूं आश्वस्त हो'र आपरो जीवन सुखी बणावण रो प्रयत्न करै है। ऊ मुक्ति प्राप्त करण रा प्रयास में आपरा जीवन में सभी आवश्यक शुभ कर्मां नें ही स्थान

देवै है।

व्रत कथावां नैतिकता री समर्थक है। नैतिकता रा सैंग सांचा आदर्श इणां मैं अंकित है। अै कथावां स्त्री समाज मैं नैतिकता री संचार अर संरक्षण करवा मैं सहायक हुवै है। पण सागै ही उणा रा ज्ञान री बढोतरी करवा अर इण तरां सूं वां नै संस्कृत अर सुशिक्षित बणावण मैं भी सहायक हुवै है। इणां नै आपां लोक व्यवहार सारू थरप्योड़ा नैतिक आचार विचारां री संज्ञा दे सकां हां। इणा री उपदेशात्मक धार्मिक चरित्र लोक मानव नै समय-समय पर कर्तव्य-पथ पर आगै बढावण मैं सहायक सिद्ध हुवै है अर पथ भ्रष्ट होवण सूं बचावै है। अै कथावां सामाजिक अर व्यावहारिक संहितां री रूप धारण कर चुकी है। जीवनोपयोगी तथ्यां नैं इण कहाणियां रै आसरै लोक मैं प्रस्तुत करयो जावै है।

इस देश में आचार नैं सैंग प्रकार रा तपां री मूळ कह्यो गियो है। ओ परम धर्म है। व्रतकथावां मैं तप, त्याग, सेवा, भगती आदि आचारां रा स्पष्ट दरसण हुवै है। आज रा युग मैं मनखां नै शाश्वत धार्मिक, अर नैतिक आदर्शां कांनीं उन्मुख करावण मैं आचार ही सफळ हो सकै है। व्रत कथावां मैं नारियां आपरै हिवड़ै री द्रवणशीलता नैं पूजा रै माध्यम सूं उदात्तीकृत करी है। वैं विश्व री सैंग चर अचर वस्तुवां मैं आपणी ही आतमा रा दरसण कर'र एक घणा ऊंचा आदर्श री स्थापना करी है। वैं अणु-अणु मैं वीं दिव्य शक्ति रा दरसण कीधा है ज्यो इण ब्रह्मांड री नियन्त्रण कर री है। 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' री भावणा ई इण सृष्टि रा अस्तित्व री कारण है आज हिंसा अर प्रताड़न सूं भरया पूरा जीवन मैं इणरी घणी जरूरत है।

यमनियमां री पालन समाज रा अस्तित्व सारू आवश्यक है। अै धरम रा मुख्य लक्षण है। यमां री सम्बन्ध आतमा अर मन सूं हुवै है। इणां री सम्बन्ध मनख री सागै आभ्यंतरीय है अर नियमां री सम्बन्ध बारळा आचारां सूं। अहिंसा सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अर अपरिग्रह अे यम रा पांच भेद हैं। अर शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय अर ईश्वर प्रणिधान नियमां रै अन्तर्गत आवै है।

कथावां मैं नियम पालन पर घणो जोर दियो जावै है। अनियमित जीवन सफल कोनैं हुवै। प्रतिदिन री छोटी-छोटी वातां री पालन कर'र ही इण नियमां नैं सीख्यो जा सकै है। इणां रो जीवन पर घणो प्रभाव पडै है। राम लछमण री कथा, गरीब ब्राह्मण री कथा, अज्ञानीं मां री कथा, निर्धन डोकरी री वातां, विधवा ब्राह्मणी री कथा, कथा सुणवा हाळी डोकरी री कथा, बहुभोजी ब्राह्मण री कथा, गजानन तुलछां री वात, पीपळ री कथावां, पथवारो री कथावां, कार्तिक नितनेम री कथावां और वैशाख नितनेम री कथावां, नेम पालवा री विशेष समर्थन करै है। नितनेम रै पालण सूं मनख मैं अर परिणाम-स्वरूप समाज मैं दृढ निष्ठा, अर श्रद्धा री

भावना जागै। मनख, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्यादि विकारां रो दमन करण में समर्थ हो जावै अर इणां रो दमन कर नै ऊ समाज री सेवा में वत्यो सफल हो सकै है।

व्रतकथावां में धर्म सूं जुड्योड़ा वां सामाजिक परम्परावां री सुरक्षा करी गी है जिणरो नितप्रत रा जीवन सूं घणो नेड़ो सम्बन्ध है। इण परम्परावां नें सीखवा री आवश्यकता कोनें रेवै। बेटी मां कनें सूं अर बहू अपनी सास कनें सूं आपे ही जांण जावै है। यो एक जीवन रो क्रम ही हो जावै है। व्रत धारण करवा री प्रेरणा टाबरां नै छोटी ऊमर में ही कथा सुणवां सूं मिल जावै है और आरम्भ सूं ई टाबर आपरा जीवन नें धार्मिक रूप देवण में सफळ हो जावै है।

दान रा महत्त्व रो भी व्रतकथावां में वर्णन आवै है। विद्वानां अर ब्राह्मणां रो कथावां में सम्मान करवा रो वर्णन मिळै है। विद्वानां अर ब्राह्मणां री सैंग प्रकार री आवश्यकतावां री पूर्ति कर'र समाज वांनें विद्यादान अर धर्म प्रचार में ही आपरो समय लगावण रो ओसर देवै है। इण सूं समाज री रूडी व्यवस्था रो पतो लागै है। व्रतकथावां इण तरह री व्यवस्था नें सदा वणाई राखण में योग देवती रेवै है। विद्वानां अर ब्राह्मणां नै ही नहीं, रोगी, अपंग, दीनदुखी, मनखां नें भी अन्न वस्त्रां रो दान कर'र समाज में वर्ग भेद मिटावण री सीख अै कथावां देवै है। कथा श्रवण सूं दान री प्रवृत्ति जागै है। दान री प्रवृत्ति रो अरथ है समाज में अभाव ग्रस्त मनखां रा अभाव री पूर्ति अर सगळां नै बराबर रो स्तर देवणो। इण दृष्टि सूं व्रतकथावां समाजवाद री पोषक है।

व्रत कथाओं रा समाज में ऊंच-नीच नै कोई स्थान कोनें दियो जावै। समाज में ऊंच-नीच री मान्यतावां री स्थापना धंधा रै अनुसार करी गी है। पण इण कथावां में कोई भी धंधा नें हेठो ई कोनें मान्यो गियो तो धंधा करवा वाळा नै हेठा समझण रो सवाल ई कोनें पैदा होवै। इणां में सीताजी खुद आपरै हाथां रसोई वणाती अर पणघट सूं पाणी लाती दीखै है। तो सूरज भगवान री राणी रेणादे भी घर गृहस्थी रा सैंग काम करै है। सूरजनारायण स्वयं कदेई मोची रो रुजगार अपणावै है तो कदेई मणिहार रो अर मोचड़्यां अर चूड़्यां वेचता फिरै है। राणी अर महतराणी रा टाबर टींगरा में अणहित्रक व्याव सम्बन्ध हो जावै है। महतर रा कुळ में जनमियोड़ा भगत रो परसाद राणी ग्रहण करै अर वा उणरा सतसंग में भी जावै है। वैसाख री कहाणी में ब्राह्मण री विधवा बहन चमार रा घर रो आतिथ्य ग्रहण करै। अै कथावां ज्ञान अर भगती रै आमरै शूद्र नै भी ब्राह्मण रै बरोबर स्थान दिरावै है।

वर्ण व्यवस्था नै मजबूत बणायां राखण में धार्मिक साहित्य रो योग रियो है। समाज री सुव्यवस्था में सहायता सारू ही वर्णन-व्यवस्था नै अै कथावां प्रेरणा देवै

है विच्छिन्नता री प्रवृत्ति नें इणसूं कोई संबल कोनै मिले। इण कथावां सूं ब्राह्मण नें विद्या व्यसनी बणवा मैं, क्षत्रिय नें प्रजा री रक्षा मैं सदा रत रेवण मैं अर वैश्य अर शूद्र नें भी समाज री सेवा चेतो लगा'र करतो रैवण रो सन्देशो देवै है। वै यां नें सतनिष्ठ, धरमनिष्ठ, आण रा पक्का अर आदर्श मनख बणावण मैं सहायता देवै है। राम अर कृष्ण नें लोक-मानस आपणी ज्यों ही साधारण मनख मान'र चाले है। वै वैभवशाली हो सकै है, पण उणारो वैभव जन-सेवा मैं आड बण'र ऊभो कोनै हुवै। उणारो व्यक्तित्व परजा सारूं तिरोहित हो गियो है।

अै कथावां भारतीय संस्कृति री सजीव मूरता है। इणांमैं आपांरी संस्कृति अर सभ्यता रो इतिहास गूंथ्योड़ो है। अै कथावां लोक-जीवन री न्यारी-न्यारी धारावां नें कथा अर कलपनां रा धागां मैं पिरो'र परम्परागत ज्ञान नें अक्षुण्ण राख री है। श्रद्धा, भगती पूजा री विराट भावना अठै सुरक्षित है। धरम प्राण जनमानस नें आपणी कानी आकर्षित करवा मैं धार्मिक भावनावां सूं ओतप्रोत अै व्रतकथावां घणी समरथ है—इणसूं ई सैंग भारत मैं थोड़ा घणा रूपान्तर री सारी अै कथावां विद्यमान है। किणी भी राष्ट्र री सामाजिक, सांस्कृतिक अर राजनीतिक एकता नें बणायां राखण मैं इणारो बेसी महत्व है। न्यारी-न्यारी बोलियां, भाषावां अर परम्परावांहाळा इण देश री जनता नें एक सूत मैं बांध्या राखण मैं इण कथावां रो घणो योग रियो है।

पति-पत्नी भाई-बहन, अर परिवार रा दूजा मनखां रा परस्पर रा नेह-सम्बन्धां सूं भरयोडी इण कहानियां मैं आपां नें एक आदर्श रा दरसण हुवै है। इणां मैं वर्णित दाम्पत्य प्रेम एक आध्यात्मिक प्रेम रै रूप मैं आपणै सामैं आयो है। करवा चौथ री कहाणी मैं दाम्पत्य प्रेम रो अनूठो उदाहरण राख्यो गियो है। भाई-दूज या नाग पांचम री कहाणी, अर राखी री कहाणी मैं भाई-बैनां रा नेह री झांकी मिळै है। सकट-हरणी चौथ अर होई री कहाणियां मैं मायड़ रो प्रेम साकार हो'र सामैं आवै है।

कोई-कोई कथावां संयुक्त परिवार री प्रणाली रो समर्थन करै है, जो इण देश सारूं सदा अनुकूल री है अर सुखी पारिवारिक जीवन रो मूळ री है।

गुरुजनां सारूं आदर अर मान अर छोटी उमर हाळा सारूं स्नेह अर सौहार्द्र री भावना री अै कथावां स्रोत है।

मैक्सिम गोर्की री इण मान्यता रै अनुसार कै लोक-साहित्य सूं अणजाण कोई भी लेखक एक जोगो लेखक कोनी बण सकै—आ बात स्पष्ट है कै आं व्रत-कथावां मैं मिलण आळा सांस्कृतिक इतिहास रो आपणा सांस्कृतिक जीवन पर भी अवसकर असर पड़ै है। जो भी आछा लेखक या साहित्यकार आजरा जुग मैं आपणै सामै है—वै लोक-साहित्य मैं मिलण आळी इणतरां री सांस्कृतिक धरोहर सूं अवसकर लाभ

लीधो है। वर्तमान में क्रांति लावण सारू अतीत री जाणकारी जरूरी है अर वा लोक-साहित्य री अंग भूत इण व्रतकथावां सूं मिल सकै है।

कथावां री मौखिक परम्परा नारी समाज री शिक्षा रो कारण है। साक्षर नैं होणै पर भी आध्यात्मिक शिक्षा री दृष्टि सूं नारियां इण कथावां नै सुणवां सूं ही ज्ञानी वण जावै है। व्रतकथावां ज्ञान रो अमृत-घट है, अैं समाज नैं जीवन दायित देवै है।

इणमें कोई संदेह कोनी कै पुराणा धार्मिक अंधविश्वास अर रूढ़ीवाद रा अज्ञान सूं भरयोड़ा तथ्य भी इण व्रत कथावां में मिल जावै है, पण उंणारो चित्रण कथा में सद्‌वृत्तियां रो पोषण ही करै है। इणांसूं धरम में विश्वास राखण आळा समाज पर इणारो कोई बुरो असर भी पड़तो होसी—बात नैं सोचणी चाहिजै।

अै कहाणियां आपणां जातीय जीवन रो प्रमुख अंग है। इणां में आपणी परम्परावां, आपणा शास्त्रां रो सार अर आपणी संस्कृति रा विकास रो इतिहास गुंथ्योड़ो है। अै आपणा लोक जीवन री सांची झांकी है। लोकजीवन सूं नीसर'र लोक जीवन में खुद नै विलीन कर देणो इणां रो धर्म है। लोक जीवन रा निर्माण में इण भांत अै कथावां अंदरूनी अर वाहरी दोनां रूपां में आपणो पूरो योग देवती दिखायी देवै है।



अगन-चालीसा

(सामवेदोक्त अग्नि स्तुति)

अनुवादक-डा० ब्रजमोहन जावलिया

अगनदेव आवो अठै, भोग करो हवि भोग ।
वर्हिष् में होता समां, थैं वंदण रै जोग ।।१।।

अनळदेव वड़ आतमा, सगळा जगन स्विकार ।
जगनां मैं अगनी समां, मनखां मन संचार ।।२।।

दूतां वरणां आपनै, विश्ववेद होतार ।
जगत रचेता हे प्रभो, अगजग रा आधार ।।३।।

चमचमाट चमको करो, शुक्राळा भळ भांत ।
द्रविणाळा द्रव दान कर, दारण कर अघरात ।।४।।

पाहुण सम पावक थनैं, ध्यावां नम-नम सीस ।
वेदां विघन विदार नैं, काटो जम री टीस ।।५।।

बैरी आया पाहुणा, दळ मंढ मूझ दुवारि ।
धन-बळ बोरज दान दै, हरि अरि घड़ां विदारि ।।६।।

साम्रथ साँई अनळ थूं, ग्यान गुणां आगार ।
जग भाषा सगळी जपूं, अर्चा करूं उचार ।।७।।

टाबर वत् ध्यावै सदा, यो मन तो भगवान ।
सत्त ग्यांन आतम धरयां, पूजां घण-घण मान ।।८।।

मंथण कर झळहळ अनळ, पोपक थारो रूप ।
पावै ग्यान तिरलोकपत, परजापत वड़ भूप ।।९।।

उजळ रूप अविनस्वरां, काटो कस्ट किसाण ।
घर मख दै विस्वानरां, ग्यानवान विदवान ।।१०।।

बळ कारण मानस सवै, पावक करै प्रणाम ।
बळ सूं वैरी भाजसी, जासी जम रै धाम ।।११।।

रै उजियाळा धन धणी, दाता दूत समान ।
जग जगनो भारी करयो, समरां अमर किसान ।।१२।।

हे अगनी भगिनी समां, सतवाणी हिय धार ।
हव करणो भव वाणियां, पूगे तूझ पसार ।।१३।।

हे अगनो खिण पुळ घड़ी, सांझ पड़यां परभात ।
धो करमा जुत जोत कर, प्रणमां सगळी रात ।।१४।।

रेत हेत थां रुद जो, आज्यो हिवड़ै वीच ।
आस पूर परकास कर, भैं हर भगती सींच ।।१५।।

आतम तम नैं टाळज्यो, हे लपटांळा नाथ ।
अधरां अध्वर धारज्यो, मरुतां भर-भर बाथ ।।१६।।

हे वैसांनर विस्व नर, वंदण तूझ करंत ।
विघन विदारण अध्वरां. ग्यान भाण प्रकटंत ।।१७।।

जळ-थळ नभ व्यापक अनळ, ओखद रस री प्राण ।
गरभगतां नखतां-रता, ध्याऊं धारक जाण ।।१८।।

झाळा हाला देवता, झळहळ मन परकास ।
धा करमां मैं लावज्यो, अरकां हूंत उजास ।।१९।।

लोक-लोक लोकां परै, देखां दिणयर भूप ।
आदकाळ सूं भासरयो, पावक थारो रूप ।।२०।।

सगो सहायक जगन मैं, बळहाळो अघमांण ।
गोपत नैं तिरलोक पत, अमर अगन नैं जाण ।।२१।।

हे अगनी बरा अग्रणी, दुष्टां दळ खरधार।
बांध राख जम जेवड़ी, जनधन री दातार ॥२२॥

वैसांनर वर दै सदा, रहां सुखी सम्पन्न।
देव-मनां थैं ओतरो, मोटो रचां जगन्न ॥२३॥

अघ मरषरा जग धाररगी, किल्विष विष कर दूर।
प्रखर प्रहारां भांजिजे, पापी पाप करूर ॥२४॥

अश्ववती अै इद्रियां, ग्यानो साधू सूर।
ग्यान करम धारण करै, नैचो ह्वै भरपूर ॥२५॥

विश्पत आहुत उजियाळी, सबरै सेवरा जोग।
मनख भजे मन मान सूं, मन धारयां संतोख ॥२६॥

सुन्दर कूं धड़ सूर सम, उत्तम वाहरा आप।
थावर जंगम सै जगां, सुख पावै मन धाप ॥२७॥

सुरा तणो परगट करो, जातवेद छंद ग्यान।
अन जेड़ो घरा सेवरणो, हे प्राणां री प्राण ॥२८॥

सरवरा कर अस्तुति अगन, पावक पाप विदोर।
गिर भंगीरा प्रगट कर, गोपवनां करतार ॥२९॥

वाजपती कवि अनळ तूं, दै दाता नै दान।
हवि भोगा उपभोग कर, दै रत्नां रो खान ॥३०॥

जातवेद कवि केतवां, झळहळ जोत उजास।
लोक लोकांतर जारा लै, आखर ओम् अकास ॥३१॥

कवि देवां गुरा गाव मन, सतजग धाररा हार।
दुख लोचरा मोचरा अनळ, पार ब्रह्म भरतार ॥३२॥

दिव्यगुरां संजुक्त जळ, अभिलषियां सुख-सार।
फड़ा फूट सब सांपड़ै, सुख पावै संसार ॥३३॥

सधो आस कुराारी सदा, सजनां री प्रतपाळ।
अपूँ मो जिरा अर्चरणा, इंद्रियां आप रुखाळ ॥३४॥

जस गावो हर जगन मंझ, हर वांणी अगनांण ।
करां कीरतन मीत कर, जातवेद अमियांण ।।३५।।

ऊर्जापत सत अनळ थूं, अंतरवाणी आग ।
पाहि-पाहि स्तुतियांण सूं, वारण कर वज्राग ।।३६।।

जविठ जवां रेवत अनळ, पावक सुर लपटाळ ।
भळहळ वळ भरज्वाळ मैं, प्रगटो जाजुळ झाळ ।।३७।।

हुवै सुआहुत सू हितु, दानी अर मघवान ।
गो-टोळां रो दैन कर, दै वीजां रो दान ।।३८।।

हे जरिता विस्पत अनळ, हे दुसहां रा काळ ।
हे अण ओळग घरवणी, मगळ करदचो पाळ ।।३९।।

ऊषा रा विवसोत नैं, आप घणी रंग-राव ।
जात वेद तूं आप घण, अमर उपर्बुध आव ।।४०।।

प्रेरित कर वसु ऊत नैं, ईरित कर वळराव ।
रथांरूढ हे महारथी, करा लाभ घण गाव ।।४१।।

कवि त्राता रित स्यात तूं, भळहळ प्रभा प्रकास ।
करै अहोनिस कीरतन, वेदांविद विप्रास ।।४२।।

घण वळ आयु आव दै, अनळ प्रसंसा जोग ।
जस पसरै अभिलाष घण, उण धन रै संजोग ।।४३।।

नींद

श्री सुरेस पारीक "ससिकर"

थारी देह
बिरमा जी रा हाथ सूं बणायोड़ो
गुलदस्तो है;
जिरी ओपमा मूंडा सूं बखाणी नीं जावै;
कागद पै मांडी नीं जावै।

नैण देख मन मैं गुद गुदी ल्यावै,
पण ये नीं बोले नीं लिखै;
अण बंटी चिट्ठी ज्यूं लौट-लौट आवै।

थारै नैणां म्हें च्यांरू कुणे
लम्पट छोरा रै लारै—
वांरो चित्राम भी मंडयोड़ो है;
ज्यो थनैं देख सीटी नीं बजा—
एक लांबो सांस खींचै।

थारा रूप नैं संजोवण सारू
थारै गिया पछै आंख्या नै मींचै।

थारी सांसा मैं फूलां रो बाग
जणी मैं नत हंसी री गोठां होवै।

थारा होठ नदी रा दो पाट

ज्या मैं रस री गंगा वैवै।
थारै मन मैं घरणा-खरा सुपना है—
बाल परणा री मीठी नींद भी,
परण थनै वा नींद क्यूं नीं आवै
बार-बार पसवाड़ो क्यूं फेरै,
थनैं बता दयूं क म्हूं म्हारी नींद
थनै देवो चाहूं हूं;
थू थारी नींद म्हनै दे दै!
नींद रो आंटो-सांटो कर ल्यां;
नैरणा में नुवा सुपना भर ल्यां।



ऊंधा—पाधरा

श्री माणक तिवारी 'बन्धु'

✕

घोरो—आ रे भाई पहाड़ ! आपां भायला बण ज्यावां तो कैड़ो रंवै ?

पहाड़—हूँः ! थारी-म्हारी कठै री भायलाचारी ? जोर री हवा चालसी तो थारो ऐनाण-सैनाण ही को लाधसी नीं ।

भाग री बात ! जोर री हवा आई अर घोरै री सगळी धूड़ पहाड़ माथै च्यारू-मेर चढगी ।

✕

आगून अर पाणी एक दिन जिद—बाद करण लाग्या । दोन्यूं एक बीजै नै खतम कर देवण री आपू आपरी खिमता बतावै । करतां-करतां बात घणी वधगी अर वै आपस में गुत्थमफाक हुयग्या । आगून तो बुझ'र राख वणगी अर पाणी बाफ बणग्यो ।

✕

एक फूल री पांखड़ी उडती-उडती सूळ कनै पूगगी । सूळ नै देख'र पांखड़ी डरगी ।

सूळ—क्यूं ए ! तूं म्हनै देख'र इयां डरूं-फरूं क्यूं हुयी ?

पांखड़ी—थारै सूं तो भला-भला डर जावै, हूं कुण सै बाग री मूळी हूं ?

सूळ—बावळी ! सगळां खातर सगळी चीजां एक सरीसी को हुया करै नीं !

✕

मींडको—अरे मगरमच्छ ! आं नान्ही-नान्ही माछल्यां नै खांवतां थारै हियै में थोड़ी सीक दया भी को सांचरै नीं ?

मगरमच्छ—आज तो बोलै सो बोलै; चालणो भी बोलण लागगी जकै मैं अठोत्तर सौ वेज है । थारो हियो तो टंटोळ । माछरां नै खावै जणां थारै आळो ओ उपदेस कठै रंवै ?

×

कान्द—अरे आखरां ! जे हूं इण दुनियां में नईं नापरतो तो थांरी दुरगत केड़ी कांई हुंवती ।

आखर—दुरगत रो तो कांई ठा ? पण म्हारै बिना थारो बापरणो तो साव हो अणहुंवती वात रैवती !

×

टोघड़ी—ऐ पाडी ! तूं म्हारै सूं दूर रैया कर । कठै मैं गोरी निछोर अर कठै तूं तवै जैसी काळी !

पाडी—मरजी है थारी । थारी इज्जत जे म्हारै कनै रैवण सूं घटती हुवै तो दूर रैवण में म्हारै कोई हरज को नी । पण बडी हुयां पछै जितरो दूध तूं देवैली उणमूं वेसी अर रंग में एक मो ो ही हूं देवूंला ।

×

घणासारा वादळ गाजै हा उणां मांय सूं दो तीन सोच्यो कै आं बाकी रां नै लारै छोड'र आगा आगै भाजां ।

आंधियां मीच'र दड़बड़ी लगायी । आंधा-चूंधा हुयोड़ा एक पहाड़ सूं भचभीड़ खायो तो एड़ो कै हाड-पासळां रा ही अता-पता को रैया नीं ।

×

भोगळ देख्यो कै म्हारै थायां बिनां दरवाजो एक सूं अर लात सूं खुलै कोनी । टैंटीजगी !

दिन ऊगां खातो आयो । करोती सूं आगळ नै चाढ'र अळगी नाखदी । आ हुई !

—

रावळै री लाजरो रुखाळो

श्री श्रीलाल मिश्र

बेतवा रा बेटा वीर बुंदेला राजपूतां री राजधानी ओड़छै मैं महाराजा जुझारसिंहजी राज करया करता। वै ज्यादातर दिल्ली रैता। वांरो छोटो भाई हरदौल गैलसूं दीवान रै रूप मैं भोत हुंस्यारी सूं राज रो काम चलातो। जरूरत होती तो आपरी भाभी महाराणी साब सूं बी सल्ला लेतो रैतो। पिरजा रो घणो प्यारो र हेतालू। देवर भाभियां मैं इसो पवित्र प्रेम जिसो ज्यानकीजी र लिछमणजी रै बीच हो। हरदौल टावर ज्यूं भाभी री सेवा करतो अर भाभी मा ज्यूं बी रा लाड करती कन्नै बैठ'र आप जिमाती। हरदौल राणी नैं भाभी-मा कया करतो।

एक दिन ओड़छै रै बजार मैं ढोल बाजै। बेरो पड़ायो जद हलकारो आर कयो एक पठाण पग मैं सांकळ बांध राखी है अर लंगोट बांस पर टांग्यां कुस्ती मांग रयो है, पण हबी तांई कोई लडण नैं त्यार नई होयो। थोड़ी देर पछै गांव रा च्यूं मुखिया आदमी आर गढ़ मैं हरदौलजी नैं बुलाया अर कही कंवर-सा पठाण सूं कोई कुस्ती री हां कोनी भरै। ओडछै री मूंछ रो सवाल है। आप महरबानी करो तो पार पड़ै। बात रै सवाल पर हरदौल भाभी सूं हुक्म लेर अखाड़ै आयो। चढ़ती जवानी, हरदौल रै सरीर सूं जवानी चूवै। सैंठो सरीर छाती ज्यूं बज्जर रा किवाड़। हाथ पगां मैं माछला तीरै। लंगोट बांध'र भिड़गो अर घड़ीक मैं पठाण नै च्यारूं खाना चित्त पटक्यो। बींरो तो उठणो मुस्कल होगो अर लोगां हरदौल नै खूंवें बैठार बीं री जै बोलता गढ़ मैं ल्याया। राणी निछरावल करी। हरदौल पगां पड्यो।

राजा राज पिरजा चैन। अठै सुख सूं दिन निकळै हा, पण दुनिया तो दुरंगी है पराये सुख दूबळी है, नाक कटार सूण विगाड़ण हाळी है। सो कुछेक मुसायबां नैं हरदौल रो सासण, बीं री लोकप्रियता, भाभी-देवर रो मां-बेटां जिसो परेम कोनी सुहायो अर कोई बलतो-जलतो सेवू म्हाराजा रा कान भरया—हरदौल जवान है, बींरो

राणी-सा कनै आवी जावो लोगां सक री निगै सू देखै है, राजरी बदनामी है। राजा कान रो काचो हो वींरै माथै मैं सक रै विष री लहर ठुकगी अर वो किरोध अर ईरखा सूं जळण लागगो अर फट दिल्ली सूं चाल पड़्यो। राज मैं कोई खबर कोनी करी। चाणचक सहर रै परकोटै रै दरवाजै बड्या; जद सिपाई महाराजा री जै बोली। दिल्ली जिसी वणी जिसी इज्जत दी, पण सै'नै अचम्बो होरयोक आज लवाजमे अर मुरतब सूं सहर मैं क्यूं नईं बड्या। अर ऐ आतां ही खाता हुया किलै मैं बड्या। घोड़ै सूं उतरया जद हरदोल भाई सा नैं मुजरो करयो अर यूं चाणचक आवण रो कारण पूछ्यो क खैर तो है ना? महाराज रिस्यां बळता कोई उत्तर कोनी दियो अर झट रावळै पूग्या। राणी सा कुसळ पूछी अर कयो आप आरती उतारण जोगो बी टेम कोनी दी। म्हाराज कयो आरतो तो रोज हरदोल री उतरै है, म्हारी के जरूरत है? राणी सा रै या बात कांटै ज्यूं चुभी अर कुमलाग्या। वां नैं यो ठा नईं हो म्हाराज वां पर सक करैला। वांरै तो सो क्यूं भैंर होग्यो। राणी सा फेर पूछ्यो, आपनै म्हारै सील अर सतीत्व पर कयां विस्वास आवै।' म्हाराज कयो जे थानैं हूं प्यारो हूं अर म्हनैं चावो हो तो हरदोल नैं रस्ते सूं हटाओ, लुगाई रै कसम एक ही हुआ करै है।' राणी रै झाळा पूळा लागग्या। म्हाराज सोवण चल्या गया अर राणी सारी रात धरतियां पड़ी रोती रई। वींरै दिमाग मैं एक उठै अर एक बैठै। एक कानी आप रो कलंक अर एक कानी निर्दोष हरदोळ री हत्या। हरदोल वींनै मा कवै तो मा बेटे री हत्या कयां करैली। फेर विचार आवै हूं छत्राणी हूं या परीक्षा दिये बिना दोनूं कुळांरै कलंक लागसी। म्हाराज मनै कलंकनी कर छोड़ला के सजा देला, पण बात जाहिर होयां दाग तो लागसी ई। यूं दोगा-चींती करतां सारी रात बीतगी।

सवैरै महाराज फेर राणी सा कनै आया अर पूछ्यो, आप सोचली थानैं के करणो है, कयां करणो है? राणी बोली 'हरदोल जायेड़ै बेटे से भी बत्तो है। थे मनै चावै सो सजा दयो, पण वीं निर्दोष रै खून सूं ई हाथां नैं मत रंगण द्यो। महाराज बोल्या, "यो ई तो तिरिया चिरत है। राणी रै डील मैं यूं झळ-सी निकळै लागी बा ई सबद बाणां पर मन मैं क्यूं नेहचो सो कर लियो अर घायल नारी-सी बोली, "मैं भी छत्राणी हूं। छत्री रै घर जलमी हूं। दोनूं कुळां री लाज खातर या सतीत्व री परीक्षा दयूंली।" म्हाराज बी देखो तीर निसानै बैठगो या थाप रै नेहचे सूं नीं हटैली।

खाणै री टेम हुई जद हरदोल राणी कनै गयो। राणी नैं उदास देखर पूछ्यो, "भाई साहब काल आया जद मेरै पै बोल्या कोनी सदा छाती कै लगाया करै। चाणचक सीधाई बिना खबर करै मैहलां मैं आगा। थारो मूंडो सारी रात जाग्योड़ो सो रोयोड़ो सो उदास होरयो है। ई सबरो कारण बतावो?" राणीजी कयो 'पैला जीमो, पछै बताऊली। हरदोल थाळ बेठगो। भाभी थाल परोस्यो अर आख्यां मैं सूं आंसूड़ा झरै लागा। हरदोल राणी रा पग पकड़र बोल्यो, 'मा, हरदोल रै

जीवतां थारै पर के विपदा है जीसूं थे रोरया हो ? जद तांई सारी बात नहीं बतावोला जद तांई मैं थाळ नई आरोगूं लो। राणी मन रै ताप सूं जळरी ही अर गिलानी सूं गळ री ही। क्यूं कैतो कोनी बण्यो, पण हरदौल रै दढता रै आगै साफ-साफ कैणो ई पड्यो, मेरै थारै पवित्र परेम पर महाराज रै सक होरयो है। मेरे सत्तरी परीक्षा खातर आज थांनै यो भैर मिल्योड़ो भोजन परासणो पड्यो। एक तरफ मेरो सतीत्व दूसरो कानी बेटै री हत्या जिकी वी आपरै हाथ सूं। थोई हरदौल बीच मैं ही हांस'र बोल्यो, 'मा, बस ई थोड़ो-सी बात खातर थे दुवध्या मैं पड़ रया हो। थारै सतीत्व रै आगै एक नई, सौ हरदौल वी पिराण दे दे तो.तो थोड़ा। या कैर बो गासियो हाथ मैं लियो। ममतावश राणी थाळी खींच ली। पण हरदौल पाछी आप कानी खींच'र बोल्यो, "मां कै ममता होवै है तो साथ ही कर्तव्य वी तो कोई चीज है। आज मैं थारी लाज नैं राखूं तो बूंदेलां रो वंश लाजैगो। वां रो मूंडो काळो हो ज्यालो। वां रो वीरता रो झिंडो झुक ज्यागो। मैं यो कलंक रो जीणो नी चाऊं।' या कैर शांति सूं थाळ आरोग्यो थाळ जीम'र राणी रा चरण पकड़'र बोल्यो, 'मां आज बडकां री आत्मा मनैं रग देली क आपरा पिराण मां री लाज खातर बोलतो-बोलतो हंसतो-हंसतो दे दिया। बुन्देला रै बलिदान मैं आज एक कड़ो ओर जुड्यो। थे वीर माता, वीर स्त्री वीरां री बेटी हो। थे सदा ही बलिदान देख्या है। हसतो-हसती लड़ायां मैं वीर गति पाई है, जींवता जौहर करयो है। सो यो तो म्हारो पुन्न बखत है थे मेरे लिएए दुख क्यूं करो। दुख मत करो; भाई साहब नै कीज्यो हरदौल भाभी रै सत रै खातर पिराणां री कोई कीमत कोनी समझी। फेर वी म्हारो कोई कसूर होवै तो मासूम टावर समझ'र माफ करैला।

जुझारसिंहजी पीछै सूं छिप्या-छिप्या यो सारो खेल आंख्यां सूं देखै हा अर कानां सूं सुणै हा। वांरो हियो भी पगळगो अर जांणै वांनै धरकार देरयो है, 'कानां रा काचा राजा, आंख खोल'र मांय नैं नई देखणियां राजा तूं सती नारी पर सक कर'र वेटै जिसो हीरो भाई खो दियो। तेरी बुद्धि ज्ञान अर मर्दानगी नै धरकार। वै दौड़ै आर चीख मेली, 'भाई हरदौल!"

हरदौल रै आख्यां मैं पिराण आगा हा। बो इतणोइ कै हूंपायो "भाई साब अब जिंदगी रो दीयो बुझणो चावै है। मेरा सारा अपराध माफ करज्यो।"

महाराज अर महाराणी पछाड़ खा'र पड़ग्या।



रक्तचाप : बरास्तै रोकथाम

(आव नै उपाव, लोक चेतावणी री जरूत)

सा० म० नानूराम संस्कर्ता

विस्व स्वास्थ्य संगठण सन् १९७८ माह अप्रैल रै चूपोड़ै रोग "रक्तचाप" (Blood pressure) नै म्हैं आपणै पुराणै देसी आयुर्वेदी ग्यान रै ताणै-बाणै कोई अेक आवारो खुल्लो, नूंवो रोग नीं मानूं-मनावूं । म्हो आयुर्वेद विग्यान (Science of life) रै सबळै सिद्धान्त त्रिदोष प्रणाली सारू दाब-दबोस नैं जूनी वाय-वादी व्याध, खोटी माड़ी म्यादी खाद-उपाध, दोस-दुविधावां रा घणा कारणां सूं नूंवै नांवै-नखरै अर नूंवै लखणा ही काचै ढांचै ढब, नाचै-टांचै तथा अकाळ मोतड़ी रा पैलवानी कबड्डो-पाणा वांचै ।

रक्तचाप रो व्हाळो स्याणै समाज रै लोग रो अजोग वत्तो जैरीलो जोणो, अयोग-अणोवणतो जारचो है । इयै आधुनिक जमानै रै जमारै री भारो वधती भीड़, धाई-धूंचळी, धींगा-मस्ती, धवकमपेल, खींचताण, कळै-फिलस, चिन्ता-अमूझ, घोर्ल-घड़ी अर वेविस्वासी मूंडां सूं मिनखपणै नैं खाज्याणै रै खेलां रो यो खराबो जोग जंक नकटो नांव नतीजो है, आजकळै वाजतै सीख ग्यान रै वरतारै री कुबध कूड़ो फोड़ रबोड़ रो धाकड़ धाटो माठ में काठ-पील; म्हाठ ढील तथा आदमी रो आपसरी ईरखो अर जुग चावना रै भोगां-रोगांरी विखमता रै कारण ही रक्त विखेप रोग घणो वधियो है । वणा-वटी अेवं संघर्ष खसती मानखादेही; अैड़ी फरंट-फैलणी फागड़दी बेमारी रै वास्तै कारणी भूत तथा खरी खाटो हरी खाद भरी उपजाऊ खेती कही जा सकै, इसड़ी दसा-वताई में म्हां (रोग्यां) रा मनोभावी अगर, आखो नाड़्यां अर माथै-माथै रूक-भुक पड़णा जरूरी होज्यावै ।

व्लेड प्रेशर रो मतळब, रगत रो कोई दाव होवणो जाणीजै । इण सूं लोही रो दबाव वटियोड़ो ही मालम करचो जा सकै । पण प्राय: वैद-डॉक्टर लोही दाव नैं ही व्लेड-प्रेशर कया करै । रक्त रै इयै दबाव वधणै नै (Hypertension of the

Artery) तथा रक्त दबव घटणे नै (Hypotension of the Artery) कवै। रक्त भार दो कारणां सूं जाणीजै (१) हिड़दो लोही नै कितै जोर सूं धक्केल वगावै। (२) आगे धमन्यां कित्ती करड़ाई राखै तथा धीमी धक धारै। अै दोनूं बातां जिती घणी वणै रक्त भार वितो ही वत्तो हवै। रक्तचाप रोहां हिड़दै प्रक्षेपित रुधिर रो धमणी इत्याद री दीवार माथै पड़णै वाळो दाव जो ठीक मात्रा सूं कम या जादा होणै सूं रोग या विकृति रो सूचक होवै। हिड़दो जद सांकोचण करै, खून नै मोटी धमणी में भेजै। जकै सूं धमणी री दीवाल माथै इत्तो दाव पड़ै सो दीवाळ विखर'र धमणी चौड़ी हो जावै। रक्त वहै धमणी रै आगलै पासै दाव नाखै अर आप फैल जावै। पण थोड़ी ताळ पछै लचीली धमणी पाछी सिकुड़र आपरी सागण दसा में आ जावै अर आपरै मांय जको लोही होवै, उवै नै दबावै। इसतरां मोकळी धमणियां री दीवालां माथै लोही रो दबाव अर लोही माथै दीवालां रो दबाव पड़तो रैवै तथा रक्तचाप वाजै। रक्तचाप री कमी, रक्त खय (क्षय) कहीजै। ज्यूं-ज्यूं धमण्यां हिड़दै सूं अळगी होंवती जावै त्यूं-त्यूं उणां रो रक्तचाप भी कम पड़तो जावै। छेकड़ केसि-कावां में जांवतो जावक चुक जावै। रक्त भार कम या जादा होणो दोनूं तरां कुफायदै कारी है। कम होवणै सूं छोटी नाड़्यां फाट जाणै रो डर रैवै।

ढळती ओसथ्या पर इयै भार रो भारी जोर चलै। ऊमर वधै, रक्त-चाप चढ़ै। भण्यां-गुण्यां मिनखां में जकां निजी माथै रो मनण-चिन्तण, साहित री सरजण-धरम हर वखत करता रैवै; उवां रो रक्त भार विजळी रै करंट दांई तण्यो (टैंशन) तथा दबाव रो भार-भारियो (गट्ठर) सो वण्यो रैवै। माथै री नाड़ फाट सकै, लकवै रा लाठ लाग सकै अर ओ ओसर चूक असावधानी आगलो घर दिखाळ देवै। रक्त भार वधणै रा कारण दूजा रोग जयां त्रिदोस, निमधापो, नाड़्यां री करड़ाई तथा उणां रो फैलाव ताकत री कमी, मैणत में आळस, हर वखत माथै काम, दूसित गळगठ्यां, गंठियो, मधुमेह रीस, राड़, जोस, हरख, खाटो-खारो खाण-पाण, पूंजी-पत, मोटै कड़ूंबै जळम, डील मोटापै अर चिन्ता, घणो चरको-चरपरो भोजन, दारू मांस, उच्चाखणो, धूंवां-धोस, तातो खाणो, मारग वगता गाणो, खाणै पर डटर माल खाणै रो लोभ, मूत्र नाळयां रो दरद, सैंटीटै कामण सैवास, गळत स्टेरेलाइ-जेसन, हिड़दै पिंड पीड़ा तथा जच्चा रै कच्चा कारणां सूं रक्तभार वध जावै। लुगायां री चाळीसो-पच्चीसी ऊमर में मीणा धरमो री लाग स्वयं जावती रक्तभार री वेमारी सूप जावै। खास कर मन रै स्रम रा तकड़ा काज अेवं डील रा हळका-फळका. वूढ़ां तथा लुगायां री ढळती ओसथावां में या वेमारी घणी हवै।

मिनख जिनड़ी में कोई अैड़ी भैड़ी हालतां आवै, जकां सूं रक्तभार न्यून (सामान्य सूं नीचो) हो जावै। वै है हिड़दै रोग, सोस राग, काळजै चमरख-चिरा-ळयां, श्रम-उपवास, चाय-कॉफी री चाट, आंत अेवं सन्ततज्वर, खयज व्याध्यां अर

आंतरिक नळी होण (Internalductless) ग्रंथी सूं निकाळबोड़ो स्राव (Secretion) है जको लोही द्वारा बांटीजे । उवै रो असर डील रै अेक या घणा अगां रै हालण–चालण पर पड़ै । जयां थाइराइड ग्रंथी (Thyroidgland) रो स्राव (वहाव) हारमोन्स बाजै ।

दाब री दमा रा कारण केई खोड़ोला हॉरमोन्सां रै लोही में आ मिळणै रा प्रभावी जोग है । निथिलण री हालत समै उवां ग्रथ्यां में हारमोन चलण–फैलण रै वेग नै रोक लेणै रो भादरपणो वरतावै ।

रक्तभार म्हांरी हर धड़कण–धमधमी रै साथै फुरै-बदळै । हिवड़ो खून नै पंप (पिचकारी) मारणै दाई बारै काढ़ण रो जोर मारै जद उवै नै म्हालर आगै ले जावणी धमण्यां में दवाव वध ज्यावै; श्रो दवाव हिवड़ै रै थमणै सागै घट ज्यावै । संकुचन (Systalice B.P.) रो मोटी ऊंची सींव माथै घणे:मोकळै दवाव नै प्रकुंचन दाव रै नांवै वताइजै तथा संकुचन रै मझ हिवड़ो जद ठंरै उवै नै अनुथिथिलण दाव प्रसारण (Diastolic B·P.) अथवा न्यूनतम दाव रै नांव सू. बोलीजै । वैद्य डॉक्टर रक्तचाप लेंवता इवां नै ही नांपै–मापै ।

म्हां लोगां नै ठा नीं लागै, पण हिवड़ो आपरो धन्धो करतो रैवै । इण री पंप कुशळता रै समै धमण्या नाड़यां नै काठी ढीली वाधावां रो मोरचैन्ध सामणो करणो पड़ जावै । कारण यो है के वै धमण्यां आपरणै आप मैं भेळी हो ज्यावै अथवा उणां में बाचड़–दड़गच नीं; लपचड़ा सा लोथा अर लोही रा बदूरका जम ज्यावै । अेड़ी आफत उपज माथै वापड़ै हिवड़ै नै घणो जोर लगावणो पड़ै अर उवो वधै-सधै ।

"रक्तं जीवनम्"—रक्त ही जीवण है । पण रक्तधार नै इकळंग हिवड़ो हाकै-टोरै । हिवड़ै सूं रक्त वेग पकड़ै, फेफड़ै में साफ हुवै अर वठै सूं आखी देह में उवा वापरंत वणै विगसै । रक्त जीवण, पण डोल ढांचै रै हर खूणै-खांचै में लोही पुगावणियो तत्र हिवड़ै है अर ही यो काया रो रूड़ो रूपक मानीजै । हिवड़ो, आत्मा–चित्त चेतणा अर भावुक पुरखां रो भाव पख है । सुश्रुत मत्त, मन अर मर्म रो अधिठाण वास हिवड़ो बतायो है । आयुर्वेद री मान्यता मुजब वखस्थ हिवडो ही मन रो थान है । प्राणप्यारी घरनारी अर पूत-सपूतां री तरां मिनख नै जींवतो राखण सातर खून चलावण री चोखस चेस्टा, अटफळां जुड़ावै । छेकड़ हिवड़ो दूबळो हो सकै । रक्तचाप वढणै–चढ़णै री अेक डग–डांडी वण ज्यावै । रास्ता संकड़ा होवा लागै अर उणा सूं रक्तचाप भळे वधै । सांच ऊंचो रक्तचाप हिवड़ै तथा धमणी रोगां में खातमै रो अेक खास डरावणो महत्त तत्त है ।

रक्तचाप रै विलत, सैंसूं सीधो रो लकवो अर दिल रो दौरो होंवतो ही दीसै । कोई केसां में खुद गुड़दा गुमसुम अथवा हिवड़ो फस बोळ ज्यावै । कदे–

वदे साधारण रक्तचाप ही भयंकर उलझण उपजवेंग वण तणै अर रोगी री नाड़ तोड़र कालदेव रै रूप में आपरी जाड़ चरको कर लेवै । जाणो-जे जुवान आदमी में ऊंचो रक्तचाप आ चढ़ै तो जादा खतराळो साबत होवै ।

रक्त भार दो प्रकारी माप रा मानीजै—(१) सिस्टोलिक रक्तभार (आकुंचन)—आकुंचण रो अर्थ सिकुड़णो है । "शरीरस्य सन्निकृष्ट सयोग हेतुः आकुंचनम् । (२) डायस्टोलिक रक्तभार (प्रसारीय)—प्रसारण रो अर्थ—फैलणो है । यो आंकुचण सूं उळटो है ।—"विप्रकृष्ट सयोग हेतुः प्रसारणम ।

कोई अेक में अथवा इयां दोनवां में असाधारण वढोतरी हो जाणै नै हाई ब्लड प्रेशर ही कवै; पण जरूरी बात "हृद सकोचण रै वखत रक्त दाब री वजै सूं ब्लडप्रेशर री वृद्धि हवै अर हृद प्रसारण रै समै घट जावै । नीरोग डील में हिड़दै संकोचण रै समै ओ दवाव १६० अर प्रसारण रै वखत ४०–५० यानि ११०–१२० रै अड़-गेडै रैवै । यो संकोचण सील दवाव सुभाविक सूं ज्यादा अर्थात १६० तांई ऊंचो चढ़णै सूं खतरै री मांदगी मालम हवै । मतळब आकुंचन रक्तभार (Systolic B.P.) जुवान मिनख में १०० सूं १४० मिलीमीटर रै बीचाळै रैवै अर प्रसारीय रक्तभार (Diastolic B.P.) ६० सूं ९० तांई रैवै । आकुंचण अर प्रसारण रक्तभार रो फरक ३० सूं ६० मिलीमीटर रै मांझ रैणो, आदमी री तन्दुरुस्ती दरसावै । ओसथ्या मुजब उतार-चढ़ाव आवै जकां रा न्यारा-न्यारा नीचे खाना बणायर सरळ करयो हूं ।

जुवान ओसथ्या सूं सही रक्तभाव जांचणै सारू खाना—

ओसथ्या सींव	आंकुचण रक्तभार	प्रसारी रक्तभार	दोनवां रो फरक
३० सूं ३४ साल तांई	१२३	८२	४१
३५ सूं ३९ " "	१२४	८३	४१
४० सूं ४४ " "	१२६	८४	४२
४५ सूं ४९ " "	१२८	८५	४३
५० सूं ५४ " "	१३०	८६	४४
५५ सूं ५९ " "	१३२	८७	४५
६० सूं आगै " "	१३६	९०	४६

जे आकुंचण रक्तभार १६० सूं ऊंचो चढ़ जावै तथा प्रसारी रक्तभार १३० सूं ऊपर जावै तो रोगी री घातक घड़ियां जाणणी चायै ।

ब्लड प्रेशर नापण वाळी कळ (जन्त्र) नै स्फिगमामेनोमीटर (Sphygmomanometer) कवै । हिन्दी में यो धमणो चाल चित्रक यंत्र वाजै, दूजो धमणी सिरा गति चित्रक यंत्र (Polygroph) होवै । धमणी चाल चित्रक री रचना देखणै सूं म्हांनै खास तीन तरै रा उत्पादण लाभै । (क) बूकियै ऊपर लपेटणै री पाटी (ख) भार देखणो भाग (ग) वायु प्रवेसो पारवो । रक्तभार मापणीकळ नै काम लेवतां समै

दो तरीकां सूं खून री परीख्या करी जावै। नाड़ पकड़ पर ता धमणी सब्द नै सुणर। आजकळै मोटी अस्पताळां में बिजळी सूं हिड़दै री लेख लेणं री कळ (Electrocardiograph) हुवै। इण रै द्वारा हिड़दै रो चित्र मंडणवाणो वैद्युती हृद-लेखण (Electrocardiography) वाजै। इयै रो प्रचार काज आधुनिक समै में मोकळो होवै। सखेप में इण हिड़द लेखण नै लोग ई. सी. जी. रै नांव सूं लिखावै दिखाळै। हिड़दो तो पाकै कलमी आम री तरां हुवै; पण ई. सी. जी. में लामी लकीरां आवै। मोटा विग्यानी डॉक्टर ही इयां वीजळ हृद लेखां नै बांचै अर रोग रो निदान करै। वैद्युतिक हृद लेखां सूं रोग निदान होणो सरळ वणै—उणां अवस्थावां रा उल्लेख मळै करू —

जलमजात हृदरोग, हृतसूळ, हृद कपाटिकावां रा जूना रोग हाड़दिक अति वृद्धि, अन्त: स्थान, असामयिक हृद संकोच (अलिन्दनीय, निलयिक, पर्वमीय), धमणी घनास्रता इत्याद अनेक हृद विकारां रा आजकळै वैद्युतिक हृद लेखण सूं ठा लागै।। इणां में ऊर्ध्वगामी अेवं अधोगामी, आंटी-टेढी लकीरां कोरीज्योड़ी लहावै। वै: पी क्यू, आर, एस, तथा टी रै सम्वन्ध जोड़ीजे। इणा मे पी, आर, अेव टी, ऊर्ध्वगामी अर क्यू, तथा एस अधोगामी होवै। इणां आंकां नै लिखर ही हिड़दै रै लेख नै बांचीजै हृदय रोग रै निदान बावत भाव प्रकाश श्लोक १. पृष्ठ ८६० में देखो।

आयुर्वेद रै वृक्क रोग रा लखण 'रक्तचाप' में मिलै। वृक्क ग्रन्थी रै विकार, गर्भावस्था में रक्त दोख में विख द्रव्य रै वधाव, मधुमेह री अधिकता (ओवेसिटी) अर नसाळा पदारथां रै सेवन सू रक्तचाप वधै। त्रिदोस सिद्धांत रो वो ही जूनो स्थान है जको आयुरणी चिकित्सा प्रणाली में सेलुलर थ्योरी रो ! "स्वास्थ्य-रक्षा" में लिख्यो है के—ये तीनों दोष हृदय और नाभि के नीचे, बीच में और ऊपर प्राप्त होकर, अवस्था, दिन-रात और भोजन के अन्त, मध्य और आदि में क्रम से गमन करते हैं।" वात-पित–कफ री विवेचणा करणं सूं ठा लागै के त्रिदोस सिद्धान्त में मन तथा डील रा कारजां रो भेळियो वेफ्फरड़ो मिस्सो, आदमी रो रक्तचाप हर समै घटावै— वधावै, यो मिनख री आपरी हरकत माथै निर्भर करै। सन् १६५६ में विश्व स्वास्थ्य सगठण री सभा जुड़ी। विद्वान वैद्यां अर रोग विसेस रा डॉक्टरां–इधकारयां रक्तचाप रै निदान खातर मोकळा नेम, धरम अर राखा, छांट–सोधर छपाया। आखां देसां उवां नै मान्या। पण साधारण अथवा अघातक उच्च रक्तचाप (Beginby pertension) तथा घातक उच्च रक्तचाप (Mahgnant Hypert-nsion) रो फरक रोगी री मनस्थां, ग्यान अर ध्यान माथै आधारित मानीजै।

(क) मामूली उच्च रक्तचाप—इयै रै रोग्यां में मोटापो, भुंवाळी, नींद में सांस वन्द होणं सूं जाग, उच्चाट, अनिद्रां सू वाढ़चोड़ी गिलारी री तरां तड़फणो, सिर री पीड़ा, आख में पतड़का, थकेलो, स्रम सूं नाट, हिड़दै दरद, धगधगी, माथै में सूंसाट, कानां में धू धाट, दम फूलणो दखिण हृदयातिपात (Congristive Hart Failure) इत्याद लखण हुवै।

(ख) घातक उच्च रक्तचाप—निमधो-रोगल सरीर, कार्य अखमता, भार री कमी, मदाग्नि अर रक्तालपता रैवै। उन्नाळो अर सियाळो दुख देवाळ तथा उळटी खांसी वगैर में खून आवै, इयै रा ऐ लखण है।

अखिल भारतीय आयुर्विग्यान सस्थान रा प्रो० एम० एल० भाटिया रो कैवणो है के—"देस में उच्च रक्तचाप रै अनेकूं रोग्यां री ओजूं पैचाण हो नहीं होणै पावै; पण यो रोग देस में आपरो वधेपो जरूर कवतो वगै।" देस री दसा इयै रोग वास्तै सतोख जनक नीं है। उच्च रक्तचाप नै ओजूं घणो मोटो रोग नहीं मानै। नियमित ढंग सूं अठै पूरी जाँच-पड़ताळ ही नीं होवै। कालेजां-मदरसां में टाबरां री सालीणी निरख परख अर ढळती ओसथ्या माथै पैंतीस वरसां पछै माहवारी जांच, सरीर रै दूजा हुयां रोगां री निगैदास्ती, जच्चा तथा अधखड़ लुगायां री जाँच, हृदय मस्तिष्क तथा वृक्क (किडनी) री जांच, रोगां रै कारण समेत जाण लेणी चायै। सरकार सूं दवायां री नित नवी खोज, ईजाद अर मिलणैं रा सस्ता साधणादेश करवाया जावै। तथा प्रचार–प्रसार री कमी नै मिटाई जावै। रक्तचाप संबन्धी वैद्य– डाक्टरां अर सम्थावां रा अभिमत—१ संसार में होवणे वाली असुभावी मोतां में से सूं जादा मौत हिड़दे रोग सूं होवै। (श्री मुकेशकुमार) २. डॉ० जी. आर. भाटी (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, प्रा. मे. प्रे. एशो. राजस्थान जयपुर) रक्तचाप नै मानव सूं प्रेम करणै वाळो स्याणो रोग बतावै—"मानव प्रेम की की कहानी, सयाने रोग की जुबानी।" ३. जे. आई. एस. रोबर्टसन रक्तचाप री हालत नै "जीवन द्रोही हाई परटेन्शन" कवै। ४. डा० कुणाल कोठारी एव डॉ० वी. एस. वलदुआ लिख्यो है—" रक्तचाप की चुनौती का सामना कठिन नहीं" (राजस्थान पत्रिका ९ अप्रैल १९७८) ५. श्री हरीश अग्रवाल लिखगो है के—"रक्तचाप रोग में जापान का उदाहरण अनुकरणीय है।" (नवभारत टाइम्स ९ अप्रैल १९७८) ६. बंबई रा नामजादीक डा० आर. एच. दस्तूर आपरी पोथी "आर. यू. किलिंग योर सेल्फ मि० एक्जीक्यूटिव" में मोटापो रक्तचाप रोग खातर खतरै री घंटी बतायो है। ७. डेनमार्क के हृदय विशेषग्य डॉ० टी. हुसेन रो लिखणो है के—"दिल का दौरा होने से छाती को धक्का दीजिए" (इण्डियन एक्सप्रेस) ८. "दिल की कहानी, दिल की जुबानी" में दिल कवै—"मेरै सिकुड़णे में आधा सैकण्ड अर फेलणै में ३०/१० सैकण्ड लागै। मनै स्वस्थ राखणो चावो तो भावात्मक तणाव; अत्यधिक व्यस्तता, क्रोध, चिन्ता अर अशांति सूं बचो।" (बढते चरण, १६ अप्रैल १९७८) ९. दिल की चोरी हो जाने के बाद आपको भी वहीं पहुँचना होगा, जहाँ आपका माल पहुंचा है।" (लहरें ६२) १० गांधीजी कैवता—"दिल से भगवान का नाम लेना ही सारी बीमारियों का सबसे बड़ा इलाज है। (हरीजन सेवक १५-६-४७) "सो दवा न अेक दुआ।" ११. म्हैं इयै रक्तचाप रोग नै—"त्रिजातियो" लूणहरामी, नक्करकट्ट तथा कठरवाणो कुरदसियो कसूण मानूं।" (पारसिया पान) १२. "तनाव

की स्थिति पूरी तरह तब तक कभी समाप्त नहीं की जा सकती, जब तक कि व्यक्ति जगत से पूर्ण वैराग्य लेकर योगी न बन जाये। पर उसकी उद्दण्डता निश्चय ही कम की जा सकती है।" (आरोग्य मई १९७८) १३. आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस रै हाल रा ताजा आंकड़ा सूं ठा लागै के राजधानी नई दिल्ली में चालीस हजार रजिस्टर्ड रोग्यां में—सौ माथै पन्द्रै: रोगी उच्च "रक्तचाप,' री पीड़ा भोगगिया है।" १४, नागरी बडी अस्पताळां रै आंकड़ां सूरत—"जुवान रोगी सैंग गुर्दे री बीमारी रै कारण रक्तचाप भोगै-मरै।" १५. सोवियत वैग्यानिकां री राय में—मास्को को "दबाव कक्ष शल्य क्रिया अर चिकित्सा पद्धति से भी भविष्य के हिरदै रोग को बडी आसाएं हैं।" (आयुर्वेद विकास-सित० १९७१) १६. जीवन बीमा निगम आपरै सर्वेक्षण में बतायो है के "मोटापै में दिल री बीमारी, 'उच्च रक्तचाप,' गुर्दै री बेमारी अर मधुमेह सूं मौत होवणै री संख्या घणी वधै।" ईयै वास्तै मानसिक आवेश री राड़-रीस अर वोपारी गरमा-गरमी वगैरा री प्रबल भावनावां सूं धमण्यां रा संकोच तेज हुवै—सो क्रोध, स्रम अर सावधानी री सीमा में चालणै रो रोगी नै पूरै बन्दोबस्त राखणो पडै। 'सौ सेहत न अेक कुपथ्य," रोग रा कारण खतम करणा सरळ अर सुद रोगी रै सामणै होवै। वरत फळाहार, रक्त मोक्षण कराणो अर हर रोज पेट साफ राखणो हवै। "न वेगान् धारयेत।" (च. सू. ७) अन्न कम खाणो, जळ जादा पीणो, सरळ कसरत आसण, दिनुगै—आथण थोडो घूमणो तथा तणाव री हालत में थोड़ो स्वांस, ध्यान अर मानसिक भगवान भजन रामबाण ओखद है। नहीं तो—"नदी कराड़ै रूंखड़ो, जद कद होत विणास!" राम नाम सत्य बोलीजतां दिखै अर जगतचिता सूं चिता जळै। त्याग- (२४५ भाव प्रकाश पृ० ८३४) दारू मांस, मांस खीच धूंवो. सूंणी—जरदो, तेज चूनै रो पान, करड़ो साजो सोढ़ै रा पापण खाणै सूं गळ ग्रन्थ्यां वीगड़ै अर अैड़ा रोग—दोख चींगरै। "कण दवा अर मण परहेज।' विणज वोपार अर उळझण वाळी सफर इण रै रोगी नै सफा बन्द कर देणी चायै। ऊंची पैड़यां चढ़णो, ऊंट, घोड़ा; छकड़ा, टेक्टर. ट्रक इत्याद कूदणै अर तेज दौड़णै वाळो सवार्यां सूं सदीव बचाव राखीजै तो उतम। रक्तचाप रै बचाव रा खरा उपाव—रोगी आपरै दिमाग नै हर वखत उत्साही, सान्त अर चिन्ता निरपेख--निपापो भयहीण राखै; खमता सरमोख अर सुविधा कदे नीं खोवै। प्रेशर थोड़ो ऊचो-नीचो हो जावै तो हरगिज घबड़ावै नहीं, धीरज राखै। सैंग काम मुस्ताई सरूप करै आदमी संभळ जावै तो खतरो नीं आवै। कोई विरळो ही केस काळ कोप सूं बिगड़ जावै तो दूजी बात है सो हर आदमी नै डाक्टर सूं नेमोनेम रक्तभार आंकलण करांवता रैणो चायै। नहीं तो वसा जैड़ै खाण-पाण रै दैनिक असर सूं लोही में कोलेस्टर एवं लालकण हुवै। जकै सूं हिड़दै री सिरावां सकड़ी अर खून गाढो वर्णे तथा हृदय रोग व स्ट्रोक रा वहम वध ज्यावै। चिकित्सा, उपचार अर ओखद—वयां तो रक्तदाब रै रोगी री आंख्यां फाटचोड़ीसी, मूंढो लटकपोड़ो सो, दांता में दुरगन्ध हाथां-पगां झुणझुणी, झूंझी जीत, परीख्या करणै पर नाड़ी री चाल जादा अर करडी,

हिड़दै रै बांयै पासै सूं मोकळी धड़कण तेज तथा गुरदे री निमळाई होवै जद रक्तभार भारी वणै । जांच मांथै धमण्यां कठोर एवं संकुचित लखावै, क्यूं कि ई.सी. जी. हिड़दै पर घणौ भार रा लखण भण्यां जा सकै । जद एक्सरे लिखावणो पड़ै । आराम, भोजन अर नींद इत्याद टेमोटेम मुरजाद व्यवस्था सूं चालणा जरूरी जाणो । "सो दवा न अेक परहेज ।" दिन रै खाणै पछै विस्राम अर रात री आछी खाट, कानां दाट समचें आठ घण्टा निसफ़िकर नींद में बीतावणी चायै । मन; रोस--जोस अळग कम खाणै अर खाणै में लूण-पाणी तथा मोकळी मधुर घी--तेल तळी-भूनी चीजां री भणक-वांस ही नास नीं वसै । "सो पथ्य (आहार) न अेक परहेज ।"—कार्बोहाईड्रेटस, हरिया पानड़ाळा लूखा पाका साग-सब्जी, विटामिन बी. सी, री खुराक; अन्न सूं इधक मुफीद मानीजै । किस-मिस, दाख, खजूर, वेलगिरी रो रस, पाको पपीतो, सन्तरै—मौसमी जेड़ा फल, काचो दूध अर खार जांताळा खाणा-दाणा चोखा रैवै । फळ अर दूध मोकळा खाणै पीणै सूं पेसाब रै सागै डील रा दूसित पदारथ निकळ जावै । वातावरण सदीव साफ अर रंजण राखणो चायै । थोड़ै इभ्यास वेगी रूचि (हॉबी) काज ही रोग काटै । हवा—पाणी बदळणा फायदेमंद हवै । ओखजन (आक्सीजन) या ई मीं वागरो उपयोग ही कदे-बदे करणो जरूरी होवै । "सो दवा न अेक हवा ।" पण विस्राम सेतो चिकित्सा चोखीतरां करावणी चोखी रैवै ।

रक्तचाप वेगी आयुर्वेदिक ओखद—१. रास्नादि पचक, पंचकोळचूर्ण, वेस्वानरचूर्ण, कैसोर गुग्गुल, गुडूची काथ, सुधानिधि रस, चन्द्रप्रभा वटी अर सर्पगंधा इत्याद दवा इयै रोग वेगी वडी गुणाकार है । सर्पगन्धा तो देसी दवायां में भारत ही नहीं सारे संसार में चालै । इयै जड़ा में रेसरपीन पाई जावै । कदे ही अेक चमत्कार पैननसलीन दिखाळचो उवै सूं ही वत्तो इयै रोग में सर्पगन्धा रो तुरता फुरत चमत्कार हवै । देखो—डा० ओमप्रकास 'कंचन' ए. एम. बी. एस, चन्दोसी की पुस्तक "सर्पगन्धा!" वैद्य श्री हरीदास री "चिकित्सा चन्द्रोदय" रै सातवें भाग में लिखी मिलै, रास्नादि काढ़ो वणावण री चोखी विध ! २. योग सारामृत—विधारा, गंगेरण, सतावरि, सोधी घुघुची, पुनर्नवा:; गिलोय, असगंध, पीपर, गोखरू १०--१० तोळा लेर चूर्ण वणाणो अर ४५ तोळा मिस्री में मिलायर घोट लेणो । पछै अेक वरतण में राखकर उवै में ३२ तोळा सहद, १६ तोळा घी, तजकलमी, तेजपात' इळायची इत्याद रो चूर्ण वणायर, उणी वरतण मे भळै मिलायर काम लेणो चायै । ओ निम्न रक्तचाप रो अेक वढिया योग है (भावप्रकाश) रक्त योग रै बाबत होमयोपैथी दवायां—डा० गणेशनारायण चौहान आपरी पुस्तक "भोजन के द्वारा चिकित्सा" में घणी दवायां लिखी है । अति-रक्तदाब में निम्बू पृ.१४, गाजर; पृ.४०, चोलाई पृ. ६०, शहद पृ. ६८, व माथै पूरो विवरण मांड्यो । गुरदै (Kidney) रै रोग मे नारंगी, सेव अर अंगूर रा रस बताया है । (पृष्ट १६) कारण किडनी सरीर री चालणो हवै; जका लोही सूं दोख विकार छाणर

मूत्र मिस डील सूं बारै काढ़ै। निम्न रक्तचाप (Low B.P.) में हींग, हृदय शूल में केला पृ० २७, अज्वायन पृ० ६१ अर हार्टफेल में मोसमी पृ० १८, लहसुन पृ० ५६ रो अनूठो प्रयोग लिख्यो है।

"जनपतवार" (मई १९७८) में सम्पादक डॉ० परमेश्वर सोलंकी लिख्यो है के–"भारतीय फल अनुसंधान विज्ञान के अन्तर्गत किये गये अनुसंधान परीक्षणों से मालूम हुआ है कि 'उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों के लिए खूंबी का सेवन वरदान सिद्ध होता है। यह विटामिन और खाद्य लवणों से भरपूर है।" आ खूंबी या फूबी अठै री उपज दवा है।

पाश्चात् (आथूणी) ओखदां नै बिना पूरी जानकारी रक्तचाप जिसड़ै रोग वेगी नीं लिखणो चावूं; पण दिन में सुखदायक ओखद सोडियम फेनोबार बिटाल (Sodium Phemo Barbital) खाणै बाद १–४ ग्रेन दिन में तीन बार अथवा एमीटाल (Amytal) अर सोडियम सीकोनल बेचैनी तथा नींद वेगी मुफीद बताइजै। कई उद्योग प्रधान देसां री देखा देखी ध्यान अर योग रा वैग्यानिक मूल्यांकण भारत में ही अनेकूं रोगां सागै "रक्तचाप" खारू सराहीजै। पण ओजूं लोग ऐच्छिक रूप में ही अपणावै; क्यूं के–"देखादेखी साजै जोग, छीजै काया वधै रोग" सूं डरै। 'प्रणायम' पृ० १३७ में लिख्यो है—"ये अभ्यास उन्हीं थोड़े से मनुष्यों के लिए जो इन्हें समझते हैं दूसरों की तो इनमें प्रवृति नहीं होगी।"

छेकड़ली बात या है के–दुनियां भेळो म्हारो देस ही इयै बरस अेक नराचा वधियै ग्रैड़ै हिंयारै रोग री जड़ काटर बूंटो बाळणै री चैस्टा जुगती चालै, जको उच्च "रक्तचाप" रै नांव सूं मिनख रो वालो (प्यारो) डील डिगावण वेगो खतरनाक ताक सूं मोटो मो भरियो, घूंपरळो घाल राख्यो है। मोकळी खामी देसी पद्धत्यां, दुवायां सूं वैद्य, तुरन्त प्रभावी तरीकां–उपजोगां सूं जुग, विग्यानी–एलोपैथी अेवं होम्यो.पैथी डॉक्टर, यूनानी चिकित्सावां सूं हकीम तथा कुदरती चिकित्सक इत्याद सारा स्याणा श्रीमान संसार सार्थ काठी कमर कसर बूकिया वंध, अवध बळ लाग रिया है। जोख-परख, पोख-हरख अर आंगूंच सफळता सरक में आज अठै रा धन्वतरयां भारी भागा दौड़ सूं घूवां उपाड़ राख्या है अेक रोग लारै सैंस लोग लाग ज्यावै जद ठयो कठै उबर सकै ? आ! साख लखावै।



राजस्थानी गीत अर अलेखूं ओळमा

श्री ओम प्रकास गरग "मधुप"

गीत मतवाले मनड़े री मस्ती है, तो दाझते दिल रो दरद भी। हिये रे हेज रो फूटतो सोतो है तो उलळते आतप रो अलेखू ओळमो भी। प्रीतम ने प्राण-प्यारी नैण-दुलारी हिवड़े रो हार पत्नो री प्रेम पगी पाती है तो मायड रे मनड़े री मोखळी मंदरी, महकती ममता री नेह नदी भी। सीमाणे समरां जूझता सिपायां री सांस-सांस में सबद वणता सनेसा है तो सजियोड़ी सेजां सुख-सेवता साजन-सजनी री साथ रो सगीत भी है। रमता राम जोगियां रै जोग री जुगत है तो भगवान रा भगतां री अपार सिरधा अर भगति–भाव री भेंट है। गीत दरद है, गीत गरब। गीत ग्यान है, गीत ध्यान। गीत प्रेम है, गीत विराग। गीत मनवार है, गीत ओळमो। गीत जीवण रो संगीत है, जीवण रो रस है, जीवण रो सहारो है, जीवण रो सिणगार है। गीत ही जीवण है, जीवण आप एक गीत है।

गीत मिनख री भावनावां रो प्रितक्ख रूप है। जुग-जुग सूं मानखो आपरी आसा, अभिलासा अर मनड़े री लालसावां नै सबदां रा जामा पेरावतां गीतां में पिरोंवतो रियो है। परदेसी प्रीतम री बांटां निहाळती विजोगणी घरनार कदे बादळी साथै, कदै कुरजां साथै तो कदे कागलिया साथै आपरी प्रीत री पीर रो सनेसो घणी मनवारों करतां थकां "कागदीयो लिख मेलूं छैला" भेजै, तो "राते रंग रा ओळमा" भी भेजण में पाछै नहीं राखै। धन-माया र लोभी साजन ने घरां बुलावण सारूं मनवार अर ओळमा सूं भरी पाती लिखती कामणी कैंड़ी-कैंड़ी बातां लिख भेजै—

> रोक रुपयो भवरजी म्हें बणूं जी,
> हांजी ढोला वण जाऊं पीळी म्होर।
> भीड़ पड़ै जद भंवरजी बरत ल्यो जी॥

रुपयां रा लालची भंवर नें इणसूं बोल्यो ओळमो व्हे भी की सकै! पण बालम भी पूरो बिणजारो है। घड्यो घड़ायो उत्तर तैयार है उण कांनी सूं—

म्हैं छां वेटा साहूकार का जी,

ए जी म्हारी घणी ए पियारी नार।

कोई गोरी रा गांठ में रहयां तो पूरै नहीं पड़ै जी ॥

ओ पड़ू तर पढता पांण ही तो कामणी रै काळजा रै मांय जाणै कालियो कुण्डली मार फण कर बैठो। काया कळपावण लागी तो कुरलाती कुरजा साथै फेरूं आकरा ओळमा सूं लड़ालूम सनेसो पठायोहीज—

परण पिराछित क्यों लियो जी,

ये जी रह्यो क्यूं नी अखन कुंआर।

कुंआरी ने तो वर घणा छा जी ॥

इतरा सूं ही मनड़ो न्हीं मान्यो अर हियो न्हीं धाप्यो तो पछै फेरूं आसरी आखर तक लिख दीना—

भंवर थ्हांरी परणी मरजो जी,

भवर म्हारी सुध करजो जी,

विजोग री भारी अर आतप सूं आकळी पति री प्रतीक्षा में झुरती पतिव्रतां री प्रेम-पातिरां में इण इण भांत रा ओळमा री कोई छेह ई न्हीं पार। पति-पत्नी नै अर पत्नी पति ने ओळमा देये ही, रूठ्यां नै मननारां कर मनावे ओ पण पीती ने घणो लाड लडावती आप री सासू नै बनारियां री प्यारो सो अरथ भरयोओळमो देवण में नहीं चूकै

मूळ हूं तो प्यारो थानै लागै ब्याज,

कोई प्यारी तो वेटा सूं लागै पेमा डीकरी।

बीरा भेण रो नेह गीतां में जुगां-जुगां सूं गाढ़जियो है। नारी पत्नी रै रूप में परदेसी प्रीतम री पथ निहाळै तो भेण रे रूप में सासरिया में बैठी बीरा री बाटां मी तांकै घणा दिनां तक पीयर सूं कोई सनेसो न्हीं आवे। बीरो बुलावण नहीं आवे तो बेनड़ रो हियो बरबस ही पुकार करण लागै—

बीरा ओ बीरा,

म्हाने थ्हांरी ओळूं घणा आवै हो,

परवस बेनड़ कीकर आऊ थांरोड़े देस।

आधी घणी आधी मायड़ म्हाने परणाई ओ,

चुनरी ओढाये बीरा कर दी पराई ओ, ओळ थ्हारो आवै बीरा,

रोवै मां—जाई ओ,

परवस बेनड़ कीकर आऊं थांरोड़ेदेस।

बिनां बुलायां तो पीयर जावै कीकर और भेजै भी कुण। इणसूं ईज अगतवख ओळमो भी, मेणों भी अर आपरी बेवसी रो रोणो भी एक साथै बीरै नै सनेसो भेजै। मूंडा-मूंड तो कोई एहड़ा ओळमा देरीजे भी कोयनी। कई बातां व्है जिकै हियै मांय री मांय दाभै अर साले पण वानै होठां ऊपर खुले रूप मैं न्हीं लाई जा सकै। एहड़ी बातां उमग-उछाव री भी व्है सकै आतप री भी। ए हीज बातां नर-नारी एक दूजा नै गीतां रै माध्यम सूं बतावण री कोसिस करै। सबदां रै संगीत रै लार-लपेट आकांक्षावां रा ऐ ओळमा गा-गा'र सुणावै। समझण हाळा समझ जावै, अण समझणीया ठोठां रै कीं पल्लै नहीं पड़े।

घर मैं घणा सोरा ! खावण-पीवण री लेर ! कीं बात री कमी न्हीं व्है तो आदमी मुटावण लाग जावै। पण अणूती वादी री थोथ भरयो डील तो तन्वगी नै सुहावै नहीं। तोई मूंडा-मूंड तो कैवै भी कीकर, आ भी कोई कैवण री बात है ! कैवण टक पण सोवणी सूं रह्यो न्ही जावै जदां पातळो परी, कोडीली कांमणी आ बात गीत रा बोलां मैं बींध'र यूं सुणावै—

बैंगण तो काचा भला, पाक्या भला अनार।
प्रीतम तो पतळा भला, मोटा लट्ठ गंवार।।

मां बणण री लाळसा स्त्री री सबसूं मोटी लाळसा व्है। मां बण्यां सूं ही नारी आप नै पूरण मानै, नहीं जदां उणरो नारित्व अधूरो हीज रैवै। आ साध पूरी करण सारू कितरा जुगत करै, देव जुहारै, आखा जुरावै, मिनतां मानै ! हियै री आ हूंस पुरी नहीं वेती दीसै तो पति नै मीठा ओळमा-मेणा देती भी नहीं थाकै —

कदीय न पूज्या म्हे तो पाळ हाळा भेरू जी,
कदीय न पूज्या खेतरपाळ म्हारा मारू जी,
कदीय न हुलरयो प्यारो पालणो।

पति वापड़ो कीं करै इण मामले मैं। उणरै हाथ री बात व्है तो एक न्हीं दस लाड का लाडू व्है जेड़ा कंवर आपरी कोडीली रे तांई पैदा कर देवै, पर परमेसर री मरजी आगै उणरो कोई बस न्हीं। भैरूजी नै मनावण मैं या देव जुहारण में वो भी कीं पाछ न्हीं राखै अर आसावां बांधै—

अबकी पूजांला गोरी पाळ हाळा भैरू जी,
अबकी पूजावां खेतर पाळ म्हारी गोरी ए,
अबकी हुलरेला प्यारो पालणों।

राजस्थान देस-परदेस रा जन जीवण में रसिया बसिया गीतां में ओळमां रा अगणित उदाहरण भरया पड़या है जां रे माध्यम सूं नर-नारी आपरी अनूंगी इच्छावां, आकांक्षावां नै एक दूजै रै सांमो सुभीतां सूं पिरगट करै अर अण कैवण जोग बातां नै भी गीतां रै जोर सूं पिरगट कर सांमलै नै सावचेत करण में नहीं चूकै। राजस्थान रा कवियां एहड़ा अनेकानेक अवसरां रा सुन्दर अर सटीक गीतां रो सर्जन कियो है जिके मोका ऊपर बरोबर फिट बैठे अर मन री भावनावां नै खुलासा पिरगट करण में पूरी-पूरी मदद करै। साहित्त रा विसयां में खोज अर सोध करणीयां इण कांनी आपरी रुचि लगा'र सोध करै तो घणा अनोखा नतीजा अर अजूबा अर अनूठा निष्कर्ष सामैं आ सकै। राजस्थान रा जवान साहित्यकारां अर विद्यार्थियां नै इण मामले में आगै आवणो चाहिजै।



सम्पादकीय पै प्रतिक्रिया

जी–५१ सीरो कॉलोनी
पिलानी (राजस्थान)
२४ जून १९७८

आदरणीय श्रीमान् शर्मा सा०,

नमस्कार ।

......आपरी सोचण री दृष्टि कि राजस्थानी रो एक रूप संस्कृत रै नैड़ै पुग्या हो सकै है आ इण आधार पर जचै है कै संस्कृत देव–वाणी नै सगली भाषावां री जगणी है । आपरै प्रयास सूं ओ काम की आगै बधै तो ओ राजस्थानी रो आपणो फरज उतरण रै साथ-साथ बहुत बडो काम हू ज्यासी ।

मई अंक पढ्या पैली आ मन मैं आया करती कै लिखणो बेकार है नुंवा लिखारां नै कुण पूछै है सगळा सम्पादक आपरा आदम्यां नै मोको देवै है पण मई अंक रो सम्पादकीय पढ़ नै जीव नै नेछो आयो है ।......

—आपरो
मनोहरसिंह राठौड़



बिसाऊ
दिनांक २६–६–७८

घणा मानिता सम्पादक जी,

'जागती जोत' अप्रेल ७८ रो अंक देख्यो जिमैं सम्पादकीय बांच'र घणो हरख हुयो ।

राजस्थानी मैं संस्कृत रा तत्सम शब्दां नै अपनाणो अर हिन्दीं रै शब्दां नै सीदा-सीदा पचालेवणो तो घणो चोखो काम है । इणां सूं भासा समरिद्ध ही हुसी । पण राजस्थानी रा ठेठ शब्दां अथवा बोलियां रा शब्दां रो प्रयोग राजस्थानी रो कींकर बुरो करसी ! बुरै सूं मेरो मतळब विकास मैं आंट लगावणै सूं है । जद हिन्दी ही आपरी बोलियां रा ठेठ ग्रामीण शब्दां नै लेवणै मैं नी हिचकै है तो फेर राजस्थानी रा बै शब्द

भंडार तो वीं रो संचित जीवन-धन है। आज जका अण सैंदा लागै है, कान आपणा घणा हैताळु होजावैला, ईं में कीं सक सूवो नीं है। हां, खुराक उत्ती ई दी जाणी चाहिजै जिती पचाई जा सकै। दूजी अर्ज आ है—

शब्दां नै वणावा मातर दूजी भासावां रा प्रत्यय, वचन, कारक आदि काम में नी लिया जावैं, जिसूं राजस्थानी रो असली रूप वण्यो रैवै, आ घणी चोखी बात है। पण राजस्थानी भासा रै क्रिया पद अर कारकां री समानता तो हुणी चाहिजै। बिजी भासावां में ओ अळगाव तो कोयनी। विद्वान-वर्ग नै ईं पर पैली परख अर गैरो विचार कर'र निर्णय लेणो चाहिजै।

भवदीय

अमोलकचन्द जांगिड



भवर भवन,

करबला मार्ग माळपुरा

कोटा-३२४००६ (राज०)

१८-६-७८

सम्पादक महोदय,

राजस्थानी की एकरूपता का मुद्दा जून '७८ को "जागती जोत" में सरू कर्‌या, ईं खातर धन्यवाद, या पत्रिका आखा राजस्थान का मांडणहारां की पत्रिका छै अर ईं का सम्पादक कै तांई वै सब तकलीफां जरूर आती होगी जे संपादकीय में बताई।

एक राजस्थानी पत्रिका म्हूं भी निकाळ चुक्यो छूं अर वां सब तकलीफां सूं भड़ चुक्यो छूं जीं सूं आपकी पीड़ जाण सकूं छूं।

म्हारी बधाई ईं बात वेई मोर मंजूर करो, कै आखा राजस्थान की ईं पत्रिका न एकरूपता वेई यो मंच खोल्यो। 'जागती जोत' को सम्पादन तो परस्यूं आपका हाथ सूं खड ज्यागो, पण आवाळा सम्पादक जो भी जे यो सवाल उठायां रखै तो लेखकां अर काव्यां का वच्यार आतां-आतां सवाल को हळ निकाळबो आसान हो ज्यागो।

आपको

प्रेमजीप्रेम



सेळी छांव खज्यूर की*

श्रीमती उषा शर्मा

'सेळी छांव खज्यूर की' प्रेमजी प्रेम को लघु उपन्यास छै; ज्यो गांव का वातावरण सैं जन्म्यो छै। गांव का धाकड़ परवार की एक छोरी गुलाब मां-बाप कै मर-जावा पै आपणी किशोर ऊमर नैं पंडत गगासरण की नगै दास्ती मैं काटै छै। ईं ऊमर मैं ऊंकी गरस्ती हुवै छै–गाय, बैल, भैंस अर पाडो। यांमैं ई वा आपणू हेत बधावै छै अर अस्यो हेत बधालै छै; जाणै वै ऊंका भाई–बैणा सू भी बदीक होवै। काळ का मारया मारवाड़ा छोटू को बैल जद एक गांव हाळा नैं मार न्हाख्यो तो सरपंच गंगासरण का अन्याव नै न्याव मैं बदळवा वेईं गुलाब नै आपणा राध्या (बैल) ईं छोटू नैं काम-धन्धो करवा वेईं दे दयो, ईं सूं गुलाब अर छोटू को मेळ-मलाप सरू हो-ग्यो, जो व्हां तांईं बध्यो क गुलाब नें छोटू, जो ज्यात को मसळमान छो सैं ब्याव करवा की ठाणु ली। पण यो ब्याव हो न पायो गांव का एक जळता बळता नैं राध्या ईं जैर दे दयो; जींका झूठा अल्जाम का डर सूं छोटू भाग–छूट्यो अर गुलाब नैं कदी ब्याव न करवा को पणीबरत ले ल्यो। ईं छोटीसीक-तरळ-सरळ ख्याणी पैं उपन्यास को ताणो बाणो वणायो छै। उपन्यास की नायिका गुलाब का चरित्र नैं उभारबा वेईं अर छोटू अर गुलाब नैं मलाबा वेईं पंडत गगासरण को सरपंच बणाबो अर न्याव करबा की कथा प्रासगिक कथा छे। गगासरण की 'पताका' कथा उपन्यास का प्रारम्भ सूं लेर अंत तांईं चालै छै। लेखक नैं मूळ कथा को ज्यो अत कर्‌यो छै ऊ अकसमचै आयो छै, पण गुलाब का चरित्र सूं बेमेल कोईंनै।

ज्यात की धाकड़ उपन्यास की नायिका गुलाब असी ऊमर मैं अनाथ होई जींमैं जिन्दगाणी को नुयो मोड़ आवै छै। किशोर ऊमर की ईं छोरी नैं पंडत गंगासरण सूं आदर्श मल्या अर मां–बाप सूं पशु-प्रेम अर आपणा गोला पै अडिग चालबा की

---

*सेळी छांव खज्यूर की लेखक - प्रेमजी प्रेम प्रकाशक—प्रेमजी प्रेम
पृष्ठ सं० ८६ मूल्य ४) २५ पैसे

दृढता। ऊंकी भावुकता अर आदर्श नै दुनियां की भाडी सूं भाल्यां फरा'र ऊई एकली अर वेझिझक चालवा की शक्ति दे दी, पण ईंसू वा द्वन्द्व रहित बणगी होवै, या बात कोईनै। उपन्यास में जतनी वा बारै खुली छै ऊसूं वदीक ऊंको अंतर उजागर होयो छै। पूरा उपन्यास में ऊंको ई चरित्र उकस पायो छै। दूजा पात्र तो आपणी थोड़ी-घणी झलक दखा पाया छै। लेखक चरित्र-चित्रण में गैराई में उतरयो छै, पर पात्रां का चेतन-अवचेतन मन नै दरसायो छै।

पण उपन्यास नै पढ़तां-पढ़तां एक सवाल उठै छै क जद गांव को पंडत सरपंच बण'र कतई बदल ग्यो अर गांव का लोग-बाग भी चंट-चालाक बण ग्या तद गुलाब जैसी एक गेलै चालबाळी जवान नायिका नै पतेरवा में कसी कला छै? काई अस्या मनख आज मलै छै?

दुनियां में भांत-भांत का लोग वसता आया छै अर बसै छै। ईंसूं यो सवाल गलत लागै छै क अस्या मनख मलै छै कई? पण फैला सवाल में वजन छै। लेखक कवि भी छै; ईं सू ऊंनै अस्यो ई कथानक ल्यो ज्यो ऊंका मन कै अर आदर्शां कै अनुकूल होवै। असी लागै छै क मनख्यां नै ऊंचा उठ्या देखवा की ऊंकी आदत छै अर ऊ वानै छल-छद्मा सूं ऊपर उठा'र मनखपणा की थापणा करयो चावै छै (दलो-सांवळो सांच); याई ऊंकी कमजोरी छै अर याई ऊंकी तागत। ईंसूं ई ऊ गुलाब सूं छोटा-मोटा त्याग कै वाद अतनूं वड़ो त्याग करावै छै, ज्यो भोळी ऊमर का एकत में पंडत जी का सुण्या-सुणाया आदर्श वचनां सूं प्रेरित छै पण असी प्रेरणा छोटू कै पास न होवा सूं ऊ भाग खड़ो होवै छै। हां, आपणां चोज-वसतां नै ऊ भी छोड़ जरूर जावै छै; डरप'र न, जाण-बूझ'र।

उपन्यासकार उपन्यास में मनख अर ढांढारा-ढोंरा कै बीचै मलवाळा स्नेह-सम्बन्ध नै उजागर करै छै। यो सम्बन्ध ऊं ठोर ताईं पूग्यो छै ज्यां ज्या'र दोनीं आपसी भाषा समझवा लाग जावै छे अर एक का सुख-दुख दूसरा का सुख-दुख बण जावै छै। य्हां भी प्रेमजी प्रेम को कवि ई आगै रै छै।

उपन्यास की भाषा में ठेठ हाड़ौती को सजीव मुहावरो उतरयो छै। सटीक अर समरथ शब्दां का प्रयोग सूं ईं फैला उपन्यास में भी वा ओपै छै। शैली तो नराळी छै ई। ऊं में कहाणी की व्यंजना अर कविता की मार्मिकता छै। ज्यां लेखक आपणी बात खै छै व्हां ऊंकी प्रौढ़ लेखनी को रूपालोपण दीखै है। हाड़ौती की लेखन परम्परा सूं न जुड़'र उच्चारण-ध्वनियों नै नुईं वर्तनियां में बांधवा को ज्यो साहसिक कदम लेखक नै उठायो छै ऊंपै ऊंनै वधाई तो छै. पण ईंसूं पाठक की परेशानी वधी छै। ऊंई फैली लेखक की भाषा वर्तनियां नै समझनी पड़ैगी, फेर उपन्यास का सौन्दर्य नै। पोथी कीं छपाई मासिक पत्रिका की नैंई छे ज्या भद्दी लागै छै।

हाड़ौती का ईं फैला उपन्यास लेखक नै म्हारी घणी-घणी वधाई छै।



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर

विज्ञप्ति सं० १

दिनांक ५–७–७८

संगम पुरस्कार

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर री तरफ सूं सत्र ७८–७९ खातर आगे लिख्या मुजब संगम (अकादमी) पुरस्कारां सारू राजस्थान निवासी राजस्थानी भाषा रा लेखकां री साहित्यिक प्रकाशित/अप्रकाशित पोथ्यां आमन्त्रित करी जावै है। आवेदन पत्रां रै साथै पोथ्यां री संगम कार्यालय बीकानेर मांय पूगण री आखरी तारीख ३१–१०–७८ हुसी।

राजस्थानी गद्य–पुरस्कार २०००--०० दो हजार

राजस्थानी पद्य पुरस्कार २०००;-०० दो हजार

पुरस्कार प्रतियोगिता मांय पोथ्यां ही शामिल ह्वो सकेली जिकी विज्ञप्ति प्रसारण री तिथि सूं लारलै तीन वर्ष मांय छप्योड़ी हुसी यानी ५-७-७५ सूं ४-७-७८ रै बीच री अवधि मांय प्रकाशित पोथ्यां ई प्रतियोगिता मांय सम्मिलित ह्वो सकेली। पांडुलिपियां सारू अवधि रो बंधन नी हुसी।

पुरस्कार प्रतियोगिता रा नियम अर दूजी जाणकारियां सारू संबंधित लेखक मेहरबानी कर'र सहायक सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर सूं सम्पर्क करें।

विज्ञप्ति सं० २

लेखकां रै खुद रै खरचै सूं प्रकाशित पोथ्यां माथै आर्थिक सहयोग

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर री तरफ सूं लेखकां नै उणा रै खुद रै खर्चे सूं प्रकाशित पोथ्यां माथै आर्थिक सहयोग योजना रै अन्तर्गत राजस्थान वासी राजस्थानी लेखकां री साहित्यिक पोथ्यां आमंत्रित है। ई योजना में वै ही पोथ्यां शामिल करी जासी जिकी दिनांक १५--१०--७७ सूं १५--१०--७८ रीं अवधि मांय प्रकाशित हुसी। नियम मुजब आवेदन पत्र अर पुस्तकां री संगम कार्यालय बीकानेर मांय पूगण री आखरी तारीख ३१--१०--७८ हुसी। नियमां अर दूजी जाणकारियां

सारू सबन्धित लेखक मेहरबानी कर'र सहायक सचिव राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर सूं सम्पर्क करें।

विज्ञप्ति सं० ३

राजस्थानी भाषा रो साहित्यिक पत्रिकावां नै अनुदान देवण सारू आवेदन पत्र आमंत्रित

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर सूं राजस्थानी भाषा री सृजनशील आलोचनापरक, शोधपरक एवं साहित्य संबंधित पत्रिकावां नै आर्थिक सहयोग देवण सारू सत्र १९७८--७९ खातर आवेदन पत्र आमंत्रित करया जावै है। आवेदन पत्र निर्धारित प्रपत्र मायं पत्रिका रो लारलै साल री फाइल समेत संगम कार्यालय मांय पूगणै री आखरी तिथि ३१--१०--७८ है। इण पछै पूगण आळा आवेदन पत्र लीया नीं जासी। आर्थिक सहयोग सम्बन्धी नियम, प्रपत्र तथा दूजां जाणकारियां सहायक सचिव, राजस्थानी भाषा सहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर सूं प्राप्त करी जा सकै है।

विज्ञप्ति सं० ४

प्रकाशनार्थ पाण्डुलिपि आमंत्रण विज्ञप्ति

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम की प्रकाशन योजनान्तर्गत राजस्थानी वासी राजस्थानी भाषा रै लेखकां सूं राजस्थानी साहित्य री सगळी (समूची) विधावां मांय प्रकाशनार्थ मौलिक पाण्डुलिपियां आमंत्रित करी जारी है। संगम कार्यालय में पांडुलिपियां पूगणै री आखरी तारीख ३१--१०--७८ है।

दूजी जाणकारियां सारू साहित्यकार मेहरबानी कर'र सहायक सचिव राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर से सम्पर्क करें।

विज्ञप्ति सं० ५

राजस्थानीं भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर री साहित्यकार आर्थिक सहयोग योजना रै नियमान्तर्गत राजस्थान निवासी राजस्थानी भाषा रै साहित्य-कारां नै सत्र १९७८--७९ मांय आर्थिक सहयोग देवणै सारू आवेदन पत्र आमंत्रित करया जारया है। आवेदन पत्र रो फार्म अर नियम आदि संगम कार्यालय सूं प्राप्त करया जा सकै है। आवेदन पत्र संगम कार्यालय मांय पूगण री आखरी तिथि ३१--१०--७८ है।

ध्यान जोगी आ बात है कै संगम हर साल असी राजस्थानी भाषा रै सा-हित्यकारां नै जिका साहित्य सृजन मांय जुड़ेड़ा है अथवा जिका साहित्य री लाम्बी ऊमर सूं सेवा कररया है और अब बुढ़ापै रै कारण अथवा दूजै कारणां सूं आर्थिक सहयोग री पात्रता राखै, नै मासिक आर्थिक सहयोग देवै है।

सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
बीकानेर

लेखकां का ठकाणां

१. श्री प्रेमजी प्रेम—भंवर भवन; करबला; कोटा
२. श्री दीनदयाल ओझा—बिन्नाणियों का चौक; बीकानेर
३. श्री भंवरलाल सुथार—भ्रमर निकुंज, ईदगाह बारी, बीकानेर
४. कु० शकुन्तला कुमारी 'रेणु'—नवरत्न सरस्वती भवन, झालरापाटन
५. डॉ० नागरमल सहल—रीडर, अंग्रेजी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय
६. डॉ० प्रेमचन्द्र गोस्वामी—बी-४ जनता कालोनी, जयपुर
७. डॉ० उदयवीर—वरिष्ठ अध्यापक, राज० उच्च माध्यमिक विद्यालय पो० बड़वासी
वाया नवलगढ़ (सीकर)
८. श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'— बीकानेर
९. श्री करणीदान बारहठ—कन्या रा० उ० माध्यमिक विद्यालय, झुंझनू
१०. श्री कृष्ण कल्पित—ए-२७, अम्बा बाड़ी, झोटवाड़ा रोड जयपुर
११. डॉ० मनोहर शर्मा—कैलाश कुंज, रानीबाजार, बीकानेर
१२. श्री गिरधारीलाल मालव—बरखेडा, पो० आ० अंता, (कोटा जिला)
१३. श्री जानकीप्रसाद पुरोहित—रुईयां की गली, रामगढ़ (शेखावटी)
१४. डॉ० लक्ष्मीकमल—न-१९, रवीन्द्र निवास, वनस्थली विद्यापीठ (राज०)
१५. डा० बृज मोहन जावलिया—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर
१६. श्री सुरेश पारीक 'ससिकर'—पो० खेजडी, वाया विजयनगर (भीलवाड़ा)
१७. श्री माणक तिवारी 'बन्धु'—पाबू बारी, नुवा सहर, बीकानेर
१८. श्री श्रीलाल मिश्र— बिसाऊ
१९. श्री सा० म० नानूराम संस्कर्ता— कालू
२०. श्री ओमप्रकाश गरग—आयुर्वेद अस्पताल के उपर पचपदरा नगर (बाड़मेर)

× × ×

प्रूफ सोधणिया
श्री भूरसिंह

सम्पादक—
डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
४/२ सिविल लाइन्स;
बीकानेर

ख्वाब हो तम ये मी क्या कम है

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्र का श न

नाम पुस्तक	विधा	लेखक	मूल्य
प्रेतात्मा री प्रीत	(कहाणी)	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा	५.५०
रोहिड़ै रा फूल	(व्यंगात्मक निबंध)	डा० मनोहर शर्मा	५-७५
हांस्यां हरि मिलै	(हास्य)	श्री नृसिंह राजपुरोहित	७-५०
जोग संजोग	(उपन्यास)	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	(रेखाचित्र)	डा० ब्रजनारायण पुरोहित	५-७५
आदमी रो सींग	(कहाणी)	श्री करणीदान बारहठ	६-००
अेक बीनणी दो बींन	(उपन्यास)	श्री श्रीलाल नथमल जोशी	८-३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	(परिचय अंक)	सं० श्री रावत सारस्वत	७-७५
सोनल भींग	(लघु कथायें)	डॉ० मनोहर शर्मा	७-००
काळ भैरवी	(लघु उपन्यास)	श्री रामनिवास शर्मा	७-४०
हस करै निगराणी	(काव्य सग्रह)	श्री सत्येन जोशी	७-४०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा	(जा.जो.)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थानी कहाणी संग्रह	(जा.जो.)	सं० रामेश्वरदयाल श्रीमाळी	८-५०
राजस्थानी निबन्ध माळा	(जा.जो.)	सं० डा० मनोहर शर्मा	८-००
राजस्थान के कवि भाग २		स० रावत सारस्वत	१५-००
राजस्थानी साहित्य सपदा		श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	१८-००
सरवर सूरज अर सिंझ्या		श्री प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य

सम्पर्क

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

नागरी भंडार, बीकानेर।

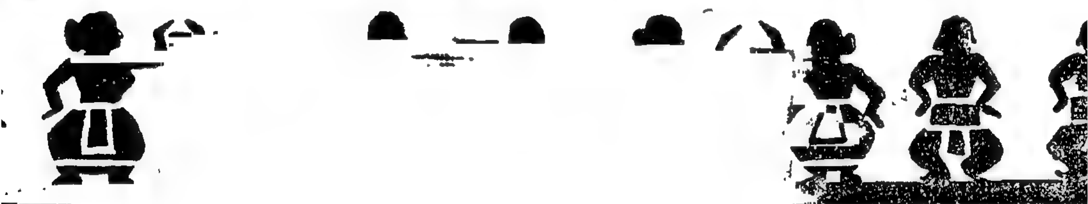
मुद्रक—माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस, स्टेशन रोड, बीकानेर।

बरस : ७ अंक : ७

जागती जोत

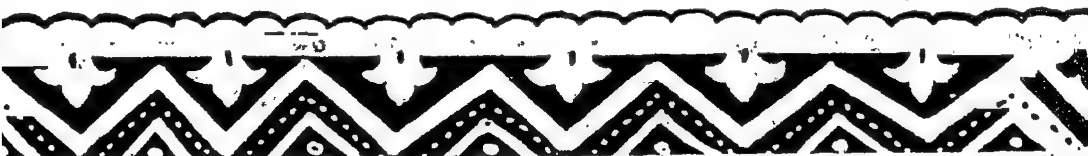
राजस्थानी मासिकी





सम्पादक

मोहनलाल पुरोहित





राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

जागती जोत

[राजस्थानी मासिकी]
बरस ७ अंक ८
सितंबर १९७९



बरस रो मोल : १२ रुपिया
इण अंक रो मोल : सवा रुपियो
रियायती मोल : बरस रो : ८ रुपिया



सम्पादक : मोहन लाल पुरोहित
प्रबन्ध-सम्पादक : डॉ परमानन्द सारस्वत
उपसचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर—३३४००१

विगत



'जागती-जोत' रै सम्पादन-काल में म्हारै माथै विद्वानां साहित्यकारां, कलाकारां, कवियां, लेखकां आदि री घणी सरावण जोग क्रिपा रैयी, वांरा मोकळा कागद मनै इण अर्से में बाचणनै मिल्या। इयां कागदां में बां घणासारा प्रश्न उठाया है।

बात आ है कै आज आपां स्वतंत्र नागरिक हां। इण स्वतंत्रता में आपां नै कई मिल्यो है—बींरी गहराई में नईं जायर, आ तो प्रगट में कैय सकां कै लिखणै-बोलणै री आजादी तो आपां नै मिली ईज है !! जणै धापर क्यूं नीं लिखां आपां मन में आवै ज्यूं ! कुण है आपां नै रोकणियो अर ना कैवणियो !!

घणासीक कागद तो इयां ईज है; पण केई कागद (पत्र) घणमोला अर घणै काम-काज रा भी है। इयां में विद्वान-साथियां राजस्थानी-भाषा री अेक-रूपता माथै घणो जोर दियो है अर सागै ई बांरो लिखणो है कै ओ सगळो मुद्दो 'अकादमी' रै माध्यम सूं, बींरै स्तर सूं सुळझणो चाईजै। केई विद्वानां राजस्थानी भाषा में हिन्दी-शब्दां रै प्रयोग री चर्चा कीवी है। बांरो इसो लिखणो है- हिन्दी-भाषां रै शब्दां रो प्रयोग जावकईज नईं हुवणो चाईजै।

मनै ठीक याद पड़ै-म्हैं जागती-जोत रै (लारलै अंकां में) सम्पादकीय में आ बात घणी-घणी स्पष्ट कर गयो हूं कै भाषागत अेक-रूपता रै व्यर्थ अर बेमुतलब रै पचड़ै में म्हैं नईं पड़नो चाऊंला। इण वाद-विवाद (कोन्ट्रार्वासि) नै जित्तो कांई अळगो राख्यो जावै, तो सावळ रैवै। इण सूं कठैई ओ अरथ नईं लियो जावै कै म्हैं राजस्थानी-भाषा री अेक रूपता रै विरोध में हूं, या मनै आ बात पसंद कोनी है, या मनै इण बत रो ग्यान या कै भान कोनी है ! 'अेक रूपता' नै लेयर आज सूं २५/३० बरसां पैली म्हां लोगां इण प्रश्न नै उठायो हो। केई तरै रा, भात-भांत रा सुझाव भी विद्वानां आपरी तरफ सूं राख्या, अर बांनै प्रकाशित करवायर राजस्थानी रै विद्वानां नै, कलाकारां, अर लेखकां नै, तो साहित्य कारां नै बांटचाग्या। पण दुख री बात तो आ है कै सगळा नियम पेफ्लेटां में छप-छपायर बठैरा-बठैई रैयग्या।

जठैताईं क्षेत्रीय-विद्वान, साहित्यकार आप-आपरी बोली रो मोह नईं छोड़

देवै, आ-समस्या नईं सुळझ सकै ।

अबै प्रश्न रैयो ओ कै 'अकादमी' आपरै स्तर मार्थं इण रो समाधान करै । पण ओ भी काम घणो ओखो। कारण-पैला तो अकादमी मार्थ इण तरै रो दबाव घाल्यो जावै, जद कदेई वडो आयोजन, जलशो या कै सेमीनार आदि हुवै जद । खैर

इण मुद्दे मार्थ हूं, म्हारा स्वतंत्र विचार राखणा चाऊंला । पैली बात तो आ है कै अकादमी निज में है कांई ? आतो मात्र अेक संस्थान रो नामकरण है । काम तो बठै भी आपां-रा ईज मेलियोड़ा, चुणियोड़ा साहित्यकार, कलाकार ईज तो करै है ।! जणां वींसूं संबंधित सगळा साहित्यकार, कलाकार जे आज सूं ई अेक रूपता नै ध्यान में राखर साहित्य-सर्जन करै, तो समस्या फेर कठै अड़ै है ???

जठै ताईं हिन्दी-शब्दां रै प्रयोग रो प्रश्न है-ओ तो कोई खास ध्यान देवण जोग प्रश्न कोनी । ठीक है-हिन्दी आपां री राष्ट्र-भाषा है । आदर जोग है । पण जे भाषा-विज्ञान री दृष्टि सूं देखां-परखां तो इण प्रश्न रै समाधान रै जोवण सारू कठै ई अळगो कोनी जाणो पड़ै । कारण—'हिन्दी' फेर किसी भाषा है ! कईं संस्कृत-भाषा, सगळी भारतीय-भाषावांरी जननी कोनी है ?? जणां जे हिन्दी भाषा आपरी स्मृद्धि-सारु संस्कृत सूं नुवा-नुवा शब्दां नै ले सकै है, तो राजस्थानी भाषा नै कांई वात री आंट है । जिके शब्दां नै आपां हिन्दी रा केवां हां, वै मूळ में किसा संस्कृत रा कोनी है !! संस्कृत भाषा आपांरी धरोहर, बैंक-बैलेंस है । बैंक-बैलेंस सूं पैसो उठावणो, उधार कोनी गिणीजै । हूं तो ओ विश्वास पाळूं हूं कै समीक्षा-क्षेत्र अर आळोचना क्षेत्र में आपां नै आज रै प्रचलित शब्दां नै बिना किणी झिझक रै स्वीकार कर लेणा चाईजै, पछै वै भावैं हिन्दी-भाषा रा हुवै, उर्दू रा हुवै या किणी दूजी भाषा रा हुवै । पाचन-शक्ति जिण भाषा री सबळी रैवै, बा ही भाषा काळान्तर में जीवंत भाषा री गणना में बैठै ।

अेक निवेदन करणो चाऊं-वर्तनी कानी म्हारा विद्वान जरूर ध्यान रखावै । कठैई 'सरू' तो कठैई सुरु । इणी तरै कठै 'किसो', तो कठैई 'किस्सो', ! कठैई 'घणौं' तो कठैई घणों, कठैई 'कनै', तो कठैई 'कने', 'कन्नै' । अेक ई रचना में तरै-तरै री वर्तनी रा प्रयोग कईं भूंडा लागै। सागै ई ओ भी निवेदन है-साहित्यिक भाषा अर बोल-चाल री भाषा में तो भेद-फरक राखणो ईज पड़ै । जे भाषागत सौष्ठव, वर्णगत, विकास, निर्माण, अर स्मृद्धि आदि नै ध्यान में राखर सर्जन करयो जावै तो मां-भारती राजस्थानी भंडार रै भरण में साहित्यकारां रो घणो सरावण जोग जोगदान रैवै ।

⊙

मोहनलाल पुरोहित
भठड़ों का चौक,
बीकानेर राजस्थान

कवि भूंगर अर उण रा घेसला

श्री. सूर्यशंकर पारीक

कवि भूंगर कठै उपन्यो किसी साल-संमत में हुयो कठै मोटो हुयो, अर किसी जात बिरादरी नै आपरो जलम लेयर ऊजाळी, अै सैंग बातां आज तांई पण छानी हैं। लारलै बरसां में भूंगर रै बारै में श्री अगरचंदजी नाहटा अर डा० मनोहर शर्मा रा न्हाना लेख 'कुरजां' अर 'मरुवाणी' में छप्या, पण भूंगर री पूरी अर पकी ओळखाण वां पण कराई नीं। नाहटा जी रै अंदाज सूं भूंगर बीकानेर डिवीजन रै 'नोखा' अथवा 'रतनगढ' रै आसै-पासै आळ गांवां में हुयो हुसी। वांरी सोचना में इण क्षेत्र में हो भूंगर रा घेसळा घणां परचलन में है। नाहटाजी रै अेक मोटै अंदाज सूं भूंगर कोई १५०-२०० बरसां पैलां जरूर हुयो हुसी। पण ओ सगळो अंदाज खाली बाड़में बेई मारणै जिसो हीज है। भूंगर रै घेसळा-साहित्य रो परचार थोड़ो-बोलो आखै राजस्थान में है।

कई लोगां रो कैवणो है कै भूंगर मारवाड़ रै 'साठिका' गांव में हुयो अर जात रो वो चारण हो। भूंगर रै चारण हुवण री साखी में खासा लोग पण 'हां' भरै। भूंगर रै एक घेसळै में 'चारण' शब्द वापरीज्यो है—

गुवाड़ बिचाळै भैंस जावै, सिंगां बिच खावै
पूंछ उठाय देखै तो, भदोरै रो चारण पोथी वांचै

ओ 'भदोरै रो चारण' कुण हो ? भूंगर आप हो अथवा कोई बीजो हो, ठीक सूं कंई कैयो जावै नीं। जे आ बात भूंगर आपरै वास्तै कैयी है जणा तो भूंगर भदोरै रो चारण पकायत हो !

वियां देख्यो जावै तो लोक-साहित्य रै रचयितावां रो पक्को थो-मो लगावणो पण घणों दोरो काम है। भळे उणरै थूळ रूप रो ठावो पतो लगावणों

तो तैलमें सूं कौडी काढणी जिसी बात है ।

कितीसीक जागां भूंगर नै 'भूंगळ' भी कैवै पण अै दोनूं नांव एक ही आदमी री ओळखाण रा है । भूंगर कैवो भावै भूंगळ । राजस्थानी में 'ड' अर 'ळ' आपरी जागां फोरता रैवै ।

भूंगर रै बारै में आ बात पण घणी प्रसिद्ध है कै उणनै किणी री फटकार ही कै "जिण दिन थारी कविता री लारली तुक-पद में 'पद' मिल जासी उण दिन थारी मृत्यु हुय जासी । एक दिन आ फटकार साची हुय'र रैगी ।

संजोग री बात कै एक समै भूंगर आपरा सांढ माथै चढ्यो कठै ही जावै हो । रस्तै में एक कूंवो आयो । उण कूंवै में एक आदमो उण रा थूड़िया पकड़्यां टिर रैयो हो । भूंगर नै देख'र उण विनती करी कै "कोई सूरत मनै कूंवै में पड़नै सूं बचाय ।"

भूंगर नै ईसतरै विपदा में फस्योड़ै आदमी नै देख'र दया आयगी । उण आपरी सांढनै कूवो डकावण सारू तचकाई । सांढ लगायेड़ी हुवणै सूं घणी तानी अर वेगवान ही जद पण वा तो कूंवो डाकगी पण बखत री बाजै, भूंगर, कूंवै में पैली लटकतै थकै आदमी री टांगियां पकड़्यां कूंवै में हीज लटकतो रैयग्यो। भूंगर नै ईण घटना माथै अचंभो हुयो । उणरो सोचा-विचारो अर डाव खानी जाय चुक्यो हो । अैड़ो वेळा में उणरै मूंडै सूं कविता रा भाव परगट्या-

डाकणी ही सांढ डाकगी कूवो
एक तो हो अर एक ओर हुवो

भूंगर री कविता में 'कूंवो' अर 'हुवो' तुक मिलगी । पा, "तुक मिलगी अर फेर भी मर्यो कोयनी" रै हरस में ("आपरी मोत आळी फटकार नै भूल'र) दोनूं हाथां सूं ताळी बजावणी चाही कै 'धरड़धम' करतै कूंवै रै पींदै में जावतै वेजा खाई ।

भूंगर रै बारै में इण सूं वत्तो कोई वृतांत जाणनै-सुणनै में आयो नीं । पण, राजस्थानी लोक-साहित्य री आगली सूर में सिड़ो हुवणियो कवि भूंगर मोजी जीवड़ो पंकायत हो । भूंगर रा घेसळा मोजी जीवण रा इम्रत भरया कटोरा है । जठै भूंगर रा 'घेसळा' खुली मस्ती बांटणियां है वठै अै चरबनियां अर सुवादियां सैंतुल रस देवणियां पण है ।

भूंगर आपरै तिथियां काम-कांजरी छोटी सूं छोटी बातनै ठेठ चिमत्कार री बानों पैरा'र कविता करतो ।

भूंगर हास्य रस में राजस्थानी साहित्य रो प्राण है। हिन्दी-साहित्य में, जिको ऊंचो स्थान अमीर खुसरो (सं० १३१२-१३८२ वि.) नै मिल्यो है, राजस्थानी साहित्य में वो हीज स्थान भूंगर रो है। श्री रामनरेश त्रिपाठी 'मारवाड़ के मनोहर गीत, नांव आळै आपरै ग्रंथ री भूमिका में भूंगर नै खुसरो रै समान हास्य रस रो कवि बतायो है। भूंगर रा घेसळा आपरी बराबरी में किणी नै नहीं राखै। सुणनै में आवै कै कवि रो 'भूंगररासो' नांव रो एक मोटो ग्रंथ है अर उणी ग्रंथ सूं अै कितासीक घेसळा बारै नीसरया है जिकां रो सुवाद वेळां-सुवेळां आज तांई लोग लेवता रैया है नै आगूनै भी लेवता रै'वैला।

राजस्थानी में जिकी वस्तु नै आपां 'घेसळा' कैवां, हिन्दी में वांनै हीज 'ढकोसला' नांव सूं कैवण री परापरी है। जिण तुमार राजस्थानी में भूंगर रा घेसळा नामी हैं उणी तुमार हिन्दी में अमीर खुसरो रा 'ढकोसला' नामजादीक है। इणरै परवारकर हिन्दी में घासीराम (खवासी खेरे का) अर बासु जिसा और भी कवि हुया है जिकां रा 'ढकोसला' प्रसिद्ध हैं। इणी तरै री एक विधा रो नांव हिन्दी में 'परसोकला' है। राजस्थानी में अैड़ी विधारो नांव झटूकला है। हिन्दी 'ढकोसला' बेअरथा मान्या जावै हैं। लोगां री धारणा है कै बेमेळा सबदां नै जोड़'र उण सूं बिना अरथ रो पण आनंद लियो जावै वै हीज ढकोसळा' बाजै। हिन्दी में पाखंड पूर्ण बात रै वास्तै 'ढकोसला बाजी' मुहावरो है पण राजस्थानी 'घेसळा' रो ऊंडो विचार करणै सूं इण में अरथ भी नीसरै।

श्री नाहटा जी जेडा विद्वान् भूंगर रै 'घेसळा' में घणो तंत कोनी, मानै पण उणां री राय में 'घेसळा' कौतुहल वर्धक हुवणै सूं संग्रै करण जोग अवस हैं। श्री नाहटाजी रै मत सूं कोई अंत में विचित्र बात कैय देवणै सूं 'घेसळा' लोगां में कुतुहल पैदा करै, इण कारण सूं वां रो प्रचार हुयो। पण, 'घेसळा' कुतुहल रै साथै आपरो अरथवानता भी राखै हैं।

अबै 'घेसळा सबद माथै उणारो अरथ विचारणै जोग है कै 'घेसळा' किणनै कैवै ? छेलो इण सबद रो अरथ कांई है ?

'घेसळा' का 'घेसळो' अणखड़ झाड़ी रै का किणी दूजै रूंखरै आंके-वांके सोटनै कैवै। घेसळां रो दूजो नांव लक्षणा वृत्ति सूं 'रेरू' अर 'सोटण' भी है 'संगाराम' तथा 'हरदुवारी लाल' नांव भी घेसळां रो चाल्यो जावै है। घेसळा उण लाठी नै भी कैवा करै जिकी सोवणीत सूं ताळी नहीं हुवै अर साथै वा जाडी भी हुवै। 'घेसळो' वा लकड़ी है, जिकी

मोगरी रो काम देवै । उण लकड़ी नै भी 'घेसळा' कै'वै जिको सूं खळै में गुंवार मोठ री माद का डूंखळिया कूटण रो काम लियो जावै । लक्षणावृत्ति सूं भूंडी वात नै भी 'घेसळो' अथवा 'घेसळा' कै'वै । इण अरथ में 'घेसळो टिकावणो' 'घेसळो मेलणो' अर 'घेसळा नाखणो' एक मुहावरो है ।

नीचै लिखे दूहा में 'घेसळा' सबद रो प्रयोग हुयो है:—

तूतो जाये बन कांचळी, मरवण लेजा झोल्यां
रामदासरै पड़े घेसळा, खेलै बंबा बोल्यां

'घेसळा' खाली नहीं जावै किणी रै माथै पर पड़ै तो उण रो भोभरो दीय कर नाखै ।

'घेसळा' रो एक बीजो अरथ ओ भी है "अणघड़ अर मार री चोट करण आळो ।" भूंगर रा 'घेसळा' सुणै जद आदमी चिग्रांकी ज्योड़ो-सो हुय जावै । भूंगर रा 'घेसळा' दीसण में तो अणघड़-सा ही दीसै पण आनै सुणै जदै काळजै माथै चोट भी सागीड़ी लागै अर आदमी हड़हड़ कर हंस पड़ै । रोवै कोयनी पण आंख्यां में आंसू जरूर आवै ।

कई आदमी 'घेसळा' नै अर 'आडी नै एक कर मानै पण' 'घेसळा' 'आडी' सूं साव न्यारा हैं । 'घेसळा' विषय वस्तु रै साथै-साथै हास्य रस रो एक ओपतो छंद भी है । औ पलक-छिणमें ही हास्य रस रो ससार वसाय देवै । घणकरा 'घेसळा' में तो हास्य रस खुलै मूंडै उंधिज्यो है । 'घेसळां' में हास्य रस रो सुवाद है जिको तो है हीज इण रै परवार कर घेसळां सूं अेड़ा चित्राम भी सांपड़तै सामै आवै जिणमें जमानै री फोरी-मंदी यथवा सावळ सजियोड़ी हालत रो पक्को ठा लागै । नीचै लिख्या 'घेसळा' मनोरंजन करणै रै साथै एक वखत रो सागीड़ो लेखो-जोखो भी देवै:—

(१) भूंगर चाल्यो सासरै, सागै च्यार जणां
भली जिमाई लापसी, वाह रै ! कसी डंडा

अर्थात् भूंगर च्यार जणां नै साथै लेयर आपरै सासरै धकै चाल्यो । मार-गमे वीनै भूख लागी । वठै पण खाली झाड़कीरा पीळा-पीळा वोरिया ही हा । वै सगळा जणां वोरिया खाय'र तिरपत हुयग्या । भूंगर झाड़की नै 'कसी डंडो' अर वोरियां नै 'लापसी' कैयर स्यावासी दीनी ।

एक घाटायत गरीब करसै रो चित्राम भूंगर आपरै नीचै लिख्योड़ै घेसळै में उतारयो है:—

(२) बरसण लाग्या सरकना, भीजण लागी भींत
ऊंट सारीसा बैंग्या, दाळ रो सुवाद आयो ही कोयनी

किसान रो वोदो झूंपड़ो जिकै माथै पूरो फूस नहीं। जिको भी थोड़ो-घोळो फूस हो, वो भी, आंधीरै डूंड सूं पाछो झूपड़ै रै मांयनै पड़णनै लागग्यो। 'आंधी लारै मेह' कैवत मुजब मेह घणो बरस्यो। मेह आवणै सूं झूंपड़ै रै पाल माथै मांडचोड़ो ऊंठ रो चित्राम वैग्यो पण घर धणी नै दाळ रो सुवाद को आयो नीं। पैला तो उण कनै दाळ सिझावण सारू पाणी कोनी हो पछै मेह बूठे सूं चूल्हो बुझग्यो जद पण दाळ सीझती कूंकर ? अर सुवाद आवतो तो कूंकर आवतो ?

नीचै लिख्यै घेसळै में 'भ्रमालंकार' अैड़ी पूरीपाटी सूं उतरयो है कै बीजी जागां स्यात् ही इसो ओठो मिलै। घेसळो है:—

(३) गुवाड़ बिचाळै पींपळी, मैं जाण्यो बडवोर
लाफां मारयो घेसळो, छाछ पड़ी मण च्यार
लुगायां, कांदा चुगल्यो ए ! चिणा री दाळ-सा

आक, ढाक, बड़ अर पीवळ एक जात रा रूंख मान्या जावै। पण आकड़ो आपरै डील में अैड़ा उद्‌भुत गुण राखै, जैड़ा दूसरै रूंखां में जोया ही ज नीं लाधै। आदमी रै मन में जिसा-जिसा विचार पैदा हुवैं, रात री वेळा में बिसा ही चित्राम आकड़ै में दीसणनै ढूक जावै। जाणै, अै सगळा साचेला हैं। गांव री गुवाड़ बिचाळै ऊभै आकड़ै मे भूंगर नैं पींपळी रो भरम हुयो। इतरै ही ज भूंगर नैं आकरा अकडोडिया दीस्या अर अकडोडिया में पेमली बोरां रो भरम हुयो। आक नै बडवोरां री झाड़की जाण'र बोरां खातर लंफरां कानी घेसळो बायो। घेसळै री लाग'र अकडोडियां री छाछ जिसी धोळी अर चीकणी रूई बारै नीसरी। अकडोडियां री रूई में छाछ रो भरम हुयो। भरम ही तो हो, वो. भूतरी चोटी दांई वधतो ही ज गयो। रूई में कांदा रो भरम हुयो। कांदारै भरम में जद वांनै हाथ घाल्यो तो आकरी रूई रै फूंकलां रै लारै लाग्योड़ी दाळ हाथ में आयगी। का तो कवि लुगायां नै कांदा चुगणै रो कैवतो हो, का उणनै सगळै दाळ ही दाळ दीसणनै लागगी।

इणी तरै एक अचूंभो परगट करण आळो नीचै लिख्यो घेसळो देखणै जोग है:—

(४) भिड़क भैंस पीपळ चढी, दोय भाजग्या ऊंठ

गधै मारी लात री, हाथी रा दो टूक
लुगायां, लाठी लावो ए ! गूदड़ै में डोरा घालां

आंधी सूं उड'र (जाणै भिड़क कर होज) भैंसरा मूखा खालड़ा पीपळ रै ऊपर जाय टंगग्या। खालड़ां री फड़फड़ाट सूं दोय ऊंठ चिमक'र दौड़ग्या। आंधी रै कारण च्यारूं कानी अंधारो रळग्यो। अंधारै में किणी पासी सूं आवती लुगायां रै उठै ऊभै एक गधै लात री मारदी जिण सूं लुगायां रै पैरयोड़ै हाथी-दांत रै मुठियैरा दोय टुकड़ हुयग्या। लुगायां नै पण रोस आयगी अर वां आपस में बतळावण करी कै लाठी लावो। इतरै ही लुगायां रो हाथ गधै रै टोल माथै लाग्यो। वां जाण्यो ओ तो बिना डोरा घालयोड़ो गूदड़ है जिकै में डोरा घालणां चाहिजैं।

इण तरै आपां देखां हां कै भूंगर रै घेसळां रो अरथ भी है अर मनोरंजक तो अै हैं जिका हैं ही। आगै री ओळयां में बिना लाम्बो अरथ दियै भूंगर रा घेसळां रा केई पाठ लिख्या है। लोक-साहित्य री चीजां मे पाठाफेर तो रैया ही करै। म्हारै संग्रह रो पाठ है:—

(५) चरड़ चरड़ फळसो करै, फळसै रै आगै दोय सींग
आगै जायर देखूं तो, कुतड़ो पालो खावै है
चरण दयो बापड़ी, गाय री जाई है
(काळै रंग रो टोगड़ियो)

(६) डूंगर सूं गोळो गुड़यो, गधो नाथ तुड़ाय
ल्यावो लुगायां कुहाड़ियो, गूदड़ै में डोरा घालां

(७) भिड़क भैंस पीपळ चढी, कुत्तै तुड़ाई नाथ
डूम पड़यो डागळै सूं, टूटयो ढेढ रो सायळ में सूं हाथ
मारयो बापड़ै बामणरै बेटै नै

(८) भिड़क भैंस पीपळ चढी, लप लप गूलर खाय
उतरयो नहीं जावै तो रांड, घरे आ'र तो कैय

(९) रिड़क भैंस पीपळ चढी, गिड़क तुड़ाई नाथ
डागळै सूं ढाढो ढ'यो, टूटयो ढेढ रो हाथ
घी पावो बामणकै बेटै नै

(१०) चूल्हे लारै के पड़यो, मैं जाण्यो लड़लूंक (नरलूंग)
पूंछ ऊंचो कर'र देखां तो, टावरां री माय है

(चाटू, डोई-काष्ठ चम्मच)

(११) गुवाड़ बिचाळै गोह पड़ी, मैं जाण्यो गणनौर
पूंछड़ो ऊंचो कर'र देखूं तो, दीयाळी रा दिन तीन ही है

(टीपणों—पंचांग)

(१२) कोठी लारै लूंकड़ी कुड़ कुड़ चाबै लूण
हाथ घाल'र देखूं तो, दीयाळी आडा तीन दिन

(पंचांग)

(१३) गाडै माथै भैंस बिकै, लावो बणावां भुरतो
मांय ज गुठल्यां नीसरी, लूण बिना सुवाद आयो ही नहीं

(काळा जामुन)

(१४) हाथी आवै हींडतो, चंदरमा री रात
आगै जायर देखूं तो, काळी दड़ी पड़ी है

(सेळो-झावलो)

(१५) भैंस बियाई भूरकी, आवळिया पर सींग
रावळै कंवर नै बळी भावै, दे भोभर में माथो

(मक्का)

(१६) ऊभो ऊंठ मींगणां करै, तड़ तड़ बोलै ताली में
आवो ए ! लुगायां, डोरा घालां राली में

श्री अगर चंदजी नाहटा रा 'कुरजा' १९६१ अप्रैल में छपायोड़ा घेसळा:—

(१७) खरल नदी खरल वहै, गोडां सूधा ढल
राव्ला कंवर तस्या मरैं, भीटा रो आयो नहीं

(१८) गुवाड़ बिचाळै भैंस जावै, सिंगा बिच खाव
पूंछ उठाय देखै तो, भदोरै रो चारण पोथी बांचै

(१९) चूल्ह लारै हळ पड्यो, मैं जाण्यो नरलूंग
आघो हुयर देखूं तो, वा—वारै ऊनां खीच

(२०) चौहटै में गोह नीसरी, खड़भांड़ियां पलास
आघो हुयर जोऊं तो, अमावस आडा तीन दिन

(२१) गुवाड़ बिचाळै पींपळी, मैं जाण्यो वडबोर
वाऊं लांपरा घेसळा, पड़ै छाछ री पोट

इण तरै घेसळां रै पाठ में घणों पाठाफोर है। जे सगळा घेसळा भेळा हुय ज्यावै

तो बांनै बांच्यां साणोड़ो आणद आवै ।

(1)

भा० वि० मं० शोध प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क, बीकानेर

"चमचो"

डा. भगवानदास किराडू

चमचो तो ऐड़ो हुवै कै मत बूजो बात । म्हारै अन्दाज सूं तो ओ इन्सान नैं तो कांई, भगवान नैं ई चमचागिरी सूं चित्त लियावै । इयांरो ईमान, धर्म, कर्म सै एक मालिस में समावै । हां सा, हुकुम म, थेई माई बाप हो, चाकर हूं, सेवक हूं कैंवते-कैंवते चरण-शरण हो लमलेट लगाय लेवै । बस इनो बेरो पड़नों चईजै कै काम किण री जी हजूरी करणैं सूं पार पड़ै; फेर तो बींरै घर आगै चौबीसूं घण्टा डेरा ई डाल देवै । शायद वीं वगत सांवरियो आयर जे इयांनै मीठी-मीठी बंसीरी सुणावै तो भी कोनी सुणैं । इयां कनै असी वाक्यावली रैवै, जिण रो एक-एक शब्द घेवर-जळेबी दांई अमृत-चासणी पीयोड़ो रैवै । साहब अर अफसरां नैं ऐड़ा आदमी इसा सज्जन अर महापुरुष लागै कै एक तो इयांरै कैणैं सूं वै धर्मात्मा नैं पापात्मा रो फतवो दे देवै । ट्रांसफर, बदळी, नौकरी लगणीं-लगाणीं, कींरी तरक्की कराणी, कींरी रोटी रोजी चौपट करणी आदि काम हुवै तो अै लोग चुटकी बाजणैं सूं पैलां तहस-नहस करवाय नांखे । इसा व्यवहार-कुसळ अर मनोविज्ञानी हुवै कै साब रै जीं री बात होठां तक आणैं सूं पैलां ही वीं काम नैं पूर्ण ई कर नांखै । आगलो आदमी कोई लोह-लक्कड़ रो तो हुवै कोनी, जिको वीं माथै असर नीं हुवै । साब री बात तो छोडो, बांरै सै घर रा सदस्य इयांरै पख में बोलणां सूरू हुय जावै । इयांरी चमचागिरी में बो जादू है कै सै इयांरी हां में हां भरणा सुरू कर देवै । चारा-कांनी इयांरी बड़ाई

रा थान नापीजै। धीरै-धीरै इयांरा पलस्तर सीमेण्ट में घाल्योड़ै हिरमच रै लाल रंग माथै हुयोड़ी घुटाई दांई ऐड़ी चमक लावै कै आंख्यां चकाचौंध हुय जावै। जिकै सूं इयांरो वास्तो हुवै, बींरै आगै वाटर प्रूफ री घड़ी दांई शर्म प्रूफ ज्यूं रैवै। कुत्तो डांट सुण'र दूजी जागां जायर बैठ जावै, घुर घुर करतो। जे कोई स्वान नैं घणों छेड़ देवै तो बो भी आपरी पींडी सावत लेयर घर नीं जाय सकै। पण अै इसा चिकणां माटा है कै कंई असर ई को हुवैनी। आखिर डांट-डपट री भी कोई सीमा हुवै, पण इयांरी तो सीमा मासी बण्योड़ी है।

आज रै जुग में इयांरी जै-जैकार होय रैयी है। इयांरै आगै पी-एच. डी, डी, लिट् सै भुर-भुर रोवै। सै प्रमाण-पत्र चमचा-पुराण रै सामैं आंधी में रूई दांई है। थां में कांई लूण-लखण नां हुवो, पण जे थे ओ अणमोल गुण सीखग्या तो गुणी ही नहीं, महागुणी भी महामूर्ख सिद्ध हुय जावै। जिकै में कोई योग्यता नीं हुवै पण जे बो चमचागिरी-चैम्पियन हुवै तो बो दुनियां री हरेक हस्ती नैं वश में कर लेवै अर आछा-आछा नैं, जिका गगन चड़योड़ा हुवै वांनैं भी धूल चटाय देवै। कई लोगां रो ख्याल है कै भारत री बागडोर ई चमचां रै हाथां में चौबीसूं घण्टा पड़ी दीखै। सारा मन्त्री चमचियां-जर्म्स सूं घिरियोड़ा रैवै। अै जर्म्स इसा हुवैं कै इयांरो इलाज विश्व में कठैई कोनी। चमचा तो परमाणु निर्माता भाभै अर होमी सेठना नैं भी शक्ति-हीण कर छोडचा यानि कै परमाणु री तो कांई जाड़ है कै चमचा रै सामनैं टिक सकै।

चमचा री गति पवन सूं हजार गुणी तेज, शक्ति शिव नैं वस में कर ले इसी। अै इसी दीमक है, जिकी जींवते-जागते आदमी रै काळजै री कोर माथै ई आपरो हिसाब दारो बिठावै। मजाल कांई कै कोई इयां तक पूगै सकै। विज्ञान-आळा डींग हांकै, म्हे चांद माथै चढ बैठ्या, पण इयांनैं पूछो थे चमचा रै साब माथै चड़िया जणैं थांरी कांई दुर्गति हुई! चांद सूं ठेठ पताळ पौंचणों पड़ियो। अै जिकै रै माथै मुलम्मो चढाय देवै, बो तो कांई बींरा हाड भी काळा हुयोड़ा मिलै।

धरम भी चमचा रै वश में रैवै। गुरु तो कांई, जगदगुरु भी इयांरी मुट्ठी में रैवै। हकीकत में इयांरै बैमतलब कैसूं ई लेण-देण कोनी। जे साब री पळटी हुय जावै तो नुओड़ै साब नैं ठेसण बांरै कांई घरे लेग नैं पौंच जाय अर कैवै, 'आपरो दरसण लाभ जित्तो जल्दी ले सकां, म्हारै नैणां री सार्थकता समभां। अवै बै गये साब रै कांनी तो पग कर ही को सूवैनी। जिकै सूं काम पड़ै, वींनैं तो मां-बाप सूं ई ऊंचो दरजो देवै।

चमचां सूं चमच्यां कई गुणी आगै रेवै । घर में मोट्यार सूं तो नट्टी करती वात करै, पण दफ्तर अर स्कूल में साव आगै या हेडवहन जो आगै सर, सर, हां मैडम·········यश मैडम करती थकै ई कोनी, ई बळवूतै सैं सिट्टा सेक लेवै । जूनियर सूं सीनियर बण जाय । इयां री सी. आर. सगळा सूं जोरदार भरीजै । ई सेवा रै प्रताप सूं राजयस्तरीय सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका-पुरस्कार पाय लेवै । चमची फर्स्ट, चमचा सैकण्ड ।

चमचां रै कोई नाक कोनी । अै समय सूं बेरूप चालै कोनी । वांरै वास्तै तो केवल स्वारथ-पूर्ति करणै आळै री हाजरी बजाणी ई सबसूं बड़ो धरम है । हां में हां भरणी पुण्य है । कैवै ज्यूं करणों सबसूं बडो करम है । भलेई थे मचका मुट्ठी दर वालो, जूतां रै पालिस करवाओ, सगळै शरीर रै मालस करवायलो, पण हुकम बठै तक ई सरासी, जठै तक थे इयांरा हाकम हो । प्रीत बठै तक ई निभासी, जठै तक थांसूं मतलब रैसी, थांरै आगै नस अर पूंछ हिलावता रैसी । अर ज्यां पूरो हुयो वास्तो, अर अलग कर लेसी रास्तो । पछै तो थांनै इयां देखसी, जाणै कदे देख्याई कोनी.। अर नहीं तो पैलां वीम तरह रा अणूंता रिमता निकाळता रैवै ।

मनै, चमचां रो जित्तो डर लागै है, वित्तो तो मनै शेर रो भी कोनी लागै । कारण-शेर तो गरजै जणै सावचेत हुयजाऊं पण अै तो इसा घुसपैठिया है कै मिनख नै गळगप्प कर जावै अर वींनै ई वात रो वेरो कोनी पड़ण दे । इयांरै पदार्पण करतां ई बरसां सूं जमियोड़ा लोग अस्सा उखड़ै कै वांरी जड़्यां नै मांय री मांय चमचागिरी चवाय नांखै । थे देखलो, जगह-जगह साव-साव री दुहाई देवता मनख जूण में सांप सूं गया गुजरयोड़ा लोग मिलसी, जिकां रै न दीन है न धरम है; वांरै तो बस एक ही काम है—चमचागिरी करणीं ।

अै साव-अफसर पछै तो माथै ऊपर हाथ धर चौफाळिया होयनैं कूकै पण पछै कांई हुवै । गई वात नैं तो राकेट ई को पकड़ सकैनी । इयांरै लारै वै सदमो खाय-खाय मर जावै । कोई मरै तो सौ बार मरै, अै तो आ कैवंता फिरै, "पैला अकल चरणनैं गयोड़ी ही कांई ? म्हे तो कैसां, कूवै में कूद जा । बुद्धि तो घर री राखणी चाईजै । अवै रो वैठो माईतां नै ।" पछै पोल खोलणी सरू करै । सुणों तो सुणतांई रैय जाओ । म्हैं थारै वो पौंचायो, वीं काम री कीमत आ दीनी ! थां किसो फोकट में काम कोनो ? आ तो म्हांरी कारीगरी

है ।

राजस्थान री आ कहावत पछै बीं चमचै री चपेट खायोड़ा नैं याद आवै "खारी बोलै मायड़ी अर मीठा बोलै लोग ।" चमचां री मीठी बोली खांड दांई पेट री नाड़्यां नैं काट नांखै अर घर आळा री खरी बात दवाई दांई खारी लागै। पछै ठोकर लागै जणैं अकल ठिकाणैं आवै अर विचारै भारवि नै याद करै, 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।' बीं बगत तो चमचां री बात कानां नैं मिश्री अर आतमा नैं मोक्ष दांई लागै । 'चमचिया यार किसके, कुर्सी है पास जिसके ।' वेटा धोळागर जी बत्तीस बरसां रै धोळै चोळै नैं गेरुओ रंगवाय ढोकळी खाय जाय । मूंछ माथै ताव देयर बोलै "बगत री हवा देखर नीं बदळै बो महामूरख । चौमासै में जठै लट्टू जगसी, माच्छर तो बठैई लटूमसी । आ तो सोचणैं समझणैं री बात है । सांठै रो रस पीणैं रै बाद चूंथै री पूजा करणैं में कांई साव । कालै बांरी वेळा ही, म्हे बां कांनी हा । आज बांरी बगत बुई गई तो हाथी री पूंछ पकड़ वैवण में कांई सार ? सीरो खायां दांत कांई, जे जाड़्यां घसीज जाय तो कांई मांभर सूनो हुवै ? सीरै नैं सीधो गोळा वणाय-बणाय पेट में गुड़काय लेसां । दुनिया तो म्हांरी प्रगति देख'र बळै । आ तो आप-आप रै दिमाग री ऊपज है । बगत माथै गधै नैं दादो ई वणाय लेवां तो कांई बिगड़ै सा ? म्हांनैं देखो किसो ऊंचौ पोस्ट मिलगो ! अवै, कांई गयो घरां सूं, जे चौबीसूं घंटा धूप-दीप-नैवेद्य चढाय आरती की तो ? जे म्हां साव नै पंपोळाय'र काम वणाय लियो तो कांई गुनाह कियो ? वीं दिन साव रै छोरै री बरस गांठ माथै सौ-पच्चास लगाया तो कांई घाटो रैयो ? जमीन में भी पैला बीज डालणैं सूं ई फसल लहरां लेवै । ठगाया बिना कुण ठाकुर बाजै ? चमचागिरी कोई ऐब कोनी, आतो आज रै जुग री अचूक ओषधि है, रामबाण सूं ई कई गुणां तेज है, तेज । अंधारै रै मांयनै आ नीति-लता इसी फळै-फूलै कै बेरोही को पड़ैनी । कई स्वांग रचाणां पड़ै । साव सांमै डण्डोत करणी पड़ै । बड़ो काळजो चाईजै । धरती सूं ज्यादा सहन शक्ति चाईजै । कांई सूं कांई बणनो पड़ै अर 'क' सूं लेयर 'ज्ञ' तांई मीठी बोली री चासणी पावणी पड़ै, गर्दन नैं हमेसां विरछ री डाळयां दांई झुकाणी पड़ै । सर्दी-गर्मी बरखा आंधी रै आगै हुकुम बजाणों पड़ै जणैं कठैई जायर म्हांरो ऑयल पैन्ट चढै । रंगारै नैं कित्ता पापड़ वेलणां पड़ै, जणैं जायर कठैई रंग माथै रंग चढै । आ तो साचो सुणों जणैं एक अनूठी साधना है। साधना, हर समस्या नैं सुळझाणैं री निराळी तपस्या है, तपस्या ।

⊙ **श्री नेहरू शारदा पीठ महाविद्यालय, बीकानेर ।**

सांच रै चक्कर में

श्री विष्णुदास गोयल

एकरूं विधाता एक एड़ी स्रस्टी रची जिण मांय कोई भी झूठ बोलण आलो नहीं हो । झूठ बोलण री बात तो छोड़ो कोई मन सूं भी कूड़ो (झूठो) नीं हो ।

आ स्रस्टी रचनै विधाता घणा राजी होया कै अबै ठीक रैवेला । पिण कुदरत नै की और इज मंजूर हो !

मिनख जद तांई टाबर हो जितरै तो ठीक रह्यो पिण ज्यूं-ज्यूं बडो होवण लागियो, घणी मुस्किल आवण लागगी ।

एकरूं एक मिनख दूजै मिनख रै घरै गयो । मिनख रै घर में उंण टैम की नीं हो, नै वो विरखा री वगत होण सूं खेत में जावण री त्यारी में हो । उंण नै उंण मिनख री आवणो खारो जैर लागियो । वो आवतांई आदमी ज्यांइ 'रांम-रांम' करियो, त्यांइ छूटतांइ वो बोलियो कै—

"थूं क्यूं आयो इंण वेला अठै । थंनै ठा' है मैं तो खेतां जावण री त्यारी में हूं, मैं' आवण आळो है । अबार नीं पौंच्यो तो सारी खेती रुळ जायली । थूं दुस्ट कठा सूं आय ग्यो ?" ऐ रूपाळा बोल वो बोलियो हो क्यूं कै बोलणो तो वोइज साच-साच हो जिको हिवड़ै में हो, ओइज तो उंण स्रस्टी रो नेम हो । फेर वो आपरै मन री भावना रै मुजब इज कैयो कै—

"थारै गिटण नै मैं अबै कठा सूं लावूं, म्हारै घर में तो दाणोइकोयनीं ।"

आ सुणतांइ वो बोलियो—

"थारै घरै आवतोइ कोयनीं पिण कंई करूं मैं तो थंनै राजी करण नै आयो हो क्यूं कै थंनै राजी करनै, पोटाय नै की रिपिया ले आवतो, म्हारो विचार ऐ रिपिया पाछा देवण रो नीं हो । थारै घरै तो दाणांइ कोयनीं थूं तो

साव भिकारीज निकळ्यौ ! "

आ कैतांइ पैंलौ आदमी मन में गाळ्यां देवण री जगै चौड़ै आम गाळ्यां देवण लागग्यौ अर दोन्यूं आपस में गूंथीज ग्या। खूब लड़ाई-भिड़ाई वैई नै अखीर में एक आदमी की फोरौ पड़तौ हो सो वौ बोल्यौ—

"मैं फोरौ पड़ूं हूं जिण सूं लड़ाई बंद करणौ चावूं हूं। मोकौ मिलतांइ की तागत आ जाइ जद पाछौ आयनै लड़स्यूं।"

दूजौड़ौ बोल्यौ—

"अबै मैं थनै छोड़ूं नै पाछो आयनै थूं मनै मारै ऐड़ौ काम इज नीं राखूं।"

आ कैयनै वौ उंण री गाबड़ भांग दी।

विधाता मन में पिस्तायौ कै ऐड़ो स्रस्टी तौ ठीक नीं रइ पण तई वौ मन में थ्यावस राखी।

(२)

छोरौ गरुजी कनै भणन नै पौंच्यौ नै उंण रौ बाप बोलियौ—

"गरुजी, इंण नै आपरी सेवामें लायौ हूं।"

झट सूं छोरै कह्यौ—

"नीं गरुजी, मनै तौ भणन नै लायौ है क्यूं कै इंण बिना कांम नीं चालै, इंण बदलै आपनै कीं न कीं म्हारौ बाप जरूर देला, और की नीं हुवैला तौ आपनै एक दो बार म्हारै घरै रोटी खवाय देला। मनै सेवामें नीं लायौ है आ बात साव झूठी है।"

गरुजी वाचळ छोरा री तरफ देखियौ।

(३)

कैई जागां तौ समस्यावां घणी मोटी आयगी।

दुकानदारी तौ चालणीज बंद होयगी सा। एक जिणौ एक दुकान माथै की लेवण नै गयौ नै पूछियौ—

"घी ताजौ है?"

"घी तौ है पिण ताजौ नीं है औ तौ साल भर रो तौ जरूर पुराणौ हुवैला, वासंण लागग्यौ है! खासौ वास है!!"

"पापड़ चोखा है?"

"पापड़ तौ है पिण उणां में सस्ता होवंण सूं मूंगां री जगै मटर रौ आटौ

मिलायोड़ो है नै काळी मिरचां री जगै सस्ता एरंड काकड़ी का बीज घणां मिला-योड़ा है ! "

"बणियोड़ा तो साफ सफाई सूं है क नइं ?"

दुकानदार बोल्यो-"सा, बणावण वाळी तो सस्ती मजूरी आळी लुगायां जोवणी पड़ै ! वां बापड़ियां रै कठै सफाई पड़ी है ! मैला कपड़ा पैरयां वै काम करै । बीच में वांनै कंई काम करणां पड़ै ! हाथ दूजा धोवै करै जित्तै कंई कामां मूं खोटी हो जावै !! "

आपइ सोचो कै इंण जवाब रै पछै बापड़ै गिराक रा कंई हीया फूटोड़ा हा, जिको वो ऐड़ा पापड़ नै घिरत लेय नै जावतो ।

और साच मानजो सा कै साच रै उंण जमाना में साराइ लोग भूखा सोवण लागग्या ! मानखो घणो दुखी होयग्यो !!

(४)

पिण हाल तांइ विधाता सैंठो रह्यो ।

सांच रो जोर इतरो वधियो कै लोगां नै बोलण री भी मुस्किल होयगी—

आपरी मां नै तो लोग मां कैवता पिण दूजी लुगायां नै कांई कैवै ! 'डोकरी आगी है ।' सुंणतांइ डोकरी लड़ण नै आ जावती । मिनख नै आदमी या मिनख कैवणा सरू होया ।

'ऐ मिनख, कठी जावै है ? ' 'ऐ छोरा, क्यूं ऊभो है ? '

जिकां रा मोट्यार चालता रह्या हां वां लुगायां री तो हालत इज बिगड़गी । लोग वाग चौड़ै धाड़ै वांनै रांड कैवण लागग्या नै कांणा नै कांणो, नै आंधा नै आंधो बोळा नै बोळो कैवता-कैवता कंई वार खूब माभारत होवता-होवता बच्चा !!

नै एक दिन सारा लोग दुखी होय नै बिरमाजी कनै पोंचिया नै अरज करी—

"हुकम ओ सांच तो म्हां लोगां नै मार नाखसी ! "

विधाता कई—"हां साच नागो तो रैवणो इज नीं चाईजै नै उणीज दिन सूं लोग कैवै कै बिरमाजी रा मूंडा च्यारूं दिस में होयग्या, ताकै वै अेक मूंडा सूं की न दूजै सूं की कै सकै ।

और तद सूं इ दुनिया में सांच चालै पिण नागो सांच नीं, अणूंथो सांच सदाई भांडीजै नै भूंडीजै !

⊙

नौकर सैं मतल्यो कदे नौ सैं ज्यादा काम

श्री बुद्धि प्रकाश पारीक

"नौकर" ऊं उपाधि को नांवं छै, ज्यो काम करयां का बदला मैं बंध्योड़ी तनखा लेवाळा आदमी नै दी जाय छै । चांईतो वो घर मैं चूलो-चांको करवाळो हो'र चाइ बजार मैं लेखो-जोखो । वो ऊंचा अधिकारी को सहायक भी हो सकै छै'र जनता को विधायक भी । सैंर का सन्तरी, सैं ले'र मुलक का मन्तरी तक काम करयां की तनखा ले छै, ईं वास्तै पद भलाईं बांको क्यूं भी हो, पण कहावैला नौकर ई ।

नौकर को पद इतरो प्यारो'र निशपद छै' क सुरग का देवता भी ईं कै ताईं धरती पर उतरयावा नै छट पटाता-है छै । ईं मैं सिवाय फायदा कै नुकासान को तो नांवं न्होरो ई कोनै । वीन्द मरो चाई बीनणी, नाई का टक्का मैं तो रोळी-दावो छै ई कोनै' क ?

एक जमानो छो, जद लोग या खेळो करै छा'क

"नौकरी धर टोकरी में, घास खोद खाइए,
और खोदै आस-पास, आप दूर जाइए ।"

पण, आजकल तो धरती पर सौ मैं सैं निन्याणवैं आदमी नौकरी करवा नै ई निपजै छै । ज्यां मैं सैं अठ्यासी तो इन्टरव्यू मैं ई अटक'र पटक खा जाय छै, अर दो कोई न कोई जुगत सैं दरवाजा मैं सटक'र सीटां पर छा जाय छै । बाकी बच्चा नौ, ज्यो पड़ता-गिरता भागती बसकी खिड़की कै लटकवाळां की नियां नौकर को पद पा जाय छै ।

अब सवाल यो अठै छै'क जद आपां एक टका की हांडी नईं नींकां ठोक-वजा'र परख्यां-पजोख्यां बिना घर मैं नै वपरावां, जद आपणा घर-परिवार नै संम्हाळबा की पूरी जवाब दारी सोंपती वेळयां एक अणजाण आदमी की नींकां

छाण वीण नै करता होवां, या तो हो कोनै सकै, पण केई बर म्हैंतो आपणी छाण-वीण में क्यूं खोट-कसर रै जाय छै'र सै कोई जाण-पिछाण कां'क लाड-विलगती कां का खैवा-सुणावा'क दवी में आ'र आपां अजोगा आदमी नै नौकर राखल्या छां, जींको फळ आपांनै पाछै भोगणू पड़ै छै ।

नौकर एक दोगलो पद छै ज्यो 'नौ' अर 'कर' यां दो शब्दां का मेळ सैं बण्यू छै । यां में सैं 'नौ' तो गिणती का सब सैं बड़ा आंक को नांव छै अर 'कर' को एक अरथ तो छै हाथ अर दूसरो छै काम । ई वास्तै नौकर को अरथ हुयो नौ हाथ हाळो, ज्यो नौ काम समचै कर सकै । कैवत में ही गै छै' क—

"नौ काम कर'र् चालै, सो नौकर,
तेरा मैं हाथ घालै, सो जौकर ।
अर आठ कर'र ई अटक जाय, तो
मारो अस्या निकरमा कै नौकर ।।"

ज्यां कै तेई नौकर राख्यां जाय छै, वां नौ कामां नैं नो सब जाणै ई छै, पण ज्यो काम नौकरां सैं नै करांणा चायजे वांनै भी जाण ल्यो । वांमैं सैं दसवूं काम छै दोस्ती बांध वो, ग्यारवूं गुण-गान गावो, बार वूं बुराई करबो'र तेर वूं तरणा वट्टाक् ।

जैयां नौ सैं कमती काम करवाळा निकरमा नौकरां नैं ठोकर मार'र भगा देवा वेई आपणा वड़का वेखटकै कैगा छै, उय्यां ई नौ सैं ज्यादा काम करावा वेई भी मालिकां नै साफ-साफ मनी करगा छै । वांको कैवो छै'क नौकर नौ काम करै जद ताईं, नै तो मालिकां की आंख्यां में अखरै र् नै हिवड़ा मैं पघरै; पण ज्यूं ई वो आपकी हद नै पार कर'र् अगाड़ी वढ़ जाय छै त्यूं ई मालिक का मांथा माळै चढ़'र थापड़ी थाप्यां विना कोनै-हे । ज्यूं ई नौकर नौकामां की नाव सैं उतर'र् दसवीं दोसती का दासा माळै पग मेल दे छै, त्यूंही वो ग्यारवां गुण-गान कै गैलै लाग'र् वाखीं बुराई कै बारणै विना पूछ्यां ई जा पौंचे छै । अब तेर'वीं तरण वट्-टाक की त्यारयां हुयां पैली ही चौद'वूं चेत कर'र पंदरवां पावडं सैं पैंडो छुडा ले, तो भलो-भाग समझो, नातर सोळवीं सभावां सरू हो'र सतरवूं सत्यागिरै, अठारवीं हड़ताळो'र उन्नीसवां अन्सनां जस्या वीसां ववन्डरां की सांकळयां-सी जुड़ती ई चली जाय छै, ज्यांका जाळ सैं वापड़ा मालिक नै भगवान भी चावै तो कोनै बचा सकै ।

दूसरै कानी देखां, तो नौकरां नै भी कोई अस्यो वावळो कूकरो तो काटचो

कोनै छै' क नौकरी की तनखा ले'र नौकरी करै । पण आज-काल तनखा सैं भी ज्यादा ऊपर की आंवद को धारो अस्यो चाल पड़्यो छै'क जींका लालच मैं आ'र नौकर आपका मालिकां का नै'ला पर दै'लो चेपबो'र औसर पड़तां गुल्यां कै घरां वेगमां तकनै भेजबो भी बुरो कोनै समझै । आजकाल वो जमानू तो रह्यो कोनै'क् जद लोग आपका दोसांनै दूर करबा'र सुभावां नै सुधारवा वेई-"निन्दक नियरैं राखिये आंगन कुटी छवाय ।" हाळा सिद्धान्त नै सिरै मान'र चालबो करै छा । एक धोबी का खैवा सैं सीता जसी सतवन्ती नार नै बनोबास दे देवाळा रामजी'र महाकवि विहारी की "अली कली ही सौं बंध्यो, आगै कौन हवाल ।" हाळी लीकटी नै बांचतांई आपकी नई नवेली राणी का प्रेम को फन्दो तोड़'र ऊका म्हैल को मोह छोड़'र राज-काज सम्हाळबा नै दरबार मैं आ बैठबाळा म्हाराजा जैसिंह जी जस्या लोग तो अब दीया ले'र हेरबा सैं भी कोडै कोनै लादणा । अब तो सब लोग आपकी बड़ायां का भूखा रैगा । बुरा सै बुरा काम करबाळा भी याही चावै छै'क वांकी धापवां बड़ायां होय । ईं वास्तै वै नौकरां की जगां चमचा पाळबो चावै छै अर वै भी चोखा सैं चोखा'र मजबूत सैं मजबूत । पण वां हीया का फूटा'र आंख्यां का आंधां नै या कुण समझावै'क यां चमचां का बांध्योड़ा बड़ायां का पुळ अस्या काचा होय छै'क् पग मेलतांई ढै जाय छै ? पार पौंचबा का सपना अधूराई रै जाय छै'र प्रशंसा मैं फूल्योड़ा मालिक मझधार मैं ई वै जाय छै । पण राजा जसी पिरजा'र मालिक जस्या नौकर । जद मालिक ही खुसामद्यां का भूखा रैगा, तो बापड़ा नौकरां कोई कांई दोस ? वै भी नौकरी का नौकामां का आखत पेड़ा सैं पैंडो छुड़ा'र सगळा मनोरथ सिद्ध कर वाळो एक ही रामबाण नुसखो सीख लीनू क धणी खै सो कीजे'र बळती मैं पूळो दीजे ।

मालिक दिन ने रात बतावै तो तारा चिमकाणा ।
और रात नै दिन खै दे तो सूरज उगा दिखाणा ॥

या कला आज काल इतरी तरक्की कर चुकी छै'क चमचां का चक्कर सैं बापड़ी भगूनी की तो कांई चलाई ? भगवान तक कौनै बच पायो । ज्य चमचो जितरो ज्यादा चतर हो छै वो भगूनी नै उतरी ई ज्यादा कुचर'र खोखली कर नाखै छै । क्यूंक हर बात का दो पख हो छै । आधी दुनिया मैं दिन होय छै तो आधी मैं रात । रात भी आधा म्हैना मैं उजाळी तो आधा मैं अंधेरी । अंधेरी रात मैं बोल बोळा घघू दिन मैं दीखै कोनै'र दिन मैं मिलवाळा चकवा-चकवी रातनै बिछड़्या बिना कोनै-है । उय्यांई ज्यो चमचा डेगच्यां भगूनां मैं सैं

माल भर'र सींधा-सींधा निकळै छै. वै थाळ्यां-कचोळ्यां मैं पुरस्ती वेळ्यां ओम्रा हुगां विना कोनै हैं। ज्यो नौकर मालिकां का मूड़ागैं बड़ायां का बिछावणा बिछ्या तार राखै वै ही वां की पूठ पाछै बुरायां की विरखा करता भी चूकै कोनै ।

या विरखा तीन तरै सैं बरसै छै—एक तो मन सैं दूसरी वचन सैं अर तीसरी करम सैं । मन सैं करयोड़ी बुराई बुरायां की गिणती मैं कोनै आवै क्यूंक या एक तो कर वाळा का मन कै मांईं नैई-है छै. मूड़ा कै बारानै कढ'र गुण-वाळां का कानां मैं कोनै बड़ै जींसैं मालिकां माळै क्यूं बुरो असर कोनै पड़ै । बुरो असर पटकवा बेई या बुराई करी भी कोनै जाय । मन सैं बुराई वो ही करै छै ज्यो मालिक को हित चावै छै अर मन सैं करयोड़ो काम जरूर पूरो पड़ै छै ।

वचन सैं करयोड़ी बुराई नै नैतो बुराई गई जा सकै'र नै बड़ाई ई । या झूंठी भी हो सकै छै'र सांची भी । ईं बुराई को करबाळा'र गुणवाळां का मन बैलाव कै सिवाय क्यूं अरथ भी कोनै निकळै । क्यूंक वचन सैं बुराई कर-वाळा मन को डरपोक होय छै । वो बुराई करै तो छै पण साथ ही गुणवाळां नै या भी खैंदे छै'क तूं कोई नै कीजे मन्नै अर मैं तो म्हारो नांवं लीजे मन्नै । अब थे ई बतावो ईं तरै करयोड़ी बुराई कैंयां कोई को बुरो भलो कर सकै छै ?

सब सैं बुरी बुराई तो वा छै ज्यो करमां मैं करी जाय छै । नै तो या मन सैं सोची जाय अर नै मूंड़ा सैं करी जाय । वलकी विशेसता या'क या बुराई-बुराई होतां सातर भी मालिकां नै बुराई-सी नै लाग'र ओठी बड़ाई-सी लागै छै । नौकर मालिकां का मूड़ा गै खुल्लम-खुल्ला बुरायां करबो करै, देखबाळा मालिकां की मूरखता माळै हंस-हंस'र ताळ्यां बजावो करै'र बुराई सैं नाक चढा-चढा'र थू-थू करबो करै पण मालिकां कै क्यूं समझ मैं ई कोनै आवै'र वै वानै आपकी बड़ाई मान'र ओठा मन मैं स्यावो करै । खैंवा को मतलब यो'क करम सैं करयोड़ी बुराई गुड़का गलेफ मैं लिपटयोड़ी ज्हैर की गोळी की तरै गला मैं अटक्यां बिना राजी-राजी उतर जाय छै पण पेट मैं पौंच्या पाछै आपको असर दिखायां बिना कोनै-है । वानगी वेई वां मालिकां नै ढकणी मैं नांक डबो'र मर जाणू चायजे, ज्यां का नौकर दूसरां कनै मांग'र बीड्यां पीता होय, वां सरकारां नै समाप्त हो जाणू चायजे ज्यां का करमचारी जनता सैं रिस्वत खाता होय, अर ऊं राष्ट्र कै तांईं तो कही ही कांई जाय जींका राष्ट्रपति गणतन्त्र दिवस जस्या तिवार माळै जनता कै नांवं सन्देस देबानै भी विदेसी भासा को मूड़ो ताकता होय ? ○

२४८६ २० पुरानी बस्ती, जयपुर-१

राजस्थानी भाषा अर साहित्य

श्री अगरचंद नाहटा

राजस्थान भारत रो गौरवशाली प्रांत है। अठै रै वीरां, सतियां, अर संतां री गौरव-गाथा जग-प्रसिद्ध है। महाराणा प्रताप अर भामाशाह, क्षत्रिय राणी पद्‌मिनी, भक्त मीरां अर संत दादू वगैरै नै कुण को जाणै नी ? राजस्थान साहित्य, कळा, इतिहास अर पुरातत्त्व सगळी दृष्टियां सूं आप रो विशेष महत्त्व राखै है। अठै रा आबू, राणकपुर तथा जैसळमेर वगैरै रा जैन मंदिर, मोकळा दुर्ग, बावड़्यां आदि स्थापत्य अर मूर्तिकला री दृष्टि सूं घणो महत्त्व राखै है, तो अठै री मोकळी चित्र शैलियां ई सर्वविदित है। रंगीलै राजस्थान री वेशभूषा, अठै री पागड़्यां अर ओढणा वगैरै इत्तै भांत-भांत रै रंगा अर ड़िजाइनां रा है कै दूजै प्रांतां रा अर विदेसां रा लोग उणां नै देखर देखता ई रैय जावै। मूर्ति-निर्माण सारू जयपुर प्रसिद्ध है तो सफेद भाठै रै काम सारू मकराणो। राजस्थान रै हस्तलिखित ज्ञान-भंडारां में सुरक्षित प्राचीनतम, सूक्ष्माक्षरी, सुंदर आखरां री अर, भांत-भांत री शैलियां में लिख्योड़ी हस्तलिखित प्रतियां आज ई लेखन-कळा रा ओपता नमूना सामनै लावै है। हजारूं दुर्लभ ग्रंथराज इण ज्ञानभंडारां में संभाळ'र राख्या गया है।

मुगल साम्राज्य री बगत राजस्थान रा वीर बंका जवानां अर राजावां आप री स्वतंत्रता अर मंदिर-मूर्तियां वगैरै सांस्कृतिक संपदा रै संरक्षण सारू आप रै प्राणां तक री बाजी लगा दी ही। अठै री नारियां आप रै सतीत्व री रक्षा सारू धू-धू करती चितावां में कूद जावती। अठै रो 'जौहर' दुनियां भर में निराळो आर नामी रैयो है। इण भांत री महिमावाळै राजस्थान री महिमा घणै सूं घणै प्रकाश में आवै इण सारू राजस्थान सरकार नै योजनावध ढंग सूं ठोस काम जळदी सूं जळदी करणो जाहीजै। सागै-रै-सागै अठै रै व्यापारी

वर्ग नै, जिको कै सगळै भारत में ई नहीं विदेसां में ई फैल्योड़ो है, भी आपरी जलमभोम रो भविष्य ओर ऊजळो वणावण सारू सदा-सदा इण दिसा में चेष्टा में लाग्यो रैवणो चाहीजै। सागै ई पत्रकारां अर साहित्यकारां रो भी ओ फरज है कै वै अठै री विशेषतावां अर महानता दुनियां रै सामनै उजागर करै।

मानव री सबसूं बड़ी शक्ति है—मन। अर बुद्धि नै आपरै विचारां री अभिव्यक्ति देवण सारू 'भाषा' अेक सबळ माध्यम है। इण सूं मानव अद्‌भुत आविष्कार, विचार-विकास अर साहित्य री रचना कर नै आप री सर्वोपरिता सिद्ध करी है। प्राचीन काळ सूं आज ताईं मोकळी बोलियां रो विकास हुयो अर होळै-होळै उणां में सरावणजोग फोर-बदळ हुतो रैयो। जन भाषा नै प्राकृत अर सुसंस्कृत् अर्थात् परिमार्जित नै नियमां में बंध्योड़ी भाषा नै संस्कृत कैवै है। प्राकृत सूं अपभ्रंश अर उण सूं उत्तर भारत री सगळी भाषावां रो विकास हुयो। उणां में राजस्थानी भी है जिको नै अपभ्रंश री जेठी बेटी कैयो जावै है। संवत ८३५ में जालोर में रचित 'कुवलयमाला' में उण वखत री १६ बोलियां अर प्राचीन व्यक्तिगत विशेषतावां रो जिको विवरण मिलै है उण में 'मरू भाषा' अर 'मरू प्रदेश' भी अेक है। राजस्थान रो सब सूं खास प्रदेश 'मरू' या 'मारवाड़ प्रदेश' रै नांव सूं जाणीजै है। इण कारण अठै री बोली रो नांव भी 'मरू भाषा' हुवणो स्वाभाविक है। राजस्थान पैली मोकळा टुकड़ां अर राज्यां में वंटयोड़ो हो। जद ओ 'राजस्थान' विशाल प्रांत रै रूप में सामी हुयो तो अठै री भाषा रो नांव ई 'राजस्थानी' प्रसिद्ध हुयग्यो जिको मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती आदि बोलियां रो सम्मिलित रूप है। इणां में मारवाड़ी आप री पुराणी परंपरा अर साहित्य री मुकळायत री दृष्टि सूं सगळयां सूं वेसी प्रभावशाली है।

राजस्थानी भाषा रो व्यवहार राजस्थान ताईं ई सीमित कोनी, मालवी भी इणी रो अंग है। अर १५ वीं सदी ताईं तो गुजरात अर राजस्थान में अेक-सरीसी भाषा वोलीजती ही। इण कारण उण वखत ताईं रै साहित्य नै गुजरात वाळा प्राचीन गुजराती रो अर राजस्थानी वाळा प्राचीन राजस्थानी रो साहित्य बतावै है। वियां मारवाड़ रा राजस्थानी लोग सगळै प्रातां में वस्योड़ा है अर उणां रै घरां में आज ई मातृभाषा वोलीजै। इण तरै कित्ता ई करोड़ लोगां री बोली राजस्थानी ई है।

इण भाषा में कोई दूसरी भाषा री बनिस्पत घणा मोकळा शब्द है, वेसी मुहावरा अर कहावतां है। राजस्थानी भाषा रा केई व्याकरण-ग्रंथ प्रकाशित हुय चुक्या है अर कहावतां रा ई केई संग्रह छप चुक्या है। मुहावरां रो कोश मैं ही त्यार करवायो हो पण हाल-तांई अप्रकाशित पड़्यो है! राजस्थानी शब्द कोश भी केई प्रकाशित हुय चुक्या है। उणां सूं इण भाषा री महानता, अर विशेषतावां रो पूरी तरै पतो लाग जावै है। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली इण नै स्वतंत्र साहित्यिक भाषा स्वीकारी ज है।

राजस्थानी भाषा रो साहित्य भी घणो प्राचीन, विशाळ अर समृद्ध है। इयां तो ११ वीं सदी रा राजस्थानी दूहा वगैरै मिलै है पण १३ वीं सदी सूं तो केवण जोग स्वतंत्र रचनावां मिलण लागै है जिकी कै बिना कोई व्यवधान रै हरेक सदी रै हरेक चरण री गद्य अर पद्य दोनूं विधावां में मिलै। इत्तो पुराणो अर मोकळी विधावां रो काव्य अर विशाळ तथा महत्त्वपूर्ण गद्य दूजी कोई प्रांतीय भाषा में को मिलै नी। हिंदी भी केई बातां में उण री बराबरी को कर सकै नी। जीवनोपयोगी हरेक विषय री घणी ई रचनावां राजस्थानी गद्य अर पद्य में मिलसी।

वीर रस सारू तो राजस्थानी साहित्य सगळी भारतीय भाषावां सूं सिरमौर, पण नीति, भक्ति आदि दूजा विषयां अर शृंगार रस रै साहित्य री भी इण भाषा कोई में कमी कोनी। दूहा अर पिंगल गीत तो हजारूं री तादाद में मिलै है। रास, प्रबंध अर चौपाई काव्य भी हजारूं री संख्या में दीखै है। प्रेम कथावां भी गद्य अर पद्य में घणी ई लिखीजी। अठै रै संतां रो लिखियोड़ो उद्‌बोधक साहित्य भी लाखूं श्लोकां में परमाण है। राजस्थान रा घणा ई संत संप्रदायां रो दूजा केई प्रांतां में भी प्रचार अर प्रभाव दीखै है।

जैन कवियां अर विद्वानां राजस्थानी भाषा अर साहित्य री सगळां सूं वेसी सेवा करी है। चारण कवियां रो तो काव्य-निर्माण में जन्म सिद्ध अधिकार मानीजै है। इण कारण चारणी साहित्य भी बहोत उल्लेख करण-जोग है। राजस्थानी लोक-साहित्य री विविधता अर विशाळता भी घणै महत्त्व री है। इण छोटै-सै प्रबंध में राजस्थानी साहित्य रै महत्त्व रो वर्णन कोनी कर्‌यो जा सकै। म्हारै कलकत्ता-विश्वविद्यालय रै छह भाषणां रो संग्रह 'राजस्थानी साहित्य की गौरव पूर्ण परंपरा', प्राकृत भारती सूं प्रकाशित 'राजस्थान का जैन साहित्य', डा०

मोतीलाल मेनारिया रो 'राजस्थानी भाषा और साहित्य', डा० पुरुषोत्तम मेनारिया रो 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास', डा० हीरालाल माहेश्वरी रो 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास,' 'परंपरा' रा आदिकालीन राजस्थानी साहित्य', 'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य' अर 'राजस्थानी लोक-साहित्य' रा विशेषांक वगैरै घणा ई ग्रंथ इण बाबत में प्रकाशित हुय चुक्या है। राजस्थान सूं मरु भारती, राजस्थान भारती, शोध-पत्रिका, वरदा, मरु श्री, विश्वम्भरा वगैरै मोकळी शोध पत्रिकावां निकळै है। राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) वगैरै संस्थावां भी राजस्थानी भाषा अर साहित्य री भरपूर सेवा करण में लाग रैयी है।

⊙

नाहटो की गुवाड़, बीकानेर

लिखारां सारू

卐 "जागती जोत" सारू आपरी रचनावां आछै ऊजळै आखर नें मांडर भेजो।

卐 लिपि रो ध्यान राखणो घणो जरूरी है।

卐 रचना पाछी मंगावण सारू टिकट लाग्योड़ो लिफाफो जरूर भिजावण री क्रिपा करावो।

卐 "जागती जोत" रै अंकां'र उणमें छाप्योड़ी रचनावां रै बाबत आपरा विचार सम्पादक अथवा कार्यालय में जरूर लिखावो।

दियाळी फेरूं आयगी !

श्री शिवराज छंगाणी

अण गणित
आंसू ढळकाय'र रात
सोयगी
सूरज रै मूंडै री लाली सूखगी
दिन पीलरो पड़ग्यो
खेतां री छाती फाटगी
धोरां रो चैरो धोळो धफ्फ
हजारां जीवां रै हिरदै री धड़कण बंद
अकाळ री काळी-पीळी आंधी
उडाय लैगी सागै
भूखां, तिरसां विलेखतां
मिनखां री आंतड्यां हड्डियां अर रोढ़ेर
अर
बुझायगी अेक ई झपटै सूं
रेगिस्तान रै कई गांवां रा दिवला
दियाळी फेरूं आयगी
अबै
कुण जळावै दिवला !

⊙

नत्थूसर गेट,
बीकानेर

माथे रो बहम

श्री सरल विशारद

आ बात जचे कोनी
थे सारा सेणा हुग्या हुसो
कांई न कांई तो करता हुसो
कांई न कांई कुचमाद रचता हुसो
सिचळा बैठण रै दिन
थे जामया ही कोनी
भाटा फैंकणिया भाटा फैंकसी
बोलियां ईयां बोलसी
शेरनी रै स्याळा थोडे ही हुसी
सेण पणों सुयोंसी
आ सूमड़ो हुयोंसी
धोडे ही जासी
वाको बंद कियां
जीभ थोडी ही रूकसी
आ बात जचे कोनी
कि सारा सावळ बैठ्या हुसो
कांई न कांई तो करता हुसो
सारा कागला सूरदास बण
सूत्र वांचे
थे भी कांई वाचता हुसो

मूंडो आडी पाटी बांधली
पण वड़-बडावतां तो हुसो
थांने जाणू हूं
ओळखूं हूं
कांई न कांई तो करता ही हुसो
मूंडे सारू कांच–कांगसिया
घर-घूंझे में राखता ही हुसो
कांई न कांई तो करता ही हुसो
आ वात जचे कोनी
थे सारा सैणा हुग्या हुसो

⊙

चौधारियों की घाटी,
बीकानेर

"बांझड़ा सुपना"

—कु. भाग्य रेखा बोहरा

म्हारी उणींदीं पलकां माथै
आय'र ठेरग्या है.
'बांझड़ा सुपना' ।
जिकारैं सारे
जिया हैं म्हे
कई अणचायीजता पळ,
मुरदळी आसावां मागै ।
गिटकी है
कागदां मायली स्याई नै
कड़वी कसायली दुवायां ज्यूं ।
वदलाव री आसा में
सैई हैं
अयोगी सत्ता नै ।
पण वीरा
ओ म्हारो अभागो देस
जिको सैई है
रामराज री आस में
रावण री यन्त्रणा ।
भरत रै सनेव री
कळपणा में
जैचन्दा रा
ताक्या हैं मूंडा ।'
सूत्यो कोयनी
फगत संवेदनावां री मार'ऊ,
हुयोड़ो है सूनो ।

गळत हाथा 'ऊं' डोल्योड़ै बायरे पाए,
लाम्पो देवै
आपरै इज ठोड़ नै ।
पण म्हैं जाणूं हूं
बी ऊंचली मैंड़ी रो चानणो,
म्हारो हैं
जिको अडाणै मैल्यो हैं म्हैं
पेट री लाय पाण ।
पण म्हारा पगां री जेवड्यां
अणबुलायेड़ै बुढापे रो
भार ढोंवता,
म्हारा मायत' ।
टाबर पणै री अर्थी उठायोड़ा
ए टाबर ।
अणबूझैड़ी आड़्यां सुळझावती
जिदड़ी ।
पण भाईड़ा सेवट के 'ऊं' थनै ।
श्रो मैसूसणै रो फरक हैं ।
ढिगली मांय छुप्योडी
चिणगारी नै तो फूंक देवणी पड़सी ।
सूत्योड़ै जुगबोध नै
चेतना री आंधी 'ऊं'
झंझोड़नो पड़सी ।
मसाणा री आंच नै
फूंक मारणी,
कि कार री कोयनी ।

द्वारा-श्री रामचन्द्र बोहरा
बोहरा—बास
ग्राम-नीम्बी जोधान्
जि. नागौर

फिरतां–घिरतां

श्री. श्रीलाल नथमल जोशी

माघ रो मइनो। सियाळै री ठंडी रातां। सरकारी अस्पताळ में जिनानै वार्ड में रात नै चौकीदार रैवै। वारी सूं आदमी पळटता रैवै। चौकीदारां में एक रो नांव मेघनाथ। दूजा चौकीदार रात भर इस्टूल माथै ऊंघै अथवा मौको जोयर किणी कमरै–कोटड़ी में कामळ हेटै बड़र पग पाधरा कर लेवै। पण मेघनाथ दिपटी माथै कदेई आंख में वट घाल्यो कोनी। इण रो मतलब औ कोनी कै वो कोई घणो इमानदार आदमी है अर वाकी रा बइमान; मेघनाथ नै पोथ्यां पढण रो कोड है। घर में भी मोकळा उपन्यास भेळा कर राख्या है, पुस्तकालयां सूं लायर भी बांचै। वरसां में तेईस–चौईस सूं ऊपर कोनी, रंग–रूप रो फूटरो अर डील में सैंठो है।

इणी अस्पताळ में लारलै तीन वरसां सूं सिम्पल नांव री नरस काम करै–इक्कीस वरसां री सुरेख–लागणी जुवती। सिम्पल मेघनाथ रै वैभव सूं एकाएक आक्रष्ट हुयगी। थोड़ा दिनां पैली जद अठै अेक जैन साधु चौमासो करयो, वां दिनां गांव गोठां रा मोकळा ओसवाळ सेठ भी अठै आयोड़ा हा अर इण कारण अस्पताळ में भी मरीज वधग्या हा। एक रात एक सेठाणी रो तिणखो गमग्यो जिण में घणमोलो हीरो जड़योड़ो हो। तिणखो मेघनाथ नै लाधग्यो अर वीं उणनै अस्पताळ में जमा करा दियो। जद सेठजी नै तिणखो मिलग्यो तो वां आपरी मील में सारजेंट री नोकरी देवण खातर मेघनाथ नै थामो, पण मेघनाथ इनकार कर दियो। सेठां रो विचार मेघनाथ नै एक हजार रुपिया इनाम में देवण रो हो, पण आपरो सागी तिणखो पायां, सेठाणी नै इत्तो हरख हुयो कै वीं मेघ-नाथ नै दो हजार रुपिया इनाम दिराया। मेघनाथ रै इमानदारी रो सरकार भी घणी बडाई करी अर उण नै एक प्रमाण-पत्र दियो। इण खुसी में जद मेघनाथ

एक गोठ दी, तो डाक्टर-नरस्यां सगळा ई बठै पूग्या । मेघनाथ रो सज्योड़ो घर देखर कंवारी सिंपल नै उण में आकर्षण लागण लागग्यो ।

मेघनाथ रात नै दिपटी माथै रैवै उणी दिनां सिम्पल भी आपरी दिपटी रात री करावै । वा बिना काम भी मेघनाथ री ड्योढी कन कर घड़ी-घड़ी बार निकळै, पण इरादो करण रै बावजूद होट खोल सकै कोनी । एक दिन पक्को विचार कर लियो-आज तो बात करणी ई है । नैड़ी आयर पग धीमा करया, सोच्यो—मेघनाथ सामो झाकसी तो बात करसूं; पण मेघनाथ पोथी में इत्तो लवलीण कै सामो ई नईं झाक्यो । छेवट याचिका आगै निकळगी । इण उधेड़-बुण में तीन-च्यार दिन निकळग्या । आखर हीमत करणी पड़ी । बोली-मनै भी पढण खातर कोई पोथी मिल सकै ?

मेघनाथ रो ध्यान टूटग्यो । जुवती रै वार्तालाप में मिठास अर प्यार री जाचणा रा संकेत हा । मेघनाथ बोल्यो—नईं क्यूं, हूं आ पोथी आज खतम कर लेसूं फेर थे लेलिया ।

इत्ती-सीक बात भी सिम्पल नै इयां लागी जाणै बीं कोई बडो भारी साह-सिक काम या एडवेंचर कर लियो हुवै । जद दिपटी सूं ऑफ हुयोतो मेघनाथ आपरी पोथी सिम्पल री दराज में राख दी अर घरे गयो परो ।

इण तरै पोथ्यां लेवण-देवण रो सिलसिलो केई महनां तईं चालतो रैयो । एक दिन पोथी ही-वंदरी प्रसाद सांकरियै री—"अनोखी आण ।" सिम्पल एक पुरजो लिख्यो अर पोथी में घालर मेघनाथ नै पोथी पकड़ाय दी । मेघनाथ पोथी घरं में मेज माथै मेल दी । मेघनाथ रै एक मित्र जसनाथ जद पोथी में चिट देखी, तो पूछ्यो-"क्यूं भाई, ईं चिट रो काईं मतळब है ?"

"किसी चिट ?" मेघनाथ इचरज सूं पूछ्यो ।

"कानां में रुवा ना लै भाया, आ देख—

"आप आण निभावणी जाणो या नईं ?"

मेघनाथ विचार में पड़ग्यो । बीं जद पोथी पढी ही, तो उण में कोई चिट-विट ही कोनी । बो समझग्यो कै चिट सिम्पल री हुवणी चाईजै । पण इण बात नै बिना प्रगटचां बो बोल्यो—'लाइब्रेरी री पोथी है, अनेक हाथां में जावै, अर पाठक आपरी मरजी रा मालक है । हूं सोचूं कै पुस्तकाय री पोथी मांय सूं जिको पढार फोटू नईं फाड़ै बो युधिष्ठर रो अवतार है अर जिको पाना नईं फाड़ै, बो कृपालू पढार है ।' इण तरै मेघनाथ चिट री बात नै हवा में उडाय दी ।

दूजै दिन मेघनाथ 'अनोखी आण' माथै कागद रो पूठो चढायर फेर अस्पताळ लेयग्यो । जद सिम्पल पोथी मांगण नै आई तो मेघनाथ जाणर पूछ्यो-पेन है आपरै कनै ?

सिम्पल ब्लाउज सूं टंग्योड़ो पेन झट काढर झलावण लागी, तो मेघनाथ कैयो-मनै लेवणो कोनी, थोड़ो इण पोथी माथै नांव लिखणो है।

सिम्पल ठिठकती बोली-हैंडराइटिंग एक्सपर्ट बणन री जरूरत कोनी । मन में कोई संका है तो आप मनै पूछ सको हो । मिनख हो थे, इत्ता क्यूं सरमावो ।

मेघनाथ गूंगो हुवै ज्यूं सामो झाकण लागग्यो । सिम्पल बोली-चिट म्हारी लिख्योड़ी है । उणरो उथळो जवानी नईं, लिखावट में चाऊं ।

सिम्पल गई परी । मेघनाथ वींरी स्पष्टवादिता माथै मुग्ध हुयग्यो । उणां रो मिलणो बधतो गयो अर इत्तो बधग्यो कै चरचा रो विषय बणन लागग्यो । छेवट बांरै ब्याव रो दिन नक्की हुयग्यो ।

ब्याव रीं कूंकूंपत्री लेयर मेघनाथ करनल सिवनाथ सिंघ रै घरे गयो जिका अळगै रिस्तै में काको लागता हा ।

कूंकूंपत्री वाचर सिवनाथ सिंघ घणा राजी हुया अर बोल्या-सात सितंबर नै गिरजाघर में रात नै आठ बजी ब्याव हुसी । घणो आछो । देख भई, ब्याव गिरजा घर में हुसी जिको तो ठीक है, पण बीन बणती बगत रजपूती फैंटो, तरवार तो बांध-सीक ?

मेघनाथ बोल्यो आपरो हुकम हुसी ज्यूं ई कर सूं ।

सिवनाथ सिंघ कैयो—सात बजी सीक अठै आय जावै तो हूं सावळ ढंग सूं त्यार करदूं ।

सिम्पल अस्पताळ रै स्टाफ रै सिवाय अठै रै दूजै ईसाई परवारां में भी निमन्त्रण बांट्या अर बंटवाया ।

आठ बजण आळी ही, पण हाल बरात्यां री तरफ सूं कोई चैळ-पैल दीसी कोनी । सिम्पल घड़ी-घड़ीवार उठै अर आपरी आंख्यां अळगी-अळगी पूंचावै पण''''''।

आठ बजगी ! बरात आई कोनी । आदमी निगै करणनै गयो । मालम पड़ी कै बीन घर में कोनी । मांढी लोग परेसान हुयर घंटै-दो घंटै बाद, मन में, बीन-

बीनणी नै आसीस देवता आप-आपरै घरे गया।

दूजै दिन छापै में खबर आई—"सिम्पल री सादी डिस्मिस। मेघनाथ नांव रै युवक प्रेम रो सांग रच्यो अर बापड़ी सिम्पल नैं धोखो दियो।"

सिम्पल माता मरियम रै सामनै हाथ करनै सौगन खाई कै बा जलम भर कंवारी रैसी।

मेघनाथ च्यार दिनां री छुट्टी बधावण खातर घर सूं अरजी भेजदी।

जद वो काम माथै हाजर हुयो तो मालम पड़ी कै सिम्पल दिन री डिपटी में है। दूसरै दिन मौको देखर वीं सिम्पल सूं मुलाकात करण री कोसीस करी। पण सिम्पल रो लावण्य उडग्यो, चंचळता मिटगी, हरख री जागा घोर विषाद सूं वींरो चैरो काळो राख हुयग्यो। बीं मेघनाथ नै देख्यो पण अणदेख्यो कर दियो। बींनै ठा नईं ही कै इसो विस्वासघात भी हुया करै है।

मेघनाथ री भी हीमत पड़ी कोनी कै बात कर सकै। आपरै एक कवि मित्र नै गाथा सुणाई अर एक पत्र लिखवायो—

"सिम्पल,

हूं तनै आ भी लिख सकूं कोनी—'प्यारी सिंपल' कारण मैं थारै सागै जिको बरताव करचो है, बींरै पछै थारै सागै इसा विशेषण लगावण रो म्हारो इधकार खतम हुयग्यो। हूं सोचूं, मनै इण धरती माथै जीवण रो इधकार भी कोनी। पण सिम्पल, मरणो भीं तो हाथ री बात कोनी। म्हारै हिरदै नै जिकी व्यथा हुई है बा कागद में तो काईं लिखीजै, थारै सूं मिल्यां भी बरणीजै कोनी। हूं थारी दया रो पात्र कोनी, पण सिम्पल, तो इत्ती सिम्पल है कै मनै भरोसो है, एकर मिलण रो मौको देसो।

हूं, बस हूं।

दूजै दिन मेघनाथ औ पत्र सिंपल री दराज में घाल दियो। कागद बांचर सिम्पल माथो झालनै खुरसी माथै बैठगी अर बींरो माथो गरणावण लागग्यो। जद धोखो दियो तो फेर अबै औ कागद काईं माथै मांगै ? पण वीं कागद नै फाड़्यो कोनी। एकर फेर वाच्यो अर आपरी जेब में घाल लियो।

कागद रै लारलै पासी मेघनाथ लिख दियो कै जे इण रो तूं प्रतिवाद नईं करसी, तो हूं आज रात नै दस बजी थारै क्वार्टर में आसूं।

सिम्पल प्रतिवाद करणो अथवा मेघनाथ सूं बोलणो भी चावती कोनी। अबै सोचण लागी कै रात नै घरे लाधूं या नईं, अथवा बारणो खोलूं'क

नईं ।

मेघनाथ रै नांव अर सकल री वींनै सूग आवण लागगी, पण फेर भी कोई इसी प्रेरक सगती ही कै वा बारणै रा किवाड़ जड़ सकी कोनी अर ठीक दस वजण सागै मेघनाथ घर में आयग्यो । सिम्पल पिलंग माथै बैठी ही । मेघनाथ सामली खुरसी माथै बैठग्यो । हफ्तै भर पैली जिकां रा काळजा एक-मेक हुयोड़ा हा, वां में कित्ती चवड़ी दरार पड़गी अर बठै निस्तब्ध वातावरण सूं ठा पड़ती ही ।

मेघनाथ भाटै री मूरत ज्यूं बैठग्यो, अबोल, अणबोल । छेवट सिम्पल बोली—हुई जिकी बात तो हुयगी, अबै आपां नै आपस में नईं मिलणो चाईजै । माता मरियम रै आगै मैं कंवारी रैवण री सौगन खाई है ।

मेघनाथ कैयो—सिम्पल, म्हारै आचरण माथै हूं लजखाणो हूं । इण घटना में दोस म्हारै काकै रो कोनी, म्हारी लत रो है । काकै म्हारै आगै (जाण-बूझर) दारू री बोतल खोल दी अर हूं बोतल खाली करनै बठै ई गुड़-दापेच हुयग्यो । काको आपरै उद्देश्य में सफळ हुयग्यो । पण सिम्पल जिका दो हिरदा आपस में मिलर एक मेक हुवणा चावै, वांनै न्यारा राखण आळी ताकत दुनियां में कोई कोनी । हूं आपां रै प्रेम री कसम खाऊं कै आज सूं दारू रै हाथ ई लगाऊं कोनी । देवी ! तूं म्हारी पूज्य है । मनै थारै चरणां में रैवण दे ।" कैयर वीं सिम्पल रा पग झाल लिया । जद पग झाल्यां-झाल्यां वींनै नींद आयगी, तो सिम्पल उठर गळी रै बारणै रा भोगळ कूंटो ढक दिया ।

⊙

—सोनगिरी रो कूवो,

बीकानेर (राजस्थान)



व्यंग्य रचना

बधतो डाक खरच अर म्हैं

श्री साँवर दइया

आजकाळै जिण रफ्तार सूं मौंघाई वध रैयी है, बीं रफ्तार सूं तिणखा कोनी वधै। सरकार बीस रुपिया वधावै अर घर रै बजट में चाळीस रुपियां री वधोतरी हुय जावै। अठै रा वाणियां सरकार करतां स्याणा है। इसै मामलां में तो वै सरकार सूं च्यार पांवडा आगै ई चालै। जीवणो जरूरी है इण खातर आं खाडां नै पूरण खातर केई जरूरी चीजां में कटौती करणी पडै। खावण पीवण सूं लेयर पैरण ओढण तांई री जरूरतां नै कम करणी पडै। पण हर बात री एक सीमा रैवै; अबै आं चीजां में कटौती री गुंजाइस कोनी रैयी। कारण कै पैन्ट छोड़ र पजामो अर पजामो छोड़ र लंगोटी तांई तो हिम्मत कर सकां हां, पण इण सूं आगै कांई पैरां, हालतांई कीं समझ में कोनी पड़ी। समझ री मशीन अठै जाम हुवण रै कारण म्हारी निजर अबै डाक खरचै कानी गयी है।

जमानै री हवा विगडचोड़ी है। ई हवा रो असर भारत सरकार रै डाक तार विभाग माथै भी हुयो। छव पइसा आळै पोस्ट कार्ड रा दस पइसा हुया अर दस सूं पछै पन्द्रै हुया। कदैई ईं पोस्टकार्ड री कीमत पइसो दो पइसा ई जरूर रैयी हुवैली। अन्तर्देशीय अर लिफाफ भी भावां रै भतूळियै में पंजग्या अर वांरी कीमत पच्चीस अर तीस पइसा हुयगी। आंरी कीमत रो मूण्डो आभै कानी उठतो देख र म्हनै नितूकी चिट्ठी पत्री बाबत गम्भीरता सूं सोचणो पड़ रैयो है!

आज तांई तो जियां कियां ई म्हैं म्हारै डाक खरचै नै धिकावतो रैयो हूं, पण आं बधती कीमतां रै कारण म्हनै म्हारी आदतां में सुधार करणो जरूरी

लखावण लाग्यो है। ठीक ई तो है, सुधार करण में हरज कांई है ! आपां तो जलमजात सुधारवादी हां ! बळ पड़ता जाळी झरोखा रावळां रा संस्कार तो आपां रै खून में है ई !

म्हैं केई बरसां सूं गांव में पड्यो हूं। जोर कांई करूं, नौकरी करणी है। नौकरी छोड़ण रो सुपनो नईं आ जावै ई डर रै कारण म्हैं सावळ सोवूं न्यारो कोनी ! अर जागूं जणै घर आळा नै कागद लिखण री मन में आवै। पैली तो म्हैं घर आळा नै हफ्तै में दो कागद लिख्या करतो, पण पोस्ट कार्ड री कीमत दस रुपया हुयां पछै हफ्तै में अेक कागद लिखण लाग्यो, अर जद सूं पोस्ट कार्ड री कीमत पन्द्रै पइसा हुयी है, म्हैं घर आळां नै दो हफ्ता में अेक कागद लिखूं।

घर आळां नै कागद लिखतो जणा लुगाई नै अेक कागद लिख्या करतो। सरू में तो लिफाफो भेज्या करतो। लिफाफै में तीन-च्यार पानां रो लम्बो प्रेम पत्र घणै आराम सूं लिखीज जावतो। पण प्यार रो बुखार मौंघाई री मार सूं कम हुवण लाग्यो अर लारै हुयर म्हनै अन्तंदेशीय कागद री सरण लेवणी पड़ी ! पण मौंघाई तो सुरसा दांई बध्यां ई गयी। जद सूं अन्तंदेशीय री कीमत पच्चीस पइसा हुयी है, म्हैं प्रेम पत्र भी लिखणा बन्द कर दिया। म्हनै लखावण लाग्यो कै लुगाई रै फूठरै फरै चेहरै नै देखर कोई उपमा ई कोनी उपजै। कठै तो म्हैं वीं रै पाण आयोड़ै जोवन माथै महाकाव्य री लिखण री सोच्या करतो हो अर कठै आज हाइकू ई कोनी लिख सकूं—च्यार ओळयां मांडणी दूर तो रैगी ! इणी कारण आजकाळै जद घर आलां नै कागद लिखूं तो छेकड़ में दो ओळयां लुगावड़ी रै नांव ई घस नाखूं। जियां कै अठै म्हैं राजी खुशी हूं अर थारो सरीर मजै में हुवैला। आ जाणता थकां कै आज रै इण घोर मिलावटी जुग में किणी रो सावो सातो रैवणो हूंमा सेल कोनी ! मिलावट रै कुप्रभाव सूं लोग राम शरण हुय रैया है। जिका जीवै है, वांरी सांसां लारै वडेरां रा पुन्न आड़ा आयोड़ा है !

घर आळां रै अलावां यार भायलां नै भी कागद देवण में खासा ढील आयी है। पैली तो म्हैं लंगोटियै भायलां नै रस्तै वैवतो ई कागद घस दिया करतो हो। म्हनै जुकाम हुय जावतो तो वांनै सूचना देवतो अर आठ दस रूमाल भेजण री ताकीद करतो—नाक सूं पड़तो पाणी पूंछणखातर ! पण अबै तो टायफाइड हुय जावै तो ई वांनै कागद नईं देवण री तेवेड़ ली है। इण सूं दो फायदा

हुसी–पैलो तो ओ कै म्हैं जेब सूं कट्टूं कोनी अर दूजो ओ कै भायलां नै म्हारी अणूती चिंता कोनी हुवै। जीवण खातर आथड़ता लोगां रै कांधा माथै पैली सूं ई बेसुमार चितावां है–जणै म्हैं अेक चिंता और क्यूं बधावूं ? भायलां रो काम तो चितावां दूर करणो हुवै, बधावणो नीं ? अर जिकै में म्हैं तो भायलां रो खास भायलो हूं। वांरी पूरो पूरो ध्यान राखणो म्हारो फरज है।

ठीक इंयां ई होळी दियाळी माथै रामा स्यामा रा कागद दिया करतो हो–भायला पापेलां रै अलावा देस–परदेस गयोड़ै सगा–सम्बन्धियां नै। पण आं दिनां तय करली है कै होळी खेल्यां पछै–खासा दिनां पछै–बांनै अेक कागद लिख देसूं अर बीं कागद में ई दियाळी रा रामा स्यामा आगूंच ई कर लेसूं। स्याणा समझणा आदमी केई काम आगूंच ई कर लेवण री सलाह दिया करै। म्हनै लागै कै अबै वांरी सलाह मानण रो ठीक सर बगत आयग्यो है !

देस परदेस में बिरखा–पाणी किसाक कांई है अर खेती बाड़ी रा हाल पूछण खातर ई कांगद नईं लिखणै री सोळै आनां धारली है ! आं छोटी छोटी बातां खातर घरू बजट नै पांगळो कारण सूं कांई फायदो ? घरू हाल चाल अर बिरखा पाणी री बातां नित पूछण सूं म्हनै किसो 'अेवार्ड' मिलणो है ? जे 'अेवार्ड' मिलण री उम्मीद हुवै तो उम्मीदवारी में ई कीं 'रिस्क' ली जा सकै है ! बाकी इट इज ग्रेट रिस्क, टू टेक नो रिस्क "मानण रो जोश अबै कोनी रैयो। आज तो रिस्क सूं फायदो हुसी ज, आ गारण्टी मिल्यां पछैई 'रिस्क' लेवण रो बगत हैं !

लेखकां नै कागद लिखण में भी खासी कटौती करी है। पैली तो म्हनै जिण री कविता का कहाणी दाय आवती, बींनै तुरंत कागद लिगतो। बीं री तारीफ रा पुळ बांधतो। दूजो कागद पत्रिका रै सम्पादक नै न्यारो लिखतो। लेखक री 'मार्केट वेल्यू' बणावण खातर अै काम जरूरी हुया करै, पण जरूरी हुयां कांईं सरै ? म्हारी करचोड़ी तारीफ नै बो लेखक चाटै का दूजां री करचोड़ी री तारीफ नै म्हैं चाटूं ? ईं लुक्खी तारीफ सूं किणी नै दाल रोटी तो मिलै कोनी। जे कोई दाळ रोटी री गारण्टी लेवै तो म्हैं ओ चक्कू खा सकूं। बाकी अठै गारण्टी तो मौत री ई कोनी ! जै'र तक नकली मिलण लागग्या है। पांच साल खातर चुणी ज्योड़ा मंत्री पांच दिन तांई मंत्री रैय जासी, आ पण गारण्टी कोनी ! इसी माड़ी हालत में गारण्टी री गारण्टी तो लेवै ई कुण ?

बै लोग म्हारै सूं जरूर नाराज हुवैला, जिकां रा तारीफ भरचा कागद म्हारै कनै आवै, पण म्हैं बांरा उथळा कोनी देवूं। वांनै जो कीं कैवणो हो, म्हैं

वांच लियो अर म्हारै कनै वांनै केवण खातर कीं कोनी । कोरो धन्यवाद देय र म्हैं वींरी हिम्मत वधावणी कोनी चावूं । वो हिळ्यो-हिळ्यो फेर कागद लिखै अर म्हैं फेर धन्यवाद देवूं, आ वात म्हारै जचै कोनी । आज री दुनिया में सगळा सम्वन्ध 'प्रोफिट एण्ड लॉस' री 'फिलोसफी' माथै टिक्योड़ा है। हालत आ है कै जे गधै कनै अेक लाख रो वैंक वैलेंस हुवै तो भलै सूं भलो आदमी वींरो खोळायत वणण नै तैयार है—कोई तो इसा भी है जिका वींनै सागी वाप मानण नै तैयार वैठ्या है !

डाकतार विभाग पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय या लिफाफां रा पइसा अवै और वधाया तो म्हैं धार राखी है कै जिकां नै भी कागद भेजसूं, वैरंग-वांनै वैरंग भेजसूं । जे वांनै समाचारांरी गरज हुसी तो झख मार'र कागद छुडासी ! अर जिका भायला-सगा वैरंग कागद नीं छुडावैला, वां सूं पछै हमेशा खातर जै राम जी री ! वै आपरै घरां राजी, म्हैं म्हारै घरां राजी !

मोंघाई री मार सूं मरतै लोगां रै ईं देश में अेक वगत वो भी आवैला जद अेक वरस में अेक कागद लिखणियां रो नांव आंगळियां माथै हुवैला ।

म्हारै अर दूजै लोगां रै आं तौर-तरीकां सूं डाकियै नै खासा आराम पूगैला । वींरै थैलै रो भार हळको हुवैला ! बुधवार नै ई इणी गिणी डाक वांटणी पड़ैला !

आं वातां सूं डाकतार विभाग री आमदनी माथै बुरो असर हुवैला । हुय सकै, सरकार सूं वो घाटो वरदास्त नईं हुवै ! इण सूं देश री अर्थ व्यवस्था पांगळी हुवण रो खतरो भी सामैं है । पण अठै देश री चिंता करण री फुरसत किणनै है ? सगळां नै आपो आप री चिंता लाग्योड़ी है। अवार तो देश री चिंता सूं खुद री चिंता घणी भारी है । अरओई कारण है कै म्हैं म्हारी चिंता करण लाग्यो हूं । थांरी थे जाणो, म्हनै थांसूं कांईं मतलव ।

⊙

हायर सैकण्डरी स्कूल,
नोखा (वीकानेर)

इण धरती माथै

श्री. दीन दयाल ओझा

घाल गयो है कोई
आंख्यां आळो
ऊंधै पंथ
म्हारै सूधै चालतै
नैण हीण पगल्यां नैं

तिरसाय गयो है कोई
पाणी वाळो मेघ
म्हारै भरियोड़ै घड़ै नैं फोड़
इण तपतै
धोरै माथै छोड़

म्हारै चारूं मेर
कील गयो है कोई
अवणायत वाळो चुणियोड़ो माणस
गरीबी, भूखमरी अर मंहगाई री भायप

ओळखाण नीं कर सको
कात्योड़ै सूत री
अळूझाय गयो है कोई
भांत-भांत री आठियां नैं
कोई सुळझियोड़ो माणस

ख़ैर ! कोई बात नीं
पण म्हनै पतो लाग गयो कै
किसाक हुवै
आंख्यां आळा, पाणी आळा'र
अपणायत आळा
इण धरती माथै

⊙

विन्नाणियां रो चौक
बीकानेर (राजस्थान)



थारै लाम्बा जोडूं

श्री हरीश भादाणी

थारै लाम्बा जोडूं हाथ
उनाळा थिड़ी-थिड़ी कर ऊभ
पगलिया ले ले रे····
थारी मावड़ लू बळता खीरां सूं
सींची सारी रेत जो
थारी आंधी बेनड़ रा रोळा सुण
रूस्या रसिया खेत जो
पाळसिये में जंवरा पूजूं
क्वारै हाथ कळसिया ढोळ दूं
म्हारो जतना चींत्यो थाळ
तीज रो घी सीज्योड़ो खीच

आमली ले ले रे
थारै............
म्हारी भातो ले जाती भावज रो
रूड़ो रूप ममोलियो
कोढ़ी तावड़ियो मरै चूंटिया
धुरड़ै घिरै भतोळियो
जे तूं बोलै वैरो थारै
ओळा और मखांणा घोळ दूं
म्हारै डोवै रांधी राब
राब में मोळी–मोळी छाछ
सवड़ का ले ले रे........
म्हारो अणमण पिणघट पड़चो उडीकै
सोनलदे पणिहार नै
म्हारी खूंटी चढ़ियोड़ी ईंढचाणी
जोवै है सिणगार नै
जे तूं बोलै तो चौभाटै
रोटी पेड़ा टाळ दूं
म्हारै आंगणिये रमभोळ
मटक्यां मांडचोड़ी अणमोल
उतारो ले ले रे
थारै लाम्बा जोडूं हाथ

⊙

छबीली घाटी,
बीकानेर

दो अक्टूबर रो दिन

श्री विक्रमसिंह गुन्दोज

आज राजघाट पे
कर्फ्यू लागो
काल
लाठी अर गोळी चलैली ।

मनै लागै
म्हारै देस में
दीवाळी आवण सूं पैला
एक होळी बळैली ।

बापू !
उगाय गयो थूं
बराबरी री बैलड़ी
अबै ग्रौरु फळैली ।

बत्तीस बरसां में
झड़गिया फूल लाखीणा
फळ सारा सडबा लाग्या
वांरी अबै गंध फूटैली ।

इण भारत में
मचीया कई माभारत
फेरूं भी अठै अपणी अपणी
ढफली तो यूं ही बजैली ।

ऐस तो अश्रु गैस
कर्फ्यू ने पथराव सूं
मनाई है गान्धी री जयन्ती
आगासूं कांई ठा कियां मनैली ।

राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी,
जोधपुर (राज०)



आसावां रा मांडणा

श्री दीपचन्द सुथार

समन्दर री लैरां ज्यूं
आवण वाळी
मुसिबतां सूं
मत घबराओ
सतकार करो
गळै लगाओ
समझो वड़ापणो
फूलां सूं मैकतो गुळदस्तो
भेंट खातर
पग—

दासै माथै मेल्यो है।
नित हरया-भरया रैवण वाळा रूंखां
नीं जाण्यो मरम
पतझड़ रै पानां रो।
सीपी रै मुख मांय
जद बूंद गीरी / तो
तोल हुयो है
वीणा रो जद् तार हिल्यो / तो-
गीतां रो मोल हुयो है।
धूप-छांव सूं जुड़ी कड़ी रो नांव-
जीवण है।
हिळमिल घणां घणां हेत सूं
दोनूं घाटां रा फूल चुगां
दीप जळावां
सुपनां रै मारग माथै
धामावां रा मांडणा मांडां
जीवण नै
सारथक बणावां।

⊙

मेड़ता सिटि, जिला-नागौर (राज०)



बोल बतलावण

श्री संतोष पंडित

आथण रै पो'र रा कोट गेट रै बीचलै दरवाजै सूं रोजीनै रा दो आदमी वातां करता नीसरै । मैं आं दोनूं आदम्यांनै लारलै कई दिनां सूं देख रैयो हूं। अबै तो खैर ! मैं आं दोनूं जणानै आछी तरै सूं जाणनै भी लागग्यो हूं । अै दोनूं जणा राजस्थानी भाषा रा जाणीता-मानीता दिद्‌वान हैं । अै मोटमरजाद सूं अळगा, नांव री भूख सूं आंतरै, अभिमान री आंधी सूं ओलै अर राग-दोष सूं साव न्यारा रैवणियां है ।

अै दोंनूं साठ वरस री आयु सूं ऊंचा कोई सत्तर वरस रै अड़गड़ै पूग्योड़ा है । ता पछै पण आंरो चै'रो देखै तो लागै जाणै कासमीरी सेव हुवै । आंरी अै मोटी-मोटी दीया-सी काजळिया आंख्यां, भाटीपै रै राजपूत री-सी लाम्बी अर ऊंची नाक अर ओ गंगासाही ओपतो अर दीपतो डोळ कै मिनख देखै तो देखतो हीज रैय जावै । लखदाद है आंरी घी-दूध सूं सींचीजर निगळीज्योड़ी कायानै । आंनै कोई बूढो का डैण कैयर ठा तो पाड़ो अर पछै देखो कैड़ी सतेवड़ी करै उण कैवाणियै में पण अंतस सूं विराजी हुयर नीं खाली आ दरसावण सारू हीज कै बूढा तो वै हैं जिकांरा जवाड़ा वैठग्या है, आंख्यां गुडगी है, दांत खोखा खिरै ज्यूं खिरग्या है अर वांरो दो पगोथियां माथै पग मेलतां ही सास डैर कै चढ जावै । वै ऊभा हुवै तो गोडां रै हाथ देयर हुवै अर तिरवाळो-सो आवण नै लाग जावै । बोलै जणा जाणै कै सास नीसरसी । बैठै तो जाणै कमरी ऊंठ वैठ्यो हुवै । डील सूं अैड़ा थाकोड़ा जाणै कै मरी री मा हुवै ।" वांरो ऊजर कै "म्हे बूढा कूंकर ! हां, अवस्था पायोड़ा जरूर हां, जिकै सूं कोई डैण, डोकरा अथवा बूढा थोड़ी ही हुयग्यां हां ? आजरै जुवानानै तो कड़खै वैठावां हां, चावै तो कोई सामै आयर ठा कर सकै है । पण आजरा छोरला कै कोई सामै

आवण री हिम्मत बांधसी ? जिका बापड़ा आखो दिन चाय रा ओठचोड़ा कप चाटता रै'वै, चूरट चूसता रै'वै, अटल घाट पावड़ी घड़ता रै'वै । डूंगारै तावड़ियो लागै जद उठै, तेरी–मेरी तेरी–मेरी करता सोपो पड़यां सोवै अर तेरी–मेरी तेरी–मेरी करता अर का घलियो माई घातियो माई करता हीज जागै ।"

वांमें सूं एक जणो बोल्यो "आ बात साव साची है, आज काल री सरतर इसो हीज है । वैं आगली वातां आज लारली गळयां गई परी । जद हीज अैड़ै आदम्यां री बुधि गुदी में आपरो विसराम थळ वणाय राख्यो है, पण आपणी बलाय सूं लागो लाय, आपां नै आपणू काम करणों चाहिजै । दूजा करै ज्यूं आपां थोड़ो हीज करणनै लाग जासां ? अर जे आछी बात हुवै तो केठा'क करणनै भी लाग जावां पण भेड़ मारग में भूल कर'र पण नीं पग रालां ।"

अै दोनूं जणां अैड़ी वातां करता आज सागीड़ा जोममें भरीजग्या । मैं भी आज आंरी बातां माथै म्हारा कांन बोच'र ध्यान दियो तो आंमें सूं एक जणां बोल्यो "अैड़ै फोरै सुभाव आळै आदम्यां नैं भावैं कित्ती हीज सूंस दिरावो, परतिग्या करावो अर चायै कितरो हीज सीख देवो पण आंरै चोवड़ै घड़ै ढांट लागै तो सीख लागै ।

जांरा पड़या सुभाव जासी जीण सूं
नीम न मीठा होय, सींचो गुड़ घीव सूं

आंनै कोई होळै–ठाडै चावै कियां दीज समभावै पण अै किसा मानै ? रावण रै तो वा हीज भावण । सायरां कैयो है—

सीख सरीरां ऊपजै दिया लागै डाभ

अैड़ा डाभ खायर भी राजी हुवै कै आगलै रो वळीवो तो वळयो'क ! जद आंरो कोई के करै ? अै तो वैं है के गैलारे ! गांव मत वाळी, कै भली चेताई ।"

दूजोड़ो बीच में ही ओठो देतो बोल्यो कै "थे वा सुणी कोयनी के कै एक गांव में अैड़ी ही एक लुगाई ही उणनै वींरो धणी ज्यूं कैवतो वा उण सूं उळटो काम करती । उण रै धणी एक पिंडत सूं सला कारी कै 'म्हारै पिताजी रो काल दिन सराध है पण उपाय कांई करां लुगावड़ी ऊंधी पड़ै ।' पिंडत सलादी कै 'तूं पैलां सूं हीज ऊंधो बोल फेर देख मजा ।'

धणी आपरी लुगाई नै कैयो कै 'काल बावै रो सराध है । लुगाई भूजती बोली 'जिको के करां ?'

धणी कैयो 'करो के, कीं करणो करावणो को है नीं ।' जणा लुगाई कैयो–

'क्यूं', करसां भी।'

मिनख कैयो—'तो सीरो अर खीर कोनी करणी है।'

लुगाई बोली—'हूं तो दोनूं चीज करसूं, थारो के लियो !'

मिनख बोल्यो–'बामण को जिमावणां हैं नीं भलो'क !'

लुगाई पाछो कैयो–'हूं तो गांवरा आखा बामण जिमाय सूं।'

मिनख—'खैर। पण दिछणा रो रिपियो मत देय राळी !'

लुगाई—'क्यूं तो दो दो-दो रिपिया दिछणा में देसूं भी।'

मिनख—'पण, होम आळी सामगिरी पीपळ में नाखणी है।'

लुगाई—'हूं तो होमायत आळी चीजां अकूरड़ी पर नाख सूं भी थे कीं करो ज्यूं कर लेया।'

अैड़ा मिनख सावळ कैयां कावळ पड़ै जद कोई के करल्यै। अै मानै तो मानै आपसूं, नीं मानै सागी बाप सूं। अै तो बाळणजोगोड़ा, खोड़ीलै सुभावरा, कुटार डांगरा अर बिना मूरी रा तापड़िया तोड़ता टोडिया हुवै, ज्यूं हैं। अै न बुचकारया काम देवै अर न पळूस्या। मूरख अर मूंज कूटयां काम देवै पण आं कुमाणसां नै कोई कूंकर तावै अणावै।"

इणी बोल बतळावण नै आगै बधावतो भळै दूसरो जणो बोल्यो "आ बात साव साची है, मोटै अर भलै कामरी समभावणी वेगी–सी समभ में को आवै नी। जिकै हाथी देख्यो कोनी, कानां सूं हाथी रो रंग–रूप सुण्यो कोयनी उणनै के ठा कै हाथी किसो'क हुवै ? आंधां मिल'र हाथी रै घफी घालली, वांनै किणी बूझ्यो कै 'हाथी किसोक हुवै।' उणा में सूं एक आंधळो बोल्यो 'हाथी मुसळ जिसो हुवै, दूजोड़ै सूरदास कैयो 'ना, हाथी तो खंभै जिसो हुवै, तीजो आंधळो बोल्यो 'हाथी तो लाव जिसो हुवै।' चोथै कैयो 'हाथी तो छाजलै जिसो हुवै।"

आंधां एक जगै सूं झाल'र पूरै हाथी री पिछाण नीं कर सकै। जिकै री जिति समझ में आवै वो उतरी हीज बात नै परमाणित कर सकै है पण कई भाई कूड़ी हीज फांफ मारता नीं सरमावै, वांरो कोई कै करै ?

दोनूवां में सूं एक जणो भळै बोल्यो "मिनख नै वेअरथी बकी नहीं पकड़ी राखणी चाहिजै। जे किणी भोळै भूल सूं काई बकी पकड़ भी ली तो उणनै छिटकाय देवणी चाहिजै। आदमी नै मांयलो ज्ञान राख'र भैंस रो सींग लपोदड़ नांव छोड'र जै सीताराम बोलणो चाहिजै। मिनख नै करण जोग काम करतो जावणो चाहिजै पण जे किणी काम रो 'कसमाड़ो नीसर तो दीसै तो

न्याऊ काम नै अळगै सूं ही आदेश कर लेवणो चाहिजै ।

इतरै में नासकरी मोड़ आयगी अर दोनूं जणा आपरै घरे जावण गाळ अठै सूं फंटग्या । इणी 'वात नै स्यात वै काले भळे आगै वधावैला, का नीं बधावैला, वै हीज जाणै । ⊙

द्वारा–माहेश्वरी सेवक, बीकानेर

गौरव गाथा: उमेदसिंह शाहपुरा

डा० राजकृष्ण दूगड़

काल नदी वहसी किता, बीदज वहसी वत्त ।
भारत तणो ऊमेदसो, रहसी रांणा वत्त ॥
राजा तूं रहियो रिघू, हिंदवाणी कुल भांण ।
जातां जुगां न जावसी, कीरत रा वाखांण ॥

कराल काल री नदी सूं उवरने आपरै जस री पताका फहरावण वाळो, डूवती रजपूती री लाज राखण वाळो, मरेठा री जंगी फोजां सूं आपरी छाती रे पांण जंग लेवण वाळो, राजस्थान री धरती ने आपरा खून सूं सींचण वाळो, सांची रजवट रो धणी हो शाहपुरा रो राजा उमेदसिंह । आपरे खागां री झाट सूं रणभूमि में वेरियां री लोथां पाड़तो, अदम्य वीरता नै साहस सूं जंगी सूं जंगी ताकत ने चुनोती देतो राजा उमेदसिंह आपरे जुग रो एड़ो शक्तिशाली, साहसी ने जुंझारू जोधा हो जिणरे कानी राजस्थान रा सगळा राजा महाराजा मदत री आस सूं वाट जोवता हा । राजस्थान रा इतिहास में आपरे जीवन काळ में आपरी छाती रे पांण इतरो जस पावण वाळा राजा कमहीज हुआ है । जीवन भर दुसमणां सूं लोहो लेवण वाळा राजा उमेदसिंह री प्रशंसा कवियां मुक्त कंठ सूं कीधी है । चार चार कवियां ने लाख पसाव देवण वाळा राजा उमेदसिंह पर प्रचुर परिणाम में काव्य रचना हुई होवेली, पिण आज जो थोड़ी वहुत भी रचनावां मिले है उणसूं राजा उमेदसिंहजी रे वीरता ने साहस री वानगी भलीभांति मिले है ।

राजा उमेदसिंह रो जनम सोमवार कातिक सुदी सातम संवत १७५५ ने हुयो

हो । वांरे जनम रे एक बरस पछे ही मरेठा मालवा में लूट खसोट करणो सरु कर दियो हो । तीन बरसां ताईं मालवा में लूटपाट करनै २९ नवम्बर १७२८ ने उण पर पूरी तरह सूं आधिपत्य जमाय लियो । इणरे उपरांत मरेठा राजपूताना में आय पूगा ने इणी मरेठा आक्रमण करियां सूं जंग करतां राजा उमेदसिंह ७० बरस री उमर में छिप्रा नदी रे तट पर सुरगवासी हुआ ।

उमेदसिंह शाहपुरा रा राजा भारतसिंह रा पाटवी हा । आपरा बचपन सूं ही उमेदसिंह आपरी वीरता, साहस ने प्रढता रे कारण सगळा राजपूताना में मशहूर होगिया । वांरे पिता री गेर–मोजूदगी में जद मेवाड़ री जंगी फोजां शाहपुरा ने घेर लियो उण बखत उमेदसिंह मेवाड़ री फोजां रो डट नें मुकाबलो कीधो नैं पछे बेधड़क अकेलो ही महाराणा रे दरबार में पूग गियो । सन् १७२३ में जोधपुर रा महाराजा अजीतसिंह रे खिलाफ जद शाही सेना अजमेर पर आक्रमण करियो उणरो सेना नायक उमेदसिंह ही हो । सन् १७२६ में राजा भरतसिंहजी शाहपुरा शासन रा कुछ हकूक युवराज उमेदसिंहजी ने सूंपिया । युवराज आपरे पिता री वृद्धावस्था देखने सगळा हक हकूक खुदोखुद ले लिया ने वांरी मृत्यु रे उपरांत दिसम्बर १७२९ में शाहपुरा री राजगदी पर बैठिया ।

उण बखत राजपूताना में उथळ पुथळ रो दोर चालरियो हो । मुगल साम्राज्य रे कमजोर होवण सूं राजपूताना री बड़ी बड़ी रियासतां में शाही खालसा परगनां नैं आप आपरे कब्जा में करण सारू कशमकश चाल रही ही । अजमेर रे दिखण रो सारो प्रदेश षड़यंत्र, उपद्रव नैं लूट खसोट रो केन्द्र बण गियो जिण सूं भील नैं मीणा सरीखी जातियां भी उपद्रव करण लागी । वठीने भी दिखण पूर्वी राजपूताना में दूर दूर ताईं घुसने लूट खसोट करता चौथ वसूल करण लागा । नादिरशाह रा हमला सूं मुगल सल्तनत रो संगठन छिन्न भिन्न हो गियो नैं राजपूतानां रा शक्तिशाली राज्य गृह युद्ध रो चपेट में आगिया । हर कोई अपणी ताकत अधिकार ने रुतवो बढावण मे लाग गियो ।

ऐड़ी परिस्थिति में शाहपुरा रा उमेदसिंह जेड़ा साहसी वीर रो महत्त्व बढणो लाजमी हो । सबसूं पेली आपरा राज्य में उपद्रवी मीणा नैं भीलां रो दमन करने वे आपरा विरोधी ठिकनादार भाई वंदा रो कड़ाई सूं दमन करियो । उमेदसिंहजी आपरी फौजी ताकत इतरी बढाली के राजपूताना रा जुदा जुदा शक्तिशाली राज्य वांने आप आप री तरफ करण सारू निरंतर कोशीश में रेता हा । उमेदसिंहजी उण परिस्थिति रो पूरो लाभ उठायनै सैनिक सहायता रे बदले बड़ी बड़ी रियायतां

सूं जागीरां लेयने आपरा राज री बढ़ोतरी करी। सन् १७३८-३९ में जोधपुर सूं. १७४१-४२ में जयपुर सूं ने १७४३-४४ में कोटा बून्दी सूं उमेदसिंहजी ने कितरा ही गांव जागीर में मिल्या हा। मेवाड़ रा जहाजपुर परगना ने भी आपरा राज में मिलावण में उमेदसिंहजी सफल रिया।

किणी भी युद्ध मे एक पक्ष रो साथ देवण रे पेली उमेदसिंहजी खूब सोच विचार ने मनसूबो करता हा। गंगवाना रा युद्ध में राजा बखतसिंहजी रे खिलाफ वे महाराजा सवाई जयसिंहजो रो साथ देयने ऐड़ो जबरदस्त युद्ध करियो के वांरी वीरता रो वृतान्त दूर दूर ताईं फैल गियो नै सब कांनी वांरी जस पताका फहरावण लागी। मातीता कवि कृपाराम मेहड़ू उण युद्ध रो वरणन करतां लिखै है—

लियां भूप उमेद गजगाह लड़ लोहड़ां
लागियो डांण गजगाह लटकै।
वेख गजराज गत रांणिया बखतसी,
खांत कर हिए गजराज खटकै।

कवि अनूपराम कविया उणी जुद्ध रो वरणन करतां केवे है।

समर महि धाड़ अवनाड़ उमेदसी
इनो जग तीख सबल आज।
आठपो भाग गिरराज रो गयो उड़
राखियो अडिज अणियां सहित राज॥

एक दूजो कवि अजमेर सर करणे री साख रो गीत लिखतां केवे है।

भूप उमेद अने नृप भारथ,
सुलह कियां नृप खेध सही।
मेरपाट लज आंण मनाई,
रेण सदा अणमेद रही।
रजपूतां री आथ जकां रे,
कूंतां री भरलाट करां।
सकल कहे जावे सूतां री,
धूतां री किम जाम धरा।

नवकोटी मारवाड़ री फोजां रो मुकाबळो करणो उमेदसिंहजो जेड़ा साहसी रे ही हिम्मत रो काम हो। उण जंगी फोजां सूं जंग जीतने आपरी धजा फहरावण वाळा उमेदसिंहजो रो वरणन करतां कवि केवे है:—

जड़ लगे बाज करतां जांगी, मदहर भरता करता मोद
होदां सहित कमघ रा हाथी, समहर कर लायो सीसोद।
नव संहस सूं युद्ध कर निकस्यो, कूरमां तणा सुधारण काज
आरस जीत उमेदसी आण्या, गाजवै गहराडेरां दुय गजराज ।।

गंजवाणा रे युद्ध रे सिवाय वून्दी में रावराजा बुधसिंह रा बेटा उमेदसिंह हाडा ने वूंदी री गदी पर बिठावण सारू जयपुर राज्य सूं युद्ध जीतण में उमेदसिंह जी रो पूरो पूरो हाथ हो। इण युद्ध में वे उदयपुर रा महाराणा जगतसिंह जी ने पूरो पूरो सहयोग दियो। इण मदत सूं खुश होयने महाराणा जगतसिंहजी वांने मांडलगढ आगूंचा आद कितरा ही गांवो रो पट्टो दे दियो।

उमेदसिंहजी रे जीवन रो सवसूं लूंठो सबसे तेजवान ने सवसूं प्रसिद्ध प्रसंग है महाराणा री मदत सारू उजेण में लड़ियोड़ो वो युद्ध जिणमें मरेठा री जंगी फोजां सूं टक्कर लेतां वे रणखेत में पोढ गिया। मरेठा जद जंगी फोजां लेयने उदयपुर पर हमला करण सारू उजेण कानी सूं बढण लाग्या, तद महादाजी सिंधिया री शक्तिशाली फोजां ने उदयपुर सूं दूर राखण सारू उमेदसिंह फोजां लेयने उज्जेण पूग गिया। तीन दिनां ताईं छुटपुट हमला रे पछै चोथे दिन १६ जनवरी १७६९ ने उमेदसिंहजी री फोजां जबरदस्त हमलो करियो। मरेठा रा पेंतीस हजार घुड़सवार सेना मांथे उमेदसिंहजी पांच हजार सवारां सूं आक्रमण करनै मरेठा ने करारी हार दीधी। पिण जीत री खुशी में मस्त मेवाड़ी सेना री असावधान अवस्था में जयपुर री रुतनामी नागा साधुवां री उणी टेम पूगियोड़ी १५ हजार री सेना अचानचक हमलो कर दियो। राजा उमेदसिंहजी दुसमणां रा सात हजार जोधां ने मारने सरगवासी हुवा। छिप्रा नदी रे किनारे वांरो दाह संस्कार हुयो। वांरे स्मारक रे रूप में एक छतरी वणाई गई जो आज भी शाहपुरा रा जुझांर रे नाम सूं मशहूर है।

इण घटना रो वरणन सहस्रां गीतां दोहां, छप्पय ने कवित्तां में अनेकां कवियां करियो है। इण छदां मे उमेदसिंहजी जी री शूर वीरता रो जीतो जागतो चित्रांम है। छुटपुट सेकड़ां दोहां में अे दोहा तो घणाई मशहूर है।

आंटी वहे उतावळी, भडां न पायो भेद।
आज किसा गढ उपरे, आरंभ रचे उमेद ।।
घोड़ा पाखर घमघमे, भडां न पायो भेद।
आज किसा गढ ऊपरे, आरंभ सजे उमेद ।।

गोळा गावे गीत, राग सुणावे रांग ने ।
भारथ रो भड़भीत, आछो लड़चो उमेदसी ॥
समदर पूछे सफरां, आज रतंबर काह ।
भारथ तणे उमेदसी, खाज भकोली मांह ॥
राजा तूं रहियो रिधू, हिंदवाणी कुल भांग ।
जातां जुगां न जावसी, कीरत रा वाखांण ॥
काळ नदी वहसी किता, बीदज कहसी वत्त ।
भारथ तणे उमेदसी, रहसो राणां वत्त ॥

सहस्रां दोहां कवित्तां ने गीतां रे अलावा मानीता कवि हुकमीचन्दजी खिड़िया रो इण प्रसंग रो जीतो जागतो वरणन करतां वो प्रसिद्ध गीत 'कड़ी बांजतां बरम्मां पीठ पनांगा उथड़ी केत' है जिणमें उमेदसिंहजी री शूर वीरता रे सांगो पांग वरणन रे साथे ही खागां री खणकार, बाणां री सरणाट भालां री खलणलाट नें गोळा री गरणाट रो प्रभावशाली वरणन है ।

उमेदसिंहजी री फोजां रे प्रस्थान रो वरणन करतां कवि केवे है ।

छड़ालां अभंगा लागां अडी असमान छायो
ऊपड़ी बाजंदा बागां यूं आयो उमेद ।

जोधां रे कवचां री कड़ियां खण खणाता, हाथियां मांथे धजा फेरातां अस्वमेध जग्य ज्यूं मारग ने पगां हेटे कुचलतां, तीन धार वाळा ऊंचा ऊंचा भाला सूं आकाश ने छावतां घोड़ा री लगामा कसने थाम्यां उमेदसिंहजी रण खेत में आया ।

हिलोळा लेती फोजां गरजता समंदर री लेरा ज्यूं ओला दोला चारूं मेर उफण पड़ी, महाकाळी ज्यूं भयंकर तोपां, यमराज री भांत गोळा बरसावण लागी, जोश सूं उफणता उमेदसिंहजी रा जोधा वीरभद्र रा टोळा ज्यूं वज्राज बरसातां झपट पड़िया ।

सांप ज्यूं फुफकारता बाण भणानक आवाज ज्यूं सरणाट करता छूटिया, हजारां भाला एक साथ खरणाट करता युद्ध रा तास बाजा ज्यूं एक साथ गूंज उठिया धनुषां सूं हजारां तीर एक सागे छूटने योद्धावां रा मस्तक पर खणण री आवाज सागे बरस पड़िया ।

बीस घड़ी तांई घमासाण युद्ध हुयो । रूंखड़ा री डाळां ज्यूं योद्धावां रा अंग अंग छांगीज गिया तलवारां टुकड़ा टुकड़ा रणखेत पर यूं बिखर गिया जांणे मेरु पर्वत रा शिखरां सूं गंगानदी री धारा टुकड़ा टुकड़ा होयने बिखर

पड़ी होवे ।

जला बोल घड़ी बीस बाजंता अढंगा जूझ ।
जू जू अंगा छंगा व्है प्रमंगा ड़ाल जेय
चंद्र हासां हजारां घू बरंगां बिछोड़ चल्ली
तोड़ चल्ली धार गंग मेरु सुंगा तेम ।

उजेण रा रणखेत में उमेदसिंहजी शत्रुवां री फोजां रा पांच हजार हाथियां सिलह-धारी घुड़सवारां, सात हजार सतारा वाळा उमरावां ने धरती पर सुवांण ने युद्ध भूमि पर पोढ गिया ।

पव्वै वज्रपात जेम, पोढियां गेमरा पांच
सल्ली चो हजार पोढे हेमरां समाथ
सतारां उमरां सात हजार पोढाय सत्रां
भारथ रो वीर भोम पोढियो भाराथ ।

इण भांत सूं उमेदसिंहजी इण नरलोक में आपरी वीरता री धजा फेरातां अमर लोक में पूग गिया ।

बीच अेक नरांलोक आयो तूं उमेदवीर
वीर एक तूंही गो, अमरां लोक बीच ।

राजस्थानी रा लूंठा महारवि सूरजमलजी मीश्रण वांरी युद्ध कुशलता, शूरवीरता, साहसिकता नैं अदम्य पौरूष रो चित्रण करता कियो है

साहिपुरष उमेर्दसिंह असिवर हद झारिय ।
सूब विरची रन खेल प्रचुर मरहठ्ठ प्रहारिय ।
करि उज्जल सीसोद कुलहि तिल तिल नित सुहिज्ज ।
रवि मंडल बिच होय लाह सुरपुर सुख लुहिज ॥
तिमही पहाड़ भट चौडहर ईसहि दैनन अद्दरिय
बल फारि मारि मरहट्ट बहु कलह सीस रज रज करिय ।

एड़ो शक्तिशाली ने जुंझारु जोधा हो राजा उमेदसिंह जो सीसोदै दियो कुळ ने उजल कर-आपरे जस री पताका फेरातां जुग जुगं ताईं अमर होगियो ।

⊙

हिन्दी विभाग, जोधपुर वि वि.

एक राजस्थानी एकांकी

नवा चस्मा

श्री गणपति चंद्र भंडारी एम.ए.

पात्र

1. एक प्राइवेट कन्या पाठसाळा रा मैनेजर, अध्यक्ष अर वींरी अर मुख्याध्यापिका
2. स्कूल रो सालाना जलसो देखण नै आयोड़ा दरसकां मांयला चगकर ५
3. एक अवेड़ उमर रो छठो दरसक।

जगा—जलसै रो हॉल। समै—सिंझ्या री ७ बजियां

[हॉल रै रंगमच माथळो सिरै पड़दो बंद है। सामने हॉल दरसकां सूं भरियोड़ो है। सारा जणा आज रा अतिथि सिक्सामंत्री जी बाट जोवै है। वांरी उडीक में लोग काठा आखता हुया है। आपस री बातचीत सूं हॉल में खासो हाको मचियोड़ो है। इत्ता में ई मैनेजर साब पड़दा रै लारै (नेपथ) सूं माइक पर आ घोसणा करै–]

मैनेजर—(मांसै सूं) मैरबानी कर नै सांती रखाचो–सगळा मैमानां सूं म्हारी हाथ जोड़ नै अरज है कै थोड़ी देर भळै सांती सूं विराजो। आज रै जळसा रा मुख्य अतिथि सिक्सामंत्री जी एकाएक ई कैबिनेट री जरूरी मीटिंग हुजाणै सूं वीं में अटक ग्या। ई सूं आबा में देर हुगी है; पिण अबार फोन सूं समचो मिळियो हैं कै मीटिंग खतम हुगी अर मंत्री जी हमें पधारण आळा ई है।

[दरसकां मांय सूं 'भो' री अवाजां आवै। किताक जणा ऊभा हुय'र बोलै–'कार्यक्रम सरू करो!' तो किताक कै'वै—'मैनेजर साब बारै आवै!' माइक आळो एक माइक बारै लाय'र मेलै अर मैनेजर साब बारै आय नै माइक सामां ऊभै।]

दरसक १:- (आप री जगा ऊभो हुय'र) कार्यक्रम क्यूं नीं सरू हुरयो है ? हाथ माथली घड़ी तो देखावो आप ?

मैनेजर:— म्हैं आपनै अरज करी नीं हुकम, कै मुख्य अतिथि जी री उडीक है जिकै हमें आया-काया ही समझावो ।

दरसक २:- (मंच कानीं जाता थकां) औ 'मुख्य' नै 'साधारण' भळै कईं हुवै सा ?

दरसक ३:- (मंच कानीं जाता थकां) एक 'मुख्य' अतिथि कित्ता 'साधारण' अतिथियां रै बारवर हुवै सा ? आ तो फुरमावो ?

दरसक १:- (मंच कनै पूग नै) वै 'मुख्य' नै म्हे सगळा 'साधारण' क्यूं ?
(तीन चार जणा भळै ऊठ नै मंच कानीं चालै अर मंच माथै चढ नै सारा जणा मैनेजर नै घेर लेवै ।)

दरसक ४:- (मंच माथै सूं इसारो कर नै) दरसकां में तो मंत्री जी रा बावो सा ई विराजियोड़ा है ।

दरसक ५:- वै भी 'साधारण' नै मंत्री जी 'मुख्य' ? औ कठा रो न्याव है ?

मैनेजर :- ऐ फालतू री बातां तो आप छोडो नै थोड़ो समझ सूं काम लिरावो, मालकां ! बाप, दादा या काका बाबा व्यक्ती रा हुवै, पद रा नीं हुवै । थोड़ो सबर करावो । औ सिस्टाचार रो तकाजो है जीसूं आप नै अरज कर रयो हूं ।

दरसक ५.- अरे हुकम ! घंटा भर सूं तो म्हां सिस्टाचार रै जूए रै नीचै दबियोड़ा बैठा हां । आखिर इण सिस्टाचार रो नै सबर रो कोई छेभी है कै नीं ?

दर० १:- म्हांरै टैम री भी कीं कीमत है कै कोनी ?

दर० ५:- अरे ! भाई, अपां तो 'मामूली राम' हां । अपां रै बगत रो कईं मोल ?

मैनेजर:— आ बात नीं है, भाई साब ! पिण हमैं चाणचकै ई कैबिनेट री मीटिंग हुगी जिण रो तो मंत्री जी भी कईं करै ? वीं में तो बैठणो ई पड़ै ।

दर० २:- तो वै इसा जलसा में आवण री हामी भरेईज क्यूं ? वै किसा जाणै कोनीं कै म्हैं ऐन बगत माथै किणी भी कारण सूं अटक सकूं हूं अर जे म्हैं टैमसर नीं पूग सकियो तो कित्ता जणा नै म्हारै लारै खोटी हुणो पड़सी !!

दर० १:- म्हैं तो कैवूं कै सिक्सण संस्थावां रा जलसा में मंत्रियां नै नूतण री जरूरत ई कठै है ? सोचणै रो ओ सामंती तरीको अपां नै छोड़णो पड़सी। सारदा माता रा मिंदरां में तो विद्वानां रो मान हुणो चाहीजै । राजनीतिज्ञां रो वठै काई काम ?

मैनेजर:— तरीका तो हमैं बदळीजता-बदळीजता ई बदळीजसी । म्हनै तो सगळै ई सामंती तरीकां रो ई बोळ-बाळो दीसै । म्हां तो संस्था रो हित सोच नै ई मंत्रियां नै बुलावां हां, सा । सोचां कै जे वै संस्था रो काम देखेला, तो ई री कमियां मेटण में भी मदद ईज देवेला ।

दर० २:- आप रै सोचण रो तरीको ईज गलत है । अगर संस्था रो काम सागै है, तो अनुदान में बदोतरी रो वीं रो हक है; अर कीं नवा काम उठै हुता हुवै तो वीं नै कीं वत्ती रासी भी मिळणी ई चाहीजै । ई खातर मंत्रियां सूं भीख मांग नै आप वांरी आदत बिगाड़ो हो ।

दर० ३:- वै किसा खुद री जेब सूं काड'र देवै पईसा ? अपांरा पईसा ई तो अपां नै बांटै है । पछै आ चिमचागिरी क्यूं ?

दर० १:- साच पूछो तो सा'यता वै अपां नै नीं दे रया है बल्कि सा'यता अपां वां री कर रया हां । सिक्सा देवण रो जिम्मो सरकार रो है अर निजी स्कूलां चलावणियां ई तरै सरकार रो काम ईज कर रया है २०-३० सैकड़ा चंदो उघाय नै सरकार री ड्यूटी अगां पूरी कर रया हां । वां नै अपां रो आभार मानणो चावै ।

दर० ४:- इज्जत तो वां नै अपां री करणी चावै । आ' ऊंधी गंगा बैवाय नै तो आप वां रो माथोई फुला रया हो । वां रै अहम् नै अणूती हवा मत ना देवो, मैनेजर साव !

दर० ५:-- वां नै सुरगां सूं उतरियोड़ा देवता मत ना समझो । वां नै गंगी अपां वणाया है, अपां री सेवा री खातर । क्यूं सा बोलो कनीं ?

दर० २:- बिलकुल ठीक है । जनता सारां सूं वडी है—सगळां रै ऊपर, सारां री मालक !

दर० ३:- मंत्री अर कलक्टर—सै वीं रा चाकर है ।

मैनेजर:— देखोसा ! कै ऐ सगळा ई नारा सुणण में तो घणा ई सुवावणा लागै पिण वै'वार री दुनिया में हाल आं रो कीं मोल कोनीं । संस्था

चलावै वांनै तो सारी वातां देख नैं ई चालणो पड़ै, समझ्या आप ?
[धोती, बंगदळै रो कोट नै साफो पैरियोड़ो मोटी-मोटी मूंछा आळो एक अधैड़ दरसक नं० ६ उठै अर मंच माथै चथतो चढतो बोलै]—

दर०:— तो वै'वार में यां नबा मोलां री थरपणा कुण करसी ? औ' जिम्मो किण रो है ? आप री कमेटी रा अध्यक्ष कठै ? म्हैं बां सूं बात करणी चावूं हूं ।

मैनेजर:—वै मंत्रीजी नै फोन करण नै पधारियोड़ा है खासी बेळा हुगी । हमैं तो आता ईं हुसी । (मुख्याध्यापिका आवै)

मुख्या:—अध्यक्ष महोदय जी पधार गिया है । (अध्यक्ष जी आवै)

अध्यक्ष:—देवियां नै सज्जनां । म्हैं हमार फेर मंत्रीजी नै फोन करयो तो पतो लागो कै बंगळा सूं तो रवानै हुयां नै आध घंटो हुयग्यो । उठा सूं कार में अठै ताईं आबण में घणा सूं घणा १० मिनट लागै । राम जाणै मारग में कठै अटकगा । यूं आप जाणो ई हो कै अपांरा युवा सिक्सामंत्री औरां सूं घणै न्यारे सुभाव रा है । वै कदेईसै'क ईज लेट हुवै । म्हैं घणो सर्मिदा हूं कै आप नै इत्ती देर खोटी हुणो पड़ियो, पिण करां तो कईं । सिष्टाचार पाळणोई पड़ै । लाचारी है ।

दर०६.—खैर आप हमैं ई जल्दी करावो ।

दर०२— कै हाल को पूरो हुवो तीं आप रो सिष्टाचार ?

मैनेजर—ईं हालत में तो अपांनै कार्यक्रम सरू कर देणो चाहीजै ।

मुख्या०—हां, सा । अपां नै औ' हॉल नव बजियां ताईं ज मिळियोड़ो है अर पूणी आठ बज चुकी है । डेढ़ घंटै रो कार्यक्रम है नै आधो घंटो इनाम बांटण में नै भासण-बासण में लाग जासी । उठी ढोलक नै सै'नाईवाळा दोनूं जणा तो नंऊ बजताईं जावैला परा क्यूं कै वांनै १० री गाड़ी सूं जैपर जाणो है ।

अध्यक्ष—म्हैं तो देखूं कै जद ठै'रियाई ठै'रिया तो १०-१५ मिंट भेर ठै'र जावो । जद मंत्रीजी अठै आवण सारू रवाना हो चुका है तो आवैला तो खराईज । दो-तीन आइटम काट दीजो ।

मुख्या—म्हां तो पै'लै ई टाळवां आइटम राखिया है । हमैं भेर काट दिया तो छोरियां रो-रो नै ई पूरी हुजासी अर वांरा मा बाप तो म्हारो जीव ई

काढ लेसी ।

दर३०—नहीं, नहीं, म्हे आइटम नहीं काटण दालां । म्हे लोग अठै म्हांरी बच्चियां री काम देखण नै आया हां, मंत्रीजी रा दरसण करण नै नीं आया हां।

दर०२—कोई भी आइटम नहीं कटेला ।

मैनेजर—पिण म्हांनै ६ वजतां ई हॉल तो खाली करणोई पड़सी । कालै अठै एक दूजी पार्टी रो शो है, वै आपरो रियरसल करसी ।

दर०१—वा म्हे कीं नहीं जाणां । आईटम तो सगळाई करणा पड़ैला । मंत्रीजी रो भासण भलेई काट दिराइजो ।

दर०२—नै हॉल आळां री हर्जानो मंत्रीजी सूं आप वसूलयो करजो ।

वर०३—कोई आइटम नहीं कटैला ! (मच मायँ ऊभा सारा दरसक बोलै-"नहीं कटैला ! नहीं कटैला !"

(छऊं दरसक मैनेजर नै अध्यक्ष रै चौफेर घूमणो मांडै अर नारो लगावता जावै-"कोई आइटम—नहीं कटैला !" तीन-चार वार बोलियां पछै उल्टा घू.ण लागै अर हाथ उठा उठा'र वोलै—"जनता ठाकर ! मंत्री चाकर !" तीन-चार वार वोल नै भेर ऊंधा घूमै नै बोलै-'सागंती चस्मा-उतारदो)"

अध्यक्ष:—(हाथ जोड़नै) आछो, मै'रवान ! हमै औ घेराव बंद करावो । मैनेजर साव ! सुरू करावो कार्यक्रम ! म्हैं आगै आळी पार्टी सूं हाथा जोड़ी करनै आधो घंटो औरूं मांग लेसूं । (मंच मायला दरसक ताळियां वजाता नीचै उतर जावै अर आप आप री जगा जाय बैठै । दरसक न ६ माईक कनै ऊभो रै'वै अर बोलै)

दर०६—म्हनै घणी खुसी है कै संस्या रा प्रबंधक आपरै सोचण रो तरीको बदळ'र कार्यक्रम चालू करणो तै करयो है पिण कार्यक्रम सुरू हुवां पै'ला म्हैं आपनै आ जरूरी सूचना देवणी चावूं हूं कै अपां रा प्रगतीसील सिक्सा-मंत्री ठीक टैम मायँ पधारग्या हा अर अपां रै बीच में ई मामूलीराम बण'र बैठा हा (सारा दरसक हक्का वक्का हुय'र चौफेर देखणो मांडै ।) पिण वांरो असली रूप पै'चाणण रै वास्तै आप नै भी आप रा चालू चस्मा वदळणा पड़सी (साफो, कोट अर नकली मूंछां उतारै । मांए कुड़तो पैरयोड़ो है । चावै तो जेब मांय सूं किस्तोनुमा टोपी भी पै'र ले ।) औ म्हूं आप रै सामो ऊभो हूं (हाथ जोड़'र नमस्कार करै; दरसक ताळियां वजावै) दूजी वात आ कै'णी चावूं हूं कै संस्या री

मैनेजमेंट या म्हैं खुद आपरी टैम विलकुल खराव नीं करी है । म्हनै बाळपणा सूं ई अभिनै रो घणो कोड हो अर मैनेजर साब है म्हारा बाळगोठिया, जींसूं यां रो आग्रै मान'र म्हैं भी ईं एकांकी में अभिनै करणो मंजूर कर लियो हो । यूं भी घणकरा नेता तो अभिनेता ई हुवै ! औ एकांकी ही आज रै कार्यक्रम रो पै'लो आइटम हो ।

हमैं दो सबद म्हैं उद्‌घाटन भासण रै रूप में भी अरज करदूं । मुख्य अतिथि कोरी गळै में माळा पैर'र बैठो क्यूं रै'वै ? अगर बो भी कार्यक्रम रो अंग बण सकै तो कईं बेजा बात है ? मुख्य अतिथि नै दूजां सूं न्यारो अर भिन्रा आदमी दरसावण री परम्परा में म्हनै सामंती प्रथा री बास आवै ही जीं सूं ईं परम्परा नै भी म्हैं बदळणी चावतो हो सो म्हैं ईं नाटक में पारट करणो सीकार लियो । (ताळियां बाजै) संस्था री जाणकारी देवण सारू मंत्रियां नै बुलावण में तो हरज कोनीं पण सिक्सण संस्था में मेहताऊ पद तो किणी सिक्सासास्त्री नै या विद्वान नै ई देवणो ओपै अर इनाम भी किणी इसा तपसी रै हाथ सूं बंटाणा चाहीजै जिकै आप रो जीवण निस्वारथ भाव सूं बाळकां रै कल्याण में होम दियो हुवै । बीं री सेवा री पूरी जाणकारी भी टाबरां नै देणी चाहीजै जीसूं बाळक वींरा जीवण सूं प्रेरणा ले सकै । बस म्हनै आई अरज करणी ही । हमैं आप आगै रो कार्यक्रम देखावो । (नीचै उतरै-खूब ताळियां बाजै ।

⊙

तीसरी सड़क, सरदार पुरा
जोधपुर



समीक्षा—

'नुकती दाणां'

लेखक-आं नुकती दाणां नै गद्यकाव्य की संज्ञा दी है, पण ये रामकृष्ण दास अर वियोगी हरि जसा गद्यकाव्य नहीं है क्यूं कि वे भोत ज्यादा रूमानी, काल्पनिक अर एक खास ढब का हा । गोविंदजी का ये दाणां सुभाषित या सूक्तयां हैं-नीतिपरक अर यथार्थवादी भी । प्रकृति में ये आपका भावां-विचारां का प्रतिबिंब देखै है । दाणां की विषय वस्तु है; व्यापक अज्ञानांधकार, पोथां अर माया को जाळ, भ्रष्टाचार, मनुष्य की प्रकृति सूं घणी-सारी दूरी, मानव का पाप की काळूंस चंद्रमा का घव्वा में, बादळ अर सूरज को व्यवहार-वैषम्य (प्रकृति-वर्णन बराबर मानव सूं सट कर होयो है, हट कर नहीं) कृतज्ञता कै बदलै कृतघ्नता, स्वभावान्तर, 'स्वभावो दुरतिक्रमः', असली अर नकली भक्ति, खून चूसणिया कयां आया मिनख जूण में, अर्थ सूं अनर्थ, भक्ति को सच्चो सरूप, कुभार्या को रूप स्वार्थान्धता, वड़ां को वड़प्पन, लक्ष्मी की कृपण कै घरां स्थिरता, कौटिल्य, आकाश गंगा पर कई तरां का भाव, दीपक अर सूरज को आंतरो आदि-आदि । कला कै लिये कला में लेखक को विश्वास नहीं है । प्रकृति का रूप में भी कालिदास या वर्डसवर्थ की तरह लेखक को मन रमै नहीं । कदे प्रकृति कोई विचार लेखक नै देवै तो कदे लेखक का विचार प्रकृति में प्रतिबिंबित दीखै । उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, व्यतिरेक, आदि, अलंकारां को सहज रूप यामें बराबर दीखै, ज्यामें कठै बना-वटीपण नहीं ।

ले० श्री. गोविन्द अग्रवाल
प्र. लोक संस्कृति शोध संस्थान.
नगर श्री चूरू. (राजस्थान)
पृ. सं. १०१. सजिल्द. मूल्य. दस रुपये

सत्येन्द्र जी जसा समालोचकां नै शायद यो पतो नहीं कै नुकती दाणां एक-एक कर नहीं परोस्या जाय, न एक-एक कर बानै खाया जाय । ई वास्तै ही तो बै लिख दियो कै 'प्रत्येक दाना विलक्षण है, नावक के तीर की तरह बेंधने' वाला भी है,........मीठी कुनैन की तरह उपयोगी है.........न यै नुकती दाणां है, न मोतीचूर का लाडू । यै है मोत्यां की लड़ (मुक्ताहार) । लड़ में मोती सै एक सरीखा नहीं है; कोई बसरा, कोई कल्चर अर कोई 'आर्टीफिशियल' भी । बच्चन जी कह्यो है कै यै दाणां १०१ की जगां १०८ होता 'तो जपमाला की गरिमा पाते', पण माळा में १०१ मणियां भी होय है अर १०१ को आंक बयां भी शुभ मान्यो जाय है । माळा जपणा का यै कोई स्तोत्र तो नहीं है, पण हां, कोई कै गळा को हार जरूर हो सकै है-असो हार जीमें एक-एक मोती को आपकी न्यारी छटा है ।

यै १०१ सुभाषित राजस्थानी में जसा रच्या-ओप्या है, वसा तो बांकी हिन्दी में भी नहीं ओप्या है, अंग्रेजी में तो कठै-कठै अर्थ को अनर्थ भी होगो है । थोड़ा उदाहरण द्यूं हूं पृ. ३. Ascare-Crow is often Better Than Man' (हिन्दी में है 'भ्रष्टाचारी मनुष्य से) Jealous'y की जगां घणकरी वर 'Envy'; पृ. १८ कळपना को अनुवाद है Conecpt. पृ. २० 'यो गुमान झूठो ई है ? का अगुवाद Is Just Fictitious'; पृ. २२ ·Bidding a Diew to Its Beloved The Night ('Adiew' जसी वर्तनी, की गळत्यां तो कई है) पृ. २५ 'Searching Their Lovers जयां कोई की जेबतलासी करी ज्यारी होय; पृ. २७ खाली अंग्रेजी सूं क्यूं ही मतलब कोनी निकळै 'With The Emergence of Evening Beauty, When The Hideous Darkness Spreads In The Sky, Stars come out As Pointing' Fingers' 'पृ. २८ Like Tee Salt Sprinkled Wounded of A Love-Born woman मूळकी हत्या सी कर देवै; पृ. २९ आपकै सागै ले ज्यावै Takes Him With her Wherever She Goes (होणो चाहे हो Also Takes Him Along Side) पृ. ३० Surpresses, पृ. ३१ Apply To The Olds of Earth; पृ. ३८ Dig its Pearls; पृ. ३९ He does Not Show Her Even To The Sun And The Moon, ('क चांद सूरज भी नीं देखणै सकै) पृ. ४२ खाली अंग्रेजी में काव्यत्व को नाम भी नहीं; पृ. ४४ वरसावै-Squanders. पृ. ४६ दाळद कै अंधारै में तो आगली-पाछली सा सूझै—Revels in Poverty Like an Owl पृ. ४९ जड़खेत—Dead Field पृ. ५० अंग्रेजी

जड़'; पृ. ५२ Boat Full Deed पृ. ५५ How it is Possible ? पृ. ७१ But A Wise man Often Harms Others Knowingly-फिर बुद्धिमान कैसे ? अनुवाद है 'स्यानी कुहाणी आळो मिनख' पृ. ८६ Plane Accidents Makes, पृ. ८७ 'Bow Down For Any Body.' पृ. ८८ दरपण का मोताज रैवां—We use A Mirror.

अंग्रेजी में अठै वठै सगळी जगां क्यूं न क्यूं गड़बड़-झाळो है। अंग्रेजी रो रूपान्तर परिष्कृत रूप में आतो तो चोखो रैवतो।

या मोत्यां री लड़ देखणी-पहरण रै जोग है। ई में मीनाकारी उबड़र आई है। जयां दो दुकान सट्योड़ी होय एक शुद्ध घी की अर दूसरी डालडा की मिठायां की। असोही गत होई राजस्थानी-अंग्रेजी का मेळ सूं। किताब को शीर्षक भ्रामक है राजस्थान में जन्म्या जाणै है कै नुकती-दाणा तो मांगतां भर गागा जाय।

⊙

अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, जोधपुर वि. वि.

नुवां सम्पादक

माह अक्टूबर '७६ सूं "जागती जोत" रो सम्पादन राजस्थानी रा मानीता मनीषी श्री किशोर कल्पना कान्त करसी।

उणरो पतो है—

किशोर कल्पना कान्त,
कल्पना लोक,
रतनगढ़ (चूरू)

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस भाग २

○ परिचय आमंत्रित ○

इण कोस रो पैलो भाग सन् १९७४ में छप्यो । इण में २५० नेड़ै साहित्यकारां बाबत जाणकारी दिरीजी । उण बखत भी घणा साहित्यकारां रा नांव छूटग्या हा अर तद सूं बडी तादाद में साहित्यकार सामीं आया है । आं सगळां रो परिचय भी दूजै भाग में देवणो है ।

इसै सगळै साहित्यकारां सूं अरज है कै वे नीचै मुजब विगत लिखर सीधी ही संपादक नै भेजै !

नांव, शिक्षा, जनमतिथि अर जगां, मौजूदा काम-धन्धो, छप्योड़ी पोथ्यां (प्रकाशक), तिथि, संस्करण, मोल अर विषय आदि), पत्र पत्रिकावां में छप्योड़ी रचनावां, दूजी खास जाणकारी, स्थाई अर मौजूदा ठिकाणो ।

कोस रै संपादक रो ठिकाणो है :

श्री रावत सारस्वत
डी-२८२ मीरां मार्ग बनीपार्क
जयपुर-३०२००६

डॉ० परमानन्द सारस्वत, उपसचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर प्रकाशित करयो अर हिन्दुस्तान प्रिंटर्स, कुचीलपुरा, बीकानेर में छप्यो ।

जागती जोत

राजस्थानी भाषा री त्रैमासिक पत्रिका



भाग १ : अक १

जनवरी : १९७८

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम

बीकानेर

जागती जोत

[राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर, री मुख्य पत्रिका]



भाग १ : अंक १

जनवरी : १९७३

प्रधान संपादक :

नरोत्तमदास स्वामी, अेम. अे.

संपादक

मनोहर शर्मा, अेम. अे., पी-अेच. डी.

सत्यनारायण स्वामी, अेम. अे., पी-अेच. डी.

प्रकाशक

(राजस्थान-साहित्य-अकादमी, उदयपुर, रै अन्तर्गत)

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक :
डा० मनोहर शर्मा
मानद मंत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
बीकानेर (राजस्थान)

भाग १ : अंक १
जनवरी : १९७३

वरस रो मोल : रु० १२·००
अेक अंक रो मोल : रु० ३·००

मुद्रक :
मॉडर्न प्रिन्टर्स, आगरा

सूचनिका

जागती जोत



राजस्थानी भापा रा समर्थ सेवक
पं० रामकरण जी आसोपा



राजस्थानी

वीर-भू री वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

तीन कोटी कंठ-स्वर सूं
गरजती जै जै भवानी !
अमर साहित री धिराणी
राज-भाषा लोक-वाणी
धाक थारी विश्व मानी !
वीर-भू री वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

अंव ! भूल्या वंसजां नै
आज फेरूं सजग कर दे
ज्ञान भर विज्ञान भर मा !
प्राण में तूं प्राण भर दे
विश्व में गूंजै सदा ही
अमर भू री अमर वाणी !

गीरवाणी जै भवानी !
वीर-भू री वीर वाणी !!
अमर वाणी राजथानी !!!

वंदन-माल

—रामसिंह—

(१) वंदन-माल

अेक जमानो हो जद प्रत्येक पळ भावां रै झरणै में इंद्र-धनुष रा रंग घुळीजता। अन्तर री सरिता रै तरंगां सूं आकुल प्रवाह में लहर रै माथै लहर चढनै दौड़ती। हिरदै री वाड़ी में चटकीला फूल मुळकता और उणां री मादक सुगंध सूं आत्मा मस्त रैवती।

जद सूं समै रो चक्र घणो घूम चूको। बो रंग आज फीको पड़ग्यो है, वो वेग धीमो हो चूको है और सुगंध उड चूकी है। आज कवि नै उण पुराणी स्मृति रो प्रेत, घणै हेजाळू आत्मीय जन रै शव आळी दाई, अणजाणियो और डरावणो-सो लागै है।

उण भूत और इण वर्तमान रै किनारां रै बीच में समय-सरिता निरंतर वैवती रैयी है। घणी रंग-रंगीली पुष्पांजळियां इण सरिता में चढायीजी और न्यारा-न्यारा रूप-रंगां रा घणा दीपक वैवायीजिया। लहरां माथै झूमता, नाचता-कूदता, हंसता-रमता वै दीपक अब सागर तांई पूग चूका हुसी।

इण बीच मरु-भोम री माटी रो बणियोड़ो म्हारो ओ पुराणो दीपक, जको कुंभार रै चाक माथै पुराणै-सूं-पुराणै दीपकां साथै उतरियो हो, स्नेह सूं भरियो थको पड़ियो रैयो और आ पुष्पांजळी भी भरियोड़ी ही पड़ी रैयी, अर्पित नहीं करीजी।

अेक वखत मरुभोम रै रेतीलै विस्तार सूं घिरियोड़ी अेक सूकी नदी में अचाणचक वाढ आयी और जळ रै स्पर्श सूं निर्जीव सिकता-समूह में जीवण लहरावण लागियो। अंकुर फूटिया और हरियाळी-री डाळी-डाळी में महक-भरियोड़ा फूल फूलिया। पण सरिता धीमै-धीमै सूख गी और उण रो जीवण-रस घटतां-घटतां ठेट आखरी तळै तांई जा पूगियो।

इण सूकती मरु-सरिता रै विषण्ण तट माथै अेक दिन अेक अमर-सरिता रै तट-रो वासी आयो। इण रै सूकियोड़ा खेतां और मुरझावता फूलां नै देखनै उण रो

हिरदो प्रेम सूं भरीज आयो । उण इण रा पाटळ, मालती, जूही, चमेली, रजनीगंधा, कणिकारां री जड़ में स्नेह रो जळ सींचियो । फेर फूलां री माळा बणायी और उण माळा नै काव्य-वाटिका रै द्वार माथै वंदनमाळ ज्यूं संवार नै टांग दी ।

(२) संकल्प

हूं संकळप करू हूं कै अब कदैई कविता नहीं लिखूंला पण वा वार-वार आप रो रहस-भरियोड़ो हिवड़ो खोलनै म्हारै आगै राख देवै ।

सिंझ्या रा धूड़ सूं मैला हुयोड़ा केश जद वांसळां रै वन में अळूझ जावै, जद अरहर अेकांत मार्ग में ऊभी थकी नाचण लाग जावै, अेक सुरीली पांखांवाळो भोळो पाखी म्हारै माथै ऊपर सूं उडनै कुण जाणै कठीनै जाय परो ।

घणी आघी गंगा री कळकळ करती लहरां माथै आगला पगां पर ऊभी होयनै आ कुण तारां जड़ियोड़ आकाश नै चूमणो चावै है ?

हूं संकळप करू हूं कै अबै कदैई गीत नहीं गाऊंला पण वा वार-वार आप री सोनै री वीण म्हारी गोदी में राख देवै ।

(३) मातृभूमि रो संदेश

जरूर म्हारी जलमभोम सूं आवै है ओ समीर । मा ! जरूर इण थारै चरणां रो चुंबन करियो है नहीं तो म्हारै हिवड़ै रै खेत में ऊगियोड़ै धान नै हरख सूं बावळो कर देवणवालो प्रेम इण में कठै सूं आयो ? इण रै सांस में थारै चिकुर रो परिमळ है ओ फूलां रै वन री मातेश्वरी !

इत्तो प्रेम है म्हारै सूं मा ? कांई तूं मनै बुलावै है ? कांई थारी अनंत गोद रो वो छोटो-सो खुणो म्हारै विना सूनो है जठै रो संदेश लायो है ओ समीर ?

हूं आयो लै मा ! म्हारी जलम-जलम री मा ! आपणै चुंबन सूं म्हारी नींद सूं भरी आंखियां में विश्वप्रेम भरणवाळी मा ! हूं आयो । म्हारै सपनां रै स्वर्ग में जागती थकी मा ! हूं थारी स्वतंत्र गोदी में रमण नै आयो !

ओ जीवण रा सदा रा साथी समीर ! सूखै हिवड़ै में निरंतर नूंवो जीवण भरणवाळा समीर ! प्रत्येक पळ स्वर्ग रो संदेश सुणावणवाळा समीर ! मातृ-प्रेम सूं छलकती थकी प्यालियां री अै दो बूंदां हूं तनै अर्पण करू हूं ।

लै ! म्हारै हृदय-सरोवर रै कंपित कमळां रै मकरंद रा कण ले जायनै उण रै मंगळ-चरणां में चढा दै जठै सूं इणां रो उद्भव हुयो हो, रोजीनै जठै सूं इणां रो उद्भव हुवै है, निरंतर जठै सू इणां रो उद्भव हुया करसी और जठै इणां नै अनन्त शांति मिलसी । ले जा समीर ! ले जा ।

राजस्थानी भाषा रा साचा और मोटा सेवक—

पं० रामकरणजी आसोपा

—अगरचंद नाहटा—

राजस्थानी भाषा घणी पुराणी, साहित्य-समृद्ध और समरथ भाषा है। समय-समय पर अनेक विद्वान लेखकां अर कवियां इण भाषा री वडी सेवा करी है। बां सब सेवकां अर बां री सेवा रो पूरो परिचय राजस्थानी साहित्य रो इतिहास प्रकाशित हुवण सूं ही सामनै आसी।

वीसवीं शताब्दी में हिंदी रो प्रचार राजस्थान में वधणो सरू हुयो। इणरो अेक प्रधान कारण ओ हो कै अठै मास्टर वगैरह घणखरा बारला लोग आया और राजकाज तथा शिक्षा रै संचालन रो काम भी बारला लोगां रै हाथ में रैयो। पढाई-लिखाई हिंदी में ही हुवण लागगी। इण रो परिणाम ओ हुयो कै जिका लोग हिंदी वा अंग्रेजी आछी नहीं जाणता बै अेक हीन भावना सूं ग्रस्त हुग्या, वां आप री मातृभाषा रै उत्थान रो प्रयत्न नहीं कर'र हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी में योग्यता वधावण रो प्रयत्न सरू कर दियो। इण रो ही परिणाम है कै राजस्थानी भाषा और साहित्य रो गौरव घटतो गयो। सदियां सूं राजस्थानी भाषा आप रो जिको स्थान वणायो हो उण सूं वा वंचित हुगी। इण वास्तै सब सूं पैलां राजस्थानी-प्रेमियां रो काम ओ हुणो चाहीजै कै राजस्थान रै शिक्षा-विभाग में और सरकारी कामकाज में राजस्थानी नै जळदी-सूं-जळदी उचित स्थान मिलै।

वीसवीं शताब्दी में राजस्थानी साहित्य री सेवा करण-आळा घणा मातृभाषा-प्रेमियां योग दियो। उणां में शिवचंदजी भरतिया रो तो आछो नांव है और सगळा जाणै है पण जोधपुर रा रामकरणजी आसोपा भी बहुत जरूरी और महत्त्वपूर्ण काम करियो जिण री चर्चा भोत ही कम हुवै। इण लेख में उणां री मातृभाषा री सेवा रो थोड़ो परिचय देवण री कोसीस करी है।

राजस्थानी भाषा रो पुराणो नांव मरु-भाषा हो। उण नै मारवाड़ी भी कैवता। पं० रामकरणजी आसोपा रै वखत में इण भाषा री प्रसिद्धि मारवाड़ी भाषा रै नांव सूं

विशेष ही । वै संस्कृत रा घणा बड़ा पंडित हा तो भी मातृभाषा रा अनन्य प्रेमी और पुजारी हा । इण वास्तै उणां नै मारवाड़ी भाषा री उन्नति री बड़ी लगन ही और साथै ही मातृभाषा री हीनता और उपेक्षा रो बड़ो दर्द हो । अबार सूं ७५ वर्ष पैलां वां सगळां सूं प्रथम मारवाड़ी व्याकरण बणायो और छपायो । उण री प्रस्तावना में वै लिखै है—

"संसार में व्यवहार री मूळ भाषा है, सो जिण देश री भाषा री उन्नति है उणी देश री उन्नति है, क्यूंकै जगत् में व्यवहार मात्र लिखा-पढ़ी सूं हुवै है; सो जिण भाषा रो लिखणो-पढणो साफ और शुद्ध है उण भाषा में कोई व्यवहार करो, किणी तरै रो संदेह नहीं हुवै । और वा भाषा समज में पण सोरी आवै । × × × देश री भाषा री उन्नति रै लारै देश री उन्नति है । अतअेव देशहितैषी लोगां आप-आप री भाषा नै सहायता दे पूरी उन्नति पर पोंचाय दीधी है । पृथ्वी में आज किन..किसी देश री भाषा इसी अपंग और विना व्याकरण नहीं रही है, कै जिसी इण उन्नति रा दिनां में मारवाड़ी भाषा रह गयी है । मारवाड़ी भाषा सिवाय बाकी गुजराती, मराठी, बंगाली, हिंदी, अंगरेजी, अरबी, फारसी संस्कृत आदि कोई भाषा इसी नहीं है, कै जिण री व्याकरण नहीं; और पढण नै पैली, दूजी, तीजी, चोथी आदि किताबां नहीं । × × × इणी तरै यदि मारवाड़ी भाषा में पण किताबां बणायी जावै और वै व्याकरण रा कायदा रै साथ पढ़ायी जावै, और इमतियान मुकरर हू जावै, और इमतियान दीयोड़ां रो प्रथम हक्क समजियो जावै तो आ भाषा पण तरक्की नै पोंचे; परंतु मारवाड़ी भाषा री न तो कोई व्याकरण है, न कोई पढण री किताबां है, और न कोई इण भाषा री खूबियां नै जाणै है । भाषा री मुख्य खूबी आ है कै भाषा मावरावाळी हुवणी, सो जिसी मावरादार भाषा मारवाड़ री है इसी दूसरी अेक पण नहीं है; परंतु इण भाषा री व्याकरण और किताबां न हुवणा सूं इण री खूबियां री राख में ओटियोड़ा अगारवाळी दशा है । × × × अेक दिन री बात है, भाषा-संबंधी बात चाली तो झट अेक परदेशी बोल ऊठियो, कै मारवाड़ी भाषा कोई शिष्ट भाषा थोड़ी ही है; × × × यदि उत्तम भाषा हूती तो इण री व्याकरण वगैरै अवश्य हूती । न कोई इण में किताबां है, और न कोई कोश (डिक्शनरी) है, और इण सूं हीज यूनीवर्सीटी में मुकर नहीं है ; आ तो सिर्फ जंगळी भाषा है । आ बात मनै घणी भूंडी लागी परंत लाचार, उणनै मैं कांई जवाब नहीं दे सकियो; पित्तो मारणो पड़ियो । जद सूं ही म्हारा मन में आयी कै किणी तरै, येन केन उपायेन, इण भाषा री उन्नति करणी चाहीजै कारण भाषा री उन्नति सूं हीज देशोन्नति है ।

"यदयपि इण भाषा री पड़ी दशा देख'र तो मन हतोत्साह हुय जावै है, परंतु × × राजराजेश्वर श्री सरदारसिंहजी साहिबां री तथा × × सर प्रतापसिंहजी राज मारवाड़ री गुणग्राहकता और देशोपकारिता री तर्फ सूं मूच्छित मन पाछो हरयो हुवै है, और मन में उत्साह बवै है; क्यूंकै इण बात री म्हारा मन में पूरी तसल्ली है, कै मारवाड़ी

भाषा कानी महाराजा साहिब और मुसाहिब-आला रो पूरो आग्रह है, क्यूंकै उर्दू नै उठाय दफतर में मारवाड़ी भाषा प्रचलित करी है, सो यदि मारवाड़ी भाषा री उन्नति रै वास्तै कोई तजबीज की जावै तो आप जरूर ध्यान दिरावैला। उण सूं हीज म्हारा मन में आ उमंग उठी कै हूं मारवाड़ी भाषा री व्याकरण लिखूं कै जिण सूं मारवाड़ी भाषा शुद्ध और साफ हुय जावै, तो मुख्य तो देश रो हित, और दूसरो इण रै वास्तै कोई कीं कै भी नहीं सकै। और जादा प्रचार हुवां सू गुजराती, मराठी आदि रै जिउं मारवाड़ी भाषा पण यूनीवर्सीटी में मुकर हुय जावै, कै जिण सूं बाळकां नैं मातृभाषा छोड'र हिंदी, उर्दू इत्यादि दूजी भाषा पढण री दिक्कत उठाणी नहीं पड़ै। ××× इण भाषा री किताबां वणायी जावै और व्याकरण रै साथै स्कूलां में तथा परगनां री पाठशालावां में पढायी जावै तो बाळकांरी दिक्कत मिट जावै, और मारवाड़ी भाषा री जरूर उन्नति हुवै। और मारवाड़ी भाषा री उन्नति होवणा सै मारवाड़ रो तो फायदो हुवै हीज, परंत मारवाड़ रै सिवाय और भी तमाम मुल्कां नै फायदो पौंच सकै; क्यूंकै कोई मुल्क इसो नहीं है कै जठै मारवाड़ी लोग नहीं; और मारवाड़ी मात्र आप रो व्यवहार मारवाड़ी भाषा में हीज करै है; मारवाड़ियां री वही, खाता, चिट्ठी-पत्री सारी लिखा-पढी मारवाड़ी भाषा में हुवै है। ××× यदि मारवाड़ी भाषा रो शुद्ध लिखणो-पढणो प्रचलित हुजावै तो मारवाड़ी लोग पण शुद्ध लिख-पढ सकै, और परदेशी पण उणां रै साथैं आछी तरै व्यवहार कर सकै; जिण सूं तमाम मुल्कां नै फायदो पौंचै।"

पं० रामकरणजी मारवाड़ी-व्याकरण लिखणै रै अर छपाणै रै बाद बाळकां नै पढावण वास्तै पाठ्यक्रम री तीन पोथियां त्यार करी ही और वै पढाई में मुकरर हुणै सूं आछो प्रचार भी हुयो। मारवाड़ी पैली पोथी री पांचवीं आवृत्ति सं० १९७२ में छपियोड़ी म्हारै संग्रह में है और दूजी पोथी री तीसरी आवृत्ति सं० १९६९ में छपियोड़ी म्हारै संग्रह में है। इण सूं मालूम पड़ै कै प्राथमिक कक्षावां में संवत् १९७२ तांई तो वै पढायी जाती ही। मारवाड़ी पैली पोथी री भूमिका में पंडितजी लिखियो—"मारवाड़ी भाषा जगत्-प्रसिद्ध है, और नियमित है; तथापि लोग इण भाषा रा नियम नहीं जाणै है, कारण आज तांई किणी विद्वान् इणरी व्याकरण तथा पैली, दूजी, तीजी, चौथी आदि किताबां वणायी नहीं; सो इण भाषा रो बाळकां नै बोध हुवण रै वास्तै प्रथम पैली, दूजी, तीजी आदि पुस्तकां तथा इण भाषा रा नियम जाणण वास्तै 'मारवाड़ी-व्याकरण' वणाय प्रकाशित करी है। इण सूं मारवाड़ी भाषा री उन्नति में सहायता मिलैला तो हूं म्हारा परिश्रम नै सफळ मानूंला।"

'मारवाड़ी दूजी पुस्तक' री भूमिका में लिखियो है—"मारवाड़ी भाषा री उन्नति रै वास्तै मैं मारवाड़ी व्याकरण तथा मारवाड़ी पैली पुस्तक छपायी और वै पुस्तकां देख लोगां उणां री वोत प्रशंसा करी।........मनै इण वात री वडी खुसी है कै कायस्थ-सभा इणां पुस्तकां री कदर कर स्वकीय पाठशाळा री पढाई में मुकर करी जिण सूं उत्साहित हुय हूं आ मारवाड़ी दूजी पुस्तक प्रकाशित करूं हूं।"

'मारवाड़ी तीजी पुस्तक' री भूमिका में लिखियो है—'मारवाड़ी भाषा रै प्रचार रै वास्तै म्हैं मारवाड़ी पैली, दूजी किताबां बणायी जिणां री जसवंत-कॉलेज रा प्रिंसिपल व सरिस्ते तालीम रा सुपरडंट मान्यवर पंडितजी श्री सूरजप्रकाशजी साहिब अेम० अे० कदर कर मारवाड़ री हिंदी पाठशाळावां में मुकर करी, जिण सूं उत्साहित हुय आ तीजी किताब बणाय प्रकाशित करी है। सो इण री कदर हुणा सूं हूं मनै कृत-कृत समझूंला।''

किणी भी भाषा री उन्नति रै वास्तै उण रो व्याकरण, कोश और पढाई री किताबां हुणी जरूरी है। पंडितजी मारवाड़ी-व्याकरण और मारवाड़ी पैली, दूजी, तीजी पुस्तक लिखण रै बाद राजस्थानी भाषा रै कोश रै काम में लागग्या। जोधपुर रै दीवान सर सुखदेवप्रसाद इण काम में अनता वणिया और पंडितजी री देखरेख में कई आदमी मुकर्रर कर शब्दां रो बडो भारी संग्रह करियो जिकां री संख्या ६०,००० तांई पूगगी। घणखरै शब्दां रा अर्थ भी लिखीजग्या। पण पंडितजी और सर सुखदेव-प्रसादजी रै देहांत रै कारण वो काम पूरो हुय'र प्रकाश में नहीं आयो। पं० बदरी प्रसादजी साकरिया भी वठै कोश रै काम में हाथ बंटायो हो। साकरियाजी नै मैं बीकानेर सादूळ-राजस्थानी-रिसर्च-इंस्टीट्यूट में बुला'र राजस्थानी शब्दकोश रै काम में नियुक्ति करायी। उणां नै बारबार जोधपुर भेज'र घणै प्रयत्न सूं सर सुखदेवप्रसादजी रै घरै जित्ती भी चिटां मिल सकी वै सब बीकानेर इंस्टीट्यूट में मंगायी। पण उणां में कई आखरां री चिटां नहीं मिल सकी। कई वर्ष बाद साकरियाजी सरकारी नियमां रै हिसाब सूं अवस्था री मर्यादा पूरी हु जावण रै कारण बीकानेर सूं अवकाश ले'र आप रै बेटै कनै वल्लभविदयानगर गया परा, जिण सूं राजस्थानी शब्दकोष रो काम इंस्टीट्यूट में भी अंतिम रूप में नहीं आ पायो। उण वगत में डिंगल गीतां रा ५०,००० सूं अधिक शब्द उदाहरण रै सागै श्री सीतारामजी लाळस नै पारिश्रमिक दे'र मंगाया हा। श्री रामकरणजी आसोपा रा भाई श्री गोविंदनारायणजी आसोपा अेक राजस्थानी-कोश त्यार कर'र नागरी-प्रचारिणी सभा नै दियो हो। उण नै भी रुपिया भेज'र इंस्टीट्यूट में मंगवा लियो हो। इंस्टीट्यूट री घणी मोटी करियो ड़ी महनत इयां ही पड़ी है।

पंडित रामकरणजी आसोपा री राजस्थानी भाषा री सेवा रा और भी कई पहलू है। मारवाड़ी री पैली, दूजी, तीजी पुस्तकां रै साथै वां मारवाड़ री भूगोल भी लिखी ही। मारवाड़ी पैली किताब रो मोल आधआनो, दूजी रो अेक आनो, तीजी रो दो आना और मारवाड़ री भूगोल रो दो आना राखियो हो।

पंडितजी श्रीमद्भगवद्गीता री भाषा-टीका राजस्थानी भाषा में लिखी अर वा प्रकाशित भी हुयी। इण सूं मारवाड़ी भायां नै गीता रो अर्थ समझण में घणी सुगमता हुयगी। पंडितजी राजस्थानी भाषा रा कई पुराणा ग्रंथां रो आछो संपादन भी करियो

जिणां में सूरजप्रकाश रा ९६ पृष्ठ कळकत्तै री ओशियाटिक-सोसाइटी सूं छपाया। टिप्पणी सहित ओ ग्रंथ पूरो संपादन करियोड़ो हो पण बो आगै नहीं छप सकियो। कविराजा वांकीदासजी रा सात ग्रंथ 'भारत-मार्तंड' मासिकपत्र में टिप्पणी सागै छपाया। ओ संग्रह 'बांकीदास-ग्रंथावली' प्रथम भाग में नागरी-प्रचारिणी सभा सूं प्रकाशित हुयो। इण सभा सूं हीज पंडितजी रो संपादित अैतिहासिक डिंगल काव्य 'राजरूपक' भी छपियो। 'नैणसी री ख्यात' नै मूळ राजस्थानी भाषा में छपावण रो काम भी पंडितजी सरू करियो जकै रो पहलो भाग तो निकळग्यो, दूसरो आधो छपियोड़ो हीज रैयग्यो। 'राजिये के दोहे' नामक किताब भी आप छपायी। सबसूं वडो ग्रंथ सूरजमलजी मीसण रो 'वंशभास्कर' भी आप हीज छपायो जिको करीव ५,००० पृष्ठां में है। इणीज तरै वीर-बत्तीसी, कर्ण-पर्व आदि घणा ग्रन्थ आप छपाया हा। 'मारवाड़ रो इतिहास' और कई ठिकाणां रा इतिहास भी आप रा लिखियोड़ा प्रकाशित हुया। संस्कृत में आप राठौड़ वंश रो बृहद् इतिहास २०,००० श्लोकां में लिखियो। जसवंतजसोभूषण और जसवंतभूषण रो अंग्रेजी में अनुवाद करियो। इण तरै आप राजस्थानी, हिंदी और संस्कृत तीनां भाषावां में घणो साहित्य निर्माण करियो। कळकत्ता विश्वविद्यालय में श्री आशुतोष मुकर्जी आप नै राजपूत इतिहास और संस्कृति रा प्रोफेसर वणा'र बुलाया हा। टैसीटोरी राजस्थान में आयो जद आरंभ में आप उण नै घणो सहयोग दियो जिण रो उल्लेख टैसीटोरी आप री रिपोर्टां में करियो है।

पींपल री गट्टो

—विद्याधर शास्त्री—

ओ विशाल-काय अश्वत्थ-संरक्षक म्हारला जूना साथी गट्टा ! म्हारलै दुजारै रै सागै-सागै, हूं देखूं हूं कै, आजकाल थारै पुराणियै रंग-ढंग में भोत-भोत फरक पड़ग्यो है। आज रै पचास-साठ वरसां पैली थारली जकी चमक-दमक अर अकड़ ही ना तो वा ही आज उण रूप में दीसै और ना थारा जूना साथी ही आज थारै कनै कठैई निजर आवै। मनै घणो दुख तो इण वात रो है कै थारी सुख-साता पूछणिया थे सारा साथी, सगळा-र-सगळा, अेकै सागैई, कठै गया परा। वै दिन भी हा जद, कांई नगरां में अर कांई रोही में, थारो अेक-छत्र राज हो। जद-कदेई म्हे पैदल जाया करता तो, हूं देखतो कै, छोटा-वडा पचासूं आदमी दूर सूं ही थारै दरसण वास्तै तरसता। उण कड़कतै अर लाय वरसतै तावड़ै में, पसेवा सूं सराबोर हुयोड़ा, अेक-अेक पेंड नै गिणता, म्हे जद दूर सूं ही थारली ऊपरली टोकी नै देखता तो देखतां ही हरया हु जाता। म्हे जद थारै कनै पूगता तो तूं म्हां सगळां नै आप री ठंडी छाती सूं चिपा लेतो अर थारो इष्टदेव पींपळ महाराज आप रै लांवै-लांवै हाथां नै पसार-अर, अेकै सागैई हजारूं ठंडै-ठंडै पंखां सूं, म्हां सगळां रै पसेवां नै पलक भर में ही सुका देतो। सहस-दळ रै इण स्वागत रै पछै जद म्हे पो रै इमरत-जळ नै पीता तो पीतां ही आंखियां नींद री झवकियां सूं भर जाती अर म्हारै मन में आती कै अवै कम-सूं-कम दो घंटा थारलै इण ठंडै आंगणियै माथै ही सूता-सूता सृष्टि रै सगळै सुखां नै भोग लेसां। पण पांच-दस मिनट भी पूरा कोनी हुता कै कोई-न-कोई आगै सरकण सारू तायासल करण लाग जातो। उण री खाथावळ इत्ती अणखावणी लागती कै मन में तो आ ही आती कै अेक लात में ही इण री सगळी खाथावळ नै खतम कर दूं पण जद दूसरा भी उण री हां में हां मिला'र उण रै सागै हु जाता तो झख मार'र मनै भी उठणो पड़तो और बार-वार थारै कानी देखतो और थारी उण मनवार नै याद करतो हूं उणां रै लारै-लारै चाल पड़तो। साची वात तो आ है कै दुनिया री कठोर परिस्थितियां और स्थितियां रै आगै गरीव मनड़ै री वात नै कोई कोनी सुणै।

खैर ! उणां रै सागै-सागै, अथवा उणां रै लारै-लारै, चालतां-चालतां भगवान री कृपा सूं फेर थारा दरसण हुता । दूसरा जद ताणी चिलम-तमाखू नै सम्हाळता, हूं थारलै ठंढै-ठंढै आंगणै माथै म्हारली कमर नै फेर सीधी कर लेतो ।

इण रै बाद तीसरी मंजिल मिनटां में ही पार हुती दीसती अर जद सूरज महाराज रै ढळतां-ढळतां हूं म्हारलै विद्यानगर रै बीड़ में पूगतो तो बठै बारलै जोड़ै री पायतळ में, जोड़ै रै च्यारां कानी, थारै ऊपर स्नान-ध्यान में मगन सज्जनां नै देखतो । आगै समै बे-समै पूगण री फिकर छोड'र हूं भी, शौच-स्नान आदि सूं निवृत्त हो'र, बठैई सायंकालीन आभै री मनमोहणी सुरंगी गहरी सुनैरी और गहरी चमकदार ललाई नै देखतो-देखतो, सूरज भगवान नै अरघदे'र फेर शांत संध्या रै शांत ध्यान में लीन हु जातो ।

× × ×

अै सगळी बातां अबै घणी पुराणी पड़गी है । इण बरसां में थारी-म्हारी मुलाकात उण पुराणियै मारगां माथै तो कोनी हुयी पण जद-कदैई कोई-सै दूसरै मारगां माथै जाण रो काम पड़्यो तो मैं कठैई थारलै उण ताजै रूप-रंग रा दरसण कोनी करया । अर जे कठैई थारलो पुराणियो ढांचो देखण में आयो भी तो थारली छाती नै पताळ में धसकती देख'र म्हारली छाती भी धकधक करण लाग गी । इण धसकण रै अलावै मैं आ भी देखी कै कठैई-कठैई थारलो तिग साव टूटयोड़ो पड़्यो हो पण बठै तनै सम्हाळणआळो अेक भी मानखो निजर नहीं आयो ।

थारली आजकाल री इण हालत नै देख'र म्हारलै माथै में दो-तीन सवाल निरंतर चक्कर काटै है । थारी आ हालत क्यों हुयी ? थारै ही किणी दोष रै कारण हुयी है अथवा थारलै इष्टदेव पींपळ महाराज री विशेषता में ही कोई इसी कमी आयगी जिण सूं उणां रै सागै-सागै तनै भी आज कोई कोनी पूछै ।

गट्टो चुप हो । जद गट्टै कोई-सो भी जवाब कोनी दियो तो म्हारलो माथो ही फेर कैण लाग्यो—अै सगळा सवाल इण रूप में उठ सकै है पण गट्टै री इण हालत रै खातर गट्टै अथवा पींपळ में कोई तरियां रो दोष देखणो बेकार है । अै तो आज भी, पुराणियै जमानैआळी नांई, सगळां री सेवा करण नै त्यार है—पींपल री सुंदरता अथवा उण री उपयोगिता में भी कोई तरियां री कमी कोनी आयी है । कमी आयी है तो बा उण लोगां में ही आयी है जिकां रा दिमाग आज रै पैट्रोल रै धूंवै सूं मटमैला हो चूक्या है और जिकां रोही री शुद्ध अर पवित्र हवा में कठैई अेकांत शांत स्थान में दो-च्यार पळ आराम सूं बैठणै अथवा लेटणै रो नांव लेणो भी भूलग्या है ।

अै लोग 'क्रांति ! क्रांति !' करता क्रांति रै नांव सूं सगळी पुराणी चीजां नै जड़ामूल सूं उपाड़नी चावै अर पुराणी पीढी रै सगळै लोगां नै आप रा जन्म-जात शत्रु समझै । पण समझै तो समझवो करो । बात साचली आ है कै पुराणती पीढी रै

विशाल-हृदय और व्यापक दृष्टिवाळा लोगां रै सामनै इणां रा दिल और दिमाग घणा संकुचित है । अै नयै और पुराणै रै असली भेद नै कोनी समझै और ना क्रांति रै रहस्य नै ही जाणै है । क्रांति रो पाठ पढणो हुवै तो म्हांनै पुराणियै गट्टै रै इष्टदेव पींपळ (अश्वत्थ) सूं ही पढणो पड़सी । ओ निर्मोही बरसूं-बरस आप रै पुराणियै पत्तां नै कुण जाणै कठै-रा-कठै उडा देवै पण बाद में जद फेर नवीनता रै कानी मुड़ै तो आप रै उण सागी पुराणियै रूप-रंग नै ही, उण में नेममात्र भी फरक नहीं कर'र, ज्यों-रो-ज्यों, फेर धार लेवै । पुराणियै पत्तां अर नवै पत्तां री कोमळता में दो दिन थोड़ो फरक जरूर दीसै पण इणां रै आकार अथवा इणां री बुनावट में कोई तरियां रो भी फरक कोनी पड़ै ।

जे नयोड़ा साथी इणां ही नवी चीजां रै सागै पुराणी चीजां री अवहेलना उपेक्षा नहीं कर'र इणां नै भी सम्हाळता रैता तो इणां री आ दशा नहीं हुती और कदै-न-कदै वै भी इणां रै ऊपर बैठ'र अथवा लेट'र दुनिया री अद्भुत दीसणता रो आनंद ले सकता ।

वड़ रो पेड़

—श्रीलाल नथमलजी जोशी—

मनै आ तो ठा कोनी कै म्हारो जलम कठै रो है पण इत्तो ध्यान है कै लारलै सित्तर-पिचंतर वरसां सूं हूं बीकानेर रै सोनगिरी कूवै माथै ऊभो हूं। मनै अठै लगावणियो कदास कोई सामी हो। बीकानेर में जद रूंख नीठ-निरावळ लाधता, म्हारै आगमण सूं चौखळै रा वासी घणा हरख्या। बीकानेर री कांकड़ में वड़तां तो म्हारो काळजो कांप्यो—लै भई! थारो काळ आयग्यो; पण मनै लगावणआळा हा सुमाणस—कूवै रै कनै लगायो। अबै तो हूं सारै कोनी, कारण म्हारी जड़ां पताळ मांय सूं भी पाणी चूस लेवै; पण बाळपणै में तो पराधीनता देखी। फेर भी म्हारो बाळापो सोरो बीत्यो। कूवो बळधां सूं चालतो। ऊंडो भी थोड़ो नहीं। बळध ओक वारो खेंचता जिकै में ही खासा ताळ लागती। दो वारा सागै खेंचीजता। जद रात भर कूवो चालतो तो दिनूगै कूंड्यां अर कोठा भरचोड़ा लाधता। पण म्हारो उपकार तो धरम-प्राण हिंदवाण्यां रै पाण हुयो। नानी-लोड़ी बीनण्यां, जिकी आप री मन-रळी पूरणी चावती, मनै खाली सींचती ही कोनी, म्हारी पूजा भी करती। हूं तो कीं करण समरथ कोनी, पण फेर भी जद उणां मांय सू कइयां री रळघां पूरीज जावती तो म्हारै खातर सरधा-भगती आगै-सूं-आगै वधती जावती। इण तरै बाळपणै में मनै म्हारी चायना माफक पाणी मिलतो रैयो अर हूं वधग्यो। उण दिनां म्हारा सवळा वैरी जिका हा, वै हा ऊंठ जिकां कई वार मनै जड़ामूळ सूं उपाड़ण री चेष्टा करी, पण दिन सूंवां हुवै तो कोई कीं विगाड़ सकै कोनी। आज तो दस ऊंठ रळ-नै भी म्हारी पेड़ी सूं रगड़ लगावै तो मनै डर कोनी।

उण वखत तो हूं राजी हुयो कै हूं ऊंठां अर गोधां री फेट अर मस्ती रै सिकार सूं ऊवरग्यो पण आज मनै लांवी आरवळ दुख रो कारण लखावण लागगी। म्हारै आप रै डील सूं रोजीनै जिका अणगिणत पान झड़ै वै है तो म्हारा वचोलिया ही; पण आवणो-जावणो, मरणो-जलमणो दुनिया रो नेम है, आ सोच'र हूं मन ही मैलो करूं कोनी। पण जद हूं देखूं कै म्हारै आगै जिकी बीनण्यां नवी-नवी आयी, वै ही खाली

हाथां हुयगी; जिका टाबर म्हारी छ्यांवना पळै जलम्या हा, वै भी मोटयार हुग्या अर उणां मांय सूं कई तो जवानी में ही झड़ग्या, अर जद म्हारै पसवाड़ै-कर अरथ्यां निकळै तो हूं कळझळ करूं, पण लोग समझै हवा सूं पानड़ा खड़खड़ै है।

जमानो कित्तो वदळग्यो ! और तो और, म्हारो पाड़ोसी कूवो जिको बळदां सूं जोतीजतो हो, अबै वीजळी सूं चालण लागग्यो। कूवै रा भूण, लाव, कोस, माळी, वळद अर खीलयां कठैई गयी। सारण सूनीजगी अर या अबै टाबरां रै रमण रो मैदान वणगी है। अवार रा टाबर तो समझै ही कोनी कै 'सारण' हुवै कांई है।

जद देस आजाद हुयो, तो च्यारूंमेर गावणा-बजावणा हुया, पण म्हारै अठै-कठै गावण-बजावण रो काम कोनी। हां ! सन् १९४८ में जद राष्ट्रपिता गांधीजी सुरग सिधारया, तो म्हारै तळै सोग-सभा हुयी। हूं फूट-फूट'र रोयो पण माणस रै हाकै में कुण सुणतो हो म्हारो रोज ?

कदे-कदास चुणाव-आळा लोग म्हारै पसवाड़ै आय'र आपरी सभावां करै, पण उणां में मनै रुचि कोनी। आछा आदमी तो आगै आवै कोनी, अर झूंठां री लूंट-खसोट हुवै।

सन् १९७१ में राजस्थानी भाषा रो विराट सम्मेलन म्हारै आगै हुयो। मातृभाषा-संवंधी इण विशाल आयोजन सूं म्हारी छाती हरख रै कारण फूलीज'र दूणी-तीगणी हुयगी। इण सम्मेलन में, राजनीति सूं अळगा रैवणिया, साहित्य री सेवा करणिया अर उण री श्रीवृद्धि चावणिया लोग भेळा हुया अर उणां रै दरसण-लाभ सूं हूं मोकळो राजी हुयो।

जे कदास किणी साधू-महातमा रो कदमकाळ भाषण हुजावै तो फेर कैवणो ही कांई, पण इसा भाग नीठ निरावळ ही हुवै है।

अबै भाई लोग मनै चुणावां में घींसण लागग्या। चुणाव रो सैनाण—वड़ रो पेड़। मनै हरख हुयो कै आज जणै-जणै री जीभ माथै म्हारो नांव नाचग्यो; पण उण दिन म्हारै दुख रो छेड़ो नहीं रैयो जद मैं सुणी कै वड़ रो पेड़ हारग्यो। आंधी-तोफान, विरखा-तावड़ै में अडिग रैवणियो किण सूं हार मानै ? पण खैर ! अबै म्हारी अरदास आ है कै जिका भाई चुणाव में वड़ रो सैनाण अपणावै, वै चुणाव सूं पैली, घर रा काम-धंधा विसारनै, समाज री अर देस री सेवा में जुट जावै। सेवा अंळी जावै कोनी, फळ देवै ही है। जे सेवा खातर वखत काढीजै कोनी तो फेर इसो चुणाव जीतण में भी कीं लाभ कोनी, चुणाव जीतै जिकां नै जीतण दो।

जद आज मैं मूंडो खोल लियो तो थोड़ी ग्यान री वात भी कैणी चावूं। म्हारो नांव है—वड़। जे म्हारै टावरां मांय सूं कोई भी नांव कमावणो, आगै वधणो, चावै

तो उण नै ओ ही कैवणो है कै जिको काम करणो चावै, जिण में दक्षता पायी चावै, उण रै मांय ऊंडो वड़'र गैराई सूं प्रवेश कर। जद कोई आछी तरै मांय वड़सी, जद ही आप री खिमता देखाळण रो मौको मिल सकसी।

कदेई बोलण रो काम तो पड़ै कोनी। आज पैलड़ी वार जीभ हिलायी है। जे ऊकचूक हिलगी हुवै तो माफी बगसावोला। टाबर अर बूढा माफी रा हकदार तो हुवै ही है।

वांवलियो अर दूबड़ो

—मनुज राजस्थानी—

तळाव री पाळ माथै अेक बांवळियो अर बांवळियै रै सारै-सारै पाळ माथै हरी-कच्च दूब। तळाव हबोळा खावै अर लैरां आय'र दूब नै भिजो देवै। ज्यूं भीजै ज्यूं ही लारै, आगै, आसै-पासै सरकयां जावै। दूबड़ी दूर तांई पसरगी। दूब सूं लैरां री छेड़खानी हुवै, पण उण रो कांई बिगड़ै? दूब कदैई बोलै न चालै, आप रै काम सूं काम।

हारया-थाक्या वटाऊ हरी दूब पर बैठै नै थाकेलो उतारै। दूब रै गुमान सूं घणा राजी हुवै नै वडायां करै। सिञ्या रा वस्ती रा लोग तळाव माथै आवै तो दूब पर सोवै अर थोड़ा आसूदा हुवै, थाकेलो उतारै अर सूत्या-बैठ्या आपस में दूबड़ी रा गुन वखाणै। हळवां-हळवां हाथ फेरै, लाड करै, नै हरखै। लाड-लाड मांय दूब फूली जावै —दिन दूणी अर रात चोगणी।

रोजीना लोगां सूं दूब री वडाई सुणतो-सुणतो बांवळियो आगमो हुग्यो। मन मांय करै—म्हाटो म्हारो तो कोई नांव ही मूंडै मांय कोनी घालै अर इण दूबड़ी रो वखाण करै—आ इयां है, आ वियां है। अेक दिन रीसां बळतो बोल्यो—अे दूबड़ी! तूं के गुमान मांय भरीजगी? रोजीना टाबरो जूत्यां सूं चींथावै। तूं मत जाणी कै अै लोग तनै देख'र आवै; अै तो म्हारी छियां रै कारण अठै आड-टेढ करै।

पण दूब ना बोली ना चाली।

वांवळियै जाण्यो इण रै वेजा सिर सूज्यो दीसै, जिको दूजै दिन आपरी लांबी-लांबी सूळां नीचै विखेर दी। लोग आया, बैठ्या अर सूळां चुभी। अररर····! बोल्या —ओ वांवळियो वडो खराब है। सगळी सूळां बुहार छेड़ै नाखो।

तीजै दिन वांवळियो दूब सूं बोल्यो—देख तूं अै लोगां नै सिखावणा-बुझावणा रैवण दै।

पण दूब तो फेर भी को बोली ना।

बांव़ळियै ओजूं सूळां घणी-सारी विखेर दी। लोग आया तो देखी कै आज भळै सूळां ····! और रीसां बळता बोल्या—अठै बांव़ळियै री कांई जरूरत ?

बांव़ळियो फेरूं बोल्यो दूब नै—आ अनीती चोखी कोनी, तैं क्यों सिर मांय राख गेरी है ?

शांत-शीतल सुभाव़ री दूब धीरै सूं बोली—अनीती हूं करूं हूं कै तूं ? हूं तो बोलूं ही कोनी, कदैई छेडूं न कोई वात करूं; पण रोजीना तूं क्यों बाथेड़ो करै है ? प्रेम सूं प्रेम मिलै। आंटीज्यां फायदो कोनी।

सिझ्या रा लोग बांव़लियै नै जड़ामूल सूं काट वगायो।

घणोई अरड़ायो पण पछै···· ।

जीवण री कला

—बदरीप्रसाद साकरिया—

प्राणी-संसार में मिनख हीज अेक अैड़ो प्राणी है जिको आप रै सुख-दुख नै घणी-घणी भांत सूं समझै तथा अनुभव करै है और सुख नै प्राप्त करण रा अर दुख नै निवारण रा उपाय सोचतो तथा करतो रैवै है। यूं तो सुख री इच्छा प्राणीमात्र में हुवै, पण सिवाय मिनख रै दूजा प्राणी उण उपायां नै उत्पन्न तथा प्राप्त करण में पराधीन है। उणां नै का तो प्राकृतिक साधनां रो, का मिनख-उपार्जित साधनां रो, आसरो लेणो पड़ै। मिनख री आ विशेषता रैवती आयी है कै उण आप रै बुद्धि-बळ सूं प्रकृति रै उण प्रकार रै साधनां सूं कदेई संतोष नहीं मानियो। उण आप रै जीवण नै अधिक-सूं-अधिक सुखी बणावण सारू तन-तोड़ मेहनत करनै अनेक प्रकार रा कृत्रिम साधन प्राकृतिक साधनां सूं प्राप्त किया नै फेर कर रैयो है। पण जीवण रो उद्देश्य केवळ इत्तो संकुचित हीज नहीं है कै जिण री परिधि आप रै सुख तांई ज खिंचियोड़ी रैवै। प्राणी-मात्र री सुख-सुविधा री असीम परिधि सूं उण रै जीवण रो संबंध घिरियोड़ो है। वो आप रै सारू जो-की करै उण में दूजां री सुख-सुविधा रो ध्यान राखै—आ हीज मिनख री गुणवत्ता है।

मिनख-जीवण री इण गुणवत्ता में हीज उण री नैतिकता रो समावेश हुयोड़ो है। आप रै जीवण नै कैड़ा आचरणां सूं पार पाड़ रैयो है नै दूजां रै प्रति उण री कैड़ी भावनावां बणियोड़ी है आ अेक देखण री बात है। अेक मिनख जे अेक गुलाम री माफक मात्र वेठ काढण जैड़ो हीज काम करतो हुवै; आप रै तथा दूजां रै हित रो उण नै ज्ञान ही नहीं हुवै; आशावाद री गूंज उण रै काम सूं नहीं निकळती हुवै; आप रै साथै काम करणवाळां में नूंवै उत्साह-उमंग रो उमळको नै तेजी पैदा करण री शक्ति नहीं हुवै तो नक्की मान लेवणो चाहीजै कै वो मिनख आप रै जीवण नै ऊंचो उठायनै तरक्की रा काम नहीं कर सकैला।

मिनख रै काम करण री पद्धति रो सीधो असर काम री गुणवत्ता नै क्षमता ऊपर हुवै है, जिण सूं उण रो जाण तथा अजाण चरित्र घड़ीजै है। मिनख जिका-

जिका काम करै वै उण रा अंग-रूप है। उणां में उण री भावनावां रा धबकारा सांभळीजै। 'ढंग जैड़ो काम नै स्वभाव जैड़ो वर्तन' ओ प्रमाण है। मिनख रो काम उण री प्रतिभा नै उण रै व्यक्तित्व रो मूल्यांकन है।

मिनख जैड़ो-तैड़ो कर नै आप रो काम पूरो कर देवै तो बो आप रै देश, समाज नै खुद नै उचित सनमान प्राप्त नहीं कराय सकै।

घणो करनै लोग आप रै काम रै उपयोगीपणै रो उचित सनमान करण रो विचार ही नहीं करै। वै यूं हीज समझै है कै काम जीवण-निर्वाह सारू करणो है, इण वास्तै ज्यूं-त्यूं नै जैड़ो-तैड़ो कर देवणो। अैड़ा लोग भूल करै है—वै आप रै मिनखपणै नै आछी तरै सूं विगसावण री शक्ति राखता थका भी उण रो उपयोग नहीं कर रैया है।

काम अेक दैवी शक्ति है। समाज और संसार सारू कीं करण रो सुयोग आपां नै प्राप्त हुयोड़ो है; उण नै अहळै नहीं जावण देवां—आ है काम करनै आप री दैवी शक्ति नै जागरित तथा उजागर करण री मानव-भावना। मिनख काम करनै आप री दैवी शक्ति नै उजागर करण सारू अठै आयो है—आ बात हरदम याद राखण री है। काम करण रो अवसर गमावणो नहीं चाहीजै और उण रै करण में आप रो अहोभाग्य समझणो चाहीजै।

आपां नै विचारणो चाहीजै कै आपां दूजां सारू काम करां हां नै दूजा आपां सारू करै है। आपां दूजां सारू काम करां उण में इणीज भांत निष्ठा हुणी चाहीजै जिण भांत री निष्ठा आपां दूजां रै काम में चावां। इण वास्तै कोई भी काम उमंग नै सत्यनिष्ठा सूं हुणो चाहीजै।

आपणो जीवण-काम अेक शिल्प रै समान है। इण शिल्प नै सुंदर कै असुंदर, ओजसवान कै ओजसहीण, प्रेरणादायी कै विनिपातक—कठीनै भी मोड़ देवणो आपां रै हाथ री बात है।

इण वास्तै आपां सूं वणै जित्तो भरसक श्रेष्ठ करण री टेव पाड़णी चाहीजै। कोई भी काम करणो तो पूरै मन सूं करणो, नहींतर उण नै हाथ में लेवणो हीज नहीं।

आपां रै मन रै साथै आपां नै नक्की कर लेवणो है कै आपां में रैयोड़ी श्रेष्ठता रो प्रतिबिंब आपां रै काम में उतारांला। मानस तथा आत्मा रै विकास सारू, दुनिया रै कामां में आपां रै खुद रै सुभग दर्शण सारू, जीवण जीवण री कळा सारू, आपां नै इण दुनिया में कीं करणो है। मिनख-रूप में जो परवाणो लिखीजियो है उण रो इण रूप में अमल करणो है। आ हीज है जीवण री कळा।

म्हारी मास्को री साहित्य-यात्रा

—रामनाथ व्यास 'परिकर'—

वात १९६६ री गर्मी रै दिनां री है। उण दिनां भारत रा जूना साहित्यकार अर पत्रकार श्री वनारसीदासजी चतुर्वेदी सागै मनै मास्को नगर री साहित्य-संस्थावां रा स्वागतां में सामल हुवण रो मौको मिल्यो हो। चतुर्वेदीजी रूस पैला आयोड़ा हा जिण सूं जूनै साथियां सूं मिलण रो कोड घणो हो। दळ रा नेता सोवियत-भूमि नेहरू-पुरस्कार, १९६६, रा विजेता श्री सुमित्रानंदनजी पंत हा। पण वै पगां रा बेमार रैया, जिण सूं अेक-दो स्वागतां में ही सामल हुय सक्या। गुजरात रा नामी चित्रकार श्री रविशंकरजी रावळ अर केरळ रा डाक्टर पिस्हारोडी सागै सोवियत-संघ रै नामी कळाकारां सूं मिलण रा मनै घणा सुगंतरा मोरत मिल्या।

गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान

जूनै मास्को री वोरोवस्की सड़क माथै साहित्यकारां रा च्यार मोटा तीरथ है, जिणां में सगळां सूं मोटो तीरथराज है गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान। अठै री अेक साहित्य-गोष्ठी में चतुर्वेदीजी अर मैं संचालक अर साहित्यकारां सागै संस्थान रै कामकाज री जाणकारी ली। गोरकी रै थापियोड़ै इण संस्थान में संसार री १४० भाषावां रो विशद अध्ययन करीजै है। मूळ काम संसार रै मोटा देशां री भाषावां अर साहित्यां रै विकास सूं संवंध राखै। संसार रै आधुनिकतम साहित्य री पोथियां अठै रै विद्वानां रै कांटै माथै तोलीजै अर कसोटी माथै चढै। संसार रै नूंवै-सूं-नूंवै साहित्य री विधावां रो मोल-तोल करीजै अर उण मांय सूं चुणियोड़ै साहित्य रो रूसी भाषा अर दूजै गणतंत्रां री साठ भाषावां में अनुवाद करीजै। अेक मोटै तरामीनै सूं विदेशी साहित्यकारां री दो हजार सूं ऊपर किताबां री छव करोड़ सूं बेसी प्रतियां हर साल छपै। संसार रै मोटै साहित्यकारां में भारत रा रवींद्रनाथ ठाकुर, वंकिमचंद, प्रेमचंद, निराळा, पंत, इकवाल, वृन्दावनलाल वर्मा, यशपाळ, अश्क, कृष्णचंदर, मंटो, अव्वास, आपटे, वरेरकर, अमृता प्रीतम, नजरुल, सुब्रह्मण्य भारती, वीरेशलिंगम्, श्री श्री, वल्लत्तोल, कल्कि, कुरुप, मुल्कराज आनंद, आ० के० नारायणन्, भवानी भट्टाचार्य

आदि री पोथियां रा अनुवाद छापण रै अलावै उणां रै साहित्य माथै अनुसंधान-ग्रंथ लिखीज्या है। भाषावैज्ञानिक—वर्णनात्मक री ठोड़ आधुनिक भाषावैज्ञानिक—गवेषणा अर साहित्य-विश्लेषण रा अनेक तरीका वरतीजै। सोवियत-भारतविदया रै अध्ययन रै सिद्धांतां री व्याख्या करतां म्हांनै वतायीज्यो कै हिंदी, बंगला, उर्दू, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तमिळ, तेळुगू अर मलयाळम भाषावां रै साहित्यां रै अध्ययन रा न्यारा-न्यारा विभाग है। साहित्य रै क्षेत्र में उणी साहित्यकारां री पोथ्यां विशेष मानीजै जिकां राष्ट्रीय साहित्य रै विकास में मूळ विधावां नै जलम दियो हुवै। ऊनै साहित्य री शोध में अकादमीशियन अे० पी० वारान्निकोव तुळसीदासजी री साहित्य-विरासत अर परंपरा रो अध्ययन-विश्लेषण करचो है। मध्यकाळ रै कवियां में कवीर, विदयापति, मीरांबाई (वी० आईबालिन) री रचनावां रो अनुसंधान अर वैज्ञानिक अध्ययन हुयो है। सूरदास रै सूरसागर माथै वाई० त्सोल्कोव शोध रा लेख लिख्या है। अे० सिरकिन जयदेव रै गीतगोविंद रो अनुवाद करतां थकां उण रो विश्लेषण करचो है। श्री वारान्निकोव प्रेमसागर और रामचरितमानस रो अनुवाद करण रै सागै-ई इणां री ओपती टीकावां लिखी है। संस्कृत री प्राचीन रचनावां रै मूळपाठां रो अध्ययन अर अनुवाद रो काम तो रूसी विद्वान १८वीं शताब्दी सूं करता आया है। जाण्या-मान्या संस्कृत कवियां रा घणकरा ग्रंथां रा रूसी रूपांतर त्यार हो चूक्या है। संस्कृत क्लासिक ग्रंथां रै अलावै पाली अर बौद्ध क्लासिक ग्रंथां रो वैज्ञानिक अध्ययन लारलै १५० वरसां सूं बरोबर चालू है। वेदां अर उपनिषदां रा अनुवाद हुया है अर टीकावां लिखीजी है। महाभारत रो विशेष अध्ययन वी० आई० काल्यानोव करचो है अर उणां रा चुण्योड़ा अनुवाद अर शोध-प्रबंध घणै ऊँचै दरजै रा है। अश्काबाद रा बी० अेल० स्मिर्नोव महाभारत रै चुण्योड़ा अंशां रो सात खंडां में अनुवाद करचो है। पी० अे० ग्रित्सर रो नामी प्रबंध महाभारत अर रामायण रै विश्लेषण री अनोखी पोथी है। वाई० अेम० अलिखानोवा 'अमरु-शतक' अर आनंदवर्धन तथा अभिनवगुप्त रै काव्यशास्त्रीय ग्रंथां रा अनुवाद करचा है। मतंग, नारद अर सारंगदेव रै संगीत-संबंधी ग्रंथां पर लेख भी इणां लिख्या है।

राजस्थानी भाषा रै बारै में म्हारी विशेष दिलचस्पी होवण सूं मैं विशेष जाणकारी मांगी, जिण रै उत्तर में मनै वतायीज्यो कै सोवियत-संघ रै दिखणादै गणतंत्रां में पारचा जात रै छोटै कवीलां में अेक इसी आर्य-भाषा रो प्रचलन है, जिकी मूळरूप सूं राजस्थानी सूं घणी समानता राखै है। प्रोफेसर ई० पी० चेलीसेव इण बारै में खोज रो संचालन कर रैया है। आई० अेम० ओरान्स्की सन् १९६० में इण बोली रो अेक लेख छपायो हो जिण में म्हां, थां, वो, जावूं, गयो, आयो आदि शब्दां री व्याख्या करी है। मध्य-अेशिया री 'चिगान' अथवा जिप्सी जात रै कवीलां में, विशेषकर ताजिकिस्तान रै रेगिस्तानी भाग अर उज्वेकिस्तान री कई छोटी वसत्यां में, इणी पारचा कौम रा लोग वस्योड़ा है। भोळानाथ तिवारी इण वारै में पोथी छपायी है।

[illegible] राजस्थानी भाषा [illegible] मैं मन हुलसी है। [illegible] तुलनात्मक अध्ययन [illegible] हुवै है।

[illegible]

[illegible] मैं [illegible] साहित्यकारां री [illegible] मिलै। [illegible] लागै। मालम पड़ी कै [illegible] री समाधियां अठै नजीक ही है। [illegible] मौको मिल्यो।

रावणहथ्थो

—जयचंद्र शर्मा—

लंका रै राजा राव़ण रै नांव़ पर दो वाजां रा नांव़ पुराणी पोथियां में मिलै—(१) राव़णशस्त्र और (२) राव़णहथ्थो। राव़णशस्त्र री वणगट किण भांत री ही, उण नै कुण वजाव़तो अर बो किसै मुलक में वाज्या करतो—इण वातां रो जरा-सो भी ठोड़-ठिकाणो कोनी। पण राव़णहथ्थो तो आपां री आंखियां रै सामै है। राजस्थान में भोपा जात रा लोग इण वाजै नै घणो ही वजाव़ै। बै पाबूजी री फड़ वांचण री वखत सारी-सारी रात राव़णहथ्थै रै सागै गाव़ता रैव़ै। दिन में भोपा-भोपी अर उणां रा टाबर राव़णहथ्थो ले'र मांगण खातर निकळ जाव़ै। बै घर-घर गा-वजा'र लोगां नै जियां-तियां राजी करै अर आप रो पेट भरै। बैजिका गीत गाव़ै, उणां री धुन पूरी राजस्थानी अर लय भोत ही चटक-मटकदार हुव़ै। उणां री मीठी धुन अर सीधी-सादी बोली रा गाणा इतरा प्यारा लागै कै लोग सुण'र झूमण लाग जाव़ै।

वाजै री वणगट सूं उण रै नांव़ रो संबंध लोग जोड़ै। राव़ण रै दस माथा हा अर राव़ण-हथ्थै रै दस खूंटियां लागी रैव़ै। राव़ण रै दसूं माथां री न्यारी-न्यारी अक्कल ही अर राव़णहथ्थै री दसूं खूंटियां रा न्यारा-न्यारा सुरां रा तार मिलायीजै जिण सूं भांत-भांत रा सुर निकळै। वाजै री 'गज' रामजी रै धनुष री तरियां वणै जिकी वाजै रै माथै ऊपर चालै जाणै रामजी रै धनुष सूं राव़ण रा दसूं माथा काटीजै है।

लोगां रो कैव़णो है कै ओ वाजो घणो पुराणो है। आज पाबूजी री फड़ भोपा-भोपी गाव़ै, बियां ही पैली भी लोग कोई कथा-काव्य जरूर गाव़ता। राव़णहथ्थो जद वण चूक्यो हो। अेक बूढै भोपै साथै म्हारी वात हुयी। उण रो कैव़णो है कै म्हारी जात रा पुराणा वडका राजस्थानी बोली में रावणहथ्थै पर 'रामायण' गाया करता पण पाबूजी रै पछै म्हे लोग पाबूजी रा पूरा भगत वणग्या अर आज ताणी इणी रूप में पाबूजी रा गीत गाव़ां-वजाव़ां हां।

कई लोग इण वाजै रो नांव रण-हथ्थो वतावै। रथहथ्थै पर वाजणवाळी धुनां रो सीधो मेळ पावूजी रै जीवण सूं रैवै। लड़ाई-झगड़ैरी धुनां गा'र जोश दिरावणवाळै वाजै रो नांव रणहथ्थो बुरो कोनी पण ओ नांव ना तो कोई पुराणी पोथियां में मिलै अर ना किणी शास्त्र में लिख्योड़ो देखीजै। रावणहथ्थै रो नांव तो कई पोथियां में मिलै है। 'लोक-कला' (अंक १३) में श्री अगरचन्दजी नाहटा रो अेक लेख 'भारत के प्राचीन वाद्ययंत्र' नांव सूं छप्यो है। उण लेख में राजस्थानी वाजां री सूची है। सूची रै मुजब उण जमानै में राजस्थानी वाजा छत्तीस प्रकार रा हा। इणी लेख में श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै संग्रहालय री अेक पोथी रै मुजब छत्तीस प्रकार रै वाजां रा नांव है। दोनू सूचियां में रावणहथ्थै रो नांव तो मिलै पण रणहथ्थै रो नांव कोनी मिलै।

दोनूं नांवां सूं आ वात सीधी समझ में आवै कै रावणहथ्थै रो सम्वन्ध लड़ाई-झगड़ै रै गावणै सूं जरूर रैयो है। रावणहथ्थै पर गावणवाळी जात भोत ही गरीव रैयी है। आं लोगां आप रै गीतां सूं जन-साधारण रो मन राजी कर्यो अर आप रो गुजर चलायो। सव सूं मोटी वात तो आ है कै राजस्थान में जोगियां री सारंगी नै छोड'र दूजो इसो कोई भी वाजो कोनी जिको 'गज' सूं वाजै। गज सूं वाजणवाळै वाजै पर गीत गायीजै; वाकी सगळा वाजा कोरी धुन वजावण रै काम रा हुवै। ओ अेकलो सव सूं न्यारो अर ऊंची-सूं-ऊंची टेर निकाळणियो वाजो है। इण रै सुरां रो मिठास तो इतरो जवरो है कै पक्की राग वजावणवाळी सारंगी नै भी ओ मात देवै।

आपां रै देश में पक्की राग-रागणियां गावण में साथ-संगत करण वास्तै सारंगी अर लोक-धुनां रा गीत गावण में रावणहथ्थो वेजोड़ है। आज 'गज' रा वाजा कई भांत रा दूजा देशां सूं आयोड़ा आपां रै देश में चालै है जियां वायलिन, दिलरुवा, इसराज आदि; पण अवाज में अै सगळा रावणहथ्थै सूं नीचा ही है।

रावणहथ्थै री वणगट

रावणहथ्थै री वणगट सीधी-सादी हुवै। उण में दो भाग सामनै दीखै—अेक तो नारेळ री टोकसी अर दूजो सवा-डोढ हाथ रो वांस रो डांडो। दोनां नै जोड़'र टोकसी नै खालड़ी सूं मंढ लो अर ऊपर लोह तथा पीतळ रा तार खैंच दो। वस! रावणहथ्थो त्यार है। गांव रै लोगां री सूझ-वूझ नै कुण नावड़ै? रावणहथ्थै रा न्यारा-न्यारा भाग नीचै वतायै मुजव हुवै—

टोकसी—वडै-सै नारेळ री टोकसी ले'र उणरी जट नै अेकदम साफ कर लेवै, फेर उण नै तिल्ली रै तेल सूं चोपड़'र पक्की कर लेवै अर पछै खालड़ी सूं मंढा लेवै।

घेरो—वांसपट्टी रो घेरो वणा'र खालड़ी सूं मंढ'र टोकसी रै ऊपर चढावै अर सूतळी सूं कस देवै।

पींदो—टोकसी रै पींदै पर लोहै रो पोलो लगावै, जिण सूं पींदो पक्को रैवै। पींदै में कई जणा सीसो ढळा'र टोकसी नै पक्की वणा लेवै। सीसै री ढळाई रो पींदो वणावण सूं अवाज जोरदार निकळै।

घोड़ी (घुड़च)—टोकसी पर मंढियोड़ी खाल रै ऊपर सूं तार कसीजै। इण तारां रै नीचै छोटो-सो लकड़ी रो अेक टुकड़ो रैवै जिण रै ऊपर सूं अर मांयनै सूं तार लायीजै। लकड़ी रै इण टुकड़ै नै घोड़ी कैवै।

लंगोटी—वांसियै पर लागियोड़ा तार टोकसी री खालड़ी रै ऊपर सूं ले'र टोकसी रै लार नै वांधीजै। तार बांधण री इण जाग्यां नैं लंगोटी कैवै। टोकसी रै लारनै वांसियै रो थोड़ो-सो टुकड़ो निकळियोड़ो रैवै। ओ भी तारां नै बांधण रै काम आवै।

मोरणा—सारी खूंटियां सूं वडी अर खराद उतारियोड़ी दो खूंटियां हुवै। आं वडी खूंटियां रै, लोहै रै तारां री जाग्यां, घोड़ै री पूंछ रा वाळ वांधीजै। इण वडी खूंटियां नै मोरणा कैवे। आजकाल दूसरे मोरणै रै, वाळां री जाग्यां, लोहै रो मोटो तार लगावण लागग्या है।

खूंटियां—वांसियै रै मोरणै नै छोड'र ऊपर-नीचै सात-आठ सूं ले'र वारै-तेरै खूंटियां हुवै। इण खूंटियां रै लोहै अर पीतळ रा तार लगायीजै। अै तार वजावण रै काम में नहीं आवै ; अै वाजणवाळी धुन नै गुंजाय देवण रो काम करै। संगीत रा विद्वान इण तारां नै 'तरब रा तार' कैवै।

गज—रावणहथ्थै नै वजावण खातर धनुष री तरियां मुड़ियोड़ी झाड़ी री लकड़ी री 'गज' वणायीजै। गज रै घोड़ै री पूंछ रा वाळ वांधै। सारंगी री 'गज' सूं रावणहथ्थै री गज में भोत फरक हुवै। सारंगी री 'गज' री मोड़ थोड़ी राखीजै अर रावणहथ्थै री 'गज' री मोड़ धनुष री तरियां वणा'र ढीली-ढाली राखीजै। सारंगी री 'गज' रा वाळ कस्या रैवै।

घूघरा—'गज' रै नाकै कानी आठ-दस घूघरा वांधीजै। घूघरा पीतळ रा च्यार कळीवाळा हुवै। रावणहथ्थो वजावती वखत घूघरां सूं लय रो ठरको लगायीजै।

रावणहथ्थो वणावण वास्तै ना तो कोई कंपनी री जरूरत है अर ना किणी कारीगर री। जिण जात रा लोग इण वाजै नै वजावै, वै लोग ही इण नै वणावण रो तरीको आछी तरियां जाणै। गांवां में टोकसी, वांसियो, घोड़ै री पूंछ रा वाळ अर लोहै-पीतळ रा तार आसानी सूं मिल जावै, जिकां नै खींच-ताण' र झट सूं वाजो त्यार कर लेवै।

रावणहथ्थै नै वजावण रो तरीको भी दुनिया सूं न्यारो ही है। दुनिया रा सगळा वाजा 'सूंधा' (सुळटा) वजायीजै पण इण वाजै नै 'ऊंधो' (उळटो) वजावणो पड़ै। ऊंधो वाजणियो वाजो आपां रै देश में तो और कोई देखण में कोनी आयो। विदेशां रै वाजां में वायलिन वाजो है, जिको आज आपां रै देश में घणो मानीजतो है। वायलिन रावणहथ्थै री ज्यों ऊंधो वजायीजै। रावणहथ्थै री अवाज वायलिन सूं जवरी निकळै। अेक रावणहथ्थै री अवाज दस वायलिन रै वरावर हुवै। वायलिन घणो मूंघो मिलै पण रावणहथ्थो वणावण में कोरी आप रै हाथां री महनत हीज लागै।

मिलावणो—वाजो कोई भी क्यों ना हुवो उण नै वजावण सूं पैली मिलावणो पड़ै। रावणहथ्थै नै मिलावण रो भी आप रो न्यारो तरीको है। पैली-पोत नीचलै मोरणै नै कस'र तार ऊंचो चढावो। ओ तार वाजणियो तार कहीजै। इण तार री कसाई गावणवाळै रै कंठ रै पैलीपोत रै सुर रै वरोवर करीजै। पछै दूसरै मोरणै रै तार नै इतरो ही कस'र सागी सुर में मिलायीजै। अव दोनूं तार गावणियै रा 'सा' वणग्या। वाकी तारां रो मिलावणो कोई राग-रागणियां अर ठाठ में तो हुवै कोनी, जिकी धुन वजायीजै उण धुन रै सुरां में मिला लेवै। इण वाजै नै वजावणिया संगीत-शास्त्र रा पंडत तो हुवै कोनी, वै तो लोकधुनां रा वजावणवाळा हुवै। वै आप री धुनां रै मुजव तार मिला लेवै। वस इतरो-सो ही ग्यान इण लोगां रो हुवै।

वजावणो—टोकसी आळो पासो आप रै कांधै कनै राखीजै। वांसियै नै हाथ सूं पकड़'र चिटली आंगळी रै नूं (नख) सूं वाजणियै तार पर आगै-पाछै चलावण सूं सुर निकळै। जीवणै हाथ सूं वाजणियै तार पर 'गज' रगड़नै सूं अवाज निकळै। वाजै नै वजावण वास्तै डावै हाथ री-आंगळियां रा नूं वधावणा पड़ै। विना नूं वधायां तार कितराई घसो पण सुर कोनी निकळै। तीनूं-च्यारूं आंगळियां रा नूं वधा'र नूंवां सूं वजावण री रवद (रियाज) करणी पड़ै। कम-सूं-कम चिटली आंगळी री रवद तो प्रति दिन करणी ही पड़ै।

विशेषतावां—रावणहथ्थै में कई इसी विशेषतावां है जकी दूजा वाजां में देखण में नहीं आवै—

१. विना खरचै रो, सव सूं सस्तो, 'गज' सूं वाजणवाळो वाजो संसार में दूजो कोनी।

२. वाजणियै तार में घोड़ै रा वाळ लगायीजै, आ वात भी दूसरै वाजां में कोनी मिलै।

३. खुलै अकास में अवाज रो मिठास दूर तांई सुणीजै, आ वात 'गज' रै दूसरै वाजां में कठैई कोनी देखण में आवै।

४. गावणो, वजावणो अर नाचणो इण तीनूं वातां नैं अेक सागै पूरो करणवाळो अेकलो ओ ही वाजो है।

५. विना अडखण रै तारां नै सीधा खूंटियां सूं बांधणवाळी वात भी अचंभै री लागै।

कमियाँ

१. ऊंचै लोगां में रावणहथ्थै रो प्रचार कोनी हुयो।

२. नीचला सुरां रै वास्तै कोई दूसरो तार नहीं हुवण सूं सुरां रो पूरो हिसाव कोनी बैठै।

इतरी-सी वात वास्तै रावणहथ्थो चोखो वाजो हुतो थको भी लारै रैग्यो। मंद सप्तक रा सुरां रो हिसाव नहीं बैठण रो कारण कोई संगीतवाळां भी कोनी सोचियो। जे लारलै मोरणै पर लागणवाळै तार में थोड़ो-सो सुधार कर लेवां तो दुनिया रै सगळै गजवाळै वाजां नै मात देवण री ताकत अेकलै इणे वाजै में है। पण आ वात जिका लोग रात-दिन इण नै वजावै उणां रै वस री कोनी। इण में सुधार करणवाळो मिनख संगीत नै जाणणवाळो अर हाथ रो कारीगर हुवै जद ही सुधार कर सकै। दोनूं वातां अेक मिनख में मिलणी ओखी है। फेर भी समय सारू कोई-न-कोई जुगत लगा'र रावणहथ्थै में सुधार करणै री खास जरूरत है।

सातव दशक री राजस्थानी कहाणी

—किरण नाहटा—

सातवों दशक राजस्थानी साहित्य रै मांय पद्य-साहित्य रै बजाय गद्य-साहित्य रै सबळैपण रो रैयो है अर गद्य-साहित्य रै मांय भी कहाणी सिरै रैयी है। कहाणी नै लें'र वधोतरी रै गैलै में जिका सैंठा पांवडा आगीनै वरीज्या है उणां रो मोल-तोल आंकण वास्तै राजस्थानी कथा-साहित्य री आज तांई री जात्रा माथै थोड़ो विचार करणो जरूरी है।

श्री शिवचंन्द्रजी भरतिया री ईसवी सन् १९०५ में छप्योड़ी 'विश्रांत प्रवासी' नामक कहाणी सूं आज री राजस्थानी कहाणी री सरूआत हुवै है। उण रै बाद उण रै ही लगोलग १०-१५ वरसां री अवधि में लिखीज्योड़ी सामाजिक सुधारवादी कहाण्यां राजस्थानी कहाणी रै आगूंच वधोतरी सारू जमीन त्यार करी, पण ओ राजस्थानी रो मोटो दुर्भाग्य रैयो कै कहाणी नै ले'र जिकै वातावरण रो निर्माण भारत रै दूजै प्रांतां में राजस्थानी साहित्यकारां करयो, अठै रै रैवासी साहित्यकारां उण सूं कीं फायदो नीं उठायो।

इण घटना रै वरसां बाद श्री मुरळीधर व्यास, श्रीचंदराय माथुर इत्यादिक कहाणीकारां नूंवै सिरै सूं पश्चिम रै ढंग री कहाण्यां लिखणी सरू करी अर 'राजस्थान-भारती', 'मरुवाणी', 'ओळमो' जैड़ी आजादी रै अैड़ै-गैड़ै अर कीं बाद में छपणवाळी पत्रिकावां अेक रै बाद अेक नूंवै कहाणीकारां सूं राजस्थानी साहित्य-जगत रो परिचय करायो। खासकर १९५० सूं १९६० रै बिचाळै नानूराम संस्कर्ता, नृसिंह राजपुरोहित, मनोहर शर्मा, श्रीलाल नथमलजी जोशी, वैजनाथ पंवार अर किशोर कल्पनाकांत जियांलका कई-अेक सैंठा कहाणीकार इण क्षेत्र में आया अर मुरळीधर व्यास तथा श्रीचंदराय माथुर जैड़ा जूना कहाणीकार भी बरोबर लिखता रैया। इणी अवधि में मुरळीधर व्यास रो 'वरसगांठ' अर श्री नानूराम संस्कर्ता रो 'ग्होयी' नामक कहाणी-संग्रह भी सामै आया।

छठै दशक तक री राजस्थानी कहाणी री इण जात्रा नैं निजरां में राख-अर अब जद सातवैं दशक री कथा-जात्रा माथै निजर नाखां तो आ बात मतै ही सिद्ध हु जावै कै सातवों दशक लारला साठ वरसां री होड में घणो सैंठो रैयो है। क्यूंकै अेकै कानी जठै श्री नृसिंह राजपुरोहित रा 'रातवासो' अर 'अमर चूनड़ी', श्री नानूराम संस्कर्ता रा 'दस दोख', 'घर की रेल' अर 'घर की गाय', श्री बैजनाथ पंवार रो 'लाडेसर', श्री नारायणदत्त श्रीमाळी रो 'कंटीला गुलाब', श्री दीनदयाल ओझा द्वारा संपादित 'राजस्थानी कहाणी-संग्रह' अर 'जलमभोम' रो कहाणी-विशेषांक जियांलका नूंवा कहाणी-संग्रह इणी दशक में प्रकाश में आया बठै रामनिवास शर्मा, हरमन चौहाण, पारस अरोड़ा, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, रामस्वरूप परेश, जगदीशसिंह सीसोदिया जियांलका बीसूं ही नूंवां कहाणीकार भी इण क्षेत्र में आया अर छठै दशक रा पुराणिया कहाणीकार भी बरोबर लिखता रैया।

इण भांत छप्योड़ा कहाणी-संग्रहां री अर लिखारा कहाणीकारां री दृष्टि सूं तो सातवों दशक मतै घणो सैंठो अर लूंठो सिद्ध हु जावै। पण खाली छप्योड़ी पोथ्यां री संख्या अर लिखारां री भीड़ ही तो सातवैं दशक री उपलब्धि नहीं है। सातवैं दशक री उपलब्धि नैं आंकण वास्तै कथ्य अर शिल्प री दृष्टि सूं राजस्थानी कहाणी में जिको विकसाव अर बदळाव आयो है उण नैं सामै लावणो जरूरी है।

सातवैं दशक सूं पैलां रा कहाणीकारां रो घणकरो ध्यान सामाजिक जीवण नैं मांडणै रो रैयो अर सामाजिक जीवण में भी अेक खास पक्ष नैं उठावण रो अर उण नैं अेक खास निजर सूं देखण-परखण रै कारण यथार्थ बात भी ऊपरी लेखै-जोखै तांई ही पूंच पायी। सातवैं दशक सूं पैलांआळा प्रतिनिधि कहाणीकार श्री मुरळीधर व्यास अर नानूराम संस्कर्ता री घणकरी कहाण्यां समष्टि रो प्रतिनिधित्व करै, उण री ही बात करै अर उण रा ही चित्राम मांडै। व्यष्टि उणां रै अठै साव उपेक्षित अर विसरायोड़ो है। मोटा-मोटी उणां रो ध्यान सामाजिक जीवण री कुरीत्यां नैं मेटण खातर इसी बातां मांडण रो रैयो है—जिणां नैं पढ-बांच'र लोगां रै हियै में कीं चानणो हुवै। बदळतै सामाजिक जीवण, जीवण रै मान-मूल्यां रै प्रति बदळतै नजरियै अर आपसी संबंधां नैं ले'र सोचण रै ढंग में आयोड़ै फरक नैं दरसावण री चेष्टा बठै नहीं हुयी है।

सातवैं दशक रै कहाणीकार वास्तै समाजचित्रण रो अर्थ खाली कुरीत्यां रै घेरै में फंस्योड़ै समाज नैं मांडणो नहीं रैयो है अर ना ही वो समष्टि-जीवण रै ओळै-दोळै ही घूमतो रैयो है। वो और ज्यादा ऊंडो पैठ'र जीवण री सचाई लेणी चावै। उण रै वास्तै आदर्श, स्थापित सामाजिक मूल्य अर परंपरावां कीं खास मुतळब नहीं राखै। जणै ही तो 'सुहागण भागण' री मा बेटी नैं पतिव्रत धरम पाळण री जाग्यां अेक ही खेळी माथै सांड अर बळद दोनां नै पाणी पावण री बात कैवै। 'जरूरत' री

'वा' विना कीं संकै-सरम रै आप रै देही रै सोदै में कस-वढ लगावै। 'वेजीटेरियन माछी'रा मोटचार पेट री भूख री तरै शरीर री भूख मेटण नै मानवी माछळयां मोलावै। वठीनै 'रोटी अर मौत' रो भूखो-तिरसो मिनख मुड़दां लारै करचोड़ा पींडियां सूं पेट पाळण री जुगाड़ सोच'र घणो राजी हुवै। 'वुद्ध रो वस्ट' रो 'महीप' दुनिया रै जुद्ध-उन्माद सूं आखतो हुयर आतमघात कर लेवै। 'दिन अेक तारीख रो' में वावू पुराणै अखवार रा रद्दी कागदिया अर डाल्डा रा टैंणिया वेच'र चाय रै पईसां री जुगाड़ करनै घणो खुस निजर आवै। उण नै ना दुनिया री उथळ-पुथळ री चिंता है अर ना देश री समस्यावां रो सोच। उण नै तो खुद सूं आगै सोचण री फुरसत ही कठै ? 'भारत-भाग-विधाता' रो मास्टर अब ना तो लोगां नै उपदेश दे'र उणां नै सुधार रै गेलै लावणो चावै अर ना ही कहाणीकार उण री दुर्दशा रो मार्मिक चित्राम मांड-अर लोगां री सहानुभूति उण रै वास्तै वटोरणी चावै। वे तो उळटो उण री जाग्यां 'भारत भाग-विधाता' रै तीजी-पास अर चौथी-फेल मास्टर मलूकदास रै समूळै कवाड़ां अर कौतकां री कहाणी ज्यों-री-ज्यों मांड-अर राख दी। इणी भांत 'वाप अर वेटो' में वेटो वाप नै धत्ता वतावण री चाल चालै अर वाप जको अधवूढी औसथ्या में लाज-सरम छोड'र प्रेम रो फंद फैलातो फिरै। पण वेटो तो वाप सूं भी सवायो चालाक अर निसरमो जको कै वाप री ठौड़ वाप री पोटायोड़ी भायेली कनै खुद जा'र वैठ जावै अर सामै वैठै वाप री रिगळयां करै। कैवण रो मतलव ओ कै आज रो कहाणीकार ना तो किणी विचारधारा सूं प्रेरित है अर ना ही किणी खास आदर्श सूं वंध्योड़ो। उण रो समूचो ध्यान ईमानदारी साथै आज रै जीवण नै जथारूप मांडणै रो रैयो है।

सातवें दशक री राजस्थानी कहाणी में कथ्य री भांत शिल्प में जको वदळाव आयो है वो भी उल्लेख-जोग है। जठै इण दशक सूं पैलांआळा कहाणीकारां रो ध्यान घटनावां नै रोचकता सूं मांडणं माथै अर पात्र रै सभाव अर उण रै गुण-दोषां रो ऊपरी लेखो-जोखो पेश करणै कानी घणो रैवतो;-अब वठै आज रै कहाणीकार वास्तै घटनावां गौण हुगी अर पात्रां रै सभाव रो ऊपरी लेखो-जोखो कीं मुतळव नहीं राखै। वात नै मठार-मठार-नै कैवणो तो वो जाणै ही नहीं अर वात नै सजाणै-संवारणै री वजाय वो मनस्थितियां रै अंकन में घणी सावधानी वरतै। 'वात रो होवणो' अर 'संजोग रो पीवणो' जैड़ा कथनां रै माध्यम सूं संजोग-तत्त्व रै सहारै वात नै मनमानो मोड़ देवण री उण री हिम्मत नहीं हुवै। आं सगळी वातां रै कारण लारली कहाण्यां अर सातवें दशक रै नूंवां कहाणीकारां री कहाण्यां रै विचाळै मोकळी छेती आयगी है। इण सैंठै आंतरै रो अनुमान तो दोनूं पीढ्यां री दो-च्यार कहाण्यां आमै-सामै राख'र सहज ही लगायो जा सकै है। अेकै कानी श्री मुरळीधर व्यास री 'नरमेध' अर 'पलमें रो मोल' जैड़ी कहाण्यां राखो अर दूजै कानी श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाळी री 'सळवटां' अर रामनिवास शर्मा री 'लैंप-पोस्ट' नै राखो; दोनूं तरफ री कहाण्यां नै साथै पढ्यां आंतरो मतै ही समझ में आ जासी।

सातवैं दशक री कहाणी स्थूळ सूं सूक्ष्म कानी वधी है अर उण रै कथ्य अर शिल्प दोनां में मंजाव-कसाव आयो है। अब कहाणीकार बारली दुनिया रै बजाय मांयली दुनियां माथै घणो ध्यान देवै। आज तांई अंतर्जगत री जिण अंधेरी कोटड़्यां रो पड़दो उठावण री हिम्मत लारला कहाणीकारां नहीं करी वा हिम्मत आज रो कहाणीकार कर रैयो है। उण नै इण मिनख रै काळै अर कोझै अंतर-जगत मांय ताक-झांक करतां डर नहीं लागै अर ना ही बो अवचेतन री पड़तां नै उघाड़तो संकै। 'जरूरत', 'वेजीटेरियन मच्छी', 'रात रै अंधियारै में', 'सुहागण-भागण' जैड़ी कहाण्यां इण वात री साखी देवै है।

अठै तांई सातवैं दशक री राजस्थानी कहाणी माथै चर्चा हुयी है उण रो आधार खास करनै नूंवां लेखक अर उणां री सबळी कहाण्यां रैयी है। पण राजस्थानी रै सातवैं दशक री कहाण्यां माथै विचार करतां थकां उण दो-तीन नामां नै भी नहीं भुलायीज सकै जका इण दशक सूं पैलां ही कहाणी रै क्षेत्र में आयग्या हा, पण जकां री घणकरी कहाण्यां अर कहाणी-सग्रह सातवैं दशक में ही सामै आया। इण कहाणी-कारां में पैलो नांव आवै है श्री नानूराम संस्कर्ता रो। संस्कर्ताजी इण दशक रै मांय राजस्थानी कहाणी-संसार नै तीन नूंवां कहाणी-संग्रह 'दस दोख', 'घर की रेल' अर 'घर की गाय' नांवां सूं दिया। वियां तो अै कहाणी-संग्रह जरूर सातवैं दशक री देन है, पण जद इणां में संकलित कहाण्यां माथै विचार करां तो मन ओ मानण नै त्यार नहीं हुवै कै अै इण दशक री ही उपज है। 'दस दोख' में दायजो, मृतक-भोज, डाकण, स्यारी अर लैणो जैड़ा समाज रै दस दोसां नै आधार वणा'र आदर्शवादी भावना सूं प्रेरित हो'र लिखीज्योड़ी किस्सागो शैली री कहाणयां संकलित हुयी है। 'घर की रेल' तो लोक-कथावां रा ही जूना गाभा उतार'र नूंवां गाभा पैरायोड़ी छद्मवेशी लोक-कहाण्यां ही है अर 'घर की गाय' में भी इसो कीं नहीं आ पायो है जको 'रहोयी' रै कहाणीकार रै विगसाव नै दरसावै।

इण दृष्टि सूं दूजा उल्लेख-जोग कहाणीकार आवै है श्री नृसिंह राजपुरोहित, जकांरा 'रातवासो' अर 'अमर चूनड़ी' नांवां रा दो कहाणी-संग्रह इण दशक में सामै आया। इण दोनां ही कहाणी-संग्रहां में लेखक री रळकटाऊ कहाण्यां सम्मिलित है। उणां में कई कहाण्यां तो जठै खाली किणी जूनी वारता या किणी लोक-कथा री याद भर ताजी करावै है वठै कई कहाण्यां छपास री भूख रो परिणाम लागै है। पण इणां रै विचाळै-विचाळै 'उडीक', 'भारत-भाग-विधाता', 'लक्की स्टोन' अर 'कुअै भांग पड़ी' जैड़ी सवळी कहाण्यां भी सामै आयी है जकी निश्चित रूप सूं राजस्थानी कहाणी-संसार नै कीं नूंवो दियो है। श्री राजपुरोहित री इण कहाण्यां नै देख'र ही संतोष हुवै है कै कहाणीकार राजपुरोहित कठैई-कठैई ऊक-चूक हुवण रै वावजूद भी वधोतरी रै गैलै माथै सावळ ढंग सूं आप रा कदम वधा रैया है।

तीजा कहाणीकार है मनोहर शर्मा, जकां रो 'कन्यादान' नांव रो कहाणी-संग्रह अवार ही प्रकाश में आयो है। पण संकलन री सगळी कहाण्यां लिखीज्योड़ी सातवें दशक में ही है। श्री शर्मा रै वास्तै घणो कीं नहीं कै'र इत्तो कैवणो मोकळो हुसी कै वै 'ना सावण सूखा ना भादवै हरया' । मतळब जीवण नै देखण-परखण रो उणां रो जको अेक खास नजरियो है अर वात कैवण रो उणां रो जको रूढ लहजो है उण रै मांय कीं भी बदळाव नहीं आयो है।

चौथो नांव श्री वैजनाथ पंवार रो आवै है जकां रो 'लाडेसर' नामक कहाणी-संग्रह लारलै साल ही छप्यो है। इण वात सूं कोई इनकार नहीं कर सकै कै श्री पंवार में अेक कहाणीकार री सबळी मींट अर सखरी समझ है अर वात कैवण री उणां कनै अेक आकर्षक शैली है पण विचारां नै ले'र वै ओजूं तांई कोई थिर गैलो नहीं पकड़ पाया है। कणैई उणां रो आदर्शवादी चिंतन जोर मारै तो 'भूरी' अर 'पासो' जैड़ी चोखी-भली, सांतरी अर सवळ यथार्थवादी कहाण्यां भी आदर्श रै वास्तै वणावटी मोड़ ले लेवै अर कणैई जद वै आदर्श रै मोह सूं मुक्त हुवै तो 'सुरजी', 'दूजवर' अर 'कातिगमहातम' जैड़ी बिल्कुल यथार्थवादी कहाण्यां भी लिख देवै। पण सब मिला'र श्री पंवार हिंदी रै प्रेमचंद-युग रा आदमी है, आज रै मिनख री कळपणा अर उळझाड़ तांई उणां री लेखणी हुंकारो नहीं भरै।

इण चर्चा मांय प्रसंगवश दो कहाणी-संग्रहां रो जिकर भी कर देवणो जरूरी लखावै। पैलो है श्री दीनदयाल ओझा द्वारा संपादित 'राजस्थान के कहाणीकार' (राजस्थानी) जकै में लोककथा अर सामान्य हंसी-मजाक सूं ले'र आज रै शिल्प री कहाण्यां तक सौ-कीं समझ रै अेक ही गेड़ै सूं हांकीज्यो है अर दूजो है श्री प्राणेश द्वारा संपादित 'राजस्थान रा प्रतिनिधि कथाकार' जकै में संपादन-दीठ री अस्पष्टता रै वावजूद भी दो-चार कहाण्यां चर्चा जैड़ी जरूर भेळीजी है।

इण विवेचन सूं ओ तो साफ हु जावै कै राजस्थानी कहाणी रै क्षेत्र में सातवें दशक में भी छप्योड़ी कहाण्यां अर कहाणी-संग्रहां री दृष्टि सूं मुकळायत तो इण दशक सूं पैलांआळा लिखारां री रैयी है पण इत्तो कीं लिख'र भी अै कहाणीकार अैड़ो कीं नहीं दे पाया जिण रै कारण सातवें दशक री राजस्थानी कहाणी रै नेतृत्व रो जस उणां नै दियो जा सकै।

राजस्थानी और हिंदी में विभक्तियां

—लक्ष्मी कमल—

१. हिंदी रा व्याकरणां में, अंग्रेजी व्याकरण री देखादेखी, विभक्ति और कारक में भेद नहीं करीजियो है। राजस्थानी व्याकरण रा लेखक भी उणां रै लारै-लारै चालिया है। पण विभक्ति और कारक दोनूं न्यारी-न्यारी वातां है। संस्कृत रा व्याकरणकारां दोनां में भेद करियो है। विभक्ति रो संबंध शब्द रै रूप सूं हुवै और कारक रो संवंध शब्द रै अर्थ सूं।

२. संस्कृत में सात विभक्तियां हुवै—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी; और छव कारक हुवै—कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण। हिंदी व्याकरणकार दो कारक और वतावै—संवंध और संवोधन। संस्कृतवाळा इणां नै कारक नहीं मानै क्योंकै इणां रो संवंध क्रिया रै निष्पादन सूं नहीं हुवै। कारक रो लक्षण है—क्रियां करोतीति कारकः, जो क्रिया नैं करै अथवा क्रिया रै हुवण में मदत करै उण नै कारक कैवै।

३. विभक्ति और कारक अेक ही वात नहीं है इण रो मोटो सवूत ओ है कै अेक विभक्ति अनेक कारकां में आवै और अेक कारक में अनेक विभक्तियां आवै। उदाहरण रै खातर—

(क) अेक विभक्ति अनेक कारकां में—

(१) प्रथमा विभक्ति कर्ता और कर्म दोनूं कारकां में आवै—

कर्ता—**वालकः** पठति (वाळक पढै है)।

कर्म—**वालकः** पाठ्यते (वाळक पढायीजै है)।

(२) तृतीया विभक्ति करण में भी आवै और कर्ता में भी—

कर्ता—**कुठारः** काष्ठं छिनत्ति (कुठार काठ नै वाढै है)।

करण—**कुठारेण** काष्ठं छिद्यते (कुठार सूं काठ वाढीजै है)

(ख). अेक कारक में अनेक विभक्तियां—

(१) कर्ता कारक में प्रथमा भी आवै और तृतीया भी—

प्रथमा—**बालकः** पठति (बाळक पढै है)।

तृतीया—**बालकेन** पठ्यते (बाळक सूं पढीजै है)।

(२) कर्म कारक में प्रथमा भी आवै और द्वितीया भी—

प्रथमा—**पाठः** पठ्यते (पाठ पढीजै है)।

द्वितीया—**पाठं** पठति (पाठ नै पढै है)।

षष्ठी—बालकः **मातुः** स्मरति (बाळक मा नै याद करै है)।

(३) अधिकरण कारक में सप्तमी भी आवै और द्वितीया भी—

सप्तमी—विष्णुः वैकुंठे वसति (विष्णु वैकुंठ में वसै है)।

द्वितीया—विष्णुः वैकुंठम् अधिवसति (विष्णु वैकुंठ में वसै है)।

४. राजस्थानी और हिंदी में मुख्यकर सात विभक्तियां हुवै—पहली, दूसरी तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं। इणां रा दो भेद हुवै—(१) मूळ विभक्तियां और (२) यौगिक विभक्तियां। मूळ विभक्तियां रा रूप प्रत्यय जोड़णै सूं वणै जिका दोनां वचनां में भिन्न-भिन्न हुवै और यौगिक विभक्तियां रा रूप परसर्ग जोड़ियां सूं वणै जिका दोनां वचनां में अभिन्न (समान) हुवै।

मूळ विभक्तियां हिंदी में दो हुवै और राजस्थानी में तीन; और यौगिक विभक्तियां हिंदी में पाँच हुवै और राजस्थानी में चार। तीसरी विभक्ति राजस्थानी में मूळ विभक्ति हुवै पण हिंदी में यौगिक विभक्ति हुवै। यौगिक विभक्तियां रा रूप हिंदी में दूसरी विभक्ति रै आगै परसर्ग जोड़णै सूं वणै पण राजस्थानी में दूसरी-तीसरी दोनां विभक्तियां रै आगै परसर्ग जोड़नै वणायीज सकै।

५. विभक्तियां रा रूप इण भांत हुवै—

	हिंदी			राजस्थानी	
	अेकवचन	अनेकवचन		अेकवचन	अनेकवचन
१.	घोड़ा	घोड़े	१.	घोड़ो	घोड़ा
२.	घोड़े	घोड़ों	२.	घोड़ा	घोड़ां
३.	घोड़े ने	घोड़ों ने	३.	घोड़ै	घोड़ां
४.	घोड़े को	घोड़ों को	४.	घोड़ै नै घोड़ा नै	घोड़ां ने

५. घोड़े से	घोड़ों से	५.	घोड़ै सूं घोड़ा सूं	घोड़ां सूं
६. घोड़े का	घोड़ों का	६.	घोड़ै रो घोड़ा रो	घोड़ां रो
७. घोड़े में	घोड़ों में	७.	घोड़ै में घोड़ा में	घोड़ां में

६. पहली विभक्ति मुख्यकर कर्ता और कर्म कारकां में आवै। उण में अेकवचन में कोई प्रत्यय नहीं जुड़ै। अनेकवचन में भी नरजाति में कोई प्रत्यय नहीं जुड़ै; मात्र हिंदी में 'लड़का'-वर्ग रै आकारांत शब्दां में 'अे' प्रत्यय लागै और इणी भांत राजस्थानी में 'लड़को' वर्ग रै ओकारांत शब्दां में 'आ' प्रत्यय लागै। नारी-जाति में हिंदी में 'अें' अथवा 'आं' प्रत्यय लागै और राजस्थानी में 'आं' प्रत्यय लागै।

हिंदी	राजस्थानी
लड़का पढ़ता है	लड़को वांचै है
लड़की पढ़ती है	लड़की वांचै है
लड़के पढ़ते हैं	लड़का वांचै है
लड़कियां पढ़ती हैं	लड़कियां वांचै है

७. दूसरी विभक्ति संबोधन कारक में आवै। इण रै अेकवचन में कोई प्रत्यय नहीं जुड़ै; मात्र 'लड़का'-वर्ग और 'लड़को'-वर्ग रै शब्दां में पहली विभक्ति रै अनेकवचन जिसा रूप हुवै अर्थात् हिंदी में 'अे' प्रत्यय जुड़ै और राजस्थानी में 'आ' प्रत्यय। अनेकवचन में सगळा शब्दां में हिंदी में 'ओं' प्रत्यय और राजस्थानी में 'आं' प्रत्यय लागै—

हिंदी	राजस्थानी
लड़के ! कहां जाता है ?	छोरा ! कठै जावै है ?
लड़की ! कहां जाती है ?	छोरी ! कठै जावै है ?
लड़कों[1] ! कहां जाते हो ?	छोरां ! कठै जावो हो ?
लड़कियों[1] ! कहां जाती हो ?	छोरियां ! कठै जावो हो ?

८. तीसरी विभक्ति सकर्मक क्रिया रै भूतकृदत सूं वणियोड़ै भूतकाळ रै कर्ता कारक में आवै। इण विभक्ति रा रूप संस्कृत री तृतीया विभक्ति सूं वणियोड़ा है। इण रा रूप हिंदी में दूसरी विभक्ति रै आगै 'ने' परसर्ग जोड़ियांसूं वणै; राजस्थानी में

---

[1] आधुनिक हिंदी-लेखक संबोधन में अनुस्वार-रहित रूपां रो प्रयोग करै पण अनुस्वार वाळा रूप ही मूळ रूप है।

आ मूळ विभक्ति है, अेकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लागै मात्र 'लड़को' वर्ग रै शब्दां में 'अै' प्रत्यय लागै; अनेकवचन में सब शब्दां रै आगै 'आं' प्रत्यय लागै—

हिंदी	राजस्थानी	संस्कृत
लड़के ने पढ़ा	लड़कै वांच्यो	बालकेन पठित:
लड़की ने पढ़ा	लड़की वांच्यो	बालिकया पठित:
लड़कों ने पढ़ा	लड़कां वांच्यो	बालकै: पठित:
लड़कियों ने पढ़ा	लड़कियां वांच्यो	बालिकाभि: पठित:

९. चौथी विभक्ति संप्रदान और कर्म कारकां में आवै। आ हिंदी में दूसरी विभक्ति रै साथै 'को' परसर्ग जोड़ियां सूं तथा राजस्थानी में दूसरी अथवा तीसरी विभक्ति रै साथै 'नै' परसर्ग जोड़ियां सूं वणै—

हिंदी	राजस्थानी
लड़के को पोथी दी।	लड़कै नै पोथी दी। लड़का नै पोथी दी।
मैंने लड़के को देखा था।	मैं लड़कै नै देखियो हो। मैं लड़का नै देखियो हो।

१०. पांचवीं विभक्ति करण, अपादान और कर्ता कारकां में आवै। आ हिंदी में दूसरी विभक्ति रै साथै 'से' परसर्ग जोड़णै सूं, तथा राजस्थानी में दूसरी अथवा तीसरी विभक्ति रै साथै 'सूं' परसर्ग जोड़णै सूं वणै—

हिंदी	राजस्थानी
मैंने रस्से से नापा।	मैं रस्सै सूं / रस्सा सूं नापियो।
वह घोड़े से गिरा।	वो घोड़ै सूं / घोड़ा सूं पड़ियो।
लड़के से अब उठा जाता है।	लड़कै सूं / लड़का सूं अबै उठीजै है।

११. सातवीं विभक्ति अधिकरण कारक में आवै। आ हिंदी में दूसरी विभक्ति रै साथै 'में' परसर्ग जोड़ियां सूं तथा राजस्थानी में दूसरी अथवा तीसरी विभक्ति रै साथै 'में' परसर्ग जोड़ियां सूं वणै—

हिंदी	राजस्थानी
वह कमरे में बैठा है।	वो कमरै में / कमरा में बैठो है।

१२. छठी विभक्ति अेक संज्ञा रो (अथवा संज्ञास्थानी रो) दूजी संज्ञा रै साथ संबंध बतावै अथवा किणी संज्ञा नै (अथवा संज्ञास्थानी नै) संबंधसूचक अव्यय रै साथै जोड़ै। इण रा रूप हिंदी में 'का' परसर्ग जोड़ियां सूं और राजस्थानी में 'रो' परसर्ग जोड़ियां सूं वणै। इण प्रत्ययां में, आकारांत विशेपणां ज्यूं, वचन और जाति रो भेद हुवै—

हिंदी	राजस्थानी
घोड़े का पैर	घोड़ै रो / घोड़ा रो पग
घोड़े के पैर	घोड़ै रा / घोड़ा रा पग
घोड़े की पीठ	घोड़ै री / घोड़ा री पीठ
घोड़े के ऊपर	घोड़ै रै / घोड़ा रै ऊपर

१३. विभक्तियां रा परसर्ग कदै-कदैई, विशेषकर कविता में, लोप हु ज्यावै—

हिंदी	राजस्थानी
किताब नौकर के हाथ भेज रहा हूँ।	पोथी नोकर रै हाथ भेजूं हूँ।
अपने हाथों यह काम किया।	हाथां ओ काम करियो।

१४. इण सात विभक्तियां रै अलावै दो विभक्तियां निपात जोड़ियां सूं वणै। अै निपात है 'पर' और 'तक' (राजस्थानी में तक, तांई आदि)—

हिंदी	राजस्थानी
मोर वृक्ष पर बैठे हैं।	मोर रूंख पर बैठा है।
घर तक चले चलो।	घर तांई चालो परा।

१५. इण नव विभक्तियां सूं भी सगळा संबंध प्रगट नहीं हो सकै, इण वास्तै संबंधसूचक अव्ययां नै काम में लायीजै। अै संबंधसूचक अव्यय छठी अथवा पांचवी विभक्ति रै बाद आवै।

हिंदी	राजस्थानी
घोड़े के साथ	घोड़ै रै सागै
घोड़े के आगे	घोड़ै रै आगै
नदी से परे	नदी सूं परै
पापी से दूर	पापी सूं दूर

टिप्पणी—विभक्ति रै परसर्ग रो कदै-कदै लोप हु जावै—

घोड़े आगे	घोड़ै आगै
घोड़े सहित	घोड़ै समेत

१६. कई संबंधसूचक अव्यय ऊपर वतायी विभक्तियां रै अर्थ में भी वापरीजै। जियां—

हिंदी	राजस्थानी
तीसरी—द्वारा	द्वारा, हस्ते
चौथी—लिए, निमित्त, वास्ते	वास्तै, खातर, सारू
सातवीं—भीतर, अंदर	मांय
आठवीं—ऊपर	माथै, ऊपर

१७. राजस्थानी री विभक्तियां री सारणी

विभक्ति	जाति	शब्द	प्रत्यय		उदाहरण	
			अेक वचन	अनेक वचन	अेक वचन	अनेक वचन
पहली	नर	ओकारांत	×	आ	घोड़ो	घोड़ा
	,,	शेष	×	×	राजा	राजा
	नारी	अकारांत	×	आं	गाय	गायां
		आकारांत	×	आं, वां	माळा	माळां माळावां
		उ-ऊकारांत	×	वां	वहू	वहुवां
		इ-ईकारांत	×	यां	घोड़ी	घोड़ियां, घोड़्यां
दूसरी	नर	ओकारांत	आ	आं	घोड़ा	घोड़ां
	नर-नारी	अकारांत	×	आं	गाय	गायां
		आकारांत		आं, वा	माळा	माळां, माळावां
		उ-ऊकारांत		वां	वहू	वहुवां
		इ-ईकारांत		यां	घोड़ी	घोड़ियां, घोड़्यां
तीसरी	नर	ओकारांत	अॅ	आं	घोड़ॅ	घोड़ां
	नर-नारी	अकारांत	×	आं	गाय	गायां
		आकारांत		आं,वां	माळा	माळां, माळावां
		उ-ऊकारांत		वां	वहू	वहुवां
		इ-ईकारांत		यां	घोड़ी	घोड़ियां, घोड़्यां

जवान रो सांग

—मनोहर शर्मा—

भाया ! तूं पच्चीस वरसां रो जरूर है,
पण तूं जवान कोनी, मोटियार कोनी ।

दीखत में तूं जवान-सो लागै है
जाणै रोहीड़ै रो फूल,
पण तेरो मन बूढो है
जाणै कादै में फंस्योड़ो वाछड़ियो ।

जे तूं जवान है
तो तेरै देस में भ्रष्टाचार क्यों ?
तेरै वोट सूं जीत्योड़ा
भूखै भारत रा नेता
कोठियां में बैठा मौज क्यों करै ?

जे तूं जवान है तो
घूस खाय'र सूज्योड़ा सरकारी अफसर
मोटरां में फूल्या क्यों फिरै ?
काळै वजार रा कपटी व्योपारी
धोळा गाभा पैरयां
नागरिक अभिनंदन क्यों करावै ?

तनै जोस कोनी आवै;
कदै-कदैई किरोध जरूर आवै है,
जद तूं तोड़फोड़ री मरदमी दिखावै,
जाणै कोई टोरड़ो
आप रै धणी रै सूनै खेत में
तापड़ा काढतो हुवै ।

तूं पढाई रो पट्टो लियां फिरै है
पण तूं पढ्यो कोनी, गुण्यो तो दर-ई कोनी;
तूं तो नौकरी री दुरासा में
वखत काढ्यो है ।

भाया ! जवान तो वो है
जिको दूजां रो भार हळको करै ;
अरे ! तूं तो तेरी-ई ज़िंदगी रै बोझ सूं
दव्यो जावै है;
पछै तूं जवान किण नांव रो ?

कम-सूं-कम इतरो तो कर
तूं खुद नै जवान मत बतावै ;
आगै सूं कोई पूछै तो
खुद नै पच्चीस वरसां रो नीं वताय'र
पचास वरसां रो वताया कर,
जिण सूं लोग सोच लेवै—
ओ जवान कोनी,
जवान रो सांग है ।

भाग रो लड़त-पड़त

—हरमन चौहाण—

मगरमच्छ
म्हारी घांटी पकड़'र
आधो अर आधो घसीटतो
झील रै बीचूं-बीच लेग्यो है।

सगळा लोग मूंडा फाड़ता
गुटळ-गुटळ न्हाळै है—चीस मारै है
कोरी !
बस ! आंतरै सूं
ठिणक्या-सिणक्या करता,
देखता—
कैवै है—प्रभु री लीला
अजब है !

म्हारी सांसां रुक-रुक'र अब तो
आखरी दौर पूरो करण में लागी है;
लोही नाक-मूंडा सूं निकळतो
आखी झील नै
लाल करग्यो है....
छतां म्हारी जांघां,
लोही सूं लपथळ,
मगरमच्छ नै दवाय राखी है।

तीरां पर ऊभा लोग
मनै देख हंसै है—अचरज करै है—
'ओ छोरो झील नै लाल कींकर कर रैयो है ?
मरतोड़ो—
हिम्मत रै पाण मगरमच्छ सूं जूझ रैयो है !'

मगरमच्छ हाल तांई
म्हारी जांघां रै विचै वरड़-वरड़
वोलै है; सायत
हाडका टूटै है
लोही लाल कर रैयो है पाणी नै
अर हूं अब म्हारी घांटी छुडा'र उणरी घांटी दाव दी हूं।

अेक खारी अनुभूति

—रामस्वरूप 'परेश'—

अजगरी तोपां सूं,
लांठी सूं जूझता
मुक्ति-सेना रै सिपाही री
फाटेड़ी पेंट री जेब सूं
लाधी है
खारी अनुभूति री
अेक कुनैण री गोळी।

हरी कूंपळां री
मुळकणां री दाझेड़ी सोरम सूं
घुटेड़ो,
आंसुवां रा नोट अंटी में लुकायां,
प्रीत रा रूळता रमतिया
सुपनां री जोध-जवान लोथां पर
भागतो हूं
आखै जग नैं
वांटवा नैं उतावळो हूं
कुनैण रा किरचा।

म्हारली आस्था
ताड़ी पी'र नाळै में पसरगी,
सभ्यता रै
वारणै रै शौकिया कैक्टस में
उळझग्यो रूपाळो चीर,
अर न-जाणै कठै कटगी
संस्कृति री जेव।

मैं म्हारो सो-कीं
जेज री गाडी में भूल आयो ;
अेक खारी अनुभूति री
कुनैण री गोळी रा किरचा
आखै जग नै बांटवा नै
भाज रैयो हूं
उतावळो हूं।

मरम जिंदगाणी रो

—विनोद सोमाणी 'हंस'—

अठा सूं कागद भेजणो
अर वठै मिल जावणो
घणो महत्त्व नी राखै
पण
इण आवणै-जावणै री प्रक्रिया में
कतरी अनुभूतियां जुड़ी थकी है—
आ वात हरेक नीं जाणै।

ओ जीवण री क्रम ही अजव है;
जनम सूं लेय'र मरणै तक
केई वितृष्णावां, कड़वा घूंट
अर घुटन म्हांनै हुवै है,
सागै ही कई विस्वासी अर उछव-भरया वोल
आपां नै हिम्मत बंधावै है।

पण, ओ संघर्ष आपां रै वास्तै
महत्त्वहीण हुणो चाहीजै;
विना स्वारथ, अर निष्काम हुयनै,
आपा नै जीवणो पड़सी;
ज्यांन अेक कागद अठा सूं चाल'र
ठप्पां री चोटां खातो-खातो
किणी री लांवी इंतजार नै मिटाय देवै,
किणी विरही आतमा नै
आणंद री लहरां में डुबोय देवै।

ओ हीज जिंदगाणी रो मरम है।

रात आयी

—श्रीमती आशा शर्मा—

रात आयी !
रात आयी !!

चांद रो सिर पर
जड़ाऊ बोर,
हार किरणां रो
गळै लटकै,
पगां में पाजेव
तारां री,
चानणै री
चूनड़ी चमकै,
सोवणी-सी आ लुगाई ।
रात आयी !

जा सकै कोई
वठै कोनी,
देस इण रो
वादळां रै पार ;
महल में दिन भर
लुक्योड़ी
आ करै ही
आप रो सिणगार ;
रूप में कोनी समायी ।
रात आयी !

आंतरै सूं आ,
लुक्योड़ी,
आप री झोळी
पटक दी खोल ;
नींद घुळगी,
और नैणां पर
विखरग्या सपना
घणा अनमोल ;
आ दिखायो खेल कांई ?
रात आयी !

आंसुवां री ओस
वरसावै,
फूल-पत्तां पर
पड़ी है छांट,
वावळी रो-रो
करै जागण ;
देख री है आज,
किण री वाट ?
आंख भी कोनी लगायी ।
रात आयी !
रात आयी !!

झरमटियो

—विश्वंभरप्रसाद शर्मा 'विद्यार्थी'

वागां में सूती हरियल
आंख्यां मसळ-अर उठी,
ईनै-ऊनै झांकण लागी—
ऊभी हू'र देखण लागी ।

पंछीड़ां रै हिवड़ां में
रागां नाचै ही,
रीझै ही; भीजै ही,
कंवळी-कंवळी कूंपळ सा'रै
रूपवंती कूकूं वारै
हंस-हंस वतळावै
नैणां में मुसकावै
कानांवाती करै
मन री कैवै
सांनै वूझै
आमां री मींझरां ।

सोरम रा झीणा फटकारां में
झोटा खा-खा'र
नींद रा मीठा गुटका लेवै
ऊगै, ओझकै
नानी-नानी, काची-काची,
हरी-कचन, दूधै दांतां,
मधरी-मधरी, मीठी-मीठी,
आमां री मींझरां ।

इत्तै नै घणै आंतरै,
खेत री सींव़ पर,
हूक में हवोळा खांवतो
मीठा-मीठा बोल वरसावण लाग्यो—
पीव़ू ! पीव़ू ! के····को····हो ! के····को····हो !
खुसी कर ! खुसी कर !—
आसीसां देव़ण लाग्यो
तीतरां रो झूमको !

रूंखां-रूंखां वानरमाळ बंधगी,
बाग-बगीचा फूलां री झोळी ले
रंग छिटकाव़ै,
खुसियां सोव़न-थाळ वजाव़ै,
वधाव़ा गाव़ै,
रूप-रुत नै सजाव़ै ।

अमराई में झुक-झुक झांकै ही
कुंहूं ! कुंहूं ! कैव़ै ही
वुलबुल बोली—
'कीं कैव़ूं !—कीं कैव़ूं ।'
चिड़कल्यां बोली—
'तूं कै !—तूं कै !'

मैं वोल्यो—कव़ो कनी वेगी-सी ।
बै म्हारी आंख्यां में निजर पसार
धीरै सूं म्हारै कान में कैयो—
होळी आयी अे फूलां री झोळी,
झरमटियो लै !

नीरवता

मूल—टामस हुड
अनुवाद—दामोदरप्रसाद

रही जठै ना किणी भांत री किणी घड़ी कोई आवाज ।
नीरवता है बठै, जठै ना गूंज सकै जीवण रो साज ।।

ठंडी कवरां, ऊंडी खोहां, अतळ सागरां रो तळ-देस ।
दूर-दूर पसरी मरुभोमां, जठै नहीं जीवण रो लेस ।।

जठै मूकता पांव-पसारयां गहरी-नींदां सोवै धाप ।
मिलै बठै ना लुकी-छिपी भी, जीवण-घुड़लै री पद-टाप ।।

पण पथ-भूल्या वादळियां री पड़ै भटक कर कोई छांव ।
अणवोल्या अणचेतन सूत्या आळस-भरया अड़ावां मांय ।।

× × ×

घास-ढक्यो, मळवै रो ढिगलो, निर्जनभीतां है अपवाद ।
जठै मिनख कण-कण में रमतो, जूनामहल हुया वर्वाद ।।

मटमैली लूंकड़ियां वोलै, जंगळी जरखां करै पुकार ।
उडै निरंतर घूघू वोलै, गूंजै जठै विकट चीत्कार ।।

पवन प्रळाप करै कर्कस वण, टकरावै अर हुवै अशांत ।
पण सांची नीरवता तो है आत्म-चेतना अर अेकांत ।।

मुरधर री जाझ

—सूर्यशंकर पारीक—

(१)

सुगणां री सुगणो वीर कान्ह चोखड़ ले पाणी री आयो
'जै !' कै जाखेड़ो जैकायो है कामल ऊंठ घणो भायो
धरती रै इण धन नै धिन-धिन, धिन है धरती इण नै जायो
मुरधर री जाझ वता इण नै कविता में कवि-जन गुण गायो

(२)

थूबर है कोट-मदारा-सो, आ पूंछ पूंगणी-सी लागै
ओरीसा-सा अेडर मदवै सिर भूण नाड़ लांबी सागै
कोड्याळा घूघरिया गळ में, मुखमली वेळचो मूं वागै
चांदी रो नकतोरण, मूरी वाट्योड़ी रेसम रै तागै

(३)

करवल पर कूंची फुलड़्यां री, कर जड़ाजंत जड़ियोड़ी है
रेसम रै पाट पागड़ां में सोवन साटी नुकत्योड़ी है
रेसम री रासां, तंग तीखा, करवल पीठां जुगत्योड़ी है
टोळै रो टाळवंत टोडो कवि री उक्ती उकत्योड़ी है

(४)

बांध्योड़ी पैंजणियां वाजै, लूमाळो गोरबंद लूमै
कारीगर कांगसिया कोरया, चितराम घेर घूमर घूमै
रूड़ो रंगीलो झूल ओढ दो दांत टोरड़ो है भू मै
भूरो रातो काळै कांटै तिसळो कानां झावर झूमै

(५)

पग मेल पागड़ै पींगै में वायरियो वात करै लारै
सामै दीसै अळघी जिनसां छिन में ही द्वै आवै सा'रै
धरती रै पूत विणाय घणो, विरूमी मजलां नै के वारै ?
ले ठौड़-ठिकाणै ओठी नै पोंचावै टोडो वा' वा' रे !

(६)

ओ तीखी विख हालै टोडो, 'ढोलै रो मरवण मेळ करा
गजधर नापै ज्यूं धरती नै, नापै करवल है वियां धरा
सौ जा कोसां आवै ओठी, जद सार-तार सूं फूस चरा
मुरधर रो है करवल साथी, थोड़ी पण जितरी करां सरा

(७)

सरणाट करंतो धरती पर वे-हरड़ाटां पांगळ हालै
दे टिचकारी दचै दिखा तड़ी, देखो, टोडो किण गत चालै
सीधी-चपटां पड़छां चालै हालै-हुलकै मधरो मालै
पेटां रो नीं पाणी हालै, अैड़ो सोरो गजबी चालै

(८)

सैंपूर चढै ऊभै गाळै, ज्यूं उडणी जाझ चढै नभ में
ढळज्यां' ढळांत ज्यूं सागर में नावड़ियै नाव रवै ढव में
डीवो डिगणो इकटंगियो-सो, पण नींव पकी च्यारां पग में
मुरधर रै मांर्‍यां रो वेली वीजो न भाळ आयो जग में

(९)

मोटर रा जाम चका हुय ज्यां, दै जीप बापड़ी जीभ काढ
लोरी लारीकर नीसरज्या, नीं पड़ै काढणी वाढ-वाढ
धोरांळी धरती-जाजम पर करवल कांधोळै चाढ-चाढ
पग चंप्योड़ी मैंदी चालै, पग मेलै धरती ठाड-ठाड

(१०)

पाणी रै वहतै वा'ळै में, नाळै में, खाळै में नाठो
फांफां में, झांफां-डांफां में चालण में टोडो है सांठो
साचेलो पूत सिपाही है, वैरी सूं राखै है कांटो
इण जैड़ो लूण-उजाळणियो धरती पर मुसकल है काठो

(११)

नभ में वहै उलळतो खग ज्यूं आथण कद हुवण रै अपूठ
ओ ऊंठ अठागळ नेसां कढ गुल्लो गुलफी ज्यूं करै झूंठ
अगलो फदकां ज्यूं वहै ढाण पाणां नै राखैला अपूठ
धणियां रै कारज नै सारण करवल रो अँग-अँग गयो ऊठ

(१२)

जाणीजै जोगी जंगळ रो, करवल करोत धरती वैरं
धरती पर फाळ फणां चालै, ओठी जद कै देवै देरै
फूंफाट करंतो व्है ढाणां, गोळी री चोट चल्यो जेरै
कारज नै सारण रै सारू व्रत लायां धरती पर ह्वै रै

(१३)

भड़ भिड़तां, लड़ती फौजां नै, कुळ-खोजां नै मिटता राख्या ?
सेताव चढचो ओठी तैं पर देखां, जाणै ! पूगै दाख्या ?
इणगी सूं ले उणगी कसिद मनसोबो संधी रो राख्या ?
तूं न हुवंता धरती माथै कवि कुण रा गुण आछा आख्या ?

(१४)

दे रातब टोडै नै टोरचो, तेळास करचो, तीनूं तणग्या
टोडै कद पाछ रळायी, जद पग दड़ाछंट पहिया वणग्या
सोरै रो पण कैणूं कांई, जणग्या वां जेड़ा वै जणग्या
ओठी करवल नै टोरै है, वै गया-गया ही वै पण ग्या !

(१५)

उरणावै टोडो, हेज करै, ओठी टोरचां के जेज करै
रातो है मातो खाथो-सो चाल्यो है मारग काम सरै
बो दड़ाछंट पग मेल्यां जा', गुळ घणो फिटकड़ी खड़ो चरै
अै सुगन-सरोधा हुया सूण, वैणूं है सामै मिल्यो भरै

(१६)

मिनखां री बोली ही खाली नीं बोल सकै पण इण जग में
पण मिनखां री बोली समझै, धरती रो नकसो है पग में
जिण जगां जावणो ओठी नै, ऊठीनै पग मेलै मग में
फंटतै मारग में नीं चूकै, मूकै कद वैण सुण्यां संग में

(१७)

काळै ऊनाळै री रातां पंच-मणा गूण माथै मेल्यां
लदपद लोभी लदवो चालै, पदवै कद पग पाछा मेल्या ?
मिनखां ज्यूं सैन समझ स्याणो, अैड़ो वेल्यां रो है वेल्यां
गिरवाण नास नेकी मूरी पंथ पावर नीं भूलै गेल्यां

(१८)

लूरचोड़ा लोर उलरग्या जद मोटोड़ी छांटचां में' वरस्यो
तेजै री तीखी टेर सार मन मोद घणो करसो हरस्यो
हळ ठाठ आगड़ा बांध हाल पैलै हळोतियै नै परस्यो
करवल रै मोळी कंठां में बांधी करसै हिवड़ै सरस्यो

(१९)

माही रै मेळै झूंठ करै, वादळ ज्यूं सावण में गाजै
मदछकियो आंटीलो मदवो है घणो फूटरो ओ साजै
पीठै पर पटक माकड़ै नै जाड़चां री मूं चरखी वाजै
मुरधर रै मिनखां रो वेली, इण आगळ जीव सभी लाजै

(२०)

लाडै नै लाड-कोड सूं ले वनड़ी व्यावण नै ओ चाल्यो
आगु-मुहाणी में मदवो वैरचां रै हिवड़ै में साल्यो
ओ ऊंठ अठागळ नेसावर करतव पाळंतै कुण पाल्यो
नरवर कोटां नै कर जुहार करवल धीरज नै घर हाल्यो

डांखळा

—मोहन आलोक—

(१)

जात रा दरोगा हा धूड़सिंह धाकर
रावळै कमावता रै पड़गी ही टाकर
पेटियो कीं पाता बो
डूमां नै लुंटाता सो
कैता—भाया ! अंतपंत ठगायां हुस्यां ठाकर !

(२)

सेठ'र सेठाणी गया गयी साल आबूजी
पा'ड़ चढ़ हेठां देख्यो, रयो नहीं काबू जी
बोल्या फड़ अर सेरणी—
भूल्या आवां फेर नीं
अबकाळै उतार दयो तो हे म्हाराज पाबूजी !

(३)

कड़ाव-सी चिलम, हेठां मोटो-सो हो मटको
हाल जैड़ो नैचो हो, होको क्यां रो ? खटको
दादो जाता गांतरै
तो कित्तो ही हुवो आंतरै
घरां आग टेक 'र साथै ले ज्याता सटको !

(४)

सीयाळै रो मीनो हो, ठंढ ही करड़ी
हुँ अेवड़ पाण गयो ओढ 'र वरड़ी
घर दीनी उतार
देख्यो पाणी पा'र
तो वरड़ी ही उगाळै सा'रै पूठी हुयी भरड़ी !

(५)

लूंकड़ी नै कँवण लाग्यो अेक दिन गादड़ो
आ तनै खवा'र लांऊ जेई रो बाघड़ो
बोली—हूँ हूँ बामणी
करूं इस्यो काम नीं
कियालकी वात करै नागड़ै खाधड़ो !

सोराब और रुस्तम

—नरोत्तमदास स्वामी—

दृश्य १

स्थान—ईरान और तूरान री सीमा माथै रण-खेत।

[अेकै पासी ईरान री और दूजै पासी तूरान री सेना ऊभी है। अेकै पासी सूं रुस्तम और दूजै पासी सूं सोराब युद्ध रै वेश में आवै है। आंवता थका अेक-दूजै नै देखै है।]

रुस्तम—(मन में) ओ जवान कुण है ? ऊमर छोटी है पण वांको पहलवान है। ईरान री सगळी फौज में इसो वांको जवान कोई दूजो नहीं है।

सोराब—(मन में) वडो तेजस्वी वीर है। कठै ओ ही तो रुस्तम नहीं है ?

रुस्तम—(आगै वध'र) जवान ! तूं कुण है ? अठै मौत रै मूंढै में क्यों आ पूग्यो है ? हाल तूं टाबर है। थारा दूध रा दांत ही टूट्या नहीं लागै है ! मनै थारै माथै दया आवै है। हूं तनै मारणो नहीं चाऊं हूं। जा, राजी-खुशी घरे परो जा।

सोराब—वीर ! लड़ाई रै मैदान में आ'र पग पाछा देवणा हूं नहीं सीख्यो। पण थारै सूं लड़न रो आज म्हारो मन नहीं करै है। अेक वात पूछूं ?

रुस्तम—हां ! पूछ। कांई पूछै है ?

सोराब—वीर ! थारो नांव कांई है ? तूं रुस्तम तो नहीं है ?

रुस्तम—रुस्तम ! वाह-वाह ! हूं रुस्तम ! (हंसै है) नहीं ! हूं रुस्तम कोनी। रुस्तम भला अठै क्यों आसी ? ईरान रा दूसरा वीर कांई खूटग्या जको थारै जिसै छोकरै सूं लड़न सारू रुस्तम आसी ? ओ तो उण रो मोटो अपमान है।

सोराब—पण तूं रुस्तम हुतो तो आज ओ जुद्ध नहीं हुतो।

रुस्तम—जुद्ध सूं डर लागै है, जवान ?

सोराव—डर ! डर कांई चीज हुवै है मनै नहीं मालम । जुद्धभोम में वडा-वडा वीर देख्या है, तगड़ा जवान देख्या है, पण डर तो कदैई देखणी नी आयो ।

रुस्तम—तो ठीक है । लै, संभळज्या ।

सोराव—हां ! हूं त्यार हूं ।

[दोनूं लड़ै है, लड़तां-लड़तां सोराव रै आघात सूं रुस्तम री तरवार टूट-अर आधी जाय पड़ै है ।]

रुस्तम—कोई बात नहीं, तरवार टूटगी तो टूट जावो । जुद्ध सूं पग पाछो नहीं देसूं । हूं विना तरवार ही लड़सूं । म्हारी अै भुजावां कंई तरवार सूं कम है ? मरसूं तो वीर-आळी दाई मरसूं ।

सोराव—नहीं, कदे नहीं । हूं भी म्हारी तरवार वगा देऊं हूं । (तरवार वगा देवै है) अवै आपां भुजावां सूं ही लड़सां ।

[दोनूं मल्ल-जुद्ध करै है ।]

रुस्तम—तूं मिनख है क दानव ?

सोराव—वीर ! थक ग्यो हुवै तो अवै काल लड़सां । अवार जुद्ध वंद करां !

रुस्तम—नहीं वीर ! हाल तो सूरज अस्त नहीं हुयो है ।

सोराव—तो ठीक ।

[दोनूं भळै जुद्ध करै है, थोड़ी देर वाद सोराव रुस्तम नै जमी माथै पटक देवै है और आप रो पग रुस्तम री छाती माथै राख देवै है ।]

सोराव—अब थारो वखत आ पूग्यो है ।

रुस्तम—मालम हुवै है कै तनै फारस देस रो जुद्ध रो कायदो मालूम नहीं है ।

सोराव—कांई कायदो है थारै देस रो ?

रुस्तम—कोई वीर दुसमण नै पाड़ लेवै तो पहली वार में ही उण रा प्राण नहीं लेवै, उण नै अेक दूजो मौको देवै ।

सोराव—ठीक है, हूं तनै अेक मौको और देऊं हूं । (पग छाती पर सूं आधो कर लेवै है) सूरज अस्त हुवण माथै आयग्यो है । दूजी लड़ाई अब काल लड़सां । पण याद राखजे काल तूं रणभोम सूं जींवतो पाछो नहीं जावैला ।

[पड़दो पड़ै है ।]

दृश्य २

स्थान—वो ही रणखेत

[सोराव और रुस्तम आमै-सामै ऊभा है ।]

रुस्तम—तूं आय ग्यो जवान ! सुण लै, आज आपणो ओ आखरी जुद्ध है । आज जुद्ध रो अंत जरूर हु ज्यावैला । आज आपां दोनां मांय सूं अेक जणो जरूर जुद्ध-भोम में सोवैला ।

सोराब—पण वीर ! आपां लड़ाई नहीं लड़ां तो ? कोई दुर्निवार शक्ति मनै थारै सूं जुद्ध करण सूं रोक रयी है । म्हारो हाथ थारै माथै नहीं उठै है । कांई आपां स्नेह रै बंधन में नहीं बंध सकां ?

रुस्तम—स्नेह ! स्नेह जिसी कोमळ भावना नै मैं कदैई समाप्त कर दी । म्हारै मन में तो बस अेक ही भावना जागै है—काल री हार रो प्रतिशोध आज मनै लेणो ही है ; आज थारो वध मनै करणो ही है ।

सोराब—इसी वात है तो हूं म्हारी हार थारै कनै सूं मांग-अर लेऊं हूं ।

रुस्तम—अे लुगायां जिसी वातां हूं नहीं सुणनी चाऊं । हूं आज लड़न नै आयो हूं और लड़-अर ही प्रतिशोध लेसूं । आज का तो म्हारो माथो जमी माथै पड़सी, का विजय रै गौरव सूं ऊंचो माथो लियां पाछो जासूं ।

सोराब—पण अेक वात म्हारी तो सुण ....

रुस्तम—पण-वण कीं नहीं । आज कोई री आधी वात भी को सुणूं नी ! म्हारो बेटो भी आज मनै रोकै तो हूं नहीं रुकूं । लै संभळ, बचा आप नै । (प्रहार करण नै त्यार हुवै)

सोराब—तो ठीक ! तूं कैवै ज्यूं ही सही ।

[रुस्तम सदा री आदत रै मुजब 'जय रुस्तम' शब्दां रै साथै वार करण नै आगै वधै है । रुस्तम रो नांव सुणतां ही सोराब आकळ-बाकळ हु ज्यावै है ।]

सोराब—रुस्तम ! कठै रुस्तम ?

[भ्रांत हुयोड़ो-सो देखण लागै है और ढाल हाथ सूं छूट जावै है । रुस्तम रो धक्को लागै है और धक्कै सूं जमी माथै ढह पड़ै है ।]

रुस्तम—थारी आखरी घड़ी आय पूगी है । मरण नै त्यार हुज्या ।

सोराब—पण आ तो पैली वार है । थारै देस री रीत रै माफक मनै दूजो मौको मिलणो चाहीजै ।

रुस्तम—बस ओ ही पहलो और ही दूजो मौको है ।

(प्रहार करै है ।)

सोराब—हाय मां ! हूं मरचो । हाय पिताजी !

रुस्तम—मर छोरा ! वेगो मर ! जाण्यो हुसी कै तूं म्हारी विजय-कीर्ति नै मंद कर देसी ! क्यों ?

सोराब—तूं कुण है वीर ! हूं तनै नहीं जाणूं । पण तैं मनै अन्याय-जुद्ध में मारचो है । अेक वात तनै कैऊं हूं कै म्हारी आ मौत प्रतिशोध रै विना नहीं रैवैला ।

अेक अलिखित नाटक री सार-समीक्षा

—मनोहर शर्मा—

बाबू जगदीशनारायण माथुर खातर आजाद-सभा मांय दियोड़ो अध्यक्षीय भाषण अेक वरदान सिद्ध हुयो। आगलै दिन सभा री कारवाई साथै आप रो पूरो भाषण अखबारां मांय छप्यो तो माथुर साब री डाक रो आकार इतरो वधग्यो कै सगळा कागद वांचण में अेक घंटै सूं भी घणो वखत लगावणो पड़्यो।

डाक में आयोड़ा कई कागद धन्यवाद-सूचक हा तो कई चिट्ठियां में तारीफ सूं भरी-पूरी व्याख्या ही। अनेक कागदां मांय आप नै संपादकां री तरभ सूं स्थायी स्तम्भ खातर नियमित लेख भेजण री प्रार्थना ही। अेक-आध पत्र मांय ओछो-लांबो पारिश्रमिक भेंट करवा री चर्चा भी ही। इण भांत माथुर साब रात नै सोया अेक अज्ञात लेखक रै रूप में अर प्रात:काळ जाग्या अेक विख्यात लेखक रै रूप में।

माथुर साब पूरी डाक वांच'र अेक करड़ी-सी चाय पी। पछै सिगरेट सिलगायी अर स्थिति पर चुपचाप गंभीरता सूं विचार करवा लाग्या—इतरै दिनां हिंदी अर उड़दू मांय लिख्यो अर खूब लिख्यो पण क्यूं-ई अरथ कोनी नीकळयो। राजस्थानी-संसार में लेखक री कदर है। राजस्थानी रा पाठक गुण रा पारखी है। हां! पारिश्रमिक री स्थिति माड़ी जरूर है पण मान वडो कै तान?

माथुर साब 'मूड' में आयग्या अर झट कलम उठायी। आप तै करयो कै आज अेकदम नयी चीज त्यार करणी चाहीजै। कई लोग कैवै कै राजस्थानी-लेखक जमानै सूं घणा पिछड़योड़ा है। इसै हठधर्मियां रो भरम दूर करणो जरूरी है। हिंदी मांय अकविता, अकहाणी अर असमीक्षा री घुड़दौड़ है। पण राजस्थानी रो घोड़ो इणां सूं भी तीखो रैवै तो वात वणै।

माथुर साव मनस्या करी कै राजस्थानी मांय अेक इसी साहित्य-विधा चलावणी चाहीजै जिकी भारत री तो वात ही कांई, संसार भर में कठैई नहीं मिल सकै। सोचतां-सोचतां आखर अेक सर्वथा नयी विधा रो आकार आप रै दिमाग में आ उतरयो।

नयी विधा रो मूळ आधार हो लेखक पर आलोचक रो अेकीकरण। पण आ विधा आत्मकथा री लीक पर चालबाव़ाळी कोरी आत्म-समीक्षा कोनी ही जिण रै आव़िष्कार रो श्रेय भी माथुर साब नैं ही हो। नयी विधा रो रंग तो अेकदम ही न्यारो हो। पुराणी परिपाटी पर चालणिया कई पिंडत आप री रचना री आप ही समीक्षा (अर्थात् टीका) लिखता रंया है पण माथुर साब तो इसी रचना री समीक्षा चलायी, जिकी ना किणी री कलम सूं कदेंई लिखीजी ही अर ना कठैई प्रकाशित ही हुयी ही।

माथुर साब रै ध्याय में, साथै ही, आ बात भी रैयी कै वर्तमान व्यस्त युग मांय सगळा ही साहित्य-रूप छोटा हुता जाव़ै है। उपन्यास संकोच सूं 'लघु उपन्यास' वणग्यो, कव़िता सिकुड़'र 'मिनी-कविता' हुयगी, कथा नैं 'लघुकथा' रो नांव़ धारण करणो पड़्यो अर नाटक हळको हुय'र अेकांकी रैयग्यो, तो पछै समीक्षा भी 'सार-समीक्षा' रै नव़ै नांव़ सूं लिखी जाव़णी जरूरी है।

माथुर साब अेक करड़ी-सी चाय और पी अर पछै आप री ईजाद करयोड़ी नयी विधा मांय इण भांत पहली चीज साहित्य-संसार नैं भेट करी—

अेक अलिखित नाटक री सार-समीक्षा

'सरकारी अफसर' अेक समस्या-नाटक है। इण रा अेक विशेष पात्र भारतभूषण अग्रव़ाळ इनकम-टैक्स आफिस में बाबू है। आप रा पिता श्रीमायाराम रेलव़े रा रिटायर्ड स्टेशन-मास्टर है अर मोटी पेंसन पाव़ै है। आप री पत्नी श्रीमती प्रभादेव़ी अेम० अे० (प्रीव़ियस) सारै दिन वणाव़-सिणगार में लागी रैव़ै है। गाणै-बजाणै में अर सिनेमा देखणै में प्रभादेव़ी री खास रुचि है। वा तीन टाबर जण'र नचींती हुय चुकी है।

भारतभूषण रो पड़ोसी दुरगासहाय पारीक ट्यूशनां री कमाई सूं राजनीतिशास्त्र मांय अेम० अे० करयोड़ो पूरै परव़ार रो अेक गृहस्थ है। कठैई नौकरी नहीं मिलणै सूं पहली तो दुरगासहाय अेक रिटायर्ड प्रोफेसर री प्रैस में प्रूफ-रीडर रो काम करै है अर पछै पार कोनी पड़ै जद अखबारां री अेजंसी लेव़ै है।

प्रभा रो ध्यान अेम० अे० री डिग्री ले'र लेकचरार वणवा कानी जाव़ै है। दुरगासहाय उण रो ट्यूटर व़णै है अर बा अेम० अे० पास करतां ही गव़र्नमेंट-कालेज में लेकचरार रो पद प्राप्त कर लेव़ै है।

प्रभा रा भाई साब बाबू देव़कीनंदन गुप्ता सेल्स-टैक्स-डिपार्टमेंट में वडा अफसर है। आप पूरै परव़ार रा विराणा है अर वडी कोठी में रैव़ै है। प्रभा आप रै मास्टर साब दुरगासहाय पर इण परव़ार रो घरू-ट्यूटर वणा'र कृपा करै है पण 'वौस' सूं विचार-वैषम्य रै कारण ओ काम घणै दिनां चाळ कोनी सकै।

दुरगासहाय अखवारां री अेजंसी रै साथै संवाददाता रो काम भी सरू करै है अर पछै 'समाजवाद' नांव सूं अेक पखवाड़ियो छापो खुद चालू कर देवै है। मित्रां री मदद सूं 'समाजवाद' चाल पड़ै है अर दुरगासहाय नगर में अेक उपनेता रो दरजो प्राप्त कर लेवै है।

पछै म्युनिसिपल-चुणाव रो मौसम आवै है अर 'समाजवाद' रो संपादक दुरगा-सहाय उम्मीदवार रै रूप में खड़्यो हुवै है। पण मुकावलै में मैडिकल-स्टोर रा मालिक विनोद वावू है। विनोद वाबू रो वडो वेटो सरकारी अस्पताळ में डाक्टर है अर दूसरो वेटो कारखानां री देखभाल पर इंजीनियर है। सपादकजी वणै-सूं-घणो जोर लगा'र भी आखर चुणाव-संग्राम में मात खा बैठै है।

चुणाव में दुरगासहाय च्यारूं कानी सूं हारै है। पीसा खरच हुया, वडै आदमियां सूं वेर वंध्यो अर अति भागदौड़ करणै सूं काया भी जवाव दे दियो। दुरगासहाय वेमार पड़ै है अर प्रभादेवी री मदत सूं पाछो खड़ै-पगां हुवै है।

'समाजवाद' रो प्रकाशन वंद हुय जावै है। अखवारां री अेजंसी सूं घर रो खरचो कोनी चालै। प्रभादेवी री सिफारस सूं दुरगासहाय नै नगर-कांग्रेस रै दफ्तर में लिपिक री नौकरी मिलै है। अठै वो पदाधिकारियां री कृपा प्राप्त कोनी कर सकै। फेर भी, दूजो कोई ठिकाणो निजर कोनी आवै इण कारण, नीची नाड़ कर लेवै है।

इण अलिखित नाटक रो कथानक वस इतरो-सो ही है। पूरी कथावस्तु मांय सरकारी अफसरां रो दवदवो है। वै राज अर समाज पर छायोड़ा है। इसी लागै है जाणै भारत री आजादी रो सुख-सवाद तो बस सरकारी अफसर ही लेवै है अर दूजा लोग जिंदगी रो भार ढोवै है। नाटक रो नायक दुरगासहाय इणी लोगां रो प्रतिनिधि है।

नाटक में समस्या तो है पण उण रो कोई समाधान कोनी। नायक नै सफळता कोनी मिलै तो वो चुप वैठ जावै है। इण भांत ओ 'निराशांत' नाटक है। सरकारी अफसर देश री अेक विकट समस्या है। पण निराशा रो वातावरण हितकारी कोनी कैयो जा सकै। फेर भी यथार्थ रै चित्रण री दृष्टि सूं आ अेक सफळ रचना है।

आशा है, लोग इण नाटक सूं प्रेरणा लेसी अर सरकारी अफसर रूपी देशव्यापी समस्या रै समाधान री चेष्टा करसी। भारत जिसै गरीब देस में अेक वर्ग नै सालाना तरक्की पेंसन अर भांत-भंतीलै भत्तां री सुविधावां सूं संपन्न स्थायी पोस्ट मिळै अर दूजा अणगिणत वेकार लोग दरिद्रता सूं दव्योड़ी जिंदगी में फंस्या मूं ताकता रैवै, आ स्थिति समाजवाद रै नारै नै झूठो सिद्ध करै है।

खरी जीत

—मुरलीधर व्यास—

सईका सरं-सी सिरकग्या। पण कोसळ-नरेश रै परहित खातर प्राणां ऊपर खेल जावण री ऊजळी गाथा अजूं तोड़ी जनमानस में ऊजळै आखरां में मंडी पड़ी है। इयां तो कोसळराज ठेटाऊ सूं ही मोटा दानी हा, कदेई कैई जाचक नै खाली हाथ को जावण दियो नी।

तो सुणो।

कोसळ-नरेश रै दान-परोपकार री सोरम काशीराज रै हिरदै में ईर्ष्या री ज्वाळा भभकाय दी। म्हारै सूं इतरो छोटो राजा नै इतरो मोटो जस !

आव देखी न ताव, फौज चढावता ही हुया। विजय मिळी। कोसळराज निरुपाय हो'र वन में ठोका दिया।

काशीराज डूंडी फिरा यी—कोसळ-नरेश नै जीवतो पकड़ लावणियै नै पांच हजार मोहरां इनाम।

घणै समय छेड़ै, कोसळ रै अेक वौपारी रो माल-भरियो जहाज डूब ग्यो। वो लाई मांगण-खावण जिसो हुय ग्यो। जणै धन लेवण कोसळ कानी टुरियो। दुख उण नै चेताचूक वणा'र मारग सूं भटका दियो। लाई इणगी-उणगी गोता खावै जंगळ में।

भटकतै-भटकतै, उण नै अेक जटाधारी लंगोट लगायां निजरै पड़्यो। उण पूछ्यो—कोसळ रो मारग ओ हीज है नी, साधू महाराज ?

'ना भाई ! आथूणी दिस है।'

'थोड़ो पाणी पासो ?'

'हां ! खुसी सूं पीवो ठंढो जळ।'

वौपारी पाणी पी'र थोड़ो विश्राम लियो अर आप रै दुख रो रोजणो रो'र साधू नै सुणायो।

साधू री आंख्यां सूं आंसू ढळकण लाग्या। जरा मून रै'र कैयो—भाई ! थे भळै नहीं भटक जावो; आवो, म्हारै सागै हुयलो। जाय पूगा काशीराज रै दरवार में। साधू काशी-नरेश री जद बोल'र अरज करी—मनै जीवतै हाजर करणियै इण म्हारै साथी नै पांच हजार मोहरां बगसाय दो, हूँ कोसळराज आप रो बंदी हूं।

काशीराज फाटी आंख्यां जोवता रैया, जोवता रैया। पछै मुळक'र बोल्या—बंदी ! पराजित हो'र ही तैं बदळो लेवण री आ खूब अनोखी विध बैठायी ! पण हूँ थारै दाव में को आऊँ नी। कै'र ऊभा हुया अर कोसळराज नै बाथां में भर'र आप रै बराबर सिंघासण माथै लाय बैठाया। माथै मुगट धर'र 'कोसळराज री जै हो !' उच्चारियो।

सारा पार्षदां समवेत स्वर में 'कोसळराज री जै हो ! कोसळराज री जै हो !' उच्चारियो।

शंख-ध्वनि रै सागै पुसवां री विरखा हुयी।

नकली बलाय

—जवर अली सय्यद—

(१)

वात घणी पुराणी कोनी; पचास-साठ वरसं पैली री है।

शहर रै परकोटै री दिखणादी वारी में वड़तै, डावै पासी मुड़तै, सामै अेक कूवो। कूवै रै सामै परकोटै कनै अेक मसीत। मसीत रै कनै मजूरां रा घर। अजान सुणतां ही काम बंध कर नमाज पढण-आळा मसीत में जांवता परा। नमाज पढावण-आळै मियैंजी रो घर भी कनै ही। उणां रो मसीत में सै सूं पैली पूगणो जरूरी।

नमाज पढायां पछै मियोजी फुरसत री वगत में तसवी फेरचा करता। मालक नै घणो याद करचा करता। आड़ोसी-पाड़ोसी दूखै-पाखै टाबरां नै झाड़ो लगावण खातर मियैंजी कनै ले जाया करता। मियैंजी रो दूर-दूर तांई नांव हो। लोग-बाग भूत-भूतणी कढावण खातर मियैंजी नें गांव-गांवंतरै भी ले जाया करता। अठैई हुता जद मसीत आगै मेळो मंडयोड़ो रैवतो।

मसीत रै सामै अलादीन नांव रै मजूर रो घर। अलादीन रो सांवळो रंग। दाड़ी-मूंछां राखतो। पंछो जवान। डीलडोळ में तगड़ो। पैलवान दाई दीसतो। खूब दिलेर। पक्को हिमती। रात-विरात डरतो कोनी। जे इंधारै में मिल जाय तो अेकर सामलै री छाती काची पड़ जाय। अलादीन कुड़तो-तैमल पैरतो। खांधै पर गमछियो राखतो; वजू वणा'र हाथ-पग पूंछ लेवतो अर नमाज पढती वगत विछा लेवतो। नमाज पांचूं वगत री पढचा करतो। नमाज पढयां पछै थोड़ी ताळ मियैंजी सूं वातां करचा करतो। मियैंजी नै इण पर भरोसो हुतो।

झाड़ै सूं जिकै रै आराम नहीं आवतो उण नै मियोजी उतारो वतावता। उतारो कोरै कूंडै में करावता। कूंडै में सात पईसा, वकरै री सीरी, चार पाया, वाकळा, रायां, राख री पींडंयां, जगतो दीयो, ऊपर लाल गाभो ढक'र रात री वारै वजी

मसाणां में रखावता। सागै आ भी कै देवता कै उतारो राखणआळो पक्की छाती रो आदमी चाहीजै; थारै कनै नहीं हुवै तो हूं परबंध कर देसूं; आना च्यार लागसी। बकरै री सीरी अर पाया हुयण सूं घणा-साक लोग च्यार आना देणा ही ठीक समझता; दूजै मसाणां रो काम।

मियंजी इण काम खातर अलादीन नै सही आदमी समझ्यो। बुला'र पतो-ठिकाणो बता देवता। अलादीन आप रो सिझ्या पड़ी पूग ज्यावतो। बठैई धामा धरतो। पक्कै सेर अेक नै ढोकळी दे'र, पाणी पी'र, पेट पर हाथ फेर'र, सू ज्यावतो। घर-आळा मतैई टैम सूं जगा देवता। वो उतारो उठा'र मसाणां में मेल'र आप रै घरै जावतो परो।

मियंजी अलादीन नै भी थोड़ा मंतर सिखा दिया अर कैयो कै ओ तो मनै विसवास है कै तूं डरै कोनी; जे कदास कदेई रात नै कीं दीस जाय, वैम हु जाय अथवा गिरगराट हु जाय तो मंतर फूंक'र मार दियै; थारै ऊपर असर को हुवै नी।

अलादीन दिन में आप रो काम-धंधो करतो अर रात नै जद जरूरत पड़ती आ मजूरी कर लेवतो।

(२)

अेक बार री बात। मेह-अंधारी रात। हाथ नै हाथ सूझै नहीं। उतारो मेलण रो बुलावो आयो। जा पूग्यो। इण आदमी रै घर सूं मसाण दूर पड़ता पण अलादीन परवा नहीं करी अर टुर वहीर हुयो।

अलादीन काम ईमानदारी सूं करतो। पईसां रो हक पूरो बजावतो। कूंडो मसाणां रै बीचूंबीच मेल दियो। पाछो रवाना हुयो। घटाटोप बादळ। गाज सूं सगळो आभो धर्रावै। बीजळी आभै में मावै ही नीं। कड़कड़ाट सूं काळजो धूजै। रोही रो मोको। सफा सून। बांठकियां अर बोरटियां मांय सूं निकळ'र संसाट करती पून चालै। इयां मालम पड़ै कै आभो अर धरती अेक हु जासी। अलादीन थोड़ा खाथा-खाथा पग उठाया। वस्ती सूं थोड़ी दूर ही रैयो हो। अेक बांठकियै पर काळो-काळो माथो दीस्यो। पग थाम्या। सोच्यो—इण वगत में ओ कुण ? डरयो कोनी। मन में कैयो—जे कोई ओपरी छिया है तो आज दो-दो हाथ कर लेसां। पट मियंजी रो बतायोड़ो मंतर याद आयग्यो। पढणो सरू करयो। पढतां-पढतां थोड़ी देर हुगी। माथो बियां-रो-बियां दीसै। मंतर पढणो बंध करयो। आप री सगती रै सारै चाल पड़यो। बीजळी चमकती ही। कनै-सैक पूग्यो। बीजळी रै पळकै सूं साफ दीस्यो तो अेक काळी हांडी, जिका बांठकियै रै ऊपरली डाळी में लटक्योड़ी ही। अलादीन भाठो फेंक्यो। वा फूट'र नीचै आ पड़ी। अलादीन निसंग जा'र सूयग्यो।

दिनूगै वेगो-सोक उठ्यो। अजान हुयगी ही। फजर री नमाज पढण नै मसीत में गयो। मियोंजी पैली सूं आयोड़ा। जमात सागै नमाज पढी। दुवायां मांग'र लोग-

बाग बारै निकळण लागग्या। अलादीन मियैंजी कनै गयो। अस्सलामालेकुम करी। मियैंजी कनै बैठग्यो। मियैंजी जीवणै हाथ सूं तसबी रा मिणिया गुड़कावता हा, डावै हाथ सूं थोड़ो ठैरण रो इसारो करचो। अलादीन समझग्यो। तसबी रा गड़का पूरा हुयां पछै मियैंजी अलादीन नैं पूछ्यो—कैवो, कांई हाल है ?

कांई वताऊँ ? रात तो खोटी हुयी। जे म्यारी जाग्यां कोई दूजो हुतो तो छाती फाट'र मर जावतो—अर रात-आळी सगळी कथा कै सुणायी।

अै च्यार आना तो मूंघा पड़ै; हूं तो आगै सारू इयै पईसां में जाऊँ कोनी; आधी रात काळी करूं, भूतां रा माथा कुचरतो जाऊँ, जान जोखम में नाखूं अर मिलै आना खाली च्यार; म्हारै तो जचै कोनी—अलादीन कैयो।

ओ कोई काम तो है कोनी; मण दो मण भार उठावणो पड़ै कोनी; वगतसर जा'र मेलणो जरूर पड़ै; जे थारै सूं नहीं हुवै तो हूं कर लेसूं; डरूं-डराऊँ हूं आथ कोनी; ओ अेक है, दस हुवै तो मेल आऊँ - मियैंजी कैयो।

चोखी वात है; मनै तो पोसावै कोनी—कै'र अलादीन आप रै घरै गयो परो।

(३)

मियैंजी रै झाड़ै पर लोगां नै खूब विसवास। बियां-ई मसीत आगै मेळो-सो मंडै। उतारैआळो नैं उतारो वतावै अर खुद ही मसाणां में जा'र मेल आवै। पईसा मेलाई रा ले लेवै। पण जावता सिंझ्या-पड़ी अर अंधारो पड़तै-सैंक पाछा आ जावता।

अलादीन ओ तमासो रोजीनै देख्या करतो। उण मन में सोच्यो—मनै तो रात रा बारै वजी मेलता अर आप जावै सिंझ्या पड़ी, इण सूं मालम पड़ै कै मियैंजी री छाती काची है, डरै है। इणां नै हाथ वतावणो चाहीजै।

अलादीन वाळबच्चैदार आदमी हो। आ ऊपर री आमदनी बंध हुणै सूं हाथ तंग हुग्यो। अबै बो मियैंजी नै चकमो देवण री फिराक में लाग्यो। अेक दिन मियोजी उतारो ले'र निकळया। मसाणां कानी रवाना हुया। अलादीन मौको ही ढूंढतो हो। च्यार वांस लिया, पुरस-पुरस लांवा ; च्यार-पांच ली धोत्यां अर मियैंजी रै लारै टुर वहीर हुयो।

मियोजी तो बोला-बोला झटाझट मसाणां में गया। अलादीन अेक ऊंचै ठीड़ै पर, जठै आवण-जावण नै कोई दूजो मारग नहीं हो, जा'र बैठग्यो। हाथां-पगां पर वांसड़ा बांध्या। ऊपर धोत्यां पळेटी। अबै बैठो मियैंजी नै अडीकै। थोड़ी देर नै मियोजी आवता दीस्या। आप सूयग्यो। थोड़ो इंधारो हुग्यो हो। मियोजी आप रै ध्यान में आवता हा। नेड़ा-साक आया जद अलादीन हाथां-पगां नै हलाया। मियैंजी रो ध्यान उठीनै गयो। हिचको खायो अर रुक ग्या। देखै तो मारग रै वीचूंवीच सैंतीर-सो अेक लांबो आदमी पड़्यो। देखतां ही मियैंजी रो माथो ठिणक्यो। मन में कैयो—अलादीन साची ही कैवतो हो। लोभ में आ'र आपां काम तो खोटो ही कर लियो। ओ काम तो अलादीन जिसै खईस रो ही है जिकै नै देख'र दूजो ही डरै। आज

कियां-ई वंच जाऊँ तो आगै सारू तो सौगन समझो। कई पीर मनाया। सीरणी बोली। हिमत कर'र वतळायो, हेलो करचो। बोल्यो कोनी। पगां नै छीदा करचा। साधारण पगां सूं चौगणा लांवा हुग्या। मियैंजी कांकरा मितर'र फेंक्यां। कुल फूंक्या। आयतुल-कुरसी आयत पढी। कोई असर नहीं हुयो। अवै उण हाथ लांवा करचा। वै भी चौगणा लांवा। मियैंजी रो जी हाल उठचो। काळजै गिरै छोड दी। थंर-थर धूजण लागग्या। दांत बोलण लागग्या। वगधगी छूटगी। अर तैमल ढीलो हुयग्यो। असताव़ो हाथ मांय सूं छूट'र फूटग्यो।

अलादीन पड़चो-पड़चो सैं देखतो ही हो। सोच्यो—अवै आगै और कीं करचो तो मियैंजी री अठै-ई ढिगली हु जासी। वै आप रैं हाथां-पगां नैं पाछा भेळा करचा। मारग छोडचो। मियोजी जूत्यां खोल जी करड़ो कर'र पट्टी लगायी। इण तरैं दोड़चा जाणै कोई गोळी लाग्योड़ो हिरण जा' है। लारैं फुर'र जोयो-ई कोनी। मारग में खांधै रो गमछियो अर तैमल पड़ग्या। अलादीन आप रा वांसड़ा खोल्या। धोत्यां सांवटी। मियैंजी रो तैमल, जूत्यां अर गमछियो ले'र घरैं आयग्यो।

वीनैं मियोजी घरैं पुग्या। बुरी तरैं हांफीज्योड़ा। सांस गळै में मावै ही नीं। थर-थर धूजैं। बीवी रसोई री जाळी मांय सूं देख्या। वारैं आयी अर पूछचो—आ दसा कियां हुयगी ? मियोजी बोलै ही नीं। आंख्यां ऊँची चढण लागगी। चक्कंर आयग्यो। पड़ण लाग्या जद पकड़'र मांचै पर सुवा दिया। सी-दाऊ चढग्यो। बीवीजी वैद-हकीम वुलाया। दवा-ओखद करी। थोड़ा जजम्या जद धूजतां-धूजतां सारी कथा सुणायी। लोग-वाग मिलण खातर आया। हिमत वंधायी। पण मियोजी सारी रात वैलता रैया।

दूजै दिन मियोजी नमाज पढावण नैं कोनी आया। मिलणआळां रो तांतो लागग्यो। अलादीन भी आयो। हालचाल पूछचा।

—हूं अवै आगैसारू ओ काम कोनी करूं अलादीन ! भोळै वामण भेड़ खायी, फेर खावै तो राम-दुवाई। कामा जिकै रा ही जामा। ओ काम तो तूं ही कर सकै।

मियोजी दवायां लेणी वंध कर दी। वै जाणता हा कै रोग तो कोई है कोनी। रोग जिको है वो दवा-ओखद सूं जावै कोनी। वैम वैठचो तो इसो वैठचो कै निकळै ही नीं। मियैंजी री हालत विगड़ती गयी।

(४)

अलादीन नैं मियैंजी री दशा पर दया आयगी। अेक दिन कैयो—मियाजी ! थां नैं डरावणआळो हूं ही हो; भूत-भात कीं कोनी हो।

नहीं अलादीन ! तूं कोनी हो, वा तो कोई वलाय ही—मियैंजी कैयो।

अलादीन समझाया, सौगनां खायी। मियोजी मान्या कोनी। दिनूंदिन तजता ही गया। सूक'र लकड़ी दाई हुग्या। अलादीन सोच्यो—जे अवै विसवास नहीं दिरायो तो मियोजी वंचैला नहीं। वो घरैं गयो। तैमल, जूत्यां अर गमछियो मियैंजी रैं सामै ला नाख्या। जणै वैम निकळचो अर छव महीना सूं जा'र मियोजी ठीक हुया।

दायजै री दाभ

—मूलचंद 'प्राणेश'—

(१)

पैंडो अर वैरी तो वाढयां सूं हीज वढै। ठाकर बळवंतसिंहजी वहीर हुवणैं घणी ही ताकड़ करी, पण लुगायां-आळा ढामा-टोपा तो निवड़ता-सा कि अठीनैं-उठीनैं मिळ-भिट'र वहीर हुवतां-हुवतां, रात पोर डोढ पोर बीतगी। री रात हुवै भी कितरीक—मुट्ठी भर। भूं पड़ी मूंढै आगै बीस-बाईस कोस रै अडै ठाकर बळवंतसिंहजी जे अेकल-ओठी हुता तो घणी चिंता करै जैड़ी वात नह वै आप रै ऊंठ नैं पड़छा'र भाख फाटणै सूं पैलां-पैलां गाँव में जाय वड़ता आज तो बीनणी साथै अर वा भी भरियै खोळै। इण कारण सूं ऊंठ नैं पड़छाव अळगो रैयो, जोर सूं टोरीजै तक नहीं। अजै तांई बायली पूरी अेक महीनै री हुयी कोनी। नहीं करै भगवान, पण जे ऊंठ रै हिलकां सूं बाळक लोही भरीज तो कांय में हाथ घालां। कैवण-कथण-आळी वात हुयां लोग मूर्ख तो वतावै धोळा भांडीजै जिका न्यारा। ऊंठ आप रै मतै वैवतो जावै।

खाजूआळै टोळै कनैं आवतां-आवतां भाख धमगी। ठाकरां रै अमल-पा व्यसन। वां चोखो अछळेटो देख'र ऊंठ नैं जैंकाण्यो। बीनणी नैं ऊंठ रो गोडो हेठै उतारी। आप चाय रो पाणी उकाळणैं सारू बळीतो भेळो करण नैं लाग्या। जावता बीनणी नैं कैयग्या—वाला ! हूं छाणो-वळीतो लाऊं जितरै थे खोद राख्या। बायली नैं सावळ रालकियै में पळेट'र सुवाण दीजो।

ठाकर तो आ वात कैय'र रोही में रळग्या। ऊंठ आप रो थाकेलो उ सारू अछळेटै में नस पाधरी करचां वैठो। बीनणी बायली नैं सावळ सुव चूलड़ी खोदण लागी। चूलड़ी पूरी खोदीजी ही कोनी, जितरै ठाकर-सा वळीतो पाछा आयग्या। बीनणी वासदे सिलगा'र चाय री तपेली चाढी। ठाकरां अ आंट मांय सूं ठेसरियो काढ'र अमल रो मावो करचो। बीनणी चाय-आळी त

गळनो अर तासळी ला'र ठाकरां रै कनै मेल दी । वां आधी-सी तासळी चाय आप ले ली अर बाकी पाछी वीनणी नै झलावता बोल्या—इण में थोड़ी-सी चावड़ी पड़ी है, जिकी रो गुटको थे ही लेय लेवो; सो कंई थाकेलो उतर जासी ।

अमल-पाणी कर'र ठाकरां ऊंठ रो बोरो अर आसण साव़ळ जचायो । ऊंठ रो गोडो दाव'र वोनणी नै पाछी ऊंठ ऊपर चढायी । वा चोखी तरै जच'र वैठगी जद रालकियै में पळेटचोड़ी वायली नै झलाय दी अर आप ई ऊंठ री मोरी नै कूंट'र लारलै आसण जाय चढया । टिचकारी दे'र ऊंठ नै उठाण्यो अर मारग घाल दियो ।

चोखो मुंह-सूझलो हुयग्यो । भूं अजै तांई सात-आठ कोस रै अड़ै-गड़ै बाकी पड़ी । वीनणी रै सगळी रात रो ओझको, सो उण रो माथो कदे पिलाणआळी आगली घोड़ी सूं टकराय जावै अर कदे लारलै आसण में वैढया सुसरैजी री छाती सूं । वा आसण में वैठी वार-वार फोरासारो भी करै । उण री आ हालत देख'र ठाकर बोल्या—वाला ! थां रा पग थकग्या हुवै तो वायली नै मनै झलाय देवो । हूं उण नै केई ताळ राखूं जितरै थे पगां नै थोड़ा अठीनै-उठीनै कर'र उरळा कर लेवो ।

वीनणी सांचाणी ही थकियोड़ी ही । रात भर वायली नै पगां ऊपर राखणै सूं उण रै पगां में चीसळचां-सी चालती ही । वै वायली नै रालकियै में चोखी तरै पळेट'र सुसरैजी नै झलाय दी । वायली अठीनै-उठीनै कवथीजणै सूं थोड़ी रोयी तो खरी, पण ठाकरां उण नै 'हुवा बाया ! हुवा बाया!' कैवतां थेपड़'र पाछी जंपाय दी ।

सूरज भगवान आप री सैंसां किरणां नै सागै ले'र ऊग्या । ठाकरां वायली रै मूंढै ऊपरलो गाभो थोड़ो-सो अळगो करचो । वायली रो चैरो-मोरो देखतां ही उणां रै मूंढै सूं अणधारचो थुथको घालीजग्यो । वायली कांई है, रूप रो डळो ।

(२)

ठाकरां रै आप रै भी वाई ही । गोरो-निछोर, हाथ लगायां ही लोही आय जावै, अैड़ो उण रो वर्ण । सिवी-सूरत ई वखाणै जैड़ी । आंवै री फांक्यां-सी चीरवीं आंख्यां । सूवै री चूंच सरीखो तीखो नाक । पैरी-ओढी नै साळ अथवा ओरै रै खूणै में ऊभी जे कोई देखै तो उण नै गवरज्या रा ओळा-भोळा पड़ै । वाई फकत चैरै-मोरै ही फूठरी हुवै, अैड़ी वात नही, वा भागवळी भी ही । उण रै भाग-संजोग सूं हीज ठाकरां नै अवराजियां रा गनायत वणणै रो मौको हाथ लाग्यो । पण फकत रूप, गुण अर भाग-संजोग नै आज रै जमानै में कुण गिणै ? आज तो लोग चावै कितरा ही संठियोड़ा हुवो, वेटी-आळै नैं चूंथ-चूंथ'र खावणै री हीज भावना राखै । ठाकरां रै मूंढै सूं अेक ठंडो निसकारो निकळचो पण वीनणी इण वात कानी क्यों ध्यान देवती ? वायली चुपचुपाती दादोसा रै खोळै में निसंक सूती ही ।

ऊंठ नै गांव नैड़ो आवतो दीसै ज्यों-ज्यों उण रा पग खाथावळा उठै। ठाकरां री मन-लहरी भी उण रै साथै-साथै आगै-सूं-आगै वधती जावै। जान रो वधाईदार हरी डाळी हाथ में लियां अर गळडव्वै तरवार घाल्यां, मांढै रै अगवाड़ै आ'र वधाई दी—जान आयगी है सा ! वधायजै, वींद-राजा हाथी रै होदै तोरण वांदैला।

वधाई री बात सुण'र मांढै-आळां रो मन नव-नव ताळ ऊंचो नाचण लागग्यो। वाई री मां रो हियो पसर'र सवा गज चवडो हुग्यो। ढोल, नगारा, सहनाई, भेर, भूंगळ इत्यादि वाजां री रळी-मिळी गड़गड़ाट गांव नै ऊंचो उठाय लियो। बंदूकां री जायगां मोरचंगयां रा दड़ीड़ हुवै। सामेळै री त्यारी हुयी। गांव-गेर भेळी हुयोड़ी। जान्यां अर मांढ्यां सूं गवाड़ ऊफणै। वींद-राजा गवाड़ रै विचाळै ढोलियै रै ऊपर अगूणो मूंढो करियां बैठा। राजपुरोहितजी उतरादै मूंढै बैठा शांति-पाठ पढै। इतरै ही वींद-राजा रै कामदार आ'र ठाकर बळवंतसिहजी रै कान में होळै-सीक कैयो—ठाकरां ! आप नै राव-सा याद फरमाया है।

राव-साव रै अचाचूंक रै तेड़ै सूं बळवंतसिहजी रै पगां रै घट्टयां-सी बंधगी। ठीक सामेळै रै मौकै ऊपर बुलावणै रो कांई अर्थ हुय सकै है ? फेर भी लांठै रो डोको डांग नै फाड़ै, जिकै में भळै ठाकर ठैरया वेटी रा बाप ! बेटी जायी रे जगनाथ ! ज्यांरा हेठै आया हाथ। ठाकर भागल-मनां कामदारजी रै साथै जानीवासै गया। रावजी ढोलियै ऊपर विराजमान हा। अेक खवास उणां नै होको पावै। ठाकरां रावसाव सूं जुहारड़ा करया। रावजी खवासजी नै सैन दे'र वारै मेल दियो। जानी-वासै में रैया फकत तीन जणा—रावजी (वेटै रो बाप), ठाकर (बेटी रो बाप) अर रावजी रो कामदार।

रावजी आप रै हाथ री सैन सूं बळवंतसिहजी नै आप रै नेड़ा बुलाया अर होळै-सीक कैयो—ठाकरां ! आपां रै ओ जिको संबंध हुयो है, इण नै आप अेक संजोग ही समझो।

—हूं तो इण नै वरदान ही मानूं हूं सा ! —बळवंतसिहजी लुळताई रै सुर में वोल्या।

—आ वात तो ठीक है, पण ....।

—पण कांय री है सा ! हूं म्हारै डोळ-सारू ओछो को उतरूं नीं अर लिछमी-सी वेटी आप री थेपड़्यां थापण नै दी हीज है।

—आ वात तो आप ठीक फरमावो सा ! अवै फकत गुमसुम में वात पार को पड़ै नी ठाकरां !

—पण जान तो गवाड़ में वैठी है।

—गवाड़ सूं किसो उठीजै कोनी ?

राव़-साव री आ वात सुणतां ही ठाकर वळवंतसिहजी सूना हुग्या। उणां रै मूंढै सूं बोल नहीं निकल सक्यो।

—टैम भोत कम है, सिरदारां ! अवार तो अठै आपां घर-घर रा हीज हां, कामदारजी तो आपणा हीज आदमी है। आप नै जिको कंई देव़णो-लेव़णो है, उण री खुलती कर देव़ो।

—खुलती कांई करूं, राव़साव ! कोई भी बाप आप री बेटी नै देव़णै-लेव़णै में पाछ को राखै नी। हूं भी म्हारी सरधा सारू दस-पनरै हजार रुपिया नगद अथव़ा गैणै-गांठै रै रूप में देव़णा तेव़ड़्या है जिकै आप रै चरणां में अर्पण कर देसूं।

—इतरै में तो पार पड़ै कोनी !

—तो कियां पार पड़सी ? —ठाकर वळवंतसिहजी गरभराया।

राव़-साव इण वात रो कोई उथळो को दियो नी। इण दोनां नै चुप वैठा देख'र कामदारजी वोल्या— ठाकरां ! राव़-साव तो आप रै मूंढै सूं आप नै कांई कैव़ै, मोटा मिनख है; पण हूं आप नै सला देऊं हूं कै जे आप नै ओ व्यांव़ ढोल रै ढमकै करणो हुव़ै तो जोधपुर में जिकी आप री हव़ेली है, उण नै अवार लगन झलांव़ती वेळा वींद-राजा नै संकळप देव़ो।

हव़ेली रो नांव़ सुणतां ही ठाकरां रै हाथां रां तोता उडग्या अर दवियै सुर में वोल्या— मालकां ! जे हव़ेली म्हारै कव्जै में नहीं हुव़ै तो ?

तो कामदारजी ! थे फुरती सूं जा'र वींद नै अठै डेरै वुलाय लाव़ो ; मोटर आपां रै कनै है हीज—राव़-साव मून भांगी।

कामदारजी अर ठाकर उठै सूं साथै हीज उठ्या।

ठाकर वळवंतसिहजी रै जोधपुर-आळी हव़ेली सांचाणी ही कव्जै में नहीं ही। उण हव़ेली रै ऊपर हीज पईसा-टक्का ले'र इण व्यांव़ रो सरंजाम करयो हो। ठाकर करै भी तो कांई करै ? आगै कूव़ो अर लारै खाड। आ वात भी जे महीनो पनरै दिन पैळां प्रकासीजती तो भळै ही कंई कारी लागती, पण अवै तो वात हाथै-बाथै को रैयी नी। ठाकर आप रो भागल मन लियां घर कानी हाल्या। घर रै कनै-सीक पूगतां, उणां नै घर मांय सूं रोव़ै-कूकै री अव़ाज आव़ती सुणीजी। घाव़ में घोवो। वै पग उठा'र घर में वड़्या। आगै देखै तो लोग वनड़ी नै आंगणै में लियां वैठा है। उण रै मूंढै सूं झाग निकळै अर डील सगळो लीलो टांस हुयोड़ो। ओ चकासो देख'र ठाकरां नै समझतां कोई जेज को लागी नी। वाई जरूर अवार-आळी सगळी वातां सुणी हुसी। उण नै घर री राई-राई रो पत्तो हो। जी री उकराळी उण अमल गिट लियो हुसी। ठाकरां रै गोडां तांई रो सत निकळग्यो। घणै लाड-कोड सूं पाळी-

पोसी बेटी नै ओ दायजो दिरीज्यो ! उणां रो बाको छूटग्यो—ओ म्हारी चिड़कली अे ! म्हारी लाडकंवर बाई अे !

(३)

अचाचूक री बड़क सुण'र वींदणी लारीनै मूंढो फोर'र जोयो। सुसरैजी रो खोळो साव खाली । उण रो बाको भी छूटग्यो—म्हारी चिड़कोली अे ।

वीनणी रो रोज सुण'र ठाकरां नै सागी चेतो हुयो । बै तुरता-फुरत ऊंठ नै उठै ही जैकाण'र हेठै उतरया । ऊंठ रै पगै-पगै पाछा नाठा । कोई पांवडा वीसेक गया हुसी कै बायली-आळो रालकियो निगै आयग्यो । मन में कंई थ्यावस आयो । खाथा-खाथा पांवडा भर'र रालकियै समेत बायली नै उठायी अर. झंझेड़ी-चंचेड़ी, पण ऊंठ ऊपर सूं पड़्यां पछै उण फूल में कांई बाकी रैवतो !

दूधां न्हावो, पूतां फलो

—नृसिंह राजपुरोहित—

(१)

पूरा छव महीना वीत्यां हूं छुट्टी में पाछो गांव आयो तो गांव में अेक अजोगी वात सुणी—किसनजी लोहियै री वहुआरी कूवै में पड़नै मरगी।

हूं छुट्टी में गांव पूग्यो उण सागण दिन री ज वात है—गांव में पुलिस-थाणो आयोड़ो अर गांव रा पीचका माथै मिनखां रो थट्ट लाग्योड़ो। नींवड़ा रै नीचै छिया में मांचा ढाळनै पुलिसवाळा वैठा अर उणां रै मूंढागै तावड़ै धरती माथै वहुआरी री लास पड़ी। दीसती-वासती, फूटरी-फर्री अर गोरी-निछोर वहुआरी, जिण रो किणी आज दिन तांई नख ही कोनी देख्यो, वा आज गांव रै गूंदरै सफा उघाड़ी धरती माथै उगराणै पड़ी। लास रो पेट फूल्योड़ो अर मूंडो फाटयोड़ो। राफां में सूं पाणी रिस-रिस-नै जमी आली हुयोड़ी, उण माथै माखियां झींगै। देखनै घिन-सी आयगी; मैं मूंढो फेर लियो।

पण आ अजोगी वात वणी कियां? वातड़ी कीं समझ में नीं आयी। किसनोजी लोहियो गांव रो आसूदगो आदमी, घर में रामजी राजी, वेणीप्रसाद जिसो भण्यो-गुण्यो अर आज्ञाकारी वेटो, कळकत्तै में दुकानदारी चालै, वहुआरी सुलखणी, सासू-वहू रै आपसरी में कोई राड़-जाणी नीं। पछै इण खांवती-पींवती अर सुखी गिरस्थी में आ नपावट वात कियां वणगी? हूं गतागम में पजग्यो।

पण आ वात ही सूरज री साख रै पाण साची कै विना कारण कोई वात वणै नीं। फेर संसार में सै सूं वालो प्राण हुया करै। उण सूं आगै पछै काळी भींत है। मिनखा-सरीर रै कांटो चुभ जावै तोई खारो जैर लागै, सो प्राण देवणो तो घणी मोटी वात है। घोर दुखियो मिनख ही च्यार रात जीवणो चावै। मौत रो नांव सुणतां पाण भलां-भलां रो काळजो कांपण मांडै। सो साखियात काळ नै वरण करणो तो घणो अवखो काम है। जठै तांई दुख रो दरियाव मानखा रै फुरणियां ऊपर हुय नै नीं चालै, कोई काळ नै नूंतो नीं देवै।

(२)

किसनजी लोहियै रो घर म्हारै घर रै अड़ोअड़ पाड़ोस में आयोड़ो। इण कारण म्हारै आपसरी में भाइयां पांत-ई वत्तो प्रेम। वेणीप्रसाद अर हूं साथै-साथै हीज रमनै मोटा हुया। स्कूल-कालेज में पण साथै-साथै हीज पढ्या। अर संजोग री वात कै दोनूं जणां रो व्यांव पण अेकण सावै साथै-साथै हीज हुयो।

यार-दोस्त मसखरियां करता—देख लीजो, इण दोनां रै घरां में पालणा पण अेक साथै हीज बंधैला। वेणी री वहू गीता सुणती तो लाजां मरती। म्हारी लुगाई सीता नै कैवती—देखै नी अे सीतावाई! नागड़ा किसीक निसरमी वातां करै है, ठाला-भूलां नै लाज ई नीं आवै।

सीता मुळकनै पड़तर देवती—इण में निसरमाई री कांई वात है म्हारी झमकू! म्हारा देवरिया नै निपूतो राखण रो विचार है कांई थारो?

दोनूं सरीखी-सायीनी साथणियां तन-मन सूं हंसण लागती अर पवन में फूलां री सोरम समाय जावती।

वेणी म्हारै सूं दो वरस नैनो हो, इण वास्तै हूं गीता रै जेठ लागतो अर वा म्हारै सूं लाज करती। यूंई वा अणूती संकाळू सभाव री ही। इण वास्तै उण रै हर वखत छाती ताणी घूंघटो खांच्योड़ो रैवतो। गांव री गळियां में जद-कदैई वा मनै साम्ही-अपूठी धक जावती तो दस पांवड़ा छेटी सूं हीज पूठ देयनै ऊभी हु जावती। वास-गुवाड़ में तो कांई, पण पूरा गांव में ही, कोई मोटो मिनख इसो नीं हो कै जिण उण रो मूंडो देख्यो हुवै।

छतां पण मनै सीता रै मारफत गीता रै बाबत राई-रत्ती जाणकारी ही। गीता रूप अर गुणां री खाण ही। डीघी पतळी काया, हेम रै उनमान ऊजळो रंग अर सांचा में ढळियोड़ो पिंड। मनमोवणी मकराणा री पूतळी रै उनमान ही गीता, विधाता जिणनै नैहचा सूं बैठ नै घड़ी ही। सीता उण रै रूप रा वखाण करती कैवती—मोटी-मोटी पाणीदार चीरमी आंख्यां, सूंतमी नाक, गुलाब री पांखड़ियां रै उनमान पतळा गुलाबी होठ अर नैना टाबर रै जिसो कंवळास करतो उणियारो—भाग हुवै जिण घर में इसी सरूप वहुआरी आवै।

—लुगाई री जात तो आपसरी में रूप देखै जठै ईसको राखै अर तूं गीता रै रूप रा वखाण इण भांत करै जाणै कोई रंगीलो मोटयार कोई गणगोर माथै रीझग्यो हुवै—हूं उण नै कैयवो करतो।

—इण में ईसको किण वात रो? गैली हुवै जिकी इसी भावना मन में राखै। साची वात तो कैवणी-ज चाहीजै। दूजी वात, गीता फगत रूप-रोहीड़ो हीज कोनी, वा तो गुणां री खाण है। कितरो मुधरो सुभाव, कितरी हाथ री खामचाई अर कितरो मिनखरो कुरब-कायदो! हूं तो उण री चाल-ढाळ, उठक-बैठक, ओढणो-पैरणो, वोली-

वतळावणी, सफाई-सुथराई अर लाज-सरम देख-देखनै ही हैरान रै जाऊं। वा म्हारै सरीखी-सायीनी है, पण मनै तो मोकळी वातां उण सूं साम्ही सीखण नै मिलै। इण वास्तै मनै तो उण सूं ईसको होवण रो सवाळ हीज कोनी। पिंडां नै वेणीप्रसादजी सूं जरूर ईसको होवतो हुवैळा कै उणां नै तो इसी रूप-गुण री खाण जोड़ायत मिळी अर म्हारै ढामढायो ढोकळो पानै पड़्यो।

हूं सीता री वातां सुणनै हंसण लागतो। पण आ वात ही साची कै उण रै मूंडा सूं गीता रा अणूता वखाण सुण-सुण नै कदैई-कदैई मनै वेणी सूं थोड़ो ईसको हुवण लागतो। कारण कै जलम धरनै ही मैं वेणी नै खेलकूद, पढाई-लिखाई, कै कामकाज कठैई कोई वात में आगै कोनी जावण दियो। पण व्यांववाळा मामला में मनै यूं लखावतो कै उण मनै पटकी देय दी है।

यूं सीता में ई कोई वात री खामी कोनी ही पण वा गीता रा अणूता वखाण करती जद हूं मन में आ सोचनै संतोख धारण कर लेवतो कै मानखा रो जीवण कवड़ी-खेल रै उनमान है। इण में भाग हुवै जिसा भीड़ू मिळ जावै। उण भीड़वां नै लेयनै जिंदगी रो पाळो जीतण री कोसीस करणी चाहीजै। फोरा-पतळा भीड़वां खातर झींकणो फजूल है।

(३)

व्यांव हुयां पछै हूं अर वेणी दोनूं जणा अेक वरस घरै हीज रैया। वै दिन तो जाणै पांख लगायनै उडग्या। वरस वीत्यो जकी ठा ई कोनी पड़ी। दिन तो यार-दोस्तां सागै गप्प-गोप्ठी में वीत जावता धरती माथै अर रातां तारां सागै आंख रै फरूकै वीत जावती आकासां में। सियाळू पवन सुख री सोरम वरसावतो अर ऊनाळू वायरो आणंद री लैरां लावतो। वेणी तो अष्ट पोर जाणै नसै में मस्त हुयोड़ो रैवतो। उण री मा वास-गुवाड़ री लुगायां रै मूंढागै वहुआरी रा पडम कर-कर नै वाठी पड़ती। इसी सुलखणी वींदणी मिलण सूं उण रै मन में अणूतो मोद हो। वा वैठती जठैई उण रा वखाण करती।

छाकटी लुगायां डोकरी री इण निवळी नाड़नै ओळख ली ही। इण वास्तै वै जाण-जाणनै वात उछेरती—वेणी री वींदणी नै कैवो नी माजी! म्हारी कमळकी नै थोड़ो सीवणो-पिरोवणो सिखाय दै!

—जरूर कैवूंला वाई! पण वींदणीनै तो अवै वखत ही कोनी मिळै। मैं तो घर रो सगळो काम उण रै माथै हीज नाख दियो है।

—हां वाई! इसी सुलखणी वींदणी तो भाग हुवै जिण रै घर में हीज आवै!

—उण वंसीवाळा री किरपा है वाई! हूं तो नित रोज उठनै ठाकुरजी नै आ हीज अरदास करूं हूं कै हे द्वारका रा नाथ! गोपियां रा स्याम! वींदणी देवै तो जुगोजुग नै भवोभव इसी ज दीजै, नीं तो भलांई निपूती ज राखजै।

—क्यो नी बाई ! गुणां रै लारै पूजा हुवै ! सगलैई काम वाला है, चाम वाला कठैई कोनी ।

—वींदणी रै कामकाज रा तो कांई वखाण करूं, थे सगळी जण्पां जाणो हीज हो । रात रा सगळो काम निवेड़नै म्हारै पगां मुट्ठी देवण नै आवै जितरै दस बज जावै । इण रै उपरांत ई सुभाव कितरो ठीमर ? मिसरी रै उनमान मीठो । वरजूड़ी घणी ही म्हारी पेट री बेटी है, पण वींदणी री पगरखी री होड ई नीं कर सकै ।

—दूधां न्हावो अर पूतां फळो ओ बाई ! अवै तो राम-किरपा सूं थां रै आंगणै थाळी वेगी वाजो अर म्हां नै झटपट मीठो मूंढो करावो—आ'हीज सांवरियै नै अरदास है—अेक जणी दूजी कानी देखती मूंढो मसकोर नै कैवती ।

अर वेणी री मा नै अै बोल हिया रै माथै डाम ज्यूं लागता । बा आछी तरियां जाणै ही कै डूमणी रै रोवण में ई राग है । वेणी रा व्यांव नै आठ वरस वीत्यां पछै ई वींदणी रै पेट कोनी मंड्यो । इण वात रो उण नै पूरो हेरापो हो । पण वास-गवाड़ री लुगायां जद इण वात नै मोसा रै रूप में कैवती तो उण नै आंझी घणी लागती ।

—पण खैर ! झख मारण दो इणां नै । म्हारै मोर मुगटधारी वंसीवाळै अरदास सुणी तो म्हारै आंगणियै ई तीस वरसां सूं पाछी थाळी जरूर वाजेला, जरूर वाजेला !

गीता रै नेम-सो लियोड़ो हो कै रात रा सूवतां पैली सासू रा पग दाबणा अर उठतां पाण पैली पगै लागणो । दोनूं वखत डोकरी वींदणी रै माथै हाथ फेर नै अंतस सूं आसीस देवती—दूधां न्हावो ! पूतां फळो ! पीळो ओढो ! मीठो जीमो ! चूड़ी-चूनड़ी अमर रैवो अर करोड़ दीवाळी राज करो !

डोकरी गीता रै महीनै रो पूरो हिसाव राखती । रात रा सूवती वखत फुरसत सूं आंगळयां माथै दिन गिणवो करती । हिसाव सूं महीनै में दो-च्यार दिन ई ऊपर निकळ जावता तो मन में अणूती राजी हुती । उण दिन डोकरी रा पग धरती माथै कोनी मंडता । संतां-वामणां नै आटै री चपटी वत्ती मिलती अर ठाकुरजी नै भोग ई सांतरो लागतो । वीनणी नै पूछती—खटाई खावण री मन में हुवै तो अमचूर रो साग वणाय दूं वेटी !

पण दूजोड़ै दिन हीज क्रांति हु जावती अर डोकरी री सगळी आशावां माथै पाणी फिर जावतो । वा थाकनै पाछा आंगळयां माथै दिन गिणण लागती—अेकम, दूज, तीज, चौथ ! सियाळो वीत्यां ऊनाळो आवतो अर ऊराळो वीत्यां मोर मीठा-मीठा वोलण लागता । पण गार-लीप्यो डोकरी रो आंगणो नैनकिया पगलियां खातर उडीकतो हीज रैवतो ।

वेणी रो कळकत्ते आवणो-जावणो सरू हो अर हूं ई नौकरी रै मामलै में घर सूं आवो रैवतो। होळी-दीयाळी अर छुट्टी-छपाटी में घरां आवतो जद किसनजी लोहियै रै घर री सै हकीगत म्हारै कानां में पड़ जावती।

दिन बीतता गया अर डोकरी रै हाथ सूं दान-पुन्न ई वधतो गयो। गायां नै घास, कुत्तां नै अन्न अर पंखेरुवां नै दाणो नित-रो-ज नखीजतो। साधु-संत अर जती-सती कोई आंगणा सूं खाली हाथ कोनी जावतो। व्रत-उपवास री तो पछै झड़ हीज लागोड़ी ही।

पण दिन लागां डोकरी रो सुभाव चिड़ीलो हुग्यो। उण नै बींदणी माथै रीस आवण लागी अर रीस रै सागै उण नै बींदणी में मोकळी खोड़ां ई निजर आवण लागी। डोकरी अेकली-ज बैठी-बैठी विना कारण बड़बड़ाट करवो करती—

.... खोदा री गळाई दिन-दिन माचती जावै। चीरी हुवै तो च्यार हुवै अर पटकी हुवै तो पांच, पण कीं कार री नीं। सोना री छुरी कोई पेट में कोनी मारीजै। पगरखी पग में सुख वास्तै पैरीजै, दुख वास्तै कोनी पैरीजै। बहुआरी घर में वंस राखण खातर लायीजै, वंस डबोवण खातर कोनी लायीजै .... पेट नीं मंडै तो ओ रूप अर ओ सरूप किण काम रो ? सगळा ही अकारथ ....!

गीता मन-री-मन में बळती। पेट नी मंडै तो उण रो कांई दोष ? व्रत-उपवास अर नेम-धरम डोकरी बतायो ज्यूं कियो। कोई पंसेरयां-बंद तो वा दवायां गिटगी अर छावळियो भरचा राखड़ी-मादळिया लटकाय लिया, छतां पण आस नीं बंधी तो वा बापड़ी कांई करै ?

(४)

थोड़ाक दिन बीत्यां डोकरी नै किणी खबर दी कै गांव रै जूनियै आसण माथै अेक बावोजी आयोड़ा है। पूग्योड़ा महातमा अर वचनसिद्ध मूरत। साधु सुभाव रो आकरो घणो है, इण वास्तै मानखो उण कनै जावतो संकै। पण महातमा नै अै सांग जाणनै करणा पड़ै, नीं तो दुनिया लारै पड़ जावै।

भगत अर साधक बावै रा वखांण करता—बावोजी ठौड़-ठौड़ मोकळा ही परचा दिया अर चमतकार बताया है जिको लोगां री जवान माथै है। मिनख उणां नै भगवान करनै पूजै है, कारण कै चमतकार नै नमस्कार है।

—अेकर रमणियै गांव रा कई भगत बावोजी कनै आया अर दिन भर उणां री सेवा-चाकरी में रैया। दिन आथम्यां बोल्या—बापजी ! आप हुकम दिरावो तो म्हे रातवासो आप रै आसण माथै हीज लेवां अर रात रा भजन-भाव करां।

बाबो हंसनै बोल्या—यह साधुवां का अखाड़ा है भगत ! इधर रात में वो ही ठहर सकता है, जिसका सेर भर का कळेजा हो। तुम्हारी हिम्मत होवै तो ठहर जाणा।

भगत समझ्या बाबो नसै में यूंई विलळी वातां करै। बै उठै हीज ठैरग्या अर रात रा भजन-भाव करता रैया। यूं करनै आधीक रात लटी नै बाबो बोल्या—बच्चा ! अब हम तो वन में जाते हैं, वापस फजर में आवेंगे, तब तक तुम इधर भजन-भाव करते रहणा।

भगत तंदूरो-मजीरा कूटता रैया। थोड़ीक जेज में मिंदर रै लारली कांनी सूं होकार सुणीजी। तंदूरो-मजीरा नाखनै भगत उठीनै देखण नै गया। उणां नै थड़ा माथै अेक सिंघ ऊभो निजर आयो—बेटी रै बाप रो असल केसरी नवहत्थो। गाबड़ माथै टणका अयाळ आया थका, विकराळ मूंढो अर आंख्यां जाणै धव रा खीरा। भगतां नै देख'र सिंघ दड़ूक्यो। भगत तो उठा सूं तेतीसा मनाया सो ठेट घरां पूग्या जितरै पाछळ ई नीं फेरी। पण जे नीं न्हाठा हुता तो निहाल हु जावता।

—मोकळसरवाळा सेठ बाळकिसनजी री वहुआरी रै दस वरसां सूं पेट कोनी मंडतो हो। बावै रो नांव सुण्यो तो सासू-वहू दोनूं जणियां थाळ सजायनै उभराणै पगां सेवा में पूगी। बाबो देखतां ही किड़क्यो—क्यूं आयी है इधर ?

—आप रा दरसण वास्तै।

—भाग जावो इधर से। अर बाबो पाछा ध्यानमग्न हुग्या।

पण बै उठा सूं सिरकी कोनी। सासू बींदणी नै आंख सूं इशारो कियो अर उण बावै रै पगां में दंडोत की। बावै पाछी आंख्यां खोली अर रीसां बळतां कैयो—मैं ने बोला, तुम भाग जावो इधर से ! क्या लेने आयी हो इधर ?

सासू हाथ जोड़नै गळगळा कंठ सूं बोली—बापजी ! म्हारी बींदणी रै दस वरस सूं पेट कोनी मंड्यो, इण वास्तै आप री आसीस लेवण नै आयी हूं।

बावै तो कोई अेक गिणी न कोई दो। रीस में तंवोळ हुयोड़ै धूणी मांय सूं दो हाथ लांबो चींपटो लियो अर जोर सूं गरज्यो—रंडियों ! भाग जावो इधर से .... बेटा लेने आयी हो .... फक्कड़ कूं पास बेटा लेने आयी हो .... मेरी झोळी में बेटे पड़े हैं सो तेरे कूं दे दूं .... चलो, भागो .... ।

अर बावै अेक वजनी गाळ ठरकाय दी।

पण सासू-वहू दोनूं जण्यां बावै रा दोनूं पग काठा पकड़ लिया। बाबो थोड़ी जेज तो फां-फूं करता रैया पण छेवट पाछा आसण माथै विराजग्या अर ध्यान-मग्न हुग्या। सासू-वहू धूणी री भस्मी लेयनै राजी-राजी घरां रवानै हुगी।

इण रै पछै वीनणी रोज विना नागै बावोजी नै दंडोत करण नै जावती। छेवट बावै नै हार खावणी पड़ी अर उणां री आसीस सूं उण रै नवमै महीनै वेटो हुयो।

इसा अेक-दो नीं पण अलेखूं चमतकार है बाबाजी रा—भगत वतावता—खास वात भावना री है। मानो तो देव, नीं तो भाठो तो है हीज। अर यूं संस-मुखी दुनिया है। किण रै ई मूंढा आडो हाथ दिरीजै कोनी। परपूठी तो राजा रावण नै ई गाळयां काढ दै। पण इसा सामरथ महातमा री निंदा करनै आपां पाप रा भागी क्यों वणां? आपां नै तो चमतकार देखनै नमस्कार करणो है—भगत पूरो रस लेयनै बावैजी रै चमतकारां रा वखाण करता।

डोकरी अै सगळी वातां सुणी तो मन में अणूती राजी हुयी। उण नै आ पक्की जचगी कै बावो सोळै आना वचनसिद्ध महातमा है। इसा सामरथ पुरस री मेर हु जावै तो म्हारै मन री आस पूरीज जावै।

उण गीता नै कैयो—वींदणी! सुणी है कै गांव रै वारै जूनियै आसण माथै अेक वचनसिद्ध महातमा आयोड़ा है। मिनखां रै वातगरां सूं इसी लखावै कै वै कोई पूग्योड़ा पुरस है। उणां री किरपा सूं हीज मोकळसरवाळा वाळकिसनजी रै घरां तीस वरसां सूं पाछी थाळी वाजी। आपां ई महातमाजी रै दरसणां नै क्यों नी चालां?

गीता निसासा नाखती बोली—माजी! ज्यों आप री मरजी हुवै ज्यों करावो। मनै तो इण भगड़ां माथै रत्ती भर ई विसवास कोनी। इणां में घणकरा तो ठग अर चोर हुवै।

—आघी वळ अे हिया-फूटोड़ी! साधु-संतां री निंदा करतां तनै सरम कोनी आवै! आठ-दस पोथी पढाई कांई कर ली जाणै माधजी पिंडत वणगी। इण लखणां सूं तो आप निपूता हीज मरोला अर म्हारो वंस ई डुबोवोळा। हे वंसीवाला! किसोक घोर कळजुग आयग्यो है रे! अेकर पोतै रो मूंढो देख लेवती तो मरचां ई मुकोतर जावती रे सांवरा! ········ अर डोकरी रोवण लागगी।

रोवणो डोकरी रो छेड़लो हथियार हो अर इण आगै गीता नै हारणो पड़तो।

तीजोड़ै दिन सासू-वहू दोनूं जण्यां थाळ सजायनै बावै री हाजरी में पूगी। भगतां वतायो जिको सागीई नाटक हुयो पण दोनूं जण्यां हाथ जोड़नै बैठगी।

मोकळा दिनां तांई सासू-वहू दोनूं जण्यां, अर पांच-सात दिन गीता अेकली, बावै रै आसण माथै जावती रैयी। उण वात नै हफतो वीतग्यो है अर आज गीता री लास गांव रै गूंदरै धरती माथै सफा उघाड़ी पड़ी है।

(५)

रात रा मैं सीता नै पूछ्यो—थारै सूं गीता री कोई वात छानीं कोनी। इसो कांई कारण वण्यो कै जिण सूं उण नै कूवा में कूदनै मौत खामणी पड़ी।

म्हारी वात सुणनै सीता री आंख्यां में आंसू आयग्या। वा चूनड़ी रै पल्लै सूं आंसू पूंछती गळगळै कंठ सूं बोली—गीता री मौत रा कारण उण रा घरवाळा, खासकर उण री सासू, अर ओ भगड़ो है। डोकरी रै हठ रै कारण उण नै विना मन आसण माथै जावणो पड़्यो। वा नित रोज कैवती—सीताबाई ! इण माजी रो अवै हूं कांई करूं ? अै क्यों म्हारै लारै उतरया है ? अै कैवै तो हूं कोई लेडी-डाक्टर कनै चालण नै अर इलाज करावण नै त्यार हूं, पण इण भोपां-भरड़ां अर मोडां-भगड़ां यूं हूं अवै काठी धापगी हूं। कळकत्तै मोकळा ही कागद दिया पण अेक रो ई उथळो कोनी। डोकरी नै कीं कमती-ज्यादा कैवूं तो वा मनै मारण नै दोड़ै अर छाती-माथो कूटण लागै। अबै तो भगवान मौत देवै तो इण नरगवाड़ै सूं पिंड छूटै।

इण रै पछै अेक दिन फेरूं वा म्हारै कनै आयी अर रोवण लागी। मैं उण नै थावस दियो तो छिबरां-छिबरां रोवण लागी, हूंचकै भरीजगी। इसो लाग्यो जाणै उण दिन उण रै धीरप रो छेह आयग्यो हुवै। मैं उण नै नीठ बोली राखी अर रोवण रो कारण पूछ्यो तो जाण पड़ी कै छोरी रै जीवण में अेक अजोगी वात वणी ही। उण मनै रोवती-रोवती वतायो कै काले सिंझ्या रा वा अेकली बावै रै आसण माथै गयी तो वाबो अेकलो धूणी माथै वैठो हो। वा आघै सूं हीज थाळ धर, हाथ जोड़नै, रवानै होवण लागी। वा पाछी वळी-ज ही कै बावै उण नै लारै सूं पकड़ ली अर मूंढो नैड़ो लायनै बोल्यो—बोल, तेरै कूं क्या चाहिअे ? बेटा चाहिअे कै वेटी ? उण पूरो जोर लगाय नै छूटण री कोसीस कीवी तो भगड़ै तैर काठी पकड़ ली। .... रंडी तोफान करती है। वेटा भी मंगती है और नखरा भी दिखाती है .... चल, अंदर की तरफ चल ....। जटाजूट राख्योड़ो, पसीनै री सूगली वास, मूंढै सूं निकळता गिंदला भभका .... वा अचेत-सी हुवण लागी जितरै तो मढी रै बारै कोई मिनख रा पग वाज्या अर वा सहज में ही छूटगी।

हाण-फाण हुयोड़ी घरां आयी अर डोकरी नै सगळी वात वतायी तो डोकरी हंसण लागी। भगतां रै वतायां माफक आ वात तो अेक दिन हुणी-ज ही। सती री परीक्षा लियां विना भगवान पोतैई अरस-परस कोनी हुया तो आ तो मानखा-जूण री वात है।

डोकरी उण नै समझावतां कैयो—इण में डर जिसी कोई वात कोनी। वावोजी वचन-सिद्ध है, बै तो सत्यां रै सत री परीक्षा लेवै। म्हारै इसा कई किस्सा सुण्योड़ा है। तूं थोड़ो गाढ राखजै। सै ठीक हु जावैला।

गीता रोवती-कळपती कैयो कै उण नै जे टुकड़ा कर नाखो तोई वा अवै उण भगड़ा रै आसण कानी मूंडो नीं करैला।

इण वात माथै डोकरी निरा ही फितूर किया—म्हारा भाग हीज फूटोड़ा है, जद हीज तो थारै जिसी वंस-डवोवणी निपूती म्हारै कुळ में आयी ; हूं जहर खाय नै मर जावूंला।

ओ महाभारत हुयां पछै गीता म्हारै कनै आयी ही । मैं उण नै आ हीज सला दी कै अवै उण कानी भूलनै ई मत जायी अर कळकत्तै कागद लिख दीजै ।

—इण रै पछै दूजोड़ै दिन उणां रै घर में कांई हुयो मनै जाण कोनी, कारण कै गीता पाछी मनै मिली-ज कोनी । पण आ जरूर सुणन में आयी कै उणीज दिन कळकत्तै सूं कागद आयो हो अर उण में वेणीप्रसादजी रो दूजो व्यांव करण खातर कांई समाचार लिख्योड़ा हा ।

उणीज दिन लोग कैवै कै टगूमगू दिन रैयां वा ओढ-पैरनै सासू रै पगां लागी, डोकरी उण नै आसीस दी; पछै वा थाळ लेनै बावै रै आसण कानी रवानै हुयी; सो सीधी जावतां ही गांवसाऊ कूवै में कूदगी ।

गीता री आंख्यां सूं झर-झर करता आंसू झरण लाग्या ।

म्हारी निजरां आगै गीता री लास फिरण लागी अर कानां में डोकरी री आसीस गूंजण लागी—दूधां न्हावो, पूतां फळो; करोड़ दीवाळी राज करो !

अेकल मूंछाळ सिंघ री वात

—सुरेन्द्र 'अंचल'—

(१)

जलमै सो अवस मरै। दुनिया में कोई अमर कोनी रैवै। पण मरणै-मरणै में घणो आंतरो। अेक मिनख रै मरण रो सुणतां पाण आखै मुलक री आंखियां सूं टळक-टळक आंसूड़ा वैवण लागै; अर अेक मिनख रै मरण रो सुण'र पास-पड़ोस रा लोग भी गनारत नहीं करै। जलम-भोम रै खातर मरणियां री मौत शानदार मौत हुवै। जलम-भोम किणी अेक जाति, अेक धरम, अेक मजहब री वपौती नहीं। वा ना हिंदुवां री है, ना मुसळमानां री और ना ईसाइयां री। अै धरम और मजहब री आंधी भावनावां तो मिनखपणै रै सारू हळाहळ जहर हुवै। इण हळाहळ काळकूट रै असर सूं हीज भारत रा दो टूक हुया और पाकिस्तान वणियो। सांप्रदायिकता रै नसै में लटाझूम पाकिस्तान सन् १९६५ में भारत माथै आक्रमण कर दियो। सैकड़ां मातृभूमि रा सिंधां माता रै खातर आप रो बळिदान दियो। इण वळिदानी वीरां में हवलदार हमीद रो नांव जगमगाट करतो थको इतिहास रै पानां में लिखीजियो।

(२)

खेमकरण री सींव।

दिनांक १० सितंबर, सन् १९६५.

धड़ाम .... धड़ .... धड़ .... धड़ाम !

काळ-पुरस आप उण दिन जुद्ध देखण नै खेमकरण री सींव माथै पांख पसारियोड़ो।

इण सड़क माथै चीमा-गांव सूं थोड़ोक आंतरै दुनिया रो नूंवो अजूबो, पैटन टैंकां रो जमाव ! पैटन टैंक—जिणां री मजबूती पर अमरीका नै गुमान ! जिणां माथै वैठ'र पाकिस्तान रा सदर अयूब दिल्ली रै लाल किलै ऊपर पाकिस्तान रो झंडो रोपण रो सपनो देखै !

धड़ाम ····धड़ ···· धड़ ···· धड़ाम !

दैत-राज गोळा उगळता लपकतोड़ा वधण लागा। १० सितंबर, सन् १९६५, रो दिन धूंवाधोर ऊगियो। कठै तो जम सरीसा लोहै रा पैटन टैंक और कठै भारत रै सिपाहियां री छोटी रिकायल-लेस तोपां और हाथ-गोळा! पण **हिम्मत किम्मत होय विण हिम्मत किस्मत नहीं!**

हमीद दाकल करी—जोधां! जलम-भोम रो करज चुकावण रो ओ अनमोल अवसर है—मोतियां मूंघो टैम! जीवण रो लावो लो और जलम-भोम री सींव री रुखाळी रै जिग में होम दो ओ माटी रो तन!

हिन्दुस्थान जिंदाबाद!

सूरज आप रै रथ रै सातूं घोड़ां नै रोक'र इण अछूतै मरण-तिंवार नै निरखण खातर थम ग्यो।

(३)

अेक जीप, उण पर छोटी तोप अर सागै वैठियोड़ो हमीद! च्यारूं मेर लोहै रा दैत-राज चिघाड़तोड़ा! वीच में घिर ग्यो हमीद—महाभारत रै चक्रव्यूह में अभिमन्यु ज्यूं! दांव पर दांव!

घड़ी भर लटाटूट जूझती जीप घेरै नै तोड़ती थकी दौड़ी। भारी-भरकम पैटन टैंक चकरीजग्या—ओ कांई कौतक!

हवलदार हमीद जिंदाबाद!

अवसियोड़ा दुसमण दूणै क्रोध सूं लपकिया! अरे रे रे ···· ! ओ जमराज रै पाडै जैड़ो पैटन धड़धड़ करतो हमीद कानी नटाटूट वधतो ही आवै है। धड़ाम! धड़ाम! लाय री लपटां ऊछळै!

हमीद री आंखियां में इंधारो! घड़ीक जाणै आभै में उड जाऊं, घड़ीक जाणै पताळ में वड जाऊं। धरती, अकास, पताळ सै टैंकां रै सरणाटै और घरणाटै रै धमीड़ां सूं धूज उठिया। पैटन ऊंची जागां उलांगतोड़ो वधियो। अचाणचकै वीजकी-सीं पळकी। हमीद उण दैत री उघाड़ी छाती री कमजोर जागां देख'र हथगोळै रो अचूक वार करियो।

धड़ड़····धड़ड़····धड़····धड़····धड़ाम !

टैंक री चिंदी-चिंदी अकास में उडती दीसी।

हमीद अलम-भोम नै नमस्कार कर'र दड़कियो—माटी रो पूरो-पूरो मोल चुफाऊंला म्हारी जलम-भोम ! मनै असीस दै । आज पैटन टैंकां नै टाबरां रै रमतियां ज्यूं विखेर नाखूंला ।

आंरयां री आंखियां आगै अमावस री रात ! .... ओ आदम-जात है कै राकस !

इतिहास रा पाना फड़फड़ाया । अणहोणी हुयी । अमरीका रै अजेय पैटन री चिंदी-चिंदी विखरगी । सूरज रो मूंढो अचंभै सूं लाल पड़ग्यो ।

(४)

दूजो पैटन अंगारा वरसावतो, गरजना करतो, आगै धखियो । धड़धड़ाट करतै आंधी ज्यूं आगै वधतै उण दैत री छाती माथै हमीद रै हथगोळै रो वार और—

धड़ .... धड़ .... धड़ड़ .... धड़ .... धड़ाम !

इतिहास सांस रोक'र देखियो कै दूजोड़ै पैटन टैंक री चिंदियां फटाकां री लड़ ज्यूं अकास में उड'र विखरगी ।

हिन्दुस्थान जिंदावाद !

(५)

अेकलो अभिमन्यु चक्रव्यूह रै सात-सात घेरां में फंस ग्यो । टैंकां री पूरी रेजीमेंट । तीजोड़ो टैंक दकाळतो आगै वधियो । तोप रो गोळो सरणाट करतो हमीद सूं टकरीज्यो । सूरज री आंखियां चकचूंधीजगी । दुपारी रो दिन गुधळकिया वेळा ज्यूं धुंधळीजग्यो !

अर अेक जोत, ३२ वर्ष री वीर आत्मा, सूरज री जोत में समायगी !

वरखा-वर्णन

(प्राचीन राजस्थानी गद्य रा दो उदाहरण)

(१)

वरखा रितु लागी, विरहणी जागी। आभा झरहरै, वीजां आवास करै। नदी ठेवां खावै, समुद्रे न समावै। पहाड़ां पाखर पड़ी, घटा ऊमड़ी। मोर सोर मंडै, इंद्र धार न खंडै। आभो गाजै, सारंग वाजै। दुवादस मेघ नै दूवो हुवो, सू दुखियारी री आंख हुवो। झड़ लागो, प्रथी रो दळद्र भागो। दादुरा डहडहै, सावण आवण री सिध कहै।

इसो समइयो वण-नै रह्यो छै। वरखा मंड-नै रही छै, वीजळी झिलोमिल कर-नै रही छै। वादळां झड़ लायो छै। सेहरां-सेहरां वीज चमक-नै रही छै, जाणै कुळटा नायका घर सूं नीसर अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै।

मोर कुहकै छै, डेडरा डहकै छै। भाखरां रा नाळा वोल-नै रह्या छै, पाणी नाडां भर-नै रह्या छै। चोटड़ियाळ डहक-नै रही छै। वनसपती सूं वेतां लिपट-नै रही छै। प्रभात रो पोर छै। गाज-आवाज हुय-नै रही छै, जाणै घटा घणै हरख सूं जमी सूं मिलण आयी छै।

—खीची गंगेव नींवावत रो दोपहरो
(अठारवीं शताब्दी)

(२)

इसियइ अवसरि आवियउ आसाढ, इतर गुणइ संवाढ। कटइयइ लोह, घामं तणउ निरोह। छासि खाटी, पाणी वीयाइ माटी। विस्तरिउ वर्षाकाळ, जे पंथी तणउ काळ नाठउ दुकाल।

जीणइ वर्षा-काळि मधुर ध्वनि मेघ गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ, जाणइ सुभिक्ष-नृपति आवतां जय-ढक्का वाजइ। चिहु दिसि वीज झळहळइ, पंथी घर भणी पुळइ। विपरीत आकास, चंद्र सूर्य पारियास। राति अंधारी, लवइ तिमिरी। उत्तर-नउ ऊनयण, छायउ *गयण*। दिसि घोर, नाचइ मोर। सुवर, वरसइ धाराधर। पाणी तणा प्रवाह खळहळइ, वाड़ि ऊपरि वेलां वळइ। चीखलि चालता सकट स्खळइ, लोक तणा मन धर्म ऊपरि वळइ।

नदी महापूरि आवइ, पृथ्वी-पीठ प्लावइ। नवा किसलय गहगहइ, वल्ली-वितान लहलहइ। कुडुंवी-लोक माचइ, महात्मा वइठा पुस्तक वाचइ। पर्वत तउ नीझरण विछूटइ, झरिया सरोवर फूटइ।

—वागविलास (पृथ्वीचंद्रचरित)
(पंनरवीं शताब्दी)

तत्वां री कथा

—पुरुषोत्तमदास स्वामी—

तत्त्वं चिन्तय सततं भ्रातः !

संसार रा सगळा पदार्थ तत्त्वां सूं वणियोड़ा है। पदार्थ दो भांत रा हुवै—(१) जिका अेक ही तत्त्व सूं वणियोड़ा हुवै जियां सोनो, चांदी, तांबो, सीसो, रांगो, जसद, गंधक और पारो और (२) जिका अेक सूं वेसी तत्त्वां रै मेळ सूं वणै जियां पीतळ, लूण, पाणी और चीणी। पीतळ में तांबै और जसद रो मेळ हुवै; लूण सोडियम और क्लोरीन तत्त्वां रै मेळ सूं, पाणी हाइड्रोजन और आक्सीजन तत्त्वां रै मेळ सूं और चीणी कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन रै मेळ सूं वणै।

मेळ दो भांत रा हुवै। अेक नै मिश्रण कैवै और दूजै नै संयोग। मिश्रण में दो अथवा वेसी पदार्थों रो मेळ इण भांत सूं हुवै कै हरेक पदार्थ आप-आप री विशेषतावां कायम राखै; संयोग में पदार्थ इण भांत सूं मिलै कै उणां री विशेषतावां रो लोप हु जावै और वै मिलनै अेक नूंवो ही पदार्थ वणावै जिण में आप री निजी विशेषतावां हुवै। मिश्रण सूं वणियोड़ै पदार्थ नै मिश्रण और संयोग सूं वणियोड़ै पदार्थ नै यौगिक कैवै। हवा मिश्रण है और पाणी यौगिक। हवा में नाइट्रोजन, आक्सीजन वगैरह कई तत्त्व मिलियोड़ा रैवै और पाणी हाइड्रोजन और आक्सीजन तत्त्वां रो मेळ है। हाइड्रोजन तुरंत जगणआळी गैस है और आक्सीजन इसी गैस है जिकी वास्ती रै जगण में मदत करै पण दोनां रै मेळ सूं वणियोड़ो पाणी वास्ती नै वुझा देवण-वाळो द्रव है।

मिश्रण अथवा यौगिक पदार्थां रै सागै दूसरा मिश्रण अथवा यौगिक पदार्थां रो मेळ करनै आपां और नूंवा मिश्रण अथवा यौगिक पदार्थ वणा सकां हां। पाणी में लूण मिलायां सूं लूणियो पाणी वणै। इणी भांत कास्टिक सोडै और लूण रै तेजाव नै मिलायां सूं भी लूणियो पाणी वणै। कास्टिक सोडो और लूण रो तेजाव दोनूं भयंकर मारक जहर हुवै पर दोनां रै मेळ सूं वणियोवो लूणियो पाणी निर्दोष पदार्थ हुवै, जिण नै कोई आदमी चावै तो पी सकै है। अठै आ वात ध्यान में राखणी घणी जरूरी है

कै मिश्रण में मिलायीजणवाळा पदार्थां रो कोई निश्चित अनुपात नहीं हुवै पण संयोग में मिलायीजणवाळा पदार्थों रो निश्चित अनुपात हुवै और निश्चित अनुपात में मिलाणै सूं ही यौगिक पदार्थ वणै।

अणु और परमाणु

यौगिक पदार्थां रा आपां खंड करां तो उण रो जिको सब सूं छोटो खंड हुवै उण नै अणु कैवै। अणु रा और खंड करां तो वो जिकै तत्त्वां सूं वणियोड़ो है उणां रै परमाणुवां में विभक्त हु जावै। पाणी रै अणु रा खंड करणै सूं फेर वो पाणी नहीं रैवै पण हाइड्रोजन और आक्सीजन रा परमाणुवां में विभक्त हु जावै—उण रा तीन परमाणु हु जावै जिणां में दो हाइड्रोजन रा और अेक आक्सीजन रो हुवै।

तत्त्व रै सब सूं छोटै खंड नै परमाणु कैवै। तत्त्व रै परमाणु रो खंडन साधारण रासायनिक उपायां सूं नहीं हुवै। इण कारण पैलां आ मानता ही कै तत्त्व ही मूळ द्रव्य है जिण सूं संसार रा सगळा पदार्थ वणिया है। पण अवै रेडियो-धर्मिता रो आविष्कार हुयां पछै परमाणु अखंडनीय अथवा अविभाज्य नहीं रया है, परमाणुवां रा भी खंड करीज सकै है।

खंड करणै पर तत्त्वां रा परमाणु मूळ-कणां में विभक्त हु जावै जिणां में तीन प्रधान हैं—१. इलेक्ट्रोन, २. प्रोटोन और ३. न्यूट्रोन। अै मूळ-कण ही मूळ द्रव्य है जिणां सूं सगळा तत्त्व और संसार रा दूसरा सगळा पदार्थ वणियोड़ा है।

मूळ-कणां सूं तत्त्वां रा परमाणु वणै, तत्त्वां रा परमाणुवां सूं अणु वणै और अणुवां सूं सारा पदार्थ वणै। अणु अेक तत्त्व रै कई परमाणुवां सूं भी वण सकै और अनेक तत्त्वां रै कई परमाणुवां सूं भी।

प्रकृति में पायीजणवाळै तत्त्वां री संख्या ९२ है। अै ९२ तत्त्व न्यारा-न्यारा है और आप-आप री विशेषतावां राखै पण जिकै मूळ-कणां सूं वै वणियोड़ा है वै मूळ-कण सगळां में अेक ही जिसा है। तत्त्वां में भेद उणां रै परमाणुवां में मौजूद मूल-कणां री संख्या और संयोजन री रीत रै कारण हुवै।

अणु और परमाणु घणा छोटा हुवै—इत्ता छोटा कै उणां री कल्पना करणी भी संभव नहीं।

परमाणु में अेक नाभिक या केंद्र हुवै जिण में प्रोटोन और न्यूट्रोन हुवै और जियां सूरज रै च्यारां पासी न्यारी-न्यारी कक्षावां में ग्रह भ्रमण करै वियां ही नाभिक रै च्यारां पासी इलेक्ट्रोन न्यारी-न्यारी कक्षावां में भ्रमण करता रैवै। सूरज और

ग्रहां रै बीच में जियां अपार खाली आकाश हुवै बियां ही नाभिक और इलेक्ट्रोनां रै वीच में भी घणी खाली जागां हुवै।

तत्त्वां री संख्या

अबार तांई मालम हुयोड़ा तत्त्वां री संख्या १०३[1] है। इणां में कई तत्त्व प्राकृतिक है और कई कृत्रिम अर्थात् मिनख रा वणायोड़ा। प्राकृतिक तत्त्व प्रकृति में पायीजै, पण कृत्रिम तत्त्वां नै विज्ञान रा विद्वानां प्रयोगशाळा में वणाया है। प्राकृतिक तत्त्वां री संख्या ९२ है और कृत्रिम तत्त्वां री ११। कृत्रिम तत्त्व रेडियोधर्मी अस्थायी तत्त्व है। उणां री ऊमर घणी ओछी हुवै। कई-अेक प्राकृतिक तत्त्वां नै भी वैज्ञानिकां प्रयोगशाळा में वणाया है। इसो अेक तत्त्व टैक्नेटियम है।

प्राकृतिक तत्त्वां में कई तत्त्व तो घणा जाणीता है और लोग उणां नै घणै जमानै सूं जाणै है। सोनो, चांदी, लोहो, तांबो, सीसो, पारो, संखियो, सुरमो, रांगो, जसद, और गंधक इणी भांत रा तत्त्व है। वाकी घणकरा तत्त्वां री खोज लारलै दो-तीन सौ वरसां में हुयी है।

तत्त्वां रा प्रकार

सगळा १०३ तत्त्वां में ११ गैसीय, २ द्रव और ९० ठोस पदार्थ है। गैसीय ११ तत्त्व सगळा अधातु है; २ द्रव तत्त्वां में अेक अधातु और अेक धातु है। गैसीय और द्रव तत्त्व अै है—

(क) गैसीय—१. हाइड्रोजन, २. नाइट्रोजन, ३. आक्सीजन, ४. फ्लोरीन, ५. क्लोरीन, ६. हेलियम, ७. आर्गन, ८. नियन, ९. क्रिपटन, १०. जेनन, ११. रैडन।

(ख) द्रव— १. ब्रोमीन (अधातु), २. पारो (धातु)।

ठोस तत्त्वां में कई अधातु और घणा-सा धातु है। उणां में कई तत्त्व इसा भी है जिकां में धातु और अधातु दोनां रा गुण पायीजै, जियां संखियो, सुरमो आदि। इसा तत्त्वां नै अर्धधातु अथवा उपधातु कैवै।

तत्त्वां रो नामकरण

जका तत्त्व पुराणै जमानै सूं जाणीता हैं उणां रा नांव वै ही है जिका लोक-प्रचलित है, बाकी तत्त्वां रो आविष्कार यूरोप अथवा अमरीका रा विद्वानां करियो जिण कारण सूं उणां रा नांव यूनानी अथवा लैटिन भाषावां रा शब्दां सूं वणायोड़ा है।

---

1 लारला वरसां में दो और कृत्रिम तत्त्व वैज्ञानिकां वणाया है जिणां रा नांव (१०४) खुर्चेटोवियम और (१०५) हानियम है।

रसायनशास्त्र री आ परंपरा रैयी है कै जिको विद्वान तत्त्व रो आविष्कार करै वो उण रो नांव आप री मरजी रै मुताबिक राखै। तत्त्वां रा नांव न्यारा-न्यारा आधारां माथै राखीजिया है। कैई नांव देवतावां रै नांवां पर है तो कैई ग्रहां रै नांवां पर; कैई पौराणिक अथवा ऐतिहासिक पुरुषां रै नांवां पर है तो कैई वैज्ञानिकां रै नांवां पर; कैई देश, महादेश, प्रदेश, नगर, नदी आदि रै नांवां पर है तो कैई खनिज पदार्थां रै नांवां पर; और कैई रंगां रै आधार पर है तो कैई गुणां रै आधार पर। उदाहरण रै वास्तै—

(क) देवतावां रै नांवां पर—१. थोरियम (ट्यूटानी देवता थोर), २. वैनाडियम (ट्यूटानी देवी वैनाडिस), ३. सेलेनियम (यूनानी चंद्रदेवी सेलेने), ४. टैलूरियम (रोमन भू-देवी टैलस), ५. टिटानियम (यूनानी देवता टिटान)।

(ख) ग्रहां रै नांवां पर—१. यूरेनियम (यूरेनस ग्रह), २. नैपच्यूनियम (नैपच्यून ग्रह), ३. प्लूटोनियम (प्लूटो ग्रह), ४. पैलाडियन (क्षुद्र ग्रह पैलास)।

(ग) पौराणिक पुरुषां रै नांवां पर—१. प्रोमीथियम (प्रोमीथियस) २. टैंटालुम (टैंटालुस्)।

(घ) वैज्ञानिकां रै नांवां पर—१. क्यूरियम (मदाम क्यूरी), २. आइंस्टाइनियम (आइंस्टाइन), ३. फर्मियम (फर्मी), ४. मेंडेलेवियम (मेंडेलीव), ५. नोवेलियम (नोवेल), ६. लारेंसियम (लारेंस), ७. हानियम (हान)।

(ङ) खनिजां रै नांवां पर—१. वैरीलियम (वैरील), २. जिर्कोनियम (जिर्कोन)।

(च) देश, महादेश, प्रदेश, नगर, नदी रै नांवां पर—१. फ्रांसियम (फ्रांस), २. जर्मेनियम (जर्मनी), ३. पोलोनियम (पोलेंड), ४. स्कैंडियम (स्कैंडिनेविया), ५ यूरोपियम (यूरोप), ६. अमरीकियम (अमरीका), ७. रूथेनियम (रूथेनिया, रूस), ८. कैलिफोर्नियम (कैलिफोर्निया, अमरीका), ९. वर्कलियम (वर्कले, अमरीका), १०. हैफ्नियम (हैवन=कोपेनहेगेन), ११. रैनियम (राइन नदी)।

(छ) रंगां पर—१. आयोडीन (वैंगणी), २. रोडियम (गुलावी), ३. रूबीडियम (लाल)।

(ज) गुणां पर—१. हाइड्रोजन (पानी वनाने वाला), २. क्रिप्टन (छिपने वाला) ३. फासफरस (प्रकाशवाहक), ४. ऐस्टेटीन (अस्थायी)।

हेलियम तत्त्व रो नांव हेलिओस् अर्थात् सूरज भगवान रै नांव माथै राखीजियो कारण हेलियम री मौजूदगी रो पैलांपोत पतो सूरज में लाग्यो (मिलावो संस्कृत हेलि =सूरज)।

पृथ्वी माथै तत्त्वां री मात्रा

प्राकृतिक ९२ तत्त्वां मांय सूं कई तत्त्व तो पृथ्वी माथै मोकळी मात्रा में मिलै पण घणकरै तत्त्वां री मात्रा पृथ्वी माथै घणी कम है और कइयां री तो जाबक नांव-मात्र री है। संगळां सूं घणो मिलणवाळो तत्त्व आक्सीजन है। पृथ्वी माथै तत्त्वां री मात्रा रो प्रतिशत इण भांत है—

(क) पृथ्वी री पापड़ी में—

१. आक्सीजन	४७·०	८. मैगनेसियम	२·२
२. सिलीकन	२८·०	९. टिटानियम	०·५
३. अलुमीनियम	८·०	१०. हाइड्रोजन	०·२
४. लोहो	४·५	११. कार्बन	०·२
५. कैलसियम	३·५	१२. फासफरस	०·१
६. सोडियम	२·५	१३. गंधक	०·१
७. पोटासियम	२·५	१४. बाकी	०·७

(ख) महासागरां में—

१. आक्सीजन	८५·८०	४. सोडियम	१·१०
२. हाइड्रोजन	१०·७०	५. मैगनेसियम	०·१४
३. क्लोरीन	२·१०	६. अन्य	०·१६

(ग) वायुमंडल में—

१. आक्सीजन	२०·९५	६. नियन	०·०००५
२. नाइट्रोजन	७८·०८	७. क्रिपटन	०·०००१
३. आर्गन	०·९३	८. जेनन	०·००००१
४. कार्बन डाइआक्साइड	०·०३	९. अन्य	०·००७५९
५. हेलियम	०·००१८		

पृथ्वी री पापड़ी में पायीजणवाळा बाकी तत्त्वां में सोनो, चांदी, प्लाटीनम, तांबो, रांगो, सीसो, जस्तो, निकल, क्रोमियम, सोडियम, पोटासियम, कैलसियम, थोरियम और यूरेनियम घणै महत्त्व रा तत्त्व है। इणां रै अलावा कार्बन, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन प्रोटोप्लाज्म अर्थात् जीवण-तत्त्व रा घणा जरूरी अंश है। मिनख रै शरीर में तत्त्वां री मौजूदगी इण भांत है—

१. आक्सीजन	६४.०	७. सोडियम	०.१
२. कार्बन	२०.०	८. पोटासियम	०.१
३. हाइड्रोजन	१०.०	९. मैंगनेसियम	०.१
४. नाइट्रोजन	२.०	१०. गंधक	०.१
५. कैलसियम	२.०	११. अन्य	०.६
६. फासफरस	२.०		

तत्वां री परमाणु-संख्या

तत्त्व री आप री क्रमिक संख्या हुवै । आ संख्या तत्त्व रै परमाणु में मौजूद प्रोटोन और इलेक्ट्रोन कणां री संख्या रै मुताबिक हुवै । इण नै परमाणु-संख्या कैवै । हाइड्रोजन तत्त्व रै परमाणु में अेक प्रोटोन और अेक इलेक्ट्रोन हुवै । इण वास्तै हाइड्रोजन री परमाणु-संख्या अेक (१) हुवै । आक्सीजन रै परमाणु में आठ प्रोटोन और आठ ही इलेक्ट्रोन हुवै, उण री परमाणु-संख्या आठ (८) हुवै । यूरेनियम रै परमाणु में ९२ प्रोटोन और ९२ इलेक्ट्रोन हुवै । उण री परमाणु-संख्या ९२ है । सगळा तत्वां री परमाणु-संख्यावां आगै परिशिष्ट १ में दी है ।

तत्वां रो परमाणु-भार

तत्त्व रै परमाणु में भार भी हुवै । इलेक्ट्रोन में नांव-मात्र रो भार हुवै । परमाणु रो भार वास्तव में परमाणु रै नाभिक में मौजूद प्रोटोन और न्यूट्रोन कणां री संख्या माथै निर्भर करै । हाइड्रोजन रै परमाणु में साधारणतया १ प्रोटोन हुवै । उण रो परमाणु-भार १ हुवै । आक्सीजन रै परमाणु में साधारणतया ८ प्रोटोन और ८ न्यूट्रोन हुवै । उण रो परमाणु-भार १६ हुवै । यूरेनियम में ९२ प्रोटोन और १४६ न्यूट्रोन हुवै । उण रो परमाणु-भार २३८ हुवै ।

पण साधारणतया तत्त्व रा सगळा परमाणु अेक जिसा नहीं हुवै । अेक तत्त्व रा सगळा परमाणुवां में प्रोटोनां री संख्या तो निश्चित हुवै पण न्यूट्रोन कई-अेक परमाणुवां में कमी-बेसी भी हुवै जिण सूं अेक ही तत्त्व रा न्यारा-न्यारा परमाणुवां में भार रो थोड़ो फर्क हुवै —कई परमाणु बेसी भारी हुवै तो कई कम भारी हुवै । अेक तत्त्व रा अ-समान (न्यारा-न्यारा) भारवाळा परमाणुवां नै समस्थानिक कैवै । समस्थानिकां री परमाणु-संख्या तो समान हुवै पण परमाणु-भार न्यारो-न्यारो हुवै । कैई तत्त्व रो परमाणु-भार बतावणो हुवै तो उण में मौजूद परमाणुवां रो औसत भार बतायीजै । औसत भार ही तत्त्व रो परमाणु-भार मानीजै ।

हाइड्रोजन तत्त्व रा तीन समस्थानिक हुवै—पैलड़ै रै नाभिक में खाली अेक प्रोटोन हुवै और उण रो अणुभार १ हुवै ; दूजै रै नाभिक में अेक प्रोटोन और अेक

न्यूट्रोन हुवै, उण रो अणुभार २ हुवै; और तीजै रै नाभिक में अेक प्रोटोन और दो न्यूट्रोन हुवै, उण रो परमाणु-भार ३ हुवै। प्राकृतिक हाइड्रोजन में कोई ६ हजार परमाणुवां में अेक दूजो परमाणु हुवै और कोई १ अरब परमाणुवां में १ तीजो परमाणु हुवै।

आक्सीजन रा तीन समस्थानिक हुवै। तीनां रै नाभिक में प्रोटोन ८ हुवै पण न्यूट्रोन पहलै में ८, दूसरै में ९ और तीसरै में १० हुवै। तीनां रा अणुभार क्रम सूं १६, १७ और १८ हुवै। प्राकृतिक आक्सीजन में पैलो समस्थानिक ९९·७६ प्रतिशत, दूजो ०·०४ प्रतिशत और तीजो ०·२० प्रतिशत हुवै। यूरेनियम रा कई समस्थानिक हुवै पण उणां में दो मुख्य है। सगळां रै नाभिक में प्रोटोन ९२ हुवै पण न्यूट्रोन अेक में १४६ और दूजै में १४३ हुवै। उणां रा अणुभार क्रम सूं २३८ और २३५ हुवै। प्राकृतिक यूरेनियम तत्त्व में पहलो ९९·२८ प्रतिशत और दूसरो ०·७१ प्रतिशत हुवै। बाकी समस्थानिक ०·१ प्रतिशत हुवै। तत्त्वां रा स्थूल परमाणु-भार आगै परिशिष्ट १ में दिया है।

तत्त्वां री अदला-बदली

पुराणै लोगां री मानता ही कै लोहै, सीसै जिसी धातुवां रो सोनो बणायीज सकै। यूरोप में तो लोगां सैकड़ां बरसां इण री कोसीस करी। रसायन-शास्त्र रो विकास हुयो जद विद्वानां इण बात नै असंभव कल्पना बतायी। रेडियोधर्मिता रो आविष्कार हुयां पछै अबै आ बात असंभव कल्पना नहीं रैयी है—कम-सूं-कम सिद्धांत-रूप में। अबै विद्वान मानै है कै अेक तत्त्व दूजै तत्त्व में बदळीज सकै है। पारै री परमाणु-संख्या ८० है और सोनै री ७९। जे पारै रै परमाणु मांय सूं अेक प्रोटोन कम कर दियो जावै तो वो सोनै रो परमाणु बण सकै है। पण व्यवहार में आ बात हाल तांई सभव नहीं हुयी है। हां ! प्रकृति में रेडियोधर्मी तत्त्वां रो निरंतर विखंडन हुतो रैवै है और बै आप रै पूर्व रै तत्त्वां में बदळीज रया है। यूरेनियम रेडियम बणै और रेडियम हुतो-हुतो अंत में सीसो बण जावै। अेक दिन सगळा रेडियो-धर्मी तत्त्व सीसो बण जासी।

विज्ञान रा विद्वानां मौजूदा तत्त्वां सू कई-अेक नूंवा तत्त्व जरूर बणाया है। यूरेनियम रै बाद रा तत्त्व विद्वानां द्वारा बणायोड़ा कृत्रिम तत्त्व है। कई-अेक प्राकृतिक तत्त्वां नै भी विद्वानां प्रयोगशाळा में बणाया है।

तत्त्वां रो वर्गीकरण और आवृत्ति-चक्र

कई तत्त्वां में परस्पर समानता पायीजै; उणां रा घणा गुण अेक सरीखा हुवै। आं समान गुणां री आवृत्ति देखण में आवै अर्थात् जिका तत्त्वां में जिका गुण पायीजै वै अेक निश्चित संख्या पछै आवणवाळा तत्त्वां में भी पायीजै (अै संख्यावां आठवीं,

अठारवीं और बत्तीसवीं है) । उदाहरण रै खातर हेलियम दूसरै नंबर रो तत्त्व है, उण रा गुण दसवें नवर रै तत्त्व नियन में, अठारवें नंबर रै तत्त्व आर्गन में, छत्तीसवें नंबर रै तत्त्व क्रिपटन में, चौपनवें नवर रै तत्त्व जेनन में और ८६वें नंबर रै तत्त्व रेडन में भी पायीजै । आवृत्ति रै आधार पर विद्वानां तत्त्वां नै सात चक्रां में, और समान गुणां रै आधार पर च्यार विभागां में और आठ वर्गां में, बांटिया है । च्यार विभाग है—१. स-विभाग, २. प-विभाग, ३. द-विभाग और ४. फ-विभाग । स-विभाग में दो वर्ग है जिणां में १२ तत्त्व है, प-विभाग में ६ वर्ग है जिणां में ३० तत्त्व है, द-विभाग में ८ वर्ग है जिणां में ३१ तत्त्व है और फ-विभाग में दो उप-विभाग या श्रेणियां है जिणां में २८ तत्त्व है । बाकी दो तत्त्व हाइड्रोजन और हेलियम है—हाइड्रोजन स-विभाग और पहलै वर्ग रो तत्त्व है पण ७वें वर्ग सूं भी समानता राखै है । इणी भांत हेलियम भी स-वर्ग रो तत्त्व है पण गुणां री समानता री दृष्टि सूं शून्य वर्ग में आवै ।

आवृत्ति-चक्रां, विभागां, उपविभागां (श्रेणियां) और वर्गां रो ओ वर्गीकरण परिशिष्ट नं० २ में दिखायो है ।

परिशिष्ट १
तत्त्वां री सारणी

चक्र	विभाग	वर्ग	परमाणु-संख्या	तत्त्व् रो नांव्	परमाणु-भार
१	स	१ अ	१	हाइड्रोजन	१
	स	०	२	हेलियम	४
२	स	१ अ	३	लिथियम	७
	स	२ अ	४	बैरिलियम	६
	प	३ अ	५	बोरान	११
		४ अ	६	कार्बन	१२
		५ अ	७	नाइट्रोजन	१४
		६ अ	८	आक्सीजन	१६
		७ अ	६	फ्लोरीन	१८
		०	१०	नियन	२०
३	स	१ अ	११	सोडियम	२२
		२ अ	१२	मैगनेशियम	२४
	प	३ अ	१३	अलुमीनियम	२७
		४ अ	१४	सिलीकन	२८
		५ अ	१५	फासफरस	३१
		६ अ	१६	गंधक	३२
		७ अ	१७	क्लोरीन	३५
		०	१८	आर्गन	४०
४	स	१ अ	१६	पोटाशियम	३६
		२ अ	२०	कैलशियम	४०
	द	३ ब	२१	स्कैंडियम	४५
		४ ब	२२	टिटानियम	४८
		५ ब	२३	वैनाडियम	५१
		६ ब	२४	क्रोमियम	५१
		७ ब	२५	मैंगनीज	५५
		८	२६	लोहो	५६
		८	२७	कोवाल्ट	५६
		८	२८	निकल	५६
		१ ब	२६	तांबो	६४
		२ ब	३०	जस्तो	६५

चक्र	विभाग	वर्ग	परमाणु-संख्या	तत्त्व् रो नांव्	परमाणु-भार
	प	३ अ	३१	गैलियम	७०
		४ अ	३२	जर्मेनियम	७३
		५ अ	३३	संखियो	७५
		६ अ	३४	सेलेनियम	७९
		७ अ	३५	ब्रोमीन	८०
		०	३६	क्रिपटन	८४
५	स	१ अ	३७	रूबीडियम	८५
		२ अ	३८	स्ट्रांशियम	८८
	द	३ व	३९	इट्रियम	८९
		४ व	४०	जिर्कोनियम	९१
		५ व	४१	नियोवियम	९३
		६ व	४२	मोलिवडिनम	९६
		७ व	४३	टैक्नेटियम	९९
		८ व	४४	रूथेनियम	१०१
			४५	रोडियम	१०३
			४६	पैलेडियम	१०६
		१ व	४७	चांदी	१०८
		२ व	४८	कैडमियम	११२
	प	३ अ	४९	इंडियम	११४
		४ अ	५०	टिन (रांगो)	११९
		५ अ	५१	सुरमो (अंजन)	१२२
		६ अ	५२	टैलूरियम	१२८
		७ अ	५३	आयोडीन	१२७
		०	५४	जेनन	१३१

चक्र	विभाग	वर्ग	परमाणु-संख्या	तत्त्व् रो नांव्	परमाणु-भार
६	स	१ अ	५५	कैसियम (सीजियम)	१३२
		२ अ	५६	बैरियम	१३७
	द	३ ब	५७	लैंथानम	१३९
	फ		५८	सैरियम	१४०
			५९	प्रासे-ओडीमियम	१४१
			६०	नियोडीनियम	१४४
			६१	प्रोमिथियम	१४५
			६२	समारियम	१५०
			६३	यूरोपियम	१५२
			६४	गैडोलिनियम	१५७
			६५	टर्बियम	१५९
			६६	डिसप्रोसियम	१६३
			६७	होलमियम	१६४
			६८	इर्बियम	१६७
			६९	थूलियम	१६९
			७०	यिटर्बियम	१७३
			७१	लुटेटियम	१७५
	द	४ ब	७२	हैफनियम	१७८
		५ ब	७३	टैंटालुम	१८१
		६ ब	७४	टंगस्टन	१८४
		७ ब	७५	रैनियम	१८६
		८	७६	ओस्मियम	१९०
			७७	इरीडियम	१९२
			७८	प्लाटीनम	१९५
		१ ब	७९	सोनो	१९७
		२ ब	८०	पारो	२०१

चक्र	विभाग	वर्ग	परमाणु-संख्या	तत्त्व रो नांव	परमाणु-भार
	प	३ अ	८१	थैलियम	२०४
		४ अ	८२	सीसो	२०७
		५ अ	८३	विसमथ	२०९
		६ अ	८४	पोलोनियम	२१०
		७ अ	८५	अँस्टेटियम	२१०
		०	८६	रैंडन	२२२
७	स	१ अ	८७	फ्रांसियम	२२३
		२ अ	८८	रेडियम	२२६
	द	३ व	८९	अॅक्टीनियम	२२७
	फ		९०	थोरियम	२३२
			९१	प्रोटैक्टीनियम	२३१
			९२	यूरेनियम	२३८
			९३	नेपच्यूनियम	२३७
			९४	प्लूटोनियम	२४२
			९५	अमेरीकियम	२४३
			९६	क्यूरियम	२४७
			९७	केलिफोर्नियम	२५१
			९८	वर्केलियम	२४९
			९९	आइंस्टाइनियम	२५४
			१००	फर्मियम	२५३
			१०१	मेंडेलेवियम	२५६
			१०२	नोवेलियम	२५४
			१०३	लारेंसियम	२५७
			१०४	खुर्चेटोत्रियम	—
			१०५	हानियम	—

परिशिष्ट २

आवृत्ति-चक्र (आवर्त सारणी)

चक्र	स विभाग		द विभाग										प विभाग					
	वर्ग १ अ	वर्ग २ अ	वर्ग ३ ब	वर्ग ४ ब	वर्ग ५ ब	वर्ग ६ ब	वर्ग ७ ब	वर्ग ८			वर्ग १ ब	वर्ग २ ब	वर्ग ३ अ	वर्ग ४ अ	वर्ग ५ अ	वर्ग ६ अ	वर्ग ७ अ	वर्ग०
१	१ हाइ	—											—	—	—	—	[१ हाइ०]	२ हेलि०
२	३ लिथि	४ बेरि											५ बो	६ कार्ब	७ नाइ०	८ आ०	९ फ्लो०	१० निय०
३	११ सोडि	१२ मैग											१३ अल	१४ सिली	१५ फास	१६ गंध०	१७ क्लो	१८ आर्ग०
४	१९ पोटा	२० कैल	२१ स्कैं	२२ टि	२३ वै	२४ क्रो	२५ मैंगा	२६ लो०	२७ को	२८ नि	२९ तां	३० ज०	३१ गै	३२ जर्म	३३ संखि०	३४ सैले०	३५ ब्रो०	३६ क्रिप०
५	३७ रू	३८ स्ट्रां	३९ इ	४० जि	४१ नियो	४२ मो०	४३ टै०	४४ रू	४५ रो	४६ पै	४७ चांदी	४८ कैड	४९ इंडि	५० टिन	५१ सुर०	५२ टेलू	५३ आयो०	५४ जे०
६	५५ कै	५६ बै	५७ लैं[1]	७२ है	७३ टैंटा	७४ टंग	७५ रै	७६ औ	७७ इरी	७८ प्ला	७९ सोनो	८० पारो	८१ थै०	८२ सी०	८३ बिस०	८४ पोलो०	८५ ऐस्टे	८६ रै०
७	८७ फ्रां	८८ रेडि	८९ ऐक्टी[2]															

फ विभाग

1	लैंथेनाइड श्रेणी	५८ सैरै	५९ प्रासे०	६० नियो०	६१ प्रोमी	६२ समा०	६३ यूरो०	६४ गैडो	६५ ट०	६६ डिस०	६७ हो०	६८ ओर०	६९ यू०	७० यिट्	७१ लुटे	
2	ऐक्टीनाइड श्रेणी	९० थो०	९१ प्रोटै	९२ यूरे०	९३ नै०	९४ प्लू०	९५ अमे०	९६ क्यू०	९७ कै०	९८ बर्के	९९ आइं०	१०० फ०	१०१ मैं०	१०२ नो०	१०३ ला०	१०४ खु०	१०५ हा०

संपादकीय

तरवार री धार माथै खेलणिया राजस्थानी वीरां री धाक तो आखो देश ही नहीं, सगळो संसार मानै है पण राजस्थान रा कवि अर लेखक भी आप रै धरम में किणी भांत कम कोनी रैया, इण तथ्य रो प्रमाण है राजस्थान रै हस्तलिखित ग्रंथागारां में हजारूं-हजारूं पांडुलिपियां रै रूप में मौजूद अणपार राजस्थानी साहित्य—इसो प्राणवान साहित्य कै जिण री उत्कृष्टता आगै आज रा बुद्धिजीवी भी नवै। पण किणी समाज नै जागतो अर सक्रिय राखण सारू खाली जूनै साहित्य री गौरव-गरिमा सूं ही पार कोनी पड़ै, समाज री शिरावां में ताजो खून वैवतो रैवै इण खातर चाहीजै ताजो अर समयानुकूळ साहित्य।

नवीन साहित्य रो निर्माण भी मातृभाषा राजस्थानी रा सेवक मोकळै वरसां सूं पूरी लगन अर उत्साह रै साथै करता आया है अर उणां रै श्रम रो मीठो फळ भांत-भांत री पाक्षिक, मासिक अर त्रैमासिक पत्रिकावां रै माध्यम सूं साहित्य-प्रेमियां नै मिलतो रैयो है। इण पत्रि-पत्रिकावां रो योगदान राजस्थानी नै आगै लावण में और उण नै गौरव दिरावण में किणी भांत सूं कम कोनी कैयो जा सकै। साची पूछो तो राजस्थानी जिकी मजल अबार तांई पार करी है, उण रो श्रेय इण पत्र-पत्रिकावां नै भी कम नहीं है।

आज समै री चाल घणी तेज है। मधरी गति सूं चाल्यां आपां काईं ठा कित्ता लारै पड़ जासां। इण रो अंदाजो लगावण खातर घणो सोचण री जरूरत नहीं लखावै। राजस्थानी री पत्र-पत्रिकावां काम तो करचो अर करै है पण साधनां रै अभाव में जद बै नियमित रूप सूं नहीं निकळ पावै तो पाठकां अर जनता रै मन में ना तो विस्वास बंधै और ना लेखकां रो ई पूरो सहयोग मिल पावै। इण कारण अेक नियमित राजस्थानी पत्रिका री जरूरत घणै दिनां सूं मालम हुती रैयी है।

वरसां सूं राजस्थानी रा हिमायती आ कोसीस करता आया है कै राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), उदयपुर, राजस्थानी री अेक मासिकपत्रिका चालू करै।

इण संबंध में अकादमी निर्णय तो काफी समै पैली ले लियो हो पण ओ निर्णय क्रियान्वित कोनी हो पायो। अकादमी रो राजस्थानी विभाग राजस्थानी-भाषा-साहित्य-संगम रै नांव सूं बीकानेर में स्थापित हुयो जद संगम री कार्य-समिति आप री पैली बैठक में ही निर्णय लियो कै इण संस्था री मुखपत्रिका रो प्रकाशन तुरंत प्रारंभ करयो जावै पण कई कारणां सूं ओ तुरन्त संभव नहीं हुयो।

आ बात सावळ जाणतां-थकां भी कै अेक आछी पत्रिका काढणो सोरो काम कोनी, संपादकां ओ भार आप रै ऊपर लियो है। आ हिम्मत राजस्थानी रै लेखकां रै पाण ही करीजी है। इण पत्रिका नै सांगोपांग बणावण में राजस्थानी रै समर्थ साहित्यकारां रो पूरो सहयोग बरोबर मिलतो रैसी इसो विस्वास है। उणां रै सहयोग सायै ही पत्रिका री सफळता रो सगळो दारमदार है।

पत्रिका में विविध विषयां री सामग्री प्रकाशित करणै रो विचार है, इण वास्तै लेखकां री रचनावां घणै मान आमंत्रित है। जे राजस्थानी लेखकगण सन् १९६६ में राजस्थानी री अेकरूपता सारू आयोजित जयपुर-सम्मेलन में लियोड़ै निर्णयां नै ध्यान में राखसी तो संपादन-कार्य में घणो सहारो मिलसी।

पूरो भरोसो है कै राजस्थानी रा कवि-लेखक उत्साह सूं आगै आसी और मातृ-भाषा री इण पत्रिका नै भारत री दूजी भाषावां री प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकावां रै बरोबर ऊभी हुवै जिसी बणासी। राजस्थानी रा साहित्यकार अेकमत हो'र प्रयास करता रैसी तो राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता मिलणै में देर नहीं लागसी अर शिक्षा रो माध्यम भी वा बेगी ही बण जासी। संगम इण दिशा में सदा प्रयत्न-शील रैसी।

महाभारत रो ओ वचन आपां नै बरोबर ध्यान में राखणो है—

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूति-कर्मसु।
भविष्यतीत्येवं मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

उठो, जागो, कल्याण रै कामां में लागो; घबरावो मती, मन में ओ दृढ नहचो कर लो कै ओ काम तो हुसी ही।

राजस्थानी-भाषा-साहित्य-संगम

(राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, रै अन्तर्गत)

थापना और गति-विधियां

(क) थापना

राजस्थानी-भाषा-साहित्य-संगम राजस्थानी-साहित्य-अकादमी, उदयपुर, रै राजस्थानी विभाग रो नूंवै सिरै सूं संगठित और परिवर्धित रूप है। अकादमी री सरस्वती-सभा आप रै अप्रैल, सन् १९७२, रै अधिवेशन में पारित प्रस्ताव रै मुताबिक अकादमी रै राजस्थानी विभाग नै **राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम** नांव सूं अेक स्वायत्त संस्था रो रूप दियो और उण रो कार्यालय बीकानेर में राखण रो निश्चय करचो। संगम रै संचालन रै वास्तै सरस्वती-सभा अेक समिति री नियुक्ति करी जिण में १२ सदस्य हैं। सदस्यां रा नांव इण भांत है—

१. श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
२. श्री रावत सारस्वत
३. श्री शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'
४. श्री विजयदान देथा
५. श्री नारायणसिंह भाटी
६. श्री सांवळदान ऊजळ
७. श्री कैलासदान ऊजळ
८. श्री चन्द्रदान चारण
९. श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी
१०. श्री अगरचंद नाहटा
११. श्री मनोहर शर्मा—मानद मंत्री
१२. श्री नरोत्तमदास स्वामी—सभापति

संगम री थापना आखातीज, संवत २०२९, तदनुसार दिनांक १५ मई, सन् १९७२, रै दिन हुई पण कार्यालय और कर्मचारियां री व्यवस्था दिनांक १ अक्तूबर,

सन् १९७२ सूं हुई। संगम रो कार्यालय राणी-वजार में श्री सादूळ व्रह्मचर्याश्रम रै संस्कृत-महाविद्यालय-भवन रै अेक कक्ष में है। कार्यालय में इण वखत अेक कार्यालय-व्यवस्थापक और अेक चतुर्थ श्रेणी रो कर्मचारी है।

(ख) गति-विधियां

(१) **कार्य समिति रो अधिवेशन**—संगम री कार्य-समिति रो पहलड़ो अधिवेशन दिनांक २८ जून, सन् १९७२, नै वीकानेर में नागरी-भंडार भवन में स्थित विश्वभारती-कार्यालय में हुयो।

(२) **विज्ञप्ति-पत्र रो प्रकाशन**—कार्यसमिति रा निर्णयां नै अकादमी री संचालक-समिति री स्वीकृति प्राप्त हो जाणै पर उणां नै व्यावहारिक रूप देवण वास्तै संगम री तरफ सूं राजस्थानी रै विद्वानां और साहित्यकारां रै नांव दिनांक १५ जनवरी, सन् १९७२, नै अेक विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी।

(३) **नैणसी-जयन्ती समारोह**—राजस्थानी भाषा रा प्रमुख विद्वानां और साहित्यकारां री जयंतियां समय-समय पर मनायी जावै—संगम रै इण निश्चय रै मुजव राजस्थानी रा अमर गद्य-लेखक मूंता नैणसी री जयंती दिनांक ५ सितंवर नै जोधपुर में धूमधाम सूं मनायीजी। समारोह रो आयोजन चौयासणी रै राजस्थानी शोध-संस्थान रा निदेशक श्री नारायणसिंहजी भाटी करचो। सभापति हा डा० रघुवीर सिंहजी (सीतामऊ) और संसत्-सदस्या श्री कृष्णाकुमारीजी विशेष अतिथि रै रूप में समारोह में पधारचा।

(४) **सेमीनार और सर्जन-तीर्थ**—'राजस्थानी भाषा रो सरूप-विकास' और 'राजस्थानी भाषा री वोलियां रा लौकिक रूप' इण विषयां माथै जयपुर में दिनांक १४ अक्तूवर सूं १८ अक्तूवर तांई अेक पांच दिनो रो सेमीनार आयोजित हुयो। सेमीनार री आयोजना राजस्थान-भाषा-प्रचार-सभा रा मंत्री श्री रावतजी सारस्वत करी। समारोह में राजस्थान रै विभिन्न क्षेत्रां रा विद्वान पधारचा और आप रा विवेचन-पूर्ण निवंध वांच्या। भाग लेवणिया सज्जनां रो मत रैयो कै इसै अध्ययन-पूर्ण निवंधां रो वाचन और इसी गंभीर चर्चा राजस्थानी रै इतिहास में पैली वार देखण में आयी। समारोह में वांचियोड़ा निवंधां नै पुस्तक-रूप में प्रकाशित करण री योजना विचाराधीन है।

(५) **प्रकाशन वास्तै पोथियां**—संगम री तरफ सूं प्रकाशित करण वास्तै राजस्थानी रै कवियां अर लेखकां री पोथियां आछी संख्या में प्राप्त हुई है। समीक्षकां री संमतियां प्राप्त होणै पर पोथियां छपण वास्तै प्रैस में दिरीजसी।

(६) **सूर्यमल्ल पुरस्कार**—संगम री तरफ सूं राजस्थानी भाषा री श्रेष्ठ रचना साथै १०००) रो 'सूर्यम ल्ल-पुरस्कार दिरीजसी। पुरस्कार वास्तै पुस्तकां आमंत्रित करीजी है। **पुस्तक भेजण री अंतिम तिथि १५ अक्तूबर सूं वधायनै १५ जनवरी, सन् १९७३, कर दी गयी है।**

(७) **मुखपत्रिका**—संगम री मुखपत्रिका रो पहलो अंक आप रै हाथां में है। नांव री स्वीकृति मिलण में देर हुवण सूं प्रथम अंक रै प्रकाशन में देर हुयी है।

(८) **राजस्थानी पोथियां नै प्रकाशन-सहायता**—जिका राजस्थानी-साहित्यकार आप री रचनावां रै प्रकाशन री व्यवस्था स्वयं करणी चावै उणां नै सहायता देवण री योजना है। इण बारै में निर्णय वेगा ही करीजसी।

(९) **राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां नै सहायता**—राजस्थानी भाषा री पत्र-पत्रिकावां नै प्रोत्साहन और सहायता देवण री योजना भी विचाराधीन है।

(१०) **राजस्थानी पुस्तकालय**—संगम रै पुस्तकालय में राजस्थानी भाषा री समसत पोथियां और पत्र-पत्रिकरवां रो संग्रह करण री योजना है। इण विषय में राजस्थानी रै लेखकां, विद्वानां और प्रकाशकां सूं सहयोग सारू प्रार्थना है।

(११) **साप्ताहिक गोष्ठी**—राजस्थानी भाषा में साहित्य रै नव-निर्माण नै प्रोत्साहन देवण सारू संगम साप्ताहिक गोष्ठी री आयोजना करी है। गोष्ठी री वैठक प्रत्येक शनीचर वार नै सिझ्या रा नागरीभंडार-भवन में विश्वभारती रै कार्यालय में हुवै जिण में राजस्थानी लेखक आप-आप-री नूंवी रचनावां लावै और वांचै। गोष्ठी में वांचियोड़ी अनेक रचनावां संगम री मुखपत्रिका में प्रकाशित हुयी है।

अशुद्धि-संशोधन

पृष्ठ ३३ माथै 'राजस्थानी और हिंदी में विभक्तियां' शीर्षक लेख में अंतिम दोनूं पंक्तियां इण भांत हुणी चाहीजै—

करण—पुरुषः कुठारेण काष्ठं छिनत्ति (पुरुष कुठार सूं काठ नै छेदै है)।

कर्त्ता—पुरुषेण काष्ठं छिद्यते (पुरुष सूं काठ छेदीजै है, पुरुष काठ नै छेदै है)।

राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम

बीकानेर (राजस्थान)

विज्ञप्तियाँ

(१) सूर्यमल्ल पुरस्कार

राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम री तरफ सूं राजस्थानी भाषा री सर्वश्रेष्ठ पुस्तक माथै लेखक नै 'सूर्यमल्ल पुरस्कार' भेट करीजसी। इण वरस ओ पुरस्कार लारलै दो वरसां में रचियोड़ी गद्य-रचना माथै दिरीजसी। विचारार्थ पुस्तकां भेजण री अंतिम तिथि १५ अक्तूबर, सन् १९७२, ही। आ तिथि अबै आगै वधा'र १५ जनवरी, सन् १९७३, कर दी गयी है।

(२) राजस्थानी पुस्तकालय

संगम-कार्यालय में राजस्थानी भाषा री पुस्तकां और पत्र-पत्रिकावां रो वडो संग्रह स्थापित करण रो विचार है जिण में यथासंभव राजस्थानी री समस्त पुस्तकां और पत्र-पत्रिकावां रा जूना अंक संगृहीत हुसी। इण संबंध में लेखकां और प्रकाशकां सूं सहयोग वास्तै प्रार्थना है। उणां सूं प्रार्थना है कै वै आप-आप री लिखियोड़ी और छापियोड़ी प्रत्येक पुस्तक री सूचना नीचै वतायै विवरण रै सायै भेजण रो कष्ट करैं—

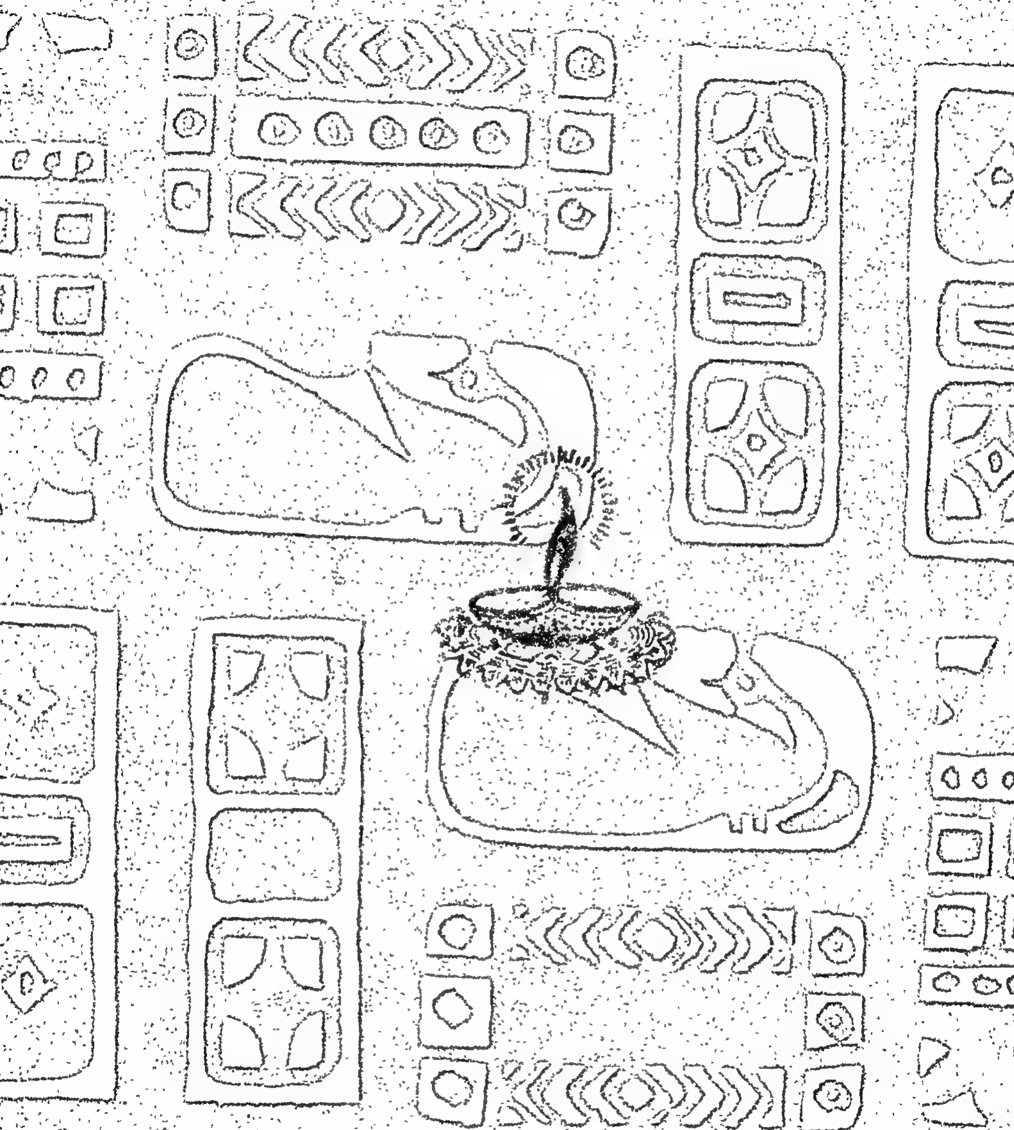
(१) पुस्तक रो नांव, (२) लेखक अथवा संपादक रो नांव, (३) साइज और पृष्ठसंख्या, (४) विषय, (५) प्रकाशण-तिथि, (६) मोल, (७) प्रकाशक रो नांव (८) मिलण रो पतो।

विवरण मुखपत्रिका में भी प्रकाशित करीजसी।

मानद मंत्री,
राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम, बीकानेर (राजस्थान)

जागती जोत

राजस्थानी भाषा री त्रैमासिक पत्रिका



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राज०)

जागती जोत

[राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर री मुखपत्रिका]



सम्पादक

डा० गोरधनसिंह शेखावत



प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक
धनंजय वर्मा, सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

भाग ३ : अंक १-२
अप्रेल-सितम्बर '७५

वरस रो मोल १२-००
इण अंक रो मोल ३-००

मुद्रक
एजूकेशनल प्रेस के लिए
माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर

टीप

□

□ □

□ □

रचना रै परवारै री समीक्सा

रचनावां रै सिलसिलै में श्रेक तीखो प्रस्न श्रो उठै के श्रा किण ठौड़ ताईं रचना है। जे श्रा रचना जाणीजै तो इण नै नापण रो श्राधार कांई हुयो श्रर श्रो कुण मान्यो ? कदै तो श्रा हुवै के रचना नै रचना रो दरजो देवतां ई उण रै विसय में कीं कैवणों हंसी उडावणो जैड़ो लागै तो कदै उण नै रचना मंजूर कर लेवण सूं कीं खास किस्म रा प्रस्न श्रर कीं रचना री मांयली बुणावट रा बुणियादी सवाल श्रेक खासा वहस रो रूप लेवै। रचना रै साथै श्रा दोतरफी लड़ाई, रचना री सांच नै प्रगटै तो वीं रै श्रसली-नकली चेरै नै श्रोळखै। रचना रै परख री ईंगत में श्रेक छेड़ै रेवै रचनाकार श्रर दूजी छेड़ै उण नै परखणियो या समीक्सक। श्रसल में परख सारू श्रा दूरी रेवै या श्रेक-दूजै कनै श्रावणो चाहजे, श्रा समीक्सा रै परवारै री श्रेक श्रैड़ी स्थिति है जिकी सूं रचना रै बारै री वै समस्यावां नैड़ी श्राज्यावै जकी समीक्सक रै मनां-ग्याना श्रेक गांठ पैदा करै या पड़चोड़ी गांठां नै श्रैड़ी उळझावै के केई सालां ताईं वा समझ श्रेक-दूजे नै नेड़ै नी श्रावण दै। पण सवाल समीक्सक री ईमानदारी श्रर चोखी समझ रो श्रत्तो नी जत्तो के रचना वैरै श्रापरै खुद रै वजन रो है, उणरो जेनुहन होणो है। देखणै में श्रावै के केई दफा समीक्सक रचना माथै श्रापरो हमलो बोल देवै, रचना रा फाचरा-फाचरा खिडाय श्रापरी समझ रो दीवाळो निकाळ देवै श्रर मनमानै पणै सूं रचना रै परवारै घमक्यां देय'र श्रापरो पायो मजबूत करणै री सोचै। सवाल श्रो है के कांई रचनावां नै पिछाणवा रो श्रो इज श्राखरी दाव है ? इण पछै रचनावां री हत्या मान लेवां या रचना नै समझण श्रर परखण रो श्रागै भी कीं श्रासार नजर श्रा सकै, श्रा श्रासा राखां। कांई इण लड़ाई रै मांय किणनै श्रपराधी श्रर दोसी न मान्यो जाय या साहित श्रर कला रै हळकां में इण ढंग री बदनीयत रा लोगां सारू किण ढंग रो भी नैतिक दंड नी ? श्रेक बात निस्चै समझ में श्रावै के श्रै लोग सदा सूं साहित श्रर कला रा हळका मांय रैय'र चीफ जस्टिस री गळाई कीं फैसला देता रैया। पण इण ढंग री कूवद रा लोग रचना रै परवारै कीं कैवता रैवै। उण रा श्रै फैसला रचना री बजाय श्रापसी राजनीति री गधमपटक रा केई उणियारा

बणावता रैवै । आ समीक्सा रचना नै रचना मान'र न लिखीजी होय'र इण बात रो उल्थो देवै के आ रचना नी, इण नै रचना नी मानज्यौ अर जे इण नै रचना मान लीनी तो क्यूं मानी ? जद रचना नै परखणै रो ओ मांयलो नजरियो व्है तद उण समीक्सक री नीयत रै बाबत किणी ढंग री आसंका मामूली पाठक रै मन में भी रैय ज्यावै, आ समझ नी आ सकै ।

तीन बरसां पैली अेक माहवारी पत्रिका फगत रचना रै परबारै ओ द्रस्टिकोण लेय'र कीं मौजूदा लेखन री पोथ्यां माथै आपरी भंडास काढ़ी । स्यात सम्पादक रो जीव सोरो हुयो व्है । साहित अर समीक्सा री राजनीति रा दावपेचां रो जिकरो करता थकां वै खुद इण बात नै साबित करदी के वै खुद ई राजनीति सूं अलग नी हैं । कांई करता ? रचना नै लोग रचना मान लीनी इण बात रो वांनै अफसोस है । वां री समीक्सावां इण बात रो पड़ूतर नी देवै के, अै रचनावां है तो क्यूं अर जे रचनावां है तो आं री परख रो आधार ओ है । पण वांरी सारी मैणत, समझ (?) अर योजना रचना रै परबारै आ बात कैवण में घणी तेज है के अै रचना नी । अेकर ई बात नै गैराई सूं सोचां तो लखावै क रचना नै रचना मान लेवण रो मतलब उण रचना री स्रेस्ठता या उण रो महताऊ रूप नीं है । असल चीज तो रचना मानणै पछै उण री परख, मोल-तोळ अर उण नै जेनुइन कैवण रो है ।

फेरूं सवाल वठै ई घूमै के 'जेनुइन' रचना कुणसी अर उण री परख रो कांइ आधार । कांई हरेक जणो रचना री ई गैराई या इण आधार ताईं पूग सकै ? अर फेरूं कुण पूग सकै अर कुण नी पूग सकै, इण मामलै में म्हारी ई बात सगळा मान लेवै, आ कठै ताईं मानी जाय । अेक तीजो आ कैय सकै है के आ तो आं री आपस री लड़ाई है—आ पीढ्यां री व्है सकै, आ पीढ़ी-पीढ़ी रै बीच गुटबंदी री व्है सकै, आ जातीवाद री व्है सकै अर आ विचारधारावां री व्है सकै । म्हारै खयाल सूं ई तीजै मिनख नै अेकै समचै समीक्सक री कुर्सी माथै बैठायो जा सकै । जे आ कीं आधारां माथै मौजूदा लेखन अर समीक्सा री स्थिति नै अेक नजर सूं देखां तो अेक घपलो सो लखावै । राजस्थानी लेखन री आपरी कीं समस्यावां हैं, वठै सिरजण री कीं अदीठ संवेदनावां रो दरसाव है तो साहित री हर विधा रै मांय काचै-पाकै सिरजण रो अेक उछाव है । दूजी ठौड़ ई साहित नै परखण सारू चस्मा वै लोग लगा राख्या है जिका जूनै साहित नै पढ'र आपरी दीठ नै थिर कर नाखी है अर दूजी तरफ मौजूदा लेखन नै समझणै अर उण सारू कीं फैसलो देवण

री दावो करणै सारू सगळा सूं पैलां। फेरूं जे बांरै फैसलै नै सुणां तो लखावै के बै रचना नै पचा'र कीं कैवता तो दूजी बात, पण बै तो रचना नै देख'र आपरी मानसिक उबाक सगळा रै सामै रखदी। क्यूं सा'व, जिण चीज सूं उबकाई व्है, उण सूं परहेज राखणो कोई बानै रोगी थोड़ी सिद्ध करै है पण लखणां सूं पिंड छुड़ावणो ईं उमर में मुसकिल जरूर है। ई बात में सायत ई कोई आना कानी करै के नुंवै साहित री परख में इण ढंग री बोदी अकल फगत रचनावां रै परवारै भचीड़ा खावती री है। रचना री परख रो ओ संकट रचना सामै अतो नी जतो के आं लोगां री द्रस्टि-हीनता सामै है। रचना समीक्सक रै हाथां में पखेरू जैड़ी नी के वो आपरी मनमरजी सूं रचना री पांखड़्यां काट देवै। रचना रो हीयो समीक्सक रा फैसलां सूं ठंडो व्है ज्यावै या रचना समीक्सक रै सामै हाथ जोड़'र गिड़गिड़ावा लाग ज्यावै, अैड़ी गत साहित रै हळकै मांय बगत री अेक सींव तांई व्है सकै, पण रचना रा ज्वाला-मुखी नी कदै बुझ्या अर नी बुझै। अै बात नुवी अरकीं री समझ नै बदलण सारू नी, इण ढंग री आवाजां रचना रै संकट साथै सदा सूं कहीजी। म्हारै खयाल सूं म्है बेमौकै ओ प्रस्न नी उठायो, फेरूं रचना रै संकट नै नी अणूतो बताय'र किणी समीक्सक नै हथियार उठावण सारू कैवूं। आज बादळ व्है सकै, काल नी, पण आकास रो आसमानी रंग हमेस रैवेलो, उण नै कद तांई ढांपीज्यो राखोला।

जे ई बबाल नै अेकर अठै ई छोड़ देवां तो वो ई प्रस्न म्हारै सामै आवै के रचना नै रचना मान लेणों संकट है या रचना मान'र पछै उण री परख अर मोल–तोल करणो संकट है। समीक्सक जे सुरू सूं अती साफ निजर री परख कर लेवै तो उण री 'सिन्सियरिटी' में किणी नै सक नी हुवै अर रचना नै 'फेक' 'फ्राड' या 'संस्कारहीन' रचना नी कहीजै। म्हारै खयाल सूं रचना अेक घणी तपत नै लेय'र मिनख रा खुंवां भिझोड़ती बारै आवै। रचना रै मांयली दुनियां अेक स्थिति सूं जुड़'र बगत री लम्बी सींवा रै हाथ लगावण री कोसिस करै बा अेक ठौड़ गाढ़ी अर दूजी ठौड़ा गाढ़ी रैवण रो परमाण भी देवै। उण रै कथ री दुनिया अेडै-छेड़ै सूं पीड़ा फसक अर संवेदना अंवेरती अेक दूजी दुनियां रो ताणो-बाणो वणै। उण रा संकेत अर उण री भासा हड़बड़ीजै मिनख री दीठ नै कीं धारदार बणावै। मुट्ठी रै मांय री चीज अकासां तांई पूग ज्यावै। रचना री मांयली दुनियां रा जे खोज काढ़ां तो रचना रा इण ढंग रा केई उणियारा वणै। कदै चोखा तो कदै भूंडा, पण व्है उणियारा। आं री ओळख समीक्सा व्है

सकै । खाली खुद री वंच्योड़ी दीठ सूं रचना रै ओळी-दोळी फिरणो. आपरी समझ नैं थोड़ी ताल परेसान करणो है ।

समीक्सा रो अेक दूजो रूप भी राजस्थानी रै मांय निजर आवै । आ समीक्सा 'दीठ' अर 'हरावळ' जैड़ी पत्रिकावां में छप्योड़ी नुंवी पोथ्यां री है । अठै जरूर आ बात लखावै के समीक्सा सारू अेक नुवां आधार री तलास है, ओ आधार रचना रै मांय सूं उपजै, अैड़ी कोसिस भी कठै-कठै दीखै । पण ईं समीक्सा रो अेक खतरो है के आ कठै-कठै आज रै मुहावरां सूं भी घणी बंध ज्यावै । बीवां साफ केवूं तो अै मुहावरा हिन्दी समीक्सां रा है जियां प्रतिबद्धता, प्रामाणिकता, समकालीनता प्रासंगिकता, जनवादी साहित, जनवादी कविता इत्याद । अै सबद कत्ता कोरा हैं अर आं री चमक रचना नै कठै ताईं चमका सकै, ईं तथ सूं सगळा जाणकार हैं । अै रचना रा आधार नी व्है सकै । अै अेक बंध्योड़ी द्रस्टि रा विचार-बिंदु हैं । रचना आं सगळा सूं बारै अर ऊपर है । समीक्सक रै कनै इण ढग री द्रस्टि व्है जकी आपरी लाम्बी निजर सूं समूळी रचना रै कथ नै नुवो जीवण दे । लाम्बी उमर रो कोड अर आसा लेय नै रचना लोगां रै सामै आवै । या अेक स्थिति सूं जुड़'र केई स्थितियां सूं जुड़योड़ी व्है, वा प्रासंगिक व्हैता थकां भी वगत रै साथै जीवण री हूंस राखै अर वा अेक बोध नै संभाळ'र चालती व्हैता भी ठौड़-ठौड़ संकेत देवती चालै । रचना रो ओ मांयलो फैलाव रचना री असली जिन्दगी है । समीक्सक इण जिन्दगी रीं खोज करै । रचना भोंपू नी व्है, उण रा होठ सींयोड़ा व्है । रचना रा दरूजा खुला नी व्है, काठा ढक्योड़ा व्है अर रचना खाली पंपोल वासूं ई नी पावसै, उण री घेराबंदी भी करणी व्है । रचना तो नित घूमर घालती वा सिणगारू गोरड़ी है जिण रा मिजाज अर नखरा नै जता ओळख स्यो, वतो ई उण रो कीं ठा पड़ैलो । खाली पोथी में पढ्योड़ा घूमर नांच सूं ईं घूमर नांच रा अरथ नी जाण सकोला ।

राजस्थानी पै मांय हाल इण ढंग री समीक्सा विगसित नी हुई । खाली ऊपर सूं वणाव सिणगार निरखवाळा लोग हाल केई है अर जे वै कीं नुवीं पोथी रै हाथ लगा लेवै तो उण रो मन खाटो व्है ज्यावै । क्यूं'क आज री जिन्दगी में ओ वणाव-सिणगार कठै के रैयग्यो अर जिंदगी रा पग चालता-चालता कीं ठौड़ा आ पूग्या, इण रो होस हाल उणा नी है, अर नी होवण रो है । ओ ई कारण है के जे आज रै राजस्थानी साहित रै मांय नुंवैपणै री बात उठै, या नुंवो लिखीजै

रा आ वात उणां रै प्रोब्लम व्हे जावै । ओ नुवोपणो कांई ? नुवां मूल्य कांई, नुंवी कविता री नुंवी जमीन कांई अर नुंवा प्रयोग कांई, इण वातां नै लेय'र उणा रा दिमाग हाल सही ढंग सूं सोचण री स्थिति सूं जुड़्या नी । राजस्थानी कविता अेक पसवाड़ो फेरयो है । आज राजस्थानी कविता में ढाल-तरवार री वात नी, भगत बण'र हरि दरसण रा गीत गावण री टेम नी, लोगां नै विड़दावण री जरूरत नी अर नी काजळ-कांचळी रा सिणगारू गीत गावण री मांग । आज री कविता साव आज र जुग-बोध सूं जुड़'र आज रा संदरभा नै सामै उजगार करै । उण रो नुवो-पणो सिल्प सूं बेसी कथ रै मांय हैं । पैलां कथ वदळीजै, उण साथै संदरभ बद-ळीजै अर अेक नुवीं जमीन-लारली कवितां सूं आगै सामनै आवै । आ जमीन निस्चै ई पांच-सात वरसां सूं तलासी है अर आज इण नैं सगळा अंगेजै । इण वास्तै नुवापणा रो खाली नारो राजस्थांनी रै मांय दियो गयो व्हे, अैड़ी वात नी । पण हां, कीं जणां नां इण नैं नारो मान्यो अर नीं नुवापणो । इण ढंग रा लोगां री नी तो कोई 'क्लासिकल एप्रोच' है अर नै आज रै भाव बोध नै समझणै री सूझ-बूझ । म्हारै खयाल सूं नुवोपणो कोई मूल्य नी पण हर रचना में कीं नुवोपणो व्हे, आ जुग अर रचना री द्रष्टि सूं अेक सैंठी मांग है अर ओ नुवोपणो रचना नै स्रेष्ठता री सींवा तांई भी पूगावै । बहरहाल, रचना रो नुवापणो रचना रै मांय ढूंढयो जाय । रचना रै परवारै समीक्सा री जुगत बैठाणो, नी समीक्सक री ईमानदारी व्हे अर नी समीक्सा री समझ । सगळा परभाव अर तैसुदा मापदंडां सूं ऊपर उठ'र रचनां ने पिछाणवो रचना साथै न्याव कह्यो जा सकै । आज री रचना मांय आज रै मामूली मिनख री जिंदगी रा दरद, समाज री विसगति रा अलेखूं रूप अर बेवस जिंदा रैवण री मजबूरी, कुंठा अर संघर्स रा केई चितराम है। रचना रो ओ वदळतो नुवो रूप आज री रचना रो मोल-तोल करणै रो अेक आधार मान्यो जा सकै ।

'जागती-जोत' रो ओ 'विविध अंक' आपरै हाथां में है । गद्य री सगळी विधावां में रचना देवण री मनस्यां ही पण कीं रचनावां नी पूगी । कीं साव नुंवा लिखारा भी ई अंक सूं राजस्थानी लेखन सूं जुड़्या है, इण वात री खुसी है । इण अंक सारू रचनाकारां रै सहयोग वास्तै म्हूं आभारी हूं साथै इज संगम ओ काम सूंप्यो, उण वास्तै भी ।

—गोरधनसिंघ सेखावत

द्रौपदी

सेठ लखमीचन्द जी चूरण नै माथा रो तैल बणावण रो नुस्खो आज २० बरसांऊं अजमार्‌या है। इण २० बरसां में गांव-गांव नै सहरां में, इण तैल नै चूरण री आवाज गूंजै है। कई बीमार्‌यां रा बैद न सांप, बिच्छु रो झाड़ो देवण रा नामी कारीगर न इलाज मुफ्त में करै। बैठक में चार-पांच जणां मिलणियां न 'मरीज' हताई सदा जोड़्योड़ी राखै वणां नै चाय-पान री मनवार करण में गिरस्ती रो सांचो धरम समझै।

इण दिनां में काम धन्धो कीं मोळो हो जको हाथ तंगी में आयग्यो, पण आवणियां की खातर तंगी में कोनी आई। सेठजी री तीसरी बेटी लाडली द्रौपदी-बेमाता रो घड़ियोड़ो सांचो चितराम। सोळवैं बरस में पग धरियो हो पण चोखो कस्योड़ो न ठोस अखरोट हुवै ज्यूं सरीर साथ मैं। हांसी–मसखरी रो अचपळो सुभाव। जवान बेटी रां बाप नै नींद आ सकै है पण मां नै झपकी आवणी दोरी। सेठाणी ओळमो देवती बोली—

—थे मुफ्त रा इलाज अर झाड़ा झपाड़ा में पग री रगरख्यां घस न्हांकी, कदे आपणी द्रौपदी री फिकर करी है कांई?

—अरै गैली रावा तूं फिकर क्यूं करै है, द्रौपदी नै पांच पति मिल्या न पांचूं पांडु सूरवीर हा। आपणी द्रौपदी नै एक तो मिल ही ज्यासी बस स्वयंवर करणै री देरी समझ।

—थाकै कनै कोरा वखाण है। करण-धरण नै कीं कोनी। मसखर्‌यां सै बेटी कोनी परणीजै। परणांवतां जोर आवैला।

—सेठजी मांय हो कांई सा?

—आयो भाई! सेठजी झट बारै न्हाटा। बात आई-गई होयगी। कड़की रा दिनां में खरचो टळज्या जको चोखो।

मां ! म्हनै एक सफेद पायजामो न चोखी फिराक करादे । आं । पुराणा मैला चीकट कपड़ां में वारै जाती लाजां मरू । काल गळी का सगळा टाबर बींद की बनौरी देखवा गया जद मैं आं तेलिया कपड़ां में मन मार नै रैयगी ।

करास्यां बेटी कपड़ा घणाई करवास्यां । पैली चौका बरतणां को काम सळटाओ ।

बेटी रात का वासी बरतण रगड़ती-रगड़ती सोचवा लागी-आपणी भायली कमला कत्ती मौज में है । सगळै दिन न्हाई धोई रैवे । काम भाभी करै, वा कांण कसर काड परी मौज लेवै । मनड़ो निसकारो न्हांक्यो-म्हारा बड़ोड़ा भइसा, न्यारा नही होवतां जणां मैं भीं बैठी बैठी मोज करती । बयां खातर हाथ पगां माथै मैल रा लेवड़ा जमता ।

मां सोचवा लागी १६ वरसां री बेटी होयगी । इण नै कदैई मौज कोनी करण दीनी । ब्याव हुयां पछे आगलो घर लाग ज्यासी । इणरी तकदीर इसी ही है। सगाई री बात चालै बठाऊं ८-१० हजार को बिल साथ में आवै । आपणै कनै झैर खावण नै पीसो कोनी, दस हजार खेजड़ी के थोड़ाई लाग्योड़ा है ।

परस्यूं सामला बाईसा एक सगाई वास्ते कैवै हा कि लड़का की बीनणी मरगी दूजवर है । ४ टाबर छोड़गी । ऊमर भी घणी-कोनी, तीसेक वरसां की है । मील रो मालिक है । दिन भर न्हावो धोवो मौज करो । इण सगाई रै अलावा दूसरी बैठणी मुसकल है ।

सामला बाइसा मौका री वात सरकाई ही । बातचीत सरू होयगी । लड़को मिलण वास्तै खुद आयग्यो न सगाई पक्की होयगी । जांवतो सुसराजी रै धोक रै साथ साथ १० हजार नगद दे दिया । केवण लागो-कपड़ा गैणो करवायने १५ दिनां पछै ब्यावरी सगळी त्यारी कर न्हांको ।

घरां पहुंचतां कै साथ सेठजी कै मुंडा मांयसूं जोरस्यूं निकलगी-ब्याव १५ दिनां पछे, द्रौपदी की मां सुणो हो कांई ।

—थैं गैला हुयग्या कांई, किण रो ब्याव किण रो सावो ?

—आपणी बेटी द्रौपदी रो, और किण रो । आपणा भाग जागग्या ।

—अतो जल्दी करस्यां कठाऊं । आंपणं खनै लाल पाई कोयनी ।

—हाथरै मांयनै १० हजार री थैलो सौंपता सेठजी बोलिया-आज ओ लिछमी जी रो आसण लेयनै आयो हूं । मांय नै म्हैल दे ।

व्यावरी वात सुणी बग नैं हांसी सी लागी । पण व्याव रो काम साच्चांई सरू होयग्यो ।

जको द्रोपदी एक मैली चीकट फिराक न श्रेड़ा ही श्रेक पायजामा मैं अमूज्योड़ी बैठी रैवती वा अब मुळक मुळक नैं दोयसो ब्लाउज न सौ वैस भांत भांत रैं कपड़े रा रिवा लिया । द्रोपदी रा पग धरती माथै सीधा कोनी पड़ै हा ।

हलवाई आयनै साई सुदा वात करग्यो । सफेदी वाळा आपरो काम गरणाटी चढ़ा राख्यो । सोनीजी रोज आयनैं नुइं नुइं रकमां रो जायजो करवाय देवैं । स्टील-पीतल रा वरतण मोलीजग्या । रोजीना री नुइं नुइं जिन्सा घर रा कोठ्यार में वधती जावै ।

भोळी-ढाळी द्रोपदी इण जिन्सा नैं हाथ लगायनै निरखैं न हरखै । मनमैं धनड़ै रै रूप रा चितराम बणावती जावै न मुळकती जावै ।

गळी री भायल्यां आयनैं कैवती-द्रोपदी म्हानैं भूलजै मती । बठै सासरै में लाखां को कारबार है । दूसरी जवाब देवती-कारबार जीजाजी करसी, आ करसी मौज ।

सगली हांसती । पछै द्रोपदी कैवती-मैं थां सगल्यां नैं श्रेकर बठै बुलास्यूं, थे जरूर आज्यो । द्रोपदी तूं जल्दी मोटी हूज्या, नहीं तो मोटा जीजाजी कनै ऊभी कैळ की कामड़ी व्है ज्यूं लागैली । द्रोपदी नैं इण मसखर्‌यां में रस आवतो । द्रोपदी नैं कांई ठा भो चांद को च्यानणो सो चाव घणा दिन कोनी रैसी ।

श्रोर धूम, धड़ाकै रै साथ फेरां री रात आयगी । सगळी गळी गुवाड़ी रा लोग बींद नैं देखण आया । सगळां के मन में बींद देखवा रो उछाव । मन में करै हा बूढ़ो दीखे जणां अतो पीसो लागरयो है ।

घोड़ी माथै मोटो मसंड सो, चोखो तूंद फुलायां बींद बैठ्यो मुळक्या करै हो । कमर बन्ध रै कारण कड़्यां को घेरो ओरभी ज्यादा दीखै हो । लुगायां खुसर पुसर करण लागी-श्रै चांद सी बेटी नैं कूवा में दड़काय दी । दूसरी बोली-भगला कै मील चालै है, बैठी राजस करसी ।

दाळै कांई इस्यै राजस नैं, बाप की सी ऊमर को बींद मिल्यो है । जोड़ी रा टाबर बिना गिड़गलो गळै में घालणो फालतू में है । द्रोपदी री साथण्यां डागळा माथै बैठी बातां रा लसरका लगावैं हां । बाजा री तान सुणपरी सगळी जण्यां बींद देखण

आई। साथ में ना नूं करती द्रोपदी नैं पकड़नैं लेयगी। द्रोपदी घणी राजी होयगी। मन में बणायोड़ा चितराम नै आज आपरी आख्याऊ देखसी।

देखतां ही मनड़ै पर बिजळी सी पड़गी। मन का कोड मनमें मसळीजग्या। आपणै बापूजी कै जत्ती पाक्योड़ी उमरा है आं सूं कीयां मन री बात करस्यां। कीयां हांसी मसखरी करस्यां। द्रोपदी रो माथो भुंवीजण लागग्यो। मनड़ै रा सगळा कोड कोरा सपनां बणग्या।

फैरां में बैठवांऊ पैली द्रोपदी घणी रोई। इण भरतार वास्तै भगवान मनै जलम दियो है। मन रो तार तार जलम नैं धिरकारै लाग्यो।

मां बेटी रा आंसूं देखनै बोली बेटा जी घणो सोच मत करो, पाछी जल्दी मंगालेस्यूं। तूं अब टाबर थोड़ी ही है, समझ सूं काम ले।

बनड़ै री पाक्योड़ी ऊमर नैं थुल थुल बुगचै जिस्यै कै सरीर माथै पीसां पड़दो न्हांक दियो। द्रोपदी बिदा होयगी

पांच दिनां पछैं बाई नैं मंगवायली। साथ रो साथ मील रा मालिक सूरजमल जी रो कागद आयग्यो। मुकलावैरी अड़खांस पूरी करवावण रो सावो १० दिनां पछै रो लिखियो हो। द्रोपदी कद आई नैं कद पाछी गई कीं ठा कोनी पड़्यो।

आज दस महीनां सूं द्रोपदी सासरै री हेली में रैवै। बापड़ी सगळी ऊमर बानी ऊ बरतण घस घस नैं काढदी अब न्हावण धोवण रै सिवाय कोई काम कोनी हो। आराम मिलण रै साथ देह गोल गट्ट नै क़ैसर बरणी होयगी। सूरजमलजी रो बड़ो लड़को मगनलाल १७ बरसां रो न द्रोपदी बांरी लाडी १६ बरसां री। द्रोपदी ने सूरजमल री बातां में मजो कोनी आवतो जित्तो मगनलाल री बातां में आवतो। पैली पैली दोनूं जणा एक दूजासूं सरमावता। द्रोपदी मगनलाल नै बेटो तो नहीं पण छोटा भाई जिस्यो समझवा लागगी। मगनलाल भी सरमावतो सरमावतो भाबीजी कैवण लागियो न मन में मां ज्यूं समझतो। दिन गुजरता गिया।

पैंतीस बरस रा सूरजमलजी घर में बड़तां ही द्रोपदी नै बाजिदअलीसाह बादसाह आपरी दांस्या नै रगदोळतो जियां रगदोळणी सरू कर देवता। द्रोपदी इण हरकतांऊं मन में रोवती पण मलनलाल सूं थोड़ी ताळ बात करनै जी हळको कर लेवती। सूरजमलजी देख्यो कै आ म्हारै ऊं घणी राजी हुयनै बात कोनी करै जित्ती मगनलाल रै साथ में खुलपरी बात करै। सोच्यो—आपां नैं बूढो समझै दीखे। अब

नूंवा फिट कपड़ा मिवायनै पैरणा सरू कर दिया। भांग रो नसो करनै आंख्या लाल राखणी न जुंवानी रा दरसण दिखावा रा सगळा फैल सरू करया। द्रौपदी उपर-उपर हांसती न मन में आपरै भाग रा लेख समझ नै डुसक्या भरती, निसखारा न्हांकती।

पाड़ोसी सगळा इसी फूटरी पदमणी सी काया रीं लाडी नै छानै छुरकै देख-देख नै घणा बळवा लागग्या। एक-दो जणां घणां मूंडै लाग्योड़ा हा जका घरां आयनै भायलाचारी रो नाटक रच्यो। मोको देखनै एक दिन अेक जणो बोल्यो— थे सूरजमल जी मील रो काम देखो हो–कदे नुंई–लाडी मायै भी नीजर राखो हो कांई।

—आ कांई वात कैवो हो थे लूणकरण जी।

ऊतावळा मती ह्वो सूरजमल जी इज्जत रो सुवाल है न म्है थारो खास आदमी हूं इण वास्तै कैवूं हूं नहीं म्हनै कांई पड़ी है इसी। म्है म्हारी आंख्यांऊ मगनलाल नै थांकै वराऊ इण दोनुवां नै हांसी ठट्ठा करतां देख्या है।

वात सूरजमल नै खटकगी। पण नुंई लाडी रा रूप रो पुजारी इत्ती जल्दी भंडा फोड़ कैयां कर देवै जतै आपकी आंख्यांऊ कीं न देखले।

अब सूरजमल जी घणी ताळ घरां रैवै। मील में एक वारी जायनै पाछा घरां आ ज्यावै। द्रौपदी नै अब सगलै दिन इणां खनै रैवणो पड़तो जको जिंदगानी बोझ ज्यूं लद्योड़ी लागवा लागगी। एक दिन बोली–थे सगळै दिन घर में बड़्या रैवो, क्यां लुगाई वणस्यो कांई?

सूरजमल नै खटको हो जकी वात अब पुख्ता जचगी। एक दिन मगनलाल रो माथो घणो दूखवा लागग्यो जणां भोळै मन री द्रौपदी माथो दाववा लागी। मगनलाल घणो नट्यो पण द्रौपदी मानी कोनी। सूरजमलजी केई ताळऊं देखण लागरया हा इतै में नौकराणी सांमी जोयनै हांसवा लागगी। अब सक कोनी हो वात रा पग काठा हिड़दा में रूपग्या।

मील रा कागदां री 'चेकिंग' करवावण रा दिन आयग्या। सूरजमलजी रात दिन मील रा कागदां में उळझोड़ा मील में घणी ताळ तांई रैवणो सरू कर्‌यो। मन में खळवळी माची जणां एक दिन चाणचकै ही मगनलाल री हाइस्कूल में जाय पूगा। मास्टर नै पूछ्यो मगनलाल कठै है?

सेठ सा वींरो माथो घणो दूखै हो इण वास्तै छुट्टी लेयनै अवार घरां गियो है।

सूरजमल नै ठा पड़ियो दरद कठै है । रीस में लाल हुयोड़ा कार रा फ़र्राटा मारनै घरां पूगिया ।

घरां बैठक रा किवाड़ खुल्ला पड़िया हा । ऊतावळा मांयनै ब्हाटा । सगळी जगां देख्या पछै सोवण वाळा कमरा नै बन्द देखनै किवाड़ां रै सारै कान लगायो मांयनूं गधमपट्टी री आवाजां सुणीजी । कदे आलमारी रा किवाड़ां रो घमीड़ सुणीजै कदै माना माथा उछळ कूद सुणीजै । अतीक देर में द्रौपदी कैवती सुणीजी आज थनै ठा पड़सी ।

सेठ जी अती सुणतां कै साथ धोतीऊं बारै हुयग्या । किवाड़ां नै घड़ाधड़ ठोकणा चालू कर दिया । द्रौपदी बोली आईसा खोलूं । पण वींरी कुण सुणै ।

द्रौपदी आयनै किवाड़ खोलिया । अबार-अबार मांयली न्हावणी मूं निकळ नै आई ही इण वास्तै जल्दी जल्दी साड़ी नै लपेटतां माथा रा खुल्ला गीला केसां नै तौलिया में लपेटती बोलण लागी जतै मैं मांयनू एक मोटी धोळी मिनकी निकळ नै बारनै भागी । द्रौपदी हांसती बोली—

आज म्हारो सिनान सावळ कोनी हुयो । पैली आ मिनकी खटर-पटर मचा राखी ही, पछै थे आयनै घड़ाधड़ मचादी । वड़ा आदम्यां थोड़ो नेछो राख्या करो ।

सेठजी बोलण रै वास्तै मूंडो खोल्यो अती देर में बार नै ऊं मगनलाल एक हाथ में बस्तो न एक हाथ में दुवाई री गोळ्यां लियां हेली में बड़ियो । आयनै बैठग्यो ।

सेठ सूरजमल कदै उदास मगनलाल नै देखै न कदे खिलचोड़ा फूल व्है ज्यूं द्रौपदी रा मूंडा नै जोवै ।

देखीजा कद चेतो बावड़सी ।

लोही रौ रंग

वौ बीड़ी रो टुर्रौ सुलगा'र लेंपपोस्ट रै आसरै ऊभौ-ऊभौ सुट्ट खेंचवा लागौ। अेक ऑटोरिक्सौ 'पट''''पट''''पट' करतौड़ो उणरै कनै आ'र ढब्यौ। अेक चैरो घबराट अर पसीनां सूं लथपथ रिक्सा सूं बारै झांकतौ चीस्यौ—

'नासौ जा अठीं थीं''''जल्दी करो।'

'अे लोको अठींज आवी रया छै।'

'अठीं वगर मौते मरी जसौ।'

'मौत ?''''''''''''''।'—वौ खीझ उठ्यौ।

ऑटोरिक्सौ 'पट''''पट''''पट' करतौड़ो आगै वढ़ ग्यौ। वौ वियां इज लेंपपोस्ट रै आसरै ऊभौ रैयो। उणनै अेक कड़वी हंसी आई—'मौत ?'

मौत तो किणी तरयां आवणी इज है''''आ कठै भी पीछौ नीं छोडेला। फेर चायै उणरो छोटो सो'क राजस्थान रो गामड़ो व्हो या औ धुंआ सूं भरयौड़ो—अेमदावाद सहर। वठै अकाळ रै कारज सूं मौत रो डर हो अर अठै सहर मांय दंगा रै कारण सूं मौत रो डर। डर तो मौत रो कठै भी व्हो ज्यूं रो त्यूं बणयौड़ो है। अेक न अेक दाड़ै तो मरणी इज है, विणसूं वचियो तो नीं जा सकै है? इण वास्तै वौ भाग'र भी कांई करेला? आपरा राजस्थान रा छोटा सा गांव नै छोड'र वौ लारला अकाळ री टेम अेमदावाद आयौ हौ। अेमदावाद में उणरै गांव रा घणाई लोग रैवे है। पैली वौ वां लोगां रै इज सागै रैवतो हो, उण टेम वीनै ओ सहर भीड़ भरयौ, घणो अजीब सो लागै हो, पण हौळे हौळे अबै आदी होग्यौ। अबै तो उणनैं आपरा 'मील' री तरफ सुं बापूनगर में क्वाटर भी मिळयौड़ो है। उणरै सागै अेक मास्टर अर अेक दुवाईयां वैचण वाळो अेजंट रैवे है। अेजंट अक्सर घारै दौरा पै रैयाकरै है।

मास्टर जी उणनैं रोजिना सिंझ्या पौर कै रात में सूवतां वगत दुनिया भर री वातां बनाया करै है। पैली वौ कीं ई नीं जाणतो हो। मास्टर जी वीनै

हिंदुस्तान रा टुकड़ा कियां हुया, पाकिस्तान कियां बण्यो इण री सै वैरो दियो हो। जद सूं अै जातिवाद रा दंगा सरू हुया–उणरै वारै में भी जाणकारी दीवी ही। सहर में जद सूं दंगा सरू हुया, मास्टर जी विणनै देर–सवेर वारै जाणै सूं भी वरजता रैया है। पण उणरै बात ह्राल सावळ पल्ले नीं पड़ी ही कै उणरै गांम में भी तो मुसलमान रैवे है, हिन्दु रैवे है ! पछै वठै दंगो क्यूं नीं हुवै है ? धरम रै नांव माथै झगड़ो ? आ किसी राड़ है ? उणरै अठै तो तिवार–कांई ईद, कांई दियाळी, कांई मोर्रम अर कांई होळी–सै रा सै सागै मिळजुळ'र मनावै है।

वी लेंपपोस्ट रै कनै ब्यांन इज ऊभो हो। भीड़ अर हाकी वठीनै इज वढतो आवै हो—

'जलावी मूको !'
'म्हारी न्हाखो।'
कोण छै ?'
पैला विजळी रा थांभला पासे जुओ।'
'साला अे लूंगी वांघी छै।'
'मुसळमान छै !'

भीड़ उणरै कानीं इज वढती आय रैयी ही। काल की इज तो वात ही–उणनै किणी काम सूं वजार जाणो पड़यो हो, वठै हिंसक भीड़ हाथ में वळतोड़ी मसाल लियां सड़क माथै दौड़े हा। देखता-थकां विणरै सामै कई दुकानां नै मकानां री स्वाहा हुयग्यो हो। भीड़ लूट-पाट मचावै ही अर वो वैंनै छानो-मानो हो'र देखे हो। कालै रो दरसाव आज री भीड़ ने देख'र फेर पाछो ताजा हुयग्यो। वो सोचियो-तो कांई अठै भी खून-खरावो व्हैला ? नीं...नीं...आंन होणो नीं चाहिजै। कालै उणरै सामै कित्ता लोगां ने छुरा घोंप दिया हा, ऊण टैम वो भाग'र जान वचावण वास्तै अेक सूगली गळी में पूगो तो आगै कोई मिनख अेक लुगाई सूं जवराई वाथ्यां आवै हो अर पछै तुरत वापड़ी रै पेट में छुरी घुसेड़ दियो। लुगाई री जिसम लोही सूं लथपथ हो'र वठै तड़पै ही।

वो वठा सूं बच'र लुकतोड़ो चौरायां सूं आगै दौडे हो, अचांणचक उणरी अेक ठोड़ निजर पड़ी अर वो वठै इज चापळग्यो। सामै दो मिनख दो टाबरां रै पेट में चक्कू घुसेड़'र आंतड़ा काढ दिया हा। दूजै कानीं अेक मिनख रै ओरूं कोई पेट में छुरी रोप'र चालतो बण्यो हो। उणरी आंख्यां मिचीजगी ही।

इण टेम भी उणरी आंख्यां मिचीजगी। छण भर रै तांई उणरा पग वठै रा वठै इज रुकग्या हा। कालै पग भयानकता ने देख'र रुक्या हा, आज पग भयानकता ने मिटावणै वास्तै रुकग्या। कालै विणनै दठा सूं वच'र अेक डरपोक री नांई भाग'र आणो पड़्यो हो। पण सिझ्या ने मास्टर जी बतायो कै मौत सूं वचण वास्तै कदै कदै भागणो भी पड़ै है। पण आज वो भाग क्यूं नीं जावै है? मौत वो सामै इज आय रैयी है। भीड़ साव कनै आयगी ही।

भीड़ सूं कोई कयो—'मारो मारो ...।'

'कौण छै रे बोलतो नथी ?'

अेक मिनख उणरै कनै आ'र वो ईज सवाल पूछ्यो—

'कौन है वे ? बोलता नहीं है ?

कोई दूजो मिनख आगै आ'र कयो—'तुम मुसलमान हो ?'

मन ही मन मांय वो छुरा ने देख'र कांपग्यो। पण छिण भर मांय पाछो साहस लांवतो वोल्यो— 'नहीं !'

—'तो हिन्दु हो ?'

—'नहि !'

—'ईसाई हो ?'

—'नहि'

—'तो फिर कौन हो ?'

—'हिन्दुस्तानी ! भारतीय !!'—वो मास्टर जी रा बतायोड़ा सबदां ने दोहरा दिया।

—'साळो झूठ बोलै छै !'

—'क्यों वे ? झूठ बोलता है ?'—अर उण माथै छुरै रो बार हुयो। वो थोड़ो हट'र अेक कांनी हुयग्यो !

—'ठमजै !'—भीड़ सूं किणीं री अवाज आई। उणरी हीमत नीं हुयी भीड़ सूं मुकाबलो करणै वास्तै।

—'अरे ओ तो आपणो माणस छै !'

—'अरे ओ तो आपणो वख्तावर है !...अरे ओ वख्तावर ? अठै कांई कर रैयो है ? चाल म्हांकै लारै !'

—'नहि ! नहि !!'—वो कयो।

—'वंगड़ियां पेरी ले !

—'चूड़ी पहन ले ! नामर्द कहीं का !'

—'नामर्द ?'—वो सोचे हो—'हां वो सहर में आ'र नामर्द वणग्यो है।

गाम में तो वो तीन वळयां डाकुआं सूं मुकावलो कर्‌यो हो, चोरां ने तो कई दफा पकड़'र मार्‌या हा। अठै सहर में आवण रै पछै तो सांचाणी वो नामर्द हुयग्यो हो। इणीज वगत कोई लेंपपोस्ट रै भाटो मार्‌यो अर वल्व 'छन्न' करतोड़ो विखरग्यो। उणरी आंख्यां रै सामै अंदारो सो छायग्यो। थोड़ी सी'क छेटी माथै दुजोड़ो लेंपपोस्ट हाल भी जगमगावै हो। वो थांन तो मील में क्लर्क री सुणै है, सुपरवाइजर री सुणै है। गाळयां रो कांई? गाळयां तो अबै वो हमेस सुणवा रो आदी हुयग्यो है। कांई फर्क पड़ै है?

'नामर्द!'—फेर कोई अवाज आई।

उणरै हाथ में कोई लाठी कद पकड़ा दीवी अर वो कद किणी रै सागै हो'र भीड़ मैं मिळग्यो हो। भीड़ पाणी रा रेळा ज्यूं आगै वढ़ती जावै ही। अक मिनख कोई मोटयार रै छुरी भोंक दियो अर उणरी गोद का टाबर ने फोस'र उणरै भी छुरी मारणै व्हाळो हो कै वो आपरै हाथ री लाठी ने अेक कांनी फगा'र उण टाबर ने झपट लियो—'इणनै क्यूं मारो हो, ओ थांरो कांई बिगाड़यो?

इत्ता में लाठियां उण माथै तड़ातड़ पड़वा लागी, पण फेर कोई आगै आ'र उणनैं वचा लियो। पण फेर भी वो टाबर ने वचाय नी सक्यो। उणरो अर टाबर रो लोही कांई न्यारो न्यारो हो? कठै है हिंदू रो अर कठै है मुसलमान रो ओ लोही? कदै न्यारो न्यारो भी लोही हुया करै है कांई? वो तो अेक है! फेर भी ओ जात-पांत रो भेद किसो है?

वो तुरत वी भीड़ ने छोड़'र भीड़ देखी—'अरे! अठीनै आ भीड़ और किसी है?'

—'मारो '' मारो''''मारो!'

—'वदळा ˜ वदळा '''!'

—'ओ वदळो और कुणसो है?' —वो भागदौड़ो आयो अर उजाळा में भीड़ रै सामै मास्टर जी ने खड़ो देख्यो। वैने कोई पूछै हो—

'—तमे हिंदू छो?'

—'न थी!'

—'तमै मुसलमान छो?'

—'न थी!'

—'पण तमे लागो तो हिन्दु छो ?'

—हूं हिंदु न थी, हिंदुस्तानी छूं !

वो मास्टर जी ने बचाणै वास्तै दौड़्यो—

—'मास्टर जी ! आप अठै कांई कर रैया हो ?'

—'थ्हनै सौद रयो हो म्है ! थूं अठै कांई करै है ?'

—'म्है—म्है तो उण भीड़ रै सागै ...।'

—थूं ? अर उण भीड़ रै सागै ?'

—'वै लोग जबरदस्ती.....।'

इणीं'ज वगत वठीली भीड़ पाछी बावड़णै लागी। बास में दो टोळयां ऊभी व्हैगी ही। अठीली ठोळी कैवे ही—'मुसलमान आ रहे हैं !'

वठीली टोळी कैवे ही—'हिंदु आ रहे हैं !' भीड़ री कसाव कम हुवतो जाय रैयो हो। सिकंजो कसतो जावै हो। दोनूं कानी सूं गुजराती अर हिंदी भासा में अुवाजां आवण लागी—नहिं, आ तो मुसलमान छै, पैला हिन्दु छै !

'नहिं, आ हिन्दु छै, पैला मुसलमान छे !'
'नहीं, यह मुसलमान है, वो हिंदू है !'
'नहीं, यह हिन्दू है—वो मुसलमान है !'

कुण हिन्दु हो, कुण मुसलमान हो ? दर असल आ कोई नीं जांणै हा। कारण हिंदू अर मुसलमान रै विचै वै समान तरीका सूं दोषी रैवे हा। फेर दोयां रो नांव भी कोई नीं जांणै हा।

इणीं'ज वगत कोई आगै बढ'र मास्टर जी रै छुरो पेट में घुसेड़ दियो हो। मास्टर जी रै मुंडा सूं अेक चीस निकळी—'अल्लाह !'

छुरो मारणै वाळो मुसलमान हक्को-बक्को सो वठै इज ऊभग्यो अर पछतावतो कैवण लागो—'यह मैंने क्या किया ? मेरे ही जाति भाई का खून ? उफ ! बहुत बुरा हुआ !'

—'मास्टर जी ! ओ कांई हुयग्यो ? म्है कठै रो नी रैयो ?'—वो रोवण लागो।

अेक लेंपपोस्ट ओरूं बुझग्यो, थोड़ो अंधारो ओरूं वधग्यो !

मास्टरजी लोही सूं भरयोड़ा हाथा नै ऊंचा कर'र उणनै मरती टेम भी सीख दीवी—न...न—नहिं बखतावर ! थूं जीवतो रैवेला ! गांधी-शताब्दी रो ओ

दगो इण सहर रै पावन तीरथधाम साबरमती आसरम ने बदनाम करणै री आ साजिस है अेक धोखो हैं ! जिको""क""करेला वै वै भरेला, पण थूं इण टेम भाग जा ! इण भीड़ सूं आंतरै चल्यो जा ! कठै अै लोग म्हनै भी""मार न्हाखेला ! जा जा जाव अबै ! मूंडो कांई देखे है ? आ""आ " ह ! अर होळै होळै अवाज बंद व्हैगी ।

मास्टर जी री मौत सूं उणरो लोही रंग लायो । वो सोच्यो—'अेक मुसलमान ने मुसलमान मार दियो, तो अेक हिंदू अेक हिन्दु ने नीं मारेला ?'

बख्तावर रै तहमत हो । तहमत ने वो ऊपर करतोड़ो । हिंदु टोळी रै कांनी इसारो कर'र कैवण लागो—'हां""हां""देखो कांई हो ? म्हनै भी मार न्हाखो ! म्हैं म्हैं मुसलमान हूं !,

कोई अेक मिनख आगै वढयो अर बख्तावर री चीस निकळी—'आह ! हे राम !'

भीड़ अचंभै सूं ऊभी ही । वैने अचरज हुयो । उणी'ज टेम पुलिस वठै आयगी ही अर भीड़ विखरवा लागी ही । बस दो लास वठै सांत पड़ी ही—अेक हिंदू री अेक मुसलमान री । कुण हिन्दू हो अर कुण मुसलमान ? भीड़ रै वास्तै राज इज रैयो । हां, उण मौहल्ला में उणरै पछै कोई दंगो नीं हुयो हो वठै कोई लास नीं विछांयीगी ही । दंगा री घटना रोजिना अबै सिझ्या ने दो बुझ्योड़ा लेंपपोस्ट याद दिराय दिया करै है, अर अेक सुवाल ऊभो करै है—कै 'कांई हिन्दू अर मुसलमान आपरो बैर यांन इज चुकावता रैवेला ?"" ?? ???

—हरमन चौहान

राजन रो खोंमचौ

—राजन ! ओ राजन !!

-- आयो बाबू साब। वो कनै आयनै बोलो—सा, कत्ता पीसां का द्यू ।

—राजन बावा ! आपणो रोजीना को हिसाब है रोटी खायां पछै च्यार आना का पाणी पतासा थांकै खनैऊं खावणा ।

आज राजू बावा नै ५० साल होयग्या, इण सहर री सगळी सड़कां नापतां। सहर री कुणसी गळी में कठै गूमड़ा है और कठै घाव है, इण नै राजन के पगां री पगथळ्यां पिछाणै है। सगळै दिन खाटै पाणी नै चटणी रै साथ पाणीं पतासा भर-भर नै वेचणो । संझ्या घरां जाणैऊ पैली मांगू हलवाई री दुकान माथै बैठ नै आठ आना री भांग लियां पछै आधा किलो मिठाई रा हिसाब नै मांगू आपैही समझ ज्यावै। मिठाई खायां पछै राजन राजा भोज। पग कांईठा कद खोंमचा नै उठायां राजन नै घरां पुगाय देवै । दिन ऊग्यां पछै न्हाय धोय नै सगळी खोंमचा री त्यारी कर्यां पछै राजन स्कूली टाबरां रै स्कूल पूगवाऊं पैली त्यार मिळै ।

पाणी पतासां रा खोंमचा इण सहर में ५-४ जणां और भी ल्यावै है, पण इण सगळां सूं ज्यादा विक्री राजन आपरी वणायोड़ी वढिया चिटणी रै कारण करै ।

अवकी साल वरसात घणी हुई । आज वरोबर तीन दिन हुयग्या पण सूरज भगवान आपरी आंख्या ही कोनी खोलै । पैलड़ै दिन वरसात सरू होवण पैली राजन आपको वडोड़ो लोटो पीळती हेलीवाळा सेठां खनै पांच रिपियां में मेल दियो। आज विक्री कम रेयगी ही। तैल न जीरो ल्याय नै खोंमचा री सामग्री जचाई। खोंमचो चौक में रखनै वीड़ी वाळी अती ताळ में छांटां आवणी सरू होयगी । राजन थोड़ी ताळ वास्तै आडो होयग्यो। उठ्यां पछै मां नै पूछ्यो—मां पाणी वरसणो बन्द होयग्यो

कांई । मां बोली-बेटा आज मेह घणो वरस्यो सगलै कादो होयग्यो आज मती जा । हालतांणी वरसै है । धीरै धीरै दोफारी ढळगी । राजन उदास मन करनै खोंमचो खाली कर न्हांक्यो ।

सिंझ्या राजन आटो गूंदवाळी मोटी पीतळ की परात सेठां कै घरा मेल नै दूजै दिन वास्तै सोदो लियायो । आंती वेळयां भांग रो डळो कंठां में गेर इन्दर भगवान की जै बोलतो घरां पूग्यो । ठण्ड में नसो घणो चोखो लागै ।

दूजै दिन राजन थोड़ो माल नुवो वणायो । काल री चिटणी हालतांणी खराव कोनी हुई ही इण वास्तै नुंई कोनी बणाई । आज वेगो जावण री सोच राखी ही । झिरमिर वरसती छांटां में लोग राजन की उडीक परदेसी पावणै री ज्यूं करै । राजन नै ठण्ड में घणो कोनी फिरणो पड़ै विक्री जल्दी सी हू ज्यावै ।

राजन सोच्यो आपणा दो वरतण सेठ जी रै घरां मिलीजग्या-जकां में परात पाछी आवणी जरूरी है-नही तो आटो क्यां मैं गूंदस्यां । कताक वरतण अधमोल में आं ५० वरसां में गयां है इण रो हिसाव राजन कोनी राख्यो । भगवान सव ठीक करसी-ओ सवद भांग रा नसा मैं कदै-कदै वड़वड़ावै ।

वारै जावाऊं पैली दड़ादड़ मेह ओसरग्यो । राजन रो मूंडो काठो उतरग्यो । धोती का पांयचा नीचै कर्‌या हा जकां नै पाछा टांक लिया । आपकी वण्डी उतार नै खूंटी कै टांक दी । अव उघाड़ो हूयोड़ो राजन कदै पहलवान की जिया उकड़ू वैठै कदै घूमवा लाग ज्यावै । कदै वीड़ीं रा चसड़का लेवणा सरू करै । घड़ी-घड़ी वारनै जाणं री तावळ लाग पण जोर कांई करै !

इण तरां ग्यारा वजग्या । रोटी वणतां कै साथ खाय के त्यार होयग्यो । सोच्यो—आज मेह रुकतां कै साथ घरांसै वारै निकळ जास्यूं । काल उडीकवो कर्‌यो वियां कोनी उडीकूं । आधा-पड़दा पीसा आसी जका ही चोखा । सुरज्जी भगवान अेक वर मूंडो काढनै पाछो रजाई रै मांय ल्हको लियो । इन्दर भगवान भी सोच ली, वरसूं तो आज ही वरसूं । दिन ढळयां तक वरावर कम-ज्यादा वरसात हूवोकरी । राजन रो मन भारी होयग्यो ।

तीसरै दिन हळकी छांटां दिन ऊगतां आवण लागरी ही । राजन सोची आपां दो दिनां सैं माल वणायनै खराव कर लियो, पण आज मेह एकदम रूक्यां पछै आज त्यारी करस्यां । ओ भगवान कांई चावै है कीं ठा कोनी पड़ै । लारली साल

एक बर ग्रया की झड़ी ५ दिनां तक लागी रही पण वीं वेळ्यां ५०-६० रिपिया कनै हा, इण वास्तै मुसकल कोनी ग्राई-काम चालग्यो।

तीन दिन बरसात की झड़ी घोळ दिया। ग्रै तीन दिन तीन बरस ज्यूं राजन काढ्या। दो दिनां सैं भांग व मिठाई की तान कोनी बैठी ही। तीन दिनां पछै ग्राज रात नै तारा निकळ्या हा।

राजन राजी हुयग्यो। सोचवा लाग्यो—काल जल्दी करस्यां। मजूरी भगवान चोखी देदेवै जणां कोई बात कोनी।

चौथे दिन दिन ऊगतां कै साथ ग्राकास ग्रासमानी घोयोड़ी लूगड़ी जिस्यो निकळ्यायो। राजन कड़की की बात भूल नै चटणी लसर-लसर बांटणी सरू करदी। वीं री मां पाणी पतासा की टिकड़्यां उठा उठायनै गरम तैल मैं पटकती जावै ही। तैल में पड़तां कै साथ पाणी पतासा गोळ गट्ट फूल परा न ऊपर ग्रावै। ऊपर ग्रातां ही बूढळी एक छाबड़ी में काढ दे। सगळा काढ लिया हा, ग्रब तैल की कढ़ाई नीचै उतारै ही जतै में राजन कै कानां में रोबा-कूकवा री ग्रावाज सुणीजी। बोल्यो—मां बारनै देखनै ग्रा दिखां-बारै रोवा-कूकी क्यां की माचण लागरी है।

बूढळी थोड़ी ताळ में पाछी बावड़्यां पछै धीरै धीरै एक चोर दूसरै चोर नै समझावै जियां सैंना में समझाती बोली-बेटा सेठ घीसूलाल जी मरग्या।

—राजन रो हाथ सिलवट्टा पर ही ठहरग्यो।

मां बोली—बेटा तूं जल्दी सी खोंमचो लेज्या। लोग समझसी ई नै ठा कोनी पड़ी हूसी।

राजन तीन दिनां सैं उदास बैठ्यो हो इण वास्तै झटपट त्यार होयग्यो नहीं ग्रो मोको इस्यो कोनी हो। बीड़ी पीवतो ग्रैकबर बारै जायनै सूनेड़ री निगै करणै री सोची। सूनेड़ हुयां ५-४ मिनटां रो काम है। ई ग्रापणी गळीसूं बारै निकळ्यां पछै मोज।

ग्रती देर में ६०-७० ग्रादम्यां री भीड़ घीसूलाल जी रै बारणै भेळी होयगी। राजन बारनै मूंडो काढ्यो जतै में ही घोंकळराम मिस्त्री ग्रावाज लगाई—राजन! जल्दी ग्रा, सेठ घीसूलाल जी सरीर छोड़ दियो है।

राजन जुवाब दियो-ग्रायो भाई, ग्रबार ग्रायो। मन में सोची-ग्रापां बारनै नहीं जाता तो ठीक हो। थोड़ी ताळ पछै ग्ररथी उठ ज्याती पछै ग्रापां धीरैसी खिसक

ज्याता। अत्र फंसग्या। और दिनां आ वात कोनी खटकती पण आज नुकसाण होवतां चौथो दिन हो।

राजन भीज्योड़ी मिनकी हुवै ज्यूं आयनै ऊभो होयग्यो जणां वींकी लास की अरथी अर लोग बणार्‍या है जिण भीड़ में घीसूलाल जी सबनै कैवण लागर्‍या है जल्दो करो—राजन का लास ले चालो। अरथी उठावती वेळचां लुगायां जोरऊं कुरळाई।

लोग जल्दी-जल्दी वहीर होग्या। राजन रा पग भारी लखावै लाग्या। सोच्यो-आपां वारै निकळनै सगळी गड़वड़ करदी।

अरथी रै वजार में पूंचता कै साथ राजन नै याद आई-सगळा दुकानां का सेठ पाणी-पतासा नै याद करता हूसी। घीसू सेठ नहीं मरतो जणां आपां खोमचो लियां अठै आ ज्याता। वो भीड़ में सूं वारनै निकळ'र अेक कानी चालण लागग्यो। जिण सूं सगळा लोग देखनै समझ ज्यावै ज्यू—अरै! राजन आज कीनी आ सकै—वो अरथी साथै जावण लागर्‍यो है।

सगळा लोग सेठ घीसूलाल जी री वड़ाई करता चालण लागर्‍या हा। राजन नै घड़ी-घड़ी खोमचा री याद आवण लागरी ही।

सगळा लोग अरथी कै कांधो लगा-लगायनै आंतरा होवता जावै हा। राजन देख्यो लखपती सेठ-साहूकार सगळा कांधो लगार्‍या है जणां आपां नै भी लगावणो चाहिजै।

राजन आगलै छेड़ै जायनै कांधो लगा दियो। मन में सोचतो जावै आपां घाट ऊपर न्हायनै पाछा वावड़स्यां जतै स्कूल कै टावरां की छुट्टी हू ज्यासी। वजार में अतो माल विकणो मुसकल है। वजार में उधार करणियां घणां जणां है।

स्कूल का टावर कत्ता स्याणा है। रीसेस री घंटी लागतां कै साथ राजन दो जोरदार आवाज रोजीनां लगावै—पाणी-पतासे वाला! आ जाओ गरमा गरम हैं!!

अत्तो कैवणै कै साथ छोरा च्यारां कानिऊं छोटा छोटा-छोटा हाथां की मुट्ठी में ५ पीसी और १० पीसी दवायां दौड़ता आवै। सगळा वोलै—राजन वावा पैली म्हनै! पैली म्हनै!! काल थे इनै पैली दिया आज थे म्हनै पैली १० पीसां का देवो। राजन सगळा टावरां नै राजी राखै।

दूसरी घंटी 'रीसेस' खतम होवण री लागतां कै साथ जांणै चिड़्यां में भाटो गेर्‍यो हुवै, सगळा आप आपरी कलासां में वड़ ज्यावै। पछै राजन वजार को चक्कर लगावण नै आगै वढै।

ओरूं विचार उठ्यो आपणै कनै कत्ता वरतण हा, घर भर्‌यो रह्यो करतो। धीरै-धीरै आपां सगळा गिरवी रख दियो। सगळा वरतण अधमोल में चल्या गया। आपां लोटो न इण परात दोनूं जिन्सां नै केई वार गिरवी मेल नै संझ्या घरां जांवती वेळयां बिक्री कर्‌योड़ा पीसाऊं पाछा छुड़ा लिया। अबकै आखरी वार चल्या गया दीखै। आज ओ सेठ नहीं मरतो जणां मौज हो ज्याती। ३-४ दिनांसूं लोग उडी कता वैठ्या हा चोखी बिक्री हा ज्याती।

राजन विचारां रा लोर में पग मेलतौ चलर्‌यो है। बींनै आ ठा कोनी पड़ी कद तीनूं कावियां कनूं लोग बराबर बदलीजता जार्‌या है अेक कांनी गरीब राजन अब तांई लागर्‌यो है, पण कोई कोनी वींकै कनूं आयके लेवै। सगळा वडा लोगां कनूं ले लेवै वांनै तकलीफ नहीं हुणी चाइजै।

कांई ठा, कद सगळो सहर लारै रैयग्यो। कद प्राइमरी स्कूल आवगी। जको रै आगै राजन रै आधै खोंमचे रो भार हळको हुवै। राजन माथो नीचै कर्‌यां कांधो लगायां विचारां रा गोट में गुड़तो चालर्‌यो हो अतै में हीं प्राइमरी स्कूल रो चपड़ासी रीसेस की घंटी टन टनन् न टन वजायदी। राजन रोजीनाळी जियां माथो उपर नै करणै कै साथ जोरऊं आवाज लगाई पाणी-पतासे वाळा ! आ जाओ गरमा गरम है।

भीड़ कांनी निजरां जातां ही जीभ तालवा कै साथ चिपगी। भीड़ मांय नूं २-३ जणां राजन नै धक्को देयनै आंतरो कर्‌यो।

लोग राजन माथै निजरां गाड्यां आगै नै चालता जार्‌या है। राजन कदै नीचे नै देखै कदै उपर नै, पग धरती माथै रगड़ीजणां सरू होग्या। सगळी भीड़ आगै निकळगी राजन लारै हुग्यो। अब अरथी रै साथ जावण नै जी कोनी करै न घरां जावण नै, पग जवाव दे दियो। राजन लारैनै मुड़ नै देखै है भीड़ आगै जावण लागरी है।

—मनोहरसिंघ राठौड़



अणकथाज्यो कथ

(एक वियतनामी सिङ्या)

—रामस्वरूप 'परेश'

म्हे सगळा
सूना नैणां सूं
लोई मैं डूबेड़ा सूरजी नै देख्यो है,
टूटता आभानै–
तकतूळी-सा हाथां मैं थामतां
पून री चिरळाटी सुणी है ।

फावां पर उबी भीड़ रा
काचरा सा नैणां में–
म्हारै वारणां री सूकी वांदरवाळ
निनेड़ा दिवला अर–
छाजां पर पसरेड़ी
जोध जुवान उदासी तांई
ओपरोपण तिरै ।

अै सगळा संगळिया
आजादी रो चीरहरण देख्यो है,
पण फेफड़ी आयेड़ा होटां पर
मून री म्होर लागरी है।
लागै–
माणखो माणखा रा
मुंड़जेड़ा कोयां नै
मोत रो नांव देतो डरै।

(अतरी कांई कम है'क
वो आप तांई मरै)

अेक मैं हूँ जको–
डूबती कांठळ अर
तिड़कती ल्हैरांतांई
मुळकण रो सुयंवर रचूं,
मंझूळचा सूं उदासी मांग-मांग पीवूं,
हळ चलावूं । बंदूक उठावूं ।

अंवार धुप सूं रंगियेड़ा ओळचां पर
उजास रा कई हांसिया बाकी है–
जका–मनहीणी सिझ्या नै
पो पाट्ये री म्होर सूं मानीजती करसी ।

जेज–
लकवो मारेड़ा हाथां सूं
इतियास सा फुटनोट में
अण कथीज्या कथ सारु
नांव हेर सी॰ ।

□

रामू बळाई री अरथी मांय

—गोपाल जैन

रामू बळाई री अरथी
रामू री खुड्डी मांय पड़ी है
च्यारूंमेर फैलतो लुगायां रो कोकाट
कीं उदास सूत्योड़ा काळा सा मूंडा
लेय'र खड़्या है कीं मिनख
रामू री किरिया करम सारू कीं वातां व्है
आपस में

च्यार कांध्यां रै कधोळै चढ़'र आवैलो
रामू—राजा री सवारी सरीखो
मैं उण रै साथै हो लेस्यूं
मरयोड़ो रामू म्हनै घणूं सोवणो लागै
म्हारो उण सूं घणूं हेत हो
मैं अरथी रै मांय सूत्या रामू सूं पूछूं—
रामू! तू कठै लग चाल्यो
थारा जमारा नै कतो'क सारथक करयो
ईं जग मैं जी'र कांई करयो ?
कांई समझ्यो, म्हनै वता ?

जद रामू हांस्यो
उण रै काळै सूत्योड़ा चेरै नै निरख'र
म्हारै हिवड़ै में अेकर पीड़ उठी
उण री हांसी सूं मैं डरग्यो

मैं सोच्यो ओ आज हंसै है
वीयां तो सदा रोतो रियो
जदै रामू वोल्यो–
खमाघणी–जजमान
म्हारो कांई चालणो अर कांई थमणो
कांई म्हारो जीणो अर कांई मरणो
मैं तो अरथी रै मांय जलम्यो अर
अरथी रै मांय जूण काटी
मैं कांई दुनियां देखी अर कांई काम कर्‌यो
मैं नी गयो कदे परदेस
ठाकर री हेली ताईं वेगार करी
साहूकार रै खेत मांय व्याज रो निनाण कर्‌यो
मन्दिर पासी म्हारी लुगाई मीरां वणकै नाची ही।
तड़काऊ कै उठकै न्हाती चन्दण घणो लगाती ही।
म्हैं तो म्हारै दुक्योड़ा मंगरा माथै वेगार
लाद'र गांव नै इज गोरधन मान'र
फेरी करी।
मैं जद उण सूं पूछ्यो–
कतो कमायो
गांधी तो थारा भगवान हुयग्या
राम-क्रिस्न भी थारा हुयग्या
वो वोल्यो–
देस रै मांय कांई धन निपज्यो म्हनै ठा नीं
आं झूंपा रै मांय जूण खोई
खीचड़ी सूं पेट लिवाड़्यो
सरीर नै गाभा सूं ढक्यो नीं
राम-क्रिस्न नै कुण नेड़ै आवण दिया
गांधीजी महाराज नै तो वीच में वोच लिया
म्हारो तो गूगोजी महाराज भलो
मैं तो कदे न पिछाण्यो

मिनख जमारो
न हाल्यो न चाल्यो
जजमान ! पगां री जूती माथै कियां

चढ़ सकै ही
रामू री वात सुण'र
म्हनै कलकत्ते अर वम्वई रै
मांय देख्योड़ो अेड़ो इज मुरदो
याद आयो.
उण री आंख्यां में तिरै हा
अभावां री अणकथीजी कथा
जद मैं सोचण लाग्यो
आं रै घरां दिल्ली री जमुना
कींयां आवै, कद आवै।

गुमान

—कमला वर्मा

विरथा है
परवत थारो पोमीजणो
के थारी ऊंचाण री ताण
निचाण नैं मिळै—
नदी नाळा झरना
अर सुरक्षा रो भरोसो ।
पसरयोड़ी जमीन ने
घणो गुमान है
गै'र गम्भीर खुद रैं मन री
गैराई रो
जिण में दबियोड़ा
केई ठण्डा मीठा झरना
अर सुरक्षा खातर
लुकायोड़ा ज्वालामुखी ।

म्हारौ मिनख

—पुरुषोत्तम छंगाणी

पीड़ रै पालणै
रींकतौ पळै
म्हारौ मिनख
निसासां री डोरी
रंग्योड़ी चोभां सूं
खींचै वखत रा काठा हाथ
कुण्ठा रै झोटां
सिमटता-घटता
विसवासां रा घेरा
अमूंझ रै वांथीड़ां में
फंफड़ीजतौ अळूंजै
म्हारौ मिनख

अवखाई रो क्रंदल
चीसां आक्रोस री
तड़फ भुगती री
घणी करै—छटपटीजै
पण मिस्लावै—विलमावै
रमकड़ा यथारथ रा
अर लाचारियां सुणावै है
अरथाऊ लोरियां
डुसकां रा बुदवुदा
कित्ताक जी सकै ?
पीड़ पालणै री

सैं धड़कणा भी–सांसां भी
उमर रै झरोखां सूं
अरथियां रो मजमौ
निरछै है
म्हारौ मिनख
रींकतौ पळै है
म्हारौ विनख ।



हाल बाचा बंद रात घणीं ई बाकी है

—बाबूलाल सरमा

हाल बाचाबंद रात घणीं ई बाकी है
अर मैं पाखण्डां में लिपट्यो
थोथा टांचां री ओळखाण में लाग्यो, हू
सोचूं हूं खुद रै पैदा होणैं री नुमाइस नैं
कीं मावड़ी जीयाणूं जीव भी,
कत्तो सूगलो हो सकै है।
अलवत्ता आ न्यारी बात है, क
भीतां कै सारै जीवंण री
कोसिस जारी है 'क
कतरो हत्यावां रै पाछै
आ जिन्दगी पायी है,
अर खून रा जोड़ में
आदर्सां रा महल
सैलानियां री बाट जोवता
खड़्या रहसी 'क
हाल बाचा बंद रात घणीं ई बाकी है
कीकर सूं कट'र आती चांदणी सूं पैदा
नीम री छाया नैं लीलती
चौबारा री भीतां अत्ती नजदीक आग्गी
कि ताबूत बणगो
हाल मांटी बणवा में भोत देर है
मन्नै बेरो है मरवाळां री लिस्ट रो
मैं खुद सरजाम करूं हूं जिन्दगी री ऊब रो

मौत तक जावा रो नांव जिन्दगी है।
लोग बोल्या
'भगवांन री मर्जी ही भाई'
अर घूघू सुणी'क
हाल वाचा बंद रात घणीं ई बाकी है।
अेक हळवळाट पछै
सो क्यूं थिर होगो
पड़ोसण रा सूं गांव रां छटेल चलेगा.
काकी यूं मिलवा आयी छोरी
घरां जा'र मा-कनै रूगी
जिन्दगी पर दांतां री पकड़ गाढ़ी होगी
अेक गिच्ची गिच्ची ऊसास
म्हारै कन्नै तिरगी
जद'क, बूढो बागवान
बगड़ावतां री ख्यात खतम कर
सात रिष्यां पर निजर गेर'र बोल्यो
हरे राम !
'हाल वाचा बंद रात घणीं ई बाकी है।
हळवोड़ी सांसां सूं बणी
ऊकळ्या पीती ऊं'आट
सिराणां रा मैला तकियां पर
पांख टेक'र डटगी
अर अे'क चुपकी बात
दावणां में लुखगी 'क
आंसू आवा रै पैली
वां नैं देखण हाळा रो
होणो भोत जरूरी है
जद'क देखण हाळो सो गो
चूट'र'''''क
हाल वाचा बंद रात घणीं ई बाकी है।

घोळा घोळा चिकन्दां सूं चिकतायगो
गुलाव
बदरंग म वद देखवा, खुरच'र देख्यो तो,
सणकायगो –
खून का गलका पड़्या हैं ।
क्रांति री नींव में, क्यूं तो हत्या होगी
क्यूं हैं बाकी—
(ज'की पाछै करल्यां ला)
थोड़ा सा मसखरा लोग
रेसमी कुड़तां-तळै, कवच पहर्यां
चाल'र्या है
नारा लगाता, दकाला करता
वां'की हत्यावां होबो तै है
नांई फेर
बचेड़ां नै समझावैलो कुंण....
खंखारां री वदवोय निगळता
टूटेड़ी चूड़्यां नै रूंदता
मोड़ रा मूंतखाना में टींगर उपजगा ।
लोग वाड़ में मूंत'र वैर काड़गा
जल्दी क्यां री है
हाल बाचा वंद रात घणीं ई बाकी है....!



अेक पल रो सुख

—सांवरमल दायमा

मन रै मांय उमगती
थारो छींया
जिया नितरचोड़ै पाणी रै चवळियै मांय
अेक साफ पड़छींयां
म्हारी दीठ सूं लूंवतो
थारो सगळो सगळापो
नी लागै दूरी अर टैम री अड़वार
हवा नी रोक सकै
थारी आवाज।
म्हारै सामै अनोखो टेलीविजन चाल रियो है
घणीं दूरां सूं सुणै
थारी मुळकती रागळी
कुचमादण मुळक
रोजीना रो गांगरत
मीठी सी झाळ मनरी टूंकाळ्यां
मरोड़ नै साजै
अेक करंट सो आवै
अर रूंग-रूंग रै मूंडा सूं
विजळी चमकै
पण फेरूं लखावै अेक सुख
साव अेक पल सारू।



ओळै दाळै निरखूं गांव

—जुगल सरमा

गोळालाठी लाग्योड़ो सो
अकड़ीजतो उगमणो सूरज
रोजीना आ ज्यावै अर
तपण लागै खंखारा करतो तावड़ो
खींपा छायोड़ी
सांवळी छानां माथै।
फूट्योड़ै चूल्हां माथै
ऊकळीजै पाणी हांड्यां मांय
पीतळ री थाळ्यां सूं उठै
ताती भाप रा गोट अर
घांसी लेवंता डैणा—
चरड़ ̋ चरड़ ̋ ̋ चरड़ ̋ ̋।
दोपारी रो सरणाटो—
सूखा खेजड़ा हेठै
नाड़ पसार्योड़ी-उगाळी सारतो
भूखी गायां, भैंस्यां
सूखी खेळ माथै
कटवड़ावंतो रेवड़
फिरास ऊपरां
लुकमीचणी खेलता छोरा अर
सैं ऽऽसैं ऽऽ सैं ऽऽ करतो वायरो।

दूव सरीखी ऊजळी वासी च्यानणी
फड़फ़ड़ाता पींपळ रा पान
रोवता वोदा कुत्ता
गुदड़ां मांय दापळचोड़ा डैण
अक्खों ˜ ऽ˜˜ऽ अखों....ऽ....ऽ.. अक्खों · ऽ ˜ऽ ˜।
ठग्योड़ो सो
ओळैं दोळैं निरखूं सैंग चितराम
मन ऊपरां डणीजैं मिटीजैं तैंल चित्र
अर डील में भरीजैं चरूंटिया सा ।



चोपाटी

—उमेस भारद्वाज

समंदर
ज्यारणू आदमी रो फैल्योड़ो दिमाग
उण रै किनारै बैठ्या लोग
लियां भांत-भांत रा रोग
भीड़ रा उफनणता कांधा
अर कारां री दौड़
कंठ मोसता रोळा रबदा नै
अरग देवंता मिनखां रा ठंडा हीया
नियोन लाइट रा रंग विरंगा पळका
दिन री तपस नै मोरता
सांझ
समंदर रै किनारै जवानी नै अंवेरती सांझ
कळकळीजतै मूंडा पर
सांयत रो हाथ फेरती सांझ
आ चोपाटी
चार पट्टी व्है झाला मारै
गरीब अठै आय'र पग पसारै
अमीरी रा नखरा पल दो पल
मौज उड़ावै
च्यांरूमेर पाणी अर माटी है
आ बम्बई री चौपाटी है ।

सलमा धोबण

—भागीरथसिंघ भाग्य

कब्रीस्तानां में वीं कूण हाली कबर कानी आंगली उठार वो बुढो कैयो–बेटा वा कबर सलमा धोबण री है। सलमा अेक भांडयोड़ी लुगाई ही। कैय नै सलमा धोवण रै जीवण रो सारो लेखो जोखो म्हारै सामी नांख दियो।

रामदैयी रो टाबर रोवण लाग्यो तो बोली–बुलाऊं सलमा धोबण नै, कान काट लेसी। आ सुणता इज वींरो टाबर रोवतो अेक दम चुप व्हैग्यो। लोग कैवै सलमा धोबण डाकण ही। हर सनीवार री रात नै वा जरख पर चढ़नै जाती अर आखी रात बावड़ी पर बैठी मंतर बांच'र बिता देती। अर भांझर कै सी क फेरूं लुगाई रो भेख बणा लेती। सलमा धोवण ही'र चलीतर हा। कासी आपरी आंख सूं देखी है। लाटै मांय सूत्यै नै जरा सो'क पळको पड़्यो तो तीन दिन तक बोती मांय घस्त कर्‌या नै बुखार मांय बरड़ातो रैयो उघाड़ी है कुण है ? उघाड़ी कुण ?

बंजरग रै घरां लगातार सात दिनां तक बिल्ली बोलती रैयी। आठवें दिन सिझ्या वीं रो दोय बरस रो छोरो हाथां मांय आग्यो। वीं दिन पाछै बिल्ली बजरंग रै घरां नीं आयी।

बस्तीराम पंचायत रै बीच मांय कैयो–जमाल री लुगाई बांझड़ी है। जै दिन उग्यं पैली वीं रो कोई मूंडो देखले तो सिझ्या तक रोटी नी मिलै। म्हानै तो अेक दिन कुदरसणी रा दरसण व्हैग्या, सारै दिन ग्यारस करी।

सगला मिनख खिल खिला र हांस पड़्या ! कैवो चावै क्यूं भी, बस्ती म्हाराज है वीर आदमी। चुगली करण री आदत कोनी। जो बात कैणी है मुंडै ऊपरां कैवैला चाहे व्हीनै भली लागो या बुरी।

घरां आतां इज जमाल आपरी लुगाई नै आडै हाथां ली। भाळ मांय वीं रो मुंडो लाल व्हैग्यो। वो जोर जोर सूं कैयर्‌यो हो, हथभागण जै तूं म्हारै पल्ले नी बंधती तो म्है अब तक तीन चार टाबरां रो बाप व्हैग्यो व्हैतो। बस्तीयै रा बोल अब भी म्हारै मन मांय सूळ गडोवै अर सुखियो जिण बात नै बर बर मांय क़ैयर्‌यो हो

वीं नै सुणैली तो ठा पड़ला'क बजरंग रै बेटै नै तूं खायगी, बिल्ली वण'र ! निकळज्या म्हारै घरां सूं अबार । अैड़ै परथावै सूं तो कुंवारा भर ज्याता तो मुसळमान खुदा अर हिंदू भीस्म पिता कैंवता । सलमा रोंवती रैयी बिलखती रैयी पण जमाल पर इण वातां रो कोई असर नीं हुयो ! वो आपरी धोवण नै धक्का मार'नै घरां सूं निकाळ दी ।

सलमा भी आखिर लुगाई री जात ही वीं रै मन मांय रंजस बड़ी व्हैगी । क्यूं'क वीं नै जोरामरदी बदनाम करी गयी ! वा आव देख्यो न ताव–गुवाड़ मांय रमतै सुखियै रै छोरै रा कान काट लिया अर नित हमेस रै खातर वा आपरो सासरो छोड़'नै किणी गळियां मांय रूळगी ! अर अैड़ी रूळी'क आज तक पूठी नीं वावड़ी ! पण आपरै लारै अेक कैवती छोड़गी ! अब जद कदै भी टावर वखत सिर नीं सोवै अर रोवै तो वां री मांय आ इज कैवै—रोवैला तो सलमा घोवण जरख पर चढ'र आवैली अर कनियै री ज्यूं तेरा भी कान काट लेसी । टावर रोंवता रोंवता अेकदम चुप व्है ज्यावै । आंख मीच'र सो ज्यावै नै मीठी नींदां गम ज्यावै ।

घणाकरा लोग तो आ इज कैवै सलमा धोवण मरगी अर कई कैवै, मरती कठै सूं आगलै चैत मांय पैंसठ वरस री हुवैली । पण वींरो कोई खुर खोज आंधी रै साथै भी उड़'र इण गांव मांय नीं आयो ! खैर....

बियां तो गोवड़ी अर सरोठ री दूरी बीकानेरी तीन कोस री है पण गोवड़ी रा टावर जद सरोठ पढण जावै तो घंटा री चाल मिन्टा मांय पूरी करै ! बात आ नीं है'क बधतो खून है सांची वात तो आ है'क गोवड़ी सूं डेढ कोस रै आंतरै ऊपरां अेक तळाव अेक कुण्ड अर प्याऊ है । आज सूं तीस पैंतीस वरस पैली अेक वावाजी इणी ठौड़ ऊभा होय नै पेमाव कर दियो वीं रै पाछै इण गांव मांय काळ नीं पड़्यो अर वावाजी खेत रै मांय काम करतै गणपत रै दोय थप्पड़ जचा'र मार्या नै आपरी डाढी मांय सूं दोय वाळ फाड़'र वी रै हाथा मांय धर दिया !

बोल्या—मूंडो कांई फाड़ै है ! संता रो बाळ बुद्ध ग्रह तक कांम आवै ! जा तेरै नौवै म्हीनै दोय छोरा व्हैला ! वां रा झड़ूला अठै इज उतारिये !

गणपत थाप खा'र घरां चल्यो गयो । पण साय कुदरत रो खेलो देखो गणपत रै नौवैं म्हीनैं दोय थाळ वाज्या । अब देखो गणपत रो रंग, आखै गांव मांय हूंडी पिटवादी ! लोगां रै अैड़ो भैम बड़्यो'क थाप खावण नै वावाजी 'र धूणै

ऊपरां भीड़ लागगी । पण बाबाजी दुबारा थाप नीं मार्यो ! बै तो मन रा पक्का मौजीराम हा । वो तो गणपत इज तकदीर हाळो हो !

लोगां बाबाजी रै पेसाव री ठौड़ तळाव बणा दियो । टाबरां रा झड़ूला भी वठै इज उतरै लाग्या । बाबाजी अैड़ै छेड़ै रै गांवां मांय थरपीजग्या ! पण म्है जाणूं वीं बाबाजी री पोल बो बाबाजी आज तक चाळीस चेल्यां रै साथै रात नै हरि कीरतन अर दिन मांय धोपारिया कर चुक्यो ! दर असल वो बाबाजी आपरो धरम भी बदळ दियो । विंया वो म्हारी इज जात रो हो !

भैम री दवा तो लुकिमान कन्नै भी कोनी, दूसरै जात रै घड़िया मांय तो लोग पाणी पीवणो भी आपरो धरम भिरस्ट जाणै अर वी मोडै रै मूत नै तीरथ मानै ! जिण सूं वात करां, सीधो कंठ पकड़ै ! केसू भारती सूं तो वात करणो इज वेकार है ! वो तो कैवै'क गांधीजी मरग्या अर म्हारै कानी आंगळी करग्या ! नौ किलास कांई पढ लियो अपणै आप नै दादो भाई नोरोजी समझै लाग्यो !

तळाव रै छेड़ै ला.रलै सैंतीस अड़तीस बरसां सूं सलमा धोबण लोगां नै पाणो प्यावै नै धरम कमावै ! सलमा धोवण रो पग फेरो इग गांव रै खातर खुदा-वक्स रो काम करग्यो ! सलमा रै दोय वरस पाछै इज इण गांव मांय बाबाजी परगट्या । सलमा नै दोय वखत री रोटी तो गांव सूं मिल इज जाती । आंधै नै कांई चाये, दो आँख्या । ' वस ।

सलमा धोवण रो चरित्र कदे सूं भी अैड़ो नी हो जिण ऊपरां सक करयो जावै ! पण गांव जद लारै पड़ज्या तो भलां भलां री ढाणी उठ ज्यावै नै बींटा बंध ज्यावै !

—इती वात अेक सांस मांय कैय नै वो बुढियो अेक लाम्बो सांस लियो अर बोल्यो—तेरो सत्यानास जावै जमाल तेरो । खुदा करै तेरो दरगा मांय काळो सूंडो हुवै ।

म्हांसू नी रुक्यो गयो ! म्है बोल्यो—फेर बाबा ?

—फेर दिन रो ! सलमा तो विचारी भली लुगाई ही ! गोवड़ी रा सारा मिनख वीं रो आव भगत करता ! टावरां रै सागै सागै बुढा भी सलमा नै दादी डोकरी कैवण लाग्या । टावरां नै नित नई कहाणी सुणावण रो चाव दादी डोकरी मांय इज देख्यो गयो ।

चौमासै री रुत मांय बगता मुसाफिर दादी डोकरी नै ककड़ी, मतीरा, फळी दे ज्यांवता पण दादी कदे भी बैठ'र अेकली नी खांवती ! सिंझ्या जद इस्कूलिया टाबर पढ नै पूठा वावड़ता तो वांनै इज बांट दैवती।

टावरां नै नेड़ै देख'र दादी डोकरी नै कित्तो हरख व्हैतो आ बात सो सारो गांव जाणतो। जणा इज तो वठै अेक नुंवी कैवत जलमगी। गोरली रो टाबर रोवण लाग्यो तो वो बोली—

—बुलाऊं दादी डोकरी नै ! कहाणी सुणावैली ! आ सुणतां इज वी रो टाबर रोंवतो रोंवतो अेकदम चुप व्हैग्यो।

लोग कैवै दादी डोकरी तो देवी रो अवतार है। हर मंगळवार नै आखी रात भजन गांवती रैवै।

—तो कांई बावा, दादी डोकरी भी.....

—हां बेटा, दादी डोकरी भी आपरो धरम बदळ लियो।

बूढो फेरूं बात रै गांठ दे'र बोल्यो—सांवळ आपरी आंख्यां सूं देखी है ! गेलै बगतै जरासो पळको पड्यो तो अेकदम बदळग्यो। पैली तो अेक बात बोलतो तो आठ गाळी सागै काढतो, पण अब 'पिरभु मोरे अवगुण चित न धरो' री टेर रै सिवा....

सांवळ पंचायत रै बीच मांय कैयो— दादी डोकरी रै डील मांय अब वा ताकत नी रैयी है'क थानै कुण्ड सूं पाणी निकाळ'र प्या देवै। कोई भाई ओ धरम कमावणो चावै तो कमाल्यो ! मोको फेर नी है ! बिड़दु मन मांय सोची आपां लारलै कातिक पाछै धरम नी कमायो है ओ बीड़ो तो चावल्यां ! उठ'र बोल्यो—ठीक है' काल सूं दादी डोकरी री प्याऊ मांय म्हैं पाणी भर देवुंला।

दादी डोकरी आपरै बावत अैड़ी बातां सुणती तो मन इज मन राजी व्हैती वी नै इण बात री खुसी इज'क वा आपरै लारै री झूठी बदनाम्यां सूं निस्तारो पाती जावै !

अैड़ो रैवैयो दोय बरसां तक और चाल्यो। दादी डोकरी नै भैम इज नी, पूरो विस्वास व्हैग्यो'क वा लारली सै बदनाम्यां सूं बरी व्हैगी है। क्यूं'क जद भी टाबर बखतसिर नी सोंवता अर अळबाद करता तो वांरी मांया आ इज कैवती—सोवै है'क बुलाऊं दादी डोकरी नै, कहाणी नी सुणावैली अर न इज मतीरा देवैली। आ बात सुणता इज टाबर चुपचाप आंख मूंद'र सो ज्यांवता !

पण श्रेक दिन

—हां, श्रेक दिन कांई बावा ?

—श्रेक दिन श्रेक दिन दादी डोकरी फेरूं सलमा धोवण व्हेगी !

– हूँऽऽऽऽऽ ?

– दादी डोकरी री प्याऊ रै छेड़े झड़्लियो तळाव । बावाजी री किरपा रो परसाद । टाबरां रा झड़्ला बठै इज उतर्‌या करता । वीं दिन परतु झड़्लो उतरावती वेळया रोवै लाग्यो तो वी री मां कैयो—

रोवैला तो दादी डोकरी कहाणी नी सुणावैली । काचर भी नी देवैली !

परतु रोवतो रोंवतो श्रेक दमें चुप व्हैंग्यो ।

दादी फूली नी समाई, वा भाग'र प्याऊ मांय सूं मोरण ल्यायी !

श्रेक श्रदखड सो जुवान····कनियो !

जीरा दोन्यूं कान कट्योड़ा । स्यात श्रापरै टाबर रो झड़्लो उतरावण श्रायो हो ! दादी कानी श्रेक टक निजरां गाड राखी ही ! श्रर वी रै स्हारै बैठी वी री लुगाई श्रापरै रोंवतै टाबर नै कैय री ही—रोवैला तो सलमा धोवण जरख पर चढ'र श्रावैली श्रर तेरै बापु री ज्यूं तेरा भी कान काट लेसी । टाबर रोंवतो रोंवतो श्रेक दम चुप व्हैंग्यो ।

दादी डोकरी रो मोरण जमीन ऊपरां बिखर नै रैयग्यो । वा पाछी प्याऊ मांय गयी श्रर·· दूसरै दिन सूं दादी लापता । श्रर वो बावाजी भी दूसरै दिन श्रापरो धूणो छोड़ग्यो··!··· बस श्रा इज कहाणी है !

—बावा ?

– हूं !

—दादी डोकरी स्यात बावाजी रै साथै·····

– नी बेटा, तनै सुण'र श्रचम्भो व्हेलो दादी डोकरी श्रर वो बावाजी तो जितरा दिन श्रेक ठोड़ रैया श्रापस मांय बोल्या भी नी ! दादी डोकरी बावाजी रै साथ नी भागी !

—तो ?

—श्रागै सुणणो न तो तेरै हित मांय है श्रर न इज म्हारै !

—नीं बावा, थानै बतावणो इज पड़ैला । बावो बात टाळतो रैयो पण म्हे भी जिद्द पकड़ली ।

आखिर मांय बावै नै वतावणो ईज पड़यो, बोल्यो, तो बेटां सुण—दादी डोकरी री ल्हास सातवैं दिन चूंळी भर री वणी मांय बावाजी नै मिली। वा भूख अर तिरस सूं तड़फ तड़फ'र मरगी ।

—तो वो बावाजो ?

—वो बावाजी वींरो धणी हो !

—जमाल ?

—हां बेटा जमाल ! जद वो गांव हाळा नै पिछाणै लाग्यो तो वीं रै घणो पिछतावो हुयो । वो आपरी धोवण नै ढूंढण निकळयो ! पण सलमा नै अंड़ी सुखी देख'र वीं री हिम्मत नीं हुयी'क वो वीं सूं वतळाले ।

अब तो जिनगाणी मांय अेक इज मनस्या बाकी हैं वीं री कबर ऊपरां सिझ्या दीवो चासतो रैवूं ! अर खुदा सूं आ इज अरदास करूं क म्हानै अंड़ी ठोड़ म्हारै जठै पाणी भी नीं मिलै ! अर म्हारी ल्हास म्हींना तक सिड़ती रैवै ।

—क्यूं ?

—क्यूं'क म्हारो इज नांव जमाल है !

—हैं ऽऽ ! ज मा ल '' ! म्हारै मन मांय कांई भाव निपज्या नी वता सकूं ला बस जाणो भावां रै जुवान नी ! पण दादी डोकरी री अंड़ी जिनगाणी ऊपरां म्हारी आंख्या सूं आंसू झरण लाग्या !

वो बूढो बोल्यो—रोवैला तो सलमा धोवण कान काट लेसी ।

सांची जाणियो म्हारा आंसू इतरो सुणतां इज अपणैं आप थमग्या ! आगलै छिण म्हानै म्हारी भूल रो ठा भी पड़ग्यो ।

पण जद वी वुढै री आंख्या मांय आंसू देख्या तो म्हारै मूंड़ै सूं अपणैं आप निकळग्यो ।

—बावा रोवौला तो दादी डोकरी कहाणी नी सुणावैळी ।

पण वीं वुढै री पड़ुत्तर सुण'र म्हे सुन्नो व्हैग्यो ! वीं रा आंसूं नी थम्या, टप टप झरता रैया ! अर वो कैवतो रैयो—नी, बेटा नी, न तो म्हानै कहाणी सुणण रो चाव है अर न इज म्है टाबर हू जिण नै अंड़ी बात कैयनै भुळावणो पड़ै ।

जद म्हे जाण्यो,दादी डोकरी हमेसां हमेसां रै खातर मरगी । पण जद जद भी टाबर रोवैला सलमा जी उठैली । वी री आतमा आपरी कबर रै अेड़ै छेड़ै इज चक्कर काटती रैवैली ।

रोड़ा तो फोड़्यां सरसी

—उमाचरण महर्षि

अन्तस री पीड़ा हमजोळी
ज्यूं असल नीम री नीमोळी
काची आ खारै जै'र जिसी
पाक्यां जाणै मिसरी घोळी
—बस्तीमल सोलंकी

वाजू थामणै थमवाणै री बात पाछै । पैल्यां लड़खड़ाता मयकशां रै लड़खड़ाणै रो कारण । बात वारुणी अर तरुणी री नीं, बात नीमोळी अर मिसरी री वी नईं । म्हारो मतलब राजस्थानी साहित्य रै नशीलै सोमरस पीवण हाळा सूं है जिका साहित्य रै मैखानै में आ'र लड़खड़ा ज्यावै । साहित्य रो सोमरस पी कर तो नप्या-तुल्या कदम राखै, सरपट भागै, अमर हो ज्यावै, नीमोळी नै मिसरी बणा सकै । लड़खड़ा नईं सकै । ईं रो कारण तो दूजोई दीसै । साफ बात बताऊं-आंगणै में, रास्तै में, इन्नै-बिन्नै रोड़ा पड़्या है । इण रोड़ा सूं टकरातां साहित्यकार रा चरण छुलग्या लहूलुहान होग्या । लड़खड़ावै नईं तो के कत्थक डांस करै ?

थारी बात सोळाना, सौ पीसा सही है कै आंख खोल'र पूरो चाक चौवन्द हो'र चालणो चाये । फेर साहित्यकार तो के साहित्यकारां रा पोता-पड़पोता तक नईं लड़खड़ावैला । पण साहित्यकार रो धरम-करम रास्तै चालणो ई नईं, रास्तो बणाणो वी हुवै—सो रास्तै रा भाड़-भंखाड़, रोड़ा-पाथर तोड़्यां-फोड़्यां ईं बीं री सारथकता हुवै ।

राजस्थानी भासा अर साहित्य री सुनैरी मंजिल ताणी पूगणो तो दूर, ईं रै रास्तै रै आरंभ में ई सबसूं मोटो रोड़ो अड़र्यो है राजस्थानी भाई-भैणां रो नजरियो । टाबर री नाळ काटतां सागै खाता-पीता राजस्थानी घरां रा लोग या चावै कै म्हारो टाबर अंगरेजी में इ हालै-डोलै, अंगरेजी में ई रोवै-हांसै अर अंगरेजी में ई

बोलै-चालै । टाबरां री सिच्छा-दिच्छा कानवेंट या पब्लिक स्कूलां में करावै। जीं सू आगै जा'र वी रो रुतबो वधै, आमदानी रा साधन वधै । जिका कानवेंट अर पब्लिक स्कूल रै खरचै सूं डरै वै बी या ई चावै कै म्हारो टाबर अंगरेजी नईं तो हिन्दी में वतळावणो तो सीख ई ज्यावै । राजस्थान में इसी कितणीक स्कूलां है ज्यामें टाबरां री शिक्षा राजस्थानी भासा रै जरियै होती हुवै ? भासावां सीखणो भोत आछ्यो काम है अर रास्ट्रीय भासा हिन्दी सीखणो-पडणो तो हर भारतीय नागरिक रो करतव है पण आपरी मां री हत्या कर'र दूजी रै गोद जाणो, कठै लग ठीक है ?

तो सवसूं पैल्यां आपां नै आपणै वारै में सोचणो है। आपां कद तक खुद सूं दूर भागता फिरांगा ? पैली समस्या तो खुद मिनख है–राजस्थानी लोग है—जिका आपरै राजस्थानी होणै पै गरब नईं कर सकै। 'जमानो कितणो बी नयो हो,' रिचार्ड लिविंगस्टन रै सबदां में, "असली समस्या तो मिनख हुअै, नई समस्या कैल्यो चाये पुराणी, क्यूं कै तथाकथित नयी दुनिया इतणी नयी नईं है । मिनख जूण गाबा वदळ सकै, सुभाव नईं वदळ सकै । आदम' किसी ई सोणी अर पेचीदी पोसाक पैं'र ल्यो, अर रवैगोतो वो ई 'आदम ।"

आपां, राजस्थानी लोग, कठै ई चल्याजावो, रैल्यो, क्यूं वी पैं'रल्यो, वोलल्यो–चालल्यो, रैवांगा राजस्थानी ई । सो क्यूं ना आपां आपणी भासा रो रुतवो वधावां ? आपां सौ में सूं अट्ठाणवै लोग घरां में राजस्थानी में वोलां–वतळावां पण राजस्थानीं में लिखणै-पढणै नै तो सौ में सूं साठ जणां सिर दरद सूं कम नईं समझां।

या ई वात राजस्थानी रै लेखकां (राजस्थानी भासा रा लेखक नईं) सारू—

अन्तः शाक्ताः वहिः शैवाः
सभा मध्ये च वैष्णवाः ।
नानारूप धरा कोलाः
विचरंन्ति महीतले ॥

राजस्थान रै हवा-पाणीं में सांस लेवणिया, राजस्थानी मोठ-बाजरो खावणिया, राजस्थानी भासा में लुगाई-टाबरां सू वोलणिया-वतळावणिया लेखक लोग राजस्थानी भासा में साहित्य सिरजन करणो मां सरस्वती रो अपमान समझै । वै राजस्थानी छोड़ और कई भासावां रा 'स्थापित साहित्यकार' कु'वा र्‌या है। पण आपरी निज्रू भासा खातर वां रै काळजै में कोई दरद–पीड़ नीं। राजस्थानी भासा में लिखतां वां री स्याइ री दवात ढुळज्यावै, कलम टूट ज्यावै या बजार में कागजा रो तोड़ो ई पड़ज्यावै ।

जीं देस में 'मातृ देवो भव' हो वीं देस में 'मातृ भाषा देवो भव' वी जरूर मानणो चाइजै। मा, मातृ भाषा अर परमातमा एक दूजै रा पर्यायवाची सवद हुअै। एक वात हूं ओज्यूं दुसराऊं कै पड़ोसी-विदेसी री सेवा करणो बुरो नई—भोंत आछ्यो है, पण आपरै मां-बाप कानीं सूं आंख मींच कर चाल पड़णो इनसानियत रै गैलारथी रो धरम नईं।

तळसूं-मळसूं करणै सू काम नई चालैगो। सांच कदै कदै कड़ुवो वी हो ज्यावै। ये कुतरक सुणतां-सुणतां जुग वीतगा—राजस्थानी इज नॉट ए लैंग्वेज एट ऑल। इट्स ऑनली ए डायलैक्ट''राजस्थानी के पास अपना कोई शब्द भंडार नहीं है—कोई क्या लिखे ? इस भाषा में म्हूं को तो अभिव्यक्ति और सम्प्रेसणीयता के कोई चांसेस नजर नहीं आवै है

भाई लोगो! परमब्रह्म परमातमा कुणसी भासा मिनखां री मुट्ठी में मार'र वोल्यो कै थानै ईं विसेस भासा में साहित्य रचणो पड़ैलो नईं तो सुरग—मोच्छ री पासपोर्ट वीसा वन्द कर देऊला। अर कुणसी भासा सारू सवद, कहावतां'र मुहावरा सावण-भादुवै मांय मेंसागै वरस्या हा ? भासा नै वणाणो, संवारणो अर सजाणो तो लेखकां रै वित्तै रो ई काम हुवै ।

राजस्थानी भासा रो लेखक तै नईं कर पावै—मारवाड़ी में लिखां कै ढूंढाड़ी में, हाड़ौती में लिखां कै वागड़ी में, मेवाती में लिखां कै उण में ईं इण में—उण में जूण पूरी करणै सूं पैल्यां राजस्थानी भासा रै समंदर सूं गळै मिलती इण नदियां नै वी निजर भर कर देखणों—समझणो सवदां रै चितैरा रै हक में हुवैलो। गंगा नै दिसा वतावणियो वी आगै-आगै चालै हो। नईं तो वा दगदगाती नदी परळै मचा देती, कै तो जठै तक जाणो चाइजै हो वठै तक नईं जा पाती, कै जको उपकार वा आज कर पा री है वो नईं कर पाती। कैणैरो मतलव यो है कै इण सांपरत वोलियां रो सांगोपांग विसलेसण, वैग्यानिक अव्ययन अर संसलेसण-समनवय करणै रो वीड़ो ठा'र आं री एकरूपता टो'र एक इसी राजस्थानी भासा रो निरमाण करणो पड़सी जिकी राजस्थान री च्यारूं दिसावां छू सकै अर सांपरत राजस्थानी लोग वी में लिख पढ़ सके।

लेखकां रै सामै तो सवसूं मोटो रोड़ो पड़्यो है प्रकासन रो। किला-टणा कागज जै राजस्थानी भासा में काळा कर वी ले तो छापै री मसीन री स्याही रो पक्को रंग चढणै रो ई सांसो। इण्या—गिण्या तो छापा—वा में वी मरुवाणी, 'ओळमो', 'दीठ' हरावळ, जागती-जोत जिसा सुद्ध राजस्थानी भासा रा छापा तो आंगलियां माथै गिण्या

जा सकै। अर पोथी ? राम भजो ! कुण प्रकासक आपरै दीवाळियै नै न्यूतै ? खाली राजस्थानी रो लेखक हो'र घर-गिरस्थी में लूण-तेल-लकड़ी री जुगाड़ ई को कर सकै नी। मोटा पुरस्कारां री वात तो जाणद्यो, मीनताणो तो हर चीज में चाये।

लेखकां री आसा कै'ल्यो या इच्छा 'कै वै साहित्य-लिस्टी में आपरी पिछाण-ओलखाण चावै। लेखकां री एकमात्र प्रेरणा तो वां रा पाठक ई हुवै पण समीक्षक आलोचक ई वांनै सही पिछाण-रिकाग्नीशन—दे सकै। यो राजस्थानी भासा रो वढोतरी काल है सो समीक्षकां नै ईं में योग देणो चाये, रोड़ा वण'र अड़ ज्याणै री शान वधारणै में के धर्‌यो है ? समीक्षकां री खरी-खारी वातां लेखकां रो उछाह वढावै, लिखणै खातर नुयो जोश देवै। पण जद समीक्षक लोग आपरा निजू थोथा खयाल, रूढ नजरिया अर अधकचरी भावनावां रै मापदण्ड सूं सिरजन नै तोलण लाग ज्यावै वो तो सुकरात अर मीरा सारूं भर्‌योड़ै दूध रा प्यालां में जहर मिलाणै स्यारसो हुवै। पुराण पंथी समीक्षक जद नुअै साहित्य रो मूळ भाव पकड़ नईं सकै जणा किनारै वैठ्या पींदै री टो लेणै रो सांग भर आपरै जंग खायोड़ै अनुभव अर घणी लाजवंती कलम सूं यो निरणै थोप देवै—'आं पात्रां में,' कहाणियां री समीक्षा में वै लिखै, 'कोई लाज-सरम को हुवै नी, (सरम तो आ'रा चरित पढ'र पाठकां नै आवै) प्रयोग रै नांव माथै चालण वाळै इसे सूगलवाड़ै सूं संसार री सगळी भासावां ने वचणो चाइजै।' ईं उदाहरण सूं साफ दीसै कै समीक्षक कोस्ठक वन्द वाक्यां में सरमातो वैठ्यो पाठकां नैं भेड़ समझ'र कै'वै—म्हू तो सरमाऊं, थे वी सरमाओ क्यूं कै थे नईं सरमाओगा तो वो थारो ठेकेदार वण'र म्हूं खुद ई मुनादी फेर देऊंला कै 'सरम तो आं रा चरित पढ कर पाठकां नै...'

तो सीधी सी वात है—समीक्षकां नै समीक्षा करती वखत सांपरत पाठकां री ठेकेदारी करणै में समै वरवाद न कर आपरै काम सूं काम राखणो चाइजै क्यूं कै लेखक सिर्फ समीक्षकां तांई नी लिखै। वो तो पूरै समाज रै रूप-रंग-धव्वा-चकता रो चितेरो हुवै।

हां जी, कुछ लोग राजस्थानी साहित्य री नाव रा नाखुदा खुद नै समझण लागग्या जिको सवद वै घड़ दै वो सही अर वाकी सव गलत, जिको वाद या लिखणै रो ढंग वै मंजूर करै वी सूं अलावा और कुछ होई नई सकै जी। 'म्हारो म्हारो दूध—थारी-थारी छा' रा नारा लगावणियां सूं 'राजस्थानी भासा री रिच्छा करणो लेखकां अर पाठकां रो करतव्य ई नईं अधिकार वी है।

राजस्थानी साहित्य नै पढणो सिर दरद, पोथियां नै खरीदणो फिजूल खर्च अर वी पर सोचणो-विचारणो समै री बरबादी समझणियां पाठकां खातर लेखकां रो करतब हुवै कै वै पाठकां री मांग अर रुची रै मुजब, भासा री मांग रै गैल, जमानै री मांग रै गैल नयी बानगी, नया व्यंजन लेख, कविता, कहाणी, नाटक, रपट, अनुवाद, रेखाचित्र इत्याद–धड़ल्लै सूं सिरजै। पाठक वी आपरी मायड़ भासा खातर इसो तो काम करै कै वै इसड़ो माहोल त्यार करण में मददगार साबित हुवै कै लेखक अर पाठक एक दूसरै नै ओपरो मैसूस नईं करै। लेखकां-पाठकां री जोड़ी ई भासा अर साहित्य, समाज अर संस्कृती रो संगम करा सकै। जोड़ी नही हुवै तो—

गाड़ी पड़ी गुवाड़ में,
पगां उभाणी जाय
बेटी बैठी बाप के,
को चैला कुण दाय।



भणो अर गुणो

—अर्जुनसिंह सेखावत

राजस्थानी में का'वत है कै 'घोकत विद्या अर खोदत पाणी !' मतलब के पढ़ण रै पछै उण माथै सोचणो, विचारणो, मनन करणो मंथण करणो अर उणरै बल बूता माथै नुवां विचारां नै जनम देणो जिको जमाना री मांग पूरी कर सकै, कोई भी बात घड़ी घड़ी घणी गे'राई में चिभकी मारां, टुण्डे पूगा तो मोती हाथ लागै खाली पड'र परीक्षावां पास करनै डिगरी लेवण रो नांव पढ़ाई नी है । सूमटा ज्यूं रट नैं बोलणो के लिखणो विद्या कोनी । जिको भी ज्ञान वकस्यो जावै वो बुद्धि में पचणो चाइजे अर वो करम नै आचरण में उतारणो चाइजे, चरितर में ढळणो चाइजे । मोटा मोटा भाषण देणा अर वडा वडा लेख लिखणा, मामूली बात है पण उण माथै चालणो खांडे रो धार है । मिनखां री प्रकृति कैई भांत री व्है, उणानै ज्ञान रै हिसाब सूं तीन पंगत में बांट सका हां—बुद्धिमान, विद्‌वान अर ठोट ।

बुद्धिमान उणनै केवणो चाइजे जिण में कुदरत सूं काफी सोचण समझण री दिमागी-ताकत व्है, वे आपरी गांठ री अकल हुसियारी सूं सोच-समझ सकै । थोड़ा-सा ईसारा में वोत कुच समझ सके । बिना पढ्‌यां भी वांरी अकल भोत कुछ काम कर सके । गामड़ियां में सैकड़ां इस्यो प्रतिभावां हुई जिणानै सिक्सा दीक्सा रो मौको नी मिलण सूं मुल्क नै लाभ नी वे सकियो, नीतर सैकड़ू गांधी, रविन्दर अर तुलसी जैड़ा विद्वान व्हेता ।

विद्‌वान उणनै केवणो चाइजे जिणरी बुद्धि विद्या पढ़ण रै पछै जागै अर अकल उपजै, नुवां ज्ञान रे अनुभव अर कमाई रै पांण समाज री सेवा करै । ठोट उणनै केवणो चाइजे जिको पढ़ाई रै बाद भी जिणरे कांई पण पल्ले नी पड़ै अर अकल भी पूरी तरै कांम नी करै । इण सब बातां रे लारै भी पाछलै जनम रा संस्कार भी काम करै । मारवाडी में कैयां करै है के बिना कैया हियारै उपज सूं जो कांम करै

वो देवता, कैया पछै करै वो मिनख अर कैयां पछै भी नी करै वो महाठोट भोट नै हफोल ।

इण खातर मास्टरां रो फ़रज है के वै आपणै मुलक री नुंवी पौध नै ज्ञान री गंगा री पांण सूं सींच'र चोखै सूं चोखो फल देस अर समाज रै सामै निजर करै। मास्टरां रो श्रो काम कम नी है। पुरानी का'वत के 'सोटो वाजै घमघम नै-विद्या आवै घम घम' पण अवै वो जमानो नी रियो। मास्टरां अर टाबरां रै माय बाप रो फरज है कै वे इण बात री बराबर नित नित जांच करता रेवै कै जो कुछ भणायो है उण मुजब वो टाबर हालै भी है के नी। बरमराज रै ज्यूं विद्यार्थियां नै भी विद्या घोक'र आपणे आचरण में उतारणी चाइजे, खाली पोपट ज्यूं रट्योड़ो ज्ञान कांई काम रो कोनी। ज्ञान ने बुद्धि में पचावणो, नुंवा अरथ उगावणा अर नुवां जमाना अर टैम ने देखनै ओसर रे मुताबक नुवो परयोग करणो चाइजे, जद देस री भूख भागै। भूख भी तीन भांत री व्हे-पेट री भूख, बुद्धि री भूख अर आतमा री भूख।

पेट री भूख नित रोटी-बाटी खावण सूं बुझै। दिमाग (बुद्धि) री भूख नित पढ़ण सूं बुझै अर आतमां री भूख नित परमात्मा री प्रारथना सूं बुझै । जिण भांत आपां व्यालू करां तो वो जद सफल व्है जद भोजन रो रकत-मांस आपांरै डील में बण जावै इणी भांत भणियोड़ी बात जद फळै जद वा गळै उतरै, काल जै लागै अर जिन्दगाणी में फूटण लागै, पलकण लागै, झांकण लागै। हर काम माथै ज्ञान री छाप पड़णी चाइजे, दूजां माथै उण रो परभाव पड़णो चाइजै, ज्ञान-करम री मसाल री जागती-जोत सूं समाज में लोगां रो मारग दरसण करणो चाइजे, नीतर लोग केवेला—भणिया पण गुणिया कोनी।

आज रा जमाना में कितांक इस्या गुरू चेला है ? हिये कांगसी फेरां तो आ बात गैरी विचारवां री है। इण कमी नै मिटावण सारू अलख जगाणो पड़सी, जागरण करणो पड़सी । ज्ञान तो गैरो सागर है इण में जिको मानखो गोतो लगावै उणरै हाथ हीरा आवै, जिको ऊपर इज तिरतो रेवै वो मनख-जमारो एळ गमावै। कुण कितरो गेरो पूग सकै ज्ञान अर वेवार में, वो वगत इज बता सकैला कै कुण कितरो सफल व्है जिन्दगी में इण खातर एक कावत सांगोपांग है -

'वक वछेरा डीकरा, निवटियां परवांण'

जो लोग केवे के-'पूत रा पग पालणे ही दीखै' पण आ बात पूरी री पूरी कोरी गळै नी उतरे, रुचै नी, पचै नी बात नै भाटो वैठावां ज्यूं वैठे। आ बात

तो सही लागै कै–'ऊगतां धांन री पानोळी सामै दीखै, पण वाद में डावो पड़ जावै कै रोळी लाग जावै कै खाली वायरो वाजै आ कुण कै सकै। आ इज बात टावरां रै वास्ते अर वातावरण रै वास्तै लागू व्है।

पूजनीक विवेकानन्दजी महाराज अमरीका में वकाण देतां थकां एका'र फरमायो हो कै–"आपरै देस में छीपा (दरजी) मिनखां नै वणावै अर अमीणां मुलक में सिक्सा–दीक्सा रा संस्कार मानवी नै वणावै" मुतलव हुयो कै विलायत में मिनख पणा रो तोल मोल कपड़ा–लत्ता सूं करै पण भारत में मिनखपणो उणरां करमां सूं आंकै, विद्या मानवी रो असली अर सांचो गेणो है–

'पोथ्यां पढ पढ जग मुआ, हुआ नी पंडत कोय।
ढाई आखर प्रेम रा, पढ़ै सो पंडत होय॥

विना ज्ञान रे करम आंधो व्हे अर विना करम रै ज्ञान पांगळो व्हे जावै, दोनू ग्रेक दूजा रै पांण इज फूटरा दीसै, इण वास्तै ई अवै वो टेम आयग्यो है कै करम कंवर रो व्याव ज्ञान सिंह सूं करावणो पड़सी। दोनू रै मीठा-मिलण सूं इज मानखां रो मंगल व्है सकेला। हैटे मांड़ियोड़ो दोहो म्हारे हिये लागै—

कथनी मीठी खांड सी, करणी विस री लोय।
कथनी ज्यूं करणी करै, तो विस सूं अमरत होय॥

म्हारा मूंगा मोठ्यारां! केवणो किस्योक सोरो है–वे होठ भेला किया, जीभ मुंडा में माछळी ज्यूं उछळती–फिसळती फटाफट आकास-पताल री बातां वारै फेंक देवै पण केवै ज्यूं करणो खांण्डे री धार है साथै ही किणरै कालजै लागी अर किणरै नी आ कुण जाणै, खुद पोते भी उण माथै नी चालै–आप गुरूजी वेंगण खावै दूजां नै परमोद वतावै। कथनी ज्यूं करणी करै कुण? नी कैवण आला नी सुणण आला। नेतावां रा लांवा लांवा भासण सुणतां सुणतां आपरा कान पाक ग्या व्हैला पण कित्ताक ऐड़ा नेता है जो वे खुद कैवै ज्यूं कर'र वताया हुवै। आइज सबसूं कुमी आज री पढ़ाई री है के खाली पोथी रो थोथो ज्ञान रटा देवै। परीक्स्यावां में विद्यार्थी पाछी उल्टी कर देवै। हर साल सैंकड़ा टाबर पढ़'र डाकटर, वैद्य, हकीम, इन्जीनीयर मास्टर कलैक्टर, वावू, पटवारी, ग्राम सेवक आदि वणै अर लाखां नै विस्वविद्यालय डिगरियां देवै अर वे डिगरियां नै भूंगली कर'र, सड़कां पर पग रगड़ता, आफिसां रा दरवाजा खटखटाता फिरै, वेकार वैठा हैरान व्है। ओ दोष सिक्सा रो है कै जिन्दगाणी

रै उपयोगी नै जमाना अर टेम मुजब हूंणर री सीखावै, धंधो कोती सिखावे, मिनख नी बणावै, जिण कारण सूं बेकारी, गरीबी, बीमारी, भ्रस्टाचार आदि फैल रियो है, इण वास्तै आज धरम करम, नीति, उद्योग अर मिनखपणै री सिक्सा जरूरी है, इण माथै जोर देवणो जरूरी है।

आखर नीचोड़ निकले कै जो कुछ पढ़ा उणनै समझणो चाहिजे, उण माथै ऊंडो विचार करणो चाइजे, नुवां जमाना अर नुवां बदळता टेम रे सागै उण में नुवां अरथ रा दरसण करणा चाइजे, नुवां अरथ उपजावणा चाइजे। अनरथ नी करणो चाइजे। हजारां नित नुंवी पोथ्यां अर अखबारां री विरखा सूं आपणी अकल हुसियारी सूं नुवां ज्ञान रे कातीसरा री फसल उपजावणी चाइजे, ज्ञान रो करसण मन री जमी पर बुद्धि रे खेता में निपजावा री पैल करणी आपणो फरज है, जद आपणै अन्तस में बुद्धि री पूनमियो चांद उगसी, अज्ञान रा बादळा फाटसी, अंधारो मिटसी, नुंवी जिन्दगाणी री परभाती मुळकसी अर आप इण जनम में भी नुंवा जनम अर नुंवी जिन्दगाणी रो अनुभव करस्यो, ज्ञान रै रूखां करम रा मीठा फ़ल लागसी आपणो विचारवां को तौर तरीको अर दुनियां मैं देखण री निजर पळट जासी, कोण बदळ जासी, क्यूंकै आपां राता रंग रो चसमो लगा'र देखां तो दूनियां सारी राती चोळ दीसै अर पीले रंग रो चसमो चढा'र देखां तो सगळो सिंसार पीळोपट्ट दीखै अर काळो चढा'र देखां तो सगळी दुनिया काली-किट्ट दीसै पण वाकइ में सिंसार कैड़ो है ओ पतो जद लागै जद धोळो चसमो पैं'रा तो सिंसार जैड़ो है वैड़ो दीसै, बस ओ धोळो चसमो इज सही सांचै ज्ञान रो रूप है।



राजस्थानी वीराख्यान

—डा० प्रतापसिंघ राठौड़

भारत री इतिहास प्रसिद्ध वीर भोम राजस्थान भारत रै उत्तरादं-आथूणं भाग में पड़ै है। अठै रा सूरवीर अर सतियां संसार में विख्यात है। अठै एक सूं एक नामी जुधवीर, दानवीर, धरमवीर अर दयावीर, सतवीर, प्रेमवीर, कर्मवीर, तपवीर अर त्यागवीर हुया है। वीर-पूजा रणभोम राजस्थान रो मूल भाव रैयो है। राजस्थानी नारी री आ गर्व भरी कामना सरावण जोग है:—

जननी जणै तो दोय जण, कै दाता कै सूर ।
नींतर रहजे वांझड़ी, मती गमाजे नूर ।।

राजस्थान रा सूरवीर साका कर'र जूझार हुया है तो सतियां जोहर कर'र आपरै धरम अर सत री रिच्छा करी है। गांव-गांव में आं लोकवीरां री लोक देवतां रै रूप में मानता है। आं वीरां रा आख्यान लोगां री जीभां पर विराजमान है। सूरां अर सतियां री प्रसंसा में प्रचलित अै वीर गाथावां गद्य पद्य अर चम्पू शैली मांय मिलै है। राजस्थानी भासा मांय लिख्येड़ै आं वीराख्यानां रो आधार ऐतिहासिक घटनावां है। काव्य स्वरूप, या विधा री द्रिस्टी, सूं अै दूहा, गीत, चरित बात, ख्यात, रासो विलास, प्रकास, रूपक, वेलि, वचनिका, झूलणा, कवित्त, छप्पय, नीसांणी अर कुंडळिया आदि रूपां में मिळै है।

राव रिणमल रो रूपक, राव चन्द्रसेन रो रूपक, गुणरूपक, गजरूपक, गोगादे रो रूपक आदि रूपक वीर काव्य है। राजप्रकास, सूरजप्रकास, केहरप्रकास, कूर्मवंस यशप्रकास, पीरूप्रकास, प्रकास संज्ञक रचनावां है। राजविलास, अभयविलास, विजय विलास, भीम विलास, वलवत विलास आदि विलास संज्ञक काव्य है। राव जैतसी रो रासो, शत्रुसाल रासौ, बिन्है रासौ, पृथ्वीराज रासो, रतन रासो, राणा रासो, हम्मीर रासो, प्रताप रासो, रासो—काव्य है। रास अर रासा नांव सूं भरतेस्वर बाहुवलि घोर

राम भरतेश्वर बाहुबलि राम, लावा रासा, अर क्यामरखां रासा है। वचनिका अचळ दास खीची री, राठौड़ रतनसिंघजी महेशदासोत री अर स्थान किशनगढ री तीन प्रसिद्ध है। रणमल्ल छंद, पाबूजी रो छंद अभय भूषण, पाबूजी, कल्लाजी, लाखै फूलाणी, महाराणा प्रताप, राव अमरसिंघ, दुरगादास, जयमल, पत्ता अर सेखाजी रा दूहा घणा विख्यात है। देवीदास जैतावत री वेलि, रतनसिंघ खींवावत, उदैसिंघ, चांदाजी, रायसिंघ, सूरसिंघ, पाबूजी, अनोपसिंघ अर भाटी सैतानसिंघ री वेलि आदि वेलि नांव रा वीर काव्य है। डिंगळ गीतां री संख्या तो हजारां ई है। बगड़ावत, पाबूजी रा परवाड़ा, तेजाजी, गोगाजी री गाथा निहालदे सुलतान अर डूंगजी-जवारजी री पड़ वीर रस रा मार्मिक लोक काव्य है।

राजस्थानी वीराख्यानां रो वर्गीकरण रचना शैली, आकार-प्रकार, वीर रस अर रचना-उद्देश्य रै आधार पर कर्‌यो जा सकै है। वीराख्यानां रै उद्‌भव रो मूळ कारण वीर पूजा री भावना है। ईं भावना में समाज री परिस्थितियां रो हाथ रैयो है। मरूधरा रै मैदान में मंडती मौत री हाटां में मरण त्युंहार मनावणियां वीरां रो जस चारण, भाट, मोतीसर अर ढाढियां खुलै दिल सूं गायो है। ठीक ई कैयो गयो है—

मंडती हाटां मौतरी, मुरधर रै मैदान।
मूंड कटै लड़ता मरद, अनमि वीर कुल जाण।।

सिस्ट अर लोक साहित्य दोनूं रूपां में प्रवन्ध अर मुक्तक काव्य मिळै है। समय-समय पर आं रै स्वरूप अर आकार में परिवर्तन परिवर्धन हूतो रैयो है।

राजस्थानी वीराख्यानां रो सामान्य विसेसतावां—

कथानक या कथावस्तु सम्बन्धी विसेसता अै है—

१. वीरता अर शौर्य रो चित्रण—पैली विसेसता है। राजस्थानी वीराख्यानां रो प्रधान विसै वीरता, दानशीलता, धर्मप्रियता, त्याग, सरणागत रक्स्या अर गौरक्स्या आदि राजस्थान रै सांस्कृतिक आदरसां रो वर्णन है। ईं कारण इआं वीरां री कर्नल टाड जिस्या विदेसी वी मुक्तकंट सूं प्रसंसा करी। राजस्थानी वीरां री वीरता विस्व-विख्यात है।

२. नायक—प्रतिनायक—वीराख्यानां में चित्रित नायक प्रतिनायक प्रायः राजपूत राजा, राजकंवर, सामन्त—सरदार, मुगल बादस्या अर साहजादा है। आं रै आपसी झगड़ां रो वर्णन अर फड़कता चित्र सरावणजोग है जकां रो मूळ कारण धरम, गौ अर सरणागत री रक्स्या है। देस प्रेम अर प्रण-प्रतिग्या है। वैर सोधन अर राजलिप्सा है।

३. वर्णन री सजीवता अर ऐतिहासिकता—वीराख्यानकार चारण, भाट, राव लड़ाई झगड़ां में वी साथ रैया है, लड़्या है। आंस्या देख्यो वरणन होण सूं आं काव्यां रो वर्णन सजीव, सांगोपांग अर प्रामाणिक है। कलम रै साथ तरवार रा धणी होणा आं कवियां री अनोखी खूबी है। पृथ्वीराज रासोकार चन्दवरदाइ, विन्है रासो रा कवि राव महेसदास, सूरजप्रकास रा रचियता कवियां करणीदान राजरूपक कारवीर-भांण रतनू अर वचनिका रतनसिंघजी राठौड़ महेसदासोतरी का कवि खिड़िया जग्गा खुद जुधभोम में साथ हा। वीरां री वीरता, पराक्रम, साहस, निडरता, वार-प्रहार, हुलास, रण सज्जा, सिंधुड़ा, घोड़ां री हिणहिणाट, हाथ्यां री चिंघाड़, घायलां री चीत्कार अर बावन भैरव चौसठ जोगण्यां रो आगमण, भीषण जुद्ध अर भागदौड़ रा मूं बोलता चित्र वीराख्यानां में भर्‌या पड़्या है। नगर, पणघट अर बाग-बगीचां रो वी प्रसंगवस वरणन है। पाबूजी, तेजाजी, बगड़ावत कान्हड़दे अर आल्हा–ऊदळ रै वीराख्यानां में कवन्ध–जुद्ध रो वरणन घणो सांतरो अर लोमहरसक है।

४ सामन्ती जीवन रो चित्रण—सामन्ती जीवन, सती प्रथा, वहुविवाह, दहेज अर आखेट रो आं काव्यां में फूटरो वरणन है। एक-एक रणवास में सैंकड़ां राण्यां, दास्यां, खवासण्यां अर वड़ारणां रैंती। मुगल वादस्या रा हरम बी वेगमां सूं भर्‌यां रैता। डायजै में दास-दासियां, हाथी-घोड़ा अर गांव-जागीरां दी जाती। राजावां रै मरणै पर दस-दस, वीस-वीस राणियां, दासियां अर खवासण्यां सती होवती।

५ दानसीलता, धरम रक्स्या अर सरणागत रक्स्या रो वरणन—बी आं काव्यां री विशेषता है। महाराणा प्रताप, जसवंतसिंघ, दुरगादास, राजसिंघ अर सुजाणसिंघ वीराख्यानां में धरम अर देस रक्स्या खातर विख्यात है। जगदेव पंवार, लाखोफूलाणी, राणो सांगो, जगतसिंघ, रायसिंघ, रहीम अर टोडरमल जिस्यां दानवीर बी आं काव्यां में अमर है। चारण कवियां रै लाखपसाव, करोड़पसाव रै साथ कमीण कारुवां रै नेग अर सामंत सिरदारां नैं इनायत करेड़ी जागीरां अर मन्सब रो वीराख्यानां में उल्लेख है।

६. सिकार, हाथी-घोड़ां री सजावट अर आरती रो वरणन बी आं काव्यां में मिळै है। वगड़ावत भोज री घोड़ी बुंवळी, नेंवा री बोरड़ी, पाबूजी री केसर काळमी राणा प्रताप रो चेतक तो प्रसिद्ध ही है। राणसहर रै राव दुरजनसाल री बरात में भीर होंवती टेम भोज री बुंवळी घोड़ी रो सिणगार देखण जोगो है—

लाख-लाख का घोड़ी कै पागड़ा, सवा लाख की माळ ।
हीरा घोड़ी कै गळ जगमगैं, गल सोनैं सीस लगाम ।
चौक विराजै घोड़ी कै चौकरैं, पदम विराजैं पांव ।।

७. केसरिया वाना, मदिरापान, अफीम-सेवन अर अलौकिक तत्वां रो वरणन वी वीर काव्यां री विसेसता है । जुद्ध अर साका री टेम वीर केसरिया वाना धारण करता । चित्तौड़, जालौर अर सिवाणा रै साकां में सारा वीर केसरिया वाना धारण कर'र जूझ्या । पाबूजी रै पावाड़ां रो 'डामो अमली' तो राजस्थान भर में विख्यात है । सूरजप्रकास अर राजरूपक मांय कई तरैं री दारू अर मांस रो वरणन है । पाबूजी जैमती, बुंवळी घोड़ी, केसर काळमी, हीरूदासी, गोगाजी, कान्हड़दे अर देवाजी अवतारी रूप में चित्रित है । बावन भैरव अर चौसट जोगण्यां रो रक्तपान वी वरणित है । मध्यकालीन समाज अर संस्कृति रो हूबहू चित्रण वीराख्यानां में देख्यो जा सकै है ।

सैलीगत विसेसतावां —

१. राजस्थानी वीराख्यानां में कथानक री सरुआत मंगळाचरण अर्थात् गणेश, सरस्वती, सिव, सक्ति अर विस्णु री स्तुति सूं हुई है । फेर कवि-परिचय, आश्रयदाता रै पूर्वजां रो वरणन, नगर-पणघट, सरिता-सरोवर, वाग-वगीचा, हाथी-घोड़ां, रण सज्जा अर लड़ायां रो वरणन है । काव्यां रै अंत में नायक-प्रतिनायक रै मरणै वाद सतियां रा द्रस्य है । आं काव्यां रो अन्त सान्त रस प्रधान है । अन्त में रचनाकाल, दिन मिति, संवत् रो निर्देसण है ।

२. रस निरूपण—राजस्थानी वीराख्यान वीर रस प्रधान है । आं में जुद्ध वीरां, दानवीरां अर दयावीरां रो सजीव वरणन है । वीरां री वीरता, मार काट, साहस अर निडरता में वीर रस रो निखार देखण लायक है । सती-प्रसंगां में करुण रस रै वातावरण में सिणगार रस री कल्पना आं काव्यां री अद्‌भुत अर निजी विसेसता है । नायक री मृत्यु पर सती सौळा सिणगार कर'र चिता में वैठे उण टेम रै नखसिख रो वरणन आं कवियां री अनोखी सूझ है । सुरग में वी सतियां रै साथ सहवास री कल्पना कित्ती मधुर, आकर्सक अर अनोखी है । जुद्धवीर रे प्रसंग में कठै-कठै ई वीभत्स रस वी आयग्यो है ।

३. सेलीगत समानता—सैली री द्रिस्टि सूं सारा वीरख्यान गद्य, पद्य अर चम्पू सैली में रच्योड़ा हैं। वात, ख्यात, कथा, वारता नांवां री रचना गद्य में है। रासो, प्रकास, विलास, झूलणा, गीत, वेलि, दूहा, सोरठा अर कवित्त नावां री रचनावां पद्य मांय अर वात,

वचनिका, कथा, वारता चम्पू सैली यानी गद्य-पद्य मिश्रित सैली में मिळै है। वगड़ावत, जगदेव पंवार पाबूजी, सरवहिया कँवाट, लाखो फूलाणी री वातां चम्पू सैली में है।

४ छंदा री समानता—घणखराक वीराख्यान दूहा, गीत, गाथा, कवित्त नीसाणी, भुजगी, झमाल, वेळियो, कुंडलिया, त्रोटक अर मोतीदाम छंदां में है। छद मात्रिक अर वरणिक दोनूं तरै रा है। दूहा, कवित्त, झमाल, गीत, नीसाणी अ... नांव सूं स्वतंत्र रचनावां वी रची गई हैं। कर..जी, पाबूजी, राणा प्रताप, अ... दुरगादास, वखतसिंघ, जयमल, राव सेखा, वल्सू चांपावत अर छत्रसाल हाडा र... दूहा अर गीत मिळै है।

५. अलंकार योजना—वीराख्यानां में सहज स्वाभाविक अलंकार प्रयुक्त है जाण वूझ'र अलंकार लादण री कोसिस नईं करी गई है। वैण सगाई रो सह... है। अनुप्रास, यमक अर स्लेस रै साथ सन्देह उल्लेख अर अतिसयोक्ति अलं... प्रयोग हुयो है। अलंकारां रो सरल अर सहज ढंग सूं प्रयोग आं री अपणी विसेसता ...

६. भासा—सारा वीराख्यान राजस्थानी भासा में है। आं में तेरवीं ... विक्रमी सूं ले'र वीसवीं सदी तक री राजस्थानी रा कई रूप मिळै है। ... वाहुवलि रास जिस्यां री भासा अपभ्रंस मिलैड़ी है तो कान्हड़दे प्रवध गु... प्रभावित। कई पर व्रज भासा रो प्रभाव वी है। प्रताप रासो, विन्है रासो अर ... रासो में व्रज अर राजस्थानी रो मेळ है। भासा ओज, प्रसाद अर मिठास... अपभ्रंस सूं ले'र खड़ी वोली तांणी रो भासा-विकास काव्यां में है। राजस्थानी ... विकास क्रम अर रूप-परिवर्तन रै अध्ययन खातर औ घणा महत्व जोग है। काव्य ... अर आकार रै अन्तर रै अलावा विविधता में समानता वीराख्यानां री वड़ी ... विसेसता है। साहित्य, समाज, भासा अर संस्कृति हर तरै वीराख्यानां रो अध्यय... जरूरी है। राजस्थानी भासा, समाज अर संस्कृति रो पूरो लेखो-जोखो आं काव्यां म... मिळै है।

सावचेत जीणो

—नटवरलाल जोशी

सांस तो सगळा लेवै है-पण जिकनै जीणो कवै है, बै कत्ता'क जीवै है ? गिणती रा मिनख जीवै है बाकी तो सांस लेयर आपरी ऊमर बीता देवै है। हर पळ छिण सावचेत रह'र जीणै रो आनन्द ई दूजो है। अेक-अेक छिण रो मजो लेर जीवणिया घणा भाग हैं। बींया तो जिका चालै जिका कठैन कठै तो पूगै ई है पण अेक लक्ष्य बगार—बी लक्ष्य तक पूगणियां कत्ताक ? छिण छिण सावचेत रैणो कत्तो मुसकल कत्तो कठिन अर कत्तो दोरो है। चेतै विना चालणिया कठै रा कठै पूग ज्यावै है। ई दुनियां में अैड़ा मिनख भर्या पड़्या है, जिका सपना तो क्यूं ई वणनै रा लिया हा—अर होग्या क्यूं ई। नेता वणणियो कलम घसै है, वकील बणणियो मास्टर है; मास्टर वणनै रा सपना देखणियो रेलवे रो वाबू है अर जज वणनैरा अरमान पालवा आळो हलवाई। सपना सगळा रा सांचा कोनी हुवै, पण सावचेत-चाल्यां होयवी जावै है।

ओ 'सावचेत होणो' के है ? ओ है समै अर स्थान नै पिछाण'र, लक्ष्य अर करम री गत पिछाण'र काम करणो। मैं कांई हूं ? कठै हूं ? अर मन्नै कांई करणो चाइजे ? आं वातां नै याद राख'र काम करणो।

अेक महासय नै कोई कह दियोक तेरीं लुगाई रातनै तेरे पाड़ोसी कनै जावै है, महासयजी लाल ताता होयर लट्ठ लेयर छात पर बैठगा। रात भर बैठ्या रह्या दिन में याद आई के मेरो तो ब्याव ही कोनी होयो। अैड़ा लोगांनै कांई कहवां ? खुद नै भूल'र दुनियां रे लेरां हो ज्याणो के है ?

स्थान अर समै नै देख'र चालणिया निस्चै ई बद्धिमान हुवै है। अेक राजाजी आपरै तीन राजकुंवारां मे से कुण सो ज्यादा बुद्धिमान है, आ जाणनै खातर अेक दिन तीनुंवां नै अेक कमरै में बन्द कर दिया अर बोल्या 'देखो कमरै रा किवाड़ मैं बन्द कर दिया है। किवाड खुलणै रो जन्तर ई कमरै में ई मंडेड़ो है-बीनै देख'र कोई उपाय

करै तो किवाड़ आप ई खुल ज्यावै । जको पैली बारै आवैगो जकै नै ई राज देवूंगा । छोटक्यो अेक राजकुंवार तो चुपचाप बैठगो—बाकी दोवूं कदै ऊपर कदै नीचे, आळै दिवाळै सारै झांकै । कोई उपाय जन्तर हाथ आणरो नी दीखे । रात भर जागता रैया । पो फाट्यां सी छोटक्यो राजकुंवार जको स्यांती सूं बैठ्यो हो सोची के स्यात् किवाड़ वन्द ई नीं हुवै अर वो धीरे सी किंवाडां रै धक्को दियो, किंवाड खुलगा वो बारै आयगो । बां दोनुआं नै पत्तो ई नी पड़्यो । आई बात भोत वार आपणै जीवन में बी हुवै है । किवाड़ां री सांकल बन्द नीं हुवै—पण आपां प्रयत्न ई कोनी करां अर सफलतारा द्वार सदा सदा नै बन्द रहवै । जे हर मौके चेतो रहवै तो सफलता दूर कोनी जा सकै ।

पावै तो वोई है, जको पाणैरी वेथाक इच्छा राखै, महात्मा ईसा कही है के 'द्वार खटखटाओ वो अवसकर खुलसी, पाणैरी इच्छा करो, अवस मिलसी, खोजो वो जरूर मिलसी । सफलता रै खातर घड़ी घड़ी, पल-पल कठोर मैंनत अर जवरी इच्छा शाक्ति री जरूरत हुवै । जका असी मैंनत करै-वै के नीं कर सकै ? वांरै सामै समुन्दर पाणी री अेक चल्ळू वण ज्यावै है, वारै सामैं आल्पस पर्वत दुरलघ्य नीं रह सकै है । महर्षि अगस्त्य अर नेपोलियन वोनापार्ट ईं अदम्य सकत रा ई तो पुत्र हा ।

सहायता वीने मिलै, जको दूजांरी सहायता करै, प्रेम वो पावै जको दूजानै प्रेम देवै, अपणायत वीरो पल्ले पकड़ै जको दूजां नै अपणायत देवै । विना दियां क्यूं मिलज्यावै । अैड़ो ईं दुनिया रो व्योहार कोनी । पण फेरूं वी विना कामना करम कर्यां ई आतमा नै सन्तोस अर स्यांति मिल सकै है । जीवण रो लक्ष्य वी ओई है अर ओई होवणो चायजे । विना प्रतिफळ चायां काम करणै री प्रेरणा प्रकृति देवै है । वात स्यात आपस में विरोधी है क सवसै ज्यादा सफलता वी नै ई मिळै है जको सबसूं ज्यादा निष्काम रहवै है । पण है आ वात सांची ।

जीणो अर हर छिण सावचेत होकर ई मिनख नै ऊंचै लक्स्य कानी वधावै । हर छिण आ वात याद रहवै के मेरो आदर्स कांईं है—तो हर छिण आ वी याद रहवैगी के मन्नै कांईं करणो चाये अर मैं कांईं करू हूं। आदर्स जतो ऊचो होवगो सावचेतता वती ई ज्यादा रहवैगी । लक्स्य री ऊंचाई जीवण रै पुनीत आदर्स री ऊंचाई सदा ऊंचो ले ज्यावै । हिमालै रै ऊंचै सिखरां मिनख नै ऊंचाई री ई याद रहवैली । पण खतरो वी वोत ई ज्यादा हे । जे थोड़ो सो ध्यान हट्यो तो-पताळ पूगता देरी नीं लागै ।

जीवण मैं वी आई वात है । संजम रो वान्ध जे अेक छिण वी टूट ज्यावै तो सारै जीवण नै डूवा लेज्यावै । साधना रो अखण्ड दिवलो जे अेक छिण री बी असावधानी हूज्यावै तो आखी कमाई रै आग लगा देवै ।

जीवण में खुशियां री फुलवाड़ी फूलै तो दुःखरा-कांटा बी लागै। पण सावचेत रैवणियो दोनुआं नै समान कर गिणै। ओ तो दुनिया रो धारो है, आ समझ र वो दुःखी नी होवै। जाण-बूझर दुःखां नै हेलो बी नी देणो चायजे। अर जे आज्याय तो डरणो बी नी चायजै। सुख मिळै तो दुःख बी मिल ज्यावै पण दोनुआं सूं निरलेप रैवणिया ई सावचेत मिनख कह्या जावै है।

हर परिस्थिति मांय घुटणै सूं जको दूर रहवै जकोई तो वैकुण्ठ है। अर जो वैकुण्ठ है वीनै बढ़णै सूं, बधणै सूं अर विपत्तियां रै बादळां मांय सूं सूरज ज्यूं कढ़णै सूं कुण रोक पायो है ? कुण रोक सकै है।

रिसि वै हुवै, जका समै रै आगे सूं देख सकै देखे अर निरलेप होयर सावचेत होयर काम करै, दुनियां रिसियां री करम सम्पदा सूं निहाल हुवै। सावचेत रहणो रिसि बणनै री ओर कदम बढ़ाणो है।

बखत नगीणौ है

—कल्याणसिंघ राजावत

उगियां पैली आंथ मती, जाग्यां पैली सोवै क्यूं ?
चाल्यां पैली थमै मती, ढूढ्यां पैली खोवै क्यूं ?

जीवण जीणो है
जहर पुहीणो है

जीव लांबो पथ, उधारै पगां कदै नी पूग सकै
जीवण जबरो जुध, अटकती सांसां कदै नी जूंझ सकै
मजलां मूंघी मरद, घणा ही खाडा खोचर आडा रै
जीबण तिरतो फूल, उफणती बाढां कदे नी डूब सकै

सांध्यां पैली फौड़ मती, रांध्यां पेली ढ़ोळै क्यूं ?
बधियां पैली तोड़ मती, नितरयां पैली घोळै क्यूं ?

धीरज धीणो है
कातर सीणो है

थाक्यां, थाक दबावै दावै, आगै कदे न वधणै दे।
भाग्यां, भाग मची सुणतां ही, दुसमीं कदे न चढ़णै दे।
हारचौड़ा ठारचौड़ा लोढी वांसूं कुणसा प्रीत करै—
जाग्यां जाग जावंता ही जग, जीत गीतड़ा पढणै दे

सुळझ्यां पैली उळझ मती, तपियां पैली धूजै क्यूं ?
ढकिया पैलो उघड़ मती, खिलियां पैली मुरझै क्यूं ?

इमरत पीणो है
समंद बिलोणो है

रोही रो वण फूल मुरझणौ, आछौ नहीं कहीजैला
घावां रै तिरसूळ खुरचणो, नितरा नहीं सहीजैला
सांयत रा सो अरथ हुवो पण अेक अरथ ओ सांचो है—
ससतर रै सामैळ जातां, पाछौ नहीं रहीजैला

उफण्यां पैली ठा'र मती, जीत्या पैली हारै क्यूं ?
उरस्यां पैली सा'र मती, जलम्यां पैली मारै क्यूं ?

रगत रंगीणो है
वखत नगीणो है

करतब काठो रियां जमारो झुकसी हद सनमान करै
कांटा सूं पगथळियां बींधै, जद मारग अभिमान करै
सोयां सूं तो साख घटै पण जाग्यां जगमग जलम हुवै—
जस रा दिवला च्यारू कूंटां, पीढ्यां लग गुणगान करै

जोड़्यां पैली तोड़ मती, हंसिया पैली रोवै क्यूं ?
फळियां पैली फोड़ मती, बोयां पैली जोवै क्यूं ?

फरज सलूणो है
अमर पसीणो है

●

दुनिया री कांणी

—तारादत्त 'निरविरोधक'

सावण में फागण गावै,
फागण में सावण गावै;
सुख में रोवै, दुख में सोवै, आ दुनिया री कांणी है!
सै रो दुसमण एक जमारो,
कदै न थारो, कदै न म्हारो;
ईं समदर में आंधा-लूला अर लंगड़ा सैलाणी है!
सीधा बोलै नहीं आपणा
मीठा लागै भोत पावणां;
घर री जोरू रोट्यां पोवै, मिसराणी पटराणी है!
काम करै वै ठोकर खावै,
मिनख मसखरा मौज उडावै,
भरता रवै चिलम रोजीना वै ही मोजां माणी है!
पढ़्या-लिख्या कीं जाणै कोनी,
जाणै सोय पिछाणै कोनी;
जितरो ऊंडो हिवड़ो उतरो भरियो छिछलो पाणी है!
दिन में सौवै, रात्यूं जागै,
सीख बडां री कोनी लागै;
पौ फाटी, कद सूरज डूबै अतरी भी कुण जाणी है?
आ दुनिया री कांणी है!!



मरणै री रीत

—रघुनाथसिंघ सेखावत

सेखावाटी राजस्थान रियासत रो स्काटलैण्ड कहावै । आ भौम वीरां री जलम भोम है । इण भौम पर अैंड़ा वीर हुया है, जिणनै आपणी मायड़ खातर आप रो माथो कटा दीन्यो पण झुकायो कोनी । सेखावाटी रै उतरादै इलाकै मांय झुंझणो एक जूनो नगर है । इण नगर पै चोहाणां क्यामखान्या अर सेखावत राजपूतां राज कर्‌यो है । इण धरती पर विक्रम सम्वत १७३८ में अेक अैंड़ो वीर जलम्यो जैड़ो सिवाजी मरठो हो । उण रो नांव सादूलसिंघ हो क्यामखानी नबावां नै जड़ सूं उखाड़'र सम्वत १७८७ में झुंझणूं पर हिन्दुवां रो झण्डो फै'रायो ।

विक्रम सम्वत १७८८ में वीर सादूलसिंघ आपरै इलाकै सूं वारै दुजै जुद्ध में गयोड़ा हा । दुसमण नूं मोको मिळ्यो । नरहड़ रा पठाण एक बड़ी फौज लेय'र झुंझणूं पर हमलो बोल दीन्यो । इण बखत झुंझणूं में सादूलसिंघ रो बेटो भादरसिंघ हो, जिण रो उण टेम इज ब्याव हुयो हो । वो मै'ल में कंवराणी रै सागै पोढ्यो पोढ्यो रंगरैली री वातां में मस्त हो । चाणचकै हीज जद जुद्ध रो डंको बाज्यो । सुणतां हीज भादरसिंघ रा कान खड़ा हुयग्या । उण वखत भादरसिंघ री उमर गुन्नीस बरस री ही, थोड़ी थोड़ी मूंछ्यां चिलकण ही लागी ही । वीर पलंग नै छोड़'र हेटै उतर्‌यो अर कंवराणी सूं बोल्यो—"कोई दुसमण आपणी भौम पर चढ आयो है राजाजी अठै कोनी म्हानै रण में जाणो पड़सी अर वैरी रै साथै लड़णो पड़सी । जुद्ध में लड़णो छत्री रो धरम है, उण री रीत है । इण वास्तै चाहे रण में जीतस्यां या हारस्यां, पण मरणै री रीत मिटण नीं देस्यूं, या रीत मिट्यां पाछै छत्री कनै बचै ही कांई है ? आप कांई तरै री चिन्ता मत करज्यो ।

कंवराणी सा झट ही बोल पड़्या—"कंत नै रोकतां कुळ री लाज जाती रैवै । राजाजी रा लाडला पूत ! आप म्हांरी चिन्ता मत करज्यो, मैं म्हांरै धरम नै

जाणू हूं। जाओ अर याद राखज्यो, वैरी नै अैड़ो पाठ पढ़ाणों है कै वो कदै ही म्हांरी धरा कानी निजर नीं उठावै, उण नै अैड़ी सिक्स्या देणी है कै राजपूतां रै साथै कियां लड़्यो जावै है। दुसमण नै यो बता देणो है कै राजपूत आपरी अर देस री आण पर माथो कटा सकै है, पण झुका नी सकै। जुद्ध में जीत'र घरां पधारस्यो तो आरतो उतार'र घणो आदर करस्यूं अर रण में वीरगति पाई तो सुरगां में मिल जांस्यू जठै आपणी फेर मुलाकात होसी। अब जाओ अर ध्यान राखज्यो दुसमण रा गन्दा पग आपणी ऊजळी धरती पर नीं पड़नै पावै।"

कंवराणी री सिंघणी री सी बोली सुणतां हीज भादरसिंघ रै मुखड़ै सूं निकळ पड़्यो "धन्य है छत्राणी! म्हांनै थांरै सूं आ ही आसा ही।"

वीर भादर टग् ट्ग पेड़्यां उतरग्यो अर घोड़ै पर चढ़'र सवार हुयो। भादरसिंघ नै सेनापति रै रूप में देख'र फ़ौज घणी हरखी अर वीर रै साथै रणभोम कानी चाल पड़ी।

दुसमण री फौज नरहड़ सूं चाल'र वगड़ होती हुई बुडाणै गांव रै कनै झुंझणूं रै वीड़ में पूगग्यी अर अठी नै सूं भादरसिंघ री फ़ौज भी दुसमण रै सामी जाय'र आप री छाती मड़ादी। झुंझणूं री आधी फौज तो राजा सादूलसिंघ साथै दूजै जुद्ध में गयोड़ी ही अर रही सही फौज ही भादरसिंघ रै साथै ही। पठाणां री फौज बड़ी ही।

जुद्ध रो डंको बाजतां ही घमसाण जुद्ध छिड़ग्यो। गुन्नीस वरस रो भादरसिंघ अैड़ो जुद्ध कर्यो, मानों मेरू ही रण में उतरग्यो हो, मानो सिव ताण्डव नाच नाचर्यो हो। गाजर मूळी री तरियां वैर्यां नै काटतो आगै बढ़तो जार्यो हो। साथी वीर टकणेत सरदार भी रण में काची कोन्या राखी। वै दोन्यूं वीर जठी नै जाता लासां पर लास बिछती ही दिखती अर वैरी मैदान छोड़ता ही दिखता। भादरसिंघ री तरवार सूं दुसमणां रा सीस लुढ़कता ही निजर आता। न जाणै कितणा ही अरियां रा माथा उतार उतार धरणी पै मै'ल दीन्या। आखर यो वीर वैर्यां सू घिरग्यो, पण अब भी रण में कोई काची कोन्या राखी। वो महाकाळ बण्यो आगै बढ़तो ही जावै हो। सरदार टकणेत भी घमसाण जुद्ध करतो बळिदान हुयग्यो, पण भादरसिंघ अब भी भूखै सिंघ ज्यूं लड़र्यो हो। पठाणां री फौज तितर बितर होवण लागग्यी अर पठाण रण भू छोड़'र भागण लागग्या। भागतां भागतां ही अेक पठाण री तरवार भादरसिंघ री गरदन पर

पड़ी, पण गरदन थोड़ी भटकी रैयगी । भादरसिंघ अपणै हाथ सूं गरदन सभाळ'र तीन कोस झुंझणूं कंवराणी रै कनै पूग्यो । पण वीर बोल नी सक्यो अर सुरग सिधार्‌यो । कंवराणी आपरै वीर कंत री लास लेय'र जळती चिता में बैठग्यी अर सती हुयग्यी ।

इण तरै सूं गुन्नीस वरस रै राजकुमार नै रण में वीर गति पाई पण आपरी भौम पर दुसमण रो कब्जो नी होवण दीन्यो । जठै वीर री कंवराणी सती हुई, उठै झुंझणूं में वीं'रै ऊपर मिंदर अर छतरी खड़ी आज भी वीर री का'णी कैवै है । जिण देस में अैड़ा वीर जलमता रेवै अर इण तरै सूं मरणै री रीत बणी रेवै, उण देस रो बाळ भी बांको कुण कर सकै है ?

देहात में कवि सम्मेलन

नागराज सरमा

[अेक वडो सो माचो, माचै पर मूढो अर मूढै पर अेक सफेद चादर विछा'र मंच बणायो गयो है । सामणै ५-६ सुणणियां आप आप रो माचो घाल्यां वैठ्या है अर हुक्को गुड़गुड़ार्‌या है । संयोजक दीपचंद तेजी सूं मंच पर आवै है अर माइक हाथ में ले'र जोर जोर सूं बोलै है ।]

दीपचंद— भाइयो अर भायलो ! आज वडी खुशी री वात है क आपणै गांव में अेक कवि–सम्मेलन रो आयोजन करमो गयो है । आप लोग घणा ही सांग, ख्याल देख्या है, आछै आछै भजनियों सूं भजन सुण्या है, भोपा भोपी री राग रागणी सुणी है, पण आं लोगां सूं अेक दूसरो ढंग ही देखणै नै मिळसी आज काल सहरां में कवि–सम्मेलनां रो वड़ो जोर है। जनम पर, मुंडन पर, जनेऊ पर अर व्या सादी पर आं नै खूब बुलाया जावै । अेक चिट्ठी गेरतां ही भाज्या आवै । म्हानै घणी खुसी है कै च्यार कवि सस्ता ही हाथ लागग्या मैं आप लोगां कनै सूं ज्यादा टाइम नै ले कै, कवियां नै अेक–अेक करकै बुलावूं हूं अर आपनै उणां रै मूडै सूं कविता सुणाऊं हूं । (ताळी)

(मंच पर च्यार कवि आ'र माचै पर वैठ ज्यावै है । जनता आगै हाथ जोड़ कै मुस्करावण लागै है पण जनता नीची धुण घाल्यां हुक्को पीवण लागरी है अर गुरड़ गुरड़ री आवाज धूवें सै लिपटोड़ी, निकळ री है ।)

दीपचंद— ल्यो भाईयो ! सव सूं पैली सवसूं ज्यादा मोल हाळै कवी नै आपरै स्यामणै ल्यावूं हूं । अे कवि जी भोत मुस्कल सूं हां रोपी है । वैया पीसा ज्यादा लिया करै है पण आपणै गांव पर तरस खाकै इक्यावन रपियां पर हां रोपी रहै । अे भोत जोर रा हास्य रस रा कवी है । आं की कविता सुणकै रोवतां आदमी भी हासंण लाग ज्यावै कै जोर जोर सूं रोवण लाग ज्यावै । मैं थारै अर कवि रै बीच ज्यादा टेम नै लेकै सव सूं मैंगै कवी

नै हाजर करूं हूं (कवि सागर जी कानीं देखक) आ, भई इक्यावन हाळे

(कवी सागर जी माचै पर सूं खड़्या हो ज्यावै है, दीपचंद कनै सूं माइक लेर बोलणो सरू करै है)

सागरजी—आज म्हानै घणी खुसी है'क ग्राम वासनी भारत माता कै स्यामणै कविता सुणाणै रो मौको मिल्यो है

श्रोता १—अठै तो मर्द ही मर्द वैठ्या है माता अेक भी कोयनी

सागरजी—मैं थारी माता नै कोनी कैर्यो, मैं तो भारत माता ने कैर्यो हूं।

श्रोता २—भरतै री मां आपकै पीर गई है, आवैगी जद थारी बात कह द्यांगा अब फींक दे फरड़ै सो।

सागरजी—भाइयो मेरी कविता रो नाम है म्हारी दसा—

सुणो जी म्हारी के दसा हो गई है
चीणी पाच रपियां किलो होगई है
घासलेट बजार में मिलर्यो कोनी
विजली भी रात नै गुल होगई है।

(सब स्यांत होज्या है; कोई हांसै, कोनी, दीपचंद वेगो सो आप'र सागरजी कनै सूं माइक लेकै बोलै है)

दीपचंद—भाइयो थे लोग गांव री नाक कटावण नै त्यार दीखो हो, रै भलै माणसो या हांसी की कविता है, अैमें थानै खूब हासणो चावे। यो कवी हास्य रस रो है अर इक्यावन में आयो है, जै थे नै हांसोगा तो सारो ही मजो किर किरो हो ज्यावैगो।

(लोग हुक्का छोड़ छोड़ कै जोर जोर सै हांसण लाग ज्यावै है कवी सागरजी भी हिम्मत करकै, पैतरा वदळ कै कविता सुणावण लागज्यावै है)

सागरजी—भारत की (हांसी) के (हांसी दुरदसा (हांसी) होरी (हांसी) है (भोत जोर सै लोग हांसै है, कवि सागर जी माइक पकड़नै थोड़ी देर तो लोगां कानी देखै है पाछै माइक खाट पर पटकं कै अेक कानी वैठ ज्यावै है)

दीपचंद—आप लोगां ईक्यावन हाळै की वानगी देखी, अब आपकै स्यामणै राजस्थान का जोर को गीतकार आर्यो है। आज काल गीतां को मार्केट कीं' हळको है ईं वास्तै यो कवी इक्कीस रपियां में हाथ लाग्या है, आ भई इक्कीस हाळे ।

(पतळी सी काया हारला, नागरजी, आपरी कमर मटकाता, स्टेज पर आवै हैं और आतां ही माइक उठाकै खड़या हो ग्या है। नागर जी बड़ा-बड़ा बाळ बधायां, ढीलो पजामो अर कुरतो पैर्‌यां है। लोग ऊणां की सकल देख कै जोर जोर सै हांसै है)

नागरजी—मैं आप लोगां कै स्यामणै (लोग हांसै है) एक राजस्थानी गीत (हांसी) सुणावूं हूं—

प्रिय ! मैं तन्नै याद करूं

(लोग हांसै है)

तो बरसात सी होवण लागै।

(लोग जोर जोर सै हांसै है)

भाईयो, या हांसी की कविता कोनी यो अेक प्रेम गीत है।

(दीपचंद भाग कै आवै है और नागरजी सै माइक खोस के बोलण लागग्या है)

दीपचंद—ओ कवी गीत सुणार्‌या है, इसमें हांसणो नही है सब चुप होज्यावो।

(सब चुप होज्यां है अर नागरजी आपको पूरो गीत सुणा दे है)

दीपचंद—अब भाइयो तीसरो कवी दंगळ में आप लोगां रै स्यामणै आर्‌यो सै, यो भी इक्कीस लिया सै (कवी कानी देख कै) आ भई इक्कीस हाळै।

(कवि रतन जी आवै है और माइक उठा कै बोलणो सरू करै है)

रतनजी—मेरी कविता वीर रस की है।

(अेक बुढो सो श्रोता खडयो होज्यावै है)

श्रोता ३—रै, दीपचंद, जरा बताइयो, इसकी कविता में हांसणो सै या कोनी हांसणा, फेर तू गांव की नाक कटगी बतावण लागज्यागा।

दीपचंद—(माइक लेके) अब थारी मरजी होवै, वैयां करो, हांसणै की बात होवै तो हांसो नहीं तो मेरै कानी की कोरी वांण मारो भलाई। (दीपचंद कवी रतन जी नै माइक देदे हैं)

रतनजी—उठो ! वीरो !

दुस्मन सीमा पर सिर उकासण लागर्‌या है
वीं रो सिर कुचळद्यो

श्रोता ४—सिर किससैं कुचळैं, गंडासैं सूं या दराती सूं ।

श्रोता ३—ठोकर मारकै कुचल द्यो (ठोकर मार कैं बतावैं है।

श्रोता २—रै वा रै वा छोरैं, चाळा काट दियों भई, कुचळ दे क कुचळो दे।

(सब हां सैं है, कविजी बैठग्यो है)

दीपचंद —तीन कवियां की बानगी देखी, इब आपणैं गांव कै कनैं हाळी ढाणी का अेक कवि वच्या सैं जिण रो नाम मोहनलाल है और यो कवी सिरफ खुराकी पर आया है (मोहनलाल कानी देख कैं। आ भई मोहनलाल)

मोहनलाल—(खांस के) भाइयो, मैं तो थारो ही आदमी हूं (खांसी) म्हनैं भाई दीपचंद जी बोल्य। क (खांसी) अेक कवि सम्मेलन को आयोजन कर्‌यो जार्‌यो है। म्हनैं (खांसी) घणी खुसी होई

श्रोता १—कवीजी रोटी ज्यादा खायग्या दीखैं। सांस घुट घुट के आरी है। ओ सारी कड़दो खुराकी में ही काढ लिया ।

श्रोता २—त्यार की रोटी मिल्यां पाछैं, कूद पड़्या रण भूमि में, मनैं भइयां लागैं यो वीस रोटी सूं कमती तो के पाड़ी हैगी। (हांसी)
(दीपचंद आवैं है)

दीपचंद —रैं, भाइयो यो तो आपणा कवी है। ईंनैं ध्यान देके सुणो नहीं तो यो भी सूं फुला फुला के कैंण लागज्यावैगो'क घर का जोगो जोगणा, आन गांव का सिद्ध ।

श्रोता ४—आछी लागी विद्द

मोहनलाल—भाइयो, मेरी कविता कीं आकरी है, कड़कड़ी है, थानैं भोत सुवाद आवैगो।

श्रोता ३—रोटियां सागै साग भी हो के ? पाणीं सागै ही धिकाई है कैं !

मोहनलाल—भाइयो,

म्हारी अक्कल चकरी कारी
गाडो जारयो गाड़ी जारी
छोटैं छोटैं टाबरियां कैं
घोळी घोळी डाडी आरी।

श्रोता १—(ताळी पीट कैं) क्या वात सैं रांग दियैं भाई। मा इं कविता सैं तो गांव का जात आदमी कवी है कवी ।

श्रोता २—इसी कबिता सुणाके ऊपर सूं पीसो श्रोर ले हैं।

श्रोता ३—जोर तो श्रावै है, श्रै वास्तै पीसै पावै है।

सींपवव —म्हानै घणी खुसी हैक श्राज का यो कार्यक्रम बिना कोई विघन कै खतम होर्‌यो है। मैं सब कवियां नै श्राप सब लोगां की तरफ सू, मेरी तरफ सूं गांव बस्ती की तरफ सूं धनबाद दयू हूं। मनै विस्वास है क श्रागै भी कवि श्रावतां रैगा श्रौर कीं सुणावता रैगा।

(ताळी बाजे है)

मारवाड़ पाणी में डूबी

—अजीतसिंघ 'बंधु'

दिन वा'रा घड़ी रो मानीजै जिका मांय आठ घड़ी तो स्कूल रै टावरां नै भणावणै रमावणै में ही जाय'कै आ मानूं म्हारी जिनगाणी नै गोत्ता देवण सारू रोटी हेटै खीरा दयूं तो आ बात घणी सांची अर जथार्थ नै छूवै है, स्कूल रा किंवाड़ पराथना रै साथ खुल'र कबडी री रमत रै साथै जुड़ीजै। ईं बीच म्हूं जुड़योडो हूं चौक, पौथी अर छोरां री हाय बोय सूं।

देस, देस परेम अर मानखा हित सारू भासण झाड़ण रो ट्रैंड आज अणूतो ही दरसीजै टैन्थ 'वी' मांय म्हूं भी वाप वाळी पाग नै वांध'र वडेरां री लगायोड़ी लाय मांय पूळा टेकण रो काम कर रयो हो, "थ्हांरा भोगना भुंवाळी खायगा दीखै है अै कुरस्यां तूटी तो काईं देस री कोनी ? कुण रो नुकसाण ? सोचो ! सोचो ! !" रै सवदां साथै वड़कयो'कै सामूं सायो इलजो चपड़ासी "वापजी आपनै सा'व याद करै है।"

दफतर में जायनै कुरसी पर टिकण पैली ही अेक ओरडर झिलायो, सुवास्थ्य सेवा रै कैम्प मांय म्हनै तीन दिन गच्छीपरै गांव में रैवणूं हो, आ पौथी सूं चाल'र टिचर पाटी तांई री दौड़ दौड़णी ही उणमणार 'कै हरखर पण दौड़णी ही।

अंग्रेजी महीना री सतरा तारीख। ढळती रात। च्यारूं मेर घुळता वादळा अर पळपळाती वीजळयां। पण दूजी कानी माथा सूं ऊपर राज रो हुकम। टेसण पर पूगण सूं पेली डील रा जूनां गावा अर नुई विरखा रो भेट मिलाप व्हैगो। समचार मिल्या'कै अणमाप विरखा रै कारण खालड़्या वाळो पुळ टूटगो। सोच विचार में पड़गो म्हूं, अव कियां पुगूं ? काई करूं ? ई अंतर जुद्ध नै तोड़यो जुम्मु तेली "माट-साव ! अठै कियां अर हाथ में थेलो ?" गच्छीपरै जाणूं है "पधारो म्हनै भी चालणूं है" "कद ?"

"ई घड़ी। सुणी हूं, रात नैं गच्छीपरा में अणपार पाणी पड़्यो है। म्हारी बडोडी भाण हलीमा बठै ही ब्याही है मिलण सारू जाणूं जरूरी है" म्हैं दोन्यू ऊंट पर बैठ'र रुवानै व्हीया। गांव वारै निकळतां ही करीम मिल्यो जिका नैं भी वा ही जात्रा करणी ही जिका म्हांनै सोरा दोरा तीन्यू ही जम्या।

ऊंट पर सुवारी करण रा मौका कम ही आवै। रगड़ सूं काच्छां रो चर-मराणू सुभाविक ही हो। ई सूं भी कठण हो बिरखा रो संकट जिकी किड़कार पडै ही। मारग अर खेत पाणी सूं अेक मेक व्हैगा। ईं अणाचार सूं मानखो वोखळागो। काच्छां टांक्योडी जुवान लुगायां। डील उघाड़ा। मोट्यार अर दस-पन्दरा बरस रा टाबर आपरी फ़सल नैं बचावण सारू पावड़ा सूं खाई देर्या हा। जखड़ी तो सै करता ही हा पण पाणी वखड़ी में नीं आवतो। बीज्योड़ा मोठ बाजरी लोपालोप व्हैगा। फोरा-पतळा अर जूतां खेल्ड़ा-वोल्ड़ा पाणी में झोला खावै है।

वगत आपरै काळजा तळै अणगिणत घटनावां समेट'र चाल्या करै है बेखटकै। पाणी रै वेग में वढोतरी पर वढोतरी। 'जीवैला नर तो और करैला घर। वाळी बात नै ध्यान में राखता थका आपोआप नैं बचावण रो जुगाड़ करण लाग्या। आप मरता बाप कुण नै याद आवै ? पाणी रो वेग इणू व्हैर्यो हो। भूखा ढांडा अरड़ावण लाग्या अर मिनख खुद रै बचाव सारू जुगत करण।

खाडां खोपचां में पड़ता बचता बड़ी कठिनाई सूं गच्छीपरा रै गोरवै पूग्या कै ऊंट आखडै'र पड़्यो,म्है तीन्यू सुवार पाणी भेळा। पाणी छाती ताईं। चालणू मुसकल पण अकतेड़ा करतां करता असपताळ पूग्या। हुकम मिल्यो 'वाढ सूं बचावो'।

जुम्मा नै साथ लै'र पूछताछ करता करता बीं टीबड़ा पर पूग्या जठै गांव रा बेघर लोग वैठ्या हा हलीमा कोई अस्सी बरसां नैड़ी। सळां भर्योड़ी चामड़ी मांय गड्योड़ी आख्यां अर झुक्योड़ी कमर जुम्मां रै बांथ घाल'र डुसक्या भरण लागी। जुम्मु भी भाणं रो अनुकरण कर्यो। ध्यावस वन्धार दोन्या नैं अळगा कर्या।

थकाण सूं म्हूं इतरो घायल व्हेगो हो'कै पाणी भर्या तालरा में बैठ'र सुखी अनुभव कर्यो। हलीमा रै भुवा भतीजा रो मुलैमू लगातो थको बात छेडी— "भुवा बिरखा कद सरू हुई अर कितरो नुकसाण व्हीयो।" लम्बो सांस छोडती बोली, "का'ल दिनाथ्यां तो आकास तारां सूं चमचमातो हो पण अल्ला रीं कुदरत न्यारी है। उतरादी गाज हुई अर थोड़ी कै'दार में अळैळ-अळैळ पाणी पड़वा लाग्यो।"

—"पछै"

हलीमा हाथ नै गालड़ा कै लगा'र वात नै जारी राखी, पड़नाळा डाकणा सरू व्हीया अर अघघड़ी मांय तो चूलां पाणी चढगो। घरतुयां पड़्या पूर पल्ला पाणी रै भोला रै साथ गुवाड़ में गया परा।

—"भूंडी हुई भुवा"

—"हां वेटा। मालक री कुदरत रै आगै वापड़ा मिनख रो काई जोर।"

—"ओर्‌यूं काई हुयो ?"

"इतरीदार में अेक साथ दोय तीन धमाका सुणीज्या। डांगड़ी रै थोगा सूं वारै आर देखूं तो मोड्डु भांभी अर लखारां'ळा मकान चकनाचूर थरती पड़्या दीख्या। म्हारो काळजो फड़कवा लाग्यो। बांच्योड़ो कागद हूं पण मौत रांड सूं जिनगाणी में पैलीवार डर लाग्यो।"

—"अठै कियां पूगी भाण" जुम्मु धीमै सुर में सुवाल कर्‌यो।

—"वीरा भलो करो मालक भैरजी ठाकरां को जिका कांधै राळ'र म्हनै ई टीवड़ा पर छोडगा। धीरै धीरै लोग गुड़ता रूळता अठै अेकठ व्हैगा।"

जुम्मा नै वठै ही छोड़्यो। म्हूँ अर करीम पाणी सूं डूब्योड़ी मारवाड़ री धरती नै देखणं नै रूवाना व्हीया। लाख रिपियां री लागत सूं वणी हवेल्या पर म्हारी आख पड़ी जिकी पाणी री अणसेती थप्पड़ां सूं चीर चीर व्हैगी।

पैन्ट नै साथळां ताईं चढा'र लाठी रै थोगा देता आगै चाल्या। काचा झूंडा रो नांव निसाण ही मिटगो। वाड़ां री वड़्यां पाणी रै हवोळा सूं कठई री कठई।

पाणी पर तिरता मिनखां रा गावा अर मर्‌योड़ा पंखेरू ई अणाचार री मून का'णी कैरया हा। म्हूं च्यारूं मेर फेरी दियां पछै वैठगो अेक भाटा पर। आंख वन्द कर'र विचार जगत में डूबगो। मारवाड़ पाणी में डूवी अर म्हूं विचारां में।



बेमाता रा आंक

—रामनिरंजन सरमा "ठिमाऊ"

सेठ डूंगरमल घणं करड़ै हाड़रो आदमी हो। काम करणं में छीणीं को टूकई कदेई ठालो कोनी रैतो। सारै दिन काम कै लाग्योई रैतो। गांव मैं वी री अेक छोटीसी हाट ही। वैंयां तो दूकान मैं छोटी मोटी सैंई चीजां राख्या करतो पण वींकी दूकान घी कै वास्तै नामी थी। उण दिनां नकलीड़ो घी कोनी चाल्यो, ईं वास्तै घी बोल के चोखो घी मिल्या करतो। हां, जै घी मैं छा की मातर घणीं रैती वो घी चोखो कोनी मान्यो जातो। डूंगरमल तड़कली कै उठकै वार गांवां मैं जाया करतो अर नो दस वजे तोडी दो घी का पीपा लेके उल्टो पूंच ज्यांतो। पछै सारै दिन आपकी दूकान खोलतो। दूंगरमल घणो कस वठावणियों आदमी हो। घी को पीपो खाली हो ज्यांतो जणां घरां सैं अेक वाजरै को मोटो सो रोट मगावतो अर वींनै चूर के पीपै मैं गेर के सारै पीपै नै रगड़ रगड़कें पूंछ लेतो। पाछै वी चूरमैं पर सक्कर की खाली वोरी झड़कांवतो अर पाछै वीनै पाणी कै सागै पेट मैं गेरतो। दूकान वास्तै सोदो ल्यातो जणां पल्दारां नैं पीसा कोनी देतो, आप ही उठा ल्यायतो। इतणीं मीणत कर्‌यां पछै बी डूंगर सेठ को पेट लिवाड़ियों ही चालतो। पीसा कोनी हुया। रोजिनां मन्दर देवरां वी जातो अर गणेसजी कै आगै घणीं अरदास करतो पण कोई गिरै करड़ोई हो। पण्डत अर डाकोतां नैं दिनमान पूछतोई रैतो। बै हिमळास दिवाता रैता। पण्डतां नैं सरदा सारू पीसा बी दिया करतो क्यूं कै कही वी है कै भुखो दे जोतगी नैं अर धोयो दे वैद नैं।

डूंगर सेठ की दसा वी पल्टो खायो। जलम पतरी मैं ऊंचा गिरै आया। पण्डतां बम्बई को म्हूरत काढ़ दियो। बालाजी कै धोक देके, गणेशजी ने सुमरके अर कड़्यां कै खरची का रिपिया वांद के डूंगर सेठ बम्बई जांण नै त्यार होगो। घरां सैं निकल्यो जणां वांयो गधो वोल्यो, थोडीं सी आगै नै जीवणै नाकै सांड टांडतो मिल्यो अर वी सूं आगै अेक सुहागण लुगाई गोदी मैं टाबर सियां अर सिर पर भरी दोगड़ लियां मिली। सेठ झट अंटी में सै टक्को काडके ऊपरलै भर्‌यैं घड़ै मैं गेर्‌यो। ऊट हाळो

बोल्यो, 'सेठ न्हाल होगो, तेरो दिन खड्यो है, लखपती होके आवैगो । बात वी साची है । सूंण भगवान् का भेज्योड़ा संदेस हुवै है । सेठ नै तीनूं सूण जोरदार हुया ।

बम्बई में उण दिनां रूई, चांदी अर अरन्डां को सोदो बेथाग चाल्या करतो । सेठ पैलड़ै दिन डरतै सै सोदो कर्‌यो । पचास रिपिया आया धीरै धीरै बढ़तो गयो । तीन म्हैना मैंई सेठ लखपती होगो, देस आयो जणां रिपिया पांच लाख रोकड़ी लेके आयो । और जात्यां तो पीसा कमावै जणां गुलछर्रा उडावै पण वांणियों जद पीसा कमावै तो सै सैं पैल्यां बैठण नै चोखो ठांव करावै क्यूं कै कही वी है-"पैलो सुख निरोगी काया, दूजो सुख बैठण नै छाया ।" ठाव सैं छायां तो हुवैई पण सागै सागै विरादरी मैं मान वी बधै । देखी गई है कै हेली हाळो चाये कितणोई गरीब होवो पण वींरा टाबर कुंवारा कोनी रैवै । कोई न कोई टोडां नै देखके छोरी देईजा । सेठ डूंगर वी देस मैं आतांई पैलो काम योई कर्‌यो । च्यारूं मेर की हेली का चेजो चला मेल्यो । हेली वणके त्यार होगी जणां वींकी पण्डता सैं परतिष्ठा करवायी अर न्यांगळ कर्‌यो । सारै गांव नै लाडू खुवाया ।

पीसां सैं मिनख सुखी हुवै है, इसी बात नी है । सुख तो भगवान को दियोड़ो ही हुवै है । डूंगर सेठ अर वींकी सेठाणी कै अेक ठाडो दुख हो । घर मैं कोई टाबर कोनी हो । सेठाणी जळवा धोकण का सुपना देल्या करती अर सेठ गोदी मैं गीगलो खिलावण का सुपना देख्या करतो । घणां दुखी हा दोन्यूं लोग लुगाई । रोजीनां भगवान सै याही अरदास करता । सैंस भुजावां हाळै नै कोई साचै मन सैं याद करै तो सुणी जा है कै वो जरूर पूरै है । सेठ-सेठाणी की पुकार बींरै कानां मैं पड़ी अर वींनै दया आई । सेठाणी को पगं भारी पड़ण लागगो ।

नौंवें म्हैनै सेठाणी कै गीगलो हुयो । डूंगर सेठ इतणो राजी हुयो जितणो अेक सूरदास आंख मिलणै सैं हुया करै है । सेठ की हेली सै थोड़ी सी दूर पर अेक पींपळ कै तळै अेक महात्मा तप्या करतो । गांव हाळां नै यो कोनी बेरो हो कै यो पूंच्योड़ो म्हात्मा है । सेठ के गीगलो हुयो जणां बेमाता आंक घालण आई । आंक घाल के जाती वखत बेमाता वीं म्हात्मा कै धूणै कै सारै सै निकळी । म्हात्मा बेमाता पिछाण ली । म्हात्मा बेमाता नै पूछी, "माजी कठै गया हा ?" बेमाता बोली कै अै हेली हाळै सेठ कै गीगलो हुयो है वींकै आंक घालण गई ही । म्हात्मा कै चिन्त्या हुई । म्हात्मा पूछ्यो," के आंक धाल्या ?" बेमाता बोली कै अै सेठ कै छोरै कै तो सारी ऊमर एक पाडो लिख्यो है । डूंगर सेठ आपकै छोरै को नांव किरोड़ीमल काड्यो । बेमाता कै गयां पछै म्हात्मा विचार मैं पड़गो । मन मैं सोची कै सेठ तो लखपती है अर छोरै कै भाग भाग मैं पाडो लिख दियो ? जै जीवतो रह्यो तो वीस पच्चीस वरस पछै अै बात की

छाण वींण करूंगो। "साधू तो रमताई भला" हाळी वात हुयी। म्हात्मा आपका दंड कमण्डळ उठाके चल दियो।

डूंगर सेठ कै पीसां की तो कमीं ही कोनी अर पाछै नादीद मैं अेक तूंतड़ो भगवान दियो हो अै वास्तै दोन्यूं लोग लुगाई लाड चाव मैं कसर कोनी छोड़ता। अै लाड चाव को नतीजो चोखो कोनी निकळ्यो। छोरो विगड़ के वेलै सिर को होगो। दो च्यार कलास पाछैई पढाई छोड दी अर न्याऊ संगत पकड़ली। फेर वी घर मैं पीसां को कोई घाटो कोनी। डूंगर को भाग साथ देर्यो हो। पीसो दिन दूणो अर रात चोगणो वधण लागर्यो हो। सेठाणी कै ओर टावर कोनी हुया।

किरोड़ीमल वीस वरस को हुयो जणां सेठ बीमार रैण लागगो। अेक दिन मरण हाळा हुयो जणां छोरै ने वुलाके समझायो। सेठ वोल्यो, "देख वेटा, मैं तेरै कनै इतणो पीसो छोडके जारचो हूं कै जै तूं ढंग सैं चाल्यो तो तेरै कदेई पीसै की कमो कोनी आवैगी। वैठणै नैं चोखा मकान है अर तनै व्या वी दियो तेरै टावरां नैं विणजणै खातर पीसो ठाडो राखिये। तेरी मां कै कैणै मैं चालिये। या वात कै के सेठ गंगाजळ की घूंट लेके मूं वा दियो।

सेठ कै मर्यां पाछै किरोड़ीमल कै वी वम्वई जाके किरोड़पती होणै की मन मैं आई। वूडळी विचारी घणोई समझायो पण अेक ई कोनी मानी। दिन उल्टो आग्यो हो। नीच गिरै दवाया मारै हा। लिख्योड़ी टळै कोनी। वम्वई जा पूंच्यो। अेक जाण पिछांण हाळी गद्दी में रैण लागगो अर सट्टो करण लागगो। सोदै मैं पीसो तो वींकैई आवै जिको दिन सिकन्दर हुवै मंदभागी नै तो मजूरी का पीसाई दोरां सी मिल्या करै है। याई हुई। तीन म्हैना मैंई सो किमै विल्लै लगा दियो।

किरोड़ीमल देस आगो। देस मैं आके वी निचलो कोनी बैठ्यो। बिरखा को सोदो करण लागगो। रंगबाज हो कोनी ईं वास्तै वादळ देखतांई रिपिया लगा देतो। छांट पड़ती कोनी अर पीसा लाग ज्यांता। बारा म्हैना मे गैणो गूंठी अर ढुंडा टापरा सैं वेच पूरा कर्‌या। सेठ तो आगलै लोकां जा बस्यो पण सेठाणी के खोटा लिख्या हा। बुडापै मैं उगड़चाया। अेक दिन अैया को बी देखणो पड़चो कै घर मैं नाज कोनी बापर्‌यो बूडळी दिवाळी पूजन का रिपिया ल्हको राख्या हा, वामैं सैं अेक रिपियो काढ्यो अर वाजरो मंगायो। हेली बिकगी। गांव कै वारणै जाके अेक कच्ची खुड्डी बणाके रैण लागगा।

वेमाता की कह्योड़ी वात म्हात्माजी के पच्चीस वरस पाछै याद आई। म्हात्मा हृषिकेस सैं चालके वी गांव मैं ओजूं आयो। वीनैं वेमाता की वात विचासणीं थी। म्हात्मा सीदो हेली मैं आयो। आके देख्यो तो वी हेली मैं दूसरां को डेरो पायो। हेली मैं रैंणियां सैं वैरो पड़्यो कै डूंगर सेठ को तो सुरगवास हो चुक्यो अर वींको वेटो किरोड़ीमल सो किमैं खो दियो। अव टूंडा-टापरा वेचके गांव कै वारणै रैवै है। म्हात्मा किरोड़ीमल कैनैं गयो। जाके देख्यो कै गांव कै वारणैं अेक वाड़ो है अर ऊमैं एक खुड्डी है। एक वुडिया दो टावरां नै खिलावण लागरी ही अर एक भोड़िया वाजरै की रोटी पोवण लागरी ही। अेक जुवान सो मोट्यार अेक पाडै नैं नीरण लागर्‌यो हो। म्हात्मा नै समझतां वार कोनी लागी। म्हात्मा भीतर गयो। वुडिया म्हात्मा कै वैठण वास्तै पाटो ल्याई। इतणैं मैं किरोड़ीमल वी आके म्हात्मा जी कै पगां मैं धोक खाई। म्हात्मा जी पूछ्यो जणां किरोड़ीमल वतायो कै वो आज काल वीं पाड़े सैं घरठ काडके आपको गुजर करै है। डोकरी म्हात्माजी का पग पकड़के रोवण लागगी। म्हात्मा जी नै दया आई। म्हात्मा जी वोल्या, "किरोड़ीमल ! मैं तनै अेक उपाय वताऊ हूं। किरोड़ीमल वोल्यो, 'वताओ महाराज' म्हात्मा जी वोल्या, " तूं पाडै नैं वेच दे।" "पाछै मै खाऊंगो के ?," किरोड़ीमल पूछ्यो। म्हात्मा जी वोल्या, 'तूं वा चिन्त्या मना करै। तेरै दूसरो पाडो अपणै आपही घरा आके वन्द ज्यागो। तूं तो वस पाडै नैं आतांई वेच दिया कर। तावळोई पीसां हाळो हो ज्यागो।" म्हात्मा जी जुगत वताके चालता वण्या। किरोड़ीमल दूसरैई दिन पाडै नैं वेच दियो पण दिनगे पैल्यां दूसरो पाडो खूंटै के वन्ध्यो त्यार पायो क्यूं के वेमाता वींकै अेक पाडो लिख राख्यो हो। यो काम वारा म्हेना ताणी चलतो रह्यो। किरोड़ीमल पीसां हाळो होगो। गांवां का लोग अचरज करण लागगा कै रोजिनां पाडो कठै सैं ल्यावै है ? वांनै के वेरो कै वेमाता पाडा सप्लाई करण लागरी है। किरोड़ीमल धीरै धीरै ओजूं लखपती होण लागर्‌यो। किरोड़ीमल पाडां हाळो सेठ कहुवावण लागगो। वीस वीस कोस कै गांवां का लोग पाडा मोल लेण नै आवण लागगा। आगै सैं आगै साइ आंवण लागगी। किरोड़ीमल का पाडा मोटा अर स्यान सिकल में सोवणां हुया करता। वेमाता अफरीका ताणी का पाडा लियाई पण पार कोनी पड़ी। ल्याती ल्याती हारगी। अेक रात नै वेमाता नैं किरोड़ीमल कै घरां आणो पड़्यो। आके वोली, 'वेटा किरोड़ी, में तेरै खातर पाडा ल्याती ल्याती हारगी। अव मनैं पाडा कठेइ कोनी मिलर्‌या है। अव तूं वरदान मांगले। किरोड़ीमल वोल्यो, "मनैं किरोड़पती वणादे पाछै मनैं क्यूंई कोनी चाये। वेमाता वोली, "हो ज्यागो तूं मेरो पैंडो छोड़।" किरोड़ीमल तावळोई किरोड़पती वणगो। वैंकै मिलां चालण लागगी। पण लोग वींनें पाडै हाळो सेठ ही कह्या करता। वींका पोता पड़ौता वी आगै चालके 'पाडिया' कुहवाया अर आज वी कुहावै है।

चान्द बाबा पोळी दे

—कासीप्रसाद कुंतल

फळसै आगै टाबरिया रळ मिळ कर सारा यूं गावै
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे

दादोजी डलै पर बैठ्या, दादी नै समझावै है
मिनख जमारो देख बावळी यूं ही बीत्यो जावै है
मन ही मन म मुळकन्ती दादी माळा नै टरकावै
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे

ताऊजी ताई री लैर्‌यां खेत मैं सैं आरया है
देख खेलता टाबरिया नै घणा घणा हरखारया है
आ गावां रै आगै मरवण सुरग लोक भी सरमावै
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे

बापूजी अर मां—दोन्या मैं गणमण—गणमण बातां होरी
एक बेस ल्याकर कै दीज्यो सासरियै जासी छोरी
छोरी कै सासरियै हाळा नित तूंआ फैंदा ल्यावैं
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे

चोक में बीनणियां बैठी गीत सुहाणां गावै है
प्यारी घण नै लहर्‌यो ल्याद्यो गीतां गाय सुणावै है
लहरियो ओडणरी मारूजी म्हारै मन में आवै
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे

दादोजी हेलो पाड़ै ओ फूलिया अठीनै आ
लोग बाग आणै हाळा है जा तूं हुक्को भरकर ल्या
छोटो पोतो हुक्को भरकर बाबो जी नै पकड़ावै
चान्द बाबा पोळी दे
घी भरी कचोळी दे।



मैं पाछो आवूंला

—पाब्लो नेरूदा

ओ लोग लुगायां अर
जावाळा जातरयां
म्हारै मरयां पछै कदै म्हनै अठै देखज्यो
हेरज्यो
माटी अर पत्थरां रै विचाळै
सप्योड़ै तावड़ै, वरसतै मेह
अर कांपतै सियाळै में म्हनै ढूंढज्यो
मैं साव अणबोल, विना रोळै रवदै
विना रूप रंग, सुद्ध आतम तत आवूंला
अठै मैं वगूलो बालू रा बतूळया री आंधी
अठै मैं दीखूंला अर
पाछो विलमाऊंला
अठै इज टीवां री वाळू रै साथ रमूंला
कदै कीं बोलूंळा अर कदै
चुप व्है जावूंला

उल्थो : महालसिंघ सेखावत

रंग को घणो चढग्यो

—चेखब

अमीन ग्लेब—गाव्रिलोविच स्मिनोव इस्टेसन ऊपर उतर्‌यो।

जिकै गांव वींन जमीन नेपण तांई जावणो हो वो इस्टेसण सूं दस पन्दरा कोस रै आन्तरै हो। ओ पैन्डो वीनैं घोड़ै ऊपर करणो हो। कोचवान जे पियोड़ो नी हुवै अर घोड़ो मरियल नीं हुवै तो वी दस पन्दरा कोस को पूगीजै नीं। अर जे कोचवान पियोड़ो हुवै अर घोड़ो मुर्दल हुवै तो भगवान ई मालक।

इस्टेसण रै चोकीदार खनै पूग'र वीं बूझ्यो—कांई आप बतावण रो कस्ट करोला कै डाक रा घोडा म्हानै कठै मिलैला ?

घोड़ा ऽऽ ? डाक रा ?? अठै तो पचास पचास कोस में आपनै गैलै में कोई गंडकड़ो मिलणो ई मुस्कल है आप तो घोड़ा री बात करो हो। जावणो कठै है आपनै ?

जनरल खखनोफ रै चक - देवकीनो।

अच्छा !—संतरी उबांसी लिन्धी - तो आप इयां करो इस्टेसण रै लारै चल्या जावो। बठै स्यात आपनै कोई वुन्नै रो मिल ज्यावै अर आप नै बैठा लेवै।

अमीन एक लाम्बो सांस नाख्यो अर इस्टेसण रै लारै खानी भीर हुग्यो। कई ताळ री ढूंढा सोझी बूझताझ अर भाजा नासी रै उपरायन्त वीनैं एक किसान मिल्यो जिको डीलडोल रो सैंठो सांतरो हो अर उणियारै सूं गंभीर दीसै हो। पाट्योड़ो सो सूती कोट वींरै पहरण तांई हो अर पगां में लकड़ी री चट्यां सी ही।

गाडी में चढतां ई अमीन खीझ'र कैयो—राम जाणै कांई गाडी है आ थारी ? ईं रो ओ वी ठा नईं लागै कै आगलो पासो किसो है अर लारलो किसो ?

ईं में ठा नईं लागण री कांई बात है ? जिन्नै घोड़ै री पूंछ है वो आगो है, अर जठै हजूर बैठला वो लारो।

घोड़ो हो तो जुवान पण जावक ई दूवळो। वीं री लारली टांगां भूंयोड़ी ही अर कान कतर्योड़ा। गाडीवान जणा उठ'र वीं रै चावक मार्यो तो वो फकत सिर हला'र ई रैग्यो, दो तीन गाळां रै साथै जणां वीं दूजो चावक जमायो तो गाडी चू चर्र्र्र कर'र थोड़ी कांपी जियां पाळो चढयोड़ो कांप्या करै है। तीजै चावक में गाडी हाली अर चोथै में आपरी जिग्यां सूं सरकी।

जोर रै हिचकोळां रो मजो लेवतै अर काछवै री धीमी चाल साथै धचकां रो सोवणो समन्वय करावण हाळा इसो गाडीवानां री अनोखी जोगता ऊपरं अचूंभो करतै अमीन बूझ्यो—क्यूं भाई ? आपां नै ईं चाल सूं ईं सुमद पैन्डो करणो हुवैलो कांई ?

धीजो बंधावतै सै रै सुर में गाडीवान उथळो दिन्यो—जी ! करणो हुवैलो। घोड़ो जुवान है अर तेजलो वी, एक'र टिचकार दिन्यो तो फेर थाम्यो ई को थामैलो नी। पण कमवख्त एक'र ।

घोड़ा गाडी इस्टेसण सूं चाली जणा ई दिन तिरूं डूवूं हो। अमीन रै जीवणै अंधारो वर्फीलो मैदान हो जिकै रो कोई निवेड़ नईं हो। वीं रै उपर चालतो चालतो कोई वी सीधो नरक नै पूग सकै हो, दूर जठै धरती अर अकास रो मिलाण हुवै वठै ई वीं मैदान रो निवेड़ हो अर इयां लागै हो जियां वठै जांवतो वो आभै सूं एक मैक हुग्यो हुवै। ठंड बधती जावै ही। गैलै रै डावै करतां, अंधारै सूं कळाइझतै वायरै में का तो टीवा ई टीवा हा का गई साल रा पूळां रा छिग्गर, का दरखत ! सामै कांई हो ? बो अमीन नै नईं दीसै हो, कारण कै गाडीवान री लाम्बी चौड़ी सूगली पीठ वी रै आडी आयोड़ी ही। चारूं खानी सरणाटो हो अर ठंड इतरी ही के वरफ जमणी सरू हूगी ही।

ओवरकोट री कालरां सूं आपरा कान ढकण री कोसीस करतो, अमीन सोचण ढुक्यो—कितरी सुनसान अर उजाड़ जिग्यां है, न नड़ै तेड़ै कोई गांव न घर। अर ओ अवखो टेम, कोई हमलो कर'र लूट लेवै अर गोळी री दे'र मार ई नाखै तो कीं नै ईं ठा ई नईं लागै। फेर, गाडीवान रो ई कांई भरोसो ? अर कांई ओ इं रो घोड़ो है थोड़ो सो डगो दयो तो पड़ज्यावै। सांठ सांठ'र कर्योड़ी ई री लगाम ई किस्ती बाईयात है अर गन्दी।

"अरै भाई ! तेरो नांव कांई है ?" अमीन बूझ्यो।

"मेरो ? विलम !"

"विलम! थानै कियां लागै है? भय नईं आवै ? आ जिग्या खतरै सूं खाली नईं हू सकै। जे कोई आ'र लूट लेसी तो ?"

"नईं लूटपाट रो अठै नांव ईं नईं भगवान री दया सूं ।"

"आ वात तो तेरी ठीक है के अठै लूटपाट नईं हुवै पण फेर वी आप रो जावतो तो आच्छो ई हुवै है, आई सोच'र हूं तीन रिवाल्वर साथै ले लिन्धा हा। अर थानै तो ठा ई है रिवाल्वर कित्तो खतरनाक हथियार हुवै है ? दस डाकू हुवै तो वांरो दिमाग ठीक कर्‌यो जा सकै है।'

अंधारो गहरो हुग्यो हो। अचाणक गाडी सूं चूं चरमर हुई जियां चिरळाई हुवै, थोड़ी ताळ हालती रैई ज्यूं धक्को करती हुवै अर डावै खानी मुड़गी।

अमीन सोचण ढूक्यो—ओ मन्नै कठे ले ज्यावै है ? अव तांई तो ओ जावक सींधो आयो अव अचाणचक डावै मुड़ग्यो। जरूर मिनख ओ कोई गैर है अर म्हानै ओ कोई छानी जिग्यां ले ज्यावै हैं। अर अर कई बर इयां हुया वी करै है फेर गाडीवान नै सुणा'र बोल्यो—ओ, सुण ! तू कैवै हो अठै कोई खतरो नईं है। आ तो वडी अपसोच री वात है। म्हानै तो डाकुआं सूं लडणे में मजो आया करै है देखण में हूं इयांई लागूं ई हूं सींकसळाई सो ज्यूं बीमार उठ्‌गो होऊं, पण समझले ताकत मेरै में ना'र जितरी है एक'र तो तीन डाकुआं आ'र म्हानै घेर लिन्धो । कांई समझ्यो ? वां मां सूं एक नै तो हूं उठा'र इसो वगायो के सुणै है नी ? के वो सीधो ई जमलोक पूगग्यो अर वाकी दोनूं म्हारै ई कारणै साइबेरिया री हवा खावण तांई भेज दिन्धा। न जाणै कठै सूं म्हारै में इत्ती ताकत आ ज्यावै है ? थारै जिसो कोई हट्टो कट्टो ई ले आव अर हूं वींनै एक हाथ सू पकड़ ल्यूं हूं—फेर छुडा तो ल्यो दिखां.....।

विलम एक'र अमीन नै सावचेत जोयो, फेर आंख्यां मिचमिचाई अर घोड़ै रै चावक मार्‌यो ।

अमीन आपरो बोलणो सरू राख्यो—हां, भई ! भगवान न करै म्हारै सूं कोई रा टाकरा हुवै, डाकू रा हाथ पग तो जाणी हा ई नईं, साथै कचेड़्यां री धूड़ फाकणी हुवैली जिकी न्यारी। अर मजै री वात आ के सगळा जिज अर अफसर म्हारा सैदा है। सिरकारी आदमी हूं नीं अफसरां नै ई बात री पूरी जाणकारी रेवै के कद हूं कठै जाय रैयो हूं अर कद कठै ? कर ईं वात रो पूरो जाव्तो रैवै कै कोई म्हारै खानी आंख उठा'र वी नईं देख सकै। पूरै गैलै ऊपर झाड़ियां अर बोझां लारै सिपाई अर चौकीदार विठा दिया जावै... रो.....रोक, अचाणचक जोरसूं अमीन चिरळी मै'ली— तूं म्हानै कठै ले आयो अर कठै ले ज्यावै है ?

"थांनै दोसै नईं ? जंगळ है, ओ। कांईं है ?"

अमीन सोचण ढूक्यो—ठीक है, जंगळ ई है, अर मैं डर ई ग्यो। खैर, पण गाडीवान नै इयां डर्योड़ो दीसणो ठीक नईं है। वियां ई नै ठा है कै हूं डर्योड़ो हूं—ओ बर बर मुड़ मुड़'र जणाई तो जोवै है? जरूर ईं रै मन में काळो है। पहलां गाडी चालै ई नईं ही अर अब भजायां जावै है।

"विलम ! तूं घोड़ै नैं इतो खातो क्यां तांई हांके है ?"

"हूं कठै हांकू हूं। ओ आपूं आप भाजै है...ओ जणा भाजण लाग ज्यावै तो फेर डटणा मुस्कल हू ज्यावै है ईं रै छिन चढ ज्यावै...।"

भूठ ! सफ़ा झूठ वोलै है ! वात आ है, गाडी नै इत्ती तेज नईं...याम ' घोड़ै री लगाम खींच...हां सुन भई ! रोक...!

"पण क्यूं ?"

वात आ है...आ है कै इस्टेसण सूं म्हारा चार सागड़दी लारै ओर आवण हाळा है। वां सूं जरूरी काम है। वां कैयो हो कै वै म्हानै ईं जंगळ में लारै सूं नावड़ सी। वांरै साथै गैलो वी मजै सूं कट सी...। वै आदमी वड़ा डील डोल रा जवरा है। वां खनै च्यारां खनै एक एक पिस्तोल है। तूं इयां आख्यां फाड़ फाड़'र कांईं देखै है ? तूं तो इया कांपै है, जियां भीटकां उपर वैठ्यो हुवै ? हां...मैं तो...भई, मैं तो... म्हारै में अंडी देखण हाळी कांईं बात है ?...कोई खास वात नईं है...फकत म्हारै खनै एक रिवाल्वर है, वस...हां. तूं चावै तो हूं काढूं अर थानै दिखाण द्यूं...वोल...।"

अमीन इयूं दरसायो ज्यूं गोजी संभाळतो हुवै। पण ईं रै साथै ई जिकी वात हुई वींरो वींनै आपरै डरपोक पणै पाण अन्दाजो नईं हो। विलम झटाक् देणी रो गाडी सूं कूद खड्यो हुयो अर कंठ फाड़'र चिरळी मे'लतो एक झाड़ी खानी भाज छूट्यो—"सिपाई जी ! सिपाई जी !! ले ज्यावो ओ घोड़ो अर आ गाडी !! फकत म्हारी ज्यान—वकसद्यो... म्हारी ज्यान मति ल्यो...सिपाई जी !"

वीं रो भाजणै रो दड़बड़ार अर झाड़ियां री हालती डाळयां री खड़खड़ाट थोड़ी ताळ तो सुणीजी, फेर सरणाटो छायग्यो। अमीन नै अंडी वात हुवण री आस कदास्त ईं नईं ही। सगळां सूं पहलां वी बुचकार'र घोड़ै नै थाम्यो अर गाड़ी में धीजै सूं वैठ'र सोचण ढूक्यो—भाज ई छूट्यो... डरग्यो वेकूफ...। पण अव कांईं हुवै लो ? आगै एकलो जावणो वी मुस्कल है। गैलो अणजाण है। दूजै, लोग आ वी सोच सकै कै'हूं वींरो घोड़ो खोस लिन्धो। वडी मुस्कल हुई आ तो...विलम ! ओ विलम !!

वीरै आपरै इ गरणांवतै बोल्याळ उथळो दिन्धो—'विलम ।'

अब अैड़ी हाडफोड़ ठंड में सगळी रात ईं अंधारै वियावान में बैठ'र काटणी हुवैली अर फ़कत ना'रां री बोली, सरणांटो का ईं मुरदार घोड़ै री नाक रा फुरड़ाट सुणनां हुवैला—आ सोच'र अमीन नै इयूं लाग्यो ज्यूं वींरी पीठ ऊपर कोई रेती चाल भीर हुई हुवै अर पीठ झुकती जांवती हुवै ।

वीं हेला पाड़णां सरू कर्‌या—अरै विलमवा ! विलम राजा !! तूं कठै है विलमवा रै ।

अमीन दोय घन्टा तांई बोकाड़ा पाड़तो रैयो । वीं रा कंठ बैठग्या अर जणा वो निसासु हो'र बैठग्यो कै जगळ में ईं रात काटणै सूं दूजो कोई उपाव नईं है तो मधरै वायरै री पीठ चढ'र एक धीमो सो सुरसराट वींरै कानां तांई पूग्यो ।

"विलम ! अरै थूं है, मेरा दोस्त ! आ, चालां !"

"मार नाखो !"

नई मेरा दोस्त ! मैं तो इयूं ईं मजाक करै हो । परमात्मां री सोगन जे झूठ बोलतो होऊं तो । सञ्ची हूं तो मजाक करै हो । म्हारै खनै कठै है रिवाल्वर ? ओ तो इयांई डर रै मार्‌ये हूं झूठ बोल दिन्धो हो । अब दया कर दोस्त ! आ, चालां ! म्हारै कंपकपी चढ रैयी है ।

साव आ सोच'र के लुटैरो घोड़ै अर गाडी नै ले'र चम्पत हुग्यो हुवै लो, विलम जंगळ सूं बारै नीसर्‌यो हो अर डरतो डरतो कोई सुळभाळ लेवण तांई उन्नै आयो हो ।

"गैला । तूं तो डर ई ग्यो सफा ? मैं तो, मैं तो बस मजाक कर्‌यो हो अर तूं डरग्यो आ, बैठ ।"

विलम घोड़ै रै चावक मार्‌यो ! गाडी हाली ! विलम फेरूं चावक झाड़्यो तो गाडी थोड़ी जोर सूं हाली । चौथै चावक में गाडी आप री जिग्यां सूं सरकी तो अमीन कोट री कालरां सूं आपरा कान ढक लिन्धा अर कीं सोचण ढूक्यो । अब वीं नै न तो विलम सूं खतरो हो अर न गै'लै सूं ।

—उल्थो : मोहन आलोक



राजस्थानी-अेक

सं० तेजसिंघ जोधा

बहादुर स्मृति प्रकाशन, रणसींसर, वाया : डीडवाना जि० नागौर

राजस्थानी अेक राजस्थानी री नुंवी कविता री दिसा में अेक महताऊ प्रकासन है। ईं रै मांय राजस्थानी रा पांच कवि है—गोरधनसिंघ सेखावत, मणिमधुकर, ओंकार पारीक, पारस अरोड़ा अर खुद तेजसिंघ जोधा। पांचों कवि हिन्दी या दूजी भासावां टेमोटेम हुवण आळा आंदोलनां, विचारां अर आज री चेतना सारू जागरूक है। अै कवि लारला कीं वरसां राजस्थानी री बदळती कविता रा प्रमुख कवी मानीजै।

राजस्थानी कविता हाल आपरी लारली परम्परावां सूं पूरो कट नी पाई है इण रै साथ इज परिवेस रै बदळाव नै भी खुद रै मांय समेट नी सकी है। दुनियां रै मांय उपजता आंदोलना राजनीतिक स्थिति, मानवी संरदभ अर मूल्यां रै संकट रै प्रति जकी जागरूकता आज मानी जावै, वा इण कवियां री कविता मांय भी है। आं कवितावां में जीवन-द्रस्टि री स्पष्टता, वैचारिक पृस्ठभूमि, अनुभव री सच्चाई अर स्थितियां नै सामै रखणै री तगड़ी कोसिस है। अै कवितावां मांयले अर वारलै परिवेस ने लेय'र चालै। आं कवितावां में आयोड़ा बिम्ब अर प्रतीक सार्थक कह्या जा सकै। भासा समरथ नै आज रै परिवेस सूं जुड़योड़ी है। म्हारो केवण रो ओ मतलब है'क राजस्थानी भासा में भाव अर विचारां नै कैवण-सुणणै अर प्रगट करणै री पूरी खिमता है। आ राजस्थानी कविता भारत री दूजी भासावां री नुंवी कविता रै सामै खड़ी व्है सकै है।

म्हारै ख्याल सूं मंच अर गीत सही राजस्थानी कविता री अबखाई है। मंच अर गीत री मांग आपरी अलग है। गीत आज रै भावबोध नै संभाळ नी सकै आ कोई बहस री वात नी होय'र काव्य रूप री अेक मजबूरी है। गीत इण वास्तै खाली मनोरंजन वास्तै हुवै गीत नै सरावै अैस-आराम करवाळा सामन्त या सेठ साहूकार।

उणां रै वास्तै पीक, पाद अर कविता अेक है। राजस्थानी नुंवी कविता ईं स्थिति सूं कट'र आज री बदळती स्थितियां रै प्रति आपरी जिम्मेवारी रो परिचै देवै अर ईं रो जीतो-जागतो नमूनो आ राजस्थानी-अेक है। म्हारै ख्याल सूं ईं संकलन नै निकाळणै रै पाछै सम्पादक री आ इज द्रस्टि रैयी है अर इण में कोइ संका री बात नी'क तेजसिंघ जोधा आपरै ईं प्रयास में सफल हुया है आज नी पण आगै आवाळा बरसां में लोग ईं काम नै इतियासिक काम मानैला अर अै रचनावां गीत सूं कट'र आवाळी नुंवी कविता री पृस्ठ भूमि र रूप में मानीजेली।

ईं संकलन रा कवि राजस्थान री जमीन पर आयोड़ा बदळाव तूटतां सम्बध मांय–बारै री लड़ाई, कुंठा, ऊब, संत्रास, अलगाव, अस्तित्व इत्याद मन री स्थितियां रै प्रति जागरूक है। मरुभूमि री जमीन माथै खड़्यो होय'र दुनियां रा बदळता पसवाड़ा नै देख'ण रो ओ सैंठो प्रयास है। कीं समर्थ नांव छूटग्यां है, इण बात रो अहसास सम्पादक नै है। राजस्थानी कविता रै लारला दस बरसां रै अेड़ै-छेड़ै आयोड़ा बदळाव नै लोगां रै सामै ल्यावण री द्रस्टि सूं ओ संकलन सरावण जोग है।

—गोपाल जैन



महाकवि पृथ्वीराज सूं सम्बन्धित प्रशस्तियां

(डा० मनोहर शर्मा)

पृथ्वीराज राठौड़ राजस्थानी भाषा रा सर्वश्रेष्ठ कवि मान्या जावै है। आपरो साहित्य अनेक विधावां में प्राप्त है अर उण रो प्रचार भी खूब हुयो है। खास बात या है कै आपनै जीवन-काल में ही भोत घणीं लोकप्रियता प्राप्त हुई अर ईं तथ्य रो मूळ आधार आपरो ओजस्वी व्यक्तित्व तथा आपरी रचनावां रो महत्व है।

महाकवि पृथ्वीराज री विविध रचनावां में "क्रिसन रुकमणी री वेलि" रो महत्व विशेष ऊंचो है। ईं काव्य ग्रंथ री संस्कृत, राजस्थानी तथा हिन्दी में अनेक टीकावां हुई है अर यो क्रम अब भी चालू है। साथै ई अनेक कवि-कोविदां आपरै साहित्य सूं प्रभावित हुयर आपरो प्रशस्ति गान भी करयो है। प्रस्तुत निबंध रो विषय प्रधान रूप सूं ये प्रशस्तियां ई है।

ये प्रशस्तियां राजस्थानी रै अतिरिक्त हिन्दी संस्कृत में भी प्राप्त है। ध्यान राखणो चाहिजै कै जिण भांत ऐतिहासिक अनुसंधान में राज-प्रशस्तियां रो महत्व है, उणीज भांत, साहित्यिक अनुसंधान में ईं कवि-प्रशस्तियां रो महत्त्व है। इणां मांय कवि-मुख सूं दूजै कवि रो गौरवगान प्रगट हुयो है। इण भांत यो गौरव-गान खास तौर सूं ध्यान देवण जोग है।

सब सूं पहली पृथ्वीराज सम्बन्धी संस्कृत–प्रशस्तियां देखो—

(१)

श्रीमज्जोध नरपतेः समभवद् ऋद्धिक्रमो विक्रम—
स्तस्माद्विश्रुत लूणकरण नृपतिः श्री जैत्रसिंहस्ततः।
तस्माद्राउपद प्रसिद्ध महिमा कल्याण भूमिपति—
स्तत्पादांबुज भास्करः समजनि श्री रायसिंह प्रभुः॥
तद्भ्राता राष्ट्रकूट प्रकटतरयशाः शुद्धचेताः सुशीलः

सद्वुद्धि शास्त्रकर्त्ता हरिचरण युग्माराधनैकाग्रचित्तः ।
पृथ्वीराज प्रसिद्धो जगति गुणनिधी राजराजा कवीनाम्
सोमां वल्लीति नाम्नीं हरिचरितयुतां राजगीतां चकार ॥

पृथ्वीराजावतारेण भक्तानुग्रहकाम्यया ।
स्वयं नारायणः स्वस्य जगाद चरितं हितम् ॥

ज्ञाता भोक्ता हरेर्भक्तः कर्त्ता शास्त्रस्य शास्त्रवित् ।
पृथ्वीराजसमो राजा न भूतो न भविष्यति ॥

(जैन कवि श्रीसार री टीका, सं० १७०३)

(२)

पृथ्वीराज, कवे, रवे मरुधरा-पद्मासना-भासुर,
रक्षिन् भारत संस्कृतेर्नवरश्च बलान्तस्य चित्तस्य च,
नव्या ते स्मृतिरद्य विस्मृतबलान् संजीवयेन्नः पुनः,
राष्ट्रे शक्तिरुदेतु धर्मरहिते धर्मस्य बोधस्तथा ॥

(श्री विद्याधर शास्त्री, वर्तमान कवि)

(३)

भुजायां राजते शक्तिर्मुखे चैव सरस्वती ।
हृदयं प्रेमरसोत्फुल्लम्, धन्यः कल्याणपुत्रकः ॥
आगतो भारते देशे कविर्विख्यात वीर्यवान् ।
आर्यचरितमाख्यातुम्, वीरो राष्ट्रवरो महान् ॥
रोपयित्वा प्रभावल्लीम्, मृत्युलोकेऽत्र कामदाम् ।
मरुवाणी महापुज्या, देमवाणी समा कृता ॥

(डा० मनोहर शर्मा, वर्तमान कवि)

ईं संस्कृत-प्रशस्तियां सूं परगट है कै इणां रो रचनाक्रम पुराणै समै सूं चालू हुय हालतांई रुक्यो नी है। आज रा संस्कृत कवि भी पुराणै भाषाकवि पृथ्वीराज नै आपरी भाव-सुमनांजलि भेंट करै है। ये कवि रै समग्र प्रभाव री सूचक है। जैन कवि श्रीसार तो 'वेलि' री रसधारा सूं इतरो घणो प्रभावित हुयो कै 'पृथ्वीराज समो राजा, न भूतो न भविष्यति' लिखर संतोष मान्यो। ईं सूं ऊंचो कवि रो महिमा-गान ओर कांई हुय सकै है ?

ईं उक्ति रो विशेष अभिप्राय है। पृथ्वीराज राठौड़ मुगल–सम्राट री सेवा में रहतां थकां महाराणा प्रतापसिंघ री रीति–नीति रा प्रशंसक अर साथै ही समर्थक हा। इसो काम कोई महाप्राण व्यक्ति ही कर सकै है। पृथ्वीराज एक साथै ही दुर्गा अर सरस्वती दोनुंवां रा उपासक अर कृपापात्र हा। अठै लक्ष्मी री चरचा करणै री तो आवश्यकता-ही नीं है। राजस्थान में अनेक वीर–पुरुष हुया है पण उणां में विद्वान-कवि कम ही हुया। राजस्थान में अनेक राजा-महाराजा कवि-कोविदां रा आश्रयदाता रैया है पण स्वयं असंदिग्ध रूप सूं इतरा बड़ा रचनाकार नी हुया। ई सारी बातां पर ध्यान दियो जावै तो पृथ्वीराज खातर 'न भूतो न भविष्यति' कैयो जावणो अत्युक्तिपूर्ण कवि–वचन प्रतीत नी हुवै।

आगै ब्रजभाषा में विरचित पृथ्वीराज री विरुद-गान सुणो —

(१)

सवैया गीत सलोक, वेलि दोहा गुण नवरस।
पिंगल काव्य प्रमाण, बिविध विधि गायो हरिजस॥
परिदुख विदुख सलाध्य, वचन रचना जु उचारे।
अर्थ विचित्र नमोल, सर्व सागर उद्धारे॥
रुकमिणी लता वरणन अनुप, वागीस वदन कल्याण सुव।
नर देव उभय भाखा निपुन, प्रथीराज कविराज हुव॥

(भक्तवर नाभादास जी)

(२)

वर नर्सनि वैकुंठ की, रची वेलि संसार।
सुनै सुनावै जिन नरनु, प्रेम उतारै पार॥

(गोपाल कवि)

ईं प्रशस्तियां में भक्तवर नाभादासजी री प्रशस्ति खास तौर सूं ध्यान देवण जोग है। एक ही छप्पय मांय नाभादासजी पृथ्वीराज राठौड़ रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रै सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण संकेत दिया है। पृथ्वीराज राठौड़ नर-भाषा अर देव-भाषा दोनूं में निपुण हा। नर-भाषा मांय डिंगल (राजस्थानी) तथा पिंगल (ब्रजभाषा) सम्मिलित है। साथै ही या बात भी परगट करी गई है कै पृथ्वीराज विविध विधावां में काव्य–रचना प्रस्तुत करी है। जिण भांत तुळसीदास जी आपरै जमानै में प्रचलित अनेक काव्य शैलियां में रामचरित्र गायो, उणीज भांत पृथ्वीराज भी कृष्ण चरित्र रो

गायन 'विविध विधि' कर्‌यो है। नाभादास जी रै आगै पृथ्वीराज री सगळी रचनावां रैयी है, जिणां खातर वै सवैया, गीत, सलोक, वेलि, दोहा, गुण आदि संकेत दिया है। ई संकेतां में 'गीत, सिलोका' अर 'गुण' राजस्थानी साहित्य में विशेष अर्थ राखै है अर इण नामां सूं अनेक कवियां री रचनावां भी मोकळी प्राप्त है।

इसी स्थिति में पृथ्वीराज री छोटी-बड़ी फुटकळ रचनावां पुराणी हस्त-प्रतियां में संशोधनीय है। समै-समै पर महाकवि री कई फुटकळ रचनावां पुराणी पोथियां में मिलती भी रैयी है अर विद्वान संशोधकां वांनै पत्र-पत्रिकावां में प्रकाशित करवाई है। पण ईं दिशा में हाल-तांई कोई खास चेष्टा नीं हुई अर या स्थिति खेदजनक है।

आगै डिंगल (राजस्थानी) में रचित पृथ्वीराज विषयक थोड़ी सी प्रशस्तियां देखो—

(१)

रुकमणि गुण लखण रूप गुण रचवण,
वेलि तास कुण करै वखाण।
पांचमो वेद भाखियो पीथल
पुणियौ उगणीसमो पुराण ॥१॥
केवल भगत अथाह कलावत,
तैं जु क्रिसन-त्री गुण तवियो।
चिहुं पांचमो वेद चालवियो,
नव दूणम गति नीगमियो ॥२॥
मैं कहियो हर भगत प्रिथीमल,
अगम अगोचर अति अचड़।
व्यास तणा भाखिया समोवड़,
ब्रह्म तणा भाखिया वड़ ॥३॥

(दुरसो आढो)

दुरसोजी आढा राजस्थानी भाषा रा एक प्रमुख कवि मान्या जावै है। वै पृथ्वीराज रा समकालीन हा। दोनुंवां री विचारधारा भी समान ईज ही। दोनूं महाराणा प्रतापसिंघ रा प्रशंसक हा। ऊपरलै डिंगलगीत में दुरसोजी वेलि-काव्य नै पांचवों वेद अर उगणीसमो पुराण बतायो है। वेलि रो यो गौरवमान विचार करणै री वस्तु है।

ध्यान राखणो चाहिजै कै राजस्थानी कवियां राधा-माधव री प्रेम-लीला कांनी खास ध्यान न देयर प्रधान रूप रूप सूं आपरो ध्यान नागदमण, इन्द्रगर्वहरण

आदि प्रसंगां साथै रुकमणी-उद्धारक श्री कृष्ण कांनी दियो है। राजस्थानी में श्री कृष्ण रुक्मिणी रै विवाह सूं सम्बन्धित अनेक काव्य लिख्या गया है। ई काव्यां में पृथ्वीराज राठौड़ री 'वेलि' प्रमुख है। जिण भांत तुळसीदास जी रै 'मानस' में भारत-लक्ष्मी सीता रै उद्धार रो स्पष्ट संकेत है, उणीज भांत पृथ्वीराज री 'वेलि' में भारत-लक्ष्मी रुकमणी रै उद्धार खातर उद्‌बोधन है। यो उद्‌बोधन वेद-वर्णित अथवा पुराण चित्रित भारतीय संस्कृति रो अभिन्न अंग है। इसी स्थिति में दुरसोजी रो वक्तव्य सर्वथा साधार है।

(२)

वेद बीज जळ विमळ, सुकवि जड़ मंडी सद्धर।
पत्र दूहा गुण पुहुप, वास भोगवइ लखमीवर॥
पसरी दीप-प्रदीप, अधिक गहिरई आडम्बर।
जे जंपइ मन सुद्धि, अंब फळ पामइ अंबर॥
विस्तार कीध जुगि जुगि विमळ, धणी किसन कहणार बन।
अम्रित वेलि पीथल अचळ, तंइ रोपी कल्याण-तन॥

(भोजग जादव, सं० १६६६ वि०)

ई प्रशस्ति मांय भी पृथ्वीराज री वेलि रो सम्बंध प्राचीन वेद-पुराण-परम्परा साथै ई जोड़यो गयो है।

(३)

कितरा आगै वड कवी, पुण्या प्रभु जस पेस।
चौज ओपमा चातुरी, वकत्या प्रथ आदेस॥
नारायण तणो कव्यां वड नीकां,
वाखांणण चो करी विस्तार।
चौज कमध कवि चाढि ओपमा,
नमो पीथ नित उकति अपार॥

(अज्ञात टीकाकार री प्रशस्ति)

(४)

च्यारि वेद नव व्याकरण, अनै चौरासी गुठ।
तो म्रित प्रिथ कल्याण रा, गई मजालस उठ॥

(अज्ञात टीकाकार)

ईं दोनूं प्रशस्तियां मांय सूं पहली में पृथ्वीराज रै काव्य रै कलापक्ष री महिमा है तो दूजी महान कवि रै व्यक्तित्व री प्रकाशक है। ईं री अंतिम पंक्ति सहज ई एक लौकिक-प्रवाद री याद दिरावै है—

पीथल सूं मजलिस गई, तानसेन सूं रंग।
रीझ बोल हस खेलिबो, गयो बीरबळ संग॥

यो प्रवाद सम्राट अकबर सूं जोड़्यो जावै है।

(५)

तो खग उरग कल्याण-तन अरिहर डसणा आह।
अणडसिया रहिया अगं, मंत्र स दूहा मांह॥१॥
मचै पवन अरि मार, अन पहु तुस धाइ उड़िया।
कण पीथल रहियौ कळह, थापै घाट विडार॥२॥

ऊपर जितरी भी प्रशस्तियां दी गई है, वै मूळ रूप सूं पृथ्वीराज रै कवि-रूप सूं सम्बन्धित है पण किणी अज्ञात कवि री ईं प्रशस्ति में राठौड़-वीर रै शौर्य रो विरुद्गान है। इसी हालत में या प्रशस्ति एक अनूठी वस्तु है। इणी क्रम में पृथ्वीराज री दानशीलता बावत भी एक पुराणो पद्य देखो—

पीथल कमध किल्याण रा, केहा गुण गावां।
थे दाता म्हे मंगता, इण नातै आवां॥

आधुनिक राजस्थानी कवि-कोविदां तो पृथ्वीराज रो विरुद्गान और भी घणै चाव सूं कर्‌यो है अर करता ही रैवै है। पृथ्वीराज री प्रत्येक जयन्ती पर इसी कवितावां बणै है अर जलसां में सुणाई जावै है। कवि उदयराज जी रा उद्गार उदाहरण सरूप देखो—

पीथल जो परकास, सजळायो अकवर समै।
जगमग जोती जास, अजां दिपै भारत, उदय॥१॥
राठ भाव राठौड़, साहित सूं पोखै सवळ।
मारू-कवियां मौड़, ओ पीथल हुयगो, उदय॥२॥

ईं चर्चा सूं प्रगट है कै आज भी राजस्थानी साहित्य-संसार में महान कवि पृथ्वीराज रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रै प्रति पूरो सम्मान है अर उणां री कीर्त्ति यथावत् अक्षुण्ण है। इसी स्थिति में राजस्थानी साहित्य-प्रेमिया रो यो प्रथम कर्त्तव्य है कै पृथ्वीराज रो सम्पूर्ण साहित्य विस्तृत विवेचन साथै ग्रंथावली रै रूप में प्रकाशित कर्‌यो जावै।

वेलिकार रै रूप में—

महाकवि पिरथीराज रो कृतित्व अर व्यक्तित्व

—दीनदयाल ओझा

राजस्थानी साहित्य में महाकवि पिरथीराज री "वेलि किसन रुक्मणी री" रो घणो ऊंचो ओपतो आसण है। इण काव्य रै सिरजणकर्त्ता रो जलम बीकानेर रै राठौड़ राजवंस में वि० स० १६०६ में मिगसर वदि १ नै हुयो। आप राव जैतसी रा पोता, राव कल्याणमल रा सुपुत्र अर महाराजा रायसिंह रा अनुज हा। विक्रम सं० १६५७ में मथुरा रै विश्रांत घाट माथै आपरो सरीर स्यान्त हुयो। आपरो पार्थिव सरीर आज जरूर संसार में नी है, पण आपरै अनूठै कामां अर भक्ति भावना री आपरी रचियोड़ी क्रतियां में अमर है।

वेलि रै अळवा आपरा लिख्योड़ा ग्रंथ वसदेरावउत, दसरथरावउत, गंगाजी रा दूहा, महाराणापरताप रा दूहा, प्रकीर्ण दूहा, प्रकीर्णगीत अर नख सिख, राजस्थानी साहित्य रा अणमोल रतन है। मिस्र बंधुआं अर डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल आपरी लिखियोड़ी 'प्रेम दीपिका' अर श्यामलता रो भी उल्लेख कियो पण घणकरा विद्वान इण ग्रंथां नै आपरा रचियोड़ा नी मानै।

निराळै क्रतित्व अर व्यक्तित्व रै धणी महाकवि पिरथीराज राठौड़ रो नाम लैवतांई अेक इसै सुगणै सूरवीर रो सरूप सामनै आवै जिको अकबर री सभा रो मानीजतो सदस्य हुवतां थकां भी अकबर रै अंकुस नै पग-पग माथै अस्वीकारै। उणरै रात-दिन नैड़ो रैवतो थकां उणीरै सत्रु महाराणा परताप सूं प्रीत राखै। राजपूत संस्कृति री सोवणी गोद पळियोड़ो पिरथीराज मुगल सम्राट री सभा में बैठतां थकां आपरै

आराध्य रो नित नेम सूं स्मरण करै। भारत री असहाय जनता माथै हुवणवाळै अत्याचारां रा चितराम हिवड़ै में संजोवै अर रय-रय उण अत्याचारां सूं मुक्ति दिरावण सारू ठावा उपाय सोचै।

चिंता री इण अटपटी गळियां पिरथीराज रो भावुक मन नित नूंवी कल्पनावां रै हिंडोळै हींडतो। पण आ घणी सरावण जोग बात ही कै घण वडभागी पिरथीराज माथै अेकै कानी जे भगवती लिछमी री अटूट किरपा ही तो दूजै कानी भगवती सरसती रो भी उणरै माथै घणो सक्को हाथ हो। लिछमी अर सरसती री इणी अनूठी किरपा रै सायरै पिरथीराज रै पागड़ै जीत ही'। प्रभु किरपा सूं पिरथीराज रै मुख मंडळ माथै जै तपतै सूरज जिसो तेज हो तो हिवड़ै ही ससि सारसी सीतळता। अन्तस में देस, जाति अर धरम नै उवारण री आग ही तो अधरां माथै संजीवण मंत्र फूकण री अमर लालसा। भगवती दुर्गा अर सरसती रै इण लाडेसर रै अेक हाथ में करवाल ही तो दूजै में कलम।

महाकवि पिरथीराज रै जीवण रा मोकळा काम इतिहास री दीठ सूं सरावण जोग है। वांरो जीवणव्रित्त जे घणै अंधियारै में ओपतो उजास है तो वांरो क्रतित्व जुगजुगाद तांई प्रेरणा देवणवाळो। साहित्य रै इण अमर सधिक री कालजयी क्रति 'वेलि किसन रुकमणी री' कवि-कीरत रो अडिग अडावळ है। इण रै अलावा दसरथ रावउत, वसदेरावउत, गंगा लहरी, दूजा फुटकर दूहा-गीत समै-समै माथै कवि रै हिवड़ै हबोळा लेवतै भाव सागर री उठती छोळां है, जिणरो आपरो निराळो सरूप है मधरो मिठास है। राजस्थान रै लोक जीवण रा कंठहार अै फुटकर दूहा कवि रै कीरत री अमर ओळखांण है। साहित्य रै सुगणै पारखियां कवि रै क्रितित्व नै घणी गैहराई सूं निरख-परख भांत भांत री उपमावां सूं ओपतो आदर दियो है। नूवा, पुराणा, देसी, विदेसी, सरसती रै सगळै सपूतां आखरां री आतमा रै ओळखांण करणिये रससिद्ध महाकवि री मनमोवणी रचनावां नै पढ घणी-घणी सरावणा की है। डिंगळ रा पारखी डा० टेसीटोरी[1] आपने 'होरेस इन डिंगल' वतायो तो कर्नल टाड[2] आपरी कवितावां में दस सहस्र घोड़ां रो वळ देखियो। भारत रै कैई कवियां अर समालोचकां पांचवों वेद[3], अमृत वेलि[4], राजस्थानी साहित्य रो दीप्तिमान रतन, अर उपमवां देख होमर[5] सूं तुलना करी तो कैई विद्वानां हिन्दी रो भवभूति[6] कैय कवि री कीरत वखांणी। भक्तां रै हिवड़ै विराजण वाळी इण वेलि रै संबंध में स्वामीजी घणी ओपती वात वताई के भक्त-लोग गीता अर सहस्त्रनाम री तरै वेलि रो नित पाठ करै।[7] डा० गुप्त वेलि री महता रो मोल

आंकतां केवै–वेलि री महता सिल्पगत, वैसिस्ट्य, युग प्रेरक सदेस अर जीवण-दरसन सबंधी उपलब्धियां तीनां रै कारण है ।[8]

सरसती सै सुगणै सपूतां रै स्रीमुख सूं वेलि रै वावत अबार तांई जिकी सरावण जोग वातां सामनै आई, उणां सूं आ वात चोखी तरै मालम पड़ै के भाषा, भाव अर सैली री दीठ सूं वेलि डिंगल-साहित्य रो वेजोड़ ग्रंथ है । इण भाव–भगती भरियोड़ै ग्रंथ री समना करण जोग दूजो ग्रंथ डिंगल भाषा में नजर नी आवै सवदां रै सिल्पी भक्त कवि पिरथीराज वेलि री कथा बीज प्रभु भक्तां रै हेताळू हियै विराजण जोग भाग वत सूं उठायो । रात दिन भगवत नाम सूं पवितर आपरै मुख रूपी थावलै इण वेलि नै उगाई । इण वेलि रा आखर हरियल पात, द्वाला-दळ, द्वाळां में सजोयोड़ो सुजस परिमल तांत तांत में रमणवाळो रस-नवरस, रसीला गुणी भगत-भंवरा, भक्ति भावना मींझर, भुगती–फूल अर वैकुंठ सुख-भोग इणरो फळ है ।

"वल्ली तसु वीज भागवत वायो, महि थाणो प्रिथुदास मुख ।
मूळ ताल जड़ अरथ मण्डहे, सुथिर करणि चढि छांह सुख ।।
पत्र अक्खर, दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु व्रिधि अहोनिस्सि ।
मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फल भुगति मिसि ।।[9]

छंद संख्या २६१, २६२,

डा० देवीद्रसाद गुप्त रै सवदां रै सामै आ वात कई जाय सकै के "जिण भांत वेलि रै सिरजणहार महाकवि पिरथीराज रै व्यक्तित्व में सामन्त सेनानी, भक्त अर कवि री त्रिधा है, उणी भांत वेलि में भक्ति-दरसण सिणगार अर वीरत्व भाव री त्रिवेणी रो काव्य सगम ।[10] पण जिण काव्य री नायिका लोकमाता, सिंधु सुता, श्री, लिछमी, पदमा, पदमालया, प्रभा, चंचला, इन्दरा, रामा, हरिवल्लभा अर रमा नाम रूपा रुक्मणी है अर नायक परमपिता परमेसर, कमलापति, त्रिविक्रम, जगतपति, माधव हरि नारायण अर वसुदेवकुमार श्री कृस्ण है उण री लीलावां बतावण वाळी रुक्मणी री सांची सखी साख्यात भगवती सरसतां है अर वरणन करण वाळो भगत कवि पिरथीराज है, उण काव्य में भक्ति भावना री भला कई कमी रय सकै ? वेलि री ओळ ओळ अर कवि रै दूजै ग्रंथां रै अध्येतावां इण बात नै अेक स्वर सूं स्वीकारी है के वेलि अेक भक्ति काव्य है ।

वेलि काव्य री परम्परा माथै सोध करणियां गुणी विद्वानां डा० नरेन्द्र भानावत, अर डा० हीरालाल माहैश्वरी वेलि रो वरगीकरण पौराणिक अर धार्मिक

रचनावां री पांत में कियो। इणी भांत राजस्थानी साहित्य अर इतिहास रै सवळै जाणीकारां डा० गौरीसंकर हीराचंद ओझा, डा० दशरथ शर्मा' डा० आनन्द प्रकाश, डा० मनोहर शर्मा, विपिन विहारी त्रिवेदी आदि आदि सगळां वेलि नै भक्ति काव्य अर महाकवि पिरथीराज नै भक्त कवि स्वीकार्‌यो।

महाकवि री भक्ति भावना किण संप्रदाय विसेस सूं प्रेरणा ले आगै चाली अथवा उणरो सवळो सबंध किण संप्रदाय सूं रैयो, इण संबंध में डा० गुप्त रै विचारां रै सागै आ बात कई जाय सकै के विट्ठलनाथ री प्रसस्ति में लिखियोड़ा १२ दूहा, जैसलमेर रै रावळ हरराज री छोटी बेटी चांपादे सूं व्याव, अर नाभादास री भक्तमाळ री साख इण बात नै बतावै के जे महाराज प्रिथीराज री ब्रह्म विसयक परिकल्पना रो संप्रदायगत आधार मार्थ ही विस्लेसण करणो है तो वांनै वल्लभाचार्य द्वारा चलायोड़ै सुद्धाद्वैतवादी पुस्टिमार्ग में निष्ठावान मान्यो जाय सकै।[11]

सबद सिल्पी, साहित्य संस्कृति अर कला रै अनूठै अनुरागी, कलपना रै अदीठ चितरामां रै रंगीलै चितारै महाकवि पिरथीराज आपरी वेलि रो घणकरो विस्तार आपरै मनमतै कियो। वेलि री ओळ-ओळ रै ऊजळै आखर में कवि रो गैहरो ग्यान अर कलपना री मौलिकता, मूंडै बोलै।

वेद, उपनिसद्, पुराण, गीता अर संस्कृत महाकवियां रै अमर ग्रंथां रो सांगोपांग अध्ययन कर उणरी परिपाटी रो पूरो निभाव कवि वेलि में कियो। महाकवि दूजै घणकरै विसयां रा रूड़ा जाणकार हा। काव्य री सिरजण परम्परा, रीति-नीति, छंद अलंकार, सबद सक्ति, रस रै सागै आपनै वैद्यक, संगीत, सट-दरसण, वास्तुकला, ज्योतिस, सुगन खेती, रो-भी गेहरो ग्यान हो।[12] वेलि रै अध्ययन सूं इण बात रो भी पतो चालै के वै मानव-मन रा भी अनूठा पारखी हा। भांत-भांत री रंग रूपाळी सुख दुख री घटनावां घटण-सूं मानव-मन री हल चल किण तरै री हुवै, उणरै मुख मंडळ रा रंग रूप किण तरै बदळाव लेवै, नायिका री उड़ीक उणरी पदचाप सुणतां अर मिलण री वेळा नायक री मनोदसा किण तरै री हुवै इण रा रूपाळा चितराम जिण भांत पिरथीराज चित्रित किया है, दूजी ठौड़ नी मिळै।[13] नारी जीवण री मनोदसा नानै पण सूं लै मदमातै जोबन तांई किण तरै बदळाव लेवै, उण भावां रै निरूपण कवि किणी तरै री काण कसर नी राखी।[14] पळ पळ पलटा खावती परकत किण भांत नित नूंवो रितुआं रै उणियारै आपरा रूपाळा रंग बदळै लूवां वाजै, विरखा बरसै, ठंडी बांभर वाजै कवि री दीठ सूं अदीठ नहीं हा।[15] मानव-मनां रै पारखी इण कवि सूं

पसु पंखेरूग्रां री गतिविधियां भी छानी-छिपियोड़ी नी ही। किण रितु में किसा पसु पंखेरू केलि क्रिड़ावां करै, बोलै, नाचै, मिनखां रो मन रीझावै इण वातां रो भी कवि घणो पारखू हो।[16] तीज तेवार, ग्राणंद उछव, वीग्रा वधांणै ग्रर लाडेसर रै जलम उत्सव माथै किण तरै रा हरखकोड हुवै इण विधरी सगळी लोक रीति रो कवि घणो ग्राछो जाणकार हो। लोकगीत धवळ मंगळ किण वेळा किण तरै रा गाइजै, इण री मीठी मधरी ग्रोळयां री भी कवि नै ग्राछी ग्रोळखाण ही। मेहफिलां[17] रै रंग रैळियां रिमयोड़ै कवि नै रगमंच रो घणो चाव हो[18]। राजनीति[19] रै गेहरै ग्यान रो परिचय कवि वसन्त वरणन में घणो ग्रोपती ग्रोळयां में दियो है। कवि री बहुग्यता रो परिचय देवणवाळी मोकळी बातां वेलि रै छंद छंद में जड़ियोड़ी है।

महाकवि पिरथीराज भारतीय संस्क्रितिरै प्रति घणा ग्रास्थावान हा। संस्क्रिति सवद ग्रापरी सवळी सीमाग्रां में घणो गंभीर ग्ररथ सिवर राख्यो है। किणी देस री सस्क्रिति सूं उण देस रै ग्राचार विचार, रीति रिवाज, ग्यांन, विग्यांन, रैवण-सैवण, परम्परा रा ग्रनुभव, जीवण वितावण रो रंग ढंग, कला प्रेम ग्रर रुचि जिसी घणकरी बातां रो वोध हुवै। उणरो गैहरो नातो मानव समाज रै भौतिक, ग्राध्यात्मिक, ग्रार्थिक राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक, कलात्मक ग्रादि सगळी तरै री उन्नति सूं है। सभ्यता नै जे मानव-समाज रै विकास रो वाहरी सरूप कयो जाय सकै तो संस्क्रिति उणरै ग्रन्तस रो विकसित सरूप है! महाकवि इणी ग्रन्तस रै विकसित सरूप नै विगड़तो देख ग्रापरी रसीली वाणी सूं उणनै थिर राखण री भाव भरी प्रेरणा वेलि रै मिस दी।

महाकवि पिरथीराज जिण दिनां ग्रापरो ग्रापो संभाय कलम उठाई उण दिनां भारत माथै राज करणवाळी सवळी सत्ता इण देस री सस्क्रिति रो सरूप वदळण में लाग रयी ही। ग्राचार विचार, रैण सैण, खाण पाण, धरम ध्यांन रीति नीति नित नूवा रंगरूप ग्रर बदळाव रेया हा। साहित्य ग्रर कला माथै भी विदेसी सस्क्रिति रो चमकतो झोळ चढतो दीख रैयो हो। राजदण्ड रै लांठै भय सुं सगळा रा मूंडा बंद हा। कोई खुली वात वतावणो नी चावतो। महाकवि पिरथीराज इण सगळी वातां नै गेहराई सू निरख परख वेलि रै सायरै भारत री सस्क्रिति रै सोवणै सरूप री मन मीवणो व्याख्या करी। दर ग्रसल प्रिथीराज संस्क्रिति रो संबळ, पूजारी ग्रर चतर चितेरो हो। ग्रापरै ग्राराध्यदेव ग्रर माता रुक्मणी रै सबळै सायरै पग पग माथै सांस्क्रितिक तत्वां री घणी सोवणी व्याख्या करी है। पुराणां री लांबी पसरियोड़ी कथावां नै सार रूप में संजोय राखण में कवि नै घणी सरावण जोग सफ़ळता मिळी है। यज्ञ, यज्ञोप-

पीत, अर मिंदरां रै प्रति कवि रै हिवड़ै घणो हेत है। दया धरम, विनय, सिस्टता, माळीणता, लज्जा मरजादा, काण कायदा, धीरता, वीरता अर भीड़ में भीड़ बणणा री भावना भी कवि आपरै पात्रां में मोकै मोकै माथै आछै ढंग सूं दरसाई है।

गऊ, ब्राह्मण अर अबला री रक्षा भारत रै सूरां रो सदा सूं सुगणो सुभाव रैयो है। रुक्मणी रै कागद लेजावण वाळै ब्राह्मण रो भगवान खुद आपरै सिंघासण सूं उठ स्वागत सत्कार करै। अबळा री आवाज सुण खुद भाज्या आवै। सुद्ध सात्विक अर सद जीवण वितावण सारू कवि मदरा, क्रोध, हिंसा, निंदा अर कटु वचनां नै छोडण री साची सलां देवै।[20] इण अवगुणां नै छोड्यां विना जीवण ओपतो अर आदर जोग नीं बण सकै।

भारतीय संस्क्रिति में जगतपिता परमेसर अर जगत धात्री भगवती रा जिकां सरूप है वांरा चित चावता चितराम कवि भगवान किसन अर भगवती रुक्मणी रै वर्णन मिस चित्रित किया है। भारत रै रेवासियां री आ घणी पुराणी धारणा है के प्रभु नै जिको जिसै रूप में ध्यावै उणनै उमोई रूप दीखै। कुन्दनपुर में भगवान लोगां नै किण किण रूप में आप आपरी भगती भावना रै परवांण दरसण दियां, इण सम्बन्ध में कवि कैवै— भगवान कामणियां नै कामदेव, दुस्टां नै काळ, भगतां नै भगवान, नारायण वेंद वेतावां नै साक्स्यात वेद भगवान दीख्या तो जोगीस रो जोग तत्व जाण्या[21]। इण प्रसंग सूं पतो लागै के कवि भारत री संस्क्रिति रै प्रति घणां आस्थावान हा अर उण री व्याख्या भी सोवणै सरूप में करी।

काव्य री आत्मा रस हुवै। रस भरी रचना मिनखां रा मन मोयलै। रस रै रूड़ै रूप रा जाणीकार कवि पिरथीराज आपरी वेलि री रचना सिणगार रस में करी। सिणगार रस रै दोय रूपां—संयोग अर वियोग सिणगार रो सांगोपांग वर्णन कवि किसन रुक्मणी रै घणकरै प्रसंगां में कियो है। मोकै—मोकै माथै वीर, भयानक, वीभत्स स्यान्त, रौद्र,हास्य अर करुण रस री धारावां वैवावण में कवि कोई कमी नी राखी। नव रसां सूं सराबोर 'वेलि किसन रुक्मणी री' री रस स्रिस्टि सांसारिक सुखां री तृप्ति करावण वाळीज नी हुय आध्यात्मिक भावनावां री गैहराई में ऊंडा उतार मानव समाज नै निरमळ रस रो आनंद दिरावण में सफळ हुई है। वेलि रै रस री ऊजळी छौळां में आनंद लेवणियो मानव-मन सांसारिक सुख-वासना सूं हवळै-हवळै ऊंचो उठ सुद्ध सात्विक निरमल रस में आणद लेवण लाग जावै। डा० भानावत रै सबदां में

आ बात कई जाय सकै के वेलि में जो सिणगार है वो आध्यात्मिक भावलोक सूं विमण्डित अर सात्विकता रै लेप सूं सुवासित है ।[22]

काव्य री आत्मा जे रस है तो उणरो सुरंगो सरूप अलंकार । रस'र अलंकार सास्त्र रो जबरो जाणीकार महाकवि पिरथीराज इण बात नै आछी तरै पैचाणतो हो के दोयां रै ताल मेल सूं ईज काव्य रो सुरंगो सरूप रसीलै माणसां रो मन मोय सकै, हेताळुआं रै हिवड़ै रो हार वण सकै । वेलि रै आखर आखर अर ओळ ओळ उतरगिया अलंकार वसन्त में सहज भाव सूं विगसण वाळी फुळवाड़ी ज्यूं फूटरा है । महाकवि संस्कृत अर डिंगल भासा रै सगळै सोवणै अलंकारां रो उपयोग वेलि में कियो है । डिंगल रै 'वयण सगाई' अलंकार नै जे कवि आखर आखर आदर दियो तो संस्कृत काव्यां में वखाणण जोग सगळै अलंकारां रो उपयोग ओळ-ओळ में कियो । किसा अलंकार कवि री दीठ सूं अदीठ रय गया, जिणां रो उपयोग वेलि में नी हुयो सायद अेक ई नी ।

विआं तो कवि सगळै अलंकारां नै ओपतो आदर दियो है पण उपमा, अनुप्रास, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अपह्नुति रो उपयोग घणै चांव सूं कियो है । कवि परम्परागत उपमावां सूं ऊंचो उठ नूवी ओपमावां री भी संरचना करी है । ज्यूं दातां री उपमा तारां री कांति सूं, हिवड़ै हवोळा लेवते आनंद री उपमा चन्द्रमा रै उजास सूं नासिका री उपमा दीप सिखा सूं आदि आदि (छंद सख्या २२)

रूपक–रचना में भी कवी नूवोपण दरसायो है । वसन्त रै मिस कुराज अर सुराज री कल्पना घणी सोवणी वण पाई है[23]।

ज्यूं :—सिसिर रितु-दुस्ट राजा, वसन्त-सुराजा, मलयानिल-सुराज री सुखदाई सुरम, भंवरा-कर वसूल करण वाळां, विरछलता मंजरी–प्रजा, मधु–पराग–सुगंध-राज कर ।

इणी तरै खेती रो रूपक भी देखण जोग है[24]

वलराम–किसान, युद्ध भूमि–खेत, खलिहान, हल–हळ, सत्रुवां रा कंधा–जड़ां, छोटी छोटी झाड़ियां, रक्त रंजित समर मोम-मूंगां रा खेत, लोही रा फवारा–लाल कूपळ, सत्रुवां रा माथा–खेतां रा सिट्टा, सत्रुदळ–धान घोड़ो रो घूमणो–उपाहरण करणो, भागतां जोधा–धान भरियोड़ी गाड़ियां रो जावणो ।

कवि री आ रूपक संयोजणा उणरी सुक्षम दीठ नै दरसावण वाळी है, मौलिकता री परिचायक है ।

महाकवि प्राकृत, संस्कृत अर ब्रज भाषा रो जाणीकार हुवतां थकां आपरो काव्य डिंगल भासा में सिरजण कियो । डिंगल भासा री सगळी विसेसतावां नै नेड़ै सूं

निरख परख उणरो उपयोग आपरी अमर रचनावां में कियो। कवि री दीठ में भासा भावां नैं प्रगट करण रो साधन है साध्य नी। जिकी भासा में कलाकार आपरी मनो-भावना, देस री परम्परावां, रीति रिवाज, रंग रूप अर उणरै साहित्य री सगळी विसेसतावां सांतरै सरूप में राख सकै, उणरो चयन करणो कवि रै सारू घणो हितकर रेवै। सायद इणी सारू महाकवि वेलि लिखण में डिंगल रो चुणाव कियो। सगळै विद्वानां कवि रै भासा माथै असाधारण अधकार री सरावणा करता अेक स्वर सूं आ वात वताई के वेलि री रचना में राजस्थानी पद्धति रो पूरो-पूरो निभाव हुयो है। इण भासा री आत्मा रै जाणीकार कवि डिंगल रो जिसो सरस, प्रवाहमय सरूप वेलि में राख्यो, विसो आज तांई दूजो कोई कवि आपरी क्रतियों में नी राख सक्यो। कवि वां कवियां अर डिंगल लिखणियां ने अपरतक्ष्य रूप सूं चेतावणी दी के डिंगल भासा वीर रस नैं वहण करणवाळी ईज नी है, इणमें सरस सिणगार री भी रस स्रष्टि मन मोवणै ढंग सूं हुय सकै।

वेलि में प्रक्रति री सोवणी छटा देखण जोग बणयाई है। प्रक्रति चित्रण कवि संध्या अर परभात वर्णन, सट रितु वर्णन, अर अलकार विधान वर्णन प्रसग में कियो है। भांत भांत रै रूपकां में सजियोड़ी रंग भरी प्रक्रति आपरै परिवेस में घणा परिवर्तन लियां धरती माथै पदारपण करै। प्रक्रति बदळाव रै सागै सागै पसु, पंखेरू अर मानव स्रस्टि रै सुभाव में किण तरै रा परिवर्तन आवै उणरा भी कवि आछा चित-राम सजाया है। तीज, त्यौहारां अर धर्म ध्यान रो भी वर्णन कवि प्रक्रति वर्णन रै सागै सागै घणो ओपतो कियो है। कठै कठै प्रक्रति वर्णन रै सायरै समाज री स्थिति अर मनोभावां रो भी आछो चित्रण कियो है। कवि री सुक्षम दीठ प्रक्रति रै चित्रण में छोटी छोटी वातां नैं भी प्रस्तुत करण में वणी सफ़ळ हुई है।

वैभव री रंग रेलियां में पळियोड़ो पिरथीराज समाज रै ऊंचै सूं ऊंचै अर नीचै सूं नीचै मिनखां रै मनां रो मीत हो। वैरै रात दिन नैड़ा रैवणिया जे राजा महा-राजा, क्रोड़पति अर लखपति हा, पण उणरी दीठ सूं सद ग्रिहस्थी, गरीव अर कर्जायत भी अदीठ नी हा। समाज रै इण रंग-विरंगै सरूप रा चितराम महाकवि आपरी कलम सूं घणै रूपाळै रंगां सूं मांड्या है। कवि रुक्मणी अर किसन रै राजमहलां रै मिस जे राजसी ठाट वाट रो चितराम मांडै तो केलि रूपी क्रिरोड़पति अर चंपक रूपी लखपति रै पतां रूपी पताकावां अर पहुप रूपी दीवा संजोण रो भी वरणन करै। वींआ वधाणै, हरख टांकड़ै याचकां नैं दान रै अयाचक वणावण री वात भी कवि ओपते ढंग सूं केवै।

ठंड रै सिकुड़तै दिनां री उपमा देवतो कवि केवै के जिणतरै कर्जायत करज देवणै वाळै नै देख भेळो भेळो हुवै उणी भांत सीत रा दिन सिकुड़ रया है[25]।

समाज में सबळो आदर जोग जीवण बितावण सारू जरूरी है के मानव सद्गुणां नै धारण करै अर अवगुणां रो त्याग करै। घर गिरहस्थी नै सुखी बणावण भगवान भी मदरा, क्रोध, हिंसा, निंदा अर गाळी पांचां दुरगुण ने परेका छोड़ै[26]।

संसार सुपहु करता गृह संग्रह
गिणि तिणि हीज पचमी गाळी।
मदिरा, रीस, हिंसा निन्दा मति
च्यारे करि मूकिया चंडालि ।। छंद संख्या २७७

दरअसल आज रै समाज में अे पंच दोस ही नित नूवा उत्पात मचावै ! बड़ां री नजर में कोई छोटो नी हुवै। भगवान द्वारा गरीब ब्राह्मण रो ओपतो आदर करवाय कवि इण बात री पुस्टि करै।

सुखी जीवण सारू बडां री आग्या रो पालण अर मरजादामय जीवण जीवणो घणो जरूरी है। राजकुमारी रुकमणी अंबिका माता पूजण जांवण सूं पैली आपरी सखी सूं महाराणी री आग्या मंगावै। महाराणी पण मरजादा में रैवतां थकां पति, पुत्र अर परवार वाळा नै पूछ राजकुमारी रुकमणी नै देवी पूजण री आग्या देवै[27]।

सरग अर नरग अठै इज है। जिणरो जीवण धरम, ध्यांन, पर उपकार, स्वाध्याय, चिंतन, मनन, जप तप अर प्रभू आराधना में बीतै वै संतोस रै सबळै सागरै अठेई सरग सारसो आणंद पावै। महाकवि सायद इणी कारण सूं द्वारका ने इन्द्रपुरी बतावै क्यूं के बठै रै सोवणै सरवरां रै घाट घाट संध्या–वंदन करण वाळा ब्राह्मण ई चालता फिरता तीरथ है। घर घर में होम री आहूतियां दीप रयी है। ठौड़ ठौड़ जप तप हुय रया है। सगळै मारगां माथै मगळ वंदनवारां री मीठी सुरम हवा रै हिलोरां रै सागै फैल रयी है। कोयल मीठी मधरी राग गाय रयी है। दरअसल जठै इण तरै रो भगती भाव भरियो स्व धरम पालन रत आसथामय जीवण है बठै सरग री कल्पना सहज रूप सूं हुय सकै।

साहित्य संस्क्रिति अर कला री त्रिवेणी रै रस सूं सिंचित इण वेलि री पात्र सरचना, नठार वरणन, स्थानीय रंग विन्यास भी घणो रूपाळो है। इणरो अन्तरंग अर वहिरग पक्ष भी अणमोळ अर घणो भाव-भर्यो है। प्रभु भक्त अर सरसती रै

सुगणँ मावक री वेलि रो अेक अेक छंद अणमोळ मोती है, जिणरो चुणाव करतां आ बात समझ में नी आय सकै के किसो मोती छोड्यो जाय, किसो ग्रहण कियो जाय।

असल में जिण भांत महाकवि पिरथीराज लिछमी-पती भगवान किसन रा गुण गावण में आपरी लाचारी दरसावतो थको केवै कै हे प्रभु कुण इसो ग्यानी है जिको आपरा गुण बखाण कर सकै, कुण इसो तैराक है जिको समद नै तैर'र पार कर सकै, कुण इसो पंखेरू है जिको उडर आकास रै अन्त तांई पूग सकै कुण इसो रंक है जिको सुमेरू पर्वत नै उठाय सकै, उणी भांत महाकवि पिरथीराज रै अपार गुणां रो ओपतै ढंग सूं वरणन करणै में म्हारी असमर्थता है। पिरथीराज री वेलि री समालोचना करण में म्है म्हारी इणी तरै असमर्थता दरसावतां थको महाकवि रै उक्त छंद रै सागै कवि नै अर उणरी सवळी साधना नै वारम्वार नमन करूं[28]।

"स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जुलवति
तारु कवण जु समुद्र तरै।
पंखी कवण गयण लगि पहुँचै
कवण रंक करि मेरु करै। छंद ६



संदर्भ–

१. स्वसंपादित वेलि इन्ट्रोडेक्शन
२. राजस्थान टाड
३. दुरसा आढा–पांचमां वेद भाखियौ पीथल
४. सांइया झूला–अमृत वेलि पीथल अचल
५. राजस्थानी भाषा और साहित्य–डा० मोतीलाल मेनारिया पृ० ६१७.
६. क्रिसन रुक्मणी री वेलि–सूर्यकरण पारीक भूमिका
७. क्रिसन रुक्मणी री वेलि–प्रस्तावना पृ० ३३

८. वेलि क्रिसन रुक्मणी री में दार्शनिक तत्व, डा० देवीप्रसाद गुप्त राजस्थान भारती अंक ३–४ भाग १५

९. वेलि–संपादक डा० आनन्दप्रकाश दीक्षित छंद संख्या २६१, २६२

१०. वेलि क्रिसन रुक्मणी री में दार्शनिक तत्व डा० देवीप्रसाद गुप्त राजस्थान भारती अंक ३–४ भाग १५

११. वेलि किसन रुक्मणी री में दार्शनिक तत्व डा० देवीप्रसाद गुप्त, राजस्थान भारती अंक ३–४ भाग १५

१२. वही छंद संख्या २६६. १३. छंद संख्या १६५, १४. छंद संख्या १२ सूं २७

१५. छंद संख्या १८७ सूं २६८ १६. छंद संख्या १६४, १६६, २४१

१७. छंद संख्या २४३, १८. छंद संख्या २४८, १९. छंद संख्या २५१ सूं २५२

२०. छंद संख्या २७७, २१. छंद संख्या ७६, २२. राजस्थानी वेलि साहित्य डा० नरेन्द्र भानावत पृ० १५३, २३. छंद संख्या २४९, २५१, २५३, २४. छंद संख्या १२७, १२८, २५. छंद संख्या २२०, २६. छंद संख्या २७७, २७. छंद संख्या ५० २८. छंद संख्या ६

संगम री गति-विधि

दिनाङ्क ७ दिसम्बर १९७५ नै राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर द्वारा स्थानीय नागरी भंडार रै भवन में महाकवि पृथ्वीराज जयन्ती अर टेसीटोरी स्मृति दिवस एक साथै ई आयोजित कर्‌या गया। समारोह रो उद्‌घाटन मनीषी पं० श्री विद्याधर जी शास्त्री कर्‌यो। आप महाकवि पृथ्वीराज रै सम्पूर्ण ग्रन्था रो प्रकासन करणै पर जोर दियो तथा राजस्थानी सेवक टेसीटोरी री समाधी नै सुन्दर रूप देवण री जरूरत प्रगट करी।

समारोह रो संयोजन श्री चन्द्रदानजी चारण कर्‌यो । अध्यक्ष रो आसण स्थानीय डूंगर कालेज रा हिन्दी विभाग रा अध्यक्ष डा० श्री कन्हैयालाल-जी शर्मा ग्रहण कर्‌यो । मुख्य अतिथि रै रूप में वयोवृद्ध राजस्थानी साहित्य सेवी श्री मुरलीधर जी व्यास उपस्थित हा । इण अवसर पर संगम-सभापति पं० श्रीलालजी मिश्र भी मौजूद हा । बीकानेर रा प्रायः सगळा ही राजस्थानी साहित्यकार अर साहित्य-प्रेमी सज्जन समारोह में उत्साह रै साथै भाग लियो ।

रात्रि काल में नागरी भंडार रै प्रांगण में राजस्थानी कवि सम्मेलन रो आयोजन कर्‌यो गयो जिणरी अध्यक्षता भी डा० कन्हैयालालजी शर्मा करी । संयोजन रो काम श्री भवानीशंकरजी व्यास 'विनोद' कर्‌यो । कवि सम्मेलन में श्रोतावां री काफी अच्छी उपस्थिति रही अर साढे बारै बजे तांई सरस कविता पाठ हूतो रयो । कविता पाठ करणै वाळा कवियां में प्रमुख रूप सूं श्री सूर्यशंकर जी पारीक, श्री माणिक बंधु तिवारी, श्री मोहम्मद सद्दीक, श्री धनंजय वर्मा, श्री विनोद व्यास, श्री दीनदयाल ओझा, डा० श्री मनोहरजी शर्मा, श्री सांवर दइया एवं श्री जवरअली के नाम उल्लेखनीय हैं । इस अवसर पर शेखावाटी के प्रमुख कवि श्री बजरंगलाल पारीक 'लाल' भी आमन्त्रित हा, आपरी कवितावां नै श्रोतावां बडी रुचि रै साथ सुणी अर आपरी 'उटाळा' नाम री कविता नै बारम्बार सुणणै खातर आग्रह हूतो रयो ।

दूजी साहित्यिक गतिविधियां—

श्री भारतेन्दु समिति कोटा रै तत्वावधान में अकादमी द्वारा व्याख्यान माळा रो उद्घाटण अकादमी रा मानीता अध्यक्ष पं० श्री विष्णुदत्तजी शर्मा कर्‌यो व्याख्यान माळा रा प्रमुख व्याख्याता राजस्थान विश्व विद्यालय रा प्राध्यापक श्री विश्वम्भरनाथ उपाध्याय हा ।

अकादमी री सरस्वती सभा अर संचालिका रा मानीता सदस्य डा० ताराप्रकाश जोशी रो जयपुर सूं जोधपुर तबादलो हूंवण रै अवसर पर जयपुर रा साहित्यकारां एक विदावगी-गोष्ठी रो आयोजन कियो । इण गोष्ठी री अध्यक्षता विधान सभा रा उपाध्यक्ष श्री रामसिंहजी यादव करी । समारोह में अकादमी रै अध्यक्ष महोदय रै साथै संसद सदस्य श्री मिश्राजी, पत्रकार श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, श्री तारादत्त निरविरोध अर श्री वेद व्यास आदि भी उपस्थित हा ।



इण अंक रा लिखारा

O

हरमन चौहानः— नुंवा कवी अर कथाकार । जलम : ८ जून १९४२ नै बलाड़ (ब्यावर) में । जोधपुर विस्वविद्यालय सूं सन् १९६९ में एम॰ ए॰ (हिन्दी) । कई पत्रिकावां (जाणकारी, सिनेपत्रिका, लक्ष्मी पूजा) रो संपादन अर हिन्दी नै राजस्थानी छापां में घणा छपचोड़ा । 'अबोधता' नांव सूं हिन्दी कविता री पोथी छप्योड़ी । उणां रै कैवणै मुजब ओमधन (राज॰ उपन्यास) अर धोरां छितरो चांदणी (राज॰का'णी संग्रै) छपण आळा हैं । पतो—टेलीविजन सेंटर हिन्दी समाचार विभाग, वर्ली, बम्बई ।

O

बाबूलाल सरमाः— सकराय माताजी (सीकर) रा रैवासी । सन् ७१ में राज॰ वि॰ विद्यालय सूं एम॰ ए॰ करयां पछै बेकारां री लिस्ट में नांव लिखायो, पण नौकरी हाल नी । राजस्थानी रा जागरूक कवी अर कथाकार । ७० सूं राजस्थानी लिखणो चालू । 'सकराय माताजी वृतांत' अेक इतियासिक पोथी अर 'एक सीधावक' नांव सूं हिन्दी री कवितावां रो संकलण छप्योड़ो । अबार 'स्थिति' नांव सूं पत्रिका रो संपादन । पतो– सकराय माताजी, वाया : उदयपुरवाटी जि॰ सीकर ।

O

कमला वरमाः— जलम : १९४१ में । भणाई–फगत इंटर ताईं । नुवां कवियां रै मांय लेखिका रै रूप में चमकतो सिरै नांव । उणां री दीठ में लेखन जिनगानी रा छिप्योड़ा भूठ नै कुचर'र बारै काढ़णो है । पतो– हवाबाण, हरड़े डिपो, कोट गेट के अन्दर, बीकानेर ।

O

अर्जुनसिंघ सेखावतः— लारला बीस बरसां सूं टेमोटेम सगळी विधावा में लिखणिया । भणाई-एम॰ ए॰ । 'भाषा ज्ञान प्रभा' (दो भाग) नांव सूं छप्योड़ी पोथी राजस्थानी जीवन सूं गाढ़ो लगाव । सगळा तरिवां रा धंधा में व्हैता रूचि थकां मास्टरी सूं अणूतो संतोस । पतो– प्रधानाध्यापक, रा॰ उ॰ विद्यालय, खीमेल, जि॰ पाली ।

O

मोहन आलोक:— नुवां प्रयोग सूं लगाव राखणियां नुवां कवी अर कथाकार। फिलाल नुंवै सिरजण में जागरूक। पतो— १४१ एच० ब्लाक, गंगानगर (राज०)

O

कल्याणसिंघ राजावत:— राजस्थानी रा मानीता अर लाड़ला कवी। गीतकारां में आपरो नांव सिरै। जलम ८ दिसम्बर १९३९ में नागौर जिलै रै चिनावा गांव में। 'रामनिया मतोड़' अर 'आ जमीन-आपणी' नांव सूं दोय पोथ्यां छप्योड़ी। फिलाल 'परभाती' नांव सूं प्रकृति काव्य छपण आळो। पतो–प्रधानाध्यापक, भवानी निकेतन सैकन्ड्री स्कूल, झोटवाड़ा (जयपुर-पश्चिम

O

पुरुषोत्तम छंगाणी:— कवी। भणाई एम० ए०। पत्रकारिता अर साहित सिरजण सूं लगाव। पतो–कृष्ण भवन, दूसरा मजला, दादी सेठ रोड, मलाड (पश्चिम) बम्बई।

O

सांवरमल दायमा:— रामगढ़ सेखावाटी रा रैवासी। भणाई एम० ए० (अंग्रेजी) हिन्दी अर राजस्थानी भासा रा कवी। नुंवै सिरजण में आस्था। 'घलै गींदड' नांव सूं छपण-आळी पोथीं। पतो–भगवानदास तोदी कालेज, लक्ष्मणगढ़-सीकर (राज.)

O

रामनिरंजन सरमा ठिमाऊ:— जलम पिलाणी रै मांय संवत् १९८७ वि० में। भणाई एम० ए० (अंग्रेजी) हिन्दी अर राजस्थानी रा जागरूक लिखारा। बाल साहित सूं घणूं लगाव। 'वालोत्सव' 'स्तुति पुंज' अर 'कल के नागरिक' नांव सूं हिन्दीं में छप्योड़ी पोथ्यां। पतो–बिरला बाल निकेतन, पिलानी (राज०)

O

नागराज सरमा:— जलम १९-मार्च १९३२ में पिलाणी। भणाई, एम० ए०, बी० काम०। राजस्थानी रा हास्य रस रा चावता कवी अर नाटककार। 'इवतो-चेतो' (राज० नाटक) 'विरखा-बीनणी' अर 'थारो के ल्यांहां' (राज० कवितावां) री पोथ्यां छप्योड़ी। दिनभर हंसी रा फंव्वारा छोड़ता अलमस्त जीव। पतो–बिरला हाइयर सैकन्ड्री स्कूल, पिलानी (राज०)

O

उमाचरण महर्षिया:— जलम १० जुलाई १९४७ नै झुंझुनूं में। हिन्दी अर राजस्थानी रा भरोसैबंद कवी। दिन भर पान खावतां थकां कविता री प्रोब्लम साथै

जूझणो । नुंवै ढंग रै भावबोध सूं सैंठा जुड़योड़ा । महमियां लारला दस बारै बरसां सूं 'हिरण्यमय अमित' नांव सूं हिन्दी री ठावी पत्रिकावां में लगातार लिख रिया । 'राख उड़ने वाली दिशा में' हिन्दी री नुंवी कवितावां री छप्योड़ी पोथी । पतो— ६ एफ० ओल्ड कालोनी, पिलानी ।

O

मनोहरसिंह राठौड़:— जलम १६ नवम्बर १९४८ नै नागौर जिले रै तिलाणेस गांव में । भणाई बी० ए० । पेंसिल नै पाणी रा रंगाऊ चित्राम कोरण रै साथै माटी री मूंडै बोलती मूरत्यां बणावण रो सोक । फिलाल आठ-दस कहाण्यां अर लेख छपियोड़ा । साव नुंवा लिखारा । पतो— जी/५१ सीरी कालोनी, पिलानी ।

O

भागीरथसिंह भाग्य:— उगतोड़ा नुवां कवी अर कथाकार । बगड़ जि० झुंझुनूं रा रैवासी । भणाई बी० ए० अर एम० ए० री त्यारी । उणां रै कैवणै मुजब 'अबार मौलिक बेकार हूं । कद सूं लिखणो सुरू करयो, ओ अंदाज नी खुद सूं (भागीरथसिंह) घणू परभावित लिखणो किण सारू, ओ हाल सोच्यो नी अर नी सोचणै रो इरादो । पतो-सेखावतां री कोठी, बगड़ जि० झुंझुनूं (राज०)

O

तारादत्त निरविरोध:— हिन्दी रा मानीता नुंवा गीतकार । सगळी पत्रिकावां में बेहद छपणआळा । राजस्थानी में टाबरां सारू चोखा गीत लिख्या है अर उण में इज रुचि राखै । फिलाल कीं प्रतीकात्मक गीत लिखण रो सिलसिलो सुरू करयो । पतो-खेजड़े का रास्ता, जयपुर-२

O

जुगल सरमा:— जलम फतेहपुर रै नजीक अेक गांव में । राजस्थानी में लिखणै रो घणू कोड । फिलाल ग्यारवीं कक्षा रो प्रतिभासाली विद्यारथी । पतो— बगड़िया बाल निकेतन, लक्षमणगढ़-सीकर ।

O

रामस्वरूप परेस:— जलम बगड़ में । राजस्थानी रै नुंवां लेखन सूं जुड़योड़ो अेक सैंठो नांव । मूळ रूप सूं नुंवां कवी । लारला कई बरसां सूं सगळी पत्रिकावां में छपै । कीं कहाण्यां भी लिखी । पतो- परेस निवास, बगड़ जि० झुंझुनूं ।

O

रघुनाथसिंह सेखावत:— जलम झुंझुनूं जिलै रै कालीपहाड़ी गांव में । इतिहास लेखन

रै घणी रुचि । टेमोटेम हिन्दी अर राजस्थानी में लेख अर कहाण्यां लिखता रेवै । पतो गिरामल हायर सैकन्ड्री स्कूल, बगड़ जि० झुंझुनू ।

O

गोपाल जन.— जलम लक्ष्मणगढ़ । हिन्दी री समसानी पीढ़ी रा ठावा अर मानीता कवी । प्रकृति सूं विचारक अर व्यवस्था वदळाव रा जागरूक हामी । हिन्दी री ठावी पत्रिकावां में छप्योड़ा । अबार लक्ष्मणगढ़ सूं 'अंतराल' पत्रिका रो सम्पादन करै । राजस्थानी रै मांय लिखणै री रुचि राखै । पतो- अंतराल (त्रैमासिक) लक्ष्मणगढ़ सीकर ।

O

डा० प्रतापसिंह राठौड़:— जलम नागौर जिलै रै तिलानेस गांव में । राजस्थानी साहित अर संस्कृति नैं लेय'र घणा लेख लिख्या जका राजस्थानी री सगळी पत्रिकावां में छप्या । सगळै दिन राजस्थानी री पोथ्यां नैं पढ़णै रै अलावा दूजो काम नी । पुराणै साहित री घणीकरी वातां आंगळयां पर राखै । पतो- सारदा सदन कालेज, मुकुन्दगढ़ ।

O

काशीप्रसाद कुंतल:— जलम सीकर जिलै रै लक्ष्मणगढ़ कस्बे में । राजस्थानी रा गीत-कार । घणै दिनां सूं मायड़ भासा री सेवा करै । फिलाल गोहाटी में विणज । पतो- साहित्य परिषद लक्ष्मणगढ़-सीकर (राज०)

O

उमेस भारद्वाज:— जलम विसाऊ रै मांय । मूळ रूप सूं हरियाणा रा रैवासी भौतिकी विज्ञान रा प्राध्यापक होतां थकां भी कविता रो सौक राखै । कीं कवितावां छप्योड़ी । पतो- तोदा कालेज, लक्ष्मणगढ़-सीकर ।

O

अजीतसिंघ बंधु:— जलम १९४८ रै मांय नागौर जिलै रै राणीगांव में । भणाई एम० ए० । कविता-कहाण्या लिखणै री रुचि । राजस्थानी रै सगळ छापां में कवितावां छप्योड़ी । भणाई विभाग सूं छप्योड़ी 'माळा अर नुवां वेली जूना वेली' संग्रै रा अेक कवी । पतो-राज० उ० मा० विद्यालय, मकराना, जि० नागौर ।

O

नटवरलाल जोशी:— जलम लक्ष्मणगढ़ में । राजस्थानी भासा रा हिमायती अर सैंठा लिखारा । राजस्थानी भासा री गतिविधियां सूं गाढ़ो लगाव । केई रचनावां छपीज्योड़ी पतो- ऋषिकुल विद्यापीठ, लक्ष्मणगढ़-सीकर । △

लेखकां सूं निवेदन

१. 'जागती जोत' में छापण-सारू अप्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय रचना ही भेजी जावै ।

२. रचना कागद रै अेक कानी हासियो छोड'र साफ-साफ आखरां में लिखियोड़ी अथवा साफ टंकित हुवणी चाईजै ।

३ छापण-सारू स्वीकृत रचना री सूचना लेखक नै रचना-प्राप्ति सूं अेक महीनै रै भीतर दे दी जासी ।

४. अस्वीकृत रचना पाछी मंगवाणी हुवै तो उचित डाक-टिकट लगायोड़ो लिफाफो रचना रै साथै आवणो चाईजै ।

५ स्वीकृत रचना कद अर किसै अंक में छपसी, ओ बतावणो सम्भव नीं हुसी । इण विषय में आयोड़ा पत्रां रो उत्तर नीं दियो जासी । स्वीकृत रचना रै प्रकाशन खातर ताकीद न करी जावै ।

६. पत्रिका में छपियोड़ी हरेक रचना माथै पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था है । रचना रै प्रकाशित हुयां पछै अेक महीनै रै भीतर पारिश्रमिक री राशि लेखक नै भेज दी जासी ।

७. छपण नै दी जावणवाळी रचना में संशोधन करण रो अधिकार संपादक-मंडल नै हुसी ।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर (राजस्थान)

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर

रा

प्रकाशन

प्रेतात्मा री प्रीत	श्री दामोदरप्रसाद शर्मा	५.५०
रोहिड़ै रा फूल	डा० मनोहर शर्मा	५.७५
हांस्यां हरि मिलै	श्री नृसिंह राजपुरोहित	७.५०
जोग संजोग	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७-२५
अटारवां	डा० ब्रजनारायण पुरोहित	५.७५
आदमी री सींग	श्री करणीदान बारहठ	६.००
अेक बीनणी दो बीन	श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी	८.३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस	स० श्री रावत सारस्वत	७.७५
नरवर सूरज अर संझा	श्री प्रेम जी 'प्रेम' प्रकाश्य	

सम्पर्क—

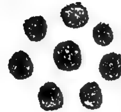
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
नागरी भंडार, बीकानेर।

जगतीजैन















देवल,

गोबिन्द

कोरणीकार–गोविन्द कल्ला

सरीर अर सिकल सूं आबाद पण वेलियां में बरबाद नाम सूं चावा गोविन्द कल्ला हरफन मौला है। साहित्य अर कला में स्रजण री सैं खिमतावां व्हेतां थकां भी आप किणी अेक में रमियोड़ा नीं लागै।

परम्परा अर आधुनिकता नै अेकै साथै प्रयोग में लेवण री कला रौ आप रै पट्टौ करायोड़ौ है। चितराम बणावण में भी आप अेक नुंवी सैली रौ आविस्कार करियौ है— 'गोविन्दायन सूर्याचित रंग–रस पद्धति'। जिकी रंगां रै भेळ माथै नीं, वां री गति माथै आधारित है।

इण अंक रा सगळा चितराम आप रै इज बणायोड़ा है। पइसां खातर नीं, प्रेम खातर। राजस्थानी रै प्रेम खातर।

जागती जोत



या दुग्धाऽपि न दुग्धैव
कविदोग्धृभिरन्वहम् ।
हृदि नः सन्निधत्तां सा
सूक्तिधेनुः सरस्वती ।।
—शुक्राचार्य

दूवै जिण नै रैण-दिवस
गायां रै गोरी ज्यूं सैं
कवि-गण
पण फेरूं भी जिकी लखावै
अणदूयोड़ी
सूक्तधेन वा (मात) सरसती
आय विराजै म्हां रै हिवड़ै

जागती जोत
[राजस्थानी भासा री मासिक पत्रिका]

•

अप्रेल १९८०

•

संपादक
सत्येन जोशी

•

प्रबंध संपादक
डॉ० परमानन्द सारस्वत

वरस : ८
अंक : २

मोल
अेक अंक : १.२५ रिपियौ
बारा मास : १२ रिपिया

प्रकासक
राजस्थानी भासा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

विगत

• • •

इण अंक रा लिखारा

१ नन्द भारद्वाज—आकासवाणी, पावटा 'सी' रोड, जोधपुर।
२ पारस अरोड़ा—मेहता भवन, कबूतरां री चौक, जोधपुर।
३ यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'—साळै री होळी, बीकानेर।
४ जुगल परिहार—कुम्हारियौ कूवौ, कुम्हारां री गळी, जोधपुर।
५ चन्द्रप्रकास देवल—राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।
६ अरजुणदेव चारण—नागौरी गेट, रामौला, जोधपुर।
७ नवीन माहिमवाळ—ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट, पैली 'सी' रोड, सरदारपुरौ, जोधपुर।
८ सत्येन जोशी—जोसियां री खटकळ, भीमजी रौ मोहल्लौ, जोधपुर।
९ आत्माराम—कथायात्रा कार्यालय, ३०४ विकास अपार्टमेंट्स जानकी कुटीर, जुहू, वम्बई–४०००४९।
१० श्यामसुंदर भारती—फतेह सागर, जोधपुर।
११ लालदास 'राकेस'—पुरौ मोहल्लौ, जाळोर।
१२ आईदानसिंह भाटी—मुख्य डाकघर, इस्टेसण, जोधपुर।
१३ वी० आर० प्रजापति—III अेच ४, विस्वविद्यालय कालोनी जोधपुर।
१४ सौभाग्यसिंह शेखावत—राजस्थानी सोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
१५ श्यामकृष्ण व्यास—भीमजी री मोहल्लौ, खांडी फळसौ, जोधपुर।
१६ जहूर खां मेहर—सिंधी मुसळमानां री बस्ती, सिवांची गेट, जोधपुर।
१७ गोविन्द कल्ला—श्रीबद्रीदास कल्ला भवन, जाळप बावड़ी रै सामी, जोधपुर।
१८ आनन्दप्रिय—पीपळी महादेव री पोळ, चित्रा सिनेमा, जोधपुर।
१९ मदनमोहन माथुर—महेस छात्रावास रै नजीक, चौपासनी रोड जोधपुर।

जनभासा री सगती अर सबदकोस

(राजस्थानी कोसकार डॉ. सीताराम लाळस सूं भेंट)

नन्द भारद्वाज

●

हलकै-विसेख रै समाज-व्यवहार में वरतीजण वाळी भासा रै इतिहास आधार नै पुखता वणावण में सबदकोस विसेख महत् राखै। सबदकोस हलकै-विसेख री जातीय-संस्कृति, जीवंत परम्परा अर उठै री जनभासा री सामरथ अर सवद-सपदा रौ इतिहासू दस्तावेज मानीजै, जिणमें हरेक सवद रौ आखौ इतिहास अर अरथ-संदरभ प्रमाण-समेत दरज रैवै। आथूणै भारत री प्रमुख जनभासा राजस्थानी री सुदीरघ साहित्य-परम्परा रै वावजूद अरसै तांई इण भासा में अेक प्रामाणिक सबदकोस रौ अभाव इणरा सरजकां, विद्वानां अर हिमायतियां रै सांमी लूंठी चुणौती वणियोड़ौ रैयौ। यूं तौ उगणीसवीं सदी सूं ई इण दिसा में सोच-विचार सरू व्हे चुक्यौ हौ अर कीं विद्वानां कोसीस ई कीवी, जिणां में कवीराजा मुरारीदानजी, रामकरणजी आसोपा, उदयराजजी ऊजळ इत्याद् रा नांव खास तौर सूं उल्लेखजोग गिणीजै। पण इण काम नै पूरी जिम्मेवारी सूं ठेट मंजिल तांई पुगायौ राजस्थानी रा मानीता विद्वान डॉ. सीताराम लाळस। वां आपरी चाळीस वरसां री अटूट साधना सूं 'राजस्थानी सबदकोस' री नव जिल्दां त्यार करवाई अर औ वांरी गाढी मैनत रौ सुफळ है के औ 'सबदकोस' छपियोड़ै रूप में आज आपांरै सांमी है। निस्चै ई आं चाळीस वरसां री साधनां में इण मनीसी नै केई तरै रा खारा-मीठा अणभव व्हिया—राजस्थानी भासा नै लेयर उठणवाळा विवाद अर सवाल ई इणरी साधना सूं टकराया अर इणी समचै नुंवा सिरजणधरमी ई इण भासा नै आपरै सिरजण सूं पोखता-संवारता रैया। डॉ. लाळस नै सबदकोस निरमाण रै पेटै जिका अणभव व्हिया वै राजस्थानी भासा री विकास-जातरा नै समझण में तौ मदद करै ई; साथै ई इण दरम्यान भासा रै सरूप नै लेयर जिका विवाद अर सवाल उठाई-जिया वांरै बावत-ई इण कोसकार री राय अेक खुलासौ सांमी राखै। इणी बात नै मद्दै-निजर राखतां म्हैं कीं सिलसिलेवार सवाल वांरै सांमी राख्या अर वां खूब नाप-तोल नै आं सवालां पेटै आपरी राय दरसाई।



☐ सवद कोस निरमाण रौ काम आप कद सूं सरू कियौ अर उणरै लारै मूळ प्रेरणा कांई रैयी ?

— राजस्थानी सवद-कोस रौ काम म्हैं सन् १९३२ में म्हारा परम हेताळू अर राजस्थानी रा हिमायती हरिनारायणजी पुरोहित री प्रेरणा सूं सरू कियौ। वां ई दिनां बूंदी कविराजा मुरारीदानजी अेक अनेकारथी कोस छपवायौ हौ पण इण तरै रौ कोस नुंवी वैग्यानिक उपयोगिता रै हिसाव सूं पूरौ नीं पड़तौ जद के राजस्थानी में कोस रौ अभाव राजस्थानी रा सगळा हिमायतियां नै अखरतौ। हरिनारायणजी म्हारौ हौसलौ वधायौ अर म्हैं राजस्थानी भासा रौ अेक वैग्यानिक कोस त्यार करण रौ जिम्मौ लियौ।

☐ आप जिण वगत कोस-निरमाण रौ काम हाथ में लियौ उणसूं पैली राजस्थानी भासा में कोस-निरमाण री कांई स्थिति ही ?

— जैड़ौ के आप जाणौ, राजस्थानी भासा अर साहित्य री अेक सुदीरघ परम्परा है अर साहित्य रै विसाल भंडार सूं ई कोई अजांण नीं। इत्ती समरिध भासा रौ कोस नीं व्हेणौ निस्चै ई चिन्ता री वात ही। केई लोगां इण दिसा में कीं काम जरूर कियौ, पण उण काम रौ कोई सांतरौ अेकठ रूप नीं वणियौ। म्हारौ काम सरू व्हेण सूं पैली जिका कोस मौजूद हा वै जूनी परिपाटी अर विद्या रै आधार माथै निरमित हा मसलन् अेकाखरी कोस, अनेकारथी कोस, नाममाला कोस इत्याद्। पण इण तरै रा कोन नुंवै भासा विग्यान रै समचै इत्ता उपयोगी नीं रैया। जित्तौ ई काम व्हियौ वौ वौत वीखरियोड़ै रूप में हौ, अर अधूरौ ई हौ, सो उणनै सिलसिलैवार अर संपूरण करणौ जरूरी हौ। कीं अेकाध कोस रै निरमाण री अफवा जरूर ही, पण म्हारी निजर में अैड़ौ कोई महताऊ काम सांमी नीं आयौ।

☐ कोस री आधार-सामग्री रा स्रोत कांई रैया, साथै ई सवद संकलन, चयन अर अरथ-अन्वेसण री प्रक्रिया कांई रैयी ?

— सवदां रौ स्रोत तौ उपलव्ध साहित्य अर लोक-साहित्य ई व्हिया करै, पण संकलन अर चयन रै वास्तै न्यारी-न्यारी पद्धतियां अपणाईजै। निस्चै ई सवद संकलन अर संग्रै रौ काम घणौ कस्ट-साध्य सावित व्हियौ। न्यारा-न्यारा प्रकासित, अप्रकासित अर हस्तलिखित ग्रंथां सूं सवदां रौ संकलन पैलौ काम हौ। उठापरांत वां रौ वरणानुक्रम में संयोजन रै साथै-साथै सवदां रै अरथ अर व्युत्पत्ती-परिस्करण रौ काम करीजियौ। अरथ अन्वेसण रै वास्तै सवदां रै उद्गम रौ अध्ययन करीजियौ अर प्रमाणीकरण सारू उदाहरणां रसारौ लिरीजियौ। लिखित साहित्य रै अलावा आम जीवण-व्यवहार में जिका सवद न्यारा-न्यारा हलकां, न्यारी-न्यारी जातियां अर कारोवारां में वरतीजै वै सवद ई इण लेखै भेळा

करीजिया। मूळ सबद रै साथै ई उणारा न्यारा-न्यारा रूपां री ई अध्ययन करीजियो अर इणी वजै सूं कोस रै आकार-प्रकार नै ई खासौ बधावणौ पड़ियौ।

☐ जिण वृहद् आकार में औ कोस आप त्यार करवायौ—जिको के नव जिल्दां में संकलित-संग्रहीत है। सबद संख्या री दीठ सूं ई औ स्यात् भारत अर दुनियां री केई भासावां री तुलना में खासा वृहद् आकार त्यार व्हियौ है; कांई सरूआत सूं ई आपरी योजना इत्तौ ई वडौ कोस त्यार करवावण री ही ?

— योजना तौ मौजूदा रूप सूं ई खासी वडी ही। पण धन अर व्यवस्था सम्बन्धी दूजी सुविधावां रै अभाव में सबद कोस में सूं कम सूं कम हजार पाना कमती करणा पड़िया। सवदां री विपुलता नै देखतां राजस्थानी घणी समरिध भासा है पण उण बगत री भासा विधा री धारावां में राजनैतिक हालतां रै कारण आ भरपूर अण-देखी री सिकार व्ही, इण वास्तै म्हांरै सांमी इणरी भागवानी रा दरसण करावण रै अलावा इणनै जीवंत भासा रै रूप में प्रमाणित अर थापित करण री समस्या प्रमुख ही। इण वास्तै अरथ री बोळाई नै समझावण सारू गद्य-पद्य सूं उदाहरणां री समावेस करीजियौ। इणरै अलावा कैवतां, लोकोक्तियां अर मुहावरां इत्याद् नै ई खासी तादाद में स्थान दिरीजियौ। इत्तौ सगळौ काम जे पैली री वणायोड़ी योजना रै मुताबिक व्हेतौ तौ निस्चै ई कोस रै मौजूदा रूप सूं आकार में औरूं वडौ व्हेतौ।

☐ सुणियौ है, आप इण वृहद् कोस री अेक छोटौ संस्करण ई त्यार करवायौ है—उणरै बारै में कीं जांणकारी देवौला ?

— छोटै कोस री आपरौ न्यारौ महत्व अर स्थान व्हिया करै, भासा रौ अध्ययन अर अध्यापन सारू राजस्थानी में ई अेक छोटे कोस री जरूरत लगूलग मैसूस करीजती रैयी है। म्हैं इण काम वास्तै सरू सूं ई कोसीस करतौ रैयौ अर तकरीबन तीन-चौथाई हिस्सौ प्रेस में देवण री स्थिति में त्यार पड़ियौ है। अेक चौथाई हिस्सै री काम हाल बाकी है। हालत जे माफिक रैया तौ इणनै ई छगावण री पूरी कोसीस करूंला।

सार-संखेप में व्हेतां थकां ई औ कोस सवद अर अरथ री दीठ सूं पूरौ है, फगत मुहावरां, कैवतां, उदाहरण अर लोकोक्तियां इणमें सामिल नीं करीजी। पण सबद उत्ता ई है, जिका नव जिल्दां में सामिल करीजियोड़ा है। औ छोटौ सवद कोस खास कर विद्यारथियां अर आम लोगां रै वास्तै बौत उपयोगी साबित व्हे सकै।

☐ कांई भासा-संपदा रै आधार माथै राजस्थानी री न्यारी-न्यारी बोलियां में आपनै कोई बुनियादी अंतर लखावै ?



— बोलियां भासा री काची माल व्हिया करै। बोलियां री टकसाळी रूप ई भासा है अर इण दीठ सूं बोलियां में आपसरी में स्थान प्रभाव अर ध्वन्याऊ अंतर जरूर व्हे अर जिको है ई, पण भासा अर बोली री आपसरी में तुलना करणी नीं तौ जरूरी है अर नीं वाजिब ई। दुनियां री सगळी भासावां री आपरी बोलियां है अर वां सगळी बोलियां रै व्याकरण अर सबदां इत्याद् री उपयोग वै भासावां करै। बोलियां रै अंतर नै भासा री विवाद बणावणी अणुताई ई कथीजै. अर निस्चै ई इणरै लारै कीं हळका स्वारथ ई व्हे सकै, नींतर फगत राजस्थानी नै लेयर इण तरै री विवाद क्यूं खड़ी व्हेतौ ? औ विवाद या तौ मन-घड़न्त है अथवा अग्यानता री वजै सूं इणनै मंजूरी दिरीज रैयी है।

☐ अेक कोसकार रै रूप में आप राजस्थानी भासा रै टकसाळी सरूप री समस्या नै किण रूप में देखौ ?

— राजस्थानी अपणै-आप में पूरी टकसाळी भासा है। जन भासा रै रूप में प्राचीन मान्यता-प्राप्त भासावां मांय सूं अेक है। साथै ई कठै-कठैई अरबी-फारसी रा अपवादां नै छोड र सात-आठ सईकां तांई आ प्रमुख राजभासा ई रैयी। कठैई इण कबीर अर रैदास नै वाणी दी तौ कठैई मीरां रै सुर में मुखरित व्ही। १८ वीं सदी रै हिन्दी आन्दोलन सूं पैलो आ सैमूदै आथूणै भारत री अेक टकसाळी भासा ही—न्याय, विणज अर राज-काज में इणरौ उपयोग व्हिया करतौ। हिन्दी आन्दोलन रै दिनां वारला हालात समचै मुलक री सारवभौमिकता नै ध्यान में राख'र राजस्थान रा लोगां आजादी री लड़ाई नै कामयाब बणावण सारू अेक भासा रै रूप में खड़ी बोली नै मंजूरी दीवी—उणनै राष्ट्रभासा रौ दरजौ दियौ। उणरै पछै आजादी रै उन्माद में आपां आपणी भासा नै बिसार दीवी अर जद होस आयौ तौ राजस्थानी राजनीति रै छळावै में आय'र सविधान री किताब सूं वारै व्हेगी। पण फेरूं ई, क्यूं के आ अेक जनभासा ही, इण वास्तै इणनै जन-व्यवहार सूं हटावणौ किणी रै बूतै री बात नीं ही, पण इणरै साथै सौतेलौ व्यवहार राखण में कसर नहीं छोडीजी।

यूं समाज, विग्यान अर सभ्यता रै विकास रै साथै हरेक भासा विगसै। इण वास्तै औ विकास लगूलग व्हेला ई समस्या टकसाळी सरूप री इत्ती गंभीर कोनी वरन् इणरै सही विकास री है, जिकी के आपां बोलण-लिखण वाळां री मैंनत अर काम माथै निरभर करै। आपां जित्ती लगन सूं काम करांला उत्ती ई आपांनै कामयाबी मिळैली।

☐ राजस्थानी भासा अर संस्कृति रै छेत्र में कोस सरीखै महताऊ काम नै जिम्मेवारी सूं पूरौ करण री अेवज में आपनै समाज अर रास्ट्रीय स्तर माथै खूब सम्मान अर प्रतिस्ठा ई मिळी—भारत सरकार आपनै पदमश्री री पदवी दीवो। जीवण रै इण पड़ाव माथै, आज आप कांई मैसूस करौ ?



— जिको सम्मान म्हनै रास्ट्र अर समाज दियौ वौ म्हारी महान् भासा राजस्थानी अर राजस्थान रै बावत आदर अर प्रेम रौ ई प्रतीक है, फेरूं ई म्हैं चावूं के जिको काम व्हियौ है वौ फगत अेक सरूआत है, कामयावी रा लूंठा पड़ाव हाल आगै है, जिका आज री युवा-पीढी नैं चुणौतियां देवै। आपणी युवा पीढी कमर कस नैं आंनै हासल करण में लाग जावै तौ म्हां जिसा पुखता मिनखां नैं ई कीं ध्यावस वंधै ।

इणरै अलावा भासा, धरम अर जात-पांत सरीखा नाजुक मामलां री ओट में हळकी राजनीति री मौरै-बाजी चाल रैयी है, आ वौत घातक है, इणनैं रोकणी लाजमी है। औ काम जनता रै नांव माथै उछाळ दियौ जावै अर इणरौ नतीजौ सगळां नै भुगतणौ पड़ै ।

आपांनै चाईजै के आपणा नीजू स्वारथां अर विवादां नै भुलाय'र समाज री इमारत नै मजवूत वणावां, दूजा में मीन-मेख काढण रै वहानै इणरी नींव खोदण री काम आतमघाती है। सगळी भासावां अर जातियां री तरक्की सारू सरीखौ निजरियौ अपणावणौ चाईजै। जे सरकार अर समाज री सैयोग रैयौ तौ म्हैं इण ऊमर में ई खासा-कीं करण री तमन्ना राखूं ।

* * *



लारलै दसक रौ राजस्थानी साहित्य

पारस अरोड़ा

•

किणी अेक विधा माथै वात नीं कर नै पूरै राजस्थानी साहित्य रै लारलै दसक री उपलब्धियां माथै वात करणी—वांरै कांनी इसारौ करणौ के वांरौ उल्लेख मात्र करणौ इज व्हैला, वांरी समीक्षा करणी नीं। घणकरी वार नांव गिणावण री टेव फगत अेक फेहरिस्त री रूप वण'र रैय जावै अर मुद्दै री वात रौ जिकर ई नीं व्है, इण दीठ जे अठै कीं नांव छूट जावै तौ वांरा कारण तलासणा, मुद्दै री वात नै नजरंदाज करणी व्हैला। रचनात्मक स्तर माथै मान-मोल री तलास अथवा समसामयिक संदरभां सूं रचना रौ जुड़ाव अर जरूरत री दीठ सूं परखणै री सही कोसीस म्हांरी वुजुर्ग पीढी रै हाथां नी व्हेणै सूं नुंवी पीढी खुद नै वां सूं नीं जोड़ सकी अर उणनै खुदरी जमीन न्यारी सोधणी पड़ी। पण इण कारण आ वात नीं भूल सकां के वां लोगां राजस्थानी नै अेक आधुनिक भासा रै रूप में सांमी लावण रौ सारथक अर महताऊ काम जरूर कियौ, राजस्थानी नै जूंना सास्त्रां सूं वारै काढ'र आज री अेक सवळी जन-भासा रौ रळियावणौ सरूप दियौ।

लारलै दसक री साहित्यिक उपलब्धियां माथै वात करण सूं पैली आ वात ई ध्यान देवण जोगी है के अजै राजस्थानी में केई विधावां रौ अर खासकर गद्य विधावां रौ कारगर ढंग सूं इस्तेमाल नीं व्हियौ है। अजै पद्य नै इज मुख्य रूप सूं स्वीकारीज्यौ है। पण जिका लोग आ कैवै के राजस्थानी गद्य हाल कोरौ लोक-कथावां तांई इज पूगौ है, वै निस्चै ई भरमणा में जीवै। लारलै दिनां केई लिखारा कहाणी, उपन्यास, निवंध, संस्मरण सवद-चित्र आद लिख'र गद्य नै संवारणै री सफळ कोसीसां की है। कविता में तौ नुंवा-पुराणा केई लिखारां सारथक अधुनातन प्रयोग किया है।

अठै सन् १९७० रै पछै री रचनात्मकता माथै वात करूंला, जिणरौ लखाव पत्र-पत्रिकावां में पैली सूं इज व्हेण लागौ हौ। मरुवाणी, ओळमों, जलमभोम अर मधुमती पत्रिकावां आपरा जिका कवितांक निकाळिया, वां में सगळा लेखकां री सगळी भांत



री रचनावां नैं छापण रै लारै अेक दीठ-विहूणी प्रवरती रै कारण कोई महताऊ जुड़ाव नीं दीसै। आं दिनां इज सत्यप्रकास जोसी बम्बई सूं 'हरावळ' मासिक रौ प्रकासण सरू कियौ। अठै आ बात ई जरूर कैयी जा सकै आं पत्र-पत्रिकावां सूं भासा री नींव नैं—अेक थोथप नैं भरण रौ काम जरूर कीं व्हियौ अर इण दीठ आं रौ महत्त भुलावण जोगौ कोनीं।

कविता राजस्थान री सबसूं सबळ विधा रैयी है इण कारण म्हैं सगळां पैली लारलै दसक री कविता माथै इज बात करूंला। 'परम्परा' रै 'हेमांणी' अंक में म्हांरी बुजुरग पीढी रा जिका आठ कवी सरब श्री गणेसीलाल व्यास उस्ताद, चन्द्रसिंघ, नारायण सिंघ भाटी, रेवतदान चारण, कन्हैयालाल सेठिया, गजानन वरमा, सत्यप्रकास जोसी अर कल्याणसिंघ राजावतसंवेटीज्या, वां में उस्ताद गणेसीलाल व्यास नैं छोड़'र बाकी सगळा आज मौजूद है। पण रचनात्मकता री दीठ वां मांय सूं मुख्य तौर सूं तीन कवी—नारायणसिंघ भाटी, कन्हैयालाल सेठिया अर सत्यप्रकास जोसी निरन्तर लिखता-छपता रैया है। भाटीजी री 'कळप' अर 'मीरां', सेठियाजी री 'कूंकू', 'लीलटांस' अर 'धर मजलां—धर कूचां' अर जोसीजी री 'बोल-भारमली' लारलै दिनां खासी चरचित कृतियां रैयी है। भाटीजी आपरी दोनूं रचनावां रै आधार आपरी रचनात्मकता रै आगलै पगोथियै पूग'र आध्यात्मिक दीठ री सैंजोर दरसावणी कियी, जद के जोसीजी नारी अर पुरस री काम (सैक्स) संबंधी पूरणता अर समस्यावां रै विसै नैं नुंवौ इज आयाम दियौ। सेठियाजी विलोम स्थितियां नैं उजागर करता एक न्यारै आध्यात्मिक धरातळ माथै पूगा है। अठै आ बात ई ध्यान देवण जोगी है के उस्ताद रौ काव्य 'जनकवि उस्ताद' रै नांव सूं इणी दसक में पोथी रूप सांमी आयौ। उस्ताद रै अलावा आं मांय सूं किणी कवी नैं आज री मानसिकता, जन-जीवन अर अवखायां सूं आथड़ता नीं देखां, जिका के मौजूदा आरथिक अर सामाजिक बदळाव सूं जुड़'र बगतवळू लेखन नैं स्वीकारियौ व्है।

सन् १९६०-६५ रै विचाळै कविता में जिकी ठैराव री स्थिति आई, निस्चै ई उणरै लारै एक नुंवी काव्य-जातरा, नुंवै भाव-बोध रौ बीजारोपण व्हे रैयौ हौ। सेवट ठैराव रौ नतीजौ सांमी आयौ अर तेजसिंघ जोधा 'राजस्थानी—अेक' नांव सूं एक पोथी रौ संपादन कर पांच नुंवा कवियां रै पांण नुंवी कविता री ओळखांण कराई। अै पांच कवी हा—गोरधनसिंघ सेखावत, मणि मधुकर, ओंकार पारीक, पारस अरोड़ा अर तेजसिंघ जोधा। आं कवियां छंद रा सगळा बंध सूं मुगत व्हेय'र आपरी संवेदना नैं आज री मानसिकता सूं जोड़'र अेक नुंवी जमीन री तलास करी। आं कवियां मांय सूं गोरधनसिंघ, मणि मधुकर, ओंकार अर पारस रा पैला कविता संकलन विगतसर 'किरकिर', 'पगफेरौ', 'मोरपांख' अर 'झळ' रै नांव सूं छप'र चरचित व्हिया। आंरै लगौलग इज नन्द भारद्वाज, सांवर दइया अर चन्द्र प्रकास देवल रा कविता संकलन 'अंधार-पख', 'काल अर आज विच्चै' अर 'पागी' रै नांव सूं प्रकासित व्हिया अर नुंवी कविता रौ अेक सबळौ-सुथरौ रूप नीगै आवण लागौ। नन्दकिसोर बोड़ा, हरीस भादानी, राजेन्द्र बोहरा, कमला वरमा, सत्येन जोसी,



प्रकास परिमल, बी. आर. प्रजापती, अरजुन देव चारण, आत्माराम, किसनगोपाळ सरमा, जुगल परिहार, स्यामसुन्दर भारती आद केई नांव राजस्थानी री पत्र-पत्रिकावां में निरंतर लिखणिया कवियां रै रूप में देख्या जा सकै। अर इण गत 'राजस्थानी—अेक' सूं सरू व्हियोड़ी काव्य-जातरा रा सफीट पगलिया लगोलग आगै वधता दीसै।

इण विधा में लारलै दिनां जिकौ कीं अनुवाद रौ काम व्हियौ, उणरौ जिकर ई अठै करणौ जरूरी है। इण दीठ पैलौ काम स्व. रामनाथ व्यास 'परिकर' लेनिन संबंधी रूसी कवितावां रा अनुवाद 'लेनिन काव्य-कुसुमांजलि' रै रूप में लियौ अर दूजौ गिणावण जोग काम परम्परा रै हेमाणी' अंक में पचास देसी-विदेसी कवितावां रा अनुवाद रै रूप में तेजसिंघ जोधा, पारस अरोड़ा, नन्द भारद्वाज आद नुंवा कवियां मिळ'र कियौ। इणरै अलावा मरुवाणी, ओळमों, जलमभोम, हरावळ, जांणकारी, दीठ, हेलो, जागती जोत, अपरंच आद पत्र-पत्रिकावां में लगोलग अनुवाद छपता रैया। आज रौ कवी विस्व-स्तर माथै व्हेणाळा साहित्यिक आंदोलनां नै देखतौ-परखतौ रैयौ, पण औ आस्वादन घणकरौ हिन्दी अर अंग्रेजी रै माध्यम सूं इज व्हियौ है। अठै औ कैवणौ ई असंगत नीं व्हैला के अनुवाद रौ काम जठै तांई व्हे सकै मूळ भासा सूं व्है तौ चोखौ रैवैला। राजस्थानी रा लेखकां नै इण दीठ जरूर कम सूं कम अेक देसी-विदेसी किणी दूजी भासा नै सीखणी चाइजै।

राजस्थानी में गद्य रौ सरवांग-सफळ निरमाण हाल बाकी है। हां, इण दिस सुभारम्भ जरूर व्हे चुकौ है। बदळता हालात में तूटती मान-मरजाद, आरथिक सिकंजै में छटपटावतौ जन-साधारण, भ्रस्ट राजनीतिक व्यवस्था, असंतुस्ट युवा-वरग, ऊब, घुटन, कुंठा, निरासा, क्रोध अर जूंझ सूं उपजती संवेदना नै अजै सही—सारथक ढंग सूं रचनात्मक स्तर माथै गद्य रै रूप में वरतणौ हाल घणौ बाकी है। राजस्थानी रौ लिखार पोसाळ सूं लेय'र विस्वविद्यालै तांई हिन्दी में पढतौ-लिखतौ रैवै, जे इण कारण वौ हिन्दी सूं प्रभावित व्है तौ औ स्वाभाविक है। सरूपोत औ असर किणी लिखारै में लाध सकै, पण सेवट उणनै आपरी जमीं माथै आवणौ पड़ै।

उपन्यास जैड़ी लोकप्रिय विधा में इण दसक सूं पैली जिकी थोथप ही, वा निस्चै ई इण दसक में कीं भरीजी है। श्रीलाल नथमल जोसी रै पछै एक सबळ नांव जुड़ै अन्नाराम 'सुदामा' रौ अर 'मैकती काया : मुळकती धरती,' 'आंधी अर आस्था' नै 'मेवै रा रूंख' वांरा तीन उपन्यास छप चुका है। 'आंधै नै आंख्यां' वांरौ कथा-संकळन है अर 'दूर-दिसावर' यात्रा-संस्मरण। लारलै दिनां वांरौ नाटक छप्यौ अर इण गत गद्य री सगळी विधावां में रचना करता वै खूब चरचित ई व्हिया। हिन्दी में बहुमुखी प्रतिभा रा रा धणी यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ई राजस्थानी में लेखन री संभावनावां तलासता आया अर दो उपन्यास 'हूं गोरी किण पीव री' अर 'जोग-संजोग' नै अेक नाटक 'तास रौ घर' लिख्यौ, कीं कहाणियां ई पत्र-पत्रिकावां में छप चुकी है। 'चन्द्र' चटपटी अर मुहावरेदार भासा रौ चोखौ उपयोग कियौ है। सत्येन जोसी अर पारस अरोड़ा कविता सूं उपन्यास

कांनी आया। सत्येन जोसी री उपन्यास 'कंवळ पूजा' पैलो अैतिहासिक उपन्यास है अर वांरो दूजौ उपन्यास 'जूण-विहूण' हाल छपियो कोनीं। वांरा लिखियोड़ा केई सुन्दर सबद चित्र अर संस्मरण ई गिणावण जोग है। इणी दिनां पारस रो उपन्यास 'खुलती गांठां' छप'र सांमी आयौ अर चरचित व्हियो। नृसिंघ राजपुरोहित ई 'भगवान महावीर' नांव सूं अेक उपन्यास लिख चुका है। नृसिंघ राजपुरोहित राजस्थानी में एक सफल कथाकार रै रूप में ओळखीजै अर गुजराती सूं सीधौ अनुवाद करण री ई खिमता ई राखै वां री कहानी संकळन 'परभातियौ तारौ' लारलै दिनां इज छप'र चावौ व्हियो है। कथा रचना में दूजा चरचित नांवां में अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द्र प्रांणेश, सांवर दइया, रामेस्वर दयाल श्रीमाली आद केई लेखकां रा नांव गिणाया जा सकै जिका लगोलग लिखता जाय रैया है। राजस्थानी गद्य री वात उठै तांई पूरी नीं व्है सकै जठै तांई विजयदान देथा रो नांव नीं लिरीजै। विजयदानजी लोक-कथावां रै रूप में अेक खजानो राजस्थानी नै सूंप्यो है अर केई मौलिक कथावां ई लिखी। इणी दीठ राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ई अेक सबळ नाव रै रूप में सांमी आवै। वां री केई लोक-कथावां, विदेसी कथावां आद रा अनुवाद सरावण जोग है।

नुंवा लिखारां में तेजसिंघ जोधा, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, सत्येन जोसी, मणि मधुकर, ओंकार पारीक, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', मोहन आलोक, भंवरलाल भ्रमर, दीनदयाल कुंदन, अरजुनदेव चारण, कृष्ण कल्पित, हनुमान पारीक आद केई लिखारा आज जिण गत गद्य में तेजी सूं लिखण कांनी आया है, उणनै देख'र आ वात खूब विस्वास रै साथै कैयी जा सकै के राजस्थानी में गद्य रै विकास री उज्जवळ संभावनावां मौजूद है।

* * *



छळावौ

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

वीं नै भारतीय कला संस्थान कानी सूं कियोड़ी अेक प्रदरसणी मांय पैलौ इनाम मिलियौ। वीं नै घणौ राजी व्हेणौ चाइजै पण वौ वौत ई उगमणौ हौ। जांणै वीं री हियौ वौत ई ऊंडै कूवै मांय पड़ग्यौ है अर कोजी तरियां कळप रैयौ है। कदैई-कदैई वीं नै आप रौ उणियारौ मुचियोड़ो-सौ लागतौ।

वीं रै माळियै में सून सूतोड़ी ही। अेकांत चोर जैड़ौ अठी नै-वठी नै वैठयौ हौ। पून पलीत ज्यूं लुकगी ही जीं सूं गोखां रा पड़दा चिन्ना-साक भी कोनीं हिल रैया हा। पण तावड़ै री अेक लीकाट वीं रै चितराम माथै इयां पड़ रैयी ही जांणै वा वीं चितराम नै दो भागां में वांट रैयी है।

वीं रौ चितराम गांव री अेक छोरी रौ हौ। मोटियार छोरी रौ। वा छोरी आप रै पैरावै सूं अेकदम गैली अर भोळी लाग रैयी ही। वीं रै चारूंमेर रौ परिवेस भी ठेठ गांव रौ हौ जीं नै के वौ पसंद नीं करतौ हौ। वीं मोटियार छोरी कन्नै अेक नागौ टावर ऊभौ हो। छोरी री कांचळी मांय सूं आधौ हांचळ दीख रैयौ हौ। इण नै वौ गंवारू सभ्यता कैवतौ। अर वौ इण सभ्यता सूं घिरणा करतौ।

वौ आप रै ई चितराम नै अेक दरसक ज्यूं जो रैयौ हौ। वीं री दीठ उण चितराम सूं चिपकगी ही। असल वात तौ आ ही के वौ उण मोटियार छोरी नै ओळखण री जतन कर रैयौ हौ। सोच रैयौ हौ के इण चितराम री प्रेरणा वौ कठै सूं ली ?

वौ सोफै रै मांय धंस'र वैठग्यौ। आप री आंखियां मींचली। वीं नै आप रै मांय अेक उजव-सी चमचेड़ां री फड़फड़ सुणीजण लागी। फड़फड़ाहट अंधारै में वड़गी। अचांणचक वीं नै वां चमचेड़ां री खीरां ज्यूं भिगती आंखियां दीसी। धीमै-धीमै वै

आंखियां खूब डरावणी व्हेगी। खुड़की वीं री ध्यान तोड़ दियौ। अबै तावड़ै री लीकाट मिन्नी ज्यूं कूद'र कैनवास माथै बैठगी। वौ सोचण लागौ—इण चितराम म्हनै घणौ नामूज कियौ। इत्तौ नामूज कियौ के सगळा कलाकार म्हनै जांणण लागग्या। इण चितराम रै चटकदार रंगां नै सैंग जणा सरायौ।

केई लोगां पूछियौ—"इण री प्रेरणा कुण है ?"

"गांव रौ जथारथ।"

"आप नै इण सभ्यता सूं तौ मांयलौ लगाव व्हैला ?"

वौ अकड़'र कैयौ—"म्हनै इण सभ्यता सूं टावरपणै सूं ई लगाव है। सांची बात तौ आ है के म्हारौ जलम ई इण सभ्यता रै मांय व्हियौ है। म्हैं इण सभ्यता नै देखी, परखी अर समझी है। इण सूं वत्ती बात आ है के म्हैं इण नै भोगी है। आपां रै देस री असली सभ्यता तौ गावां रै मांय है।"

"आप अगाड़ी भी अैड़ा चितराम बणावौला ?"

"म्हैं गांवां रै खूणै-खूणै जाय नै चितराम बणावूंला। वां री न्यारी प्रदरसणी लगावूंला।"

अेक फूटरी फरी छोरी मुळकती थकी आय नै बोली—"थे तौ इण सभ्यता नै जीवता व्हौला ?"

वौ चुप व्हेग्यौ। वीं नै लागौ के किणी वीं रै गाल माथै थप्पड़ मारदी है। वौ अेकदम कूड़ बोलियौ—"हां-हां, म्हारै घर मांय तौ औ ई परिवेस है। म्हैं तौ खुद गांव रौ इज हूं।"

धड़ाम सूं अेक खुड़कौ व्हियौ। पून गैली रांड ज्यूं माळिया में वड़ी अर काच नै न्हाख दियौ। वौ पछमी चोजां सूं सजियोड़ै आप रै फ्लेट नै जोयौ अर खुद नै धिक्कारतौ कैयौ—"म्हैं कितरौ कूड़ौ हूं! पैलै नम्बर रौ कूड़ौ! ओह, आ म्हारी खुद सूं कित्ती बडी जाळसाजी है! छळावौ है! म्हैं जिकी संस्कृति-सभ्यता रौ ढोल बजा बजा'र हाकौ करूं, वा म्हारै जीवण मांय विसवै भर भी कोनीं।"

वौ अेक दफै खुद नै जोयौ। फेर आप रै चितराम नै जोयौ। खुद नै पूछियौ—"इण चितराम री प्रेरणा कुण है ?" ओळू वीं रै माथै में घूमण लागी "अरे आ तौ वीं री लुगाई है। वीं री खुद री बीनणी!" ओळू रौ अेक टुकड़ौ भाटै ज्यूं वीं रै अगाड़ी आय पड़ियौ।

वौ गांव छोड'र महानगर रै मांय बसग्यौ। राजस्थानी अर हिन्दी बोलणौ वीं नै चोखो नीं लागतौ। राजस्थानी बोलणियै नै वौ गंवार अर उजड्ड जाणतौ। किनैई राजस्थानी बोलतौ देखतौ तौ कैवतौ—"थै सगळा गंवार रा गंवार ई रैवौला।"



जद वौ आप रै गांव आळै घरै आयौ तौ वीं रै घर रा नागा टावरां वीं रौ घेराव कर लियौ। ताळियां वजाय-बजाय नै वै सगळा कैवण लाग्या—"काका-सा आयग्या ! काका-सा आयग्या !!"

उणी पल वीं री दीठ आप री लुगाई माथै गयी परी। लाल रंग रौ छींट रौ घाघरौ अर कांचळी। कांचळी रै मांय सूं आंखियां काढता हांचळ। सयाळ। मीढा में गूंथियोड़ी बोरियौ। पगां में रमझोळ। मूंडै माथै घूंटौ।

वीं नै वा घणी बदतमीज लागी। उणी वखत अेक छोरी कैयौ—"काका-सा, आ म्हारी काकी है। थां री लुगाई....।" वीं रै डील में लाय-पलीता लागग्या—"तौ आ म्हारी लुगाई है ! अेकदम गवार अर गधी !" वीं रौ हियौ घिरणा सूं भरग्यौ—"म्हारी जिन्दगी खराब व्हेगी। अैड़ी असभ्य लुगाई साथै म्हारौ निभाव नीं व्हे सकै।"

वौ भारी पग उठावतौ मांय नै गयौ। वीं री आंधी मायड़ लांबा-सांस लेय नै कैयौ—"आयग्यौ वेटा ! घणा बरस लगाया ? अबै तूं इण घर री गिरस्थी नै संभाळ। म्हैं थारी पढाई री खातर घर री अेक-अेक चीज अडाणै राख दी है। खेत भी अडाणै है। पइसां रै कारण म्हारी आंखियां रौ इलाज भी नीं करा सकी। तूं तौ भणियोड़ौ है। थारै तौ चार आंखियां है।"

उणी वखत वीं रौ बडो भाई आयौ। पसीनो-पसीनौ व्हियोड़ौ। पग-उभराणौ। मैलौ-कुचैलौ। वीं नै देख'र वौ विभोर व्हेग्यौ। बोलियौ—"आयग्यौ छोटोड़ा ! घणी अडीक करायी।

वडोड़ै भाई छोटेड़ै नै वाथियां में भर लियौ। वीं नै आप रै भाई री डील गंधावतौ लागौ। अेक घिरणा-सी जलमी वीं में। वीं रौ भाई कांई कैवतौ रैयौ, वीं नै ठा नीं। हां, थोड़ी ताळ पछै वौ आप री लुगाई नै वक रैयौ हो। वीं नै फूहड़ अर वदतमीज कै रैयौ हो।

वीं री लुगाई कैयौ—"म्हनै किणी भी गांव में फूहड़ अर नागी नीं कैयौ। साची वात तौ आ है के थां री दीठ में पाप वसग्यौ है। मन नै सुध करौ।"

वस, वौ पूठौ महानगर आयग्यौ।

घणा वरस वीतग्या। वौ गांव नीं गयौ पण रिपिया वरावर घालतौ रैयौ। मा मरगी पण वौ गांव नीं गयौ। लुगाई नै विसरग्यौ। पण जद वीं नै आप री लुगाई रै चितराम माथै पैलौ इनाम मिलियौ तद वीं रौ मोह-भंग व्हियौ। वीं नै लागियौ के वौ खुद सूं छळावौ करै है। वौ आतम-ग्लानि में झुळसतौ रैयौ।

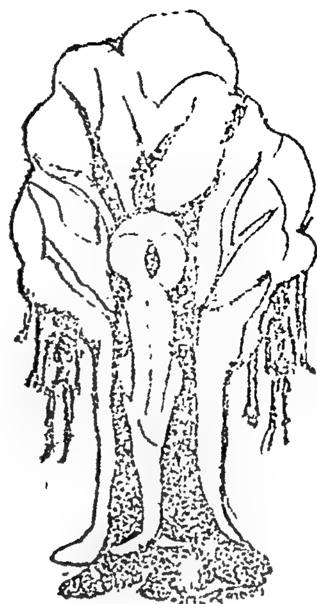
वीं नै आप री हार हुई-सी लागी। ऊठ'र पड़दौ हटायौ। नूंवौ तावड़ौ चितराम माथै पड़ियौ। वीं में वीं नै जोवतै-जोवतै अेक नूंवौ अंकुर फूट्यौ के वौ वरसां रै पछै अबै आप रै गांव पक्कायत जावैला।

• • •

स द्वितीयमैच्छत्

वौ दूसरै री कामना करी।

—बृहदारण्यकोपनिषद्



देहान्तर

•

जुगल परिहार

अन्धारौ पख

[परदौ आगौ व्हेतां ई मंच माथै अेक तणी निगै आवै जिण माथै चूड़ीदार पाजामौ अर घाघरौ सूख रैया है। परदै रै लारै सूं मिनख अर लुगाई रै लड़ण रो आवाज आ रैयी है। थोड़ी ताळ पछै लुगाई अर उण रै लारै-लारै मिनख मंच माथै आवै। अै दोनूं नट अर नटी है।]

नट : भली आदमण, कर कांई रैयी है ?

नटी : कर नै तौ अबै बतावूं। हाल व्हियौ कांई है !

नट : क्यूं इत्ता लोगां रै बिच में माजनौ गमावै ? अै कांई सोचैला !

नटी : क्यूं अै कदेई लड़ता ई नीं व्हैला ! सौगन लियोड़ी है कांई आं रै ?

नट : अबै थारै सूं कुण पूग आवै ! देख, हाथा-जोड़ी करूं थारै सूं ! मान जा। बापड़ा कित्ती देर सूं वाट जो रैया है नाटक सारू !

[बीच में ई दरसकां में सूं किणी री आवाज आवै—अै बापड़ा किण नै बणावै रे ! थोड़ौ नीचै आईजै तौ !]

नट : (होळै सुर में) क्यूं फजीती करावै ! लोग बैठा-बैठा काया व्हे रैया है। मूड उखडग्यौ तौ अबार कुड़सियां बजावणी सरू कर दे'ई !

नटी : म्हारै भावै तौ आग लगावौ कनी।

नट : थनै आज व्हियौ कांई है ?



नटी : व्हियौ म्हनै है के थां नै ?

नट : ले, म्हैं म्हारी गलती कबूल करूं । अबै तौ थूं फुरती सूं तय्यार व्हे जा। नाटक सरू करां।

नटी : (हाथ नचावती थकी) नाटक सरू करां ! हुंह। औ जिकौ रोज घर में नाटक व्हे है उण रौ कांई व्हे'ई ?

[जितरीक नै दरसकां में सूं अेक आवाज आवै—अरे अै स्टेज माथै धावळिया किण रा सूखै रे ? नट री नीजर झट तणी कानी जावै ।]

नट : (घबरा'र) अरे बाप रे !

नटी : किण बात री अरे बाप रे ?

नट : कित्ती वार थनै कैयौ है के कपड़ा टैमसर मंच माथै सूं आगा ले लिया कर ! पण कीं गिनारौ ई नीं करै थूं तौ !

नटी : तौ इण में गजब कुण-सौ व्हेयग्यौ ?

नट : गजब ! लागै है के आज थूं आछी तरै माजना में धूड़ पड़ावैला !

नटी : क्यूं ? (दरसकां कानी इसारौ करती थकी) अै तौ जांणै नागा इज फिरता व्हैला ! धावळिया धारण करता ई नीं व्हे'ई ।

नट : क्यूं उलटी-सीधी वातां करै ?

नटी : इण में उलटी-सीधी वातां रौ कुण-सौ सवाल ? साची कैवूं ।

[अेक खूणा सूं कोई आवाज फेंकै—आ नीं तौ थूं ई उतार नै मांयै धर दै बीरा ! इण में लाज-सरम कांय री ?]

नट : हे भगवान ! नीं जांणै आज ऊठतां ई किण री मूंडी देखियौ ।

नटी : (जोर दे'र) म्हारौ ।

नट : वौ तौ रोज ई देखूं हूं ।

नटी : रोज हावळ नीं देखता हा । हावळ तौ आज इज देखियौ ।

नट : (तंग आ'र) आखिर थूं चावै कांई है ?

नटी : फैसलौ । नित-हरमेस री चख-चख भूंडी ।

नट : नाटक खतम व्हियां पछै आपां सांती सूं बैठ'र सलट ले'वां ।

नटी : म्हनै तौ थां रौ अबै अेक मिनट रौ ई पतियारौ कोनीं ।

नट : मान जा। क्यूं संतावै ?

नटी : आज-काल आज-काल करतां केई वरस निकळग्या ।



नट : मान जा मानेतण ! हाथ जोड़ूं ।

नटी : अच्छा ! अबै म्हैं मानेतण व्हेयगी ?

नट : कद नीं ही ? थूं तौ हमेस म्हारी मानेतण इज रैयी ।

नटी : आ तौ म्हनै आज इज ठा पड़ी । हां, तौ अबै आ ई फुरमाय दौ फुरती सूं अण-मानेतणियां कित्ती पाळ राखी हौ ?

नट : (बड़बड़ावतौ) अरे बाप रे, लुगाई है के अेटम-बम ! (परगट में) थूं तौ बात-बात नै पकड़ै । गलत-सलत अरथ निकाळै । म्हारै माथै इत्तौ ई विसवास नीं ?

[दरसकां में सूं अेक आवाज आवै —अरे आ कांई रामायण छेड़ दी ! म्हां नाटक देखण नै आया हां नाटक !]

नट : (दरसकां सूं हाथ जोड़तौ थकौ) आप लोग किरपा कर नै अेक मिनट ठैरौ । बस, अबार नाटक सरू करां ।

नटी : थे थां रै नाटक दिखावता रैवौ, म्हैं तौ म्हारै चाली ।

नट : (हाथ पकड़तौ थकौ) अणूतौ ई छेह मत लै । म्हारै कानी नीं तौ आं लोगां रै कानी तौ देख । मैंमान रूप आया है नाटक देखण नै ।

नटी : नाटक तौ अै घणा ई देख्या व्हैला जीवण में । आज आं नै परदै रै लारलौ नाटक ई देखण दौ ।

नट : तौ थूं किणी भांत नीं मानै ?

नटी : नीं । किणी भांत नीं । जद तांई कोई फैसलौ नीं व्है । थे मिनख लोग लुगाई नै समझ कांई राखी हौ ? पग री जूती !

नट : राम-राम-राम ! कैड़ी वातां करै ! आज तौ बराबरी रौ जमानौ है । मिनख अर लुगाई दोनूं ई बराबर अधिकार राखै ।

नटी : अै सब फालतू री वातां है ।

नट : फालतू री कीकर है ? आपां री प्रधानमंत्री लुगाई है के नीं ।

[दरसकां में सूं कोई बोलै—अरे प्रधानमंत्री री फोड़ी रा, आ कांई वैस सरू कर दी !]

नटी : (दरसक री वात री परवा नीं कर'र) प्रेधानमंत्री जे लुगाई है तौ इण सूं कांई व्हियौ ?

नट : इण सूं कांई व्हियौ ! अरे आज समाज रै हर छेत्र में लुगायां मिनख रै कंधै सूं कंधौ मिला'र काम कर रैयी है अर थूं कैवै के.........



नटी : सब ऊपरली वातां है। मिनख मिनख है अर लुगाई लुगाई। सामाजिक रूप सूं भलां ई कित्ती ई बदळगी व्हौ, सारीरिक अर मानसिक रूप सूं तौ वापड़ी जठै री जठै है।

नट : थूं तौ बाल री खाल निकाळै।

नटी : साची कैवूं। थां लोगां नै तौ फगत आ इज दीखै के लुगायां आज मिनख रै कम्पीटिसन में ऊभी है, आ नीं दीखै के वां री स्थिति वत्ती खराब व्हे रैयी है।

नट : औ थारौ वैम है।

नटी : वैम नीं साच है। सरविस लाग्यां ई वापड़ियां कुण-सौ सुख पावै? रात-दिन रौ खटकौ। इज्जत सूं रैय सकै? थे मिनख लोग रैवण दौ?

नट : अबै म्हैं इण रौ कांई जवाब देवूं थनै?

नटी : जवाब! जवाब तौ थां नै अपणै आप मिल जावतौ, जे थे लुगाई व्हेता।

नट : अबै इण में म्हारौ कांई कसूर? भगवान म्हनै मिनख बणायौ तौ म्हैं मिनख बणग्यौ, जे वौ लुगाई बणावतौ तौ लुगाई बणतौ।

नटी : छोडौ फालतू री इण बैस नै। म्हनै तौ म्हारै घर सूं मतलब है। जद तांई वात रौ निवेड़ौ नीं व्है, म्हे कीं ई करण नै तय्यार नीं। म्हैं तौ म्हारै चाली। थे जांणौ अर थां रौ नाटक।

[आ केय'र नटी मंच सूं हेटै उतरण लागै।]

नट : अरे-अरे ठैर! सुण तौ..........

नटी : म्हैं सुणण वाळी नीं। थे भलां ई लाख रोकौ तौ ई।

नट : (ऊपर जोवतौ थकौ) हे ऊपरवाळा! थूं लुगाई बणाय नै आदमी रौ तौ कबाड़ौ इज कर दियौ। लाई कबीरदासजी ठीक ई कैयग्या—माया महा ठगिनी हम जानी!

[दरसकां में सूं कोई फेर आवाज फेंकै—कबीरदासजी रा बेटा! अैड़ी इज वात ही तौ पछै परणीज्यौ क्यूं? कुण पीळा चावल दिया हा थनै?]

नटी : (मंच री नाळ माथै ऊभी) क्यूं लुगायां नै दोस देवौ हौ? क्यूं लुगायां नै दोस देवौ हौ?? करौ-धरौ सब थे मिनख लोग अर ढोळौ लुगायां माथै! मिनख हमेस लुगाई नै दबायोड़ी इज राखी है। हर तरै सूं।

नट : क्यूं झूठ बोलै है? वौ जुग ई तौ याद कर—मेट्रिआकल जुग! जद के धरती माथै लुगायां रौ इज राज हौ। उण जमानै में लुगायां कांई-कांई कबाड़ा नीं करिया व्हैला!

नटी : वौ जुग ! वौ तौ आदिम समाज रौ जुग हौ। उण टैम आदमी जांणतौ ई कांई हौ ? अर ग्यान नाम रो चीज ई कठै ही ? फालतू री आंटा-वेड़ियां घालौ ! म्हैं तौ जांणूं हूं के थे मिनख लोग लुगाई नै जीतण थोड़ै ई दौ।

नट : (नैड़ौ आवतौ थकौ) अणूती बातां मन में लावणी ठीक नीं है। बात नै अवै है जठै इज खतम कर अर………

नटी : अर ने वर सैंग ठीक व्है जा'ई आज।

[आ कैवती थकी नटी दरसकां रै बीच जाय'र आगली लैण में पड़ी खाली कुड़सी माथै बैठ जावै। नट ई लारै-लारै उण रै कनै जाय'र समभावण-बुभावण लागै। अवै दरसकां रौ धीरज ई टूटण लाग जावै। अेकाध जणा सीटियां ई बजावणी सरू कर दै। अलग-अलग टाइप रा दरसक आप-आप रै मन री बाफां निकाळणो सरू करै।]

पैलौ : औ कांई रुळियार-खातौ है ?

दूजौ : म्हां नाटक देखण नै आया हां नाटक ! तमासौ नीं।

तीजौ : अरे औ तौ म्हां लोगां रौ ओसान मानौ के थां रौ नाटक देखण नै आयग्या। अठै किण नै गरज पड़ी है दो-तीन घंटा बरबाद करणरी !

चौथौ : दूजां रै टाइम री कीं वैल्यू ई नीं समभै भो'ड़ा !

पांचवौं : जे आ रंगसाळा नीं व्हे'र हथाई व्हेती तौ थारी-म्हारी ई करता।

पैलौ : आज तौ कावळ फंसिया यार ! इण विच्चै फिलम देखण नै जावता तौ लाख वत्तौ हौ।

दूजौ : पांच रिपियां रौ बटीड़ खावणौ हौ जिकौ खाय लियौ।

तीजौ : अै नाटक करणियां आज-काल खुद नै कांई समभण लागिया है ?

चौथौ : ऊठ यार, घरै चालां। समभ ले'वां के पइसा डूबत-खातै में गया।

पांचवौं : हां, समभ ले'वां के धरमादौ करियौ।

सेठजी : अरे पीसा किसा फालतू का आ गया है बेटाजी ! खरी कमाई का छै, खरी कमाई का। यान-क्यान जावण द्यां ?

सिन्धी : अरे कहिड़ो चूतियो नाटकु थो दिसणु चाहे। हरामी जबर्दस्ती टिकेट दई वियो।

बुद्धिजीवी : ओ गॉड, कहां फंस गया ! वेरी हॉपलेस !! ये नाटक करेंगे !!!

बूढौ १ : बैठां-सूतां नै कीड़ौ काटै है कीड़ौ ! यूं नीं के भला आदमी री तरै मैणत-मजूरी कर'र घर-बार चलावै।

बूढौ २ : अवै लांण पल्ला नीं लेवै तौ करै कांई ? ठीक इज तौ कैवै बापड़ी।

सरदार : (ताव में आ'र) ओय डिरैक्टर दे वच्चे ! तुसी नाटक शुरू करदा है या नहीं ?

[नट वापड़ौ चितवंगी-सौ व्है जावै अर धम्म सूं नटी री पाखती वाळी खाली कुड़सी माथै वैठ जावै ।]

नट : देख लियौ ! जिन्दगी में आज तांई अैड़ी फजीती नीं व्ही ।

नटी : इत्ताक में ई घवरायग्या ? हाल तौ व्हियौ ई कांई है ।

नट : ठीक है । कस्सर क्यूं राखं ? कर लै बाकी करणी व्है जिकौ । कम क्यूं उतरै ? पाणी तौ उतार ई दियौ । अवै वचियौ ई कांई है ! जावूं लोगां नै टिगटां रा पइसा पाछा दिरावूं ।

[इत्तैक में दरसकां में सूं चार-पांच युवक ऊभा व्है । इण में सूं अेक जणौ झट मंच माथै चढ जावै अर दरसकां सूं अरदास करण लागै ।]

युवक : लेडीज् अेन्ड जेन्टिलमेन ! प्लीज्, सांती-सांती-सांती ! हां, तौ आप सव लोग ध्यान सूं म्हारी वात सुणौ । अैड़ी छोटी-मोटी खटपट तौ जीवण में व्हेती ई रैवै । किण रै नीं व्है ? थां-म्हां सव रै जीवण में व्है । अर क्यूं नीं व्है ? धणी अर लुगाई ई आपस में नीं ल'ड़ी तौ पछै कुण ल'ड़ी ? अवै म्हनै ई ले लौ । म्हैं किणी दूजी लुगाई सूं तौ लड़ण सूं रैयौ । अर दूजी लुगाई ई कोई म्हारै सूं लड़ण सूं रैयी ।

पैलो : अरे वैठ जा पंच री फोड़ी रा । आयौ है वडौ पंचायती करण नै !

दूजो : मूंडौ घणौ फूटरौ है नीं वापड़ा रौ के कोई दूजी लुगाई इण सूं लड़ण नै आ'ई ।

तीजो : नेतागिरी करणी व्है तौ कठैई और जगा जाय'र करजै । अेक तौ यूं ई वोर व्है रैया हां अर ऊपर सूं आप पधारग्या भासण देवण नै !

वूढो १ : अै आज-काल रा लौंडा अपणै आप नै फिलमी हीरो सूं कम नीं समझै ।

वूढो २ : आछी रामत परवारी रे ! कांई जै सव देखण नै इज भगवान आपां नै जिंदा राखिया ?

युवक : माफी चावूं म्हैं आप सव लोगां सूं जे कीं उलटो-सीधौ वोलग्यौ व्हूं । नीं तौ म्हनै नेतागिरी री सौक है अर नीं ई फिलमी हीरो वणण री कोई इंछा । म्हैं तौ खुद आप लोगां रै दाई नाटक देखण नै अेक दरसक री हैसियत सूं आयौ हूं । अर म्हारौ इरादौ और कीं नीं फगत आप री वोरियत दूर करण रौ हौ ।

चौथो : कैवणी कांई चावै है थूं ? सावळ साफ-साफ वोल'र कै ।

युवक : आप सब लोग नाटक देखण नै अठै आया। क्यूं ? या तो रुचि रै कारण या मनोरंजण सारू ! दूजा कारण ई व्है सकै है। आ कोई नास्ती नीं है।

पांचवौं : वौ तौ सब ठीक है। पण म्हां लोगां नै आ बता के थूं कुण-सा बांवळ खांगा करण नै ऊपर चढियौ है ?

युवक : म्हारौ मतलब औ है जद तांई औ धणी-लुगाई यानी के नट अर नटी आपस में नीं सलट लै तद तांई म्हैं आप लोगां री मनोरंजण करणी चावूं। जे आप सब लोगां री आग्या व्है ।

[दरसकां में सूं केई आवाजां आवै—हां-हां, क्यूं नीं ! क्यूं नीं !! आ तौ बौत खुसी री अर सरावण-जोग बात है।]

युवक : आप सब लोगां रौ बौत-बौत धन्यवाद। हां तौ म्हैं आ कै रैयौ हो के धणी-लुगाई रो रिस्तौ अेक अैड़ौ रिस्तो है के वां रै बीच में आप रौ या म्हारौ बोलणौ वाजब नीं है, अर नीं चोखो ई लागै।

[बिच में ई दरसकां में सूं अेक जणौ बोलै—अरे धणी-लुगाई रा यार ! अबै थूं खुद क्यूं बोर करै है ?]

युवक : सॉरी, माफी चावूं। हां, तौ म्हैं अर म्हारा औ तीन-चार साथी देस कर रैया हां आप रै वास्तै अेक खास मनोरंजण। जिको के फगत आप लोगां रौ मनोरंजण ई नीं करैला बल्के आप सब नै सोचण वास्तै ई बाध्य करैला।

पैलौ : कांई कैयौ ? सोचणौ पड़ैला ! अरे सोचण री सगती तौ कदेई खतम व्ही।

दूजौ : वा', आ ठीक रैयी। अेक तौ पइसा खरचौ अर ऊपर सूं भेजो अलग।

तीजौ : सोचणौ इज व्हैतौ वीरा, तौ अठै कांई रोवण नै आवता ?

चौथौ : अरे प्यारा ! अठै कोई सोचण नै थोड़ै ई आयां हां। बस रौनकां देखण नै आयां हां रौनकां।

पांचवौं : भेजौ काम दे' ई तौ सोच ई ले' वां यार ! अैड़ौ कोई हाथ पाणी तौ लियोड़ौ है नीं। थूं तौ बस सरू करै जिकी बात कर।

युवक : तौ आप सब लोगां रै सम्मुख पेस है। साथियां ! रेडी। वन—टू—थ्री........

[मंच माथै अेकाअेकअंधारौ व्हे जावै। थोड़ी ताळ पछै जद चानणौ व्है तद जगळ री सीन नीजर आवै। अेक आदमी मुरदा टाइप दूजा आदमी नै आप रै कंधा माथै ऊंचायां होळै-होळै प्रवेस करै। औ त्रिविक्रमसेन है जिको के वेताळ नै ऊंचायोड़ौ है। मंच माथै वौ अठी सूं वठी अर वठी सूं अठी चक्कर काटण लागै।]



वेताळ : त्रिविक्रम !

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : त्रिविक्रम !!

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : त्रिविक्रम !!!

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : लागै है के आज मूड कीं ज्यादा इज खराब है !

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : कहाणी सुणावूं ?

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : अरे भई, म्हैं थनै जद बात करण री छूट दे दी, पछै थूं क्यूं नीं बोलै ? बातचीत करियां सूं तो अबै म्हैं पाछो जावूं नीं !

त्रिविक्रम : कांई बोलूं ? थूं फेर वा इज रामायण छेड़ी—त्रिविक्रम ! सुण, म्हैं थनै अेक कहाणी सुणावूं। कहाणी सुण'र थनै म्हारै सवालां रा जवाब देवणा पड़ला। जे थूं जांणतो थको ई सवालां 'रा जवाब नीं दिया तो थारै माथै रा टुकड़ा-टुकड़ा व्हे जावैला। अर जे जवाब दे दिया तो म्हैं पाछो जा'र पेड़ रै लटक जावूंला। हुंह !

वेताळ : नाराज क्यूं व्हे है ? अरे, कहाणी तो म्हैं इण वास्तै सुणावूं के टाइम सोरो पास व्हे जावै।

त्रिविक्रम : टाइम पास करण रै वास्तै फगत कहाणियां इज तो नीं है दुनिया में ! और भी तो अलेखूं चीजां है !

वेताळ : तो म्हैं कद मना करूं ? बोल, कीकर टाइम पास करां आपां ?

त्रिविक्रम : बोलण-जोगो रैयो ई कठै के कीं बोल सकूं ! थनै ऊंचावता-ऊंचावता म्हारो कंधो ई सुन्न पड़ग्यो ! सारो सरीर अमीजग्यो। अर भेजो ! उण नै थूं कहाणियां सुण-सुण'र इज खायग्यो।

वेताळ : अैड़ो लागै है के थूं बोत थाकग्यो है।

त्रिविक्रम : बात थाकण री नीं है। अेक ई अेक काम में लागण री है। अबै देख, नित थनै पेड़ सूं उतारूं। कंधा माथै धर नै रवाना व्हूं। अर थूं कहाणी छेड़ै। पछै थूं सवाल पूछै। म्है जवाब देवूं। अर थूं है के फट्ट लपक नै लटक जावै पाछो पेड़ रै। सैंकड़ूं बरस व्हेग्या है इणी रासै नै !

वेताळ : यूं तो यार, 'बोर' ई नीं 'महा-बोर' व्हेग्यो है !

त्रिविक्रम : व्हेगा जैड़ी इज वात है। म्हैं ई क्यूं, म्हारी जागा जे म्हारी भूत भी व्हेतो, तौ उण री भी आ इज हालत व्हेती।

वेताळ : (थोड़ौ मुळकतौ थकौ) कांई कैयौ ? थारै भूत री भी ?

त्रिविक्रम : हां, म्हारै भूत री भी। थूं सायत् वा कहाणी कोनीं सुणी है ?

वेताळ : कुण-सी कहाणी ?

त्रिविक्रम : अेक भूत री कहाणी। बापड़ा री''''गळै में आय जा।

वेताळ : (जिग्यासा सूं) कांई कहाणी है वा ? म्हनै ई तौ वता !

त्रिविक्रम : जिंदगी में आज पैली बार थूं काम री वात करी है। बाकी दुनिया में हर कोई वस आप री वात इज सुणावणी चावै। दूजां री सुणणी कोई नीं चावै।

वेताळ : (मोळै सुर में) नीं आ वात तौ नीं है।

त्रिविक्रम : आ अेक हकीकत है प्यारा ! खैर छोड, आपां नै कोई वैस तौ करणी है नीं। कहाणी सुण। थूं ई कांई याद करैला !

वेताळ : म्हैं तौ तय्यार हूं। थूं कैवणी सरू कर।

त्रिविक्रम : अेक समै री वात है। किणी नगर में अेक सेठ रैवतौ हो। सताजोग सूं अेकर अेक भूत उण री पकड़ में आयग्यौ ! वौ भूत अेक सरत माथै उण री गुलामी स्वीकार करी के वौ ठालौ अेक मिनट ई नीं वैठैला। इण वास्तै सेठ नै लगौलग कोई न कोई काम वतावणौ पड़ैला। जिण दिन वौ काम नीं वता सकैला, वौ दिन उण रौ आखरी दिन व्हैला।

वेताळ : पछै ?

त्रिविक्रम : सेठ तौ वौत राजी व्हियौ। सोचियौ—अठै तौ अेक काम पूरौ नीं व्है जितै हजार काम याद आवै। दुनिया में कोई कामां री कमी है ! पण वौ भूत ई कोई कम माया नीं हौ। सेठ नै वतावण में भलां ई जेज लाग जावती पण भूत नै करण में नीं लागती। दुनिया रा कठण सूं कठण काम ई सूंप'र देख लिया। आ देख'र सेठ रा तौ होस उडग्या।

वेताळ : (उतावळी-सौ) आगै कांई व्हियौ ?

त्रिविक्रम : उणी बगत सेठ रौ एक वाळ-गोठियौ वठै आयग्यौ। वौ जद सेठ रा भूंडा हवाल व्हियोड़ा देखिया तौ कारण पूछण लागौ। सेठ मांड'र सगळी वात वताई। तद वौ सेठ नै अेक उपाव वतायौ। जितैक नै तौ भूत देव आवता इज बाजिया—काम ! काम ! काम ! और कीं काम वता सेठ !

वेताल : तद सेठ कांई काम वतायौ ?



त्रिविक्रम : तद सेठ उण भूत नै सामो नाळ कानी इसारौ कर'र कैयौ–जद तांई म्हैं कोई दूजौ काम नीं भोळावूं, थूं अै नाळां चढतौ रै, उतरतौ रै; चढतौ रै, उतरतौ रै। भूत तौ झट लागौ आप रै काम माथै। पण थोड़ी ई देर में उण री हालत खस्ता व्हेण लागी। सिझ्या तांई तौ वौ सेठ रै पगां में आय पड़ियौ। जांणै ? वौ कांई वोल्यौ ?

वेताळ : कांई वौल्यौ ?

त्रिविक्रम : रोवणवाळौ व्हे'र बोल्यौ–वापजी ! वगसौ। औ काम करण रौ म्हनै मत कैवौ। इण विच्चै तौ म्हनै खतम इज कर दौ। अैड़ां भूंडी व्ही वापड़ा में ! अवै थूंई बोल, जुगां सूं थनै ऊंचावतां-ऊंचावतां अर थारौ घासौ पीवतां-पीवतां म्हारी कांई गत व्ही व्हैला। कदेई मैसूस करी !

वेताळ : (ठंडी सांस ले'र) ठीक ई कैवै थूं त्रिविक्रम ! पण म्हैं कांई करूं ? म्हारी भी तौ मजबूरी है ! अर थूं भी कांई करै ? थारी भी तौ मजबूरी है !

त्रिविक्रम : इण रौ छेहड़ौ कद आ' ई ?

वेताळ : जद तांई आ मानव जाति है, तद तांई नित कहाणियां वणती रैवैला, सवाल पैदा व्हेता रैवैला। अर मानव ई हमेस वां रा जवाब देवतौ रैवैला। औ ढाळौ तौ यूं इज चालतौ रै' ई।

त्रिविक्रम : समझग्यौ।

वेताळ : (थोड़ी ताळ सूं) त्रिविक्रम ! थोड़ी विसाई खाय लां।

त्रिविक्रम : आज सूरज कठी नै सूं ऊगियौ है प्यारा ? आज लग कदेई अैड़ी वात नीं व्ही। पछै आज आ अणहोणी कीकर ?

वेताळ : (गैरी सांस ले'र) त्रिविक्रम ! थूं तौ थारौ रोवणौ हो जिकौ रोय लियौ। पण थूं आ नीं सोच सकियौ के सैकडूं वरसां सूं कंधा माथै ऊंच्यां-ऊंच्यां म्हारी कांई हालत व्ही व्हैला। आदमी हमेस अेकतरफा इज सोचै।

त्रिविक्रम : वाकेई ! आ तौ म्हैं सोच ई नीं सकियौ !

वेताळ : इणीज वास्तै तौ कैवूं के आदमी हमेस..........

[त्रिविक्रम झट वेताळ नै हेटै उतारै। दोनूं ई चोखी-सी जागा देख'र विसाई खावण नै वैठ जावै।]

वेताळ : हां, तौ आपां री टाइम पास करण री वात चल रैयी ही। वोल, अवै टाइम कीकर पास करां ?

त्रिविक्रम : यूं तौ दुनिया में टाइम किणी रै भी कनै नीं है। पण लोग फेर भी टाइम पास करै। है नीं इचरज री वात ?

वेताळ : हां, वाकेई इचरज री वात है। पण लोग टाइम पास करै कीकर ?

त्रिविक्रम : टाइम लोग केई तरा सूं पास करै। जियां-तास, सतरंज, कैरम इत्याद खेल'र। जासूसी उपन्यास, सत्य कथावां अर घटिया साहित्य पढ'र। क्लबां अर बारां में जा'र। नित नवी-नवी फिलमां देख'र। अठी वठी री सड़कां नाप'र चाय री होटलां में बैठर'। गप्पां मार'र। चौरस्ता माथै ऊभा रौनकां निरख-निरख'र। और कीं नीं तौ थारी-म्हारी कर'र। अबै थनै कठै तांई गिणावूं !

वेताळ : समझग्यौ। म्हैं सब समझग्यौ।

त्रिविक्रम : अफसोस इण बात रौ है के आपां कनै इण टाइप रौ कोई साधन नीं है टाइम पास करण रौ। अर व्है भी कीकर ? रस्तौ इज अैड़ौ चुणियौ !

[थोड़ी ताळ दोनूं ई चुपचाप बैठा रैवै। सेवट वेताळ मून तोड़ै।]

वेताळ : त्रिविक्रम !

त्रिविक्रम : (चुप)।

वेताळ : त्रिविक्रम !!

त्रिविक्रम : कांई है ?

वेताळ : लागै के आज थारौ बात तक करण रौ मूड नीं है।

त्रिविक्रम : कांई बात करूं ?

वेताळ : (चुप)।

त्रिविक्रम : चुप क्यूं व्हेग्यौ ? कीं कैवतौ हौ नीं ?

वेताळ : (चुप)।

त्रिविक्रम : कुण-सी कहाणी सुणावतौ हौ ?

वेताळ : कहाणी सुणैला !

त्रिविक्रम : हां, और तौ रस्तौ ई कांई है ?

वेताळ : सुण, आज थनै म्हैं एक अनोखी कहाणी सुणावूं।

त्रिविक्रम : अनोखी ! पछै रोज कैड़ी सुणावतौ हौ ?

वेताळ : म्हारौ मतलब है, आ कहाणी लारली कहाणियां सूं हट'र है। आ 'अे' सरटिफिकेट वाळी कहाणी है।

त्रिविक्रम : 'अे' सरटिफिकेट वाळी ! म्हैं तौ आज तांई आ इज समझतौ हौ के 'अे' सरटिफिकेट फिलमां नै इज मिलिया करै। आ कहाणियां नै 'अे' सरटिफिकेट कद सूं मिलण लागियौ ?

वेताळ : म्हारौ मतलब है, कहाणी सेक्स सूं सम्बन्धित है।

त्रिविक्रम : थूं इत्तौ अेडवांस कीकर व्हेग्यौ प्यारा ?

वेताळ : कहाणी महाभारत री है।



त्रिविक्रम : महाभारत री कहाणी अर 'अे' सरटिफिकेट ! थूं आज कीं पी-पा तौ नीं लियौ ?

वेताळ : अरे, नीं ।

त्रिविक्रम : तौ पछै म्हनै थूं आ ई बताय दै के 'अे' सरटिफिकेट री मतलब कांई व्है ?

वेताळ : 'अे' फोर 'अेडल्ट्स' । मतलब वौ साहित्य या फिलम जिकी के सिरफ जवानां रै वास्तै व्है ।

त्रिविक्रम : जवान कुण-सा ? सीमा माथै लड़ै जिका ?

वेताळ : म्हारौ मतलब फौजी जवानां सूं नीं है । म्हारौ मतलब यंग ब्लड सूं है ।

त्रिविक्रम : हूं । इंगलिस तौ थारी चोखी दीसै । लागै है के थूं 'इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' करियौ है । पण बेटा ! आज रै जमानै नै थूं समझ नीं सकियौ है ।

वेताळ : वौ कीकर ?

त्रिविक्रम : आज रौ जमानौ वौ जमानौ है के जिण में टाबर दो-चार आखर बोलणा सीखतां ई महा रोमांटिक गाणां गावण नै लाग जावै । जियां—हम-तुम, इक कमरे में बन्द हों और चाबी खो जाये ।

वेताळ : अरे बाप रे !

त्रिविक्रम : रियल्टी है प्यारा ! उण टैम जवानां नै अैड़ौ लखावै के वै बूढा व्हैयग्या है अर वां नै लकड़ी री जरूरत है । अर बूढा तौ बापड़ा मैसूस करण नै लाग जावै के वै कब्बर में सूता है ।

वेताळ : हद व्हैयगी !

त्रिविक्रम : आगै तौ सुण । आज री छोरियां चालणौ सीखतां ई, कीं समझ आवतां ई वौ फैसन अर वौ मेकअप करै के अबै उण रौ कांई वरणन करूं ! रंभा, उर्वसी अर मेनका नै तौ सपना में ई नसीब नीं व्हियौ व्हे'ई ।

वेताळ : त्रिविक्रम ! आज तौ थूं अजब-अजब बातां सुणा रैयौ है !

त्रिविक्रम : औ तौ फगत ट्रेलर है म्हारा प्यारा ! फगत ट्रेलर ! हां, तौ आगै सुण । बूढा डोकरियां री तौ अबै कैवूं ई कांई । वै तौ असली देसी घी खायोड़ा है । जवानां नै ई लारै राखै । वां सूं कुण बराबरी कर सकै ? वै तौ सदाबहार है सदाबहार !

वेताळ : बस कर त्रिविक्रम ! अबै बस कर ।

त्रिविक्रम : यूं इज कीकर बस कर दूं ? म्हैं तौ थनै 'अे' रौ मतलब समझा रैयौ हूं । गैला ! आज रै जमानै में 'अे' फोर 'ऑल' व्हैयग्यौ है 'ऑल' ! समझ में आई ?

वेताळ : 'अे' फोर 'ऑल' !

✣✣

त्रिविक्रम : हां, 'अे' फोर 'ऑल'। अच्छा, तौ थूं पैली आ बता, कदेई 'अे' सरटिफिकेट वालौ साहित्य पढियौ है ?

वेताळ : मतलब ?

त्रिविक्रम : मतलब औ के जियां—आंदोलन, आधी रात, आजाद-लोक, अंगड़ाई....

वेताळ : नीं तौ।

त्रिविक्रम : सत्यकथा, सच्ची कथायें, सच्ची कहानियां, सच्चे सेक्स अपराध....

वेताळ : नीं।

त्रिविक्रम : कामलोक, रोमांटिक दुनिया, इन्द्रसभा....

वेताळ : नीं।

त्रिविक्रम : नर-नारी, स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी....

वेताळ : नीं।

त्रिविक्रम : हॉट वेव, गे बॉय, सेक्स लाइफ, गोल्डन नाइट....

वेताळ : अै भी नीं।

त्रिविक्रम : तौ पछै कांई पढियौ ? कॉन्फिडेन्टल अेडवाइजर ?

वेताळ : थूं नीं जांणै कैड़ी-कैड़ी किताबां री बात कर रैयौ है !

त्रिविक्रम : किताबां री बात तौ अबै क'रूं। अै तौ फगत पत्रिकावां है।

वेताळ : नाम सूं तौ बौत घटिया लागै है अै।

त्रिविक्रम : घटिया जरूर है पण हद सूं ज्यादा नीं। हद सूं ज्यादा घटिया साहित्य तौ और इज है। उण रै बारै में जद थूं सुणैला तौ थारा होस इज उड जावैला। हां, तौ म्हैं आ कै रैयौ हो के आजकल औ साहित्य सबसूं ज्यादा पढीजै अर बौत ई चाव सूं पढीजै।

वेताळ : बाप रे बाप ! अैड़ौ जमानौ आयग्यौ ?

त्रिविक्रम : हाल तौ बाप इज याद आयौ है। थोड़ी देर सूं पीढियां'र पीढियां याद आवैला।

वेताळ : त्रिविक्रम !

त्रिविक्रम : हकीकत है प्यारा ! औ साहित्य आजकल बौत चालै। टाबर, बूढा, जवान, लुगायां, छोरियां, अठै तांई के इसकूल रा मास्टर अर मास्टरनियां भी इण नै पढै।

वेताळ : कांई कैयौ ? इसकूल रा मास्टर अर मास्टरनियां भी ?

त्रिविक्रम : ऑफ कोर्स, मास्टर अर मास्टरनियां भी। (ऊभौ व्हे'र दरसकां कानी) बच्चो ! दसवां पाठ खोलकर चुपचाप पढो। (वेताळ कानी मुड'र) अर जांणै ? पछै

कांई व्है ! अठी नै छात्र-छात्रावां कोर्स री किताब में नित नवी-नवी किताबां घाल'र पढै अर वठी नै मास्टरजी या मास्टरनीजी हाजरी रा रजिस्टर में।

वेताळ : तद तौ देस रौ भविस नीं जांणै कांई व्हैला ! (ऊभौ व्है जावै)।

त्रिविक्रम : ठीक ई व्हैला वीरा ! थूं इत्ती चिंता क्यूं करै ?

वेताळ : चिन्ता री तौ वात है ई त्रिविक्रम ! इण सूं तौ समाज रौ पतन अर धरम रौ लोप व्हे जावैला।

[दोनूं ई मंच माथै डावै सूं जीवणै अर जीवणै सूं डावै चक्कर काटण लागै।]

वेताळ : इत्तौ हळकौ साहित्य !

त्रिविक्रम : (रुक'र) नीं, आ वात नीं है। भारी साहित्य भी है।

वेताळ : (नजीक आवतौ थकौ) भारी साहित्य ?

त्रिविक्रम : हां, भारी साहित्य। वौत ई विस्फोटक हैं वौ। अे रेज टु लिव, वन ऑव दि हाउस, दि मैन विद दि गोल्डेन आर्म, रेडबुक, फियर ऑव फ्लाइंग, मोर जॉय, फॉर लव ऑर मनी'''। अवै कठै तांई गिणावूं थनै !

वेताळ : थारी वातां सुण-सुण नै तौ म्हनै पसीनौ आ रैयौ है।

त्रिविक्रम : रूमाल राख्या कर जेब में। अैड़ा मौका माथै वौत काम आवै।

वेताळ : तौ स्टैन्डर्ड साहित्य कोई नींपढै ?

त्रिविक्रम : आ कुण कैयी ? लोग स्टैन्डर्ड साहित्य भी पढै। उपन्यास इत्याद। सायत् थूं ई पढिया व्है। कहाणी-किस्सा सूं थनै वौत लगाव है नीं !

वेताळ : उपन्यास ?

त्रिविक्रम : हां, उपन्यास। नाना, यामा दि पिट, लेडी चेटर्लीज लवर, लौलिता, मैडम बॉवारी, वुमैन फ्रॉम रोम, रेनबो.......

वेताळ : नीं-नीं। अेक भी कोनीं पढियौ।

त्रिविक्रम : यानी के औ स्टैन्डर्ड साहित्य भी नीं पढियौ ! पछै जिन्दगी भर थूं करतौ कांई रैयौ ?

वेताळ : थूं तौ यार, आज हाथ धो नै इज लारै पड़ग्यौ !

त्रिविक्रम : थोड़ी देर सूं कैवैला, सिनान कर नै लारै पड़ग्यौ।

वेताळ : दूजी कीं ढंग री वात नीं कर सकै थूं ?

त्रिविक्रम : ढंग री वात ! अच्छा तौ फिलमां देखी ? गुप्तज्ञान, स्त्री-पुरुष, कामशास्त्र ?

[क्रमसः]



सिरोली सांयत

चन्द्र प्रकास देवल

•

छपनां रा काळ मांय
रूखां रा छोडा खाय
गोवर सूं दाणां बीण
दिन तोड़तौ
म्हारा गांव
कांई इण सारूं जीवतौ रह्यौ थूं
क' रासण कारट मांय
थारौ नांव लिखीजजा
अर
भूगोल रा किणी नकसा मांय
थूं मिण्डी वण दरजीजजा

चमोतरा रा पिलेग सूं
कांई इण खातर लड्यौ
क' वां दिनां खाटली सारूं
च्यार आदमी नीं मिलता
अर आज लोकाचार'र सिडी तोकण नै
मिनखां री मोकळाई व्हे जा

✣✣

वा किसी हूंस ही
किसी होयै री हुरड़ाई सूं जीवतौ है
अजतांई
कांई ओ देखण नै
क' खास लोगां रै घरै
अजतांई
नायणां धोवती रै पोतड़ा
क' डावड़ियां उजाळती रै
अंठवाड़ा वरतण-बासण
क' वै लोग तोकता रैवै
माथा माथै मेलौ
क' भीलां रा वाड़ा में जलमतांई
साथै बंधजा हाळिपा रौ काम
क' थारी उली'र पैली भागळां व्हे जा
वियतनांव
पडूत्तर दै—
गुमसुम ऊभण सूं काम नीं चालै
कांई इण भवीस रै कामण
गूंथी थूं सोनल-सुपनां री लड़ां
अर लड़ियौ
दुसमी अवखायां सूं
नीं............नीं............नीं............
थनै तौ फगत लादणौ हौ यो वोझ
म्हारै थाकल खांधै
तौ ले देख
म्हैं अजतांई फिरूं हूं इण नै तोक्यां
ऊजड़ पगडांडी रा अळूझाड़ में
ओ सोचतौ
क' कित्ता सोरा व्हे जाता
थूं अर म्हैं
ज्यो थूं छपनां में नीं तौ चमोतरा में
मर जातौ

नीं रखेळतौ म्हैं थारौ दाळीदर
इत्ता जतन सूं
नीं पाळतौ म्हारै जीवा सारूं
अेक मीठौ भरम



माथा सूं काढ कळवळता सवाल
हर अेक सवाल रे साम्हीं
नचीतौ होय भिटक देवतौ गाभा
अर दिखाय देवतौ नागौ डील
औ देखौ मिनखां
म्हारै साथै कोनी—
कोई पळकती संस्क्रति
म्हैं निसंस्कारू जलमियौ हूं
इण सून्याड़ रा गरभ सूं
अर अेकलौ ऊभौ हूं
छळछन्दां रा गोरखधंधा सूं अळगौ
भूत-भवीस री कार सूं वारै
वरतमान री वळवळती छाती माथै
भलां ई डसजा अंधारौ
इण जमीं रा च्यारूं खूंट
म्हैं म्हारी ओळखाण
बळती राख सकूं
पांगळा भूगोल–इतियास री नाज री
औलाद कोनी
म्हैं इण अंधारा री रग–रग सूं वाकिव
इण री पूग सूं वारै राख सकूं
म्हैं म्हारा'र सगळा म्हारै जैड़ा रै
जीवता रैवा री हूंस रा संस्कार-विहूणा
गीत
क' ज्यां मांय जीवै
सवदां परवारा अरथ
वां अरथां नै नीं लील सकै अंधारौ
नीं काट सकै नंदी रौ घैघाट
नीं अलोप सकै डूंजां रौ कटाव
नीं वाळ सकै जंगळ–दर–जंगळ
पसरती लाय
नीं उडाय सकै वां अरथां रा रंग
सूरज री पळापळ किरणां

पण सुण
या म्हारी सवसूं लांठी अबखाई

अां मांरगा
क' म्हैं थारी निरभागी कूंख सूं जलम लेय
थांरी ठाडी बेकळू रेत में मोटौ व्हियौ
अर वा ठाडोळाई
वापरगी म्हारै रूं-रूं मांय

नीतर करणाकलौ
छिटकाय खांधा माथलौ बोझ
व्हे जातौ थारा सूं अळगौ
अर गढ लेवतौ अेक नूंवी
अबोट अोळखाण
जिण मांय नीं व्हेतौ जात-पांत रौ
भरमजाळ
आदमी नीं अोळखीजतौ उण रै रंग सूं
नीं पूजीजतौ आदमी उण री औकात लारै
नीं व्हेता किणी ई खूंजा में
धरम रा नाग
नीं व्हेता न्यारा-न्यारा
टटपूंजिया ईसकू ईसवर
आदमी फगत आदमी व्हेतौ
अर अोळखीजतौ

अौ आदमी रै आदमी नीं व्हेण रौ दरद
म्हनै रैय-रैय दमजाळै
कठैई अेकण ठौड़ नीं ढबण दै
म्हारा घण हेताळू, रूड़ा दरद
म्हारा गांव
नीं थनै गाड सकूं, नीं बाळ सकूं
नीं हेज सकूं, नीं पाळ सकूं
ज्यूं-ज्यूं उतरूं ऊंडौ
थारै मांय
फगत थारी जूनी जड़ां रै तांतां
अळूझूं
नीं लाधै मज्ज गोड री असली जड़
नीं लाधै इण अणूता बोझाळू
काळ-खण्ड रौ टिकाऊ थम्ब



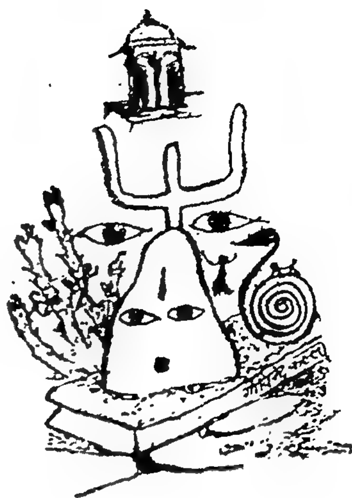
क' जिग माथै चोट कर सकूं
    तीखी तच्च कुआड़ी री
फगत दियावळी होय
    आपणां लट्टूरिया ताणूं
अर अेक माथै अेक आपघाती घाव
                                        खाऊं
निसासां न्हाकतौ निरखूं आपणी मौत
पण अजतांई अणखूट वगत रौ बायरौ
म्हारौ अधवावळौ डील उडीकै
उडीकै थारी मुड़दा ल्हास
म्हारै खांधा रौ ठाणौ
वेताळ-पच्चीसी री छेहली माठ लग
अर करचा जावै सवालां माथै सवाल
क' किणी वगत रै पड़िलै
अेक नगरी ही फलाणै देस री
म्हनै कीं म्यानौ लाधै
फगत थूं म्हारा गांव
पूरै दमखम सूं जीवतौ व्हेजा
                                म्हारै च्यारूं म्हेर
म्हैं दरजै लाचार, खीज-वसू
अेकण फेर सोचण लागूं
किणी नूंवी अटकल री ईजाद माथै
थारी-म्हारी सिरोळी सांयत सारूं
पण
फगत अेक अदीठ मून-वंतळ रौ
                                लांबौ सिलसिलौ
थारै म्हारै बिचाळै जलमै.........
                                अर आथमै.........
नित-हरमेस—रोज-रोज

• • •



लड़ाई सूं पली

अरजुणदेव चारण



तेता जुगा सूं कियोड़ा थारा कौल
छिप गिया सेवट फूलरा सूं
म्हारौ बूढौ बाप
आंधी आंख्यां
सौधतौ रैयौ सुगन्ध
भरणी रै वारै

आवण वाळी हर पीढी नै
थूं दियौ थतोवौ
अेक रोटी अर अेक छीण रौ
गाभै री जिम्मेदारी थूं नीं ली
पण हर जीव नै
थूं फगत गाभौ देय सकियौ
किण नै ई आज
किण नै ई कालै
किण नै ई परसूं
रोटी छीण रै हेटै दवियोड़ी पड़ी है

थूं रमतौ रैयौ सरणाटां सूं
जिण रा गवाह
थारी हवेली रा कपाट
अजै तांई बन्द है
अे जूनी हवेली रा वासिन्दा
कदेई तौ नीचै झांक
देख पाणी थारी हदां मांय आय गियौ



मती कर सांग
बोळौ अर आंधौ व्हेण रौ
झांक ? नीचै झांक ।
पाणी वधतौ जा रैयौ है
सुण इण सुर नै
तोड़ सरणाटौ
वापरग्यौ जिकौ
थारै असवाड़ै-पसवाड़ै

तीस करोड़ देवी–देवतावां आगै
जुड़ता म्हारा हाथ
अर निवतौ म्हारौ माथौ
खटाव सूं बारै व्हेगौ
खोल कोई बारी !
बता
पूजूं किण अेक नै ?
नीं भुगतणी चावूं
म्हैं जूण म्हारै बाप री

पूछूं अेक सवाल
क' हर गळी रौ अन्त
अर हर घर री सिरै खिड़की रौ मूंडौ
क्यूं व्हे सरू थारै सूं ?
समझणी चावूं म्हैं इण गणित नै
क' जद पांच रा दस भाग व्हे सकै
तौ अलेखूं कमरां वाळी आ हवेली
फगत थारी कीकर ?
ऊंचायां औ अदीठ भार
थारौ अर थारी हवेली रौ
फिरां कद तांई
इण मगरै सूं उण मगरै
थूं कद आवै बारै
पाछौ कद बड़ जावै
घुसकाळी मांय
बावड़ ई नीं लागै



थारी पीढियां री लांठाई अर अणूंताई
म्हारी पीढियां री उणीज रोटी नैं
उणीज छीण हेटै
दाव राखी है
जिण रै ओळै-दोळै घूमै डकरेल कुत्ता
नीं भुसै
नीं पकड़ै पींडी
जीभ काढियोड़ा फगत साम्ही देखै

म्हारी पीढियां री पीढियां
धोक देय पाछी आयगी
छीण देवता वणगी
अर थारा कुत्ता पुजारी

मान म्हारा रामा-सामा
इण मिस आय ऊभ वारै
वुलाव कुत्ता नै नैड़ा
घाल दै सांकळ गळै मांय

म्हारै हाथां ऊगगी हळवाणियां
ऊभी अर तीखी
तोड़ देसी छीण नै
अर फेंक देसी अळगी........

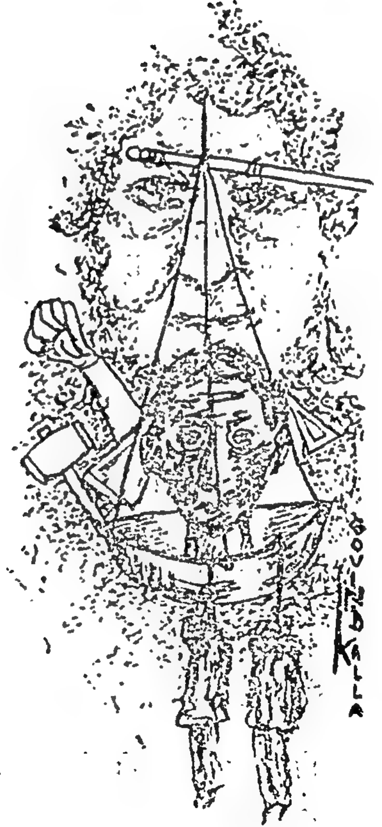


उदाई

नवीन माहिमवाळ

•

..........कुण करै ?
कठै करै ??
कीकर करै न्याव ???
(?)
न्याव अेक मोटौ थपथपौ !
मकड़ी रौ जाळ,
आप रौ आप इज काळ।
किण रौ व्हियौ ?
कठै व्हियौ ??
(?)
(अर) कदै व्हियौ न्याव ?
अठै धोळौ हाथी
बाजै अैरावत (पण)
ओ हाथी—
पुतियोड़ौ
काळा-धोळा गाबा में लिपटियोड़ौ
कुड़सी माथै बैठौ—
बंधियोड़ौ ऊंधा-पाधरा जतनां सूं
ओ लागग्यौ न्याव रै
व्है नै उदाई।
ओ पूरौ सिलसिलौ
जठै वकील—
विचारै गरीब नै घाल देवै गंगाजी
जीवतां थकां
अेक कसाई—
अठै मरणियौ खुद देवै फीस
आप रै मरण री।
कैवै लो आवौ—
म्हनै मारौ







आंखियां भूखै री

नाज़िम हिक़मत

•

(१)

कोनी अेक
कोनी दो
कोनी सौ-अेक
कोनी सिरफ हजार इज
सिकार

पण
तीन करोड़
कूटियोड़ा काळ रा

है आपणां वै
आपां—वांरा
ज्यूं समदर रै लैरां
लैरां रै समदर

कोनी अेक, कोनी दो, कोनी सौ-अेक
पण, तीन करोड़
तीन करोड़
कूटियोड़ा काळ रा



(२)

ऊभोड़ा ओळी वरण
कोनी है अै मड़द
कोनी है लुगायां अै
कोनी छोरियां, कोनी छोरा
परण
अंटीजियोड़ा रूंखड़ा
कोनी मड़द
कोनी लुगायां
कोनी छोरा, कोनी छोरियां
परण घूमन्तू लूंदा-डगळ
निपजाऊ माटी रा
कोइक
भींचै है गोडां नै
भींचै है फेरूं
भींचै है फेरूं
पसरयोड़ी तूंद
पिचकै नैं
पसरै है
दूजोड़ौ सिरफ अेक
चमड़ै री खोलड़ है
दीसै है सांस,
सिरफ नैण-जोतां में

(३)

खुड़ताळां,
पगथळियां छोल रयी
बावळा नैणां सूं
रगत झरै हिवड़ै रौ
अणंत पीड़
घूरै है घूरै है
पीड़ आंपणी भी तौ
अणंत है उवां दांई
परण
कुण डिगा सकै निस्चै



या भरौसै नै
काठा कर लिया म्हां, हिया
वजर छातियां म्हारी
ग्रासामुखी वां
तीन क्रोड नैणां नै
सेवौ संताप री
सम्पत सूं ग्रापां री

(४)

तूं वो
तूं सांभळ !
मत समझ कीं भी
तूं जांण म्हनै चोजाळौ
काळजौ उथेळण नै
वावळौ उतावळौ
जे दूजां ज्यूं
तू भी है हिणपुणियौ
ग्रर सोचै वकूं सिरफ
वायड़ौ हुयोड़ौ म्हैं
तद देख
झांक म्हारै नैणां में
झांक फेर
नैण अेक माणस रा
पीड़ सूं व्हियोड़ा
ग्रधगावळा

उल्थौ-सत्येन जोशी



थूं जीवण मुजब तौ वण

सुरजीत पतवार

•

थारी नांव राखैला
थारी छाती माथै
    भालौ के तगमौ रख देवैला
थूं जीवण मुजब तौ वण
थारी हत्या कर देवैला

म्हैं बूढी जादूगरणी हूं
लांठा मंत्र-टोटका जांणू
म्हैं जिण री छाती तगमा सजाया हा
वा छाती घड़ी वण'र रैयगी
म्हैं जिण रै गळै हार पैरायौ हूं
वौ भाटौ वण'र रैयगौ

म्हैं जिका हाथां नै खुद रै हाथां थाम्यां हा
वे ई रूंखड़ा री डाळियां वण'र रैयगा
म्हैं जिण नै खुद रौ बेटौ जांण्यौ
वौ खुद री मां रौ नांव भूल्यौ है

छातियां री घणी भांतां व्है है
कोई छाती तगमा सूं ठंडी व्हे जाया करै
कोई छाती नीवाया दूध रै
    गीतां सागै ई ठंडी व्हे जाया करै



अर जकी वाकी रैय जावै
वां खातिर म्हारै हाथां में
सिरफ एक भालौ बच्योड़ौ रैवै

थूं चिंता मत कर
थारी छाती किण भांत री है
भांप लेवांला
म्हां थारी उमर तै कर देवांला
अर थारौ नांव ई राखांला
थारी छाती माथै ई भालौ राखांला
थूं जीवण मुजब तौ बण
थारी भी हत्या कर देवांला

उल्थौ–आत्माराम



गजल

□ लालदास 'राकेस'

म्हैं जाणूं के म्हारौ राम
आज अजाण, जाणै राम
मिनखाई री रीत बदळगी
समझै हक नै नेक-हराम
चावौ नहीं आप रै कारण
नांव बापड़ौ खुद बदनाम
मैनत कियां चुणै कद बंगला
भरौ हाजरी करौ सिलाम
निवळाई है हमैं काम री
लीडर बण्या, पूगग्या धाम
'लाल' गजल में आंच अणूती
डोफा रै दूणौ दै डाम



गीत

□ चो० श्रार० प्रजापति

कद तांई दुख नै पीणौ है ?
कांई श्रौ जीणौ—जीणौ है ??

भींज्योड़ी वा घास वळै ज्यूं
बूढी आंख्यां रा कोयां में
मूवा सपना री बीत्योड़ी राख झड़ै ज्यूं
घुटतां-घुटतां धूंवौ करता
कांई यूं वळता जीणौ है
पग-पग माथै चुभती सूळां
लोही-लोही ही व्हेणौ है,

कद तांई दुख नै पीणौ है ?
कांई श्रौ जीणौ—जीणौ है ??

चौरायां पर दिन-धौळा ही
विखरयोड़ी सून्याड़ पड़ी है
छिपियोड़ा वे घात लगायां
अंधारा रा अवखा डाकी—
कांई थ्हांरी निजर पड़ी है ?
रोतां-रोतां पिसतां-लुटतां
कद तांई यूं ही झुरणौ है ?

कद तांई दुख नै पीणौ है ?
कांई औ जीणौ—जीणौ है ??

सांमी ऊभोड़ौ वो सूरज
अवै थ्हांनै हेलौ देवै
झांझरकै री इण वेळा में
भटक्योड़ा नै गैलौ देवै
दुख दरदां रा कंट-कंटीला
मारग फूलां नै चुणनौ है
घुटतां-घुटतां धूंवा में ही
पाछा सपनां नै बुणनौ है

कद तांई दुख नै पीणौ है ?
कांई श्रौ जीणौ—जीणौ है ??



गीत

□ आईदानसिंह भाटी

जगत रा देख उजव दरसाव
पड़्या हिवड़ै में ऊंडा घाव

साथ जीवण रौ सुण नै कौल
छुनक छुन स्रिस्टी जद नाची;
समंदर रौ हिवड़ौ हुळसाय
हुळकतै नैण नीर वांची ।

डूवग्या मन रा सैंग उमाव
अपूठी चाली जीवण नाव ।

निकळता रसना सूं वे वोल,
विकाणौ अपणापौ अणमोल;
जगत रा भारी, हळका भार
तुलै कद नेह हियै रै तोल ।

आंकड़ां में उळझ्योड़ौ भाव
चढाई सूं पैला उतराव ।

गमायौ जीवण रौ सैं कोड,
जगत री कर नै होडाहोड
अलेखूं आंगणियां में जोय
मानतापूरण लीकां छोड ।

तण्योड़ौ क्यूं लागै पोमाव
आज क्यूं ऊमण-दूमण चाव ?

• • •



गजल

□ श्यामसुन्दर भारती

झूठौ झांसौ, फेर किता दिन
रुळपटरासौ, फेर किता दिन

मे'ल हवारा ने वातां रौ
चट-चौमासौ, फेर किता दिन

भोळी-भाळी जनता नै औ—
मीठौ-घासौ फेर किता दिन

किण वेळा कंई हुय जावण रौ
मन में सांसौ, फेर किता दिन

भूख, गरीबी अर विपदा रौ
इण घर वासौ, फेर किता दिन

सगळा नै यूं देता रौ'ला
कूड़ दिळासौ, फेर किता दिन

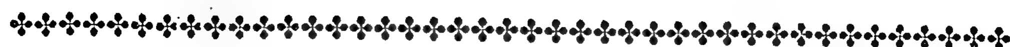
इण आंगणियै राजनीत रौ—
खेल-तमासौ, फेर किता दिन

• • •



जागती जोत में छपण सारू रचनावां
सीधी संपादक कनै भिजवावौ ।

सत्येन जोशी
जोशियां री खटकल
जोधपुर-१० (राजस्थान)



ओळख सूं आथड़तौ : म्हैं

श्याम कृष्ण व्यास

म्हैं आ परतख जांणू के इण मसीनी जुग में जद के जीवण री गत पूरै वेग सूं चाल रैयी है, खुद री गमियोड़ी ओळख नै जोवण रौ गोरखधंधौ साव निकमौ लाग सकै। साथै ई, अेकलखुरै जीवण रा भोग भुगत नै कुण समाज रै बंधणा रा फोड़ा भुगतण सारू दीखती आंखियां वेरा में पड़णी चावैला ? पण कांई इण सांच सूं आंखियां मींच'र नचीतौ व्हियौ जा सकै के म्हैं कोई समाज रौ सीरी कोनी ? म्हैं जठै ऊभौ हूं, वठै पगां हेटै किणी जमीन रौ टुकड़ौ ई कोनी ! ओळै-दोळै भरम अर विगसाव रौ वतूळियौ कोनी ! जे है तौ क्यूं रैं-रैं नै चींस चालै मांय-ई-मांय अर कैवै—म्हैं हूं ! म्हैं हूं !

अौ म्हैं कुण ? कांई हाड-मांस रौ पूतळौ हूं म्है ? कांई आतमबोध री आ अवखाई सिरफ म्हारी इज है ? कांई म्हैं जिण रूप में ओळखीजूं वौ म्हारौ पूरौ परिचै है ? सारी दुनियां में घूम आवण रौ पासपोरट है ? नहीं। जद ? म्हैं म्हैं हूं। म्हैं स्वामी हूं। म्हैं सेवक हूं। म्हैं बाप हूं। म्हैं बेटौ हूं। म्है भाई हूं। म्हैं बेली हूं। म्हैं सैं कीं हूं। पण कीं नीं हूं। पण हूं। तौ पछै कुण हूं ? सपकण अर रिस्तां री डोरियां कित्ती ओछी है ! समझूं हूं। म्हारौ देस, म्हारी जात, म्हारौ ठिकाणौ, म्हारी भासा, सैं कीं तौ है। हां, ओळखाण सारू म्हैं अै इज माळीपन्ना चेपियोड़ौ घूमूं। तौ भी क्यूं आ लागै के मिनखां में चावौ व्हियोड़ौ म्हारौ नांव म्हारै सूं इज असेंधौ है। म्हैं म्हारी असल ओळख सूं कठै भटकग्यौ हूं !

गमियोड़ा पइसा सोधतां-सोधतां टाबर रेत रा ढिगळा कर लेवै। कुचर-कुचर नै काढण री कोसीस करै। हां, चिड़ियां तौ वां में सूं भी आप रौ चुग्गौ जोय'र फर-फर करती उड जावै। पण म्हैं इण धरती रौ आसरौ छोड नै उडूं तौ कठै ? किसी ठौड़, किसै ठिकाणै ? अर औ मोह छूटै भी तौ कोनी ! पछै उगूण उगूण है ने आथूण आथूण।

जद अन्तस री पीड़ बारै आवण सारू कुळबुळीजै तौ वाणी सबद मांगै अर सबद मांगै भासा। अेक अैड़ी सबळ भासा जिकी उण पीड़ री उणियारो ओळख सकै। तौ कांई म्हारै कनै सबद कोनी ? के सबदां नै अंवेर-अंगेज नै वां में अरथ भरण वाळी सबळ भासा कोनी ? है ! जरूर है। पण म्हारी भासा कठै भणीजै ? कठै समझीजै ? कठै गुणीजै ? तौ भी म्हारी ओळख री ओळियां में अरथ तौ म्हारी भासा इज भर सकै। भासा म्हारी मां है। जिकी भासा म्हारी मां म्हनै पाळतां-पोसतां सिखाई, उण भासा सूं कोई बराबरी कर सकै। कांई व्हेती, गाळियां काढती, हरखित व्हेती, आसीसां देवती, जिकी भी भावनावां वा परगट करती, वां भावनावां री अभिव्यक्ति कांई दूजी भासा में की जा सकै ? नहीं, वै सारी भावनावां अर म्हारा सारा अणभव म्हैं म्हारी इज भासा में म्हारै इज सबदां में असरदार रूप में व्यक्त कर सकूं। अर वै दूजी भासावां, जिकी के म्हैं इण भासा सूं नुगराई कर नै स्कूलां में, कालेजां में भण'र आज नौकरी-रुजगार में खुद री मददगार बणाय राखी हूं, म्हारै पेट री जरूरतां पूरी करण जोगी जरूर है। पण पेट री भूख रै अलावा दूजी तरा री भूख भी म्हनै लागै। जे आ भूख नीं व्हेती तौ सायत् संसार में साहित्य अर कलावां री कोई महतव नीं रैवतौ। सांच तौ औ है के जीवण खाली रोटी सूं इज नीं, मीठी अर मोवणी भावनावां सूं भी पोखीजै। आ भावनावां री इज सगती है है जिकी के लोगां नै वां रै समाज सूं, वां री संस्क्रतियां सूं जोड़ै। दुनियादारी रै जंजाळ में अळूझियोड़ौ जीव जद सुस्तावण लागै, तद भावनावां उण नै आप रै समदर में खलोळियां खवाय-खवाय नै उण री थाकेलौ मेटै। वौ हळकौ व्हियां मैसूस करै के आ म्हारी जरूरत है। कांई कारण है के दुनियां रै सैं देसां में, सैं जातां में, सैंगां री भावनावां अेक जैड़ी इज व्है ? जद के सैंगां री भासा अेक कोनी ! संसार भर में प्रेम री भासा अेक इज है इणी वास्तै हजारूं कोसां आगै सूं नीं जांणै कित्ती भासावां सूं अर नीं जांणै कित्ता मारगां सूं रूप अर सिणगार पलटती अै भावनावां हिवड़ै रै साव नैड़ी लागै। जे बदळियोड़ौ रूप इत्तौ असर राखै तौ असली रूप में तौ औरूं ई असर व्हैला। सारी संस्क्रतियां रै जुड़ाव री माध्यम भासा इज तौ है।

म्हारौ औ सोचणौ के म्हैं म्हारी मांयली पीड़ नै सिरफ म्हारी भासा में इज समझा सकूं, बता सकूं तौ सवाल म्हारी भासा री इज ऊठै। म्हारै कनै जे म्हारी भासा नीं, तौ समझौ, म्हारी संस्क्रति, म्हारा संस्कार, म्हारौ अस्तित्व, सैं कीं खतरै में पड़ग्यौ। भासा इज संस्क्रति है अर संस्क्रति सूं ई संस्कार मिळै। म्हैं म्हारी भासा बिना म्हारा संस्कारां नै, म्हारी संस्क्रति नै जीवंत कियां राख सकूं ? आज देस रै खूणै-खूणै री अलग-अलग भासावां है। हर समाज अर हर तबकै री अलग-अलग भासावां है। अर नीं है, तौ वा है म्हारै तबकै री। इणी खामी नै म्हैं भुगतूं हूं। नहीं, म्हैं म्हारै अस्तित्व री खातर सफा सामी दीखतै खतरै नै मोल लेवण नै तय्यार नीं हूं। के म्हारै सूं म्हारी जबान छीन ली जावै अर म्हैं नाजोगौ व्हे ज्यूं अदीठै फळ सूं गाफल चुप बैठौ रैवूं। म्हैं म्हारै अस्तित्व नै मिटावण वाळै हर अन्याव रै खिलाफ लड़णी चावूं। अर लड़ूंला।

हां, आ म्हैं जांणूं के औ खतरौ हाल तांई वां नै नीं है, जिकां नै खुद रै अस्तित्व



रै वास्तै पांच वरस में अेक वार वोट लेवण खातर आवणौ पड़ै। आ गरज म्हनै अर म्हारा साथियां नै है। होडाहोड रै इण जुग में रुजगार वास्तै जूंझण सारू, खुद रै समाज री, खुद री जात री समस्यावां नै आगै धरण सारू, अर सैं लड़ायां लड़ण सारू अेक सस्तर रै रूप में म्हारै जैड़ा सगळा आंथड़ता जीवां नै जरूर है। मंजळ लग पूगण पैला अस्तित्व रै कारण औ संघर्स चालणौ है। अर औ संघर्स म्है अेकलो नीं लड़ सकूं। सगळां नै इण में सीरी व्हैणौ है। औ दरद, आ पीड़, अेक रंग में नीं, सैं रंगां में है। म्हारै मुलक री इतियास नीतर ई जूंझारां रै लिखियोड़ी है। अर जूंझार कोई अेक दो इज नीं है। अलेखूं है। आ पीड़ हर हियै में छिपियोड़ी है। आ म्हैं जांणूं हूं के चिणगी नै फगत हवा लागण री जेज व्है। चेतन व्हियां पछै तो..........



लिखारां सारू

- जागती जोत रचना री मोल करै—
  लिखारै रै नाम री नीं।
- साफ, बाचण जोगी अर सुधार सारू
  जागा छोड'र लिखियोड़ी रचनावां
  माथै पैला विचार क्रियौ जावैला।
- रचना पैला कठैई छपियोड़ी नीं व्है
  पण अैड़ी भी नीं जिकी कठैई छप नीं
  सकी।
- रचना मेलियां पछै छपिया तीन अंकां में सूं
  किणी में आपरी रचना नीं छपी व्है तो
  समझो कै अबै छपण री गुंजायस कोनी।
- बरतणी री सुद्‌ता सारू जागती जोत नै
  सैलंग वांचो।





गुजराती नै गूलर

सोभाग्यसिंह शेखावत

•

जोधपुर रा धणी महाराजा मानसिंघजी ना औलाद काळ करचौ जद जोधपुर रा उमराव अर माजियां अंग्रेजां सूं मिळ नै गुजरात रै ईडर राज रै भाईपै रा अैमदनगर रजवाड़ा रा धणी तखतसिंघजी नै खोळै लिया। अंग्रेज सिरकार तखतसिंघजी रौ खोळौ मानियौ। तखतसिंघजी अधखड़ उमर में जोधपुर री राजगादी माथै बैठा हा। संवत उगणीस सौ चौदह री सुतंतरता री लड़ाई में तखतसिंघजी अंग्रेजां रा हेताळू रैया। पण, महाराजा तखतसिंघजी रा घणखरा-सा उमराव अंग्रेजां रा विरोध रौ बीड़ौ झालियौ। मारवाड रै आऊवा, आसोप, गूलर, आलणियावास, बाजवास इत्याद रा सिरदारां आजादी रा जंग रा आगीवाण हुवा। गूलर रौ धणी मेड़तियौ बिसनसिंघजी इण लड़ाई रौ मेढी हुवौ। लड़ाई सूं पैली जोधपुर रा किला में महाराजा तखतसिंघजी अर गूलर ठाकर बिसनसिंघजी रै थोड़ी सी चुटवड़ भी व्हेगी ही। महाराजा तखतसिंघजी धकै बिसनसिंघजी अंग्रेजां री दावेदारो री भूंडी-भूंडी वातां सुणाई। महाराजा तखतसिंघजी इण पर खीजग्या। तखतसिंघजी रोस में नाराजगी जतावता थका बिसनसिंघजी नै कैयौ—"ठाकरां जाणौ हौ के नीं, मूं गुजराती हूं।"

ठाकर बिसनसिंघजी हाथ जोड़ नै पाछौ कैयौ—"भलां, नवकोट नाथ जांणी कीकर नीं।"

तखतसिंघजी दुवारा फेर रोस दिखाता थका कैयौ—"थां नीं जांणौ, मूं गुजराती हूं।"

गुजराती रौ मतलब, गुजरात रा मिनख आकरा सुभाव रा, बदला री भावना वाळा अर वचन रा गाढा हुवै है।

इण पर ठाकर बिसनसिंघजी नै भी ताव आयग्यौ। झाळ में आय पाछौ कैयौ—धणी गुजराती हैं तौ तावेदार गूलर रौ ठाकर है। गूलर रै रस रा फूंवां धकै गुजराती ऊभी हीज नीं थमै।

गुजराती नीमूनियां रा रोग नै कैवै। गूलर उदुंबर नै कहै। उदुंबर रा रस में भिगोया फूंवां सूं नीमूनियौ जातौ रैवै। आ सुण नै महाराजा तखतसिंघ रै जांणै मूंडै ताळौ लागग्यौ। □



सलवार

•

जहूर खां मेहर

अेक नामी वकील साव में अेकर कुजरवी घणीं हुई। आप वकील साव आज तांई जोधपुर वकालत करै। वात सवा सोळै आना खरी। वकील साव रै मूंडै म्हारै आपरै सुणियोड़ी। सगळा अता-पता अर नांव-धांव गिणावता वकील साव हंसता हंसता वात सुणाई। फलाणै गांव सूं कोस डौडेक री भौं अेक चौधरी री ढाणी। मांझल रात रा अेकर चौधरी री सलवार सायंड रै फोग पड़ी। पेंखड़ी खोल'र कोई चोर वाड़ै में बंधियोड़ी सांढ ले परी गियौ। दिन संवा हा सो थोड़ी ताळ पछै इज चौधरी री आंख खुली अर मूती सारू वाड़ै में गियौ तौ सांढ नीं। गांव में पूग मिनख भेळा करिया अर रातोरात वार चढी। आप चौधरी चौखलै चावौ पागी। खोज खवर करता, भाख फाटां ढीकड़ै गांव री पुळस चौकी जाय पूगा। चौकी आगली नींवड़ी हेटै सांढ झैंकीजियोड़ी ओगाळै अर कुरियौ कनै इज ऊवौ। पड़ताल करियां ठा पड़ी कै सलवार लायौ जकौ वटाऊ घड़ीक पैला चौकी पूगौ अर विसांई सारूं अठै ढवियौ पण अमल री मनवारां में अळूजगौ। सींव में कठैई धकै पड़तौ जद तौ ठोक पींज नै अड्डा कर काढता अर सांढ पाछी परी ले जावता। पण चौकी री तौ गत ई न्यारी। चोर पकड़ण री मारग पड़ियौ जस चौकीवाळा कद छोडै। छिनेक पैला भेळा वैठा अमल री डोडी मनवारां करता हा जिकां इज चोर रा झींटिया झाल'र सागैड़ो हड़वड़ायौ। रपट दरज हुई। सांढ वरामद करीजी। केस कचेड़ी पूगौ। चोर रै ई लारै पखौ भारी सो सैर सूं अेक चावौ वकील कर लाया। हाकम साव सामीं पेस व्हियां डरूं-फरूं व्हियोड़ै चौधरी आपरी वात वताई। कोट-कचेड़ी चढण रौ औ पैलड़ो काम ई पड़ियौ सो चौधरी काठौ हळफळीजियोड़ौ। वकील साव ठाणाळी कै कूड़-मूड़ ई चौधरी उवां री आसामी नै फंदाणी चावै सो घुदा घुदा, सवाल पूछ पूछ ई नै वघनौ कर देणौ। हड़वड़ाट में चौधरी सायंड तौ अेकर ई वोलियौ नीं पण वता दियौ कठै तौ उण री सलवार ही, कीकर ऊनै सलवार री चोरी री ठा पड़ी अर कीकर चौकी



कनै सलवार सागै चोर पकड़ीजियौ। वकील साब रै तौ औळूंवा चढता इज हा, चौधरी बात पूरी करी जित्तै जित्तै तौ फटाक देती ऊबा हूवता धड़ू किया कै वता सलवार खीनखाप री ही, लठ्ठै री ही, साटण री ही के खादी री ही? बापड़ौ चौधरी तौ पैलां ई अधगावळौ हुयोड़ौ हो; कमरी ऊंट ज्यूं धूजतै री जाडी पड़ियोड़ी जिवान उथेलौ ई खायौ नीं। जीव में सायंड रै लांपौ बाळतौ अठै ऊं जिन छूटां मीरणी बोलदी। पण आ कांई व्ही? कचेड़ी में मौजूद हा जका हंसी माथै उतरिया पण उतरिया, सगळा खिल्ल खिल्ल करण ढूका तौ ढबै ई नीं। सेवट हाकम साब हथोड़ौ वजा वजा'र मिनखां री हंसी नीठा ढावी। वकील साब रौ आफरौ अर्ज पूरौ को झड़ियौ हौ नीं अर नीस आपरी कालाई री गत्तू ई गिनार व्हियौ हौ। मिनखां री हसी ढवी ढबी जित्तै तौ पाछा कड़किया कै अरै कूड़ रा काका थनै सल-वार रै गावै री ठा ई कोयनी जद थूं आ तौ कद बताय सकै कै वा धोळी ही के असमानी? मिनख हंसण लागा जित्तै जित्तै तौ वकील साब खाता पड़ता भळै बोल गिया कै गांवेड़ू चौधरी अर सलवार री तुक अंगेई बैठै तौ बैठै ई कीकर? थूं तौ इत्तौ इज बताय दै कै सलवार रै पायचा कित्ता व्है। वकील साब री लारली बात तौ मिनखां री खिलखिलियां में दबगी। मुंछीजी री तौ हंसता हंसता अैड़ी दुरगत व्ही के सेवट चसमौं उतार नै आंखियां सूं आंसू पूंछणा पड़िया। आप चोर अर हाकम साब दुरादुर हंसणियां में भिळगा। कैइयां, हंसतां हंसतां पेट पकड़ लिया अर कित्तांक रै बांईटा पड़ण ढूका। चौधरी तौ बापड़ौ पैलां ई रोवणकाळौ व्हेगौ हौ। हमकै वकील साब ई अधगावळां री गळाई हंसणियां सामी जोवण ढूका। सेवट हाकम साब सगळां री हंसी ज्यूं त्यूं रोकाई अर वकील साब नै कैयौ कै वडै मिनखां हमैं आप कठेई सलवार रै नाड़ै बाबत कीं पूंछ मत लीजौ। भलै मिनखां हमैं गई करौ। बापड़ै चौधरी री गैल छोडौ। सलवार रौ म्यांनौ वा सायंड म्है जिण रै सागै छोटौ बचियौ ई व्है। सो आ बचियै वाळी सायंड री चोरी री वारदात है लठ्ठे-खादी री सुथणी री चोरी री थोड़ी'ज है। वकील साब माथै जाणै पखालां पाणी ढुळ गियौ व्है अर कै जाणै सौ मण री सिल्ला माथै धरीजगी व्है। च्यारूमेर मुळकता मिनख डाकी व्है ज्यूं दीसण लागा। चुळणौ ई भारी पड़गौ। परायै ऊं झब्बाझोळ व्हियोड़ा हिमाळै चढण जैड़ा दोरा कुड़सी तांई पूगा। पछै धकली कारवाई में जाणै वकील साब रै मूंडै में कोई डाट ठोकीजियोड़ौ व्है। चोर नै सजा बोलीजी अर चौधरी सायंड ले'र जीवै जित्तै वकीलां रै पांनै नीं पड़ण री आखड़ियां लेवतौ ढाणी पूगौ।

• • •



लोक संगीत रौ सरूप

गोविन्द कल्ला

•

आपांरै देस भारत में भरतमुनी आपरै नाट्य-सास्तर में गायन, वाद्य अर निरत, यां तीनूं रै ग्यान नै संगीत मानियौ है। भारतीय दरसण अर विग्यान में नाद नै ब्रह्म अर सुर नै ईसवर रौ रूप समझियौ जावै। भारतीय संगीत में सुरां रौ विभाजन स्रुतियां में कियौ गयौ अर अेक-अेक स्रुती रै कंपण सूं, जांणकार लोग आगोतर नै भी जाण लेवता, अैड़ा अलेकूं प्रमाण है। अैड़ी अखूट खिमता वाळै संगीत सारू भरतमुनी कैयौ है यत्किञ्चिद् गीयते लोके तत्सर्वजातिषु स्थितम (अठै जातिषु रौ अरथ सुरां रै समदाय सूं है जकौ जन समदाय सूं निकळै अर जिणनै लोक-संगीत कैयौ गयौ है।) मतलब औ के लोक-संगीत जन समदाय रै हिरदै सूं निकळियोड़ा अलेकूं सुरां री न्यात—अेक पूरी गायकी है। निरत अर वाद्य रौ सांतरौ विधान है। समझदार अर गुणी संगीतकार अैड़ा सुर-समदायां री ओप नै सास्त्रीय बणगत में ढाळ नै राग बणा लिया करै। वीं रौ नाम अर कायदा भी तै करदै जीं सूं दूजा गायक वां रागां नै गा सकै। पण जकौ सुर-समदाय यां आरोह-अवरोह रै नियमां सूं मुगत व्है अर जीं रै गावण री धेय तौ लोकानुरजन व्है पण रूप, गायक रै घराणै मुजब, ओळै-दोळै री घटनावां, छिण छिण रा उमावां, भूगोल अर इतियास रै असर सूं रंगियोड़ी, आपस रै पोमाव अर कुदरत रै दियोड़ै गळै रै मिठास में मतै ई आखरां नै अंगेजै अर गळै सूं रंग बरसावै उण सुर-समदाय नै राग नीं कैयी जा सकै, वा तौ अेक पूरी गायकी व्हिया करै। ठीक इणीं'ज भांत 'मांड' कोई राग नीं व्हेर अेक पूरी गायकी है।

लोकसंगीत रौ दूजौ पख वाद्य रौ है। वाद्य, पांच भांत रा व्हिया करै ज्यां नै रीड वाद्य, फूंक वाद्य, चर्म वाद्य, तार वाद्य, टंकोर अर खड़ वाद्य कैया जा सकै। औ सैंग वाद्य आपां रै अठै मौजूद है। इण सूं अेक पग आगै देवां तद फूंक अर फुंफकारै में भी फरक करणौ पड़ै अर ई फुंफकारै सूं वाजणिया वाद्य सफा नैरा निगै आवै। नड, घुरा-

लियौ, सितारौ, अळगोजौ, पूंगी इत्याद फूंक रै सागै फुफकारै सूं वाजिया करै। नस तरग जैड़ा साज तौ सिसकारा अर ज-झ-अर ज़ रै सैंग रूपां रै जुदा-जुदा वजनां रै झणकारां सूं बाजै।

संगीत रै तीजै खण्ड में निरत भी अठै मूळ रूप सूं चक्कर अर मुद्रावां में मूळ मुद्रा पांचूं आगळियां भेळी करनै पछै नाचण री तरीकौ है, जकौ पंचभूतां सूं वणियोड़ै इण सरीर नै अेकठ करनै आणंद री अनुभूती सूं नाचण री सिक्सा देवै। बाकी रा सैंग तरै रा निरत रै तरीकां में आंगळियां प्रक्रती रै रूप री नकल करै। जदपी अै नकलां प्रतीकां में व्है जकी घणी चोखी लागै अर रचनाधरमीता नै बढ़ावौ देवै पण आपांरै अठै मूळ मुद्रा नै इज अधार मान'र अंगिकाभिनय अर सात्विकाभिनय अेकै साथै किया जावै। इण नाच री प्रक्रिया में माथै सूं उपजियोड़ी कीं नीं है क्यूं के माथै सूं निकळियोड़ै नै अेकर जद ठेठ चरम ऊपर देखलां तद उणरी पुनरावरती आछी कोनी लागै जद के हियै सूं निकळियोड़ी आणंदकारी अनुभूती नै जित्ती वार दुसरावां उत्ती वार ई आणंद आवै। अठै अेक वात खास रूप सूं अर वारीकी सूं समझण जोग है के आपांरै राजस्थान में निरत री सास्त्रीय वणगत में पगां रौ काम मतलब 'तत्कार' घणौ त्यारी माथै रैयौ अर हाथां री मुद्रावां माथै घणौ ध्यान कोनी दिरीजियौ। इण सूं ठीक उल्टौ दिक्खण रै 'भरत-नाट्यम्' में रैयौ। उठै पगां री तत्कार माथै ध्यान कम दिरीजियौ अर हाथां री मुद्रावां घणी सांतरी संवारीजी।

कुदरत री किरपा जद मिनख नै खिमता देवै तद कला में रैयोड़ी खामियां उद्यम में अर उद्यम में रैयोड़ी खामियां कला में संतुलन कायम करण सारू बरावर व्हे जाया करै। आपांरै अठै पगां री त्यारी खूब व्ही अर हाथां री मद्रावां माथै कोई ध्यान इज नीं दिरीजियौ इणी कारणै आपांरै अठै री कठपूतळी रै पग इज कोनी अर सारौ खेल हाथां रौ इज है। ठीक इण सूं उल्टौ हिसाव दिक्खण री कठपूतळी में मिळैला कै उणरा हाथ काम इज कोनी करै जद के उठै रै निरत 'भरत नाट्यम्' में सारौ काम हाथां री मुद्रावां रौ है। कला अर उद्यम रौ औ संतुलन अठै पीढियां दर पीढियां कायम रैवतौ आयौ है अर औ इज कारण है के आपां रौ देश अजूंलग आपरै इण आपै लारै इज पूजीजतौ आयौ है अर पूजीजतौ रैवैला। अैड़ौ ताळ-मेळ दुनिया रै दूजै किणी मुलक में कोनी। सैं मुलकां में अैड़ा काम जुगां में वंटियोड़ा है ज्यांरी सभ्यतावां वणती अर विगड़ती रैयी जद कै अठै बरोवर अेक परम्परा चाली अर अेक संस्क्रती फळी-फूली।

• • •



नॉट फॉर व्लैक

•

आनन्दप्रिय

वां दिनां म्हनै भारत सिरकार री तरफ सूं अर्थ-शास्त्र री खास-भणाई खातर अमरीका रैवास सारू दो मइनां रो वजीफो मिलियो। अमरीका वो देस है जठै मिनख, जीवण रै मूळ आधार, भौतिक व्यवस्था रै हेटै जीया करै, सुवै सूं ले'र सांझ तांई जीवण मसीन ज्यूं चाल्या करै। मसीनां वां रै दिन नै छोटा कर दिया है। घर सूं बारै जावण अर घर रै मांय घुसण विच्चै री छेती नीं रै बरावर व्हैगी है। म्हैं ओहायो राज्य रै कोलम्बस इन्टरनेसनल हवाई अड्डे रै ऊपर पूगतां ई नीचै झांकियो। सड़कां, मोटी-मोटी इमारतां विच्चै पाणी भरियोड़ी खाइयां ज्यूं लागती। जिणां ऊपर तरै-तरै री रंग-विरंगी मोटरां, समझायोड़ी मछलियां ज्यूं सीधी-सणाक तिरती लागती। कठै-कठैई ऊंचा-ऊंचा भूंगळां सूं धूंवो निकळतो हो। भूंगळां री आ कोलम्बस नगरी उद्योगां री गढी है, जठै म्हनै अर्थ-सास्त्र री खास-भणाई करणी ही। सैर रै बारै च्यारूंमेर लीलै-लीलै घास रा चवड़ा-चवड़ा चौगान दीसता, जिणां में कठै-कठैई टेक्टर वाळोड़ी कीड़ियां ज्यूं चालता हा। आं चौगानां रै पाखती भी कारखानै रा भूंगळ निजर आवता हा।

अढाई लाख मिनखां रै उण सैर में म्हैं अणजाण्यो हो। हवाई अड्डे सूं बारै आवतां ई लाग्यो म्हैं कोई देव-नगरी में आयग्यो हूं। सब आप आप रै कामां में लागोड़ा हा। दस-पंदरा मिनट में समान आयग्यो। ग्रेहाउन्ड टर्मिनल सूं पूछ-ताछ कर'र जी-इलेवन रेस्तरां जावण वाळी वस में वैठग्यो। होटल नै पैली सूं इज इत्तला ही इण कारण कोई दिक्कत नीं व्ही। न्हायो, धोयो अर जात्रा री थकान मिटावण सारू गिद्दादार पलंग मायै पसरग्यो। औ कमरो आपां रै देस रै मंत्रियां रै माळियै ज्यूं सुविधावां सूं लैस हो! पड़तां ई नींद आयगी।

दो मइनां रो सारो कार्यक्रम प्रो. जे. विलियम साहब सूं तै कर लियो। वां री देख-रेख में म्हनै म्हारै विसै री सामग्री भेळी करणी ही। छोटा-मोटा तीस कारखाना

देखणा, वां री जांच करणी अर पछै खुदरा निरणै तै करणा हा। आं दो मइनां में म्हैं क्लीलेण्ड में फुटबॉल रा मैच देख्या। ओसेनंदन जीवर नदी रौ आणंद लियौ। तीन घटां तांई उण ऊपर बणियोड़ै इन्दरधनुसी पुळ माथै सूं कळ-कळ करता पाणी रौ राग सुणियौ। तिरती नावां में मिनखां री मौज जोई। घूमता-घामता गोरा अर काळा जोड़ा देख्या। वां नै देख'र विचार आवतौ—अै मिनख जात-पांत, रंग-भेद अर धरम-भेद सूं कित्ता आगा है! जद के म्हारै देस में वां माथै आलोचणा री किताबां ऊपर किताबां निकळगी। थोड़ी'क वार किताबां लिखण वाळा खोटा लाग्या। पछै उठैरी प्रसिद्ध हावर्ड जानसन री कुल्फी खाई। घणी चोखी लागी। पण गोळ-गप्पां सूं वेसी नीं। होटल डोसोडरीज रै खम्भा री गिणती सारू थोड़ी ताळ तौ गरदन दुखाई, पण गिणती री परख तौ अधकोस जाय'र इज कर सकतौ हौ। कीं खावण री इंछा व्ही पण मांय जाय'र खावण रै नांव माथै चाख'र पाछौ न्हाटचौ।

कोलम्बस सैर रा वारला अजूबां सूं म्हैं गजर-धजर व्हैयग्यौ। पण अेक दिन लारला विचार अचाणचक खळ-विखळ व्हैयग्या, जद म्हनै ठा पड़ी के अठै गोरा मिनख काळा नै काळा समझै। गोरौ रंग जांण'र खुद नै वां सूं न्यारा अर ऊंचा समझै। अठै तांई के वै अन्तस सूं भी घिरणा करै।

अेक दिन कोलम्बस सूं कोई सातेक कोस आगौ कारखानै में जावणौ हौ। अंजळ सूं म्हारै ज्यूं ई उनै अेक बरमी स्टूडेन्ट मिलग्यौ। दोनां में खुल'र वातां व्ही। आखै दिन अेक ई विसै माथै साथै-साथै काम करता रैया। सिंझ्यारै वैस करता थकां ई रात रा दस वजग्या। पळपळाट करतौ सुनसान सड़कां सूं सैर री मुख्य सड़क माथै म्हनै वौ आप री मोटर में ले आयौ। वरमी म्हनै साथै चालण री घणी ई मनवार करी पण म्हैं उण नै म्हारौ ठिकाणौ देय'र धन्यवाद दियौ अर वस स्टैण्ड माथै वस री वाट जोवण लाग्यौ। वस नीं आई। अेक-दो कारां नै निकळती देख, वां नै रुकण रौ इसारौ करियौ, पण वै म्हारी सूरत सामी जोय'र फर-फर-फर करता आगै वढग्या। सेवट अजाणै सैर में हिम्मत कर पाळौ ई आगै व्हीर व्हियौ।

दिन भर काम करतां खावणौ पीवणौ ई भूलग्यौ। निवड़ियौ तौ भूख सतावण लागी। अठी नै पाळौ चालण सूं थाकेलौ बत्तौ व्हैग्यौ। भूख सैन नीं व्हे रैयी ही। झट-झट चालण लाग्यौ। निजरां किणी होटल-रेस्तरां नै जो रैयी ही। अेक छोटौ होटल दीसतां ई फुरती सूं मांय वड़'र कुरसी माथै वैठग्यौ। आंख्यां वैरा री तलास में चौफेर फिरण लागी। अेक खूणै में ऊभौ वैरौ नाक भौं सिकोड़तौ म्हनै घूर रैयौ हौ। म्हैं इसारै सूं उण नै नज़ीक बुलायौ। वौ आखती-पाखती जोय'र टेवल कनै आयौ अर म्हारै सामी खट सूं अेक तखती धरदी 'नॉट फॉर ब्लैक'। काळा वास्तै नीं। लाल-पीळौ व्हेय'र म्हैं होटल सूं वारै आयग्यौ। आगै तीन-चार होटल-रेस्तरां औरूं देख्या। पण सब जगा वा इज तखती–'नॉट फॉर ब्लैक'। मन ई मन गोरां नै गाळियां काढी। वूकां मारतौ तौ भी कुण सुणतौ! अेक होटल में तौ तूं-तूं म्हैं-म्हैं व्हेगी। अर म्हनै धक्का मार'र बारै गुड़ाय



दियौ। अमरीकी सिरकार भलां ई कायदा-कानून बणाय दिया व्ही पण समाज रा कायदा-कानून घणा ठोस व्हिया करै। पीढी-दर-पीढी चलती आई रगत-सभ्यता हाल तांई गोरां में भरियोड़ी ही। इग्यारै-साढी इग्यारै रौ टैम व्हेयग्यौ। म्हैं रस्तौ भूलग्यौ। पूछूं भी तौ किण नै ? बतावै भी तौ कुण ? इत्तै मोटै मुलक में 'नॉट फॉर ब्लैक ?'

पण भूख अजै मिटणी बाकी ही। गोरां नै निरखण-परखण री इंछा जागी। क्यूं नीं गोरां रा दरवाजा खटखटा'र आं रै हियै में जमियोड़ी घ्रिणा नै अरस-परस कर देखूं ? आं रै मिनखपणै री पिछाण करूं ?? कांई सांचाणी आं गोरां रै मनां में इत्ती नैनी अर ओछी भावना व्है सकै ??? उण देस में जठै के 'संयुक्त राष्ट्र संघ' री मोटी इमारत ऊभी है ! जठै देस-देस रा सांती फैलावण वाळा पढ्या-लिख्या लोग रात-दिन अेक कर रैया है ! कांई वै इण रंगभेद नै मिटावण में सिमरथ व्हिया है ? कम सूं कम उण देस में, जठै के वै लोग काम कर रैया है।

होटल री चिंता छोड'र पग आंचा कर दिया। सैर नजीक आयग्यौ। जिकौ पैलौ घर दीसियौ उण री किंवाड़ खटखटाय दियौ। अेक गोरै मिनख री घांटकी बारै आई, पण म्हारी बात सुण'र किंवाड़ पाछा बंद कर दिया। आठ-दस घर औ इज कौतक चालतौ रैयौ। तौ ई नेहचौ धारियोड़ौ म्हैं इण अभियान में लागोड़ौ रैयौ। बारै-अेक बजग्या पण हिम्मत नीं हारी। हरेक घरं पछै संतोस वढतौ गयौ। अबकी म्हैं उण घर थपकी मारी जिण में रोसणी जाग रैयी ही। किंवाड़ खुलिया। मोटी-मोटी अचपळी दो आंख्यां—नीग्रो लुगाई री—परगट व्ही जिण में के विस्मै हो। म्हैं उण नै भी म्हारी वा इज स्थिति बताई जिकी के पैलां दरवाजां माथै बतावतौ रैयौ हो। म्हनै वा चाव सूं मांय नै लेयगी। बौत आवभगत करी। खावण में पैली बार पाछौ टाबर बणियौ। तिरपती व्ही तौ नींद भी आवण लागी। वा म्हारै सोवण री व्यवस्था भी कर दी।

तड़कै नींद मोड़ी टूटी। वा नीग्रो लुगाई झट कॉफी लेय'र आयगी। जांणै म्हारै ऊठण री इज वाट जोवती ही। रात री आवभगत सूं म्हारी आंख्यां में पाणी आयग्यौ। नित-नेम सूं निवटियौ तौ सिरावण तय्यार—खुद रै हाथां सूं बणायोड़ौ। होठ खोल्यां पैली जरूत मुजब हर चीज हाजर। मनवार कर-कर नै खवावती रैयी। जद म्हैं रवानै व्हेण री तय्यारी करी तौ वा म्हनै घणै चाव सूं अेक दिन तांई माडाणी रोकली। बोली में वा बौत मीठी ही।

रात रा सोवतां वखत, घणै लाड सूं म्हनै म्हारै भटकण री वजै पूछी। म्हैं म्हारी बात अर निरखण-परखण रै कौतक नै छिपाय नीं सकियौ। सगळी री सगळी कहाणी उकळ दी। अर आखिर में आखै अमरीकी नै गाळी दे न्हाकी। वां सांभळती रैयी। मुदरै-मुदरै चानणै में म्हैं उण रै चेहरै री मुद्रावां नीं देख सकियौ के म्हारै गुस्सै अर घ्रिणा री भावना छानी नीं राख सकियौ—कुण जांणै ?

दूजै दिन सिरावण तांई रुकियो। उण नै अणगिणत धन्यवाद दिया। उचाट मन ब्हियोड़ी वा चौखट तांई आई। म्है विदाई मांगी। उतरियोड़ै मूंडै सूं म्हारै सांमी जोय'र बोली–"म्हारै माथै अेक मेहर करजो। जद थे थां रै देस जावो तो किणी नै आ मत कईजो के अमरीका में कोई रोटी खवावण वाळो नीं है। थे भारतीय वचनां रा पक्का व्हो हो आ म्हैं जांणूं।

अर वा किवाड़ बंद कर दिया। म्हनै लाग्यो के अेक नीग्रो अचपळी सूं आखो अमरीका देस बचग्यो।



पुरस्कृत साहित्यकार

लारलै दिनां नीचै लिख्या लिखारां नै पुरस्कार मिलिया। आं सब नै घणी-घणी बधाई।

१ चन्द्रप्रकास देवल/पागी/केन्द्रीय साहित्य अकादमी।
२ पारस अरोड़ा/खुलती गांठां/विष्णुहरि डालमिया।
३ महावीरप्रसाद/वृन्दावन/पृथ्वीराज राठौड़।
४ अरजुनदेव चारण/दो नाटक आज रा/गद्य।
५ पुरुषोत्तम छंगाणी/सांसां री सूत/पद्य।
६ डॉ. मनोहर शर्मा/बालवाड़ी/बाल साहित्य।

[आखरी तीन लिखारां नै पुरस्कार राजस्थानी भासा साहित्य संगम कानी सूं मिलिया है।]





राजस्थानी रंगमंच री जरूरत

मदन मोहन माथुर

•

राजस्थानी रंगमंच री जरूरत अर उण रै बणाव में पारंपरिक लोक नाटक, खयाल, रम्मत अर भेस लावणा री लूंठी विरासत नै ले'र हाल खास विचार कठेई नीं व्हियौ है। कलकत्ता अर बम्बई रा मारवाड़ी समाज सारू व्हेण वाळा नाटकां, गांवां-देहातां में घूमती नाटक मंडलियां अर मेळां में केई-केई दिनां तांई चालता खेलां सूं लोक रुचि में कला अर संगीत रै व्हेण री पुखता प्रमाण मिलै। अबै राजस्थानी री नुंवौ रंग-मंच बण सकण री गुंजाइशां साफ दीखण लागी है। सब जगा नाटकां रै पुराणै रूप में फेर-बदळ व्हे रैया है। कीं तौ कमाई री खातर अर कीं लोक रुचि रै खातर। इण रै साथै ई दूजी भासावां सूं भी नुंवा-नुंवा नाटकां रा अनुवाद लगोलग व्हे रैया है। अै अनुवाद नुंवै रंगमंच री नींव धरी है। अचम्भा री बात आ है के नुंवा नाटकां रा अनुवाद भी राजस्थान अर राजस्थानी समाज में सफळ व्हे रैया है। आं दिनां कुछेक नुंवा नाटक लिखणियां भी सामी आगा है।

इण सारी स्थितियां नै देखतां थकां मन में अेक नुंवी उम्मीद कसमसीजै। अर वा उम्मीद है राजस्थानी रंगमंच रै नुंवै सरूप री। नुंवै सरूप री इण तसवीर नै आपां कलाकारां रै नुंवै झुकाव अर दरसकां री नुंवी पसन्द में देख सकां। सायत् पैली वार औ मैसूस व्हियौ है के राजस्थानी में नुंवौ सूं नुंवौ भाव अर आधुनिक सूं आधुनिक संवेदन बयान करियौ जा सकै।

राजस्थानी भासा रौ फगत पुराणौ ठाकुर-साई सरूप ई नीं बदळियौ है। नुंवौ बात कैवण रौ अंदाज अर तेवर भी बदळिया है। नुंवी संभावनावां रै साथै इण रै कला-त्मक उपयोग री परम्परा में भी नुंवौपण सामी आयौ है। पण राजस्थानी रंगमच रै विकास रा अै प्रयास अजै तांई छुट-पुट इज है। जरूरत तौ इण सारां रै विच्चै अेक भावना री, अेक संगठण री अर अेक लगन री है।



राजस्थानी भासा री बोलियां नै ले'र ऊठियोड़ा मतभेद भी रंगमंच रै मुहावरै री तलास नै ले'र खतम व्हे सकै। बम्बई अर कलकत्ता में अेक नुंवी राजस्थानी बोली विकसित व्ही इज है जरूरत रै पांण। रंगमंच माथै ठौड़-ठौड़ व्हे रैया प्रयासां नै संगठित करण री काम अेक अच्छी राजस्थानी पत्रिका भी आपरी जगा कर सकै। अच्छी पत्रिकावां अर रंगमंच कानी सचेत नीं व्हेण री वजै सूं इज सायत् 'राजस्थानी रंगमंच री जरूरत' री बात कदेई ऊठी कोनी। जिण साहित्य में नाटक लिखीजिया है अर लिखीज रैया है, उण री रंगमंच क्यूं नीं व्हे सकै ?

ऊपर करिया राजस्थानी नाटकां रै भेदां में मौलिक, अनुवाद अर रूपान्तर है। अठै वां रा उदाहरण देवतां थकां अर साथै ई अेक लगोलग प्रयास री भूमिका बणावतां थकां अेक आसावादी चितराम बणावण री कोसिस कानी ध्यान दिरावणी चावूं।

'महानिर्वाण' सतीश आळेकर रै मराठी नाटक रौ अनुवाद है। बम्बई में बैठ्या सत्यप्रकासजी जोसी औ अनुवाद घणी मैणत सूं करियौ। अनुवाद में मौलिक नाटक री कथावाचक सैली नै बदळ'र राजस्थानी फाग अर दूजी-दूजी धुनां में संगीत रचना करण री बात अनुवादक आप री तरफ सूं घाली है। इण रौ उद्देस कथानक रै प्रसंगां बिच्चै आंचळिकता पैदा कर'र रोचक अर रंगमंच वास्तै नाटक ने ज्यादा सूं ज्यादा उपयोगी बणावणौ है।

'महानिर्वाण' रा छै प्रदरसण 'अेकलव्य' संस्था करिया—जोधपुर, पाली, सीकर जयपुर अर इलाहाबाद में। दिक्कत बम्बइया सेखावाटी नै ले'र सीकर में इज आई बाकी जगा, हिन्दी बोलणिया लोगां (इलाहाबाद) तक में, सम्प्रेसण री कठिनाई नीं आई। औ अणभव भी राजस्थानी रंगमंच री भासा बाबत सोचण रै वास्तै अेक विचार दियौ। आधुनिक रंगमंच रा सैलीगत तत्व नाटक में खासा है अर कथ्य भी रोचक है। इण अनुवाद में मूळ री खासियतां रा मिलण वाळा सारा फायदा तौ मिलै इज, साथै ई अनुवादक री सूझबूझ सूं आंचळिकता री गरज सूं जिकी फेर-बदळ व्हियौ, वौ भी आपां रै घणौ नैडौ लागै।

कलाकारां में अरजुणदेव चारण, श्याम पंवार, भवानीसिंह, रामेश्वर, नवीन बोहरा रै अलावा सुश्री गीता भट्टाचार्य, जगजीत वाजपेयी अर अशोक किनरा हिन्दी बोलणियां व्हैतां थकां भी नाटक रै मुहावरै रौ अच्छौ निभाव कर सकिया।

'गवाड़ी' अर 'तीन दिन' अरजुणदेव चारण रा मौलिक नाटक है। 'गवाड़ी' विघटण री कुदरती प्रक्रिया अर संगठण रा बणावटी प्रयासां नै आमी-सामी ऊभा करै। 'गवाड़ी' में खेलता चार छोरां री वातां में अर प्रसगां रै अनुसार वां चारूं द्वारा इज केई भूमिकावां में नाटक आप री वात अेक पूरै रूपक में कैवै। सीधी-सपाट बयानी में नीं। रंगमंच मुजब घणाकरा प्रयोगां री गुंजाइस इण नाटक में है। 'अेकलव्य' इण नाटक री प्रदरसण सूचना केन्द्र में दरसकां रै अैन बिच्चै करियौ, जिण सूं नाटक रा अणभव सगळा दरसकां रै अणभवां रै नजीक रैय सकिया।



'तीन दिन' रौ निरदेसण भी अरजुणदेव इज करियौ। अधिनायकवाद रै खिलाफ क्रान्ति री कुदरती प्रक्रिया रौ अेक रूपक औ'र। इण नाटक में क्रान्ति री बात साफ लफजां कैयीजी है। रंगमंच माथै अभिनेता रै सरीर री पूरौ उपयोग अभिनय में करण री कोसिस लागती जिकौ के अेक नुंवौ मंच प्रयोग है। 'गवाड़ी' में अरजुणदेव चारण, श्याम पंवार, नवीन वोहरा अर रमेस बोराणा राजस्थानी री पूरी भासागत चाल सूं वाकिफ हा। 'तीन दिन' में अरजुणदेव चारण, दलपतसिंह, प्रकास पुकास पुरोहित अर प्रताप सिंह भी राजस्थानी बोलणिया हा। पूरै नाटक री चाल में अेक रवानी व्हेणी अरजुणदेव रै नाटकां री कोसिस रैवै। खुद रै निरदेसण में वे इण रवानी नै मंच री जरूरतां साथै दीठ रै चितराम मुजब उतारण री कोसिस करै।

'खांतीलौ चोर' विजयदानजी देथा री इणीज नांव री कहाणी माथै आधारित अरजुणदेव चारण रौ रूपान्तर है। नाटक रौ बरताव खयाल जैड़ौ सहज अर बिना ताम-झाम रौ है। 'अेकलव्य' इण नाटक नै 'केन्द्रीय संगीत-नाटक अकादमी' री ढाई हजार रिपियां री मदद सूं करियौ। प्रस्तुति सफळ अर रोचक रैयी। विजयदानजी खुद अर दूजा राजस्थानी रा लिखारा अर सुभचिन्तक भी, खासकर इण नाटक रै बाद, राजस्थानी रंगमंच री जरूरत मैंसूस की। साथै ई नुंवा-नुंवा नाटकां री भी। इण में भी नाटक री सफळता है। 'अेकलव्य' नै 'केन्द्रीय संगीत-नाटक अकादमी' इण साल फेरूं ढाई हजार रिपियां री मंजूरी राजस्थानी नाटक करण सारू भेजी है।

इण सारै माहोल रै बीच केई गम्भीर सवाल उठै। जमानै रै साथै चालण सारू राजस्थानी भासा कांई अभिव्यक्ति रा अेक पूरा माध्यम सूं परहेज कर सकै? नाटक रै जरियै राजस्थानी रा लिखारा राजस्थानी रंगमंच नै कोकर सजीव कर सकै? राजस्थानी रंगमच री जरूरत वडै पैमानै माथै क्यूं नीं मैंसूस व्है रैयी है? व्यवसायी सरूप सूं हट'र लोकप्रिय मंच आधुनिक नाटकां रा सारथक प्रयोग क्यूं नीं करै? हिन्दी अर राजस्थानी विच्चै रचनाकार कठेई दोवड़ौ जुड़ाव तौ मैंसूस नीं करे?

• • •



संपादकी

म्हारै हस्तू 'जागती जोत' री पैली दीवड़ आपरी आंखियां रै चानणै है। दीवड़ री जोत री चानणौ तौ तेल रै परवाणै ई व्हिया करै सो ई में छपियोड़ी रचनावां इज ई री तेल है, म्हैं तौ सिरफ जोतां संवारी है। थोड़ै में औ कैयौ जा सकै के मिनख जित्तौ सोचै, वीं नै पिरतख रूप में करण री विळिया उण सोचियोड़ै री दसमौ भाग भी कर देखावै तौ घणी वलियारी।

अंक रै संपादन रौ न्यूतौ मिलियौ वीं सूं पैला पारस अरोड़ा मूंडै सूं हां करनै भी लिखत में संपादन करण सूं मुकर गिया। पारसजी ज्यां कारणां सूं नट गिया वे कारण म्हारी समझ में ठोस हा अर वां कारणां नै चावा करण नै, सगळां सांमी राखण नै, अर वां ऊपर खुली वैस सारू अेक जरियौ भी तौ जरूरी है, आ सोच'र म्हैं खुलै मन सूं संपादन री हांमळ भरी है। अकादमी रै काम करण रै तरीकै रौ विरोध म्हैं समझूं के कोई खास मिनख रौ विरोध कतै ई नीं है।

अेक इज संपादक री टेकेदारी खतम करण री गरज सूं न्यारा-न्यारा संपादक चुणण रौ निरणै तौ गलत कोनी हौ पण छै-छै मइनां सूं संपादक पलटियां सूं पत्रिका री जकी दुरगत व्ही है, उणसूं भी कुण मुकर सकै। पत्रिका अेक रूप अर स्तर बणावण री प्रक्रिया में व्है जित्तै तौ संपादक बदळ जावै। बदळनै भी अेक मतै रौ व्है तद तौ फेरूं फूटरापै में वधापै री आस रैवै पण जद पक्की चुणाई रै पैला ई भरती भरण री फिकर लाग जावै या अबूझ गजदर रै हाथां रास पड़ जावै तौ कद ठावकी नींवां चुणीज सकै ?. जद नींवां ई पोली व्है तौ वीं ऊपर चुणियोड़ै घर री मियाद कित्ता दिनां री ? ई परिपेख में अकादमी रै विधान अर नियमां में लचकाई नीं व्है तौ उणरी कसूर किण ऊपर थोपां ?

अकादमी री पत्रिका अर पोथी ई जे फूटरी, ओपती अर दूजा प्रकासणां सूं ऊपर नीं व्हैला तौ कुण अकादमी रै जरियै छपण री मंसा राखैला ? अेक बात फेरूं भी विचार-जोगी है के अकादमी रा प्रकासण खाली अठै रा लेखकां रा जीव सोरा करण सारू इज है के दूजी भासावां अर साहित रै सांमी ऊभण री खिमता पैदा करण सारू है। कांई आपां दूजी



भासावां री अकादमियां री पत्रिकावां अर पोथियां भी कदै कदास देखां अर वां भासावां रै साहित रै सांमी आपणी भासा रै साहित नै मेल'र देखां ?

अकादमी, पत्रिका री छपाई सारू दरां मंजूर कर राखी है। वां दरां नै देखतां अर यां दरां में छपियोड़ा लारला अंकां नै देखां तौ साफ दीखै के यां दरां में जकी छपाई व्ही, ठीक इज व्ही। पण जद छपाई अर दरां नै अळगी कर नै देखां तौ पत्रिकावां री छपाई सूं कोई संतोख नीं मिळै। ई वास्तै इण अंक री छपाई में कोई खांमी रैयगी व्है तौ म्है अेकलौ इज कसूरवार नीं।

मन में हूंस ही के जैसलमेर सम्मेलन में अंक चावौ व्हे जातौ पण जित्तौ ओछौ वगत म्हनै मिळियौ वीं में रचनावां भेळी करणी, छांटणी, वांनै साफ लिख'र प्रेस में देवण सारू त्यार करणी इत्याद अैड़ी अवखायां ही ज्यांनै अंवेरण सारू दिन ओछा हा। अंक विळियासर निकळ गियौ ई में जुगल परिहार अर मोहन पारीक रौ इज भेळौ कसूर है। म्हैं यां भेळौ जरूर हूं, कसूरवार नीं। कसूर इण वास्तै के लारला अंक.......... !

आगै रा अंकां सारू रीत अर नीत तौ अकादमी री इज काम आवैला। वीं में कठैई खांमी है तौ वीं सारू संपादक नै दोस देवणौ वाजब नीं रैवैला। हां, जठै तक संपादक री रीत-नीत रौ सवाल है, म्हारी कोसीस व्हैला के हरेक अंक अपणै आपरी मिसाल बण सकै। औ तदै ई व्है सकै जद के सगळा हेताळू आपरौ सैयोग, रचनावां अर सुझावां रै पांण देवता रैवै।

खांमियां री पूरती करण सारू समै-समै ऊपर सुझाव मिळता रैया तौ कोई कारण नीं के जागती जोत री चानणौ पळलाटा नीं मारै।

—सत्येन जोशी

• • •

राजस्थानी रा घणमोला प्रकासण

नांव पोथी/विधा/लेखक/संपादक	मोल
प्रेतात्मा री प्रीत/कहाणी/दामोदरप्रसाद शर्मा	५.५०
रोहिड़ै रा फूल/व्यंग्य-निबंध/डॉ० मनोहर शर्मा	५.७५
हांस्यां हरि मिलै/हास्य/नृसिंह राजपुरोहित	७ ५०
जोग संजोग/उपन्यास/यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७.२५
अटारवां/रेखाचित्र/डॉ० व्रजनारायण पुरोहित	५.७५
आदमी रौ सींग/कहाणी/करणीदान बारहठ	६.००
अेक बीनणी दो बीन/उपन्यास/श्रीलाल नथमल जोशी	८.३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस/रावत सारस्वत	७.७५
सोनल भींग/लघु कथा/डॉ० मनोहर शर्मा	७.००
काळ भैरवी/उपन्यास/रामनिवास शर्मा	७.४०
हंस करै निगराणी/काव्य/सत्येन जोशी	७.४०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा/जागती जोत/डॉ० मनोहर शर्मा	८.००
राजस्थानी कहाणी संग्रह/जागती जोत/रामेश्वरदयाल श्रीमाली	८.५०
राजस्थानी निबंध-माळा/जागती जोत/डा० मनोहर शर्मा	८.००
राजस्थानी के कवि—भाग २/रावत सारस्वत	१५.००
राजस्थानी साहित्य संपदा/सौभाग्यसिंह शेखावत	१८.००
सरवर, सूरज अर सिंझ्या/प्रेमजी 'प्रेम'	प्रकाश्य



मिलण री ठौड़ :

राजस्थानी भासा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)



आगलै अंक रा लिखारा

- ☐ डॉ० गोरधनसिंह शेखावत
- ☐ नृसिंह राजपुरोहित
- ☐ गणपतिचन्द्र भण्डारी
- ☐ विनोद सोमाणी हंस
- ☐ चेतन स्वामी
- ☐ आशा शर्मा
- ☐ अर..............
- ☐ नन्द भारद्वाज
- ☐ पारस अरोड़ा
- ☐ गोविन्द कल्ला
- ☐ श्यामसुन्दर भारती
- ☐ जुगल परिहार
- ☐ जहूर खां मेहर
- ☐ अर..............
- ☐ अर..............

कीं नुंवा नाम

- ☐ सत्येन व्यास
- ☐ चैनसिंह भाटी
- ☐ विनोद कोठारी
- ☐ अर..............
- ☐ योगेन्द्र कुमार दवे
- ☐ भागीरथ रंगा
- ☐ अशोक कुमार दवे
- ☐ अर..............
- ☐ अर..............



डॉ० परमानन्द सारस्वत, उपसचिव, राजस्थानी भासा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर प्रकासित करी अर मिलन मुद्रणालय, जालोरी गेट, जोधपुर, में छपी ।